

PĀIA-SADDA-MAHANNAVO

A COMPREHENSIVE PRAKRIT HINDI DICTIONARY

with Sanskrit equivalents, quotations

AND

complete references

BY

PANDIT HARGOVIND DAS T SHETH

Nyaya Vyakarana-tirtha Lecturer in Sanskrit, Prakrit and Gujrati

Calcutta University Author of "Haribhadrasuri Charitra

Late Editor of Yashovijaya Jaina Granthamala ,

Jaina Vividha Sahitya Shastra

mala etc etc.

GENERAL EDITORS

Dr V S AGRAWALA

Banaras Hindu University

PL DALSUKH BHAI MALVANIA

Lalbhai Dalpatbhai Vidya Bhavan Ahmedabad

PRAKRIT TEXT SOCIETY

V A R A N A S I - 5

SECOND EDITION

1963

{ १ }
Published by
DALSUKH MALVANIA
Secretary
PRAKRIT TEXT SOCIETY
VARANASI-5

1

SECOND EDITION—1963
ALL RIGHTS RESERVED

Students Edition Rs. 20/-
Library Edition Rs. 30/-

Available from —

- 1 NOTILAL BANARASI DASS, NEPALI KHAPRA POST BOX 75 VARANASI
- 2 CHOWKHAMBA VIDYABHAVAN CHOWK, VARANASI
- 3 GURJAR GRANTHARATNA KARYALAYA GANDHI ROAD AHMEDABAD-1
- 4 SARASWATI PUSTAK BHANDAR RATANPOLE, HATHIKHANA AHMEDABAD-1

Printed at
THE TARA PRINTING WORKS
VARANASI

पाइत्र-सद्-महर्णवो

(प्राकृत-शब्द-महर्णव)

श्रीमान पन्नेमालकी धीबन्धनी गोनेछ
जपपुर वारों की ओर से भेंट ॥

अर्थात्

विषय प्राकृत भाषाओं के राज्यों का संस्कृत प्रतिराष्ट्रों से युक्त,
हिन्दी अर्थों से अष्टकृत, प्राचीन ग्रन्थों के अनन्य अवतरणों
और परिपूर्ण प्रमाणों से विभूषित दृष्टकोप

कृतां—

गुर्जरदेशान्तर्गत-राजनपुर-नगर-वास्तव्य कच्छकृता-विश्वविद्यालय के संस्कृत
प्राकृत और गुजराती भाषा के अध्यापक "हरिन्द्रमुनिचरित" के कर्ता
"यशोविरजय-वैत-कल्पमाता" और "वैत-विश्व-साहित्य
शास्त्रमाता" के प्रुतपूर्व संपादक म्याय-म्याकरण-दीर्घ

स्व० पंडित हरगोविन्ददास त्रिकमचंद सेठ

संपादक

डा० वासुदेव शरण अग्रवाल

प्राध्यापक, काशी विश्वविद्यालय

प० दत्तसुख भाई मालवणिया

संचालक, शास्त्रभाई दत्तपतभाई विद्याभवन, अहमदाबाद-१

प्रकाशिका

प्राकृत ग्रन्थ परिपद,

वाराणसी-८

प्रकाशक

वल्लभुस मालवणिया

सम्प्री प्राइवट टेक्स्ट सोसायटी

धाराणसी-५

द्वितीय संस्करण—१९६३

सर्वे स्वतः संरक्षित

मूल्य—साधारण संस्करण २०)

पुस्तकालय संस्करण ३०)

प्राप्ति स्थान

- १ भोटीनास बनारसीपथ मेगाधी बान्ना पोस्ट बापस ७५, बापसघरी ।
- २ लीखम्बा विद्या भवन लीक बापसघरी ।
- ३ पुनौर ग्रन्थ पत्र कार्यालय पोली मार्ग बहुमयबास-१
- ४ सरस्वती पुस्तक भंडार, रयनपोल हाजीबाग, बहुमयबास-१

मुद्रक

वाप प्रिंटिंग वर्क्स,

कमल बापसघरी-१



डॉ० राजेन्द्रप्रसाद जी

श्री प्राचार्य विनयचन्द्र शान्ति भण्डार, जयपुर

समर्पण

प्राकृत भाषा का यह महाकोश

स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति तथा प्राकृत-ग्रन्थ-परिपद (प्रा०टे०सो०) के
संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक, भारतीय संस्कृति के अनन्य अद्भुत देशरत्न

स्व० डॉ० श्रीराजेन्द्र प्रसाद जी

को सावर समर्पित है,

जिनकी अध्यक्षता में इस कोश के पुनः मुद्रण का निश्चय किया
गया और जिनके करकर्मलों से इसका प्रकाशन समारोह
सम्पन्न होना प्रस्तावित था, किन्तु दैवेच्छ से २८

फरवरी १९६३ को जिनका स्वर्गवास हो जाने
के कारण अब परिपद की ओर से यह

अद्यावधि रूप में समर्पित किया
जा रहा है।

—प्राकृत ग्रन्थ परिपद के सदस्य

प्रकाशककी ओरसे

प्रस्तुत महान् कोपके कर्ता स्व प श्री हरगोविन्ददास त्रिकमचन्द सेठका जन्म राधनपुर (गुजरात) में जैन कुटुम्बमें वि स १९४५ में हुआ था। बनारसमें आचार्यश्री विजयधर्मसूरि द्वारा स्थापित श्री यशोविजय जैन पाठशाला में संस्कृत और प्राकृतभाषाका अध्ययन तथा सिलोनमें जाकर पालिभाषाका अध्ययन उन्होंने किया था। कलकत्तेकी न्याय-आकरणतीर्थ परीक्षा उत्तीर्ण करके कमकता युनिवर्सिटीमें संस्कृत, प्राकृत और गुजरातीके अध्यापक नियुक्त हुए थे। उन्होंने यशोविजय जैन ग्रन्थमालामें संस्कृत-प्राकृतभाषाके कई ग्रन्थोंका संपादन कौशलसे किया है। प्रस्तुत 'पाइय-सद्-महणव'-प्राकृत शब्दमहार्णव कोपकी रचना उन्होंने बिना किसीकी सहायताके अकेले ही की थी और उसका प्रकाशन भी स्वयं ही किया था। उनका निधन वि स १९९७ में हुआ। उनकी सम्पत्तिका कुल अधिकार उनकी धर्मपत्नी सुशीला आ सुमद्रावहनको प्राप्त हुआ है।

श्री पं हरगोविन्ददासके संसारपक्षके छोटेभाई मुनिराज श्री विशालविजयजी तथा भानू आदि कई जैन तीर्थोंके इतिहास ग्रन्थोंके लेखक स्व मुनिराज श्री जयन्त विजयजी एवं श्रीयशोविजय जैन ग्रन्थमालाके मंत्री श्री भगवचन्द गाधीकी प्रेरणासे और अपनी उदारतासे श्री सुमद्रावहनने प्रस्तुत ग्रन्थकी कौपीराइट मावनगरास्थित यशोविजय जैन ग्रन्थमालाको समर्पित कर दिया है। श्री सुमद्रावहनकी ही प्रेरणासे श्री यशोविजय जैन ग्रन्थमालाकी कार्यकारिणी समिति और मानाह मंत्री श्री बालाभाई वीरचंद देसाईने प्राकृत टेम्पट सोसायटीको प्रस्तुत द्वितीय आवृत्तिके प्रकाशनकी अनुमति दी है। मैं यहाँ श्री सुमद्रावहन तथा ग्रन्थमालाका आभार मानता हूँ।

प्रस्तुत कोपमें संमिलित करनेके लिये पू. मुनिराज श्री पुण्यविजयजीने कुछ शब्दोंकी सूची दी थी, जो इसमें यथास्थान दिये गये हैं। इस उदारताके लिये मैं यहाँ उनका आभार मानता हूँ। प्रस्तुत कोपके मुद्रणका काम अस्वस्थ होते हुए भी जिस तत्परता से डॉ॰ वासुदेवशरण अग्रवाला ने करवाया है उसके लिये मैं उनका विशेषतः कृतज्ञ हूँ।

वल्लभसुख मातृवर्णिप्या
मंत्री

their literally value has to be assessed specially from the point of view of new words and meanings incorporated in them. The Interpretation of the texts already known when the first edition of the Dictionary was compiled has also progressed and the technical meanings of many words have been recovered. They need to be incorporated in a revised edition or in a new presentation of word material of the Prākṛit language as recorded in its literature. The problem is no doubt vast requiring stout organization and finances but the work has to be done. The Govt. of India, various Universities Prākṛit Institutes and the All-India Oriental Conference should put their heads together for evolving a scheme for the accomplishment of this task viz the preparation of an up-to-date dictionary on scientific principles of the Prākṛit and Apabhraṃśa literatures which have contributed so much to the Middle Indo-Aryan languages and which truly hold the key to the problem of etymology and semantics relating to the many literary dialects of the medieval and modern period.

It is gratifying that a rich literature of such magnitude as that of Prākṛit has been preserved as our heritage and it is high time when we should wake up to our responsibility. The Prākṛit Text Society is keenly alive to this need but it has already committed itself to the publication of the critical texts of the Āgamas and their commentaries and therefore its resources for some years cannot be diverted to the needs however urgent they may be, of a fresh dictionary of Prākṛit language as envisaged above.

I cannot close this short statement without making a special appeal to those friends who are engaged on an intensive study of the difficult texts of Old-Hindi, Old-Gujarati etc. They should cultivate the habit of going to the Prākṛit and Apabhraṃśa sources for recovering the meanings of the obscure vocabulary used in those texts which were written at a time when Prākṛit and Apabhraṃśa words found a predominant place in the linguistic consciousness of the people. I would give a few examples —

1. "पद्मो वरुणं चरुं परं वीर्यं" (Padmāvat 149 4) The crux of the meaning of the simple line like this lies in the word *paru* meaning to turn as *वर्तमान* of Skt. *dhrama* (वरुण = वर्तुण, Hemchandra, 4 16 Pūṣṭa)—the earth and the sky both are turning like a mill.

2. "मारुतं नाविकं वीर्यं वीर्यं" (Padmāvat 149 4) This is one of the most difficult lines of the Padmāvat and it had never been correctly understood by any previous translator. The secret of the meaning lies in the word *वारु* (wrongly translated previously as 'bends') which as recorded in the Pūṣṭa, denoted a naval merchant. The meaning is that to take a sea-faring merchant in the midst of the ocean and there to kill him is a mean thing, said Barjā (the Chief of Alauddin). The meaning of this word is recorded in the Pūṣṭa with only one reference to Haribhadra Suri (8th century), but I thought that its usage in the Padmāvat in the 16th century must be evident in the literature of the intervening period. My search proved fruitful and I found it in the Bhavisyata Kāvya of Dharmapala (वीर्यं विरुणं वरुणं वारुणं; वारुणं विरुणं वरुणं वारुणं || Bhavisyata Kāvya, 8311 Baroda edition p. 52—then the sea-merchants met together and began to discuss joyfully their problems of sale and purchase. The word has also been used in the Apabhraṃśa poem Pauma-charita-नगरं पृथग् गुरं वारुणं (Pauma-charita 317 l. Singhi Jain Granthamālā). On an inscription from Anbilavada dated VS 1349 its Skt. form *Nau-vittaka* has been used (Indian Antiquary 1912 p. 21) and

Muni Chandra in his commentary on Haribhadra's Upadeś-pada record a नैविरुक्त as the Skt. form of *Nayatta*. This accumulation of evidence is the proper field of a dictionary and it is of value to show how our correct understanding of the old-texts may benefit from utilising the Prakrit and Apabhraṃśa sources. I should like to reinforce this point by drawing attention to some other words from the Avahatṭa text, Kirtilai of which in the recently published Sanjivani commentary* much valuable assistance from the Pāṇi-sadda-mahāṅgavo has been taken. To take another pointed example :

- १५ ६ जवह = सवोप बाटा है । सं कप + ह > प्रा सवे लवि = पास बाटा । जवह जवह (पासह) ।
- १६ नाव = कपुम्प करना जानना । सं० नावम् > प्रा नाव (पासह) ।
- १७ साह्व = सं छाव = कप में करना > प्रा साह्व > जव साह्व (पासह) ।
- १८ कपिरि = सं प्रा + कप्य (= शाक्यप करना बहाना) का बालायेठ कप्य कपिरि = शाक्यप करके (पासह) ।
- १९ सवयो = सं० सव्य + कप्य = कर्षण करना सव्य > प्रा सवय > जव सव्य सवयो (पासह) ।
- २० वेखिन्न = सं पूर्य (> पूर करना) का बालायेठ वेख वेखह (पासह) । प्रकृत में वेख बावु के बार कर्ष है — ? सं सिप् का बालायेठ वेख = कैला । २ सं श्रेय का बालायेठ वेख = श्रेयि करना । ३ सं वीर्य का बालायेठ वेख = दबाना । ४ सं पूर्य का बालायेठ वेख = पूर करना करना ।
- २१ धूर = सं धुठ > प्रा धुठ > जव धूर = धुठकना मोटना (पासह) ।
- २२ रिज् = सं रिज् > प्रा जव रिज् = रीम्मा प्रसन्न होना रिज्मह (पासह) ।
- २३ छाह्व = छुवर । सं छवा (= कपि रोमा) > प्रा छावा (पासह) ।
- २४ विव्वरि = विवुरे हुए । सं विवुरे > प्रा० विव्वर = कैला बहना (पासह) ।
- २५ बार = वसति बसित, भरमन्थि रोक्काम जाने । सं लव्ध > प्रा बरह (पासह) > बह > बाव > बार + व = बाव बार ।
- २६ विवासिन्न = निवट गया कुछ गया । सं वृष् (= धुक्का धुक्का) का प्रा बालायेठ विव्वन्न (पासह) ।
- २७ कपिरि सं शाक्य का बालायेठ कप्य = शाक्यप करना बहाना (पासह) ।
- २८ लह्व = सं लह्व > प्रा लह्व > जव लह्व = लह्व करना बहना लह्व (पासह) ।
- २९ पड्ड = सं प्रकट्य का बालायेठ पन (पासह) सं प्य का भी जव में पन बालायेठ होता है (= पड्डा पिरण) ।
- ३० नवमज्झि = सं ज्ञा बावु का बालायेठ छावा, यथाप्य = पहुँचाना (पासह) ।
- ३१ भरमज्झि = भरिष्ठ, धूमित । सं भर्य का बालायेठ प्रा जव भरमज्झि = पूर्ण करना बहना भरमज्झि (पासह) ।
- ३२ कल = प्रा ध्वज (सं धिप् का बालायेठ) = कैला जानना जानना (पासह) ।
- ३३ बोसप = सं व्यतिष्ठ बावु का बालायेठ प्रा बोस = कर्षण करना धोड़ना । बोसह, बोसप (पासह) ।
- ३४ धुन = धापीलन खीर । सं लव्ध 'धापील' का प्रा बालायेठ धुन (पासह) ।
- ३५ छाव सं राव का बालायेठ जव = रीम्मा खीम्प करना (हे ४१) ।
- ३६ बोव = सं पय का बालायेठ बोस = बसना समन करना (पासह) ।
- ३७ कर्षा = पड्डे हुए । प्रा कर्ष = पड्डा उधारण करना, सं कप्य का बालायेठ कर्ष = पड्डा उधारण करना (हे ४१ व ७ पासह) । भोजपुरी में 'कर्षण कपना कर्षा' बर्षादि गीत उधारण करो जयो उक्त कर्ष बाटा है ।
- ३८ पाव = सं लक् का प्राह्व बालायेठ पाव = लकना समर्थ होना (हे ४१ व ९) ।
- ३९ वेखिपई = सं पूर्य का प्रा बालायेठ वेख = पूरना करना (पासह) ।
- ४० धव = सं विव्वर का बालायेठ प्रा जव धव = विव्वर ।
- ४१ लव्य = सं लप्य का बालायेठ लव्य = लपना, बर्ष होना (पासह) ।
- ४२ पयमज्झ = कपनी लगा । सं प्रकट्य का बालायेठ पयप = कड्डा मोलना । पयपप पयपह (पासह) ।
- ४३ पावरे = बोड़े वर सहाय कसकर, बह को कपय से उभियत करे । सं संतप्य का बालायेठ पवकर (पासह) ।
- ४४ वैप = सं वृष् का बालायेठ प्रा जव वैप = मित्र वेख = धोड़ना त्यागना ।
- ४५ वैव = वरह = बहारे भी धुली । सं विपय का बालायेठ विव्य वैव > वैव = टुक सहाय (पासह) ।

"महद्धम नरपद्म दोम बजो ह्यत्र वसत वस कारो ॥" (Kirīṭitā 2.190 Sanjivani edition) In this line all seven words excepting the first depend on their meaning on a good Prākṛit dictionary e. g.

नरपद्म—ई नरकपति—या नरपद्म, नरपद्म, नरपद्म—नरपद्म—नरपद्म king of hell;

दोम—to cause pain from Sanskrit root दृ—Prākṛit वसवसे दृम (Iambhandra 1.23)

बजो—Skt. वज्र—Prākṛit बजो;

ह्यत्र=hastily, in quick succession; desya Prākṛit ह्यत्र (Desināma-māla, 8.59, See Pīṣāḍa).

Such a seemingly simple word cannot be understood without the help of Prākṛit. In Hindi it means a hand, but its Prākṛit meaning was also as shown above, and that alone suits the context.

वस—an Avahaṭṭa form of Arabic *hadās* signifying *hadārat* or showing the spirits.

वस=shows; from Skt. वसई—Prākṛit वस—Avahaṭṭa वस

कारो=spirits living in hell, from Skt. कारक>Prākṛit कारव (Pīṣāḍa)

The line thus means—the Mahaddum (religious priest) like the king of hell was frightening the people when quickly he was showing the spirits by performing *hadās*. This is an example which brings home how the problem of understanding the Middle Indo-Aryan literature is closely connected with our understanding of the Prākṛit and Apabhraṃśa literature. For this purpose the Pīṣāḍa-Mahābhāṣya Dictionary will prove of inestimable help. With this hope it is now being offered in a second edition which the Prākṛit Text Society is making available in an accessible form.

The editors wish to record their grateful thanks to Shri Kapil Deva Giri Sahityacharya, Asstt. Research Scholar P. T. S. and Pt. Madhavacharya, Parkashittha Vimanacharya who have put in their best efforts in correcting the proofs of the work with praise worthy devotion.

24-8-1968.

VASUDHVA S. AGRAWALA

Professor

BANARAS HINDU UNIVERSITY

प्रमाण-ग्रन्थों [रेफरेन्सेज] के संकेता का विवरण

[illegible][illegible]

+ इन संकेतों में मुख्यतः सम्पन्न और गरीब के बहुत समान होने पर भी सुनों के बहुत विभिन्न हैं। इसी दर की वृद्धि के कारण से ही राज्य विभाजित है। कभी ना सुनाई देता पर किताब में। प्रकृति विज्ञान की जड़ें पर सम्पन्न के प्रथम रूप से व्यापक की गई हैं।

† एवम् अमुकैः कृतमन्त्राद्यैः प्रेमपत्रं नीतिः, श्री. ए. एम्. एम्. श्री. के. प्राम.

संकेत	ग्रन्थ का नाम	संस्करण धारि	वित्तक कीट विर कर है वह
भाष	= भाषाभाष्यकरण	राय बालाभाई कुरुमयाई, ग्रहमहाबाद, संवत् १८६२	गाथा
भाषा	= भाषाभाषा	मानिकपर्व-विर्गवद-वीन-द्विभाषा संवत् १८७१	"
भाष	= भाषावचमुद्र	हस्तलिखित	"
भाषादि	= भाषावच टिप्पण	देवचन्द भासयाई	"
भाषादी	= भाषावच दीपिका	विजयदासभूषि द्विभाषा (हस्तलिखित टीका)	"
भाषाभा	= भाषावचमुद्र पर्व भाषा	हस्तलिखित	"
भाषाभा	= भाषावचमुद्र मध्यपरि दीपिका	हस्तलिखित	"
हिरि	= हस्तिलिखितपत्रक	मीनसिंह भाटके, बम्बई, संवत् १८१८	गाथा
हक	= हि कोम्बोशास्त्री बैरु उदिर	० डॉ. डबल्यु. किरकेन-कुल लाहौरविष १८२	"
हल	= उत्तराध्ययनमुद्र	१ राय बलराजसिंह बहादुर, बलकला, संवत् १८१९ अमृतन, नावा २ स्व-संपादित बलकला १८११	"
हल	= उत्तराध्ययन मुद्र	+ १ हस्तलिखित देवचन्द भासयाई	"
उत्तर का	= " "	डी जे कारपेडियर-संपादित १८२१	"
उत्तरा	= उत्तराध्ययनसिद्धि	हस्तलिखित	"
उत्तर	= उत्तराध्ययन	निर्णयवापर प्रेस, बम्बई, १८१२	पुस्तक
उत्तर	= उत्तराध्ययन	हस्तलिखित	गाथा
उत्तर टी	= उत्तराध्ययन-टीका	हस्तलिखित	मूल-गाथा
उत्तरप	= उत्तराध्ययनटीका	† " "	गाथा
उत्तर पु	= उत्तराध्ययन	मीन विद्या-प्रचारक बर्न पासीलका	पुस्तक
उत्तर	= उत्तराध्ययनकार	देवचन्द भासयाई पुस्तकालय डॉ. बम्बई, १८१४	संरा संरय
उत्तर	= उत्तराध्ययन	० डॉ. एम्. पी. टिक्टो-संपादित १८११	"
उत्तर	= उत्तराध्ययन	† हस्तलिखित	गाथा
उत्तर	= उत्तराध्ययन	मनमुक्तयाई मय्याई, ग्रहमहाबाद संवत् १८१७	"
उत्तर	= उत्तराध्ययन	० एडिटाईक सोसाइटी बंगाल कलकत्ता, १८८	"
उत्तर	= उत्तराध्ययन	विजय संस्करण-विपीन	"
उत्तर	= उत्तराध्ययन	भासभाटव समिति बम्बई, १८१८	"
उत्तर	= उत्तराध्ययन	"	"
उत्तर	= उत्तराध्ययन	० डॉ. ड. म्युने-संपादित लाहौरविष, १८८१	"
उत्तर	= उत्तराध्ययन	० डॉ. एम्. जकोबी-संपादित लाहौरविष, १८७१	"
उत्तर	= उत्तराध्ययन	० हावेन-ओरिएण्टल सिटीय, १८०१	"
उत्तर १	= कर्मवच पत्रा	० धारवालय-वीन-मुस्तक-प्रचारक मल्लन भाषण १८१५	गाथा
उत्तर २	= कुरुप	० " "	"
उत्तर ३	= तीछरा	० " "	१८१८ "
उत्तर ४	= बीवा	० " "	१८११ "

+ मुद्राभाषा अथवा प्रकाश-कृत टीका है विमुक्ति यह उत्तराध्ययन मूल की हस्त-लिखित प्रति भाषाई अनेकजन्म-पत्रिका के संसार से अनेक पीढ़ी के है। बीटी द्वारा प्राप्त हुई थी इस प्रति के पत्र १८११ है।

† अनेक पीढ़ी के है बीटी द्वारा प्राप्त है।

उद्धृत	ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि	जिसके अंक वि- पर हैं वह
नव	= नवतरङ्गप्रकरण	१ वात्मानन्द-शैल-सभा भावनगर २ आद्य-शैल चर्म प्रवर्तक-सभा, अहमदाबाद १९९६	पाया "
माट	= † मल्लकीयमाहृतप्रबन्धसूची		
मिह	= मिहोपाध्याय	हस्तलिखित	उद्देश
मिर	= मिरयाकलीसूत्र	१ हस्तलिखित २ प्रायमोक्ष-समिति बम्बई १९२२	मर्म, ग्रन्थ "
मिवा	= मिवाविरामकुलक	† हस्तलिखित	पाया
मिली	= मिलीबिंदु	हस्तलिखित	उद्देश
पलम	= पलमचरित	शैल-चर्म-प्रसारक-सभा भावनगर, प्रथमावृत्ति	पर्व पाया
पलम	= पलमचरित	प्राकृत-अर्थ-परिचय भागछठो-५	"
पंच	= पंचसंग्रह	१ हस्तलिखित २ शैल वात्मानन्द सभा भावनगर, १९१९	हार्द, पाया
पंचबा	= पंचकण्ठप्रबन्ध	हस्तलिखित	
पंचव	= पंचवस्तु	"	हार्द
पचा	= पंचाक्षरप्रकरण	शैल-चर्म-प्रसारक सभा भावनगर, प्रथमावृत्ति	पचाक्षर
पंचु	= पंचकण्ठप्रबन्ध	हस्तलिखित	"
पनि	= पंचनिर्देशप्रकरण	वात्मानन्द-शैल सभा भावनगर, संस्करण १९७४	पाया
परा	= पंचरात्र	विशेष संस्कृत-विशेष	सूत्र
पंचु	= पंचसूत्र	हस्तलिखित	सूत्र

† संस्कृत माहट्टेच बहोच में स्थित एक सुप्रसिद्ध-शैल पुस्तक में प्रकृत जिसके पूर्व भाग में जमवीरवर का प्राकृत व्याकरण और उत्तर भाग में 'प्राकृतप्रविवर्धन' टीपिक से अतिवचनों से लदित प्राकृत शब्दों की एक छोटी सी सूची रखी हुई है। इस सूची में उन शब्दों के जो अस्ति नाम और प्रकाश वि-ये हैं वे ही नाम तथा प्रकाश शब्दों के लो प्रस्तुत कोप में भी व्याख्यान 'पत्र' के बार लो भे हैं। एक पुस्तक में उन शब्दों के अस्ति नामों तथा अस्तरणों का विवरण इस तरह है,—

माहटी	for	माहटीमाहव	Calcutta Edition of 1830
मैत्र	"	मैत्रकचमीकम	" 1854
मिह	"	मिहमीरली	" 1880
सप्रिह	"	सप्रिहवर्ण	Edition of Asiatic Society
उत्तर	"	उत्तरपमचरित	Calcutta Edition of 1881
पलम	"	पलमचरि	" 1882
पुष्प	"	पुष्पकटिक	" 1882
पल	"	पलकप्रकरण	Mr Cowell's Edition of 1854
राहु	"	राहुपत्रा	Calcutta Edition of 1810
मानिक	"	मानिकगणित	Tulberg's Edition of 1860
मैरि	"	मैरिपत्र	Muktaram's Edition of 1885
पात्र	"	संक्षिप्तपत्राव्यय	
महामी	"	महामीरपत्र	Trithen's Edition of 1848
मिह	"	मिह	M.s.

† अथर्व के. प्र. मोटी हार्द प्रा. ।

उचित	ग्रन्थ वा नाम	संस्करण आदि	बिछके धंक विप एव हैं वह	
मणि	=	मणिसप्तकहा	० १ बा. एच्. जेकोबी-संपादित १९१५ ० २ गायकबाइ थोरिएण्टन सिरीज १९२३	
माह	=	माहकृतक	संभाजाल गोबर्धनदास बम्बई, १९१३	पाया
मयस	=	मापारहृत्य	छेठ मन्तुजमाई मयुमाई मयुमहाबाय	"
मंगल	=	मंगलकुसुम	† हस्तलिखित	"
मध्य	=	मध्यमव्यायोग	विषय-संस्कृत-सिरीज	---
मन	=	मनोनिधनुमावना	† हस्तलिखित	छठ
महा	=	महाउपेख्यामले एरस्यानुबम् हन् महापटनी	छेठ बां एच्. जेकोबी-संपादित लाइपजिब १८५६	गाथा
महाग्नि	=	महाग्निशोधन	हस्तलिखित	ग्रन्थपत्र
मा	=	मायबिन्दुतिमिब	मिर्णसागर प्रेस बम्बई १९१३	छठ
माल	=	मालतीमाहव	" "	"
मुण्डि	=	मुम्बिउलस्वामिचरित	हस्तलिखित	"
मुद्रा	=	मुद्राप्रकाश	बम्बई-संस्कृत-सिरीज १९१३	पाया
मुम्ब	=	मुम्बकटिक	१ मिर्णसागर प्रेस बम्बई, १९१६ २ बम्बई-संस्कृत-सिरीज १८६६	छठ
मे	=	मैक्लिफस्यारा	माणिकबन्ध-विषय-बैन-ग्रन्थमाला बम्बई १९७३	"
मोह	=	मोहप्रान्तप्रजय	गायकबाइ थोरिएण्टन सिरीज नं १ १९१८	"
मठि	=	मठिदिश्रापंकाठिका	† हस्तलिखित	---
रंभा	=	रंभासंनदी	० मिर्णसागर प्रेस बम्बई, १८ ९	पाया
रत्न	=	रत्नप्रमकुसुम	† हस्तलिखित	"
रमण	=	रमणदेवदीनबहा	स्व-संपादित बनारस १९१८	पाया
राज	=	राजबालराजेश्वर	० बैन-प्रकाश प्रिन्टिंग प्रेस, रतनाम	छठ
राय	=	रायपदेसोमुच	१ हस्तलिखित २ बायमोवय-समिति बम्बई, १९२३	
रविम	=	रविमली-हृत्य (ईहमुच)	गायकबाइ थोरिएण्टन सिरीज नं ५ १९१५	पत्र
लकु	=	लकुसंघर्षली	मीमिडि मालोक बम्बई, १९ ८	छठ
लहुच	=	लहुचमिठमिठ लयण	स्व-संपादित कलकत्ता, लवत् १९७८	पाया
लीप	=	लीपप्रकाश	देवचन्द लालबाई	"
बला	=	बलासंग	एथिपेटिक सोसाइटी बीपाल कलकत्ता	
बन	=	बनहारमूच लमप्य	१ हस्तलिखित २ गुनि मालोक संपादित भावनगर, १९२६	छठ
बगु	=	बगुदेवहिरी	१ हस्तलिखित २ भावमानन्द लम	---
बा	=	बापुष्टकाभ्युपासन	मिर्णसागर प्रेस बम्बई, १९१३	
बाप	=	बापुष्टकापरा	" १९१६	छठ
वि	=	विषयव्यापारदेवकुसुम	† हस्तलिखित	"

पंक्ति	ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि	प्रिन्ट के संकट दिए गए हैं वह
सम्मत	= सम्मत्तवस्तुनिष्ठ सटीक	दे ना पुस्तकोद्धार-पंड बम्बई, १८१९	पत्र
सम्प	= सम्पत्तवस्तुनिष्ठ पचीसो	प्रभासास गोवर्धनदास बम्बई, १८१९	गाथा
सम्पत्त	= सम्पत्तवस्तुनिष्ठ विधिवस्तु	† हस्तलिखित	"
सा	= सामान्यपुत्रोपदेशसूक्त	"	"
साध	= साधुवस्तुनिष्ठवस्तुनिष्ठ	बीहरी बुन्देलान पभासास बम्बई, १८१९	"
सिक्का	= सिक्कावस्तु	† हस्तलिखित	"
सिक्का	= सिक्कावस्तुनिष्ठवस्तु	स्व-संपादित कलकत्ता संवत् १८७८	"
सिद्धि	= सिद्धिवस्तुनिष्ठवस्तु	दे ना पुस्तकोद्धार पंड बम्बई, १८२९	"
सुख	= सुखवस्तुनिष्ठ (सप्तसप्तम्यनस्य)	हस्तलिखित	अध्ययन गाथा
सुख	= सुखवस्तुनिष्ठ	आयमोदय-समिति बम्बई, १८१८	पाठ्य
सुख	= सुखवस्तुनिष्ठ	स्व-संपादित बंगाल १८१८-१८	पुष्ट
सुख	= सुखवस्तुनिष्ठ	पैल-विश्व-साहित्य-शास्त्र-माला बंगाल १८१९	परिच्छेद गाथा
सुख	= सुखवस्तुनिष्ठ	+ १ दीपसिद्धि माणिक बंबई १८१९	सुस्तकर्म ग्रन्थ
सुख	= सुखवस्तुनिष्ठ	२ आगमोदय-समिति बंबई, संवत् १८१८	"
सुख	= सुखवस्तुनिष्ठ	३ हस्तलिखित	सुस्तकर्म
सुख	= सुखवस्तुनिष्ठ	४ आयमोदय-समिति बंबई, संवत् १८७९	गाथा
सुख	= सुखवस्तुनिष्ठ	५ दीपसिद्धि माणिक " " १८१९	"
सुख	= सुखवस्तुनिष्ठ	दे ना पुस्तकोद्धार पंड बंबई, १८२२	पत्र
सुख	= सुखवस्तुनिष्ठ	P 1 5	
सुख	= सुखवस्तुनिष्ठ	गिरिदासपर प्रस बंबई १८१९	आचार्य पत्र
सुख	= सुखवस्तुनिष्ठ	गिरिदास-संस्कृत-विशेष	पुष्ट
सुख	= सुखवस्तुनिष्ठ	मायकवाक मोरियुष्टन विदेश नं १ १८२२	"
सुख	= सुखवस्तुनिष्ठ	"	"
सुख	= सुखवस्तुनिष्ठ	† हस्तलिखित	गाथा
सुख	= सुखवस्तुनिष्ठ	"	
सुख	= सुखवस्तुनिष्ठ	१ दीपसिद्धि माणिक-संपादित १८०	पत्र, सुख
सुख	= सुखवस्तुनिष्ठ	२ बंबई-संस्कृत-विशेष १८	"
सुख	= सुखवस्तुनिष्ठ	गिरिदासपर प्रस बंबई, १८ १	पुष्ट

† पत्रों में पुत्र के से मोटी छाप प्राप्त ।

‡ देवी 'पत्र' के नीचे भी टिप्पणी ।

+ सुख के संकट इन दोनों में मिल गये हैं, अलग-अलग में सुख के संकट के लिए दिए हैं ।

दूसरी मुख्य कठिनाई धर्म-धर्म के बारे में थी। मेरी धार्मिक व्यवस्था ऐसी नहीं थी कि इस महान् धर्म की तय्यारी के लिए पुस्तकालय आधारक साधनों के दौर सहस्रक भनूयों के धार्मिक प्रकाशन का भार भी बहुत कम रहूँ। दौर मुक्त में किसी से धार्मिक सहायता लेना मैं पसन्द नहीं करता था। इससे इन कठिनाई को दूर करने के लिए धार्मिक प्रकाश बनाने की योजना की या जिसमें उन धार्मिक प्रकाशों का हर पक्षोक्त कार्य में इस संपूर्ण धर्म की एक कोणी देने की व्यवस्था थी। इससे मेरी एक कठिनाई सम्पूर्ण हो नहीं जित्नु बहुत-बहुत कम हो गई। इस योजना को चलते हुए एक सफल बनाने का धार्मिक धर्म कमकता न दिन भेदाभार-धीर्य के सम्मुख मेरा धीमापन सेठ नयचममहा जेठामाह की है। जिसमें शुरू से ही इसकी संरचना का भार अपने पर भेजे हुए मुझे हर तरह से इस कार्य में सहायता की है, जिसके लिए मैं उनका चिर-कृतज्ञ हूँ। इसी तरह अहमदाबाद निवासी प्रिये धीपू फराभावात्ममाई प्रेमचन्द गोरी जी, ए एम्बेल् को भी मैं बहुत ही ऊँच हूँ कि जिसमें कई मुद्रित पुस्तकों में ही प्रकाश शब्द-सूचियों पर मैं प्रशंसित किया गया एक बड़ा शब्द-संग्रह मुझे दिया था जहाँ ही महा बलि मय समय पर प्रकाश की अपने हस्त-लिखित तथा मुद्रित पुस्तकों का पोषक कर दिया था और एक योजना में प्रकाश-सम्पादक बड़ा होने का हार्दिक प्रयत्न किया था। प्रस्त-स्वरणीय पुस्तकालय पुस्तकें पुस्तकालय आश्रयीयिजयजी महाराज पुस्तकालयों की पञ्चमहाहन मूरिका में मु अद्वारक को अन्यायिप्रमूरिका तथा स्वतन्त्र स्माराक विद्यार्थी धीमुत्त अम्बिक, प्रमादजा भाजयजी का भी मैं हरय न उत्कार मानता हूँ कि जिसको जेष्ठान में प्रथम प्रकाश की बुद्धि द्वारा मुझे इस कार्य में सहायता मिली है। उन महापुरुषों को जिसके शुभ मान इसी धर्म में धर्म्य को हुई धार्मिक-प्रकाश-सूची में प्रकाशित किए गए हैं। अनेकानेक समय-काल है कि जिसमें धार्मिक धर्मार्थिक संस्था में इस पुस्तक की कार्यान्वय कर रहा यह कार्य सफल कर दिया है। यह पर मेरे मित्र धीमुत्त सेठ गिरधरलाल त्रिभुवनलाल धीर धीमापन बाबू डाउचन्दजा मिथी क नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इन दोनों महापुरुषों में अपनी अपनी शक्ति के अनुसार समेट संस्था में इस कार्य की कार्यान्वय कर देने के धार्मिक मुझे इन कार्य के लिये समय समय पर बिना मूल्य कर देने भी भी ऊँचा भी थी। यह कहने में कोई घमृष्ट नहीं है कि यदि एक सत्र महापुरुषों की यह सहायता मुझे प्राप्त न हुई होती तो इस कार्य का प्रकटन मेरे लिए मुश्किल ही नहीं असंभव था।

यहाँ इस बात का भी उल्लेख करना उचित मान रहा है कि धर्म से करीब दस वर्ष पहले मेरे महापुस्तकालय प्रिये प्रोफेसर मुरलीधर बनर्जी एच. ए. महापुस्तक से धीर मेरे निकट एक प्रकाश विमृष्ट पत्रिका का प्रकाश ईश्वर कोप विचार करने के लिए कृतकता प्रियेविद्यालय में उपस्थित किया था। परन्तु उन समय वह अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया गया था। इनके कई वर्ष बाद मेरे इस प्रकाश-विमृष्ट कोप का प्रथम भाग प्रकाशित हुआ था उस दिनांक कृतकता-प्रियेविद्यालय के कर्तुवत् न्याय्य धर्मोत्तरक बलिधर काशुपान मुन्शी रहते संवत् १९१६ कि उन्होंने तुरंत ही विद्यविद्यालय की तरफ में हुए धर्मों के उत्तरावधान में इसी तरह के प्रमाण-मुक्त एक प्रकाश-विमृष्ट कोप सेठान्धर धीर बलिधर कले न न नवन प्रकाश ही प्राप्त करवाया बलिधर उनकी कार्य रूप में परिणत करने के लिए उन्मुख व्यवस्था भी करवाई है। इसके लिए उनकी विज्ञान धर्म्यता विवे कार्य कर है। यहाँ पर मैं कृतकता-विद्यविद्यालय की भी प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता कि जिसका हाथ मुझे इन कार्य में समय-समय पुस्तक धर्म की अपने सुविचार मिली हैं। जिससे यह कार्य भेदा-वृत्त श्रेष्ठता से पूर्ण हो गया है। इस कोप के उपोद्घात में सम्मान रखनासे धर्मक ऐतिहासिक बलिधर प्रशंसा को मुन्यमाने में धर्म प्रोफेसर मुरलीधर बनर्जी एच. ए. मे अपने कोमल समय का बिना संशय भी न देकर मुझे जो सहायता की है सफल निम्न में उनका धन्य करण से आभार मानता हूँ।

इस कोप के मुद्रण-कार्य के धारण से लेकर प्रायः दोन हीन तक समय समय पर मिले मिले जो धार्मिक हस्त-लिखित धीर बुद्धि पुस्तकें या संस्करण मुझे प्राप्त होते जाने से मैंने धीरे धीरे उनकी भी समेट उपयोग इन कोप में किया जाता था। यहाँ कारण है कि वह एक के धर्मोत्तरक कोप के सत्र उनके रैकटों के साथ साथ प्रस्तुत कोप में ही व्यवस्थान धार्मिक कर दिए जाते थे और मुद्रित कोप के धर्मों का एक धर्म संघट तय्यार किया जाता था की परिधि के रूप में इसी धर्म में धर्म्य प्रकाशित किया जाता है। ऐसा करने हुए एतदीय धर्म के अपने एक दिन धार्मिक पुस्तकों का उपयोग किया गया था उनकी एक धर्म्य धर्मों की धर्म्य धर्म में ही गई थी। उनके बाद के धार्मिक पुस्तकों की धर्म्य धर्मों इनमें न देकर धर्म्य धर्मों की (विशेष धीर एतदीय धर्म में प्रकाशित) धर्मियों की को एक साधारण धर्मों यहाँ की जाती है जहाँ मैं उन पुस्तकों का भी बलिधर से व्यवस्थान धर्मोत्तरक किया गया है जिससे पाठकों की धर्म्य धर्म्य रैकट-धर्मियों इनकी भी तकवीक भी है।

यह परिधि में केवल उन्हीं धर्मों की स्थान दिया गया है जो धर्म-संग्रह में न आने के कारण एकदम नष्ट हो या धर्म्य धर्म की लिपि या धर्म में धर्म्य धर्म्य धर्मों की स्थान विद्योता रहते हैं। केवल रैकट की विशेषता को लेकर किसी राज्य को परिधि में पुनर्प्राप्ति नहीं की गई है।

१. 'धर्म-प्रकाश सूची' का संघ द्वितीय संस्करण में नहीं छापा गया है—संस्करण।

२. 'परिधि' का संवत् १९१६ द्वितीय संस्करण में व्यवस्थान धर्मोत्तरक कर दिया गया है—संस्करण।

दूसरी मुख्य कठिनाई अर्थ-व्यय के बारे में थी। मेरी धार्मिक व्यवस्था ऐसी नहीं थी कि इस महान् संघ की कम्पाटी के लिए पुस्तकालय धारण करने के लिए सहायक समुच्चयों के वितरित प्रकाशन का भार भी वहन कर सकूँ। धीरे-धीरे मैं किसी से धार्मिक सहायता लेना ही पड़ने लगी करता था। इससे इन कठिनाई को दूर करने के लिए अग्रिम प्राहक बनाने की योजना की गई जिसमें उन अधिम पाठकों को हर पत्रोपचार साथ में इस संघर्षी राज्य की एक कपी देने की व्यवस्था थी। इससे मेरी उक्त कठिनाई सम्पूर्ण हो नहीं किन्तु बहुत-बहुत कम हो गई। इन योजनाओं को इतने दूर तक सफल बनाने का धार्मिक वय कमकला के तीन शेषात्मक-वीर्य के प्रपश्यन सेता श्रीमान् सेठ जरोत्तमभाई जेटाभाई को है। जिन्होंने मुझे से ही इसकी संरक्षण का भार अपने पर लेते हुए मुझे हर तरह से इस कार्य में सहायता की है, जिसके लिए मैं उनका निरन्तर हूँ। इसी तरह आहमदाबाद-निवासी पटेल श्रीमान् कल्याणदासभाई प्रेमचन्द योशी जी, ए एम् एम् यो जी भी मैं बहुत ही आग्रह हूँ कि जिन्होंने कई सुविध पुस्तकों में से ही प्राहक राज्य-सुविधों पर से प्रेषित किया गया एक बड़ा शब्द-संग्रह मुझे दिया था, इतना ही नहीं बल्कि समय-समय पर प्राहक की अनेक हस्त-लिखित तथा मुद्रित पुस्तकों का योगदान कर दिया था और उक्त योगदान में प्राहक-सम्मान बढ़ा देने का हार्दिक प्रयत्न किया था। प्रातः स्मरणोपचार पुनरावृत्ति सुनिश्चित आशुमतीविशेषज्ञी महाशय पुनः बैसाबाय भी वज्रयमोहन सूरिजा ने मु. मधुरक बोडिनचार्यदमूरिजी तथा स्वतन्त्र सम्पादक विशदय श्रीमान् अस्मिन् प्रसादजी पाण्डेयजी का भी मैं हृदय से उपकार मानता हूँ कि जिसने मेरे लिए से अधिम प्राहकों की सुविधा प्राप्त मुझे इस कार्य में सहायता मिली है। उन महाशयों को जिसके नाम इनके राज्य में अन्य भी हुई अधिम-प्राहक-सुविध में प्रकाशित किए गए हैं अनेकानेक बन्धन हैं कि जिन्होंने बन्धनिक बन्धनिक संस्था में इस पुस्तक की कार्याय जारी कर मेरा यह कार्य सफल कर दिया है। यह पर मेरे निज श्रीमान् सेठ गिरधरदास शिंदेभाई और श्रीमान् बाबू आहमदाबाद सिंधी के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इन दोनों महाशयों ने अपनी अपनी शक्ति के अनुसार सघट्ट संस्था में इस कार्य की कार्याय जारी रखे के धार्मिक मुझे इस कार्य के लिये समय-समय पर बिना कुछ श्रद्धा देने की भी कृपा की थी। यह कहने में कोई बाधुक्ति नहीं है कि यदि उक्त सब महाशयों की यह सहायता मुझे प्राप्त न हुई होती तो इस कार्य का प्रकाशन मेरे लिए सुविश्व ही नहीं संभव था।

यहाँ इस बात का भी उल्लेख करना उचित जान पड़ता है कि आज से करीब दस वर्ष पहले मेरे छात्राध्यक्ष पटेल प्रोफेसर सुरेश्वर वतजी एच. ए. महाशय ने धीरे-धीरे निरन्तर एक प्रस्ताव विधित पद्धति का प्राहक इतिहास को संपादक करने के लिए कठकथा विश्वविद्यालय में स्थापित किया था परन्तु उस समय बहुत परिचित काल के लिए स्थापित कर दिया गया था। इसके कई वर्ष बाद जब मेरे इस प्राहक विधि कोर का प्रथम सत्र प्रकाशित हुआ तब उसे देखकर कठकथा-विश्वविद्यालय के कर्मचार, कर्मचारी, प्रोफेसर, प्रोफेसर आशुतोष मुकुर्जी इन्हें संग्रह हुए कि जिनसे तुरन्त ही विश्वविद्यालय की तरफ से हम दोनों के तरफावधान में इसी तरह के प्रमाण-पुस्तक एक प्राहक-विश्वविद्यालय कोर ईस्टर की प्रकाशित करने का ने बनाने प्रस्ताव है। प्रातः करवाया बल्कि उसकी कार्य-क्रम में परिचित करने के लिए अन्तुक्त व्यवस्था भी करायी है। इसके लिए उनकी निज बन्धनिक विधि जारी कम है। यहाँ पर मैं कठकथा-विश्वविद्यालय की भी प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता कि जिसके द्वारा मुझे इन कार्य में समय-समय पर पुस्तक धारि की अनेक सुविधाएँ मिली हैं जिससे यह कार्य संपन्न-हस्त शीघ्रता से पूर्ण हो सका है। इस कार्य के उपोद्घात से सम्बन्ध रखनवाले अनेक ऐतिहासिक बलि प्रशंसकों को सुनमाने में पट्ट म प्रोफेसर सुरेश्वर वतजी एच. ए. ने अपने बीसवीं समय का बिना संकीर्ण भीषण देख मुझे जो सहायता की है उसका निमित्त मैं उनका सत्कार करने से क्षमता मानता हूँ।

इस कार्य में मुद्रण-कार्य के धारण से लेकर प्रातः शेष होने तक समय-समय पर मैंने वेले जो धार्मिक हस्त-लिखित और मुद्रित पुस्तकों का संस्करण मुझे प्राप्त होने वाले से मैंने वेले वेले अन्य भी सघट्ट उपयोग इस कार्य में किया जाता था। यही कारण है कि सब तरह के प्रमुद्रित प्रातः के शब्द उनके रेकर्डों के साथ साथ प्रमुद्रित होय में ही बन्धनिक धारण कर दिए जाते थे और मुद्रित पत्र के रसों का एक प्रमाण संग्रह तैयार किया जाता था की परिधि के रूप में इसी रूप में सम्बन्ध प्रकाशित किया जाता है। ऐसा करते हुए तुल्य भाग के अपने एक दिन धार्मिक पुस्तकों का उपयोग किया गया था उनकी एक प्रमाण सुची भी तुल्य प्रातः में दी गई थी। उनके बाद के धार्मिक पुस्तकों की समय सुची इतने न देखकर प्रथम की दोनों (विशेष और तुल्य प्रातः में प्रकाशित) सुविधों की जो एक साधारण सुची पढ़ा दी जाती है उसीमें उन पुस्तकों का भी वर्णानुक्रम से व्यवस्थापन समावेश किया गया है जिससे पाठकों को प्रथम प्रमाण रेकर्ड-सुविधा देखने की उपवीड न हो।

उक्त परिधि में केवल उन्हीं शब्दों की स्थान दिया गया है जो पूर्ण-संग्रह में न जाने के कारण एकत्र नये हैं या जाने पर भी लिपि या रूप में पूर्णतः शब्द की प्रयोग विरोधता रखते हैं। केवल रेकर्ड की विरोधता की लेकर किसी शब्द को परिधि में पुनः प्रविष्टि नहीं की गई है।

१. 'अधिम-प्राहक सुची' का संघ द्वितीय संस्करण में नहीं छापा गया है—संपादक।

२. 'परिधि' का संघ द्वितीय संस्करण में व्यवस्थापन समावेश कर दिया गया है—संपादक।

एक वेद भाषा प्राचीन होने पर भी वह वैदिक युग में जन-साधारण की कथ्य भाषा न थी, श्रापि-ल्लेगों की साहित्य-भाषा थी। उस समय जन-साधारण में वैदिक भाषा के अनुरूप अनेक प्रादेशिक भाषाएँ (dialects) कथ्य रूप से प्रचलित थी। इन प्रादेशिक भाषाओं में से एक ने परिमार्जित होकर वैदिक साहित्य में स्थान पाया है। ऊपर वैदिक युग से पूर्व काल में आप हनु प्रथम दल के त्रिस भाषाओं के मध्यदेश के चारों तरफ के प्रदेशों में वसन्तेश्यों का वस्ती किया गया है उन्होंने वैदिक युग अथवा उसके पूर्व-काल में अपने अपने प्रदेशों की कथ्य भाषाओं में दूसरे दल के भाषों की वेश-रचना की तरह, किसी साहित्य की रचना नहीं की थी। इससे उन प्रादेशिक भाषाओं का तात्कालिक साहित्य में कोई निर्वाण न रहने से उनके प्राचीन रूपों का संतुल्य हो गया है। वैदिक काल की ओर इसके पूर्व की इन समस्त कथ्य भाषाओं को सर मियर्सन ने प्राथमिक प्राकृत (Primary Prākṛita) नाम दिया है। यही प्राकृत भाषा-समूह का प्रथम स्तर (First stage) है। इसका समय क्रिस्त-पूर्व २०० से क्रिस्त-पूर्व ६०० तक का निर्दिष्ट किया गया है। प्रथम स्तर की ये समस्त प्राकृत भाषाएँ स्वर और व्यञ्जन आदि के उच्चारण में तथा विभक्तियों के प्रयोग में वैदिक भाषा के अनुरूप थी। इससे ये भाषाएँ विभक्ति-बहुल (synthetic) कही जाती हैं।

वैदिक युग में जो प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ कथ्य रूप से प्रचलित थी, उनमें परवर्ति-काल में अनेक परिवर्तन हुए जिनमें का क आदि स्वरों का शब्दों के अन्तिम व्यञ्जनों का, संयुक्त व्यञ्जनों का तथा विभक्ति और पञ्चन-समूह का होप या रुमान्तर मुख्य हैं। इन परिवर्तनों से ये कथ्य भाषाएँ प्रचुर परिमाण में रूपान्तरित हुईं। इस तरह द्वितीय स्तर (second stage) की प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति हुई। द्वितीय स्तर की ये भाषाएँ जैन और बौद्ध धर्म के प्रचार के समय से अर्थात् क्रिस्त-पूर्व पाठ शताब्दी से लेकर क्रिस्तीय नवम वा दशम शताब्दी पर्यन्त प्रचलित रही। आग्राज महावीर और बुद्धदेव के समय ये समस्त प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ, अपने द्वितीय स्तर के आकार में, मिश्र-मिश्र प्रदेशों में कथ्य भाषा के तौर पर व्यवहृत होती थीं। उन्होंने अपने सिद्धान्तों का उपदेश इन्हीं कथ्य प्राकृत भाषाओं में से एक में दिया था। इतना ही नहीं, बल्कि बुद्धदेव ने अपना उपदेश संस्कृत भाषा में न लिखकर कथ्य प्राकृत भाषा में लिखने के छिपे अपने शिष्यों को आदेश दिया था। इस तरह प्राकृत भाषाओं का क्रमशः साहित्य की भाषाओं में परिवर्तन होने का मूत्रपाव हुआ, जिसके फलस्वरूप परिचय मगध और वुरसेन देश के मध्यवर्ती प्रदेश में प्रचलित कथ्य भाषा से जैनों के धर्म-ग्रन्थों की अर्ध भाषा की और पूर्व मगध में प्रचलित लोक-भाषा से बौद्ध धर्म-ग्रन्थों की पाक्षी भाषा उत्पन्न हुई। पाक्षी भाषा के उत्पत्ति-स्थान के सम्बन्ध में पादचरय विद्वानों का जो मतभेद है उसका विचार हम आगे का कर करेंगे। क्रिस्ताब्द से २५० वर्ष पहले सम्राट् अशोक ने बुद्धदेव के उपदेशों की मिश्र-मिश्र प्रदेशों में बर्हि-बर्हि की विभिन्न प्रादेशिक प्राकृत भाषाओं में सुव्याप। इन अशोक शिखर-लेखों में द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं के अस्तित्व का सर्व-प्राचीन निदर्शन संस्कृत है। द्वितीय स्तर के मध्य मग में—आद्य क्रिस्तीय पंचम शताब्दी के पूर्व में मिश्र-मिश्र प्रदेशों की अपभ्रंश भाषाओं की उत्पत्ति हुई। इस स्तर की भाषाओं में बहुधा विभक्ति का, सब विभक्तियों के द्विवचनों का और आख्यात की अधिकांश विभक्तियों का होप होने पर भी विभक्तियों का प्रयोग अधिक मात्रा में विद्यमान था। इससे इस स्तर की भाषाएँ भी विभक्ति-बहुल कही जाती हैं।

सर मियर्सन ने यह सिद्धान्त किया है कि आधुनिक भारतीय भाषा भाषाओं की उत्पत्ति द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं से, आसकर उसके शेष भाग में प्रचलित विभिन्न अपभ्रंश भाषाओं से हुई है और आधुनिक भाषाओं को 'तृतीय स्तर की प्राकृत (Tertiary Prākṛita)' कह कर निर्दिष्ट किया है। इन भाषाओं की उत्पत्ति का समय क्रिस्तीय दशम शताब्दी है। इनका साधारण अर्थ यह है कि इनमें अधिकांश विभक्तियों का होप हुआ है, एवं भाषाओं की प्रकृति विभक्ति-बहुल न होकर विभक्तियों का होपक स्वरूप शब्दों का व्यवहार हुआ है। इससे ये विश्लेषणशील भाषाएँ (Analytical Languages) कही जाती हैं।

जिस प्रादेशिक अपभ्रंश से जिस आधुनिक भारतीय भाषा की उत्पत्ति हुई है उसका विवरण भाग 'अपभ्रंश' शीर्षक में दिया जायगा।

यदि मेरी आशयका हिन्दी नहीं है तबानि बड़े एकमात्र आचार्य श्री चर्याधिक व्यापक और इसलिये राष्ट्र-धारा के योग्य होने के कारण यही कार्य के लिए विशेष उपयुक्त समझी गई है ।

अस्य में धारों से मेजर अनप्रेत तक की आहत जापाओं के विधिक-विषयक क्षेत्र एवं क्षेत्र-प्राचीन दोनों के (जिनकी मुख्य संख्या बाई बी से भी ज्यादा है) का व्यवस्थापन राज्य राशि से, संरक्षित प्रशिक्षकों से हिन्दी धारों के सभी धारधारक धारधारणों से और संयुक्त समझों से परिपूर्ण इस दृष्टि आहत-योग में विशेष ध्यानधन्यता रखने पर जो जो कुछ अनुभव-व्यापक-गुणक दृष्टिवां का मुझे हुई हो उनको धारधार के लिए विज्ञानों से प्राप्त प्रार्थना करता हुआ यह आशा रखता हूँ कि ये ऐसी धारों के निबन्ध में मुझे बचकें करि पाकि प्रितीयावृष्टि में ठरुआर संशोधन का कार्य करन हो पड़े । जो विज्ञानों में अभिजातों की प्राथमिक धारि से गुणना लेवे, मैं उनका धार-धारक धारूँ ।

अरि मेरी इस दृष्टि से आहत-आश्रित के सम्पादन में कोई भी बहस्यता पहुँचिनी तो मैं धारने इस धार-धारक-धारणी परिधन हो करन करनूँ ।

कचकला
ता १९३८ }

हरगोविन्द दास टि सेठ

प्रथम संस्करण का उपोद्घात

जो माया व्यक्तिगामीन काल में इस देश के चारों ओरों की कल्प माया—बोधधाम की माया—की जिस माया में मगध-महावीर और बुद्ध ने अपने पवित्र सिद्धान्तों का उपदेश दिया था, जिस माया की जैन और बौद्ध विद्वानों ने विविध-विषयक विपुल साहित्य की रचना कर चपनाई है, जिस माया में श्रेष्ठ धर्म-निर्माण द्वारा प्रवर्तित, हाथ आदि प्राप्त किये गये हैं ? महाकवियों ने अपनी अनुपम प्रतिभा का परिचय दिया है, जिस माया के मीलित साहित्य के आधार पर संस्कृत के अनेक उत्तम ग्रंथों की रचना हुई है संस्कृत के नाटक ग्रंथों में संस्कृत-निर्मित जिस माया का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है, जिस माया में भारतवर्ष की वर्तमान समस्त धार्मिक भाषाओं की उत्पत्ति हुई है और जो भाषाएँ भारत के अनेक प्रदेशों में आज तक भी बोली जाती हैं "न मम भाषाओं का साधारण नाम है प्राकृत, क्योंकि ये सब भाषाएँ एकमात्र प्राकृत के ही विभिन्न रूपान्तर हैं जो समय और स्थान की भिन्नता के कारण उत्पन्न हुई हैं। इसीसे इन भाषाओं के व्यक्ति-बाधक नामों के आगे 'प्राकृत' शब्द का प्रयोग आवश्यक किया जाता है जैसे प्राचीन प्राकृत चार्ल या चर्वमागधी प्राकृत पाळी प्राकृत पञ्जाबी प्राकृत, गौरीसी प्राकृत, महापद्मी प्राकृत, अपभ्रंश प्राकृत, हिन्दी प्राकृत बंगला प्राकृत आदि।

भारतवर्ष की अवाचीन और प्राचीन भाषाएँ और उनका परम्पर सम्बन्ध

भाषावत्त्व के अनुसार भारतवर्ष की आधुनिक कल्प भाषाएँ इन पाँच भागों में विभक्त की जा सकती हैं—(१) आर्य (Aryan) (२) द्राविड (Dravidian) (३) गुण्डा (Gunda) (४) मन्-क्वेर (Mou-khmer) और (५) तिबेट-चीन (Tibeto-Chinese)।

भारत की वर्तमान भाषाओं में मगधी बँगला, आड़िया, बिहारी, हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, पंजाबी, सिन्धी और कश्मीरी भाषा आर्य भाषा से उत्पन्न हुई हैं। पारसा तथा अरबी आदि अनेक आधुनिक युरोपीय भाषाओं की उत्पत्ति भी इसी आर्य भाषा से है। भाषा-शास्त्र के वैदिक भाषा-शास्त्रज्ञों का यह अनुमान है कि इस समय विश्विज्ञ और बहु-दूरदर्शी भारतीय आर्य-भाषा भाषा समस्त आर्यों और एक युरोपीय भाषा भाषी सबके आदिवासी एक ही आर्य-वंश से उत्पन्न हुई हैं।

तैत्तिरीय, सामिक और महाभारत प्रमुख भाषाएँ द्राविड भाषा के सम्बन्ध में हैं; कुछ तथा सौमात्री भाषा गुण्डा भाषा के सम्बन्ध में हैं, कश्मीरी भाषा मन्-क्वेर भाषा का और ओटाणी तथा नागा भाषा तिबेट-चीन भाषा का निर्वरीत है। इन समस्त भाषाओं की उत्पत्ति किसी आर्य भाषा से सम्बन्ध नहीं रखती, अतएव ये सभी अनार्य भाषाएँ हैं। यद्यपि य अनार्य भाषाएँ भारत के ही दक्षिण, उत्तर और पूरव भाग में बोल जाती हैं तथापि अरबी आदि सुदूरदर्शी भाषाओं के साथ हिन्दी आदि आर्य भाषाओं का ओ देश-गत एक-वचन होता है इन अनार्य भाषाओं के साथ वह सम्बन्ध नहीं बना जाता है।

ये सब कल्प भाषाएँ आज तक जिस रूप में प्रचलित हैं, पूर्वकाल में उसी रूप में न थी, क्योंकि कोई भी कल्प भाषा कभी एक रूप में नहीं रहती। समय-वस्तुओं की तरह इसका रूप भी सर्वथा बदलता ही जाता है—हय, काल और व्यक्तिगत उच्चारण के भेद से भाषा का परिवर्तन अनिवार्य होता है। यद्यपि यह परिवर्तन जो लोग भाषा का व्यवहार करते हैं उनके द्वारा ही होता है तथापि उस समय वह ध्वनि में नहीं आता। पूर्वकाल की भाषा के संरक्षित चारों ओर का गुण्डा करन पर चार में ही रह जाता आता है। प्राचीन काल की जिन भारतीय भाषाओं के आदर्श संरक्षित हैं—जिन भाषाओं ने साहित्य में स्थान पाया है, उनके नाम ये हैं—वैदिक संस्कृत, शौरिक संस्कृत, पाळी, अरोक क्वि तथा उसके बाद की क्वि की भाषा और प्राकृत भाषा-समूह। इनमें प्रथम की दो भाषाएँ कभी उन साधारण की कल्प भाषा न थी कल्प संस्कृत—साहित्यिक भाषा—ही थी। अक्षरिण भाषाएँ कल्प और लेख्य समय रूप में प्रचलित थी। इस

समय व समस्त भाषाएँ कथ्य रूप से व्यवहृत नहीं होतीं इसी कारण व मृत भाषा (dead languages) कहलाती हैं। वस्तु वैदिक आदि सब भाषाएँ आर्य भाषा क अन्तर्गत हैं और इन्हीं प्राच्य आर्य भाषाओं में से कई एक क्रमशः अपायपरित होकर आधुनिक समस्त आर्य भाषाएँ उत्पन्न हुई हैं।

ये प्राचीन आर्य भाषाएँ कौन युग में किस रूप में परिवर्तित होकर क्रमशः आधुनिक कथ्य भाषाओं में परिणत हुईं इसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जाता है।

प्राचीन भारतीय आर्य भाषाओं का परिवर्तिक्रम

सर जोर्ज मिणलेन ने अपनी लिपिगणित सर्वेण्डे रिषिया (Linguistic survey of India) नामक पुस्तक में भारतवर्षीय समस्त आर्य भाषाओं के परिणाम का जो क्रम दिखाया है उसका अनुसार वैदिक भाषा उक्त साहित्य-भाषाओं में सर्वे-प्राचीन है। इसका समय अनक विद्वानों के मत में ख्रिस्ताब्द पूर्व वा इकार वर्ष (2700 B C) और दो मंस्कसमूह के मत में ख्रिस्ताब्द-पूर्व वा इकार ती वर्ष (1200 B C) है। यह वै-भाषा क्रमशः परिमार्जित होती हुई आद्योपनिषद् और बाद के निरुक्त की भाषा में और बाद में पाणिनि-व्युक्ति के व्याकरण-द्वारा निष्पन्न होकर औक्तिक संस्कृत में परिणत हुई है। पाणिनि आदि के पद-व्युक्ति के नियम-रूप संस्कृतों को प्राप्त करने के कारण यह संस्कृत कहलाई। मुख्य रूप से 'संस्कृत' शब्द का प्रयोग इसी भाषा के कार्य में किया जाता है। यह संस्कृत भाषा वैदिक भाषा से उत्पन्न होने से उसके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रखने से वैद भाषा के कार्य में भी 'संस्कृत' शब्द बाद के समय से प्रयुक्त होने लगा गया है। पाणिनि के बाद संस्कृत भाषा का कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। यह परिवर्तन होने में—यह भाषा का औक्तिक संस्कृत के रूप में परिणत होने में—प्रायः देह इकार वर्ष लग हैं। पाणिनि का समय गोरखानुकर के मत में ख्रिस्ताब्द-पूर्व सप्तम शताब्दी और बोमसिंह के मत में ख्रिस्ताब्द-पूर्व चतुर्थ शताब्दी है।

यहाँ पर इस बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि डॉ. हार्नेड और सर मिणलेन के मन्तव्य के अनुसार आर्य जातों के हा वृक्ष भिन्न-भिन्न समय में भारतवर्ष में आबये। पहले आर्यों के एक वृक्ष न यहाँ आकर मध्यदेश में अपने उपनिवेश की स्थापना की थी। इसके कई ही वर्षों के बाद आर्यों के दूसरे वृक्ष न भारत में प्रवेश कर प्रथम वृक्ष के स्थान पर वैदिक सभ्यता आर्यों को मध्यदेश की जाते आर अग्रा कर इनके स्थान को अपने अभिन्नार में किया और मध्यदेश को ही अपना वास-स्थान कायम किया। उक्त विद्वानों को यह मन्तव्य इसलिये करना पड़ा है कि मध्यदेश के जाते आर्यों में स्थित पंचाक्ष सिन्धु गुजरात राजपूताना महाराष्ट्र बयोध्या बिहार, बंगाल और उड़ीसा प्रदेशों की आधुनिक आर्य कथ्य भाषाओं में परस्पर जो निम्नता देखी जाती है वहा मध्यदेश की आधुनिक हिन्दी भाषा [प्राच्य हिन्दी] के साथ उन सब प्राचीन की भाषाओं में जो अब पाया जाता है उस निम्नता और अन्त का अन्त कोइ कारण दिखाना असम्भव है। मध्यदेशवासी "न दूसरे वृक्ष के आर्यों का उस समय का जो साहित्य और जो सभ्यता की इन्हीं के क्रमशः नाम हैं वेद और वैदिक सभ्यता।

१. आर्य जातों के आर्य वास-स्थान के विषय में आधुनिक विद्वानों में बहुत मत-भेद है। कोई एलासीनिया को, कोई जर्मनी को, कोई पोलैण्ड को, कोई इंग्लैंड को, कोई इरियन एशिया को, कोई मध्य एशिया को आर्यों की घरेलू निवास-भूमि मानते हैं तो कोई-कौन पंचाक्ष और नमनवी को ही अपना प्रथम वासि-स्थान मानते हैं। सिन्धु एशियांत निवास व्यापार के द्वारा मेडो-पेरिया और ईरान में एक साथ रहे और एन ही वेन-केरी की कल्पना करते थे। उनके बाद वे भी विभिन्न होकर एक एक प्रकार में आर्य और अन्य जातों में मध्यमिस्तात के बीच होकर आद्यजपर्व में प्रवेश और निवास किया। वस्तु में और सिन्धु राज्यों के अनुसार भारतवर्ष की विस्तार के आर्यों का आर्य वासि-स्थान है। कोई-कौन आधुनिक विद्वान् हैं गुजरात की दून कीर के आकार पर आद्यजपर्व से ही दून आर्य जातों का ईरान आदि देशों में वगन और विस्तार-वास स्थित किया है निम्ने एक सारणी प्राचीन मत का सार्वजनिक होता है।

उक्त बह-भाषा प्राचीन होने पर भी यह वैदिक युग में जन-साधारण की कथ्य भाषा न थी, श्रुति-योगों की साहित्य-भाषा थी। उस समय जन-साधारण में वैदिक भाषा के अनुरूप अनेक प्रादेशिक भाषाएँ (dialects) कथ्य रूप से प्रचलित थीं। इन प्रादेशिक भाषाओं में से एक ने परिमार्जित होकर वैदिक साहित्य में स्थान पाया है। ऊपर वैदिक युग से पूर्व काळ में आए हुए प्रथम काल के जिन भाषों के मध्यदेश के चारों तरफ के प्रदेशों में बपन-प्रदेशों का वृत्त-रूप दिखा गया है उन्होंने वैदिक युग अथवा उसके पूर्व काळ में अपने अपने प्रदेशों की कथ्य भाषाओं में दूसरे काल के भाषों की संश्लेषणा की तरह, किसी साहित्य की रचना नहीं की थी। इससे उन प्रादेशिक भाषाओं का वास्तविक साहित्य में कोई निर्धारण न रहने से उनके प्राचीन रूपों का संपूर्ण लोप हो गया है। वैदिक काल की भी इस के पूर्व की उन समस्त कथ्य भाषाओं को सर मिणर्सन ने प्राथमिक प्राकृत (Primary Prākṛit) नाम दिया है। यही प्राकृत भाषा-समूह का प्रथम स्तर (First stage) है। इसका समय क्रिस्त-पूर्व २००० से क्रिस्त-पूर्व ६०० तक का निर्दिष्ट किया गया है। प्रथम स्तर की ये समस्त प्राकृत भाषाएँ स्वर और व्यञ्जन आदि के उच्चारण में तथा विभक्तियों के प्रयोग में वैदिक भाषा के अनुरूप थीं। इससे ये भाषाएँ विभक्ति-बहुल (synthetic) कही जाती हैं।

वैदिक युग में जो प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ कथ्य रूप से प्रचलित थीं, उनमें परवर्ति-शब्द में अनेक परिवर्तन हुए जिनमें का व आदि स्वरों का शब्दों के अन्तिम व्यञ्जनों का, संयुक्त व्यञ्जनों का तथा विभक्ति और वचन-समूह का लोप या रूपान्तर मुख्य है। इन परिवर्तनों से ये कथ्य भाषाएँ प्रचुर परिमाण में रूपान्तरित हुईं। इस तरह द्वितीय स्तर (Second stage) की प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति हुई। द्वितीय स्तर की ये भाषाएँ तीन और चौदह बर्ग के प्रकार के समय से अर्थात् क्रिस्त-पूर्व पाँच सत्राब्दी से लेकर क्रिस्तीय नवम या दशम शताब्दी पर्यन्त प्रचलित रही। मगधवा महावीर और बुद्धदेव के समय ये समस्त प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ, अपने द्वितीय स्तर के आकर में, मिश्र-मिश्र प्रदेशों में कथ्य भाषा के तौर पर व्यवहृत होती थीं। उन्होंने अपने सिद्धान्तों का उपदेश इन्हीं कथ्य प्राकृत भाषाओं में से एक में दिया था। इतना ही नहीं, बल्कि बुद्धदेव ने अपना उपदेश संस्कृत भाषा में न लिखकर कथ्य प्राकृत भाषा में लिखने के लिए अपन शिष्यों को आदेश दिया था। इस तरह प्राकृत भाषाओं का क्रमशः साहित्य की भाषाओं में परिवर्तन होने का सूत्रपात हुआ, जिसके फलस्वरूप परिचय मगध और पुरेन देश के मध्यवर्ती प्रदेशों में प्रचलित कथ्य भाषा से जैनों के धर्म-मुक्तियों की अर्थ भाषा की और पूर्व मगध में प्रचलित लोक भाषा से बौद्ध धर्म-ग्रन्थों की पाष्ठी भाषा उत्पन्न हुई। पाष्ठी भाषा के उत्पत्ति-स्थान के सम्बन्ध में पादशास्त्र विद्वानों का जो मतभेद है उसका विचार हम आगे जाकर करेंगे। क्रिस्ताब्द से २५० वर्ष पहले सम्राट् अशोक ने बुद्धदेव के उपदेशों को मिश्र-मिश्र प्रदेशों में बर्हो-बर्हो की विभिन्न प्रादेशिक प्राकृत भाषाओं में खुदपाया। इन अशोक प्रिन्सिपलों में द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं के असंविध्य सर्व-प्राचीन निर्धारण संश्लेषित हैं। द्वितीय स्तर के मध्य भाग में—प्रायः सिन्धीय पंचम सत्राब्दी के पूर्व में मिश्र-मिश्र प्रदेशों की अपभ्रंश भाषाओं की उत्पत्ति हुई। इस स्तर की भाषाओं में चतुर्थी विभक्ति का, सप्त विभक्तियों के द्विचरों का और आख्यात की अधिकता विभक्तियों का लोप होने पर भी विभक्तियों का प्रयोग अधिक मात्रा में विद्यमान था। इससे इस स्तर की भाषाएँ भी विभक्ति-बहुल कही जाती हैं।

सर मिणर्सन न यह सिद्धान्त किया है कि आधुनिक भारतीय भाषाओं की उत्पत्ति द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं से, खासकर उसके मध्य भाग में प्रचलित सिन्धी अपभ्रंश भाषाओं से हुई है और आधुनिक भाषाओं को तृतीय प्राकृत भाषाओं का तृतीय स्तर का आधुनिक भारतीय भाषाएँ की उत्पत्ति (Tertiary Prākṛit) का समय क्रिस्तीय दशम शताब्दी है। इसका साधारण लक्षण यह है कि इनमें अधिकांश विभक्तियों का लोप हुआ है एवं भाषाओं की प्रकृति विभक्ति-बहुल न होकर विभक्तियों के लोपक स्थान शब्दों का व्यवहार हुआ है। इससे ये विश्लेषणीय भाषाएँ (Analytical Languages) कही जाती हैं।

जिस प्रादेशिक अपभ्रंश से जिस आधुनिक भारतीय भाषा की उत्पत्ति हुई है उसका विवरण भाग 'अपभ्रंश' शीर्षक में दिया जाएगा।

‘तम्’ राज्य का सम्बन्ध संस्कृत से स्पष्ट है इस मत का अनुसरण किया है’। कनिष्क प्राकृत-व्याकरणों में प्राकृत राज्य की व्युत्पत्ति इस तरह की गई है —

‘प्रकृति संस्कृतं तत्र सर्वं तत् प्राकृतं वा प्राकृतम्’ (हिमवत्त प्रा० ७५) ।

‘प्रकृति संस्कृतं तत्र सर्वं प्राकृतमुच्यते’ (प्राकृतचर्चक) ।

‘प्रकृति संस्कृतं तत्र भवन्त्या प्राकृतं स्मृतम्’ (प्राकृतचर्चिका) ।

‘प्रकृतेः संस्कृतानाम्पु विहितं प्राकृती मता’ (पदभाषाचर्चिका) ।

‘प्राकृतम् तु सर्वत्र संस्कृतं योजितं’ (प्राकृतसंजीवनी) ।

इन व्युत्पत्तियों का तात्पर्य यह है कि प्राकृत राज्य ‘प्रकृति’ राज्य से बना है, ‘प्रकृति’ का अर्थ है संस्कृत भाषा, संस्कृत भाषा से जो व्युत्पत्ति हुई है यह है प्राकृत भाषा ।

प्राकृत वैयाकरणों की प्राकृत राज्य की यह व्याख्या अप्रामाणिक और अस्वाभाविक ही नहीं है, भाषा-तत्त्व से असंगत भी है । अप्रामाणिक इसलिए कही जा सकती है कि प्रकृति राज्य का मुख्य अर्थ संस्कृत भाषा कभी नहीं होता—संस्कृत के किसी क्षेत्र में प्राकृत राज्य का यह अर्थ उपलब्ध नहीं है और गीत या व्याकरणिक अर्थ तत्त्वक नहीं दिया जाता जबतक मुख्य अर्थ में वाच न हो । यहाँ प्रकृति राज्य का मुख्य अर्थ स्वभाव अथवा जन-साधारण जन में किसी तरह का वाच भी नहीं है । इससे एक व्युत्पत्ति का रयान में ‘प्रत्या स्वभावेन विद्धं प्राकृतम्’ अथवा ‘प्रकृतीनां साधारणजनानामिह प्राकृतम्’ यही व्युत्पत्ति संगत और प्रामाणिक हो सकती है । अस्वाभाविक कहने का कारण यह है कि प्राकृत के पूर्वोक्त ज्ञान प्रभटों में कसम और तद्भव शब्दों की ही प्रकृति बहोत संस्कृत मानी है, वीसरे प्रकार का द्रव्य शब्दों का नहीं, अथवा द्रव्य को भी प्राकृत कहा है । इससे द्रव्य प्राकृत में वह व्युत्पत्ति खगू नहीं होती । प्राकृत का संस्कृत से उत्पत्ति भाषा-तत्त्व का सिद्धान्त से भी संगति नहीं रखती, क्योंकि वैदिक संस्कृत और छीकिक संस्कृत ये दोनों ही साहित्य की माजिन भाषाएँ हैं । इन दोनों भाषाओं का व्यवहार शिक्षा की अपेक्षा रहता है । अशिक्षित अछ और बाछ छोग किसी काष्ठ में साहित्य की भाषा का न हो स्वयं व्यवहार कर सकत हैं और न समझ ही पाते हैं । इसलिए समस्त इरों में सर्वदा ही अशिक्षित लोगों के व्यवहार के छिण एक कथ्य भाषा वाल रखनी है जा साहित्य की भाषा से स्वतंत्र—अलग होता है । विभिन्न जगों को भी अशिक्षित लोगों के साथ वाचपीठ के प्रसंग में इस कथ्य भाषा का ही व्यवहार करना पड़ता है । वैदिक समय में भी ऐसी कथ्य भाषा प्रचलित थी । और जिस समय छीकिक संस्कृत भाषा प्रचलित हुई वम समय भी साधारण लोगों की स्वतन्त्र कथ्य भाषा विद्यमान थी यह भाषा का जो में संस्कृत भाषा का साथ प्राकृत भाषी पात्रों के उत्कृष्ट से प्रमाणित होता है ।

पामिनि ने संस्कृत भाषा को जो छीकिक भाषा कही है और पञ्चमञ्जलि ने इसका जो शिष्ट-भाषा का नाम दिया है, वसय मनस्य यह नहीं है कि उस समय प्राकृत भाषा भी नहीं, परन्तु वसय अर्थ यह है कि उस समय के शिक्षित लोगों के आपस के वार्ताव्यय में, वर्तमान काष्ठ के परिष्ठत लोगों में संस्कृत की वरह और विमोक्षणीय लोगों के छात्र के व्यवहार Lingua Franca की साहिक संस्कृत भाषा व्यवहृत होती थी । किन्तु बाछ, विप्रों और अशिक्षित लोग अपनी मातृ भाषा में बातचीत करते थे जो संस्कृत जिन्हा साधारण कथ्य भाषा थी । साधारण कथ्य भाषा किसी इरा में किसी काष्ठ में साहित्य की भाषा से गृहीत नहीं होती, बकि साहित्य-भाषा ही जन-साधारण की कथ्य भाषा से उत्पन्न होती है । इसलिए ‘संस्कृत से प्राकृत भाषा की उत्पत्ति हुई है’ इसकी अपेक्षा ‘क्या वो वैदिक संस्कृत और क्या छीकिक संस्कृत दोनों ही वस समय की प्रायत भाषाओं से उत्पन्न हुए हैं’ यही सिद्धान्त विशेष युक्तिसंगत है । आचरक का भाषा-तत्त्वज्ञों में इसी सिद्धान्त का अधिक आदर रखा जाता है । यह सिद्धान्त पारंपार्य विद्वानों का कोई नूतन आविष्कार नहीं है, भारतवर्ष के

१ ‘प्रकृतेः संस्कृतानाम्पु प्राकृतम्’ (वाग्यवज्जीयाटीका २ २); संस्कृतव्यासा प्राकृतसंस्कृतम् प्राकृतम्’ (कन्याशर्त की प्रेरकता वर्तमान-प्रवृत्ति टीका १ ११) ।

२ ‘प्रकृतिवर्तिप्रतिस्तरितो’ । श्रीमत्साधारणितेयुः पुण्यम्यावसावयो’ । प्राकृत पुँववायं च’ (मतेरार्यसंस्कृत ७३१-७) ।

३ स्वाम्यभाषा—पुनरापेक्षी प्राकृतसंस्कृतमिति च ।

राजभाषादि प्राकृतम् । श्रीमत्पुनरापेक्षी च । (मतेरार्यसंस्कृत १ १३०) ।

‘मयं प्राकृतम्’—वसवसाधारण पीठक नद्विः प्राकृतम् स्मृतम् । (प वि १ १३० की टीका) ।

४ कोई कोई व्याकरणिक सिद्धान्त प्राकृत भाषा की उत्पत्ति वैदिक संस्कृत के मातृ है, वही ‘वर्तमान-प्रवृत्ति’ का प्रवृत्त १४ १६ १६ ।

द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं का इतिहास

प्रभुत्व रूप में द्वितीय स्तर की साहित्यिक प्राकृत भाषाओं के राष्ट्रों को ही स्थान दिया गया है। इससे इन भाषाओं की उत्पत्ति और परिणति के सम्बन्ध में यहाँ पर कुछ विस्तार से विवेचन करना आवश्यक है।

माधारणतः लोगों की यही धारणा है कि संस्कृत भाषा से ही द्वितीय स्तर की समस्त प्राकृत भाषाएँ और आधुनिक भारतीय भाषाएँ उत्पन्न हुई हैं। कई प्राकृत-वैयाकरणों ने भी अपने प्राकृत-व्याकरणों में इसी मत का समर्थन किया है। परन्तु यह मत वही तर्क स्वयं है इसका विचार करने के पक्ष में इन आधारों के चेहरों को जानने की जरूरत है।

प्राकृत या वंशवृक्ष-शास्त्र प्राकृत भाषाओं के राज्य संस्कृत शब्दों के साहचर्य और पार्श्व के अनुसार इन तीन भागों में विभक्त किए हैं—(१) उत्तम (२) मध्य और (३) वैश्व या वैश्वी।

[illegible][illegible][illegible]

उपर्युक्त विभाग प्रकृत के साथ संलग्न क साहज्य और पार्ष्विक के ऊपर निर्भर करता है। इसके सिवा संस्कृत और प्राकृत के प्राचीन मन्त्राचारों में प्राकृत भाषाओं का भी एक विभाग दिया है जो प्राकृत भाषाओं के व्युत्पत्ति-स्थानों से संबंध रखता है। यह भौगोलिक विभाग (Geographical Classification) कहा जा सकता है। अथवा भारत भाषाओं का प्रतीय कहे जाते मात्र-राज में पाठ भाषाओं को आभासी अवस्था मा प्रत्यक्ष सूरसेनी धर्मभागी बाह्यीय और प्राकिणाल्या व नाम हैं, बल्कि के प्राकृत-व्याकरण में जो वैशाखिणी की मागपिता से प्राप्त मिलते हैं, इन्हीं ने वाचस्पत्य में जो महाप्रकाश्या, शीरसेनी गौडी और क्षत्री व नाम दिए हैं आचार्य हेमचन्द्र आदि में मागपी शीरसेनी वैशाखी और क्षत्रियैशाखिक कह कर जिन नामों का व्यवहार

१. "मातृम्बरमिता माध्या सुरनेष्यर्चनावली ।

महोपाध्यायः ॥ (महोपाध्यायः १ ४८)

२. पैसादिनाम पदार्थोत्पत्ती (प्रत्युत्पन्नप्रण ३ ३५)।

१ "भाषाविद्यायां रामयणोत्पी" (आह्वानप्रत्यु ३ १६) ।

४ मद्रासप्रदेशी भाषां प्रकृतं प्रकृतं विदुः ।

नामः नृतिरत्नाम्नी हेतुवाञ्छादि धम्मवत् ॥

ਦੀਰਘਮੀ ਅ ਮੀਰੀ ਅ ਆਰੀ ਅਭਾ ਅ ਆਰੀ ।

यस्यैः प्रकृतिकार्यैः व्यवहारैः कर्मिभिः ॥^{१०} (वाग्व्यापत्तं १ १४ ११) ।

किया है और मार्कण्डेय न अपने प्राकृतसर्वेश में प्राकृतचमित्र के कविय श्लोके को उद्धृत कर महापद्मी, आयम्ती शीरसेनी, अर्धमागधी, वास्सीके, मागधी, प्राच्या और वाशिष्ठात्या इन आठ भाषाओं के, छह विभाषाओं में द्राविड़ और ओड्डू इन दो विभाषाओं के, ग्यारह पिशाच भाषाओं में कम्पन्नादृशीय, पाण्डय, पाण्पाळ, गीह, मागध, प्राचड, वाशिष्ठात्या, शीरसेम कैरय और द्राविड़ इन दस पिशाच भाषाओं के और सवाईस अपभ्रंशों में प्राचड, आव, पैदर्म, वार्पर, आबन्ध पाण्पाळ, टाक मास्य कैरय, गीह, उड्डू, हेव पाण्डय, कोरल, सिंहड कजिङ्ग, प्राच्य कण्टि कज्ज द्राविड़, गीर्सेर, आमीर और मण्डेक्षाय इन तेइस अपभ्रंशों के तिन नामों का जल्लेख किया है वे उस भिन्न-भिन्न देश से हैं। संक्षेप रखने हैं जहाँ जहाँ यह-वह भाषा उत्पन्न हुई है। पञ्चभाषाचमित्र के कर्ता ने 'शूरसेन' देश में उत्पन्न भाषा शीरसेनी कही जायी है, मागध देश में उत्पन्न भाषा को मागधी कहते हैं और पिशाच-देशों की भाषा पिशाची और चूडिसपिशाचा हैं यह लिखने हुए यहा बात अधिक स्पष्ट रूप में कही है।

पूर्व में प्राकृत भाषाओं के शब्दों के जा बात प्रकार विचार्य हैं उनमें प्रथम प्रकार के उत्तम शब्द संस्कृत से ही सभ प्राकृत वैदाङ्ग्यों के मत से उत्तम धारि रह्यो को प्रकटि

देशों के प्राकृतों में लिखे गए हैं। दूसरे प्रकार के उत्तम शब्द संस्कृत से उत्पन्न होने पर भी काक-क्रम से भिन्न-भिन्न देश में भिन्न-भिन्न रूप को प्राप्त हुए हैं और तिसरे प्रकार के वैश्य शब्द वैदिक अथवा लौकिक संस्कृत से उत्पन्न नहीं हुए हैं, किन्तु भिन्न-भिन्न देश में प्रचलित भाषाओं से गृहीत हुए हैं। प्राकृत वैचार्यों का यही मत है।

देश्य शब्द

पहले प्राकृत भाषाओं का जो भौगोलिक विभाग बताया गया है, ये दृष्टीय प्रकार के देशीशब्द उसी भौगोलिक विभाग से उत्पन्न हुए हैं। वैदिक और लौकिक संस्कृत भाषा पंजाब और मध्यदेश में प्रचलित वैदिक काल की प्राकृत भाषा से उत्पन्न हुई है। पंजाब और मध्यदेश के बाहर के अन्य प्रदेशों में इस समय आर्य लोगों की जो प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ प्रचलित थीं वन्हीं से ये देशाशब्द गृहीत हुए हैं। यही कारण है कि वैदिक और संस्कृत साहित्य में देशीशब्दों का अनुरूप कोई शब्द (प्रतिशब्द) नहीं पाया जाता है।

प्राचीन काल में भिन्न-भिन्न प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ हयात थीं, इस बात का प्रमाण कदाच के महाभारत, मरुत का मातृशाला और वात्स्यायन के कामभूत आदि प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में और जैनो के श्रावार्थमेक्या, विषाकभूत, भीषपावि कम्भु तथा राजप्रदीप आदि प्राचीन प्राकृत ग्रन्थों में भी मिलता है। इन ग्रन्थों में 'नानाभाषा' 'इक्षभाषा' या 'देशीभाषा' शब्द का प्रयोग प्रादेशिक प्राकृत के अर्थ में ही किया गया है। जब ते अपन प्राकृत व्याकरण में जहाँ देशीप्रसिद्ध प्राकृत

१ ये श्लोक देशीयों और 'अपभ्रंश' के प्रकरण में दिए गए हैं।

२ शूरसेनोद्भवा भाषा शीरसेनीति नीले।

मनवीचमभाषा दो भाषाणीं संव्रचयते।

पिशाचपेटविषयं पिशाचीतिपि वने॥" (पञ्चभाषाचमित्र पृष्ठ २)।

३ "नावाचममिणपदा नानाभाषाया नावाः। कुरुता इक्षभाषाया कुरुतोऽप्येवमीपय" (महाभारत शन्दरर्ष ४६ १ १)।

"घात कर्म्यं प्रवर्थाति द्वैपभाषाचमित्रमयः।

"मयरा क्यन्तव" वाच्यं देशभाषा प्रयोगुजि" (नाट्यशास्त्र १७ २४-४६)।

"भाषाणीं संस्कृतैव भाषाणीं देशभाषाया। कर्ता लोकीयु कर्तव्योके बहुवचो वने॥" (कामभूत १ ४ १)।

"वते एते ये मैरे कुमारे. पञ्चजनसिंहियापञ्चभाषायाविचार्य ... होत्या" "तत्र एते पञ्चाप नवपदे देवदत्ता नाम धिया परिवस्य मरुत ... अट्टारमरुतभाषाविचार्य" (आश्रमार्थनवावृत्त पत्र १८० ६२)।

"तत्र एते वातिमयमे कामरुतया लाम धिया होत्या ... अट्टारसंसीक्याविचार्य" (विषाकभूत पत्र २१ २२)।

वट ए वटारणे वार्य ... अट्टारसदस भाषाविचार्य" (वीनार्थक सूत्र, पत्र १ ६)।

"वट ए ये वटारणो वार्य ... अट्टारसविहमिणपदाभाषाविचार्य" (पञ्चमौल्य पत्र १४८)।

४ "मिन् प्रसिद्धं प्राकृतं वेण विचारं वरति—वैरुततोति ... अट्टारमय ... देवीप्रसिद्धं लक्ष्मि इति च इति" (प्राकृतमय पृष्ठ १-२)।

‘तन्’ शब्द का सम्बन्ध संस्कृत से लगाकर इस मत का अनुसरण किया है^१। कनिषथ प्राकृत-व्याकरणों में प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति इस तरह की गई है —

‘प्रकृति’ संस्कृत तत्र भवति तत् प्राकृतं (हैमचन्द्र प्रा. व्या.) ।

‘प्रकृति’ संस्कृत तत्र भवति प्राकृतप्रकृते (प्राकृतवर्षित्) ।

‘प्रकृति’ संस्कृत तत्र भवत्यात् प्राकृते स्मृतम् (प्राकृतवर्षिक) ।

‘प्रकृते’ संस्कृतात्पुन विवृति प्राकृती मया (वद्वत्प्राकृतिक) ।

‘प्राकृत्य तु सर्वत्र संस्कृतं योति’ (प्राकृतसंजीवनी) ।

इन व्युत्पत्तियों का तात्पर्य यह है कि प्राकृत शब्द प्रकृति शब्द से बना है, ‘प्रकृति’ का अर्थ है संस्कृत भाषा, संस्कृत भाषा से जो वस्तु उत्पन्न हुई है वह है प्राकृत भाषा ।

प्राकृत वैयाकरणों की प्राकृत शब्द की यह व्याख्या अप्रामाणिक और अव्यापक ही नहीं है, भाषा-तत्त्व से असंगत भी है। अप्रामाणिक इसलिए कही जा सकती है कि प्रकृति शब्द का मुख्य अर्थ संस्कृत भाषा कभी नहीं होता—संस्कृत का किसी क्षेत्र में प्राकृत शब्द का यह अर्थ उपलब्ध नहीं है और गीण या स्वस्राणिक अर्थ तत्त्वतः नहीं लिया जावा अतः मुख्य अर्थ में बाध न हो। यहाँ प्रकृति शब्द के मुख्य अर्थ स्वभाव अथवा ‘जन-साधारण जन में किसी तरह का बाध भी नहीं है। इसमें उक्त व्युत्पत्ति का स्थान में ‘प्रकृत्य स्वभावेन विवृति प्राकृत्य’ अथवा ‘प्रकृतीनां वाचस्पत्यनामिदं प्राकृत्य’ यही व्युत्पत्ति संगत और प्रामाणिक हो सकती है। अव्यापक कथन का कारण यह है कि प्राकृत का पूर्णतः सान प्रकृति में वस्तुतः और वद्वत् शब्दों की ही प्रकृति उन्होंने संस्कृत माना है वीतरं प्रकृति के द्वारा शब्दों की नहीं, अथवा द्वारा का भी प्राकृत कहा है। इसमें वद्वत् प्राकृत में यह व्युत्पत्ति लागू नहीं होती। प्राकृत की संस्कृत से उत्पत्ति भाषा-तत्त्व का सिद्धान्त से भी संगति नहीं रखती, क्योंकि वैदिक संस्कृत और कौटिल्य संस्कृत के दोनों ही साहित्य की मात्रित मापाएँ हैं। इन दोनों भाषाओं का व्यवहार शिक्षा की अवस्था रखता है। अशिक्षित ब्राह्मण और बाळक लोग किसी बाळ में साहित्य की भाषा का न तो स्वयं व्यवहार कर सकते हैं और न समझ ही पाते हैं। इसलिए समस्त देशों में सर्वथा ही अशिक्षित लोगों के व्यवहार के लिए पर कथ्य भाषा बाह्य रहती है जो साहित्य की भाषा से स्वतन्त्र—अलग होता है। शिक्षित लोगों के भी अशिक्षित लोगों के साथ वादपीत का प्रयोग में इस कथ्य भाषा का ही व्यवहार करना पड़ता है। वैदिक समय में भी ऐसी कथ्य भाषा प्रचलित थी। और जिस समय कौटिल्य संस्कृत भाषा प्रचलित हुई उस समय भी साधारण लोगों की स्वतन्त्र कथ्य भाषा विद्यमान थी यह नाटक आदि में संस्कृत भाषा के साथ प्राकृत भाषा पात्रों के वक्तव्य से प्रमाणित होता है।

पाणिनि ने संस्कृत भाषा को जो कौटिल्य भाषा कही है और पतञ्जलि ने इसको जाति-भाषा का नाम दिया है, उसका मतलब यह नहीं है कि उस समय प्राकृत भाषा थी ही नहीं, परन्तु वक्तव्य अर्थ यह है कि उस समय के शिक्षित लोगों के भाषण के पाठ्यक्रम में, वर्तमान वाचक परिवर्तन लोगों में संस्कृत की तरह और निम्नदेशीय लोगों के साथ के व्यवहार Lingua Franca की भाँति संस्कृत भाषा व्यवहृत होती थी। किन्तु बाळक, स्त्रियाँ और अशिक्षित लोग अपनी मातृ भाषा में वादपीत करते थे जो संस्कृत भिन्न साधारण कथ्य भाषा थी। साधारण कथ्य भाषा सिद्धी द्वारा में किसी बाळ में साहित्य की भाषा से गृहीत नहीं होती, बरिक्त साहित्य भाषा ही जन-साधारण की कथ्य भाषा से उत्पन्न होती है। इसलिए ‘संस्कृत से प्राकृत भाषा की उत्पत्ति हुई है’ इसकी अपेक्षा ‘क्या तो वैदिक संस्कृत और क्या कौटिल्य संस्कृत दोनों ही उस समय की मातृ भाषाओं से उत्पन्न हुई हैं’ यही सिद्धान्त विज्ञान युक्ति-संगत है। आजकल का भाषा-तत्त्वज्ञान में इसी सिद्धान्त का अधिक आदर रखा जाता है। यह सिद्धान्त पाठ्यक्रम विद्वानों का कोढ़ मूलतः आश्रित नहीं है भारतवर्ष के

१ ‘प्रकृते’ संस्कृतात्पुन प्राकृतम् (भाष्यवर्षित्वादीनां २२) संस्कृतकथाया प्रकृतेरप्राकृत्य प्राकृतम् (कात्यायन की व्रीहचन्द्र तर्कसामुद्रिक टीका १ ११) ।

२ ‘प्रकृतिर्विनिवृत्तिरिति । शेषभाषावर्णितेषु उपाध्यायव्याचक्षणे । प्रकृत्य पूर्णव्यापकं च’ (पट्टेयवर्षित्वादीनां २३-२४) ।

३ ‘स्वाम्यानाम्’ ब्रह्मसंहिता उपाध्यायव्याचक्षणे च ।

उपाध्यायव्याचक्षणे वीरवर्षित्वादीनां २४ ॥ (व्रीहचन्द्रव्याचक्षणे १ १००) ।

‘तन्’ शब्द—भाष्यवर्षित्वादीनां वीरवर्षित्वादीनां २४ ॥ (व्रीहचन्द्रव्याचक्षणे १ १००) ।

४ वीरवर्षित्वादीनां वीरवर्षित्वादीनां २४ ॥ (व्रीहचन्द्रव्याचक्षणे १ १००) ।

५ वीरवर्षित्वादीनां वीरवर्षित्वादीनां २४ ॥ (व्रीहचन्द्रव्याचक्षणे १ १००) ।

ही प्राचीन भाषासंस्कृतों में भी यह मत प्रचलित था यह निम्नोद्भूत कतिपय प्राचीन ग्रन्थों के अक्षरों से स्पष्ट प्रतीत होता है। छट-कृत अक्षरालङ्कार के एक 'श्लोक' की व्याख्या में जिरत की ग्यारही शताब्दी के जैन-विद्वान् ममिसासु ने लिखा है कि—

“प्राकृतोऽयं । इत्यन्यत्रानुप्रां व्याकृत्याविधिनाहितंलकारः चक्षुषो वचनव्यापारः प्रकृतिः तत्र अर्धं तेषां वा प्रकृतम् । ‘घारि’ परकृते स्थितं ‘भारि’ अन्तमाच्छाद्य ‘भारि’ अन्तमिच्छायां वा प्राक् पूर्वं कृतं प्राकृतं वचन-गहिवाचि-सुबोधं अन्तमाशानि-वचनमुत्तं वचनमुच्यते । ऐतन्मिच्छावचनमिच्छावचनं तत्रैव च ऐतन्मिच्छायां संस्कारकस्याप्यन्तमाशितविशेषेण एव संस्कारवाचनमिच्छावचनमाति । अत एव शास्त्रायां प्राकृतवचनी विहितं तन्मुत्तं संस्कारवचीति । पारिभाषिक्याकरतोपिप्राकृतमन्तरेण संस्कारवाचं संस्कारमुच्यते ।

इस व्याख्या का तात्पर्य यह है कि—‘प्राति’ शब्द का अर्थ है वीरों का व्याकरण आदि के संस्कारों से उद्भूत स्वाभाविक वचन-व्यापार, कृते जन्म वचन वही है प्राकृत । अथवा ‘प्राक् कृत’ पर से प्राकृत शब्द लगा है, प्राक् कृत का अर्थ है ‘पहले किया गया’ । यह दोष-ग्रन्थों में व्याप्य अंत एव परसे किया गए हैं वीर इस व्याप्य शब्द-ग्रन्थों की व्याख्या-वचन में—पुनः में अर्थवाचनी करी गई है वीर वाचक मज्जिमा घारि को सुबोध—इच्छा-वचन है वीर को अन्तमाशानि का पुनः है । यह अर्थवाचनी अथवा ही प्राकृत है । यही प्राकृत, ऐतन्मुत्त वचन ही उद्भूत, पहले एक कथना होने पर भी ऐतन्मिच्छा से वीर संस्कार करने से निजरा को प्राप्त करता हुआ संस्कृत अन्तमाशानि ऐतन्मिच्छा में परिवर्तित हुआ है अर्थात् अर्थवाचनी प्राकृत से संस्कृत वीर व्याप्य प्राकृत व्याप्यों की उत्पत्ति हुई है । इसी कारण से कुछ जन्मकर (जन्म) से प्राकृत का पहले वीर संस्कृत प्राति वचन में निरूप किया है । पारिभाषिक व्याकरणों में अन्तर्गत हुए निम्नों के अनुसार संस्कार वाले के जाया संस्कृत अर्थवाचनी है ।

अन्तमिच्छावचनार्थेन कर्तुं क्लेशः शास्त्रादिना प्राप्तः यथैव (आदिपञ्चमसंस्कृतम् १ १०) ।
‘अन्तमिच्छावचनार्थेन कर्तुं क्लेशः शास्त्रादिना प्राप्तः यथैव’ (हिमवन्तवाच्यमुत्तराद्यम्, छ १) ।

इस पद्यों में कथरा मज्जिमा सिद्धयेन विचार कर वीर व्याप्य इसका अर्थ जैसे समर्थ विद्वानों का विमवेन की जाती को ‘अन्तमिच्छा’ वीर संस्कृत भाषा को ‘कृमि’ कहने का भी उद्देश्य वही है कि प्राकृत अन्तमाशानि की मातृभाषा होने के कारण अन्तमिच्छा—स्वाभाविक है वीर संस्कृत भाषा व्याकरण के संस्कार-रूप अन्तमिच्छा से पूर्व होने के हेतु कथित है ।

१ “प्राकृतोऽयं अन्तमिच्छावचनार्थेन कर्तुं क्लेशः शास्त्रादिना प्राप्तः यथैव” (अन्तमिच्छावचनम् १ १२) ।

अन्तमिच्छावचनार्थेन कर्तुं क्लेशः शास्त्रादिना प्राप्तः यथैव” (अन्तमिच्छावचनम् १ १२) ।

२ शास्त्रादिना अन्तमिच्छावचनार्थेन कर्तुं क्लेशः शास्त्रादिना प्राप्तः यथैव” (अन्तमिच्छावचनम् १ १२) ।

अन्तमिच्छावचनार्थेन कर्तुं क्लेशः शास्त्रादिना प्राप्तः यथैव” (अन्तमिच्छावचनम् १ १२) ।

अन्तमिच्छावचनार्थेन कर्तुं क्लेशः शास्त्रादिना प्राप्तः यथैव” (अन्तमिच्छावचनम् १ १२) ।

अन्तमिच्छावचनार्थेन कर्तुं क्लेशः शास्त्रादिना प्राप्तः यथैव” (अन्तमिच्छावचनम् १ १२) ।

३ “अन्तमिच्छावचनार्थेन कर्तुं क्लेशः शास्त्रादिना प्राप्तः यथैव” (अन्तमिच्छावचनम् १ १२) ।

(अन्तमिच्छावचनम् १ १२) ।

अन्तमिच्छावचनार्थेन कर्तुं क्लेशः शास्त्रादिना प्राप्तः यथैव” (अन्तमिच्छावचनम् १ १२) ।

(अन्तमिच्छावचनम् १ १२) ।

अन्तमिच्छावचनार्थेन कर्तुं क्लेशः शास्त्रादिना प्राप्तः यथैव” (अन्तमिच्छावचनम् १ १२) ।

अन्तमिच्छावचनार्थेन कर्तुं क्लेशः शास्त्रादिना प्राप्तः यथैव” (अन्तमिच्छावचनम् १ १२) ।

४ “अन्तमिच्छावचनार्थेन कर्तुं क्लेशः शास्त्रादिना प्राप्तः यथैव” (अन्तमिच्छावचनम् १ १२) ।

अन्तमिच्छावचनार्थेन कर्तुं क्लेशः शास्त्रादिना प्राप्तः यथैव” (अन्तमिच्छावचनम् १ १२) ।

अन्तमिच्छावचनार्थेन कर्तुं क्लेशः शास्त्रादिना प्राप्तः यथैव” (अन्तमिच्छावचनम् १ १२) ।

अन्तमिच्छावचनार्थेन कर्तुं क्लेशः शास्त्रादिना प्राप्तः यथैव” (अन्तमिच्छावचनम् १ १२) ।

अन्तमिच्छावचनार्थेन कर्तुं क्लेशः शास्त्रादिना प्राप्तः यथैव” (अन्तमिच्छावचनम् १ १२) ।

अन्तमिच्छावचनार्थेन कर्तुं क्लेशः शास्त्रादिना प्राप्तः यथैव” (अन्तमिच्छावचनम् १ १२) ।

अन्तमिच्छावचनार्थेन कर्तुं क्लेशः शास्त्रादिना प्राप्तः यथैव” (अन्तमिच्छावचनम् १ १२) ।

केवल जैन विद्वानों में ही यह मत प्रचलित न था सिख की आठवीं शताब्दी के जैनतर महाकवि बाकपतिराज ने भी अपने 'गठबबहो' नामक महाकाव्य में इसी मत को इन स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया है —

‘समसासी इयं वासा विधिंति पत्तो म खीति बापासी ।

एति समुहं शिव खीति सायराधो बिय बसाई ॥६१॥’

अर्थात् इसी प्राकृत भाषा में सब अपाएँ प्रवेश करती हैं और इस प्राकृत भाषा से ही सब भाषाएँ निर्गत हुई हैं वन (भा. कर.) समुह में ही प्रवेश करता है और समुद्र से ही (बाप बन से) बाहर होता है। बाकपति के इस पद्य का गर्व यही है कि प्राकृत भाषा की उत्पत्ति अन्य किसी भाषा से नहीं हुई है, बल्कि संस्कृत प्रायः सब भाषाएँ प्राकृत से ही उत्पन्न हुई हैं।

सिख की नवम शताब्दी के जैनतर कवि राजदोस्तर ने भी अपने 'बाह्यरामायण' में नीचे का श्लोक लिखकर यही मत प्रकट किया है —

‘यद् योगि किं संस्कृतस्य गुरुषां विद्वानां यमोक्ते यत्र वीरपरायतारिणि कद्रुमपावराणां रतं ।

यदां कृपां परं रविपतेस्तत्र प्राकृतं यत्रस्तनेसाद्योज्ज्वलितार्जुन परमं गुरुषां हृदयेनेकवर्ण ॥’ (य. ४६) ।

जैन और जैनतर विद्वानों के एक धर्मानुसार यह स्पष्ट है कि प्राचीन काल के भारतीय भाषातत्त्वज्ञों में भी यह मत प्रबल रूप से प्रचलित था कि प्राकृत की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से नहीं है।

प्राकृत भाषा औक्तिक संस्कृत से उत्पन्न नहीं हुई है इसका और भी एक प्रमाण है। वह यह कि प्राकृत के अनेक कण्ठ और प्रत्ययों का औक्तिक संस्कृत की अपेक्षा वैदिक भाषा के साथ अधिक मेल देखने में आता है। प्राकृत भाषा साधारण से औक्तिक संस्कृत से उत्पन्न होने पर यह कभी संभव नहीं हो सकता। वैदिक साहित्य में भी प्राकृत के अनुरूप धनंजय शब्द और प्रत्ययों का प्रयोग विद्यमान है। इससे यह अनुमान करना किसी तरह असंगत नहीं है कि वैदिक संस्कृत और प्राकृत ये दोनों ही एक प्राचीन प्राकृत भाषा से उत्पन्न हुई हैं और यही इस साक्ष्य का कारण है। वैदिक भाषा और प्राकृत के सादरय के कतिपय उदाहरण हम नीचे उद्धृत करते हैं ताकि एक कथन की सत्यता में कोई संदेह नहीं हो सके।

वैदिक भाषा और प्राकृत में सादरय

१ प्राकृत में अनेक जगह संस्कृत शब्दों के स्थान में वचन होता है, जैसे—दुन्द = दुन्दु, वज्रु = वज्र वृषिकी = पुरुषी वैदिक साहित्य में भी ऐसे प्रयोग पाये जाते हैं जैसे—कृत = कुत (आवेद १. ४१. ४) ।

२ प्राकृत में संयुक्त वर्णवाचक कइ स्थानों में एक व्यञ्जन का जोप होकर पूर्व के ह्रस्व स्वर का दीर्घ होता है जैसे—दुर्लभ = दूर्लभ, विश्रम = वीश्रम, स्पर्ध = फास। वैदिक भाषा में भी वैसा होता है, यथा—दुर्लभ = दूर्लभ (आवेद ४. १. ८), दुर्गाय = दूर्गाय (दुर्लभम् प्रातिशिक्ष ३. ४१) ।

३ संस्कृत व्यञ्जनान्त कण्ठों के अन्त्य व्यञ्जन का प्राकृत में सर्वत्र जोप होता है, जैसे—तावत् = ताय तवत् = तव, वैदिक साहित्य में भी इस नियम का अभाव नहीं है यथा—पञ्चात् = पञ्चा (मत्स्यपुराण १. ४. ११) वज्रात् = वजा (ऐतिह्यपुराण २. १. ४) नीचात् = नीचा (ऐतिह्यपुराण १. २. १४) ।

४ प्राकृत में संयुक्त र और म का जोप होता है जैसे—प्रगम्भ = पगम्भ, दणामा = दामा वैदिक साहित्य में भी यह पाया जाता है यथा—अ प्रगम्भ = अ-पगम्भ (ऐतिह्यपुराण ४. १. ११) पयय = पिय (उत्पत्त्युद्देश १. १. ११) ।

५ प्राकृत में संयुक्त वर्ण का पूर्व स्वर ह्रस्व होता है यथा—पात्र = पत्र, रात्रि = रति साध्य = सक्त इत्यादि वैदिक भाषा में भी ऐसे प्रयोग हैं, जैसे—रोक्षोगा = रोक्षिण (आवेद १. ४८. १) अमाय = अमत्र (आवेद १. ११. ४) ।

६ प्राकृत में संस्कृत व का अनेक जगह ब होता है जैसे—वण्ड = वण्ड, बंस = बंस, वोद्य = बोद्य। वैदिक साहित्य में भी ऐसे प्रयोग दुर्लभ नहीं हैं जैसे—वर्षय = वृषय (वाचस्पत्ययिणी १. ११) पुराजस = पुरेजस (दुर्लभ-प्रातिशिक्ष ३. ४४) ।

ही प्राचीन भाषाद्वयों में भी बहु मत प्रचलित था यह निम्नोद्धृत कविपत्र प्राचीन ग्रन्थों के अन्तरों से स्पष्ट प्रतीत होता है। कृत-रूप व्याख्याकार के एक द्वायक की व्याख्या में लिखती ग्याख्या की अन्त-विद्वान् नमिसाधु ने लिखा है कि—

“अथोपेति । सप्तममन्त्रानां व्याकरणविरचितानि संस्कारः बहुषु मन्त्र-व्यापारः प्रवृत्तिः तत्र यत्र एव वा प्रवृत्तम् । ‘घारि वरमले चितं देवतं वरमलाया वार्यो’ इत्यविवक्षितं वा शब्दः पूर्वं कृतं प्रवृत्तं वाच-शब्दिक-सुधीनं सम्प्रदायान्तरवन्तं वचनमुच्यते । वैश्विन्वत्तमविवक्षितं तत्रैव न वैश्विन्वत्तम् संस्कारकरणात् सप्तममन्त्रविरचितं तत् संस्कारव्यपारविशेषमाप्नोति । अत एव सम्प्रदायः प्रवृत्तमस्तीति विहितं तन्मन्त्रव्यापारः । वाचशब्दिकव्यापारोपेतिरन्तरात्सप्तमो संस्कारः संस्कारमुच्यते ।”

इस व्याख्या का तात्पर्य यह है कि—‘अपेति’ शब्द का अर्थ है लोगों का व्याकरण प्राक् के संस्कारों से पड़ित स्वाभाविक वचन-व्यापार करने उद्यत प्रवृत्ति नहीं है प्रवृत्त । अथवा ‘मन्त्र कृत’ पर से प्रवृत्त शब्द क्या है, मन्त्र कृत का अर्थ है ‘पढ़ने किया गया’ । बाह्य वचन-शब्दों में व्यापार अर्थ शब्द पढ़े गए हैं और इन व्यापार शब्द-शब्दों की भाषा धार्य-वचन में—ध्वन में अर्थमात्र की वही पढ़ी है जो वाचक, श्रवित्ता धारि को सुनो—अनुभव-मन्त्र है और जो शब्द वाचकों का ध्वन है । यह अर्थमात्र की भाषा ही प्रवृत्त है। वही प्रवृत्त वैश्व-वृत्त मन्त्र की उद्भूति है एक अन्तरात् होने पर भी ऐत-मन्त्र से और संस्कार करने से मिलता को प्राप्त करता हुआ संस्कृत प्राक् अन्तरात् मिलेता में परितुष्ट होता है अर्थात् धार्यवचन प्रवृत्त से संस्कृत और अन्तरात् प्रवृत्त मानावो की उत्पत्ति हुई है । इसी कारण है ध्वन अन्तरात् (छन्द) से प्रवृत्त का पढ़ने की संस्कृत धारि वाच में निर्देश किया है । परितुष्टानि व्याकरणों में व्यापार हुए निम्नों के अनुसार संस्कार करने के कारण संस्कृत अन्तरात् है ।

अथ निम्नानुसारैर्न लब्ध विद्वत् शब्दादिषु पार्थिव कविषु (आचार्यश्रुतिप्रमाण १ १५) ।

“अथ निम्नानुसारैर्न लब्ध विद्वत् शब्दादिषु पार्थिव कविषु (आचार्यश्रुतिप्रमाण १ १५) ।

इस पद्यों में ‘मन्त्रा’ महाशब्द सिद्धसे विचार और आचार्य हेमचन्द्र जैसे समर्थ विद्वानों का किनारे की वार्ता को ‘अक्षुद्रि’ और स्कन्द भाषा को ‘वृद्धि’ अर्थ का भी उद्भव नहीं है कि प्रवृत्त अन्त-साधारण की भाषाभाषा होने के कारण अक्षुद्रि—स्वाभाविक है और संस्कृत भाषा व्याकरण के संस्कार-रूप अन्त-साधारण से पूर्ण होने के हेतु कर्मि है ।

१ “अथ संस्कृतमन्त्रमन्त्रिणां वाचः शीघ्रैर्न वा ।

सुप्रोक्तं वृत्तिरिति वैश्विन्वत्तमात्रम् ॥” (अन्तरात् २ १२) ।

२ बाह्यो वरमले चितं देवतं वरमलाया वार्यो (अन्तरात् २ १२) ।

“अथ संस्कृतमन्त्रमन्त्रिणां वाचः शीघ्रैर्न वा ।

सुप्रोक्तं वृत्तिरिति वैश्विन्वत्तमात्रम् ॥” (अन्तरात् २ १२) ।

“अथ संस्कृतमन्त्रमन्त्रिणां वाचः शीघ्रैर्न वा ।

“अथ संस्कृतमन्त्रमन्त्रिणां वाचः शीघ्रैर्न वा ।

(अन्तरात् २ १२) ।

“अथ संस्कृतमन्त्रमन्त्रिणां वाचः शीघ्रैर्न वा ।

(अन्तरात् २ १२) ।

“अथ संस्कृतमन्त्रमन्त्रिणां वाचः शीघ्रैर्न वा ।

(अन्तरात् २ १२) ।

४ “अथ संस्कृतमन्त्रमन्त्रिणां वाचः शीघ्रैर्न वा ।

“अथ संस्कृतमन्त्रमन्त्रिणां वाचः शीघ्रैर्न वा ।

“अथ संस्कृतमन्त्रमन्त्रिणां वाचः शीघ्रैर्न वा ।

“अथ संस्कृतमन्त्रमन्त्रिणां वाचः शीघ्रैर्न वा ।

“अथ संस्कृतमन्त्रमन्त्रिणां वाचः शीघ्रैर्न वा ।

“अथ संस्कृतमन्त्रमन्त्रिणां वाचः शीघ्रैर्न वा ।

“अथ संस्कृतमन्त्रमन्त्रिणां वाचः शीघ्रैर्न वा ।

“अथ संस्कृतमन्त्रमन्त्रिणां वाचः शीघ्रैर्न वा ।

केवल जैन विद्वानों में ही यह मत प्रचलित न था खिल की आठवीं शताब्दी के जैनतर महाकवि पार्ष्णविजय ने भी अपने 'गडबहो' नामक महाकाव्य में इसी मत को इन स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया है —

“सकामो ह्यं माया विवर्ति एतो न लोति मायायो ।

एति समुद्रं विषय लोति साययथा विषय बलाहं ॥६१॥”

अर्थात् इसी प्राकृत भाषा में सब मायाएँ प्रवेश करती हैं और इस प्राकृत भाषा से ही सब मायाएँ निर्गत हुई हैं जब (या कर) समुद्र में ही प्रवेश करता है और समुद्र से ही (बाहर) होता है। बाहरति के इस पद्य का अर्थ यही है कि प्राकृत भाषा को जलति अन्य किसी भाषा से नहीं हुई है, बल्कि संस्कृत प्राप्ति सब मायाएँ प्राकृत से ही उत्पन्न हुई हैं ।

खिल की नवम शताब्दी के जैनतर कवि राजशेखर ने भी अपने 'बालरामायण' में नीचे का श्लोक लिखकर यही मत प्रकट किया है —

“यत् नोमि किञ्च संस्वरस्य मुह्यति बिह्वान् बन्धितो यत्र कोऽप्यपारिषि कटुपापास्ययथा एव ।

परं इत्येवं परं एतिप्रेतस्य प्राकृतं यश्चस्तन्मादात्मनिर्वाह्य परमं पुनरी ह्येतिनियमवत् ॥” (४६, ४६) ।

जैन और जैनतर विद्वानों के एक वर्गों से यह स्पष्ट है कि प्राचीन काल के भारतीय भाषाविद्वदों में भी यह मत प्रबल रूप से प्रचलित था कि प्राकृत की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से नहीं है ।

प्राकृत भाषा औक्तिक संस्कृत से उत्पन्न नहीं हुई है इसका और भी एक प्रमाण है। यह यह कि प्राकृत के अनेक वाच्य और प्रत्ययों का औक्तिक संस्कृत की अपेक्षा वैदिक भाषा के साथ अधिक मेल देखने में आता है। प्राकृत भाषा साधारण से औक्तिक संस्कृत से उत्पन्न होने पर यह कभी संभव नहीं हो सकता। वैदिक साहित्य में भी प्राकृत के अनुरूप अनेक शब्द और प्रत्ययों के प्रयोग विद्यमान हैं। इससे यह अनुमान करना किसी तरह असंगत नहीं है कि वैदिक संस्कृत और प्राकृत ये दोनों ही एक प्राचीन प्राकृत भाषा से उत्पन्न हुई हैं और यही इस सादृश्य का कारण है। वैदिक भाषा और प्राकृत के सादृश्य के कतिपय उदाहरण हम नीचे उद्धृत करते हैं ताकि एक कथन की सत्यता में कोई संदेह नहीं हो सकता ।

वैदिक भाषा और प्राकृत में सादृश्य

१. प्राकृत में अनेक जगह संस्कृत अक्षर के स्थान में उच्चार होता है, जैसे—कुन् = कुण्ड, कसु = कठ, पुयिबी = पुष्वी वैदिक साहित्य में भी ऐसे प्रयोग पाये जाते हैं, जैसे—कुत्त = कुठ (श्रुतेर १ ४६, ४) ।

२. प्राकृत में संयुक्त वर्णवाक्य कई स्थानों में एक व्यञ्जन का छेप होकर पूर्व क ह्रस्व स्वर का दीर्घ होता है जैसे—दुर्धम = दुर्धम् विग्राम = वीग्राम, स्वर्ग = पारग, वैदिक भाषा में भी वैसा होता है, यथा—दुर्धम = दुर्धम् (श्रुतेर ४ २, ३) दुर्धारा = दुर्धारा (गुल्लगुल्ल प्राशिक्षण १ ४१) ।

३. संस्कृत व्यञ्जनात् शब्दों के अन्त्य व्यञ्जन का प्राकृत में सर्वत्र छेप होता है, जैसे—वापत् = वाप परास = अस, वैदिक साहित्य में भी इस नियम का अभाव नहीं है, यथा—पयत्त = पयत्ता (अथर्ववेदिका १ ४ ११) कषात् = कषा (ऐतिष्वेदिका २ १ १४) मीषात् = मीषा (ऐतिष्वेदिका १ २ १४) ।

४. प्राकृत में संयुक्त र और य का छेप होता है, जैसे—प्रगल्भ = प्रगल्भ वयसा = सामा, वैदिक साहित्य में भी यह पाया जाता है, यथा—अ प्रगल्भ = अ-प्रागल्भ (ऐतिष्वेदिका ४ ३, ११), इयत्त = त्रिय (अथर्ववेदिका १ १ ११) ।

५. प्राकृत में संयुक्त वर्ण का पूर्व स्वर ह्रस्व होता है, यथा—पात्र = पत्र, रात्रि = रात्रि, साम्य = साम्य इत्यादि वैदिक भाषा में भी ऐसे प्रयोग हैं, जैसे—रोक्षसीमा = रोक्षसिमा (श्रुतेर १ ८५ १) अमात्र = अमत्र (श्रुतेर १ १६, ४) ।

६. प्राकृत में संस्कृत व का जनक जगह र होता है जैसे—वण्ड = वण्ड, वंस = वंस होता = वंसा, वैदिक साहित्य में भी ऐसे प्रयोग दुर्धम नहीं है, जैसे—दुर्धम = दुर्धम् (अथर्ववेदिका १ १६) पुरास = पुरोवासा (गुल्ल-गुल्लगुल्ल १ ४४) ।

भाषाओं की हा और से इस भाषा की तरफ अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति को व्यक्त करने के लिए इसका यह नाम दिया जाना और अधिक प्रमिद हो जाने के कारण पीछे से बीड़ विद्वानों का भी मागधी की जगह इस शब्द का प्रयोग करना व्याख्या-व्यक्त नहीं जान पड़ता ।

उक्त प्राकृत भाषा-समूह में पाणि भाषा के साथ वैदिक संस्कृत का अधिक सादृश्य देखा जाता है । इसी कारण से द्वितीय श्रम की प्राकृत भाषाओं में पाणि भाषा सर्वापेक्षा प्राचीन मान्य पड़ती है ।

पाणि भाषा का उत्पत्ति-स्थान के बारे में विद्वानों का मत-भेद है । बीड़ जोग इसी भाषा को मागधी कहते हैं और जनक मग से मग भाषा का उत्पत्ति-स्थान मगध देखा है । परन्तु इस भाषा का मागधी प्राकृत के साथ कोई सादृश्य नहीं है । डॉ. कोनो (Dr. Konno) और सर मियर्सन ने इस भाषा का पेशाबी भाषा के साथ सादृश्य इतकर पेशाबी भाषा जिस देश में प्रचलित थी वही देश को इसका उत्पत्ति-स्थान बताया है, यद्यपि पेशाबी भाषा के उत्पत्ति-स्थान के विषय में इन दोनों विद्वानों का मतभेद नहीं है । डॉ. कोनो का मत है कि पेशाबी भाषा का उत्पत्ति-स्थान सिन्धु-नाबल का दक्षिण प्रदेश है और सर मियर्सन का मत यह है कि 'इसका उत्पत्ति-स्थान भारतवर्ष का उत्तर-पश्चिम प्रान्त है, वहाँ उत्पन्न होने के बाद संभव है कि केंद्र-प्रदेश-पर्यन्त इसका विस्तार हुआ हो और वहाँ इससे पाळी भाषा की उत्पत्ति हुई हो ।' परन्तु पाणि भाषा अयोध के गुजरात-प्रदेश-निष्ठ गिरनार के शिखर-क्षेत्र के अनुरूप होने के कारण यह भाषा में नहीं किन्तु 'भारतवर्ष के पश्चिम प्रान्त में उत्पन्न हुई है और वहाँ से सिन्धु देश में आ गई है' यही मत विशेष संगत प्रतीत होता है, क्योंकि निम्नोक्त ब्राह्मणों से पाणिभाषा का गिरनार-शिखर-क्षेत्र के साथ सादृश्य और पुरे-प्राय-रिवत धीकि (अहमिर) शिखर-क्षेत्र के साथ पार्यन्त देखा जाता है—

संस्कृत	पाळी	गिरनार-पश्चिम	बौद्ध-शिखर
पञ्च	पञ्चवो पञ्चो	पञ्चो	पञ्चिने
इत्य	कथं	कथं	कथे

इस विषय में डॉ. मुन्यटिङ्गमर कटर्जी का कहना है कि "बुद्धदेव" के समस्त उपदेश मागधी भाषासे बाद के समय में मध्यदेश (Domb) की धीरसेनी प्राकृत में अनुवादित हुए थे और वे ही सिन्धु-नृपे प्राय" का ही वर्ष से पाणि-भाषा के नाम से प्रसिद्ध हुए हैं ।" किन्तु सब का यह है कि पाणि भाषा का धीरसेनी और मागधी की अपेक्षा पेशाबी के साथ ही अधिक सादृश्य है जो निम्नोक्त ब्राह्मणों से स्पष्ट ज्ञात होता है ।

संस्कृत	पाणि	पेशाबी	धीरसेनी	मागधी
०४ (बीड)	क (बीड)	क (बीड)	(बीड)	(बीड)
०५ (ग)	ग (ग)	ग (ग)	(ग)	(ग)
०६ (घ)	घ (घ)	घ (घ)	(घ)	(घ)
०७ (ङ)	ङ (ङ)	ङ (ङ)	(ङ)	(ङ)
०८ (च)	च (च)	च (च)	च (च)	च (च)
०९ (छ)	छ (छ)	छ (छ)	छ (छ)	छ (छ)
१ (ज)	ज (ज)	ज (ज)	ज (ज)	ज (ज)

१ "सीतापर्व" बुद्ध का श्रावण
२ सीतापर्व जिनके-पक्षों में थी

२. The Origin and D

१ २५ ब्राह्मणों में प्रचलित
२ बाद में जोड़ दी गयी

३ २२२ बलों के सम्बन्ध में सर्वप्रथम

संस्कृत	पाळि	पैशाची	शीरसेनी	मागधी
श (बश)	स (बस)	स (बस)	स (बस)	श (बश)
प (पेप)	स (भेष)	स (भेष)	स (भेष)	श (भेष)
स (शारस)	स (शारस)	स (शारस)	स (शारस)	श (शारस)
न (बचन)	न (बचन)	न (बचन)	ण (बचण)	ण (बचण)
ह (णट्ट)	ह (णट्ट)	ह (णट्ट)	ह (णट्ट)	सट (पट्ट)
थ (धर्ष)	थ (धाष)	थ (धाष)	थ (धाष)	सट (पट्ट)
स (श्व)	ओ (श्वओ)	ओ (श्वओ)	ओ (श्वओ)	ए (श्वओ)

पाळि भाषा की उत्पत्ति का समय जिसके पूर्व पट्ट शताब्दी कहा जाता है, किन्तु यह कुछ बुद्धत्व की सम
कल्पित-समय सामयिक कथ्य मागधी भाषा का हो सकता है। पाळि कथ्य भाषा नहीं, परन्तु बौद्ध धर्म-साहित्य
की भाषा है। संभवतः यह भाषा जिसके पूर्व चतुर्थ या पञ्चम शताब्दी में पश्चिम भारत में
उत्पन्न हुई थी।

इस पाळि-भाषा से आधुनिक सिंहली भाषा की उत्पत्ति हुई है।

प्राकृत राज्य से साधारणतः पाळि-भिन्न अन्य भाषाएँ ही सम्पन्न आती हैं। इससे, और पाळि भाषा के जनक
स्वल्प क्षेत्र होने से प्राकृत क्षेत्र में पाळि भाषा के शब्दों को स्थान नहीं दिया गया है। इसलिए पाळि भाषा की विशेष
आलोचना करने की यहाँ आवश्यकता नहीं है।

(२) पैशाची

गुप्ताब्द ने बृहत्कथा पैशाची भाषा में लिखी थी जो लुप्त हो गई है। इस समय पैशाची भाषा के उदाहरण
निर्गुण प्राकृतमन्त्रर आचार्य हेमचन्द्र का प्राकृतव्याकरण, पट्टभाषा-व्याकरण, प्राकृत-सर्वस्व और संक्षिप्तसार
आदि प्राकृत-व्याकरणों में आचार्य हेमचन्द्र के कुमारपाल-वर्तित तथा अश्वमेधाश्वमेध में, मोहपात्र
पराजय नामक नाटक में और क्षेत्र-पट्टभाषास्तोत्रों में मिलते हैं।

अरत के नाम्यशास्त्र में पैशाचा नाम का उल्लेख देखने में नहीं आता है, परन्तु इसके परवर्ती 'रुद्र', 'केराव
मित्र आदि संस्कृत के भाष्यकारों ने इसका उल्लेख किया है। पागमन ने इस भाषा को 'मृतभाषित' के नाम से
अभिहित की है।

'पागमन तथा 'केरावमित्र' न क्रम से मृत और पिशाच-प्रभृति पात्रों के छिप और 'पट्टभाषा-व्याकरण' ने
विशेष पट्टस, पिशाच और नीच पात्रों के छिप इसका विनियोग बतलाया है।

१ बुद्धि में ब्रह्मा के एक बचन का प्रत्यय।

२ आचार्य जगदीश की प्रकृत-भाषा में बहरी के काव्यावर्त में बाह्य के लक्ष्य में पञ्चम के उदाहरण में, बुद्धि की
बाह्य-भाषा में और लक्ष्य भाषा-संज्ञाओं में ब्रह्मा उल्लेख पाया जाता है। ऐतिहासिक बुद्धि-भाषा-वर्तित और लक्ष्य-भाषा-
प्रणीत भाषा-वर्तित बहरी बुद्धि का एक संज्ञा प्रतीक है। इन बुद्धि का ही निम्न-लिखित शब्दों के आधार पर बाह्य की
प्रकृति और संज्ञा के महान्वयों की कारणों से भाषा की भाषा-वर्तित प्रतीक संज्ञा शब्दों की रचना की गई है।

३ पृष्ठ २२६: २३३।

४ भाषा-वर्तित १ १२।

५ 'संज्ञा' प्राकृत 'बैव पैशाची भाषा' तथा 'लक्ष्य-वर्तित, पृष्ठ २।

६ 'संज्ञा' प्राकृत लक्ष्य-वर्तित 'मृतभाषित' (भाषा-वर्तित २ १)।

७ 'मृत भाषित' विविध वर्तित-वर्तित 'मृत' (भाषा-वर्तित २ १)।

८ 'पैशाची' गुप्ताब्द-भाषा 'प्राकृत' (लक्ष्य-वर्तित, पृष्ठ २)।

९ 'पैशाची-वर्तित' पैशाची-वर्तित 'मृत' ११३१। (पट्टभाषा-वर्तित ३ १)।

प्राप्तियों की ही ओर से इस भाषा की तरफ अपनी स्वाभाविक पूर्णा को व्यक्त करने के लिए इसका यह नाम दिया जाना और अधिक प्रसिद्ध हो जान के कारण पीछे से भी विद्वानों की भी मागधी की अगह इस राज्य का प्रयोग करना आसानी बनकर नहीं जान पड़ता ।

इस प्राकृत भाषा-समूह में पाणि भाषा के साथ बहिष्कृत संस्कृत का अधिक सादृश्य देखा जाता है । इसी कारण से द्वितीय चर की प्राकृत भाषाओं में पाणि भाषा सर्वप्रथम प्राचीन मातृम पड़ती है ।

पाणि भाषा के उत्पत्ति-स्थान के बारे में विद्वानों का मत-भेद है । बौद्ध भोग इसी भाषा को मागधी करते हैं और उनके मत से यह भाषा का उत्पत्ति-स्थान मगध देश है । परन्तु इस भाषा का मागधी प्राकृत के साथ कोई सादृश्य नहीं है । डॉ. कोने (Dr. Konv) और सर मिचर्सन ने इस भाषा का पेशाची भाषा के साथ सादृश्य देखा और पेशाची भाषा जिस देश में प्रचलित थी वही देश को इसका उत्पत्ति-स्थान बताया है,

उत्पत्ति-स्थान

अपि पेशाची भाषा के उत्पत्ति-स्थान के विषय में इन दोनों विद्वानों का मतभेद नहीं है । डॉ. कोने का मत है पेशाची भाषा का उत्पत्ति-स्थान विन्ध्यपर्वत का दक्षिण प्रदेश है और सर मिचर्सन का मत यह है कि इसका उत्पत्ति-स्थान भारतवर्ष का उत्तर-पश्चिम प्रांत है ।

यहाँ स्पष्ट होने के बाद संभव है कि कौटिल्य प्रदेश-पर्यन्त इसका विस्तार हुआ हो और यहाँ इससे पाळी भाषा की उत्पत्ति हुई हो । परन्तु पाणि भाषा विशेष के गुणवत्ता-प्रदेश-सिद्ध गिरनार के शिखरसे के अनुरूप होने के कारण यह मगध में नहीं, किन्तु भारतवर्ष के पश्चिम प्रांत में उत्पन्न हुई है और यहाँ से सिन्धु देश में से जाई गई है । यही मत विशेष संगत प्रतीय होता है, क्योंकि निम्नेछ उदाहरणों से पाणिभाषा का गिरनार-शिखरसे के साथ सादृश्य और पूर्व-प्रांत-स्थित भीम (बहगिरि) शिखरसे के साथ पार्वत्य देखा जाता है—

संस्कृत	पाळी	गिरनारशिखरः	बीमशिरस
पञ्च	पञ्चमो, पञ्चो	पञ्चो	बचिने
इत्थ	कथं	कथं	कथे

इस विषय में डॉ. मुनेरिङ्गमर चटर्जी का कहना है कि “पुनर्वच” का समस्त उपदेश मागधी भाषासे बाद के समय में मध्यदेश (Doab) की शीरसेनी प्राकृत में अनुधारित हुए थे और ये ही सिन्धु-पूर्व प्रायः का ही रूप से पाणिभाषा के नाम से प्रसिद्ध हुए हैं । किन्तु सब से यह है कि पाणि भाषा का शीरसेनी और मागधी की अपेक्षा पेशाची का साथ ही अधिक सादृश्य है, का निम्नाछ उदाहरणों से स्पष्ट बान्य जाता है ।

संस्कृत	पाणि	पेशाची	शीरसेनी	मागधी
०३ (बोक्)	क (बोक्)	क (बोक्)	(बोय)	(बोय)
०४ (नव)	ग (नव)	ग (नव)	(नव)	(नव)
०५ (उपी)	ब (उपी)	ब (उपी)	(उपी)	० (उपी)
०६ (रवत)	अ (रवत)	अ (रवत)	(रवत)	(रवत)
०७ (कत)	त (कत)	त (कत)	त (कत)	त (कत)
०८ (वर)	र (वर)	र (वर)	र (वर)	र (वर)

१. “जीनसर्ग दुर्गम च प्राकृतं मीमांसयितव्यम् ।

न बोध्यं किमेतस्मिन् नयति तत् किमर्थं” (पञ्चपुराण पूर्वखण्ड २० १०) ।

२. The Origin and Development of the Bengalee Language Vol. I page 67

३. इन उदाहरणों के अन्तर्गत यह प्रश्न उत्पन्न होता है किनका कथ कथ अन्तर्गत के शीरे लिए कथ अन्तर्गत में परिवर्तित होता है और अन्तर्गत के बाद शीरे में कभी अन्तर्गत कथ लट्वा के लिए बिना गया है ।

४. एतत् बली के मध्यवर्ती शब्दोंका अर्थ ।

पह मापाबन्धिकाहार पिशाच-बैरों की भापा को ही पैशापी कहत हैं और पिशाच-बैरों के निर्दरा के छिप गीने
 कालि-स्वयं के रसोचों को बहुभूत करते हैं —

¹ नाएण्णनेअयथावतीअसस्सैपालमुत्तमाः ।

सूत्रेण्युपयोग्यान्वाहीनकनीयान्प्रस्तुता ।

एतै विद्याभ्यास्य स्मृ-

मार्कण्डेय ने अपने प्राकृतसर्वस्व में प्राकृतचन्द्रिका का

‘काशीदेवीमपावर्ण्य’ च पाठ्यालं नीह-मानवस्य ।

साधनं साधितुं च सीरसेन च वैक्यम् ॥

शावरं प्रापितं चैव एकस्मिन् पितामहा ।

इस वचन को उद्धृत कर व्यास प्रभार की पराधी का उद्घेद किया है। परन्तु बाद में इस मत का खण्डन करके सिद्धान्त रूप से इस हीन प्रभार की पराधी का इरादा किया है। यथा—‘केचन शीरसेन व पाण्ड्यात्मनि व त्रिषा पित्रायम्’।

कस्मिन्पर और मार्कण्डेय ने जिन प्राचीन वचनों का उल्लेख किया है उनमें पाण्ड्य राज्ञी और केच्य भादि प्रवेश एक दूसरे से अविवर्धनी प्राणों में अवस्थित हैं। इन वृक्षों प्रवेश एकदोरीय भाषा के उत्पत्ति-स्थान कैसे हो सकते हैं ? यदि पेशाची भाषा किसी प्रदेश की भाषा न हो कर भिन्न-भिन्न प्रदेशों में रहनेवाली किसी आवि-विशेष की भाषा हो तो इसका समझ इस तरह हो नी सकता है कि पूर्वोक्त में किसी एक देश विशेष में रहनेवाली पिशाच-मय मनुष्य-जाति बाद में भिन्न-भिन्न देशों में फैली हुई वहाँ अपनी भाषा को ले गई हो। मार्कण्डेय-निर्दिष्ट तीन प्रकार की पैशाची परस्पर सन्निहित प्रदेशों की भाषा है इससे खूब ही संभव है कि यह पहले केच्य देश में उत्पन्न हुई हो और बाद में उसी के समीपस्थ शूरसेन और पञ्जाब तक फैल गई हो। मार्कण्डेय ने शीरसेन-पेशाची और पाञ्जाब-पेशाची की प्रकृति को केच्य पैशाची करीब इसका मतलब भी बही हो समझा है। सर भियर्सन के मत में पिशाच-भाषा-भाषी लोगों का आदिम वास्तव्य उत्तर-पश्चिम पञ्जाब अबका अफगानिस्तान का प्रायः प्रदेश है और बाद में वहाँ से ही संभवतः इसका लम्बे देशों में विस्तार हुआ है। किन्तु वहाँ शीरैलिक का इस विषय में और ही मत है। उनका कहना यह है कि अन्याय जाति के लोग आर्य-जाति की भाषा का जिस विद्वत् रूप में लष्कारण करते थे वही पैशाची भाषा है अर्थात् इनके मत से पेशाची भाषा न तो किसी देश-विशेष की भाषा है और न वह वास्तव में भिन्न भाषा ही है। इसे सर भियर्सन का मत ही प्रामाणिक प्रतीत होता है जो मार्कण्डेय के मत के साथ अनेकान्य में मिल्ता जुल्ता है।

बर्गसि ने शीरसेनी प्राइव्ज को ही पैशाची माया का मूल कहा है। मार्कण्डेय ने पैशाची माया को केवल शीरसेन और पाप्मास इन तीन मनों से विभक्त कर संस्कृत और शीरसेनी समय को केवल-पैशाची का और केवल-पैशाची को शीरसेन पैशाची का मूल बताया है। पाप्मास पैशाची के मूल का बनने में निर्बल ही नहीं किया है किन्तु उन्होंने इसके जो कृती (कर्म) और मर्मिन् (कर्तारम्) ये दो बड़ाहरण दिये हैं। इससे साक्ष्य होता है कि इस पाप्मास पैशाची का केवल-पैशाची से उद्धार और उद्धार के अन्त्यय के अविरचित भाव्य चोर्न नेह नहीं है। सुवर्ण शीरसेन-पैशाची की तरह पाप्मास-पैशाची की प्रकृति भी इनके मत से केवल-पैशाची ही को सफ़ाई है। यहाँ पर यह कहना आवश्यक है कि मार्कण्डेय ने शीरसेन पैशाची के जो लक्षण दिये हैं उन पर से शीरसेन-पैशाची का

१. बर्नमान मधुरा और बन्धुबारी के आवागमन के अर्थ वा नाम कारण आवागमन अर्थ वा नाम देवद, जम्माप्रतिपाल के बर्नमान बालमनवरमान अर्थ वा नाम मन्त्रीय रक्षित अर्थ वा नाम जम्मा देवद, बर्नमान के जम्माप्रतिपाल के जम्माप्रतिपाल अर्थ वा नाम मन्त्रीय बर्नमान मधुरा और देवाचारमान अर्थ वा नाम बर्नमान, देवाचार के जम्माप्रतिपाल के जम्माप्रतिपाल अर्थ वा नाम देव और रक्षित मधुरा के कारण आवागमन वा नाम बर्नमान है।

२ "प्रवृत्ति" सीरीज" (आवृत्तियाँ १ २) ।

१ "बाय हा" "हाय मी आहेतु" "महाराष्ट्रीयाणां व "ह्याविषु वशादाः" "बाय बाय" "सम्बन्धिते-एव्य हा"-
"सत्त्वोः हा ऊर्ध्व रपाद" याच बोली (शै) व (भाटगलरीय क्रु १२१)।

शौरसेनी भाषा के साथ कोई भी संबन्ध प्रतीत नहीं होता, क्योंकि कैटप-पैशाची के साथ क्षीरसेन-पैशाची के जो मेघ कहने कदापि हैं वे मागधी भाषा के ही अनुरूप हैं, न कि शौरसेनी के। इससे हमझे क्षीरसेन-पैशाची न कह कर मागधी पैशाची कहना ही संगत जान पड़ता है।

प्राकृत वैयाकरणों के मत से पैशाची भाषा का मूल शौरसेनी अथवा संस्कृत भाषा है, किन्तु हम पहले यह मस्तीमौति बिठा चुके हैं कि कोई भी प्रादेशिक कथ्य भाषा संस्कृत अथवा अन्य प्रादेशिक भाषा से व्यपन्न नहीं है, परन्तु यह वही कथ्य अथवा प्राकृत भाषा से व्यपन्न हुई है जो वैदिक युग में बस प्रवेश में प्रचलित थी। इस क्षिप पैशाची भाषा का भी मूल संस्कृत या शौरसेनी नहीं, किन्तु वह प्राकृत भाषा ही है जो वैदिक युग में भारतवर्ष के उत्तर-पश्चिम प्रान्त की या अफगानिस्तान के पूर्व प्रान्त-वर्ती प्रवेश की कथ्य भाषा थी।

प्रथम युग की पैशाची भाषा का कोई निर्वाचन साहित्य में नहीं मिलता है। गुणाध्याय की बृहत्कथा संभवतः इसी प्रथम युग की पैशाची भाषा में रची गई थी; किन्तु वह व्याजच्छा उपलब्ध नहीं है। इस समय हम व्याकरण, नाटक और चरित्र में पैशाची भाषा के जो निर्वाचन पाते हैं वह मध्ययुग की पैशाची भाषा का है। मध्ययुग की यह पैशाची भाषा सिद्ध की द्वितीय शताब्दी से चौथी शताब्दी पर्यन्त प्रचलित थी।

पैशाची भाषा का शौरसेनी भाषा के साथ जिस-किस अंश में भेद है वह सामान्य रूप से नीचे दिया जाता है। इसके सिवा अन्य सभी अंशों में वह शौरसेनी के ही समान है। इससे इसके बाकी के लक्षण शौरसेनी के प्रकरण से जाने जा सकते हैं।

घर्ण-भेद

१. ङ और ञ के स्थान में ञ होता है; यथा—पञ्चा = पञ्जा; ज्ञान = ज्ञमान; कयञ्च = कञ्चञ्च; जमि मय्यु = जमिमय्यु; पुण्य = पुञ्ज्य।
२. छ और ण के स्थान में ण होता है, जैसे—शुञ्च = शुण कमञ्च = कणञ्च।
३. त और ढ की जगह ढ होता है, जैसे—मगवती = मगवती; सव = सव; मवन् = मवन्; देवन्त = देवन्त।
४. झञ्ज = में बण्जवा है; यथा—छीञ्च = छीञ्च कुञ्च = कुञ्च।
५. ङ की जगह ङ और ङ होता है, जैसे—कुङ्गवक, कुङ्गवक, कुङ्गवक।
६. महाप्राची के अक्षर में असंयुक्त-व्यञ्जन-परिवर्तन के १ से १३, १५ और १६ अक्षराहो जो नियम कदापि गए हैं वे शौरसेनी भाषा में लागू होते हैं, किन्तु पैशाची में नहीं; यथा—अक = अक; यासा = सासा; सट = सट सट = सट; गरुड = गरुड; प्रतिमास = प्रतिमास कनक = कनक; उपप = उपप; रेण = रेण; रावक = रावक; यक्षस् = यक्ष करणीय = करणीय; अंगार = अंगार; वाह = वाह।
७. पाठ्या कदापि अक्षरों का उ परिवर्त होता है वि में, यथा—पाठ्या = पाठिस सट्या = सटिस।

नाम-विभक्ति

१. अक्षरान्त शब्द की पञ्चमी का एकवचन भातो और पाण होता है, जैसे—जिनापो, जिनाणु।

व्याख्यात

१. शौरसेनी के वि और दे प्रत्ययों की जगह वि और ढ होता है, यथा—गच्छवि गच्छन्; रमति, रमते।
२. भविष्य-काल में ति के बगुने एम्प हाता है, जैसे—भविष्यति = हुवेय्य।
३. भाव और कर्म में ईष तथा हव के स्थान में ह्य हाता है, यथा—पश्यते = पठियते हसियते।

कृत्य

१. ला प्रत्यय के स्थान में कही तुन और कही तुन और तुन होते हैं; यथा पठित्वा = पठितुन; गत्वा = गस्तुन मष्ट्वा = मस्तुन, नष्टुन; तष्ट्वा = तस्तुन सष्टुन।

(६) चूलिकापैद्यापी

चूल्हियापंथायी भाषा के कथन आचार्य हेमचन्द्र ने अपन प्राकृत-व्याकरण में और पंडित छद्मीयर ने अपनी यह भाषाचूल्हिया में दिए हैं। आचार्य हेमचन्द्र के कुमारपालखरित और कव्यानुशासन में इस भाषा के निर्देश पाये जाते हैं। इनके अतिरिक्त हम्मीरसद्वारा नमक चटक में और हा-यक छोटे-छोटे यह भाषास्तोत्रों में भी इसके कुछ समन देखने में आते हैं।

प्राकृतकण्ड्य प्राकृतप्रकाश, संक्षिप्तसार और प्राकृतसंदर्भ वगैरह प्राकृत व्याकरणों में और मंडूक्य क अष्टाध्यायी में वृत्तिप्रदेशाधी का कोई उल्लेख नहीं है अब व आचार्य हेमचन्द्र ने और पं हयसीधर ने वृत्तिप्रदेशाधी के जो अक्षर दिए हैं वे बड़, बरस्त्रि, बयसीद्वार और मार्कण्डेय प्रभृति व्याकरणों में पेशाधी माया क लक्षणों में ही अन्तर्गत किए हैं। इससे यह स्पष्ट जाना जाता है कि एक व्याकरण-ग्रन्थ वृत्तिप्रदेशाधी को पेशाधी माया के अन्तर्भूत पेशाधी में रखा है। मानने से स्वतन्त्र माया के रूप में नहीं। आचार्य हेमचन्द्र भी अपने अभिमानचिन्तामणि नामक संस्कृत कोष ग्रन्थ के अथवा पद-संक्षेपावली (वाराणसी १९६६) इस वचन को 'संस्कृत-प्राकृत-मायाधी-सीरीधी-पेशाध्यायप्रकरणसंज्ञा' यह व्याख्या करते हुए वृत्तिप्रदेशाधी का अर्थवा उल्लेख नहीं करते। इससे मान्य पड़ता है कि व मी वृत्तिप्रदेशाधी को पेशाधी का ही एक अर्थ मानते हैं। इसका भी यही मत है। इससे वहाँ पर इस विषय में पेशाधी माया के अन्तर्गत क विवरण से कुछ अधिक शिथिल न हो जायदबकता नहीं रहती। सिर्फ आचार्य हेमचन्द्र ने और बम्ही का पूरा अनुसरण कर पं हयसीधर ने इस माया के जो अक्षर दिए हैं वे सीधे लक्ष्य दिए जाते हैं। इनके सिवा सभी अंशों में 'न्य माया का पेशाधी से कोई धारोच्य नहीं है।

संक्षेप

१. वर के स्थान और वस्तु के स्थान में क्रमशः प्रथम और द्वितीय होता है; यथा—मगर = मकर, व्याघ्र = वज्र, राजा = राजा नियंत्र = निष्कार लक्षण = कृष्ण, कृष्ण = कृष्ण मदन = मदन मधुर = मधुर, मालक = मालक, भगवती = पद्मवती।
२. र के स्थान में वैदिक स होता है; यथा—रु = रुद्र, रुद्र।

(५) अर्धमहापत्नी

[illegible]

१. धर्म वैचारिकों के मन है वह निश्चय रूप से धर्म के धर्मों में बाध नहीं होता है (हि मा ४ ३२४)।

२ "अस्य च तं शब्दवर्णपरिभाषायां नाममात्रवत्त्वं" (अमरभाष्येन सूत्र पत्र ३) ।

८) चक्रवाक्यं शब्दा हेतुं कर्मणि प्रयोगमात्रेणैव कर्तव्यम् ।----- 'चा वि य

१. 'धर्मं धनम् धीमता, धनं धीमता धीमता' (महाभारतम् १००) ।

मागधी भाषा के इन प्रयोगों में, अज्ञातभाषा से ही क्यों न हो भाषा-विषयक परिवर्तन अवश्य हुआ है। यह परिवर्तन होना अर्धसमय भी नहीं है, क्योंकि ये सूत्र-ग्रन्थ वेदों की तरह राज्य-प्रधान नहीं, किन्तु अर्थ-प्रधान हैं। इतना ही नहीं बल्कि ये ग्रन्थ जन-साधारण के लोभ के लिये ही उस समय की कथ्य भाषा में रचे गये थे और कथ्य भाषा में समय गुजरने के साथ-साथ अवश्य होनेवाले परिवर्तन का प्रभाव कण्ठ-पाठ के रूप में स्थित इन सूत्रों की भाषा पर पड़ना अन्ततः उस उस समय के लोगों को समझने के उपदेश से भी, आश्चर्यकर नहीं है। इसका सिद्धा, भाषा-परिवर्तन का यह भी एक मुख्य कारण माना जा सकता है कि अगमान महाभारत के निर्माण से करीब दो सौ वर्ष के बाद (क्रिस्त-पूर्व २१०) चन्द्रगुप्त के राज्य कायम मगध देश में बारह वर्षों का सुदीर्घ अकाल पड़ने पर साधु लोगों को नियाह का लिये समुद्र-तीर-वर्षी प्रदेश (दक्षिण देश) में आना पड़ा था। उस समय वे सूत्र-ग्रन्थों का परिशीलन न कर सकने के कारण उन्हें मूल से गए थे। इससे अकाल के बाद पाटलिपुत्र में संचयने परप्रति होकर जिस-जिस साधु का जिस-जिस अङ्ग-ग्रन्थ का जो-जो अंश जिस-जिस आक्रम में याद रह गया था उस-उस से उस-उस अङ्ग-ग्रन्थ के उस-उस अंश को उस-उस रूप में प्राप्त कर ग्यारह अङ्ग-ग्रन्थों का संकलन किया। इस घटना से जैस अङ्ग-ग्रन्थों की भाषा के परिवर्तन का कारण समझ में आ सकता है, वैसे इन ग्रन्थों की अर्धसमयी भाषा में मगध के पारवर्षी प्रयोगों की भाषाओं की तुलना में पूर्ववर्ती महापद्मप्रदेश की भाषा का जो अधिक साम्य देखा जाता है उसके कारण का भी पता चलता है। अब ऐतिहासिक प्रमाणों से यह बात सिद्ध है कि दक्षिण प्रदेश में प्राचीन काल में जैन धर्म का अच्छी तरह प्रचार और प्रभाव हुआ था तब यह अनुमान करना अशुभ नहीं है कि उक्त धीर्घकालिक अकाल के समय साधु लोग समुद्र-तीर-वर्षी इस दक्षिण देश में ही गए थे और वहाँ उन्होंने उपदेश-द्वारा जैन धर्म का प्रचार किया था। यह कथन की कोई आधारबलता नहीं है कि उक्त साधुओं को दक्षिण प्रदेश में उस समय जो भाषा प्रचलित थी उसका अच्छी तरह ज्ञान हो गया था, क्योंकि उसके बिना उपदेश द्वारा धर्म-प्रचार का कार्य वे कर ही नहीं सकते थे। इससे यह अर्धसमय नहीं है कि इन साधुओं की इस नव-परिचित भाषा का प्रभाव उनके कण्ठ-स्थित सूत्रों की भाषा पर भी पड़ा था। इसी प्रभाव को देखकर हमने से कई एक साधु-लोग पाटलिपुत्र के उक्त संमेलन में उपस्थित हुए थे जिससे अङ्गों के पुनः संकलन में उस प्रभाव ने न्यूनाधिक अंश में स्थान पाया था।

उक्त घटना से करीब आठ सौ वर्षों के बाद बलमी (शौराष्ट्र) और मधुरा में जैन ग्रन्थों को लिपि बद्ध करने के लिए मुनि-संमेलन किए गए थे, क्योंकि इन सूत्र-ग्रन्थों का और उस समय तक अन्य को जैन ग्रन्थ रचे गए थे उनका भी क्रमशः विस्मरण हो चला था और यदि वही दशा कुछ अधिक समय तक चालू रहती तो समझ लें शायद के लोग ही जाने का डर था या वास्तव में सत्य था। संभवतः इस समय तक जैन साधुओं का आरक्षवर्ष के अनेक प्रदेशों में विस्तार हो चुका था और इन समस्त प्रदेशों से अल्पाधिक संख्या में आकर साधु लोगों ने इन संमेलनों में योगदान किया था। भिन्न-भिन्न प्रदेशों से आया इन मुनियों से जो ग्रन्थ अथवा ग्रन्थ के अंश जिस रूप में प्राप्त हुआ उसी रूप में वह लिपि-बद्ध किया गया। उक्त मुनियों के भिन्न-भिन्न प्रदेशों में विरचन तक विचारने का कारण इन प्रदेशों का भिन्न-भिन्न भाषाओं का,

१ "मुत्सु विदित्वान् कालिभज्जिविपणित्वैतं।

वीमासनाकालत्वं वाक्यमुदयं शिलचरेद्धि।"

(भाषापरिचय में जीवार्थमज्जुरि द्वारा उद्धृत की हुई प्राचीन वाक्य)।

२ "हलक्षेमन्मदुर्वाणी नृणां चारिणकर्मिणं कलाम्।

मनुष्यार्षं तत्त्वज्ञैः सिद्धाणः प्राकृतं कृतं।"

(हरिसुहृद्विर की वचनैकालिक टीका में और इसका के काव्यानुशासन में उद्धृत प्राचीन श्लोक)।

३ See Annual Report of Asiatic Society Bengal 1886 में डॉ. हर्भिस का लेख।

४ "हलक्षे तस्मिन् बुद्धानो कृताने कालपरिचयत्। निर्वहन्तं साधुसङ्घत्वीरं श्रीपरिवर्षी ॥२२॥

मधुराधर्मो नु तथा साधुनां विसृतां धूमम्। धनम्यक्ततो भवत्यथवीरं धीवतामनि ॥२३॥

संप्रोक्त पदोपनिषत् बुद्धासङ्घैः विनीतमिति। यत्तु ज्ञानमप्यनीतिज्ञासङ्घी कथं तथाचरे ॥२४॥

तदवधेयमप्यनुपनिषत् श्रीपरिवर्षीमिति च तत्वीरं किञ्चित् विधिप्राप्तम् ॥२५॥

महासंघेऽप्यनीतिं मन्त्रार्थं च पुनिषत्। शाला जीव समाङ्गायुतं श्रीयोगुनिपत्यम् ॥२६॥

(वर्षापरिचय-टीका में सूत्र २)।

बताए हैं उनसे उभय" अथ एव ही वृत्ति मापम्याय (हे मा ४ २८७) इस सूत्र की व्याख्या में जो 'यत्पि' 'पोषणमदमाह' 'भाषानियमं ह्यहं सुत' इत्यादिवा धार्यस्य धर्ममापयभाषाभिव्यक्तत्वमात्मि इति' इति प्रयोक्तव्येन विभागात्, न कस्यमाणकस्य' यह कहकर वही के अन्तर जो व्यापकसिद्ध सूत्र से उद्धृत 'अपरे व्यापकत्वात्, ये तासि निर्दिष्ट' यह व्याख्या दिया है उससे एक बात निर्निवाद सिद्ध होती है ।

हों जेकोही ने प्राचीन जैन सूत्रों की भाषा को प्राचीन महाराष्ट्री कहकर 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया है ।" हों पिराठ ने अपने सुप्रसिद्ध प्राकृत-व्याकरण में हों जेकोही की इस बात का सम्प्रमाण खोज किमा है कीर यह सिद्ध किया है कि आपरे धीर अर्धमागधी इन दोनों में परस्पर भेद नहीं है एवं प्राचीन जैन सूत्रों की—गद्य और पद्य दोनों की भाषा परम्परागत मत के अनुसार अर्धमागधी है । परवर्ती काल के जैन प्राकृत ग्रन्थों की भाषा अर्थात् अर्धमागधी की ओर अधिकारी में महाराष्ट्री की विशेषताओं से युक्त होने के कारण 'जैन महाराष्ट्री' कही जा सकती है परन्तु प्राचीन जैन सूत्रों की भाषा को, जो गौरसेनी आदि भाषाओं की अपेक्षा महाराष्ट्री से अधिक साम्य रखती हुई थी, अपनी उन अनेक व्यासियों से परिपूर्ण है जो महाराष्ट्र आदि किसी प्राकृत में दृष्टिगोचर नहीं होती हैं, यह (जैन महाराष्ट्री) नाम नहीं दिया जा सकता ।

पंडित बेचरवास अपने गुजराती प्राकृत-व्याकरण की प्रास्तावना में जैन सूत्रों की अर्धमागधी भाषा को 'प्राकृत (महाराष्ट्री) सिद्ध करने की विपक्ष में कहते हुए हों जेकोही से भी दो कदम आगे बढ़ गए हैं, क्योंकि हों जेकोही अब इस भाषा को प्राचीन महाराष्ट्री—साहित्य-निबद्ध महाराष्ट्री से पुरातन महाराष्ट्री बताते हैं तब पंडित बेचरवास, प्राकृत भाषाओं के इतिहास जानने की दृष्टि से भी परावृत्त न रहकर, अर्धमागधी से इस प्राचीन अर्धमागधी को अमिश्र सिद्ध करने का खड़े हैं । पंडित बेचरवास ने अपने सिद्धांत के समर्थन में धा द्वाद्विंशे पद्य की हैं वे अपिचक्षुं में भाव्य संस्कारों से व्युत्पन्न होने के कारण कुछ महत्त्व न रखती हुई भी कृताह्व-जनक अवश्य हैं । उन वृत्तियों का साधारण यह है—(१) अर्धमागधी में महाराष्ट्री से मात्र दो बार कपों की ही विशेषता। (२) आचार्य हसनद्र का इस भाषा के स्मिप स्वतन्त्र व्याकरण या गौरसेनी आदि की तरह अल्पा अल्पा सूत्र न बनकर प्राकृत (महाराष्ट्री) या कार्य प्राकृत में ही इसके अन्तर्गत करना (३) इसमें मागधी भाषा की कतिपय विशेषताओं का अभाव; (४) निष्क्रिय-विभक्त के अर्धमागधी के दोनों में एक ही स्वरूप की इसमें अस्सगि; (५) प्राचीन जैन ग्रन्थों में इस भाषा का 'प्राकृत' शब्द से निर्बल; (६) नाम्य-नाम्य में और प्राकृत-व्याकरणों में निर्दिष्ट अर्धमागधी के साथ प्रस्तुत अर्धमागधी की असमानता ।

१ मागधी भाषा में अकारण वृत्ति शब्द के प्रयोग के एकत्र में 'ए' होता है ।

२ इसका अर्थ यह है कि प्राचीन भाषाओं में 'पुरुषात् सूत्र अर्धमागधी भाषा में नियत है' इत्यादि बचन-आप धार्य भाषा की दो अर्धमागधी भाषा नहीं है वह श्रमः मागधी भाषा के इति एक प्रकारसे विचार को लेकर, न कि ऐसे कड़े जटिलसे मागधी भाषा के अर्थ काल के विचार को लेकर ।

३ इसी बचन के आधार पर डॉ. हार्मिंस का बहुत-बहुत प्राहृतकाल के इन्ट्रोडक्शन (१८९१) में यह निष्कर्ष कि हेमचन्द्र के मत में 'पोषण' शब्द प्राकृत का एक नाम है, अग्र-पूर्व है, क्योंकि यहां पर 'पोषण' यह सूत्र का ही क्रियेय है, भाषा का नहीं ।

४ धारमचक्रण के परिष्कारनियमकाल (हे मा पु कं पृ ६२८) में यह सुल्लं बाबा इस तरह है —

'पुन्यारसंभुतं वैष्णवकं सतीतमिदं । पोषणमदमाह्वयासिभ्यं ह्यहं सुतं ॥'

५ Kalpa Sutra Sacred Books of the East Vol. XII

६ Grammatik der Prakrit-Sprachen 16 17

७ वीरे धार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण में महाराष्ट्री भाषा के अर्थ में प्राकृत शब्द का प्रयोग किया है किंतु पंडित बेचरवास ने भी अपने प्राकृत-व्याकरण में जो वीरे हेमचन्द्र के ही प्राकृत-व्याकरण के आधार पर रचा गया है अर्धम-संस्कृत महाराष्ट्री के अर्थ में ही प्राकृत शब्द का व्यवहार किया है ।

श्लोक-भाषा के ही अर्थ में ही किया है। आचार्य वृष्ठी और हेमचन्द्र ही नहीं, बल्कि सिद्ध की नववीं शताब्दी के कवि राजशेखर, ग्यारहवीं शताब्दी के नमिसाधु, दशमशती शताब्दी के प्रेमचन्द्रवर्धनमीश प्रसूति प्रभूत जैन और जैनोत्तर विद्वानों ने इसी अर्थ में प्राकृत राज्य का प्रयोग किया है। इस तरह अब यह अप्रान्त सत्य है कि प्राचीन काल से लेकर आधुनिक प्राकृत राज्य प्रादेशिक कल्प भाषा के अर्थ में व्यवहृत होता आया है और इसका मुख्य और प्राचीन अर्थ साधारणतः सभी और विशेषतः कोई भी प्रादेशिक भाषा है, तब प्राचीन आचार्यों द्वारा मगधान महावीर की उपदेश भाषा के और उनके समसामयिक शिष्य सुषर्मस्वामि-अपीत जैन सूत्रों की भाषा के ही अभिप्राय में प्रयुक्त किए हुए 'प्राकृत' राज्य का 'अर्थ मगध-प्रदेश (बर्हो मगध महावीर और सुषर्मस्वामी का उपदेश और विचारण होता प्रविष्ट है) की श्लोक-भाषा (अर्थमागधी)' इस सुसंगत अर्थ को छोड़ कर मगध से सुदूरवर्ती प्रदेश 'महाराष्ट्र (बर्हो न तो मगधान महावीर का और न सुषर्मस्वामी का ही अर्थ या विचार होता जाता गया है) की भाषा (महाराष्ट्री)' यह असंगत अर्थ लगाना, अपनी हीन विवेचना शक्ति का परिचय देना है। इसी सिद्धिसे मैं पंडितजी ने अनुयोगद्वारा सूत्र की एक अपूर्ण गाथा उद्धृत की है। यदि एक पंडितजी अनुयोगद्वारा की गाथा के पूर्णार्थ का यहाँ पर हस्तक्षेप करने के पहले इस गाथा के मूल स्थान को ढूँढ़ पात और वे प्राकृत राज्य से किस भाषा (महाराष्ट्री) का ग्रहण करते हैं इसके और प्राचीन सूत्रों की अर्थमागधी भाषा के इतिहास को न जानते हुए भी सिर्फ चतुर्थ-संविद इस गाथा पर ही प्रकरण-संगति के साथ अग गौर से विचार करने का कष्ट उठते तो हमारा यह विश्वास है कि वे कम से कम इस गाथा का यहाँ हस्ताक्षर देने का सख्त और अनुयोगद्वारा के कर्त्ता पर अर्थमागधी का विस्मरण का व्यक्त-भाषा झाड़ने की वृत्ता कदापि नहीं कर पाते। क्योंकि इस गाथा का मूल स्थान है पूर्वीय अंग-ग्रन्थ जिसका नाम स्थानाङ्ग-सूत्र है। इसी स्थानाङ्ग-सूत्र के सम्पूर्ण स्वर प्रकरण को अनुयोगद्वारा-सूत्र में उद्धृत किया गया है जिसमें यह गाथा भी शामिल है। वह सम्पूर्ण गाथा इस तरह है :—

‘संस्कृतं पाठ्यं येन ब्रह्म मणिर्यो धाद्विषा । सर्वमन्त्रमि पिबन्ति पल्लवा दक्षिमादिता ।’

इसका शाब्दार्थ है—‘संस्कृत और प्राकृत वे दो प्रकार की भाषाएँ कही गई हैं, पापे बाले एव-उद्भूत (वर्द्ध-मण्डि) में क्षत्रिणादिता—मार्ग भाषा प्रकृत है।’ यहाँ पर प्रकरण है सामान्यतः गीत की भाषा का। वर्तमान समय की तरह उस समय भी सभी भाषाओं में गीत होते थे। इससे यहाँ पर इन सभी भाषाओं का निर्देश करना ही सूत्रकार का अभिप्रेत है जो उन्होंने संस्कृत—व्याकरण-संस्कार-पुक्त भाषा और प्राकृत—व्याकरण-संस्कार-रहित—श्लोक-भाषा इन दो मुख्य विभागों में किया है। इस तरह इस गाथा में पहले गीत की भाषाओं का सामान्य रूप से निर्देश कर बाद में इन भाषाओं में जो प्रकृत है वह क्षत्रिणादिता’ इस विशेष रूप से क्लृप्त गई है। यदि यहाँ पर प्राकृत शब्द का प्रादेशिक श्लोक-भाषा’ यह सामान्य अर्थ न कर पंडितजी के कथनानुसार ‘महाराष्ट्री’ यह विशेष अर्थ लिया जाय तो गीत की सभी भाषाओं का निर्देश, जो सूत्रकार का करना आवश्यक है कैसे हो सकता है ? क्या उस समय अन्य श्लोक-भाषाओं में गीत होते ही न थे ? गीत का ठेका क्या संस्कृत और महाराष्ट्री इन दो भाषाओं को ही मिला हुआ था ? यह कभी संभावित नहीं है। इसी गाथा के उत्तरार्ध के ‘पल्लवा दक्षिमादिता’ इस वचन से अर्थमागधी की सूचना ही नहीं बल्कि उसका संछेपन भी सूत्रकार ने स्पष्ट रूप में बताया है। इससे पंडितजी के उस कथन में कुछ भी संशय गहर नहीं जाता है, जो वनसे सूत्रकार का अर्थमागधी की अलग सूचना न करने के बारे में किया गया है।

जैसे वीरसूत्रों की मागधी (पाकि) संनाम्न शासक या प्राकृत-व्याकरणों में निविष्ट मागधी मिला है वैसे जैन सूत्रों की अर्थमागधी से नागध-शासक की या प्राकृत व्याकरणों की अर्थमागधी भी अलग है। इससे वीरसूत्रों की मागधी नागध-शासक या प्राकृत-व्याकरणों की मागधी से भेद न रखने के कारण जैसे महाराष्ट्री न कही जाकर मागधी कही जाती है वैसे जैन सूत्रों की अर्थमागधी भाषा भी नागध शासक या प्राकृत-व्याकरणों की अर्थमागधी से समान न होने की वजह से ही महाराष्ट्री न कही जाकर अर्थमागधी ही कही जा सकती है।

१ ‘असौ सप्तक-वीरों पाठम-वीरोंय होइ सुमार्त’ (कुरियम्परी पद्य १)।

२ ‘भूतेय्यपि प्राकृतकरीष तथा प्राकृतमेवापन्न या’ (काम्याङ्कुर-टिप्पण १, १२)।

३ ‘अर्थमागध प्राकृतभाषाया’—(काम्याङ्कुर-टीका १ ११), ‘प्राकृतोपयोग वेदनामोपनिषत्’ सर्वा एव भाषाः प्राकृतवद्विनीयन्त इति सुचिन्त’ (काम्याङ्कुर-टीका १ ११)।

में प्रवृत्त करना, अर्थात् 'अर्ध मागभा' यह व्युत्पत्ति कर 'त्रिसंख अर्धार्श मागवी भाषा यह अर्धमागवी' ऐसा करना । मनुवा अर्धमागवी राज्य की न यह व्युत्पत्ति ही सत्य है और न यह अर्थ ही । अर्धमागवी राज्य अर्धमागवी राज्य की की वास्तविक व्युत्पत्ति है 'अधमगपस्येयम्' और इसके अनुसार इसका अर्थ है 'मगध देश के अर्धार्श की जो भाषा यह अर्धमागवी' । यही बात जिस की सातवीं शताब्दी के मगधकार श्रीमिनवासमणि महेश्वर ने निशाचर्युषि नामक ग्रन्थ में 'पोराणमहमागधमागधिमयं हवत् सुत' इस पद्योक्त के 'अर्धमागव' राज्य की व्याख्या के प्रसङ्ग में इन स्पष्ट शब्दों में कहा है — 'महामहानिचर्यमगधिमवत् अर्धमागव' अर्थात् मगध देश के अर्ध प्रदेश की भाषा में निबद्ध होकर के कारण प्राचीन सूत्र 'अर्धमागव' कहा जाता है ।

परन्तु अर्धमागवी का मूल उत्पत्ति स्थान पश्चिम मगध अथवा मगध और गुरुसेन का सम्भवर्ती प्रदेश (अयोध्या) होने पर भी जैन अर्धमागवी में मागधा और गीरसेनी भाषा के विशेष लक्षण दोनों में नहीं आते । महापट्टी के साथ ही इसका अधिक सादर्य नजर आता है । यहाँ पर प्रश्न होता है कि इस सादर्य का कारण क्या है ? सर प्रियर्सन न अपने प्राकृत भाषाओं के मौलिक विवरण में यह विवर दिया है कि जैन अर्धमागवी सम्प्रदाय (गुरुसेन) और मगध के सम्भवर्ती देश (अयोध्या) की भाषा थी एवं आधुनिक पूर्वी हिन्दी उससे उत्पन्न हुई है । किन्तु हम देखते हैं कि अर्धमागवी के लक्षणों का साथ मगधी, गीरसेनी और आधुनिक पूर्वी हिन्दी का कोई सम्बन्ध नहीं है, परन्तु महापट्टी प्राकृत और आधुनिक मगधी भाषा के साथ वसन्त सादर्य अधिक है । इसका कारण क्या ? किसीन अमेरिक यह टीका-टोका नहीं बताया है । यह सम्भव है, जैसा हम पाटलिपुत्र के सम्मेलन के प्रसंग में ऊपर कह आये हैं, चन्द्रगुप्त के राज्यकाल में (क्रिस्त-पूर्व ३१०) बारह बरों के अन्तर के समय जैन मुनि-संघ पाटलिपुत्र से दक्षिण की ओर गया था । उस समय यहाँ के प्राकृत के प्रभाव से अंग प्रन्थों की भाषा का कुछ-कुछ परिवर्तन हुआ था । यही महापट्टी प्राकृत का आपे प्राकृत का साथ सादर्य का कारण हो सकता है ।

सर आर्ट जि मागधकार जन अर्धमागवी का उत्पत्ति-समय क्रिस्तिय द्वितीय शताब्दी मानते हैं । उनके मत में कोई भी साहित्यिक प्राकृत भाषा जिस की प्रथम या द्वितीय शताब्दी से पहले की नहीं है । रायच इसी मत का अनुसरण कर डॉ मुनिविद्वान्मर चटर्जी ने अपना Origin and Development of Bengales Language नामक पुस्तक में (Introduction page 18) समस्त नाटकीय प्राकृत भाषाओं का और जैन अर्धमागवी का उत्पत्ति काल क्रिस्तिय तृतीय शताब्दी विवर दिया है । परन्तु त्रिवेन्द्र ने प्रकाशित मास-पत्रिक को आते नाटकों का निम्न-समय अन्तर्गत जिस की दूसरी शताब्दी के बाद का न होने से और अन्धधोप-कृत बौद्ध-धर्म-विषयक नाटकों के जो विषय अर्थ डॉ स्तुबर्ट ने प्रदर्शित किए हैं उनका सम्यक् जिस की प्रथम शताब्दी निमित्त होने से यह प्रमाणित होता है कि उस समय की नाटकीय प्राकृत भाषाएँ प्रचलित थी । और डॉ स्तुबर्ट ने यह स्वीकार किया है कि अन्धधोप के नाटकों में जैन अर्धमागवी भाषा का निश्चय है । इससे जैन अर्धमागवी की प्राचीनता का यह भी एक विषय प्रमाण है । इसके अतिरिक्त, डॉ जेम्स जैन पूर्वी की भाषा और मगध के शिल्पज्ञों (क्रिस्तिय सन् ८१ से १७९) की भाषा से यह अनुमान करते हैं कि जैन अंग-मगधी की अर्धमागवी का अन्त क्रिस्त-पूर्व चतुर्थ शताब्दी का वेप माग अथवा क्रिस्त-पूर्व तृतीय शताब्दी का प्रथम माग है । इस डॉ जेम्स के इस अनुमान को टीका समझते हैं आ पाटलिपुत्र के उस सम्मेलन से संगति रखना इस विषय उल्लेख हम पूर्ण कर चुके हैं ।

संस्कृत का साथ महापट्टी का आ प्रमान-प्रमाण अर्थ है, उनकी संक्षिप्त पूर्वी महापट्टी का प्रकरण में ही जायगा । यहाँ पर महापट्टी से अर्धमागवी की जो मुख्य-मुख्य विशेषताएँ हैं उनकी संक्षिप्त पूर्वी ही जाती है । सबसे अर्ध मागवी का लक्षणों का साथ महापट्टी का लक्षणों की तुलना करने पर यह अच्छा स्पष्ट हो सकता है कि महापट्टी की अपेक्षा अर्धमागवी की वैदिक और सूक्तिक संस्कृत से अधिक निष्ठता है जो अर्ध मागवी की प्राचीनता का एक भेद प्रमाण कहा जा सकता है ।

बण-मे

१ दो त्तरों के मध्यवर्ती अर्धसूक्त क के स्थान में प्रायः सर्वत्र व और अनेक स्थलों में व और व होता है जैसे—

ग—वसन्त = वसन्त वार = वार, वाप्रा = वाप्रा प्रकार = वपात वाप्रा = वारय विवर्तक = विवर्तक निरोक = निरोक-
लोक = लोक वाप्रा = वाप्रा ।

तद्धित

१. वर प्रत्यय का वचन रूप होता है। यथा—प्रणिङ्गतराम्, मन्त्रतरण, बहुतरण, नैवतरण इत्यादि ।
 २. पाचसौ पाचनंतो दोमी, दुर्मित्रं भवन्तो, दुरीषम पचतिषम धीयंती दीविलो, दोरेषश्च आदि प्रयोगों में मधु, और अन्य तद्धित प्रत्ययों के ऐसे रूप जैन अर्धमागधी में वृत्त जाते हैं, महापट्टी में वे निम्न तरह के होते हैं ।

महापट्टी से जैन अर्धमागधी में इनके आविर्भाव और भी अनक सूक्ष्म भेद हैं, जिनका वस्तुस्थिति विस्तार-भय से यहाँ नहीं किया गया है ।

(५) जैन महाराष्ट्री

जैन मूल-ग्रन्थों के सिवा श्वेताम्बर जैनों के रचे हुए अन्य ग्रन्थों की प्राकृत भाषा को 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया जान-निश्चय और गया है । इस भाषा में दीर्घरक्ष और प्राचीन युनियों के चरित्र, कथाएँ, दूरान, वर्क व्योत्प, मृगोक्ष, समिह्य इति आदि विषयों का विशाल साहित्य विद्यमान है ।

प्राकृत के प्राचीन वैयाकरणों ने 'जैन महाराष्ट्री' यह नाम देकर किसी निम्न भाषा का वर्णन नहीं किया है । किन्तु आधुनिक पाश्चात्य विद्वानों ने व्याकरण, धर्म्य और नाटक-ग्रन्थों में महाराष्ट्री का जो रूप देखा जाता है उससे श्वेताम्बर जैनों के ग्रन्थों की भाषा में कुछ कुछ पार्यवय वृत्त कर इसका 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया है । इस भाषा में प्राकृत-व्याकरणों में बताये हुए महाराष्ट्री भाषा के लक्षण किंचित रूप से भीखूव होने पर भी जैन अर्धमागधी का बहुत-कुछ प्रभाव देखा जाता है ।

जैन महाराष्ट्री के कवियुग प्रमथ प्राचीन है । यह द्वितीय शतक प्रथम युग के प्राकृतों में स्थान पा सकती है । पयसा प्रमथ नियुक्तिर्षी, पयमचरित्र, उपदेशमाला प्रभृति प्रमथ प्रथम युग की जैन महाराष्ट्री के उदाहरण हैं । बृहत्कल्प माव्य, व्यवहारमूल-भाष्य, विरोधावश्यक माव्य निरीक्षणीय धर्मसंग्रहणी, समपश्चकका प्रभृति प्रमथ प्रमथ युग और शेष-युग में रचित होने पर भी इनकी भाषा प्रथम युग की जैन महाराष्ट्री के समान है । वरम रावाब्दी के बाद रचे गये प्रयचन-साधोदहार, उपदेशपट्टीका, सुपासनाचरित्र, उपदेशावृत्य प्रभृति ग्रन्थों की भाषा भी प्रमथ प्रथम युग की जैन महाराष्ट्री के ही अनुरूप है । इससे यहाँ पर यह कहना होगा कि जैन महाराष्ट्री के प प्रमथ आधुनिक काल में रचित होने पर भी उसकी भाषा संस्कृत की तरह, अविप्राचीन काल में ही उत्पन्न हुई थी और यह भी अनुमान किया जा सकता है कि जैन महाराष्ट्री क्रमशः परिवर्तित होकर मध्य-युग की व्यञ्जन-स्रोत-बहुल महाराष्ट्री में रूपान्तरित हुई है ।

अर्धमागधी के जो लक्षण पहले बताये गए हैं उनमें से अनक इस भाषा में भी पाये जाते हैं । ऐस लक्षणों में लक्षण कुछ ये हैं—

१. क क स्थान में अनेक स्थलों में व ।
२. छुम व्यञ्जनों के स्थान में घ ।
३. राध् के आदि और मध्य में भी ल की तरह व ।
४. मण और पाण के स्थान में क्रमशः कहा और काव की तरह कहा और पाव भी ।
५. समाम में उत्तर पद के पूर्व में 'म' का आगम ।
६. पाव नाम ऐतिह्यर, बहुतरण आदि सुप्रसिद्ध नामों के भी वच वेत्त वैद्यव्य आदि की तरह प्रयोग ।
७. दूरिगा के पञ्चपन में कही कही का प्रत्यय ।
८. धारका, दुम्बर प्रभृति धातु-रूप ।
९. लोच, पिच वस्तु आदि का प्रत्यय के रूप ।
१०. का पाण संतु प्रभृति व-प्रत्यय का रूप ।

(६) व्यञ्जक-लिपि

सम्राट् अशोक ने भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न स्थानों में अपने धर्म के उपदेशों को शिलालेखों में सुरक्षित रखा है। ये सब शिलालेख उस समय में प्रचलित भिन्न-भिन्न प्रादेशिक भाषाओं में रचित हैं। भाषा-साम्य की दृष्टि से ये सब शिलालेख अत्यन्त प्रचलित इन तीन भाषाओं में विभक्त किये जा सकते हैं—

- (१) पञ्चाब के शिलालेख। इनकी भाषा संस्कृत के अनुरूप है। इसमें ४ अक्षरों का व्यवहार नहीं देखा जाता।
- (२) पूर्वी भारत के शिलालेख। इनकी भाषा अथवा भाषाओं के साथ सादर्य देखने में आता है। इनमें २ के स्थान में सर्वत्र न है।
- (३) पश्चिम भारत के शिलालेख। ये इन्द्रप्रिया की इस भाषा में हैं जिसका पाकि के साथ अधिक साम्य है। इन तीनों प्रकार के शिलालेखों के कुछ उदाहरण नीचे दिए जाते हैं जिन पर से इनका भव्य अक्षरों का व्यवहार समझ में आ सकता है।

संस्कृत	कर्णमिहिर (पञ्चाब)	ग्रीकि (अरबी)	मिरानर (इण्डिया)
देवनागिरि	देवनागिरि	देवनागिरि	देवनागिरि
एष	एष	अभि	एष
इष	—	अभि	अभि
मुष	मुष	अभि	अभि
अभि	अभि, अभि	अभि, अभि	अभि

इन शिलालेखों का समय क्रिस्त-पूर्व २५० वर्ष का है।

इन शिलालेखों की भाषा की उत्पत्ति महात्मा महावीर की एवं सम्भवतः बुद्ध के काल-भाषा से ही हुई है।^१

(७) सौरसेनी

संस्कृत-नाटकों में प्राकृत तथा सामान्य रूप से सौरसेनी भाषा में लिखा गया है। अरबियों के नाटकों में एक लिपि का सौरसेनी के उदाहरण पाये जाते हैं, जो पाकि और अरबियों की भाषा के अनुरूप और पिछले अक्षर के नाटकों में प्रयुक्त सौरसेनी की अपेक्षा प्राचीन है। भास के अक्षरों के और इनके बाद के अधिक नाटकों में सौरसेनी के मिश्रण देखे जाते हैं।

वर्णन हेमचन्द्र कलहस्ति, कलहस्ति और मार्कण्डेय आदि के प्राकृत-व्याकरणों में सौरसेनी भाषा के अक्षर और उदाहरण पाये जाते हैं।

बुद्ध, प्लूट और बागम आदि संस्कृत के अक्षरों ने भी इस भाषा का वस्त्र किया है।

भारत के नाट्यशास्त्र में सौरसेनी भाषा का वस्त्र है क्योंकि प्लूट में नयिष और सखियों के छिप इस भाषा लिखित का प्रयोग बताया है।^२

भारत में विष्णु की भाषा प्राकृत की है परन्तु मार्कण्डेय के व्याकरण में प्राकृत भाषा के दो अक्षर दिये गये हैं प्राकृत भाषा सौरसेनी के इनसे और नाटकों में प्रयुक्त विष्णु की भाषा पर से यह मान्य होता है कि सौरसेनी से इस भाषा (प्राकृत) का कुछ विशेष अर्थ नहीं है। इससे हमने भास के अक्षरों में इस भाषा के अक्षरों का प्रयोग सौरसेनी में ही अन्तर्भाव किया है।

विश्वामित्र जीनों के प्रचलित, इन्द्रसमूह प्रयुक्त प्राकृत की एक पद्य की सौरसेनी भाषा में ही रचित है। यह भाषा रचयिताओं की अधिभाषा और प्राकृत-व्याकरणों में लिखित सौरसेनी के मिश्रण से बनी हुई है। इस भाषा को 'जैन सौरसेनी' नाम दिया गया है। जैन सौरसेनी मध्ययुग की जैन महाकाव्यों की अपेक्षा जैन अधिभाषा से अधिक निरुद्ध रक्षित है और मध्ययुग की जैन महाकाव्यों से प्राचीन है।

१. इस ही में डॉ. विष्णुचन्द्र बहुरूप ने अपने एक इण्डिया लेख में अरबों प्रकाश और इण्डिया से यह लिखा है कि पद्यों के पद्यों के रूप से प्राकृत लिखित प्राकृत अशोक के बड़ी पद्यों में प्राकृत लिखित के रूप में है।

२. Dr. A. B. Keith's Sanskrit Drama, Page 87

३. "महाराष्ट्र की भाषा में प्राकृत लिखित" (अध्याय १, ११)।

४. "प्राकृत लिखित" (अध्याय १, ११)।

सौरसेनी भाषा की उत्पत्ति¹ सूरसेन बंरा अर्थात् मधुरा प्रदेश से हुई है।

परसूषि ने अपने व्याकरण में संस्कृत को ही सौरसेनी भाषा की प्रकृति बताया मूल कहा है। किन्तु यह हम पहले ही प्रमाणित कर चुके हैं कि किसी प्राकृत भाषा का व्युत्पत्ति संस्कृत से नहीं हुई है। सुवर्ण, सारसेना प्राकृत पर मूल में यैविक या लौकिक संस्कृत नहीं है। सौरसेनी और संस्कृत ये दोनों ही यैविक युग में प्रचलित सूरसेन प्रकृति

अथवा मध्यवेष्ट की कल्प्य प्राकृत भाषा से ही उत्पन्न हुई है। संस्कृत भाषा वाग्मिनि प्रसूति के व्याकरण द्वारा नियन्त्रित होने के कारण परिवर्तनहीन स्व भाषा में परिवर्तित हुई। वैदिक काल के सारसेना ने प्राकृत-व्याकरण द्वारा नियन्त्रित न होने के कारण क्रमशः परिवर्तित होते हुए पिछले समय का सोरसेनी भाषा का भाँवर धारण किया। पिछले समय की यह सोरसेनी भी बाद में प्राकृत-व्याकरणों के द्वारा ञ्जके जाने के कारण संस्कृत की तरह परिवर्तन-शून्य होकर स्वतः-भाषा में परिवर्तित हुई है।

अन्वेषण के माटकों में जिस सीरसेनी भाषा के उदाहरण मिलते हैं वह अठोड्डिपि की सम-सामयिक क्हा जा सकती है। भास के नाटकों की सीरसेनी पर और जैन सीरसेनी का समय सम्बन्ध जित्त का प्रथम या द्वितीय शाताब्दी मान्य होना है।

महाराष्ट्री भाषा के साथ सीरसेनी भाषा का जिस जिस अंश में मेल है वह नीचे दिया जाता है। इसके सिवा महाराष्ट्री भाषा के जो मुख्य वस्तु प्रकरण में दिये जायेंगे उनमें महाराष्ट्री के साथ सीरसेनी का कोई मेल नहीं है। इन अंशों पर यह ध्यान होगा कि अनेक स्थलों में महाराष्ट्री की अपेक्षा सीरसेनी वस्तु के साथ पाठ्यक्रम कम और सादृश्य अधिक है।

वर्ण-भेद

- १ स्वर-वर्णों के मध्यवर्ती अन्त्युक्त व ओर व के स्थान में व होता है, यथा—रजत = रजय, यय = यय ।
 २ स्वरों के बीच अन्त्युक्त व अक्षर व दानों होता है, जैसे—नाय = नाय लाह ।
 ३ व के स्थान में य्य और व होता है, यथा—माय्य = मय्य धन्य; सुय्य = सुय्य मुक्त ।

नाम-विमर्श

- १ पञ्चमी क पक्षपन में दो और दु य दो ही प्ररषय हाते हैं और इनके योग में पूर्य क अक्षर का वर्ण होता है। मया—
जिमाय = बिलासो, बिलाह।

आख्यात

- १ शि और वे प्रत्ययों के स्थान में शि और वे होता है, जैसे—हृषि, हृषे, रषि, रषे ।
२ भविष्यत्प्रत्यय के प्रत्यय के पूर्व में शि छटा है। यथा—हविस्मि, करिस्मि ।

सगुण

- १ अन्त्य मन्त्र कं भाव इ और ए होने पर ए का वैकल्पिक आगम होवा है, यथा—पुन्य एवम् = पुनं छिन्ने, पुनमिने। एवम् एवम् = एवं लेने, एवंवेर ।

कृष्णम्

१. त्वा प्रत्यय के स्वान में इस हुए और ता होते हैं, यथा—पठिस्वा = पठिस्व, पठिष्वए पठिता ।

[illegible]

(६) अष्टोक्त-लिपि

सम्राट् अशोक ने भारतवर्ष के विभिन्न-विभिन्न स्थानों में अपने धर्म के उपदेशों को शिलालेखों में खुदवाये थे। ये सब शिलालेख उस समय में प्रचलित विभिन्न-विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं में रचित हैं। भाषा-साम्य की दृष्टि से ये सब शिलालेखों में 'प्राचीन' इन तीन भाषाओं में विभक्त किये जा सकते हैं—

(१) पञ्जाब के शिलालेख। इनकी भाषा संस्कृत के अनुरूप है। इनमें २ का उल्लेख नहीं देखा जाता।

(२) पूर्वी भारत के शिलालेख। इनकी भाषा का भाषाओं के भाषा सादर्य देकने में आता है। इनमें २ के स्थान में सर्वत्र व है।

(३) परिषद भारत के शिलालेख। ये उज्जयिनी की इस भाषा में हैं जिसका पाणि के साथ अधिक साम्य है।

इन तीनों प्रकार के शिलालेखों के कुछ उदाहरण नीचे दिए जाते हैं जिन पर से इनका भेद अच्छी तरह समझ में आ सकता है।

संस्कृत	कर्मगिरि (पञ्जाब)	पौडि (हरीश)	मिरनार (इराक)
देवायप्रियस्य	देवायप्रियस्य	देवायप्रियस्य	देवायप्रियस्य
एव	एव	एव	एव
बुधा	—	बुधसि	बुधसि
गुह्या	गुह्या	गुह्या	गुह्या
मासि	मासि, मासि	मासि, मासि	मासि

इन शिलालेखों का समय क्रिस्त-पूर्व २५० वर्ष का है।

इन शिलालेखों की भाषा की रूपरिति महावीर की पूर्ण सम्मेलन बुद्धदेव की उपदेश-भाषा से ही हुई है।^१

(७) सीरसेनी

मौर्य-नाटकों में प्राकृत तथा संस्कृत रूप में सीरसेनी भाषा में लिखा गया है। अरबपोप के नाटकों में एक नाटक की सीरसेनी के उदाहरण पाये जाते हैं, जो पाणि और अष्टोक्तलिपि की भाषा के अनुरूप और विभिन्न अक्षरों के नाटकों में प्रयुक्त सीरसेनी की अपेक्षा प्राचीन है। भाषा के अविश्वस के लिये इनके बाद के अधिक नाटकों में सीरसेनी के निरर्थक देकने जाते हैं।

प्राचीन हेमचन्द्र, कर्मवीर, कर्मवीर और मार्कण्डेय आदि के प्राकृत व्याकरणों में सीरसेनी भाषा के सम्य और उदाहरण पाये जाते हैं।

हजरी, छद्म और वाग्म्य आदि संस्कृत के अन्वयियों ने भी इस भाषा का उल्लेख किया है।

भारत के मध्यभाग में सीरसेनी भाषा का उल्लेख है जहाँ नाटक में मायिका और सखियों के द्विप इस भाषा में प्रयोग बताया है।^२

भारत में विद्वत् की भाषा प्राचीन नहीं है परन्तु मार्कण्डेय के व्याकरण में प्राचीन भाषा के जो सम्य शिवाये गये हैं प्राचीन भाषा सीरसेनी के उनसे और नाटकों में प्रयुक्त विद्वत् की भाषा पर से यह मान्य होता है कि सीरसेनी से इस भाषा (प्राचीन) का कुछ बिन्नप भेद नहीं है। इससे हमन या प्रत्युत कोप में इसका अन्वय उल्लेख न करके सीरसेनी में ही अन्वय किया है।

दिगम्बर जैन के प्रवचनसार, इन्द्रवर्ण प्रभृति ग्रन्थ भी एक तरह को सीरसेनी भाषा में ही रचित हैं। यह भाषा उदाहरणों की अपेक्षाओं और प्राकृत-व्याकरणों में निरर्थक सीरसेनी के मिश्रण से बनी हुई है। इस भाषा का 'अन सीरसेनी' नाम दिया गया है। जैन सीरसेनी मध्ययुग की जैन महापट्टी की अपेक्षा जैन अष्टमागधी से अधिक निरर्थक रखती है और मध्ययुग की जैन महापट्टी से प्राचीन है।

१. इन तीनों में डॉ. निरुपमचन्द्र महेस्वर ने अपने एक पुस्तकी लेख में अनेक उदाहरण और दृष्टियों से यह सिद्ध किया है कि प्रयोग के दिगम्बरों के नाम के अन्वय दिगम्बर महापट्टी के हैं। परन्तु वेन कन्नाड संस्कृत के अन्वय से हैं।

२. See Dr. A. B. Keith's Sanskrit Drama, Page 87

३. "मयिकर्मा हजरी व बुद्धदेवप्रियसि" (पद्यशास्त्र १० २१)।

४. "प्राचीन विद्वत्परीक्षा" (पद्यशास्त्र १ २१)।

सीरसेनी भाषा की उत्पत्ति^१ सूरसेन देश अर्थात् मधुप प्रदेश से हुई है।

वररुचि ने अपने व्याकरण में संस्कृत को ही सीरसेनी भाषा की प्रकृति अर्थात् मूल कहा है। किन्तु यह हम पहले ही प्रमाणित कर चुके हैं कि किसी प्राकृत भाषा का उत्पत्ति संस्कृत से नहीं हुई है। सुवर्ण, सोरसेना प्राकृत का मूल भी पश्चिम या दक्षिण संस्कृत नहीं है। सीरसेनी और संस्कृत ये दोनों ही पश्चिम युग में प्रचलित सूरसेन प्राकृत अथवा मध्यदेश की कथ्य प्राकृत भाषा से ही उत्पन्न हुई हैं। संस्कृत भाषा पाणिनि प्रमुख के व्याकरण द्वारा नियन्त्रित होने के कारण परिवर्तनहीन मूल भाषा में परिणत हुई। वैदिक काल का सीरसेना ने प्राकृत-व्याकरण द्वारा नियन्त्रित न होने के कारण क्रमशः परिवर्तित होते हुए पिछले समय का सोरसेनी भाषा का आकार धारण किया। पिछले समय की यह सीरसेनी भी बाद में प्राकृत-व्याकरणों के द्वारा जरूरी जान के कारण संस्कृत की तरह परिवर्तन-रूप होकर मूल-भाषा में परिणत हुई है।

अक्षपाप के नाटकों में जिस सीरसेनी भाषा के व्याकरण मिलते हैं वह अञ्जलिप्रिय की सम-सामयिक कही जा सकती है। आस के नाटकों की सीरसेनी का और जैन सीरसेनी का समय सम्भवतः सित का प्रथम या द्वितीय शताब्दी मान्य होता है।

महापट्टी भाषा के साथ सीरसेनी भाषा का जिस-जिस अंश में भेद है वह नीचे दिया जाता है। इसके सिवा महापट्टी भाषा के जो अक्षय उसक प्रकरण में दिए जायेंगे उनमें महापट्टी के साथ सीरसेनी का कोई भेद नहीं है। इन भेदों पर यह बात होता है कि अनक स्थलों में महापट्टी की अपेक्षा सीरसेनी का संस्कृत के साथ पाश्चात्य कम और सादृश्य अधिक है।

वर्ण-भेद

- १ स्वर-वर्णों का मध्यवर्ती अर्द्धगुण व ओर व के स्थान में व होता है। यथा—रजठ = रजध, वता = वता।
- २ स्वरों के बीच अर्द्धगुण व का ह ओर व हानों बात है। जैसे—गाव = छाव छाह।
- ३ व के स्थान में व्य और न होता है। यथा—मार्ग = मय्य मज्ज; तुल्य = तुल्य तुल्ल।

नाम-विभक्ति

- १ पञ्चमी का प्रत्ययन में ओ और यु व ओ ही प्रत्यय होते हैं और इनके योग में पूर्व का अक्षर का वीर्य होता है। यथा—
विपद् = विप्रावो, विप्रावु।

आकृषात

- १ ति और ते प्रत्ययों का स्थान में ति और ते होता है। जैसे—हवति, हवते, रवति, रवते।
- २ अभिव्यक्त्यक्षर के प्रत्यय के पूर्व में ति छटाटा है। यथा—हविस्तिदि, कस्तिस्तिदि।

संज्ञि

- १ अन्य मकार के बाद व और ए होने पर ए का वैकल्पिक आगम होता है। यथा—पुनर एव = पुनर एम पुनमिम। एव एव = एव एव एवमम।

कृदन्त

- १ एा प्रत्यय का स्थान में इय हुआ और ता होने है। यथा—पठिषा = पठिष, पठिषुण पठिषा।

१ ब्रह्मण्यसूत्र के “लौकिकप्रमाण (१) यं यं वीर्यमयं निपुणोसीत। मधुप व मृतेण पाषाणी व पाषाणुरिषट्ठा” (पृ ११)। इस पाठ पर “केचित् शुक्तिप्रमाणे बोधयन्ति निपुण सीधोरेषु मधुप मृतेण पाषा, यत्ते (१) निपु पाषाणुरिषट्ठा” इस तरह व्याख्या करते हुए आचार्य मय्यारि ने मृतेण देश की राजधानी पाषा वज्जनाकर व्याकरण के विहार प्रदेश को ही मृतेण कहा है। मेजिज्जमुरि में यत्ते प्रत्ययमार्गप्रमाणक ग्रंथ में पाषाण्यसूत्र के उक्त पाठ को पश्चिम कर्म में उद्धृत किया है। इसी देश में भीमज्जमुरि ने आचार्य मय्यारि की उक्त व्याख्या को “अभिव्यक्त्यक्षर” कहकर, उक्त मूल पाठ की व्याख्या इस तरह की है—“शुद्धीयसी मय्यो वैरयो देशः वीर्यमयं मय्य निपुणीसीत जनतर मधुप मयरी मृतेणमयी देशः यत्ता मयरी मय्यो देशः पाषाणुरी मयरी वती देशः” (दे। का. संस्कृत ११ ४४६)।

(८) मागधी

मागधी प्राकृत के सर्वे प्राचीन निबन्धन अशोक-साम्राज्य के उत्तर और पूर्व भागों के शासकों, सिद्ध, क्षीरका (Lauriya), सहस्रराम, बरबर (Barbar), रामगढ़, वीरि क्षीर खोण्ड (Jagadha) प्रभृति स्थानों के अशोक-लिपिलेखों में पाये जाते हैं। इसके बाद प्राकृतिक प्राकृतों में मागधी भाषा के उदाहरण देखे जाते हैं।

निबन्धन

प्राकृतिक मागधी के सर्वे प्राचीन समूह अशोक के मठकों के लिखित अंशों में मिलते हैं। भास के मठकों में, अशिराम के मठकों में और सुषुप्तिक जाति भाषकों में मागधी भाषा के उदाहरण विद्यमान हैं।

बरबर के प्राकृतप्रकाश, लण्ड के प्राकृतप्रकाश, हेमचन्द्र के सिद्धहेमचन्द्र (अष्टम अध्याय), कमहीचर के संक्षिप्त-सार, छत्तीचर की पद्मापात्रिका और मार्कण्डेय के प्राकृतसर्वस्व आदि ग्रन्थ समस्त प्राकृत-व्याकरणों में मागधी भाषा के अन्वय और उदाहरण दिए गए हैं।

मठ के मठप्रकाश में मागधी भाषा का उल्लेख है और उल्लेख मठ में राजा के अन्वय में रहनेवाले, सुगो खोदनेवाले कर्मदार, अश्वपाक कर्मदार पात्रों के लिए और विपत्ति में राक्षस के लिए भी इस भाषा का प्रयोग करने को कहा है। परन्तु मार्कण्डेय द्वारा अपने प्राकृतसर्वस्व में उद्धृत किसे हुए कोइल के "अश्वपाककर्मदार" विनिर्णय

मन्त्री प्राकृत

मन्त्री प्राकृत इस लक्षण से सामान्य होता है कि मठ के कोइल हुए लक्ष पात्रों के अतिरिक्त मिथु, अपत्यक आदि अन्य लोग भी इस भाषा का व्यवहार करते थे। रुद्रत, वाग्मय, हेमचन्द्र आदि आदर्शकारिकों में भी अपने-अपने अर्थकार-मन्त्रों में इस भाषा का उल्लेख किया है।

मगध देश ही मागधी भाषा का उत्पत्ति-स्थान है। मगध देश की सीमा के बाहर भी अन्धक के लिखिलेखों में जो इस के निबन्धन पाये जाते हैं उसका कारण यह है कि मागधी भाषा उस समय राज-भाषा होने के कारण मगध के बाहर भी इसका प्रचार हुआ था। सम्भवतः राज-भाषा होने के कारण ही मठकों में सचज ही राजा के अन्वय के लेखों के लिए इस भाषा का व्यवहार करने का नियम हुआ था। प्राचीन सिद्ध और

उत्पत्ति-स्थान

अपत्यक भी मगध का ही निवासी होने से सम्भव है जहाँ से इनकी भाषा भी मगधी ही निर्दिष्ट की गई है।

बरबर में अपने प्राकृत व्याकरण में मागधी की प्रकृति—मूल होने का सम्मान सीरसेनी को दिया है। इसीका अनुसरण कर मार्कण्डेय ने भी सीरसेनी से ही मागधी की उत्पत्ति कही है। किन्तु मागधी और सीरसेनी आदि प्रादेशिक भाषाओं का अन्व अशोक के लिखिलेखों में भी देखा जाया है। इससे यह सिद्ध है कि ये सब प्रादेशिक भाषाएँ प्राचीन और समसामयिक हैं, एक प्रदेश की भाषा से दूसरे प्रदेश में वृत्तन नहीं हुए हैं। जैसे सीरसेनी सम्प्रदाय में प्रचलित वैदिक युग की कम्प भाषा से उत्पन्न हुई है वैसे मगधी ने भी उस कम्प भाषा से उत्पन्न किया है जो वैदिक-युग में मगध प्रदेश में प्रचलित थी।

प्रकृति

अशोक-लिखिलेखों की और अशोक के मठकों की मागधी भाषा प्रथम युग की मागधी भाषा के निबन्धन हैं। भास के और परकीर का के अन्व मठकों की और प्राकृत-व्याकरणों की मागधी अन्व-युग की मागधी भाषा का उदाहरण है।

अन्व

शाक्यरी वाग्मयिकी और शाक्यरी ये तीन भाषाएँ मागधी के ही प्रकार-मेव—रूपान्तर हैं। भरत ने शाक्यरी भाषा का व्यवहार कर राजा का आदि और वही प्रकृति के अन्य लोगों के लिए कहा है किन्तु मार्कण्डेय ने राजा के सख्ते की भाषा शाक्यरी कहा है। भरत प्रकृत आदि व्यासियों की व्यवहार-भाषा को वाग्मयिकी और अंगारकर, व्यास-

१ "मागधी तु वरेऽशोकप्रकाशपुराणिप्रमाणम्" (वाग्मयिकी १७ ५)।

"पुराणानुसारीया पुराणपर्यायविशेषः। अन्वये वाग्मयिकी व्यासप्रकाशमागधी ॥ (वाग्मयिकी १७ २५)।

२ "प्रकृति सीरसेनी" (प्राकृतसर्वस्व ११ २)।

३ "मागधी सीरसेनीय" (प्राकृतसर्वस्व ११ १)।

४ "अश्वपाक कर्मदारो वत्सकर्मदारो यो कश्च"। अश्वपाक योइत्यादि" (वाग्मयिकी १७ ५५)।

५ "अश्वपाक कर्मदारो वत्सकर्मदारो"।

"अश्वपाक कर्मदारो वत्सकर्मदारो"।

अश्वपाक कर्मदारो वत्सकर्मदारो वत्सकर्मदारो" (प्राकृतसर्वस्व ११ २)।

साधारण भाषि भाषार्थ
मागधी के सम्बन्ध है।
कटहार और पन्त-जीवी लोगों की भाषा को सागरी कहते हैं। इन तीनों भाषाओं के जो सम्मेलन और
सम्बन्ध मार्कण्डेय के प्राकृत-व्याकरण में और नाटके के एक पात्रों की भाषा में पाये जाते हैं उनमें
और इतर प्राकृत-व्याकरणों की मागधी भाषा के सम्मेलन और सम्बन्धों में तथा नाटकों के मागधी-
भाषा-मायो पात्रों की भाषा में इतना कम भेद और इतना अधिक साम्य है कि एक ही भाषाओं को मागरी से व्युत्पन्न नहीं
कही जा सकती। यही कारण है कि हमने प्रस्तुत रूप में इन भाषाओं का मागधी में ही समावेश किया है।

सूक्तफटिक के पात्र माधुर और सो धृतराष्ट्र की भाषा को 'डक्की' नाम दिया गया है। यह भी मागधी भाषा का
ही एक रूपान्तर प्रतीत होता है। मार्कण्डेय ने 'डक्की' को ही 'टाक्की' नाम से निर्देश किया है, यह उनके यहाँ पर उद्धृत
किये हुए एक श्लोक से ज्ञात होता है। मार्कण्डेय ने पर्वान्त में व सुधीय के एकवचन में व, पञ्चमी के बहुवचन में हु
आदि जो इस भाषा के सम्मेलन दिए हैं उनपर से इसमें अपभ्रंश का ही विराग साम्य नजर आता है।
इस लिए मार्कण्डेय ने यहाँ पर जो यह कहा है कि 'ह्रिभ्र' इस भाषा को अपभ्रंश मानता है।
यह मत हमें भी संगत मान्य पड़ता है।

मागधी भाषा का सीरसेनी के साथ जो सम्बन्ध भेद है वह नीचे दिया जाता है। इससे सिवा अन्य अंशों में मागधी
भाषा सामान्यतः सीरसेनी के ही अनुरूप है।

धर्मेन्द्र

- १ र के स्थान में सरंघ व होता है। यथा—नर = एत कर = कन।
- २ ठ, व और ष के स्थान में ठक्क व होता है। यथा योमन = योमण पुष = पुषिण सारस = सारस।
- ३ संयुक्त व और ष के स्थान में वक्ष्य सञ्चर होता है। यथा—पुष्क = पुष्क कट = कट स्ववति = स्ववति वृहस्पति = वृहस्पति।
- ४ ट और ठ के स्थान में ल होता है। यथा—पट = पल पुष्ट = पुष्ट।
- ५ ल और व के सम्मेलन होता है, जैसे—कलिकट = कलिकट लव = लव।
- ६ व और ष के वृत्ते व होता है। यथा—जालि = जालि दुर्ज = दुर्ज वष = वष लष = लष वरि = वरि, वष = वष।

- ७ ल व और व के स्थान में ल होता है। यथा—लष्य = लष्य पूष्य = पूष्य प्रका = प्रका लम्बति = लम्बति।
- ८ अनादि व के स्थान में व होता है। यथा—वक्ष्य = वक्ष्य पिबित = पिबित।
- ९ व की जगह ल होता है। जैसे—लक्ष्य = लक्ष्य लष = लष।

नाम-विभक्ति

- १ अक्षरान्त पुल्लिङ्ग-शब्द के प्रथमा के एकवचन में ए होता है। यथा—विन = विने पुष्य = पुषिणे।
- २ अक्षरान्त शब्द के पथी का एकवचन ल और मल होता है। यथा—विनल = विनल विनल।
- ३ अक्षरान्त शब्द के पथी के बहुवचन में मल और मल ये दोनों होते हैं। जैसे—विनामल = विनल मल।
- ४ अक्षरान्त शब्द के एकवचन और बहुवचन का रूप व होता है।

१ "नागमनी पुष्कलियु। धर्मकरकावर्णा काटुयनोपनीविताय। योग्या शवरमाया पु" (नाट्यशास्त्र १७ २१ ४)।

२ "प्रयुज्यते नाट्यगौ धृतराष्ट्रव्यवहारिणि।
वर्णपुष्पिनिष्ठ लक्ष्मणवर्णितम्" (प्राकृतसर्वल ५४ ११)।

३ "ह्रिभ्रस्तिवर्णा भाषापञ्च ॥ इतीत्यति" (प्राकृतम पुट ११)।

४ मार्कण्डेय लक्ष्मण वैदिक नामों हैं "रस्य को वा मयै" (प्राकृतम पुट १ १)।

५ इनका प्राकृत-व्याकरण के अनुसार 'ल' की जगह विज्ञानमीय 'ल' होता है देवो है प्रा ४ २१६।

(९) महाराष्ट्री

प्राकृत काव्य और गीति की भाषा महाराष्ट्री कही जाती है। संतुल्य, गद्यात्मकता, गद्यबद्धि, कुमात्पाकभरित प्रकृति मन्त्रों में इस भाषा के निरूपण पाये जाते हैं। गाथा (गीति-साहित्य) में महाराष्ट्री प्राकृत न इतनी प्रसिद्धि प्राप्त की कि बाह्य के नाटकों में तथा भी सीरसेनी बोधनवाले पात्रों के लिए संगीत या पद्य में महाराष्ट्री भाषा का व्यवहार करने का रिवाज सा बन गया था। यही कारण है कि आम्नास से लेकर उसके बाद के सभी नाटकों में पद्य में प्रायः महाराष्ट्री भाषा का ही व्यवहार देखा जाता है।

बौद्ध ने अपने प्राकृतग्रन्थों में 'महाराष्ट्री' इस नाम का उल्लेख और इसके विशेष उद्घाटन न देकर भी आर्य-प्राकृत काव्य-सम्प्रदाय के और जैन महाराष्ट्री के उद्घाटनों के साथ साधारण भाषा से इसके उद्घाटन दिए हैं। बरुचि ने अपने प्राकृत-व्याकरण में इस भाषा के 'महाराष्ट्री' नाम का उल्लेख किया है और इसके विशेष उद्घाटन और उदाहरण दिए हैं। आचार्य हेमचन्द्र ने अपने व्याकरण में 'महाराष्ट्री' नाम का निर्देश न कर प्राकृत' इस साधारण नाम से महाराष्ट्री के ही उद्घाटन और उदाहरण बताए हैं। कम्मदीभर का संक्षिप्तसार शिबिष्य की प्राकृतव्याकरणसूत्रवृत्ति हस्तीनगर की पद्मभाषानिबन्ध और मार्कण्डेय का प्राकृतसर्वस्व प्रकृति प्राकृत-व्याकरणों में इस भाषा के उद्घाटन और उदाहरण पाये जाते हैं। बक-मिश्र सभी प्राकृत वेदाङ्गों ने महाराष्ट्री का मुख्य रूप से विवरण दिया है और सीरसेनी, मागधी प्रकृति भाषाओं के महाराष्ट्री के साथ जो लेख हैं वे ही बतलाए हैं।

संस्कृत के अलंकार-शास्त्रों में भी भिन्न-भिन्न प्राकृत भाषाओं का उल्लेख मिलता है। भट्ट के नाट्य-शास्त्र में 'वाङ्मयाभा' भाषा का निर्देश है किन्तु इसके विशेष उद्घाटन नहीं दिए गए हैं। संभवतः वह महाराष्ट्री भाषा ही हो सकती है, क्योंकि भट्ट ने महाराष्ट्री का अङ्ग उल्लेख नहीं किया है। परन्तु मार्कण्डेय के प्राकृतसर्वस्व में उद्धृत प्राकृतनिबन्ध के 'बचन' में और प्राकृतसर्वस्व के श्रुत मार्कण्डेय के 'बचन' में महाराष्ट्री और वाङ्मयाभा का भिन्न भिन्न भाषा के रूप में उल्लेख किया गया है। इन्हीं के आम्नासों के

'महाराष्ट्रमन्त्रो यथा प्रकृतं प्राकृतं विदुः ।

सावत् सुकिष्कलां कुम्भार्यं कथयत् ॥" (१ ५) ।

इस श्लोक में महाराष्ट्री भाषा का और उसकी कठोरता का स्पष्ट उल्लेख है। इन्हीं के समय में महाराष्ट्री प्राकृत का इतना उल्लेख हुआ था कि इसके पदवी अनेक ग्रन्थकारों ने केवल इस महाराष्ट्री के ही अर्थ में इस प्राकृत शब्द का प्रयोग किया है जो सामान्यतः सर्व प्रादेशिक भाषाओं का वाचक है। श्रुत का आम्नासकार, वाग्मदासकार, पाद्मवर्धन-समसाह हेमचन्द्र का प्राकृत-व्याकरण प्रकृति मन्त्रों में महाराष्ट्री के ही अर्थ में प्राकृत शब्द व्यवहृत हुआ है। अलंकार-शास्त्र-मिश्र पाद्मवर्धनसमसाह और वेणीनामसाह इन क्षेत्र-मन्त्रों में भी महाराष्ट्री के उदाहरण हैं।

डॉ. हर्नोल्ड के मत में महाराष्ट्री भाषा महाराष्ट्र देश में उत्पन्न नहीं हुई है। वे मानते हैं कि महाराष्ट्री का जन्म 'विराट् पण्ड की भाषा' है और राजपूताना तथा सम्भवतः प्रकृति इसी विराट् पण्ड के अन्तर्गत है, इसीसे 'महाराष्ट्री' मुख्य प्राकृत कही गई है। किन्तु इन्हीं ने इस भाषा को महाराष्ट्र देश की ही भाषा कही है। सर मिर्चर्सन के मत में महाराष्ट्री प्राकृत से ही आधुनिक मराठी भाषा उत्पन्न हुई है। इससे महाराष्ट्री प्राकृत का उत्पत्ति-स्थान महाराष्ट्र देश ही है वह बात निश्चयेन कही जा सकती है।

आचार्य हेमचन्द्र ने अपने व्याकरण में महाराष्ट्र को ही 'प्राकृत' नाम दिया है और इसकी प्रकृति संस्कृत कही है।
 प्रकृति इसी तरह चण्ड कम्मदीभर, मार्कण्डेय कावि वेदाङ्गों ने साधारण रूप से सभी प्राकृत भाषाओं का मूल (प्रकृति) संस्कृत बताया है। किन्तु हम यह पढ़ते ही अचानक यह प्रमाणित कर जाय है कि कोई भी प्राकृत भाषा संस्कृत से उत्पन्न नहीं हुई है, बल्कि वैदिक अङ्ग में भिन्न-भिन्न प्रदेशों में अवस्थित भाषाओं की कथ्य भाषाओं

१ "तैव महाराष्ट्रीयम्" (वाग्मदास १२, १२) ।

२ "महाराष्ट्री व्याख्या सीरसेनीभाषा। यद्यपि भाषा अन्तर्गता सा वाङ्मयाभा ॥" (भा. व. इ. २) ।

३ यही प्राकृतसर्वस्व पृष्ठ १ और १ ४ ।

से ही सभी प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति हुई है, सुतरां महाराष्ट्री भाषा की उत्पत्ति प्राचीन काल के महाराष्ट्र-निवासी आर्यों की कथ्य भाषा से हुई है।

ऐसे समय आर्यों ने महाराष्ट्र में सर्वप्रथम निवास किया था इस बात का निर्णय करना कठिन है, परन्तु अशोक के पहले प्राकृत भाषा महाराष्ट्र देश में प्रचलित थी इस विषय में किसीका मत भेद नहीं है। उस समय महाराष्ट्र देश में प्रचलित प्राकृत से क्रमशः काश्मीर और नाटकीय महाराष्ट्री भाषा उत्पन्न हुई है।

प्राकृतप्रचारा का कार्य परचित्ति यदि वृत्तिकार कात्यायन से अभिन्न व्यक्त हो ता यह स्वीकार करना होगा कि महाराष्ट्री न अल्पतः सित्त-पूर्व से ही वर्ण के पहले ही साहित्य में स्थान पाया था। लेकिन महाराष्ट्री भाषा के तत्पक्ष क्षत्रों में व्यञ्जन वर्णों के छेप की बहुलता देखने से यह विश्वास नहीं होता कि यह भाषा पवती प्राचीन है। वरन्नाम का व्याकरण संभवतः जिस के बाद ही रचा गया है। जन अर्धमागधी और जैन महाराष्ट्री में महाराष्ट्री प्राकृत का प्रभाव का हमने पहले उल्लेख किया है। महाराष्ट्री भाषा में स्थित का मध्य साहित्य इस समय पाया जाता है उसमें जिस का वाक की महाराष्ट्री के ही निर्वहन देखे जाते हैं। प्राचीन महाराष्ट्री का कोई साहित्य उपलब्ध नहीं है। प्राचीन महाराष्ट्री में बाद की महाराष्ट्री की तरह व्यञ्जन-वर्ण-छेप की अधिकता नहीं थी इस बात के कुछ निर्वहन वज्र के व्याकरण में मिलते हैं। जैन अर्धमागधी और जैन महाराष्ट्री में प्राचीन महाराष्ट्री भाषा का सादृश्य स्थित है।

मरत ने नाट्यशास्त्र में आवन्ती और बाह्यकी भाषा का उल्लेख कर मानकों में पूर्व पात्रों के लिए आवन्ती का आवन्ती और बाह्यकी के लिए बाह्यकी का प्रयोग कहा है। मार्कण्डेय ने अपने प्राकृतसर्वस्व में 'आवन्ती स्वात्ममहाराष्ट्रीयोरसेष्योस्तु संस्कारात्' और 'आवन्त्यामेव बाह्यकी किन्तु तस्यात्र का भवेत्' यह कह कर इनका संक्षिप्त व्यञ्जन-निर्वहण किया है। मार्कण्डेय ने आवन्ती भाषा के आरम्भ के स्थान में कृष्ण और मणिष्यक काल के प्रत्यय के स्थान में न और का प्रचुरि व्यञ्जन वल्लभ हैं ये महाराष्ट्री के साथ सामान्य हैं। उनके लिए हुए किय, वेच, पञ्चवि प्रचुरि उदाहरणों में ओ उकार के स्थान में ककार है वहाँ गौरसेनी के साथ इमच (आवन्ती का) सादृश्य है परन्तु यह भी सर्वत्र नहीं है, जैसे उनके लिए हुए हो, गुम्ह, विम, मण्डप आदि उदाहरणों में। इसी तरह बाह्यकी में ओ र का होना है वही यकमागधी का सादृश्य है। इसके सिवा सभी वर्णों में यह भी आवन्ती की तरह महाराष्ट्री के ही सादृश्य है। सुतरां, ये दोनों भाषाएँ महाराष्ट्री के ही अन्तर्गत करी जा सकती हैं। इससे हमने भी इनका इस क्षेत्र में अलग निर्वहण नहीं किया है।

संस्कृत भाषा के साथ महाराष्ट्री भाषा के ये मेल नीचे दिए जाते हैं जो महाराष्ट्री और संस्कृत के सामान्य प्राकृत भाषाओं के सादृश्य और पारस्परिक की तुलना के लिए भी अधिक उपयुक्त हैं।

स्वर

१. अनेक अलग निम्न स्वरों के स्थान में भिन्न-भिन्न स्वर होते हैं; जैसे—उमुञ्जि = उवपिञ्जि ईप = ईपि हर = हीर, जनि = कुञ्जि यन्मा = देवमा पय = पोम्प दवा = बह सवा = सव, लयान = मील लालय = लुल्ल बावार = कर्वाट भास = देव्य, वातो = वीवी इति = इम पमिन् = पम विज्ञा = वीहा विचन = कुचन पिह = पेंड डिवाह = बोधाम इति = हरवई अयोर = कम्पार वागीय = वाणिय नील = पुल्ल हीन = हूण पीयूष = पेड्ड सुदुल = मज्ज भुदुति = मिगि, मुड = धीम पुल्ल = पुल्ल पुण्ड = पौड पुल्ल = सल्ल उल्ल = उलीह वल्ल = वातल वूर = वोर, वुलीर = वीलीर, वेवमा = विमल, लैन = लूण मनोहर = मणहर, पो = पच, गाध = सोमल = गुमास।

२. महाराष्ट्री में अ, इ, ए, नृ, य स्वर सधमा लुप्त हो गए हैं।

३. अ के स्थान में भिन्न-भिन्न स्वर पर्व रि होता है; यथा—पुण = पुण शुक्र = माउक, दया = विवा मायु = माय माउ बुल्ल = बुल्ल मया = मुला मया मोहा बुल्ल = विट, वैंट, मोड मयु = वट रिज अवि = रिडि अय = रिज सरल = सरि, एल = वरिप।

४. ए के स्थान में एति होता है; जैसे—एल्ल = विमिज वल्ल = विमिज।

५. ऐ का प्रयोग भी प्रायः महाराष्ट्री में नहीं है। उसके स्थान में सामान्यत ए और यिणप चर होता है, यथा—रैल = रेल ऐरण = एरण धिय = नेम, धिय्य = वेह्य ईय्य = ऐएल सरल्ल = रैलल = रैलल कललल = रैल = रैय दल्ल ऐरल्ल = यल्लरिप रैय = यल्लरिप।

- ४ ए व्य और म व्य न होता है; यथा—मय = मय्य मय्य = मय्य कार्य = मय्य ।
 ५ व्य और म व्य न होता है; यथा—मय्य = मय्य मय्य = मय्य मय्य = मय्य मय्य ।
 ६ ए व्य प्रायः ट होता है; जैसे—मय्यी = मय्यी, मय्यी = मय्यी ।
 ७ ए व्य स्थान में ट होता है; यथा—मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी ।
 ८ ए व्य ला होता है; यथा—मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी ।
 ९ ए व्य और व होता है; जैसे—मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी ।
 १० ए व्य व होता है; जैसे—मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी ।
 ११ ए व्य और व्य व होता है; यथा—मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी ।
 १२ ए व्य ए व्य क होता है; यथा—मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी ।
 १३ ए व्य न होता है; यथा—मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी ।
 १४ ए व्य और ए व्य व होता है; जैसे—मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी ।
 १५ ए व्य ए व्य और ए व्य म होता है; यथा—मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी ।
 १६ ए व्य ए व्य ह होता है; यथा—मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी ।
 १७ ए व्य ए व्य होता है; यथा—मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी ।
 १८ संयोग में पूर्ववर्ती क न ट, क न व न य व और क क कोन होता है; जैसे—मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी ।
 १९ संयोग में परवर्ती क न और व का स्त्रोप होता है; यथा—मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी ।
 २० संयोग में पूर्ववर्ती वार परवर्ती मभी न व और र का स्त्रोप होता है; यथा—मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी ।
 २१ संयुक्त भक्षरों के स्थान में जो जो आदेश उपर कहा है उसका और संयुक्त व्यञ्जन के स्त्रोप होन पर जो जो व्यञ्जन पाये रहता है उसका यदि वह शब्द के आदि में न हो तो स्त्रिय होता है; जैसे—मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी ।

चिन्तनपथ

- १ ई ई व के मय्य सं और संयोग में परवर्ती क के पूर्व में एव का आगम होकर संयुक्त व्यञ्जनों का चिन्तनपथ क्रिया जाता है; यथा—मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी ।

व्यत्यय

- १ अनन्त शब्दों में व्यञ्जन के स्थान का व्यत्यय होता है; यथा—मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी ।

सन्धि

- १ समास में कभी कभी ह्रस्व एव के स्थान में दाध और ह्रस्व के स्थान में ह्रस्व होता है; यथा—मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी ।
 २ एव पर एव पर पूर्व एव का स्त्रोप होता है; जैसे—मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी ।
 ३ संयुक्त व्यञ्जन का पूर्व एव ह्रस्व होता है; जैसे—मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी ।

सन्धि-नियम

- १ इदृश (व्यञ्जन का स्त्रोप होन पर व्यत्यय रहने पर) एव का पूर्व एव का स्त्रोप प्रायः सन्धि नहीं होती है; यथा—मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी मय्यी = मय्यी ।

२. पर पर में स्वरों की सन्धि नहीं होती है। जैसे—पाव-पाव, पवि-पवि, नवर-नवर।
 ३. ह, र, लीर व की चसमान स्वर पर होने पर, सन्धि नहीं होती है। यथा—नवर्षी वनपायी वृक्षों।
 ४. लीर की की पश्चो स्वर के साथ सन्धि नहीं होती है। यथा—कने पावने, पालीकनो एरि।
 ५. आम्पान के स्वर की सन्धि नहीं होता है। जैसे—होव व।

म्यास-विभक्ति

- [illegible]

किङ्क-अवस्थाप

- १ संस्कृत में जो लघु केवल पुंलिङ्ग है, उनमें से कई एक महापुंल्लिङ्ग में लोकिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग भी है, यथा—अन्तः = अन्तरी, अन्तः सुपुत्र = पुत्रा, पुत्रार्थः देवा = देवा, देवादि ।
- २ अन्तः उग्रात् आदिङ्ग के स्थान में पुंलिङ्ग होता है, यथा—अण्ड = अण्वी, मासू = मासवी, विभुता = विम्बुता ।
- ३ संस्कृत के अनेक द्विवचि शब्दों का प्रयोग महापुंल्लिङ्ग में पुंलिङ्ग और लोकिङ्ग में भी होता है, यथा—अन्तः = अन्तः, अन्तः = अन्तः, अन्तः = अन्तः ।

अप्रत्याय

१. विभीषण के प्रसवों के उद्घाटन होता है, जैसे—हृषिक = हृषिक, हृषिक रस = हृषिक रस ।
२. परमेष्ठि और भगवान् का विभाग नहीं है, महापुरुषों में सभी पातु कर्मवर्षों की तरह हैं ।
३. भूतनाथ के सम्पन्न भगवान् और वरुण विभाग न हारक एक ही तरह के रूप होते हैं और भूतनाथ में आत्मना
४. की उग्रद-कर्मवर्षात् कृन्त वा ही प्रयाग अधिक होता है ।
५. भगवान्-भक्त के भी भगवान् की तरह भक्तन और भगवन्तु ऐसे दो विभाग नहीं है ।
६. भगवन्तु के प्रसवों के पक्ष वि होता है, यथा—हृषिक = हृषिक, कर्मवर्ष, = कर्मवर्ष ।
७. भगवान् का क, भगवन्तु के भी विधि-स्मि और आचार्य के प्रसवों के स्थान में न्न और न्न होता है, यथा—
हृषिक हृषिकन हृषिक, हृषिक = हृषिक हृषिक ।
८. मात और कर्म में ही और दत्त प्रसव होते हैं, यथा—हृषिक = हृषिक, हृषिक ।

पुनरुत्थ

2. वा-स्यप क स्थान में गुप् य गुण गुण्य और वा हावा है जैसे—पवित्रा—पवित्र, पवित्र पवित्र्य पवित्रवत् पवित्रम्।

सहित

१. हर प्रत्यय के स्थान में स और लय होना है, यथा—देवत—देवत, देवतल ।

महापद्म-अपभ्रंश से मण्ठी और कौन्धी भाषा ।

मागधी-अपभ्रंश की पूर्ण शाखा से यंगल तक्षिण और आसामी भाषा ।

मागधी अपभ्रंश की बिहारी शाखा से मैथिली, मगही और भोजपुरिया ।

अर्धमागधी अपभ्रंश से पूर्वीय हिन्दी भाषाएँ अर्थात् अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी ।

सौरसेनी-अपभ्रंश से पुनर्वेली कन्नौजी, मजभाषा बांगरू हिन्दी या बडू ये पाश्चात्य हिन्दी भाषाएँ

नागर अपभ्रंश से राजस्थानी, माछवी, मेवाड़ा जयपुरी, मारवाड़ी तथा गुजराती भाषा ।

पाण्डि से सिंहली और मालदीयन ।

टाक्षी अवभा डाखा से छहण्डी या पश्चिमीय पंजाबी ।

टाक्षी-अपभ्रंश (सौरसेनी के प्रमाथ युक्त) से पूर्वीय पंजाबी ।

म्राचह अपभ्रंश से सिन्धी भाषा ।

पैशाची-अपभ्रंश से खरमीरी भाषा ।

सकण नागर अपभ्रंश के प्रधान लक्षण ये हैं —

वर्ण-परिवर्तन

१. भिन्न-भिन्न स्वरों के स्थान में भिन्न भिन्न स्वर होते हैं। यथा—इष्य = कष कषय कषय = कष कीण बाहु = बाह, बाह्य बाहुः इत = पदति निदति पुदति वृष = वृष वृण वृण मुहउ = मुहउ मुहउ, वेहा = सिंह लोह वेह ।
२. स्वरों के मध्यवर्ती असंयुक्त क, ख व, ब व ओर क के स्थान में प्रायः कमरा व व व व ओर व होता है यथा—विष्केरकर = विष्केरकर मुक्क = मुक्क कवित = कवित, शयष = शयष सकल = सकल ।
३. अनादि और असंयुक्त म के स्थान में वैकल्पिक सातुनासिक व होता है। यथा—कमल = कर्ब कषय प्रवर = प्रवर, प्रवर ।
४. संयोग में परवर्ती र का विकल्प से हो जाता है। यथा—प्रिय = निय प्रिय वय = वय वय ।
५. यही-वही संयोग के परवर्ती व का विकल्प से र होता है। जैसे—व्याव = वान वान व्याकण्ठ = वागरण वानरण ।
६. महापद्मों में अर्द्ध म् होता है वहाँ अवभ्रंश में म् ओर म् दोनों होत हैं। यथा—वीष्य = विम्य गिन्हा रक्षेय = विम्य, विम् ।

नाम-विभक्ति

१. विभक्ति के प्रसंग में ह्रस्व स्वर का दीर्घ और दार्घ्य का ह्रस्व प्राय होता है। यथा—रवायव = रायव बद्गा = रागव इष्टि = इष्टि दुकी = दुति ।
२. साधारणतः नामों विभक्ति के प्रसंग में व न व द्विष जान है। किंग मेन में और शब्द भद्र में अनेक विरोध प्रत्यय भी हैं जो पितार-भय से यहाँ नहीं द्विष गए हैं ।

	एकवचन	बहुवचन
अवना	उ, हो	
प्रिटीया	"	"
सुतोय	ए	हि
चतुर्वी	गु, हो, लु	ई "
पञ्चमी	है, ह	ह
छठी	गु, हो, लु	ह
सप्तमी	ह हि	हि
	आकथान-विभक्ति	
	एकवचन	बहुवचन
१	१ गु	ह
	२ गु	हि
	३ गु	ह, ह

- २ मध्यम प्रसंग के एकचरण में आध्यात्म में द. व और प होते हैं यथा—दुष्ट=करि, कर, करे ।
 ३ मध्यमप्रसंग में प्रत्यय के पूर्व में य आगम होता है; यथा—मध्यम्यति=होसक ।

कृत्य

- १ कृत्य-प्रत्यय के स्थान में इत्यन्त एवम् और क्या होता है; यथा—कृत्यन्=करीत्यन्त करीत्य करेगा ।
 २ कृ के स्थान में द, दत्, इति यति एत्ति, एत्सिष्णु एति एत्सिष्ठ होते हैं; यथा—कृत्वा=करि, करित करिति करति करीति करेत्सिष्ठु करेति करेत्सिष्ठु ।
 ३ कृत्य-प्रत्यय की आरम्भ एवं चाल यहाँ यथाहि एत्ति एत्सिष्णु, एति, एत्सिष्ठ होते हैं; यथा—कृत्य द=करेन करण करछाई कर छति, करेति करेत्सिष्ठु करेति करेत्सिष्ठु ।
 ४ शिखरायक कृत्य-प्रत्यय के स्थान में प्रथम होता है जैसे—कृत्य=करण्य गारिषु=गारण्य ।

वर्द्धित

- १ ल और टा के स्थान में पठ होता है; यथा—वेत्त=वेत्तस्य वृत्त=वृत्तस्य ।

इस पदस्य यह कह लाये हैं कि वैदिक और क्रीक संस्कृत के राज्यों के साथ युद्धना करने पर जिस प्राकृत भाषा में बर्ण-क्षेप प्रकृति परिवर्तन बिना अधिक प्रतीय हो, वह क्वनी हो परवर्ती काल में उत्पन्न मानी जाती बाकि। इस सिद्धय के अनुसार, हम देखते हैं कि महापट्टी प्राकृत में व्यञ्जनतो का क्षेप सम्पिष्टा अधिक है, इससे यह सम्मान्य प्राकृत-भाषाओं के पीछे उत्पन्न हुई है ऐसा अनुमान किया जाया है। परन्तु अपभ्रंश में एक नियम का व्यवस्था देखने में आता है, क्योंकि मिश्र-मिश्र प्रवेशों की अपभ्रंश भाषाएँ यथापि महापट्टी के बन्नी उत्पन्न हुई हैं तथापि महापट्टी में जो व्यञ्जन-वर्ण-क्षेप देखे जाते हैं, अपभ्रंश में बसकी अपेक्षा अधिक नहीं बकि कम ही वर्ण-क्षेप पाया जाता है और यह स्वर तथा संयुक्त स्वर भी विद्यमान है। इस पर से यह अनुमान करना असंभव नहीं है कि वर्ण-क्षेप की गर्भ ने महापट्टी प्राकृत में अपनी चरम सीमा को पहुँच कर लक्ष्य (महापट्टी को) धारि हीन-मौल पिण्ड की तरह स्वर-बहुल आकार में परिवर्ण कर दिया। अपभ्रंश में बसकी प्रतिक्रिया शुरू हुई और प्राचीन स्वर एवं व्यञ्जनों को फिर स्थान देकर भाषा को मिश्र भाषा में गठित करने की चेष्टा हुई। इस चेष्टा का ही यह फल है कि विज्ञेय समय में संस्कृत-भाषा का प्रभाव फिर प्रतिष्ठित होकर आधुनिक आर्य कल्प भाषाएँ उत्पन्न हुई हैं।

प्राकृत पर संस्कृत का प्रभाव

जैन और बौद्धों ने संस्कृत भाषा का परिहाण कर उस समय की कल्प भाषा में बर्णोपदेश को विविध करने की प्रथा प्रचलित की थी। इससे जो ही नया साहित्य भाषाओं का जन्म हुआ था वे जैन सूत्रों की अपेक्षागी और बौद्ध-वर्ण प्रसंग को पाकि भाषा है। परन्तु ये वा साहित्य-भाषाएँ और अल्पसंख्यक समस्त प्राकृत-भाषाएँ संस्कृत के प्रभाव का उत्पन्न नहीं कर सकी हैं। इस बात का एक प्रमाण तो यह है कि इन समय प्राकृत-भाषाओं में संस्कृत-भाषा के अनेक शब्द अविकल रूप में गृहीत हुए हैं। ये शब्द उत्तम रूप में आते हैं। यथापि इन उत्तम शब्दों ने प्रथम स्तर की प्राकृत भाषाओं से ही संस्कृत में स्थान और स्थान पाया था तो भी वह स्वीकार करना ही होगा कि ये सब शब्द परवर्ती काल की प्राकृत भाषाओं में जो अपरिचित रूप में व्यवहृत होते थे वह संस्कृत-साहित्य का ही प्रमाण था।

इसके अतिरिक्त संस्कृत के ही प्रभाव से बौद्धों में एक मिश्र भाषा उत्पन्न हुई थी। महायान-बौद्धों के महायानसूत्र नामक अविषय सूत्र प्रसंग है। अतिरिक्त, सङ्ग-पुष्पक नामक सूत्र सूत्र प्रकृति इसका व्यंग्य है। इन दोनों की भाषा में अतिरिक्त लक्ष्य तो संस्कृत के ही अनेक प्राकृत शब्दों के आगे भी संस्कृत की शिक्ति आग-रिपा है। परन्तु यहाँ पर यह करना आवश्यक है कि इसका वह भाषा अस्मत् है, क्योंकि यह संस्कृत-निमित्त-प्राकृत का प्रयोग एक प्रयोग के केवल प्रयोगों में ही नहीं बकि गण्य में भी देखा जाता है। इससे इन दोनों की भाषा को भाषा म कहकर प्राकृत-मिश्र-संस्कृत या संस्कृत-मिश्र-प्राकृत अथवा संक्षेप में मिश्र-भाषा ही कहा बाकि है।

हैं बनेक और जो राजगृह आदि मित्र का मत है कि संस्कृत भाषा, कमना परिवर्णित होती हुई प्रथम भाषा भाषा का रूप में और बाद के पाकि-भाषा का आधार में परिवर्ण हुई है। इस तरह भाषा भाषा संस्कृत और पाकि की सम्पर्क

से ही अधिक रूप में गृहीत हुए हैं और मारिष (पाप) अहिंसा (हस्तैव), मृमि (कर्म) निवृत्त्यन (निर्वासन), क्षम्य (क्षमा) प्रकृति प्राकृत के ही मुख शब्द मानित कर सकत हैं छिप गए हैं ।

प्राकृत-मायाओं का उत्कर्ष

कोई भी कल्प माया कभी न हो, वह सर्वदा ही पारवर्तन-शील होती है । साहित्य और व्याकरण वस्तु निरम क हयन में अक्षर-र गति-हीन और अपरिवर्तनीय करते हैं । उसका फल यह होता है कि साहित्य की माया कल्प कल्प माया से भिन्न हो जाती है और जन-साधारण में अप्रचलित सूत-माया में परिणत होती है । साहित्य की हरकोई माया एक समय की कल्प माया से ही उत्पन्न होती है और वह जब सूत-माया में परिणत होती है तब कल्प माया से फिर एक नयी साहित्य की माया की सृष्टि होती है । इस तरह एक समय की कल्प माया से ही वैदिक और छैकिक संस्कृत उत्पन्न हुई थी और वह साधारण के पास में पहुँचने पर अर्धमागधी, पाणि व्यापि प्राकृत मायाओं ने साहित्य में स्थान पाया था । ये सब प्राकृत-मायाएँ भी समय-पाकर जन-साधारण में पहुँचने हो जाने पर संस्कृत की तरह सूत माया में परिवर्तन हो गई और भिन्न-भिन्न प्रवेश की अपभ्रंश मायाएँ साहित्य मायाओं के रूप में व्यपहृत होने लगीं । अपभ्रंश-मायाएँ भी जब बुजोब होकर सूत-मायाओं में परिवर्तन हो चलीं तब हिन्दी, बंगला, गुजराती मराठी प्रकृति आधुनिक आर्य कल्प मायाएँ साहित्य की मायाओं के रूप में गृहीत हुई हैं । एक समस्त कल्प मायाएँ इस-उस युग की साहित्य की सूत-मायाओं की तुलना में अत्यन्त ऐसे कतिपय कल्पों से विभक्त होनी चाहिए जिनकी बर्गीकृत ही ये इस-उस समय की सूत-मायाओं को साहित्य के सिंहासन से च्युत कर उस सिंहासन को अपने अधिकार में कर पायी थी । अब यहाँ हमें यह जानना पड़ती है कि ये उत्कर्ष कौन थे ?

हरकोई माया का सर्व-मग्न अवस्था होता है अर्ध-मग्नता । इसलिए जिस माया के द्वारा जिवने स्पष्ट रूप से और चिन्तेन अल्प प्रयास से अर्ध-मग्नता किना जाय वह उतनी ही उत्कृष्ट माया मानी जाती है । इन दो कारणों के बल होकर ही माया का निरन्तर परिवर्तन साधित होता है और भिन्न-भिन्न काल में भिन्न-भिन्न कल्प मायाओं से नवानयी साहित्य मायाओं की उत्पत्ति होती है । वैदिक संस्कृत कल्प माया होकर छैकिक संस्कृत की उत्पत्ति एक ही कारणों से ही हुई थी । वैदिक शास्त्र-समूह अप्रचलित होने पर उनके अन्तर्गत प्रकृति और प्रत्ययों को बाद देकर जो सहाज ही समझ में आ सके वही प्रकृति और प्रत्ययों का संग्रह कर वैदिक भाषा से छैकिक संस्कृत की उत्पत्ति हुई थी । संस्कृत भाषा का प्रकृति-अल्प काल-कल्प से अप्रचलित होकर जब बुज-बोध्य हो उठे तब उस समय की कल्प मायाओं से ही स्याथैक, सुभाषाज-नाम्य मधुर और श्रेष्ठ प्रकृति-अल्पों का संग्रह कर संस्कृत का अन्तर्गत बुजोब कलाचारण्य कठोर और कर्षा प्रकृति-अल्प-सहित-समाप्तों का वर्जन कर अर्धमागधी पाठ्य और अग्रात्य प्राकृत-मायाएँ साहित्य-मायाओं के रूप में व्यपहृत होने लगीं । यदि इन सब नूतन साहित्य मायाओं में संस्कृत की अपेक्षा अर्ध-मग्नता की अधिक शक्ति, अल्प आयास से और सुक से लक्षण-नाम्यता प्रकृति गुण न होते तो ये कर्म ही संस्कृत जैसी सख्त भाषा को साहित्य के सिंहासन से च्युत करने में समर्थ न होती । अल्प-कल्प से ये सब प्राकृत-साहित्य-मायाएँ भी जब व्याकरण-द्वारा नियन्त्रित होकर अप्रचलित और जन-साधारण में पहुँचने हो चलीं तब उस समय प्रचलित मार्केसिक अपभ्रंश मायाओं ने इनसे हटाकर साहित्य मायाओं का स्थान अपने अधिकार में किया । यहाँ पर यह प्रश्न हो सकता है कि साहित्य की प्राकृत मायाओं की अपेक्षा इन अपभ्रंश-मायाओं में वह कौन-सा गुण जितने से अपने पक्ष की प्राकृत-साहित्य मायाओं का पक्ष कर उनके स्थान को अपने अधिकार में कर सकी ? इसका उत्तर यह है कि कोई भी गुण जस सीमा में पहुँच जाने पर फिर वह गुण ही नहीं रहने पाया वह शेष में परिणत हो जाता है । संस्कृत की अपेक्षा प्राकृत-मायाओं में यह अर्थ था कि इनमें संस्कृत के कर्षा और कलाचारणीय अर्धमुक्त और संयुक्त व्यञ्जन-वर्णों का स्थान में सब श्रेष्ठ और सुलोचनीय वर्ण व्यपहृत होते थे । किन्तु इस गुण की सीमा ही महाराष्ट्री प्राकृत में वह गुण सीमा का अतिक्रम कर गया बर्हिज कि संस्कृत के अनेक व्यञ्जनों का पक्ष्य है आप कर समक स्थान में स्वर-वर्णों की परम्परा-द्वारा समस्त शास्त्र गठित होने लगे । इससे इन शब्दों के लक्षण-नाम्य होने के बलके अधिकार कदाचित् हुए, क्योंकि कीच वीच में व्यञ्जन-वर्णों से व्यपहित न होकर केवल स्वर-परम्परा का लक्षण-नाम्य कल्प कल्प होता है । इस तरह प्राकृत-माया महाराष्ट्री-प्राकृत में जाकर जब इस चरम अवस्था में पहुँचती हुई तबसे ही इसका पक्ष्य अनिवार्य हो गया । इसकी प्रतिक्रिया

स्वरूप अपभ्रंश-भाषाओं में नूतन व्यञ्जन वर्ण बैठ कर सुलोच्चारण-योग्यता करने की चेष्टा हुई। इसका फल यह हुआ कि प्रादेशिक अपभ्रंश भाषाएँ साहित्य की भाषाओं के रूप में उभरी हुई। आधुनिक प्रादेशिक आर्य-भाषाएँ भी प्राकृत भाषाओं के उस रूप का पूर्ण संशोधन करने के लिए नूतन संस्कृत शब्दों को ग्रहण कर अपभ्रंशों के स्थान को अपने अधिकार में करके नवीन साहित्य-भाषाओं के रूप में परिणत हुई। आधुनिक आर्य-भाषाओं में पृथ्वी प्राकृतों और अपभ्रंशों की अपेक्षा उत्कर्ष यह है कि इन्होंने शब्दों के सम्बन्ध में प्राकृत और संस्कृत को मिश्रित कर समय के गुणों का एक सुन्दर सामञ्जस्य किया है। इनके उद्भव और उद्भव शब्दों में प्राकृत की क्षमधत्वा और मधुरता है और तत्सम शब्दों में संस्कृत की शोभाविषया। आधुनिक आर्य-भाषाओं में संस्कृत और प्राकृत दोनों की अपेक्षा उत्कर्ष यह है कि ये संस्कृत और प्राकृतों के अनाप्ययक छिग वचन और विभक्तियों के भेदों का बर्जित कर, उनके बर्जित मिश्रित स्वतन्त्र शब्दों के द्वारा छिग, वचन और विभक्तियों के भेदों को प्रकटित कर और संस्कृत तथा प्राकृतों के विभक्ति-बहुल स्वभाव का परिष्कार कर विस्लेष्य-शील-भाषा में परिणत हुई है। इस तरह इन भाषाओं ने अपभ्रंश से बचने के अर्थ का अधिकतर स्पष्ट रूप में प्रकाशित करने का मार्ग-प्रदर्शन किया है। एक गुणों के कारण ही आधुनिक आर्य-भाषाओं ने वैदिक, संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश इन सब साहित्य-भाषाओं के स्थान पर अपना अधिकार जमाया है।

संस्कृत की अपेक्षा प्राकृत-भाषाओं में जो उत्कर्ष—गुण ऊपर बताये हैं वे अनेक प्राचीन प्रत्यक्षों में पड़े ही प्रदर्शित किये हैं। उनके प्रत्यक्षों से प्राकृत के उत्कर्ष के संशय में कुछ बचन यहाँ पर उद्धृत किय जाते हैं —

‘अभिषि पाठय-कम्पे पठिषि रोळं च वे स वापि ।’

नामस्य तत्त-तत्तं कृणोति वे क्त्वा उ उर्जति ।। (इत्य की पाषाणस्तोत्र १ २) ।

अर्थात् जो लोग असुतोपम प्राकृत शब्दों में तो पढ़ना जानते हैं और न सुनना जानते हैं अथवा नाम-उत्पत्ति की आलोचना करते हैं उनके शरम क्यों नहीं आती ?

‘उत्तिष्ठतः सावर्ण्यं पश्यन्त्यायारं सकम्प-वर्ण्यम् ।’

सकम्प-सहस्राक्षकण्टकैः पश्यन्त्यसि यद्वाचो ।। (सावर्णिताव का मठबहो १५) ।

संस्कृत शब्दों का सम्बन्ध प्राकृत का ज्ञान से ही व्यक्त होता है, संस्कृत भाषा के उत्कर्ष संस्कार में भी प्राकृत का प्रभाव स्पष्ट होता है।

‘सुवन्त-वैष्णो संनिवेष्ट-विशिष्टो ब्रह्म-वैष्णो ।’

द्विर्लभितो गो आहुत-वर्णमिह सुवन्त-वैष्णो ।। (मठबहो ७२) ।

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज तक प्रचुर परिमाण में नूतन नूतन अर्थों का दर्शन और सुन्दर रचनावादी प्रबन्ध संपत्ति कही भी है तो वह केवल प्राकृत में ही।

‘हृदि-विष्टो विमलाक्षो न मन्त्रावधो न मन्त्रिणः ।’

इह बहिर्बुधो भवो-बुधो य हियस्य विष्णुः ।। (मठबहो ७३) ।

प्राकृत-काव्य पढ़ने के समय हृदय के भीतर और बाहर एक ऐसा असू-पूर्व रूप होता है कि जिससे दोनों आँखें एक ही साथ विकसित और मुग्नित होती हैं।

‘पस्तो सकम्प-वैष्णो पाठय-वैष्णो होइ सुउमारे ।’

गुण-वैष्णो वैष्णो वैष्णो वैष्णो वैष्णो वैष्णो ।। (मठबहो की कर्पूरकवरी पद्य १) ।

संस्कृत भाषा कर्करा और प्राकृत भाषा मुकुमार है। पुरुष और महिला में भिन्नता अन्तर है, इन दो भाषाओं में भी घटना ही प्रमेद है।

१. प्रवृत्त प्राकृत कम्पे पठिषि । योनु च वे न जागति । नामस्यतत्त-तत्तं कृणोति वे क्त्वा उ उर्जति ? ॥

२. उन्मेषति नावर्ण्यं प्राकृत-काव्यमा संस्कृत-पाठमा । संस्कृत-संस्कारोक्त-वैष्णो प्राकृत-वैष्णो प्रमाय ॥

३. मन्त्रावधो-वैष्णो संनिवेष्ट-विशिष्टो ब्रह्म-वैष्णो । द्विर्लभितो गो आहुत-वर्णमिह सुवन्त-वैष्णो केवल प्राकृत ॥

४. हृदि-विष्टो विमलाक्षो मुकुलीकार-वैष्णो । इह बहिर्बुधो भवो-बुधो य हियस्य विष्णुः ॥

५. पस्तो संस्कृत-वैष्णो प्राकृत-वैष्णो पाठय-वैष्णो होइ सुउमारे । पुरवर्ण-वैष्णो-वैष्णो-वैष्णो-वैष्णो-वैष्णो ॥

निदः कम्पा विष्णुः प्रकृतिमधुरा प्राकृतगिर ।

सुखमोपगम सः सत्यरचनं भूतवचनम् । (पञ्चोद्वार का भावरागावस्य १ ११) ।

संस्कृत भाषा सुनने योग्य है, प्राकृत भाषा स्वभाव-मधुर है, अपभ्रंश भाषा भव्य है और पैशाची-भाषा की रचना रस-पूर्ण है ।

सत्यव-कम्पास्तत्वं वेद न बाणति र्भद-मुदीया ।

सत्पाणति सुह-वीर्यं तैलेनं पामर्यं रम्य ॥

मुद्रक-वेदि-रद्विं मुक्तिक-बलोहि विरम्यं रम्यं ।

पाप्य-कम्पां सोरु कस्य न द्विभवं सुहृत्ते ? ॥ (महेश्वरपुरि का पञ्चमीमाहात्म्य) ।

सामान्य मनुष्य संस्कृत-ग्रन्थ को अधो को समझ नहीं पाता है । इस तरह वह मग्य उस प्राकृत भाषा में रचा जावा है जो सब लोगों को सुख-योग्य है ।

गुहार्थक दूरी-राश्वरों से रहित और सुखलिन पक्षों में रचा हुआ सुन्दर प्राकृत ग्रन्थ किसके हृदय को सुली गयी करता ?

सत्यव-कम्पास्तत्वं सत्यव-कम्पां न विमियं वेदः ।

वेद-वेदं न पतिनं सत्यव-कम्पास्तत्वं कुलः ॥

(वचनान्तर्गत (१) से सत्यव-कम्पास्तत्वं को प्रस्ता ११ में उद्धृत) ।

संस्कृत ग्रन्थ को जोड़ो और जिसने संस्कृत काव्य की रचना की उसका भी नाम मत को क्योंकि वह (संस्कृत) सबसे हुए बाँस के पर की तरह वह वह वृद्ध जायाज करता है—अविच्छिन्न समता है ।

पाप्य-कम्पास्तत्वं रवी की वासव वृत्त न वेद पतिरहि ।

कम्पास्तत्वं न वासव-वीर्यवत् रचितं न वचनयो ॥

सतिप नृपकण्ठं सुहृद-वचन-वद्वे स-विपारे ।

उत्ति पाप्य-कम्पां को स्मरः कस्य पतिर ? ॥ (वचनान्तर्गत का वचनान्तर्गत, पृष्ठ ९)

प्राकृत-भाषा की कविता में और विग्रह के कथनों में जो रस जावा है उससे वासी और दासक उस की तरह, यदि नहीं होती है—मन कभी ऊँचा नहीं है—अच्छे निरखर बनी ही रहता है ।

जब सुन्दर मधुर, गृहकार-रस-पूर्ण और सुवर्णियों को प्रिय पैसा प्राकृत ग्रन्थ मौजूद है तब संस्कृत पढ़ने को कीन जाता है ?

१ संस्कृत-भाषास्तत्वं वेद न वासव वृत्तः । सर्वेवापि सुखवीर्यं तैलेनं प्राकृतं रचितम् ॥

पुत्रार्थवेदि-रद्विं मुक्तिक-बलोहि-रचितं रम्यम् । प्राकृत-भाषां शोके कस्य न हृदयं सुखयति ? ॥

२ कम्पास्तत्वं संस्कृत-भाषां न विमियं वेदः । सर्वेवापि सत्यव-कम्पां तत्त्ववत्पुनः करोति ॥

३ प्राकृत-भाषा रवी की वासव तथा वा वेद-पतिरहि । कम्पास्तत्वं न वासव-वीर्यवत् रचितं न वचनयो ॥

उत्ति वेद-पाप्य-कम्पां को स्मरः कस्य पतिर ? ॥ सर्वेवापि संस्कृतं पतिरुत्तम् ? ॥

इस कोष में स्वीकृत पद्धति

- १ प्रथम भाषा टाइलों में कम से आठवटा राखण, उसके बाद सारे टाइलों में उस प्राकृत राज्य के शिक्षा यात्रिका संस्थित निर्देश समेत पन्नाय फसे कोट (कोलेट) में फसे टाइलों में प्राकृत राज्य का संस्कृत प्रतिस्तरण, उसके अनंतर सारे टाइलों में हिंदी भाषा में प्रथम और तदनंतर सारे टाइलों में कोलेट में प्रसारण (रिफरेंस) का उल्लेख किया गया है।
- २ टाइलों का क्रम नामकी वर्ग-माता के अनुसार इस तरह रखा गया है — अ, वा इ, ई, उ ऋ ए, ऐ, ओ दीर्घ क ख ग घणि । इस तरह अनुस्वार के स्थान की गज्जा संस्कृत-कोपी की तरह पर-परबी अनुप्रासिक व्यंजनन के स्थान में न कर सतिन स्वर के बाद और प्रथम व्यंजनन के पूर्व में ही करने का कारण यह है कि संस्कृत की तरह प्राकृत में व्याकरण की दृष्टि से भी अनुस्वार के स्थान में ध्रुवाधिक बन होना नहीं बी अनिवार्य नहीं है और प्राचीन हस्त-लिखित पुस्तकों में प्रायः सर्वत्र अनुस्वार का ही प्रयोग पाया जाता है।
- ३ प्राकृत राज्य का प्रवेश विरेल रूप से कार्य (चर्चाभाषा) और महाप्रदो मापा के कार्य में और सामान्य रूप से कार्य से नेकर प्रत्यक्ष भाषा तक के कार्य में किया जाता है। प्रसुत कोप के 'प्राकृत-नगर-महाप्रदो' नाम में प्राकृत-नगर सामान्य कार्य में ही मूलीत है। इससे यहाँ कार्य महाप्रदो सीरेनेगे मरोक-विशेषित मेय मायी पैरायो बुतिकपिरायी तथा धाराय भाषाओं के शब्दों का संग्रह किया गया है। परन्तु प्राचीनता और सरलिय की दृष्टि से इन सब भाषाओं में कार्य और महाप्रदो का स्थान ऊँचा है। इससे इन दोनों में राज्य यहाँ पूर्ण रूप से लिए गये हैं और सीरेनी नाकि भाषाओं के प्रायः सभी शब्दों को स्थान दिया गया है जो या तो प्राकृत (भारी और महाप्रदो) से विरेल गये रहते हैं अथवा निम्न प्राकृत रूप नहीं पाया गया है जैसे—'मेय' 'निष्ठुर' 'उत्तरा' 'इत्तर' 'अम्यासीधर' वगैरह। इस वेब की पहिचान के लिए प्राकृत से उत्तर भाषा के शब्दों और प्राकृत-नगर के शब्दों के माने सारे टाइलों में कोट में कम उस भाषा का संक्षिप्त नाम-निर्देश कर दिया गया है, जैसे '(शी)' (या) इत्यादि। परन्तु सीरेनी प्रादि में भी वो राज्य या रूप प्राकृत के ही समान है यहाँ ये मेय-नरीक थिक नहीं दिए गए हैं।
- (क) भारी और महाप्रदो से सीरेनेगे प्रादि भाषाओं के दिन शब्दों में सामान्य (सर्व-राज्य-साधारण) मेय है उनका इस क्षेत्र में स्थान नेकर पुनःपुनः-आप राज्य के अनेकर की विशेष बड़गा इसलिए अधिक नहीं चपन्न गया है कि वह सामान्य मेय प्राकृत-भाषाओं के साधारण अम्यासी से भी बनात नहीं है और वह सर्वज्ञापत में भी उस उस भाषा के लक्षण प्रदर्शन में बिना दिया गया है जिससे वह सहज ही ब्याख्या में जा सकता है।
- (ख) भारी और महाप्रदो में भी परतर उल्लेखनीय मेय है। जिस पर भी यहाँ उनका मेय-निर्देश न करने का एक कारण वो यह है कि इन दोनों में उत्तर भाषाओं से अपेक्षा-कुछ समाप्ता अधिक है; दूसरा प्रकृति की अपेक्षा प्रत्येक में ही विशेष मेय है जो अकारण से सम्मान रखता है, कोय से नहीं छिद्यत केन संघर्षों ने महाप्रदो-नों में भी कार्य प्राकृत के शब्दों का अनिवार्य रूप में अधिक व्यवहार कर उनकी महाप्रदो का रूप है बिना है।
- ४ प्राकृत में प्रमुविद्या नियम कुच ही अव्यवस्थित है। प्राकृत-प्रक्रम सेकुल्य व्यापार्यसती और प्राकृतमित प्रादि में इस नियम का एकत्र प्रमाण है अकि भारी केन महाप्रदो तथा पडनहो-प्रमुनि प्रन्नों में इस नियम का हर से व्यापार बार देखा जाता है; यहाँ तक कि एक ही राज्य में कई दो बहुविधि है और कहीं नहीं जैसे 'अय' और 'अय' 'ओय' और 'ओय'। इस कोय में ऐसे शब्दों की पुनःपुनः न कर कोई भी (बहुविधासे 'य' से पंडित या सचित) एक ही राज्य लिया गया है। इससे अन्य तथा उत्तर समाप्त राज्य की

मुम्बई की मुम्बिका के लिए आकर रमल ठानुएन नहीं नहीं रिकॉर्डवाली शब्द के 'अ' के स्थान में 'य' और 'अ' की जगह 'अ' दिया गया है।

धाराँ बँधीयों में बहसिवाले 'व' की धरा 'ठ' का प्रयोग भी बहुत ही पामा जाता है जैसे 'धव' (धन) के स्थान में 'घट' 'घरि' (घरील) की जगह 'घरील' धारि। ऐसे स्थलों की भी इस बोध में बहूबा पुनरुक्ति न बरके त-बन्धित स्थलों की हो गिरील बन से स्थान रिपट पडत है।

- संयुक्त राज्यों की एकमेव प्रतिक्रिया के अन्तर्गत ही उत्तर अफ्रीका में राज्य के भीतर ही उत्तर अफ्रीका में राज्य द्वारा ही किया गया है। इनके राज्यों में किए गए हैं और इसके पूर्व (अर्थात् 1945) का निष्कर्ष दिया गया है। ऐसे राज्य का संयुक्त प्रतिक्रिया की बातें दूसरों में किए हैं कर दिए गए हैं। विशेष रूपों में राज्यों की सुपरी के लिए संयुक्त राज्य प्रत्येक प्रतिक्रिया के अन्तर्गत ही अन्तर्गत है। और इसके अन्तर्गत ही राज्य के लिए मूल राज्य में जारी के लिए गए हैं। इनके ही सुपरी की गई है।

(क) इन संयुक्त शक्तों में क्या संबंध — से जिस राज्य को रेलवे को बढ़ा गया है वहाँ उस राज्य के उसी मुख राज्य के भीतर रेलवे प्राप्ति न कि अन्य राज्य के समर ।

- * स लक्ष्म (ल) या वा (लक्ष्) सर सर, लखन (सर) यम लम (लम) शक्ति सुखन पीर सर्व-साधारण प्रत्ययवादी रूपों में प्रत्ययों को जोड़कर केवल एक रूप ही यहाँ दिए गए हैं। चरणु जहाँ ऐसे प्रत्ययों में वच धाति की स्वीकृता है वहाँ प्राक्प्रत्यय रूप भी दिए गए हैं।

वायुओं के सब कम दबावों में और कुल्लों के कम दबावों में वायु के भीतर स्थित हैं।

(क) बाप तुम्हें कर्म-कठोरि क्यों का निर्देश दी बापु के पीछर कर्म— ऐ ही किया गया है।

(क) कुतः कृष्ण के रूप तथा धर्म प्रत्येकात् तथा कृष्ण के विरहित श्व बहुधा धर्माय धर्माय अपि अधिक स्वातन्त्र्य है।

४. बिना संस्कारों से राज्य-संघु किया गया है जगमें यही हुई संस्कार की वा प्रेत की भूतों को सुधार कर कुछ राज्य ही बहा सिंग कर हैं। राज्यों के हालातें बाबायों भूतों की जोखनर मिरोल कुबालो वाड रेडरड के जलोब के वाधरर वृष में जों के लों जगुव में सिंग कर है और कुबाल वाव की कुंड कम में '१' (राकुडिड) के बाव बरसा की गई हैं; कैड केडी बावड बावड बावड राज्य।

(क) वहाँ विभिन्न विभिन्न लोगों में या एक ही शीश के विभिन्न विभिन्न स्थानों में या एक ही शब्द के अनेक परिवर्तन बन पड़े गए हैं और विभिन्न के कुछ कम बन गिराए गए हैं। कठिन काम पड़ा है वहाँ पर ऐसे बपानों से सब शब्द इस शीश में प्रभावित हो गए हैं और तुलना के लिए ऐसे अनेक शब्द के अन्तः काय में देखो— किन्तु कर इतर रूप में वृद्धि बना है जैसे देखो 'पुष्पकविष्णु' 'पुष्पकविष्णु', 'पुष्पक', 'पुष्पकेश', 'पुष्पकेश' प्रादि शब्द ।

- [illegible]

- ११ संस्कृत की वृद्ध प्रकृति में श्री कण्व की कथा तुल्य के धारि के 'व' तथा 'व' के निचय में लुप्त कर-येव है। एक की तुल्य कही बकायरी पया जाता है तो कही बकायरी। श्री पण्यतीपुत्र ये 'वसिष्ठ' हैं तो विपलकम्प ये 'वसिष्ठ' बना है। इच्छे दिते ठानी की शीर्ष-स्थलों में व केकर जो 'व' या 'व' धरित नाम पड़ा है कही एक तुल्य ये वह तुल्य निष्क पया है और वयन प्रकार के तुल्यों के ऐश्वर्य की पड़ा ही बिने कहे हैं। हाँ कही शीतो प्रकृति के परितरण का प्रकृति के जन्मेव पया गया है कही शीतो र्मों में वह तुल्य बिना कया है, श्री 'कण्यारुद्ध' और 'कण्यारुद्ध' धारि।

१३. विज्ञान-शोधक संस्थित राज्य प्रमुख राज्य है ही संस्था एकल है, अंशज-परिचय से पूर्ण।

(क) कहीं सर्व-त्रेह में विष्णु प्राणि का भी जेह है वहाँ कय सर्व के पूर्व में ही निज निज प्राणि का प्रथम राज्य के बिना कहा है ।
कहाँ देहा निज राज्य नहीं किया है वहाँ उनके पूर्व के सर्व का जनों के प्रमाण ही निज प्राणि समझ्य पाविए ।

(क) प्राकृत में नियम-विधि ब्रह्म ही अभिव्यक्ति है। प्राकृत व्याकरणों में भी कुछ धाति संज्ञित परन्तु 'व्यापक धूर्तों के द्वारा इस बात का स्पष्ट उल्लेख किया है। प्राचीन धर्मों में एक ही राज्य का निध-निध नियम में शेष नहीं तक हर्मों इष्टियोंपर हुआ है, उस-उस नियम का निर्देश इस कोष में उस राज्य के पास कर दिया गया है। वहाँ नियम में विशेष विनियोगों परी धर्म है वहाँ उस धर्म का अन्तर्गत भी दे दिया गया है।

(ग) वहाँ कीर्तिव्यय का विशेष रूप पाया गया है वहाँ उस धर्म के बाद 'की— निर्देश करके रेकर्ड के साथ दिया गया है।

(घ) प्राकृत में धर्मों में धर्म्यय के साथ विधिक या प्रयोग पाया जाता है। इससे ऐसे स्थानों में धर्म्यय-सूचक 'ध' के साथ प्रायः नियम शेषक राज्य भी दिया गया है; जैसे 'अस्म' के बाद 'ध की' = (धर्म्यय तथा कीर्तिव्यय)।

१३. देश-स्थानों के संस्कृत प्रतिरूप के स्थान में केवल देश का संक्षिप्त रूप 'वृ' ही काये दार्यों में क्षेत्र में दिया गया है।

(क) जो वातु वास्तव में देश होने पर भी प्राकृत के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध व्याकरणों में संस्कृत वातु के धातुएँ ब्रह्म कर लक्षण बतलाये गये हैं उनके संस्कृत प्रतिरूप के स्थान में 'दे' न केवल प्राचीन व्याकरणों की मान्यता बतलाने के उद्देश्य से वे के धातुएँ संस्कृत रूप ही दिये गये हैं। इससे संस्कृत से विनियुक्त विवरण कन्वाले इन देश वातुधर्मों को वास्तविक लक्षण समझने की भूल कोही न करे।

(ख) जो वातु लक्षण होने पर भी प्राकृत-व्याकरणों में उसकी धातु वातु का धातुएँ बतलाया गया है उस वातु के व्याकरण-अर्थगत धातुएँ संस्कृत रूप के साथ वास्तविक संस्कृत रूप भी लिखाया गया है यथा ऐच्छ के [दृष्ट, प्र + दृष्ट] धाति।

(ग) प्राचीन धर्मों में जो राज्य देश रूप से माना गया है परन्तु वास्तव में जो देश न केवल लक्षण ही प्रतीय होता है, ऐसे राज्यों का संस्कृत-प्रतिरूप दिया गया है और प्राचीन मान्यता बतलाने के लिए संस्कृत प्रतिरूप के पूर्व में 'दे' दिया गया है।

(क) जो राज्य वास्तव में देश ही है, परन्तु प्राचीन व्याकरणधर्मों ने उसकी लक्षण बतलाये हुए उसके को परिभाषित—क्षिति-क्षान कर बतलाने हुए संस्कृत—रूप धर्मों में दिये हैं, परन्तु जो संस्कृत-धर्मों में नहीं पाये जाते हैं, ऐसे संस्कृत-प्रतिरूपों को वहाँ स्थान न देते हुए केवल 'दे' ही दिया गया है।

(क) जो राज्य देश रूप से संक्षिप्त है उसके प्रतिरूप के पूर्व में 'हृ' भी दिया है।

१४. प्राचीन व्याकरणधर्मों के विवेक हुए संस्कृत-प्रतिरूप से जो को अधिक समानतावाला संस्कृत प्रतिरूप है वही वहाँ पर दिया गया है, जैसे 'एवाधिय' के प्राचीन प्रतिरूप 'एवाधिय' के बन्ने 'एवानिय'।

१५. अनेक धर्मबन्ने राज्यों के प्रत्येक धर्म १, २, ३ धाति धर्मों के बाद ऊपर-दिने गये हैं और प्रत्येक धर्म के एक या अनेक रेकर्ड इस धर्म के बाद धातु धातु में दिये हैं।

(क) वातु के निम्न-निम्न कन्वाले रेकर्डों में जो-जो धर्म पाये गये हैं वे सब १, २, ३ के धर्मों से केवल ऊपर-वातु के धातुएँ तथा लक्षण के रूप दिये गये हैं और उक्त-उक्त कन्वाले रेकर्डों का उल्लेख उक्त कर के बाद धातु में कर दिया गया है।

(ख) जिस राज्य का धर्म वास्तव में सामान्य या व्यापक है किन्तु प्राचीन धर्मों में उसका प्रयोग प्रकर-लक्षण विशेष या संकोच धर्म में हुआ है, ऐसे राज्य का सामान्य या व्यापक धर्म ही इस कोष में दिया गया है, यथा—'हृतिव्यय' का प्रकर-लक्षण होता 'हृति' के बीच धातुएँ 'य' विशेष धर्म वहाँ पर न केवल 'हृति-लक्षण'ों पर सामान्य धर्म ही दिया गया है। लक्षण-लक्षण (लक्षण) धाति संक्षिप्त राज्यों के लिए भी वही नियम रखा गया है।

१६. राज्य-रूप नियम धर्मों की विशेषता या गुणाधि की दृष्टि से वहाँ अन्तर्गत देने की धारणा प्रतीय हुई है वहाँ पर बहु, पर्वत धर्म में, धर्म के बाद और रेकर्ड के पूर्व में दिया गया है।

(क) अन्तर्गत के बाद कोष्ठ में बहु अनेक रेकर्डों का उल्लेख है वहाँ पर केवल धर्म-प्रथम रेकर्ड का ही अन्तर्गत से संक्षिप्त है, दोष का नहीं।

१७. एक ही धर्म के निम्न अनेक संस्करणों का उपयोग इस कोष में किया गया है रेकर्ड में साधारण-संस्करण-निर्देशन का उल्लेख न करके केवल धर्म का ही उल्लेख किया गया है। इससे ऐसे रेकर्ड-धर्मों राज्य का सब संस्करणों का या संस्करण-विशेष का उल्लेख न चाहिए।

पाइअ-सह-महराणवो ।

(प्राकृत-शब्द-महाराज)

भीमान कौसासजी श्रीचन्द्रजी गोसेध
जयपुर बालों की मोर से भेंट ॥

पासिअ-शेस-समूह, भासिअगेरववाय-सुसिअर्थ ।

पासिअ-सोआलोअ, वीवामि जिण महावीर ॥ १ ॥

निर्दिष्टय-साउ-पर्य, अइसइअ सपल-आणि-परिणमि ।

वाय अवाय-रहिअ पणमामि जिणिअ इवार्ण ॥ २ ॥

पाइअ-भासासइअ अपलोइअ सख सत्तमअविउली ।

सह-महणअव-णाम, रणमि खोस स-यणअ-कर्म ॥ ३ ॥

अ

पु [अ] १ पाइअ बलु-भासा वा प्रथम
भणर (हे १ १ श्रमा) । २ विपुल हृण
(नि १ १) ।

१ ऐपो च य (पा १४ जी २, वज्र १११
१४ कृपा) ।

२ [दि] ऐलो अ 'बोरी य' (पाइ ७६) ।

न [अ] निच-निचिअ यो में से प्रक-
रण के अनुसार, सिद्धी एक को बलसनेवाला
अप्यय—१ निपेय प्रतिपेय 'अईषण' (पु
७ २४) 'समन्तिह मघोआरी (विने
१२१२) । २ विरोध अस्मान यकर्म
(शापा १ १) । ३ यमममता अनुचिअल
अपान (वज्र २२ ३) । ४ अनाउ, मोह-
यन मघण (मउ) 'अन' (मय ४) ।
५ अना अविचमालना 'अणु' (वउ) ।
६ अय निमना 'अणु' (एणि) । ७
माहय नृपना यकमुरंगण (मय ११) ।
८ यमरुलना पुआन 'अमा' (वाइ २५) ।
९ अणुन एम-अउ (एह १) ।

अ पु [क] १ नृप गूर (नि ७ ११) । २
यमि, यण । ३ अणु, मोर (नि ६ ४१) । ४

म. पानी बल (नि १ १) । ५ चिअ, टोच
(नि २ ४३) । ६ मलक सिर (नि ६ १५) ।

अ वि [अ] अचअ जात (पा २७१) ।

अअअ वि [वि] स्नेह-अहित मुखा (नि १
११) ।

अअर ऐलो अअर (नि १११) ।

अअर ऐलो आयर (नि ११२) ।

अइअ [अवि] १ २ अनागना वीर अणमण
अय का मुचक अणय (नि २ २ २ अणय
५) ।

अइअ [अति] यह अणय नाम वीर यणु में
पुर्ष में लगना है वीर शीघ्र के यणों में से किसी
एक को मुचिअ करना है—१ अतिरय अति
रेश अणयण अउली 'अविचिअ' (पा
१४ रमा वा २१४) । २ अणय गहूअ
अणय (कण) । ३ पुआ अउली अइअय
(दा ४) । ४ अतिअणय अणयण 'अइ
अमो' (एह १ ४ ४२) । ५ अअर अना
अ-अय 'अइअय' (भीर शाना १ १) ।
६ अिआ अणयिअ (एह १) ।

अइअ [अति] यमय-युचक अणय-अइ
अइअ (गुप १ २ ३ २) ।

अइअक [आ + इ] आयमन करना आ
मिरना 'अइअि मारपा' (व १५१) ।

अइअ [अवि] पुनर्वसु नमन का अति
हाता देव (मुअ १) ।

अइअक [अवि+इ] १ अणमन करना । २
अमन करण । ३ अवेश करना । अइ अईअ
(वे १ २५ कण) । अइअ (गुप
१ ७ २५) ।

अइअइ [अविचिअ] अविचिअ अति (गुप
१ २ १ १२) ।

अअअक [अति + अअ] १ अतिरेश
करना अनामन करना । २ अणमन करना ।
३ अअ अइअना (नि ११ ५ ८६) ।

अअविअ नि [अत्यजिअ] १ अतिरेश
अनामन किया हुआ (नि ११ ५) । २ अणय
अति अतिअल (नि ११ ८) । ३ अइअना
हुआ (नि ११ ८६) ।

अअइ ऐलो अइअ (नि ११ ८) ।

अइअइ ऐलो अइअ (नि ११) ।

अइअन [अणयअन] १ अणयन (नि ११
१) । २ अणयन शीघ्र (नि ८ ८) ।

अइअ ऐलो अइअ = अति + अ ।

जंझूर वेशो धंझूर 'ता नुश विप्यति
निर्झूरे विसेदेइ' (कृष्णि ११ टी) ।

ता लक्ष्मी (ज्य १३४ टी)। बा लो [ज
जन्मा पुत्री (पाथ)। रक्षक रक्षक

अंत्यदण्डन न [३] रोड, बीमारी (वि. ६)

अंगपञ्चिका न [रे] शरीर को मोड़ना (रे १ ४२)।

अंगार पुं [अङ्गार] १ बलवा हुआ कोयला (रे १ ४७)। २ जैन साधुओं के लिए जिता का एक शेष (भाषा)। सहार पुं [सहैक] एक धर्म्य सैन-भाष्य (सं २३४)। बड़े की [यना] सुन्दर गार के रंग का कुन्दर की एक कला का नाम (बम् ३ ६)।

अंगारग पुं [अङ्गारक] १-२ ऊपर रखे अंगारग (सा २६१)। ३ मरुत-ग्रह (पण्ड १ १)। ४ पहला म्हाग्रह (हा २)। ५ राजस-भेद का एक राजा (पठम ४ २६२)।

अंगारिय वि [अङ्गारिय] कोक के लिये बना हुआ, निरखें (माट भाषा)।

अंगारक रेखो अंगार 'निबर्हन्मार्गमि' (विह १७२)।

अंगारका रेखो अंगारग (पठ)।

अंगारिका न [रे] ईश का दुकड़ा (रे २ ८)।

अंगारिय रेखो अंगारि (भाषा)।

अंगि पुं [अङ्गि] १ प्राची की (गल ८)। २ वि शरीरपाला। ३ धीन-धनी का बाला (कम्प)।

अंगिरस न [अङ्गिरस] एक वीर को गोतम मोक्ष को दावा है (अ ७)।

अंगिरस वि [अङ्गिरस] १ अंगिरस-नाम में कर्म (हा ७)। २ पुं एक राजा (पठम ४ ८६)।

अंगीकृत } वि [अङ्गीकृत] स्वीकार (अ १ १ २२६)।
अंगीकृत } गुण २२६)।

अंगीकर } सक [अङ्गी + कृ] स्वीकार
अंगीकृत } करना। अंगीकर (महा भा)।
अंगीकरेण (स १ ६) संक अंगीकरेण (वि २१४३)।

अंगुष्ठ पुं [अङ्गुष्ठ] १ वृत्त-विशेष। २ ग. इन्द्र पुत्र का कर्म (रे १ ८६)।

अंगुष्ठ पुं [अङ्गुष्ठ] अंगुष्ठ (अ १) पतिय पुं [पदन] १ एक विद्या। २ 'अभ-भाष्य' मूल का एक गुण सम्पन्न (अ १)।

अंगुष्ठो की [रे] शिरका परगुण्डन, धुनट (रे १ ६ स २४४)।

अंगुष्ठसक न [रे] अंगुष्ठो अंगुलीय (रे १ ११)।

अंगुष्ठसक वि [अङ्गाङ्ग] संवात बधा (अ २६४)।

अंगुष्ठ सक [पूर्य] पूति करना पूर करना। अंगुष्ठ (रे ४ ६८)।

अंगुष्ठिय वि [पूरित] पूरुं किया हुआ (गुमा)।

अंगुष्ठि, टी की [अङ्गुलि की] संकी (सा २७७)।

अंगुष्ठ न [अङ्गुष्ठ] यह के बाद मध्यभाग के बराबर का एक भाग माल-विशेष (अ ३ ७)। पाहसिय वि [पूयस्तिवक] दो से केर लय अंगुष्ठ सक का परिमाण बाला (जीय १)।

अंगुष्ठि की [अङ्गुलि] संकी (गुमा)।
शोम पुं [कोश] अंगुलि-नाम बलवाना (पठ)। एक-कण न [स्वेष्टन] संकी कोकना काना करना (सं)।

अंगुष्ठन न [अङ्गुलीयक] अंगुली अंगुलिस्तक } (रे ३, ६ कम्प वि २३२)।
अंगुष्ठनग

अंगुष्ठि की [रे] शिरस्य वृत्त-विशेष (रे १ ३२)।

अंगुली की [अङ्गुली] रेखो अंगुलि (कम्प)।

अंगुलीय } पुं न [अङ्गुलीयक] अंगुली
अंगुलीयग } (गुर १ ६४) 'पावरी'
अंगुलीयय } एक सामिप। समपिण्डो
अंगुलीयक } अंगुलीययो लीप (पठम ३४
अंगुलीयक } गुर १ १३२ वि २३२
अंगुलीयय } पठम ६६, ९५)।

अंगुलीय रेखो अंगुलीय (गुज २ २६)।

अंगुलीय } न [अङ्गुलीय] १ शरीर के
अंगुलीय } अंगुलीय (पण्ड २४)। २ ग. बौद्ध शरीर के लीप-लीप धर्म-विशेष 'गहरेसम' सुमंजसीपौद्धा लुग धर्मोत्पत्ति' (पठ ३)।

आम न [आम] शरीर के धर्म-विशेष के निमित्त में कारक-मूल धर्म-विशेष (कम्प १ ३४ ४८)।

अंगुलि की [रे] शिर को छोकर बाकी शरीर का लाल (अ ४ २३)।

अंगो य [अङ्ग] मय-मूलक धर्म्य (मति १६, प्रदी २ ३)।

अंश सक [कृप] १ शीघ्रता। २ शीघ्रता प्राप्त करना। ३ रेखा करना। ४ छाना। अंश (रे ४ १८७)। संक अंशेष्टता (पठ)। अंश सक [अङ्ग] पूरना पूरा करना। अंश (मति)।

अंश सक [अङ्ग] बाला। अंशति (पंथा १६ २६) 'अङ्ग गह पूरुमि ब' 'शोषीय परस्य' (इह ४)।

अंश सक [अङ्ग] कपड़े का शेष भाग (गुमा)।

अंशि पुं [अङ्गि] गमन गति (मन १३)।

अंशि पुं [अङ्गि] धामन धाना (सा १३)।

अंशिय वि [अङ्गित] १ भुक्त शक्ति (गुर ४ ६७)। २ पूरित (गुमा २१८)। ३ मरुत अंशिय (गुमा १८)। ४ न. एक प्रकार का मूल (हा ४ ४ जीय १)। ५ एक बार का समय (गण १३)। अंशि पुं [अङ्गि] १ धनमासन धाना-धाना (मन १३)। २ अंश-नीचा होना (हा १)।

अंशियरिभिय न [अङ्गितरिभिय] एक लक्ष का मात्र (रय २३)।
अंशिय की [अङ्गिक] भाग्यकर (सं २)।
अंश सक [कृप] १ शीघ्रता 'अंशति वस्तु' 'अंशति धर्म्य' (वि ७६४)। २ एक लाना होना। बह अंशमाय (वि ७६९)। प्रदी. अंशति (पठ ११)।

अंशिय न [कपय] शीघ्रता (पण्ड २, ३)।

अंशिय वि [रे] बाकट, शीघ्रता (रे १ ४४)।

अंश सक [अङ्ग] शीघ्रता। अंशियक (म २४४)।

अंशिय पुं [अङ्गिय] १ कृष्ण गुण-विशेष (गुज २)। २ शरीर-विशेष (मि ११७)।

अंशिय पुं [अङ्गिय] १ शरीर-विशेष (अ ३)। २ एक शीघ्रता (अ ४)। ३ शरीर-विशेष का एक शिखर, जो शिखरी कहा जाता है (अ ३ ८)। ४ शरीर-विशेष (पठ)। ५ एक भाति का रस (पठ १ १)। ६ शरीर-विशेष (मन १३)। ७ शरीर-विशेष (गुमा १)। ८ शरीर-विशेष

(अ ११६ टी)। आगी स्त्री [बानी] जिसे मरुय हो सके ऐसी बिधा (धृष २, २)। आभूय नि [पामूय] गृह, भित्त 'मृद्वेति वा भित्तेति वा संतद्वान्मृद्वेति वा पमृदा' (भाष)। एवात्र पुं [पात] बस्यमान समवेष्ट (हे २ ७३)। आय पुं [भाय] समवेष्ट (जिने)। मुद्रुय न [मुद्रुय] मुद्रुय कम् मुद्रुयत् म्युन मुद्रुयत् (बी १४)। रदा स्त्री [दा] १ विरोधान। २ गदा 'मृद्वी सरपमृद्वी' (वा १६)। रदा स्त्री [अदा] मध्य-काल बीच का समय (भाषा)। रप्य पुं [आरमय] प्रमा पार (हे १ १४)। रदिय, रेहिद्व (ही) नि [हिद्व] १ स्थिति संतपन-मुद्रु (भाषा)। २ पुन मरुय (मम १६)। उप ११६ टी धमि १२)। वेहिद्व [वेहि] रंगा और मृदा के बीच का क्रेत (हुमा)। अंत नि [कान्त] सुन्दर, महाहर (मि १ १६)।

अंतव नि [आयान्] प्राता हुआ (मि ६ ४६)।

अंतव नि [अवग] पार-नामी पात-आत (मि ६ १०)।

अंतव नि [अवत] १ ध्वनिगो राधन। २ जिसकी सीमा लगे रह (मि ६, १०)।

अंतव १ नि [अवत] १ मनोहर, सुन्दर अंतव (मि ६ १०)। २ अवतर्क समाहित (धृष १ १३)। ३ पर्यन्त प्रांत भाग 'वे पूर्व परिप्रासित क्षणर वे अवतर्क' (धृष १ १)। ४ वन मुलु (मि ६ १०) वा ६६९ टी) नवागम बंधित कर्मफल' (धृष १ ७)।

अंतव नि [अवत] १ पार-नामी। २ सुन्दर वा बहिर्देश में छोड़ा जा सके 'विष्ठाप पार्यय गोय निरनेको परिष्ठाप' (धृष १ ६)।

अंतवय केतो अंत गाय (वय १)।

अंतव नि [यमस] बन्धन निमग्न (प्रवी २४)।

अंतवप नि [अवपनि] विरोधान-वर्तति (मि ६ ४)।

अंतवभाय केतो अंत भाय (धृष १ ४२)।

अंतर न [अउतर] १ मध्य भीतर 'गामतेरे पविटो सो' (अ १ टी)। २ मेर, कियेय फल (प्राम् १९८)। ३ अक्षर, समय (गुया १ २)। ४ अक्षयदान (अ १)। ५ अक्षराल अक्षराल (भा ७ ८)। ६ विवर छिद्र (पाम)। ७ मनोहरण। ८ पात्र। ९ पुं भाषा, कर्म। १ सुत के कपडे पहनने का भाषा, तीन कर्म (कर्म)। अउप पुं [कर्म] तीन साधु का एक धार्मिक प्रत्यय पाचरण (पंच) कर्म पुं [कर्म] कर्म की एक धार्मिक ब्रह्मवि-कियेय (पण्ड १)। कर्ण न [करण] धात्वा का शुभ अर्थ ब्रह्मवि-कियेय (पंच)। गह न [गृह] १ घर का भीतर भाग। २ दो चट्टों के बीच का अंतर (हृ १)। जई स्त्री [जडी] झांग ली (अ १)। जीय पुं [जीय] १ जीव-कियेय (बी २३)। २ लक्षण सुगृह के बीच का जीव (पण्ड १)। सत्रु पुं [सत्रु] भीतरी शत्रु, कर्म-कांक्षा (गुग ४३)।

अंतर मक [अम्वरय] स्वरपान करना बीच में डगना। अंतरेहि, अंतरेमि (मि ६ ११६)।

अंतर नि [आन्तर] १ अन्तर, भीतरी-संय-लमुद्राणि अंतरेय कपाणी (अम् २)। २ मानिक (वर ७१)।

अंतरा नि [अम्वर] भीतरी (जिने २ २७)।

अंतरेही स्त्री [आन्तरा] मयरी-कियेय (जिने २३ १)।

अंतरपदा स्त्री [अम्वरपदा] मूल स्थान व अई मनुष्य की हृदी पर भित्त न न (पच ७)।

अंतरमुद्रुय स्त्री अंत मुद्रुय (पच २ १३)।

अंतरा य [अम्वरा] १ मध्य में बीच में (अ ६२४)। २ करने पूर्व में (कर्म)।

अंतराहय न [आम्वरायिक] १ बर्त-कियेय जो बाग धारि करने में निग्न करना है (अ २)। २ शिष्ट, स्वागत (पण्ड २ १)।

अंतराहय न [अम्वरायीय] ऊपर देनी (गुग १ १)।

अंतराहय पुं [अम्वरायय] एला का बीचका भाग (गुग १ १३)।

अंतराय पुन. [अम्वराय] देतो अंतराय (अ २ ४ म २ ३)।

अंतराहय पुं [अम्वराहय] चंदर, बीच का भाग (धमि ८२)।

अंतराहय पुन [अम्वरायय] हूकान हाथ (बाद १)।

अंतरायास पुं [अम्वरायस] अम्वरायास बर्त-कर्म (कर्म)।

अंत रकम पुन [अम्वरिक्] अम्वरण पाचरा (भा १७ १ स्वर ७)। जाय नि [जात] प्रतीक के ऊपर रखी हुई प्रान्त संघ धारि वस्तु (भाषा २ ३)। पामगाह पुं [पाथगाह] पान्तेर में अक्षराल के पास का एक पैन-शीघ्र और बहो की गगनाय भीतर-बाग की धृति (ही)।

अम्वरिक्म नि [आम्वरिक्] १ आकाश-संबंधी आकाश का (बी ३)। २ वहाँ क परम्पर पुत्र और मेर का एक ब्रह्मवि-काला खल (मम ४६)।

अम्वरिक्म न [अम्वरीय] १ वस्त्र कपड़ा। २ अम्मा का बीचका वस्त्र 'अम्वरिक्म छात्र एवमव' अम्मा अम्वरिक्म नाम वेम्मा हेद्विक्म पोत (मि ६ १३)।

अम्वरिक्म न [व] कर्मपरी क्रीडन (हे १ १३)।

अम्वरिक्मया स्त्री [अम्वरीया] कैनीय वैरागिक गच्छ की एक शाला (वय)।

अम्वरिक्म नि [अम्वरिक्] अम्वरिक्म अम्वर कर्मा (गुग १ १४) व १ अम्वरिक्म। २७)।

अम्वरिक्म स्त्री [व] समाहित अंत (अ २)। अम्वरिक्म स्त्री [अम्वरिक्म] योग कर्म, योग स्वरपान (पच)।

अम्वराय न [अम्वरीय] हीर 'गम्वरीय' होने कियेय अम्वरिक्म अम्वरीय व' (बम्वि १ ४१)।

अम्वराय न [अम्वराय] बिधा विगाय (अच १)।

अंधार सक [अन्धकार] अन्धकार-युक्त करता। कर्म 'मेहुलन मुरे अंधारिअर न कि मुल्ले' (पुं १८०)।
अंधारिय नि [अन्धकारित] अंधकार बाधा (पुं ४४ मुर ३ २१)।
अंधास सक [अंधास] अंधा करता। अंधा बेर (पिउ ८४)।

अंधिय नि [अंधिय] अंध बना हुआ (मन्मथ १२१)।

अंधिया एवी [अंधिया] अंध-विशेष (दे २, १)।

अंधिआ एवी [अन्धिया] अनुविष्टिब अनु की एक जाति (उत ३६ १४०)।

अंधिआ नि [अन्ध] अन्धा अन्धान्ध (पहल २ २)।

अंधिअ बेतो अंधिआ, (पिउ ३०२)।

अंधीकटि (ही) नि [अंधीकट] अंध किया हुआ (लव ४६)।

अंधु पुं [अन्धु] अंध हुआ (प्रासादे १ १२५)।

अंधिआ देना अंधिआ (पिउ ३)।

अंध पुं [अन्ध] अंध (दे ३, १०)।

अंध पुं [अन्ध] एक बात के परमात्मिक देव का नरक के जोरों की बुल देते हैं (सम २८)।

अंध पुं [अन्ध] १ धाम का देव। २ न धाम धाम-धन (दे ८४)। ३ हुवा एवी [दे] धाम की धात्री हुवा (पिउ १२)।

आयाग न [दे] १ धाम का देवा (पिउ १२)। २ धाम की धाम (आवा २०२)।

आयन न [दे] धाम का हुवा (पिउ १२)।

आयन न [दे] धाम का धाम हुवा (प्रासा २०२)। 'देमियाएवी [पिउ] धाम का धाम' (पिउ १२)।

आयन न [दे] धाम का धाम (पिउ १२)। आयन न [दे] धाम की धाम (पिउ १२)। आयन न [दे] धाम की धाम (पिउ १२)। आयन न [दे] धाम की धाम (पिउ १२)।

अंध न [अन्ध] १ तब कदा (अं ३)। २ गदा रन। ३ गदा बीज (पिउ)। ४ नि निगुन रन बीज-राना (इ १)।

अंध नि [अन्ध] १ कदा कदा। २ मनु के मनुज बीज (अं १)।

अंध नि [अन्ध] धाम रतन-राना (नि १ १४)।

अंधा देतो अंध = धाम (अन्ध) 'दिया एवी [दे] धाम की धाम (प्रासा)।

अंध पुं [अन्ध] १ देव-विशेष (पउम ६८, ६२)। २ जिसका पिता ब्राह्मण और माता वैश्य हो वह (पुं १ २)।

अंध पुं [अन्ध] १ एक परिवारिक का महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेकर योव धारया (बीर)। २ महाय महावीर का एक भावक जो ब्राह्मणी बीबीनी में २२ वीं वीर्यकर होता (हा २)।

अंध नि [दे] कठिन (दे १ १९)।

अंधाई एवी [अन्धाधाय] बाई माता (पुं २९८)।

अंधासी एवी [दे] कठिन और बली बलिक (दे १ ३०)।

अंधा देतो अंध (पुं ३३४)।

अंध पुं [अन्ध] एक देव-विमान (देव १४४)।

अंध न [अन्ध] १ जाकरा (पाप मय २)। २ बल बलका (पाप निगु १)।

(तउप पुं [अन्ध] अन्ध-विमान (पाप)। धाम न [अन्ध] अन्ध-विमान (कप)।

अंधर पुं [अन्धर] धामका, धाम (मय २ २—मय ३०२)।

अंधरि पुं [अन्धरी] १ मनु जाइ (मय ३ ६)। २ मनु (बीज)। ३ पुं धाम-बीजों की बुल अंधास एक प्रकार के परमात्मिक देव (मय १८)।

अंधरि पुं [अन्धरी] १ ऊपर का धाम (मय २८)। २ अंधरि की गदी का निवासी एक ब्राह्मण (धाम)।

अंधरि एवी [अन्धरि] १ अंधरि। २ अंधरि देतो अंधरि।

अंधरि एवी [अन्धरि] १ अंधरि। २ अंधरि देतो अंधरि।

अंधरि एवी [अन्धरि] १ अंधरि। २ अंधरि देतो अंधरि।

अंधरि एवी [अन्धरि] १ अंधरि। २ अंधरि देतो अंधरि।

अंधरि एवी [अन्धरि] १ अंधरि। २ अंधरि देतो अंधरि।

अंधरि एवी [अन्धरि] १ अंधरि। २ अंधरि देतो अंधरि।

अंधरि एवी [अन्धरि] १ अंधरि। २ अंधरि देतो अंधरि।

अंधरि एवी [अन्धरि] १ अंधरि। २ अंधरि देतो अंधरि।

अंधरि एवी [अन्धरि] १ अंधरि। २ अंधरि देतो अंधरि।

अंधा सक [अन्ध] अंधास देना अंधास देना 'अंधा अंधास अंधास' (महा)।

अंधा सक [अन्ध] अंधास देना अंधास देना 'अंधा अंधास अंधास' (महा)।

अंधा सक [अन्ध] अंधास देना अंधास देना 'अंधा अंधास अंधास' (महा)।

अंधा सक [अन्ध] अंधास देना अंधास देना 'अंधा अंधास अंधास' (महा)।

अंधा सक [अन्ध] अंधास देना अंधास देना 'अंधा अंधास अंधास' (महा)।

अंधा सक [अन्ध] अंधास देना अंधास देना 'अंधा अंधास अंधास' (महा)।

अंधा सक [अन्ध] अंधास देना अंधास देना 'अंधा अंधास अंधास' (महा)।

अंधा सक [अन्ध] अंधास देना अंधास देना 'अंधा अंधास अंधास' (महा)।

अंधा सक [अन्ध] अंधास देना अंधास देना 'अंधा अंधास अंधास' (महा)।

अंधा सक [अन्ध] अंधास देना अंधास देना 'अंधा अंधास अंधास' (महा)।

अंधा सक [अन्ध] अंधास देना अंधास देना 'अंधा अंधास अंधास' (महा)।

अंधा सक [अन्ध] अंधास देना अंधास देना 'अंधा अंधास अंधास' (महा)।

अंधा सक [अन्ध] अंधास देना अंधास देना 'अंधा अंधास अंधास' (महा)।

अंधा सक [अन्ध] अंधास देना अंधास देना 'अंधा अंधास अंधास' (महा)।

अंधा सक [अन्ध] अंधास देना अंधास देना 'अंधा अंधास अंधास' (महा)।

अंधा सक [अन्ध] अंधास देना अंधास देना 'अंधा अंधास अंधास' (महा)।

अंधा सक [अन्ध] अंधास देना अंधास देना 'अंधा अंधास अंधास' (महा)।

अंधा सक [अन्ध] अंधास देना अंधास देना 'अंधा अंधास अंधास' (महा)।

अंधा सक [अन्ध] अंधास देना अंधास देना 'अंधा अंधास अंधास' (महा)।

अंधा सक [अन्ध] अंधास देना अंधास देना 'अंधा अंधास अंधास' (महा)।

अंधा सक [अन्ध] अंधास देना अंधास देना 'अंधा अंधास अंधास' (महा)।

अह न [अह] कमल पत्ता 'कुर्मोक्कुर
अनसिहो, निम्बविपाणअकुणअसिहो'
(अ १ टी)।

अमोहि पुं [अमोहि] छत्र (अ २७१)।
अस पुं [अस] १ नाव धरन अह दुग्धा
(पम्)। २ मेव, विपन्न (विने)। ३ पशमि
धनं कुण (विने)।

अस पुं [अस] विपमल कर्म सत्ता-भित्त
कर्म 'अस इति संकर्म धर्म' (कम्प १६)।
अस वि [अस] मन्त्रेण (अ ११ २२)।

अस पुं [अस] कल कथा (आपा
असका) १ १ वहु)।

असि क्लो अस = असु।

असि स्त्री [असि] १ कोट कोला (अ ५
१८)। २ बाट, लोक (अ ५)।

असिवा स्त्री [असिवा] मन्त्र, विद्या (अ ३
१)।

असिवा स्त्री [असिवा] १ बालीर का टोम
(अ १६, १)। २ नासिका का एक टोम
(अ ३)। ३ कुली पेशा (अ ३)।

असु पुं [असु] किरण (अ ५ १)। मासि
पुं [मासि] सुनं वृत्त (अ ५ १)।

असु क्लो असुव = असुव (अ १ ४)।

असु व [असु] किरण। मन्त्र असु वि
[असु] १ किरणवत्ता। २ पुं सुनं
(अ ३ १)।

असु न [असु] मन्त्र, वेष-जल। असु व
वि [असु] मन्त्रवत्ता (अ ३ १)।

असु } न [असु] मन्त्र वेष-जल (अ १
असुप २)।

असुप न [असुप] १ वर कपडा (अ १,
२)। २ वारीक वस्त्र (अ २)। ३ वीरक
वस्त्र (अ ५)।

असतप क्लो असतप (अ ७ ४ १३, २,
३ १)।

अह पुन [अह] मत 'अह' न वसिष्ठी
को निरुद्धा छिन्न अन्तराह' (अ १ १४)।

अहि पुं [अहि] वन वेष (अ ५)।

अह वि [अहि] अर्धवस्त्र वस्त्र (अ
१)।

अह वि [अह] (अ ११४)।

अह वि [अह] १ स्नेह रहित। विलने
राष्ट्री न भी हो वह (अ १ १)।

अहपण वि [अहपण] १ कप रहित। २
पुं वस्त्र का एक पुन (अ १४ ७)।

अहपिय वि [अहपिय] १ कम्प रहित
२ पुं माला महावीर का बाजरी कण्ठ
(अ ११)।

अहप क्लो अहप = अहप (अ ५)।

अहप वि [अहप] १ कप रहित।

अहप } २ पुं स्वाम्यवत्ता एक अह
हो वीर वस्त्रेण वस्त्रता (अ ४ २)।

अहप पुं [अहप] अमोघ भाषा,
सामोह विधि-मार्ग से बहुर का वाक्य
(अ ५)।

अहप वि [अहप] अमोघवत्ता, साम्य
विधि साधारण-वत्ता धारि धरता वहु
(अ १)।

अहपिय पुं [अहपिय] विलने साम्य
का पुन-पुन जान न हो देता विल साधु
(अ १)।

अहपिय क्लो अहप = अहप (अ ५)।

अहप वि [अहप] १ कप रहित। २
विधि एक साधु (अ ५)।

अहप } न [अहप] क १ कर्म
अहप } का धनाव (अ १)। २ पुं
मुक्त छिन्न वीर (अ ५)। ३ कवि धारि
कर्म रहित (अ ५ न वि वीर) (अ १ ४)।

अहप मूय वि [अहप] अहप-मूय
में उपाय होने वत्ता (अ १)। अहप
मूयि स्त्री [अहप मूयि] विल वृत्ति में
अहप वीर से हो धारक वहुनी की प्रति
होने से वृत्ति वीरक कर्म करने की धारकवत्ता
गही है वह, धीर-मूयि (अ १ ४)।

अहप वि [अहप] अहप-मूयि में
अहप (अ १ ४)।

अहप वि [अहप] अहप-मूयि में
अहप (अ १ ४)।

अहप वि [अहप] अहप-मूयि में
अहप (अ १ ४)।

अहप वि [अहप] अहप-मूयि में
अहप (अ १ ४)।

अहप वि [अहप] अहप-मूयि में
अहप (अ १ ४)।

अहप वि [अहप] अहप-मूयि में
अहप (अ १ ४)।

अहप वि [अहप] अहप-मूयि में
अहप (अ १ ४)।

वि [अहप] अहप को करेवत्ता
(अ ५ ७ १)।

अहप (अ) अहप क्लो (अ ५)।

अहप न [अहप] १ गही कप (अ)
२ मूय 'अह' वस्त्रेण अहप वस्त्रेण
वाहिप वृत्ति' (अ १)।

अहप वि [अहप] १ गही कप
से रहित। २ पुं मुक्ताता (अ ५ २)।

अहप पुं [अहप] १ धनिकता (अ
५, १)। २ वि अहप-वत्ता निम्ब
(अ ५ २)। अहप-वत्ता स्त्री [अहप]
कर्म-मार्ग की धनिकता से वहुता धारि कर्म
की वहुता (अ ५ ४)।

अहप } [अहप] अहप क्लो।
अहप } ३ अहप-वत्ता अहप करने
के अहप (अ ५ १ १)। ४ अहप-वत्ता
अहप वि [अहप] अहप-वत्ता (अ ५
१ १)।

अहप वि [अहप] १ अहप-वत्ता। २ पुं
मुक्ताता (अ ५ १)।

अहप पुं [अहप] 'अ' वस्त्र, धन वस्त्र
वस्त्र (अ ५ १)।

अहप पुं [अहप] १ अहप-वत्ता की
धनिकता वस्त्र (अ ५ १ १)। २ वि
अहप (अ ५ १)। अहप वि [अहप]
अहप को निम्ब अहप-वत्ता (अ ५
१)।

अहप वि [अहप] अहप-वत्ता अहप
अहप वत्ता (अ १ १)।

अहप वि [अहप] १ अहप-वत्ता। २ पुं
मुक्ताता (अ ५ १)। २ वीर निर्म
वस्त्र (अ ५)।

अहप वि [अहप] गही वीर वीर
धनिकता-वत्ता (अ ५ १ १)।

अहप वि [अहप] १ अहप-वत्ता, अहप-
वत्ता

अहप वि [अहप] अहप-वत्ता, अहप-
वत्ता

अहप वि [अहप] अहप-वत्ता, अहप-
वत्ता

अहप वि [अहप] अहप-वत्ता, अहप-
वत्ता

अक्रिय वि [अक्रिय] १ शाली विरहम ।
२ धूम ध्वजार से रहित (छ ७) । ३
परलोक-विषयक क्रिया को नहीं करनेवाला
नास्तिक (छ १) । ४ वि [रिमम्] धाया
को निष्क्रिय माननेवाला, संक्षिप्त (मृ १
१) ।

अक्रिया एवी [अक्रिया] १ क्रिया का
धारा (म २६ २) । २ गुरु क्रिया का धार
ध्वजार (अ ३ ३) । ३ नास्तिकता (छ ८) ।
४ वि [वारिम्] परलोक-विषयक क्रिया
को नहीं करनेवाला नास्तिक (छ ४ ४) ।
अक्रिय रेवी अक्रिय, 'रे रेह मोक्ष्य
मनीरियाला मनेख पुढा बुधमविपति' (मृ ४
१ १) ।

अक्रिया एवी [अक्रिया] रेवी अक्रिय ।
अक्रियामय वि [अक्रियामय] विरहो किसी
तापक म मय न हो वह, निर्मय (भाषा) ।
अक्रिय वि [अक्रिय] प्रत्ये काम में निरुल
(पठ) ।
अक्रिय वि [अक्रिय] निष्कल निर (नि ३) ।
एवी अक्रिया (क्य) ।

अक्रिय वि [अक्रिय] रम्य सुख (पण्य
१ ४) ।
अक्रिय पु [रे] मयपन मुगड (प ४) ।
अक्रिय रेवी अक्रिय = मयपन ।
अक्रियसंवि वि [अक्रियसंवि] विरहमा
हुया, 'विहिरसुवकनोविममकोमायंतवम
मयीविमयणामे' (दीप) ।

अक्र पु [अक्र] १ मूलं गुरु (गुर १
२२१) । २ वाक का वेद (भा १ १८) । ३
मुसल, शीला; 'केल मनुमसरापी विविपी
उल्लसकनोयो' (पण्य ३४) । राख का
एक मूल (पण्य ३६ २) । 'सुख म [पुन]
वाक की लई (पण्य १) । 'तैम पु [तैमस]
विवाचर मंत का एक धारा (पण्य ३४ ४) ।
मोदीया एवी [वाविप] मजी-विपिप
(कण्य १) ।

अक्र पु [वि] इल संसे-हारक (रे १ ६) ।
'अक्र रेवी मक (गा ३६ मे १ ३) ।
अक्रम वि [अक्रम] मजी क्रिया मया । पुत्र
वि [पुत्र] को पत्ने कमी न किया गया हो
(वि ३२ ४) ।

अक्रम रेवी अक्रम (पाठ ३३) ।

अक्रम वि [आक्रम] १ मयनाम के हाप
रवाता हुया (छाया १ ८) । २ वेप हुया
मय (भाषा) । ३ पण्य मयिपुत (मृ १
१ ४) । ४ एक जाति का निर्जीव मय (छ
३, ३) । ५ म. धात्मल अक्षरम (म १
१) । ६ अक्रम वि [अक्रम] अक्रम रवा
हुया (मृ १ १ ४) ।

अक्रम वि [रे] रेवा हुया मय (रे १ ६) ।
अक्रम वि [अक्रम] मयिप, मयिपिप,
मयिपम (मृ १ १ ४ ६) ।
अक्रम मक [आ + क्रम] रोना चिहाना
(मला) । मक अक्रम (मुपा ३४ ४) ।

अक्र (मय) रेवी अक्रम = आ + क्रम ।
अक्रम; संह अक्रमिपण (छण) ।

अक्र पु [आक्रम] रोना विनाप चिहान-
कर रोना (गुर २ १ ४) ।

अक्र वि [रे] मय करनेवाला, रमक (रे
१ १३) ।

अक्रमपण्य वि [आक्रम] मयलपण्य
(मुपा) ।

अक्रमिपण्य वि [आक्रमिपण्य] विनाप रोना (वि
४ ६४ पण्य १ १ ३) ।

अक्रम मक [आ + क्रम] १ धात्मल करना
रवाता । २ पण्य करना । मक अक्रम
(वि ४ ४) । संह अक्रमिपण्य (पण्य १ १) ।

अक्रम पु [आक्रम] १ रवाता मकरी करना ।
२ पण्य (मय) ।

अक्रमण्य वि [आक्रमण्य] १—२ मय रेवी
(वि १४ ६६) । ३ पण्य (मि १ ४६) ।

४ वि धात्मल करनेवाला (वि १ १) ।

अक्रमिपण्य रेवी अक्रम = मयलपण्य (मय २०२
मुपा १२०) ।

अक्रमण्य एवी [रे] १ मयलपण्य, मयलपणी ।
२ मयलपणी एवी (रे १ ६) ।

अक्र एवी [रे] मयिप (रे १ ६) ।

अक्र एवी [अक्र] मयिप इली (मृ १ १) ।

अक्रासी एवी [अक्रासी] मयलपण्य एक
थी (दी १) ।

अक्रिय वि [अक्रिय] मयिप के मयिप (छा
१ १) ।

अक्रिय वि [अक्रिय] १ मयलपण्य (मय
३) । २ मयलपण्य (मय ३ २) ।

अक्रिय वि [अक्रिय] मयिपिपिप (मय ३ २) ।
अक्रिय वि [अक्रिय] मयिपिपिप (मि २
२ ६) ।

अक्रिय वि [रे] मयिपिपिप मयिपिपिप (रे १
१ १) ।

अक्रिय मक [गम] मला । मयिप (हि
४ १६२) ।

अक्रिय वि [अक्रिय] मयिप मयलपण्य
(मय ३ २) ।

अक्रिय पु [अक्रिय] मयिप के मयलपण्य
मय (मय ३ २) ।

अक्रिय वि [अक्रिय] मयलपण्य मयलपण्य (मय
३ २) ।

अक्रिय रेवी अक्रिय ।
अक्रिय वि [अक्रिय] मयलपण्य, मयलपणी
(मय) ।

अक्रिय पु [रे] मयलपण्य मयलपण्य (रे १ १२) ।

अक्रिय म [आक्रिय] मयलपण्य मयलपण्य
करना (मय) ।

अक्रिय म [आक्रिय] मयलपण्य मयलपण्य मयलपण्य
दीक में मयली मयलपण्य मयलपण्य मयलपण्य
का मयलपण्य हो वह ।

'मयलपण्य मयलपण्य मयलपण्य मयलपण्य मयलपण्य
मयलपण्य मयलपण्य मयलपण्य मयलपण्य मयलपण्य
(मय ३) ।

अक्रिय मक [आ + क्रम] मयलपण्य करना ।
मक अक्रिय (गुर १२ ४) ।

अक्रिय पु [आक्रिय] मयलपण्य मयलपण्य मयलपण्य
मयलपण्य (मय ४) ।

अक्रिय म वि [आक्रिय] मयलपण्य मयलपण्य
(मय २) ।

अक्रिय म [आक्रिय] मयलपण्य मयलपण्य मयलपण्य
मयलपण्य (मय २) ।

अक्रिय म [आक्रिय] मयलपण्य मयलपण्य मयलपण्य
मयलपण्य (मय २) ।

अक्रिय म [आक्रिय] मयलपण्य मयलपण्य मयलपण्य
मयलपण्य (मय २) ।

अक्रिय म [आक्रिय] मयलपण्य मयलपण्य मयलपण्य
मयलपण्य (मय २) ।

अक्रिय म [आक्रिय] मयलपण्य मयलपण्य मयलपण्य
मयलपण्य (मय २) ।

अक्रिय म [आक्रिय] मयलपण्य मयलपण्य मयलपण्य
मयलपण्य (मय २) ।

अक्रिय म [आक्रिय] मयलपण्य मयलपण्य मयलपण्य
मयलपण्य (मय २) ।

विश्वज्योति सेको अक्षरा = वा + क्या ।

विश्वज्योति वि [आविज्योति] मय राख से प्रेषित (सिंह १२६) ।

विश्वज्योति वि [आविज्योति] १ व्याकुल । २ विष पर टीका की गई हो वह । ३ घण्ट, बीजा हुआ (मृ १ ११) । ४ सामर्थ्य है दिया हुआ (सि ४ ११) ।

विश्वज्योति न [अवेज्योति] मरिचि सेन के बाहर का प्रथम (सि १) ।

विश्वज्योति न [आ + विज्योति] १ घालन करना टीका करना बीजापेट करना । २ रोजना । ३ रीजना । ४ व्याकुल करना । ५ घंटना । ६ स्वीकार करना 'मन्त्रिचर पुरि मया' (उवर ४६) । ७ 'कृष्णविज्योति' (सि १ १) । 'कृष्ण न कुपमिह काय' अक्षिपयि' (सि १ १ वि १००) । कर्म, 'मन्त्रिचर य मे बाली' (सि २१) प्राणा) ।

विश्वज्योति न [आ + विज्योति] घांछा करना । मन्त्रिचर (सि २१) ।

विश्वज्योति न [आवेज्योति] व्याकुलता यह राख (परा १ १) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] १ हास्य-रूप लक्ष्यित प्रकृत (रूप) । २ परिपूर्ण, संकुल (हुमा) । महाप्रापि वि [महाप्रापि] शिकार गिनोह प्रतीए महाप्रापि योक्त प्राप्त हुई रा वह (परा २ १) महाप्रापि स्त्री [महाप्रापि] बहु वस्तु धार्मिक शक्ति निव न बीजा की विज्ञात हुए रीक्षी लोगों को मान्य-कृत खिलने पर ही वस्तुक कम न हो जबकि नि गान लोचनता स्वयं व न माय (परा २०) । 'महाप्रापि वि [महाप्रापि] निमते बोधी जगह में भी बहुत लोगों का समावेश हो उनके ऐसी वस्तु धार्मिक शक्ति से पुन (गम २) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] धनीय बुद्धि-रूप 'मनुष्याचारविता' (परा) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] संकुल, प्रकृत 'मनुष्यो मनुष्यो दिव्यो दिव्यो विज्ञात' (मुता ११२) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] जो दूटा हुआ न हो अनिष्टिम (इह १) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] १ नीच, धनुष (रूप २) । २ बाल, कण (परा २) । ३ उवर (परा ७) । ४ मूल बुद्धिमान (परा २) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] सुखा का समाप (उर ६१२) ।

अक्षरा स्त्री [अक्षरा] नदी-विशेष (परा २) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] जो लोच की प्राप्त न होता हो (उर ६१२) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] अक्षरा वि (सि ६६) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] लोच-विशेष (परा २) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] प्रकृत परिपूर्ण 'मनुष्यो मनुष्यो विज्ञात' (मुता ११२) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] अक्षरा = वा + क्या ।

अक्षरा वि [अक्षरा] लोच-विशेष (मुता ११२) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] १ प्रत्येक लोच कर लाना (परा १ १) । २ सामर्थ्य वर्ष की संमति के लिए प्रकृत वर्ष की वस्तुता (उर १ २) । ३ प्रत्येक पूर्ण (मृ २ १) सिने १४११) । ४ लोच 'दक्षिण कनकसे वस्तुता लोच मे वर्षो' (उवर ४६) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] १ लोचकर लाने वाला प्रत्येक । २ प्रत्येक वर्ष वर्ष-संमति के लिए प्रकृत वर्ष की वस्तुता लाना (उर ६६६) । ३ लोचकारक (उवर १६६) ।

अक्षरा स्त्री [अक्षरा] लोच-विशेष (परा १ १) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] लोच-विशेष (परा १ १) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] लोच-विशेष (परा १ १) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] लोच-विशेष (परा १ १) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] लोच-विशेष (परा १ १) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] लोच-विशेष (परा १ १) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] लोच-विशेष (परा १ १) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] प्रतिसेन की विज्ञा विज्ञा (परा २) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] लोच-विशेष (परा १ १) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] लोच-विशेष (परा १ १) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] लोच-विशेष (परा १ १) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] लोच-विशेष (परा १ १) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] लोच-विशेष (परा १ १) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] लोच-विशेष (परा १ १) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] लोच-विशेष (परा १ १) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] लोच-विशेष (परा १ १) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] लोच-विशेष (परा १ १) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] लोच-विशेष (परा १ १) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] लोच-विशेष (परा १ १) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] लोच-विशेष (परा १ १) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] लोच-विशेष (परा १ १) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] लोच-विशेष (परा १ १) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] लोच-विशेष (परा १ १) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] लोच-विशेष (परा १ १) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] लोच-विशेष (परा १ १) ।

अक्षरा वि [अक्षरा] लोच-विशेष (परा १ १) ।

अक्षिज्यत रेवो अक्षरा = घा + क्या ।
अक्षिज्यत वि [आक्षिप्त] उच सख से प्रेरित
(सिदि १२९) ।

अक्षिज्यत वि [आक्षिप्त] १ व्याकुल । २
त्रिष पर टीका की गई हो वह । ३ बाहुल्य,
बीषा हुआ (पुर १ ११५) । ४ सामर्थ्य से
तिया हुआ (सि ४ ११) ।

अक्षिज्यत न [अक्षेय] यथावत् लेख के बाहर
का प्रवेश (सिद् १) ।

अक्षिज्यत मक [आ + क्षिप्] १ धासेप
करना टीका करना होपारोप करना । २
रोचना । ३ नैवाना । ४ व्याकुल करना । ५
छेदना । ६ स्वीकार करना, 'अक्षिज्यत पूरि
सागट' (उवर ५६) । हेइ अक्षिज्यति
(सिदि १ १) । 'उमो न कुलमिह ज्ञानम'
अक्षिज्यति' (स १ १) सि ३७७) । कर्म,
'अक्षिज्यत यमे वारणी' (स २३ प्रामा) ।

अक्षिज्यत मक [आ + क्षिप्] धासेप करना ।
अक्षिज्यति (सिदि ३३१) ।

अक्षिज्यत न [आक्षेपन] व्याकुलता बह-
राह (पय १ १) ।

अक्षिज्यत वि [अक्षीण] १ हास-शून्य अक्ष-
रहित अक्षर (कय) । २ परिपूर्ण, संकुल
(कुमा) । महागोसिप वि [महागोसिप]
विनो की निम्नोक्त क्षीण महागोसिप शक्ति प्राप्त
हो हो वह (पय २ १) । महागोसी स्त्री
[महागोसी] वह अक्षर अक्षिज्यत शक्ति
विनो होना भी निम्नोक्त हुनरे एक १ गोसी
की वास्तव्युति विनोसे पर भी उचरत कम न
हो अक्षरत निम्नोक्त क्षीणता स्वयं उने न
भाव (पय २०) । महाकर्म वि [महाकर्म]
विनो की क्षीण बलवं भी बहुर लोका का
ममार्ग हो सके ऐसी अक्षरत मायिक शक्ति
से युक्त (मय २) ।

अक्षिज्यत वि [अक्षत] क्षीण क्षी-
'अक्षिज्यत' (पय १) ।

अक्षिज्यत वि [अक्षिज्यत] संकुल धराह
क्षीण 'अक्षिज्यत' (पय १) ।

अक्षिज्यत वि [अक्षिज्यत] जो हूरा हूरा न हो
अक्षिज्यत (सिदि १) ।

अक्षिज्यत वि [अक्षिज्यत] १ क्षीण, अक्ष-
(कय २) । २ ब्याकुल, कय (पय २) । ३
उत्तर (पय ७) । ४ सुख बुद्धिमान
(कर्म २) ।

अक्षिज्यत न [अक्षिज्यत] सुखता का धाम
(उर १११) ।

अक्षिज्यत स्त्री [अक्षिज्यत] क्षीण-विरोध
(पय २) ।

अक्षिज्यतममय वि [अक्षिज्यतमय] जो क्षीण
की प्राप्त न होता हो (उर ११२) ।

अक्षिज्यतमय रेवो अक्षिज्यत (सिदि ५६) ।
अक्षिज्यत वि [अक्षिज्यत] क्षीण-विरोध
अक्षिज्यत (सिदि ५६) ।

अक्षिज्यत वि [अक्षिज्यत] मय, परिपूर्ण
'अक्षिज्यत' (सिदि ५६) ।

अक्षिज्यत रेवो अक्षरा = घा + क्या ।
अक्षिज्यत पु [अक्षेप] क्षीणता क्षी (पुत्रा
१२९) ।

अक्षिज्यत पु [अक्षेप] १ क्षीण-विरोध क्षी कर
नामा (पय १ १) । २ क्षीण-विरोध क्षी को
क्षीण के लिए अक्षर क्षी को क्षीणता (उर
१ २) । ३ क्षीण-विरोध क्षी (उर १ २)
विदि १२९) । ४ क्षीण-विरोध क्षी (उर १२९)
विदि १२९) । ५ क्षीण-विरोध क्षी (उर १२९)
विदि १२९) ।

अक्षिज्यत पु [अक्षेप] १ क्षीण-विरोध क्षी कर
नामा धार्यक । २ समर्थक वह, क्षीण-विरोध
के लिए अक्षर क्षी को क्षीणता (उर १२९)
(उर १२९) । ३ क्षीण-विरोध क्षी (उर १२९)
(उर १२९) ।

अक्षिज्यत स्त्री [अक्षेप] क्षीणता के
क्षी को क्षीण-विरोध क्षी (पय १) ।
अक्षिज्यत वि [अक्षेप] क्षीण-विरोध क्षी
नामा, क्षीण-विरोध क्षी (पय १ १) ।

अक्षिज्यत स [अक्षेप] क्षीण । क्षीण-विरोध क्षी
क्षी (पय १) ।

अक्षिज्यत स [अक्षेप] क्षीण । क्षीण-विरोध क्षी
क्षी (पय १) ।

अक्षिज्यत पु [अक्षेप] १ क्षीण-विरोध क्षी कर
नामा धार्यक । २ समर्थक वह, क्षीण-विरोध
के लिए अक्षर क्षी को क्षीणता (उर १२९)
(उर १२९) । ३ क्षीण-विरोध क्षी (उर १२९)
(उर १२९) ।

अक्षिज्यत पु [अक्षेप] क्षीण-विरोध क्षी क्षी-
विरोध (पय १) ।

अक्षिज्यत वि [अक्षेप] क्षीण-विरोध क्षी क्षी-
विरोध (पय १) ।

अक्षिज्यत } पु [अक्षेप] १ क्षीण-विरोध क्षी क्षी-
विरोध (पय १) । २ क्षीण-विरोध क्षी क्षी-
विरोध (पय १) ।

अक्षिज्यत वि [अक्षेप] क्षीण-विरोध क्षी क्षी-
विरोध (पय १) । २ क्षीण-विरोध क्षी क्षी-
विरोध (पय १) ।

अक्षिज्यत वि [अक्षेप] क्षीण-विरोध क्षी क्षी-
विरोध (पय १) । २ क्षीण-विरोध क्षी क्षी-
विरोध (पय १) ।

अक्षिज्यत वि [अक्षेप] क्षीण-विरोध क्षी क्षी-
विरोध (पय १) । २ क्षीण-विरोध क्षी क्षी-
विरोध (पय १) ।

अक्षिज्यत पु [अक्षेप] क्षीण-विरोध क्षी क्षी-
विरोध (पय १) । २ क्षीण-विरोध क्षी क्षी-
विरोध (पय १) ।

अक्षिज्यत वि [अक्षेप] क्षीण-विरोध क्षी क्षी-
विरोध (पय १) । २ क्षीण-विरोध क्षी क्षी-
विरोध (पय १) ।

अक्षिज्यत वि [अक्षेप] क्षीण-विरोध क्षी क्षी-
विरोध (पय १) । २ क्षीण-विरोध क्षी क्षी-
विरोध (पय १) ।

अक्षिज्यत वि [अक्षेप] क्षीण-विरोध क्षी क्षी-
विरोध (पय १) । २ क्षीण-विरोध क्षी क्षी-
विरोध (पय १) ।

अक्षिज्यत न [अक्षेप] क्षीण-विरोध क्षी क्षी-
विरोध (पय १) । २ क्षीण-विरोध क्षी क्षी-
विरोध (पय १) ।

अक्षिज्यत पु [अक्षेप] क्षीण-विरोध क्षी क्षी-
विरोध (पय १) । २ क्षीण-विरोध क्षी क्षी-
विरोध (पय १) ।

अक्षिज्यत वि [अक्षेप] क्षीण-विरोध क्षी क्षी-
विरोध (पय १) । २ क्षीण-विरोध क्षी क्षी-
विरोध (पय १) ।

अक्षिज्यत वि [अक्षेप] क्षीण-विरोध क्षी क्षी-
विरोध (पय १) । २ क्षीण-विरोध क्षी क्षी-
विरोध (पय १) ।

स्त्री का एक स्थित (कण) । वाच पुं
[वान] सार्वर्षिक बन्धुत्व के रिता का नाम
(पत्र २ १८२) । वैश पुं [वैश] वैश-
विशेष (वीर) । मूह पुं [मूहि] १ क-
बल महावीर का शिरीष यज्ञवर (कण) । २
महान् महावीर का पूर्वीय अक्षरार्थ बन्धु-
त्व का नाम (कण) । मायन पुं [मायन]
धर्मगुणार के का उत्पन्न-विता का हस्त (ठा
२, १) । मासी स्त्री [मासी] एक इन्द्राणी
(वीर) । वैस पुं [वैस] १ इस नाम का
एक प्रसिद्ध व्यक्ति (सिंह) । २ न एक वीर
(कण) । वैस पुं [वैस] १ कर्तृवी
सिंह (त्र) । विमन का वाहन अर्थात् (वीर
१) । वैसावन पुं [वैसावन] १
प्रतिवेष्ट व्यक्ति का पौत्र (सिंह २ २२३) ।
२ प्रतिवेष्ट-वीर में उत्पन्न (कण) । ३ वीर
नक्षत्र का एक विवर (अप १३) । ४ विम
का वाहन अर्थात् अर्थात् (अप १३) । साकार पुं
[संस्कार] विनि-पुर्वक कलाया हस्त होता
(वाच) । सप्पमा स्त्री [सप्पमा] क-
बल बन्धुत्व की रिता समय की पत्नी का
नाम (अप) । सगम पुं [सगम] एक
प्रसिद्ध लक्ष्मी बन्धुत्व (वाच) । 'सिंह पुं
[सिंह] १ सार्वर्षिक बन्धुत्व का रिता (अप
१३२) । २ धर्मगुणार के का धर्म-
विता का हस्त (ठा २, १) । 'सिंह पुं
[सिंह] एक वैद बुद्धि (अप ५८५) । 'सिंह
चारण में [सिंहचारण] धर्म-विता में
निर्वाचनमा गमन करने की स्थिति बला ठाव
(अप १८) । सीह पुं [सिंह] नाम बन्धु
त्व के रिता का नाम (ठा २) । सेज पुं
[सेज] ऐश्वर्य के के लिये और काम में
लौकिक (विश्व २ १३१) । होत न
[होत] १ अग्नाह्नमा, होत (विश्व १९४) ।
२ पुं अग्नाह्नमा (पत्र १३, ६) । होतवाह
नि [होतवाह] होत से ही स्वर्ग की
प्रतिपत्ति प्राप्त (नृप १ ७) । होतवाह
नि [होतवाह] होत करनेवाला (नृप ७ ७)

अग्निगत्र पुं [अग्नि] १ वपरीत नामक एक
नाम (वाच) । २ कणक वीर, शिरो में
बुद्ध काय वह गुरुत्वा ही हस्त ही जाता है
(विश्व ११ सिं २ ४८) ।

अग्निगत्र पुं [वि] हस्तोप एक अस्थिका ब्रह्म
कीट (वि १ ३९) । २ वि गत्र (वि १ ३९) ।
अग्निगत्र पुं [वि] हस्तोप ब्रह्म कीट-विशेष
(पत्र १) ।

अग्निगत्र नि [आग्नेय] १ धर्म-सम्बन्धी ।
२ पुं वीरगणिक दोनों की एक वाहि (वाच
१ ८) । ३ न, वीर-विशेष जो वीर्य वीर
की सत्ता है (ठा ७) ।

अग्निगत्र नि [आग्नेय] १ धर्म-विशेष
विशेष (अप १४) ।

अग्निगत्र नि [अग्नाह्न] होने के धर्मोप (पत्र
११ ३४) ।

अग्निगत्र नि [अग्नि] १ प्रथम पक्षा (कण)
२ यह प्रथम पक्ष (नृप १) ।

अग्निगत्र पुं [आग्नेय] इस नाम का एक
राजपुत्र (अप १३७) ।

अग्निगत्र केही अग्निगत्र = वपरीत (नृप २) ।
अग्निगत्र केही अग्निगत्र (वप २) ।

अग्निगत्र पुं [अग्नि] एक महाहस्त (ठा २
१) ।

अग्निगत्र नि [अग्नि] वपरीत (सिंह ४ ६) ।
अग्निगत्र केही अग्निगत्र (अप ५४) ।

अग्निगत्र नि [वि] वर का एक भाग (पत्र
१९ १४) ।

अग्निगत्र नि [वि] प्रसिद्ध विविध (पत्र १) ।
अग्निगत्र नि [अग्नि] वाये, वाये (विश्व) । 'वाय
नि [वाय] वाये का, वाये का (वाच) ।

सर नि [सर] अग्निगत्र, अग्निगत्र, नाक
(वा २८) ।

अग्निगत्र स्त्री [आग्नेय] धर्म-विशेष
पुर्व रिता (वाच १) ।

अग्निगत्र नि [अग्नाह्न] वपरीत (नृप २) ।
हस्त वैराग्य का वपरीत महात्मा नाम (सप्त २९)

अग्निगत्र केही अग्निगत्र (वाच) ।
अग्निगत्र केही अग्निगत्र (सिंह) ।

अग्निगत्र नि [आग्नेय] धर्म (वीर) सम्बन्धी
(अप १३३) ।

अग्निगत्र नि [आग्नेय] १ धर्म-सम्बन्धी
धर्म का (पत्र १९ १२३ सिं १३३) ।
२ न, वीर-विशेष (नृप ५, ४१) । ३ एक

वीर जो वीर वीर की सत्ता है (अप ४) ।
४ धर्म-विशेष धर्म-पुर्व रिता (विश्व) ।
अग्निगत्र नि [अग्नेय] समुद्री रिता की
बुद्धि वीर रिता (अप ७९) ।

अग्निगत्र [वाच] विपरीत वीरगण
कला । अग्निगत्र (वि ४ १) ।

अग्निगत्र [वाच] वीरगण । अग्निगत्र
ऊपर (धम्म १ ४२) ।

अग्निगत्र [वाच] वीरगण होता नामक
होता 'कर्म' उ अग्निगत्र (अप १ ८) ।

अग्निगत्र [अग्नेय] १ अग्निगत्र वीरगण से
वेचना । २ अग्निगत्र वीरगण वीरगण

'वपरीत' गुणी अग्निगत्र वीरगण सिद्धि ।
अग्निगत्र वीरगण ।

वपरीत वीरगण, वपरीत वीरगण वीरगण
(अप १ १) । वीर अग्निगत्र वीरगण (अप
१ १) ।

अग्निगत्र [अग्नेय] १ एक वीर वीरगण (विश्व
१ २) । २ वीर (अप १) ।

अग्निगत्र [अग्नेय] १ वीरगण की एक वाहि (वीर
१) । २ वीरगण-वीरगण (वाच १ १९) । ३
वीरगण में वीरगण (अप) । ४ वीरगण, वीरगण
वीरगण (विश्व २) । वीरगण न [वाच] वीरगण
का वाच (वाच) ।

अग्निगत्र नि [अग्नेय] १ वीरगण में वीरगण
वाच वीरगण (कण) । २ वीरगण वीरगण
(वाच) ।

अग्निगत्र वीरगण [वपरीत] वीरगण, वपरीत ।
अग्निगत्र (वि ४ १२) ।

अग्निगत्र नि [वपरीत] १ वपरीत वीरगण, वपरीत ।
वपरीत वीरगण (अप १ १) ।

अग्निगत्र नि [अग्नेय] वीरगण वीरगण, वीरगण
धम्म-विशेष (वि ११ १२ गण) ।

अग्निगत्र वीरगण [आ + वा] वीरगण । वीर
अग्निगत्र अग्निगत्र (वा १९९, वाच
१) । वीर अग्निगत्र वीरगण (अप २) ।

अग्निगत्र नि [आग्नेय] वीरगण वीरगण, वीरगण
वपरीत वीरगण । वीरगण वीरगण । वीरगण वीरगण
(अप १३३) ।

अग्निगत्र नि [आग्नेय] वीरगण वीरगण, वीरगण
वपरीत वीरगण । वीरगण वीरगण । वीरगण वीरगण
(अप १३३) ।

अग्निगत्र नि [आग्नेय] वीरगण वीरगण, वीरगण
वपरीत वीरगण । वीरगण वीरगण । वीरगण वीरगण
(अप १३३) ।

अग्निगत्र नि [आग्नेय] वीरगण वीरगण, वीरगण
वपरीत वीरगण । वीरगण वीरगण । वीरगण वीरगण
(अप १३३) ।

अग्निगत्र नि [आग्नेय] वीरगण वीरगण, वीरगण
वपरीत वीरगण । वीरगण वीरगण । वीरगण वीरगण
(अप १३३) ।

अच्छ पुं [अच्छ] रीछ, मातृ (पण्ड १ ?) ।
 अच्छ वि [आच्छ] अच्छे के में उपच (पण्ड ११) ।
 अच्छ पुं, [अच्छ] येष्ट पर्यंत (मुद्र १) ।
 २ न. चीन बार भीटा हुआ स्वच्छ पानी (पिब) ।
 अच्छ न [रे] १ अस्मत् विशेष । २ शीघ्र, बली (रे १ ४६) ।
 अच्छ वि [अच्छि] बांछ नन (कुमा) ।
 अच्छ पुं, [अच्छ] १ अधिक पनोवाला प्रदेश । २ सदासी का समूह । ३ गुल बाल (रे ६ ४७) ।
 अच्छ पुं, [अच्छ] हल पेड़ (रे ६ ४७) ।
 अच्छ पुं, [अच्छ] १ बहेडा का वृक्ष । २ न. स्वच्छ जल (रे ६ ४७) ।
 अच्छर न [आच्छर] विसय बमकार (कुमा) ।
 अच्छर वि [अच्छर] को स्वाधीन न हो पड़नी अच्छर के ए दुर्भित ए से बाह्यि कुदर (रद २) ।
 अच्छर केको अरयक (नर) ।
 अच्छर न [आच्छर] १ बैला (छाया १ ?) । २ पासकी बनेष्ट मुचमय (शेष ७८) । पर न [गृह] ब्रियाम स्वात (बीच १) ।
 अच्छर न [रे] १ देवा कुमया (इह १) । २ देवता धनकोर (बन १) । ३ ब्रह्मा, वरा (रद ८) ।
 अच्छरि न [अच्छरि] अच्छरि-कुपन को बीपसी बाज से छुने पर को संका लय हो बह (अ २ १) ।
 अच्छरि न [अच्छरि] संका-विशेष नलिन को बीपसी बाज से छुने पर को संका लय हो बह (अ २, १) ।
 अच्छरि वि [अच्छरि] अष्ट प्रष्ट (इह १) ।
 अच्छरि पुं [अच्छरि] रीछ, मातृ (रे १ ४७ पण्ड १ ?) ।
 अच्छरि पुं [रे] मा रे-विशेष (रे १ ४७) ।
 अच्छरि केको अच्छर (पण्ड १) ।

अच्छर पुं [आच्छर] रम्या पर विधाने का बम-विशेष (छाया १ ?) ।
 अच्छरमा की [अच्छर] १ इन्द्र की अच्छरमा पटरणी (अ ६) । २ 'आता-बर्गमा' का एक अयमय (छाया २) । ३ रेपी (पत्र २ ४१) । ४ कपटी की (पण्ड १ ४) ।
 अच्छरि की [रे अच्छर] कुटकी कुटकी का घावा (पुं २ २ ४४) ।
 अच्छरिणिमाय पुं [रे] १ कुटकी । २ कुटकी बजाये में बिना समय लगना है बह, परबत समय (पण्ड १६) ।
 अच्छरि न [अच्छरि] विसय बम-अच्छरि न [आच्छर] विसय बम-अच्छरि न [रे] १ ४८ प्रवी २२) ।
 अच्छरि न [अच्छरि] निर्दोषा प्रतपण (रे १ ?) ।
 अच्छरि वि [अच्छरि] बैन-परी न विचको स्वातक कले हैं वह बीनपुन को पी (मय २३, ६) ।
 अच्छरि न [अच्छरि] एक प्रकार का मालिक विषय (अ ८) ।
 अच्छरि पुं [अच्छरि] रीछ, मातृ (पण्ड १) ।
 अच्छरि की [अच्छरि] बरछ के की राज-बली (पत्र २०३) ।
 अच्छरि की [अच्छरि] वर्ष अयमान (रे ६ ४७) ।
 अच्छरि वि [अच्छरि] कनेवासा, पाच्छरि (रे १११) ।
 अच्छरि न [अच्छरि] १ बकना (रे ७ ४३) । २ बह, कपड़ा (छाया) ।
 अच्छरिणा की [अच्छरि] बकना पाच्छरि-वि (बन १) ।
 अच्छरि वि [अच्छरि] रीछ, मातृ (पण्ड १) ।
 अच्छरि वि [अच्छरि] मातृ मेत (रे १ ४३ १३) ।
 अच्छरि न [अच्छरि] मातृ का मयना (इह २) ।
 गिमीच्छि न [गिमीच्छि] १ रीछ की पुंला बीनमा । २ रीछ विषये में को समय बने

बह, अच्छरिणिमाय में रीछि पुंला कुचमय पण्ड १) । छाया लेखमय अछरिणि पम-माछरि (बीन १) । पत्र न [पत्र] पत्र का पत्र पपनी (मय १४ ८) । बैला पुं [बैला] एक बनुपिण्य वनु, गुह जीन विशेष (उत १६) । रीछ पुं [रीछ] एक बनुपिण्य वनु, गुह जीन-विशेष (उत १६) । लह वि [मम] १ पत्र बस्ता प्राणी । २ बनुपिण्य वनु (उत १६) । मछ पुं [मछ] पत्र का मेत कीट (मिह १) ।
 अच्छरि एक [आ + अछरि] १ बोका खेद करना २ एक बार खेद करना । ३ बलाकार से चीन बेगा । बह अच्छरिमाय (मय १) ।
 अच्छरि पुं [अच्छरि] गोताक के एक विचर (मिह) का नाम (मय १३) ।
 अच्छरि न [अच्छरि] १ एक बार खेद (मिह १) । २ चीनमा । ३ बोका खेद करना, बोका कटना (मय १३) ।
 अच्छरि वि [रे] अछर, नहीं कुमा कुमा (बन १) ।
 अच्छरि न [अच्छरि] १ बनुपिण्य वनु वि [रे] बनुपिण्य । २ पुं वेत गोताक (रे १ ४३) ।
 अच्छरि वि [अच्छरि] १ बनुपिण्य को बने से चीन लिया नाम (पिब) । २ पुं केन छात्र के लिए मित्रा का एक शेष (छाया) ।
 अच्छरि वि [अच्छरि] को बोका न वा खे (अ २ २) ।
 अच्छरि की [अच्छरि] १ मातृ का भयान निवारा । २ वि मातृ-विशेष (विने) ।
 गय पुं [नय] निवारा-बाह, वनु को गिय माफनाका वन (पत्र) ।
 अच्छरि वि [अच्छरि] १ अछर-विशेष मित्रि गाड़ (ब २) । २ मित्रि (मय २६) ।
 अच्छरि वि [अच्छरि] १ बलाकार अच्छरि से चीन हुआ । २ बोका हुआ गोता हुआ (पत्र) ।
 अच्छरि वि [अच्छरि] १ नहीं गोता अच्छरि हुआ पत्र नहीं किया हुआ (अ १) । २ पत्र-विशेष अछर-विशेष (नर) ।

अजीर } बेको अज्ज = घनीले (न १
अजीरय } खाया १ ११) ।

अजीरण बेको अज्ज = घनीले (वि २७
प १११) ।

अजीय पुं [अजय] अनेपन निर्दिष्ट जङ्ग
पराय (न २) । अय पुं [अय] बर्ग
स्तिफम धरि घनीय पराय (न ७१) ।
अजुअ पुं [जे] बुलभियेय सतक, सतीना
(रे १ १७) ।

अजुअ न [अयुअ] एक इन्द्रा, 'बोमिण्य सहसा
सुन्द' वन बहुपाणि हवाले (महा) ।

अजुअलवप पुं [अजुअलपण] सतीना
(रे १४) ।

अजुअलपणा की [जे] इसी का पेड़ (रे
१ ४८) ।

अजुअ वि [अयुअ] अयोग्य अनुचित
(वि ७) । अरि वि [अरिअ] अयोग्य नाम
कनेबला (पु १ ४) ।

अजुदीय वि [अयुदिअ] मुक्ति-पूज्य अनात्म
(पु १२ २४) ।

अजुय बेको अजय वन बहुपाणि हवाले सत
कीरीरी पारकणाल (पु १ १) ।

अनेअ वि [अजय] की बीठा न का सके
'यो मरवपयवहावेय अनेया वैकुण्ठया'
(महा) ।

अजोग पुं [अयोग] मन बचन कीर अया
के सव अयापों का विचमें अनाक होल है
बहु मनीखट योग शैली-करण (वीर) ।

अजोग वि [अयोग] अनेपन नामक नहीं
बहु (नी ११) ।

अजागि पुं [अयागिअ] १ खेनिएट याग की
प्राप्त बोनी । २ मुक्त आत्मा (अ २, १ कम्प
४ ४० २) ।

अज स [अजे] पैरा करना उगार्न
करना कामा । अजइ (हे ४ १ ७) । अज
अजिय (वि ७) ।

अज वि [अजे] १ बैरय । २ स्वामी मालिक
(रे १ २) ।

अज वि [अये] १ निर्दिष्ट । २ सार्व-भोग में
अपम (एवि ४१) । ३ सिद्ध-नोपिष्ट 'अजवाई
बम्माई कथिउ रय' (उत् ११ १२) । अजड
पुं [अजुट] एक पैत आचार्य (पु ४४) ।

अज वि [आये] १ उत्तम ब्रह्म (अ ४ २) ।
२ मुनि साधु (कम्प) । ३ सत्यकार्य करने-
वाला (न १) । ४ पुण्य मान्य (वि १)

१) । २ पुं. मातामह (निधी) । ३ पितामह
(एवा) १ ८) । ७ एक अर्थ का नाम
(एवि) । ८ ग. गीत-विरोध (सुवि) । ९ वन
साधु साध्वी बीर उनकी शाकाओं के पूर्व में
बहु शब्द प्राप्त सपता है, जैसे अजयनहर
अजयनवा अजयपोमिडा (कम्प) । उक्त
पुं [पुज] १ पति सत्ता (पार) । २ मालिक
का पुत्र (न ७) । चांस पुं [चोप] सगवान्
पारंगत का एक गणपत्तर (अ ८) । मंगु पुं
[मङ्ग] एक प्रचीन वैनाचार्य (सा २२) ।
[मिरस वि [मिअ] पुण्य नाम्य (धमि
१३) । समुद्र पुं [समुद्र] एक प्रविष्ट
वैनाचार्य (सा २२) ।

अज य [अज] मात्र (पु २ १६७) ।
य वि [यन] अनुमान धातुकम का
(रंग) । या की [या] मात्र क्य (कम्प) ।
प्यमिअ य [प्रयुति] मात्र से ले कर
(उवा) ।

अज पुं [ज] १ जितेज देव । २ बुद्ध देव (रे
१ २) ।

अज न [आज] की कृत (पा ७) ।
अज बेको रि = अ ।

अज = [अज] मात्र (गा १८) ।
अजत वि [आयत्] पागामी । अज व
[अज] गणिय काज (पा ७) ।

अजहिंलो य [अजहा] मात्रकम (उ ६
१४४) ।

अजअजिअ वि [अजअजिअ] मात्रकम का
(मणु १२८) ।

अजग बेको अजय = अजेक 'अजगवसेय
रिअ' (पु १३) ।

अजग बेको अजय = सार्वक (गिर १ १) ।
अजय स [अजे] उगार्न करना । अज
अजयिठा (पु १ २ २३) ।

अजय } [अजेन] उपाय, पैरा करना
अजयण } (या १२) सत १८) 'रबे केरि-
येरं केरुवाये तपणाले' (अ ७ ७) ।

अजय पुं [अयेअय] १ पूर्व (वि
२११) । २ देव-विरोध (न ७) । ३ उत्तर

पासुनी मलय का धरिहायक देव (अ २
३) । ४ ग. उत्तर-पासुनी मलय (अ २
३) ।

अजय पुं [आयेक] १ मातामह, माँ का
नाम (पत्र ५ २) । २ पितामह पिता का
पिता (सा १ ३३) 'अं पुण्य अजय-अजय
अणमिअयअममममो हारो परमममो कसंरं
तयं तु पुण्डिआमिमीण' (पु १ २२) ।

अजय वि [अजेक] १ उगार्न करनेवाला
पैरा करनेवाला (पु १ २४) । २ पुं बुल
विरोध (एवा १) ।

अजय पुं [जे] १ मुरम नामक वृक्ष । २
उटेक नामक वृक्ष (रे १ २४) । ३ वृक्ष
नाल (वि ११) ।

अजय पुं [आयेक] म्बेन्नों की एक जाति
(एवा १) ।

अजय न [आजेअ] सरलता निष्कण्टठा
(न २४) ।

अजय (न) बेको अजय = सार्व । अज पुं
[अजय] सार्व-वेदा (मवि) ।

अजयया की [आजेअ] अनुता सरलता
(पमिअ) ।

अजयि वि [आजेअयि] सरल निष्कण्ट
(एवा) ।

अजयिय न [आजेअ] सरलता (पु १ १
२ २३) ।

अजा की [आया] १ साध्वी (पत्र २) ।
२ बीर पानेकी (रे १ २) । ३ सार्व क्य
(न २) । ४ अभाय मतिनाथ की प्रपन
थिप्पा (प १२२) । ५ माता पुष्पा की
(वि १ १ १४३ १४२) । ६ एक कला
(वीर) ।

अजा की [आजा] आये, हुअ (हे २
८३) ।

अजाय वि [अजाय] अनुपम 'अजायसि-
नरसवि एव सहायो ति बुपय मा' (मवि
२७) ।

अजाय स [आ + अयाय] मात्रा करना,
हुअ करना । २ अजायेयय (पु १
२ १) ।

अजिय वि [अजिय] अजायित पैरा नि
हुआ (या १४) ।

अणह न [अनमत्] भूमि प्रविष्टी (वि १ ३)।

अणमयमय वि [हे] मन्त्र, विद्यमान (वि १ ४८)।

अनहयय वि [हे] ठिष्ठत मन्त्रित (पद्य)।

अणह्य श्री [अनुना] इय सनय (प्राक् ८)।

अणहारय दु [हे] वक्ष्य वक्ष्य विवका मध्य-मीमा हो बहु वधीन (वि १ १८८)।

अणह्रिजज वि [अहयय] हयय-वृद्धि निष्पृष्ट, निर्दल (प्राय या ४२)।

अणह्रिगय वि [अनविगत] १ नही जाना हुआ। २ पुं बहु सण्ड, जिनको शास्त्रों का ज्ञान न हो, अयोग्य (पद्य १)।

अणह्रिण्य वैको अमभिण्य (प्राय)।

अणह्रियास वि [अनध्यास] समक्षिण्य सधन नही करनेवाला (पद्य)।

अणह्रिह्रि न [अणह्रि] पुनपठ वेदा की अजह्रिह्रि प्राचीन पुनवती को धारकन 'प्राय' नाम से प्रविष्ट है (वि २१ पुन)।

बाहव न [पाठक] वैको अजह्रिह्रि (पु १ १)।

मुष्टि (१ ८८८)।

अमहीय वि [अनवीन] वृत्तक समावत (संय १११)।

अमहृस्त्रिय वि [हे] विवका फल प्राप्त न हुआ ही बहु (मन्त्र १४३)।

अणाइ वि [अनादि] प्रादि-वृद्धि निय (मम १२३)। जेह्य निहृज वि [निभन] ध्यायन-वर्तित शरत्त (जय मम १३ प्राय ४)। मंत वंत वि [मन्] अनादि कल से प्रवृत्त (पद्य ११८ १२३ अवि)।

अनाइय वि [अनादेय] १ अनुपदेय प्रहृष्ट करने के अयोग्य। २ नाम-कर्म का एक वेद, जिसके अन्त में जीव का बचन कुछ होने पर भी प्राय नहीं समझ जाता है (कर्म १ २७)।

अनाइय वि [अनादिक] प्रादि-वृद्धि निय (मम १२३)।

अगाइय वि [अहादिक] स्वजन-वृद्धि भवेता (मम १ १)।

अनाइय वि [अजादीत] पायी पाण्डि (मम १ १)।

अगाइय दु [अजापात] संसार, दुनिया (मम १ १)।

अगाइय वि [अनादय] विवका धार न किया गया हो बहु (जय ८११ टी)।

अगाइय वि [अनादिक] १ अक्षुण्णित निर्मल (पद्य २ १)।

अगाइय यो अगाइय (अ १ ११ टी पि ७)।

अनाउ दु [अनामु] १ विन-यव (मम अणाउय १ १)। २ मुक्ताया चिह्न (अ १)।

अगाउय वि [अनाकुल] सम्यक्कल वीर (मम १ २ २)।

अगाउय वि [अनामुक] जन्मोन्मूल्य के ब्यास अनाउय (वीर)।

अगाउय वैको अगाइय (सम १३६)।

अगाउय दु [अनागत] १ अविद्य कल 'अगाउयमपसंस्था पन्थुप्यपसंस्था' से पन्था परिष्कृत होकर प्राप्तिम बोधको (मम १ १४)। २ वि अविद्य में होनेवाला (मम १ २)। आ श्री [दि] अविद्य कल (मम ४२)।

अगाउय वि [अनर्गल] नही रोका हुआ (उपा)।

अगाउय वि [अनादिक] १ नही जाना हुआ अनाउय (प्राय १६)। २ अनादिन 'अगाउयमपसंस्था' का एक विवका (उपा)।

अगाउय वि [अनादिक] १ अनादिक, प्रादि-वृद्धि (अ १)। २ विवेक-वृद्धि (कर्म ४ १२)। ३ न वर्तन सामान्य ज्ञान (सम १३)।

अजाजीव वि [अनाजीव] १ प्राचीनता रहित। २ प्राचीनता की वृद्धा नहीं समझ-जाता। ३ निष्कृष्ट, निर्दल (पद्य ३)।

अजाजीव वि [अनाजीवि] ऊपर वैको 'अजिह्वा अजाजीवी' (पदि निष्कृ १)।

अजाउ दु [हे] बार, उत्पति (वि १ १८)।

अजाउय वि [अनादय] १ विवका धार न किया गया हो बहु विवका (प्राय ३)। २ पुं जन्महीन का अविद्याक एक वेद (अ २, ३)।

१ श्री जन्महीन के अविद्याक वेद की उपा-कामी (वीर ३)।

अजाउयामि वि [अनाउयामि] १ वीरों नहीं मानेवाला (अ २, १)। २ न अविद्या-का एक वेद (पद्य)।

अजाउ वैको अगाइ (म १ ८१)।

अजाउय १ वैको अगाइय (पद्य १ १ अजाउय) २ अ १ १)।

अजाउय वैको अगाइय (पद्य १ १)।

अजाउय न [अनामिमह] निम्नान्न क एक मद्र (पद्य २ २)।

अजाउय दु [अनामोग] १ अनुपदेय के स्वामी अजाउयानी (प्राय ४)। २ न निम्नान्न विशेष (कर्म ४ ११)।

अजाउय वि [अनामिक] १ नाम-वृद्धि। २ पुं अजाउय (पद्य)। ३ श्री अजाउयानी के ऊपर की वृद्धि।

अजाउय वि [अजाउ] नही जाना हुआ धारि विव (पद्य २३ १७)।

अजाउ दु [अजाउ] नर्त्यनोक मनुष्य-लोक (वि १ १)।

अजाउ दु [अनात्म] ध्यायन-वृद्धि धारणा से परे (सम १)।

अजाउय वि [अजाउय] नावक-वृद्धि (पद्य २, ७)।

अजाउय वि [अजाउ] १ अजाउ-वृद्धि प्रवेसा (निष्कृ २)।

अजाउय वि [अजाउय] अजाउ, निर्दल (निष्कृ ११)।

अजाउय न [अजाउयन] १ कैसा प्रादि अजाउयय १ नौव सोमों का बार (पद्य २, १)।

१ नही मन्त्र पुनः का समय न होगा हो बहु स्वान (प्राय २ ४)। ३ पठित वाक्यों का स्वान (प्राय ३)। ४ मनु मुद्रक वपैय क संतर्पणता स्वान (वीर ७११)।

अजाउय वि [अजाउय] पठनीन (पद्य २६, २९)।

अजाउय दु [अजाउ] अजाउमान अजाउ (पद्य)।

अजाउय न [अजाउय] अजाउ, अजाउ धारण।

अभियय वि [अभियय] १ अभ्यस्तित्व धनि-
यमित (उभ) । २ कल्पना की एक भाति को
नक्ष रेखी है (ठा १) ।

अभिया रेको अभिया (विश) ।

अभिया की [वि] बार, धन-मय प्रचरणी में
‘भय’ ‘वैकल्य’ ‘वैराग्य’ (भय १७) ।

अभिरिक्त वि [वि] परलज परधीन । (काय
२४ वा २६१) ।

अभिरिज वि [अनुज] अणु-मन्त्रि जल्लस
अनुज (मन्त्रि ४६ वा १६) ।

अभिरुक्त वि [अभिरुक्त] १ व्यतिष्ठ नही
रोष होता । (मृग १ १२) । २ एक धन-
हृष्ट मुनि (मन्त्र १) ।

अभिरुक्त वि [अभिरुक्त] १ मनु, पवन (हृमा) ।
२ एक अष्टौष लोचक का नाम (विज) । ३
उपन-वर्षीय एक पत्रा (पत्र ४ २६४) ।
अभिरुक्त की [अभिरुक्त] भास्वर्ष लोचक की
एक शिखा (मन्त्र १) ।

अभिरुक्त न [वि] प्रमाद घरेय (वि १ १६) ।
अभिरुक्त न [अभिरुक्त] निरुद्ध, उदा हुनेका
(मा २१२ या २६) ।

अभिरुक्त वि [अभिरुक्त] १ अभिरुक्त ।
अभिरुक्त २ अभिरुक्त अनुपुत्र । ३ ऐसी
मित्रा विनये भाविक कर्म हो कीर को सब की
मनुवि से ही न गई हो साधु की मित्रा का
एक शीर (विज नील) ।

अभिरुक्त वि [अभिरुक्त] राक्ष-विरोध को
प्रकार में पड़ा का पड़ा नाम (आय) ।

अभिरुक्त वि [अभिरुक्त] जिस पर
किन्ही नाम व्यक्त का परिवार न हो सब
सामान्य (मन्त्र २) ।

अभिरुक्त की [अभिरुक्त] भगवन्ति, भाविक
का धर्म (उभ) ।

अभिरुक्त वि [अभिरुक्त] १ भगवन्ति
भास्वर्षीय (मृग १ १६) । २ अभिरुक्त
पुत्र, भास्वर्षीय (मन्त्र १) । ३ भगवन्ति
किन्ही के धर्म की रूप न रखनेवाला
(उभ १६) । ४ न, भास्वर्षीय भगवन्ति-भा
का एक भेद, को सिंग या पुत्रक के विना ही
होना है (उभ १) ।

अभिरुक्त वि [अभिरुक्त] १ मीर, अभिरुक्त (मृग
१)

१ २ २) । २ निरुद्ध, सख (मृग १ ८) ।
३ निर्मम निरुद्ध (भाषा) ।

अभिरुक्त वि [अभिरुक्त] स्नेहपुत्र (मृग १ ४
२ ३) ।

अभिरुक्त वि [वि] १ सहस्र सुख । २ न मुल
गुह (वि १ ३२) ।

अभिरुक्त वि [अभिरुक्त] भवत् नही मारा
हृमा । रिज पु [रिज] एक धनहृष्ट मुनि
(मन्त्र ३) ।

अभिरुक्त वि [अभिरुक्त] इस भाविक नही
विश्रुत (उभ ३ ७) ।

अभिरुक्त न [अभिरुक्त] देना लक्ष्म (मन्त्र) ।
अभिरुक्त पु [अभिरुक्त] एक धनहृष्ट मुनि का
नाम (मन्त्र ३) ।

अभिरुक्त वि [अभिरुक्त] धनमर्ष (मन्त्र १) ।
अभिरुक्त वि [अभिरुक्त] धनमर्ष (मन्त्र २) ।
अभिरुक्त रम वि [अभिरुक्त] कुछ भावि में
होनेवाला मन्त्र-विरोध (मा १३ ८) ।

अभिरुक्त [अभिरुक्त] यह धनमर्ष नाम मीर मनु के
काय लपटा है और मीर के नाम में से किन्ही
की मन्त्राता है १ मीर न मन्त्रिक

‘अभिरुक्त’ (मन्त्र) । २ मनु, उदा ‘अभिरुक्त’
माम’ (उभ ३) । ३ मन्त्र परिवार ‘अभिरुक्त’
(मन्त्र १) । ४ में मीर ‘अभिरुक्त’ (मन्त्र) ।

५ लक्ष्म कला ‘अभिरुक्त’ विज विजरी संवीर
हकीरि (मन्त्र) । ‘अभिरुक्त’ बार संवत् मनीरि
पुत्र मन्त्रि मन्त्रि (मन्त्र) । ६ मन्त्र
मन्त्र ‘अभिरुक्त’ (मृग १ १६) । ७ मन्त्र

‘अभिरुक्त’ (मन्त्र) । ८ मन्त्र का नाम ‘अभिरुक्त’
विजरी (वि ४१६) । ९ मन्त्र विजरी
‘अभिरुक्त’ (मृग १ २२) । १० मन्त्रि
‘अभिरुक्त’ (मन्त्र २) । ११ मीर, बार ‘अभिरुक्त’
मन्त्र (मन्त्र) । १२ मन्त्र मन्त्र ‘अभिरुक्त’
(मा १२) । १३ मन्त्र कला सहायता कला

‘अभिरुक्त’ (ठा ३ ४) । १४ मन्त्र की
इका प्रवीण होता है, रेको ‘अभिरुक्त’ ‘अभिरुक्त’
मन्त्रि ।

अभिरुक्त वि [अभिरुक्त] १ मीर, मन्त्र (मन्त्र २ ३) ।
२ मन्त्र (भाषा) । ३ पुत्र मन्त्र (मन्त्र
१३३) । मन्त्र वि [मन्त्र] मन्त्र मन्त्र मन्त्र
मन्त्र (मन्त्र) । ‘मन्त्र’ की [मन्त्र] रेको
मन्त्रि (मन्त्र १ ८) ।

अभिरुक्त [वि] भास्वर्षीय भास्वर्षीय एक भास्वर्षीय
(वि १ ३) ।

अभिरुक्त की [वि] मीर, ‘अभिरुक्त’ (मा २६६) ।
अभिरुक्त रेको अभिरुक्त = मन्त्र (मन्त्र) ।

अभिरुक्त वि [अभिरुक्त] भगवन्ति मन्त्र (मा १८४
३४३) ।

अभिरुक्त पु [वि] १ भास्वर्षीय भास्वर्षीय । २ मन्त्र
भास्वर्षीय (वि १ ३२) का १८) ।

अभिरुक्त वि [अभिरुक्त] मन्त्रि कलाभासा
‘मन्त्रि मन्त्रि’ (मन्त्र १ १) ।

अभिरुक्त वि [अभिरुक्त] १ मीर लक्ष्म । २ पुत्र
मन्त्र मन्त्र । ३ मीर मन्त्रि मन्त्रि (मन्त्र २२
पत्र २८, १) ।

अभिरुक्त सख [अभिरुक्त + मन्त्र] मीर मन्त्रि ।
सख अभिरुक्त वि [मन्त्र] ।

अभिरुक्त सख [अभिरुक्त + मन्त्र] मन्त्र कला ।
६ अभिरुक्त मन्त्रि (मन्त्र १४४) ।

अभिरुक्त की [अभिरुक्त] मन्त्र कला (वि
१ २४ वा १६१) ।

अभिरुक्त वि [अभिरुक्त] मन्त्रि कला
कलाभासा (मन्त्र १०१) ।

अभिरुक्त वि [अभिरुक्त] मन्त्रि कलाभासा
कलाभासा (मन्त्र १४२) ।

अभिरुक्त रेको अभिरुक्त (मन्त्र २६) ।
अभिरुक्त वि [अभिरुक्त] १ सहायताभास्वर्षीय
मन्त्र (मन्त्र) । २ मन्त्र मन्त्र (मन्त्र) ।

अभिरुक्त वि [अभिरुक्त] मन्त्रि कलाभासा (मन्त्र
१११) ।

अभिरुक्त न [वि] प्रमाद मुह (वि १ १६) ।
अभिरुक्त की [वि] मन्त्र (वि १ ३२) ।

अभिरुक्त पु [अभिरुक्त] मन्त्रि कला (मन्त्र) ।
अभिरुक्त वि [अभिरुक्त] मन्त्रि कलाभासा (मन्त्र
मन्त्र) ।

अभिरुक्त पु [अभिरुक्त] प्रमाद, विज
(मन्त्र १ १) ।

अभिरुक्त पु [वि] भास्वर्षीय मन्त्र (वि
१ २२) ।

अभिरुक्त रेको अभिरुक्त ।

अभिरुक्त वि [अभिरुक्त] १ मन्त्र मन्त्र मन्त्र ।
२ मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्रि ‘मन्त्रि मन्त्रि’
मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रि (मन्त्र) ।

अनुप्रास्य नि [अनुप्रासीये] बाहर नहीं निकला हुआ (धीन) ।

अनुप्रास्य हैको अनुप्रास्यम् ।

अनुप्रास्य हैको अनुप्रास्यम् ।

अनुप्रास्य नि [अनुप्रास्य] धर्मविद्वत् पुरुष (वा २२९) ।

अनुप्रास्य मक् [अनुप्रास्यम्] अनुप्रास्य करना ।

यदि धनुःप्रत्ययं (नि ५२८) ।

अनुप्रास्य दु [अनुप्रास्य] १ व्यास्य टीका

द्वय का विस्तार ॥ धर्म-प्रतिपादन (धोष २) ।

२ इच्छा प्रस (धोष ४४) ।

अनुप्रास्य नि [अनुप्रास्य] प्रवर्तित प्रवृत्त

नष्टा हुआ (एति) ।

अनुप्रास्य हैको अनुप्रास्य (नि ६) ।

अनुप्रास्य दु [अनुप्रास्य] सम्बन्ध (प्र १७) ।

अनुप्रास्य दु [अनुप्रास्य] मूत्रो का व्या-

ख्याता व्यास्य, अनुप्रास्यो कोमलौ वत् संस-

त्वाद्यो त्वं होत (धोष ४) ।

अनुप्रास्य नि [अनुप्रास्य] दीक्षित मुनि-

सिद्ध (एति) ।

अनुप्रास्य न [अनुप्रास्य] धर्मवान् बोधना

(नि ११ ५) ।

अनुप्रास्य वक् [अनु+कम्प] १ व्या करना ।

२ व्यक्त करना । ३ हित करना । वक् अनु-

प्रास्य नि [अनुप्रास्यम्] १ व्याप्त, व्याप्त

(मात ७५) । २ व्यक्त करनेवाला (धोष

१ २ २) ।

अनुप्रास्य नि [अनुप्रास्य] वित पर अनु-

प्रास्य की गई हो वह (मात) ।

अनुप्रास्य वक् [अनु+कम्प] १ बीचना ।

२ अनुप्रास्य करना । वक् अनुप्रास्यमाय

अनुप्रास्यमाय (विपा १ १ एति) ।

अनुप्रास्य की [अनुप्रास्य] अनुप्रास्य अनु-

प्रास्य (धोष २) ।

अनुप्रास्य नि [अनुप्रास्य] अनुप्रास्य अनुप्रास्य

(व २१) ।

अनुप्रास्य दु [अनुप्रास्य] १ वहेपुर्वा के वार्त

ना अनुप्रास्य । २ नि महापुर्वा का अनुप्रास्य

करनेवाला 'अनुप्रास्यमाय' कृतापरिणाम

व्युत्पत्ति दुःख, अनुप्रास्य दुःखवापि अनु-

प्रास्य तं विप्रास्यति (धोष ४) ।

अनुप्रास्य दु [अनुप्रास्य] परिणाम व्य (वहा) ।

सो य [हास्] व्य के परिणाम के

(धी २८) ।

अनुप्रास्य वक् [अनु+कम्प] अनुप्रास्य करना

नक्क करना । अनुप्रास्य (व ४१६) ।

अनुप्रास्य न [अनुप्रास्य] नक्क (व ४)

अनुप्रास्य वक् [अनु+कम्प] अनुप्रास्य करना

वीधे बीचना ।

अनुप्रास्य न [अनुप्रास्य] अनुप्रास्य करना

नक्क करना । अनुप्रास्य (व ४१६) ।

अनुप्रास्य नि [अनुप्रास्य] अनुप्रास्य अनुप्रास्य

(व २१) ।

अनुप्रास्य दु [अनुप्रास्य] अनुप्रास्य अनुप्रास्य

(व २१) ।

अनुप्रास्य नि [अनुप्रास्य] अनुप्रास्य अनुप्रास्य

(व २१) ।

अनुप्रास्य वक् [अनु+कम्प] अनुप्रास्य करना

नक्क करना । अनुप्रास्य (व ४१६) ।

अनुप्रास्य न [अनुप्रास्य] अनुप्रास्य करना

नक्क करना । अनुप्रास्य (व ४१६) ।

अनुप्रास्य नि [अनुप्रास्य] अनुप्रास्य अनुप्रास्य

(व २१) ।

अनुप्रास्य दु [अनुप्रास्य] अनुप्रास्य अनुप्रास्य

(व २१) ।

अनुप्रास्य नि [अनुप्रास्य] अनुप्रास्य अनुप्रास्य

(व २१) ।

(ननु) दूम १ १४)। कचह. अनुगच्छिज्जत्त
(गाथा १ २)। छं अनुगच्छिज्जा (कम्)।

अनुगच्छय देवो अनुगमन (पुन ४ ८)।
अनुगच्छिर वि [अनुगामिम्] अनुवरण
करेवत्ता (मण)।

अनुगच्छ मक [अनु + गच्छे] प्रसिम्भि
करता प्रसिम्भ करता। कच अनुगच्छे
माय (गाथा १ १८)।

अनुगम मक [अनु + गम्] १ अनुवरण
करता पीछे-पीछे जाता। २ जानना सम
जाना। ३ ब्याख्या करना सूत्र के शब्दों का
लक्ष्यकरण करना। कर्म. अनुगम्यह (विदे
२ १३)। कच. अनुगम्यत्त, अनुगम्यमाण
(उर ६ टी सुपा ७ ८ २)। छं. अनुगमम्
(दूम १ १४)। क अनुगमन्तम् (सुर ३
१७१ पण १)।

अनुगम पुं [अनुगम] १ अनुवरण अनुवर्तन
(२ २६१)। २ जानना, छीक-छीक समझना
निश्चय करना (अ १)। ३ सूत्र की व्याख्या
सूत्र के शब्दों का लक्ष्यकरण (न १)। ४
मन्त्र एक की वृत्ता में दूसरी की विधानमता
(विम २६)। ५ व्याख्या टीका (विदे १३
२७)। अनुगम्यह देण पछि, कये व अनुगम-
णमेव बाणुपयो। 'अनुगम्यस्वयो वा अं
मुत्तत्वाग्ममुत्तरणं' (विदे २ १३)।

अनुगमय ३ [अनुगमन] ऊपर देखो।

अनुगमिअ वि [अनुगत] अनुवृत्त (दूम
४३)।

अनुगमिर वि [अनुगन्तु] अनुवरण करने
वाला (२ १ २७)।

अनुगमि वि [अनुगत] १ अनुवृत्त निश्चय
अनुवरण किया गया हो वह (पह १ ४)।
२ जात ज्ञाता हुआ (विदे)। ३ अनुवृत्त को
पूर्व से बदलकर नया धारण हो (पह १
१)। ४ प्रसिम्भ (विदे २ १३)।

अनुगार देवो अनुवर. अनुवरह (स ३ १४)।
नर अनुगारि (स २ ८)।

अनुगारण देवो अनुवरण (दूम १ ७२)।

अनुगमैस मक [अनु + गमैप्] औचना
औचता उत्तरण करना। अनुगमैस (कच)।

नर अनुगमैसमाण (मय ८ २)। क
अनुगमैसियम्व (कच)।

अनुगह देवो अनुगमह = अनु + गह (नान्)।
अनुगहिय देवो अनुगिहिय (२ ८/२६)।
अनुगमाम पुं [अनुगाम] १ छोटा यंत्र (उत्त
३)। २ गुरु, गुरु के पास का यंत्र (अ
२)। ३ विधित यंत्र से दूसरा यंत्र
'गामागुयामि बुद्धमाणे' (विपा १ १ वीप
वाचा)।

अनुगामि } वि [अनुगामिम्, विक्]
अनुगामिभ } १ अनुवरण करनेवाला पीछे-
पीछे जानेवाला (वीर)। २ निर्वोण हेतु, गुरु
कारण (अ ३ १)। ३ धर्माज्ञान का एक
श्रेष्ठ (कम् १ ८)। ४ अनुवर, सेवक (सुच
१ २, १)।

अनुगारि वि [अनुवरिम्] अनुवरण
करेवाला नकाशों (महा बर्न ३)। स
११)।

अनुगिह्मी की [अनुकृति] अनुकरण नकल
(वा १)।

अनुगिह्म देवो अनुगमह = अनु + गह। कच.
अनुगिह्ममाय, अनुगिह्ममाय (निर १
१)। गाथा १ १६)।

अनुगिह्म वि [अनुगृह] कर्मन्त वास्तव,
लोक (दूम १ ७)।

अनुगिह्मी की [अनुगृहि] अन्तर्गतिक (स
१२)।

अनुगिह्म मक [अनु + गृ] अनुवृत्त करना।
छं अनुगिह्मिजा (गाथा १ ७)।

अनुगिह्मिअ वि [अनुगृहीत] जिस पर गेह
रवानों की गई हो वह (स १४ १११)।

अनुगिमीय वि [अनुगीय] १ पीछे कहा हुआ
अनुवृत्त। २ पूर्व कर्मकार के माय के अनुवृत्त
किया हुआ प्रत्य ब्याख्यान धारि (उत्त ११)।
३ जिसका नाम किया गया हो वह, पीछे
कथित। ४ न. गाथा यंत्र, 'उत्तराये' 'मत्त-
स्मिन्मण्डपे' (पञ्च १३, १४८)।

अनुगम वि [अनुगम] १ अनुवृत्त उचित
शेष्य (माट)। २ सूत्र्य वरह अनुवृत्ता
नारण धर्मकाशयो, विहारी
यशसे देवि बहोरी।

विष्णापह मियं कुसार
वरिणो अनुगुणेवि (पठर)।
अनुगुरु वि [अनुगुरु] शुद्ध-वरमय के अनु-
सार जिस विषय का व्याहार होता हो वह
(हह १)।

अनुगुरु वि [अनुगुरु] अनुवृत्त (स १७८)।
अनुगुरुम वि [अनुगुरु] अनुवृत्त के योग्य
कृत-मात्र (प्राप)।

अनुगुण देवो अनुगमह = अनु + गह।
अनुगुणह्म (२ ११२)।

अनुगमह मक [अनु + गमह] इया करता
मेहरानी करना। क अनुगमहह्म, अनु
गमहह्म (शी) (माट)।

अनुगमह पुं [अनुगमह] १ इया मेहरानी
(कम्प)। २ जकार (भीन)। ३ वि जिस
पर अनुवृत्त किया जाय वह (न १)।

अनुगमह पुं [अनवमह] कैत वाचुयों को
छाने के लिए रख-निष्ठित स्वान
'यो बोवरे यो नणवेणियारो यो बड
हुम्वेत्त म कम्प मावो।
यण्णव वेण्वेहिनु वत्त कुण्णं स कम्पे
वेमत्तुमग्गो दु' (हह ३)।

अनुगमहिय } वि [अनुगृहीत] जिस पर
अनुगमहिय } कृता की गई हो वह, धारणी
अनुगिह्मीअ (महा सुपा १२२, स २७)।

अनुगमाम न [अनुगमिम्] १ महा प्रस-
वित का एक श्रेष्ठ (अ १ ४)। २ वि. महा-
प्रसवित का वाच (अ १ ४)।

अनुगमामय वि [अनुगमामय] १ अनुगमामिक
नामक महा-प्रसवित का वाच (अ २ १)।
२ न कर्मार्थ-विशेष जिसमें अनुगमामिक
प्रसवित का वर्णन है (पह २ २)।

अनुगमय वि [अनुगम] १ अनुवृत्त-वृत्ति।
२ न निरीय सूत्र का वह भाग, जिसमें अनु
वृत्तिक प्रसवित का बिचार है 'अनाम-
गुणाय भाषेरण विविहो निविह्म दु'
(धाप ३)।

अनुगमय न [अनुगम] शुद्ध-प्रसवित
(न १)।

अनुगमयण न [अनुगमयण] कर्मों का नाश
(प्रापा)।

म्) (अ १ २ १); 'अपिण्ड = अर्ध' (अ १ ४ ४ टी)।

अनुपिण्ड } अ [अनुपिण्ड] + पिण्ड
मुद्रिण } उरीणा दूर अर्धस्य से हो।
पिण्ड की उरीणा अपिण्ड से हो (अ १ ४)।

अनुपिण्ड वि [अनुपिण्ड] उपर को अर्ध
पिण्डसे अनुपिण्ड से अर्ध अनुपिण्ड अ उप
से (अ १ १ टी)।

अनुपिण्ड न [अनुपिण्ड] प्रतिष्ठा हेमरा
(अ १ १ १)।

अनुपिण्ड न [अनुपिण्ड] प्रत्यक्ष प्राद्वत् (अ १)
अनुपिण्डा } की [अनुपिण्ड] विरि
अनुपिण्डा } विरि वाण धारि विरि (वि २०
टी नि १८, ४१३, ४४०)।

अनुपिण्ड वि [अनुपिण्ड] विरि वा ऋषेय न
विना वना हा वह (अ २ १)।

अनुपिण्ड वि [अनुपिण्ड] देवा नही पीपा
(अ १)।

अनुपिण्ड वि [अनुपिण्ड] वल न पिण्ड
(अ १ १ १ टी)।

अनुपिण्ड पु [अनुपिण्ड] एक पुत्र अनु
पुत्र (अ १)।

अनुपिण्ड वि [अनुपिण्ड] अथवा उपर
न विना वना हो वद। २ वदर वही विनावा
हम, न वृण्ड आनन स्पष्टिह हन
नमःपुत्र (अ १)।

अनुपिण्ड वि [अनुपिण्ड] अतिविक्रम नही
प्राप्त हुआ (अ १)।

अनुपिण्ड पु [अनुपिण्ड] अनुपिण्ड (वि १)
अनुपिण्ड पु [अनुपिण्ड] अनुपिण्ड - अथवा
वर्ष अथवा वही अनुपिण्ड (अ १ २ १)।

अनुपिण्ड वि [अनुपिण्ड] विरि
वर्ष वही अनुपिण्ड (अ १ २ १)।

अनुपिण्ड वि [अनुपिण्ड] वर्ष के अनु
पिण्ड अथवा वर्ष अनुपिण्ड (अ १ २ १)।

अनुपिण्ड न [अनुपिण्ड] नही पीपा
अनुपिण्ड (अ १ २ १)।

अनुपिण्ड न [अनुपिण्ड] नही पीपा
(अ १ २ १)।

अनुपिण्ड वि [अनुपिण्ड] पीपा पीपा-
वत्ता (अ २ २ टी)।

अनुपिण्ड वि [अनुपिण्ड] प्रतिष्ठा कर-
वत्ता (अ १)।

अनुपिण्ड वि [अनुपिण्ड] अनुपिण्ड विरि
अनुपिण्ड वी पीपा वह 'पाण्डो योषस्य'
अनुपिण्ड वर पाण्ड (अ १ ४)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १ १ टी)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड। वह अनुपिण्ड
(अ १ १)। ४ अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड = अनुपिण्ड +
वत्ता (अ २ २ टी)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपिण्ड देवी अनुपिण्ड (अ १)।

अनुपासिन् वि [अनुपासिन्] रचित प्रति
पातिव (छ ८) ।

अनुपास देवो अनुपस्त । वह अनुपासमाय
(ह्रस्व २) ।

अनुपिष्ठ न [अनुपिष्ठ] मनुज 'अनुपिष्ठ'
विद्यार् (सम्) ।

अनुपिष्टा देवो अनुपेष्टा (ह्रस्व ३२) ।

अनुपुङ्ग न [अनुपुङ्ग] मूल एक दान-पर्यन्त
'अनुपुङ्गमावर्त' इति शब्दात् उत्स्रज्यता इति
(ह्रस्व ३३) ।

अनुपुञ्ज वि [अनुपुञ्ज] अन्तर, आनुपुञ्जिक
(अ ४ ४) । किञ्चि अन्तर (वाच) । सो
[शस्] अनुपुञ्ज वे (आभा) ।

अनुपुञ्ज न [अनुपुञ्ज] अन्तर परितो अनु
अन्तर (चय) ।

अनुपुञ्जी श्री [अनुपुञ्जी] अन्तरदेवो (वाच) ।
अनुपुञ्ज्या श्री [अनुपुञ्ज्या] नाभ्या निम्न
विचार (चय २४ ७७) ।

अनुपेक्ष न [अनुपेक्ष] अन्तर देवो (अ
४२ टी) ।

अनुपेक्षा श्री [अनुपेक्षा] अन्तर देवो (वि
३२३) ।

अनुपेक्षि वि [अनुपेक्षि] निम्न-कर्ण
(चय १ १ ७) ।

अनुप्यहस वि [अनुप्यहस] एक हृत्ते से
निष्ठा हुआ, निश्चित (कम्) ।

अनुप्ययी एक [अनुप्ययी] १ प्रणय
करता । २ प्रवृत्त करता । बहु अनुप्ययीत
(अ ४ २८) ।

अनुप्ययीय [अनुप्ययीय] सन्तोषी दत्त परि
ग्रह भक्ता (अ २) ।

अनुप्ययीय वि [अनुप्ययीय] अन्तर देवो
(अ २) ।

अनुप्ययत्र वि [अनुप्ययत्र] अन्तरमात्र (गी ४
५) ।

अनुप्ययत देवो अनुपयत (कम्) ।

अनुप्यदा एक [अनुप्यदा] दान केा फिर
फिर देता । अनुप्यदे (कम्) । बहु अनुप्य
दायक (कम्) । हे अनुप्यदाय (आ) ।

अनुप्यदाय न [अनुप्यदाय] दान फिर-फिर
दान देता (पाठ १) ।

अनुप्यसु पुं [अनुप्यसु] स्वामी के स्वाम्यत्त
प्रतिनिधि (मि २) ।

अनुप्यया देवो अनुप्यया । अनुप्यया (कम्) ।
हे अनुप्ययाय (आ) ।

अनुप्ययाय देवो अनुप्ययाय (आभा) ।
अनुप्ययाय एक [अनुप्ययाय] अनुपय
करता । हे अनुप्ययाय (मि २२ ७) ।

अनुप्ययाय वि [अनुप्ययाय] अनुप्ययाय
अनुप्ययाय (कम्) । अनुप्ययाय (कम्) ।
(अ २ १ १ १) ।

अनुप्ययाय पुं [अनुप्ययाय] कन्त (मू २
७ ११) ।

अनुप्ययाय एक [अनुप्ययाय] पक्षी ।
बहु अनुप्ययायमाय (अ १) ।

अनुप्ययाय न [अनुप्ययाय] पक्षी पुं
हृत्ते के दान-पर्यन्त का एक दान-विषय (अ २) ।

अनुप्ययिष्ठ देवो अनुपयिष्ठ (कम्) ।
अनुप्ययिष्ठि श्री [अनुपयिष्ठि] अनुपय
अनुपय (मि २११) ।

अनुप्ययिष्ठ देवो अनुपयिष्ठ । अनुपयिष्ठ
(आ) । बहु अनुप्ययिष्ठेता (मि १) ।

अनुप्ययिष्ठ देवो अनुपयिष्ठ (मि) ।
अनुप्ययिष्ठ न [अनुपयिष्ठ] देवो अनुप-
यिष्ठ (मि) ।

अनुप्ययिष्ठ (ही) एक [अनुप्ययाय] प्रवृत्त
करता । अनुप्ययिष्ठि (मि) ।

अनुप्ययिष्ठ वि [अनुपयिष्ठ] अन्तर देवो
निष्ठा हुआ (आभा) ।

अनुप्यया वि [अनुपयिष्ठ] अनुपय, अनुपय
अनुपय (मि १) ।

अनुप्ययिष्ठ वि [अनुपयिष्ठ] अनुपय वह (मू ४
१ ७) ।

अनुप्ययिष्ठ वि [अनुपयिष्ठ] अनुपय
हृत्ता हुआ
अन्तर अन्तराध्यात्मिकतायेन ते

यत्ते वत्तयति ।
तं विषयमनुप्ययिष्ठो गन्तव्यं विद्मि अन्तरा
(मि ३) ।

अनुप्ययिष्ठ देवो अनुपयिष्ठ
'अनुपयिष्ठ' किं न कम् न वाहय

येन वे सन्तोषी ।
अनुपयिष्ठ किं कम् न अनुपयिष्ठि भोय ।
अनुपयिष्ठ (आ) ।

अनुप्ययिष्ठ वि [अनुपयिष्ठ] देवो से सेवा
हुया (मि) ।

अनुप्ययिष्ठ एक [अनुप्ययाय] निम्न करमा
विचारता अनुपयिष्ठि (मि १२३) । बहु अनु-
प्ययिष्ठि (मि १) ।

अनुप्ययिष्ठ श्री [अनुपयिष्ठ] निम्न शब्दा
विचार, स्वाभाविक विषय (अ २२) ।

अनुप्ययिष्ठ पुं [अनुपयिष्ठ] अनुपय शब्दा
'अनुपयिष्ठ' अनुपयिष्ठि 'अनुपयिष्ठ' (अ १) ।

अनुप्ययिष्ठ वि [अनुपयिष्ठ] अनुपय शब्दा
साक विष्ठा हुआ (अ १४४) ।

अनुप्ययिष्ठ एक [अनुपयिष्ठ] अनुपयिष्ठ
करता । २ अनुपयिष्ठि (मि १२३) । अनुपयिष्ठि
(अ २२) । बहु अनुपयिष्ठि (मि १२३) ।

अनुप्ययिष्ठि देवो अनुपयिष्ठि (मि) ।
अनुप्ययिष्ठि देवो अनुपयिष्ठि (मि) ।

अनुप्ययिष्ठि पुं [अनुपयिष्ठ] अनुपयिष्ठि
अनुपयिष्ठि (मि) ।

अनुप्ययिष्ठि देवो अनुपयिष्ठि (मि) ।
अनुप्ययिष्ठि देवो अनुपयिष्ठि (मि) ।

अनुप्ययिष्ठि देवो अनुपयिष्ठि (मि) ।
अनुप्ययिष्ठि देवो अनुपयिष्ठि (मि) ।

अनुप्ययिष्ठि देवो अनुपयिष्ठि (मि) ।
अनुप्ययिष्ठि देवो अनुपयिष्ठि (मि) ।

अनुप्ययिष्ठि देवो अनुपयिष्ठि (मि) ।
अनुप्ययिष्ठि देवो अनुपयिष्ठि (मि) ।

अनुप्ययिष्ठि देवो अनुपयिष्ठि (मि) ।
अनुप्ययिष्ठि देवो अनुपयिष्ठि (मि) ।

अनुप्ययिष्ठि देवो अनुपयिष्ठि (मि) ।
अनुप्ययिष्ठि देवो अनुपयिष्ठि (मि) ।

अनुप्ययिष्ठि देवो अनुपयिष्ठि (मि) ।
अनुप्ययिष्ठि देवो अनुपयिष्ठि (मि) ।

अनुप्ययिष्ठि देवो अनुपयिष्ठि (मि) ।
अनुप्ययिष्ठि देवो अनुपयिष्ठि (मि) ।

अनुप्ययिष्ठि देवो अनुपयिष्ठि (मि) ।
अनुप्ययिष्ठि देवो अनुपयिष्ठि (मि) ।

अनुबन्ध } वि [अनुबन्ध] १ नौका हूना
अनुबन्ध } बंध (वि ११ १) । २ छत
परिस्थित 'अनुबन्धित' परीयर बैर्यो
उदीरति (पद्य १ १) । ३ व्यास (छाया
१ २) । ४ प्रतिबन्ध (छाया १ २) । ५
धर्म्य बहुत 'अनुबन्धित' रत्नेरत्नाय (पद्य
१ १) । ६ छत (उत्तर २२) ।

अनुबन्ध वि [अनुबन्ध] १ अनुबन्ध (पंचा ६
२०) । २ पीछे बैठा हुआ (सिंहि ४४४) ।

अनुबन्ध देखो अनुबन्ध ।

अनुबन्ध वि [अनुबन्ध] अनुबन्ध अनुबन्ध
(उत्तर २) ।

अनुबन्ध वि [अनुबन्ध] अनुबन्ध अनुबन्ध
(गद) ।

अनुबन्ध देखो अनुबन्ध = अनुबन्ध (गद) ।

अनुबन्ध सक [अनु + मू] १ अनुबन्ध करना,
बाल्य समझना । २ बर्नछत को चीरना ।
अनुबन्धति (वि ४०३) । बहु अनुबन्धति
(वि ४०३) । सं अनुबन्धति अनुबन्धति
(गद) पद्य १ १) । हेरु अनुबन्धति
(उत्तर १०) ।

अनुबन्ध दु [अनुबन्ध] १ आग को बंध
(पंचा २) । २ बर्नछत का चीर (विधि) ।

अनुबन्ध न [अनुबन्ध] ऊपर देखो (पद्य
४ वि २ १) ।

अनुबन्ध वि [अनुबन्ध] अनुबन्ध अनुबन्ध
(वि ११२६) ।

अनुबन्ध वि [अनुबन्ध] अनुबन्ध अनुबन्ध
(बर्नछत ४४) ।

अनुबन्ध दु [अनुबन्ध] १ अनाज कागज
(पद्य १ १) । २ संधि, नावन् (पद्य २) ।
३ बर्नो का रत्न—अनाज (पद्य १ १) । ४
बर्नो का रत्न बर्नो का रत्न उत्पन्न करने की
शक्ति 'अनुबन्ध' को 'अनाज' (अनाज १ १ टी
नर ११) । बंध दु [अनाज] बर्नो-अनाज
में अनाज उत्पन्न करने की शक्ति का बर्नो (छा
४ २) ।

अनुबन्ध दु [अनुबन्ध] १ ४ ऊपर देखो
अनुबन्ध (अनु १२ टी १ १ पद्य ४४)
नर १) । २ बर्नो का रत्न की शक्ति के
बर्नो का रत्न का रत्न (अनाज) । ३ रत्न
के रत्न (अनाज १ १) ।

अनुबन्ध वि [अनुबन्ध] अनुबन्ध अनुबन्ध
(पद्य) ।

अनुबन्ध सक [अनु + माय] १ अनुबन्ध
करना बर्नो हूँ बांध को छीं लम्बे लम्बा-
नार में या छूटी गला में करना । २ रत्न
करना 'अनुबन्ध' दुबल (अनु ६ १ व
१) । बहु अनुबन्धति अनुबन्धति
(छा १०४ वि २३१२) ।

अनुबन्ध न [अनुबन्ध] अनुबन्ध, अनुबन्ध
बांध का करना (गद) ।

अनुबन्ध नौ [अनुबन्ध] ऊपर देखो
(छा १ ३ वि २३२ टी) ।

अनुबन्ध वि [अनुबन्ध] अनुबन्ध अनुबन्ध
बांध करने वाला (वि १२१७) ।

अनुबन्धति अनुबन्धति अनुबन्धति ।

अनुबन्ध सक [अनु + मुद्र] १ मोच करना ।
नर अनुबन्धति (छा ११) ।

अनुबन्ध की [अनुबन्ध] अनुबन्ध (वि ११११) ।

अनुबन्ध वि [अनुबन्ध] बांध निमित्त (पद्य) ।
मुद्र वि [मुद्र] पहले ही चिकका अनुबन्ध
ही गया ही बंध (छाया १ १) ।

अनुबन्ध सक [अनु + मू] मुद्रित करना
छोड़कर करना । अनुबन्धति (छा) (गद) ।

अनुबन्ध की [अनुबन्ध] अनुबन्ध अनुबन्ध
(छा १) ।

अनुबन्धति अनुबन्धति अनुबन्धति (वि ११११) ।

अनुबन्ध न [अनुबन्ध] अनुबन्ध अनुबन्ध
(वि ११११) ।

अनुबन्ध न [अनुबन्ध] अनुबन्ध अनुबन्ध
(वि ११११) ।

अनुबन्ध सक [अनु + मू] अनुबन्ध
करना । सं अनुबन्धति (बर्नछत ११६) ।

अनुबन्ध सक [अनु + मू] अनुबन्ध
अनुबन्धति (छा, अनुबन्धति (छा) । अनुबन्धति
अनुबन्धति (वि ११२० गद) । बहु अनुबन्धति
अनुबन्धति (उत्तर ११) । सं अनुबन्धति
अनुबन्धति (गद) ।

अनुबन्धति अनुबन्धति अनुबन्धति (वि ११११) ।

अनुबन्धति अनुबन्धति अनुबन्धति (वि ११११) ।

अनुबन्ध सक [अनु + मू] १ अनुबन्ध । २ छीं
होना, बंध के करने में नर आना 'अनुबन्ध' ।

अनुबन्धति अनुबन्धति (पद्य ११) । अनुबन्धति
अनुबन्धति (वि १२२२) ।

अनुबन्ध सक [अनु + मू] अनुबन्ध अनुबन्ध
छीं देखो, 'अनुबन्धति अनुबन्धति अनुबन्धति
अनुबन्धति' (वि २३४) ।

अनुबन्धति अनुबन्धति अनुबन्धति (वि २३४) ।

अनुबन्धति अनुबन्धति अनुबन्धति (वि २३४) ।

अनुबन्धति अनुबन्धति अनुबन्धति (वि २३४) ।

अनुबन्धति अनुबन्धति अनुबन्धति (वि २३४) ।

अनुबन्धति अनुबन्धति अनुबन्धति (वि २३४) ।

अनुबन्धति अनुबन्धति अनुबन्धति (वि २३४) ।

अनुबन्धति अनुबन्धति अनुबन्धति (वि २३४) ।

अनुबन्धति अनुबन्धति अनुबन्धति (वि २३४) ।

अनुबन्धति अनुबन्धति अनुबन्धति (वि २३४) ।

अनुबन्धति अनुबन्धति अनुबन्धति (वि २३४) ।

अनुबन्धति अनुबन्धति अनुबन्धति (वि २३४) ।

अनुबन्धति अनुबन्धति अनुबन्धति (वि २३४) ।

अनुबन्धति अनुबन्धति अनुबन्धति (वि २३४) ।

अनुबन्धति अनुबन्धति अनुबन्धति (वि २३४) ।

अनुबन्धति अनुबन्धति अनुबन्धति (वि २३४) ।

अनुबन्धति अनुबन्धति अनुबन्धति (वि २३४) ।

अनुबन्धति अनुबन्धति अनुबन्धति (वि २३४) ।

अनुबन्धति अनुबन्धति अनुबन्धति (वि २३४) ।

अनुबन्धति अनुबन्धति अनुबन्धति (वि २३४) ।

अनुसूतः का [अनुसूतः] अनुसूतः
 वरुणः प्रसन्नः वरुणः । अनुसूतः (रजः) ।

अनुष्ठानादि [अनुष्ठानादि] यन्त्रि

अनुमित्र पर [अनु + मित्र] । पदुनाग
 बाबा परं बाबा । पदुनाग । पदुनाग ।

इयपीय (पठन १० १४ सुपा ३८१)। संक-
छानुस्येऊय अणुवचिं (प्रकृ पं २)।
अणुवचन न [अनुमन] अनुमत् (स २८०)।
अणुवचि न [अनुमत्] विवक्ष्य अनुमत्
धिया गया हो वह (सुपा १)।
अणुहारि न [अनुहारि] अनुकरणा करने
वाला अनुमत् (कुमा)।
अणुहार वैभो अनुमाय (न ४ ३ १११)।
अणुवियासन न [अनुव्यासन] धैर्य से
सहन करना (सं २)।
अणुव नक [अनु + नू] अनुभव करना।
वह अनुवृत्त (पठन १ १ ११०)।
अणुवृत्त सङ्ग [अनु + मुञ्ज] मोक्ष करना
योगात्। अनुवृत्त (संवि)।
अणुवृत्त वैभो अनुवृत्त (पा १११)।
अणुवृत्त न [अनुमत्] १ विवक्ष्य अनुमत्
धिया गया हो वह (सुपा)। २ न अनुमत्
(सं २०)।
अणुवृत्त सङ्ग [अनु + मु] अनुभव करना।
अणुवृत्त (पि ४४३)। वह अनुवृत्त (पठन
१ १, १४)। कर्क-अणुवृत्तस्य अणु-
वृत्तस्य, अणुवृत्तस्यमात्र अणुवृत्तस्यमात्र
(पठ)। ३ अणुवृत्तस्य (टी) (पि
१११)।
अणुवृत्त वैभो अनुवृत्त 'एतो बोद्धं अनु-
कृत्य' (पंथन)।
अणुवृत्त न [अनुमत्] कम नहीं अधिक
(कुमा)।
अणुवृत्त न [अनुमत्] अधिक मतवाला वैभो
अणुवृत्त न [अनुमत्] स्वात् (पिठ १० १,
वृ ४)।
अणुवृत्त न [अनेक] वैभो अणुवृत्त (सुपा धमि
२४१)।
अनेकमत्ति न [हे] ब्रह्म ब्रह्म (सं १
१)।
अनेकमत्ति न [अनेक] एक से अधिक बहुत
अनेक। (संवि) प्राप्ति ११)। कारण न
[अनुमत्] धर्म, धर्म, धर्म (संवि १ १)।
राष्ट्र न [राष्ट्र] अनेक राज्यों में होने-
वाला अनेक राज संरक्षी (अनुमत्ति
(कृ)। सोय न [राष्ट्र] अनेक बार
(पा १४)।

अनेकमत्ति न [अनेकमत्ति] धर्मधर्म धर्म का
प्रमाण (विश्व)। वाय न [वाय] स्वाभाव,
वैभो का मुख्य विचारण सत्य-सत्य धर्म
अनेक विवक्ष्य नवीं का भी एक वस्तु में सापक्ष
स्वीकार,
'अणु विद्या लोपमत्ति वरहाटी
सम्पत्ति न निम्न'।
सत्तु नुवृत्तस्य वैभो अणुवृत्तस्य
(संवि १११)।
अनेकमत्ति न [अनेकमत्ति] ऐकान्तिक
नहीं धर्मधर्म अनेकमत्ति (सं १ १)।
अनेकमत्ति न [अनेकमत्ति] पदार्थों को
सर्वथा धर्म-धर्म माननेवाला धर्मधर्म
सत्तु का अनुवृत्त (ठा ८)।
अनेकमत्ति न [अनेकमत्ति] नहीं चाहता
हृत्ता (सं ३९८ टी)।
अनेकमत्ति न [अनेक] निम्न निम्न (पाठ)।
अनेकमत्ति न [अनेक] आने के अनेक,
आने के अनेक (पठ)।
अनेकमत्ति न [अनेक] अनुमत् अनेकमत्ति
'अनेकमत्ति नुवृत्तस्य पदार्थस्य' (सं
१ ११)।
अनेकमत्ति न [अनेकमत्ति] विवक्ष्य
विचित्र 'अनेकमत्ति नुवृत्तस्य वैभो' (सं
१ १)।
अनेकमत्ति वैभो अनेकमत्ति। वह अनेकमत्ति (पाठ)।
अनेकमत्ति न [अनेकमत्ति] जान लगा (पठ)।
अनेकमत्ति न [अनेकमत्ति] एषा का अनेक
(अ)।
अनेकमत्ति न [अनेकमत्ति] अनेकमत्ति
वैभो साधुओं के विद्य अनेक (मिष्ट-धर्म)
(ठा १, १ अन्ता १ १)।
अनेकमत्ति न [अनेकमत्ति] विवक्ष्य अनुमत्
न धारा हो वह भी (ठा २, २)।
अनेकमत्ति न [अनेकमत्ति] विवक्ष्य अनुमत्
न धिया गया हो वह, धर्म 'परमार्थ' (संवि
मणोवृत्त) (वीर)।
अनेकमत्ति वैभो अणुवृत्त = अनेकमत्ति 'आप-
नवी संवृत्ति अनेकमत्ति' (वृ १)।
अनेकमत्ति न [अनेकमत्ति] नहीं विद्या
हृत्ता अनेकमत्ति (संवि)।

अणुवृत्त न [अनेकमत्ति] निर्वीर दुष्ट (अन्ता
१ ८)।
अणुवृत्त न [अनेकमत्ति] अनेकमत्ति महा
वीर की पुत्री का नाम (वाय)।
अणुवृत्त न [अनेकमत्ति] अनेक वैभो (कृ)।
अणुवृत्त न [अनेकमत्ति] नहीं अनुमत्
(सं १ १)।
अणुवृत्त वैभो अणुवृत्त (पठ ६४)।
अणुवृत्त न [अनेकमत्ति] हीन-वृत्ति परिपुष्ट
(वाय)।
अणुवृत्त न [अनेकमत्ति] अनेकमत्ति अनेक
लगाए 'अनेकमत्ति विवक्ष्य
परमार्थ अणुवृत्त।
वैभो विवक्ष्य अनेकमत्ति
(वीर २४१)।
अणुवृत्त न [हे] १ अनेक, प्रमत्त (वाय)।
२ अनेक-अनेक (पंथन ११ वी ४४)। ३
धर्म विवक्ष्य (पठ १ १)।
अणुवृत्त न [अनुवृत्त] अनुमत् अनेक
(कुमा)।
अणुवृत्त न [हे] प्रमत्त प्रावकन (सं १
११)।
अणुवृत्त न [अनेकमत्ति] अनेकमत्ति नुवृत्त
पुत्री का एक वैभो अनेकमत्ति (पठ)।
अणुवृत्त न [अनुवृत्त] अनेकमत्ति वैभो
वैभो (सं ३०)।
अणुवृत्त न [अनेक] १ अनेक वृत्ता हृत्ता
(पा १४१)। अनेक न [अनेक] अनेक
विद्य, विद्य (कट्ट ८१)।
अणुवृत्त न [अनेकमत्ति] अनेक (सं १
११, १)।
अणुवृत्त न [अनुमत्] अनेक-वृत्ति धर्म
वीर (पठ ३९ २१ मुर १ ११)।
अणुवृत्त न [अनुमत्ति] अनेक वैभो
(पठन २, ११)।
अणुवृत्त न [अनुमत्ति] अनेकमत्ति अनेक
सत्य जान का अनेक (सं २ ११)।
अणुवृत्त न [अनुमत्ति] १ परिपुष्ट
वृत्ति धर्मवीर। २ अनेक अनेक (वाय)।
अणुवृत्त न [अनुमत्ति] अनेकमत्ति अनेक
अनेकमत्ति १ वृत्ति अनेकमत्ति न परिपुष्ट
(संवि १ ३०)।

अण्जा की [रे] १ बेर की की। २ पति की बहिन मर। ३ पूजा पिता की बहिन (रे १ २१)।

अण्जु } वि [अङ्ग] धमा, निर्धोष गुण
अण्जुअ } (पर गा १८४)।

अण्जुण वि [अण्जुण] परम्पर, धावस में (बटव)।

अण्जुण वि [अण्जुण] परिपूर्ण (ठा ३ २२४)।

अण्जु मर [अनु + इ] अनुसरण करना।
अण्जुइ (विजे २२२२)। अण्जुति (वि ४३१)।
मरह अण्जुजमाग (अण्जीमाल) (विपा १ १)।

अण्जोम नर [अनु + इण्] १ जोनग
हुंका लहरीबल करना। २ बाहना
बांधना। ३ धारणा करना। अण्जोमइ (वि १६३)। बह अण्जोसंद, अण्जोसजोव,
अण्जोसमाय (महा काव)।

अण्जोसण न [अन्धपण] जोन उमारा,
उत्तीबल (ठा ९ टी)।

अण्जोसमा की [अन्धेपणा] १ जोन वह
नीरात (भार)। २ प्राप्ति (धारा)। ३ मुख्य
मे ही जाती निरा का बहल (गा १ ४)।

अण्जोमय नि [अन्धेपक] धरेपक (वच ७१)।

अण्जोमि नि [अन्धेपि] जोन करेबाला
(धारा)।

अण्जोसिय नि [अन्धेपि] विमो धारी
मान की गई हो बह 'अण्जोसिया सधधो
मुने न बहि पिठु' (महा)।

अण्जोमय देवो अण्जुण 'अण्जोमयवणु-
बहं रिणपयो धरिणरिधयं नु' (वैपा १
म्वन २२)।

अण्जोसमि नि [रे] प्रतिगल उन्मिनि
(रे १ १६)।

अण्जु मर [मुज] १ बाग जोनग करना।
२ बाग करना। ३ बहल करना। अण्जुइ
(रे ४ ११। वर)। अण्जुए (धर)।
अण्जु (हुवा)।

अण्जु न [अहन्] रिगल, रिग 'पूजावरण
बालबनरि' (उता)।

अण्जुहा } पु [आमय] कम-बन्ध के कारण
अण्जुय } द्विपति (पण्ड १ १२, चौप)।

अण्जा की [पुण्णा] लुग व्यास (गा २३)।

अण्जुअअ नि [रे] आन भूमा हुमा (रे १ २१)।

अतकिंय नि [अतकिंय] १ धरिन्तल मल-
स्मिक 'अतकिंयमय एरिउ बखण्मई पता'
(महा)। २ हीर-हीर नहीं बना हुमा अर
रिगलित (वर ८)। ३ किंय अतकिंय
वेव 'बिहारी यमहवी' (महा)।

अतह नि [अतह] छोटा फिगारा 'अतहुव
बातो सो बेव मगो' (बह १)।

अतण्माय नि [अतण्माय] लुण्णा-पुंठि
निगल (पण्ड २४)।

अतच न [अतच] धरण मठ बैरव्यामी
(ठा ३ ८)।

अतव नि [अतव] नहीं इत हुमा निर्भीक
(हुमा)।

अतव नि [अतव] अण्जु, हुका (धारा)।

अतव बेकी अवर (वच १ कम ३। मरि)।

अतव पुन [अतवस] १ लवर्वा का धारा
(उत २३)। २ वि लप-रहित (हह ४)।

अतव पु [अतव] ध-प्रसंवा निगल (हुमा)।

अतसी बेकी अयसा (पण्ड १)।

अतह नि [अतव] धरण, ध-वास्तविक
हुका (पुष १ १२। धारा)।

अतह नि [अतव] लम माधिक नहीं
'बायो विव कावम उण्णहूँ विगण
कितीयो'।

तयो किंय अतह-पिनेकेल वलरिंत
विगल (पण्ड १)।

अतार नि [अतार] लने को मलस (छाया
१ १ १४)।

अतारि नि [अतारि] ऊपर लेकी (पुष
१ ३ २)।

अतिहट मर [अति + हु] १ लुव हुमा
हुट करना। २ मर कवन के हुक होना।

अतिहट (पुष १ १२, २)।

अतिहट मर [अति + हु] १ लमबन
करना। २ व्यास होना। 'अतिहट (पुष १
१२, ९ टी)।

अतिहट नि [अतिहट] १ अतिहट। २

अनुगत व्यास 'असी गुहाए बलरिंतहट'
अतिहटयो उण्णहूँ सुतपाणो' (पुष १ २,
१ १२)।

अतिहट न [अतिहट] १ लीव (अनुमि संघ)
का धारा लीव की अनुमति। २ बह कात
विमं लीव की प्रति न हुई हो या उतक
धारा बहा हो (पण्ड १)। सिद्ध नि
"सिद्ध" मतीव काव में ली मुक हुमा हो
बह धरिचसिद्धा व मग्नेको' (नब ३६)।

अतिहट यो अहहि।

अतिहट नि [अतिहट] १ धरि-निर्बिद।
२ अति धरि-बह 'अतीगाई नीयो
पल्लारि' (पण्ड १ ११)।

अनुक नि [अनुक] अनुम धमाधारण
(पण्ड १ १)।

अनुमि नि [अनुमि] धाराधारण धरि
लीव (धरि)।

अत बेकी अण्जु = धालम् (पुष १, १७४
वच २७ एरि)। अम पुं [अम] स्वल्प
की प्राप्ति वलति (कम २ २२)।

अत नि [आत] पीठि हुनिव हैपन
(पुष १ १४१। हुमा)।

अत नि [आत] १ गृहीत निवा हुमा (छाया
१ १)। २ स्त्रीहट, मंडर किया हुमा (ठा
२ १)। ३ पुं भाती पुनि (बह १)।

अत नि [आत] १ श्राद्ध-भुल-चंडा हुणी।
२ एण-व बरिठ नीरपय। ३ प्राप्ति
बाता हुन

'अतुमासीए पतणि बेल पसी उ ली मने'
एणहोपहणी का जे न ट्टा विगलिर'
(वर १)। ४ मोन अति (पुष १ १)।

५ एणल द्विपक (मर १४ ६)। ६ श्रात
मिना हुमा (वच १)। 'अतवणएणसेले'
(उत १२)।

अत नि [आत] हुण का नाथ करेमाता
पुष का धाराधर (वच १४ ६)।

अत नि [आत] यो एव स्थान में (नाट)।

अत नि [अत] पूण माननीय (धरि
११। वि २२१)।

अतम देवो अतव = धरण (श्राह २१)।

अतम नि [आत्ममो] १ विरुने कर्न

बन्धन हो वह । २ पुं प्राक्कर्मा शेष (विश्व २४) ।

अष्टाङ्ग नि [आस्थाप्य] १ घालीय स्वकीय (वर्ग २) । २ पुं स्वार्थ 'अष्ट नामनिधायक' अष्टाङ्ग अष्टाङ्ग (वर्ग ८) ।

अष्टाष्टिप नि [आस्थापिक] १ घालीय । २ जो अपने लिए किया गया हो 'अष्टाष्टि' नामक माहात्म्य अष्टाष्टिप शिवमहात्म्य (वर्ग १२) ।

अष्टाय १ शेषो अष्टय = अष्टयम् (गुण्य अष्टयम्) २ ११६) । अष्टय नि [अष्टमीय] शिवो स्वकीय (वर्ग ४ १) ।

अष्टायग १ (टी) नि [आस्थाप्य] स्वकीय अष्टायग १ अष्टाय, निष्का (वि २७० गट) ।

अष्टायिजिप नि [अष्टमीय] स्वकीय (वर्ग १ १) ।

अष्टायीय (टी) ऊपर देखो (स्वयं २७) ।

अष्टायाम केओ आचल = आ + हल ।

अष्टय पुं [आस्थाप्य] पुन लक्ष्य । आ की [आ] पुषी, लक्ष्मी (वि १ १) ।

अष्टयम् नि [अष्टयम्] बाले नामक, अष्टय (नाम) ।

अष्टाय की [वि] १ मत्त, मी (वि १ ३१ वा ७) । २ लाल (वि १ ३१ वा १३७) । ३ लाल । ४ लाल (वि १ १३१) ।

अष्टाय केओ अष्टाय (वर्ग १) ।

अष्टाय केओ अष्टय (वि ४ १) ।

अष्टाय नि [अष्टाय] १ अष्टाय-वर्ष, अष्टाय-वर्ष (वर्ग १ १) । २ पुं वर्षे पर आष्टी रनपर बल्लेनाला बुद्धिपर । ३ अष्टाय-वर्षे परनपर बुद्धिपर बल्लेनाला बोरी (वर्ग १) ।

अष्टि पुं [अष्टि] इत नाम का एक अष्टि (वर्ग ४) ।

अष्टि की [अष्टि] पीडा बुद्ध (बुद्ध बुद्ध १ २) । हर नि [हर] पीडा-मरण बुद्ध पर नष्ट बल्लेनाला (वर्ग १ १) ।

अष्टिदी की [वि] इती ममाचार बुद्धिना-वर्षे की (वर्ग १) ।

अष्टीर बर [आस्थाप्य + क] अपने परीय बरना, बर बरना । अष्टीर बर बर अष्टी बर (वि ४ ४) ।

अष्टीरय न [आस्थाप्य] अष्टय बर बरना (वि ४ ४) ।

अष्टीरय न [आस्थाप्य] अष्टय बर बरना (वि ४ ४) ।

अष्टीरय न [आस्थाप्य] अष्टय बर बरना (वि ४ ४) ।

अष्टीरय नि [आस्थाप्य] अष्टय बर बरना (वि ४ ४) ।

अष्टीरय नि [आस्थाप्य] अष्टय बर बरना (वि ४ ४) ।

अष्टीरय नि [आस्थाप्य] अष्टय बर बरना (वि ४ ४) ।

अष्टीरय नि [आस्थाप्य] अष्टय बर बरना (वि ४ ४) ।

अष्टीरय नि [आस्थाप्य] अष्टय बर बरना (वि ४ ४) ।

अष्टीरय नि [आस्थाप्य] अष्टय बर बरना (वि ४ ४) ।

अष्टीरय नि [आस्थाप्य] अष्टय बर बरना (वि ४ ४) ।

अष्टीरय नि [आस्थाप्य] अष्टय बर बरना (वि ४ ४) ।

अष्टीरय नि [आस्थाप्य] अष्टय बर बरना (वि ४ ४) ।

अष्टीरय नि [आस्थाप्य] अष्टय बर बरना (वि ४ ४) ।

अष्टीरय नि [आस्थाप्य] अष्टय बर बरना (वि ४ ४) ।

अष्टीरय नि [आस्थाप्य] अष्टय बर बरना (वि ४ ४) ।

अष्टीरय नि [आस्थाप्य] अष्टय बर बरना (वि ४ ४) ।

अष्टीरय नि [आस्थाप्य] अष्टय बर बरना (वि ४ ४) ।

अष्टीरय नि [आस्थाप्य] अष्टय बर बरना (वि ४ ४) ।

अष्टीरय नि [आस्थाप्य] अष्टय बर बरना (वि ४ ४) ।

अष्टीरय नि [आस्थाप्य] अष्टय बर बरना (वि ४ ४) ।

अष्टीरय नि [आस्थाप्य] अष्टय बर बरना (वि ४ ४) ।

अष्टीरय नि [आस्थाप्य] अष्टय बर बरना (वि ४ ४) ।

अष्टीरय नि [आस्थाप्य] अष्टय बर बरना (वि ४ ४) ।

अष्टीरय नि [आस्थाप्य] अष्टय बर बरना (वि ४ ४) ।

अष्टय न [अष्टय] अष्टय, अष्टय (वर्ग ४ ४) ।

अष्टय न [अष्टय] अष्टय, अष्टय (वर्ग ४ ४) ।

अष्टय न [अष्टय] अष्टय, अष्टय (वर्ग ४ ४) ।

अष्टय न [अष्टय] अष्टय, अष्टय (वर्ग ४ ४) ।

अष्टय न [अष्टय] अष्टय, अष्टय (वर्ग ४ ४) ।

अष्टय न [अष्टय] अष्टय, अष्टय (वर्ग ४ ४) ।

अष्टय न [अष्टय] अष्टय, अष्टय (वर्ग ४ ४) ।

अष्टय न [अष्टय] अष्टय, अष्टय (वर्ग ४ ४) ।

अष्टय न [अष्टय] अष्टय, अष्टय (वर्ग ४ ४) ।

अष्टय न [अष्टय] अष्टय, अष्टय (वर्ग ४ ४) ।

अष्टय न [अष्टय] अष्टय, अष्टय (वर्ग ४ ४) ।

अष्टय न [अष्टय] अष्टय, अष्टय (वर्ग ४ ४) ।

अष्टय न [अष्टय] अष्टय, अष्टय (वर्ग ४ ४) ।

अष्टय न [अष्टय] अष्टय, अष्टय (वर्ग ४ ४) ।

अष्टय न [अष्टय] अष्टय, अष्टय (वर्ग ४ ४) ।

अष्टय न [अष्टय] अष्टय, अष्टय (वर्ग ४ ४) ।

अष्टय न [अष्टय] अष्टय, अष्टय (वर्ग ४ ४) ।

अष्टय न [अष्टय] अष्टय, अष्टय (वर्ग ४ ४) ।

अष्टय न [अष्टय] अष्टय, अष्टय (वर्ग ४ ४) ।

अष्टय न [अष्टय] अष्टय, अष्टय (वर्ग ४ ४) ।

अष्टय न [अष्टय] अष्टय, अष्टय (वर्ग ४ ४) ।

अनुसिद्ध न [३] १ संज्ञा करना प्रत्यय
करना संज्ञित करना (दे १ ३४)।

अठसिअ वि [अर्थाधिक] विज्ञात वाता
वाता (महावि १) ।

अखर्जपा } श्री [वि. धर्मजहा] एक प्रकार
अखर्जधी } का बूटा मोनक नामक बूटा,
जिसे पुनरुत्पत्ति में 'मोनकी' कहते हैं (वि. १
११ २ ११ १ १११)।

अद्याय श्री [वि अद्याय] दिन अथवा रात्रि का एक भाग (सुच १ टी) ।

अक्षपेडा श्री [अर्धपेडा] समूह के वर्ष भाव
क साक्षरता की पहचान में निम्नलिखित (पृष्ठ
१ ११)।

अक्षरं तु [अक्षर] यत् वाच्यं (वाच्य) ।

अथर वि [६] प्रथम पुत्रः 'उम्हा एवमस
विद्विस्मयपटुषो वेद विन्धामि तयो राजा
तन्विद्विषावो' (सम्मत् १११) ।

मन्त्रविचार न [हे] १ मण्डल भूषा 'भा
 नुण मन्त्रविचार' (दि १ ४१) । २ मण्डल
 छेदा मण्डल (दि १ ४१) ।

अद्यापी [हे अद्या] १. बाल समग्र बाल,
(छ २, १ नव ४२)। २. अक्षित (अन ११
११)। ३. अक्षित अक्षित-विशेष (विशेष)। ४.

(पृष्ठ ४१ पृष्ठ १) :

अद्यापि पुं [अध्वज] मार्गं गच्छता ह्यस्य
अध्वजं गच्छता गच्छतां (मुञ्ज ५, १५) ।

संस्थान [सीपेक] यह पर संपूर्ण सार
के मोम धागे जाने के लिए एकत्र हो यह
मार्ग-स्वात (बद ४) ।

अद्यापि न [आभिव्र] पक्क सुसाफिर
(सह ४) ।
अद्यापि न [अव्यासित] १ अभिव्रित्त,
साफिर (सह ५) ३।

[illegible]

यस्युमे शेषः ।
 ए मुञ्चति कनकमयं, पञ्चाश पद्मि न
 केवलिं (ग. ३४. ५) ।

अद्विष्ट श्री [अष्टमि] बीरन का ध्यान
अभीरन (पत्र ११ ११) ।
अष्टमि श्री [अष्टमि] बीरन का ध्यान

अथ पुनरुक्तं कि [अर्धोत्पाट] यावा कुवा
‘अर्धोत्पाट’ कथा (पद्य १५ १ ७)।

११६ वि [अथर्वसूक्त] सप्तै टील (यप
१ १) निवे १२१) ।
११७ वि [अथर्वसूक्त] मोडा कहा हुआ
(यप १ १) ।

विष्णुवि [अमृत] १ अथवा अस्थिर,
विष्णुवि (४ १११ वंश १११ पञ्चम २१,
१) १२ अमृत (अमृत)।

पूजेजह वि [अर्घाण] १ त्रिभा-भूत हो
नरेशाला करिष्य । २ विवि भाभा-भाभा
हे ही.

[illegible]

१७१) ।
 [अष्टोपम्य अष्टोपमिक]

य [अधस्त] नीचे (आकाश १०००)

(१०) य [अथ] यथ मार (नप्पु) ।

अथर्व (ती) [अथर्विन्] १ ह्रीं । २ श्रीं ।
नमः । ३ वरुण, अथर्व (अथर्व) ।
अथर्व अ [अथर्वसु] गीते (वि १४५) ।

अथहृ वि [अभृष्ट] म-वीठ (कुमा) ।
 लभण वि [अभन] निर्भन परीब
 *रमहृ निहृनी विसेसं विहृसेसं बीभविण्यसे

मर ।
समस्त सरीरमखण्डो रोई पीए बिज कमनौ ।।'
(पञ्चा सप्त)

अथपि वि [अपनिम्] वच-पक्षि निर्जन
(वा १४) ।
अथप्य वि [अपन्य] वच-पक्षि, निच (पक्षि
१.३.३)

प्रथम पेशी अहम (पृष्ठ ६) ।
 प्रथमपण्य } वि [अधमर्ज] करवावार्, ऐस्वा
 अधमर्ज } (अधमर्ज १०८, ११०) ।

मयम् पु [अधर्म] १ पान-कार्यं विप्रिह वदं,
 धनीति 'मयमेण वैव विप्रिह कपेमाहे विह
 र' (शाखा १ १५) । २ एक स्वाम्य धीर

लक्ष-ध्यापी प्रवीण वस्तु, जो जीव बनेरह को स्थिति करने में सहायता पहुँचाती है (अम २, पत्र ५)। ३ बि जर्म-रहित पापी (किया)।

(१)। 'केच पुं' [केचु] पाणिन (छाया ?
(२)। 'कस्याइ वि' [कस्यावि] अतिष्ठ पाणी
विपा ? (१)। 'कस्याइ वि' [कस्याविन्]
य. क. कस्याइ वि

स्थित्याय पुं [स्थित्याय] अक्षम का
वर्णन (अक्षम)। बुद्धि नि [बुद्धि]
की पाठ्य (अक्षम)।

अभिष्टु वि [अभिष्टु] १ वरुणो नृणां
अभिष्टु (नृ १२ १) । २ महाभारत
वि (सामा १ १) ।

मिह्रु वि [अधर्मोह] अधर्म-प्रिय वान-
र (पल १२ २)।
मिह्रु वि [अधर्मोह] नाभिषो का पारा
१३ ३)।

मेमय बेखो अहमिय (ख ४ १) ।
मेमो अहम (बषा मुवा ११) ।

५) [छात्रसु] प्रबो-विद्या, नीचनी विद्या
६) ।

ज्या अर्थ = यथि ।

अप्यदिहय वि [अप्यदिहय] बोधी श्रुति
बला सन्त वैभवाला (गुण ४१) ।

अप्यत्र न [अप्यत्र] १ गेट कपटार, बान
(मा २७) । २ प्रमाण रूप से प्रतिपादन (विश्व
१५४) ।

अप्यत्र वैको अप्य = धारय (भाषा-उत्तर
१; महा-हे ४ ५२२) ।

अप्यत्र वि [आसीय] स्वकीय, निजका 'भो
समस्त पण्य पुण्यो कस्यपि हस्ति सुदारण'
(हस्ति १३) ।

अप्यत्र वि [आसीय] स्वकीय, निजकी
(पञ्च १ १६; गुण २०३; हे २, १३३) ।

अप्यत्रा ध [स्वयम्] स्वयं धार निज
कुर (पद १) ।

अप्यत्रिध वि [आसीय] स्वकीय,
अप्यत्रिधिय [स्वीय] (हा १ धारण) ।

अप्यत्रो ध [स्वयम्] धार कुर, निज
निर्वाहण धारणो बह कनकचर्च (हे २
२६) ।

अप्यत्रो वैको अकम्प = धा + कम्प । अप्यत्रो
(पद ७१) ।

अप्यत्रो वैको अप्यत्रोऽप्य = धारण
कम्प (पद २८) ।

अप्यत्रिध वि [अप्रसक्ति] धारितविध
धरतविध (स ३३) ।

अप्यत्र पुन [अपान] १ स्रोतक मासात्मक
गुणक 'अपणे हि ह्य अप्यता पररिद्ध नेम
विहस्ति' (गुर ३ ४४, वा १३७) । २ वि
धातार-वर्धित धारक-रूप (गुर १३ ४३) ।

अप्यत्र वि [अपत्र] १ पत्र से वर्धित (गुरो)
(गुर ३ ४३) । २ पत्र से वर्धित (पद्मी)
(गुर ३ १४) ।

अप्यत्र वि [अप्रात] पन्थन धनवास (गुर
११ ५३; शोध ५६) । अपरि वि [अपरि]
बन्धु का बिना स्वर्ग सिद्धि ही (गुर ६) जान
उपान करनेवाला 'अप्यत्रपरि एण्यर्थ'
(विश्वे) ।

अप्यत्रिधौ [अप्राप्ति] नहीं प्राप्त (गुर ४
२११) ।

अप्यत्रिय पुन [अप्रयय] धविधान (स
११७ गुण २१२) ।

अप्यत्रिय न [अप्रति] १ स्वीय प्रेम का
धाम (अ ४ ३) । २ जोष पुत्रा (सुप
१ १२) । ३ मासिक वीक्षा (भाषा) ।
४ अपकार (निष् १) ।

अप्यत्रिय वि [अप्राप्ति] पात्र-वर्धित
धातार-वर्धित (मय १६ ३) ।

अप्यत्रियण न [अप्रययन] धविधान
कम्प (अ ३ १२) ।

अप्यत्र वि [अप्राप्य] १ प्राप्ति करने के
सयोग्य । २ नहीं बहाने लायक (गुण १३६) ।

अप्यत्रिध न [अप्राप्य] १ प्रवाहा । २
धविधान धार (उत्तर १२) ।

अप्यत्रिय वि [अप्राप्य] १ धारित ।
२ धारितविध धारित (अ ३) । पत्यय
परियय वि [प्राप्य], 'पिच' मर्यादा
नीति को बहानेला 'किस एं एव अप्यत्रिय-
कम्प दुरतपतकम्प' (सा १ २ खामा
१ १ वि ७१) ।

अप्यत्रिय वि [अप्रस्तुत] प्रत्येक के धनुष्युक,
विधानतर (गुण १ ३) ।

अप्यत्रु वि [अप्रति] निरपत्र इ प न हो
वह, प्रीतिकर (शोध ७४४) ।

अप्यत्रुत्समाप्य क [अप्रतिपत्त्य] इ प नहीं
कप्ता हुआ (मंत १२) ।

अप्यत्र वि [अप्राप्य] प्राप्त करने के अप्रयय
(विश्व २५७) ।

अप्यत्राय न [अप्राप्त] १ बनी खबर । २
वि प्रकम्प-वर्धित कल्पित-वर्धित 'अत्र पुण्य
अप्यत्राय गम्ये' (गुर ११ ११) ।

अप्यत्रु वि [अप्राप्त] १ प्रत्यय (अप) । २
पुं मासिक से निज वीकर बनेत्र (वर्म ३) ।

अप्यत्रिधिय वि [अप्राप्ति] साक नहीं
किया हुआ (उत्तर) ।

अप्यत्रिध वि [अप्राप्त] प्रमात-वर्धित साध-
वान जगोयवाला (पद २, ३, हे १ २३१
धमि १५३) । संयय पुंथी [संयय] १
प्रमात-वर्धित पुंथि । २ न. धारता द्रुण-स्वभाव
(मय ३ ३) ।

अप्यत्राय वैको अप्यत्राय (गुर १ पद २३) ।
'अहकथिता निरुपकथानां, धर्मति स्थान'
धममयमयार्थ ।

पर्वति मारुं ठह विधि मारुं, सभरि
वेति कथमयमयार्थ' (सत्तर २) ।

अप्यत्राय पुं [अप्राप्त] प्रमात का धमय
(निष् १) ।

अप्यत्रेय वि [अप्राप्त] १ निजका माप न
हो सके धनक (पञ्च ७३, २३) । २ निजका
जान न हो सके (वर्म १) । ३ प्रमाण से
निजका नियम न किया जा सके वह (पद ४
४) ।

अप्यत्र वैको अप्य (उत्तर वि ४ १) ।

अप्यत्रिध वि [अपरिपत्य] नहीं छोड़
हुआ अप्रतिष्ठ (गुण ११ १) ।

अप्यत्रिधिय वि [अपरिपत्य] धम्य-
विधान (मा ६) ।

अप्यत्रुधिय वि [अप्रस्तुत] महान, बन् (हे
१ १) ।

अप्यत्रिध वि [अप्रस्तुत] धरतय, धनु-
वर्धित (सुप १ ४) ।

अप्यत्रिधिय क [अप्रस्तुतमान] धारित
नहीं करता हुआ (भाषा) ।

अप्यत्रिध वि [अप्रस्तुत] प्रमात-वर्धित (वर्णा
४४) ।

अप्यत्रिधि कौ [अप्रस्तुत] प्रमात का धमय
(वर्म १) ।

अप्यत्रिध वि [अप्रस्तुत] धम्यत दुरित
(वर्णा २) ।

अप्यत्रिधिय वि [अप्रस्तुत] प्रमात
के सयोग्य (हे ४) ।

अप्यत्रिधिय वि [अप्रस्तुत] १ सहे के धम-
य । २ सहे करने के सयोग्य (वर्म ७) ।

अप्यत्रिधिय वि [अप्रस्तुत] धरतय (माट) ।

अप्यत्रिधिय वि [अप्रस्तुत] धमय, धनुष्य-
वर्धित (हा ३ १ मय मा ४) ।

अप्यत्रिधिय वि [अप्रस्तुत] धमय धरत
बला 'मुष्टकानिधमना श्रीरति धमयतिया
पुरिता' (सुप ४ ४) ।

अप्यत्रिधिय वि [अप्रस्तुत] निर्जन धमय
(स्वान) (उत्तर १७) ।

अप्यत्रिधिय क [अप्रस्तुत] धमय नहीं
होता हुआ नहीं धमय धरता हुआ (स
३ ३) ।

अप्यत्रिधिय वि [अप्रस्तुत] १ धमयत । २
प्रमात (गुण १२३) ।

अथय (मुना १३) । सण वृ [सेन] एक
राजा वा नाय (विह) ।

अभयंकर वि [अभयंकर] प्रत्यय क्लेशाना,
परिहृत (नृप १. ४. २) ।

अमर्यवरा श्री [अमर्यवरा] ममकां धर्मि-
नन्दन श्री दीप्य-रिपिका (विषय १२५) ।

अमया श्री [अमया] १ हृदय ही हरे हृदय
(निष् १३) । २ पत्रा बलिबलन की श्री वा
नाम (टी १३) ।

अभयारिद्ध न [अभयारिष्ट] मय-विशेष
(नय ? न) ।

अमर्षमिद्विष्य } वृ[अमर्षमिद्विष्य] पश्य,
 अमर्षमिद्विष्य } बुद्धि के विषे अयोप्य जीव
 (ख २, १) लुटि ठा १) ।

अमरविय } वि [अमरव्य] १ अमरव्य, अमरव्य
अमरव्य } (रिने) २ वु मुनि के निने अमरव्य
पीर (रिने वाम ३ २१)।

अभाज रि [अभाज] इस्थान यवौण्य स्थान
(मि ४२)।

अमाह नि [अमागिन्] अमाया हत-आप्य
बन्धनीय (बाह २६) ।

अभाष्य रि [अभाष्य] इति
(पृष्ठ १५ ६)।

अमात्रं पुं [अमात्र] १ प्रथम मात्र (वृत्त १)
२ परिष्काराला, अमात्र (वृत्त १)।
अमात्र (वृत्त १)। ४ अमात्र परिष्कार
(वृत्त १)।

अभाषिप ि [अभाषिन] सन्तोषः सुखि
(स. १. ५४. १)।

अभायुग रि [अभायुक्त] रिपार हुनो
 रीग की रिपार न पड़ गये वरि रिपारम
 अभायुगम कीरी उ म्हुन लम्हा (पु
 १ ३ दीप ५३३)।

अध्यामय } रि [अध्यायक] १ बीजने
अध्यामय } इति विवरो ज्ञान म हृदि
क। २ ग्नी बीजनेनात्। ३ वृ वेत्त ए
इतिवात्ता, एतेतिव बीजः ४ वृत्त वा
(प्र ३, ४ का वा)।

अध्यामा की [अध्यामा] १ अन्तर्गत वन
३ अन्तर्गत वन वन (वा ३३, ३)

अ न व [अभि] निष्पत्तिः यथा

शानने 'अभिजगद्व्या' (श्रीप) । २ चापि
 धीरा, कृष्णदादा 'अभितो' (स्वयं ४२) । ३
 बलाकाट, 'अभिधीय' (मय २) । ४ उद्योग,
 अतिष्ठपल 'अभिर्द्ध' (वाचा) । ५ वाच्य
 व्यासा 'अभिरुप' (मृच १ १ २) । ६
 सद्य 'अभिरुद्ध' । ७ अत्रिपुत्र 'अभिराव' (वाचा) । ८ विचर । ९ संघातना (निपु
 १) । १ निरर्थक भी हल व्यप्य का प्रयोग
 होता है, 'अभिमर्षिण' (पुर १ १ १२) ।

अभिजय पृ [अभिजय] १ पुम । २ जन्म-
अभि (अप) ।

अभिज्ञानम् वि [अभ्यास] संस्कृत-ग्रन्थ
(पृष्ठ ३४३)

अभिज्ञौ [अभिज्ञौ] नचन-नचने (अ)

अभिज्ञानम् (अभि + ज्ञ) सामने जाना, संमुख
जाना : वह अभिज्ञान (जाना + ज्ञ) ही है।

अभिर्द्वज देवो अमिर्मुज । तं ह्य अयि
संजिय (छ ३ ४ द्य १ १) ।

अभिभाष्य } पुं [अभियोग] १ चात्,
अभियोग } ह्युम (वीण टा १) । २

१. कनात्कार से कोई भी कार्य में लगत
(घन २) । ४ अतिव्यय परावर्त (घा ३) ।

‘इतिहासः कृतः इतिहासोऽसौ इत्येव ज्ञाप्यते ॥’

होइ माइयाणी ।
 दय्यमि होइ मोयी रिअय मेवा य आरमिम्
 (छोद ४६ नो) ।

१. नरं धर्मिणम् (आच २) । ७ आग्रह, ह्य
(ना०) । 'यज्जन्ति श्री [यजन्ति] विप्रा
विष्टेय (ग्रावा १ १६) । कैौ अदिभोष ।

अभिजोग नू [अभियोग] परम चटो
(निरि ३) ।

अभिप्रायी श्री [आभियोगी] भागना-रिश्ते-
म्यान-रिश्ते श्री अभियोगिक देव-जति (वीर-
रथपति देव-जति) में उन्नाह होने वा
दे (१११)

अभिभाग ५ [अभियोजन] देखी अभि
भाग (धर काग २) ।

अभिगण्य } देखो अभ्यासगण्य (गद्य रंघ)।
अभिसम्पद्य }
अभिसम्पद्य सक [अभि + सम्पद्य] इच्छा
करना, वाढ़ना। अभिसम्पद्य (भाव)। वह
अभिसम्पद्यमाण (वृत्त ८, १)।

अभिर्कला की [अभिर्कला] अभिर्कला
 शब्द (अभा) ।
 अभिर्कला } वि [अभिर्कला] अभि
 अभिर्कला } लायी शब्द (सि ४ १ गुण
 १२५) ।

अभिज्ञान वि [अभिज्ञान] १ पठ्य वि
 भाग्य 'अभिज्ञान' व 'अभिज्ञान' व 'अभिज्ञान'
 (भाषा) । २ अंशुव पठ । ३ भाष्य । ४
 अंशुव (भाषा) पृष्ठ २, ३ ।

अभिह्वय कृ [अभि + कृ] १ जला
 शुष्यय । २ सानने जला । ३ हस्तपद
 कला । ४ शुक कला । वट् अभिह्वयमाय
 (आवा) । वट् अभिह्वय (गृह ११२) ।
 अभिह्वय २ [अभि + ह्वय] १ जलपथ । २

अभिज्ञानम् । अत्रिचरम् । अत्रिचरम् ।
प्रारम्भः । अत्रिचर-यवनः । यवनः पतिः
(आवा) ।
अभिज्ञानम् } य [अभिज्ञान] आरम्भः (अ)
अभिज्ञानम् } १५० ही हा रे, य व र)

अभिक्ता श्री [अभिक्ता] वान (मिने
१ ४८)।
अभिगच्छ सक [अभि + गच्छ] प्राप्त
करता। अभिगच्छ (बन ४ २१ २३ ८,
३ ३)।

अभिगच्छ सक [अस्मि + गच्छ] सामने
जाता। अभिगच्छति (अ २ १)।
अभिगच्छन्त्या श्री [अभिगमन्] संतुल
यन्त्र (पीठ)।

अभिगच्छन्त्या क्त्वा अभिगच्छन्त्या (न
१) ।
अभिगच्छ धा [अभि + गच्छ्] वर्त्तना
गृह भोर मे यात्रा नद्या । वा अभि
गच्छन् (लाय १ । १५ मूर १ । १५) ।

अभिगम्य ऐसो अभिगच्छ। इ भविष्य
गीय (अ १०२)।
अभिगम्य नु [अभिगम्य] १ प्राप्ति लीहार
(तत्त्व)। २ धार, बतार (का १ ४)।
३ (बक बरी) बगम, बगम (गम्य १ १)।

य ज्ञान, निश्चय (पृष्ठ १४२) । ३ सम्प-
न्न का एक मेर (ठा २, १) । १ प्रवेश
(सि ८ ११) ।

अभिगमय न [अभिगमन्] ऊपर देखो
(स्वप्न १६, छाया १ १२) ।

अभिगमि वि [अभिगमन्] १ बाहर
करते वाला । २ उपदेष्टा । ३ निश्चय-कारक ।
४ प्रवेश करने वाला ३ स्वीकार करने
वाला प्राप्त करने वाला (परए १४) ।

अभिगम्य वि [अभिगम्य] १ प्राप्त । २
सहृद । ३ स्तुति । ४ प्रविष्ट (इह १) ।
३ ज्ञात निश्चित (छाया १ १) ।

अभिगम्यि न [अभिगम्यि] अभिवादन
क्रिये (कर्म ४ ३१) ।

अभिगमिन् सक [अभि + गृप्] यदि
कोन करना चाहत हूँ। नह-
निर्गन्ति (सुप्त १ २) ।

अभिगिण्ठ १ सक [अभि + गृह्] ग्रहण
अभिगिण्ठ १ करना, स्वीकारना । अभि-
गिण्ठ (कर्म) । संज्ञ- अभिगिण्ठि
अभिगिण्ठि (सि ५८२ ठा २ १) ।

अभिग्राह्य पुं [अभिग्रह] १ मृष्टिजा नियम ।
(वीर १) । २ बैन लापुओं का भाषार
विशेष (इह १) । ३ प्रत्याख्यान (भिम
विशेष) का एक मेर (भाष १) । ४ नवा-
ग्रह हठ (ठा २, १) । ३ एक प्रकार का
शारीरिक नियम (बन १) ।

अभिग्रहणी की [अभिग्रहणी] भाषा का
एक मेर, अक्षय-मुखा बचन (वीर ११) ।

अभिग्राह्यि वि [अभिग्रह्यि] अभिग्रह
करना (ठा २ १) पृष्ठ १) ।

अभिग्राह्यि वि [अभिग्रह्ये] १ भिन्न
विषय में अभिग्रह किया गया हो वह
(नय पृष्ठ १) । २ न. अक्षय-मुखा निश्चय
(परए ११) ।

अभिग्रह सक [अभि + गृह्] वेग से
जाना । कबह अभिग्रह्यमाण (पृष्ठ) ।

अभिग्राह्य पुं [अभिग्राह्य] ग्रहण, गार-नीट,
द्विजा (परए १ १; इह ४) ।

अभिग्राह्य पुं [अभिग्राह्य] १ मनुष्य के
पना अक्षय-मुखा का एक पुन निश्चय

देखा की की (संठ १) । २ इस नाम का
एक मुक्तक पुरय (पठम १ १३) । ३
मुक्त-विशेष (सम ३१) ।

अभिग्राह्य देखो अभिग्राह्य (स्वप्न २१) ।

अभिग्राह्य न [अभिग्राह्य] इस नाम का
एक मेर साधुओं का पुन (एक भाषा-की
संठति) (कर्म) ।

अभिग्राह्य की [अभिग्राह्यि] कुलीनता
जायगती (जत ११) ।

अभिग्राह्य सक [अभि + ग्राह्य] जानना ।
नह अभिग्राह्यमाण (भाषा) ।

अभिग्राह्य पुं [अभिग्राह्य] पत क ग्राह्यणी
विन (सुप्त १ १४) ।

अभिग्राह्य वि [अभिग्राह्य] १ क्लेश 'अभि-
ग्राह्य' (जत १४) । २ कुलीन (पृष्ठ) ।

अभिग्राह्य सक [अभि + गृह्] १ गन्-
त्वादि से कत करना । २ कोई कार्य में
नवाना । ३ धातिल करना । ४ स्पर्श
करना या विधाना । संज्ञ- अभिग्राह्यि,
अभिग्राह्यि, अभिग्राह्यि (पृष्ठ २
३ सुप्त १ ३ २ भाषा पृष्ठ ३ ३) ।

अभिग्राह्य वि [अभिग्राह्य] १ कत-नियम में
विद्ये वृत्त न नवाना हो वह (छाया १
१४) । २ भाषा, परिचय (संठि) ।
३ वृत्तन से विन वृत्त (वीर ११) ।

अभिग्राह्य की [अभिग्राह्य] कोय जोनुपता
वास्तवि (मम ७१ पृष्ठ १ १) ।

अभिग्राह्य वि [अभिग्राह्य] अभिग्राह्य
वास्तवि (परए २८) ।

अभिग्राह्य वि [अभिग्राह्य] अभिग्राह्य (बना
१४४) ।

अभिग्राह्य वि [अभिग्राह्य] अभिग्राह्य स्वा-
विन प्रविन (भाष २) ।

अभिग्राह्य देखो अभिग्राह्य (सुप्त १ २,
१) ।

अभिग्राह्य } देखो अभिग्राह्य
अभिग्राह्य }

अभिग्राह्य सक [अभि + ग्राह्य] १ प्रविन
करना, स्तुति करना । २ वास्तविन देना ।
३ शीति करना । ४ कुलीनता । ५ भाषा
इच्छा करना । ६ ग्राह्यमान करना, भाषार करना ।

अभिग्राह्य (स १११) । नह- अभिग्राह्य
(वीर छाया १ १ पठम २, ११) ।
कबह- अभिग्राह्यमाण (ठा १; छाया
१ १) ।

अभिग्राह्यि वि [अभिग्राह्यि] विन
अभिग्राह्य किया गया हो वह (सुप्त ११) ।
अभिग्राह्य न [अभिग्राह्य] १ अभिग्राह्य ।
२ पुं नहमान वास्तविनता के वृत्त
निश्चय (सम ११) । ३ लोकोत्तर भाषमाण ।
(सुप्त १) ।

अभिग्राह्य पुं [अभिग्राह्य] शारीरिक वेष्टा के
द्वारा वृत्त का भाष प्रकाशित करना नाव
क्रिया (अ ४ ४) ।

अभिग्राह्य वि [अभिग्राह्य] वृत्तन, नवा (वीर
१) ।

अभिग्राह्य वि [अभिग्राह्य] १ वृत्तन, प्रविन (स २७८) ।

अभिग्राह्य सक [अभिग्राह्य] १ रोकना,
अवकाश । संज्ञ- अभिग्राह्यि
(सि १११ १११) ।

अभिग्राह्यि की [अभिग्राह्यि] विन
के लिए वृत्त-विशेष (बन ४) ।

अभिग्राह्य की [अभिग्राह्य] अभिग्राह्य
वृत्तन वही हई प्रजा (बन १) ।

अभिग्राह्य सक [अभिग्राह्य] १ अभिग्राह्य
भाषा इतिहास द्वारा निश्चित कत से
ज्ञान करना । अभिग्राह्य (विशेष ८१) ।

अभिग्राह्य पुं [अभिग्राह्य] भाष-विशेष
मृष्टि-ज्ञान (कर्म ८१) ।

अभिग्राह्य न [अभिग्राह्य] वीर
वीरता वास्तवता (भाषा) ।

अभिग्राह्य वि [अभिग्राह्य] १ वीर
कत से निश्चित । २ भाषी (संठ १४) ।

अभिग्राह्य पुं [अभिग्राह्य] भाष, इह
(छाया १ १२) ।

अभिग्राह्यि वि [अभिग्राह्यि] कत
वही (पठम १२७) ।

अभिग्राह्य पुं [अभिग्राह्य] कत भाषा
(भाषम) ।

अभिग्राह्य वि [अभिग्राह्य] १ अभिग्राह्य
मित्र पविन भाषा इच्छा (वर वीर)
(पृष्ठ १, १) ।

अभिसेज } पुं [अभिसेज] १ राजा धार्या
अभिसेज } मादिपत्र पर धार्य करना (संवा
महा) । २ स्नात-महात्म्य "बिष्णुअभिसेज
(मुष्ण ५) । ३ स्नात (गीत ४३२) । ४
बहु पर अभिसेज विष्णु वाता है बहु स्नात
(मय) । ५ शुद्ध-सोपित का संयोग "इह वस्तु
धत्तत्तापे तेहि तेहि कुसेहि अभिसेपण अभि
संभूमा (धारा १ ६ ?) । ६ वि धार्या
धारि पत्र के योग्य (इह ३) । ७ अभिसेज
(निष् १३) ।

अभिसेगा की [अभिपेक्ष] १ साध्वी संस्था-
सिनी (निष्ठ १२) । २ साध्वियों की शुद्धिया
प्रवर्तित (बर्न १ निष्ठ २) ।

अभिनेत्या षो [अभिज्ञान्या] षो अभि
णिसत्वा (वच १) । २ निज स्थान (विशे
१४११) ।

अभिसेवण न [अभिपेवण] पूजा सेवा
भक्ति (परम १४ ४६) ।

अभिप्रेषि वि [अभिप्रेषिम्] देवा-कर्ता (मूल
२ १ ४४)।

अभिस्तंग वृ [अभिव्यङ्ग] भासति (नि-
२६६४) ।

अभिहितं न [अभिहितं] बलात्कार करके
प्रवरस्वी करके (भाषा, वि ३७७) ।

अभिहित वि [अभिहित] १ सामने जा
हुया (पंजा १३) । २ मैं जानुओं की मि
का एक दोष (छा १ ४) ।

अभिहण सक [अभि + हण्] मारणा, हिर
करणा (पि ४१३) । अङ्ग अभिहणमा
(बं ३) ।

अमिहज्ज न [अमिहन्न] यमिवात्, हि
(मप ८, ७) ।

अभिहय वि [अभिहय] माय हय, माय
(पडि) ।

अभिहा की [अभिधा] नाम प्राक्का (उण्)
अभिहाय न [अभिधान] ? नाम प्राक्का
(कुमा) । २ वाचक शब्द (वह ह) ।

अभिधान न [अभिधान] १ अकार
(नृपति १३५) । २ अकार अक्षि (अम)

११११) । १ कोटप्रत्यय (विद्य ७४) ।
अभिहित्य वि [अभिहित] कथित उ
(प्राप्ता) ।

अभिज्ञेयं हि [अभिषेय] वाच्यं पदार्थं
(जिमे ८४१) ।

असीह } श्री [अमिजिम्] १ नलन
अमोजि } निरोप (सम ८ १५) । २ पुं एक
राजकुमार (मग ११ ६) । ३ राजा मेणिक
का एक पुत्र जिसने नैन सीखा भी थी (धनु) ।

अभारु वि [अभीरु] १ गिबर, निर्भीक
(घाणा)। २ श्री मम्मम घाम की पक्ष मूर्च्छना
(ठा ७)।

अभिजिमा देतो अभिजिमा (परह १ ३) ।

अमोक्ष वि [अमोक्ष] भोजन के अयोग्य
(शाखा १ ११)। घर न [गृह] भिक्षा
के लिए अयोग्य घर, बोरी आदि पीछे भाति
का घर (गृह १)।

अम सक [खम्] १ खाना । २ धानान्न
खाना । ३ खाना । ४-प्रीति । ५ सक

‘अस्य रोगो वा’ (विसे ३४४४) । अस्य (विसे ३४४५) ।

अमराग पुं [अमराग] १ कुमारां वरुण एवम्
(उभ) । २ मिथ्याज्ञ कथाय धारि ह्यै पवारं
‘अमरागं परिमृष्टानि मर्त्यं लक्ष्मणजानि
(धाव ४) । ३ कुमरा कुमारां (ईश) ।

अमर्याय वृ [अमाभाव] १ इष्य कय व
हृष्य १ २ मायिन्नायण अमर बोयणा (पं
१) ।

अमङ्ग पृ [अमास्य] मन्त्री प्रणाम (धीन सु
४.१.४)।

अमर्य पुं [अमर्य] के देता (कुमार) :
अमर्य वि [अमर्य] १ मर्य रहित अमर्य
(ता ३ २) ३ परमणा (प्र ३ १)।

अमण्य न [अमन] १ ज्ञान निरुण्य (छ ३, ४) । २ अण्य अमसाग (विसे ३४२१) ।

व्यमण्य } वि [अमनस्क] १ व्यतीतिकर
 अमण्यकल } कसीष्ट (दा ३ ३) । १ मनर्हित
 (धाव ४ मूय २ ४ २) ।

अमणाम चि [अमनभाप] अणिट्, अमनोह
(सम १४६; विभा १ १) ।

अमप्याम पि [अमनोम] ठगर देखो (मय
पिया १ १) ।

असंख्यं वि [अथनाम] पीमा-भरुह कुत्तो
त्याचरु (सुष २ १) ।

अमणुस्स षुं [अमनुष्य] १ मनुष्य मित्र वेव
प्रादि (एदि) । २ मनुष्यक (मनु १) ।

अमत्त न [अमत्र] भाष्यन्, पात्र (सूय १ १)।

अमरं वि [अमरं] १ ममठा-पहलु नि स्रष्ट
(पहलु = १ शुभा १) । २ मुं ब्यागामी
काम में होने वाले एक निदेश का म्रम
(म्रम १११) । ३ मुग्म रूप से होने वाले
मनुष्यों की एक जाति (बं ४) । नि के
२१ बं मुहूर्त का नाम (बं १) । ल वि
[स्व] नि स्रष्ट, ममठा-पहलु (पंच ४) ।

अमय वि [अमय] विचार-रहित
 'अमयो य होह बीनो कायणविच्छा
 जहेव ध्यातात् ।

समयं च हाप्रतिष्ठं मिम्यवत्तुमाहं
(निसे) ।

जमय न [अमृत] १ ममय मुवा (प्राप्त
१६) । २ क्षीर समुद्र का पानी (राव) । ३
४ मोक्ष मणि (सम्प १६७ प्राप्ता) । ५

जि नहीं मघ हुआ जीवित समझो हूँ मय
विमुद्यामि' (पदम ११८२)। कर पुं [कर]
बान बानमा (बु ४१६ टी)। ब्रिजम पं

[किरण] बन्ध (मुपा १७७) । कुंड पुं
[कुण्ड] बन्ध बाँध (भा २७) । पोस पु
[पोय] एक राधा का नाम (मंसा) : पोय

न [फळ] अमृतोपम फल (खान्या १ २) ।
महाय— मय वि [मय] अमृत-पूर्ण (कुमा)

बन्धु (मे १८) । बन्धुनि वस्त्रादी लो
[वस्त्रादि, यी] प्रयुक्तता बन्धु-निबन्धेय

४) बास पुं [बर्ष] गुण-वृद्धि (माया) ।
 ५) बास पुं [बर्ष] गुण-वृद्धि (माया) ।

अथ यं पुं [दि] १ अत्र अत्रमा (दि १ १२) ।
२ अत्रमा, अत्रमा (पद्) ।

अमयपिङ्गमः पुं [हे असुतपति] जन्ममा,
 नहि (कुत्र २१) ।
 अमयपिङ्गमः पुं [हे असुतनिर्गम] १

अमर वि [आमर] विष्य देश-सम्बन्धी 'धमरा
पाठभेदा' (पृष्ठ ११, ४१)।

अमरं पुं [अमर] १ रेव रेवका (पाप) । २
मुक्त भासा (पाप) । ३ नमस्तु भवमयेव
का एक पुत्र (पुत्र) । ४ अमरवीर्य नामक
शरीर जिनके के पुत्ररज्य का नाम (वी
२१) । ५ मरुतुपितृ 'पापिनि धर्मिणे' के
बीजा धर्मपद 'अमर' (पति) । कौटुंबी
[कौटुंब] एक माता का नाम (अ १५४
टी) । कौट पुं [कौट] एक राजकुमार
(ईश) । गिरि पुं [गिरि] मेघ पर्वत (पञ्च
१३ ३७) । गौह न [गौह] स्वर्ग (उ
७२४ टी) । गन्धन न [गन्धन] १ हरि
चन्दन वृक्ष । २ एक प्रकार का सुगन्धित काष्ठ
(पाप) । ठक पुं [ठक] कम्बुज (सुपा
५४) । ठक पुं [ठक] एक भेड़ियुक्त का
नाम (वज्र) । गौह पुं [गौह] एक (पञ्च
१ १ ७३) । गुर न [गुर] स्वर्ग (पञ्च
२ १४) । गुरी की [गुरी] स्वर्गपुरी का
राजनी (उ ५ १ ३) । पम पुं [पम] १
बाल-हीन का एक राजा (पञ्च १ १ ६६) ।
वह पुं [वह] राजा (पञ्च १ १ ७) ।
गुर १ १) । वह की [वह] बेनी
(महा) । वामि पुं [वामि] राज
(कि १५११ टी) । सज पुं [सज] १
एक राजा का नाम (ईश) । २ एक राज
कुमार का नाम (उत्तरा १) । जय नि
[जय] स्वर्ग 'अविजयनराज' (उ
७२४ टी सुपा १६) । जय की [जय] १
रेव-नवरी स्वर्ग-पुरी (पाप) । २ मर्त्य
की एक एक मर्त्य राजा कीपुत्री की
राजनी (उ ५ १ ६) ।

अमरगन्धा की [अमरगन्धा] बेनी (भा
२७) ।

अमरिन् पुं [अमरेन्द्र] बेनी का राजा इन्द्र
(ईश) ।

अमरिन् पुं [अमरि] १ मरुतिपुत्र (इ २
१ ३) । २ कदाचि (उ ५ १४) । ३ जोष
पुत्रा (पञ्च १ १ पाप) ।

अमरिन् पुं [अमरि] १—३ अमर
केस । ४ नि मरुतिपुत्र; बेनी (पञ्च १ १४) ।
५ मरुतिपुत्र अमरीश (उ ५ १३) ।

अमरिन् पुं [अमरि] जयनी जयनी
(उ ५ १३) ।

अमरिन् पुं [अमरि] १ मरुती मरु-
तिपुत्र (पाप १ १३) ।

अमरी की [अमरी] बेनी (कुमा) ।

अमरीश पुं [अमरीश] राज (विश्व ११) ।

अमरु नि [अमरु] १ निर्जन स्वर्ग (उ
गुपा १४) । २ पुं मरुतु भवमयेव के एक
पुत्र का नाम (पञ्च) ।

अमरु की [अमरु] राज को एक अमर
मरुती का नाम इन्द्राणी-विशेष (उ ५) ।

अमरुस्ता केो अमरुस्ता (पञ्च ११
२) ।

अमरु नि [अमरु] निष्कण्ट, उरज
अमरु (उ ५ १ ३ ५७) ।

अमरुपाय केो अमरुपाय (जय) ।

अमरुपि नि [अमरु] १ मरुतिपुत्र नाम
(कम्प) । २ मरुतु 'अमरुपुत्रिणी' (उ ५ १ टी) ।

अमरु नि [अमरु] न्या उपाया हृषा,
'मुद्राहृषा' मरुते अमरु (उ ५ १३) ।

अमरु नि [अमरु] निष्कण्ट, उरज (कम्प) ।

अमरु नि [अमरु] मरु (उ ५ १ ३ ५७) ।

अमरु नि [अमरु] निष्कण्ट, उरज (कम्प) ।

अमरु नि [अमरु] निष्कण्ट, उरज (कम्प) ।

अमरु नि [अमरु] निष्कण्ट, उरज (कम्प) ।

अमरु नि [अमरु] निष्कण्ट, उरज (कम्प) ।

अमरु नि [अमरु] निष्कण्ट, उरज (कम्प) ।

अमरु नि [अमरु] निष्कण्ट, उरज (कम्प) ।

अमरु नि [अमरु] निष्कण्ट, उरज (कम्प) ।

अमरु नि [अमरु] निष्कण्ट, उरज (कम्प) ।

अमरु नि [अमरु] निष्कण्ट, उरज (कम्प) ।

अमरु नि [अमरु] निष्कण्ट, उरज (कम्प) ।

अमरु नि [अमरु] निष्कण्ट, उरज (कम्प) ।

अमरु नि [अमरु] निष्कण्ट, उरज (कम्प) ।

अमरु नि [अमरु] निष्कण्ट, उरज (कम्प) ।

अमरु नि [अमरु] निष्कण्ट, उरज (कम्प) ।

अमरु नि [अमरु] निष्कण्ट, उरज (कम्प) ।

अमरु नि [अमरु] निष्कण्ट, उरज (कम्प) ।

अमरु नि [अमरु] निष्कण्ट, उरज (कम्प) ।

अमरु नि [अमरु] निष्कण्ट, उरज (कम्प) ।

अमरु नि [अमरु] निष्कण्ट, उरज (कम्प) ।

अमरु नि [अमरु] निष्कण्ट, उरज (कम्प) ।

लीकर देव का नाम (उ ५ १३) । मरु
नि [मरु] मरुतु-पुत्र (पाप) । 'मरु पुं
[मरु] मरुतुपुत्र (उ ५ १) । मरु पुं
[मरु] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अमरि नि [अमरि] मरुतुपुत्र (उ ५ १) ।

अय न [अयम्] सोइ (घोष ६२)।
आगर पुं [आग्र] १ सोइ की जान
(निबु ५)। २ सोइ का आरणा (आ ८)।
अड करेन पुं [आम्] सोइ-नुम्बक
(धावन)। 'कडिस्स न [कुडिस्स]
नट्टइ (घोष)। कुंडी की [कुण्डी] सोइ
का अतमनियेय (विपा १९)। कट्टुस पुं
[काट्टक] सोइ का दूरस सोइ का सोला
घोट्ट अयरोठुय च्च कट्टु (उवा)। गाल्ल
पुं [गाल्लक] सोइ का सोला (वा १९)।
इड्डी की [इडी] सोइ की नक्की का कर
सुन निम्बन बाल करी धारि सिताया बडा
है (हे २ ७)। पाय न [पाय] सोइ का
धानन। सल्लगा की [सल्लगा] सोइ की
छाडी (वा २११ डी)।
अड नक [अड्] १ कमल बरग्य जाला।
२ प्रात करना। ३ बागना। बहु अडमाण
(मन ६१)।
अरइ लक [लु] १ लीकन। २ सोला
बाल करना। ३ केना करना। अरइड (हे
४ १८७)।
अरंकिर रि [कपिन्] कपण्णसि लीकने-
बाला (हुमा)।
अरइ पुं [अराण्ड] १ अनुचित लम
(मना)। २ अरमाण, हट्टइ (पउम १ १६७।
अ ४४ वटा)। ३ रिनि अरवायिळ
घट्टण (वाप)।
अरंन वर [आयन्] बाजा हुवा अवेध
कना हुमा (वावन)।
अर/नर रि [अपन्निन] अनाउणोय (अप
२ ४२)।
अरपिर रि [अरप्पिण्ड] नदी बोलनेवाला
लोकी (वि २६९ २६९)।
अरंणुस पुं [अरंणुस] बीछाक का एक
मिच (मन ३)।
अरंन पुं [आरग] रीता नीच। सुड पुं
[सुड] १ रन नाच का एक डी। २ डिन-
रिरेन का निगावी (रन)।
अरंमधि रि [इरंमधि] कगुल नाच की
कनकनव बरोताला (वाप)।
अरअर पुं [अरअरक] न्न बहाण (पुन
२)।

अयल्ल पुं [इ] बालक अगुर (हे १ ९)।
अयल्ल पुं [अयल्ल] अगुर, मोट्ट रपि
(पउह १ १ पउम १२ २४)।
अयल्ल पुं [इ] अयल्ल कृप पुमा (हे १ १८)।
अयण न [अतन] सतव होना निण्णर
होना (विने १६४८)।
अयण न [अयन] १ मयन। २ प्राति साम
(विने १)। ३ बाल निण्णम (विने ८४)।
४ बृह बल्लिद, 'अरियायल्ल' (अ ४१३)। ५
वि प्रातक प्रात बरोताला (विने ६९)।
६ पुन-करी का घावा घाय, विनेयें मूर्य
कडिण्ण मे उत्तर में या उत्तर से कडिण्ण में
बाया है (अ २ ४)।
'एके अमले विष्ठा बीण रघलीयो
होति वीरयो।
विष्ठाअणो अमलो हन्ध पुने अमल बड्डुलि'
(वा ४४९)।
अयण न [अवन] १ अमल। २ पुणक
भोजन (अ १३)। अर ८ ७)।
अयणु रि [अय] अमल, पुन (गुर १
१६६)।
अयणु रि [अवन] लुल मोट्ट गहल
(अण)।
अयटिअर रि [इ] पुट, कापिड (हे १
४७)।
अयर रि [अयर] बुडारस्कापिड 'अयपर
अय' (पडि ७४)।
अयर पुन [अयर] १ लापर, लुगु (हे
२)। २ मय का साम-विरोध लापरोम
(मन २१ १२३ पण ४३)। ३ वि लने के
बहाय (बृह १)। ४ अयमर्षे अयक (विबु
१)। ५ गाल बीघार (बृह १)।
अयाराम रि [अयाराम] १ परा धीर
मन के गहिन (नर ५)। २ न बुनि मोता
(पउम ८ १४७)।
अयल्ल केनी अयल्ल = अयन (वाप नड-
उप ६ १ २ वी ३ पउम २ ४ नय
नय मन १६६)।
अयल्ल केनी अयल्ल (पउम १२ १६६)।
अयल्ल केनी अयल्ल (पउम अणु २३
१२३)। वा १७७)।

अयसि रि [अयरासिम्] अमनी मयो-
रहित कीनि रुम्प (पउम)।
अयसि पुं [अयसि] बाण-विरोध अमनी
अयसी १ लीक (मन ७७ लामा १ १)।
अया की [अया] १ बकरी। २ माया,
मयिवा। ३ अडि मुरग (हे १ १२)।
पउ। किवापिअ पुं [कृपापीय] बाण-
विरोध केने बकरी के फे पर अनापी कुटी
पकूटी है उठ मापिअ अनाप लिटी नय
का होना (वाप)। पाळ पुं [पाळ]
बागीर, बकरी बरोताला (अ २९)। 'अय
पु [अय] बकरी का बाजा (अ १६१)।
अयागर केनी अय आगर (अ ८)।
अयाण न [अयान] बाल का अयन (अ
१६)।
अयाण रि [अय अयान] अयन अमनी
पुन (घोष ७४ पउम २२ ८३)। वा १७५
हे ७ ७१)।
अयाण रि [अयाणक] अर केनी (वाप
मनि)।
अयार्जव केनी अयार्जव (घोष १२)।
अयाभामय केनी अयाभामय (मन १६)।
अयापिप केनी अयापिप (अ ७२४ टी)।
अयापुय केनी अयापुय (गुर १ १६४ पुन
२४३)।
अयर पुं [अयर] 'अ' अयर (विने ४७४)।
अयाळ पुं [अयाळ] अयणव समन अयणव
बाल (पउम २२ २)।
अयासि पुं [इ] बुनि, मयापड रिउव (हे
१ १९)।
अयाधिय रि [अयाधिय] अयणव
अयणवमन 'अयड नड पयल हन्धवे
अयणव रिउव (रमा)।
अय केनी अय = अयि (हे २ २१७)।
अयुअरवरी की [इ] अयि-अयि नरीडा,
अयि (अ २)।
अयोय केनी अयो-अय (अ १६)।
अय्यापन (टी) पुं [आयार्न] अय
दिनुयल (हुमा)।
अयण (वा) केनी अयण (हे ४ १६२)।
अर पुं [अर] १ पुटी नदि के बीच
। बड। २ अयारन निनेन धीर काना

अरुणी रमा 'भूमि' पर 'महर्षि' पावक
बगली परो उम्ह' (भाष २। सम ५३ उत
२८) । ३ सम्य का एक परिमाण कालक
का बाह्यो हिस्सा । (सी २३) ।

अरु पुं [अरु] १ किरण । या ३५५ से १
१०) । २ हल हाप (से १ २८) । ३
मुक्त नुयी (से १ २८) ।

अरुही की [अरुहि] अरु मसा (भाषा २
११ १) ।

अरुही की [अरुहि] १ बेपनी । (मग भाषा
उत्तर) । २ अरु न [अरुन] अरुहि का हनुमुत
अरुहिरेय (अ ३) । परिसह, परिसह पुं
[परिसह परासह] अरुहि को अरुन
करता (पं ८) । माहगिज्ञ न [माह
नीय] अरुहि का उत्पन्नक अरुहिरेय (बन्ध
१) । ३ अरुही की [अरुहि] मुक्त-मुक्त (हा १) ।

अरुन रेको अरुन (से १ २३) ।

अरुन पुं न [अरुन] अरु अरु न (हा
५ ४) ।

अरुन रेको अरुन (से १ ४४) ।

अरुनरी की [अरुनरी] अरुन-रिरेय
(भाष) ।

अरुन रेको अरु (पहा २ ४ मग १ ३) ।

अरुनस्य वि [अरुनस्य] अरुन ररुत
अरुनस्यमरुनस्य (सुम १ ५ १) ।

अरुन पुं [अरुन] अरुन-रिरेय (उ १ ११
टी) ।

अरुन न [अरुन] अरुन (उ १) ।

अरुन पुं [अरुन] १ अरुन-रिरेय । २ अरुन
अरुन की अरुन विरुन विरुन पर अरुन
अरुन ररु होटी है (भाषा १ १८) ।

अरुन पुं [अरुन] १ अरुन मरु । २ अरुन
अरुन । (पहा १) ।

अरुनिय की [अरुनिय] अरुनस्य-रिरेय
(भाषा) ।

अरुनिय पुं [अरुनिय] अरुनस्य-रिरेय के
अरुनस्य से अरुनस्य अरुनस्य (सी ३) ।

अरुनिय वि [अरुनिय] अरुनस्य से अरुनस्य
(सुम १ १ १३) ।

अरुनिय न [अरुनिय] अरुन, अरुनस्य (से १
११) । अरुनिय न [अरुनिय] अरुनस्य

विरेय (सम ३३) । साण पुं [अरुन]
अरुनस्य (सुम १) ।

अरुनस्य वि [अरुनस्य] अरुनस्य अरुन-भाषी
(पमि ५२) ।

अरुनस्य वि [अरुनस्य] अरुनस्य, अरुनस्य (भाषा) ।

अरुनस्य रेको अरुनस्य (मग ५५) ।

अरुनस्य पुं [अरुनस्य] एक अरुनस्य अरुनस्य
(पम २०५) ।

अरुनस्य की [अरुनस्य] अरुनस्य
अरुनस्य से अरुनस्य (उत्तर) ।

अरुनस्य रेको अरुनस्य (उत्तर १ ८) ।

अरुनस्य वि [अरुनस्य] १ अरुनस्य-रिरेय (पम
१ ४५) । २ एक अरुनस्य का नाम (उ
२ ५) । ३ वि अरुनस्य-रिरेय निर्मल (कर) ।
४ अरुनस्य रेको अरुनस्य का एक अरुनस्य (उ
५) । ५ अरुनस्य का अरुनस्य अरुनस्य अरुनस्य
परी परी अरुनस्य (उत्तर १०) ।

अरुनस्य वि [अरुनस्य] अरुनस्य (भाषा) ।

अरुन पुं न [अरुनस्य] एक अरुनस्य
(मिग १४१) ।

अरुनस्य की [अरुनस्य] अरुनस्य अरुनस्य की
अरुनस्य (उत्तर ५) ।

अरुनस्य पुं [अरुनस्य] अरुनस्य अरुनस्य, अरुनस्य
अरुनस्य (उत्तर ५ ४) ।

अरुनस्य न [अरुनस्य] १ अरुनस्य । अरुनस्य
की [अरुनस्य] अरुनस्य-रिरेय (मग ३ टी) ।

अरुनस्य पुं [अरुनस्य] अरुनस्य, अरुनस्य (भाषा) ।

अरुनस्य न [अरुनस्य] १ अरुनस्य-रिरेय । २
अरुनस्य, अरुनस्य (से १ १३) ।

अरुनस्य की [अरुनस्य] अरुनस्य-रिरेय (से १
२३) ।

अरुनस्य रेको अरुनस्य (पम ५२ ८) ।

अरुनस्य न [अरुनस्य] अरुनस्य (पहा
२ ४) ।

अरुनस्य वि [अरुनस्य] अरुनस्य, अरुनस्य (से १ ४२) ।

अरुनस्य पुं [अरुनस्य] अरुनस्य अरुनस्य (भाषा
१ ३) ।

अरुनस्य पुं [अरुनस्य] अरुनस्य-रिरेय अरुनस्य
(भा २२) ।

अरुनस्य न [अरुनस्य] अरुनस्य-रिरेय अरुनस्य
(सीमा २८) ।

अरुनस्य वि [अरुनस्य] १ अरुनस्य के अरुनस्य, अरुनस्य
(पहा २, १११) । २ अरुनस्य अरुनस्य
(सम ५५) । 'अरुनस्य पुं [अरुनस्य]
एक अरुनस्य का नाम (पम २) ।

अरुनस्य रेको अरुनस्य = अरुनस्य । अरुनस्य (पहा
२८) ।

अरुनस्य वि [अरुनस्य] १ अरुनस्य । २ अरुनस्य
अरुनस्य से अरुनस्य हो । ३ अरुनस्य अरुनस्य
(उ ४ १ ३) ।

अरुनस्य वि [अरुनस्य] अरुनस्य-रिरेय (मग) ।

अरुनस्य न [अरुनस्य] १ अरुनस्य के अरुनस्य
अरुनस्य (पहा २, १११ भा ८ ५) । २
अरुनस्य अरुनस्य, अरुनस्य (भाषा ५
५ ५) ।

अरुनस्य वि [अरुनस्य] १ अरुनस्य अरुनस्य
अरुनस्य (भाषा) । २ अरुनस्य अरुनस्य (मग २ ३) ।

अरुनस्य वि [अरुनस्य] १ अरुनस्य निर्मल ।
२ अरुनस्य (मग) ।

अरुनस्य न [अरुनस्य] १ अरुनस्य अरुनस्य
को अरुनस्य अरुनस्य (भाषा २ ५) ।

अरुनस्य पुं [अरुनस्य] अरुनस्य, अरुनस्य, अरुनस्य का
अरुनस्य अरुनस्य के अरुनस्य अरुनस्य (भा
५३ भा ३३) । 'अरुनस्य अरुनस्य अरुनस्य अरुनस्य
अरुनस्य अरुनस्य (सीमा १) ।

अरुनस्य वि [अरुनस्य] अरुनस्य अरुनस्य
अरुनस्य (उत्तर ५५) ।

अरुनस्य की [अरुनस्य] १ अरुनस्य । २ अरुनस्य
(पहा २८) ।

अरुनस्य पुं [अरुनस्य] एक अरुनस्य का
नाम (भाषा १ ८) ।

अरुनस्य पुं [अरुनस्य] एक अरुनस्य अरुनस्य
(उत्तर २, ३) ।

अरुनस्य पुं [अरुनस्य] अरुनस्य, अरुनस्य (भाषा) ।

अरुनस्य की [अरुनस्य] अरुनस्य अरुनस्य (भाषा) ।

अरुनस्य वि [अरुनस्य] अरुनस्य अरुनस्य
(पम ११० ५१) ।

अरुनस्य रेको अरुनस्य (उत्तर २, ३२ टी) ।

अरुनस्य पुं [अरुनस्य] अरुनस्य अरुनस्य (पम ७३, १३) ।
अरुनस्य पुं [अरुनस्य] अरुनस्य अरुनस्य

शत्रु-काम ज्येष्ठ ज्योम मोक्ष, मय माधव्य
(पद्य ११४)। वमन वि ["वमन"] र रिपु
मित्रा राक। २ पुं इरावतु वरा के एक राका का
नाम (पद्य ५ ७)। ३ एक वैत मुनि की उपा
नाम अविष्णव के पुत्रकाम के एक से (पद्य
२ ७)। वमयी की ["वमयी"] मित्रा विरेण
(पद्य ७ १४३)। विद्वंसी की ["विध्वं
सिनी"] रिप का नात बरनवासी एक मित्रा
(पद्य ७ १४)। रुतास पुं ["सत्रास"]
राकसराह से उत्पन्न शत्रु का एक राका
(पद्य ३ २१३)। इव वि ["इव"]
रिप-विनाशक। २ पुं विनाश (नाम)।

अरिअस्मि पुं० [दे] व्यास, टीर (३ १ २४) ।
अरिअय पुं० [अरिअय] १ भववान् कृपामेव
का एक पुत्र । २ म, मर-निरोध (पञ्चम ३
१ ८, इव मर ३ १ ३) ।

अग्निष्टु ॥ अग्निष्टु १ इन्द्र-विश्वेदेव (पराशर १) ।
 २ यम-पुत्रं शीर्षिकर का एक कण्ठहार (सम
 १३२) । ३ पुन एक शिवमाल (शिवेन्द्र
 १३१) । ४ म. शीर्षिक-विश्वेदेव को मातृशब्द शीर्ष
 की सहा है (अ ७) । ५ एन की एक कण्ठि
 (कत १४ ४ गुण १) । ६ यम-विश्वेदेव
 पितृ (पराशर १७ कत १४ ४) । ७ अग्निष्टु-
 मूलक कण्ठार (मातृ) । जिसि 'नेमि पु
 ॥ नेमि ॥' कर्मल नाम के शीर्षिकों विनोद
 (सम १७ संख ३, ४, ५ पठि) ।

अरिहता की [अरिहता] कथा नामक विषय
की खजाली (छ २ ४) ।

अरिस्त न [अरिस्त] पत्न्यात्, कन्हत्, नाम की पीछे का टाढ़ बिछसे नाम बाहिनै-बाँव कुमाली वाली है (वर्ग ११२) ।

अरिखो म [अरिखो] पाण्डुराज सम्भय
(६९२१७)।

अरिस्तो वरस (छाया १ १५) ।

अरिसिद्ध } वि [व्यर्थत्वत्] यमासीर
अरिसिद्ध } रोपमाणा (पाठ्य विद्या १७) ।

अरिहं नि [अरिहं] १ योग्य कायक (गुणा
२१६ प्रक) । २ पुं विनयेक (धीम) ।

अग्निं लब्ध [अग्निं] १ भोग्य होगा। २ पुत्र
के भोग्य होगा। ३ पुत्र करना। अग्निं
(म्ह)। अग्निं (म्ह)।

भारिह देसो अरह—महल (दि २ १११)
पह)। वस विष्णु [वस] वैन
मुनि-विदेव का नाम (कण्ठ)।

अरिहणा ऐतो अरहणा (प्राक् ए८) ।

अभिहित वेदो वारहतं मध्यम (हि २ १११)
 पयः कृत्वा १ १)। वेदय न [°परय]
 १ विम-मन्दि (लगा मन्दि)। सासण न
 [शासन] १ पैम आत्म-मन्दि। २ विम-
 मन्दि। (पण २ ३)।

अरु रेणो तुरु (वि प १८, ५, ८५) ।

अरु नि [अरुम्] रोक्-रहित (उद्गु ४६) ।
अरु रोक्को अरुम् (उद्गु ४६) ।

अस्या न [३ अरु] इय चावा 'अस्य'
इय कुम्भ' (३३ ३)।

अस्तुतु वि [अस्तुतु] १ मर्म-वेद्यः । २
मर्म-स्पर्शः । 'इयं त्वस्तुत्वायावाशौहि विवि
यस्तावि' (उम्भ १५) ।

अरुण पुं (अरुण) १ सुवर्ण मूलज (वि ३ १)। २ सुवर्ण का चारबी। ३ संध्याकाळ संध्या की लाली (वि ८ ७)। ४ द्वीप-विशेष। ५ समुद्र-निक्षेप 'अरुण होह बरखो बरखी दीवो लखी जखी' (दीप)। ६ एक प्रसिद्धता का नाम (आ २ १: पद ७)। ७ न्यायदी-पक्ष का अधिष्ठाता के (आ २ ६ पद १३)। ८ नि-निक्षेप (एभि)। ९ दूर देश लाली। (पद १)

१ न. विमान-विशेष (सम १४)। ११

[*अग्र] देविमान-विरोध (उपा)।
[*अग्र] न [*अग्र] देविमान-विरोध

(अथ)। गंगा की [गङ्गा] महाकवि
केर की एक गरी (वी २५)। गङ्गा

न [गण] केवलमाल-विशेष (ज्वा) । समग्र
न [ध्वज] एक केवलमाल का नाम

(क्या)। प्यम प्यम न [प्रम] इत
नाम का एक वैयक्तिक (क्या)। मह
प [प्रम] एक वैयक्तिक नाम।

मूष न [मूल] एक वैष्णवमत (प्रा)।
महाभारत [महाभारत] वैष्णवमत (प्रा)।

१८)। महाभारत पुं [महाभार] १ वीप-
मिच्छे। २ अनुप-मिच्छे (इक)। पर्विमाह

न [विर्तसक] एक विषयिमान (कता) ।

वरपुं [वर] १ शीप-विशेष । २ छत्र-
 विशेष (गुह्य १६) । वरोमास
 [वराणमास] १ शीप-विशेष । २ छत्र-
 विशेष (गुह्य १६) । सिद्ध न [शिख]
 एक वैवर्णिमास (ज्जा) । म न [म]
 वैवर्णिमास-विशेष (उवा) ।

अरुण न [रे] कम्म पद्म (दि १ ८) ।
अरुण पुन [अरुण] १ एक वन-विमान ।

(विषय १११)। पृष्ठ ५ [प्रम] १
मुकुन्देश्वर नामक नागरिक का एक भाषा

पर्वतः । २ ऊरु पर्वत वा लिखासी देव ।
(छ ४ २ पत्र २२६) । मि पुं [मि]

अरुणिमि पुंल्लि [अरुणिमम्] नाथी रक्ता

अरुजिय सि [अरुजित] रक्त भाव (पलङ्क)।

इस नाम का एक केमिस्ट (सम १४)।

अथर्ववेदः पु. [अथर्ववेदः] समुद्र-विलेप (मुञ्च
१६)।
अथर्ववेदः पु. [अथर्ववेदः] — वि०

अरुमोषवाच ५ [अरुमोषवाच] अरुमोषवाच

अस्य वि [अस्य] इय वाच (सप्त ?)

मरुत नि [मरुत] निरोपी रोपणिव

मरुह केओ मरुह = मरुह (६२१११ पदः
(अभि):

अस्य च [अस्य] । अस्मिन् । २ वृत्त

पञ्चमः (पञ्चमः, १२३)।

१४)। गङ्गा-अस्त्रमात्र (पक्ष)।
गङ्गा-वि [गङ्गा] पोष्य (गङ्गा-पक्ष)।

रमईय केपी अरईय = रमईय (दि २ ११११
पह)।

रुक्षत वि [अपेक्ष] १ नवीं सता
रुषा नवा नवी सता रुषा (सह १ १)

इत्येव वि [अक्षय] अक्षय्यं अक्षय्यं
(अक्षय ७३, ३३)।

अरुचि वि [अरुचिन्] ऊपर देखो (अ १ १ भाषा पश्य १)।

अरुचि [अरु] १-२ संभाषण वीर रचि-
कमह का मुक्क धम्म (ह २ २ १ पद)।

अरुचि [अरु] इन धर्मों का मुक्क धम्म—
१ धम्मो २ विस्सय धारणो ३ परिहास
ठ्ठा (संति १८ ५७)।

अरोय्य धम [अरु + अरु] उन्मास पाणा,
विकसित होता। अरोय्य (ह ४ २ २३
बुधा)।

अरोय्य धु [अरायक] रोम-विरोध धम की
प्रतीति (आ २२)।

अरोय वि [अराचिन्] अरुचि वाला रचि
रहित 'अरोय धमो कश्चि विज्ञानो' (सौ ७)।

अरोमा वि [अरोमा] रोम-रहित (आ १८
१)। या की [रा] अरोम्य रोमयुता
(स ७२८ टी)।

अरोगि वि [अरोगिन्] अरोम रोम-रहित।
या की [रा] अरोम्य, हंरुन्ती (महा)।

अरोमा } उन्मा अरोम्य = अरोम्य (भाषा २,
अरोय } १२ २)।

अरोस वि [अरोय] १ हुला रहित। २-३
धु एक म्बेच्छ धरा धीर उन्नत रहनवाली
म्बेच्छ बाति (पह १ १)।

अरुचि न [अरु] १ विच्छेदक पुच्छ का धम
धम
'धममव विच्छेदमायं उद्दिष्ट
महीणं उद्दिष्ट मं भवस'।

विट्ठि विमं विमुत्तयं
उन्मा सन्मस मय-वर्णयं
(भाषा १९)।

२ उन्माकेरी का एक विहास (आमा २)।
३ वि उन्मा (भाषा)। पद न [पद]
विच्छेद की दुई किंवा आकारवाला एक उन्मा
(विपा १ ९)।

अरु देखो लक्ष (भा ७२, से १ ७८)।

अरुचि [अरुच्य] १ पर्याप्त पूर्ण 'धनमा
लंघि बालीय' (पुर १३ २१)। २ प्रतिपेय
निराण बल (उप २ ७)।

अरुचि न [अरुच्य] धम-हृद, मुधा (मुयनि
२ २)।

अरुचि सक [अरुचि + अ] भूषित करना
विशेषित करना। अरुचि-रुचि (वि ३ १)।

अरुचि अरुचि-रुचि (मास १४३)। लक्ष अरुचि
करिअ (वि ३८१)। प्रयो, कर्म अरुचि-रुचि-
नीय (उ १४४)।

अरुचि-रुचि न [अरुचि-रुचि] १ धामपुण्य धम
कार (रम्य ७४ यधि)। २ वि रोमा
नारव 'अरुचि-रुचि-रुचि अरुचि-रुचि-रुचि'
(वि १४४)।

अरुचि-रुचि वि [अरुचि-रुचि] मुक्के-वि-रुचि-रुचि
'कि नवरममरुचि-रुचि-रुचि-रुचि-रुचि-रुचि'
(मुग ५८४ मुग ४ ११८)।

अरुचि-रुचि धु [अरुचि-रुचि] १ उन्मा-विरोध
साविस्सय (वि ३३३ विच्छा २)। २
धुन एक देवविमान (देव १३३)।

अरुचि-रुचि धु [अरुचि-रुचि] १ मुण्य पक्षी
(वीर उव)। २ मुण्य, सोमा (अ ४ ४)।
सहा की [समा] मुण्य-गृह, गृह-रुचि-रुचि
(ह ६)।

अरुचि-रुचि धु [अरुचि-रुचि] नातिव पाई
हवाम (आमा १ ११)। कम न
[कर्म] हवाम वीर कर्म (आमा १
११)। महा की [समा] हवाम बनाने
का स्थान (आमा १ ११)।

अरुचि-रुचि वि [अरुचि-रुचि] १ विमुक्ति मुक्के-
रुचि (कप्य महा)। २ न संनीत का एक
पुच्छ (वीर १)।

अरुचि-रुचि देखो अरुचि-रुचि। अरुचि-रुचि (रम्य
३२)।

अरुचि वि [अरुचि-रुचि] १ उन्मा-रुचि-रुचि
के अरोय्य (पुर १ ४१)। २ उन्मा-रुचि-रुचि
कर के अरोय्य (अ ११७ टी)।

अरुचि-रुचि वि [अरुचि-रुचि] ऊपर देखो
अरुचि-रुचि (महा) मुग १ १ वि १९९
गाट)।

अरुचि धु [वि] उन्मा-रुचि-रुचि (दे १ १३)।

अरुचि-रुचि की [अरुचि-रुचि] १ एक विच्छेद-रुचि
देवी का नाम। (अ ८)। २ उन्मा-विरोध।
(पाप)।

अरुचि-रुचि की [अरुचि-रुचि] अरुचि-रुचि (वीर २३)
भा)।

अरुचि-रुचि की [अरुचि-रुचि] नपरी-विरोध पहले

प्रतिपामुख की राजधानी (पदम २
२ १)। देखो अरुचि।

अरुचि-रुचि धु [अरुचि-रुचि] १ इस नाम का एक
रुचि विच्छेद मगध महावीर के पास वीरता
देकर मुक्ति पाई की (अ १८)। २ न.
अरुचि-रुचि धु न के एक धम्मयन का नाम।
(अ १८)।

अरुचि-रुचि वि [अरुचि-रुचि] उरय में न प्रा मुके
रुचि (पुर १ १३९ महा)।

अरुचि-रुचि-रुचि वि [अरुचि-रुचि-रुचि] की पहि
पाणा न प्रा उरता हो पुन (उप ३१३ टी)।

अरुचि-रुचि वि [अरुचि-रुचि] १ अरुचि-रुचि
वर्ण-रुचि (वि १३ ४४)। २ न पहि-रुचि
हुमा। (पुर ४ १४)।

अरुचि-रुचि अरुचि = अरुचि (महा)।

अरुचि-रुचि अरुचि (अ १)।

अरुचि न [वि] कर्म-रुचि-रुचि रोप का हूला
धारण (दे १ ११)।

अरुचि-रुचि न [अरुचि-रुचि] नपरी-विरोध
(मुग)।

अरुचि-रुचि [अरुचि-रुचि] निर्मल, देव-रुचि (पह
१ १)।

अरुचि-रुचि वि [अरुचि-रुचि] ऊपर देखो (गा
१ ४४२ ९११ महा)।

अरुचि-रुचि न [वि] पाई का परिवर्तन
(दे १ ४८)।

अरुचि धु [अरुचि] अरुचि-रुचि-रुचि हा-
वीर की सात करने के लिए जो रोप सवती
है वह (अ २)।

अरुचि-रुचि धु [अरुचि-रुचि] १ ऊपर देखो।
(मुग ४ ९)। २ वि अरुचि-रुचि से रंभा हुमा
(पद)।

अरुचि-रुचि देखो अरुचि-रुचि (वि १ ४९)।

अरुचि-रुचि वि [वि] अरुचि-रुचि मुल (वि १
४९)।

अरुचि-रुचि वि [अरुचि-रुचि] १ अरुचि-रुचि। २
विरोध निवारक। (अ ४ २)।

अरुचि-रुचि धु [वि] उरुचि-रुचि (दे १ २२)।

अरुचि-रुचि-रुचि धु [वि] उरुचि-रुचि (दे १
२२)।

अरुचि न [वि] विच्छेद प्रमाण (दे १ १९
यधि)।

शुभ—नाम कोष सोम मोक्ष मर आखर्ष
(गुप्त ११४)। दमप वि [दमन] १ रिपु
निनाशक। २ पुं स्मृत्यु २४ के एक राजा का
नाम (पटन २ ७)। ३ एक ब्रह्म मुनि की पत्नी
का धर्मिण्यय के पुत्रनाम के एक से (पटन
२ ७)। दमयी की [दमनी] विद्या विरोध
(पटन ७ १४२)। विद्वन्मयी की [विद्वं
सनी] रिपु का नाश करनेवाली एक विद्या
(पटन ७ १४)। सुतास पुं [संतास]
राजसभा में उत्पन्न लड़ा का एक राजा
(पटन २, २१३)। इत वि [इत्य] १
रिपु-निनाशक। २ पुं विनये (पानक)।

अभिज्ञप्ति पुंकी [बे] व्याज, देर (हे १ २४)।
अभिज्ञय पुं [अभिज्ञय] १ मनकाय कल्पने
का एक पुत्र। २ न. मदन-विरोध (पटन ३
१ १३)। मर २, ११३)।

अभिद्रु पुं [अभिद्रु] १ वृद्ध-विरोध (पटन १)।
२ मरुतके तीर्थकर का एक ग्राहक (पटन
१३२)। ३ पुंन. एक वैश्वामित्र (विनय
११३)। ४ न. मीन-विरोध को दारुण्यय कोष
की राजा है (ठा ७)। ५ राज की एक बाण्ड
(उत्त १४ ४ गुप्ता ३)। ६ पल-विरोध
पटन (पटन १७: उत्त १४ ४)। ७ धर्मिण्य-
वृद्ध कपट (पानक)। निमि नमि पुं
[निमि] वर्तमान बाल के बाल-विरोध विनय
(पटन १७: पटन ३ नय पति)।

अभिद्रा की [अभिद्रा] नन्क नामक विनय
की राजपत्नी (अ २ १)।

अभिद्र न [अभिद्र] पटन, कन्ह, नाक की
पौके का नाक, जिससे पत्र धारि-बापे बुलायी
बालों है (वर्ग ११३)।

अभिद्रिपो व [अभिद्रिपो] पालकृष्ण धर्मय
(हे २, २१७)।

अभिद्रि देवी अरस (हावा १ ११)।

अभिद्रिस्त } वि [अभिद्रिस्त] बलावीर
अभिद्रिस्त } ऐक्यता (पान. विना १७)।

अभिद्रि वि [अभिद्रि] १ कोष, नामक (गुप्ता
२१३, पटन)। २ पुं विनये (कीप)।

अभिद्रि एक [अभिद्रि] १ कोष होता। २ पुत्रा
के कोष मोना। ३ पुत्रा करता। धारिद्र
(पान)। धारिद्रि (अन)।

अभिद्रि देवी अरस—धर्म (हे २ ११३)
पटन)। वत्त [विद्रु] पुं [वत्त] ३ न
मुनि-विरोध का नाम (वप)।

अभिद्रि देवी अरस (पान. २८)।

अभिद्रि देवी अरस (पान. २८)।
पटन २१३)। २ पुंन. एक वैश्वामित्र (विनय
११३)। ३ विनय-विरोध (उत्त) पानक)। सामन्य न
[सासन] १ ब्रह्म दायन-वप)। २ विन-
पानक)। (पटन २ ३)।

अभिद्रि देवी अरस (पटन २, ११३, २५)।

अभिद्रि वि [अभिद्रि] १ विनय-विरोध (उत्त १४)।

अभिद्रि देवी अरस (उत्त १४)।

अभिद्रि न [अभिद्रि] १ वत्त पान. धर्म
वपु नुपट (पटन ३)।

अभिद्रि वि [अभिद्रि] १ मरु-विरोध। २
मरु-विरोध। ३ वत्त नुपट (पटन ३)।

अभिद्रि पुं [अभिद्रि] १ वृद्ध-विरोध (पटन १)।
२ मरुतके तीर्थकर का एक ग्राहक (पटन
१३२)। ३ पुंन. एक वैश्वामित्र (विनय
११३)। ४ न. मीन-विरोध को दारुण्यय कोष
की राजा है (ठा ७)। ५ राज की एक बाण्ड
(उत्त १४ ४ गुप्ता ३)। ६ पल-विरोध
पटन (पटन १७: उत्त १४ ४)। ७ धर्मिण्य-
वृद्ध कपट (पानक)। निमि नमि पुं
[निमि] वर्तमान बाल के बाल-विरोध विनय
(पटन १७: पटन ३ नय पति)।

अभिद्रा की [अभिद्रा] नन्क नामक विनय
की राजपत्नी (अ २ १)।

अभिद्र न [अभिद्र] पटन, कन्ह, नाक की
पौके का नाक, जिससे पत्र धारि-बापे बुलायी
बालों है (वर्ग ११३)।

अभिद्रिपो व [अभिद्रिपो] पालकृष्ण धर्मय
(हे २, २१७)।

अभिद्रि देवी अरस (हावा १ ११)।

अभिद्रिस्त } वि [अभिद्रिस्त] बलावीर
अभिद्रिस्त } ऐक्यता (पान. विना १७)।

अभिद्रि वि [अभिद्रि] १ कोष, नामक (गुप्ता
२१३, पटन)। २ पुं विनये (कीप)।

अभिद्रि एक [अभिद्रि] १ कोष होता। २ पुत्रा
के कोष मोना। ३ पुत्रा करता। धारिद्र
(पान)। धारिद्रि (अन)।

अभिद्रि देवी अरस—धर्म (हे २ ११३)
पटन)। वत्त [विद्रु] पुं [वत्त] ३ न
मुनि-विरोध का नाम (वप)।

अभिद्रि देवी अरस (पान. २८)।

अभिद्रि देवी अरस (पटन २, ११३, २५)।

अभिद्रि वि [अभिद्रि] १ विनय-विरोध (उत्त १४)।

अभिद्रि देवी अरस (उत्त १४)।

अभिद्रि न [अभिद्रि] १ वत्त पान. धर्म
वपु नुपट (पटन ३)।

अभिद्रि वि [अभिद्रि] १ मरु-विरोध। २
मरु-विरोध। ३ वत्त नुपट (पटन ३)।

अभिद्रि पुं [अभिद्रि] १ वृद्ध-विरोध (पटन १)।
२ मरुतके तीर्थकर का एक ग्राहक (पटन
१३२)। ३ पुंन. एक वैश्वामित्र (विनय
११३)। ४ न. मीन-विरोध को दारुण्यय कोष
की राजा है (ठा ७)। ५ राज की एक बाण्ड
(उत्त १४ ४ गुप्ता ३)। ६ पल-विरोध
पटन (पटन १७: उत्त १४ ४)। ७ धर्मिण्य-
वृद्ध कपट (पानक)। निमि नमि पुं
[निमि] वर्तमान बाल के बाल-विरोध विनय
(पटन १७: पटन ३ नय पति)।

अभिद्रा की [अभिद्रा] नन्क नामक विनय
की राजपत्नी (अ २ १)।

अभिद्र न [अभिद्र] पटन, कन्ह, नाक की
पौके का नाक, जिससे पत्र धारि-बापे बुलायी
बालों है (वर्ग ११३)।

अभिद्रिपो व [अभिद्रिपो] पालकृष्ण धर्मय
(हे २, २१७)।

अभिद्रि देवी अरस (हावा १ ११)।

अभिद्रिस्त } वि [अभिद्रिस्त] बलावीर
अभिद्रिस्त } ऐक्यता (पान. विना १७)।

अभिद्रि वि [अभिद्रि] १ कोष, नामक (गुप्ता
२१३, पटन)। २ पुं विनये (कीप)।

अभिद्रि एक [अभिद्रि] १ कोष होता। २ पुत्रा
के कोष मोना। ३ पुत्रा करता। धारिद्र
(पान)। धारिद्रि (अन)।

अभिद्रि देवी अरस—धर्म (हे २ ११३)
पटन)। वत्त [विद्रु] पुं [वत्त] ३ न
मुनि-विरोध का नाम (वप)।

अभिद्रि देवी अरस (पान. २८)।

अभिद्रि देवी अरस (पटन २, ११३, २५)।

अभिद्रि वि [अभिद्रि] १ विनय-विरोध (उत्त १४)।

अभिद्रि देवी अरस (उत्त १४)।

अभिद्रि न [अभिद्रि] १ वत्त पान. धर्म
वपु नुपट (पटन ३)।

अभिद्रि वि [अभिद्रि] १ मरु-विरोध। २
मरु-विरोध। ३ वत्त नुपट (पटन ३)।

अभिद्रि पुं [अभिद्रि] १ वृद्ध-विरोध (पटन १)।
२ मरुतके तीर्थकर का एक ग्राहक (पटन
१३२)। ३ पुंन. एक वैश्वामित्र (विनय
११३)। ४ न. मीन-विरोध को दारुण्यय कोष
की राजा है (ठा ७)। ५ राज की एक बाण्ड
(उत्त १४ ४ गुप्ता ३)। ६ पल-विरोध
पटन (पटन १७: उत्त १४ ४)। ७ धर्मिण्य-
वृद्ध कपट (पानक)। निमि नमि पुं
[निमि] वर्तमान बाल के बाल-विरोध विनय
(पटन १७: पटन ३ नय पति)।

अरुणि नि [अरुणिम्] ऊपर सेको (अ १ १ धावा पदण १)।

अरे घ [अरे] १-२ संभाषण वीर रति-कमह का मुक्क धम्म (हे २२ १) पड)।

अर म [अर] इन धर्मो का मुक्क धम्म—१ धायेन। २ विस्मय धम्मय (१ परिहात रुदा (संति १८ ५७)।

अरोअ म [अरु + अरु] सम्पास पाना विवक्षित होता। अरोअर (हे ४ २ २) हुना)।

अरोअर पुं [अरोचक] रोच-विशेष घन की अरुणि (भा २२)।

अरोइ वि [अरोचिन्] अरुणि जाता रति रहित 'अरोइ अरुणि कश्चि विनाशो' (भीम ७)।

अरोग वि [अरोग] रोच-रहित (भा १८ १)। या की [वा] आरोग, गोरोकडा (अ ७२८ टी)।

अरोगि वि [अरोगिन्] गोरोग रोच-रहित। या की [वा] आरोग, हंडुक्ती (महा)।

अरोग पुं [अरो] आरोच = आरोग (भावा २ अरोय १ १३, २)।

अरोस वि [अरोय] १ क्लृप्त-रहित। २-३ पुं एक स्वेच्छ देत वीर अरुणि यत्नेवली स्वेच्छ बाति (पण्ड १ १)।

अरु न [अरु] १ विष्णु के पुच्छ का अय मय

'अमनेन विष्णुमायां प्रमेन
अरुणि उह म मयस'।

विष्णु-मिय विष्णुमायां प्रमेन
अरुणि उह म मयस' (महा १८)।

२ अरुणि की एक विह्वलन (आमा २)।

३ वि समर्थ (भावा)। पट्ट न [पट्ट]

विष्णु की पुंछ बैठे भाग्यपत्ता एक अरु (विपा १ १)।

'अरु सेको लड (पा ७२ से १ ७७)।

अरु घ [अरुम्] १ पर्याप्त पूर्ण 'अमना-अरु घ अरुणी' (पुर ११ २३)। २ प्रतिषेध निवारण नष्ट (अ ४ ७)।

अरु घ [अरुम्] अरुणा, गुणा (सुमति १ २)।

अरुकर एक [अरु + क] मुणित करना विचारित करना। अरुकरति (वि ३ ६)।

अरु अरुकरत (मान १५३)। अरु अरु करिष (वि ३८१)। अरु, कर्म अरुकरा वीथत (अ १५)।

अरुकरण न [अरुकरण] १ आमुण अरु कार (रमण ७४ अति)। २ वि योगा काच 'अमनमोयस अरुकरण सुतोअरि' (विह १४)।

अरुकरि वि [अरुकर] सुतोअरि विमुणित 'कि नवरसअरुकरि अममदेउल उह महापुठि। (सुता ५८४ पुर ४ १८८)।

अरुअर पुं [अरुअर] १ राक्ष-विशेष क्षात्रिणका (धिरि ३३; विष्णा २)। २ पुं एक वैवियम (विह १३४)।

अरुअर पुं [अरुअर] १ पुण्य पक्षा (भीम ५७)। २ पुण्य सोला (अ ४ ५४)। सहा की [समा] पुण्य-गृह, अज्ञार-अर (अ ६)।

अरुअरि वि [अरुअरि] नापित नाई, हवास (आमा १ १३)। अरु म [अरु] हवास वीर कर्म (आमा १ १३)। सहा की [समा] हवास बगले का त्वाग (आमा १ १३)।

अरुअरि वि [अरुअर] १ विमुणित सुतो-अरि (कप महा)। २ न संवीत का एक गुल (भीम १)।

अरुअर सेको अरुअर। अरुअरति (रमण ३२)।

अरुअर वि [अरुअर] १ अरुअर करने के अयोग (पुर १ ५१)। २ अरुअर कर के अरुअर (अ ३२७ टी)।

अरुअरि वि [अरुअरि] ऊपर सेको अरुअरिणी (महा) गुण १ १ वि १९१ नप)।

अरुअर पुं [अरु] अरुअर, गुणा (दे १ १३)।

अरुअर की [अरुअर] १ एक विष्णुमाया सेको का नाम। (अ ५)। २ अरुअर-विशेष (नाम)।

अरुअर की [अरुअर] अरुअर (अ २३३ भा)।

अरुअर की [अरुअर] अरुअर-विशेष पण्डे

प्रतिपाद्यसेन की राजधानी (पण्ड २ २ १)। सेको अरुअर।

अरुअर पुं [अरुअर] १ इस नाम का एक राजा जिसने मगधरा महावीर के पाठ बीषा सेकर मुक्ति पाई थी (अ १८)। २ न अरुअरअर' सुभ के एक धम्मय का नाम। (अ १८)।

अरुअर वि [अरुअर] अरुअर में न आ सके ऐसा (पुर १ ११९ महा)।

अरुअरअमाय वि [अरुअरअमाय] को पति बागा न आ सकता हो पुन (अ ३११ टी)।

अरुअरि वि [अरुअरि] १ अरुअर अरुअरि। (अ ११ ५२)। २ न पण्डाला हुवा। (पुर ४ १४)।

अरुअर सेको अरुअर = अरुअर (महा)।

अरुअर सेको अरुअर (अ १)।

अरुअर न [अरु] अरुअर देना अरु का फूटा

अरुअर (दे १ ११)।

अरुअरपुर न [अरुअरपुर] अरुअर-विशेष (अमा)।

अरुअर वि [अरुअर] अरुअर अरुअर (अ १ १३)।

अरुअरि वि [अरुअरि] ऊपर सेको (पा १ ५४३ ६६१ महा)।

अरुअरअरु न [अरु] अरुअर का परिवर्तन (दे १ १८)।

अरुअर पुं [अरुअर] अरुअर, अरुअर अरुअर को अरुअर के लिए की रंग लवारी है वह (अ १३)।

अरुअर पुं [अरुअर] १ अरुअर (अ १ १३)। २ वि अरुअर से रंगा हुवा (अ १३)।

अरुअर सेको अरुअर (अ १ ५९)।

अरुअरअर वि [अरु] अरुअर अरुअर (दे १ ५९)।

अरुअर पुं [अरुअर] १ अरुअर। २ विशेष अरुअर। (अ ४ २)।

अरुअर पुं [अरु] अरुअर अरुअर (दे १ २४)।

अरुअरअरअर पुं [अरु] अरुअर अरुअर (दे १ २४)।

अरुअर न [अरु] अरुअर अरुअर (दे १ १९ अति)।

अक्षय पु [अक्षय] १ विष्णु का कक्ष ।
(विष्णु १ १) । २ केतु, बुधराजे ब्रह्म ।
(पाप ११) ।
अक्षय्य क्षी [अक्षय्य] कुदरे की नगरी (पाप
राज्य १ २) । केही अक्षय ।
अक्षय पि [अक्षय] मोती नहीं बोपलवाला
(नृप २१) ।
अक्षय्यमय पु [क्षि] पुनं वेत (पञ्च) ।
अक्षय पि [अक्षय] १ धालनी गुप्त (प्राप्त
७) । २ मय धीमा (पाप) । ३ पुं पुत्र क्षीण
रिपय दूना-क, बर्षाश्रु में वृषसृष्टि
काय रंग वा जो सन्ना यन्तु अक्षय होता है
वृ (वी १२, पुत्र २११) ।
अक्षय पि [क्षि] १ मरुत मायावला 'बे'
भरनं वतसंभुनं (पाप) । २ कुम्भ रंग वे
रंग हृष्य । ३ न. बोम (रे १ ५२) ।
अक्षय देवी कक्षय (रे १ ११ ४) । वा
१११) ।
अक्षय १ पु [अक्षय] १ विमुक्ति रोम
अक्षयय (वक्ता) । २ धनु, नृपन (पाप) ।
अक्षमाय पि [अक्षमायि] विनये धालनी
की लक्ष धारण विवा हो मन्त्र (वा ११२) ।
अक्षमाय यक्ष [अक्षमाय] धालनी हीन
धारणी की लक्ष नाम वरन्त । अक्षमाय
(पि २२) । वर अक्षमायन अक्षमाय-
माय (मे १४ १ का १ ११२ गन्ध १) ।
अक्षयी देवी अक्षयी (पाप वरुं हे २,
११) ।
अक्ष ये [अक्ष] १ न नाम की एव देवी
(हा १) । २ एक 'मार्गो का नाम (गुप्ता
२) । अक्षिता न [अक्षिता] धारिणी
हा कन (गुप्ता) ।
"अक्ष वेता कन्य (वा ११२) ।
अक्षय न [अक्षय] नुवी वन मोती गुप्ता
(वी प्राप्त १११) ।
अक्षय } टी [अक्षय] नुवी-मता
अक्षय } (गुप्ता वरुं) ।
अक्षय न [अक्षय] १ कपूर अक्षय हृष्य
वाउ (रे १ १ ० वीन २१५) । २ बह्म,
कोयता (रे १ १४) ।
अक्षयवा धी [अक्षयवीणा] वीणा-विरोध
(भा १७) ।

अक्षय देवी अक्षय (वी १) ।
अक्षय देवी अक्षय (पि १४१ २ १) ।
अक्षय पु [अक्षय] नृपन नैराक्षय 'वद'
हृष्यमाण पुणो ह्राह गुप्ताहो कन्यवाहो
वा' (गुप्ता ४४१) ।
अक्षय देवी अक्षय (नृप ७२६ टी हे २ १८३)
राज्या १ १ वा १२७) ।
अक्षि पु [अक्षि] अक्षर (गुप्ता) । अक्ष न
[अक्ष] अक्षरी का कक्ष (हे ४ २११) ।
विषय न [विषय] अक्षर का पुकार
(पाप) ।
अक्षि पुत्री [अक्षि] बुद्धि पति (विचार
१ १) ।
अक्षिअक्षी की [क्षि] १ कक्षरी । २ व्याज,
रौर (रे १ २१) ।
अक्षिता की [क्षि] छी (रे १ ११) ।
अक्षिआर न [क्षि] हृष्य (रे १ २१) ।
अक्षिअर न [अक्षिअर] १ वहा कुम्भ (हा
४ २) । २ कुंठ पाय-विरोध (रे १ १७) ।
अक्षिअर पु [अक्षिअर] १ वहा (न्या)
रक्षे का दुःख रक्ष-पाय (पाप) ।
अक्षि न [अक्षि] पाय-विरोध एक प्रकार
का वनवाय (वीन ४ १) ।
अक्षिपु पु [अक्षिपु] १ बार का वरोध
(न ४०१) । २ वर के बाहर के वरावे का
बीक । ३ बाहर का वन वाय (वृ २ पाप) ।
अक्षिपु पु [अक्षिपु] वाय रक्षे का
पाय-विरोध (प्रा १११) ।
अक्षिपु पु [क्षि] वृषिक विष्णु (रे १ ११) ।
अक्षिपी की [अक्षिपी] अक्षरी (गुप्ता) ।
अक्षिप न [अक्षिप] मोता खेत का वृद्ध
कण्य (वापा २ १ १) ।
अक्षिप न [अक्षिप] कन्य (पाप) ।
अक्षिप न [अक्षिप] १ गुप्ताय, अक्षय
वचन (पाप) । २ वि कृता लोचन 'यनिम-
वोरपाला'—(पाप) । ३ निष्पन्न विरक्त
(प्रा १ २) । वाह रि [वाहिन] गुप्ता-
वादी (पञ्च ११ २७) नहा) ।
अक्षिप वक्ष [कन्य] वहा मोता ।
अक्षिपु (निर) ।
अक्षिपु न [क्षि] १ धनु विरोध का नाम ।
२ वि धरोधक निष्पद्य (निर) ।

अक्षिपु की [अक्षिपु] हस नाम का एक
क्षय (निर) ।
अक्षिपु } देवी अक्षिपु = अक्षीक (नृप ४
अक्षिपु } २२१ गुप्ता १) माता ।
अक्षिपु की [अक्षिपु] अक्षरी (गुप्ता) ।
अक्षिपु की पु [क्षि] राक्ष-वृक्ष काय का
वेद (रे १ १७) ।
अक्षिपु पि [अक्षिपु] मोन (न
११ ४) ।
अक्षिपि पि [अक्षिपि] १ वेदवाहिन ।
२ पुं गुप्ता पाया (अ १ ४) ।
अक्षिपु पु [अक्षिपु] मोन-गुप्ता वाहि पति
वाक्य (निर) ।
अक्षिपि पि [अक्षिपि] गुप्ता-पति नाम-
गुप्ता 'निर' अक्षिपु वक्ष मोन कक्षि
(निर) ।
अक्षिपु देवी अक्षिपु (निर १) ।
अक्षिपु पु [अक्षिपु] १ मोन का अक्षय
वरोध । २ वि वीरवाहिन संदीपी (अक्ष
पु) ।
अक्षिपु पि [अक्षिपु] अक्षय निरान (व
१ नि २१) ।
अक्षिपु देवी अक्षय (निर) ।
अक्षय न [क्षि] निर, विरक्त (रे १ २) ।
अक्षय देवी अक्ष (रे १ १) ।
अक्षय यक्ष [निर] नमता मोन गुप्ता ।
अक्षयपि (रे १ ४१) ।
अक्षय की [अक्षय] लता-विरोध धार्मिक-
लता (प्रा १७) ।
अक्षय देवी अक्षय = धार्मिक (वर्न २) ।
अक्षय वक्ष [वक्ष + क्षिपु] अक्षय वक्ष ।
अक्षय (रे ४ ४४४) ।
अक्षय न [क्षि] १ अक्षय देवी वक्ष । २
क्षेत्र गुप्ता-विरोध (रे १ २४) ।
अक्षयपि पि [अक्षयपि] अक्षय वक्ष गुप्ता
(गुप्ता) ।
अक्षय न [अक्षय] धारी धार्मिक (वी १) ।
अक्षय न [अक्षय] धारी इन्दी धीर कक्ष
(वी १) ।
अक्षय पि [क्षि] वीरपति नाम (रे १ ११) ।
अक्षय पु [अक्षय] हस नाम का एक
विष्णु वक्ष गुप्ता धीर धार्मिक, अक्षय-
वक्ष

अक्षर्य पुं [अक्षर] १ विष्णु का कथ्य ।
(विष्णु १) । २ केश धारण करने वाला ।
(पद्म ८१) ।
अक्षर्या की [अक्षर्य] कुंदर की नगरी (पाद्य)
पाद्य १ (५) । देवी अक्षर्य ।
अक्षर्य वि [अक्षर्य] नीली नहीं नीलमेवासा
(सुप २९) ।
अक्षर्यस्यस्य पुं [दे] दूर देख (पद्म) ।
अक्षर्य वि [अक्षर्य] १ धारणी मुख (भाष्य)
७) । २ मन्त्र, बीमा (पाद्य) । ३ पुं कुंज कीट
किये, कुन्नाम बर्णन पुं चले सरीका
आत रंग का जो लम्बा जन्तु उत्पन्न होता है
वह (की १३) पुनः २९५) ।
अक्षर्य वि [दे] १ मयूर व्याघ्रजाला 'अ'
अक्षर्य नक्षत्र' (पाद्य) । २ कुन्म रंग से
रंग हुआ । ३ न मोम (दे १ ५२) ।
अक्षर्य देवी कक्षर्य (दे १ ११ ४) । भा
११६) ।
अक्षर्या पुं [अक्षर्य] १ विनयिका रोम
अक्षर्य (पद्म) । २ कर्ण, सुवर्ण (भाष्य) ।
अक्षर्यास्य वि [अक्षर्यास्य] विष्णु बालकी
की लक्ष्मी धारण करने वाली (मन्त्र १५५) ।
अक्षर्यास्य धक [अक्षर्यास्य] धारणी होने
धारणी की लक्ष्मी नाम करण । अक्षर्यास्य
(वि १५) । वह अक्षर्यास्य अक्षर्यास्य
मात्र (दे १४ १) ३ पुं ११३ पक्ष १) ।
अक्षर्यी देवी अक्षर्यी (पद्म पद् १२,
११) ।
अक्षर्य की [अक्षर्य] १ इस नाम की एक देवी
(अ ५) । २ एक इन्द्राणी का नाम (लक्ष्मी)
२) । अक्षर्या न [अक्षर्य] अक्षर्यी
का मन्त्र (पाद्य २) ।
अक्षर्य देवी कक्षर्य (पा १५७) ।
अक्षर्य न [अक्षर्य] सुनी कन नीली गुम्फा
(वीर्य भाष्य १११) ।
अक्षर्य } की [अक्षर्य] सुनी-लला
अक्षर्य } (सुभाष्य ५२) ।
अक्षर्य न [अक्षर्य] १ कर्ण, कला हुआ
पद्म (दे १ १ ७) २ धारणी, नीलगा
(दे १, १४) ।
अक्षर्यनी की [अक्षर्यनी] नीलगा-किये
(पद्म १७) ।

अक्षर्य देवी अक्षर्य (अ ५) ।
अक्षर्य देवी अक्षर्य (वि १४१ २ १) ।
अक्षर्य पुं [अक्षर्य] गुम्फा नीलगा 'न'
हृत्पाशास्य पुणो होइ गुम्फा कलास्यो
वा' (सुभा ५५५) ।
अक्षर्य देवी अक्षर्य (अ ७२८ टी दे १ १२१)
पाद्य १ ११ वा १२७) ।
अक्षर्य पुं [अक्षर्य] भ्रमर (सुभा) । लक्ष न
[अक्षर्य] भ्रमर का लक्ष्य (दे ४ १३५) ।
विष्णु न [विष्णु] भ्रमर का गुम्फा
(पाद्य) ।
अक्षर्य पुं [अक्षर्य] भूमि पट्टि (विष्णु
१ ५) ।
अक्षर्य देवी की [दे] १ कर्ण, २ व्याघ्र,
होर (दे १ १५) ।
अक्षर्य की [दे] लक्ष्य (दे १ १५) ।
अक्षर्या न [दे] लक्ष्य (दे १ २३) ।
अक्षर्या न [अक्षर्य] १ कक्ष, कुम्भ (अ
४ २) । २ कुंज पात-किये (दे १ १७) ।
अक्षर्यस्य पुं [अक्षर्यस्य] १ कक्ष (अ)
रंग का गुम्फा रंग-पात (पाद्य) ।
अक्षर्य न [अक्षर्य] पात-किये एक प्रकार
का वस्त्र (वीर्य ४ ५) ।
अक्षर्य पुं [अक्षर्य] १ शर का प्रकोट
(अ ४७५) । २ शर के बाहर के बरतने का
बीज । ३ बाहर का वह भाग (हृ २) पाद्य) ।
अक्षर्य पुं [अक्षर्य] पात, रंग का
पात-किये (सुभा १११) ।
अक्षर्य पुं [दे] भूमि विष्णु (दे १ ११) ।
अक्षर्य की [अक्षर्य] भ्रमरी (सुभा) ।
अक्षर्य न [अक्षर्य] नीला क्षेत्र का लक्ष्य
(पाद्य २, ११) ।
अक्षर्य न [अक्षर्य] कला (पाद्य) ।
अक्षर्य न [अक्षर्य] १ गुम्फा, धारणी
वस्त्र (पाद्य) । २ विष्णु, छोटा 'धर्म-
नीलगा'—(पाद्य) । ३ विष्णु निर्णय
(पाद्य १ २) । बाह्य वि [पाद्य] गुम्फा
वारी (पद्म ११ २७, २८) ।
अक्षर्य लक्ष [अक्षर्य] नक्षत्र, नीलगा ।
अक्षर्य (विष्णु) ।
अक्षर्य लक्ष [दे] १ कक्ष किये का नाम ।
२ वि धर्मनीलगा विष्णु (विष्णु) ।

अक्षर्य की [अक्षर्य] इस नाम का एक
धर्म (विष्णु) ।
अक्षर्य } देवी अक्षर्य = धारणी (सुप ४
अक्षर्य) । २२१) सुभा १ । मन्त्र) ।
अक्षर्य की [अक्षर्य] भ्रमरी (सुभा) ।
अक्षर्य की पुं [दे] शर-लक्ष्य शर का
पक्ष (दे १ १७) ।
अक्षर्य वि [अक्षर्य] मोम (मन्त्र
११ ४) ।
अक्षर्य वि [अक्षर्य] १ केरमाक्षर्य ।
२ पुं लक्ष्य (अ ५, ४) ।
अक्षर्य पुं [अक्षर्य] नील-गुम्फा धारणी
धारणी (पाद्य) ।
अक्षर्य वि [अक्षर्य] लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य
लक्ष्य, लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य
(मन्त्र) ।
अक्षर्य देवी अक्षर्य (सुभा १) ।
अक्षर्य पुं [अक्षर्य] १ लक्ष्य का लक्ष्य
लक्ष्य । २ वि लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य (मन्त्र
लक्ष्य) ।
अक्षर्य वि [अक्षर्य] लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य
(दे १ १५) ।
अक्षर्य देवी अक्षर्य (कक्ष) ।
अक्षर्य न [दे] विष्णु, विष्णु (दे १ १५) ।
अक्षर्य देवी अक्षर्य (दे १ २५) ।
अक्षर्य लक्ष [मन्त्र] लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य
लक्ष्य लक्ष्य (दे १ १५) ।
अक्षर्य की [अक्षर्य] लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य
लक्ष्य लक्ष्य (लक्ष्य १७) ।
अक्षर्य देवी अक्षर्य = धारणी (मन्त्र २) ।
अक्षर्य लक्ष [लक्ष्य + विष्णु] लक्ष्य लक्ष्य
लक्ष्य लक्ष्य (दे ४ १५५) ।
अक्षर्य न [दे] १ लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य । २
लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य (दे १ २५) ।
अक्षर्यस्य वि [अक्षर्य] लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य
(सुभा) ।
अक्षर्य न [अक्षर्य] लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य
(वीर्य ११) ।
अक्षर्य वि [दे] लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य (दे १ १२) ।
अक्षर्य पुं [अक्षर्य] इस नाम का एक
लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य

अवर्ग पुं [हे] कटा (रे १ ११) ।
 अवर्ग } वि [हे] अपवृत्त नहीं बना
 अवर्ग्य } ह्मा, हुमा (घोष पर २ ४) ।
 अवर्ग्य सट [हे] बोधना । अवर्ग्येया
 (भाता २ २ २ ४) ।
 अवर्जित वि [अवर्जित] घरोमुख अवाह
 मुख (वज्रा १) ।
 अवर्जित वि [अवर्जित] नहीं ठना हुमा
 (वज्रा १) ।
 अवर्ज्य वि [अवर्ज्य] सल्ल वज्र (मुपा
 १२१) । 'पवाय न [प्रवाह] ग्वाध्वो
 पूर्व केन अवाह-विरोध (सन २९) ।
 अवर्णन वि [अवर्णन] जेतो बीज का
 (घावन) ।
 अवर्ति पुं [अवर्ति] अमवाह मातिलाव ना
 एक मुख (टी १४) ।
 अवर्ति } की [अवर्ति] स्था १ मतन केत ।
 अवर्ति } २ मतन केत ही पञ्चमो की
 धावरत पञ्चमुद्रात न 'अवर्ति' नाम से प्रसिद्ध
 है (महा मुपा १२९ अमन) । रंगा की
 [गङ्गा] धारोविक नम में प्रसिद्ध वल्म-
 विरोध (सन २४ १) । बहव्य पुं [अवर्ति]
 इस नाम का एक पना (घान ४) । मुकु-
 माक्ष पुं [मुकुमाक्ष] एत वेति-मुन जो
 धर्ममुद्रति भावाय के नाम वीक्ष वेकर
 देन-मोक्ष के लीनोपुन विद्याम से ज्ञान
 हुमा है (वर्ति) । सय पुं [विज] एक पना
 (वाह) ।
 अवर्तिन वि [अवर्ति] नग्न करने के
 धारोव प्रणय के धारोव (वज्र १) ।
 अवर्तिन नक [अव + अवर्ति] १ बाह्या ।
 २ केनना । धारोव (अग) । वज्र अव-
 र्तिनाम (उपा १ १) ।
 अवर्तिन वेतो अवर्तिन 'कुमरोवि' एवधयो
 उन्ना नविधपारो (महा) ।
 अवर्त्य सट [अव + अवर्त्य] वज्रा
 करता नाम मेता । धारोव (मुप १ ३
 ३ १) ।
 अवर्त्य वि [अवर्त्य] १ मिहता धारोव
 निया क्या हो व (वज्र) । २ धारोव,
 कलि (मुपा १४१) ।
 अवर्त्य सट [अव + व] अविन कप्य ।
 धारोव (मुप १ ४ २१) ।

अवर्तिन पुं [अवर्ति] धारोव ह्मा
 ह्मा (सन ३) ।
 अवर्त्यसि वि [अवर्त्यसि] ममिन
 (वज्र) ।
 अवर्त्य सट [अव + व] व्याव करना ।
 सट अवर्त्यसि (वज्र १४) ।
 अवर्तिन वि [अवर्तिन] अविन करने
 बाता (पवन ६, ६) ।
 अवर्तिन वि [अवर्तिन] एतियक (रे १
 ११) ।
 अवर्तिन पुं [अवर्तिन] वरकप्य
 अवर्तिन } नामक एक वैन मर्त्य का पुन
 नाम (महा) ।
 अवर्तिन की [अवर्तिन] प्यपट (रे १
 १) ।
 अवर्तिन की [अवर्तिन] वरकप्य, अविन
 (महा १२) ।
 अवर्तिन न [अवर्तिन] जोड़ना व्याव,
 उच्छर्प (वाह ३) ।
 अवर्तिन वि [हे] अवर्तिन विपति
 विपु (रे १ ३) ।
 अवर्तिन वि [अवर्तिन] व्याव
 जोड़ने नामक (पर १ ३) ।
 अवर्तिन न [अवर्तिन] ह्मा की उन्ना
 नीका करना (विपु १०) ।
 अवर्तिन पुं [अवर्तिन] कम-नम्य वन
 लीन (वर २, ५) ।
 अवर्तिन वेतो अवर्तिन (पर १ १) ।
 अवर्तिन वि [अवर्तिन] १ पीछे ह्मा
 वृत्त बीजा हुमा (मुपा २२९ वा ११४
 टी महा) । २ विहट, वज्र (ठा ६) ।
 अवर्तिन पुं [अवर्तिन] प्रमय नरक मुनि का
 धारोव नरकेन्द्र —नरक-स्थान विरोध
 (वेत्त २) ।
 अवर्तिन की [अवर्तिन] १ धारोव ।
 २ विपिन (उपा १) ।
 अवर्तिन की [अवर्तिन] नमन गति
 (वाहा) ।
 अवर्त्य सट [अव + व] १ पीछे
 ह्मा । २ बाह्य विपिन । धारोव (महा
 नय) । वज्र अवर्त्यमाग (मिना १२) ।

अवर्त्य सट [अव + व] व्याव करना ।
 सट अवर्त्यसि (वज्र १४) ।
 अवर्तिन वि [अवर्तिन] अविन करने
 बाता (पवन ६, ६) ।
 अवर्तिन वि [अवर्तिन] एतियक (रे १
 ११) ।
 अवर्तिन पुं [अवर्तिन] वरकप्य
 अवर्तिन } नामक एक वैन मर्त्य का पुन
 नाम (महा) ।
 अवर्तिन की [अवर्तिन] प्यपट (रे १
 १) ।
 अवर्तिन की [अवर्तिन] वरकप्य, अविन
 (महा १२) ।
 अवर्तिन न [अवर्तिन] जोड़ना व्याव,
 उच्छर्प (वाह ३) ।
 अवर्तिन वि [हे] अवर्तिन विपति
 विपु (रे १ ३) ।
 अवर्तिन वि [अवर्तिन] व्याव
 जोड़ने नामक (पर १ ३) ।
 अवर्तिन न [अवर्तिन] ह्मा की उन्ना
 नीका करना (विपु १०) ।
 अवर्तिन पुं [अवर्तिन] कम-नम्य वन
 लीन (वर २, ५) ।
 अवर्तिन वेतो अवर्तिन (पर १ १) ।
 अवर्तिन वि [अवर्तिन] १ पीछे ह्मा
 वृत्त बीजा हुमा (मुपा २२९ वा ११४
 टी महा) । २ विहट, वज्र (ठा ६) ।
 अवर्तिन पुं [अवर्तिन] प्रमय नरक मुनि का
 धारोव नरकेन्द्र —नरक-स्थान विरोध
 (वेत्त २) ।
 अवर्तिन की [अवर्तिन] १ धारोव ।
 २ विपिन (उपा १) ।
 अवर्तिन की [अवर्तिन] नमन गति
 (वाहा) ।
 अवर्त्य सट [अव + व] १ पीछे
 ह्मा । २ बाह्य विपिन । धारोव (महा
 नय) । वज्र अवर्त्यमाग (मिना १२) ।

अवधीय वि [अपधीय] संतापीय संताप-
लक्षणी (अ १) ।

अवधपुण्य न [वि] अवे स कहा जाता
मासिक नवन (वे १ ११) ।

अवधवेय पु [अवधवेय] विभाग अंत (अ
१ १) ।

अवध्वरि वि [अपध्वरि] अघ के अक्षर
के पीछे अन्वोप-पुट (पिरे) ।

अवधस पु [अपधस] अपधीय (अ १
१०७) ।

अवधाज्य सक [अप+धा] १ अस्माप करण
‘बालस मंर्ये दीर्यं वं न कथं अवधाज्यं
कुमो’ (सूय १ ४ १ २६) ।

अवधाज्य पु [अपधाज्य] पिता की अनेका
हीन कैमबाला पुन (अ ४ १) ।

अवधिचम पु [अपधिच] ब्रह्मरी नरक-
दुस्ती का घाटनों नरकज-नरक-चम
विशेष (वेवे १) ।

अवधीव वि [अपधीव] बीचरहित सुत
मनेल (गड) ।

अवधुव वि [अवधुव] अवाधुव, निव
(अ ७) ।

अवधन न [अवध] १ पाप (अह २, ४) ।
२ वि निष्कलीब (सूय १ १ २) ।

अवधस सक [गम्] जाता कम करता ।
अवधस (हे ४ ११२) । वह अवधसत
(हुमा) ।

अवधा की [अवधा] अवाधर (अ १ ४) ।

अवधम वि [अवधम] मारने के अवीर्य
(गुमा १ ११) ।

अवधम सक [हस] देखना (अहि ११) ।

अवधमस न [वे] १ कटी बमर । २ वि
कटि (हे १ ११) ।

अवधम की [अवधमा] १ अवीर्य अवीर्य
(रक) । २ विरह वर की एक नवरी (अ
२ ३) ।

अवधमय न [अपधमान] बुरा चिन्तन,
दुर्मान (गुमा १४६, अ ४१९, अ ३,
पिरे १ ११) ।

अवधमय पु [अपधमान] दुर्मान ‘अव-
अवधमय’ मिथी मानवारी’ (भाषक
२ ४ १४ १ २१ अवीर्य ४१) ।

अवधमय वि [अपधमान] १ दुर्मान का
विषय । २ अवधमय विरहवत (गुमा १ १४) ।

अवधमय (अप) वेणी अवधमय (वे १ १०) ।

अवध सक [अप+ध] दुर्मान किरण
‘अवध अघटि वि बहुरि किरणहारे रज्जुपरि
बसपुष्पसु विभागयसु अर्यमणि के विरि
विपरिपिबि वि विभवं पश्यवत’ (अ
११३) ।

अवध सक [अप+ध] पीके हुता । अघ
हुत (अह १२) ।

अवधा की [अवधा] रावमार्ग से बहुर की
बाहू (अ १११) ।

अवधुस पु [अवधस] अवधमय रावम
(अ २६, २ अ १११) ।

अवधुस पु [अवधस] अघरा विमल (अवीर्य
१४) ।

अवधुस वेणी अवधस । कर्म, अवधुसवि (अ
७४१) ।

अवधुसय न [अवधसमन] अवधमय,
अवधुसय १ अघरा (अ ७११ अ ७४६) ।

अवधुस वि [अवधस] रोका हुमा (अ ७
२०) ।

अवधुस वि [अवधस] १ अवधमय । २
भाषा ‘अवधुस मधुविवाय’ (अ १८४) ।

अवधुस सक [अप+सध] अवधमय
करना अघरा लेना । अघ अवधुसि (अ
१४) ।

अवधुस न [अवधमान] १ अवधमय
अवधमय । २ अवधमय (अ १) ।

अवधुस वि [अवधमय] १ अवधमय करके
रिक्त (सूय १ १ ११) । २ कर्म-अवधुस
प्रथम अवध में विरही कर्म-अवधुसों का अघ
ही विरही अघि अवधों में भी अघनी ही
अवधियों का वो अघ हो वह (अ २, २२) ।

अवधुस वि [अवधमय] १ अघरा अघराता
(अ १) । २ अघरा अघरा (अ १ १) । ३ वो
अघरा-अघरा न हो (अ १) ।

अवधुस की [अवधमय] अवधमय (अ १,
४-विरे ७१५) ।

अवध सक [अप+सध] अवधमय
करना । अघ

‘अवध मघी, अघ मघी, अवेध
अवधमय ।

अवधमय अघरा अघरा वि मुमिना अघरा’
(अ ४१) ।

अवधम पु [वि] अघमय पल (हे १ १०) ।
अवध पु [अवध] अघ अघ (अ ४) ।

अवध } पु [वि] १ अघ अघ । २ अघमय
अवधमय } अघमय (हे १ ११) ।

अवधम पु [वि] १ अघ अघ-अघ का अघमय,
अघ-अघ (हे १ २) ।

अवधम पु [अवधम] अघमय अघमय ‘अघ-
अघमय अघमय अघमय अघमय’ (अ ४) ।

अवधमय वि [वि] अघ अघ में अघमय
अघ अघ, अघमय अघमय-अघ की हो वह (हे
१ ४०) ।

अवधम सक [अघ+अघ] अघ अघ से
अघ करता । अघमय (हे १ ४०) ।

अवधमय वि [वि] १ अघ अघ से अघ
(हे १ ४०) । २ वि अघमय (अ ४) ।

अवधमय वि [वि] अघ अघमय (हे १
२१) ।

अवधु पु [अवध] अघमय अघमय अघमय
अघमय (अ ४) ।

अवधुस पु [वि] अघमय अघमय (हे १ २१) ।
अवधुसि वि [वि] अघ अघ में अघ अघ
(अ ४) ।

अवधु की [वि] अघमय अघमय अघमय का
अघ अघ (अ ११, अ १०६) ।

अवधु वि [अवध] १ अघमय (अ ४) ।
२ अघमय ‘अवधु अघमय’ (अ ४ अ १ अ ४
४१) । अघमय न [अघ] १ अघमय अघमय
(अ १) । २ अघमय अघमय (अ १) ।

अवध पु [वि] १ अघमय का अघमय । २ अघ
का अघमय (हे १ ११) ।

अवध न [अवध] १ अघमय । २ अघमय
(अ ४ अ १) ।

अवधम वेणी अवधमय (अ ४ ४१) ।

अवधम वि [अवधम] १ अघमय, अघमय अघमय
(अ ४ ४) । २ अघमय अघमय (अ ४) ।

अवधम सक [अप+सध] अघमय अघमय ।
अघ अवधमय (अ ४) ।

अवग्रमिन् वि [अवग्रत] धपकत (सुपा ४२६) ।

अवग्रमिन् वि [अवग्रमिन्] मोक्षे क्रिया हुआ गमामा हुआ (सुप २ ४१) ।

अवग्रय वि [अवग्रय] गमा हुआ (सुप ३) ।

अवग्रय पु [अवग्रय] १ अवग्रय हृत्वा (अ ८) । २ क्रिया (सुप १४ तत्ते १४ ६ टी) ।

अवग्रयण न [अवग्रयण] हृत्वा कुर करक (सुपा ११ स ४८३ ल ४०९) ।

अवग्राम पु [अवग्राम] अवग्रवम अवग्रामात् भुवात् एतामवग्रामम् (धर्म २४२) ।

अवग्रि श्री [अवग्रि] इषिषी मुनि (उ ११६ टी) ।

अवग्रिन् अवग्रणी = धप + भी ।

अवग्रिन् पु [अवग्रिन्] राबा, धुन (अभि) ।

अवग्रिन् वेदो अवग्रिन् 'तं कुर्यान् विदमि' बसणमवग्रिन्मोक्षोद्यमम् (विने १३८) ।

अवग्रणी वेदो अवग्रि (सुपा ११) । सर पु [अवग्र] राबा मुनिपति (अभि) ।

अवग्रणी सक्र [अवग्र] हृत्वा कुर करक ।

अवग्रणी, अवग्रणी (महा) । कृञ् अवग्रिन्, अवग्रिन् (सिद्ध १ सुप २ ८) । कृञ् अवग्रणी (अ १४६ टी) । कृञ् अवग्रिन् (अ १४६) ।

अवग्रणी वि [अवग्रणी] कुर क्रिया हुआ (सुपा ४४) ।

अवग्रणीयवपन न [अवग्रणीयवपन] क्रिया-वपन (आषा २ ४ १ १) ।

अवग्रणी वेदो अवग्रणी = धप + भी ।

अवग्रणी पु [अवग्रणी] अवग्रणी हृत्वा (सिने ६२२) ।

अवग्रणीय न [अवग्रणीय] वपनय, कुरी करण (स १२३) ।

अवग्रण्य वि [अवग्रण्य] १ वार्धयित्, वार्धयित् (समा) । २ पु क्रिया (वपन ४) । ३ धान्यपि (धोष १८४ मा) । व वि [अवग्र] क्रिया-पि वि वार्धयित् वाते महामोर्ध वार्धयित् (अ ४१) । वाय पु [अवग्र] क्रिया (अ २२) ।

अवग्रण्य न [अवग्र] वपना निरकर (वि १ १७) ।

अवग्रणी श्री [अवग्रणी] निरकर, निरकर (वीन) ।

अवग्रणी श्री [अवग्रणी] निरकर, निरकर (वीन) ।

अवग्रणी श्री [अवग्रणी] निरकर, निरकर (वीन) ।

अवग्रणी श्री [अवग्रणी] निरकर, निरकर (वीन) ।

अवग्रण्य पु [अवग्रण्य] वपनाय (वप १) ।

अवग्रण्यण न [अवग्रण्यण] वपनाय (आषा) ।

अवग्रण्यण न [अवग्रण्यण] धातुन धाति से स्तान करमा (गाथा १ ११ निपा १ १) ।

अवग्रत वेदो अवग्रत = धपकत (सुमा) ।

अवग्रत पु [अवग्रत] वेगवर्ध (सुमा १) ।

अवग्रतसिन् वि [अवग्रतसिन्] निरूपित (सुमा) ।

अवग्रत वि [अवग्रत] उग्रय विना हुआ (सुप १ ३, २) ।

अवग्रतुि वेदो अवग्रतुि = धपकत (सुप १ ७) ।

अवग्रतण्य न [अवग्रतण्य] १ उग्रय । २ योचना करमा (विने ६४) ।

अवग्रतण्य न [अवग्रतण्य] इरणा (वप ७३ टी) ।

अवग्रतण्य न [अवग्रतण्य] कुरित यत् करार क्रिया (सुपा १२) ।

अवग्रत वि [अवग्रत] १ वपन (विने) । २ कम उग्रय वासा (इह १) । ३ वपकत (वपन १) । ४ पु वेदो अवग्रत (सिद्ध २) ।

अवग्रत वि [अवग्रत] वपनपति (वपन १) ।

अवग्रत वि [अवग्रत] प्राप्त मन्त्र ।

अवग्रत न [अवग्रत] वपन-विशेष (सिद्ध १) ।

अवग्रत वि [अवग्रत] विसंस्तुय धर्मवर्धित (इ १ १४) ।

अवग्रतव्य वि [अवग्रतव्य] १ वपन से कर्क के धर्मव्य धर्मवर्धनीय । २ धर्मवर्धनी का कर्तुर्धर्म ।

अवग्रतव्यवि वि विग्रह वि विग्रह धर्मवर्धित । वपनविग्रहवि वि वपनवर्धित वपन (समा ११) ।

अवग्रतव्य न [अवग्रतव्य] १ एक वपनवर्धित मन्त्र विग्रहवर्धित एक मन्त्र । २ वि वपन मन्त्र वपनवर्धित (ठा ७) ।

अवग्रतव्य न [अवग्रतव्य] कुरी वपना विग्रहवर्धित (सुप १ २ २) ।

अवग्रतव्य वि [अवग्रतव्य] १ निरवक धर्मवर्धित । २ धर्मवर्धित धर्मवर्धित (सुप वपन) (विने) ।

अवग्रतव्य वि [अवग्रतव्य] धर्मवर्धित-प्राप्त, विग्रहवर्धित विग्रहवर्धित (सुपा १ २८) ।

अवग्रतव्य वि [अवग्रतव्य] निरवक (विने २६६ टी) ।

अवग्रतव्य वि [अवग्रतव्य] निरवक (विने २६६ टी) ।

अवग्रतव्य वि [अवग्रतव्य] निरवक (विने २६६ टी) ।

अवग्रतव्य श्री [अवग्रतव्य] पाञ्चसहस्र, सात भागा (वि १ २२) ।

अवग्रतव्य श्री [अवग्रतव्य] वपन धर्मवर्धित (अ ८ सुमा) ।

अवग्रतव्य न [अवग्रतव्य] धर्मवर्धित (ठा ४ १) । २ व १२० वपन सुप १ २) ।

अवग्रतव्य सक्र [अवग्रतव्य] १ विग्रह करमा कुर करक । २ धर्मवर्धित वपन । कुर, अवग्रतव्यवि, अवग्रतव्यवि (वी) (वि २७३; मा) ।

अवग्रतव्यवि (वी) वि [अवग्रतव्यवि] धर्म वपन क्रिया हुआ (मा) ।

अवग्रतव्य वेदो अवग्रतव्य (महा स २७४) ।

अवग्रतव्य वि [अवग्रतव्य] क्रिया हुआ प्रवर्धित (एता १ ८) ।

अवग्रतव्य न [अवग्रतव्य] धर्मवर्धित (अभि धातु) । २ वि निरवक, निरवक (वपन १ २) ।

अवग्रतव्य वेदो अवग्रतव्य । वपन धर्मवर्धित (विने ४८३) ।

अवग्रतव्य वेदो अवग्रतव्य (सुप २ १ ३) ।

अवग्रतव्य वि [अवग्रतव्य] १ निरवक, धार विग्रह । २ वपन धर्मवर्धित (अ ४ ४) ।

अवग्रतव्य न [अवग्रतव्य] धर्मवर्धित धर्मवर्धित के धर्मवर्धित से धर्मवर्धित (विने धर्मवर्धित) पर धर्मवर्धित (एता १ ४) ।

अवग्रतव्य न [अवग्रतव्य] धर्मवर्धित धर्मवर्धित (विने धर्मवर्धित) पर धर्मवर्धित (एता १ ४) ।

अवग्रतव्य न [अवग्रतव्य] धर्मवर्धित धर्मवर्धित (विने धर्मवर्धित) पर धर्मवर्धित (एता १ ४) ।

अवग्रतव्य न [अवग्रतव्य] धर्मवर्धित धर्मवर्धित (विने धर्मवर्धित) पर धर्मवर्धित (एता १ ४) ।

अवग्रतव्य न [अवग्रतव्य] धर्मवर्धित धर्मवर्धित (विने धर्मवर्धित) पर धर्मवर्धित (एता १ ४) ।

अवग्रतव्य न [अवग्रतव्य] धर्मवर्धित धर्मवर्धित (विने धर्मवर्धित) पर धर्मवर्धित (एता १ ४) ।

अवग्रतव्य न [अवग्रतव्य] धर्मवर्धित धर्मवर्धित (विने धर्मवर्धित) पर धर्मवर्धित (एता १ ४) ।

अवग्रतव्य न [अवग्रतव्य] धर्मवर्धित धर्मवर्धित (विने धर्मवर्धित) पर धर्मवर्धित (एता १ ४) ।

अवग्रतव्य न [अवग्रतव्य] धर्मवर्धित धर्मवर्धित (विने धर्मवर्धित) पर धर्मवर्धित (एता १ ४) ।

अवग्रतव्य न [अवग्रतव्य] धर्मवर्धित धर्मवर्धित (विने धर्मवर्धित) पर धर्मवर्धित (एता १ ४) ।

अवग्रतव्य न [अवग्रतव्य] धर्मवर्धित धर्मवर्धित (विने धर्मवर्धित) पर धर्मवर्धित (एता १ ४) ।

अवग्रतव्य न [अवग्रतव्य] धर्मवर्धित धर्मवर्धित (विने धर्मवर्धित) पर धर्मवर्धित (एता १ ४) ।

अवग्रतव्य न [अवग्रतव्य] धर्मवर्धित धर्मवर्धित (विने धर्मवर्धित) पर धर्मवर्धित (एता १ ४) ।

अवहार } केओ अवहार (छाया १ २)
अवहास } प्रक) ।
अवहास्यो ओ केओ अवहास्य (विना १ १) ।
अवधुसुस न [वे] ऊवधन घासि नर वा
घासम्य ऊवधुसुस दुनएटी में निजो 'उध'
एधुसुस नरुते है (३१ १) ।
अवधंस पुं [अवधंस] विनाए (अ ४ ४) ।
अवधंसि वि [अवधंसि] विनाएराए
(उत ४ ७) ।
अवधार एक [अव + धार] निबध
कला । इ अवधारियम् (अवा ३) ।
अवधारण न [अवधारण] निबध निशिय
(आ १) ।
अवधारणा ओ [अवधारणा] दीर्घस्य एक
वार उन्ते ओ एति (समात् ११) ।
अवधारिय वि [अवधारित] निबध निशिय
(अनु) ।
अवधारियन्ते केओ अवधार ।
अवधाव एक [अव + धाव] दीर्घे दीर्घा ।
धरावत (अण) । वङ् अवधावत (अ
२१२) ।
अवधिया ओ [वे] अवेधिया ओयक (अण
१ १) ।
अवधीरिय वि [अवधीरित] तिप्पल अय-
मानि (अ १ ४) ।
अवधुण } एक [अव + धु] १ एधियान
अवधुण } कला । २ धरावा कला । उङ्-
अवधुणज अवधुणज (अल २१२ वेली
११) ।
अवधुय वि [अवधुय] १ धरावत तिप्पल
(धोय १=आ टी) । २ विहित (आय ४) ।
अवनिह्व पुं [अवनिह्व] उवावर, निहा
वा धमर (गुर ६ ६) ।
अवस केओ अवसण = धरुण (अय, अवा
धोय १११) ।
अवसा केओ अवसणा (धोय १=२ आ गुर
११ १११; गुता १७२) ।
अवसण } एक [वे] बोनुता । धरपणुओ
अवसण } (गुता १ २, २ ११) । धर-
पणुओ (अ २, १ १) ।
अवसावा ओ [अवसावा] ठाणिवा ली
धोय वना (छाया १ १ टी—अय ४१) ।

अवपुट्ट वि [अवपुट्ट] निबध छाटी किवा
पना हो वङ् ।
'ओए ससिचयणमिवाइ'
मिति ससिचयणपुट्टाई ।
विमलिवधपुट्टाई रोयविण
सपिण्डविवाइ (गुता ६) ।
अवपुसिय वि [वे] सपिण्ड संपुट (३१
१६) ।
अवपूर एक [अव + पूर] पूर कला ।
यवपूरि (अ ७१२) ।
अवपेरल एक [अवप्र + ण] अयलोका
कला । अयपेरल (उत ६, ११) ।
अवप्यओग पुं [अवप्यओग] उल्लस प्रयोज
विध बोधविधो क मिपण (अ १) ।
अवप्यार पुं [अवप्यार] विस्तार, फैलावा
'ठा अभिमिणा धरेपुडिवायप्यारप्यार'
(अ २८८) ।
अवयव पुं [अवयव] वय वयन (गउठ) ।
अवयव वि [अवयव] वैया हुमा निबधित
(अ ३) ।
अववाण वि [अववाण] वणायित
(अउठ) ।
अवयुग्म एक [अव + यु] १ वाता ।
२ अयकम 'अल ए गुग्मली एव वेकल'
वायुग्मे' (उत १ ११) । वङ्-अव
युग्माय (अ ३) । उङ्-अवयुग्मेऊय
(अ ११७) ।
अववाध पुं [अववाध] १ ज्ञान वीज (गुता
१७) । २ विज्ञान (अउठ) । ३ वायव्य
(अ २) । ४ एवरण वाय (आवा) ।
अवबोह्य वि [अवबोह्य] अयनीज-नारक
'अविक्रमालावोह्य मोहमहिमिरासउवर'
लु' (अल) ।
अवबोहि पुं [अवबोहि] १ ज्ञान । २ मिथय
मिथय (आवा १ किने ११४७) ।
अवभास एक [अव + भास्] अयनना
प्रारित होवा ।
अवभास पुं [अवभास] अयन (गुता १) ।
अवभास पुं [अवभास] ज्ञान (अ ३)
११११) ।
अवभासज वि [अवभासज] अयन-कर्म
(गुता १ ४) ।

अवभासज वि [अवभासज] प्रयक
(विने ११७२) ।
अवभासि वि [अवभासि] १ दीपमा-
प्रकाशे वाता (अउठ) ।
अवभासिय वि [अवभासित] प्रकाशित
(विने) ।
अवभासिय वि [अवभासित] धातु,
अभिलस (अ १) ।
अवम केओ ओम (आवा)
अवमग पुं [अवमग] गुनाई, वरण
पस्ता (गुता) ।
अवमग पुं [अवमग] वृत्त-किट्टेय विज्ञा
कटीय (३ ८) ।
अवमक्य पुं [अवमक्य] अल वृत्त, विध
नीय धण्य (३ १ गुता) ।
अवमल एक [अव + मल] पौक्य
अवमल, एक कला । उङ् अवमलिन
(अ १४८) ।
अवमज्ज एक [अव + मज्ज] तिप्पल
कला । अवमज्ज (अ २२) ।
अवमह पुं [अवमह] अरत विनाय (अ २)
१ २) ।
अवमह्य वि [अवमह्य] अरत करे वाता
(छाया १ ११) ।
अवमल एक [अव + मल] धरावा कला
तिप्पल कला । अयमह (अ २) । वङ्-
अवमल (अ १ ४) उङ् अवमलि
ऊय (अ २) ।
अवमलिय } वि [अवमल] अयवाव अ-
अवमय } यति (गुर ११ १२७ महा
अ) ।
अवमाण पुं [अवमाण] तिप्पल (गुर १
२११) ।
अवमाण पुं [अवमाण] १ अयवा, ति-
प्पल । २ परिणय (अ ४ १) ।
अवमाण एक [अव + मान] अयमल
कला । अयमल (अ ३) ।
अवमाणन न [अवमाणन] अयवत, अयवा
(अ २, २, अ ३) ।
अवमाणन न [अवमाणन] तिप्पल, अ-
माण (अ १) ।

अवयमाजना की [अवयमानता] अवयवसुधा (कर्म) ।

अवयमाणि वि [अवयमानि] अवयवा करने वाला (वर्ग ११) ।

अवयमापि वि [अवयमानि] विरक्त (वे १ ११ सुपु १ ५) ।

अवयमाणि वि [अवयमानि] १ अवयवा अवयव (सुर २ १०१) । २ अवयव 'अव माणिययोद्वा' (सा ११ ११) ।

अवयमार पु [अवयमार] अवयव रोच विरोच पातल (भाषा) ।

अवयमारि वि [अवयमारि] 'रि' अवयव रोच वाला (भाषा) ।

अवयमार्य पु [अवयमार्य] नीचे पकटा पकड़ (कर्म) ।

अवयमिष्यु वेदो अवयमिष्यु (श्रु) ।

अवयमि वि [वि] जिसकी बाह हो गया हो वह, कण्ठ (हृ १) ।

अवयमक वि [अवयमक] परिष्कृत (वि ११५) ।

अवयम वि [अवयम] निष्कृत (वय) ।

अवय वैको अवय = अवय (सुप १ ११) ।

अवय न [अवय] कर्म पय (पय १) ।

अवय वि [अवय] १ नीचा अवय (उप १) । २ अवय हीन अवय (सुप १ १) । ३ प्रविष्ट (का १ १) ।

अवयस पु [अवयस] १ विरोधुल विरोध (कुमा दा १०१) । २ कान का आवरण (पल्ल) ।

अवयस सक [अवयस्य] मुक्ति करना । अवयसप्रति (वि १५२, ५२) ।

अवयसक सक [अवयस्य] प्रोत्सा करना उद्य वेदना । अवयसक (श्याम १ ६) ।

वह अवयसक अवयसकमाण (श्याम १ १ भय १ २) ।

अवयसक सक [अवयस्य] १ वेदना । २ प्रोत्सा वेदना । वद अवयसक (श्रीप १०५ भा) ।

अवयसक की [अवयस्य] प्रोत्सा (श्याम १ ६) ।

अवयसक न [वि] अवयसक (भय १ १) ।

अवयसक सक [अवयस्य] जानना । अवयसक (स १११) ।

अवयसक सक [अवयस्य] वेदना । अवयसक (हृ ५ १०१) ।

अवयसक सक [अवयस्य] वेदना (श्याम १ ६) ।

अवयसक वि [वि] प्रसारित 'कु' कारण सुविमुक्तिवयसकविश्वयमकारमहा (वे १११) ।

अवयसक सक [अवयस्य] वेदना । अवयसक (हृ ५ १०१) ।

अवयसक सक [अवयस्य] वेदना । अवयसक (हृ ५ १०१) ।

अवयसक की [अवयस्य] अवयसक पकटा करना (भाषा) ।

अवयसक वि [अवयस्य] अवयसक करने वाला स्थिर रहने वाला (भाषा) ।

अवयसक की [अवयस्य] अवयसक (भाषा) ।

अवयसक वि [वि] वृद्ध में पकड़ा हुआ (वे १ ५५) ।

अवयसक न [अवयस्य] वृद्धि वयन वृद्धि माया (ठा ५) ।

अवयस सक [अवयस्य] १ नीचे उलटाना । २ वयन वृद्धि करना । अवयस (हृ १ १०२) ।

वह अवयसक, अवयसमाण (पल्ल १०२ ११ सुपा १०१) ।

अवयसक वि [अवयस्य] अवयसक (वि १ १५) ।

अवयसक वि [अवयस्य] १ जिसका अवयस किया गया हो वह । २ न. अवयस, अवयसक 'की हृ ५ सुपा १०१ अवयसक न' (सुपा १०१) ।

अवयसक वि [अवयस्य] १ कर्मा हुआ । २ नीचे उलटाना (सुर १ १०२) ।

अवयस पु [अवयस्य] १ वयन विज्ञान । २ अनुमान-प्रयोग का वाक्यार्थ (वसति १ १ २५२) ।

अवयस वि [अवयस्य] अवयस वाला (ठा १ वि १११) ।

अवयस वेदो अवयस (गट वय) ।

अवयस न [वि] नीचने की ओर लगाना (वे १ २५) ।

अवयस पु [अवयस्य] अवयस रोच (स १ ११ टी) ।

अवयस वि [अवयस्य] निर्मल (विरि १ २५) ।

अवयस पु [अवयस्य] अवयसक (स ५५५ सुपा १५) ।

अवयस पु [अवयस्य] अवयस । २ वेदना-वयसक वयसक । ३ मनुष्य वय में वेदना का प्रकाश होना 'वय' एवं वय में वेदनावयस विव माणिय' (म ५५५) ।

४ अवयस वयस (वि १ ५) । ५ अवयस (वि १ ५५) ।

अवयस पु [अवयस्य] वयसक (व ५५) ।

अवयस पु [वि] माय-वयस्य का एक वयस वयस हृ ५ वयस वयस विव माणिय (वे १ १२) ।

अवयसक न [अवयस्य] वयसक (विरि १ ५) ।

अवयसक वेदो अवयसक (स ५५) ।

अवयस वि [अवयस्य] अवयसक करने वाला (स ५५५ वि ५५) ।

अवयसक वि [अवयस्य] वयसमाण किया हुआ (स ५५५) ।

अवयस सक [वि] वयस्य वयस्य करना । अवयसक (हृ ५ १५) ।

अवयसक वि [अवयस्य] वयस्य (श्याम १ २) ।

अवयस सक [अवयस्य] वयस्य करना । अवयसक (हृ ५ १५) ।

अवयसक वेदो अवयसक (गट सुपा) ।

अवयस पु [अवयस्य] वयस्य (श्याम २५५ भा) ।

अवयसक न [अवयस्य] वयस्य (हृ १) ।

अवयसक वि [अवयस्य] वयस्य करना हुआ (वि १ ५) ।

अवयसक वि [अवयस्य] वयस्य (सुपा पाठ) ।

अवयसक की [वि] वयस्य-वयस्य, वयस में जानी जाती हो (वे १ ५५) ।

अवयस वि [अवयस्य] वयस्य, वयस्य (पा २५ गट) । हृ ५ [वयस्य] वयस्य (वयस ५) ।

[पत्त] (वे १ २२)। इर पि [पत्त]
तनवार-वार योडा (म १ १८)। इरा
को भार (उप)।

असिह (म) केओ असीह (म)।

असिह न [अशान] भोजन खाता 'धाय-
नि' पीठुविज्जमणं धाय, पुण धंसिणा इना
धवहाप इवा' (भावा २ १ २)।

असित्त न [असित्त] घाटा लवे हूय हाथ
वा बर्तन का कपड़े से ढका हुआ भोजन
(पत्र)।

असिह पि [असिह] १ धर्मिक २ ठर
रात्र प्रसिद्ध पुट डेनु (विने २ २४)।

असिय पि [अशाय] कुट्ट, काठिठ (पावा
मुना २ १२)।

असिय पि [असिय] १ इच्छ स्नेहपूर्ण
(पत्र)। २ अमुन (विने)। ३ अक्ष, ध
मणित (मुन १ २ १)। यिया एवे अमु-
नमण्डित, यमिमा एवे अमुनमण्डित' (भावा)।
कन् पुं [सि] यन्-स्नेह (उप)।

असिय न [सि] बाप बंदी (वे १ १४)।

असिपम्भ केओ अस = घरा।

असिपम्भ की [असोपा] नखन-विशेष
(मन ११)।

असिपम्भ पुं [असिपम्भ] पकीति अजस
(मन १२)।

असिय न [असिय] १ विनाश २ अमुन।
३ देवतापि इत अजस (वीन ७)। ४ मारी
पेन (बन ४)।

असिपिण पुं [असिपिण] केन देवता
(प्रावा)।

असिपम्भ केओ असिय (बन ७ ३३)।

असिपुह की [असिपुह] मिश्रपिठ की
(प्राव २)।

असिह पि [असिह] मिश्रापिठ (बन ७)।

असीह की [असीह] संरक्ष-विशेष 'असी-
(मन)। म पि [असीह] असीह
की (पत्र ७४)।

असीह पि [असीह] असीह की व
पत्र बला (उप १७)।

असीह पि [असीह] असीह की व
असीह की (उप ७२८ टी)।

असीह पि [असीह] १ कुलीन असीह
की (पत्र १ २)। २ न असीह की
असीह की। म न पि [असीह] १ असीह की
(वीन ७७३)। २ असीह (मुन १ ७)।

असीह पुं [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (पत्र १ २)।

असीह केओ असीह (पत्र)।

असीह पि [असीह] १ असीह असीह
मन (वीन १ १)। २ न असीह (उप
(ठा १ ३ १११)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह न [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असीह पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।
२ न पि [असीह] १ असीह (उप १ २१)।

असोमा की [असोम] १ इस नाम की एक
हजारी (अ ४ १) । २ मयान की शीतल
माष की शासनगी (पत्र २७) । ३ एक
मगरी का नाम (पत्र २ १८६) ।

असोमण वि [असोमण] मनुष्य, बरान
(पत्र ६३ १६) ।

असोय रेको अयोम (मग महां रंगा) ।
असोय पु [अयोयु] धादिन माध (सम
२२) ।

असोय वि [असोय] १ शीतल (महां) ।
२ न शीत का प्रभाव प्रकटित । वाइ वि
[वादिन] शरीर की ही माननेवाला
(शोक ११८) ।

असोयया की [असोयनना] शोक का
प्रभाव (पत्रिक) ।

असोबा रेको असोमा (अ २ ३ वंति
६) ।

असोक्षि वि [अपक] कषा (उवा) ।

असोहि की [असोहि] १ मृदुति । २ विर-
क्त (शोक ७८८) । ठाण न [स्वान]
१ वायु-कर्म । २ मृदुति स्वान । ३ दुर्जन का
संघर्ष । ४ मयमदन (शोक ७९९) ।

अस्त न [आस्त] शुभ दुःख (मा १०६) ।

अस्त वि [अस्त] १ प्रकटित निर्जन । २
२ निर्जन धातु धुनि (भाषा) ।

अस्त पु [अस्त] १ शोक (अ ७९८ टी) ।
२ अस्तिनी नक्षत्र का प्रतिद्रावक रेव (अ
२ १) । ३ अस्ति-विशेष (जं ७) । कण्ठ
पु [कर्म] १ एक अस्ति । २ इस अस्ति
का निरासी (अस्ति) । कण्ठ की
[कर्म] १ कालविशेष (पत्र १) ।
कण्ठ न [कण्ठ] बड़ी बीड़ा उठने में
बला हो नह स्वान प्रकटन (भाषा २,
१ १४) । गीय पु [गीय] पहले प्रति
बानुष का नाम (सम १९९) । तर पु की
[तर] बच (पत्र १) । मुख पु [मुख]
१ २ इस नाम का एक अस्तिनी कीर चरके
निवासी (अस्ति, पत्र १) । अह पु [अह]
मह-विशेष निरुपे प्रम माध जाता है
(अपु) । सेण पु [सेण] १ एक प्रसिद्ध
राजा मयान परमनाथ का पिता (पत्र
१६) । २ एक महाहृद का नाम (मय २) ।

तर पु [तर] निवाधर वंश के एक
राजा का नाम (पत्र ३, ४२) ।

अस्त न [अस्त] १ मनुष्य । २ अस्ति,
मनु (पत्र २६) ।

अस्तस वि [अस्तस] संस्था-रहित (अ
१७) ।

अस्तसि वि [वि] धामक (पत्र ५) ।

अस्तसय वि [अस्तसय] धंजन
रहित फिरी प्रकर के शारीरिक बन्ध से
रहित (मग) ।

अस्तसय रेको अस्तसय (अव) ।

अस्तसय वि [अस्तसय] १ दुःख की बाधा-
मुक्त मनोबला प्रकटित (मा ११) ।

अस्तसय रेको अस्तसय (अव) ।

अस्तसय पु [अस्तसय] प्रकटन (मुद्रा
१४६) ।

अस्तस रेको अस्तस 'मुद्रिणी हृदय बयल-
मस्तस' (अ १४६ टी) ।

अस्तसि वि [अस्तसि] अस्तसि (विशे ११९) ।

अस्तस पु [अस्तस] हृदय-विशेष पीपल
(माट) ।

अस्तस वि [अस्तस] रोषी बीमार (सुर
३ १३१; माट १३) ।

अस्तस रेको अस्तसि (सुर १४ १९ कर्म
४ २१) ।

अस्तस पु [अस्तस] १ स्वान जाह । २
अस्तिनी का स्वान (अस्ति १९; स्वान २४) ।

अस्तसि वि [अस्तसि] अस्तसि अस्त
प्यासी (मग) ।

अस्तस वि [अस्तस] अस्तस (अस्तस १४२) ।

अस्तस क [अ + अस्त] आवाहन
मेना । हृदय-अस्तसि (श्री) (पत्र १२) ।

अस्तस वि [अस्तस] अस्तस आवाहन
किया गया है नह (रे) ।

अस्तस पु [अस्तस] अस्तस = आवाहन ।

अस्तस क [अ + अस्त] आवाहन
मेना । हृदय-अस्तसि (श्री) (पत्र १२) ।

अस्तस वि [अस्तस] अस्तस आवाहन
किया गया है नह (रे) ।

अस्तस पु [अस्तस] अस्तस = आवाहन ।

अस्तस क [अ + अस्त] आवाहन
मेना । हृदय-अस्तसि (श्री) (पत्र १२) ।

अस्तस वि [अस्तस] अस्तस आवाहन
किया गया है नह (रे) ।

अस्तस पु [अस्तस] अस्तस = आवाहन ।

अस्तस क [अ + अस्त] आवाहन
मेना । हृदय-अस्तसि (श्री) (पत्र १२) ।

अस्तस रेको अस्तस = आ + अस्त ।

अस्तस रेको अस्तस = आ + अस्त । नह

अस्तस आवाहन (मय १ १) । अस्तस

अवाहन (पत्र १ १२) ।

अस्तस रेको अस्तस (कर्म २ ७; मग) ।

अस्तस पु [आवाहन] १ अस्तस अवाहन
मेना (अ ७) । २ अवाहन नक्षत्र का गीत
(हृद) ।

अस्तसि वि [आवाधि] मग्रा हुमा टव
कटा हुमा अवाहन 'मग्रा अवाधि' माध

आवाधि नह (सम १ २) ।

अस्तस क [आ + अस्त] आवाहन
मेना, अवाहन मेना । अस्तस अवाधि (श्री) (पत्र
१२) । अस्तसि (अव २ ४; वि १९१) ।

अस्तस पु [आवाहन] एक महापह
(सुत्र २) ।

अस्तस की [अस्ति] १ कोण पर आवाधि का
कोना (अ ६) । २ अवाधि आवाधि का अस्त
माध—आवाधि (अव १ २६) ।

अस्तस पु [अस्ति] अवाधि नक्षत्र का अवाधि
द्रावक (अ २ २) ।

अस्ति की [अस्ति] इस नाम का एक
नक्षत्र (सम ५) ।

अस्ति वि [अस्ति] अस्ति-माध विपण
मेगमस्ति (अपु अ ७ अवाधि १८) ।

अस्तस पु [अस्त] अवाधि, 'अस्त' (अस्ति १७) ।

अस्तस पु [अस्त] अवाधि, 'अस्त' (अस्ति १९
स्वान ८३) ।

अस्तस वि [अस्तस] अवाधि की अवाधि का अवाधि
माध की अवाधि नह (अव ३६० टी) ।

अस्तस (श्री) रेको अस्तस = अवाधि (अस्ति
१२९) ।

अस्तस वि [अस्तस] अवाधि नह अवाधि
(मय) ।

अस्तस रेको अस्तस (अव १७ विशे
१४ ८) ।

अस्तस की [अवाधि] अवाधि माध की
अवाधि (अव १) ।

अस्तस की [अवाधि] अवाधि माध की
अवाधि (अव १ १ टी) रेको अस्तस ।

अस्तस की [अवाधि] अवाधि माध की
अवाधि (अव १ १ टी) रेको अस्तस ।

अस्तस की [अवाधि] अवाधि माध की
अवाधि (अव १ १ टी) रेको अस्तस ।

अस्तस की [अवाधि] अवाधि माध की
अवाधि (अव १ १ टी) रेको अस्तस ।

अस्तस की [अवाधि] अवाधि माध की
अवाधि (अव १ १ टी) रेको अस्तस ।

अस्तस की [अवाधि] अवाधि माध की
अवाधि (अव १ १ टी) रेको अस्तस ।

अस्तस की [अवाधि] अवाधि माध की
अवाधि (अव १ १ टी) रेको अस्तस ।

अस्तस की [अवाधि] अवाधि माध की
अवाधि (अव १ १ टी) रेको अस्तस ।

अस्तस की [अवाधि] अवाधि माध की
अवाधि (अव १ १ टी) रेको अस्तस ।

धम्म—१ धम्मकण १ २ वेद १ धाम्मं ।
४ बुद्ध १ धम्मिय प्रथमं (हे २, २१७
भा १४ कण्ठ मा २४६) ।

अहा य [यया] जैसे माछिक धनुमार (हे
१ २४४) । अहं वि [अहं] १
स्वच्छदी स्त्री (दा ३११ टी) १ २ न मरती
के धनुमार (बब १) । आप वि [आप]
१ सप्त प्रावरण-पट्टि (हे १ १४२) । २ न
जस्य के धनुमार । ३ जैन साधुओं में बीजा
काल के परिमाण के धनुमार किया जाता
ब्रह्म—ममस्तर (बर्न २) । पुण्डरी बी
[पुण्डरी] यथात्म धनुम्य (साता १ १)
पत्त १ ८) । दह न [दह] ठर के
धनुमार (मय २ १) । दह न [दह्य]
मय-मय (सम १६) । पहिरुण वि
[पहिरुण] १ जलित योग्य (घोष) २
विधि दवायोग्य (विना १ १) । पयस वि
[पयस] १ पुनर् की तरह हो प्रवृत्त भारि
भित्त (छाया १) । २ न आत्मा का
परिणाम-क्रिये (स ४७) । पयसि करण
न [पयसि करण] धत्ता का परिणाम-
क्रिये (कम्म) । बायर वि [बायर]
निम्नार, धार-पट्टि (छाया १ १) । मूय
वि [मूय] धारिक बस्तुधरि (छा १ १) ।
पयसि ययणिय न [ययणिय] यया
ज्येष्ठ बड़े के ब्रह्म स (छाया १ १ भाषा) ।
रिय न [रिय] गणता के धनुमार
(भाषा) । रिह न [रिह] ययणिय (छा २
१) । २ वि जलित योग्य (बर्न १) । राय
न [राय] १ रजि के धनुमार । २ स्वभाव
के माछिक (भा २, २) । रंहुं पुं [रंहुं]
बाज का एक परिमाण वाली से बीजा हुआ
हाथ मिलने समय में भूख बाध छटना समय
(कण्ठ) । यगास न [यगास] ययणिय
के धनुमार (मूय २ १) । यय वि [यय]
पुन-स्वाधीय (मय ३ ७) । मयह वि
[मयह] ययन के योग्य (भाषा) । संवि
भाग पुं [संविभाग] मयु को बाज देता
(उग) । सय न [सय] कालविनाश
गर्वा (भाषा) । सयि न [सयि] धारिक
के धनुमार (पंहु ८) । सुत न [सुत]
पावन के धनुमार (मय ७७) । सुह न

[सुस] ह्यधनुमार (छाया १ १ मय) ।
सुहम वि [सुहम] धारमुत (मय ३ १) ।
येको अहं ।
अहाजं वि [यथात्म्य] ययमुजाव (काय)
ह्यधनुमार (मय) (भाषा २ ७ १ २) ।
अहासं वि पुं [यथात्म्य] 'ययान्' धनु
हाल करने वाला मुनि (मय ७) ।
अहासं वि [ये] निजकम नियत (निह
२) ।
अहास वि [अहास] हास्य-पट्टि (पुग
११) ।
अहाह म [अहाह] येको अहह (हे २
२१७) ।
अहि येको अमि (गज पाप पंच ४) ।
अहि य [अहि] धन धनो का लुचक धम्म—
१ धारिक विरोधता 'अहिण्य धम्मिण' ।
२ धारिक, छता 'अहिण्य' । ३ धर्म
'अहिण्य' । ४ कर्मा कर, परिहृत् ।
अहि पुं [अहि] १ धर्म धर्म (पय १, प्राहु
१२ १३ १ ३) । २ रोप नाग (पिं) ।
अह्या बी [अह्या] नवरी-मिरोय (छाया
१ १६ टी ७) । अह पुं [अह] धर्म
का धर्म (छाया १ २) । अह पुं [अहि]
रोप नाग (मय १) । अहि पुं [अहि]
धर्म के धर्म से उत्पन्न होने वाली
धर्मिक धर्म (धुमा) ।
अहियल न [ये] बीज पुष्पा (हे १ १६
पय) ।
अहिभाज न [अभिभाज] धुमोता धान
वाली (भा १८) ।
अहिभाज बी [अभिभाज] धुमोता
(पय) ।
अहिभाज पुं [अहि] लोक-यात्रा बीज-निर्वाह
(हे १ २२) ।
अहिभाज वि [अहि] ध्यान धर्म (गज) ।
अहिभाज वि [अभिभाज] १ विज्ञान, परिहृत् ।
२ उद्यत धर्मो (पाप) । ३ धर्म ने धर्म
हुमा (वेणी १२) ।
अहिभाज न [अभिभाज] धुम करना
ध्यान करना । नर्म धर्मिणी (नर्म)
अहिभाज न [अहि] यगाता धर्म

करता । अहिभाज (हे ४ २ ८ पय
धुमा) ।
अहिभाज पुं [अभिभाज] १ धर्म (पय) ।
२ धुमोता (स २२६) । येको अभिभाज
(मयि) ।
अहिभाज पुं [अहिभाज] १ धर्म का धर्म
रोप नाग (मय १) । २ धर्म धर्म (धुमा) ।
धुम न [धुम] धुमोता (पय) । धुमोता पुं
[धुमोता] धुमोता (मय २६) ।
अहिभाज वि [अहिभाज] हिता न करने
वाला (धोष ७४७) ।
अहिभाज न [अहिभाज] धर्मि (बर्न १) ।
अहिभाज येको अहिभाज (मय २ १) ।
अहिभाज बी [अहिभाज] धुमोता को किसी प्रकार
से धुम न रोप (निह २ धर्म १, धुम १
११) ।
अहिभाज वि [अहिभाज] धुमोता धर्मो
हित (धुम १ १ ४) ।
अहिभाज येको अभिभाज न [अहिभाज] धर्म
(पय ४) ।
अहिभाज वि [अभिभाज] धुमोता
धुमोता (मय) ।
अहिभाज येको अभिभाज (धुम १ १२
२२) ।
अहिभाज वि [अभिभाज] धुमोता धर्मो
धुमोता हो यह, धुमोता (पिं १२८) ।
अहिभाज येको अभिभाज (निह ४) ।
अहिभाज येको अभिभाज (भा ८) ।
अहिभाज येको अभिभाज (उप १४ १७) ।
अहिभाज येको अभिभाज (पय) ।
अहिभाज य [अभिभाज] धर्मिभाज न,
धुमोता (पाप १) ।
अहिभाज न [अहि] धर्मो, धुमोता (हे १
१२) ।
अहिभाज वि [अभिभाज] १ धुमोता ।
२ धुमोता । ३ धुमोता । ४ धुमोता ।
सिध (भा) ।
अहिभाज य [अभिभाज] धुमोता धर्मो
धुमोता करना । २ धुमोता । ३ धुमोता ।
४ धुमोता करना । ५ धुमोता । अहिभाज
न [अहि] धुमोता (म १२६) । अहि
अहिभाज न [अभिभाज] धुमोता धर्मो

सम्य—१ धामनय ॥ २ लेद ॥ ३ धामय ॥
४ दुप ॥ ५ धामिय प्रपय (हि २ २१७
या १४८ क्यू ॥ गा ११९) ॥

अहा य [यमा] वैसे माफिक धनुवार (हि
१ २४२) ॥ अह्य नि [अह्यन्] ॥
स्वच्छन्दी स्वरी (अ १११ टी) ॥ २ न. मरती
क धनुवार (बन १) ॥ आय नि [आय]
॥ मर प्रावरण-रहित (हि १ १४२) ॥ २ न
अन्य के धनुवार ॥ ३ बैन साधुओं से बीधा
काल के परिणाम के धनुवार दिया जाता
बन्य—नमस्कार (बन २) ॥ गुणुकी की
[तुपुकी] मरान्य धनुवर (छाया १ १)
पक्रम १ =) ॥ तब न [तबन्] वरक के
धनुवार (बन २, १) ॥ तब न [तब्य]
मय-मय (मम ११) ॥ पहिरन नि
[प्रतिरूप] १ अर्धत योग्य (वीर) ॥ २
निज स्वामीय (हिवा १ १) ॥ पवस नि
[प्रवृत्त] १ पूर्ण से व्युत्पन्न हो प्रवृत्त पसरि
बनित (छाया १ ४) ॥ २ न मरान्य का
परिणाम-विशेष (म ५७) ॥ पवित्रिभूज
न [प्रवृत्तिभूज] धार्या का परिणाम
विशेष (बन ५) ॥ बायर नि [बादर]
मिलन, सार-प्रतिष्ठ (छाया १ १) ॥ मूय
नि [मूय] कारिक वास्तविक (अ १ १)
राक्षस रायजिम न [राक्षि] यथा
विद्य बने के बन से (छाया १ १ छाया)
रिय न [सजु] गरलना के धनुवार
(छाया) ॥ रिह न [हि] मरान्य (अ २
१) ॥ २ नि अर्धत योग्य (बन १) ॥ रीय
न [रीय] १ रीति के धनुवार ॥ २ स्वकार
क माफिक (मय २, २) ॥ रीय पुं [रिय]
बाद का एक परिणत काली से सीका हवा
मय शिखर समय में मूय जाय उठना समय
(बन) ॥ बगास न [बकरा] धनकरा
के धनुवार (मय २, १) ॥ बय नि [कय]
गुन-स्वामीय (मम १ ७) ॥ संयह नि
[संयह] समय के योग्य (छाया) ॥ अहि-
भाग पुं [संविभाग] मनु की बात देना
(बन) ॥ मय न [मय] बलप्रियता
मरार (छाया) ॥ साय न [सि] यदि
के धनुवार (मय ४) ॥ सुय न [सुय]
धाम के धनुवार (मम ७३) ॥ सुद न

[सुद] दण्डमुसार (छाया १ १ मय) ॥
सुहम नि [सुहम] वास्तव (मम १ १)
वेको अह ॥
अहाल्य नि [यथात्म्य] यथालाभ (बन)
दण्डमुसार (मय) (छाया २ ७ १ २) ॥
अहालीनि पुं [यथात्म्य] 'यथाम' मनु
छाया करने वाला मुनि (मय ७) ॥
अहासंकाह नि [हि] निजक्य निज (निज
२) ॥
अहासक नि [अहास्य] हान्य-रहित (गुवा
११ १) ॥
अहाह य [अहाह] वेको अहह (हि २
२१७) ॥
अहि वेको अमि (गठ पाय पंचक ४) ॥
अहि य [अभि] इन धर्मों का मूचक धर्म्य—
१ धार्मिक विशेषता 'अहिंस' अहिंस' ॥
२ धार्मिक, सत्ता 'अहिंस' ॥ ३ धर्म
अहिंस' ॥ ४ अर्थ, ऊपर, अहिंस' ॥
अहि पुं [अहि] १ सर्व साध (मय १) ॥ मय
११ ११ १ १) ॥ २ शेष नाम (मय)
अह्या की [अह्या] मरति-विशेष (छाया
१ ११ टी ७) ॥ मय पुं [अह्या] साध
का गुण (छाया १ १) ॥ वर पुं [अहि]
शेष नाम (मय १ १) ॥ विभिन्न पुं
[अहि] सर्व के मूय से उत्पन्न होन वाली
धुविक वाति (गुवा) ॥
अहिअन न [हि] शेष गुणा (हि १ ११
पद) ॥
अहिआन न [अभिजात] दुर्लभता धान-
वासी (या १३) ॥
अहिआह की [अभिजाति] दुर्लभता
(पद) ॥
अहिआर पुं [हि] लोक-धारा जीवन-निर्वाह
(हि १ २१) ॥
अहिउत नि [हि] ध्यात धर्म (मय) ॥
अहिउत नि [अमयुक्त] १ निद्रा, पवित्र ॥
२ उद्यत उद्योगी (मय) ॥ ३ शत्रु से विर
हवा (कैरी १२१ १) ॥
अहिउत मक [अमय + पूरय] पूर्ण करना
ध्यात करना ॥ मय धर्म-अभि (मय ४)
अहिउत मक [दह] उन्माद दह

करना ॥ अहिउत (हि ४ २ ८ पद)
गुवा) ॥
अहिउय पुं [अभियोग] १ संभव (मय) ॥
२ बोधोत्पत्ति (म २२६) ॥ शेषो अभिउय
(मय) ॥
अहिउ पुं [अहिउ] १ सर्व का राजा
शेष नाम (मय १) ॥ २ शेष सर्व (गुवा) ॥
गुर न [गुर] धामुनि-नगर ॥ गुरणाह पुं
[गुरनाय] निज्य मयुत (मय २६) ॥
अहिमग नि [अहिमग] शिवा न करने
वाला (मय ७४७) ॥
अहिमग न [अहिमग] अहिम (मय १) ॥
अहिसय यको अहिमग (मय २ १) ॥
अहिमग की [अहिम] दूसरे को किसी प्रकार
से दुःख न देना (निज २) ॥ मय १
११) ॥
अहिमिय नि [अहिमि] धनारित धनी-
हित (मय १ १ ४) ॥
अहिमग यको अभिमग न अहिमग
(मय ४) ॥
अहिमग नि [अभिमग] अभिमग
इन्द्र (मय) ॥
अहिकम्य यको अहिमग (मय १ १२
२२) ॥
अहिकय नि [अहिमग] जिसका धर्मिकार
बनता हो वह प्रत्युत (मय ११८) ॥
अहिकय यको अहिमग (निज ४) ॥
अहिकरणी यको अहिमग (वा ८) ॥
अहिकार यको अहिमग (मय १४ १७) ॥
अहिमग यको अहिमग (मय) ॥
अहिकय य [अभिमग] धर्मिकार कर
करेय कर (मय १) ॥
अहिकय य [हि] उद्योग उद्योग (हि १
१२) ॥
अहिकय नि [अभिमग] १ विरम्य ॥
२ निज ॥ ३ स्थान ॥ ४ परिणत ॥ ५
विम (मय) ॥
अहिकय य [अभि + मिय] १
विस्मय करना ॥ २ केंद्रना ॥ ३ निजना ॥
४ मरान्य करना ॥ ५ सीना देना ॥ अहिम
न (मय) ॥ अहिमग (म २२६) ॥ अह
अहिमग (मय ६४, ४४) ॥

अहिक्कल्ल पुं [अभिसेप] १ विष्कार ।
२ स्नान । ३ प्रेरण (मत्) ।

अहिसिक्क वेदो अहिसिक्क वट अहिसिक्क
(स २७) ।

अहिा वेदो अहिा = धक्क (विदे १२४३
टी) ।

अहिासीर मक् [हे] १ पक्कत । २ घात
करता । अहिासीर (अहि) ।

अहिास वि [अहिास] धक्क मक् बाला
(गठ) ।

अहिास मक् [अपि + गम्] १ बालता ।
२ निर्णय करता । ३ प्राप्त करता । ४
अहिास (धम्म १९७) ।

अहिास लक् [अभि + गम्] १ सामने
बाला २ दावर करता । ४ अहिास
(मत्) ।

अहिास पुं [अपिगाम] १ बाल (विदे
१८) ।

‘बीबाहिएअहिाको निक्कल्लस पओवसमने’
(बस २) । २ उत्तम प्राप्ति (वे ७ १४) ।

१ पुन पयि व जनेअ (विदे २९७९) ।
४ लक्, धक्क (सम ३१) । ५ ल, पुन धक्क
के जनेअ वे हेनेअली उअने—मय-
क (पुन १४५) । म् की [कवि] १
सम्पन्न का एक मेर । २ सम्पन्न बाला
(पन १४२) ।

अहिास हेयो अभिास (बीन वे ११
गठ) ।

अहिास न [अपिगामन] १ ज्ञान । १
निर्णय । ३ प्राप्ति करल्ल (विदे) ।

अहिासय वि [अपिगामक] पक्कल्ल
वतल्लेअला (विदे ११) ।

अहिासिय वि [अपिगत] १ ज्ञात । २
निष्ठ (पुन १११) ।

अहिासम वेदो अहिास = पयि + गम् ।
अहिासम वेदो अहिास = पयि + गम् ।

अहिास वि [अपिगत] १ प्रणुत (पण्य
१२) । २ न प्रत्यान प्रवेग (पण्य) ।

अहिास वि [अपिगत] १ पण्य प्राप्त
(सत १) २ ज्ञात (वे १४ १५) । ३
नू टीगर्ध बुनि ठाअक्कल्ल कणु (पन १) ।

अहिास पुं [हे] पयवर (बीन १) ।

अहिास पुं [अधिकरण] १ मुख सवाई
(उप ५ २१) । २ अर्धम पाप-बर्मे वे

धम्मिणि (उप ५७२) । ३ पाप-मिल बाल
मल्ल (हा २, १) । ४ पाप जलक क्रिया
(साया १२) । ५ बाधार (विदे ५४) ।

६ मेट, उअर (पुन १) । ७ कल्ल, विचार
(पुन १) । ८ हिा का उपकरण ‘भीहवेअ
य एअर हलउअल्लमुअल्लपुअरहिावण’ (विदे
६१) । ९ क, कर वि [कर] कल्लकारक
(पुन १२ २) घात । किरिया ली
[क्रिया] पाप-जलक कृति दुर्णीत में के
बालेअली क्रिया (पह १२) । तिरुव
पुं [मिहास] भाग्यविक सिद्धि करनेअला
मिहास (पुन १२२) ।

अहिासपी की [अधिकरणी] बोहार क
एक उपकरण (हा ११ १) । सोहि की
[‘मोटि] विवर धक्कल्लपी ली बली
हे बू कल्ल (हा ११ १) ।

अहिासपीया की [अधिकरणी] वेदो
अहिासपीया की [अहिास-किरिया] (स
२ हा ११ १७) ।

अहिापी [हे] धक्कल्ल, ली पयवर (बीन
२) ।

अहिास पुं [अधिकार] १ विषय संघटि
‘निवअहिासपुअर कम्मल्लमहिं विविस्सायो
(पुन ४१) । २ हक्क वता (पुन १३) ।
३ प्रत्यान प्रवेग (विदे ४५७) । ४ धक्क-
विषय (पुन) । ५ बोअला, पावला (पुन
१३३) ।

अहिास वि [अधिकारि] १ धक्क
अहिासिय [धक्क, पण्य मिहक्क वतल्लेअला
‘ता लणुअहिापी धक्कल्ले लण धम्म कल्ले’
(पुन १३ हा १७) । २ पाप योग्य (पण्य
१३३, मत्) ।

अहिासि ध [अधिकार्य] धक्कल्ल करके
(उअर १३३ ६६) ।

अहिास पुं [अभिपात] धक्कल्ल पापल
(मत्) ।

अहिासपी की [अहिासपीया] बयरी-विदे
मुअरल्ल वेद की प्राणीन राजबली (मिदि
७८) ।

अहिासपी की [अभिजाति] दुर्णीकता (मत्) ।

अहिास लक् [अभि + हा] पक्कल्लता ।
महि पक्कल्लतासि (ली) (वि ३१४) ।

अहिास वि [अभिपात] दुर्णीक (मत् ११३) ।

अहिास वेदो अभिास । लक् अहिासिय
(मत्) ।

अहिास वेदो अभिास (मत् ४) ।

अहिास लक् [अभि + ह] पक्कल्ल धक्कल्ल
करता । अहिास (सं २) । लक् अहिास
अहिासमा (उप ११६ टी ज्ञा) । लक्
अहिासिअ अहिास (सं १ पुन ११२)
लक् अहिासिअ (सं ४) ।

अहिास वि [अभिपात] लणु की बोरी-प
बाला हुआ (बाए) (वे ७ ६२) ।

अहिास } वि [अभि] बालकार, निह
अहिास } (वि २१६ ज्ञाक वद) ।

अहिास वि [अध्ययन] पक्कल्ल धक्कल्ल (विदे
७ टी) ।

अहिास (ली) वेदो अहिास (मत् ५७) ।

अहिासिय वि [अध्ययन] पक्कल्ल पक्कल्ल
हुआ (सं ५ ३३) ।

अहिासिय वि [अधीत] पक्कल्ल धक्कल्ल (पुन
५ ६२ ज्ञा ५९ टी) ।

अहिासिय वि [अभिपात] धक्कल्ल धक्कल्ल
(मत् ११३) ।

अहिास लक् [अभि + हा] करता । अहिास
(सं ६, ४ २) ।

अहिास वि [अभिपात] धक्कल्ल धक्कल्ल
करता

‘अधीतपनिधुपि, न प्रिविआ न वीअ ।
निगंभारिअहेअ, मुअल्लमहिास’
(सं १, ६२) ।

अहिास वेदो अहिास (पना ७ १३) ।

अहिास लक् [अभि + हा] १ ऊपर बलता ।
२ धक्कल्ल लेता । ३ धक्कल्ल, निवतल्ल करता ।
४ धक्कल्ल करता । ५ करता । ६ धक्कल्ल । ७
धक्कल्ल करता । ८ ऊपर बल्ल लेता । ९
वतल्ल करता । अहिास (मिदि २) । ‘ता अहि
‘हि धक्कल्ल’ (सं ४ ४) । अहिास (वि
२३२ ५९९) । लक् अहिास (मिदि ३) ।
लक् अहिास (मिदि १२) । लक् अहिास
(सं ९) ।

अहिष्टाण न [अभिपान] १ बैठना (निष्ठ २) । २ धामपण (सुप्र २ १) । ३ मासिक बन्ना (भाषा) । ४ स्वाध, धामप्य (स ४ २६) ।

अहिष्टायग नि [अभिष्टायक] धामप्य अधि पति (कुप्र २ १२) ।

अहिष्टायण न [अभिष्टापन] अग्नर रक्षण (निष्ठ २) ।

अहिष्टिय नि [अभिष्टित] १ अध्याधित (छाया १ १४) । २ धरीन किया हुआ (छाया १ १४) । ३ आचल्य अधिष्ट (छा २ २) ।

अहिष्टाण न [अभिष्टान] अग्नर-अधेठ (पत्र १ १३) ।

अधिष्ठय नि [अधिष्ठित] अधिष्ठित अधिष्ठय निष्ठे पद्वे न (पत्र) ।

अधिष्ठय देवो अधिष्ठय । नक्ष. अधिष्ठय धाम्य (पत्र १ १२) कश्च अधिष्ठ निष्ठमात्र अधिष्ठयिअमात्र (भाषा नि २ ११) ।

अधिष्ठय देवो अधिष्ठय (पत्र १ ३) धरे ।

अधिष्ठि नि [अधिमिष्ठ] आत्म्य मालने वाला (स १ १०) ।

अधिष्ठिय देवो अधिमिष्ठिय (पत्र १ १३ स १४) ।

अधिष्ठय देवो अधिम्य (कम्प, सण) ।

अधिष्ठय दु [अधिम्य] १ अनुष्ठान काय का कर्ता पत्रा प्रपण (स १ १) । ३ नि मृगन म्या (छाया १ २ सुपा ३३) ।

अधिष्ठय देवो अधिष्ठि ।

अधिष्ठय देवो अधिष्ठि ।

अधिष्ठय देवो अधिष्ठय (मधि) ।

अधिष्ठय देवो अधिष्ठय [अधिमिष्ठ] आत्म्य-मालने माल्य (मण्य २२) ।

अधिष्ठय देवो अधिष्ठय [अधिमि + वस्] वसना, रक्षा । नक्ष. अधिष्ठयधाम्य (कुप्र २ ११) ।

अधिष्ठय देवो अधिष्ठय [अधिमिष्ठ] धामप्य-धरत (स २ ११) ।

अधिष्ठय देवो अधिष्ठय [अधिमिष्ठ] धामप्य, लुठ (स १ २१) धमि १२) ।

अधिष्ठय देवो अधिष्ठय [अधिमिष्ठ] धामप्य (सि ४ २) ।

अधिष्ठि की [अधि] मासि (वक्ता १ १४) । अधिष्ठि देवो अधिष्ठि नक्ष. अधिष्ठयधाम्य (सुर ३ १२) ।

अधिष्ठि नि [अधिमिष्ठ] हण हण रण बाला (पत्र २) ।

अधिष्ठि सक्त [अधि + न] लुठि करना प्रयत्न । नक्ष. अधिष्ठयधाम्य (सुर ३ १०) ।

अधिष्ठि नि [अधिष्ठ] मेरुधित मयुधुत (सा २ १३ १८) ।

अधिष्ठय न [अधिमिष्ठान] निष्ठ, मिष्टाती (समि १ १) ।

अधिष्ठि नि [अधिष्ठ] निष्ठुल जात (सि १ २६) ।

अधिष्ठि नि [अधिमिष्ठ] धामप्य संस्थापित (स २) ।

अधिष्ठि देवो अधिष्ठि = धमि + ह ।

अधिष्ठय नि [अधिमिष्ठ] के बाला बाला (सुपा २४) ।

अधिष्ठय की [अधिष्ठय] अधिष्ठय देव (सुपा १ कम्प) ।

अधिष्ठि सक्त [अधि + न] हण करना । अधिष्ठि (स १ २६) । अधि अधिष्ठि (स १ २६) ।

अधिष्ठय नि [अधिमिष्ठ] हण किया हुआ (स १ १४) ।

अधिष्ठय सक्त [अधि + वस्] धीकना, सामने धीक कर बाला । नक्ष. अधिष्ठय (सि १ २६) ।

अधिष्ठय देवो अधिष्ठय (सा १ १ सुपा अधिष्ठय १ २२) ।

अधिष्ठय देवो अधिष्ठय (स १ २२) ।

अधिष्ठय सक्त [अधि + वस्] धीकना, सामने धीक कर बाला । नक्ष. अधिष्ठय (सि १ २६) ।

अधिष्ठय देवो अधिष्ठय (स १ २२) ।

अधिष्ठय सक्त [अधि + वस्] धीकना, सामने धीक कर बाला । नक्ष. अधिष्ठय (सि १ २६) ।

अधिष्ठय देवो अधिष्ठय (स १ २२) ।

अधिष्ठय सक्त [अधि + वस्] धीकना, सामने धीक कर बाला । नक्ष. अधिष्ठय (सि १ २६) ।

अधिष्ठय देवो अधिष्ठय (स १ २२) ।

अधिष्ठय सक्त [अधि + वस्] धीकना, सामने धीक कर बाला । नक्ष. अधिष्ठय (सि १ २६) ।

अधिष्ठय सक्त [अधि + वस्] धीकना, सामने धीक कर बाला । नक्ष. अधिष्ठय (सि १ २६) ।

देवता । २ समान रूप से देवता । अधिष्ठय (सुप्र १ २ १ १२) ।

अधिष्ठय देवो अधिम्य (महा कम्प) ।

अधिष्ठय देवो अधिम्य (स १ ११ टी स १४) ।

अधिष्ठय देवो अधिम्य (महा) ।

अधिष्ठय देवो अधिम्य (महा) ।

अधिष्ठय देवो अधिम्य (महा) ।

अधिष्ठय देवो अधिम्य (महा) ।

अधिष्ठय देवो अधिम्य (महा) ।

अधिष्ठय देवो अधिम्य (महा) ।

अधिष्ठय देवो अधिम्य (महा) ।

अधिष्ठय देवो अधिम्य (महा) ।

अधिष्ठय देवो अधिम्य (महा) ।

अधिष्ठय देवो अधिम्य (महा) ।

अधिष्ठय देवो अधिम्य (महा) ।

अधिष्ठय देवो अधिम्य (महा) ।

अधिष्ठय देवो अधिम्य (महा) ।

अधिष्ठय देवो अधिम्य (महा) ।

अधिष्ठय देवो अधिम्य (महा) ।

अधिष्ठय देवो अधिम्य (महा) ।

अधिष्ठय देवो अधिम्य (महा) ।

अधिष्ठय देवो अधिम्य (महा) ।

अधिष्ठय देवो अधिम्य (महा) ।

अधिष्ठय देवो अधिम्य (महा) ।

अधिष्ठय देवो अधिम्य (महा) ।

अधिकार्य पुं [अधिकार्य] १ विवरण ।
२ स्थापन । ३ प्रेरणा (नट) ।
अधिकार्य सेवो अधिकार्य वह अधिकार्य
(स २७) ।
अधिकार्य सेवो अधिकार्य = अधिकार्य (विशे १२५४
टी) ।
अधिकार्य सक्त [वि] १ पकटना । २ बाधित
करना । अधिकार्य (वि) ।
अधिकार्य वि [अधिकार्य] अधिकार्य कर्म कर्म
(नट) ।
अधिकार्य सक्त [अधि + रम्] १ बाधित ।
२ निरुद्ध करना । ३ प्राप्त करना । ४
अधिकार्य (सम् ११७) ।
अधिकार्य सक्त [अधि + रम्] १ हासने
माना २ धारण करना । ४ अधिकार्य
(सक्त) ।
अधिकार्य पुं [अधिकार्य] १ ज्ञान (विशे
३ ५) ।
'धीर्वाह्यमधिकार्यो निष्कलत्वं लघोःपुनर्मार्गः'
(सम् २) । २ उत्तम प्रतीति (स ७ १४) ।
३ बुद्धि धारि का ज्ञान (विशे २१७२) ।
४ सेवा, पक्ष (सम् ११) । ५ न. बुद्धि धारि
के उपरान्त से होनेवाली उत्तम-प्रतीति—सम्प-
न्न (मुपा १४) । ६ की [अधिकार्य] १
नम्पन्न का एक सेव । २ नम्पन्न का
(स १४२) ।
अधिकार्य सेवो अधिकार्य (धीर् वा = ११
नट) ।
अधिकार्य त [अधिकार्य] १ ज्ञान । २
निरुद्ध । ३ प्रतीति उत्तम (विशे) ।
अधिकार्य वि [अधिकार्य] कर्मकर्म
वत्समता (विशे ३ १) ।
अधिकार्य वि [अधिकार्य] १ ज्ञान । २
निरुद्ध (स १८२) ।
अधिकार्य सेवो अधिकार्य = अधिकार्य + रम् ।
अधिकार्य सेवो अधिकार्य = अधिकार्य + रम् ।
अधिकार्य वि [अधिकार्य] १ प्रत्युत्त (स १८)
१८) । २ न. प्रत्युत्त प्रत्युत्त (स १८) ।
अधिकार्य वि [अधिकार्य] १ प्रत्युत्त प्रत्युत्त
(स १८) । २ स १८ (१८) । ३
पुं दीर्घा बुद्धि साक्षात्पक्ष (स १८) ।
अधिकार्य पुं [वि] सक्त (धीर् वा १) ।

अधिकार्य पुं [अधिकार्य] १ बुद्धि कर्मा
(स १८) । २ सक्त वाच्यार्थ से
प्रतीति (स ८७२) । ३ वाच्य विषय वाच्य
वस्तु (स २ १) । ४ वाच्य वस्तु क्रिया
(स १८) । ५ वाच्य (विशे ८४) ।
६ सक्त, ज्ञान (स १८) । ७ सक्त विषय
(स १८) । ८ विषय का ज्ञान 'मोक्षार्थं'
य एवम् हुन ज्ञानवस्तुवत्पुनर्मार्गः (विशे
२२) । ९ सक्त, सक्त वि [अधिकार्य] कर्मकर्म
(स १८) । १० वाच्य । विरुद्धा सक्त
[क्रिया] वाच्य-वस्तु कर्म पुनर्मार्ग से
वाच्यवस्तु क्रिया (स १८) । ११ सक्त
पुं [विषय] वाच्यविषय विरुद्धा कर्मकर्म
विषय (स १८) ।
अधिकार्य की [अधिकार्य] ज्ञान का
एक वस्तु (स १८) । १२ सक्त की
[लोप] विरुद्धा अधिकार्य की सक्त
१३ सक्त सक्त (स १८) ।
अधिकार्य की [अधिकार्य] सेवो
अधिकार्य की अधिकार्य-विषय (स
१८) । १४ स १८ स १८) ।
अधिकार्य [वि] सक्त की सक्त (धीर्
२) ।
अधिकार्य पुं [अधिकार्य] १ सक्त सक्त
'नियमिताप्युक्तं नम्पन्नमधिकार्यं निष्कलत्वं'
(मुपा १४) । २ सक्त सक्त (मुपा १४) ।
३ प्रत्युत्त प्रत्युत्त (विशे ४८७) । ४ सक्त-
विषय (स १८) । ५ सक्त, वाच्य (स १८)
१८) ।
अधिकार्य [वि] [अधिकार्य] १ सक्त
अधिकार्य [वि] सक्त, सक्त सक्त सक्त
'वा तन्पुनर्मार्गः सक्त सक्त सक्त'
(मुपा १८) । २ सक्त सक्त (स १८)
१८) ।
अधिकार्य [वि] [अधिकार्य] अधिकार्य सक्त
(स १८) । २ स १८) ।
अधिकार्य पुं [अधिकार्य] वाच्यवाच्य वाच्य
(नट) ।
अधिकार्य की [अधिकार्य] नपुंसक-विषय,
नपुंसक सेवो सक्त सक्त सक्त (विशे
८८) ।
अधिकार्य की [अधिकार्य] नपुंसक-विषय,
नपुंसक सेवो सक्त सक्त सक्त (विशे
८८) ।

अधिकार्य सक्त [अधि + रम्] अधिकार्य ।
सक्त अधिकार्य (स १८) ।
अधिकार्य वि [अधिकार्य] नपुंसक (स १
१८) ।
अधिकार्य सेवो अधिकार्य । सक्त अधिकार्य
(स १८) ।
अधिकार्य सेवो अधिकार्य (स ८४) ।
अधिकार्य सक्त [अधि + रम्] अधिकार्य, सक्त
करना । अधिकार्य (स १८) । सक्त अधिकार्य,
अधिकार्य (स १८) । सक्त अधिकार्य,
अधिकार्य (स १८) । सक्त अधिकार्य,
अधिकार्य (स १८) ।
अधिकार्य वि [अधिकार्य] सक्त सक्त सक्त
सक्त सक्त (स १८) ।
अधिकार्य [वि] [अधिकार्य] वाच्यवाच्य, निरुद्ध
अधिकार्य (स १८) ।
अधिकार्य न [अधिकार्य] सक्त, सक्त (विशे
८ ८) ।
अधिकार्य (स १८) सेवो अधिकार्य (सक्त सक्त) ।
अधिकार्य वि [अधिकार्य] सक्त सक्त सक्त
सक्त सक्त (स १८) ।
अधिकार्य वि [अधिकार्य] सक्त सक्त सक्त
सक्त सक्त (स १८) ।
अधिकार्य सक्त [अधि + रम्] करना । अधिकार्य
(स १८) ।
अधिकार्य वि [अधिकार्य] अधिकार्य विषय,
सक्त
'नपुंसक-विषय न निष्कलत्वं न सक्त ।
नियमिताप्युक्तं, नपुंसक-विषय'
(स १८) ।
अधिकार्य सेवो अधिकार्य (स १८) ।
अधिकार्य सक्त [अधि + रम्] १ सक्त करना ।
२ वाच्य सक्त । ३ सक्त निरुद्ध करना ।
४ सक्त करना । ५ सक्त । ६ सक्त । ७
वाच्य करना । ८ सक्त सक्त सक्त ।
सक्त करना । अधिकार्य (स १८) । 'वा अधिकार्य'
'विशे सक्त सक्त' (स १८) । अधिकार्य (स १८)
१८) । २ सक्त अधिकार्य (स १८) । सक्त
अधिकार्य (स १८) । अधिकार्य (स १८) ।
अधिकार्य (स १८) ।

अभिज्ञान न [अभिज्ञान] १ बीजा (निष् ५) । २ धाम्पण (सुर २ ३) । ३ मासिक बतना (बाबा) । ४ स्थान धाम्पण (स ४२६) ।

अभिज्ञायग वि [अभिज्ञायक] धम्मज अभि पति (कुप २११) ।

अभिज्ञायग न [अभिज्ञायन] जयर एवमा (निष् ५) ।

अभिज्ञिय वि [अभिज्ञिय] १ धम्मसित (छावा १ १४) । २ धरोम किया हुआ (छावा १ १४) । ३ धाम्पण धाणि (छा ५, २) ।

अभिज्ञान न [अभिज्ञान] धाम्पण-अपेक्षा (पक् ११३) ।

अभिज्ञुप वि [दे अभिज्ञुप] धीमिप 'अभिज्ञुप' धीमिप पञ्च 'अ' (पाम) ।

अभिज्ञं देवो अभिज्ञं देव । नह अभिज्ञं माज (पक्म ११ १२) ककड अभिज्ञं-विज्जमाण अभिज्ञंवीभमाण (माट पि २६६) ।

अभिज्ञं देवो अभिज्ञं देव (पक्म २ १, ५) ।

अभिज्ञं वि [अभिज्ञं] धाम्पण मानने बासा (स १७७) ।

अभिज्ञं देवो अभिज्ञं देव (पक्म २ २२६ स १४) ।

अभिज्ञं देवो अभिज्ञं देव (कपु; सण) ।

अभिज्ञं देवो अभिज्ञं देव (१) देवता का कर्ता एव प्रपञ्च (सि १६) । ३ वि ज्ञान नवा (छावा १ २ सुवा ३३) ।

अभिज्ञं देवो अभिज्ञं देव ।

अभिज्ञं देवो अभिज्ञं देव ।

अभिज्ञं देवो अभिज्ञं देव ।

अभिज्ञं देवो अभिज्ञं देव ।

अभिज्ञं देवो अभिज्ञं देव ।

अभिज्ञं देवो अभिज्ञं देव ।

अभिज्ञं देवो अभिज्ञं देव ।

अभिज्ञं देवो अभिज्ञं देव ।

अभिज्ञं देवो अभिज्ञं देव ।

अभिज्ञं देवो अभिज्ञं देव ।

अभिज्ञं देवो अभिज्ञं देव ।

अभिज्ञं देवो अभिज्ञं देव ।

अभिज्ञं देवो अभिज्ञं देव ।

अभिज्ञी की [अभि] गणि (रक्का ११४) ।
अभिज्ञी देवो अभिज्ञा नह अभिज्ञं देव (सुर १ १२) ।

अभिज्ञी वि [अभिज्ञी] हण हण रंग बासा (यज्ज) ।

अभिज्ञं देव [अभि + ज्ञ] स्तुति करना प्रसंग । नह अभिज्ञं देव (सुर १ ७७) ।

अभिज्ञं वि [अभिज्ञ] जेवण्डि पञ्चमण्ड (गा २६६, १८) ।

अभिज्ञायग न [अभिज्ञान] पिक्क, मिग्गानी (धमि १६) ।

अभिज्ञं वि [अभिज्ञ] निगुण जावा (हि १ ३६) ।

अभिज्ञं देव [अभिज्ञ] तापित संतापित (सुर २) ।

अभिज्ञा देवो अभिज्ञ = धमि + दे ।

अभिज्ञायग वि [अभिज्ञायक] धे बासा जावा (सुवा ३४) ।

अभिज्ञं देवो अभिज्ञं देव । धमिज्ञा देव (सुवा १, ३ कपु) ।

अभिज्ञं देव [अभि + ज्ञ] हैयन करना । धमिज्ञं देव (स १२६) । जवि धमिज्ञं देव (स १२६) ।

अभिज्ञं देव [अभिज्ञ] हैयन किया हुआ (स १२६) ।

अभिज्ञं देव [अभि + ज्ञ] धीवण, धाम्पण धीव कर बासा । नह अभिज्ञं देव (सि १६ २६) ।

अभिज्ञं देवो अभिज्ञं देव (बा ११) सुवा अभिज्ञं देव (२४) ।

अभिज्ञं देवो अभिज्ञं देव (स १२६) ।

अभिज्ञं देव [अभि] प्रहण करना । अभिज्ञं देव (हि ४ २ २) पक्क । अभि पक्कुलवि (कपु) ।

अभिज्ञं देव [अभि + गम्] धाम्पण । अभि-पक्कुल (हि ४ १६६) ।

अभिज्ञं देव [अभि] धाम्पण (कपु) ।

अभिज्ञं देव न [दे] धुग्गण, धुग्गण (दे १ ४२) ।

अभिज्ञं देव [अभि + पत्त] धाम्पण बासा । धमिज्ञं देव (पक् १ ९) ।

अभिज्ञं देव [अभि + ज्ञ] १ धमिक्

देवता । २ समान रूप से देवता । धमिज्ञं देव (सुवा १ २, १ १२) ।

अभिज्ञं देवो अभिज्ञं देव (महा कपु) ।

अभिज्ञं देवो अभिज्ञं देव (स १ ११ टी स ३४) ।

अभिज्ञं देवो अभिज्ञं देव (पक्क) ।

अभिज्ञं देव [अभिज्ञं] धमिज्ञं देव (कपु) ।

अभिज्ञं देव [अभिज्ञं] धमिज्ञं देव (महा कपु) ।

अभिज्ञं देव [अभिज्ञं] धमिज्ञं देव (महा कपु) ।

अभिज्ञं देव [अभिज्ञं] धमिज्ञं देव (महा कपु) ।

अभिज्ञं देव [अभिज्ञं] धमिज्ञं देव (महा कपु) ।

अभिज्ञं देव [अभिज्ञं] धमिज्ञं देव (महा कपु) ।

अभिज्ञं देव [अभिज्ञं] धमिज्ञं देव (महा कपु) ।

अभिज्ञं देव [अभिज्ञं] धमिज्ञं देव (महा कपु) ।

अभिज्ञं देव [अभिज्ञं] धमिज्ञं देव (महा कपु) ।

अभिज्ञं देव [अभिज्ञं] धमिज्ञं देव (महा कपु) ।

अभिज्ञं देव [अभिज्ञं] धमिज्ञं देव (महा कपु) ।

अभिज्ञं देव [अभिज्ञं] धमिज्ञं देव (महा कपु) ।

अभिज्ञं देव [अभिज्ञं] धमिज्ञं देव (महा कपु) ।

अभिज्ञं देव [अभिज्ञं] धमिज्ञं देव (महा कपु) ।

अभिज्ञं देव [अभिज्ञं] धमिज्ञं देव (महा कपु) ।

अभिज्ञं देव [अभिज्ञं] धमिज्ञं देव (महा कपु) ।

अभिज्ञं देव [अभिज्ञं] धमिज्ञं देव (महा कपु) ।

अभिज्ञं देव [अभिज्ञं] धमिज्ञं देव (महा कपु) ।

अहिबण्ण वि [दे] पीसा दीर तास रंग
बासा (दे १ ३१) ।

अतिवण्ण [दे] रेको अहिमंजु (पद ३) ।
अहिबण्ण

अहिबसी की [अहिबसी] नाग-बझी (तिरि
८०) ।

अहिबस सक [अधि + वस] निवास
करना रहना । गह अहिबसंत (स १ ८) ।
अहिबाद्य वि [अभिवाद्यत] अभिनिष्ठ
(स ३१५) ।

अहिबायण रेको अभिवायण (पधि) ।

अहिबाळ वि [अभिपाळ] वाक्य रखक
(पधि) ।

अहिबास पुं [अभिवास] बासा संस्कार
(दे ७ ८८) ।

अहिबासन न [अभिवासन] संस्कारवान
(संवा ८) ।

अहिबासि वि [अभिवासिन्] निवासी
(पद १८०) ।

अहिबासित वि [अभिवासित] धनामा
हुवा कम्पार किया हुवा (स ३ १ दे) ।

अहिबिण्णा की [दे] इत-साल्पना की उन
पत्नी (दे १ २४) ।

अहिस्सं की [अभिघाट्टा] भ्रम खिन्न
(पद ५२ २२) ।

अहिस्सं की [अभिघाट्टा] भ्रम कर (सुम
१ १२ २०) ।

अहिस्संमय न [अभिस्संमयन] नियन्त्रण
(गठ) ।

अहिस्संमारण न [अभिस्संमारण] अभिघात
(संवा ३ १६) ।

अहिस्संभि पुं की [अभिस्संभि] अधिपति
मत्तम (पण्ड १ २ स ५६३) ।

अहिस्संभि पुं [दे] बांवार (दे १ १२) ।

अहिस्संम पुं न [अभिस्संम] संमुख
ममन (पद २) ।

अहिसर सक [अभि + स] १ प्रवेश करना ।
२ धनने स्थित—प्रिय के पास जाना । प्रयो-
नर्न अमियादीमरि (सी) (गठ) । हिह अभि
सारिंदु (सी) (गठ) ।

अहिसरण न [अभिसरण] प्रिय के समीप
ममन (स ३१३) ।

अहिसरिअ वि [अभिसरु] १ प्रिय के समीप
पत । २ प्रकट (वाचन) ।

अहिस्सण न [अभिस्सण] चाल करना
(अ १) ।

अहिस्साय रेको आक्रम = घा + कम् । अहि
घाणय (मक ७३) ।

अहिस्साम वि [अभिस्साम] कला कृष्ण
कणें बल्ला (पठ) ।

अहिस्साय वि [दे] पूर्ण पुण (दे १ २) ।

अहिस्सारण न [अभिस्सारण] १ आत्मन
(सं १ १२) । २ पति के लिए संवेत स्थान
पर जाना (गठ) ।

अहिस्सारिअ वि [अभिस्सारित] घातित (दे
१ १३) ।

अहिस्सारिआ की [अभिस्सारिका] नावक
को मिलने के लिए संवेत स्थान पर जानेवाली
की (हुमा) ।

अहिस्सिअ न [दे] १ घनित वह की घाटका
से छेद करना—टोना (दे १ ३) । २ वि
प्रकट वह से भयभीत (पद) ।

अहिस्सिअ रेको अभिस्सिअ । अहिस्सिअ
(महा) । संक अहिस्सिअ (स ११६) ।

अहिस्सिअ न [अभिस्सिअ] धमिके (स १
२२) ।

अहिस्सिअ रेको अभिस्सिअ (महा) गुरु न
११६) ।

अहिस्सेअ रेको अभिस्सेअ (मुवा ३० गठ) ।

अहिस्सेअ वि [अभिस्सेअ] खन किना हुवा
(अ १०८ दी) ।

अहिस्सेअ पुं [अभिस्सेअ] घातक (वाच) ।

अहिस्सेअ वि [अभिस्सेअ] १ बाधात-भात
(सं २, ७०) । २ माथि व्यापारित (स १४
१२) ।

अहिस्सर सक [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ घन टोपना, पिरावना । ४
प्रतिभाषा हुमा लयना

अहिस्सरण सक [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ घन टोपना, पिरावना । ४
प्रतिभाषा हुमा लयना

अहिस्सरण सक [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ घन टोपना, पिरावना । ४
प्रतिभाषा हुमा लयना

अहिस्सरण सक [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ घन टोपना, पिरावना । ४
प्रतिभाषा हुमा लयना

अहिस्सरण सक [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ घन टोपना, पिरावना । ४
प्रतिभाषा हुमा लयना

अहिस्सरण सक [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ घन टोपना, पिरावना । ४
प्रतिभाषा हुमा लयना

फलमसधमपरिणामावर्त्ति

अहिस्सर सक [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ घन टोपना, पिरावना । ४
प्रतिभाषा हुमा लयना

अहिस्सर सक [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ घन टोपना, पिरावना । ४
प्रतिभाषा हुमा लयना

अहिस्सर सक [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ घन टोपना, पिरावना । ४
प्रतिभाषा हुमा लयना

अहिस्सर सक [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ घन टोपना, पिरावना । ४
प्रतिभाषा हुमा लयना

अहिस्सर सक [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ घन टोपना, पिरावना । ४
प्रतिभाषा हुमा लयना

अहिस्सर सक [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ घन टोपना, पिरावना । ४
प्रतिभाषा हुमा लयना

अहिस्सर सक [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ घन टोपना, पिरावना । ४
प्रतिभाषा हुमा लयना

अहिस्सर सक [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ घन टोपना, पिरावना । ४
प्रतिभाषा हुमा लयना

अहिस्सर सक [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ घन टोपना, पिरावना । ४
प्रतिभाषा हुमा लयना

अहिस्सर सक [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ घन टोपना, पिरावना । ४
प्रतिभाषा हुमा लयना

अहिस्सर सक [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ घन टोपना, पिरावना । ४
प्रतिभाषा हुमा लयना

अहिस्सर सक [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ घन टोपना, पिरावना । ४
प्रतिभाषा हुमा लयना

अहिस्सर सक [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ घन टोपना, पिरावना । ४
प्रतिभाषा हुमा लयना

अहिस्सर सक [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ घन टोपना, पिरावना । ४
प्रतिभाषा हुमा लयना

अहिस्सर सक [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ घन टोपना, पिरावना । ४
प्रतिभाषा हुमा लयना

अहिस्सर सक [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ घन टोपना, पिरावना । ४
प्रतिभाषा हुमा लयना

अहिस्सर सक [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ घन टोपना, पिरावना । ४
प्रतिभाषा हुमा लयना

अहिस्सर सक [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ घन टोपना, पिरावना । ४
प्रतिभाषा हुमा लयना

अहिस्सर सक [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ घन टोपना, पिरावना । ४
प्रतिभाषा हुमा लयना

अहिस्सर सक [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ घन टोपना, पिरावना । ४
प्रतिभाषा हुमा लयना

अहिस्सर सक [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ घन टोपना, पिरावना । ४
प्रतिभाषा हुमा लयना

अहिस्सर सक [अभि + स] १ नेना । २
छजना । ३ घन टोपना, पिरावना । ४
प्रतिभाषा हुमा लयना

मनुष्य वि [मनुष्य] भाषित (पुनः) ।
मनुष्य १२ [मनुष्य] न शीत दृष्टा
(१२१) ।

૨.૫ જેો સહીત ન મદીન (૩૩) ।

१२५५।१। (अमृत) को लक्ष्म्या हो पुण्य
१२।५५५।१। को लक्ष्म्या हो पुण्य।

सदेव [१५५] मीये (पाषा) । अम्मा

‘धातुवसहस्रपुरं वर्यं’ (प्राग)
(वि. २. ११) तिष्ठे १२२२)। २
वर्यं दोर धातुवसहस्रपुरं ।
वर्यं तिष्ठे १२२२) (प्राग) तिष्ठे
१२२२)। २२२२) (प्राग) तिष्ठे
१२२२)। २२२२) (प्राग) तिष्ठे

अह्नुति वि [अह्नुति] धनिकविद (दुमा) ।
अह्नुत वर [अमपन्] न होता हुआ
(दुमा) ।

अह्नुत वेतो अहीन = यहीन (दुमा) ।

अह्नुत वि [अह्नुत] जो न हुआ हो पुनः
वि [पुनः] जो पुनः कर्म न हुआ हो (दुमा) ।

अह्नुत वि [अमपन्] नीचे (पाषा) । कम्म
न [कम्म] पाषाणमं निता का एक बोध
(निद्रा) । कर्म पु [कर्म] शरीर का नीचता
दिमा (मृग १ ४ १) । 'वर वि [वर]
विन पावि में रहने वाले मर्ग वहीह जन्तु
(पाषा) । वारण पु [वारण] शिलाच
क्रिणे (पण १) । दिमा श्री [दिमा]
नीचे की दिमा (पाषा) । म्मा पु [म्मा]
वाताच-मोह (अ २ २) । वाय पु [वाय]
नीच बहनेवाला वायु (पण १) । २ वाता
वायु, पवन (पाषा) । 'विपद वि [विपद]
विपदाविपदित स्थान मुता त्वात 'मि
पानं पानावे वेदेविद पदिसाण कर्मण'
(पाषा) । सप्तमा ये [सप्तमी] सातवीं
का सप्तम नरानुदि (अम ४१ छात्रा १
११, ११) । वेतो अह्नुत = अमपन् ।

अह्नुत वेतो अह्नुत = अम (आ १ १) ।

अह्नुत पु [अह्नुत] १ सात हेतु का विरोधी
होतामान (अ १) । २ वि वारणपण
लिय (मृग १ १ १) । वाय पु [वाय]
वायवराह, शिवमें ठहरे—हेतु को दोहर

कैयव राजा की प्रमाण माना जाता हो ऐसा
वार (अम १४) ।

अह्नुत वि [अह्नुत] हेतुपणित निष्कारण
(पठम १३ ४) ।

अह्नुत पु [अम कर्म] १ धनोपति में
ने जाने वाला कर्म । २ विज्ञा का पाषाणमं
वीन (वि ११) ।

अह्नुतवि वि [यथेयनीय] संस्कारपणित
कोटा 'यथेयिवाहं क्माहं पाणम' (पाषा) ।

अह्नुत पु [अह्नुत] नृपं मृतक (महा) ।
अह्नुत वेतो अह्नुत = अमपन् (अम ११ डा २ २)
१ १ घन छात्रा १ १ पठम १ २ ४१
अम ३) ।

अह्नुत न [अह्नुत] कर्म, कर्म (वि १
१) । गह्नुत [गह्नुत] १ मरक या विपक्ष
वीन । २ अमपति (पठम ४६) । गामि
वि [गामि] दुर्लभ में जानेवाला (अम
१११) या ११) । वरमन [वरम] कर्म,
कर्म (वि १) । मृत वि [मृत]
अमोघन वरमन पुन मज्जि (मृ २ ११८
१ १११) मुता २४२) । अह्नुत वि
[अह्नुत] वाताच नीच के संस्कार कर्म
वाता (अम १४२) । 'दि वि [अह्नुत]
१ नीचे बनी का अविज्ञान वाता (अम) ।
२ पुत्री नीचे बनी का अविज्ञान वर
विज्ञान का एक वेद (अ २, २) ।

अह्नुत वि [अह्नुत] विपन में 'अही य रापी
११११) ।

अह्नुत पु [अह्नुत] वि, विन (वि १)
विन, निन निन न [निन] छत मीर
विन विन-पठ 'विन विन-पठ अह्नुतवि
पक्षमाहम' (मृ १ १, १ या १) 'मि
अह्नुतविन उ' (वि ४३१) । 'रेष पु
[पक्ष] १ विन मीर पवि विपक्ष का
वक्ष मृह (डा २ ४) विविध अह्नुत
पुण न कर्मिमा कर्मिण' (पठम ४१ ११) ।

२ वार मृह का वरम (मो २) । वक्ष
वी [वक्ष] व्यावृत्त मनुजान-नीच
(वक्ष न वा ४ अम २१) । वक्षि
न [वक्षि] विन-पठ (आ १११) ।
अह्नुत न [वि] वक्षि वक्ष, वाद (१
२३, या ४३१) ।

अह्नुत न [वि] वक्षि वक्ष, वाद (१
२३, या ४३१) ।

अह्नुत न [वि] वक्षि वक्ष, वाद (१
२३, या ४३१) ।

अह्नुत न [वि] वक्षि वक्ष, वाद (१
२३, या ४३१) ।

इम विविदाइममहमहज्ज्योति अवापामहमहज्ज्योति
छाम पठमी ठहरी मज्जो ।

आ

आनु [आ] १ आनु कर्मिणा का इन्द्रिय
तर-पठ (अम) । इन धर्मों का सूचक
अमपन्—१ अ धर्मों का धर्म 'आम
नृ' (अम वि ३४) । ३ धर्मिणि
अमि 'आनुगर्त कर्मिणा' (दुमा
मि १) । ४ धर्मिण कर्मिणा

आनुगर्त कर्मिणा (अम) 'आनु' (अम
वि ३१ विन १२१३) । २ ममपन्, धर्मों
धर्म 'आनुगर्त कर्मिणा' (अम वि ३३) ।
३ धर्मिणा धर्मिणा 'आनु' (अम
१२) । ४ ममपन् वार पठ) विनप,

आनु (अ २) । १ विनपन् के धर्म
में धर्मिणपन् धर्म विनपन् 'आनु'
'आनुगर्त' (अम दुमा) । ११ धर्म की
धर्म के विन धर्म धर्म प्रवीन होता है
(छात्रा १ २) । १२ धर्मिण म ममपन् विन
वाता अमपन् (अ २ १ ३१) ।

(बीष १) । बरोमासमाहावर पुं [बराय
मासमाहावर] मभिन्नबचनाय धायक छुप्र
का मभिन्नता देव (बीष १) । बरोमासवर
[यथाभासवर] देवो व्यन्तलेक धर्म
(बीष १) ।

आईनीह बी [आदिनीति] सामकर पक्षी
पक्षीति (गुप्ता ४१२) ।

आईय देवो आई = आदि (बी ७-काल) ।

आईय वि [आदीय] १ निरोध काल । २
संसार-प्राप्त संसार में ब्रह्मनाथा (भाषा) ।

आईह पुन [आपीह] पान का घुक्ता
(पत्र) ।

आईह यक [आ + दीप्] बनकता । वह-
आइनाम (महाणि) ।

आईसर पुं [आसायर] मनवान् अपत्येय
(सिंह ३३१) ।

आई बी [दे] १ पत्नी यक (दे १ ११) ।

२ इत नाम का एक लक्षण-देव (अ २ १) ।

अय बीष पुं [अय] अय का बीष
(अ १०५ पश्य १) । अय्य ब्रह्मय
पुं [अयिक] कल का बीष (पश्य १
पत्र १४ ११) । बीय पुं [बीय] कल
का बीष (गुप्ता १११) । ब्रुत वि
[ब्रुत] १ बन्ध-पुत्र । २ लम्पटा सुविरी
का सुवीय काल (अम ४८) ।

आई य [ब] ययता, या 'पाठ करोहे' में
मन्त्रलक्षण-कोह मनगुणो घात ययय
केय मन्त्रलक्षण (अ १४५) ।

आई पुं [आमुप] १ पापु, बीष-
आइअ [काल (गुप्ता पश्य ११) । २ वनर,
यय (मा १२१) । ३ पापु के कालमुप कर्त-
पुत्रान (अ ४) । बीह पुं [बीह] मरण
गुपु (भाषा) । कलह पुं [कलह] मरण
मौल (विद्या १ १) । कल्लेय न [कल्लेय]
अमु-लक्षण बीषन (भाषा) । 'विज्ञा बी
[विद्या] विद्यलक्षण, विविधलक्षण
(भाषा) । कल्लेय पुं [कल्लेय] विद्यलक्षण
(विद्या १ ७) ।

आईय यक [आ + कुट्] संशुषित
करता, संवेष्टा । ईह-आईवि (वरा
(अदि) ।

आईयन न [आकुञ्चन] संशेष गावसंशेष
(कव) ।

आईयणा बी [आकुञ्चना] ऊपर देवो
(पत्र १) ।

आईयि वि [आकुञ्चि] १ संकुचित । २
छटा कर बाण्ड किया हुआ (सि १ १७) ।

आईयि वि [आकुञ्चि] १ संकुचन-लता ।
२ विषय (पत्र ७) ।

आईट देवो आइह = यययय । आईययैवि
(अम १ १) ।

आईट यक [आ + कुट्] संशेषना
प्रया संह आइटाविष् (वरा ३) ।

आईटय न [आकुञ्चन] आचर्यन (वरा
१७ १२) ।

आईटय न [आकुञ्चन] संशेष गाव-संशेष
(दे १ १७७) ।

आईवायि वि [दे] व्यापारित हुआ
हुया पत्नी यावि इतरार्थ से व्याप्त (गाय) ।

आईह देवो आइ = आइह (गुप्ता ११३)
आइग [अम १ १) ।

आईह यक [आ + मय] वाता लेना
यगुता लेना । वह आइहईय, आइहईय
(सि १२ २१ ४७) । ईह आइहईय,
आइहईय (महा गुप्ता २१) ।

आइहईय न [आमकन] वाता यगुता
(मा ४७ २) ।

आइहईय बी [आमकन] प्रल (वरा
१२, २१) ।

आइहईय बी [आमकन] वाता (गुप्ता
१२४) ।

आइहईय वि [आमकन] विमली वाता ली
गई बी वह (सि १२, २४) ।

आइह देवो आइह = आइह (सि १
१२४) ।

आइह पुं [आमकन] १ संकुच करता । २
गुप्त क्रिया (पश्य ११) ।

आइह वि [आमकन] मनुष्य करने योग्य
(भाषा) ।

आइह वि [आमकन] बीहने योग्य लम्पट
करने योग्य (सि ७ १२२१) ।

आइह वि [आमकन] गाव ब्रह्मनाथा
(गुप्ता १२२) ।

आइह वि [आमकन] लयनीयता
वाचनान (यय २ ५) ।

आइह वि [आमकन] संकुच क्रिया
हुया (पश्य ११) ।

आइह वि [आमकन] क्रिया व्यापार
(भाषा) । अम न [अम] गुप्त व्यापार
विरोध (पश्य ११) ।

आइहईय न [आमकन] गुप्त
व्यापार-विरोध (पश्य ११) ।

आइह यक [आ + कुट्] १ करता । २
यगुता । ३ यययता करता । ४ यक
संकुच होता लयन होता । ५ निवृत्त होता ।
६ यययता करता । आइहईय, आइहईय (अम
७ १ निवृ १) । वह आइहईय (अम २२) ।
ईह आइहईय (अम) । ईह आइहईय
(अम) । प्रयो आइहईय (गुप्ता १ २
४) ।

आइह यक [आ + कुट्] लेन करना
विज्ञा करता । आइहईय (भाषा) ।

आइह वि [आमकन] १ निवृत्त कोषे क्रिय
हुया (अ ११८) 'यययय वाइह' वह
विषय यययय वाइह (वह १) । २ अमिद
यगुता हुया (अ २) । ३ लैक-लैक
यययय (भाषा) । ४ इत विविध (अम) ।

आइह पुं [आमकन] लेन किया (गुप्ता १
१) ।

आइह वि [आमकन] मार-मुक्त (विह
आमकन) १११ पत्र ११२) ।

आइह न [आमकन] हिवा (गुप्ता १ १) ।

आइह न [आमकन] १ पापन लेना
यकि (अ १ ६) । २ यययय होता, लयन
होता (गुप्ता १ १) । ३ ययययता हम्पट
(भाषा) । ४ यगुता यययय । ५ निवृत्ति
(गुप्ता १ १) । ६ करता क्रिया इति
(अम) ।

आइहईय बी [आमकन] ययययान
(अदि) ।

आइहईय बी [आमकन] अम देवो (निह
२) ।

आइहईय न [आमकन] ययययान
लयन करता (भाषा २) ।

(बीब १)। अरोसामहावर पुं [वराध मासमहावर] धनितवपमास नामक समुद्र का पक्षिणा रेख (बीब १)। अरोसासवर [वराधमासवर] देवो फलपटक भव (बीब १)।

आईनीह की [आदिनीति] सामरन पक्षो रजनीति (गुरा ५६२)।

आईय देवो आई = पारि (बी ७-काल)।

आईय वि [आनीय] १ फिरोय-नाय। २

संसार-नाय संसार न मूलनेना (भाषा)।

आईल पुन [आबील] पाप का पुच्छा (पब)।

आईव धक [आ + वीप] कमकया। नक-

आईवमाग (महाति)।

आईसर पुं [आइसर] मन्त्रान् आपत्येय

(सिदि २२१)।

आउ की [ई] १ पानी, नम (बे १ ११)।

२ इस नाम का एक नक्षत्र-वेध (अ २ १)।

कम आप पुं [आय] जल का बीब

(अ १८५ पण १)। आईय आईय

पुं [आयिक] बल का बीन (पण १)

मन १४ ११)। बीब पुं [बीब] बल

का बीब (सु १ ११)। बहुर वि

[बहुर] १ अन्तरा (२) २ रज्यदा मुक्ति

का वृत्तीय फल (सम ८८)।

आउ म [ई] भवना या 'आउ पसोइह न

पकनवेधेय कोह भनममुलो आउ सवभ

वेध भनरवीति' (स १५६)।

आउ } न [आयु] १ आयु, बीबन-

आइय } बल (कुमा रण १६)। २ भनर,

बय (वा १२१)। ३ आउ के काण्डपुन कने-

पुनन (अ ८)। बाक पुं [बाक] भण्ड

मुद्र (भाषा)। कलप पुं [कल] मण्ड

मीठ (मिग १ १)। कलम न [कल] मण्ड

पाय-नामन, बीबन (भाषा)। 'विज्ञा की

[विज्ञा] १ विचरयन, विचिचरयन

(भाषा)। कवेय पुं [वेय] विचर, विचिचर-

यन (मिग १ ७)।

आउंभय न [आकुञ्ज] संकोच पाचसंवेप

(कय)।

आउंभया की [आकुञ्जा] अर देवो

(बय १)।

अउंभिय वि [आकुञ्जि] १ संकुचित। २

उर कर बारल किया हुआ (सि १ १७)।

आउंभि वि [आकुञ्जि] १ संकुचनेवाला।

२ निष्प (गठक)।

आउंभ देवो आउंभ = भनरपुं। आउंभनेमि

(छापा १ ५)।

आउंभ धक [आ + कुञ्ज] संकोचना

प्रये, संह आउंभविपु (पब १)।

आउंभन म [आकुञ्ज] पाचर्जन (संवा

१७ १२)।

आउंभन म [आकुञ्ज] संकोच पाच-संवेप

(सि १ १७७)।

आउंभविपु वि [दे] धान्याविपु हुआया

हुया पानी धारि इतरपुं से ब्याल (पाप)।

आउंभ } देवो आउंभ = भनरपुं (गुरा १५१

आउंभ } सा १ १)।

आउंभ स [आ + प्रकुञ्ज] धान्य लेना

भनुना लेना। वह आउंभर, आउंभरपाण

(सि ११ २१; ५७)। संह आउंभिऊण

आउंभिऊण (महा गुरा ११)।

आउंभन म [आमरुन] धान्य भनुना

(वा ५७ २)।

आउंभन की [आमरुन] प्रन (संवा

१२, १६)।

आउंभन की [आरुन] धान्य (गुरा

१२४)।

आउंभिय वि [आरुन] विनकी धान्य की

नई हो वह (सि १२, १४)।

आउंभ देवो आउंभ = धापोष (सि १

११६)।

आउंभ पुं [आउंभ] १ संकुच करना। २

गुम किया (पण १६)।

आउंभ वि [आउंभ] मण्डप करने योग्य

(भाषा)।

आउंभ वि [आउंभ] कोइने योग्य लग्न

करने योग्य (मिग ७४ १२६६)।

आउंभिय वि [आउंभ] बाप बजानेवाला

(गुरा १२६६)।

आउंभिय वि [आउंभ] अयोपनाला

सावधान (मय २ १)।

आउंभिय वि [आउंभ] संकुच किया

हुया (पण १६)।

आउंभिया की [आउंभिय] किया ब्यापार

(पाप)। करम म [करम] गुम ब्यापार

विरोप (पण १६)।

आउंभकरण म [आउंभकरण] गुम

ब्यापार-विरोप (पण १६)।

आउंभ स [आ + पुन] १ करना। २

भूना। ३ ब्यवस्था करना। ४ मर

संकुच होना सपर होना। ५ निवृत्त होना।

६ भूना ठिना। आउंभ, आउंभि (मय

७ १ निवृत्त)। वह आउंभ (सम २२)।

संह-आउंभन (पब)। हेह-आउंभिय

(रुन)। प्रये आउंभिये (छापा १ ५

टी)।

आउंभ स [आ + पुन] धेरन करना

हिया करना। आउंभो (भाषा)।

आउंभ वि [आउंभ] १ निवृत्त पीसे ठिप

हुया (वा १६८) 'वह आउंभ' वह

विचरि सपि वहे' (स १)। २ भविप

भुनाया हुआ (वा १७)। ३ अक-कोह

व्यवस्था (भाषा)। ४ हउ विवि (पब)।

आउंभ पुं [आउंभ] धेरन हिया (सम १

१)।

आउंभ } वि [आउंभ] धार-पुछ (मिग

आउंभिय) १११; पब ११२)।

आउंभ म [आउंभ] हिया (सम १ १)।

आउंभन म [आउंभन] १ धापन सेवा

भिक (पब १ १)। २ धमिभ होना, सपर

होना (सम १ १)। ३ धनिताना इका

(भाषा)। ४ भूना भनण। ५ निवृत्त

(सम १ १)। ६ करना किया इति

(पब)।

आउंभया की [आउंभन] धामना

(मिग)।

आउंभन की [आउंभन] अर देवो (मिग

२)।

आउंभिय म [आउंभिय] धमिभन करना

सपर करना (महा २)।

आकृति श्री [आकृति] १ हिषा मारणा
(पाषाण कव) । २ निर्मला (पा १८) ।
आकृति श्री [आकृति] रेखो आकृति =
मर्मरं (व १ १ २ १ सुम १ १)
पाषा) । २ मार-मार करना पुन-पुन किया
(मुज १२) ।
आकृति वि [आकृति] १ पाषाणाला
हिषक 'मर्मर' बाएण 'मर्मर' (सुष) । २
मर्मर-मारक (वसा) ।
आकृति वि [वि] सावे दीन 'एवे पूछ एवम-
हूँ' का बाएण 'मर्मर' बाएण 'मर्मर' (सुज १२) ।
आकृति वि [आकृति] बृहत्तर वेदो
मोय (मर्मर विरके मे मर्मर) (वसि १ ७) ।
आकृति रेखो आकृति = बाएण (वसा) ।
आकृति पु [आकृति] मर्मर-मर्मर (वस २७) ।
आकृति वि [आकृति] जिन विराटि
(सुष) ।
आकृति श्री [आकृति] पाल में मर्मर
करा (वसा १३, १) ।
आकृति वि [आकृति] संतु (मि १) ।
आकृति व [आकृति] संतु करना
वेरना । मर्मर आकृतिमार्ग (वस ३, ४) ।
आकृति व [आकृति] १ बृहत् पीठना ।
२ दाह करना, मर्मर करना । मर्मर
(व १) । मर्मर आकृतिमार्ग (वस ३ ४) ।
आकृति व [मि] मर्मर । 'मि' बृहत्
पाल में मर्मर 'मि' आकृति (व १—
व २) ।
आकृति वि [आकृति] मर्मर, मर्मर
(व १—व २२२) ।
आकृति व [मर्मर] मर्मर मर्मर मर्मर ।

(व १८२) । ४ पुं मर्मर का मर्मर किया
हूया मर्मर (व १ १३) ।
आकृति वि [आकृति] १ मर्मर (व १ १) ।
२ मर्मर (मर्मर) ।
आकृति वि [आकृति] मर्मर-मर्मर (व ४) ।
आकृति वि [आकृति] १ मर्मर मर्मर (मर्मर) ।
२ मर्मर (मर्मर) । ३ मर्मर, मर्मर (मर्मर २४
१३) ।
आकृति न [वि] १ मर्मर मर्मर । २ वि मर्मर ।
३ मर्मर (व १ १३, ७६) ।
आकृति वि [आकृति] मर्मर मर्मर
(पाषा) ।
आकृति वि [आकृति] १ मर्मर (मर्मर) ।
२ मर्मर (पाषा) । ३ मर्मर मर्मर । ४
मर्मर (मर्मर ७६) । ५ पुं, मर्मर (मर्मर
७) ।
आकृति व [आकृति] १ मर्मर मर्मर ।
२ मर्मर मर्मर । ३ मर्मर मर्मर । ४ मर्मर
मर्मर । ५ मर्मर मर्मर । मर्मर—मर्मर
मर्मर आकृतिमार्ग (मर्मर वि २६१) ।
आकृति श्री [आकृति] मर्मर-मर्मर (व २ २) ।
आकृति वि [आकृति] मर्मर मर्मर मर्मर
(व २३, मर्मर १३ १ १) । मर्मर १२) ।
आकृति व [आकृति] रेखो आकृति
मर्मर मर्मर । मर्मर मर्मर (मर्मर) । मर्मर
आकृतिमार्ग (मर्मर) ।
आकृति मर्मर वि [आकृति] मर्मर
मर्मर (मर्मर २ १) ।
आकृति व [वि] मर्मर मर्मर का मर्मर
मर्मर (मर्मर ४२४) ।
आकृति व [आ + मर्मर] मर्मर मर्मर
मर्मर । मर्मर मर्मर (मर्मर १) ।
आकृति व [आ + मर्मर] मर्मर मर्मर
मर्मर मर्मर, मर्मर मर्मर मर्मर । मर्मर

आकृति १ वि [मर्मर] मर्मर मर्मर
मर्मर (व २२) मर्मर) ।
आकृति श्री [आकृति] मर्मर मर्मर
मर्मर (मर्मर १ १५ मर्मर १२) ।
आकृति रेखो आकृति = मर्मर + मर्मर । मर्मर
मर्मर (मर्मर १ १८) ।
आकृति पु [आकृति] मर्मर मर्मर मर्मर
(मर्मर १ ३ १ १८) ।
आकृति वि [आकृति] १ मर्मर । २
मर्मर मर्मर, मर्मर (मर्मर १६) । मर्मर
न [मर्मर] १ मर्मर मर्मर मर्मर मर्मर
मर्मर मर्मर । २ मर्मर के मर्मर मर्मर (मर्मर
१६) ।
आकृति न [आकृति] १ मर्मर, मर्मर (मर्मर) ।
२ मर्मर मर्मर के मर्मर मर्मर का मर्मर (मर्मर
३ ४४) । मर्मर न [मर्मर] मर्मर मर्मर (मर्मर) ।
मर्मर मर्मर श्री [मर्मर] रेखो मर्मर
मर्मर मर्मर (मर्मर) । मर्मर वि [मर्मर]
मर्मर मर्मर का मर्मर—मर्मर मर्मर
(मर्मर) । मर्मर न [मर्मर] मर्मर मर्मर (मर्मर) ।
आकृति वि [आकृति] मर्मर, मर्मर
(मर्मर) ।
आकृति व [वि] मर्मर में मर्मर मर्मर । मर्मर
मर्मर (व १ १६) ।
आकृति व [वि] मर्मर मर्मर मर्मर में मर्मर
मर्मर (व १ १८) ।
आकृति व [आ + मर्मर] मर्मर, मर्मर
मर्मर, मर्मर मर्मर । मर्मर (मर्मर) ।
आकृति मर्मर मर्मर मर्मर (मर्मर) १ २
१३ व (१२, २८) । मर्मर मर्मर मर्मर
(मर्मर २१७) । मर्मर मर्मर (मर्मर) (मर्मर) ।
आकृति वि [आकृति] मर्मर मर्मर, मर्मर

आगाह नि [आगाह] १ अथस दुःसाध्य
‘कमुनेहोह बायाहोपेरीणी रोणसमबन्ध’ (उप
७२८ टी)। ‘नो कम्पह निगरीबासु बा निगरी-
बासु बा अथसमस्त मोए द्यहहृत्तय, नयव
पायसहि योगार्थहि’ (वच)। २ घराबह,
बाह कारव (वचन)। ३ अथस यव (निष्)।
ओग दु [‘योग’] योग-विशेष पयि-योग
(वच १४८)। पण्य न [‘प्रज्ञ’] राज्ञ
बाबन ‘आयसहस्ररूपु न माविपय्या’ (वच)।
सुय न [‘भुव’] धामन-विशेष (निष्)।

आगामि नि [आगामिन्] घनेवाता (सुपा
९)।

आगारसक [आ + क्ताय] कुलना बाह्मन
कला। संज्ञ आगारेऊण (भाष)।

आगार न [आगार] १ नद, गृह (शाया १
१ महा)। २ वि वृहत् नही (व्य)। २व
वि [‘रव’] नही (वि ३ ६)।

आगार दु [आमर] १ घनबाव (उप ७२८
टी प)। २ रूषिड केटा-विशेष (सुर ११
११२)। ३ बाह्मि रूप (सुपा ११३)।

आगारिय नि [आगारिक] गृह्य-संज्ञा
(विशे)।

आगारिय नि [आचारित] १ बाहूत। २
ऊहावि परिष्कृत (भाष)।

आगास दु [आगास] १ समान प्रवेष्ट में
रुप। २ सम भाव से रूपा (भाष)। ३
सोपान-विशेष (पञ्च)।

आगास दुन [आकार] घनत्त, घनत्त
(वच)। गमा की [‘गमा’] विद्या-विशेष
विशे बल से बाकार में मनन कर कथा हि
(पञ्च ७ १४)। गमि नि [‘गामिन्’]
बाह्मन में मनन करने वाला पवित्र-भूषि
(भाष)। ओगणी की [‘योगिनी’] पति
विशेष ‘भासतबीहरीए किमुनो सहोवि नाम-
पाधमि’ (सुपा १८२)। ‘रिष्यद्यय दु
[‘रिष्यद्यय’] बाह्मन-प्रवर्धों का सपुत्र,
घनत्त बाह्मन-अथ (पञ्च १)। विगगहन
[‘वि’] भवर्ण बाह्मन का भाव (भावस)।
फरिह, फरिहिय दु [‘फरिह’] निर्मल
सन्नि-रूप (उप मीय)। फाहिया की
[‘फाहिया’] एक मोक्ष इय (पञ्च १७)।

आगाह नि [विपाविन्] विद्या बावि
के बल से बाकार में मनन करनेवाला (मीय)।

आगासिय नि [आचारित] बाह्मन को
प्राप्त (मीय)।

आगासिय नि [आकर्षित] लीला इया
(मीय)।

आगासिया की [आमरिणी] बाह्मन में
मनन करने की सक्ति-शक्ति (सुपनि १९१)।

आगाह सक [अथ + गाह] घनत्त
करना, स्नान करना। आगाहहृत्ता (वच ५,
१ ११)।

आगिह की [आहति] बाह्मन, मन धृति
(सुर २ २५ विपा १ १)।

आगिहि की [आहति] बाह्मन (सुपा
२१२)।

आगी रेहो आगिह ‘किरणानिभस्यापी
विशानु समामर्त्य न नं तनु’ (विशे २७ ७)।

आगु दु [आहु] घनत्तय हन्ना (वाक)।

आर्ध रेहो आपव। ‘मृगच्छां न धूय के प्रथम
भुवत्कन का हलाय दाय्यन (सुप १ १)।

आर्धस सक [आ + धूय] कर्तव्य करना
(निष्)।

आर्धस सक [आ + धूय] विद्या बोझ
विद्या। आर्धसि (भाषा २, २, १ ४)।

आर्धस नि [आर्ध] बल के साथ विस्तर
को दिया जा सक बहु (सिंह २ २)।

आर्धसण न [आर्धण] एक बार का कर्तव्य
(निष्)।

आधयण न [‘दे’] वच-स्नान (आभा १ ६—
पञ्च १९७)।

आपव सक [आ + क्या] १ कृता करेष्ट
रुपा। २ प्रहृष्ट करना। आपवेह (व्य)।
कहक आपविनय (वच)। मुका धार्म (मुपा
वि ८८)। बहु-आपवेमाण (वि ४४)। हेह
आपविचय (वि ८८)।

आपवणा की [आख्यान] कथन उक्ति
(आभा १ ६)।

आपवहणु नि [आपवायक] कथक बला
करेष्ट (व्य ४ ७)।

आपविय नि [आख्यात] जन, कहा हुआ
(वि ४४)।

आपविय नि [‘दे’] गृहीत स्वीकृत (यसु
२)।

आपवेसण नि [आख्यापयितुक] करेष्ट
कथा (भाष)।

आपस सक [आ + पस] बोझ निघना
घावसलेख (निष्)।

आपा सक [आ + क्या] कृता। (भाष)।

आपा सक [आ + घा] रूपा। बहु आपा
रुत (उप ११७ टी)।

आपाय नि [आख्यात] कथित सक (भाष)।

आपाय नि [आख्यात] १ उक्त कथित
(सुप १ ११ २)। २ न. उक्ति, कथन (सुप
१ १ २ १)।

आपाय दु [आपात] १ एक नरक-स्थान
(वेवेह २६)। २ विनाश (उक्त ३ १२ मुक्त
५, १२)।

आपाय दु [आपात] १ वच। २ मोद, प्रहृष्ट
(ऊमा आभा १ ६)।

आपाय रेहो आपा = ध + प्रा।

आपाय रेहो आपव। आपवेह (वि ८८
२ २)।

आपुदु नि [आपुट] पापित बाहिर किया
हुआ (पवि)।

आपुन्य सक [आ + धूय] दोस्तता,
हितता करिना करना।

आपुनिय नि [आपुर्णित] दोस्त हुआ
कथित पविता ‘आपुनियनयणुदुमी’ (पञ्च
१ १२ वच १६)।

आपोस सक [आ + पोयम्] मोचला
करना विरोध निघना। आपोवेह (वच ६)।

आपोसण न [आपयण] विचार पोपण
(महा)।

आपवस सक [आ + पवस] कृता।
बहु आपवसल (वि २५, ८ १४)।

आपवित्तु (व्य) नि [आपवात] उक्त,
कथित (पवि २)।

आवरिय नि [आपरित] १ धृष्टि निहित।
२ न. आपवण (आभा १ ११)।

आचार सक [आ + चामय] बाधना
बाधना वीना। बहु आचारत (सुप १६)।

आचार रेहो आचार = आचार (सुपा)।
आचार रेहो आचारिय = आचार्य (पञ्च)।

आण सेओ साम = यान (वार ८) ।
 आणइ सेओ आणइ । आणइ (पठ) ।
 आणत सेओ आणा ।
 आणतरिय न [आनतरिय] १ भविष्येय
 व्यवधान का प्रमाण (ठा ४ ३) । २ अनुक्रम
 परिपाठि 'आणतरियति वा अनुपरिवाधिति
 वा अनुपरिधति वा एतद्' (भाष्य) ।
 आणय सक [आ + नन्] प्रमाण पाणा
 कुछ होना ।
 आणय सक [आ + नन्] कुछ करना ।
 आणयति (शी) (ना) । क. आणयिअव्य
 (रमण १) ।
 आणइ दु [आनय] १ यशोपन का सोम
 हर्षा सुहृत् (मुक १ १३) । २ एक वेग
 विमान (शेख ११३) ।
 आणइ दु [आनय] १ हर्ष कुरी (कुमा) ।
 २ नगमां स्त्रीवचना के मुख्य-रिच्य (सम
 १२२) । ३ पौनःपुन्य नगर का एक राजा,
 जो मनवान् भविष्यदास का मामासु या
 (पठ ३ २२) । ४ भावी छत्र बहने
 (सम १२४) । ५ मायुमार-जातीय वेधों के
 स्वामी बणेश्वर के एक रज-रिच्य का क्षत्रिय
 वंश (अ ४, १) । ६ सुहृत्-रिच्य (सम ४१) ।
 ७ भवान् अपनेन का एक पुत्र (पठ) ।
 ८ भवान् महावीर के एक साधु रिच्य का
 नाम (कम्य) । ९ भवान् महावीर के सप्त
 मुख्य वनाचर्यों (वासक-रिच्य) में पहला
 (जग) । १० वैत-रिच्य (को पीर) । ११
 राजा मेणिक के एक पुत्र का नाम (गिर
 २ १) । १२ 'नानवरत्न' का गुण का एक
 धर्म्यजन (जग) । १३ 'मणुपौषाधिक
 हर्षा' सुख का घातर्षा धर्म्यजन (जग) ।
 १४ 'निरव्याचरी' सुख का एक धर्म्यजन
 (गिर २ १) । १५ क. वैत-रिच्य (पठ
 ४ ३३) । गुर न [गुर] नगर-रिच्य
 (हृ) । उभियय दु [उभिय] स्वनामव्याप्त
 एक लैत वाहु (मम) ।
 आणइय न [आनयन] १ कुली हर्षा (पुषा
 ४४) । २ वि मुठ करनेवाला धानक
 बन्क (प ११३ पठ ३ छण) ।
 आणइय दु [उ] पत्थी बार की रज
 आणइयदु [उ] लका का रज बक (वा ४२७
 ६ ७२ पठ) ।

आणइय की [आनय] १ वैत-रिच्य
 वैत की पथिम विद्या में स्थित रजक पर्वत
 पर रहनेवाली एक विष्णुपत्नी (ठा ८) ।
 २ नल नाम की एक पुष्पविष्णी (राज) ।
 आणइय वि [आनय] १ हर्षमात्र
 (पीर) । २ रामचन्द्र के माई भरत के साथ
 लीला लेनेवाला एक राजा (पठ ८२ ३) ।
 आणइय वि [आनय] धानको कुछ
 रहनेवाला (महि) ।
 आणइय सक [परि + इह] पथिका
 करना । हृ. आणइयदे (पीर १६) ।
 आणइय सेओ आणइ । आणइय (पठ ४)
 आणइय वि [आनय] सर्वका नट (उठ १८
 २ सुक १८ ५) ।
 आणय न [आनय] पुन गुह (पुषा) ।
 आणय न [आनयन] सामा (महा) ।
 आणय वि [आणय] धर्मिष्ठ, विद्यते हुकुम
 विद्या यथा हो वह (छाया १ ८ गुर ४
 १) ।
 आणयि की [आणयि] धाका हुकुम (पति
 ८१) । अर वि [अर] धाकाकारक नौकर
 (सि ११ २३) । 'किंकर वि [किंकर]
 नौकर (पठ) । अर वि [अर] धाका
 बाहुक संदेश-बाहुक (पति ८१) ।
 आणयिआ की [आणयिआ] अर सेओ
 (छाया वि पठ) ।
 आणय न [आनय] धनवैता (उठ
 १३) ।
 आणय (यद्यपि) सेओ आणय = धा + आण ।
 आणयति (वि ४) ।
 आणयय सेओ आणायाग (न ६) ।
 आणय वि [अ + आण] धाका करने योग्य
 (पुषा १ ४ २३) ।
 आणय सक [आ + आण] रक्षत लेना ।
 आणयति (मम) ।
 आणयणी सेओ आणयणी (साध १८ वि
 मम २४८) ।
 आणय पुन [आनय] १ वैतलीक-रिच्य
 (मम १३) । २ पु उठ वैतलीक-भागी वैत
 (अर) ।
 आणय पुन [आनय] एक वैतविमान (शेख
 ११५) ।

आणयण न [आनयन] सामा धनमा (वा
 १४ ४ १७६) ।
 आणय सक [आ + आणय] धाका बना
 करवाना । आणय, आणयति (पठ ३३
 १ २८) । क. आणयमाम (वि
 १२१) । क. आणययक (महा) ।
 आणय सेओ आणय = धा + आणय ।
 आणयण न [आणयन] धाका धाये कर
 बाह्य (जग प्राप्ता) ।
 आणयण न [आनायन] नैयवाण (पुषा
 ४७८) ।
 आणयणिय वि [आणयणिय] धाका कर
 मनेवाला (सम २३) ।
 आणयणिया की [आणयणिय] आनाय
 निध [सेओ दोनो आमवना (अ २ १) ।
 आणयणी की [आणयणी] १ विमान-रिच्य
 हुकुम करना । २ हुकुम करने से होनवाला
 कर्मव्य (न १२) ।
 आणयणी की [आणयणी] १ विमान-रिच्य
 नैयवाण । २ नैयवाण से होनेवाला कर्म-व्य
 (न १) ।
 आणा की [आणा] धाये हुकुम (पीर
 ६) । २ रादेश 'पया धन्या निवर्धिया'
 (धाया) । ३ निर्वर्ध 'उरदासी पिहो की धाया
 विरुधो य हौति एतद्' (न ४) । ४ ध्यान
 विद्याप (विदे ८२४ लोहि) । ५ धून की
 व्याख्या (पीर) । इतर दु [इतर] धाका
 करवानेवाला मानिक (विद्या १ १) । आणा
 दु [आणा] १ धाका का सम्बन्ध (पथा) ।
 २ धाका के धनुवार इति 'पाने विद्याधनुर्व'
 धायावैवी य मंतव्यो' (पंथ) । सुह की
 [सुह] नव्यक-रिच्य (उठ) । ३ वि
 धायों पर बद्ध रहनेवाला (न ४) । क वि
 [क] धाका माननेवाला (वा) । वर
 न [वर] धाकाव, हुकुमवा (सि १
 २८) । वरदार दु [वरदार] व्यापार
 रिच्य (पथा) । विजय न [विजय
 विजय] कर्मव्य-रिच्य निर्वर्ध धाका—
 धाय के पुण्यों का चित्तन क्रिया वाता है
 (पीर) ।
 आणयय दु [वि] यहुनि पथी (रे १ ६४) ।

आविष्तु नि [आविष्] ग्रहण करलेबला
(अ ७)।
आविष सक [आ + वि] ग्रहण करना।
प्राविष (उवा)। प्रयो. प्राविषासिंठि (सुप्र
२, १)।
आविष् } देवो आविष् (पि १६३)।
आविष्मन् }

आवी की [आवी] इय नाम को एक महाकवी
(ठा ५ १)।
आवीण नि [आवीन] १ सर्वत्र चीन, बहुत
मलेष (सुप्र १ २)। २ न इति मित्रा।
मोह नि [मोहिष] इति मित्रा को लेने-
वाला गरीबनोहिं करेति पावै (सुप्र १
१)।
आवीणिय नि [आवीनिक] प्रत्यय चीन
संस्कृती 'पारीखिं बुद्धिं पुरखा' (सुप्र
१ ५)।
आवु (सी) रको आवु (नि ६)।
आवुख देवो आवुख (पय १ ४)।
आवेस देवो जोयस = मायेठ (कुमा नव
२, ८)।
आवेस पुं [आवरा] व्यपदेश, व्यवहार (सुप्र
१ न १)। देवो आवस = मायेठ (सुप्र
२ १ ३६)।
आवरिस सक [आ + वरिय] परमत्र
करना दिखाण। प्रावरिसि (बावम)।
आवा देवो आवा (पिठ)।
आवार देवो आहार = पावार (पय २, ५)।
आपोरम पुं [आवारण] हस्तिक महापठ
हृत्कोष (वर्गी ११)।
आनव देवो आनव (अपु)।
आनामिय देवो आणामिय (पय १ ४)।
आपत्र देवो आपत्र (अमि १८०)।
आपत्र देवो आपत्र (अमि १६)।
आपति की [आपति] प्राप्ति (संकोष १५।
पव १४६)।
आपात्र नि [आपाति] १ किसी मासति
की गई हो वह। २ स्थापित जमि (पिठे
१७४६)।
आपात्रण नि [आपात्रन] संपावन (भावक
नर देवा १ १६)।
आपीड पुं [आपीड] मित्रोपकरण (वा २८)।

आपीण देवो आपीण (वठव)।
आपुच्छ सक [आ + प्रच्छ] बाधा लेना
सम्पत्ति लेना। आपुच्छ (महा)। वह
आपुच्छ (पि १६७)। छ- आपुच्छपाय
(खमा १ १)। छ- आपुच्छिन्ना आपु
च्छिन्ना आपुच्छिन्ना आपुच्छिन्ना
आपुच्छिन्ना (पि २८२ २८३ कय ठा
५ १)।
आपुच्छन न [आप्रच्छन] बाधा क्षुण्णति
(खमा १ ६)।
आपुह नि [आपुह] किसी प्राजा वा सम्पत्ति
की गई हो वह (पुर १ २१)।
आपुण नि [आपुण] पूर्ण भरपूर (वे १
२)।
आपूर पुं [आपूर] पूर्णबला 'मकणाय
पूर सति' (कय)।
आपूर देवो आऊर। कर्म, प्रापुणिक
(महा)। वह आपूरमाण, आपूरमाण
(मा राय)।
आपेड } देवो आपीड (पि १२२, महा)।
आपेड }

आप्यय न [वि] पिठ, पाय (पय)।
आप्यस पुं [आप्यस] प्रत्य स्पर्श (हे १ ४४)।
आप्य पुं [वि] घृत कुमा (वे १ १३)।
आप्य सक [आप्यस] प्रत्यस्पर्श
करना प्राप्य करना। छ- आप्यसिवा
आप्यसिवा (पि १८२ २८६)।
आप्यस देवो आप्यस (वा १४६)।
आप्यस नि [वि] आप्यस (सुप्र १६२)।
आप्यसिवा न [आप्यसिवा] आप्यसिवा
(पय १ १)।
आप्य सक [आ + अप्य] यवजुत बांधना।
वह आप्यस (हे १ ७)। वह आप्य-
सिवा (पि २८६)।
आप्य पुं [आप्य] संकय संयोग (मठव)।
आप्य नि [आप्य] बीजा कुमा (स १३)।
आप्या की [आप्या] १ पत्र बाबा
(खमा १ ४)। २ यत्र (सय १३)। ३
मासिक पीडा (महा)।
आप्य पुं [आप्य] १ ग्रह-विशेष (अ
२ १)। २ न विमान-विशेष (सय न)।

परमकर न [प्रमकर] विमान-विशेष (सय
=)।
आमकसाण देवो आमकसाण (उवा)।
आमह नि [आमापि] १ कथित सद्य
(सुमा १५१)। २ संभाषित (सुर २, २४८)।
आमरण न [आमरण] प्रमद, मामुपण
(पि ६ १)।
आमठ नि [आमठ] होने योग्य संभाव्य
(वच सुमा १ ७)।
आमा की [आमा] प्रमा कालि ठेक (कुमा
बीव)।
आमागि नि [आमागि] भोका भोगी
'पयैणं वम्मणय्यणं आमागि वने' (वसु
खमा १ १८)।
आमार पुं [आमार] नोक, भार (सुमा
२ १६)।
आमास सक [आ + माप्] कल्या संमा
पय करना। आमसह (हे १ ४४)।
आमास पुं [आमास] १ नो वास्तविक में
वह न होकर सचके समान लगता हो। २
विपरीत 'कप्यसिवा' (कुमा)।
आमासिय पुं [आमासिय] १ इय नाम का
एक स्वेच्छ देव। २ उरमें छुनेवाली स्वेच्छ
बाति (पय १ १)। ३ एक प्रत्यक्ष।
४ उरमें छुनेवाला, 'कहि छुं म्हे'। वाम
विषमगुणाई प्रानसिवाये नाम बीरे (बीव
१ ठा ४)।
आमासिय देवो आमह (तिर)।
आमिभोग्य देवो आमिभोगिय (महा)।
आमिभोग्य पुं [आमिभोग्य] १ किन्नर
स्वामीय देव-विशेष (ठा ४ ४)। २ नीचर,
किन्नर (राय)। ३ किन्नरता लीकरी (वठ
६ २)।
आमिभोग्य की [आमिभोग्य] आमिभोगिक
लागण (वठ १६ २३१)।
आमिभोगि नि [आमिभोगि] किन्नर
स्वामीय देव (वठ ६)।
आमिभोगिय नि [आमिभोगिय] १ मन्त्र
वादि से प्रादीविना चलायितवा (पय
२)। २ नीचर स्वामीय देव-विशेष (गामा
२ ५)। ३ बलीकण्ड बुद्धि को बरा में
करने का मन्त्रादिमन्त्र (पवा महा)।

एकतेजसा मम दीर इति को का पिहह कते-
बला । २ यद्य प्राणि को संयत एते को
मिहनेवता (अ ४ २) ।

आर्यप दु [आकम्प] १ कोपना हिलना ।
२ कपोलनामा (पञ्च १३, १४) ।

आर्यपिपि वि [आकम्पित] कोपना हुमा (स
१३१) ।

आर्यप यक [येप्] कोपना, हिलना ।
पार्यवह (ह ४ १४७) ।

आर्यप } वि [आताप] नोडा जल
आर्यपिक्वि } (मोता मुर १ ११ गुणा १
१४४) ।

आर्यपिचि म [आचाम्भ] उपो-विशेष घोषिक
(शान्ता १) । बहुवचन म [वर्षमान]

एकवचन-विशेष (पञ्च १२, महा) ।

आर्यपिचि वि [आचाम्भिक] आम्भिल-उप
का कर्ता (अ ७ पञ्च १ १) ।

आर्यमर } वि [आत्ममरि] लाठी घनेक-
आर्यमरि } के (अ ४ १) ।

आर्यय यक [आ + कम्प्] कोपना हिलना
(माना) ।

आर्यस } दु [आर्यो] १ रण (पञ्च १ ४
आर्यसग } मुर १ ४) । २ रैच प्राणि के गले

का मुरक-मिलेव (पञ्च) । मुह दु [मुह] १
एक बलद्वीप । २ उत्तरे निबल्लो मनुष्य (अ
४ २) ।

आर्यकल्ल केओ आइकल्ल । आर्यकल्लि (धप) ।

आर्य वि [आर्य] केओ आर्य = भाग
(भाषा) ।

आर्यमद यक [येप्] कोपना हिलना ।
आर्यमद (ह ४ १४१ पञ्च) । कक
आर्यमद (मुमा) ।

आर्यदु उक [आ + पत्तय्] १ किरण
हुमाना । २ उज्जमाना । कक आर्यदु (सि
२, ७२, ४ ११) । कक आर्यदुज्जमाना
(एवा १ १) ।

आर्यदुज्ज म [आर्यज] रणना (मुमा २६) ।

आर्यदु उक [आ + कप्] बीषणा ।
आर्यदु (महा) । कक आर्यदुज्ज (सि
२, २८) । उक आर्यदुज्ज (महा) ।

आर्यदुग्ग म [आर्यय] आर्यय बीषण
(मुमा १२, ७२ वा ११) ।

आर्यदुग्ग मी [आर्यदि] ऊर केओ (पञ्च
१ १ २३) ।

आर्यदुग्ग दु [दि] किरण (ह १ १४) ।

आर्यदुग्ग वि [आर्य] बीषा हुमा (कल्ल
कम्पु) ।

आर्यज उक [आ + कर्णय्] गुणना
पणव करना । आर्यज (वा ११३) । कक
आर्यज (सि १ १३ वा ४२३ ६४३) ।

उक आर्यज (सि १ १३ वा ४२३ ६४३) ।
उक आर्यज (उवा) ।

आर्यजय म [आर्यज] घन (महा) ।
आर्यजय वि [आर्यज] गुणा हुमा
(कपा) ।

आर्यय उक [आर्यय] घणव करना
हुमा (मुप २ १) ।

आर्यय वि [आर्यय] घनीन लवण (वा
१७२) ।

आर्यय केओ आर्यय । कक आर्यय (गुर
१ २४७) ।

आर्यय केओ आर्यय (गुर १ २१) ।
आर्यय उक [आ + यम्] आर्यय करना
हुमा करना । इक आर्यय (कम्पु) ।

कक आर्यय (अ २) ।
आर्यय म [आर्यय] मुदि लीच (वा
१२ गा ३१) । निह २४ २ १ २२२) ।

आर्यय केओ आर्यय (ह १ १७७) ।
आर्यय मी केओ [आर्ययमी] विद्या-विशेष
(मुप २ २) ।

आर्यय वि [आर्यय] १ लम्बा विल्लु (अ
पञ्च २१२) । २ गुं मोक्ष (मुप १ २) ।

आर्यय उक [आ + वृह] घणव करना ।
आर्यय, आर्यय (अ २, २ ११ उत १
७) । कक आर्यय (वि १ ७) ।

आर्यय म [आर्यय] १ प्रकटीकरण (मुप
१ २, १६) । २ उपादान कारण (मुप १
१२, ३) ।

आर्यय म [आर्यय] १ वर, वृह (कक)
१ आर्यय, लाम (भाषा) । १ अर्य-गिरि
(भाषा) । ४ आर्यय जलो वा एकव होने
वा लाम

‘अर्य लक्ष्मिका बहने दीनयवा मनुष्य’ ।
‘अर्यलामयवपला आर्यय’ वि विषाक ह
(कम्प) । ५ अर्यय का कारण (भाषा) ।

१ अर्यय (अ २, २ ११) । १ अर्यय (अ २, २ ११) ।

१ अर्यय (अ २, २ ११) । १ अर्यय (अ २, २ ११) ।

१ अर्यय (अ २, २ ११) । १ अर्यय (अ २, २ ११) ।

१ अर्यय (अ २, २ ११) । १ अर्यय (अ २, २ ११) ।

१ अर्यय (अ २, २ ११) । १ अर्यय (अ २, २ ११) ।

१ अर्यय (अ २, २ ११) । १ अर्यय (अ २, २ ११) ।

१ अर्यय (अ २, २ ११) । १ अर्यय (अ २, २ ११) ।

१ अर्यय (अ २, २ ११) । १ अर्यय (अ २, २ ११) ।

१ अर्यय (अ २, २ ११) । १ अर्यय (अ २, २ ११) ।

१ अर्यय (अ २, २ ११) । १ अर्यय (अ २, २ ११) ।

१ अर्यय (अ २, २ ११) । १ अर्यय (अ २, २ ११) ।

१ अर्यय (अ २, २ ११) । १ अर्यय (अ २, २ ११) ।

१ अर्यय (अ २, २ ११) । १ अर्यय (अ २, २ ११) ।

१ अर्यय (अ २, २ ११) । १ अर्यय (अ २, २ ११) ।

१ अर्यय (अ २, २ ११) । १ अर्यय (अ २, २ ११) ।

१ अर्यय (अ २, २ ११) । १ अर्यय (अ २, २ ११) ।

१ अर्यय (अ २, २ ११) । १ अर्यय (अ २, २ ११) ।

१ अर्यय (अ २, २ ११) । १ अर्यय (अ २, २ ११) ।

१ अर्यय (अ २, २ ११) । १ अर्यय (अ २, २ ११) ।

१ अर्यय (अ २, २ ११) । १ अर्यय (अ २, २ ११) ।

१ अर्यय (अ २, २ ११) । १ अर्यय (अ २, २ ११) ।

१ अर्यय (अ २, २ ११) । १ अर्यय (अ २, २ ११) ।

१ अर्यय (अ २, २ ११) । १ अर्यय (अ २, २ ११) ।

१ अर्यय (अ २, २ ११) । १ अर्यय (अ २, २ ११) ।

१ अर्यय (अ २, २ ११) । १ अर्यय (अ २, २ ११) ।

आयय वि [आतप] १ ज्योत प्रकाश (भा ५२) । २ हाव नाम (जट) । ३ न पुनर्-रिठोय (उम ११) । गाम, माम न [नामस] नामके का एक मर (मम १७) । आययवत् न [आतपत्र] धन धात्रा (छाया १ १) ।

आययवत् पु [आयावत्] भाए हिदुस्मान (हक) ।

आयाया की [आतपा] १ मूर्त की एक धम मङ्गिरी—गटपटी । २ इत नाम का 'माग' कर्मका मून का एक अण्वयम (छाया २ १) ।

आयय वि [आयय] सोह का सोह निर्मित (पठ १६ १) ।

आयसी की [आयसी] सोह का कोट (पठ १ १) ।

आया केओ आय = धानन ।

आया सक [आ + या] धाता धात्वम बना । धार्यति (मुग १७) । आयाईति धावायु (बल) । नह आयय ।

आया मर [आ + म] धाएय बना स्वीकार बना । आयइज (उम १) । ह आया विज (हा १) । छंद आयाए, आयाय आयाय (बल बल महा) ।

आयाइ की [आजानि] १ जन्ति बन्ध (हा १) । २ धारि प्रार । ३ धावर, धावरण (धावा) । टाग न [र्यान] १ छंदार, बन्द । २ 'धावापट' मूक क एक धावयन का नाम (हा १) ।

आयाइ की [आयावि] १ धामन । २ जन्ति कर्म से बाहर निजना (हा २ ३) ।

३ धारि धरिय नाम (रहा) ।

आयाय केओ आया = मा + बा ।

आयाय पुन [आदान] १ कहर कर्षितार (धावा) । २ इतिव (मम ३, ४) । ३ विमवा धरए दिया बन्ध बंध धाम बलु (हा ४ मूय २७) । ४ धारण हेतु धरि मे उठ धावाय केहि नीर 'पावय' (मूय १ १) । 'रिवा दुलामारी' धरनारी मगाइह' (पठ १२ ४४) । ५ धारि प्रमय (मम) ।

आयाय न [आदान] १ संयम धरि (मूय १ १२, २२) । २ रि धारेय, उगाय (मूय

१ १४ १७ हेतु २) । पय न [पय] धन का प्रथम शब्द (मणु १४) ।

आयाय न [आयान] १ धामन । २ धार का एक धामण-रिठोय (पठ ३) ।

आयाम सक [आ + यमय] सम्भा करता । कनह-आयामिज्यत (सि १ ५) । छंद आयामसा आयामसाग (मम १ ५८३) ।

आयाम सक [आ + यम] शीघ्र करना मुडि करना । धायायइ (पठ १ १ ६) ।

आयाम यक [हा] दंग धान करना । धाया येइ (मम ११) । छंद आयामसा (मम १२) ।

आयाम पु [आयाम] सम्भाई, ईर्य (उम २ गट ३) ।

आयाम पु [हे] बल जोर (हे १ ६३) ।

आयाय न [आयाम्] धा-रिठोय धारिजित 'नातिनिगु' उ उतो धाम्यम परिधिवंतु धामय (धावालि २७२ २७३) ।

आयाय न [आयाम] धावाएय धावत आयामग [धारि वा पावा (मम १२६) उम १२) ।

आयामगया की [आयामनता] सम्भाई (मम) ।

आयामि वि [आयामि] सम्भा (पठ ३) ।

आयायु की [आयायु] इत नाम की एक मणी (म ४३१) ।

आयाय देना आया = मा + बा ।

आयाय वि [आयान] धाया हुआ (पठ १४ ११ ११२ दुम्मा १६) ।

आयाय सक [आ + वारय] दुनाता धावान बना । धायायि (ही) (गाट) । छंद आआ रिवा आयायज्य (गाट ३ २७७) ।

आयाय पु [आयार] १ धारि बर (छाया १ १) । २ इतिव दणय (मम) ।

आयाय पु [आसार] 'य' धार (मूय ३२) ।

आयाय पु [आधार] १ धावरण कृतान (हा २, ३ धावा) । २ धान-बनन रीत-धाव (पठ ६ ५ ८) । ३ धाव के धावयनो में रहता धम धावायइयमुते (हा १ १) ।

४ निनुय रिप (मम १ १) । कयाय की [आयय] धावा का एक वेद (म ४) ।

अहम योय न [आणहक] जन्तिवा जारण—मायम (छाया १ १ १६) ।

आयारिमय न [आचारिमक] निरह के समय दिया जाता एक प्रकार का दान (छ ७७) ।

आयाय वि [आधारित] १ धावत हुआ (पठ ११ २३) । २ न धावान-बनन धावत-बनन (सि ११ ८ धमि २ १) ।

आयाय सक [आ + तापय] मूय के धान में शरीर को जोड़ा बनाता । २ शीत धावत धारि को सहन करना । नह आयायन पठ १ ११) आयायिन (बल) आयायिन (पठ २६ २१) आयायिमाम (महा मम) ।

हेट आयायचण (मम) । छंद आयायिय (धावा) ।

आयाय पु [आताप] धमरुधुमार जादीय देव रिठोय (मम १३ ९) ।

आयाय पु [आनाप] धावन-धावयन (पठ १ १७७) ।

आयाय वि [आतापक] शीत धारि को सहन करनेवाला (मूय २ २) ।

आयायय न [आनापन] एक बार मा जोड़ा धावत धारि को सहन करना (छाया १ १९) ।

मूमि टी [मूमि] शीतयि सहन करने का स्थान (मम ६ १) ।

आयाययया की [आतापन] ऊपर स्थो आयाययया (छ ३ ३) ।

आयायय वि [आतापक] शीत धारि को सहन करनेवाला (पठ २ १) ।

आयायय पु [हे] उबेर का उड़का आयाययय [भावाय (हे १ ७ पाय) ।

आयायि वि [आतापि] धो आ 'ययय' (छ ४) ।

आयाम बट [जा + यामय] धावयन देता निज करना । धायायि (मि ४६) ।

छंद आयायिन (मा ४२) ।

आयाम पु [आयाम] १ कर्षीय, पोरयन वेर (पठ ३) । २ परिध, धमयोन (मम १ २) । ३ य. य. [य. य.] निरि-रिठोय (पठ १) ।

आयाम केओ आयय (पठ) ।

आयाम देना आयाम (मम १६ ४ १ ८४) । आयय न [यडड] मम रिठोय (बल) ।

आपासऽपिअ वि [आपासयित्] एकलीक
देनेवाला (अपि ११) ।

आपासतल न [आकरातल] पत्रवाला,
पर के आर भी कुली बल (दुप ४१२) ।

आपासतल न [दे] प्रसार का पूछ भाव (दे
१ ७२) ।

आपासतल न [दे] पत्रवृक्ष नीव (दे १
७२) ।

आपासिअ वि [आपासित्] परिभाषा बिब
(गा १९) ।

आपासम वि [आसम] १ अस्त्रविनाशक ।
२ न बाधाकर्मी दोष (दि १२) ।

आपाहिअ न [आपहिअ] बहिरा पार्थ से
प्रमत्त करना (आ) । पयाहिअ वि
[प्रपहिअ] बहिरा पार्थ से प्रमत्त कर
बहिरा पार्थ से त्विअ होनेवाला (विपा १
१) । पयाहिआ की [प्रपहिआ] बहिरा
पार्थ से परिप्रमत्त प्रपहिआ (हा १) ।

आयु कैओ आर = आयु । ये वि [न] न
निजुअ दोर आयुवाला (पह १ ४) ।

आर दु [आर] १ इन्दीव यह कम (दुप
१ २१ का १६ २४ १ ९) । २ मनुष्य
बीर (दुप १ ९ २) । ३ मुनीनी लोहे
की नील (दुप ४१४) । ४ न नृत्पवन
(दुप १ २, १ ८) ।

आर दु [आर] १ संकट-ग्रह (पत्र १७
१ १२ १ २२४) । २ बीमा नरक का
एक महापात (हा ६) । ३ वि धर्मविप्लव
पूर्व का (दुप १ ९) ।

आरअ वि [आरअ] कर्ता करनेवाला (गा
१७ १४) ।

आरओ प [आरअ] १ पूर्व पहले
धर्म (दुप १ १ १४१) । २ कभी में
पात में (हा १११) । ३ मुक कर के, आरम
कर के (दि २२ १) ।

आरओ प [आरअ] १ नीचे से (संदि २४६
१) ।

आरदर वि [दे] १ लगेपल । २ खंड
भ्रान्त (दे १ ७) ।

आरम न [आ + रम] १ मुक नरका ।
२ रोग करना । आरम (दे ४ १९४) ।

नह आरमंत (वा ४२ पै ८ ८२) । संह
आरमंतुआ आरमिअ (पाठ) ।

आरम पु [आरम] १ मुकपात आरम
(दे १ ९) । २ बीव-हिआ नह (पा ७) ।
३ बीव प्राणी (पह १ १) । ४ पाप-कर्म
(पापा) । ५ वि [रम] पाप-कार्य में लगत
(आपा) । विजय पु [विजय] आरम का
भाव । (पह १) । (पनयिअ) आरम
से विरह (आपा) ।

आरमग पु [आरमग] १ अर केओ
आरमय (दुप २, ४) । २ वि मुक करने-
वाला (विसे १२८ का ४ ४) । ३ हिरक
पाप-कर्म करनेवाला (आपा) ।

आरमि वि [आरमिअ] १ मुक करीबला
(कह) । २ पाप-कार्य करीबला (अ
४१९) ।

आरमिअ पु [दे] १ गलावाट, यली (दे १
७१) ।

आरमिअ वि [आरम] आरम मुक किआ
हुआ (अपि) ।

आरमिअ कैओ आरम = आ + रम ।

आरमिआ की [आरमिअ] १ हिआ से
सम्बन्ध रखनेवाली किआ । २ हिरक किआ
से होनेवाला कर्म-बन्ध (अ २ १ न १७) ।

आरमस न [आरमस] कोसबला का घोड़ा
कोसबानी आरमसवा (दुप १ १) ।

आरमस वि [आरम] १ रसवा करनेवाला
(दे १ १५) । २ पु कोसबान नगर का
राज (पाप) ।

आरमसवा वि [आरमस] १ रसव करने-
वाला वाता (क्या हुआ १११) । २ पु,
राजियों का एक बंध । ३ वि कह वत में
जपन (हा ९) ।

आरमिअ वि [आरमिअ] १ रसव भावा (हा
१ १ बीप २५) ।

आरमिअ वि [आरमिअ] १ रसव
आरमिअ का भावा । २ पु नरकाल (मिनु
१ १९ गुण ११९; महा ७ १२७ १२१) ।

आरमसक [आ + रम] १ आरमन करना ।
आरमस (माह ४) ।

आरमस वि [आरमस] १ मुक, नाकीय (पह ४
७१) ।

आरमसक [आ + रम] १ विहाता हुप
भावा । २ रोग । नह आरमस (अ १२८
१) । संह आरमिअ (महा) ।

आरमिअ न [दे] १ विहात करना । वि,
विम-मुक (दे १ ७२) ।

आरम पु [आरम] १ कैओक-विरोध (पह
४ ११, १२) । २ उस कैओक का विमली
देवा 'अ' के आरमसव घोड़ीभाएला पापवि'
(अपि १२१ विसे १११) ।

आरम पुन [आरम] १ एक देविमल (दे १
१११) ।

आरम न [दे] १ अर, होठ । २ कनक (दे
१ ७१) ।

आरमस न [आरमस] १ नवीं वापुआ
(दे १ १७) ।

आरमस न [दे] १ कमल पत्र (दे १ १७) ।
आरमस वि [आरमस] १ नवीं वापुआ-विमली
(दे १ ११) ।

आरमस वि [आरमस] १ नवीं, वापुआ
आरमस विमली नवीन में लगत (अ
२२१) वा । २ न वापुआ-विमली नवीन-
विमली (पत्र ११ १) ।

आरमिअ वि [आरमिअ] १ नवीन में बहने-
वाला (वापुआ भावि) (दुप २ २) ।

आरम वि [आरम] १ नवीन रस (आपा) ।
२ अरमस वनुरक (पह २ ४) ।

आरमिअ न [आरमिअ] १ भापुआ (दुप १
१९ गुण) ।

आरम वि [आरम] १ आरम मुक किआ
हुआ (कम) ।

आरम वि [दे] १ बड़ा हुप । २ कनक
जपुन । ३ वर में धारा हुप (दे १ ७२) ।

आरमस कैओ आरमस = आरमस (पाप) ।
आरमस न [दे] १ कमल पत्र (पह ४
२१) ।

आरमस कैओ आरमस ।
आरमस कैओ कैओ ।

आरम कैओ आरमस = आ + रम । आरमस
(दे ४ ११९ अर १) । नह आरमस,
आरमस (अ ७) । संह आरमस (विसे
७९१) ।

आरेख नि [ख] १ मुद्रित संवित ।
२ प्रान्त । ३ मुक्त (दे १ ७७) । ४ रोमा
निष्ठ, पुननिष्ठ (दे १ ७३ पाठ) ।

आरम्य [आरेण] १ मनीष पाठ (अ
११६ टी) । २ अर्या, पहले (दे ११६) ।
३ आरम्भ कर (दे १२८४) ।

आराम्य [अ + रम्य] विनिमित्त होना
प्रधान पाना । आराम्य (दे १ २) ।

आराम्य देखो आराम्य (अ ४ १ चिंते
२६२७) ।

आरेख [ख] देखो आरेख (अ ३) ।

आरोग्य [ख] लाला आजल करना
आरोग्य । आरोग्य (दे १ १६) ।

आरोग्य न [आरोग्य] अराम्य का (अंगीक
३६) ।

आरोग्य न [आरोग्य] १ आरोग्य रोम का
अराम्य (अ ४ १ अ) । २ वि रोम-
स्थित लीला (अ ४) । ३ पुं एक अराम्यो-
नामक का नाम (अ २४) ।

आरोग्यनि [ख] एक रंग हुआ
(अ २) ।

आरोग्यनि [ख] मुक्त पाया हुआ (दे
१ १६) ।

आरोग्य नि [ख] १ अरुत कहा हुआ । २
अरुत कर में अरुत हुआ (अ ३) ।

आरोग्य न [आरोग्य] १ अरुत मुक्त । २
अरुत का आरोग्योपपन्न (अ २
१५ ११) ।

आरोग्य न [अ + रोग्य] अरुत करना अरुत
करना आरोग्य (दे १ १ १ १५) ।

आरोग्य नि [अ + रोग्य] अरुत करना अरुत
करना हुआ (अ २) ।

आरोग्य न [अ + रोग्य] १ अरुत
करना अरुत करना २ अरुत करना ।
आरोग्य (दे १ १५ १०) । ३ अरुत करना
आरोग्य आरोग्य (अ २) ।

आरोग्य न [आरोग्य] अरुत करना (अ २
१५) । अरुत करना (दे १ १५)

आरोग्य न [आरोग्य] १ अरुत करना ।
२ अरुत करना (अ २) । ३ अरुत करना

आरोग्य का एक प्रकार । ४ अरुत पयुयोग
(दे २६२७ २६२८) ।

आरोग्य नि [आरोग्य] १ अरुत हुआ ।
२ अरुत पयुयोग (अ २) ।

आरोग्य पु [आरोग्य] १ अरुत देव-विशेष ।
२ वि अरुत देव का निवासी (अ २ १३
अ) ।

आरोग्य नि [आरोग्य] अरुत देव
लाला हुआ (दे १ १६ अरि दे १ ७) ।

आरोग्य एक [आ + रोग्य] अरुत अरुत
देवता । आरोग्य (अ २) ।

आरोग्य एक [आ + रोग्य] अरुत अरुत ।
३ अरुत अरुत (अ २) ।

आरोग्य पु [आरोग्य] १ अरुत, अरुत पौधा
आरि पर अरुतलाला (दे १६ अ) । २
अरुत (अ २) । ३ अरुत (अ २ २) ।

आरोग्य पु [ख] अरुत, अरुत अरुत (दे १
१६) ।

आरोग्य नि [आरोग्य] १ अरुत अरुतलाला ।
२ अरुतलाला पौधा अरुतलाला (अ २) ।

आरोग्य नि [आरोग्य] अरुत अरुत
(अ २) ।

आरोग्य नि [आरोग्य] अरुत अरुत
(अ २) ।

आरोग्य नि [आरोग्य] अरुत अरुत हुआ
(अ २) ।

आरोग्य नि [ख] अरुत अरुत (अ २) ।
आरोग्य नि [ख] १ अरुत अरुत । २ वि अरुत
पु (दे १ ७३) । ३ अरुत (अ २) ।

आरोग्य न [आरोग्य] अरुतलाला (अ २)
३ अरुतलाला (अ २) ।

आरोग्य न [आरोग्य] अरुतलाला (अ २)
३ अरुतलाला (अ २) ।

आरोग्य न [आरोग्य] अरुतलाला (अ २)
३ अरुतलाला (अ २) ।

आरोग्य न [आरोग्य] अरुतलाला (अ २)
३ अरुतलाला (अ २) ।

आरोग्य न [आरोग्य] अरुतलाला (अ २)
३ अरुतलाला (अ २) ।

आरोग्य न [आरोग्य] अरुतलाला (अ २)
३ अरुतलाला (अ २) ।

आरोग्य न [आरोग्य] अरुतलाला (अ २)
३ अरुतलाला (अ २) ।

आरोग्य न [आरोग्य] अरुतलाला (अ २)
३ अरुतलाला (अ २) ।

आरोग्य न [आरोग्य] अरुतलाला (अ २)
३ अरुतलाला (अ २) ।

आरोग्य नि [ख] १ अरुतलाला (अ २)
३ अरुतलाला (अ २) ।

आरोग्य पु [आरोग्य] अरुतलाला (अ २)
३ अरुतलाला (अ २) ।

आरोग्य नि [आरोग्य] अरुतलाला (अ २)
३ अरुतलाला (अ २) ।

आरोग्य एक [आ + रोग्य] अरुतलाला (अ २)
३ अरुतलाला (अ २) ।

आरोग्य एक [आ + रोग्य] अरुतलाला (अ २)
३ अरुतलाला (अ २) ।

आरोग्य पु [आरोग्य] अरुतलाला (अ २)
३ अरुतलाला (अ २) ।

आरोग्य नि [ख] अरुतलाला (अ २)
३ अरुतलाला (अ २) ।

आरोग्य नि [ख] अरुतलाला (अ २)
३ अरुतलाला (अ २) ।

आरोग्य नि [ख] अरुतलाला (अ २)
३ अरुतलाला (अ २) ।

आरोग्य नि [ख] अरुतलाला (अ २)
३ अरुतलाला (अ २) ।

आरोग्य नि [ख] अरुतलाला (अ २)
३ अरुतलाला (अ २) ।

आरोग्य नि [ख] अरुतलाला (अ २)
३ अरुतलाला (अ २) ।

आरोग्य नि [ख] अरुतलाला (अ २)
३ अरुतलाला (अ २) ।

आरोग्य नि [ख] अरुतलाला (अ २)
३ अरुतलाला (अ २) ।

आरोग्य नि [ख] अरुतलाला (अ २)
३ अरुतलाला (अ २) ।

आरोग्य नि [ख] अरुतलाला (अ २)
३ अरुतलाला (अ २) ।

आरोग्य नि [ख] अरुतलाला (अ २)
३ अरुतलाला (अ २) ।

आरोग्य नि [ख] अरुतलाला (अ २)
३ अरुतलाला (अ २) ।

आरोग्य नि [ख] अरुतलाला (अ २)
३ अरुतलाला (अ २) ।

आरोग्य नि [ख] अरुतलाला (अ २)
३ अरुतलाला (अ २) ।

वाचक्य बीजमन्यन्त (भाव) । कहा की
[क्या] बीजमन्यन्त 'बहुधा वाचक्य
प्रचलितं न युक्ति' (वा ६८१) । कहिय
नि [कथित] वाचक्यिक बीजमन्यन्त
खलनामा (वा ६ उ ३२) ।

आय पु [आय] १ प्राप्ति नाम (पण्ड २
१) । २ जल का समुद्र । बहुल न [बहुल]
केतो आन-बहुल (कव) ।

आय सक [आ + या] धाना घासमान करना,
'बहुवर्णितानि निर्वर्ण वाचक्य निहानुर्ह तान्'
(मुना १७०) । वाचक्य (गण) । वाचक्य (सं
११२) ।

आयआस सक [उप + गृह्] आनिक
करना । आयमान (शक ७४) ।

आयक्य की [आयक्य] घासित विपण, सक
(सम ३०० मुना ३२१ मुर ४ २१३, प्राय
३, १३६) ।

आयक्य तु [वि] वाचक्य, कृत विपण मन्वीय
(वि ११२) ।

आयक्य वि [आयक्य] बीजा लवे पीका
(ग २१३) ।

आयक्युर वि [आयक्युर] ऊपर सेको नि ३
७४) ।

आयक्य सेको आयक्य 'आयक्य के आयक्य लोनी
समया य माह्ला य' (भाषा १ ४ २ ३
१ ३, २, १ ४ वि ३३०) ।

आयक्य न [आयक्य] घष पर बहने की
कता (मि) ।

आयक्य वि [अपरवीय] अत्यन्त-आयक्य
(कव) ।

आयक्य सेको आयक्य (वि १ १३६) ।

आयक्य सक [अ + पृ] प्राप्त होता माय
होना । आयक्य (मम) । आयक्ययक्य
(पण्ड १ ३) ।

आयक्य सक [आ + कर्] १ संयुक्त
करना । २ प्रसन्न करना 'आयक्य गुणा
वन्तु मनुर्हि कले घनकल्पित' (म ११) ।

आयक्य सक [आ + पृ] प्राप्त करना ।
वाचक्य (उप ३२, १ ३) । वाचक्य (मुप
१ २, ११ २) वाचक्य (मुप ११) ।

आयक्य वि [आयक्य क] प्रोत्साहन
आयक्य (वि ४११) ।

आयक्य न [आयक्य] १ संयुक्त करना ।
२ प्रसन्न करना (माय) । ३ जस्योप,
व्याप्त । ४ उद्योग-विशेष । ५ व्यापार-विशेष
(वि ३ ३१) ।

आयक्य वि [आयक्य] १ प्रसन्न किया
हुया । २ समिपु किया हुआ (महा मुर १
३१ मुना २३२) । करण न [करण]
व्यापार-विशेष (माय) ।

आयक्य सेको आयक्य = आयक्य
(मुना) ।

आयक्यकरण न [आयक्यकरण] उद्योग
विशेष या व्यापार-विशेष का करना उद्योग
लक्षणिका में वर्णन-रूप रूप व्यापार (वीप
वि ३ ३) ।

आयक्य सक [आ + पु] १ बह की लक्ष
मुना, फिरना । २ विलीन होना । ३ सक-
योग्य करना मुनामा । ४ विलीन हु-
की करना । आयक्य (वि ४ ४१६ मुप १ ३,
२) । बह आयक्यमाय (वि ३, ८) ।
आयक्य सेको आयक्य (भाषा मुना ३०० मुप
१ १) ।

आयक्य की [आयक्य] घासित (शक
११) ।

आयक्य की [वि] १ मन्वीय कुलित । २
परक्य की (वि १ ७७) ।

आयक्य सेको आयक्य = आयक्य (यम १) ।

आयक्य सक [आ + पृ] १ प्राप्त घासित
करना । २ घा लपना । बह-आयक्य (प्राय
१ ६) ।

आयक्य न [आयक्य] १ मिला (वि ६
४२) । २ घा लपना (वि १८७) ।

आयक्यवीहि की [आयक्यवीहि] १ हट्ट-मार्ग
वाजार । २ रम्य-विशेष एक लक्ष का मुद्रा
(यम १) ।

आयक्य वि [आयक्य] १ मिला हुआ
(महा) । २ घा में घासा हुआ (वि १४ १) ।

आयक्य वि [वि] १ संगत संघट (वि ३
७ वाप) । २ गार, मज्ज (वि १ ७८) ।

आयक्य पु [आयक्य] १ हट्ट मुना (उपमा
१ १ महा) । २ वाजार (प्राय) ।

आयक्य पु [आयक्य] वीहाय, व्यापार
(यम) ।

आयक्य वि [आयक्य] १ घासित-मुद्रा । २
प्राप्त (ग ४६७) । सत्ता की [सत्ता]
मन्वीय मन्वीय की (यम १२४) ।

आयक्य वि [आयक्य] घासित (मुप १ १
१ १६) ।

आयक्य सक [आ + पु] घासा, 'वाचक्य
मायक्य मुना मेरे लक्ष मनुष्यविधि' (यम
३६६) ।

आयक्य सक [आ + पु] १ परिग्रह
करना । २ लपना । ३ वाजार मुनामा । ४
सक पठित वाक्य को वाच करना । मुनामा ।
वाचक्य (मुद्रा ३१) । बह आयक्यमाय,
आयक्यमाय (वि १ २०१ मुना) ।

आयक्य पु [आयक्य] १ वाजार परिग्रह
(स्वप्न १६) । २ मुद्रा-विशेष (यम ३१) ।
३ मन्वीय लेख एक विनय (मन्वीय) का
नाम (अ २, ३) । ४ एक लपना पृ-
विशेष (पण्ड १ १) । ५ एक लपना का
नाम (अ ४ १) । ६ वर्य-विशेष (अ ६) ।
७ वर्य का एक लपना (यम) । ८ घास
विशेष (वाचक्य) । ९ वाप-विशेष
वाचक्य व्यापार-विशेष 'मुनावाचक्य विधि
कर्म' (यम २१) । कृत न [कृत] वर्य-
विशेष का लपना विशेष (यम) । १० वर्य बह
[यमान] वर्य की लपना वाचक्य मुना-
वाचक्य (यम ११ ११) ।

आयक्य पु [आयक्य] १ एक लक्ष का वाजार
(वि ३६३) । २ न लपना २३ विना
का लपना (संवीय ३८) ।

आयक्य न [आयक्य] घास घासा (वाच) ।
आयक्य न [आयक्य] वाजार-ग्रहण (वि
२, ३) । 'पठिया की [पठिया] वीहि
विशेष (यम) ।

आयक्य पु [आयक्य] सेको आयक्य । १
वि वाजार-ग्रहण करनेवाला (वि २ १) ।

आयक्य की [आयक्य] मन्वीय-विशेष के
एक विनय (मन्वीय) का नाम (यम) ।

आयक्य वि [आयक्य] १ वीप वर्य, 'वम
विनोदवाचक्य' (वि १११४) । २ वाजार
कृत । ३ वर्य (वि १२) ।

आयक्य की [आयक्य] वर्य (वर्य
७७३) ।

आवाह सक [आ + वाह] १ सन्त्य के लिए वेह या सेवाप्रति वीज को बुलाना । २ बुलाना । छंहु आवाहिनि (अप) (मति) ।
 आवाह दु [आवाह] पीडा बाधा (विपा १ ६) ।
 आवाह दु [आवाह] १ नन-नरिणीता वधू को घर के घर लाना (पण्ड २ ४) । २ बिवाह के पूर्व किया जाता पान देने का एक उत्सव (बीज १) ।
 आवाहिन न [आवाहिन] प्राज्ञान (विचे १ ८८) ।
 आवाहिनि [आवाहिन] १ बुलाना हुआ प्राज्ञ (मति) । २ मन्त्र के लिए बुलाना हुआ वेह या सेवाप्रति वस्तु 'एवं न मण्डेणैः प्रावाहिनाई सवाह' (सुर ८ ४२) ।
 आवि न [वि] १ प्रसन्न-हीन । २ वि निज्य शास्त्र । ३ छट, बेसा हुआ (वि १ ७३) ।
 आवि व [वापि] वस्तुत्व-सोतक प्रत्यय (कृष्ण) ।
 आवि व [आविस्] प्रकटता-पुष्क प्रत्यय (सुर १४ २११) ।
 आविअ सक [आ + पा] पीना कहा बुलाना पुनः पुनः समर्थ आविअ रह' (वस १ २) ।
 आविअ वि [आहु] आन्वित (वि १ ६२) ।
 आविअ दु [वि] १ स्त्रियो गुह्य कीट विवेच । २ वि मन्त्र, प्राचीन (वि १ ७४) । ३ श्रोत (वि १ ७४) वाचा पठ ।
 आविअ वि [आविच] आन्वित-श्रोत (वाच) ।
 आविअगमा की [वि] १ गरीडा बुद्धि । २ पण्डिता पचीन की (वि १ ७७) ।
 आविअ सक [आ + अन्] १ निषणा । २ पण्डिता । ३ मन्त्र से प्रवीन करना ।
 आविअ (मन्त्र १८) । आविअगो (वि ४८९) । 'पारम' का सुवर्णपुत्र का आविअ विनिषेज का' (वाचा २ १३ २) ।
 कर्म, आविअम् (वस) ।
 आविअण न [आम्भण] १ पण्डिता । २ मन्त्र से प्रवीण करना, मन्त्र से प्रवीण करना (पण्ड १ २ पाठ ३८) ।

आविअम् पुन [आविअम्] प्रकट-कर्म, प्रकटन से किया हुआ काम (वाचा २, १३ ३) ।
 आविअ वि [आविअ] अविअ उपाधीन (वि १ ८९ १३ १३ १३ १३) ।
 आविअ वि [आविअ] १ आहुत ब्याप्त (सम ३१) गुण १८०) । २ प्रविष्ट (सम ३ १) । ३ आविअ धामिअ (अ ३, वास ३६) ।
 आविअ वि [आविअ] मृत धामि के उपपन्न से पुनः (सम्यक्त १७१) ।
 आविअ वि [आविअ] परिचित पहना हुआ (कृष्ण) ।
 आविअ वि [वि] अविअ श्रेष्ठ (वि १ ११) ।
 आविअम् पुन [आविअम्] १ उत्पत्ति । २ प्राकृतिक धर्मिक 'आविअम्भितेभ्यः श्रेष्ठपण्डितानिभ्यमेव' (विचे) ।
 आविअम् पुन [आविअम्] १ उत्पत्ति । २ प्राकृतिक (कृष्ण) । ३ धर्मिक (सुर १४ २११) ।
 आविअ वि [आविअ] १ मन्त्र उत्पन्न (सम ३१) । २ आहुत ब्याप्त (सम ३ १३) ।
 आविअ वि [वि] कृति कृत (पण्ड) ।
 आविअपिअ वि [आविअपिअ] धर्मिक (वि १ ७२) ।
 आविअ सक [आ + विअ] श्रेष्ठ करना हुआ । आविअ (सम्यक्त १ १) ।
 आविअ सक [आ + विअ] १ श्रेष्ठ होना प्रकट होना । २ सक उपभोग करना सेवना 'परश्वरआविअमिति' (विचे १२३६) ।
 'वं नं समर्थ कीर्ति, आविअं केव केव मानेय ।
 वो वन्ति वन्ति समर्थ, गुणगुणं वन्ति वन्ति' (अप)
 आविअ सक [आविअ + म] १ प्रकट होना । २ उत्पन्न होना । आविअवह (वि ४८) ।
 आविअम् सेवो आविअम् (वि ७१८) ।
 आवि सेवो आवि = आविअ 'आवी मा वर मा वरहे' (उत १ १० पुन १ १०) ।
 कर्म सेवो आविअम् (वाचा २, १३, ३) ।
 आविअ वि [आविअ] १ पीत । २ शोणित (वि १३ १३) ।
 आविअ वि [आविअ] निपन्न, धर्मिक

'धम्ममिअमिअमि' वन्तिअ केव वं सुवर्ण ।
 मणुसमर्थ नरमाणो वीयति वयो कर्म मणुअ' (सुपा १२१) ।
 मणु न [मणु] मणु-विरोध (मम १३ ७) ।
 आविअम् न [आविअम्] १ उत्पत्ति । २ धर्मिक (आ १ कृष्ण) ।
 आविअ सक [आ + पीअ] १ पीडना । २ बलाना । आविअ (सम) ।
 आविअ न [आविअ] स्तन बल (मण्ड) ।
 आविअ सेवो आविअ = आविअ (वि ११३) ।
 आविअ सेवो आविअ । छंहु आविअपण (वाचा २ १ ८ १) ।
 आविअ न [आविअ] वनूह, निषम (विचे) ।
 आविअ दु [आविअ] मण्ड की न्याय में पिता का (पाठ) ।
 आविअ वि [आविअ] पूर, मणु (वि २ १ २) ।
 आविअ दु [वि] मन्त्रि-मति (मति ११३) ।
 आविअ वि [आविअ] वका हुआ (प्रक १ १२) ।
 आविअ की [आविअ] आविअ (प्रक ८ १२) ।
 आविअ सेवो आविअ = मा + मणु । वर आविअ (पण्ड ७९ ८) । कर्म, आविअम् माण (वि १२२) ।
 आविअ न [आविअ] वृत्ति (वि ४१६) ।
 आविअ सेवो आविअ (पण्ड १४ ३२) वि ७७) ।
 आविअ सक [आ + वेद] १ विनित्त करना निषेध करना । २ बलवाना । आविअ (मण्ड) ।
 आविअ दु [आविअ] मण्ड, पुन (वि १७ ११ ७२) ।
 आविअ सेवो आविअ ।
 आविअ वि [आविअ] शक्ति ११ ; हुआ (वा २८) ।
 आविअ } केव आम ११ ३, ३३, ३४, आविअ } बुला ।
 आविअ दु [आविअ] १ मण्ड, ११११११ नरमा (वि ७ ७९) ।

आवेशय न [आवेशय] अर रेलो (बस)
नि ३ ४)।

आवेशयि [आवेशयि] १ बापें घोर से
मेथिल (मा १९ ९ उप पृ १२७)। २ एक
बार बैस्य (डा)।

आवेशय न [आवेशय] निवेश मनो-आय
का प्रकाश-कण्ड (गठक ३ ७ ८७)।

आवेशय नि [वेश] १ निवेश प्राप्त। २
प्रवृत्त, वृद्धा वृद्धा (पृ)।

आवेशय छ [आ + वेशय] वृत्तावित
बला। छं. आवेशयि (व २४)।

आवेशय पुं [आवेश] १ बलिनिवेश। २ जोर।
३ बुद्धि। ४ प्रवेश (गा)।

आवेशय न [आवेशय] रूपवृद्ध 'आवेशय'
समपदानु पठितप्रकाश एवमा वासो
(घावा)।

आम रेलो अस्त = अस्त (मा २९)।

आस म [आस] कला। क. 'अवर्ग'
आसमाया न पत्तमुदायि विवर्ग (व ४)।
१ आसिचय आसिचय, आसिचय (पि
२७ कम व ९, ५४)।

आस पुं [आस] १ अथ मोका (छाया १
१७)। २ शेष-विशेष दक्षिणी नक्षत्र का दक्षि-
णावर्ग (न)। ३ दक्षिणी लक्षण (व २)।

४ मन चित (पृ २)। कणा कम पुं
[कणी] १ एक प्रत्यय। २ वरुणा निवासी
(डा ४ २)। गीब पुं [गीब] एक प्रसिद्ध
छाया पहला प्रतिबिम्ब (पठन ३, १३९)।

वर पुं [वर] वर (मा १)। त्थाम
पुं [त्थाम] कलाचार्य का प्रस्ताव पुं
(दुमा)। छम पुं [छम] विद्यावर वर
का एक पत्रा (पठन ३, ४९)। अम्य पुं
[अम्य] कला पूर्वीक वर्ष (पठन ३, ८२)।

भर नि [भर] धर्मी को वापस करनेवाला
(मीन)। पुर न [पुर] नगर-निरपेक्ष (वृ)
पुरा पुरी की [पुरी] नवरी-निरपेक्ष (वृ
२, ९)। मविगया की [मविगया]
भुविगया नगर-निरपेक्ष (मीन १३७)।

महग महप पुं [महप] अथ का नवैव
नरनेवाला (छाया १ १७)। मिश पुं
[मिश] एक दक्षिण-पश्चिम की वृद्धि-
के दिग्ग नक्षत्र का दिग्ग का वीर निवर्त

समुच्चरित पंथ नवावा का (डा ७)। मुह
पुं [मुह] १ एक धनपत्र। २ छत्रका
निवासी (डा ४ २)। मेह पुं [मेह] अथ-

विशेष (पठन ११ ४२)। रह पुं [रह]
मोका-नारी (छाया १ १)। वार पुं [वार]

वृद्ध-वरा, वृद्ध नवैया (छाया २१४)। वाह
निया की [वाहनिम] नौके की छत्रा-
नौके पर धार होकर निराला (मिपा १ २)।

सेय पुं [सेन] १ समान्ता पार्श्वता के
पिता (कय)। २ पक्ष-वर्णनी का पिता
(सम १३२)। रोह पुं [रोह] वृद्ध-वरा,

वृद्ध-नवैया (वि १२ २९)।
आस पुं [आस] मोहन 'आमासाए पाय
रुआर' (छप २ २)।

आस पुं [आस] लेण पंक्ता (विने
२७२३)।

आस न [आस्य] पुन पुं (छाया १ ५)।
आस्य नि [आस्य] व्यापक-स्थित 'अमा
वराणी बावा सा रेली सातप्रतिष्ठा' (बर्ग
१४७)।

आसक लक [आ + राक] १ संवे
कला संरक्ष करना। २ एक समन्वित होता।

आसक (व ३)। वृद्ध आसकन आस-
कनाम (गा २ मा १)।

आसक की [आसक] लक अथ वृद्ध
संरक्ष (पुर ३ १२१ मा २ गा)।

आसक नि [आसक] आसक करने
वाला (वा २ ४)।

आसकिय नि [आसकिय] १ संवेक संर-
क्ष। २ संवेक (वृ)।

आसकिय नि [आसकिय] आसक करने
वाला नवैया (पुर १४ १७ मा २ ९)।

आसग पुं [वेश] वाह-वृद्ध शम्पा-वृद्ध (वि १
९९)।

आसग पुं [आसग] १ आसक दक्षिण-
वर्ग। २ संवेक। (गठक)। ३ रोम (पावा)।

आसगि नि [आसगि] १ आसक। २
संवेक संवेक (वृ)। छी. गी (गठक)।
आसग लक [सं + आसग] १ नवाचना
करना। २ व्यापक-स्थित करना। ३ निरक्ष करना
निबध करना। आसग (वि १३, ९)।
वृद्ध आसग (वि १३ २२)।

आसग पुं [वेश] १ शम्पा, निरक्ष (छाया १२९
वृ)। २ व्यापक-स्थित परिष्कार (वि १३)।
३ आसग वृद्धा वृद्ध (गठक)।

आसग की [वेश] १ शम्पा शम्पा (वि १
९९)। २ आसक (मे २)।

आसगि नि [वेश] १ अक्षय-स्थित। २ अक्ष
वापि (वि १ ९९)। ३ संवेक (दुमा
३ १९७)।

आसगि नि [आसग] वीसे तथा वृद्धा
(पुर ५ ९ उतर २१)।

आसग न [आसग] आस-विशेष
(आस-वृद्ध)।

आसग पुं [आसग] आस-विशेष संवे
(पुर ९ ११)।

आसग न [आसग] अक्षय-स्थित अक्ष
रोम वृद्धा (गठक)।

आसगि की [आसगि] वीसे तथा वृद्धा
(पुर १ ४ २ १३ मा १२७)।

आसग की [आसग] व्यापक-स्थित, अक्ष
(पुर १ ७ वृ १ ५४)।

आसग की [आसग] अक्षय-स्थित
(पुरा १२४)।

आसग नि [आसग] १ अक्षय-स्थित
(आमा)। २ अक्ष का एक वृद्धा वृद्ध। ३
अक्ष का वृद्धा वृद्ध (व २)।

आसगि नि [आसगि] अक्षय-स्थित
(पुर २ २ १९)।

आसगि नि [आसगि] अक्षय-स्थित
(वृ २ २)।

आसगि नि [आसगि] अक्षय-स्थित
(वृ २ २)।

आसगि नि [आसगि] अक्षय-स्थित
(वृ २ २)।

आसगि नि [आसगि] अक्षय-स्थित
(वृ २ २)।

आसञ्ज न [आसाञ्ज] प्रात करके (विशे १) ।

आसञ्ज पुं [आसञ्ज] निम्न की देखनी खान्सी का स्वाम-क्यात एक दिन प्रत्यक्षार (विशे १४१) ।

आसञ्ज न [आसन] १ जिसपर बैठा जाता है वह नीची धारि (पात्र ४) । २ स्थान, गच्छ (जत १ १) । ३ खम्भा (बाधा) । ४ देखा करनेका (छ ६) ।

आसनिय नि [आसनिज] आसन पर बैठाया हुआ (घ २१२) ।

आसण्ज न [आसन्ज] १ समीप पास । २ नि समीपम् (मन्त्र) । देखो आसन्ज ।

आसञ्ज नि [आसञ्ज] नील उत्तर (महा प्रभु ४४) ।

आसञ्ज नि [आमञ्ज] १ नीचे लगा हुआ (पत्र १३) । २ पुं मनुष्य का एक भेद, भीमपात होने पर भी भी का धर्मियन कर उनके क्यारि प्रदी में कुछकर सोनेवाला मनुष्य (पत्र १ १) ।

आसञ्जि भी [आसञ्जि] धनियन्त्र लक्ष्मीला (कुमा) ।

आसञ्ज पुं [आसञ्ज] पीपल का पेड़ (पञ्च २१ ७६) ।

आसञ्ज नि [आसञ्ज] १ आसञ्ज-आत स्वम् । २ विमान्त (गामा ११ सम १३२ पञ्च ३ १५ से ७ २८) ।

आसञ्ज देखो आसण्ज (कुमा, पञ्च) । वृत्ति नि [वर्तिञ्ज] नखरक में घुलेवाला (मुषा १३१) ।

आसम पुं [आसम] टापड़ धारि का निवास स्थान तीर्थ-स्थान (पण्ड १ १ धीन) । २ अक्ष-वर्ष मासस्थ, आसमस्थ धीर भेद्य (वैमल) है बार प्रकार की व्यवस्था (पंचा १) ।

आसमपय न [आसमपय] तापों के प्रापय से उत्पन्न स्थान (पञ्च १ १७) ।

आसमि नि [आसमिन्] पापम में एने-वाता धर्मि मुनि वरैय (पञ्च १) ।

आसय म [आस] देखा । आसयति (वीच १) ।

आसय सक [आ + भी] १ आशय करता

प्रत्यक्षम्न करना । २ ग्रहण करना । आसयह (कर्म) । नक आसयत (विशे १२२) ।

आसय पुं [आराक] बालेवाला (पात्र) । आसय पुं [आभय] आभार, प्रत्यक्षम्न (जत ७१२ गुर ११ १६) ।

आसय पुं [आशय] १ मन जित हृदय (गुर ११, १३, पात्र) । २ धर्मिप्राय (गुप्त १ १५) ।

आसय न [वि] निरुद्ध, समीप (वि १ १३) । आसयि नि [वि] संयुक्त-आगत सामने धार्या हुआ (वि १ १६) ।

आसय म [आ + स्तु] बीरे-बीरे करना टकना । नक आसायमाज (पात्र) ।

आसय सक [आ + स्तु] याना 'आसयति' शेष कर्म परितुल्येण्यया व नियुक्ती आवा खरी' (हृष्य १६) ।

आसय पुं [आभय] मूक निरुद्ध, देखो 'सया सय' (सय १ १) ।

आसय पुं [आसय] महा शक (जत ७२८ टी) ।

आसय पुं [आभय] १ कर्मों का प्रवेश-द्वार, जिससे कर्मवन्त होता है वह द्विधा धारि (छा २ १) । २ नि भीटा, प्रक-वचन को मुले वाला (जत १) । सकि नि [सकिन्] द्विधादि में आसक (पात्र) ।

आसयन न [वि] नाव-गृह, शम्भा-नर (वि १ ११) ।

आसययिआ भी [अथवाहिङ्ग] मय-कीमा (वर्मेज ४) ।

आसाभ सक [आ + सावय] स्पर्श करना झुना । आसाभमाज । नक आसायमाज (पात्र २ १ २ १) ।

आसस म [आ + सस्] आसासम लेन विधाय लेन । आससह, आससय (वि ८८ ४६६) ।

आससम न [आससम] विनाश, हिया (पण्ड १ १) ।

आससा भी [आससा] यन्त्रिया 'जैनि' गु परिणय संयुक्त यानवा हार (विशे २११६) । आमसिय नि [आभय] आसासम-आत (न १७८) ।

आसा भी [आसा] १ आस समीर (वीच) से १ २६ गुर १ १७७) । २ विना (ज

१४८ टी) । ३ उत्तर शक पर बलनेवाली एक विष्णुमारी देवी-विशेष (छ ८) ।

आसाभ सक [आ + साव] स्वाय लेना बचना जाना । आसाभेति (सम) । नक आसाभार्जव, आसाभय, आसायमाज (पात्र से १ ४६ गामा १ १) ।

आसाभ सक [आ + सावय] प्रात करता । नक आसाभय (वि १ ४२) ।

आसाभ सक [आ + सावय] प्रवृत्त करना व्यवसाय करना । आसाभमा (महावि ३) । नक आसाभय, आसायमाज (बा १) छ ४) ।

आसाभ पुं [आसाभ] १ स्वाय, रत (मा ३३१ से ६ १५ जत ७१८ टी) । २ वृत्ति (वि १ २६) ।

आसाभ पुं [आसाभ] स्वाय का वित्तवृत्त प्रभाव (तुंग ४२) ।

आसाभ देखो आसय व भावय (तुंग ४२) ।

आसाभ पुं [आसाभ] प्राति (वि ६ १८) ।

आसाभ नि [आसाभ] १ प्रवृत्त विष्णु (पुल ४२४) । २ न प्रवृत्त विर स्कार (विशे ६२) ।

आसाभ नि [आसाभ] नका हुआ भीड़ा वाला हुआ (वि ३ ४६) ।

आसाभ नि [आसाभ] प्रात मन्त्र हिन १ मरि) ।

आसाभ पुं [आपाभ] १ धमाङ्क मय (सम ११) । २ एक निम्न बी प्रत्यक्ष मय का अन्तरक भा (ज) । मूह पुं [मूहि] एक प्रसिद्ध निम श्रुति (कुमा २१) ।

आसाभ भी [आपाभ] नमन-विशेष (छ २) ।

आसाभ भी [आपाभ] आपाङ्क नाम की वृत्तिया (मुम) ।

आसाभ भी [आपाभ] १ आपाङ्क मात की वृत्तिया । २ आपाङ्क मात की अन्तरक (मुम १ १) ।

आसाभ नि [आसाभ] आसाभ नरनेवाला (छ ७) ।

आसाभ पुं [आसाभ] सत्य व मनुदेव और बलदेव के पूर्वजों व मनुदेव का नाम (सम १३३) ।

(बर्मेन न) । छंङ्. आहविउं, आहविकण
(बर्मेन १५ सम्मत २१७) ।

आहव पुं [आहव] पुन लार्ह (पासा पुपा
२८५ धा ४१) ।

आहवण } न [आहवान] १ कुवाला ।
आहवण } २ लनकाला (भा १५) पुपा
॥ पल्ल ११ १ ; ध १४४) ।

आहविअ व्हेओ आहव = पावु (ही ४) ।

आहव्य वि [आभाव्य] खडीळ खेगावि
(वेवा ११ १ ; व १३) ।

आहव्ययी बी [आहवनी] भिवा-विरोन
(सुप २१) ।

आहा छक [आ + क्वा] कहुन । कर्म
वाहिकर (वि १४६) वाहिकरि (कण) ।

आहा म्म [आ + मा] स्वापन करना ।
कर्म वाहिकर (सुप २२) । छंङ्. आहोई
(सुप १६) । छंङ्. आहाम (उठ ३) ।

आहा बी [आमा] कर्मि ठेव (कण) ।

आहा बी [आपा] १ प्रत्यय साधार (विं) ।
२ वाहु के निमित्त साधार के लिए मन
प्रतिपादन (विं) । कड वि [कड] साधा-
कर्म-बीन ठे कुड (वि १५५) । कम्म न
[कर्मन] १ वाहु के लिए साधार पकाला ।

२ वाहु के निमित्त पकाला हुआ सोचन जो
बैल वाहुओं के लिए निमित्त है (कड २ १
डा १४) । कम्मिय वि [कम्मिय] वेको
पूर्वोक्त कर्म (कण) ।

आहाण न [आमान] १ स्वापन । २ स्वापन,
साधन 'सम्पन्नप्राप्त' (भाष ४) कवर १६४) ।

आहाण } न [आकमान] १ छंङ्.
आहाण्य } कर्म । २ कर्मलक्ष्मी क्लेश
कोषोपि (सुप २ ६१) कर्म २२८ टी) ।

आहाणिय वि [आवाण्य] छय वल्ल-
निक (सुप २ १२७) । वेको आहाणहीच ।

आहार छक [आ + हारम] काला सोचन
करता भहार करना । आहारण, आहारोपि
(कण) । क. आहारोमाण (कण) । क. आहारि-
कस्समाज (मम) । छंङ्. आहार-
रित्तप आहारोप (कण) । छं. आहारो-
पय्य (डा १) ।

आहार पुं [आहार] १ कुण्ड सोचन (स्वप्न
१ ; पापु १ ४) । २ काला पक्का (कण) ।
१ न वेको आहारण (पल्ल १ १६) ।

पउउति बी [पउमि] कुक आहार बी
कल बीर रा के क म बरतने बी शक्ति (धन
४ ४) । पोसह पुं [पोपय] बर विरोन

विसेम आहार ना सर्वना वा याधिक त्याग
किया जाता है (वाच १) । मण्णा बी

[संज्ञा] आहार करने की दृष्टि (उ ४) ।
आहार पुं [आहार] १ चाप्य भविपण

(सुपा १२५ संवा १ १) । २ चाकार (धन
२ २) । ३ धनपाण्य याद रत्ना (पुण
१३६) ।

आहारण न [आहार] १ छंटीर विरोन
विरोन कीच्छ-पूर्वी केवलाली के पास जाने
के लिए बनाता है (उ २ २) । २ वि सोचन

करनेवाला (उ २ २) । ३ आहारण-छंटीर
वाला (विसे १७२) । ४ आहारण छंटीर क्लेश
करने का विरो सामर्थ्य हो वह (कण) ।

आहारण न [आहार] १ आहारण छंटीर बीर
उपक धनोपाय (कम्म २ १ २४) । जाल

न [नामय] आहारण छंटीर का हेतु बुद्ध
कर्म (कम्म १ ११) । सुग न [सुग]
वेको आहारण (कम्म १ १ १७) ।

आहारण वि [आहारण] १ आहारण करने-
वाला । २ आहारण-नृत्त (वि १६ ३) ।

आहारण वि [आहारण] वाक्यक (वि ६,
३) ।

आहारय वेको आहारण (डा ६ मम परण
२८४ डा १६ कर्म १ १७) ।

आहारणिया बी [आवाणिया] कल-
कल केवलानुक्रम (कण) ।

आहारि वि [आहारि] आहार-कर्ता
(पल्ल १११) ।

आहारि वि [आहार्य] १ जाने योग्य ।
२ कल के वापन काम या छेके ऐसा योग्य कुरी
विरोन (विं ४ २) ।

आहारि वि [आहार्य] आहार के योग्य,
जाने योग्य (मिह ११) ।

आहारि वि [आहारि] १ विरोन आहार
किना हो वह, 'उत्त कंठोत्त राखो तं
पणीं पाधोपि' आहारिस्स पमाउत्त'
(शाया १ १६) । २ पणित्त बुद्ध (धन) ।

आहारण बी [आमान] धरणिपण्णा
पण्णा कय पय्य (पज) ।

आहायणा ली [आमानना] जरेय (विं
१६१) ।

आहाविअ वि [आवाविअ] बीरा हुपा
(धिरि ७३९) ।

आहावि वि [आवावि] बीरोपणा
(धण) ।

आहास वेको आमान = मा + भाप । छंङ्.
आहासि (धन) (धन) ।

आहाह म [आहाह] आवाह-दोषक प्रत्यय
(वि २ २४७) ।

आहि पुं [आधि] नन की पीडा (कम्म
१२ टी) ।

आहिआह ली [आमिआधि] दुनीला
बालागी (वि १ ११) ।

आहिआह बी [आमिआदी] दुनीला (क
२८३) ।

आहि छक [आ + हिण] १ कर्म
करता जाता । २ परिपन्न करता । ३ बुद्ध
परिपन्न करता । वह आहिउं आहि
हेमाण (प २१४ टी) शाया ११) । छंङ्.
आहिउं (महा ४ १३१) ।

आहिउं वि [आहिउं] बसनेवाला,
आहिउं परिपन्न करनेवाला (टीप
१११, ११८ टी) ।

आहिक न [आधिक्य] अधिकता (विं
२ ८७) ।

आहिआह वेको आहिआह (महा) ।
आहिआह वेको आहिआह (मा २४) ।

आहिउं वि [आहिउं] आहिउं कर्ता
करहिमा छेप (मुा ११६) ।

आहित वि [हि] १ भवित दत्त । २ दुर्लभ
पुत्र (वि १ ७१) बीन ३ टी) । ३ पापु
पक्का हुआ (वि १ ७१) से ११ ८४

पापु- 'पक्कलं उरिणं व पापुं ठेव-
अरिं व' (बीन ३ टी) ।

आहित वि [हि] १ छंङ्. कला हुआ । २
भवित बना हुआ (द ४) ।

आधिपत्त न [आधिपत्त] अधिकारण कर्त्त
(क १ ११ टी) ।

आधि वि [आधि] १ स्थापित निरेमि (अ
४) । २ सम्पूर्ण हितकर (सुप) । ३ परिपन्न

भित्त (पाप्म) । गिग पुं [गिगि] धम्मि-
होमीय काण्डस (पत्र १३, ३) ।

आहिय वि [आहित] १ व्यास 'अधिरुखा
धियो एव असीयराधिरु' (सुख ४९) । २
जलित उत्पत्ति । ३ प्रथित प्रसिद्धि-भाष्य
(सुख १ २ २ २३) । ४ सर्वथा हितकारी
(सुख १ २ २-२७) ।

आहिय वि [आसपात] कहा हया प्रति
पायि उक्त (पण्य १३ मुज १३) ।

आहियार पुं [अधिहार] अधिहार, सत्ता
हक (पत्र ३४ ८) ।

आहियत्त वेहो आहियत्त (कल) ।

आहिसारिअ वि [अमिसारित] नायक-मुनि
स नहीर पत्ति-मुनि से स्वीकृत (सि १३ १७) ।

आहीर पुं [आहीर] १ हेत-विशेष (कम्प) ।
२ शूद्र जाति विशेषे घरीर (सुख १ १) ।

३ इस नाम का एक राजा (पत्र ३८ १४) ।
ही री—घरीरि (सुपा १९) ।

आहु उक्त [आ + ह + वे] बुलाया । क आहु
-विज्ज (वीज) ।

आहु [आ + ह] बल करना व्याप करना ।
क आहुविज्ज (सुपा १ १) ।

आहु न [आहु] धक्का या (गल) ।

आहु पुं [वे] इक ऊपर (सि १ १३) ।

आहु वेहो आह = बल ।

आहुवि वि [आहोह] बाधा द्यायी (सुपा
१ १) ।

आहुह बी [आहुति] १ हवन होम (पत्र ३) ।
२ होम का पत्रार्थ बलि (स १७) ।

आहुहुदर } पुं [वे] बालक बच्चा (सि १
आहुहुदर } १९) ।

आहुह न [वे] १ लीकार, मुख धमय का
शब्द । २ परिण विकल्प, बेचना (सि १ ७४) ।

आहुह भक [वे] गिराया । आहुह (सि १
१३) ।

आहुकिअ वि [वे] निपटित गिरा हुआ (सि
१ १३) ।

आहुण मक [आ + ह] कपाय विज्ञान ।
कक आहुणज्जमाय (सुपा १ ३) ।

आहुणिय वि [आहुनिक] १ धावन का
नवीन । २ पुं घन-विशेष (अ २ १) ।

आहुत्त न [ह अमिमुत्त] सम्मुख सामने
'कुमपयि पहाविधो उवाहुत्त' (सहस्र पत्रि) ।

आहुअ वि [आहुत्त] बुलाया हुआ (पाप्म) ।
आहुअ पुं [आहुत्त] विद्या-विशेष (हक) ।

आहुअ वि [आहुत्त] उत्पन्न बात 'आहुत्तो
से कम्मो' (बहु) ।

आहुत्त वेहो आहुत्त = धा + धा ।

आहुत्त पुन [आसेट क] लिकार,
आहेइअ गुप्ता (सुपा ११७ स ३७)

आहेइअ वे १) ।

आहेइयि वि [आसेटिक] गुप्ता-सम्बन्धी
'आहेइयिक्खणे' (सम्मत २२३) ।

आहेय न [वे] विवाह के बाद घर के घर

बन्ध के प्रवेश होने पर जो विधान का उल्लंघन
किया जाता है वह (सुपा २ १ ४) ।

आहेय वि [आमेय] १ व्याप । २ पायित
(विशे ३२४) ।

आहेर वेहो आहीर (विशे १४४) ।

आहेवव न [आधिपर्य] नेतृत्व मुखियापन
(सुख ८६) ।

आहेवव न [आसेपत्र] १ मासेप । २ लोभ
उत्पन्न करना (पण्य १ २) ।

आहोअ वेहो आमोग (सि १ ४३ १ १
या ८८) पत्र ३) ।

आहोअ वेहो आमोग = धा + मोवप ।
संघ आहोइज्ज (स ३३) ।

आहोइअ वि [आमोगित] आत, हट (स
४८३) ।

आहोइअ वि [आमोगिक] उपयोग ही
चिह्नका प्रयोजन हो वह, उपयोग-अचल
(कम्प) ।

आहोइ उक्त [वाडय] वादन करना लिखा
आहोइ (सि ४ २७) ।

आहोएअ [आहोएअ] इस्तिरक महावत
(पाप्म स ११३) ।

आहोहि वि [आमोवधिक] धरवि
आहोहिप } क्षात्री का एक मेघ, नियत लेन
नो धरविज्ञान से देखनेवाला (सुख स
१६) ।

इय पाइअसदमहण्णवे आवापएअहंकरलो
विधो सर्वो समतो ।



इ

इ पुं [इ] १ माहव वर्षमाला का तृतीय स्वर
बर्ण (सुपा) । २-३ वाक्पाल-पुराणीय पात्र-
पुत्र में प्रयुक्त किया जाता सम्बन्ध (कम्प सि
२ ११७ पत्र) ।

इ वेहो इइ (जग) ।

१७

इ उक्त [इ] १ बाधा धवन करना । २
जानना । एह, ऐति (सुपा) । बह, एत
(सुपा) । संघ इवा (सुपा) । हेत, इत्तप,
एत्तप (कम्प कस) ।

इअइअ वेहो इयइअ (सुपा १७) ।

इइ य [इति] इन धर्मों का मुख्य धर्म—
१ समाधि (सुपा) । २ धरवि इइ (सि) ।
३ मान परिमाण (पत्र ८४) । ४ निब्र (सि
२ १३) । ५ इइ, नाण (स ३) । ६ इइ,
इत एत्त इत प्रकार (पत्र २२) ७ इइ, इइ

इकार केो एकार (कम्म १ १६) ।

इहिक वि [एकै] प्रयैक (पी १३ प्राप् ११) गुरु ८, ४२) ।

इहिक नीग [एकनत्तरिण] एकनासीस ४१ (कम्म १ ३६) ।

इककुस न [इ] नीलेसल कम्म (दे १ ७६) ।

इकल एक [इ] देवता । इकार (कम्म) । इय (सुप १ २ १ १६) ।

इकनय वि [इकन] देवनेला (पा ३२७) ।

इननय न [इकन] अन्तोत्तम प्रेणण (पडम १ १ ७) ।

इनआर केो इकसार (विज १४) ।

इकनाम वि [एकनाक] इकनाक नामक प्रसिद्ध वणिजस्य न सपन्न (विज) ।

इकन्या १ पुं [इकनाक] १ एक प्रसिद्ध वणिज इकन्या १ एनपेय, सनकान्, धनपरेय का बंध । २ उच बंध न कसप (बध १ १३) कणा वीणा मणि (१३) । ३ कोलन वेत (छाया १) । मूमि की [मूमि] मलोत्था नगरी (पा १) ।

इकनु पुं [इकनु] १ देव उच्च (हि १ १७) ११०) । २ बाल्य-विरोध, 'अपेक्षा' नाम का बाल्य (पा १) । गहिका की [गहिका] कीटी देव का दुष्टा (पाया) । घर न [गृह] कर्बल-नियेय (विने) । बाया न [दे] देव का पुत्रा (पाया) । डाया न [दे] १ देव की दाया का एक भाव (पाया) । २ देव का धेर (विज १) । 'पिसिया की [पिसिया] कपरेय (मिज १६) । 'मिपि की [मि] देव का दुष्टा (मिज १६) । मेरान न [मरक] बरौरी के हुए रूप के लुब्धे (पाया) । सडू की [पडि] देव की लकीर पुन-पुन (पाया) । बाह पुं [बाह] देव का उग्र 'गुवि' वि बध्मचाली नगरी को इकन्या-बगमिनी (पाया १) । साध्या न [दे] १ देव की लकीर दाया (पाया) । २ देव की बरौरी धान (विज १६) । केो इकनु ।

इग केो एक (कम्म १ ८ १३ सुप ४ ६) पा १४ नर वि ४४४ पा ४४ लन ७२) ।

इगनास नीग [एकनत्तरिण] एकनासीस ४१ (कम्म १ ३६) ।

इगपीसइम वि [एकपिण] एकपीसवा (पव ४९) ।

इगुनास वि [एकनत्तरिण] संस्था-विशेष ४१—नालीस वीर एक (मय वि ४४२) ।

इगुपीसी वि [एकनपिण] जलीसवा (पव ४९) ।

इगुपीस की [एकनपिण] जलीस (पव इगपीस) १ पा कम्म १ २६) ।

इगसहि की [एकनपिण] कण्ठ (कम्म १ ११) ।

इग वि [दे] नीर उग्र दृष्ट (दे १ ७६) ।

इग केो एक (गाट) ।

इगिग वि [दे] मल्लि विरहल (दे १ ८) ।

इहा केो इहक ।

इहाइ पुं [इहावि] वहीक, प्रवृत्ति (पी १) । इहेय व [इहेय] इस प्रकार, इन मासिक (सुप १ १) ।

इहक एक [इह] इहका करता बाह्या । इहकर (जवा मरा) । वक-इहक इहक माण (जत १ ६ पा ३) ।

इहक एक [आपु + स = ईप्स] प्राप्त करने को कहता । क-इहकलप्य (पव १) ।

इहककर केो इहका-कर (पवि) । इहकाइ पुं [इहकाइ] 'इहका' उच्च (६ पा ४) ।

इहका की [इहका] वध की व्याख्या की वि 'अपेक्षा-वधिका' य व (१) इहका न' (सुज १ १४) ।

इहका की [इहका] अविनाया वाह बाहा (जवा प्राप् ४७) । नारपुं [इहका] स्वरीय इहका मणिप (पवि) । अह वि [इहका] इहका के धनुस्त (पाया ३) । गुह्यम वि [गुह्यम] इहका के धनुस्त (एण ११) ।

गुमेवि वि [गुमेवि] इहका के धनुस्त (पाया) । पयि वि [पयि] इहका के धनुस्त (पाया) । परिमात्र न [परिमाण] परिमाण बलुपुं के विषय की इहका वा वरिष्ठल बरह, बलक का पांवरिष्ठ (आ ३) । गुह्या की [गुह्या]

मायासि, प्रवह इहका (पव १ १) । 'ओम पुं [ओम] प्रवह बीम (आ १) । ओमि वि [ओमि] महालो की (आ १) । ओक पुं [ओक] १ महाग बीम । २ वि महा-लो की (इह १) ।

इहका की [विस्ता] के की इहका (पाया) । इहिया वि [इह] इह, धनितपिध वामित (पुर ४ ११९) ।

इहिय वि [इहिय] प्राप्त करने की बाहा गुहा धनितपिध (मरा सुपा १२४) ।

इहिय वि [इहिय] विरही इहका की नई हो वह (कव) ।

इहिय वि [पयि] इहका करनेला (दुमा) ।

इहिय केो इहिय (दुमा प्राप् ११) ।

इहिय वि [इहिय] धनितपिध (पा ७४) । इहक एक [आ + इ] दाया प्रापक कला । वक-इहक

विश्वार्थम को उग्रपुं बोधो गुह्यं गरी । विह्यं ही विपिनिगति विह्यं नमिह्य ॥ (सु १ २ ४) ।

इहक पुं [इह्या] यक याक 'विहक' वन-इहक' (सु १ २, ३) ।

इहका की [इह्या] १ पाद, पुत्रा । २ बहली का कथनापेन (मनु ४ १) ।

इहका की [दे] माता बन्नी (धनु) ।

इहिसिय वि [इहिय] इहका का धनितपिध (पा १ ११) ।

इहमा एक [इह] वनक (हि २, २) । वक इहमाय (जम) ।

इहग पुं [दे] मेवई, उ देव (विज १ पा ४१ ४११) ।

इहगा की [इहका] नीक केो (पव २ २, ३) ।

इहगा की [दे] गाय विषेय देव (विज ४११ ४११ ४१२) ।

इहवाय केो इहवा-वाय (कम्म ११७) ।

इहा की [इहका] रंत (कवा हे १ १४) । पाय वाम पुं [पाक] रंती का वक । २ वहा वर ईह वहा की वही वहा लय (आ ३) ।

इमेरिस नि [एताहरा] ऐसा इच्छा बैठा (वच) ।
 इय देवो इम (परा) ।
 इय केवो इइ (पद) है १ ११ पीप) ।
 इय न [इ] प्रेरा पैठ (पापन) ।
 इय नि [इय] १ गठ पना हुमा (मूय १ १) । २ शरय, 'उपनिषद्' पसरीयो बरमिम नहुय किलचरों (घाने ०११ विने) । ३ गाय बाना हुमा (याथा) ।
 इयनिष्ठ म [इयानीम्] हास में हय धनय, मनुता (अ १) ।
 इयन नि [इतर] १ धन्य इच्छा (जी ४५ मानू १) । २ हीन वन्य (याथा १ १ २) ।
 इयनहा म [नरथा] धन्यता ली हो धन्य प्रचार से (मम १ १) ।
 इयनपर नि [इतरेतर] धन्योन्म परस्पर (पम) ।
 इयानिष्ठ म [न्यानीम्] हास में हय इयानिष्ठ मय (मम नि १४४) ।
 इर केवो इय (है १ १६१ गल) ।
 इरमिनिष्ठ म [इ] कर्म ऊँ (है १ ८१) ।
 इरय पुं [इ] हावी (है १) ।
 इरावरी (ली) की [इरावरी] ली-विरोध (गठ) ।
 इरि केवो गिरि 'निरागिरिपरिहर' (पम १ २०) ।
 इरिण न [इयण] बरता जल (वाच १४) ।
 इरिय न [इ] बरन मुनल (है १ ७६ बरन) ।
 इरिय वक [इर] बला पठि करना । इरि यमि (वच १ २९ मुन १८ २९) ।
 इरिया की [इ] हुटी बुझिया (है १) ।
 इरिया की [इया] गनन गति बनना (याथा) । बड़ पुं [पय] १ मार्ग में बाना (पीप २४) । २ जाने का मार्ग उत्तरा (मम ११ १) । ३ वेदन हाथी से हाने-बारी जिम्मा (मूय २ २) । बहिय न [पथिक] बैराग हाथी की बैराग हेतनामा बरकल्प बरमिनिष्ठ (मूय २ १ मम १) । बहिया ली [पथिक] बराव-पदन बरमिनिष्ठ विनय, विना-विरोध

(पथि ठा २) । समिष्ट ली [समिति] विवेक से बसना हुचरे बीच को कटि प्रचार की हाति न हो ऐसा उपरोक्त-पुनर्क बसना (अ ८) । समिय नि [समित] विवेक-पुनर्क बसनेबाला (विना २ १) ।

इल पुं [इल] १ बायराही का बायरायन स्वभाव-व्याप एक गृहपति—गृहस्थ (छाया २) । २ न. इलाकेरी के तिहायक का नाम (छाया २) । सिरी ली [आ] इस नामक गृहस्थ ली ली (छाया २) ।

इल्लय न देवो निस्सय (ने १ ४७) ।

इल्ल ली [इल्ल] १ उपिषी धुमि (ने १ ११) । २ बरलेख की एक धन-महिषी (छाया २) । ३ इस नामक गृहस्थ की पुत्री (छाया २) । ४ एक वर्ष पर रहनेवाली एक लिङ्गुपाठी (न १) । ५ उमा बन्धन की माता (पम २१ १३) । ६ इलायचन नवर में निवृत्त एक बैराग (यापन) । बूझ न [बूझ] इलाकेरी के निवाच-युक्त एक पिन्धर (अ ४) । पुत्र पुं [पुत्र] इलाकेरी के प्रचार से जपल एक वेदि-पुत्र विष्णु नक्षत्री पर मोहित होकर लू का फल लीबा धीर बाल न नाच कटो-कटो ही गृह धारणा से बैरागज्ञान प्राप्त कर मुक्ति पाई (याथ) । बड़ पुं [पथि] एकलव्य योग वा बारि पुत्रय (एवि) । बहिसय न [बहिसयक] इलाकेरी का प्रचार (छाया २) ।

इलायपुत देवो इय-पुता 'बलो इलायपुतो विना-पुतो न बाहुमुली' (पथि) ।

इसिया ली [इसिका] बुद्ध बीच-विरोध बीच धीर बलन न कलन होनेबाला कीट विरोध (बी १७) ।

इसी ली [इसी] धन्य-विरोध एक वाति की लनचार की लच्छ का हथियार (पम १ १) ।

इय पुं [इ] १ शरीर, बायरी । २ लविन ली । ३ नि बरिष्ठ, लीय । ४ लीयन न । ५ बाना इच्छा बलबाला (है १ २४) ।

इयुलिय पुं [इ] व्याप रीर (बंभ) ।

इलि पुं [इ] १ बाहुन व्याप । २ निह । ३ छाया (है १ ४४) ।

इलिय नि [इ] धानिक, ज्येष्ठपुत्रादिपत्र

बहुलासवेतिममिधमपकपल्लव' (विह २१) ।

इसिया ली [इसिका] बुद्ध बीच-विरोध धन में ललन होनेबाला कीट-विरोध (बी १७) ।

इल्लीर न [इ] १ धन्य-विरोध । २ छाया । ३ बराना गृह-हार (है १ ८६) ।

इय न [इय] इन धनों का दोषक धन्य— १ उपमा । २ साहय गुणना । ३ ज्येष्ठ (है १ १८२ छल) ।

इयम नि [इ] निस्सय (पद) ।

इयया केवो एसगा (रमा) ।

इसायी ली [ऐरामी] ईशान कोण पूर्व धीर लचर के बीच ली विना (गठ) ।

इसि पुं [इसि] १ मुनि छात्र, लानी म्हात्मा (वच १२, अवि १७) । २ अविना-निन्कार का बलिष्ठ विना का इन्द्र इन्द्र-विरोध (अ २ १) । 'इय पुं [इय] १ लनन-व्याप एक बैराग (कम) । २ न बैराग मुनि का एक दुष (कम) । गुपिच न [गुमीय] बैराग मुनि का एक पुन (कम) । हास पुं [हास] १ इस नाम का एक ठेठ, मिलने बैराग ली की । २ 'मनुजरोषवासना' लू का एक धन्यमन (मनु २) । बड़ विष्णु पुं [बड़] एक बैराग मुनि (कम) । पाठिब पुं [पाठिब] ऐरावत क्षेत्र के पाँचवें तीर्थकर का नाम (मम १३१) । पाठिब ली [पाठिब] बैराग मुनि की एक छाया (कम) । मरुपुत्र पुं [मरुपुत्र] एक बैराग (मम ११ १२) । मासिय न [मासिय] १ दीक्षक के दन्तिष्ठ बैरागियों के बाराए हुए लच्छप्यन धर्म शास्त्र (यापन) । २ 'मल्लमाकल' लू का लीय धन्यमन (अ १) । बाइ बाइब बाविप पुं [बाविम] व्यापनों की एक वाति (पीप पम १ २) । बास पुं [पास] १ अविना-व्यापरी का लच्छ विन का इन्द्र (अ २, १) । २ पाचवें बापुदेव का बुरागी नाम (मम १३१) । 'बाठिब पुं [पाठिब] अविना-व्यापरी के एक इन्द्र का नाम (विना) ।

इसिय पुं [इसिय] बराने की विरोध (छाया १ १) ।

इमिणय नि [इमिनक] इमिन-नायक सगार्दे
 वेण मे जयय (गुमा १ १ इक) ।
 इमिया धी [इयय] सगार्दे, सगार्दे (युम
 २ १) ।
 इमु वु [इय] बाण (यम) ।
 इम नि [इयय] १ इमिय बाण 'जुल
 संयमिसम (रिगे) । २ इमेयगा बाणी
 'गंयय इय विम' (रिगे ३ ८) ।
 इमर वेण इमर (यम नि ८३ छ २ १) ।
 इमरिय वेणो इमरिय (यम ३, २७ ; यम
 ११; रिग ७१) ।
 इमरा यी [इय] इह मयुवा (उम १४
 २१) ।

इमसास वु [इयसास] १ मयु वार्धुक राय
 सन । २ बाण-नेयक धीरवान (यम) ।
 इह वु [इय] हाणी हसी (यम) ।
 इह य [इयान्म] इय मयय मयुवा (यम
 ८) ।
 इह य [इह] यो इय जग (बाबा रय
 २२) । वारलोइय नि [एहिकपारसीकिक]
 हय धीर परलोक मे सम्मय रखनेवाला (स
 १३६) । यमिय नि [मिहमयिक] हय
 जय संयमी (यम) । लोअ, छम वु
 [लोअ] बर्तमान जय मयुवा-लोअ (छ १
 मयु ७३; १३३) । लय लयय नि [ल
 लोअ] हय जय-संयमी बर्तमान-जय

संयमी (यम गुमा ४ ८ पर १ १ म
 ४८१) इहायगाएओइयमुगई सगार्दे वण
 रिगा (म १३३) ।
 इहय { कार लोअ (यम यम २१ ७) ।
 इहय { इहय [इहानम] हान संयि इय मयय
 (यम) ।
 इहय { लोअ इह = छ (यौ या १४) ।
 इहय { वेणो इय ह (उम ८६ ; यम १६
 इहय { इ २ २१२) ।
 इहय लोअ इह = 'लानी' (यम) ।
 इहयमि वेणो इहयमि (म ४) ।
 इहिय [इह] वरा (यम) ।

॥ हय निरियाइअमहमहणवे इहाउययधरंयमली
 लाम सगो वरंयो सयतो ॥

ॐ

इ १ [इ] ग्राह वर्तमाना वा मयुवे वरी
 मर रिगे (यम) ।
 इम न [गम इम] मर (म ४२६
 ८३६) ।
 इम य [म] इय वण 'इय मयुविकरि' (म
 ११) ।
 इह वुलो [म] यम बर्तन को मयुवा
 बर्तनेवाला वर यमि मयुव-यम (यौ) ।
 मय नि [इहय] वेण, हय वण का इयके
 मयम (म १३) ।
 इहिय म [म] वर लोअ । इम (म ४
 १३) ।
 इह वेणो म = यो 'इहयमि' इहयमि
 म (म १३) ।
 इहा धी [इहा] मयि (यम ८१८) ।
 इय नि [इय] मयि यमिनी 'मयगाई
 यम मयमि' (यम १ ८) ।
 इय वेणो इय (म ११) ।
 इय वेणो इह (यम ६०) ।

इहिय वेणो इहय (म १४ यम १८२
 मयु) ।
 इह म [इह] १ वेणो करला । २ मयुवा
 ३ यम बरला । ४ करला । इह (रिगे
 १ १) । ५ 'ठाणयमयुवमयुवायुवमयुवा
 मुमरयमिगायार रिगे' इहियमि' (म ४
 ११) । मय इहिय (यौ) (यम ११) ।
 इहिय नि [इहिय] वेण (म ११४४) ।
 इहिया वेणो इहिया (म १ ; यौ ७४
 मय २ १ ४) ।
 इहिय वेणो इहय (गुमा रय २२) ।
 इम न [इ] मयु गोवा बर्तन (म १
 ८४) ।
 इम य [इय] इहो बरला, इय करला ।
 इमयि (म २४) ।
 इम वु [इम] वेणो इमर = इय (गुमा
 यम १ ३ १८) । २ म यमि मयुवा
 (यम २) ।
 इम वेणो इहिय (मयु) ।

इमय वु [म] वेण मयि वी ठक जाति
 (म १ मय) ।
 इमय व [इयययाम] मयुवे, बाण
 रिगा (यौ यम १ ३) विमयुवमयु
 गुमा रीगाययमयमिरी (यम ६८ ४
 मय ११७) ।
 इमर वु [म] मयम मयम (म १ ४१) ।
 इमर वु [इमर] १ मयम मयम (म १
 ४४) । २ मयम मयम (यम १ ८, १२) ।
 ३ मयम मयम (यम) । ४ मयम मयम
 (म १ १) । ५ मयम मयम (म १ १) ।
 ६ मयम मयम (म १ १) । ७ मयम
 मयम (म १ १) । ८ मयम मयम (म १ १) ।
 ९ मयम मयम (म १ १) । १० मयम मयम
 (म १ १) । ११ मयम मयम (म १ १) । १२
 मयम मयम (म १ १) । १३ मयम मयम
 (म १ १) । १४ मयम मयम (म १ १) । १५
 मयम मयम (म १ १) । १६ मयम मयम
 (म १ १) । १७ मयम मयम (म १ १) । १८
 मयम मयम (म १ १) । १९ मयम मयम
 (म १ १) । २० मयम मयम (म १ १) ।

(पृष्ठ १८)।

उष्माह सक [उद् + घाटय्] १ कोनता । २ प्रकट करना । ३ बाहर करना । उष्माह (दे ४ ११) । उष्माह (यहा) । उष्माहिकण (यहा) । उष्माहिकण्य (या ११) । कण्ठ उष्माहिकर्त (दे १ १२) ।

उष्माह दु [उद्घाट] प्रकट, प्रकाश 'किमु कसो बहुर्हृत् उष्माह विपद्यमार्ग' (सिंह १२८) ।

उष्माह देहो उष्माह = उद् + घाटय् । हेह 'तं विमुह्यन्त हारं वेदयि नो संस्पर्धं उष्माह' (सिंह १२८) ।

उष्माह नि [उद्घाट] १ कुला हुआ अनात्मकचित (पत्र ११ ४ ७) । २ बोधा बन्ध विद्या हुआ 'उष्माहका' उष्माहका (मात्र ४) । ३ व्यक्त प्रकट । ४ परिपूर्व, अन्तर्गत एवमर्थमि उष्माहपरिखीनयोगो बधो वयो' (गुण १०) ।

उष्माहय न [उद्घाटन] १ कोनता (मात्र ४) । २ बाहर करना, बाहर निकलना (उप ५ ११७) ।

उष्माहना भी [उद्घाटना] ऊपर देना (मात्र ४) ।

उष्माहिक नि [उद्घाटित] १ कुला हुआ । २ प्रकटित प्रकटित (दे २ १०) ।

उष्माहय न [उद्घाटन] १ मध्य, विनाश (मात्रा) । २ पुनःस्वान् अतम बन्ध । ३ मन्दिर में जाने का मार्ग (यथा २ १) ।

उष्मार पु [उद्धार] वि-कन छिद्रकाच 'विमुह्यन्त उद्धार निवर्तितो बधोऽपि' (उ ११८) ।

उष्मिहृत् नि [उद्घाट] संघट, 'निरिगुर उष्मिहृत्' विमुह्यन्त उद्धार निवर्तितो (मध्य ४ ११८) ।

उष्मिहृत् नि [उद्घाट] बधित उद्घोषित (गुर १ १४) उष्मिहृत् 'मध्यमहृत् उद्घोषित' (यथा) ।

उष्मिहृत् नि [उद्घाट] उद्घोषित गुप्त हृत् हृत् विनाशित (दे १ ११) 'उद्घोषितोऽपि' उद्घोषित उद्घोषित (यथा) (दे १ ११) ।

उष्मिहृत् सक [उद्घाट] सक करना, मार्जन करना । उष्मिहृत् (दे ४ १ १) ।

उष्मिहृत् सक [उद्घाट] सक करना । उष्मिहृत् (दे ४ १ १) ।

उष्मिहृत् नि [उद्घाट] मार्जित सक किया हुआ (गुमा) ।

उष्मिहृत् सक [उद्घाट] बोधना करना द्वितीय विनाश जाहिर करना । उष्मिहृत् (विना १ १) ।

उष्मिहृत् नि [उद्घाट] सक किया हुआ (विना १ १) उष्मा १ २) । कण्ठ उष्मिहृत् (विना १ २) ।

उष्मिहृत् पु [उद्घाट] नीचे देहो (स्वप्न २१) ।

उष्मिहृत् नि [उद्घाट] उष्मिहृत् विनाश द्वितीय विनाश कर जाहिर करना (विना १ १) ।

उष्मिहृत् नि [उद्घाट] सक किया हुआ 'उष्मिहृत् निवर्तितो बधोऽपि' (यथा २ १) ।

उष्मिहृत् नि [उद्घाट] जाहिर किया हुआ बोधित (मध्य) ।

उष्मिहृत् नि [उद्घाट] पूर्ण, भरपूर (यथा २ १) ।

उष्मिहृत् नि [उद्घाट] योग्य लायक युक्त्य (गुमा यहा) । उष्मिहृत् नि [उद्घाट] विविध (उप ५ ११८) ।

उष्मिहृत् नि [उद्घाट] निवर्तित (दे १ ११८) ।

उष्मिहृत् नि [उद्घाट] निवर्तित (दे १ ११८) ।

उष्मिहृत् नि [उद्घाट] निवर्तित (दे १ ११८) ।

उष्मिहृत् नि [उद्घाट] निवर्तित (दे १ ११८) ।

उष्मिहृत् नि [उद्घाट] निवर्तित (दे १ ११८) ।

उष्मिहृत् नि [उद्घाट] निवर्तित (दे १ ११८) ।

उष्मिहृत् नि [उद्घाट] निवर्तित (दे १ ११८) ।

उष्मिहृत् नि [उद्घाट] निवर्तित (दे १ ११८) ।

उष्मिहृत् नि [उद्घाट] निवर्तित (दे १ ११८) ।

उष्मिहृत् नि [उद्घाट] निवर्तित (दे १ ११८) ।

भी [उद्घाट] उद्घाटनीया करना देहो देहो रचना

'कह रंघि तुह ए एण्य कह हा घाटविमाण बहुमाण ।

काज्ज उद्घाटविमं तुह दंसणनेहमा पडिम' (या ११७) ।

याय पु [उद्घाट] प्रवेश रसाध (उप ७२८ टी) । उष्मिहृत् ।

उष्मिहृत् नि [उद्घाट] एकहीन इन्द्रा किया हुआ (काय) ।

उष्मिहृत् नि [उद्घाट] उद्घाटनीया हुआ (हस्ती २८) ।

उद्घाट पु [उद्घाट] बन्ध-योग, हट में होनेवाला योग-विशेष (यथा) ।

उद्घाट नि [उद्घाट] उद्घाटनीया (दे १ ११८) । २ उद्घाटनीया हुआ उद्घाटनीया 'उद्घाटनीया' (उद्घाट) ।

उद्घाट नि [उद्घाट] उद्घाटनीया (दे १ ११८) ।

उद्घाट नि [उद्घाट] उद्घाटनीया (दे १ ११८) ।

उद्घाट नि [उद्घाट] उद्घाटनीया (दे १ ११८) ।

उद्घाट नि [उद्घाट] उद्घाटनीया (दे १ ११८) ।

उद्घाट नि [उद्घाट] उद्घाटनीया (दे १ ११८) ।

उद्घाट नि [उद्घाट] उद्घाटनीया (दे १ ११८) ।

उद्घाट नि [उद्घाट] उद्घाटनीया (दे १ ११८) ।

उद्घाट नि [उद्घाट] उद्घाटनीया (दे १ ११८) ।

उद्घाट नि [उद्घाट] उद्घाटनीया (दे १ ११८) ।

उद्घाट नि [उद्घाट] उद्घाटनीया (दे १ ११८) ।

उद्घाट नि [उद्घाट] उद्घाटनीया (दे १ ११८) ।

उद्घाट नि [उद्घाट] उद्घाटनीया (दे १ ११८) ।

उद्घाट नि [उद्घाट] उद्घाटनीया (दे १ ११८) ।

उदिय रेको उदिय 'तस्त मुषोष्मियपप
तलेण क्षीरोमयुपता' (वन ११६ टी)।

उदियस्य न [रे] कम्पित यस मेमा गानी
(पाप)।

उच्छुष्य वि [रे] इत् गतिष्ठ धमिमी वि
१ १६)।

उच्छुष्य वि [रे] धनमिष्ठ (य)।

उच्छुष्य धक [उन् + शुष्] धनस्य
कता हुता। नृ उच्छुष्य (यउ ७११)।

उच्छुष्य धक [उन् + शुष्] वदता धाक्य होना
ऊपर देता। उच्छुष्य (रे ४ २१६)।

उच्छुष्यिष्ठ वि [रे] चटित धाक्य ऊपर
वता हुता (रे १ १)।

उच्छुष्य [रे] वीष्णु, पूता (य)।

उच्छुष्य उभय न [रे] हुतस्य स सीम सीम
जाता (रे १ १२१)।

उच्छुष्य वि [रे] १ वज्रिण, जिम। २ धवि
रुध धाक्य। ३ धीत इत हुता (रे १
१२७)।

उच्छुष्य पु [उच्छुष्य] निमल का सीमे न
कता हुता शुभापित कता (वन ४४६)।

उच्छुष्य वि [रे] मनासिष्ठ कृषि (यउ)।

उच्छुष्य पु [उच्छुष्य] १ निमल का सीमे
नकता हुता शुभापित कता (वन ४४६)।

२ धीता-निर-धर ऊपर धीर निर
ताप कर—वता किया हुता (पा १ १)।

उभय लो उदिय। उच्छेद (रे ४ २४१)।

हृद उच्छेद (पा १२६)।

उदिय वि [उच्छेदस्य] विनाशुर मयताता
(पाप)।

उच्छेदस्य न [रे] १ ऊपर मुनि। २ वन-
स्थानीय के (रे १ ११६)।

उच्छेदस्य वि [रे] प्रष्ट, व्यक्त (रे १ १७)।

उच्छाद्य पु [य] रोपण 'वर्णानुबोधकापी नो
देस्त दयो' (कण्य प्रा)।

उच्छाद्य पु [उच्छाद्य] वनार्थी वा एक देव
इत प्रसार (उत् ११ ११)।

उच्छाद्य पु [रे] १ लै, धरा। २ शीतो श्री
के वरी-वर्ण की गानी (रे १ ११६)।

उच्छाद्य पु [उच्छाद्य] केन वाम (रे २ १७)।

उच्छाद्य पु [रे] १ धवि का धारण (रे १

२१)। २ वि मूल हीन 'उच्छाद्य वा मूल
तप (यउ २ १)।

उच्छाद्य पु [उच्छाद्य] धाक्य उच्छाद्य (रे २
२२)।

'उच्छाद्य वि [उच्छाद्य] प्रल-कर्ता (पा १)।

उच्छाद्य वि [उच्छाद्य] धाक्य उच्छाद्य
'धामनउच्छाद्यमयनयस्यो' (पाप)।

उच्छाद्य वि [उच्छाद्य] १ शुद्धता-पिष्ट
धरोध-नमिष्ठ कनन-पुष्प। २ उच्छाद्य निर
कृत (यउ)।

उच्छाद्य वि [उच्छाद्य] धरोध-
पिष्ट किया हुता कृता किया हुता 'उच्छा-
नमिष्ठमयनयस्यो' (पाप)।

उच्छाद्य पु [उच्छाद्य] मय धाक्य 'मनुष्य-
पिष्टमयनयस्यो' (पाप)।

उच्छाद्य वि [रे] १ वीर, वीर, वीर
(पाप) 'उच्छाद्य विविरेता' (पाप)। १
उच्छाद्य (वीर)।

उच्छाद्य वि [उच्छाद्य] कोप वीरों वा
वीर में किया हुता (उत् १४८ टी)।

उच्छाद्य वि [रे] धाक्य किया हुता, धाक्य
रता हुता (रे १ १ ७)।

उच्छाद्य वि [रे] धाक्य किया हुता, धाक्य
रता हुता (रे १ १ ७)।

उच्छाद्य पु [रे] वीर, वीर, वीर (रे १
१ १ पाप)।

उच्छाद्य पु [य] धाक्य, धाक्य (रे १ १ १)।

उच्छाद्य वि [रे] धाक्य किया हुता, धाक्य
रता हुता (रे १ १ १)।

उच्छाद्य वि [रे] धाक्य किया हुता, धाक्य
रता हुता (रे १ १ १)।

उच्छाद्य वि [रे] धाक्य किया हुता, धाक्य
रता हुता (रे १ १ १)।

उच्छाद्य वि [रे] धाक्य किया हुता, धाक्य
रता हुता (रे १ १ १)।

उच्छाद्य वि [रे] धाक्य किया हुता, धाक्य
रता हुता (रे १ १ १)।

उच्छाद्य वि [रे] धाक्य किया हुता, धाक्य
रता हुता (रे १ १ १)।

उच्छाद्य वि [रे] धाक्य किया हुता, धाक्य
रता हुता (रे १ १ १)।

उच्छाद्य वि [रे] धाक्य किया हुता, धाक्य
रता हुता (रे १ १ १)।

उच्छाद्य वि [रे] धाक्य किया हुता, धाक्य
रता हुता (रे १ १ १)।

उच्छाद्य वि [रे] धाक्य किया हुता, धाक्य
रता हुता (रे १ १ १)।

उच्छाद्य वि [रे] धाक्य किया हुता, धाक्य
रता हुता (रे १ १ १)।

उच्छाद्य वि [रे] धाक्य किया हुता, धाक्य
रता हुता (रे १ १ १)।

उच्छाद्य वि [रे] धाक्य किया हुता, धाक्य
रता हुता (रे १ १ १)।

उच्छाद्य वि [रे] धाक्य किया हुता, धाक्य
रता हुता (रे १ १ १)।

उच्छाद्य वि [रे] धाक्य किया हुता, धाक्य
रता हुता (रे १ १ १)।

उच्छाद्य वि [रे] धाक्य किया हुता, धाक्य
रता हुता (रे १ १ १)।

उच्छाद्य वि [रे] धाक्य किया हुता, धाक्य
रता हुता (रे १ १ १)।

उच्छाद्य वि [रे] धाक्य किया हुता, धाक्य
रता हुता (रे १ १ १)।

उच्छाद्य वि [रे] धाक्य किया हुता, धाक्य
रता हुता (रे १ १ १)।

उच्छाद्य वि [रे] धाक्य किया हुता, धाक्य
रता हुता (रे १ १ १)।

उच्छाद्य वि [रे] धाक्य किया हुता, धाक्य
रता हुता (रे १ १ १)।

उच्छाद्य वि [रे] धाक्य किया हुता, धाक्य
रता हुता (रे १ १ १)।

उच्छाद्य वि [रे] धाक्य किया हुता, धाक्य
रता हुता (रे १ १ १)।

उच्छाद्य वि [रे] धाक्य किया हुता, धाक्य
रता हुता (रे १ १ १)।

उच्छाद्य वि [रे] धाक्य किया हुता, धाक्य
रता हुता (रे १ १ १)।

उच्छाद्य वि [रे] धाक्य किया हुता, धाक्य
रता हुता (रे १ १ १)।

उच्छाद्य वि [रे] धाक्य किया हुता, धाक्य
रता हुता (रे १ १ १)।

अप्राप्तप्रतिष्ठा (१६) । 'योग' 'योग्य' पुं
[सोके] स्वर्ग देव-सोके (ठा ३, १ मय) ।
'वाय' पुं [वात] ऊँचा गया हुआ बायु
बायु-विशेष (जीन १) ।

उद्भूत ऊपर देखो 'उद्भूत'वाण ग्रहोक्तिरे भाण-
नोटोक्तम् (मग १ १ महा भा १३) ।

उद्भूत न [व] माय का उत्पन्न भू-भाग (सूय
१ २) ।

उद्भूत } पुं [व] उल्लास विकास (१ १
उद्भूत } ११) ।

उद्भूतियय नि [ऊँचिय] ऊँचा किया हुआ
(बन्धा १५६) ।

उद्भूत की [ऊँचा] ऊँच-किया (ठा १) ।

उद्भूत [रे] रेको उद्भि (सूय १ ८) ।

उद्भूत रेको उद्भि (पर) ।

उद्भूत रेको उद्भि (पर) ।

उद्भूतय रेको उद्भि (पर) ।

उद्भूतय रेको उद्भि (पर) ।

उद्भूतय रेको उद्भि (पर) ।

उद्भूतय रेको उद्भि (पर) ।

उद्भूतय रेको उद्भि (पर) ।

उद्भूतय रेको उद्भि (पर) ।

उद्भूतय रेको उद्भि (पर) ।

उद्भूतय रेको उद्भि (पर) ।

उद्भूतय रेको उद्भि (पर) ।

उद्भूतय रेको उद्भि (पर) ।

उद्भूतय रेको उद्भि (पर) ।

उद्भूतय रेको उद्भि (पर) ।

उद्भूतय रेको उद्भि (पर) ।

उद्भूतय रेको उद्भि (पर) ।

उद्भूतय रेको उद्भि (पर) ।

उद्भूतय रेको उद्भि (पर) ।

उद्भूतय रेको उद्भि (पर) ।

उद्भूतय रेको उद्भि (पर) ।

उद्भूतय रेको उद्भि (पर) ।

उद्भूतय रेको उद्भि (पर) ।

उद्भूतय रेको उद्भि (पर) ।

उद्भूत सङ्गमिय (भाषा २ १ ३) ।

उद्भूतय नि [व] समुद्र ऊँचा (१ १ ८८) ।

उद्भूतय नि [उत्पन्न] १ उत्पन्न ऊँचा (धमि
१ १) । २ सुषुप्ता, सुषुपी (शामा १ १) ।

३ धमिमानी (सूय १ १६) । ४ ध. धमि-
मान गर्व (सय १५ ३) ।

उद्भूतय पुं [उत्पन्न] नीति का धर्मात् (मय
१२, ३) ।

उद्भूत की [ऊँचा] ऊँच भई के राय
(पावम) । पपासिया की [पिपीसिका]
पीटी बन्धु-विशेष (१ ६, ४८) ।

उद्भूताभक्त नि [उत्पाद्यक] १ उत्पत्ति-कारक ।
२ पुन कन्-ताक प्रसिद्ध मय्य-युक्त बन्धुत्व
की संज्ञा (निय) ।

उद्भूताय पुं [उत्पाद्य] धान-विशेष (पावम) ।

उद्भूताय पुं [उत्पाद्य] १ उत्पत्ति ऊँचाई (सि
१, ३१) । २ वर्ष धमिमान । ३ परं पर
कारण-युक्त कर्म (मय १२ ३) ।

उद्भूताय च [उद्भू + नमय] ऊँचा करण
(सि ४ ३६) ।

उद्भूताय नि [उत्पन्न] ऊँचा किया
हुआ (का ११ २३१ से ६, ७१) ।

उद्भूताय च [उद्भू + नमय] ऊँचा करण
(का ११ २३१ से ६, ७१) ।

उद्भूताय च [उद्भू + नमय] ऊँचा करण
(का ११ २३१ से ६, ७१) ।

उद्भूताय च [उद्भू + नमय] ऊँचा करण
(का ११ २३१ से ६, ७१) ।

उद्भूताय च [उद्भू + नमय] ऊँचा करण
(का ११ २३१ से ६, ७१) ।

उद्भूताय च [उद्भू + नमय] ऊँचा करण
(का ११ २३१ से ६, ७१) ।

उद्भूताय च [उद्भू + नमय] ऊँचा करण
(का ११ २३१ से ६, ७१) ।

उद्भूताय च [उद्भू + नमय] ऊँचा करण
(का ११ २३१ से ६, ७१) ।

उद्भूताय च [उद्भू + नमय] ऊँचा करण
(का ११ २३१ से ६, ७१) ।

उद्भूताय च [उद्भू + नमय] ऊँचा करण
(का ११ २३१ से ६, ७१) ।

उद्भूताय च [उद्भू + नमय] ऊँचा करण
(का ११ २३१ से ६, ७१) ।

उद्भूताय च [उद्भू + नमय] ऊँचा करण
(का ११ २३१ से ६, ७१) ।

उद्भूताय च [उद्भू + नमय] ऊँचा करण
(का ११ २३१ से ६, ७१) ।

उद्भूताय च [उद्भू + नमय] ऊँचा करण
(का ११ २३१ से ६, ७१) ।

उद्भूताय च [उद्भू + नमय] ऊँचा करण
(का ११ २३१ से ६, ७१) ।

उद्भूताय च [उद्भू + नमय] ऊँचा करण
(का ११ २३१ से ६, ७१) ।

उद्भूताय च [उद्भू + नमय] ऊँचा करण
(का ११ २३१ से ६, ७१) ।

उद्भूताय च [उद्भू + नमय] ऊँचा करण
(का ११ २३१ से ६, ७१) ।

उद्भूताय च [उद्भू + नमय] ऊँचा करण
(का ११ २३१ से ६, ७१) ।

उद्भूताय च [उद्भू + नमय] ऊँचा करण
(का ११ २३१ से ६, ७१) ।

उद्भूताय च [उद्भू + नमय] ऊँचा करण
(का ११ २३१ से ६, ७१) ।

उद्भूताय च [उद्भू + नमय] ऊँचा करण
(का ११ २३१ से ६, ७१) ।

उद्भूताय च [उद्भू + नमय] ऊँचा करण
(का ११ २३१ से ६, ७१) ।

उद्भूताय च [उद्भू + नमय] ऊँचा करण
(का ११ २३१ से ६, ७१) ।

उद्भूताय च [उद्भू + नमय] ऊँचा करण
(का ११ २३१ से ६, ७१) ।

उद्भूताय च [उद्भू + नमय] ऊँचा करण
(का ११ २३१ से ६, ७१) ।

उद्भूताय च [उद्भू + नमय] ऊँचा करण
(का ११ २३१ से ६, ७१) ।

उद्भूतय न [उत्पन्न] परम कला (नि
२४) ।

उद्भूता की [रे] इसर, विवरी (रे
१ ८८) ।

उद्भूतय पुं [उत्पाद्य] पत्नी सुहृद (ह
२ ७३) ।

उद्भूतययमं पुं [रे] प्रमद, प्रमद मौप (रे
१ १२) ।

उद्भूतय की [रे] नीट-विशेष (पावम) ।

उद्भूतो न [उत्पाद्य] धर्मता. वा (वि ८३) ।

उत्त नि [उत्त] कश्चित् धर्मित (सुर १
७६ स १७६) ।

उत्त नि [उत्त] १ बोधा हुआ । २ निमित्तित
उत्पादित देवतत मय मोप बमन्तेति
यावत् (सूय १ १ ३) ।

उत्त पुं [उत्त] बलवत्-विशेष (पावम) ।

उत्त नि [उत्त] उचित (सूय १ १ ३) ।

उत्त रेको पुत्त (का ८८ सुर ७ १३८) ।

उत्तयय नि [उत्तयित] उत्त नि या
उत्तयय १११ यन) ।

उत्तय रेको उत्तयय = यत् । उत्तयय (ह ४
१११) ।

उत्तय रेको उत्तयय । उत्तयय (मग ७) ।

उत्तय रेको उत्तयय (पर) नि १११) ।

उत्तयय नि [उत्तयित] उत्त नि या
उत्तयय १११ यन) ।

उत्तय रेको उत्तयय = यत् । उत्तयय (ह ४
१११) ।

उत्तय रेको उत्तयय । उत्तयय (मग ७) ।

उत्तय रेको उत्तयय (पर) नि १११) ।

उत्तयय नि [उत्तयित] उत्त नि या
उत्तयय १११ यन) ।

उत्तय रेको उत्तयय = यत् । उत्तयय (ह ४
१११) ।

उत्तय रेको उत्तयय । उत्तयय (मग ७) ।

उत्तय रेको उत्तयय (पर) नि १११) ।

उत्तयय नि [उत्तयित] उत्त नि या
उत्तयय १११ यन) ।

उत्तय रेको उत्तयय = यत् । उत्तयय (ह ४
१११) ।

उत्तय रेको उत्तयय । उत्तयय (मग ७) ।

उत्तय रेको उत्तयय (पर) नि १११) ।

उत्तयय नि [उत्तयित] उत्त नि या
उत्तयय १११ यन) ।

उत्तय रेको उत्तयय = यत् । उत्तयय (ह ४
१११) ।

उत्तय रेको उत्तयय । उत्तयय (मग ७) ।

उत्तय रेको उत्तयय (पर) नि १११) ।

उत्तयय नि [उत्तयित] उत्त नि या
उत्तयय १११ यन) ।

उत्तय रेको उत्तयय = यत् । उत्तयय (ह ४
१११) ।

उत्तय रेको उत्तयय । उत्तयय (मग ७) ।

उत्तय रेको उत्तयय (पर) नि १११) ।

उत्तयय नि [उत्तयित] उत्त नि या
उत्तयय १११ यन) ।

उत्तास कजेवावे का उहायक (मुद्रा १५१ स ११६) । शैवो उत्तरा ।

उत्तरओ म [उत्तरा] उत्तर दिशा की तरफ (अ ८ भा) ।

उत्तरा न [उत्तरा] १ उत्तरा का उत्तर का कण्ड (मुद्रा) । २ नि उत्तरा उत्तरा (मुद्रा २६६) ।

उत्तरकुल पुं व [उत्तरकुल] १ उत्तरकुल। स्वर्ग (स्वर्ग ६) । २ उत्तरकुल मणिमाल की दीर्घप्रतिष्ठा (विचार १२६) ।

उत्तरय न [उत्तरय] १ उत्तरा पार करना (अ ५ स १६८) । २ उत्तरय मीन माला (अ १) ।

उत्तरज्वरीहिया की [उं] उरु ज्वार की (दे १ ११२) ।

उत्तरविजिम्बिबि वि [उत्तरविजिम्बिबि] उत्तर वैजिम्बामक मणि स समान (वैज २ २) ।

उत्तरयना केवो उत्तरा-संग (वैज ३८) ।

उत्तरा की [उत्तरा] १ उत्तर दिशा (अ १) ।

२ मध्यम घाम की एक मुन्हा (अ ७) ।

३ एक शिवा-मुद्रा की (अ ७) । ४

विजय-मय प्रवर्तन याचार् विजय की

स्वनाम काय प्रवर्तन (विज) । ५ पञ्चिष्ठा

मय की एक वापी का नाम (वी) । जैवा

की [नन्दा] एक शिवाय की (एन) ।

पद पुं [पद] उत्तरपठन-विषय के, उत्तर

पद के (पद २) । कगुपी केवो उत्तर

पदगुपी (पद ७ इ) । अर्थवा केवो

उत्तर-अर्थवा (पद ७ इ) । यण न

[यण] उत्तरपण मूर्त का उत्तर दिशा में

मन माव से केव का महीना (अ २१) ।

यया की [यया] यया-यय की एक

मुन्हा (अ ७) । बह केवो यय (महा

ज १४२ वी) । संग पुं [संग] उत्तरप

नम न उत्तर में म्यास-विशेष उत्तरप

नम (कम का वी) । "सामा की [सामा]

मध्यम घाम की एक मुन्हा (अ ७) । साया

की [साया] उत्तर-विशेष (पद १ क) ।

उत्तरिज } न [उत्तरिज] उत्तर, उत्तर

उत्तरिज } (उत्तरा प्राय १ २५५)

"उत्तरिज उत्तरिज" (मुद्रा २५५)

उत्तरिज वि [उत्तरिज] १ उत्तरा हुवा, नीचे

मया हुवा (गुर १ १२६) । २ पार पर्वता

हुवा (महा) ।

उत्तरिज वि [उत्तरिज, उत्तरिज] शैवो

उत्तर (अ १० वि १२५२) ।

उत्तरिज वि [उत्तरिज] उत्तर दिशा का

काल में उत्तर या उत्तर उत्तर-उत्तरा

उत्तरिज "उत्तर उत्तरिज" (मुद्रा ५२,

अ १ १) ।

उत्तरिज शैवो उत्तरिज = उत्तरिज (गुरा ६

१ २५५, महा) ।

उत्तरिजय न [उत्तरिजय] उत्तर बनाया

विशेष मुद्रा करना "उत्तर उत्तरिजय" (पद)

उत्तरिज पुं [उत्तरिज] १ उत्तर का वीट (वि

१६७) । २ उत्तर, वीट (एन) ।

उत्तरिजय पुं [उं] किय उत्तरिज (दे १

११६) ।

उत्तर वि [उत्तरय] विजये कहा हो व

(वि १६६) ।

उत्तरय [उत्तरय] १ उत्तर बनाया

पवित्र होता । २ उत्तरा मय होता । क-

उत्तरय (गुर १ २५६ १ २२) ।

उत्तरय वि [उत्तरय] १ उत्तरय । २

पवित्र (गुर १ २५६) ।

उत्तरय व [उत्तरय] १ उत्तरा

उत्तरा करना । २ उत्तरा बनाया । क-

"उत्तरय उत्तरय" विजये कहा हो व

(वि १६६) ।

उत्तरय न [उत्तरय] १ उत्तरा करना

(मुद्रा) । २ उत्तरा बनाया (एन) ।

उत्तरय वि [उत्तरय] १ उत्तरय उत्तरय

(वैज १८) । २ उत्तर (विज १ ६६

४ ५) । ३ उत्तरा "उत्तरय उत्तरय"

विजये कहा हो व (वि १६६) ।

उत्तरय वि [उत्तरय] १ उत्तरय उत्तरय

उत्तरय उत्तरय वि [उं] उत्तरय-उत्तरय (पद)

वैज (दे १ १२) ।

उत्तरय वि [उत्तरय] १ उत्तरय

हुवा (वि ६, ७१ वा ५१) । २ उत्तर

उत्तरय (वैज) ।

उत्तरय व [उत्तरय] १ उत्तरय

हुवा । क- उत्तरय (अ १) ।

उत्तरय व [उत्तरय] १ पार पर्वता

बनाया । २ उत्तरय उत्तरय । ३ उत्तरय

"उत्तरय उत्तरय" उत्तरय (वैज १२) । ४

उत्तरय (विज १ ५२) । ५ उत्तरय

उत्तरय (वैज १२५२) ।

उत्तरय पुं [उत्तरय] १ उत्तरय पार करना

"उत्तरय उत्तरय" उत्तरय (वैज १२) । २

उत्तरय (विज १ ५२) । ३ उत्तरय

उत्तरय (वैज १२५२) ।

उत्तरय वि [उत्तरय] उत्तरय उत्तरय

उत्तरय (वैज १२५२) ।

उत्तरय पुं [उं] उत्तरय-उत्तरय, उत्तरय

"उत्तरय" (विज ७) ।

उत्तरय न [उत्तरय] १ उत्तरय २ उत्तर

करना । ३ उत्तरय उत्तरय । ४ पार करना

"उत्तरय उत्तरय" उत्तरय (वैज १२) । ५

उत्तरय (विज १ ५२) । ६ उत्तरय

उत्तरय (वैज १२५२) ।

उत्तरय व [उत्तरय] १ उत्तरय

उत्तरय (वैज १२५२) । २ उत्तरय

उत्तरय (वैज १२५२) । ३ उत्तरय

उत्तरय (वैज १२५२) । ४ उत्तरय

उत्तरय (वैज १२५२) । ५ उत्तरय

उत्तरय (वैज १२५२) । ६ उत्तरय

उत्तरय (वैज १२५२) । ७ उत्तरय

उत्तरय (वैज १२५२) । ८ उत्तरय

उत्तरय (वैज १२५२) । ९ उत्तरय

उत्तरय (वैज १२५२) । १० उत्तरय

उत्तरय (वैज १२५२) । ११ उत्तरय

उत्तरय (वैज १२५२) । १२ उत्तरय

उत्तरय (वैज १२५२) । १३ उत्तरय

पचाहि उत्थास [छ ७] 'भीमं कुम्भुणिष्क-
त्थुतासं च कथयो मुनेष्वर' (बीष ३) ।

उत्थास न [रे] लवागार कल भतर-उत्थित
कलन की धाराज (वे १ १ १) ।

उत्थासण केतो उत्थासण ।

उत्थासण न [इ] उत्थासण खेय्या । २ नि
खेयवर्तु पादुम 'हस्तुतासमिष्टुवातिनि
मिष्टुतासकपिष्टुव' (धूर १ १) ।

उत्थास सक [वृत् + प्रासय्] १ कयवैर
करता उरता । २ रीक्या हैरण करता ।
उत्तासेवि (शी) (गट) । उ उत्तामणिज
(धु) ।

उत्थास पुं [उत्थास] १ भास कय ।
हैली (कय) ।

उत्थामन्यु वि [उत्थामन्यु] १ कयवैर
करतेकता । २ हैरण करेकता (भाषा) ।

उत्थासजभ [वि [उत्थासजभ] १ मयकर,
उत्थासजभ [उत्थेकजभ] २ हैरण मयके-
कता (पठन २२ १३) (भाषा १ ७) ।

उत्थासिय वि [उत्थासिय] १ हैरण किया
हुया । २ कयवैर किया हुया (धूर १ २४७)
भाष ४) ।

उत्थासिय वि [रे] उत्थास केता हुया (वे
१ १ १) ।

उत्थि की [उत्थ] कयन धातो (भा १४
हुया २३) (कय) ।

उत्थि पुं [उत्थि] १ धर्मनगर कीट-विरोध
(धर्म २) निष्ठु ११) । २ कीटियो का
किता 'उत्थिपुनरुपसममृमिस्तकडरुतापुनरुप
मरु' (वर्षि) । ३ कीटियो की कयता (भाषा
३) । ४ कय के धर्मनगर विर विर कय-विष्ठु
(भाषा) । ५ धर्मनगर-विरोध, धर्मनगर,
धर्मनगर में किता की किता की की टोप बहते हैं-
'पुनरुप न विरुप' (भा १४) ।

कीटु हरिष्टु का ।

उत्थमि उता निम्न

उत्थमपुनरुप का (का ११) ।

१ न. पिष्ट विर, उता (निष्ठु १ भाषा

१ १ ११) । 'उत्थम न [उत्थम] कीट

विरोध का धूर-किता (कय) ।

उत्थमपुनरुप पुं [उत्थमपुनरुप] कीटिव-
कर, कीटियो का किता (भाषा २, १ २६) ।

उत्थिष्टु सक [वृत् + रथा] १ उरता । २
उत्थिष्टु होता । न. 'उत्थिष्टुते विराय' (उता
१ १ २४) ।

उत्थिष्टु वि [उत्थिष्टु] पुन-रुप

'उत्थिष्टुते विराय' (उता १ १ २४) ।

उत्थिष्टु वि [उत्थिष्टु] पुन-रुप

'उत्थिष्टुते विराय' (उता १ १ २४) ।

उत्थिष्टु वि [उत्थिष्टु] पुन-रुप

'उत्थिष्टुते विराय' (उता १ १ २४) ।

उत्थिष्टु वि [उत्थिष्टु] पुन-रुप

'उत्थिष्टुते विराय' (उता १ १ २४) ।

उत्थिष्टु वि [उत्थिष्टु] पुन-रुप किता
हुया 'उत्थिष्टुते विराय' (उता १ १ २४) ।

उत्थिष्टु वि [उत्थिष्टु] १ बाहर निरता हुया
'उत्थिष्टुते विराय' (उता १ १ २४) ।

उत्थिष्टु वि [उत्थिष्टु] १ बाहर निरता हुया
'उत्थिष्टुते विराय' (उता १ १ २४) ।

उत्थिष्टु वि [उत्थिष्टु] १ बाहर निरता हुया
'उत्थिष्टुते विराय' (उता १ १ २४) ।

उत्थिष्टु वि [उत्थिष्टु] १ बाहर निरता हुया
'उत्थिष्टुते विराय' (उता १ १ २४) ।

उत्थिष्टु वि [उत्थिष्टु] १ बाहर निरता हुया
'उत्थिष्टुते विराय' (उता १ १ २४) ।

उत्थिष्टु वि [उत्थिष्टु] १ बाहर निरता हुया
'उत्थिष्टुते विराय' (उता १ १ २४) ।

उत्थिष्टु वि [उत्थिष्टु] १ बाहर निरता हुया
'उत्थिष्टुते विराय' (उता १ १ २४) ।

उत्थिष्टु वि [उत्थिष्टु] १ बाहर निरता हुया
'उत्थिष्टुते विराय' (उता १ १ २४) ।

उत्थिष्टु वि [उत्थिष्टु] १ बाहर निरता हुया
'उत्थिष्टुते विराय' (उता १ १ २४) ।

उत्थिष्टु वि [उत्थिष्टु] १ बाहर निरता हुया
'उत्थिष्टुते विराय' (उता १ १ २४) ।

उत्थिष्टु वि [उत्थिष्टु] १ बाहर निरता हुया
'उत्थिष्टुते विराय' (उता १ १ २४) ।

उत्थिष्टु वि [उत्थिष्टु] १ बाहर निरता हुया
'उत्थिष्टुते विराय' (उता १ १ २४) ।

उत्थिष्टु वि [उत्थिष्टु] १ बाहर निरता हुया
'उत्थिष्टुते विराय' (उता १ १ २४) ।

उत्थिष्टु वि [उत्थिष्टु] १ बाहर निरता हुया
'उत्थिष्टुते विराय' (उता १ १ २४) ।

उत्थिष्टु वि [उत्थिष्टु] १ बाहर निरता हुया
'उत्थिष्टुते विराय' (उता १ १ २४) ।

उत्थिष्टु वि [उत्थिष्टु] १ बाहर निरता हुया
'उत्थिष्टुते विराय' (उता १ १ २४) ।

उत्थिष्टु वि [रे] उत्थिष्टु विराय (विता
१ २) ।

उत्थिष्टु सक [वृत् + पुन] रीक्य करता,
हैरण करता । न. उत्थिष्टु (विता १ ७) ।

उत्थिष्टु की [रे] कय धर्मनगर । २ वि
धर्मनगर धर्मनगर (वे १ १ १) ।

उत्थिष्टु वि [रे] उत्थिष्टु (धूर १ १) ।

उत्थिष्टु वि [रे] उत्थिष्टु (धूर १ १) ।

उत्थिष्टु वि [रे] उत्थिष्टु (धूर १ १) ।

उत्थिष्टु वि [रे] उत्थिष्टु (धूर १ १) ।

उत्थिष्टु वि [रे] उत्थिष्टु (धूर १ १) ।

उत्थिष्टु वि [रे] उत्थिष्टु (धूर १ १) ।

उत्थिष्टु वि [रे] उत्थिष्टु (धूर १ १) ।

उत्थिष्टु वि [रे] उत्थिष्टु (धूर १ १) ।

उत्थिष्टु वि [रे] उत्थिष्टु (धूर १ १) ।

उत्थिष्टु वि [रे] उत्थिष्टु (धूर १ १) ।

उत्थिष्टु वि [रे] उत्थिष्टु (धूर १ १) ।

उत्थिष्टु वि [रे] उत्थिष्टु (धूर १ १) ।

उत्थिष्टु वि [रे] उत्थिष्टु (धूर १ १) ।

उत्थिष्टु वि [रे] उत्थिष्टु (धूर १ १) ।

उत्थिष्टु वि [रे] उत्थिष्टु (धूर १ १) ।

उत्थिष्टु वि [रे] उत्थिष्टु (धूर १ १) ।

उत्थिष्टु वि [रे] उत्थिष्टु (धूर १ १) ।

उत्थिष्टु वि [रे] उत्थिष्टु (धूर १ १) ।

उत्थिष्टु वि [रे] उत्थिष्टु (धूर १ १) ।

['वस्ति'] इति पाणी मयी नमः मरुत
(ग्रामा १ १८)। 'विष्ठा की' ['शिष्टा']
मेता (छा १)। सीमा दु ['सीमाम']
नदी-विशेष (छा)।

उदग वि [उदग] १ सुन्दर, मनोहर 'उतो
रदु' तीव्र कर्ण लक्ष्मीरुद्रा' (गुर १
१२२)। २ उद उदग प्रहार (छा ४ २
ग्रामा १ १; छत १)। ३ प्रधान युद्ध
'अङ्गवारित्तो मही' (छत १३)।

उदग दु [उदग] एक नरक-स्थान (श्लोक
२७)।

उदग वि [उदग] स्वार, मृदुल (संयोग
१)।

उदग वि [उदग] स्वर-विशेष को उदग
स्वर से बोधा वाच बहु स्वर (विशे ८३२)।

उदगा की [उदगा] दुग्ध, दूध पिपासा
(छा १ ११ टी)।

उदग केो उदग (ग्रामा १ सम १३३
छा ७२२ टी)।

उदग दु [उदग] दाम (दुग्ध २ १, २४)।

उदग दु [उदग] १ प्रमुख कण्ठि 'ओ
एवमिहं वि कर्णं ध्यायन्, तो वि बभूव
कुमारस्य उदरे हृदये' (महा)। २ उपरि
(विशे)। ३ विपाक कर्ण-निर्वाण।

'बह्मापराधमन्त्रादुपराध

परजपिबोधोदार्थ'।

उदगमो उदगे उदगिनी

एकसि बभूव' (छा)।

४ प्राच्य उदग 'पादमोदय बभूव ह
विपासा नामा दुग्ध' (महा)।

'उदगमिनि उदगमो'।

उदग उदग वि [उदग]।

विहीनु धातुविही

मुक्तविही मुक्त विही' (ग्राम १२)।

१ उदगे के धातु धातु विही (छा
१३१)। २ उदगे में होनेवाले
छात विही का पूर्व-समी नाम
(छा १३४)। ३ उदग-स्थान
एक राजकुमार (पत्र ११ ३६)। उदग
दु ['विही'] उदग-विही बही धातु विही
होता है (ग्राम १)।

उदग वि [उदग]।

उदग दु [उदग] १ राजा विहीरुद्र का
प्रतिष्ठ नदी (ग्राम १३३)।

उदग दु [उदग] १ एव राजकुमार,
कोशाधीन नदी के राजा उदगीक नम पुन
(विपा १ ३)। २ एक विहीरुद्र नम राजा
(कर्म)। ३ न उदगि उदग। ४ वि उदग
होनेवाला प्रथममाल (छा ४ ३)।

उदग न [उदग] १ फेट, कट (ग्राम १ ८)।
२ फेट की बीमा' 'नवराजसुधापाचको
सोचरु' (ग्राम १३)।

उदगमि वि [उदगमि] उदगी धातुविही
(वि ३७६)।

उदगि वि [उदगि] फेट की बीमा' (ग्राम
(पत्र १ ३)।

उदगि वि [उदगि] उदग केो (विपा १
७)।

उदगि वि [उदगि] १ पाणी बहने करने-
वाला, बहनेवाला। २ दुग्धोदग प्रवाह
(छा १ ३)।

उदगी [उदगी] १ उदगी' १ उदग
उदगी [उदगी] १ उदग वापर (ग्राम)।

२ नवराज केो की एक वाति उदगीकुमार
(पत्र १ ४)। कुमार दु ['कुमार'] उदगी
की एक वाति (पत्र १)। केो उदगी।

उदगी दु [उदगी] १ एक के राजा
आराधा कोरुद्र का पुन विही की एक दुग्ध
के के राजा कर्ण कर्ण-स्थान से वाप का
जीव को विही में तीव्र विही होना
(छा १ टी)। २ दुग्ध राजा कर्ण का फेट-
होता (छा १६, १)।

उदगी केो उदगी (ग्राम २१)।

उदगी केो उदगी (विपा १७४ टी)।

उदगी दु [उदगी] विहीरुद्र का एक
राजा विहीरुद्र नम राजा के पाच बीमा
की बी (छा ४ ३ ५)।

उदगी केो उदगी (छा ४ ३ ५)।

उदगी वि [उदगी] उदग उदगी'।

न न [उदगी] उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगी की [उदगी] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।
२ उदगी' (छा ४ ३ ५)। ३ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगी वि [उदगी] उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर उदगी [उदगी] १ उदगी'। २
उदगी' (छा ४ ३ ५)। 'उदगी' (छा ४ ३ ५)।
उदगी' (छा ४ ३ ५)। 'उदगी' (छा ४ ३ ५)।
उदगी' (छा ४ ३ ५)। 'उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर न [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

उदगीर वि [उदगीर] १ उदगी' (छा ४ ३ ५)।

[बस्ति] इति पानी मने वा मरुक्
(छाया १ ८)। 'सिद्धा को [सिद्धा]
मेना (अ १)। सीम पुं [सीमण]
नर्यन्-स्त्रिय (अ १)।

शब्दार्थ [उद्यम] १ सुन्दर, मनोहर 'तरी
बटु तीर स्नाने को बालमुन्दर' (पुर १
१२२)। २ पर कण्ठ, प्रवर (अ ४ २)
छाया १ १ वर १)। ३ प्रमाण मुख्य
'जगत्कारितको मोही' (अ ११)।

उद्यम्य पुं [उद्यम्य] एक मरु-स्थान (विश्व
१७)।

उद्यत नि [उद्यत] उद्यत, मरुपण (संयोग
१)।

उद्यत नि [उद्यत] स्वर-स्त्रिय को उद्यत
स्वर से होता वा बह स्वर (विश्व ३२)।

उद्यत यो [उद्यत] दया करत निराशा
(अ १ ११ टी)।

उद्यत यो उद्यत (छाया १ १ वम १२३
अ ७१८ टी प्रमु ७२ वरुण १)।

उद्यत पुं [उद्यत] नाम (मृग २ १ २४)।

उद्यत पुं [उद्यत] १ दम्भुर उद्यति 'को
एविहीन बज्रं घाम्प, को कि बज्रघ-
नुमाप्य जलं दम्भुर' (अ १)। २ उत्पत्ति
(विश्व १)। ३ विप्राक कर्म-परिणाम

'ब्रह्मरूपमन्तात्माप्यस्य

ब्रह्मरूपमन्तात्माप्यस्य'।

मन्तात्माप्यस्य उद्यतो ब्रह्मरूपयो

एतन्नि ब्रह्म' (अ १)।

४ प्रादुर्भाव उद्यत 'आद्यमो'ए ब्रह्मया इव
निगमना नाम मु' (महा)

'द्वयमिति ब्रह्मरूपेति

ब्रह्म' एतत्तत्ति विवर्तमानम्।

विश्वम्, भावार्थम्

मुक्तनिवर्तन मूल उद्यमि'।

(अ १२)।

५ मन्तात्माप्यस्य को मन्ता मन्तात्माप्यस्य (मम
१२१)। ६ मन्तात्माप्यस्य को मन्तात्माप्यस्य

(मम १२४)। ७ मन्तात्माप्यस्य

मन्तात्माप्यस्य (मम १२ १६)। ८ मन्तात्माप्यस्य

मन्तात्माप्यस्य (मम १२ १६)। ९ मन्तात्माप्यस्य

मन्तात्माप्यस्य (मम १२ १६)। १० मन्तात्माप्यस्य

मन्तात्माप्यस्य (मम १२ १६)।

उद्यत यो उद्यत।

उद्यत पुं [उद्यत] १ पानी सिद्धय का
प्रसिद्ध मन्ता (मृग १४१)।

उद्यत पुं [उद्यत] १ एक राजकुमार,
कोरमन्ती मन्ता के राजा मन्तात्माप्यस्य का पुत्र
(विश्व १२)। २ एक विष्णु का नाम राजा
(मम)। ३ न उत्पत्ति उद्यत। ४ नि उत्पत्ति
होनेवाला प्रवर्तमान (अ २, १)।

उद्यत न [उद्यत] १ देव, मन्ता (मृग १ ७)।

२ के को मन्तात्माप्यस्य 'मन्तात्माप्यस्य मन्तात्माप्यस्य
मन्तात्माप्यस्य' (मृग १२)।

उद्यत मरि नि [उद्यतमरि] मन्तात्माप्यस्य मन्तात्माप्यस्य
(मृग २२)।

उद्यत नि [उद्यत] के को मन्तात्माप्यस्य
(मृग २२)।

उद्यत नि [उद्यत] उद्यत यो (विश्व १
७)।

उद्यत नि [उद्यत] १ पानी बहान करने-
वाला बहान-वाहक। २ पुं मन्ता प्रवह
(मम १ १)।

उद्यत नि [उद्यत] १ उद्यत मन्ता (मृग १)
उद्यत नि [उद्यत] १ उद्यत मन्ता (मृग १)।

उद्यत नि [उद्यत] १ उद्यत मन्ता (मृग १)
उद्यत नि [उद्यत] १ उद्यत मन्ता (मृग १)।

उद्यत नि [उद्यत] १ उद्यत मन्ता (मृग १)
उद्यत नि [उद्यत] १ उद्यत मन्ता (मृग १)।

उद्यत नि [उद्यत] १ उद्यत मन्ता (मृग १)
उद्यत नि [उद्यत] १ उद्यत मन्ता (मृग १)।

उद्यत नि [उद्यत] १ उद्यत मन्ता (मृग १)
उद्यत नि [उद्यत] १ उद्यत मन्ता (मृग १)।

उद्यत नि [उद्यत] १ उद्यत मन्ता (मृग १)
उद्यत नि [उद्यत] १ उद्यत मन्ता (मृग १)।

उद्यत नि [उद्यत] १ उद्यत मन्ता (मृग १)
उद्यत नि [उद्यत] १ उद्यत मन्ता (मृग १)।

उद्यत नि [उद्यत] १ उद्यत मन्ता (मृग १)
उद्यत नि [उद्यत] १ उद्यत मन्ता (मृग १)।

उद्यत नि [उद्यत] १ उद्यत मन्ता (मृग १)
उद्यत नि [उद्यत] १ उद्यत मन्ता (मृग १)।

उद्यत नि [उद्यत] १ उद्यत मन्ता (मृग १)
उद्यत नि [उद्यत] १ उद्यत मन्ता (मृग १)।

उद्यत नि [उद्यत] १ उद्यत मन्ता (मृग १)
उद्यत नि [उद्यत] १ उद्यत मन्ता (मृग १)।

उद्यत नि [उद्यत] मन्ता मन्तात्माप्यस्य
(मम)।

उद्यत नि [उद्यत] १ मन्तात्माप्यस्य। २
मन्तात्माप्यस्य। उद्यत नि [उद्यत] (मृग १४१)। 'मन्ता'
मुं नेव मन्तात्माप्यस्य' (अ ४ १)। मन्तात्माप्यस्य

उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)।

उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)।

उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)।

उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)।

उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)।

उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)।

उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)।

उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)।

उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)।

उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)।

उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)।

उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)।

उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)।

उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)।

उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)।

उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)।

उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)।

उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)।

उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)। उद्यत (मम १४ १४)।

उदाय को [उ] उदा, उदयी विस्तार स्तोत्र
परा वाणी है (३ १ २०) ।

उदाय नि [अवद्रात] नृत्त 'उदाये ओद्यमिम
वेदयाई नराभि' (पुष्प १ १) ।

उदाय नि [उदाय] १ स्तैर, वनस्पत
(पाप) । २ प्रकर प्रकट 'ठा वनपवन
हृदयपरिहरेण तस्य तं नृह' (धृप
२ २४) । ३ वन्यनिकट (है १ १००) ।

उदाय पु [उ] १ सप्त सप्त । २ स्वपुट
चिदोन्नत प्रदेष्ट (है १ १२१) ।

उदायिनि नि [उदायित] सप्तठा हृषा
प्रनयित 'उद्य ए उद्यै हृषी पायति
धृष्युद्वेगद्वेगमिद्विद्विदे उदीयिनिन्यो उदा-
यिनि' (विता १ २) ।

उदाय यक [शुभ] लोक्य, सौम्य होना,
धन्य वादुन होना । वद 'उद्यतेषु यद्युक्त-
स्मादिभिरुद्यतेषु उदायंत उद्यतेषु
मनोयवदात्मनिरुद्यतेषु' (आमा १ १) ।
उदायंत (आमा १ १ टी) ।

उदाय केो उदास = उदाय 'वेनि न कस्तवि
बंध' शाखाजल निविहृष्योदाई' (वज्रा
१ १) ।

उदायि नि [उ] १ बुद्ध ने व्यापित रस-
दुःख । २ व्यापित उद्युक्त (पद) ।

उदाय उर [आ + उद] बीच बेगा हाथ
हो धीन होना । उदायन (है ४ १२४
१८ पदा) । उद, उदायित (नि २००) ।

उदाय पु [अवद्रात] १ वन्य वनस्पत
'उदि उदिमयिनि उदिमयिनि वन्युपि
ननुपुद्रावतनयि' (वय आमा १ १) ।
२ पुन-निरोध (बीज १) । ३ वन्युपि
नाम का वन्य व्याप—मन्य निरोध (व
२) ।

उदायिनि नि [आदिम] धीन हृषा,
बीज निपा वना (पाम बुना वन ३ २३)
'हो वास्तव्यवादि हृ मैदि उदायिनि' (पुष्प
१ १) ।

उदाययमा की [उपद्रावमा] उद्यत हैपकी
(पद) ।

उदाय पु [उदाय] १ प्रकर वद । २ व्याप
(म १) ।

उदाय नि [उदायक] मात मालमाता
(पद १ १) ।

उदाय नि [उदाय] १ वन्य प्रविगाति
(विता २ १) । २ निद्रिष्ट (वस) । ३ वन
के लिए संक्रमित (माल माता) 'शाम-
पुता उदायमत्त परिक्रमयति' (धृप २,
१) । ४ वसित (धृप २ २) । ५ न उद्येष्ट
(वेना १) । कद नि [कद] धातु के
उद्येष्ट वे वना धातु धातु के निमित्त
विता हृषा (योगादि) (वस १) ।

उदाय की [उ] काहृत् निवि-विरोध
'अमाक्या (बीज)

उदाय नि [उदाय] प्रनयित (हृ १) ।

उदाय लक [उ + वि] व्याप करना ।
कर्म उदायिनि (धृप १) ।

उदाय उर [उ + वि] १ नाम
निर्देशपूर्वक वस्तु का नियंत्रण करना । २
वेदना । ३ उदाय करना । ४ वन्य वदना ।

५ वन्यीकार करना । ६ उदायिनी होना । ७
व्यापन करना । उदाय होना । उदाय
(व २ ३) । कर्म 'उद्य वन्यमप्युदाय-
कराय वस्तु वेन विनयेन उदायिनी' (अमा) ।

कर्म, उदायिनी (व २) । उद्य 'उद्यो
वादि वन्यी पुन्यि व नृपराणीय पदं
कर्मो उदायिनीय वदी तुम्ह' (महा
व ३) । 'उद्यमालो व दृष्टा पदव्यवस्था
वनुनर उदायिनी वन्यमप्युदायिनी' (व २
पदव्यवस्था (महा) उदायिनी (माता २
१ पद १ २) । उद्य उदायिनी उदायिनी
सिद्धय (व २ ३ ४ २ १) । प्रयो,
उदायिनीय उदायिनीय (हृ १
कर्म) ।

उदायिनीय वेको उदायिनी (माता २) ।

उदायिनी नि [उ] उदायिनी विवर्तित (है
१ १ २) ।

उदायिनी वेको उदायिनी 'अदीपउद्यमालो
व नालात वय वेद्य' (व २ २) ।

उदायिनी न [उदायिनी] १ उद्येष्ट । २ नि
उद्येष्ट (है १ २) ।

उदायिनी नि [उदायिनी] १ उदायिनीय
उदायिनी 'वद्यप्युदायिनीयि निविहृष्टि
मुकथि' (व २) ।

उदायिनी नि [उदायिनी] प्रदीपित प्रनयित
(पाम) 'वीद्य पनिकविन उद्यो वन्यिनी
वमालो' (पुष्प २ २०) ।

उदायिनी नि [उदायिनी] वनयित (व २,
३) ।

उदायिनी नि [उदायिनी] हैपन निपा हृषा (व
१ ११) ।

उदायिनी वेको उदायिनी उद्येष्ट (मनि) ।

उदायिनी पु [उदायिनी] १ पला-विषयक बुना
(धृप १) । २ नाम का व्यापण (विदि
१ १) । ३ व्यापन व्यापण बुना के
व्युत्पन्न का व्यापण (व १) ।

उदायिनी पु [उदायिनी] १ नाम-निर्देश पूर्वक वस्तु
नियंत्रण (विदि) । २ विद्या उदायिनी उदायिनी
वास्तव्य वास्तव' । ३ वन्यवद, वन्यवद
(व २) । ४ वन्य । ५ वन्यवद मद्रव्य
(विदि) । ६ वन्य का एक वंश (म १
१) । ७ वंश वन्य 'वुनयिनी वन्यवद
वास्तव्यवास्तव्य वन्यवद' (व २, १४
१ २) । ८ वन्यवद वन्यवद (विदि) ।

९ वन्य व्याप (व २) ।

उदायिनी नि [उदायिनी] वेको उदायिनी =
व्युत्पन्न (विदि २१) ।

उदायिनी न [उदायिनी] १ व्यापन व्यापण
व्यापण 'उदायिनी व्यापण व्यापण
वेन वन्य' (व २) । २ व्यापण व्यापण
(व २) । ३ व्यापण व्यापण (व २) ।

उदायिनीय पु [उदायिनीय] वन्यवद के
व्यापण का वन्य (व २) ।

उदायिनी की [उदायिनी] व्याप वेको
(व २) ।

उदायिनी नि [उदायिनी] १ व्याप वेको
व्यापण 'व्याप वेको व्यापण' (व २) ।

उदायिनी नि [उदायिनी] १ व्याप वेको
व्यापण 'व्याप वेको व्यापण' (व २) ।

उदायिनी नि [उदायिनी] १ व्याप वेको
व्यापण 'व्याप वेको व्यापण' (व २) ।

उदायिनी नि [उदायिनी] १ व्याप वेको
व्यापण 'व्याप वेको व्यापण' (व २) ।

उदायिनी नि [उदायिनी] १ व्याप वेको
व्यापण 'व्याप वेको व्यापण' (व २) ।

उदायिनी नि [उदायिनी] १ व्याप वेको
व्यापण 'व्याप वेको व्यापण' (व २) ।

उदायिनी नि [उदायिनी] १ व्याप वेको
व्यापण 'व्याप वेको व्यापण' (व २) ।

उदायिनी नि [उदायिनी] १ व्याप वेको
व्यापण 'व्याप वेको व्यापण' (व २) ।

उदायिनी नि [उदायिनी] १ व्याप वेको
व्यापण 'व्याप वेको व्यापण' (व २) ।

उदायिनी नि [उदायिनी] १ व्याप वेको
व्यापण 'व्याप वेको व्यापण' (व २) ।

उप्याह सक [उत् + पाठ्] १ ऊपर उठना । २ उभाड़ना उभुनन करना । उपाहि (उपह १ १; उ २३; कल) । इ उपाह इतिष्ठ (मुग २४) । ईह उप्याहिय (गद) ।

उप्याह सक [उत् + पाठ्] १ उलटन करना । ईह उप्याहिय (गिने १३२ टी) ।

उप्याह पु [उत्पाठ्] ऊदुधन उलटनन 'ममलोमाही' (उप १४ टी २=९ टी) ।

उप्याहण न [उत्पाठ्] १ उलटलन ऊपर उठना । २ उभुनन ऊभनन (उ २३२ एव) ।

उप्याहिय वि [उत्पाठ्] १ ऊपर उठना हुआ (पामा प्रक) । २ उपस्थित (पाम) ।

उप्याहिय वि [उत्पाठ्] उत्पन्न किया हुआ 'उत्पाहिकमप्राप्तं ब्रह्मणोसाह उति ममो' (गद ११) ।

उप्याहिय वि [उत्पाठ्] उत्पन्न कर्ता (प्रवी १७) ।

उपादीभमाज वैभो उप्याह = उत् + पाठ् ।

उप्याह सक [उत् + पाठ्] १ उत्पन्न करना, बनाया । उपाहि (कल) । बह उपाधत्त उप्याह्य (गुर २ २२ १ ११) । ईह उप्याह्य (न) । ईह उप्याह्य उप्याह्य; उप्याह्य (एव नि ४६३; टीका ४) । कक उपादीभमाज (टी) (गद) ।

उप्याह पुन [उत्पाठ्] १ उत्पन्न करने-बनाने 'ने सार्धं धेनुमया विरचति नहंमुप्याह' (मुग १८) । २ वास्तविक उपपन्न 'यव हरो न पावह धेनुमने उपाह्य ब्रह्मणे मर्मनं तादे धरोय तं उपाह्य उरधामि' (यगु) । ३ वास्तविक उत्पन्न का प्रसिद्धक यव निमित्त-साह-विशेष (डा २ सम ४७ पद १ ४) । 'निपाय पु [निपाठ्] नहना धीर उठना (उ ४११) ।

उप्याह पु [उत्पाठ्] उपाति प्रादुर्भाव (मुग १८ मुग) । पम्पय पु [पम्प] एक प्रकार के बाल बड़ो पाकर बड़े स्मरण-वादीन वै वैभो बौदा के लिए विभिन्न प्रकार के शरीर बनने हैं (नव ११ बीव ३) । पुत्र न

[पुत्र] प्रभवपुत्रं उपाह-विशेष बाधुनं वैभ धनु-यव का एक भाग (सम २६) ।

उप्याहण वि [उत्पाठ्] १ उत्पन्न करने-बनाया । २ पुं, भीष्टन धनु-विशेष की विशेष (नव ८) ।

उप्याहण न [उत्पाठ्] १ उत्पन्न, उपाहण (अ १ ४) । २ वि उत्पन्न उपाहण (पम्प १ ४) ।

उप्याहणया की [उत्पाठ्] १ उपाहण उप्याहण उत्पन्न करना । वैभ धनु की भिन्ना का एक शीप (यौव ७४६ अ १ ४ निरु १) ।

उप्याहण वि [उत्पाठ्] उत्पन्न-कर्ता (मुग २ २२) ।

उप्याह सक [उत् + पाठ्] बहना बोलना । उपाह (ह ४ २) । उत्पन्न (मुग) ।

उप्याह सक [उत् + पाठ्] १ उपाहना शीपना । २ मुगना उठना । उपाह (ह २, १ ६) । कक उप्यहमाज (उपा) ।

उप्याह सक [उत् + पाठ्] १ हीर करता । उपाति (मुग १ १६) ।

उप्याह न [ह] उपाह धनु-यव (पाथ) । उप्य सक [उत्पाठ्] वैभ । उपाह (कम्प) ।

उप्यि [उत्पाठ्] ऊपर बहि छे धने । बोह किया वैभ वरिधति ? योमना । उपाह शीप उपाह्य हीरे धनु-यव धनु-यव (बीव ३) शाय १ १; अ १ ४ बीव) ।

उप्याहिकया की [ह] हाह का मध्य भाग, करोत्यं (ह १ ११) ।

उप्यि सक न [ह] १ मुग धेनुय । २ एव कुवी । ३ धनु-यव धनु-यव (ह १ ११) ।

उप्यि सक वि [उत्पाठ्] धनु-यव धनु-यव (नव) ।

उप्यि सक सक [उत्पाठ्] धनु-यव की राह धनु-यव करना । कक उप्यि सकमाज (कम्प) ।

उप्यि सक [ह] वैभो उप्यि सक 'यहिलं उप्यि सक का वाक्य रोधामि' ब 'वैभ धनु-यव धनु-यव धनु-यव' (बीव ३) 'होवी यह उत्पन्न धनु-यव पाहामि धनु-यव' 'उत्पन्न धनु-यव धनु-यव' (पम्प)

८ १७३ १२, ४७; 'उप्यि सकमाज' (मत् ११६) ।

उप्यि सक वैभो उप्यि सक । बह उप्यि सक (मुग ११) ।

उप्यि सक वि [ह] १ नत्त मीत (ह १ १२६ वे १ ११) उ २४७१ पुत्र ४४३ गद; 'कि धनु-यव धनु-यव धनु-यव' (गुर १२ ११) । २ धनु-यव, कक । ३ धनु-यव धनु-यव (ह १ १२६ पाथ) ।

उप्यि सक वि [ह] उत्पन्न-कर्ता (मोत) (एव ७७ टी) ।

उप्यि सक [उत् + पाठ्] १ धनु-यव करना । २ धनु-यव धनु-यव वैभ । उप्यि सक (पम्प १ १-४७ २४ एव) ।

उप्यि सक वि [उत्पाठ्] धनु-यव किया हुआ (ह १ २६२) ।

उप्यि सक न [उत्पाठ्] धनु-यव धनु-यव (एव) ।

उप्यि सक वैभो उप्यि सक ।

उप्यि सक न [उत्पाठ्] धनु-यव (मि ४२२) । उप्यि सक वैभो उप्यि सक । उप्यि सक (ह १ २६२) ।

उप्यि सक वैभो उप्यि सक 'यहिलं उप्यि सक' (मि ४२२) ।

उप्यि सक पु [ह] धनु-यव धनु-यव, धनु-यव (ह १ २६२ वे १) ।

उप्यि सक [उत्पाठ्] १ कक कर धनु-यव । २ धनु-यव (ह १ २६२) ।

उप्यि सक सक [उत् + पाठ्] १ कक कर धनु-यव । २ धनु-यव 'धनु-यव' का धनु-यव धनु-यव (धनु-यव २ १ ११) । धनु-यव धनु-यव (ह २४) ।

उप्यि सक पु [ह] १ धनु-यव धनु-यव (ह १ २६२ मुग ११) गुर १ ११३ नव २ पुत्र ४४३ नव १२ टी) 'धनु-यव' यह धनु-यव धनु-यव धनु-यव (महा) । २ धनु-यव धनु-यव धनु-यव (ह १ २६२) ।

उप्यि सक न [उत्पाठ्] धनु-यव धनु-यव (ह २६) ।

उप्यि सक वि [उत्पाठ्] कक कर धनु-यव 'धनु-यव धनु-यव धनु-यव' (महा) १ १३ विपा १ २) ।

उद्युक्त मन् [उद् + मुक्] बोलना बहना ।
उद्युक्त (हि ४ २) ।

उद्युक्त न [दि] १ प्रसन्न प्रताप । २
हृष्ट । ३ वनादार (हि १ १२) ।

उद्युक्त धक् [उद् + धक्] धक्का ।

उद्युक्त दु [उद् + मद्] धक्का । 'नियुक्त
उद्युक्त' नियुक्त न [नि + मुक्]
अनन्य कला (एण्ड १६ का १२० टी) ।
उद्युक्त वि [उद् + मुक्] उद्यम लौल (वा
१७ व ११) ।

उद्युक्त न [उद् + मुक्] उद्यम (वण्) ।
उद्युक्त मन् [उद् + मुक्] उद्यम होना ।
उद्युक्त (प्राक् ७२) ।

उद्युक्त वि [दि] १ धक्का बलात् । २ दु
उद्यम लौल । ३ उद्यम, विपरीत प्रवेष्ट
(हि १ १२६) ।

उद्यम मन् [उद्यम] ऊँचा करना कड़ा
करना । उद्यम (वज्र ६४) ऊँचे
(वटी) ।

उद्यम वेगो उद्युक्त (हि २ ३१ मुर २)
वट ।

उद्यम दु [उद् + मद्] १ कष्ट अर्थ
कल्याण निर्दिष्ट होना, वट निर्दुष्य
'परार्थ वट वटवटि
देनापय वटवटि वे वटि ।
द्वितीयोद्यम उद्यमो
गुणवति वटवटवटवटो । (का १ टी) ।
२ न कानी दुःख उद्यम 'उद्यमवटवटवट-
(वटि) ।

उद्यम वि [दि] गता बीमार (हि १ १२
मन्) ।

उद्यम वि [उद् + मद्] १ कष्ट व्यापक
मिष्ट (हि १ १४) ।
'उद्यम' का उद्यम उद्यम का उद्यम
परिपक्व । 'उद्यम' परिपक्व उद्यम उद्यम
परिपक्व (वा १६१) 'उद्यम' परिपक्व
मन् (मुर १२ ११६) । २ मुक्ति
(व १) । ३ उद्यम उद्यम उद्यम
(२ ११६) ।

उद्यम वि [दि] गता बीमार (हि १ १२
मन्) ।

उद्यम वि [उद् + मद्] १ कष्ट व्यापक
मिष्ट (हि १ १४) ।

उद्यम वि [दि] गता बीमार (हि १ १२
मन्) ।

उद्यम वि [उद् + मद्] १ कष्ट व्यापक
मिष्ट (हि १ १४) ।

उद्यम वि [दि] गता बीमार (हि १ १२
मन्) ।

उद्यम वि [उद् + मद्] १ कष्ट व्यापक
मिष्ट (हि १ १४) ।

उद्यम वि [उद् + मद्] १ कष्ट व्यापक
मिष्ट (हि १ १४) ।

उद्यम वि [उद् + मद्] १ कष्ट व्यापक
मिष्ट (हि १ १४) ।

उद्यम वि [उद् + मद्] १ कष्ट व्यापक
मिष्ट (हि १ १४) ।

उद्यम वि [उद् + मद्] १ कष्ट व्यापक
मिष्ट (हि १ १४) ।

उद्यम वि [उद् + मद्] १ कष्ट व्यापक
मिष्ट (हि १ १४) ।

उद्यम वि [उद् + मद्] १ कष्ट व्यापक
मिष्ट (हि १ १४) ।

उद्यम वि [उद् + मद्] १ कष्ट व्यापक
मिष्ट (हि १ १४) ।

उद्यम वि [उद् + मद्] १ कष्ट व्यापक
मिष्ट (हि १ १४) ।

उद्यम वि [उद् + मद्] १ कष्ट व्यापक
मिष्ट (हि १ १४) ।

उद्यम वि [उद् + मद्] १ कष्ट व्यापक
मिष्ट (हि १ १४) ।

उद्यम वि [उद् + मद्] १ कष्ट व्यापक
मिष्ट (हि १ १४) ।

उद्यम वि [उद् + मद्] १ कष्ट व्यापक
मिष्ट (हि १ १४) ।

उद्यम वि [दि] गता बीमार (हि १ १२
मन्) ।

उद्यम वि [उद् + मद्] १ कष्ट व्यापक
मिष्ट (हि १ १४) ।

उद्यम वि [उद् + मद्] १ कष्ट व्यापक
मिष्ट (हि १ १४) ।

उद्यम वि [उद् + मद्] १ कष्ट व्यापक
मिष्ट (हि १ १४) ।

उद्यम वि [उद् + मद्] १ कष्ट व्यापक
मिष्ट (हि १ १४) ।

उद्यम वि [उद् + मद्] १ कष्ट व्यापक
मिष्ट (हि १ १४) ।

उद्यम वि [उद् + मद्] १ कष्ट व्यापक
मिष्ट (हि १ १४) ।

उद्यम वि [उद् + मद्] १ कष्ट व्यापक
मिष्ट (हि १ १४) ।

उद्यम वि [उद् + मद्] १ कष्ट व्यापक
मिष्ट (हि १ १४) ।

उद्यम वि [उद् + मद्] १ कष्ट व्यापक
मिष्ट (हि १ १४) ।

उद्यम वि [उद् + मद्] १ कष्ट व्यापक
मिष्ट (हि १ १४) ।

उद्यम वि [उद् + मद्] १ कष्ट व्यापक
मिष्ट (हि १ १४) ।

उद्यम वि [उद् + मद्] १ कष्ट व्यापक
मिष्ट (हि १ १४) ।

उद्यम वि [उद् + मद्] १ कष्ट व्यापक
मिष्ट (हि १ १४) ।

चरिममङ्ग ४ [उद्भवेत्] सग कर घवय
होमा भापल कर पीछे हट्ना:

‘नेमुं बिप कुठिअह

उन्मिअहउद्भुतो महिहरेणु ।

हेमुं येय एणित्थअह

पविहरेहोसितो कुठिसो ॥

(पउअ) ।

उन्मिअ १ [उन्मिअ] १ अन्तरित

उन्मिअ १ [मोअ ११३] उन्मिअ पाणिप

पविह (पुर ७ ११४) । २ उन्पाणिअ बोला

हुमा । ३ न केन सत्तुपों के लिए बिदा का

एक दोष निहो बैयू से सिप पाव को

बोतकर सवने से ही जाती मिता ‘उयसाह

एोअउठ उन्मिअ अ उन्मिअउठ’ (पंचा

११ ठा ४ ४) । ४ नि उन्मा हुमा कडा

हुमा, ‘हिरियउन्मिअउठम’ (महा) ।

उन्मिअ नि [उन्मिअ] पुष्पी को फड़कर

उन्मिअको बन्मपि (पउअ १ ४) ।

उन्मिअ नि [उन्मिअ] उन्मा किया हुमा

कडा किया हुमा (हुमा ८६ महा अउमा

८) ।

उन्मिअ न [उन्मिअ] १ लवण-विशेष

समुद्र के किनारे पर सार बनके संघर्ष से होने-

वाला नोन (पावा २, १ १३) । २ पुन

संघर्ष, उन्म पावि प्राणी (संघर्ष २

अमर्ष ७२: नृप १ ६ ८) ।

उन्मिअय नि [उन्मिअ] उन्मा किया

हुमा ‘उन्मिअयउन्मिअ’ (अ ५६७ ठे) ।

उन्मुअ य [उन् + मु] उन्म होना ।

उन्मुअ (हे ४ १) ।

उन्मुअय नि [हे] १ उन्मला हुमा अगि

से उठ को हुअ बपेय कलता है वह (हे

१ १ २: ७ ८१) ।

उन्मुमा नि [हे] वह अगिअ (हे १ १ २) ।

उन्मुअ य [उन् + मुअ] उन्मा फँकना ।

उन्मुअ (हे ४ १४४) ।

उन्मुअिअ नि [उन्मिअ] उन्मा फँक हुमा

(हुमा) ।

उन्मुअिअ नि [उन्] उन्मिअ अगिअ (पाव) ।

उन्मुअ नि [उन्मिअ] १ उन्म (पुर १

२१६) । २ आनुक काउ (हिउ १४७६) ।

उन्मुअिअ की [ओर-मृति-की] कीहम्य बाहु

देव की एक मेरी जो निनी आनुक प्रयो-

अव के उन्मिअ होने पर बगई जाती की

(हिउ १४७६) ।

उन्मिअ पु [उन्मिअ] उन्म अगिअ ‘उन्मा

अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

‘अगिअउन्मिअउन्मिअउन्मिअ’ (पउअ-

उन्मिअ पु [हे] १ उन्मिअ (हे १

१२४) ।

उन्मिअ नि [हे] उन्मिअ उन्मा (अउमा

८२) ।

उन्मिअ नि [उन्मिअ] १ पापी के अग पावा

हुमा पीण (पाव) । २ न ऊनअन ठेरा

अन के अग पावा (पावा) । जअइ की

‘अउमा’ अउ-विशेष अउने पत्तर बगैयू

की हीर सउने है (अ १) ।

उन्मिअ पु [उन्मिअ] १ उन्मिअ अउमा अउमा

विपरीत मार्य (मुर १ २४६ हुमा २५) ।

२ अउमा, अउमा (पावा) ३ अउमा अउमा

(पावा) ।

उन्मिअमा की [उन्मिअमा] अउमा अउमा

(पावा) ।

उन्मिअअ न [हे] १ अउमा अउमा (हे १

१२५) । २ अउमा (हे १ १२५) । ३ अउमा अउमा

अउमा अउमा अउमा (हे १ १२५) ।

उन्मिअअ नि [उन्मिअअ] १ अउमा अउमा

(हे १ १२५) । २ अउमा (गा १२५: १२५) ।

उन्मिअअ नि [हे] अउमा (हे १ १२५) ।

उन्मिअअ नि [हे] १ अउमा अउमा

अउमा अउमा (हे १ १२५) ।

उन्मिअअ न [उन्मिअअ] अउमा अउमा

अउमा अउमा (हे १ १२५) ।

उन्मिअअ नि [उन्मिअअ] अउमा अउमा

अउमा अउमा (हे १ १२५) ।

उन्मिअअ नि [उन्मिअअ] अउमा अउमा

अउमा अउमा (हे १ १२५) ।

उन्मिअअ नि [उन्मिअअ] अउमा अउमा

अउमा अउमा (हे १ १२५) ।

उन्मिअअ नि [उन्मिअअ] अउमा अउमा

अउमा अउमा (हे १ १२५) ।

उन्मिअअ नि [उन्मिअअ] अउमा अउमा

अउमा अउमा (हे १ १२५) ।

उन्मिअअ नि [उन्मिअअ] अउमा अउमा

अउमा अउमा (हे १ १२५) ।

उन्मिअअ नि [उन्मिअअ] अउमा अउमा

अउमा अउमा (हे १ १२५) ।

उन्मिअअ नि [उन्मिअअ] अउमा अउमा

अउमा अउमा (हे १ १२५) ।

उन्मिअअ नि [उन्मिअअ] अउमा अउमा

अउमा अउमा (हे १ १२५) ।

उन्मिअअ नि [उन्मिअअ] अउमा अउमा

अउमा अउमा (हे १ १२५) ।

उपकरण सेवा उपागम (दीप) ।
 उक्त सक्त [उप + कप] प्राप्त होता,
 'तापण वसुधकर्म' (मृग १ ४) ।
 उक्तमि वि [दि] १ समिष्टि । २ परि-
 विन । ३ सविन स्यादित (वि १ ११८) ।
 उपर देवो उपागार (बर्मे १२ छ) ।
 उपरिया देवो उपागारिया (उप ८२) ।
 उक्त ३ दी [उप + कृति] उपागार (वि ४
 उपदि ३ ४८ ८ ४८) ।
 उपकुल न [उपकुल] नक्त-विशेष धरण
 मासि बाध (वि ३) ।
 उपकुल दून [उपकुल] दून मसन के पास
 वा मसन (मृग १ १) ।
 उपकोमा की [उपकोरा] एक पक्षिका
 कोमा देखा की छोटी बहिन (मृग ४२१) ।
 उपकोला की [उपकोरा] एक प्रविष्ट बेरवा
 (उप) ।
 उपकृत वि [उपकृत] १ समीप में जाती ।
 २ प्राप्ति प्रस्तापित (वि १८७) ।
 उपकृत सक्त [उप + कृत] १ मुक्त करना
 प्राप्त करना । २ प्राप्त करना । ३ जानना ।
 ४ समीप में जाना । ५ संस्कार करना ।
 ६ अनुपपन्न करना 'समीनो पुण्यो मासं
 अनुपपन्न' (वि १२९) 'ता मुने तास
 वसवसि हर्षं मास एवामि मासुव
 कर्मणि पि (महा) 'मैत्रिभारगि
 पत्र' मगीभारगिउत्तर' (वि २ ११८) ।
 'मगी हनुमिगारिहि वताई उपकर्मिगति
 वि ३ वनीपन्न' (मृग) । वह उपकर्मित
 (वि ३४८) ।
 उपकृत पु [उपकृत] १ प्राप्त, प्राप्त ।
 २ प्राप्त का प्रयत्न 'सोष्णा भवसमुपाकर्ण
 सक्ते तास वरेजुवकर्म' (मृग १ १
 १४) । ३ बर्मे के रूप का अनुप
 (मृग १ १ ४) । ४ बर्मे की
 परिणित का भार-मुक्त पीन का प्रयत्न-
 विन (ठा ४ २) । ५ बरण मीन विनक्त ।
 'हृग इममि समर उपकर्मो नीविपन्न वह
 मर्म' (घा ११: ४४ ४) । ६ इतिवित्त
 को समीप में जाना 'अन्तर्लोचनमणी
 वरारमो देण वनिन व उमी का उपकर्मि-
 पीकर्ण' (वि ६) । ७ मासुव-विपन्न

मृत्यु (ठा ४ २ स २७७) । ८ उक्त
 हृयिमार, 'मुग्धाहारमैत्र उपकर्मणं न
 परिणार' (म २) । ९ उपागार (उ २ १) ।
 १ जान निरयम । ११ अनुपपन्न, अनुपपन्न
 प्रकृति (वि १२१ ६१) । १२ संस्कार,
 परिकर्म 'लेतोवकर्म' (मृग) ।
 उपकर्म पु [उपकर्म] अनुपपन्न कर्मों को
 उपय में जाना (मृग ४०) ।
 उपकर्मन न [उपकर्मन] उपर देवो (मृग
 उपर ४६ वि १११ ११७ १२१) ।
 उपकर्मिय वि [उपकर्मि] उपकर्म से
 सम्बन्ध रखनेवाला (ठा २ ४ स १४४
 पण १११) ।
 उपकर्मिय देवो उपकर्मन उप + कर्म । कर्म
 उपकर्मियगह (वि २ १६) ।
 उपकर्म सक्त [उप + कर्म] दीर्घकर्म में
 योग्य योग्य कर्मों को सक्त उपय में हो
 योग्य । कर्म उपकर्मियगह (बर्मे १
 १४७) ।
 उपकर्ममन न [उपकर्मन] उपकर्म करना
 (मास ११७) ।
 उपकर्मिय देवो उपकर्मन (वि २ १) ।
 उपकर्म पु [उपकर्म] १ बाधा । २ शोक
 (उप) ।
 उपकर्म सक्त [उप + कर्म] १ पराना
 रमोई करना । १ पाक की मसाले से
 संस्कार करना । उपकर्म, उपकर्मि
 (वि १२१) । संज्ञ उपकर्मिता (मृग ११८)
 प्रयो. उपकर्मिता, उपकर्मिता (वि १२१)
 वय) । संज्ञ उपकर्मिता (वि १२१) ।
 उपकर्म पु [वि उपकर्म] १ वपाया
 उपकर्मि (वि १२१) । २ मसाला वपाय से
 संस्कार-मुक्त पत्रमा हवा (मृग ४६ वि १
 १२१ उत १२, ११) । ३ पुन रमोई
 पाक-मसालावपाय वह मसाले उप
 कर्मों न कर्मिता (उप १२१ दी ठा ४ २
 छाया १ ८ शीन १४ मा) । ४ वि
 [म] उपकर्म पर भी का कर्मिता वपाय
 है वह पुन वपाय-विशेष 'उपकर्मिय
 वपाय वपायपीन उपकर्मिता' (वि १२१)
 विगमि वि वपाय वपाय वपाय वपाय
 (मृग १२) ।

उपकर्म पु [उपकर्म] १ संस्कार । २ विनये
 संस्कार क्रिया पाय वह (ठा ४ २) ।
 उपकर्म पु [उपकर्म] वर का उपकरण
 साधन (मृग ११) ।
 उपकर्मण न [उपकर्मण] उपर देवो ।
 सास्य की [शास्य] रमोई-वर, पात्र-
 पुह (मृग ११) ।
 उपकर्म सक्त [उपा + कर्म] कर्म । कर्म
 उपकर्मिता (मृग २ ४ १) ; मग ११
 ३—मग ७६२) ।
 उपकर्म की [उपा + कर्म] जानाम (बर्मे १
 ७२७) ।
 उपकर्मिय वि [उपकर्मिय] प्रतिदि
 वरनेवाला 'मताण उपकर्मिता मरव'
 (मृग २ २ २६) ।
 उपकर्मिय की [उपा + कर्म] उपकर्म
 मरव वरव (मृग १११) ।
 उपकर्मिय न [उपा + कर्म] उपकर्म
 कर्म (मृग ११ १४६) ।
 उपकर्मिय वि [उपा + कर्म] प्राप्त मुक्त क्रिया
 हुआ (मृग १११) ।
 उपकर्मिय सक्त [उपा + कर्म] १ स्थापन
 करना । २ प्राप्त करना । ३ प्राप्त करना ।
 उपकर्म (वि ११६) ।
 उपकर्मिय वि [उपा + कर्म] सक्त-प्राप्त (बर्मे १
 ४२) ।
 उपकर्म पु [उपकर्म] १ प्राप्त उपाय ।
 २ उपाय 'ए मृगानि तस्मिं वाह्यिगने
 विमो उपकर्मिय' (मा १६) ।
 उपकर्म पु [वि उपकर्म] वाह्यिगने
 मुपपन्न (मृग १७) ।
 उपकर्म वि [उपा] १ अनुपपन्न करनेवाला
 (उप २४१: वीन) । २ समीप में जानेवाला
 (वि २४१) ।
 उपकर्म सक्त [उपा + कर्म] १ समीप में
 जाना । २ प्राप्त करना । ३ जानना । ४
 स्वीकार करना । उपकर्म (उप २ ४१०) ।
 उपकर्मिय (वि १२२) । वह उपकर्मि
 ऊन (म ४४) ।
 उपकर्मिय वि [उपा + कर्म] विना हुआ
 संस्कार परिणित (म ४४१) ।
 उपकर्मिय वि [उपा + कर्म] परिणित (म
 ७२१)

उपगम देवो उपगच्छ । नैव उपगम्य
(विंसे ११६६) । उपगम्य (विष्णु १६) ।

उपगम्य वि [उपगत] १ पत घाया हुआ
(म १ ११६ या १२१) । २ काट काया
हुआ (मम नम उप २६ वां १५७) ।
३ बुद्ध, धरित (यम) । ४ प्राय (यम) ।
५ प्रवर्ध-प्राय (यम १) । ६ स्वीकृत,
‘अग्रजगत्प्रभुना, अग्रेषे वि उपगमा
तिष्ठति’ (उत्तर १५) । ७ अन्तर्गत अन्तर्गत
‘अथ महात्म्यमुद्रं,
प्राणि पक्षेप्राणि येनमुद्राणि ।
अण्डाण्यण्डाण्युद्रो वि
वर्तितस्ते उपगम्यन्ति’
(विंसे ११६३) ।

उपगम्य वि [उपगत] अन्तर उपचार विमा
मम हो वह (म २ १) ।

उपगम्य वर [उप + कृ] दित करना । उप
वर्तित (म २ १) ।

उपगम्य न [उपगत] १ मान्य सामग्री
माया कर्म (मोक्ष १११) । २ मान्य अन्तर-
रित (विंसे १६५) ।

उपगम्य न [उपगत] उपचार (उत्तर ४२) ।
उपगम्य न [उप + कृ] उपचार करना
मान्य माना । उद् उपगम्यता (बृह १
५) । वर

‘उपगमनं मणिता वल्लोमादि कण्डुः ।
मोक्षमोक्ष विमोक्षं महात्मनं पुरुषं’
(मम २) ।

उपगम्य न [उप + गि] कर्म करना, स्थापना
करना अनुमान करना । वर उपगम्यज्ञ
मान्य उपगम्यमान उपगम्यमान (यम
नम ८ ११ स ११) ।

उपगम्य देवो उपचार = उपचार (मुर २
५१) ।

उपगम्य वि [उपगत] उपचार करने
करना (म १२१) ।

उपगम्य वि [उपगत] ऊपर देवो (मुर
५ १६५) ।

उपगम्यिषो [उपगम्यिषा] आमाय भावि
को रित (यम ५१) ।

उपगम्य न [उपगत] १ उपचार । २ वि

विचार उपचार विमा ममा हो वह (स
१३६) ।

उपगम्यमान देवो उपगम्य ।

उपगम्य सक [उप + म] १ उपचार
करना । २ गृहित करना । ३ ग्रहण करना ।

उपगम्य सक [वि ११२] ।

उपगम्य वि [उपगीत] १ बलिष्ठ स्थापित ।
२ न समीत गीत गान ‘आत्मपुत्रगीतं
ननुवि सुपं विदं विदुमुत्तमं’ (सार्ध
१ =) ।

उपगम्यमान देवो उपगम्य ।

उपगम्य वि [उपगत] १ धर्मिष्ठ (या
१२१ स ४५०) । २ न धर्मिष्ठ (यम) ।

उपगम्य सक [उप + गुरु] १ धर्मिष्ठ
करना । २ पुन गीत से रसाय करना ।
३ रचना करना माना । वर उपगम्य
अमान्य (याया १ १) धीय) ।

उपगम्य न [उपगत] १ धर्मिष्ठ । २
अन्तर्गत-रसाय । ३ रचना, निर्माण ‘अग्रह-
ण्डाण्डादि मान्यउपगम्येति न’ (उद्) ।

उपगम्य वि [उपगत] धर्मिष्ठ (मान्य) ।
उपगम्य न [उपगत] भाव धर्मिष्ठ
(यम ११६) ।

उपगम्य न [उपगत] १ यम के समीत । २
मायाई मान्य ‘यमो विम नानो गुणोप
वर्णं धर्ममि’ (यम १) ।

उपगम्य न [उपगत] १ गृहित, गीत (विंसे
१६२) । २ उपचार (उत्तर २६० टी। स
१२४) । ३ ग्रहण उपचार (यम २११
या) । ४ उपवि उपचारण मान्य (यम
१११) ।

उपगम्य न [उपगत] मान्य-समान्य (यम
१११) ।

उपगम्य वि [उपगत] उपचार-रसाय
(यम १११) ।

उपगम्य न [उपगत] उपचार (उद्
२) ।

उपगम्य वि [उपगत] १ उपचारित
(यम १११) । २ धर्मिष्ठ (यम १११)

विष्णु काव्यविष्णु उपगम्येति (उद्) । ३
उपगत (म १११) । ४ उपगम्य (यम) ।

उपगम्य देवो उपगम्य (यम) ।

उपगम्य वि [उपगत] मान्य मान्य
रक्षणेवता (स १२) ।

उपगम्य न [उपगत] मान्य के मान्य
का कर्म, धर्मिष्ठ (विंसे १६२) ।

उपगम्य वि [उपगत] विमायक (वर
१ १२२) ।

उपगम्य वि [उपगत] उपचार करने-
माना (यास ५३; विंसे २ ८) ।

उपगम्य वि [उपगत] १ उपचार-
कारक (विंसे २ ६) । २ विंसे से सम्यक्
रक्षणेवता ‘मृगोपचार’ (धीय) ।

उपगम्य न [उपगत] १ विपत्त, धारण
(धीय ७=८) । २ अनुष्ठान (ठा २) । ३
विपत्त (यम १ १५) । ४ उपचार (उद्) ।

५ उपचार का अनुष्ठान (यास ११) ।
नाम न [नाम] कर्म-विपत्त विंसे
उपव से धीय धारण हो उपचार के पानीय,
वोररत रक्षितो प्रादि धर्मियों से स्नेह
पावा है वह नम (यम १५) ।

उपगम्य न [उपगत] ऊपर देवो
(विंसे २२१) ।

उपगम्य न [उपगत] १ विंसे (या १ १) ।
२ उपचार (विंसे २ यम ५ ७) । ३ उपचार
(यास १) । ४ धर्मिष्ठ-यमिष्ठ (यम ११) ।

उपगम्य न [उपगत] १ उपगत । २
परिपत्त गृहित (यम) ।

उपगम्य सक [उप + य] १ देवा करना ।
२ नवीय में उपगत-निष्ठा । ३ धारण
करना । ४ नवीय में माना । ५ उपचार
करना । उपगम्य, उपगम्य, उपगम्यो

उपगम्य (मुर १ वि १५६) ५२५
याया) ।

उपगम्य सक [उप + य] उपचार करना ।
उपगम्य (विंसे १) ।

उपगम्य वि [उपगत] १ देवा के विर
मै उपचार के धर्मिष्ठ करने का मान्य मान्य-
मान्य (यम २, २ २८) । २ न उपचार
कर (याया २ १ १ २) ।

उपगम्य वि [उपगत] नवीय (यम
१५५) ।

उपगम्य वि [उपगत] १ धर्मिष्ठ
मैल कर्मिष्ठ (म १) । २ न उपचार
कर (याया १) ।

उपचि सक [उप + चि] १ इष्टा करना ।
२ पुष्ट करना । उपचिउह, उपचिउह उह
फिराति । मुका उपचिउमु । यचि उपचि-
शिस्तति (अ २ ४ मग) । कर्म उपचि-
उह उपचिउहति (सा) ।

उपचिट्ट सक [उप + म्या] उपलित होना,
समीन घटना । उपचिट्टे उपचिट्टेउडा
(पि ५२२) ।

उपचिणिय रेको उपचिय (बसीवि १ ९) ।

उपचिय वि [उपचि] १ पुष्ट, पीन
(पराह १ ४ कम्) । २ स्थापित निर्धारित
(कम् पदव २) । ३ उदति (दीप) । ४ म्याउ
(मगु) । ५ बूठ बडा हुमा (माका) ।

उपचया की [उपचय] परत के पास की
सीपी बनोत (दी ११) ।

उपचयवि (दी) वि [उपचयवि] ।
धम्मवित्त (मनि १७९) ।

उपचंगक वि [हे] दीर्घ लम्बा दि १
११९) ।

उपचा सक [उप + जन] उत्पन्न होना ।
उपचाप (मिने १ २९) ।

उपचाह की [उपचाति] कप-नितोप (पिबे) ।
उपचाहय रेको उपचाहय (याम १६ गुवा
१३४) ।

उपचाव वि [उपचाव] उत्पन्न (गुवा १) ।

उपचीय सक [उप + चीय] धम्मय लेना ।
उपचीय (महा) ।

उपचीय वि [उपचीय] धम्मि (गुवा
११६) ।

उपचीयि वि [उपचीयि] १ धम्म केने-
बाला 'न करे नेव पुच्छे पिउम्या विग-
मुवचीनी' (क) । २ उत्तराक (मिने
२० २) ।

उपचीय वि [उपचीयि] १ धम्म के
समीप में रहनेवाला । २ पाक-स्थान में स्थित
के हल बडा उपचीयपा का धम्मयपा का
छह संमिर्हि (उत्त १२, १८) ।

उपचा सक [उप + पव] उत्पन्न होना ।
उपचाति (गुम १ १, १९) ।

उपचय न [उपचयन] पैदा करना कमाना
(गुर ८ ४४) ।

उपचय सक [उप + चय] उपचयन
करना । उपचयेमि (उ ५४१) ।

उपचयय १ [उपाध्याय] १ धम्मपाक
उपचयय १ पञ्चालाम (पउम १६, ३
प) । २ पुत्राध्याय केन मुनि को ही जाती
एक पयसी (मिने) ।

उपचयय वि [हे] धम्मपाति गुलाया हुमा
(उर) ।

उपचयय रेको उपचयय (मिरि ७७) ।

उपचय रेको उपचयय (उर) ।

उपचय रेको उपचयय (गुम पिसे २११६
टी) ।

उपच वि [उपच] एक स्थान में उठत यव
स्थित (बब ४) । काळ पुं [काळ] याने
की रेका धम्मयय समय (बब ४) ।

उपच पुं [उपचय] १ धम्मस्थान (मा) ।
२ क्लृप्ता करना (अ २) ।

उपचय वि [उपचयय] १ उपस्थित करने
योग्य । २ उत्त-दीक्षा के माप 'विपत
किन्हे छेडे न उपचया य धादिवा' (इह ९) ।

उपचय सक [उप + थापय] बुद्धि से
संस्थापित करना । उपचयति (गुम २ १
२७) ।

उपचय सक [उप + स्थापय] १ उपस्थित
करना । २ कौं का आरोपण करना दीक्षा
लेना । उपचयेह, उपचयेह (महा उवा) ।
हेह उपचयेउप (इह ४) ।

उपचयणा की [उपस्थापना] १ वरिष्ठ
विशेष एक प्रकार की बैन दीक्षा (बर्न २) ।
२ शिष्य में उठ की स्थापना 'उपचयणमु
बद्धय' (पंचम) ।

उपचयणीय वि [उपस्थापनीय] रेको
उपचय (अ १) ।

उपचा सक [उप + म्या] उपस्थित होना ।
उपचाणा (बर्न) ।

उपचाण न [उपस्थापन] १ दीक्षा उपवेदन
(धामा १ १) । २ धम्म-स्थान (महामि ७) ।
३ एक ही स्थान में विशेष कल एक उमा
(बब ४) । बौस पुं [बौस] निपणत
दीप (बब ४) । साक्षा की [साक्षा]
भास्वान-नरकय सम-स्थान (धामा १ १;
मिर १ १) ।

उपचाण न [उपस्थापन] मनुज, पाचार
(गुम १ १ १, १४) ।

उपचाणा की [उपस्थापना] जिसमें बैन छात्र
भोग एक बार उठर नर फिर भी शास्-
त्रनिष्ठ-धर्म के पड़े ही पाकर उठे नह
स्थान (बब ४) ।

उपचा रेको उपचय । उपचावेहि (पि
५९८) । हेह उपचाविउप, उपचावेउप
(अ) ।

उपचाणा रेको उपचयया (इह १) ।

उपचय वि [उपस्थित] १ प्राप्त नपुणार
मुचिमा (उत्त १२) २ समीप-स्थित (पाप
१) । ३ धम्म, उत्त (बर्न १) । ४

धादिवा 'धम्मउपचयि' (धाव गुम १
२) । ५ बुद्ध, प्रख्या लेने की धम्मउ
'उपचयि' पठिने संजय सुवरास्ति ।
धम्मम बम्मामी महेह, महानेह पठुमह
(उत्त ५६) ।

उपचयणा रेको उपचयय (पंचा १७ १) ।

उपचयि वि [उपचय] क्तातेराता
'धम्मयपाएउ' धम्मउपचयिता मव' (गुम
२ २) ।

उपचयि वि [हे] धम्मक नमा हुमा (प) ।

उपचयन न [उपचयन] उपचय, शास्त्र-नयन
(दीप) ।

उपचय सक [उप + नर्प] मज्जा
मात्र करना । उपच उपचयिउपमाय
(दीप) ।

उपचय वि [उपचय] बटिउ (उत्तर ११) ।

उपचय सक [उप + नम्] १ उपस्थित
करना वा उठना । २ प्राप्त करना । उप
याम (महा) । बह, उपचयमत्त (उत्त ११६
टी गुम २ २) ।

उपचयि वि [उपचय] उपस्थापित
(बबु) ।

उपचय वि [उपचय] उपस्थित (उ १ १९) ।

उपचय पुं [उपचय] १ उपचय, इष्टान्त के
बर्न को प्रत्य में कोइय हेतु का पत्र में
उपचय (पब १९ धोब ४४ मा) । २
कृति स्थापना (मिने १४ १ टी पब १४) ।
३ धम्मार्त नय (उर) । ४ संस्कार-विशेष
उपचय (उ २७२) ।

उपसाम पुं [उपसाम] उपसामि (प्रति २३२)।

उपसाम ऐको उपसम (विने ११ १)।

उपसामम जि [उपसामक] १ जोषादि को उपसाम करनेवाला (विने २२२ भाष ४)।

२ उपसामसे संबन्ध उपसामना 'उपसामम मैत्रियस्त होइ उपसामय मु सम्मत्' (पिठे २७२२)।

उपसामम न [उपसामन] उपसामि उपसम (म ४११)।

उपसाममया श्री [उपसामना] उपसम (छ ८)।

उपसामय केनो उपसामा (सम २९ विने २१ २)।

उपसामिय जि [ओपसामिक] १ उपसम संबन्धी। २ पुं भाष-विदेय 'माझावमस-उपसामि को भाग' (विने १४ ६४)। ३ न सम्बन्ध-विदेय (विने ३२६)।

उपसामिय जि [उपसामिन] शास्त्र विद्या हुआ (बष १)।

उपसामि नक [उप + कम्] क्यूना। उप साइ (उछ)।

उपसाहज जि [उपसाधन] दिनादक (मण)।

उपसाहज जि [उपसाधन] शिष्य विद्या हुआ (पाठन १४ = सण)।

उपसामि जि [उपसामिक] निष्क, दिन्ना हुआ (वसा)।

उपसामिय सच [उपसामिय] बर्णन करना प्रशंसा करना। इ इतिहासमहर्षद्वय (पौ) (दुहा ११८)।

उपसुप्त जि [उपसुप्त] सोया हुआ (वि १६ ११)।

उपसुप्त जि [उपसुप्त] निर्मल (सूय १ १)।

उपसुप्त जि [उपसुप्त] संयुजित (मण)।

उपसुप्त जि [उपसुप्त] यंत्र योग्य (बै १ १ ४)।

उपसुप्त न [उपसुप्त] मेरा परिचय (वष १)।

उपसुप्त जि [उपसुप्त] मेरा गन्तव्य (मङ्ग (मरि)।

उपसाम घट [उप + घट] शीतला निर-
वसा। नष्ट उपसाममान उपसाममान
(मङ्ग पाया १ १)।

उपसोमिय जि [उपसोमित] मृष्टीभित
विश्रुत (श्रीय)।

उपसोहा श्री [उपसामा] शोभा विभूषा
(मुर १ १ ४)।

उपसाहिय जि [उपसोभित] निर्मल किया
हुया शुद्ध किया हुआ (पाया १ १)।

उपसोहिय केनो उपसामिय (मुग ५-मरि-
साध ६६)।

उपससगा केनो उपसगा (वच)।

उपससय पुं [उपससय] शीत साधुओं के
निवास करने का स्थान (मय १८८ शीत
१७ भा उप १४८ टी)।

उपससा श्री [उपसाम] होय (बष १)।

उपससिय जि [उपससिय] १ हेयो (बष १)।
२ बन्नीहठ। ३ शरीर में स्थित। ४ न.
होय (पञ्च)।

उपससुति श्री [उपससि] प्रलम्ब को जानन
के लिए ज्योतिषी को कहा जाता प्रथम भाष्य
(भाष्य ११)।

उपस स [उपसय] शैली प्रकृत (दुषा है २
११८)।

उपस य [उप] 'कोय' शब्द को बतलानासा
भाष्य (पञ्च)।

उपसह सच [समा + रम्] शुभ करना
कारण करना। उपसह (पञ्च)।

उपसह जि [उपसह] १ उपसहित वास्था
पित (पञ्च)। २ शीतस्थान में स्थित भावन
(ठा १ १)।

उपसह नक [उप + हम्] १ निवास करना।
२ भाष्य पूर्ववाला। उपसह (उप)। बर्न
उपसह (पञ्च)। नष्ट उपसह (पञ्च)।

उपसह न [उपसहन] १ भाषा। २
निवास (अ १)।

उपसह नक [समा + रम्] १ रचना
काना। २ उत्पत्ति करना। उपसह (है
४ २२)।

उपसहिय जि [समा + चिन्] १ बनाया
हुया। २ उत्पत्ति (दुषा)।

उपसहम केनो उपसह।

उपसह जि [उपसह] १ निवास (वायु
११२)। २ प्रणित (उप १)।

उपसह नक [उप + हम्] १ युवा करना।

२ उत्पत्ति करना। ३ मर्त्य करना। उप
हस (है ४ २२६)। मुग उपसहिय (छ
६)।

उपसह न [उप + हम्] उपसह करना
हैनी करना। छ उपसहिय (म १)।

उपसहिय जि [उपसहिय] १ निवास ज
हाम किया गया हा नष्ट (पि ११२)। २ न
उपसह (संयु)।

उपसह श्री [उपसह] भाषा कट (मर्न १)।

उपसह न [उपसह] १ तक्रिया उनीता
(है १ १४)। मुर १२ २३। मुग ८)। २
वाच्य (सूय १ १ २, २१)। ३ वाचि
'उपसहिय यतिहय' उपसहयना कनिष्क
का' (उप ७२८ टी)।

उपसह पुं [उपसह] १ मेट उपसह (श्रि
७४)। २ विस्मृत किताब 'उपसहयना
शरीर' उपसहिय श्व शीतय' (दण्)।

उपसहयना केनो उपसहयना (पञ्च)।

उपसहिय जि [उपसहिय] उपसहिय
निधित (सूय १ ७)।

उपसहयना श्री [उपसहयना] श्री (भा
उपसहिय) ७३१ है १ १ न)।

उपसहयना जि [उपसहयना] उपसहयना
(मर्न २)।

उपसहयना पुं [उपसहयना] हैनी उठा रखियो
(है २ २ १)।

उपसहयना जि [उपसहयना] हैनी भाष्य
'मुसमलो जि हु वा

यलयपरिचय शीतय निवेने।

श्री मर्न। शीत सोय, मर्न

उपसहयना (मुर १ २१२)।

उपसहयना जि [उपसहयना] उपसहयना
(पञ्च १ १ २)।

उपसह पुं [उपसह] मुगु काय (वि ४, ४
४२ मरि)।

उपसह पुं [उपसह] १ भाषा कट
(भाषा)। २ बर्न (सूय १ २)। ३ उप
करण भाष्य 'निविदा उपसहिय पण्यना'
(छा ३: शीत २)।

उपसह सच [उप + हम्] बर्नन करना
जुना 'निविदा उपसहिय' (श्रीय ४१)।

उपसङ्गण न [उपसर्जन] गुणे ये सवसे बीज
को प्रथम करण (विग्र १ १) ।

उपसङ्गण न [अपवर्तन] ऐषो उपसङ्गण =
अपवर्तन (विग्र २११४) ।

उपसङ्गण बी [उपसर्जन] १ गण्य शरीर
ये बीज का निवर्तन (हा १ १) । २ पार्श्व
का परिवर्तन (धाम ४) । ३ बीज का एक
प्रथम बिन्दु कर्म-वर्गमात्राओं की बहु स्थिति
बीज होती है, यद्यपि विरोध (मन ११ १५) ।

उपसङ्गण बी [अपवर्तन] बीज का एक
प्रथम बिन्दु कर्मों की बीज स्थिति का प्रारंभ
होता है (विग्र २०१२ टी) ।

उपसङ्गण वि [उपसर्जन] साध किया हुआ
प्रमाणित 'वर्तमान' वाणि उपसङ्गण (विग्र
२०१) ।

उपसङ्गण वि [उपसर्जन] किसी वधि से
बहुर निवर्तन हुआ मूल 'आत्मसङ्गण' कर्म
होना संसार (सह १ १) ।

उपसङ्गण वि [उपसर्जन] १ बिन्दु के किसी
बीज से शरीर पर का एक वधिर का
मूल हुए किना हो वह 'उपो उपसङ्गणों'
के धर्ममन्त्रो उपसङ्गणों उपसङ्गणविधि
विनियमों (नमः) । २ प्रमाणित किसी पर
से प्रारंभ किया हुआ (विग्र) ।

उपसङ्गण वि [उपसर्जन] वृद्धि-मात्र (धामन) ।

उपसङ्गण वि [उपसर्जन] प्रकृत उपसङ्गण (उप ४
५ कृत धम्म ११ टी) ।

उपसङ्गण ऐषो उपसङ्गण = उप + हृत् । उपसङ्गण
(वि २ १) । वक्ष उपसङ्गण उपसङ्गणमात्र
(वि २ ५३; उ २३ १२०) । उपसङ्गण
उपसङ्गणमात्र (हाला १ १) । वक्ष उपसङ्गण-
विधि (धमि) ।

उपसङ्गण ऐषो उपसङ्गण (वि) ।

उपसङ्गण वक्ष [उप + वर्तय] १ वक्ष
करना । २ उत्पन्न करना । उपसङ्गण (उप
५) । वक्ष उपसङ्गण (उप २, १ ११) ।

उपसङ्गण वि [उपसर्जन] वक्ष करनेवाला
(मन ५१) ।

उपसङ्गण वि [उपसर्जन] १ उत्पन्न विधि (वि
२, १२) । २ उत्पन्न (वि ४ ५१४) । ३
विन्दु के पार्श्व की बुझा बी वक्ष (मान १) ।

४ प्रत्यय-विधत् 'यो उपसङ्गणविशालो लक्षणवधो
वधो' (महा) । ५ बुझाया हुआ विधत्
हुना (प्रार) ।

उपसङ्गण वि [अपवर्तन] उत्पन्न हुआ,
विपरीत स्थित (वि १ ११) ।

उपसङ्गण न [उपसर्जन] १ पार्श्व का परिव
र्तन (मा २०१ निवृ ४) । २ उत्पन्न हुआ
उत्पन्न-वर्तन (धोव ११ मा) ।

उपसङ्गण वि [उपसर्जन] १ परिवर्तित, प्रथम-
कार हुआ हुआ (सक २) 'अपिपे व वसुतर्क' ।
उपसङ्गणविधि व उपसङ्गणविधि (सुर १२ १११) ।

उपसङ्गण ऐषो उपसङ्गण (महा) ।

उपसङ्गण वक्ष [उप + कर्म] उत्पन्न करना
बीज निवर्तन देना । वक्ष उपसङ्गण (वि २,
१ का ४४१) ।

उपसङ्गण वि [उपसर्जन] उत्पन्न किया हुआ
वधन किया हुआ (पाम) ।

उपसङ्गण वक्ष [उप + कर्म] उत्पन्न हुआ वक्ष
वाला 'उपसङ्गण' 'वैतस्य वसुतर्क' देवसङ्गण
उपसङ्गण उपासङ्गण' (उप १११ टी) । वक्ष
उपसङ्गण (मन) ।

उपसङ्गण तु [वि] वर्तय (वि १ ५०) ।

उपसङ्गण वि [वि] १ अधिक, वक्ष हुआ
अपसङ्गण (वि १ ११२ विग्र या ४०५) । २
११ ११२ बीज (११ मा) । २ अपसर्जन
अपसर्जन । ३ विविधता । ४ अपसर्जन । ५ न
लाय गयी (वि १ ११२) । ६ वि विविध-
ता उपसङ्गण 'उपसङ्गण' उपसङ्गण निवर्तन-
उपसङ्गण है अनुवर्तन' (गुणा ११५) ।

उपसङ्गण न [अपवर्तन] बीजों को छोड़
कर (सुर ११ १०४) ।

उपसङ्गण वक्ष [उप + कर्म] १ उपसर्जन
करना । २ बीज बीजना । वक्ष उपसङ्गण
(कर्म) ।

उपसङ्गण वक्ष [उप + कर्म] उपसङ्गण करना ।
उपसङ्गण । वक्ष उपसङ्गण (वि २, १११) ।

उपसङ्गण न [उपसर्जन] १ शरीर का उपसर्जन-
विधि (हाला १ १३ ११) । २ मासिक,
धम्मजन (उप १ धीम) ।

उपसङ्गण बी [उपसर्जन] १ उपसङ्गण । २
उपसङ्गण-विधि कर्म-विधि (वि १, १४) ।

उपसङ्गण वि [उपसर्जन] बीजों को छोड़
(महा) ।

उपसङ्गण वि [उपसर्जन] वक्ष वक्ष-विधि
(गुणा १८५ ४ १) ।

उपसङ्गण वि [उपसर्जन] उपसर्जन (मा
११४ सुर १ १११ गुणा ५४१) ।

उपसङ्गण बी [उपसर्जन] १ एक उपसर्जन (उप) ।
२ उपसर्जन की एक उपसर्जन-विधि (मन
५४ न) ।

उपसङ्गण वक्ष [उप + कर्म] १ उपसर्जन
करना । २ उत्पन्न । उपसङ्गण (महा) । वक्ष
उपसङ्गण, उपसङ्गणमात्र (वि ११४ वि ११) ।

वक्ष उपसङ्गणमात्र (हाला १ १) ।

उपसङ्गण न [उपसर्जन] १ उपसर्जन । २ उपसर्जन
विधि (मन ५४ न) ।

उपसङ्गण न [वि] उपसर्जन (वि १ ११) ।

उपसङ्गण बी [वि] वर्तय (वि १ ५०) ।

उपसङ्गण २ वक्ष [उप + कर्म] १ उपसर्जन
उपसर्जन । २ उपसर्जन । उपसङ्गण, उपसर्जन
(सह १ ५१ २४) ।

उपसङ्गण वि [उपसर्जन] उपसर्जन हुआ (उपसर्जन) ।
उपसङ्गण ३ वि [वि] विविध परिवर्तन (वि १
उपसङ्गण) । ४ वि [वि] वक्ष 'उपसर्जन' का
५१५ गुणा ५१५) ।

उपसङ्गण न [वि] १ बीज । २ उपसर्जन, वक्ष-विधि
(वि १ ११४) ।

उपसङ्गण न [वि] १ विपरीत गुण । २
उपसर्जन-विधि मैत्र (वि १ १११) ।

उपसङ्गण वि [वि] १ विपरीत विविधता । २
उपसर्जन (वि १ १११) ।

उपसङ्गण ऐषो उपसङ्गण = उपसर्जन (सुर १११) ।
उपसङ्गण ऐषो उपसर्जन = उत्पन्न (सुर १ ४
१ ५) ।

उपसङ्गण (उप) वक्ष [उप + वर्तय] उत्पन्न करना
कोष देना । उपसर्जन (वि ४ ५१५) ।

उपसङ्गण वक्ष [उप + कर्म] वक्षना वक्षना ।
उपसङ्गण (उप) ।

उपसङ्गण वक्ष [उप + कर्म] १ उपसर्जन
करना । २ उपसर्जन करना । ३ उपसर्जन
करना । उपसङ्गण (मन ५४ न) ।

उपसङ्गण वि [उपसर्जन] १ उपसर्जन
किया हुआ (उपसर्जन ११) । २ उपसर्जन

ऊह गह [ऊह] १ वरं करण । २
विशाल । ऊह (गो ३१) ऊहमि (गुह
११ १५१) । मूह ऊहउण (घाह १२) ।
ऊह न [ऊहम्] लम (विना १ २) ।
ऊह नू [ऊह] १ विचार, विवेक-मुद्रि
(घाह) । २ वरं विवरं (मूह २ ४) । ३

संख्या-विरोध (एन) । ४ घोष-संज्ञा संख्या
ज्ञान (दिने ४२२ ४२३) ।
ऊर्ध्व न [ऊर्ध्व] संख्या-विरोध (एन) ।
ऊर्ध्व नि [वि] ऊर्ध्वनि (दि १ १४) ।
ऊर्ध्वसि नि [उपर्ध्वनि] निषत्ता उपर्ध्व
निया नया हो नह (दि १ १४) ।

ऊहा श्री [ऊहा] वरं विचार-मुक्ति (मायम) ।
ऊहापोह वृ [ऊहापोह] लोक-विचार, मय मे
होनेवाला वर-विठरं (पुन ११) ।
ऊहिय वि [ऊहिय] मनुमान मे जाह (वि ॥
४२) ।
य व [यि] स्वत-वर्ण विठेय (हृ १ १; ब्रामा) ।

॥ इष सिरिपाद्भस्महमङ्गने ठप्पापद्महर्षवत्तलो
छटां तरनो समलो ॥

१

[illegible]

१. ५४ [आ + ३] धाता धातुमन् वरता ।
 २. ५५ (उत्ता) । अर्थ दृष्टि (उत्ता) । अङ्ग-
 ३. ५६ (वत्त) । अर्थ दृष्टि (उत्ता) । अङ्ग-
 (उत्ता) । अर्थ दृष्टि (उत्ता) । अङ्ग-
 (उत्ता) । अर्थ दृष्टि (उत्ता) । अङ्ग-

गं देवा गृत्तम (अश्व) ।
घं देवा गृत्तम (अश्व) ।

पञ्च रि [एन] भाषा ह्या भाष्य (सम्बन्ध
११६)

अथ न [मन्त्र] अ० (अथ न १ १ १ १ मन्त्र)
[विना वि [विना] विना विना विना
(१ १ १) : अथ वि [विना] विना, विना
अथ वि [विना] विना १ १ १ १ मन्त्र

प्रथम कृती या (पहला भाग) मध्ये १
१)। आता ही [कृती] दोन
(पहले १२ आणि १३)। आता ही [कृती]
[१३] मध्ये १३ वी मंडळी १३ वी
१३ (१३) १३। आता ही [कृती]
१३ (१३) १३।

॥३॥ कैतो तय = तय (कुसा) ।
 एम } कैतो एमः 'तय वि विरीय विदुष' }
 एम } (सि ३, ५६, अय विरी) ।

पञ्चम ऐङो पञ्चम (बर्ली १५) ।
पञ्चादस (का) पुं न. [पञ्चदशति]
पञ्चम (विष्णु) ।

पयारिख नि [गवाह] केना इपके
केना (शामा) ।
पुत्रमात्र केना गय = एम् ।

पञ्च नि [पञ्चिन] वसिष्ठ (राज ७४) ।
पञ्चम को पद्म (मुग २ १७) ।
पद्म नि [पद्माहारा] पैमा (गिसे २३४६) ।

१ मयी (मरि) ।
 घडल रोचो घणूय (लिप) ।
 लिप रोचो ६ = ३ ।

एक टोरी एक लंबा प्या (बहु) सम १९
वज्र १ ३। १७२ हेमा ११६ वागु ९

२. वज्र ११४. ४. मुद्रा ११२। वज्रा
वज्र ७१. ११४। उभा य [१४] वज्र
वज्र ७१ वज्र (हि १ ११४)। ३
(या) वि [१४] वज्रा (वि ११४)

“मिथ वि [इति] एवमो योना (वा
कुर इति) । गिउइ धी [नयन] संख्या
सिटेण एवमो (नम इति वि ५५५) ।

| पक्ष्म रैवो अउप्य = एवमेव (मुञ्ज १६) ।

एक केपी एक वषा मरा (हि २ २२ गुना
१४१३ सय १६३ २६३ पम्प ११ १२५
मरुत वषा मा १६५ गुना ४५६ मा ४१३

वि ३३३, नाट शास्त्र १ १; या ३३३-
नाट मुर ३ ३३३। नय सब ३३; पत्र
३३ ३३; कण)। बाट रैछो त्ताप

(क० पुर ११)। सप्तविंशति [सप्त-
विंशति] एक ही बार जीवन करनेवाला (क०
११)। सप्तविंशति [सप्तविंशति] अस्म-
ति ३१ सप्तविंशति (क० ३३)। सप्तविंशति

मरय वि [मरक साग] एक काल
एक वरीका (जाग जा १५) पृष्ठ २ थ।
सि थ [रास] एक बाण भगवद्भक्त

उरधो वनहृदिषो एवमि वनात् (अन)
 एवमि वयो वनायो वीन वादे वनम्
 हम् (पुर ११२) एवमि वीनवर्तति

मि व [अ] एक (विनी एव) मे
प्रापि न नु विरो विधि विधो वीर्य
प्राप्यो (वृत्त) । मि मिम प

[३] श्री एक वन्दन में (६२ १६२)
 सिध [३] एक वन्दन (६२ १६२)
 इति [३] वन्दन (६२ १६२)

(गुणा) (विद्या १ १) । अगदय मि

[नवत] ११ बी (पदम ११ ३) ।
 अस्मिन् वि [नवत] ग्याह्वी (विता १
 १ जग मूर ११ २३) । रू वि न
 [नवत] ग्याह्वी, वृष दीर एक (पद) ।
 सीइ बी [नवति] संख्यान्तेय, एकसी
 (सम ८०) । सीइविह वि [नवतिविधि]
 एसी वरू का (पण्य ११०) । सीय वि
 [नवति] एसीबी ८२ बी (पदम ८१
 १६) । चोरसय वि [नवतरासय] एक
 बी एक बी १ बी (पदम १ १ ७१) ।
 ०यर पु [नवत] सरोवर नदी, सगा नदी
 (पदम ६ १ ४६ १८) । ०यर बी
 [नवत] सगी बहिन (पदम ८ १ १) ।
 एक वि [एकक] धनेता (हिता ३१) ।
 एक वि [वि] स्नेह-नर, प्रेम-वपन (वि १
 १४४) ।
 एक (मर) वि [एककि] एकावी
 धनता (मरि) ।
 एकन न [वि] कनन, सुगति कनन विरोध
 (वि १४४) ।
 एकनत पु [एकनत] १ सन्या । २ तरव
 प्रेम । ३ वल, वनर । ४ वसावाएछा
 विरोध (वि ४ २३) । ५ निजै न निजता (मा
 १ २) । देवो एनत ।
 एककक वि [एकक] हर एक प्रतीक
 (नाट) ।
 एकककम [वि] देवो एकककम (वि १
 ३६) ।
 एककासिध न [एककसिध] उरो-विरोध
 (पद २०१) ।
 एककग देवो एग-ग = एकक (दुष्ट ७६) ।
 एककपरिध पु [वि] देव, वति का छोटा
 भा (वि १ १४) ।
 एककणत पु [वि] कक कमा कहेनामा (वि
 १ १४४) ।
 एकमुह वि [वि] १ धर्म-स्मृत निवर्ती । २
 वरि निर्वन । ३ मिय इट (वि १ १४८) ।
 एकमस वि [एकक] प्रतीक हर एक
 (वि १ १ ४४) ।
 एकवि वि [वि] प्रवत कनन (पद) ।
 एकवपुर्गिग न [वि] विप-नियु-वटि, मय
 विपुनावी वरिण (वि १ १४०) ।

एकसिरीय घ [वि] १ सीम सुपु । २
 संघति, धाकत (वि २ २१३ पद) ।
 एकसिरीया घ [वि] सीम, वनवी (आह
 ८१) ।
 एकसाहि वि [वि] एक स्थान में रहने-
 वाला (वि १ १४६) ।
 एकसिखी बी [वि] शास्त्रो-मुपों स सुलन
 कनारी (वि १ १४६) ।
 एकसंस देवो एग सेस (मय १४०) ।
 एकह देवो एग (आह ३३) ।
 एकार देवो एककार (कम ६ १६) ।
 एकार पु [अवरकार] नोहार (वि १ १६६
 कुमा) ।
 एकी बी [एका] एक (बी) (मिह १) ।
 एककृण देवो अउय (वि ४४३) ।
 एककम वि [वि] परतन, धनोप्य (वि १
 १४३) । 'गुह्य एककम धनेक' (पदम
 ६ ८ ३३) ।
 एकके } देवो एग (आह ३३) ।
 एककेस }
 एग स [एक] १ एक प्रथम-सक्या (पण्य) ।
 २ एकावी कनेत (दा ४ १) । ३ वरितीय
 (कुमा) । ४ वरितीय नि-महाय (विता १
 २) । ५ वन, कुमरा 'एगवे वरिती मोस' (पण्य
 १ २) । ६ वनन वरिती दुस्य
 (उवा) । ७ देवो एग 'अवेववपुर्ग
 नपुण्य' एवं वरितीवर्ग 'वि कनन' (सम
 २) । ८ बी (वी) । ९ वरि वि [क] धनेता
 एकावी (न) । ओ व [वत] एक
 तरक (कम) । कनरिय वि [कनरि] एक
 धनाराला (नाम) (पण्य) । कवी
 बी [कनरि] एक कनराला (कन वरिण)
 (वी ३) । 'सुर वि [सुर] एक कनराला
 (वी वरिण) (पण्य १) । य वि
 [क] एकावी धनेता (मा १४) । ग
 वि [ग] कनी वनर (मूर १ १) ।
 वकसु वि [वकसु] एक वनराला
 एका कमा (पण्य २ २) । वकाल वि
 [वकालि] एकवलीवर्ग (वम ४१
 ७६) । वर वि [वर] एकावी विहने-
 वाला (वाता) । वरिया बी [वरी] एकावी
 विहना (वाता) । वरि वि [वरि]

[वारि] वने-विहाय (मूर १ १३) ।
 'वृष पु [वृष] विहाय वरा का एक
 एग (पदम ५ ४२) । वरुत वि
 [वरुत] १ वरु प्रवृत्तनाम धनरुत
 'एगवर्ग वरुत' मुनिज्य वरुत' (पण्य २
 ४) । २ वरितीय (काय १८६) । जवि
 वि [जवि] महाय विरोध (दा २ २) ।
 आय वि [जात] धनेता निस्तरा
 'कनविमय व एग' (पण्य २ ५) ।
 हु वि [ह] वरुत एकवि (मा १४
 ६ पद ४ ४१) । हु वि [ह] एक
 वरिनामा पर्याय-वर्ग (मूर १ मा) । हु
 व [ह] एक स्थान में निजिया वरुत
 एग' (पदम ४० ४४) । द्वि वि
 [द्वि] एक ही धनराला समानार्थक
 पर्याय-वर्ग (दा १) । द्वि वि [द्वि] विरिध
 विरोध वन में एक ही वन होता है ऐसा
 वन वरिण वरुत (पण्य १) । वासा बी
 [वास] एक विपुनावी देवी-विरोध
 (वासा १) । वन [व] एक ही स्थान
 में 'एगते ठिवा' (स ४०) । 'इय देवो
 हु (मम १ ६) निह १) । नामा देवो
 वासा (दा ८) । पदम [पद] एक
 ही वरु सुगन (वि १०१) । पक्य वि
 [पक] १ वरुत (पद) । २ एकाविध
 वरिण (मूर १ १२) । पनास बीन
 [पनास] एगव, वनन वीर एक ।
 पनासम वि [पनासम] एगवनाम
 ३१ बी (पदम ३१ २८) । पदम वि
 [पद] एक वरि कन वरुनामा
 (वातामा में) (क) । पासग वि
 [पासग] एक ही वरुत की मुनि स
 वनर वरुनामा (वातामा में) (पण्य
 २, ३) । पासिय वि [पासिय] देवा
 सुनक वरुत (क) । मय न [मय]
 वन-विरोध एगन (पना १२) । मय वि
 [मय] १ एगव विना हुमा (दा १) ।
 २ वनन (दा १) । मय वि [मय] एक
 एगविध वरुत (मूर २, २१६) ।
 'मय वि [मय] प्रतीक हर एक (सम
 १०) । य वि [य] एकावी, धनेता
 (सम २) । य वि [य] धनेता वरुनामा
 (दा १) । यर वि [यर] मा में व बी

पञ्चमाण रेयो प = धा + ऋ ।

पञ्च मङ्ग [एङ्] धातुमा ल्याम करता ।
पञ्च (मङ्ग) । कपञ्च, पञ्चिञ्चमाण (लाम्मा
१ १६) । सङ्घ पञ्चिञ्चा (मङ्ग) । इ
पञ्चैयञ्च (लाम्मा १ १) ।

पञ्च मङ्ग [एङ्] इत्यमा इर करता ।
पञ्च, पञ्च पञ्चिञ्चा (पय १८) ।

पञ्चक पुं [पञ्चक] मेव मङ्ग (उप २ १४) ।
पञ्चया श्री [पञ्च] मदी (पय १) ।

पण पुं [पण] कण्य मृग हरिण (कण्य) ।
पणहि श्री [नामि] कण्युप (कण्य) ।

पण्यक पुं [पण्यक] नम्र नम्रना (कण्य) ।
पण्यञ्च नि [पण्य] हरिण-संज्ञकी हरिण

का (मांस बरीच्छ) (पय) ।

पणिञ्चय पुं [पणेयक] स्वनाम-क्यास एक
पना मिलने मतान्म मन्वावी के नाम कीना

की की (उप ८) ।
पजिस पुं [पजिस] बुद्ध-विशेष (उप १ ११

टी) ।
पजी श्री [पजी] हरिणी (नाम पण्ड १ ४) ।

पार पुं [पार] हरिणी की कण्येनामा,
बनका नोपय करनेवाला (पण्ड १ १) ।

पणुनामिज पुं [पि] मेव मेङ्ग (११ १ ४०) ।
पणेञ्च रेयो पणिञ्च (पिया १ ८) ।

पण्ड पुं [पण्ड] म [इदानीम्] धनुना संश्रित
पण्ड (महा १ २ १४४) ।

पताप रेयो पञ्चिञ्च = पञ्चावय, पञ्चावै नय
लोचो (जीवज १ ८०) ।

पत्तञ्च नि [इत्यत् पञ्चावय] स्वना (पयि
१६ स्वज ४) ।

पञ्च रेयो इ = इ ।
पञ्चहि (मग) म [इत्यत्] मरा ॥ (कुमा) ।

पञ्चइ रेयो इच्छे (कुमा) ।
पञ्चाहि रेयो इच्छाहि (१२ १ १४० कुमा) ।

पञ्चिञ्च नि [इत्यत् पञ्चावय] इत्या
पञ्चिञ्च (१२ १ १४०) । मञ्च मञ्च

नि [माय] इत्या ही (१ ८१) ।
पञ्चिञ्च (टी) रेयो पञ्चिञ्च = स्वावय (पण्ड

११) ।
पञ्चुञ्च (मग) मञ्च रेयो (१२ ४ ४ कुमा) ।

पञ्चुय म [पि] धनुना इत्यमय (पण्ड ८) ।
पञ्चो रेयो इच्छा (महा) ।

२५

पञ्चोञ्च म [पि] मदी सेवेकर (१२ १ ४०) ।
पञ्च म [मञ्च] मदी मदी पर (उपा मञ्च

नार १ १) ।
पञ्चो रेयो इच्छा (उप १ ११ टी) ।

पञ्चु (मग) रेयो पञ्च (कुमा) ।
पञ्चपञ्च म [पञ्चपञ्च] तावय मापाने (उप

८११ टी) ।
पञ्चिञ्चसिञ्च (टी) नि [पञ्चिञ्चसिञ्च] इति

ज्ञात-संज्ञकी (पय) ।
पञ्चइ रेयो पञ्चिञ्च (१२ १ १४० कुमा)

कण्य ७७) ।
पम (मग) म [पम] इत्यत् लण्य पैना (पञ्च

पिञ्च) ।
पमइ (मग) म [पमम] इती लण्य पैना

ही (पण्ड १ १) ।
पमाइ पुं [पि] पञ्चमाइ इत्यादि नवीप

पमाइप (मुर = ११ उप) ।
पमान नि [पि] प्रवेश करता हुआ (१

४४) ।
पमिणिञ्च श्री [पि] नह श्री निसे के शरीर

को, किसी केा के पिनाम के अनुसार, वृक्ष के
बाजे से माप कर उस बाजे को ऊँच दिया

बाठा है (१ १४३) ।
पमञ्च पुं [पम] इती लण्य, इती

पमिञ्च पुं [पम] प्रकाश या मण कि करिण्य
पमिञ्च लण्योप नमोपे इच्छा (कण्य ११४ ह १

२०१) ।
पम्य (मग) म [पम्य] इत्यत् लण्य, इत्य

प्रकार (१४ ४ ४१८) ।
पम्यइ (मग) म [पमम] इती लण्य, इत्य

प्रकार (१४ ४ ४२१) ।
पम्यहि (मग) म [इदानीम्] इत्यत् लण्य

धनुना (१४ ४ ४२२) ।
पय मङ्ग [पय] १ कीफला हिपना । २

कपना । ३ इच्छा (कण्य) । ४ मय्यत् (उप ७) ।
मयो, मयह पञ्चमाण (पय) ।

पय पुं [पय] लति कपना (मग २२ ४) ।
पयञ्च रेयो पञ्चन (पयम १४ ३८) ।

पयम न [पयम] नम्य क्लित, 'निगम्यो
पयम' (पय ४) ।

पयणा श्री [पयणा] १ कण्य । २ लति
कपना (पय २, २ मग १७ १) ।

पयार्थि रेयो इयाणि (रैमा) ।

पयार्थ नि [पयार्थ] इत्या (भाषा) ।
पयञ्च पुं [पयञ्च] १ बुद्ध-विशेष रङ्ग मदी

पयञ्च का वेङ्ग (उप ४ ४ लाम्मा १ १) ।
२ गुण-विशेष (पण्ड १) । 'मिञ्चिया श्री

[मिञ्चिया] पयञ्च-मग (मग ७ १) ।
पयञ्च नि [पयञ्च] पयञ्च-मग-संज्ञकी

(पयमि) (११ १ २२) ।
पयञ्चय पुं [पि] पाल्ल कुता 'पयञ्चय

पयञ्चय } माण्डे पयञ्चयमण्डोति हृद-
मिञ्च (पण्ड १) ।

पयञ्चयय न [पयञ्चयय] १ लेख-विशेष
(मग १२) । २ नि लुप्त लेख में खोलेवाला

(उप २) ।
पयञ्च श्री [पयञ्चनी, अजिरपदी] नदी-

विशेष (पयमि) ।
पयञ्चय न [पयञ्चय] १ लेख-विशेष (मग १२,

उप २ १) । २ पुं पयञ्च-विशेष (उप १) ।
पयञ्च नि [पयञ्चय] पयञ्चय लेख का

(गुण १ २) ।
पयञ्चय नि [पयञ्चय] पयञ्चय लेख का खोले-

वाला (पण्ड) । कुञ्च न [कुञ्च] पयञ्च

विशेष का शिखर-विशेष (उप १) ।
पयञ्चा श्री [पि] १ इत्याणी वट का सेवन

करानेवाली श्री (१ १ ४०) ।
पयञ्च श्री [पयञ्चनी] नदी-विशेष (उप ४,

२ नि ४६२) ।
पयञ्चय पुं [पयञ्चय] १ इत्य का हावी जो

कि इत्य के इति-नैम्य का व्यवहार देव है
(उप ३, १ मदी ७८) । बाह्य पुं [बाह्य] इत्यमग

(उप २ १ टी) ।
पयञ्चय पुं [पयञ्चय] १ इत्य-विशेष (पय) ।

२ इत्य विशेष का पयञ्चय देव (जीव १) ।
३ इत्य-पयञ्चयिञ्च पञ्चना प्रकार में मदि

के हृदय कीर पञ्च का वा इत्य पयञ्च का
सहित (पिञ्च) । ४ लण्य कुना । ५ मग कीर

मामा इत्य-मग । ६ इत्यमदी नदी का
मगीपयञ्च देव । ७ इत्य का हावी (१ १

२) ।
परिम नि [परिम] इत्य लण्य का पैना

(पयमि कुमा ग्राम २१) ।
परिमित्र (मग) उपर रेयो (पिञ्च) ।

ऐ

दे घ [अयि] इन धर्मी का सुचक सम्बन्ध—
१ संमन्त्रण। २ धामन्य संकीर्ण। ३

प्रत्य। ४ धनुष्य, प्रीति। ५ अनुमन्त्र 'दे
कीर्ति' दे सम्प्रति' (हे १ १६६)।

॥ अथ सिरियाइयसहस्रहृण्यवे येपापसहस्रकणो
चट्टमी ठरैनी समती ॥

ओ

ओ दु [ओ] स्वर बर्ण-विशेष (हे १ १
प्राप्त)।

ओ ऐओ अव = अव (हे १ १७२, प्राप्
कुमा पठ)।

आ ऐओ अव (हे १ १७२ प्राप् कुमा
पठ)।

ओ ऐओ उव (हे १ १७२, कुमा)।

ओ ऐओ उव = अव (हे १ १७१, कुमा)।

आ [ओ] इन धर्मी ना सुचक सम्बन्ध—
१ विलम्ब। २ प्रकीर्ण विलम्ब (प्राप् ७८)।

ओ घ [ओ] इन धर्मी का सुचक सम्बन्ध—
१ सुचक 'यो यविष्णुमस्तित्ते'। २ पत्ता

छान धनुष्य 'यो न मय क्षमा क्षतिमाय'
(हे २, २ १ पठ कुमा प्रप्र)। ३

संकीर्ण, धामन्य (माट—वैठ १७)।
४ वास्तुति में प्रयुक्त किया जाता सम्बन्ध
(पत्ता १ विदे २ २४)।

ओअ व [वे] बार्णिक कक्षाधी (हे १
१४६)।

ओअव वि [अपगत] सत्य 'ओअवधामन-
(वि १६५)।

ओअव दु [वे] वजित वर्ण (हे १ १३४)।

ओअव सक [आ + द्वि] १ कलाकार से
हीन लोग। २ नाश करना। ओअव (हे ४
१२३ पठ)।

ओअव्या भी [आच्छन्ना] १ नाश। २
कवरहारी कीर्ण (कुमा)।

ओअवस सक [हस] देवना। ओअवस
(हे ४ १८१, पठ)।

ओअवस सक [वि + आप] व्यास करना।
ओअवस (हे ४ १४१)।

ओअगिग वि [व्यास] विस्तृत किया
हुआ (कुमा)।

ओअगिग वि [वे] १ धमियुत परिपुत।
२ न वैद्य वपैष्ट को एकवित करना (हे १
१७२)।

ओअगिग वि [वे] अथ वृत्ता ह्या
ओअगिग (हे १ १६२, पठ)।

ओअवस वि [अपगत] गया हुआ, नीचे की
तरफ मुड़ा हुआ (हे १ ११८)।

ओअव वि [अपवृत्त] बीजा किया हुआ,
छटा किया हुआ बीजसे कुम्भसे बलतक-
कलिकावि कि अह १ (पा १३४)।

ओअवस वि [अपवृत्त] १ अपवर्तन-
योग। २ व्यापक योग ओअव नामक
'मुमुक्षु' व पञ्चात्म्य योगोपदेशप्रति' (हे ४ ४८)।

ओअवस वि [वे] धमियुत परधुत
(पठ)।

ओअव सक [अव + द] १ जीवन-मरण
कथा। २ नीचे उतरना। ओअव (हे ४
४८)। ३ ओअव (ओ १११ गुर
१४ २१)। ४ ओअव (अक)। ५
ओअवियव्य (गुर १ १११)।

ओअव न [अपकरण] सावन, सानवी (पा
१८१)।

ओअव न [अपतरण] उतरना, नीचे घटना
(पठ)।

ओअव दु [अपवरक] कमरा कोठरी (गुना
४१२)।

ओअव वि [अवतीर्ण] उतरा हुआ (पाव)।

ओअव वि [औदरिक] पेट-मण के उतर
भले मांस की किता करनेवाला (ओव
११८ मा)।

ओअव भी [अपवरिक] कोठरी ओव
कमरा (गुना ४१२)।

ओअव ऐओ ओव = अव + वृत्। ओअव
(प्राप् ७)।

ओअव सक [अव + वृत्] बलन।
ओअव (वि ११७ ४८८)। ३ ओअव
वृत् (वि ११७ ४८८)।

ओअव दु [वे] १ धनुष्य, धनुष्य प्राचर
धनुष्य प्राचर (पठ; स ३२१)। २ कल्प
नापना (पठ दे १ १६२)। ३ वीर्षों का
बाड़ा। ४ वि वर्णित प्रसिद्ध। ५ नान्वान
वर्णना हुआ (वे १ १६२)। ६ निवर्ती
वीर्षों निर्मीलित होती हैं वहु 'मुचिद्वर्णो-
वर्णना कर्णना एपधमविहरेहि वर्णना' (स
१३ ४४)।

ओअव वि [वे] विलम्ब प्रसारित (पठ)।

ओअव सक [सावन्] सावना कट में
करना, बीजना 'पञ्चाहि एं यो देवस्यु

ओहिमा की [हे] ज्येष्ठिका, शीपक (हे १ १११: गउ०)।

ओहिममाण रेयो धादिह।

ओहित वि [अपत्ति उपत्ति] नीपा हुप, इतने (एह १ १ उप पाभा हे १ १२० धौ०)।

ओहिपी की [हे] वरा प्रावि वा एक होप (हे १ ११६)।

ओहिप न [हे] हाम हौरी (हे १ ११३)।

ओहिपी की [हे] वर प्रवि का एक होप (हे १ ११६)।

ओहिप चक [अप + चिह्न] धामावन करता। कच ओहिममाण (न०)।

ओही चक [अप + की] १ धामन करता। २ नीपे धामा। ३ नीपे धामा 'ओह न नामा धोमि' (विदे २ १५)।

ओही की [आसी] पीक, ओही (हुमा)। ओही की [हे] हुम-परिपामे हुमावार (हे १ १५)।

ओही की [हे] बलवा की एक प्रकार की बीदा (हे १ ११३)।

ओही चक [वि + रेचम्] करना टक्का बाहर निकालना। ओहीइ (हे ४ २६)।

ओहीडि वि [विदेबयिह] कलेकासा (हुमा)।

ओहीप दु [अपओप] बलन, बलन करना (गउ०)।

ओहीपम दु [हे] धाविहल ठका हा हावा (हे १ ११३)।

ओहीग वि [अचरुज] १ ओही बीमार (वाप)। २ मन गट (एह १ १)। 'गुरा गुगा निमंश ओहीग ओहीग नरी' (जि १ १)।

ओहीग वि [हे] १ नरक नीर। २ निमर निमर बलहीन (हे १ १५)। ३ निरुध निरुध (गुर १ १ १ हे १ १५; न ४६ २ ४)।

ओहीगावि वि [हे] १ बीमार। २ निरुध नीर (नर ५०)।

ओहीडि वि [हे] १ बलवाम धमन। २ निपा, धमन (हे १ १५)।

ओहीडि वि [हे] १ धमन। २ तुष्ठा वर। ३ प्रवृत्त (हे १ १०२)।

ओहीडि रेयो अचरुज। नक ओहीडि, ओहीडिमा (वा १: लाय १ १५ १ १)।

ओहीडि चक [अप + लुट] पीके नीपा। नक ओहीडिमा (वाप)।

ओहीडि न [अपओज] १ रेन। २ इति, नर (ग ५ १२०)।

ओहीडि न [अपओज] नवाक 'विदु कला लेह ओहीडिमा' (गुह २ ६)।

ओहीडि की [अचरुज] १ रेन। २ कपेला ओह (वच ४)।

ओही दु [हे] १ पति स्वामी। २ एक प्रतिनिधि पुत्र चक्रपुत्र-विदे (विप)।

ओही रेयो चक = मात्र (हे १ २२: काय १०२)।

ओही रेयो चक = मात्र (हे १ २२: काय १११)। नक ओहीडि (वि १३ १६)।

नक ओहीडि (वा १११)। ओहीडि दु [अचरुज] एक नरक-स्वान (विदे २०)।

ओहीडि न [आर्यम] पीका करना निपा (वि १११)।

ओहीपी की [हे] माविता, इलायची धमन-ओही धमि मलासे वंरुट धमि (हे १ १५)।

ओहीडि न [हे] स्वाप लोना (हे १ ११३)। ओहीडि वि [हे] नुम ओहा हुमा (हे १६३: गुपा ११२)।

ओहीडि (ही) नीपे रेयो (वि १११ गुह १ ३)।

ओहीडि वि [माविता] मात्र किया हुमा (वा ११: लउ)।

ओही की [हे] पनक नाई, गुपरापी में 'ऊ' (विदे १०६)।

ओहीडि चक [वि + अपाव] हुमा। ठका करना। नक ओहीडिमा (व १६२)। ३ ओहीडिमा (व १६२)।

ओहीडि वि [हे] रेयो उरुधवि (गुर १ १५२)।

ओह न [हे] हापी नरुध की कपने के लिए किया हुमा (हे १ १५२)।

ओहअप न [अचपतन] नीपे निपा, धम पात (वि १ ७७: ११ २२)।

ओहअपी की [अचपाविनी] विद्या-विदेय विदेय प्रवाह से स्वर्ग नीपे धावा है वा हुपे के नीपे धावा है (हुप २ २)।

ओहअप वि [अचपावि] १ धमनी, नीपे धामा हुमा (वि १ २० धौ०)। २ मा वरा हुमा, मा डा हुमा (वि १, २६)। ३ न पन (धौ०)।

ओहअप दु [हे] तीन इतिधामा एक मुद्रा धमन के कि रं देविता। देविता धमि-विहा फलता वं नहा—ओहअप देहि ओहा इतिधामा (धौ०)।

ओहअप वि [ओपमवि] अवि पिरुट (वाप)।

ओहअप वि [ओपमवि] उपहार करने वाला (वच ११ ६)।

ओहअप वि [ओपमवि] उपहार के धमि वा उपहारक (विदे १ ६)।

ओहअप चक [अप + कम्] १ धमन करता। २ हुमा धमन करता।

ओहअप, ओहअप (वि ४ २६, १ ११)। ओहअप चक [अप + कम्] आ + कम् १ धमन करता। २ धमन करता।

ओहअप (धौ०)। ओहअप (धौ०)। ओहअप (धौ०)।

ओहअप वि [ओपमवि] धमन धमन के एक प्रकार वा उपहार की धमन विदेय के ओह धमन के लिए किया जाता है (वच १)।

ओहअप वि [हे] उपमवि १ धमन २ धमन (वि १ १ धमन १६, ४२)।

ओहअप वि [ओपमवि] धमन धमन के एक प्रकार वा उपहार की धमन विदेय के ओह धमन के लिए किया जाता है (वच १)।

ओहअप वि [हे] उपमवि १ धमन २ धमन (वि १ १ धमन १६, ४२)।

ओहअप वि [ओपमवि] धमन धमन के एक प्रकार वा उपहार की धमन विदेय के ओह धमन के लिए किया जाता है (वच १)।

ओहअप वि [हे] उपमवि १ धमन २ धमन (वि १ १ धमन १६, ४२)।

ओहअप वि [ओपमवि] धमन धमन के एक प्रकार वा उपहार की धमन विदेय के ओह धमन के लिए किया जाता है (वच १)।

ओहअप वि [हे] उपमवि १ धमन २ धमन (वि १ १ धमन १६, ४२)।

ओहअप वि [ओपमवि] धमन धमन के एक प्रकार वा उपहार की धमन विदेय के ओह धमन के लिए किया जाता है (वच १)।

ओहअप वि [हे] उपमवि १ धमन २ धमन (वि १ १ धमन १६, ४२)।

ओहअप वि [ओपमवि] धमन धमन के एक प्रकार वा उपहार की धमन विदेय के ओह धमन के लिए किया जाता है (वच १)।

ओषदृष्ट ॥ [अपवर्तन] हाड कमी (वाक्क २११)।

ओषदृष्टा श्री [अपवर्तन] मायाकार, माग-हरण (राव)।

ओषदृष्टि न [हे] बाहु, कुशामव (दे १ १६२)।

ओषदृष्टि [अपवर्तन] बर्या हुआ जिसने कृष्टि की ही वह (दे १ १४)।

ओषदृष्टुं [हे] अक्षवर्धे] १ कृष्टि, बारिष्ठ (दे १ २३)।

२ अक्ष-वर्धन का विचन (दे १ १३२)।

ओषदृष्टिभ्रम [ओषस्थितिक] उपस्थिति के योग मीकर (प्रवी १११)।

ओषदृष्टक [अप + पत्] गिरना मीचे पड़ना। बह-ओषदृष्ट (दे १ १ २०)।

ओषदृष्टन [अपवर्तन] १ अक्ष-पात। २ सम्मान-पात (दे १ १२)।

ओषदृष्टि [उपाय] धाने के करीब। ओषदृष्टिया श्री [ओषदृष्टिक] बाण्ड बलन का ही माह्वार करना उप-विशेष (मग-३ १)।

ओषदृष्टि [अपवर्तन] हाड (मिष्ट २)।

ओषदृष्टा श्री [हे] ओषधी का एक भाग (दे १ १३१)।

ओषण ॥ [उपवर्तन] कबीरा बापन (कुमा)। ओषणविहियुं [ओषनिधिवि] ओषनिधिवि] नितावर विरोध समीपस्थ भिन्ना की लेनेवाला हाड (अ ३ शीप)।

ओषणविहिया श्री [ओषनिधिवि] धनुषपूर्वी विरोध धनुष्य-विरोध (मीप)।

ओषण एक [अप + वर्तन] १ उलटा बरता। २ छिपना हुआ। ३ उल्टा। उल्ट ओषणिय (स ३)। ४ ओषणोद्यम (दे १ १)।

ओषण [अपवर्तन] छिपना हुआ (दे १ ११)।

ओषणिय [अपवर्तन] १ हुआ हुआ। २ छिप (छाया १ १—पत्र १०)।

ओषणिय [ओषस्थानिक] सगा का नाने करनेवाला मीकर। श्री या (स १ ११)।

ओषम श्री ओषम 'हृदियन्वय' पिय धनुषाल ओषम 'बमाला' (मीव १७२)।

ओषमिय [ओषमिक] उपमा-उपमयी (धनु)।

ओषमिय ॥ न [ओषम] १ उपमा (अ २) ओषम ॥ धनु ॥ २ उपमान प्रमाण (धनु १ १)।

ओषय एक [अप + पत्] १ मीचे उतरना। २ धा पड़ना। बह-ओषय ओषयमाण क्य ॥ १० ॥ १ १११ ॥ लावा १ १ ११)।

ओषयण न [हे] अक्षपवन] ओषयण-धनुष (छाया १ १—पत्र ११)।

ओषयण न [अपवर्तन] धनुषण मीचे उतरना (स १ २—पत्र १०७)।

ओषयययय [ओषयययय] मनीषी से प्राप्त किया हुआ मनीषी से मिला हुआ (अ १)।

ओषयययय [ओषयययय] उपचार संकली (पंथा १, पुष्क ४ ६)।

ओषयययय [व] निरु, समुह (दे १ १५०)।

ओषयययय [ओषयययय] १ विश्वी उत्पत्ति होती ही वह (पंथ १)। १ पुं संवापी प्राली (आका)। २ अक्ष या मारक-मीष (स ४)। ४ न देव या मारक-मीष का शरीर (पंथ १)। ३ शून्य भाग्य-बन्ध विरोध शीप पणिक धनु (मीप)।

ओषयययय [ओषयययय] एक क्य से हुरे क्य में जानेवाला (धनु १ १ ११)।

ओषयययय [ओषयययय] १ उपवर्तन से संकल्प करनेवाला, उपवर्तन—समर्थ रोषावि। २ शब्द-विरोध प्र पर आदि धन्य क्य शब्द (धनु)।

ओषयययय पुं [ओषयययय] १ उपवर्तन। २ कि उत्पत्ति से उत्पन्न। ३ उपवर्तन होने पर होनेवाला (पिरे २१०४)।

ओषयययय [व] १ नवन धुपिक क्य-विरोध। २ कि रति-योग्य (दे १ १०३)।

ओषयययय श्री उपययय 'हृदियन्व' ओषययय ययय ठेण्डाएक' (पत्र ८१)।

ओषययय एक [अप + व] १ वह बला वह बलना। २ हुआ। कय ओषयययमाण (कय)।

ओषयययय [ओषयययय] उपचार संकली (पिरे ७२)।

ओषयययय [ओषयययय] माया से पुत्र विचलेनाला (छाया १ २)।

ओषयययय पुं [दे] मायातप वन-समूह की गली (पत्र)।

ओषययय श्री ओषययय (पत्र)।

ओषययय श्री उपययय (धनु १ ११)।

ओषययय [ओषयययय] सेवा करनेवाला (अ १)।

ओषयययय [अपवर्तन] विचारण नाय (अ २ ४)।

ओषयययय [अपवर्तन] विचारण (मीप)।

ओषयययय [अप + यय] मनीषी करना।

वह ओषययय ओषयययमाण (स १ २ १ लाया १ ८—पत्र १५४)।

ओषयययय [अपवर्तन] १ सेवा मकि (अ ३ १ शीप)। २ वर्तन गवा (पत्र १ १)। ३ मीचे गिरना (पत्र १ ४)।

ओषययय [ओषयययय] उपमा-उपमा उपमा संकली (उत्त १ २०)।

ओषयययय [अप + यययय] धनुषादन करना क्यना। उल्ट ओषयययय (पिरे २११)।

ओषयययय [हे] क्यय करने का एक प्रकार का सम्मा कोडा पोषण (राव)।

ओषयययय [हे] कि किया हुआ ययय-क्य (स ४८० ४८)।

ओषयययय [अपवर्तन] धनुषादित बजा हुआ (दे १ ११)।

ओषयययय [अप + क्यय] शोकिय धिचकना। ओषयययय (पत्र)।

ओषयययय [अप + क्यय] धनुषादन पाना क्यय मिला। ओषयययय (पत्र १ १ ११)।

ओषयययय [अपवर्तन] धनुषादन काली नाय (पत्र १ १ १४)।

ओषयययय [अपवर्तन] धनुषादन ओषयययय (पत्र ४२, पत्र)।

ओषयययय पुं [अपवर्तन] धनुषादन काल (स २ २—पत्र १०७)।

ओसहि ही ओ [ओयधि] १ वनस्पति (पल्ल १) । २ वनस्पति-पत्र (पत्र) । महि हर पुं [महिपर] पर्यटन-विशेष (मण्ड ४४) ।

ओसहिअ हि [आवसधिअ] पत्रार्थ-समाधि सत की कलेशाना (मा १४४) ।

ओसा ओ [ह] १ वीस निरा नन (जी ३, ध्याना पत्र २३०६) । २ द्विप बरत (दे १ १६४) ।

ओसाम पुं [ह] प्रहार की पीड़ा (दे १ १२२) ।

आमाअ पु [अवधाय] विम घोष (मि १३ २२ ४८, २३) ।

आमाअं हि [ह] १ नौकई नावा हुआ, धारवा । २ ठंडा । ३ बेचना-मुक्त (दे १ १०७) ।

ओमाअ हि [ह] १ महीराल कमील का नापिक । २ धारवा (पह) ।

ओमाअ न [अपसान] १ कल (ठा ४) । २ मनीषणा मानीष (मृग १ ४) ।

आमाअ न [अपसान] दुःख के समीप स्थान दुःख का पास निवास (मृग १ १८ ४) ।

आमाअिह्य हि [ह] विवि-पूर्वक धनुषित (दे १ १६४) ।

ओमाअ पुं [अवधाय] ओज निरु-अन (बाधन ३१) ।

आमाअन न [अवसादन] परिष्करण, नाश (मिन्) ।

ओसार नक [अप + सारद] दूर करना । घोषादेहि (ठ ४ ८) । कर्म घोषादिन (मोक्ष-ओसारिधि (महि) ।

ओसार पुं [ह] ओ-साद, ओ-सादा (दे १ १४४) ।

आमार पुं [अपमार] अपसरण (मि १३ १४) ।

ओसार केतो कुमार = उल्लास (महि) ।

ओसार पुं [अपमार] कर्म कर्म (मि १२, १४) ।

ओसारिअ हि [अपमारिअ] दूर किया हुआ, धनीत (मा १६, कर्म २३ ८) ।

ओसारिअ हि [अपसारिअ] धरम-विप, लटकना हुआ (मिन्) ।

ओसाम (घर) केतो ओसास = धनकल (महि) ।

ओसिअ हि [ह] १ धरत वन-पल्ल (दे १ १२) । २ धरत घनाधार (पह) ।

आसिअ हि [उपित] १ बसा हुआ रहा हुआ (मृग १ १४ ४) । २ धरतित (मृग १ ४ १२) ।

ओसिअत बह [अवधेय] पीड़ा पला हुआ (दे १ ११ ४ ३१) ।

ओसिअ हि [ह] भाव मृग्य हुआ (दे १ १६२ पाठ) ।

आसिअ हि [अपसधिय] धरत कलेशाना (मृग २ २) ।

आसिअिअ न [ह] १ धरत-म्यासात । २ धरत-निमित्त (दे १ १०४) ।

ओसिअ हि [अपसिअ] धीमाया हुआ निव (म्या २ १ १२) ।

ओसिअ हि [ह] उपसिअ (दे १ १२८) ।

आसिअ हि [अपसिअ] १ पर्यवसित । २ उपसिअ (मृग १ ११) । २ बीज पचमुत (मिन्) ।

ओसिअ न [ह] मृग्य-न परित्याग (पह) ।

ओसाअ हि [ह] धनी-मुक्त धरत (दे १ १२८) ।

आसीर केतो उमीर (पल्ल २, ३) ।

आसीस नक [अप + पूज] १ पीछे हटना । २ धरत-पिना । ३ आमा-सिअ (दे १ १२२) ।

आमीस हि [अप + पूज] धरत (दे १ १२२) ।

आमुअ हि [हस्य] धरतित (पह) ।

आमुअिअ हि [ह] धरतित धरत (दे ११२) ।

अमुअ नक [अप + पानय] १ धरत केतो । २ धरत (मि १३ १४) । ३ धरत (मि ४ २४) । ४ धरत (मि १३२) ।

आमुअ नक [हस्य] धरत (मि १३ २४) ।

आमुअ हि [अवधेय] मृग्य हुआ (पह) २३ ४८ ३, १४) ।

आमुअ नक [अप + पूज] मृग्य । ४८-ओमुअ (मि १४ ११) ।

ओमुअ हि [ह] १ धरतित (दे १ १२४) । २ धरतित (मि १३ २२) ।

ओमुअ नक [ओमुअ] मृग्य (मि १३ २२) ।

ओमायना, ओ [अवधायना] विद्या ओमोधिगिया/विप विप धरत (मि १३ २२) ।

ओमोधिगिया ओ माध धरत (मि १३ २२) ।

ओमोधिगिया ओ माध धरत (मि १३ २२) ।

ओमोधिगिया ओ माध धरत (मि १३ २२) ।

ओमोधिगिया ओ माध धरत (मि १३ २२) ।

ओमोधिगिया ओ माध धरत (मि १३ २२) ।

ओमोधिगिया ओ माध धरत (मि १३ २२) ।

ओमोधिगिया ओ माध धरत (मि १३ २२) ।

ओमोधिगिया ओ माध धरत (मि १३ २२) ।

ओमोधिगिया ओ माध धरत (मि १३ २२) ।

ओमोधिगिया ओ माध धरत (मि १३ २२) ।

ओमोधिगिया ओ माध धरत (मि १३ २२) ।

ओमोधिगिया ओ माध धरत (मि १३ २२) ।

ओमोधिगिया ओ माध धरत (मि १३ २२) ।

ओमोधिगिया ओ माध धरत (मि १३ २२) ।

ओमोधिगिया ओ माध धरत (मि १३ २२) ।

ओमोधिगिया ओ माध धरत (मि १३ २२) ।

ओमोधिगिया ओ माध धरत (मि १३ २२) ।

ओमोधिगिया ओ माध धरत (मि १३ २२) ।

ओहट्ट [वि] [अपघट्ट] निवारक हत्यारे-
ओहट्ट [नम] निवारक (हिमा १ २
शाय १ १६। १८)।

ओहट्टि [वि] [हे] हुनरे की बचाकर हान से
पुगी (हे १ ११२)।

ओहट्टि [वि] [हे] हान हीन (हे १ ११३)।

ओहट्टि [वि] [अपघट्ट] निवारक हत्या (पत्र
१७ १)।

ओहट्टि [वि] [अपघट्ट] नीचे लाया हुआ (स
२, १ ६६)।

ओहट्टि की [वि] परीक्षा (हे १ १६)।

ओहट्टि [वि] [वि] वपन (हे १ १३६)।

ओहट्टिय [वि] [अपघट्ट] परित्यक्त, हुए
निरा हुआ (हे १३)।

ओहट्टि [वि] [उपघट्ट] उपपाठ-मात (शाय
१ १)।

ओहट्टि [वि] [अपघट्ट] निवारक (वीप)।

ओहट्टि [वि] [अप + ट्ट] अपघट्ट करना।
नम ओहट्टियमि (हि १८)।

ओहट्टि [वि] [अप + ट्ट] टैका होना नक
होना। २ सक जलता करना। ३ टिप्पणा।
ओहट्टि (शाय २ १ ७)।

ओहट्टि [वि] [उपघट्ट] संज्ञा नुह नीजरी (पत्र
१ १)।

ओहट्टि [वि] [अपघट्ट] जल से जलाना,
अपघट्ट (स १७६)।

ओहट्टि [वि] [हे] १ निवारक हिमा। २
परिणत धर्म की अपघटना (हे १ १७७)।
३ अपघट्टि (न १३१ १७७)। ४
निवारक (पट्ट)।

ओहट्टि [वि] [हे] अपघट्ट १ टैका हुआ
(न १३ १)। २ नीचे गिरना हुआ (हि
१ १७)। ३ उठाया हुआ कपटि (वीप
१)। ४ धर्मन ओहट्टियमि नार
नरे (पा ४)।

ओहट्टि [वि] [हे] १ पाठ्य नूना हुआ।
२ पुं रूप धर्म की निवारक, कहीया (हे
१ १६)।

ओहट्टि [वि] [उपघट्ट] (हि १ १०१) हुआ।

ओहट्टि [वि] [अप + ट्ट] निवारक। नरे
धर्मनरी (पुता ११६)।

ओहट्टि [वि] [अपघट्ट] निवारक हुआ
'ओहट्टियमि' (सुर २ १८६
सक)।

ओहट्टि की [वि] [वि] वपन (पुता ११७)।

ओहट्टि [वि] [अप + ट्ट] अपघट्ट करना।

ओहट्टि (पट्ट)। कपट्ट ओहट्टियमि (हि
१३ १)। ३ ओहट्टियमि (स =)।

ओहट्टि [वि] [हे] १ वपन कपट्टा। २ वि
वपन मरिय (हे १ १७९)।

ओहट्टि [वि] [अपघट्ट] निवारक कपट्ट
निवारक होना (ग १ १ १७३
स ४४८)।

ओहट्टि [वि] [हे] वपन-मुक्त (१ १३८)।

ओहट्टि [वि] [अपघट्ट] वपन से अप
(वक १ १)।

ओहट्टि [वि] [अपघट्ट] अपघट्ट-विपरीत
(वक १)।

ओहट्टि [वि] [अपघट्ट] वपन निवारक
(वक १)।

ओहट्टि की [वि] [अपघट्ट] १ निवारक
(हे १ १६१)। २ वक वपन की ओहट्टि
(वीप १)।

ओहट्टि [वि] [अपघट्ट] १ निवारक वक
निरा हुआ 'अपघट्टियमि' (व
१—वक ७१)। २ वपन (वक २)।

ओहट्टि [वि] [अपघट्ट] वपन करना (वक ४)।

ओहट्टि [वि] [अपघट्ट] अपघट्ट वपन
(वपन)।

ओहट्टि [वि] [अपघट्ट] वपनमल वीप
हुना (पुता १६)।

ओहट्टि [वि] [अपघट्ट] वीपना गुलना
नरना। अपघट्ट (हे ४ १२)। नर
ओहट्टि (पुता)।

ओहट्टि [वि] [अपघट्ट] वीपना हुआ (पुता
गुता २६६)।

ओहट्टि [वि] [वि] १ वपन (पट्ट)।

२ निवारक (स ११३) वीप १)। ३ वक
निरा हुआ, वपन (पट्ट ४ १६)।

ओहट्टि [वि] [अपघट्ट] वपन (पट्ट ४ १६)।

ओहट्टि [वि] [अपघट्ट] वपन (पट्ट ४ १६)।

ओहट्टि [वि] [वि] १ वपन। २ वीप वपन
के वीप की वपन वपन, वीप। ३ वपन
विपन (हे १ १७७)। ४ वपन-वपन
विपन (पट्ट १ १)।

ओहट्टि [वि] [अपघट्ट] निवारक। व वि
[वपन] निवारक (स ४६)।

ओहट्टि [वि] [अपघट्ट] निवारक कप-
वपन (वपन)।

ओहट्टि [वि] [अपघट्ट] वपन वर
विपन-विपन वपन (वपन)।

ओहट्टि [वि] [अपघट्ट] निवारक निवारक
(स २)।

ओहट्टि की [वि] [अपघट्ट] निवारक
वपन ओहट्टि वपन-वपन व वपन न
वपन वपन व वपन (वपन १ १)।

ओहट्टि की [वि] [अपघट्ट] अपघट्ट वपन
(वपन १४)।

ओहट्टि [वि] [अपघट्ट] अपघट्ट वपन।
ओहट्टि (हे ४ १६) वपन)।

ओहट्टि [वि] [अपघट्ट] वीप वपन।
वक ओहट्टि ओहट्टि (वीप ११६
वक =)।

ओहट्टि [वि] [अपघट्ट] वपन वपन
वपन (वपन १)। २ वपन व वपन वपन
वीप वीप वपन (वक १)।

ओहट्टि [वि] [अपघट्ट] वपन वपन
(विप ४६६)।

ओहट्टि की [वि] [अपघट्ट] वपन वपन
(वपन २६)।

ओहट्टि की [वि] [अपघट्ट] वपन वपन
वपन (वपन १६६ वीप ४६)।

ओहट्टि की [वि] [अपघट्ट] वपन वपन
(वपन)।

ओहट्टि [वि] [अपघट्ट] १ वपन
(गुता २२४)। २ वपन वपन-वपन (वक
=)।

ओहट्टि [वि] [अपघट्ट] वपन वपन वपन
वपन (वक १ २)।

ओहट्टि [वि] [अपघट्ट] वपन वपन वपन
वपन (वपन ४ १६)।

ओहट्टि [वि] [अपघट्ट] वपन वपन
विपन (वपन ४)।

कंडुय } पुं [कांडुय] पुंनैय माय
कंडुया } उर की एक बाति को कमी
परा ही मनी 'कंडुयो' विष मायो, विदि
न जेव कस बगारो (ब ३) ।
कंडय ॥ [कंडय] हाव का धामर-विरोध
मैय (बा २०; या ११) ।
कंडय पुं [रे] कण्डियय कण्डु की एक
बाति (उर ११, १०) ।
कंडयी की [कंडय] हाव का धामर-
विरोध 'कमरेव मंडलीय बरीय' कंडयी
कडा (गु २२) ।
कंडयि पुं [कंडयि] घाम विरोध (एव) ।
कंडयिज कुंभी [कांडुयो] माधरय बंठ में
चलन (एव) ।
कंडयपुं [कंडुय] १ मायकता-नामक कोषाधि ।
२ हा की एक बाति । ३ पुं की कंडा, देय
संभारो का उपकरण (गु ३) ।
कंडयस्य पुं [कंडयस्य] कंडय, हाव की
एक बाति (घाम) ।
कंडयो की [रे] कंडी केठ संभारो का
उपकरण (ही ११) ।
कंडयन [कंडयन] कमी कीर मांय पौष्ट
प्रतिपन्नरु 'कंडयनप्रय' (बा ११)
'मह नरककंडयनप्रयुते मीशणमहायो'
(ब २, २१) ।
कंडयस्य पुं [कंडयस्य] कंडयविरोध
(पण ११) ।
कंडयस्य देवो कंडयि (गु २१, गु २१) ।
कंडय देवो कंडय - दे (गु ११, १०) ।
कंडयि पुं [कंडयि] मरुत वृत् (ने १
वि २०) ।
कंडयि पुं [रे] कंडयि मरुत वृत् (दे २
१२; या ४ गु २१, १२२, गु २१) ।
कंडयन [रे] कंडयि १ कण्डयविरोध
कंडयन एक प्रकार की कमी को कमी में
ही होती है (दे २ ७) पाय) । २ पुं एक
माययन । ३ हाव की एक बाति (दे १
२१ पद) ।
कंडय पुं [कंडय] १ कण्डय वीरय-वीरी
के वृत् का एक मेर । २ न. वर वृत् का
एक 'कण्डयवृत्त' के वीर्य (उर १ ११
टी) । वीरी कंडय ।

कंडय सक [कांडय] बाधना मोक्षता । कंडय
(दे ४ १२२ पद) ।
कंडयन [कांडयन] मीने देवो (ब २) ।
कंडा की [कांडय] १ बाध, धमिपाय (गु २
१२) । २ बाधक पृष्ठि (म ३) । ३
माय कमी को बाध धमना उभय धामरि
का सम्मलन का एक धमिपाय (पदि) ।
मांडयिज न [मांडयिज] कंडयविरोध
(म ३) ।
कंडयि [कांडयि] बाधेबाधा (पाया
मउर ११ २४३) ।
कंडयिज [कांडयिज] १ धमिपाय । २
नामायुक्त बाधबाधा (उभा य) ।
कंडयि [कांडयि] बाधेबाधा धमि-
पायी (बा २१ गु २१०) ।
कंडयी की [रे] कंडयविरोध नांभी
(पाय १) ।
कंडा की [कंड] १ बाधविरोध, कंडल या
कंडा (म ३ ४० १) । २ कंडयविरोध
(पण १) ।
कंडयि की [रे] कंडयिज धमि-पाय
की एक कंडी बाधबाधा धमि-पाय में या
उभय नरक कंडु या वृत् विधि का कण्ड
(ब २) ।
कंडय पुं [कांडय] १ एक कंडयिज
(देव १११) । २ वि सोने का, कंडय का
'कंडय कंड' (ब २२०) । पण न [मय]
१ कंडयविरोध । २ वि कंडयविरोध का कंड
हमा (वि २११) । पाय पुं [पाय]
कंडयविरोध (व २०१) ।
कंडय पुं [कांडय] १ कंडयविरोध । २ स्व
नाम-कण्डय एक कंडी (उर ७२० टी) । ३
न कंडय, वीर्य (कय) । डर न [गु]
कंडय देव का एक कंडय नगर (पाय) ।
कंड न [कंड] १ वीर्य-मायक कंडयकार
पर्यंत का एक धमर (य ७) । २ कंड-
यिज-विरोध (म १२) । ३ कंडय पर्यंत
का एक धमर (य ७) । 'कंडय की
[कंडय] कंडयविरोध (गु २१) । 'विद्य
न [विद्य] १ कंडय का कंडयिज का
एक कंडय (कंड) । कंडय न [कंडय] स्व
नाम कण्डय एक कंडय (वि ३) । 'कंडय न
[कंडयन] वीर्य की वीर्य में एक वीर्य का

नाम (पाय) । सेठ पुं [सेठ] मेर-
पर्यंत (कण्ड) ।
कंडय पुं [कांडय] १ पर्यंत-विरोध
(म ७) । २ कंडयन पर्यंत का कंडय
देव (वीर १) ।
कंडय की [कंडय] स्वनाम कण्डय एक
की (पण्ड १ ४) ।
कंडय पुं [कंडय] कंडयविरोध (पठम
२१ ७२ गु २१) ।
कंडयि की [कांडयि] कंडय नगर
(वीर) ।
कंडा (दे) देवो कंडा (म ३) ।
कंडि की [कांडि] की १ स्वनाम-कण्डय
कंडो एक देव (गु २१) । २ कंडय-कण्डय
कंडर का कण्डय (पाय) । ३ स्वनाम-कण्डय
एक कंडर (गु ४ १) ।
कंडी की [रे] कंडय के वृत् में कंडी बाधो
सोही की एक कंडयकार वीर्य कंडी का नाम
(दे २ १) ।
कंडयि न [रे] कंडय विरोध (ब २ ८) ।
कंडयि न [कांडयि] कण्डयविरोध (ब २
८) ।
कंडु पुं [कंडु] १ की का स्वनाम
कंडुय १ कंड कंड कंडी (पठम १, ११
पाय) । २ कंडय-कंडय हाव की कंडयि कंडुयो
(वि २२१) । ३ कंड कंड (म १ ११) ।
४ कंडयविरोध (दे १ २४, १) । ५ कंड
कण्डय 'वि कंडय कंडय (कंडय) कंडय
कंडय कंडय' (पठम १४ १२) ।
कंडु पुं [कंडु] १ कंडय-कंडय का कंडी
हार, कंडयि (पाया १ १) । पठम १ १८
गु २ १०१) । २ हाव (वि २२१) ।
३ कंड कंड । ४ कंडय कंड । ५ कंडय
कण्डय में कंडय का एक प्रकार का कंड
कण्डय । ६ वि कंडय कंडय कंडय
हो कंड (दे ४ २११) ।
कंडुय वि [कंडयि] कंडय-कंडय (गु २
१) ।
कंडुय वि [कंडयि] कंडय-कंडय का कंडी
हार (म १ ११) ।
कंडुय वि [कंडयि] कंडय-कंडय का कंडी
हार (म १ ११) ।
कंडुय वि [कंडयि] कंडय-कंडय का कंडी
हार (म १ ११) ।
कंडुय वि [कंडयि] कंडय-कंडय का कंडी
हार (म १ ११) ।

बयो तक मैत्री शीघ्र का पानन कर धातु में
उत्सका व्याप कर दिया बा (शाया १ १६
उप)।

कंडरीय वि [कण्डरीक] १ बरोमन वन-
मुन्दर । २ धरपान (सुधनि १४०: १५३)।
कंडरिषि } की [कन्दरिषि] पुन कन्दर
कंडरिष्या } (वि १३३ हे २ ३५ कुमा)।
कंडरा की [कण्डरा] बाध-विरोध (पम)।
कंडार क [धन + क] पुनरा, कील-माल
कर सीक करना । कंड

‘गुणो गुणे ह्यु प्रभावरणी नमस्मि
मे देहस्मिन्मरणोन्मेषलयापनम् ।
एवं क्रीड पठनं कुनरीणममं
कंडारिकुप पमरु पुनो दुर्मो’ (कण्)।
कंडावेन्सी की [कण्डावेन्सी] कनलति-विरोध
(पण १)।

कंडिख वि [कण्डिख] साक-मुचय किया हुआ
(वि १ ११५)।

कंडियायन न [कण्डियायन] बैराली
(विहार) का एक क्षेत्र (सा १५)।

कंडिख पुं [कण्डिख] १ कारिखन-गोन
का प्रचलक शक्ति-विरोध । २ पुंकी कारिखन
गोन ऊपन । ३ न गोन-विरोध को मास्त्रक
गोन की एक शक्ता है (अ ७-पम ३६)।
[यण पुं [‘यन] स्वताम-क्यात शक्ति-
विरोध (कंड १)।

कंडू केओ कंडू (पम)।

कंडू केओ कंडू (सुध १ ३)।

कंडुय क [कण्डूय] कुनवाला । कंडुय
(हे १ १२१ उप) कंडुय (वि ५१२)।
बहु कंडुयत (मा ५१) कंडुयमाण
(मा २८)।

कंडुय पुं [कण्डुय] हलवाई, गिआई बैकने-
वाला ‘यमा विरोध कयो नैकुसल मत
नैकुसलपरी’ (भायन)।

कंडुय पुं [कण्डुय] दैव (वि ५ ३६,
कंडगा } रात्र)।

कंडुयुय वि [कण्डुयुय] नाथ की रात्र
धीमा (व ११८ मा १२२)।

कंडुयय वि [कण्डुयय] कुनवाला (धीन)।

कंडुयय न [कण्डुयय] १ कुनवी बाज
पाया रोच-विरोध । २ कुनवाला ‘पायागि

सल नहा कंडुयय कुनवाला मुबल’ (ध
११३ उप २५५ टी गउठ)।

कंडुयय केओ कंडुयय ‘अकंडुयय’ (पण
२, २—पम १)।

कंडुय पुं [कण्डुय] स्वताम-क्यात एक पाया
जिसे रामचन के गीई गउठ के धातु मैत्री
शीघ्रा की की (पम ८५, ५)।

कंडू की [कण्डू] १ कुनवाला
(शाया १ ५)। २ रोच-विरोध पाया बाज
(शाया १ १३)।

कंडू की [कण्डुय] ऊपर केओ (मा ११२)
सुर २ ११)।

कंडूयन न [कण्डुयय] कुनवाला (सुध १
३ ३ मा १८१)।

कंडूय केओ कंडूय = कण्डूय । कंडूय (नहा)।

नड कंडूयमाण (नहा)।

कंडूयग वि [कण्डूयक] कुनवालेकता (अ
३ १)।

कंडूयण केओ कंडूयण (उप २३६, सुधा
१०६ २२७)।

कंडूयय केओ कंडूयय (नहा)।

कंडूय पुं [वि] कंडूय (वि २ ६)।

कंडूय वि [कण्डूय] बाजवाला कण्डूयुठ
(कुमा)।

कंडूय क [कण्डू] १ कण्डा, केला । २
कागना बराले से पूता बगाला ‘कंडूय कंडि
कण्डुय’ (सुध १ ८, १)। कंडावि (विममा
३३)।

कंडू वि [कण्डू] १ यगोइ, सुधर (कुमा)।
२ धनिलपित बास्त्रिय (छाया १ १)। ३
पुं पति स्वामी (पम)। ४ के विरोध (सुध
१६)। ५ न, कणित प्रमा (पाया २५६)।

कंडू वि [कण्डू] नड सुधर हुआ (पम)।

कंडा की [कण्डा] १ की गारी (सुर ३
१५ सुधा ३७१)। २ पावस की एक पत्ती
का नाम (पम ७५ ११)। ३ एक योग-
रति (पम)।

कंडार न [कण्डार] १ धरपम बंफल
(पम)। २ कुठ, हृषित । ३ विपम्य । ४
पावस (कण्)।

कंडार पुं न [कण्डार] नड-कण्डारि-रहित
मयल, ‘कंडारो’ (सम्पत १६६)।

कंडि की [कण्डि] १ रोच प्रकाश (सुर २,
३३६)। २ रोमा रोचर (पम)। ३ इस
गाम की पावस की एक पत्ती (पम ७५
११)। ४ धृष्टि (पण २, २)। ५ इच्छा।
१ कण की एक कता (पम विम १ ७)।

पुटी की [पुटी] मयरी-विरोध (टी)। म,
उ वि [‘मन’] कणित मुठ (मायम गउठ
सुधा ८, १८८)।

कंडि की [कण्डि] १ पडिपतन केरकार ।
२ गमन पति (माट—विम ६)।

कंडू पुं [वि] काम कामने (वि २ १)।

कंडूय } पुं [कण्डूय] मय की एक बाति
कंडया } (अ ४ ३; उप २३) ‘नहा से
कंडय’ कंडोवाली मारने कंडय दिया’
(उप ११)।

कंडा की [कण्डा] कनवी सुधी सुने नड
से कता सुधा सोकना (वि १ १८७)।

कंडार पुं [कण्डार] कण्ड-विरोध (उप २२
टी)।

कंडारिया } की [कण्डारिया, टी] कण्ड
कंडारी } विरोध (उप १ ३१ टी)। बज
न [‘नन’] ऊपन के समीप का एक नमल
नहां पमनीकुमार-नामक कैल मुनि से मन
उप बत किया बा (पम)।

कंडेर पुं [कण्डेर] कुन-विरोध (पम)।

कणरी की [कण्डरी] कण्डकम कण्ड-विरोध
(उप १ २)।

कंडूय क [कण्डू] कंडावा रोमा । कंडू (वि
२११)। मुका कंडूय (वि ३१६)। बहु
कंडूय (मा ३८४) कण्डमाण (शाया
१ १)।

कंडू वि [वि] १ हड पडवुव । २ मड
ऊपत । ३ न स्वरण धास्त्राव, (वि २,
२१)।

कंडू पुं [कण्डू, कण्डि] व्यतर बेवी की एक
बाति (अ २ ३—पम ५१)।

कंडू पुं [कण्डू] १ प्रवेर मीर बिना रोच की
बहु । कनोइय, सुधर कण्डर, विमारीय,
धीन गावर, लहमुन नौय (की ६)। २
मुल बक (पम)। ३ कण्ड विरोध (सिग)।

कंडू पुं [कण्डू] कण्डारिय, पडान (कुमा
६ २ ५ य)।

कन्दुपया की [कन्दुपया] या स्वर से
चित्राया (ठा ४ १)।

कन्दुप्य पुं [कन्दुप्य] १ बायदेव धर्म्य (पाय)।
बायोरीक हास्यादि 'कन्दुप्ये' मुद्रा
(प्रीति लाया १ १)। २ रेव भिरेय (पत्र
७३)। ४ नाम संकीर्ण नयाय ३ वि नाम
मुद्रा, बायो (ह १)।

कन्दुप्य वि [कान्दप्य] बायोरीक, बायो
वा उदयक (ब १)।

कन्दुप्य वि [कान्दप्य] बायोरीक, बायो
वा उदयक (ब १)।

कन्दुप्य पुं [कान्दप्य] १ मजाक बने
बला भाएव वनछ (वीच भा)। २ भाएव
भाव सेवी की एक जाति (पण्ड २ २)। ३
शम्य वदेख भाएव बने ने बायोरीका
बायोरीका (ताहा २)। ४ वि नाम
मंकी (ह १)।

कन्दर न [कन्दर] १ उम, विवर (छाया १
१)। २ डग, उम (उमा प्राप् ७३)।

कन्दर ० [कन्दर] वर, उम (वि ४
कन्दरी १ पात्र)।

कन्दर पुं [कन्दर] १ कन्दर, प्रदेव (गुना
४)। २ लडा किरण (छाया १ ६)।

कन्दर न [क] वना (रे २ ४)।

कन्दर पुं [कन्दर] एक कुराता नामक
किरेय (पण्ड १)।

कन्दरि ० [कन्दरि] १ लडा किरण (गुना
६ ११)। २ कन्दर, प्रदेव,
'कन्दरि' (कन्दरि) (गुना ७२ ०)।

कन्दरि की [कन्दरि] कन्दरि (गुना ३९
६ ६६)।

कन्दरि पुं [कान्दप्य] हनवाई, मित्राई
केवनेगाता (ज १ १ १ ०)।

कन्दर पुं [कान्दप्य] कान्दप्य (गुना ३९
६ ६६)।

कन्दर पुं [कान्दप्य] १ कान्दप्य (गुना ३९
६ ६६)। २ क, गीत
कान्दप्य (ब १)।

कन्दर पुं [कान्दप्य] १ कान्दप्य (गुना ३९
६ ६६)। २ क, गीत
कान्दप्य (ब १)।

कन्दरि वि [कान्दप्य] कान्दप्य (गुना ३९
६ ६६)।

कन्दर पुं [कान्दप्य] एक प्रकार का वनछ,
जिसमें बायो वनछ पक्या जाता है, हंडा
(गुना १ १ १ १)।

कन्दर पुं [कान्दप्य] १ वन (पाय स्वय १
मे ११)। २ कान्दप्य (गुना १ १)।

कन्दर पुं [कान्दप्य] हनवाई, मित्राई
केवनेगाता (ज १ १ १ ०)।

कन्दर केवी कन्दर (गुना १ १ १)।

कन्दर केवी कन्दर (गुना १ १ १)।

कन्दर न [क] केवी कन्दर (गुना ३९
६ ६६)।

कन्दर पुं [क] कान्दप्य (गुना ३९
६ ६६)।

कन्दर केवी कन्दर (गुना ३९
६ ६६)।

कन्दर न [क] कान्दप्य (गुना ३९
६ ६६)।

कन्दर पुं [क] कान्दप्य (गुना ३९
६ ६६)।

कन्दर केवी कन्दर (गुना ३९
६ ६६)।

कन्दर न [क] कान्दप्य (गुना ३९
६ ६६)।

कन्दर पुं [क] कान्दप्य (गुना ३९
६ ६६)।

कन्दर केवी कन्दर (गुना ३९
६ ६६)।

कन्दर न [क] कान्दप्य (गुना ३९
६ ६६)।

कन्दर पुं [क] कान्दप्य (गुना ३९
६ ६६)।

कन्दर केवी कन्दर (गुना ३९
६ ६६)।

कन्दर न [क] कान्दप्य (गुना ३९
६ ६६)।

कन्दर पुं [क] कान्दप्य (गुना ३९
६ ६६)।

२ न पंवाय केव का एक मर (छ १
३ १४ ०)। पुर न [पुर] मर
किरेय (पत्र ८ १४ १)।

कंस वि [कंस] १ कंस कायी। २ गुनर,
मोहर (रि २ ११)।

कंस केवी कंस।

कंस पुं [कंस] १ कंस (रि २ ११)।

कंस केवी कंस (रि २ ११)।

कंस केवी कंस (रि २ ११)।

कंस केवी कंस (रि २ ११)।

कंस केवी कंस (रि २ ११)।

कंस केवी कंस (रि २ ११)।

कंस केवी कंस (रि २ ११)।

कंस केवी कंस (रि २ ११)।

कंस केवी कंस (रि २ ११)।

कंस केवी कंस (रि २ ११)।

कंस केवी कंस (रि २ ११)।

कंस केवी कंस (रि २ ११)।

कंस केवी कंस (रि २ ११)।

कंस केवी कंस (रि २ ११)।

कंस केवी कंस (रि २ ११)।

कंस केवी कंस (रि २ ११)।

कंस केवी कंस (रि २ ११)।

कंस न [कंसय] १ बाहु विरोध कंस। २ बाध-विरोध। ३ परिमण्ड विरोध। ४ बल दीने का चीन व्यास (हि १ २६, ७)।
 'वास न [वास] बाध-विरोध (बीर ३)।
 'वसी, पाई की [पासी] बोधा का बना हुआ पाव-विरोध (कण ठा २)। पाय न [पाय] बोधा का बना हुआ पाव (बस ६)।

कंसार दु [कंस] कंसर, एक प्रकार की मिठाई, 'ता कण्डण कंसर' लालपुरसंमुख वेणु विसमोमर्ग गोमे उषोलेमि एवाए' (स १८७)।
 कंसारी की [कंस] कंसिय छुड कनु की एक बाति (बी १८)।
 कंसाल दु [कंसाल] बाध-विरोध (हि २ ६३; सुग ३)।

कंसाला की [कंसाला, कंसाला] बाध का एक प्रकार का निर्मित ठाठ (रुति)।
 कंसालिया की [कंसालिया] एक प्रकार का बाध (सुग २४२)।
 कंसिध दु [कंसिध] १ नमर वंशारी कंस-कार (हि १ ७)। २ बाध विरोध (सुग २४२)।

कंसिमा की [कंसिम] १ ठाठ (एवा १ १७)। २ बाध-विरोध (सुग २)।
 कंसभि दु [कंस] कंसलान 'घसल विमर्गि कंसणी के' (सुग १ २ २, १३)।

कंसुय } बेडो कंस = कंसुय (वि २ ३)
 कंसुय } ह २, १७४)।
 कंसुय बेडो कंस = कंसुय (ठा २, १ एवा १ १७ विना १ २)। ३ इतिहास का एक उदा (पत्र २२ ६६)।
 कंसुय बेडो कंस (ब २)।

कंस दु [कंस] १ उत्तम-अध्य, खरीर पर का मेल दूर करने के लिए लपटाया जाता अध्य (सुग १ २ निरु १)। २ न पाय (स १२ ३)। ३ मान, कपट (स ७६)।
 कंस न [कंस] माया बजट (स २ २—पत्र २३)।

कंस न [कंस] १ कंसल यात्रि उत्तम अध्य (स १, ६४)। २ प्रभुवि रोय यात्रि में लिया जाता धार-पाठ। ३ सोय यात्रि के

खर्च (पत्र २—गाथा ११३)। कुरुवा की [कुरुवा] माया कट (पत्र २)।

कंस दु [कंस] १ कंसली का एक देव-द्वय प्रसाद (उत्त १३ १३)। २ यति-विरोध कंस राति (समी ६६)।

कंस दु [कंस] १ यतिविरोध देव विरोध (ठा २ ३)।

कंस दु [कंस] बर ना दूय (पाय)।
 कंस दु [कंस] कंसराति (विना १ ६)।

कंस न [कंस] १ कंसलान-विरोध कंसरी (पाय)। २ कंसरी कंस विरोध (पत्र ४)। ३ दूय का एक प्रकार का बाहु (स १ ३)।

कंसलान दु [कंसलान] कंसरी खीर (कण)।

कंसलिया } की [कंसलिया, टी] कंसरी
 कंसली } (बीर) का पाय (स ६६१)।

कंसला की [कंसला] १ पाय। २ माया (स २)।

कंसल दु [कंस] दूय कणो वयय की दूय-रस की एक प्रकृति दूय रस का विचार विरोध (निरु २७४)।

कंसल दु [कंस] १ कंस, पत्थर (विना १ २ पत्र २ सुग ३ ७ ससु १६८)। २ वि कंस, पत्र (पाय ४)। ३ कंसरी प्रसाद माता (उत्त ७)।

कंसलाना की [कंसलाना] १ शोष-प्रसाद शोषोपमानमणित प्रसाद (ठा ३ १—पत्र १४७)।

कंसलान न [कंसलान] १ कंसरी की तरह प्रसाद। २ शोषोपमान शोष-प्रसाद (पाय ४)।

कंसल वि [कंसल] १ कंसरी, पत्र (पाय सुग ३८ धार ६४ पत्र ३१ ६६)। २ प्रसाद, कंस। ३ तीव्र प्रसाद (विना १ २)। ४ यति, हासि नाक (स ७६, ३३)। ५ कंसुय, निर्य (स ७६)। ६ कंस-प्रसाद कर पत्र दूया कंस (पाय २ ४ १)।

कंसल } दु [कंस] कंसरी कंसल (दे कंसलान) २ ३)।

कंसलान दु [कंसलान] वरीय प्रसादिली नाम में उतार एक उतार कंसलान दूय कर दूय (पाय)।

कंसलाना की [कंसलान] १ कंसलान वरी, कंसलान का माय 'कंसलाना गोशरति चरित' (सुग ५६)।

कंसलान दु [कंस] कंसलान गिरिध दूयराती में 'कंसलान' (दे २ २)।

कंसलान दु [कंसलान] कंसलान में होनेवाला पायविरोध का एक रसा (टी)।

कंसलान न [कंसलान] माय (स १ ११)।

कंसलान पुन [कंसलान] रस की एक बाति (स ७७ पत्र ३ ७२)।

कंसलान दु [कंसलान] कंसलान-विरोध की एक बाति (सुग २ २)।

कंसलान न [कंसलान] कंसलान कंसलान कंसलान (पाय)। कंसलान कंसलान।

कंसलान की [कंसलान] कंसलान का दूय कंसलान का पाय (पाय १—पत्र ३३)।

कंसलान न [कंसलान] कंसलान कंसलान २ दु कंसलान-प्रसाद-माय का माय-पाय। ३ उतार प्रसाद वरी (स ३ ३ ६६)।

कंसलान दु [कंसलान] १ कंसलान-विरोध कंसलान की के दूय का एक प्रसाद (ग ७१)। २ कंसलान-विरोध की सुवर्ण होता (पत्र २ २)। कंसलान कंसलान।

कंसलान की [कंसलान] कंसलान-विरोध (सुग २ ६६)।

कंसलान कंसलान = कंसलान (उतार कंसलान १ ८८ पत्र ४४ १ नि १३८ ४२)।

कंसलान वि [कंसलान] १ कंसलान-प्रसाद। २ दु कंसलान का दूय (सुग ३६)।

कंसलान बेडो कंसलान (स ४१ ठा १ १)।

कंसलान वि [कंसलान] १ कंसलान, कंसलान (पाय)।

कंसलान की [कंसलान] कंसलान कंसलान (दे २ १६)।

कंसलान [कंसलान] कंसलान (पत्र)।

कंसलान बेडो कंसलान = कंसलान (पाय एवा १ ८ सुग ११ २२२)।

कंसलान दु [कंसलान] १ कंसलान विरोध कंसलान। २ कंसलान दूय की कंसलान (दे २ २२)।

कंसलान दु [कंसलान] १ कंसलान, दूय का कंसलान, दूय की कंसलान (दे २ २२)।

कञ्चुल पुं [कञ्चुल] पुष्प-विशेष (पण्य १-५५ १२) ।
कञ्चुल पुं [कञ्चुल] स्वनाम स्थात एक कार-मुनि (लाम्पा १ १६) ।
कञ्चुल देवी कञ्चुल (प्रमु ७२) ।
कञ्चोटी श्री [क] कञ्चोटी लंगोटी (रमा-टि) ।
कञ्चि [कार्य] १ को किया बात कह । २ करने योग्य । ३ जो किया का सक (हे २ २४) । ४ म. प्रवेशन चरित्र 'न य पाहेर कञ्चर' (प्रामु २७ ४५) । ५ कारण हेतु (बन २) । ६ काम कार्य 'प्रमह परिचितिगञ्च, चरितरङ्गुलपण्य विपण्य । परिणमर मल्ल विषय कञ्चारेकी निक्षिपेण' (दुर ४ १६) ।
जाग बि [क] कार्य का चलनेवाला (उप १४८) । मेण पुं [मेन] प्रतीत उत्पत्तिणी नाम न कल्पन स्वनाम स्थात एक कुलकर गुण (पन १३) ।
कञ्चञ्जा (श्री) श्री [कञ्चञ्ज] कन्या बुनाधि (प्रार ८७) ।
कञ्चड्ड पुं [हे] धन्य (हे २, १७) ।
कञ्चमाय वि [कञ्चमाण] का किया बाधा हा कह 'कञ्च' व कञ्चमाणी व माधिमिल व पार्थ (दुम १ ८) ।
कञ्चल न [कञ्चल] १ काचन मयी । २ कञ्चन मुरा (दुमा) । 'पेञ्जा श्री [प्रमा] मुद्रणनामक जम्बू-द्वीप की उत्तर दिशा न स्थित एक पुष्पदिशि (बीष ३) ।
कञ्चलञ्ज वि [कञ्चलित] १ बाकनगा । २ स्वाय कृण्व (नाम) ।
कञ्चलीनी श्री [कञ्चलीनी] कञ्चन-नृत्त बीष के उत्तर एग जादा पाव मिलने कामर बन्ना होमा हे कञ्चोटी (बीष एगमा १ १-५५ १६) ।
कञ्चला म [कञ्चला] १ नाम की एक कुलीनी (रर) ।
कञ्चलाय मर [मृ] इगमा इगमा मा-चोटी मरणा । तप के उगार उरव

वितियेण धातवद, जयरवि का लाभा कञ्च साधर' (धाभा २ ३ १ १६) । कञ्च-कञ्चल्यवमाग (धाभा २ ३ १ १६) ।
कञ्चसिञ्ज देवी कञ्चल्लञ्ज (सि २ ३६ गउर) ।
कञ्चय पुं [हे] १ बिता मना । २ एण कञ्चयय वरिए ना कण्ह दूरा कतवार (हे २, ११ सन १७६, १६९ स २६४ हे ६ १६९ मणु) ।
कञ्चिय वि [कञ्चिय] बार्थीय प्रयोगवाली (बन ३) ।
काञ्चवाग पुं [काञ्चोपग] कतलो महाघहों में एक ढह का नाम (अ २, १-५५ ७८) ।
कामाल न [हे] मैरान एक प्रकार की पात की जगारणों में सवती है (हे २ ८) ।
कञ्चि (मय) म [कञ्च] इन चयों का चोकर मय्य-१ काचर विस्वय 'कञ्चि कण्ठरमुञ्जहे न मणु निचिनन मार' (हे ४ ३५) । २ प्रवेश, स्थापना 'कञ्चि माणु मुनिसाणु कञ्चि मुक्कमल फलनिम' (बम्म १६ ६) ।
कञ्चर (मर) न [र] छुरि छुरिका (हे ४ ४४३) ।
कट्ट नर [कट्ट] बाग्ना देरना । कट्ट (मरि) । कट्ट कट्टि, कट्टियि कट्टिम (रमा मरि विष) ।
कट्ट रि [कट्ट] बाय हमा छिन्न (अ १ १) ।
कट्ट न [कट्ट] १ हुन । २ रि कट्ट-कारक कट्टई (विष) ।
कट्टर पुं [हे] बड़ी में वाला हुआ बीष का कण (आप विशेष रिड १३७) ।
कट्टर न [हे] एगम संज्ञ हुनका वि वग विषयगट्टे द का विषाणुटे - का' (मृ) ।
कट्टराय न [हे] छुरि छुरि-विशेष (स १६१) ।
कट्टरा मी [हे] छुरिका छुरि (हे २ ४) ।
कट्टिम रि [कट्टिम] बाग हमा छेति (विग) ।
कट्ट रि [कट्ट] बघा, कलराग (रर) ।
कट्टरु ध [कट्टरु] करके (रमा १ ३ ५५ मय) ।

कट्टोरग पुं [हे] कटोर प्यासा पान-विशेष लयो पावेहि कटोरया कट्टोरया मंडुया निपाया व ठाकजि' (निड १) ।
कट्ट न [कट्ट] १ दुप पीड़ा मया (दुमा) । २ पार । ३ वि कट्ट-सामक पीड़ा-कारक (हे २ १४ ६) । हर न [हे] कट्ट-मय काट की बनी हुई बाछोरापी (मुर २ १८१) ।
कट्ट न [कट्ट] काट लकड़ी (दुमा मुना ३३४) । २ पुं पनगुद मर का निगामी एक स्वनाम-कलाट घेटी । (धामम) । कम्मम न [कम्मम] मरुकी का कारणाता (धाभा २ २) । कट्टन म [कट्टण] स्वनाम-नामक मूलक के एक सेव का नाम (कम्म) । कार पुं [कार] काट-कर्म व बीरिया कललराना (मणु) । कोरिय पुं [कोरिय] हुन की शाका के बीष मुद्रा हया मय-मय (मृ) । म्याय पुं [म्याय] की-विशेष मृग (अ ४) । दल न [दल] खर की शाक (एन) । पाग्ना श्री [पादुग] काट का बला पकाई (मृ ४) । पुचलिमा श्री [पुचलिम] कट्टोवनी (मणु) । 'पेञ्जा श्री विषा' १ शूंग बीछ का कम्म । २ धन न लकी हुन एगम की राव (उमा) । महु न [मिचु] पुन-नरक (दुमा) । मूल न [मूल] छिन्न मय विषवा को कट्ट मवात हुआ है ऐसा बना शूंग मारि मर (रर १) । हार पुं [हार] मीनिय जम्बू-विशेष पुन बीष कियो (बीष १) । हारय पुं [हारक] कट्टय, लकड़हाव (दुमा १८३) ।
कट्ट रि [कट्ट] निमित्तित बावा हया भीर हुनरु-परदोन्मा रंपये म मीत्री व' (बीष ११६) ।
कट्टम न [कट्ट] धातवक मीषार (पउर) ।
कट्टदार पुं [कट्टदार] कट्टय लकड़गा काटयक (दुर २ ८) ।
कट्टा श्री [कट्टा] १ छिद्र (मर ४६) । २ हह, मीमा 'कट्टाम् मरा गय कट्टा' (वा १६) । ३ बाग का एक परिमाण कट्टाट निरन (मृ) । ४ कट्टर' (दुम ६ ८) ।

कम्पणा श्री [कम्पणा] १ रचना निर्माण ।
२ प्रमाण लिखण (निष्ठ १) । ३ कम्पना
विषय (विष्ट १११२) ।
कम्पणी श्री [कम्पणी] कठली कैंची (पण्ड
१ १ जिता १ ४ घ ३२१) ।
कम्पर पुं [कम्पर] कम्पर, कम्पन सिर की
कोणड़ी (हृष्ट ४; पाण) । देखो कुम्पर =
कर्पर ।
कम्परिष्ठ नि [कम्परिष्ठ] बाण्ड चीर हुआ (वि २
२ वक्रा ३४ मकि) ।
कम्पास पुं [कम्पास] १ कपास २८ । २
ऊन (निष्ठ ३) ।
कम्पानसिध पुं [कम्पानसिध] ओरियन बीच
विशेष छत्र जन्तु-विशेष (नीच १) ।
कम्पानसिध नि [कम्पानसिध] १ कपास
बेचनवाला (पण्ड १४६) । २ न. कैलार
छाक-विशेष (पण्ड ३६, छंति) ।
कम्पानसिध नि [कम्पानसिध] कपास का बना
हुआ धूँडी बरिष्ठ (पण्ड) ।
कम्पासी श्री [कम्पासी] रई बा पाण्ड (राज) ।
कम्पानसिध नि [कम्पानसिध] एक वैन
छात्र (छंति २ २) ।
कम्पिय नि [कम्पिय] १ टंचित निमित्त
(वीर) । २ स्थापित समीप में रक्ता हुआ
नि धन्य हुमावे छं धन्य में बहिर धन्य
मनिय करि (निष्ट १ १) । ३ कम्पना निमित्त
विकसित (रमनि १) । ४ व्यक्तित (बाबा
मूय १ २) । ५ दिव्य ज्ञान हुआ (विता
१ ४) ।
कम्पिय नि [कम्पिय] १ अनुगत धनिष्ठ
(वर १६) । २ योग्य उपनि (गण्ड १
ब ४) । ३ ई वीर्य, शोधी माधु कि वा
धन्य-गण (वि १) ।
कम्पिया श्री [कम्पिय] १ कम्पन-विशेष
एक उपाङ्ग-कम्प (वि १ निर) ।
कम्पर पुं [कम्पर] कम्पर, मुक्ति इच्छा-विशेष
(पण्ड २ ३, गुर २ ६ मुता २६३) ।
कम्पेवग पुं [कम्पेवग] १ कम्प-गुरु । २
कम्प-विशेष बाण्ड रत लोच गयी हउ (गण्ड
२१) ।
कम्पावरण पुं [कम्पावरण] इतर देखा
(मुता ८) ।

कम्पोयविष्टा श्री [कम्पोयविष्टा] रेव
लोच-विशेष में उत्पत्ति (भा) ।
कम्पल न [कम्पल] इस नाम की एक
कन्यादि कायस्थ (हृ २ ७७) ।
कम्पाड देवी कम्पाड = कपाट (गठ) ।
कम्पाड [कम्पाड] देवी कम्पाड (पाण) ।
कम्प पुं [कम्प] कम्प शरीर स्थित जानु विशेय
(राज) ।
कम्पट पुं [कम्पट] कम्पट (वि २ ७) ।
कम्पट (श्री) कम्पट कम्पट (गठ ८३) ।
कम्पटी श्री [कम्पटी] कम्पटी (विष्ट २५३) ।
कम्पट [कम्पट] पुं [कम्पट] १ कम्पट मकर
कम्पटग २ कम्पट मकर (भा पण्ड १
२) । २ पुं कम्पटग कम्पटग कम्पट-विशेष
(अ २ १—पण्ड ७८) । ३ वि कुम्पर का
निवासी (उर १) ।
कम्पर देवी कम्पट (गठ ७) ।
कम्पाडमय पुं [कम्पाडमय] कम्पाड पर कम्पटि जाले
का काम कम्पटाला मन्त्र (अ ४ १—पण्ड
२ ३) ।
कम्पट [कम्पट] १ कम्पट २ कम्पट कम्पट
कम्पटग ३ कम्पट जाला (पण्ड ७८) ।
२ पुं कम्पट-विशेष कम्पटग कम्पट-
विशेष (अ २ ३ राज) ।
कम्पटि नि [कम्पटि] कम्पट कम्पटाला
कम्पटग विता हुआ कम्पटि-कम्पटि
कम्पटि (मुता ३४) । मणिमकर-विशेष
विष्ट-विशेष-कम्पटि (मुता १
पण्ड ८२ १६) ।
कम्प (पाण) देवी कम्प (वह) ।
कम्पट न [कम्पट] कम्पट कम्पट (मुता ३ राज) ।
कम्पट [कम्पट] १ कम्पट, पण्ड उताता ।
२ कम्पट कम्पट । ३ कम्पट कम्पट
कम्पट । ४ होना 'मण्डविष्ट विष्टमनिवपी
न कम्पट जाली न कम्पट' (विष्ट २४६) ।
'न एष उपायत कम्पट' (अ २ ६) । ५
कम्पट (अ २ ६) । ६ कम्पटग (वीर) ।
कम्प गठ [कम्पट] कम्पट का पण्ड । कम्पट
कम्पटग (अ २ ८२) । ६ कम्पटग
(मुता ३४ २६२) । कम्पट (गण्ड १ ३४
वी—पण्ड ८) ।
कम्पट [कम्पट] १ कम्पट गण्ड मुक्त होता

पण्ड । २ कम्पट पण्ड । कम्पट (निष्ट २११
पण्ड ६१) ।
कम्प पुं [कम्पट] १ पण्ड, पण्ड, पण्ड (गुर १
८) । २ पण्ड 'मिष्टकम्पामापी मिष्टक
मिष्टकामो मण्ड जिलापी (गुर १ २८) ।
३ धनुष्य परियापी (गठ) । ४ मण्डि
मीमा (अ ४) । ५ मण्डि 'मिष्ट' (मण्ड २१) ।
६ निवम (हृष्ट १) ।
कम्प पुं [कम्पट] पण्ड कम्पट, कम्पटि (हृ
२ १ ६ मुता) ।
कम्पट पुं [कम्पट] कम्पटग कम्पटग का
एक मिष्ट का पण्ड का पण्ड (निष्ट १
पण्ड ४ ४ उर १४८ मी) ।
कम्पट पुं [कम्पट] कम्पटग कम्पटग शरीर
(हृ १ २३६ गण्ड मुता) ।
कम्पट पुं [कम्पट] १ कम्पट की कम्पट । २
कम्पट, कम्पट । ३ कम्पट । ४ कम्पट
(वि २ ३२) ।
कम्पट [कम्पट] १ कम्पट कम्पटग कम्पट-
विशेष, कम्पटग । २ कम्पटग कम्पटग का पण्ड
कम्पटग । ३ कम्पटग कम्पटग का पण्ड
का पण्ड (विष्ट २२) । ४ कम्पटग कम्पटग
(वि १ १६६) । ५ कम्पटग कम्पटग (विष्ट १)
६ कम्पटग का एक पण्ड (विष्ट १) । ७
कम्पटग का एक पण्ड (विष्ट १) । ८ कम्पटग
का एक पण्ड (विष्ट १) । ९ कम्पटग का एक
पण्ड (विष्ट १) । १० कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ११ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । १२ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । १३ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । १४ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । १५ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । १६ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । १७ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । १८ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । १९ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । २० कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । २१ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । २२ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । २३ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । २४ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । २५ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । २६ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । २७ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । २८ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । २९ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ३० कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ३१ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ३२ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ३३ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ३४ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ३५ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ३६ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ३७ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ३८ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ३९ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ४० कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ४१ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ४२ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ४३ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ४४ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ४५ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ४६ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ४७ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ४८ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ४९ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ५० कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ५१ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ५२ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ५३ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ५४ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ५५ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ५६ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ५७ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ५८ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ५९ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ६० कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ६१ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ६२ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ६३ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ६४ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ६५ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ६६ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ६७ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ६८ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ६९ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ७० कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ७१ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ७२ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ७३ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ७४ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ७५ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ७६ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ७७ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ७८ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ७९ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ८० कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ८१ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ८२ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ८३ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ८४ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ८५ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ८६ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ८७ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ८८ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ८९ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ९० कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ९१ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ९२ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ९३ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ९४ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ९५ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ९६ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ९७ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ९८ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । ९९ कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) । १०० कम्पटग का एक पण्ड
(विष्ट १) ।

पुत्रस्य-पुत्रस्य (पं०)। 'वाइ' वि [वाविण] भाग्य को ही सब कुछ माननेवाला (पं०)। विधाग पुं [विपाक] १ कर्म परियुक्त कर्म-फल। २ कर्म विपाक का प्रतिकारक द्रव्य (कम्म १ १)। संवच्छद पुं [सम्पत्तर] शौचिक कर्म (पुण्य १ १)। स्यात्त की [शात्त] १ अरजाला। २ कुम्भकार का बटारि बनाने का त्वान (बृह २)। 'सिद्ध' पुं [सिद्ध] वापीवर, शिथी (घास)। [सीव] [सीव] १ अरीयर। २ कापीय की कोई भी काय बलवाकर निजवि प्राप्त करनेवाला छात्र (अ ३ १)। [वान] न [वान] जिसने छापी पाप हो ऐसा व्यापार (अन २)। [परिय] पुं [रिय] कर्म से कार्य मिलों व्यापार करनेवाला (पण्य १)। [वाइ] रेवो 'वाइ' (घास)।

कर्म वि [कर्मण] १ कर्म-सम्बन्धी कर्म काय कर्म-निमित्त कर्म-सम। २ न कर्म गुरुत्वों का ही बना हुआ एक द्रव्यत्वं सूक्ष्म शरीर को सम्पत्तर में भी प्रामा के साथ ही रहता है (अ १ कम्म ४)। २ कर्म-विशेष नाम-शरीर का है-यु-युत कर्म (कम्म २ २१)। ३ कर्म-शरीर का व्यापार (कम्म ३ १३ कम्म ४)।

कम्मइय न [कम्मिच, कर्मण] उपर रेवो (पण्य १ २ ६)।

कर्मठ पुं [वि कर्मिठ] १ कर्म-बन्धन का बाण (वापा, पुन २, २)। २ कर्म-स्थान करवाला (वि २ १२)।

कर्मठ वि [कुर्वन्] १ हज्जत करता हुआ। २ हुआ गोसिद्ध (पुन)। साह्य की [शात्त] बर्ष पर उत्तर-वात बनाने का गुण धारि समझा जाता हो वह स्थान (वि ८)।

कम्मकर रेवो कम्म-कर (साह २९)।

कम्मग [कर्मक, कम्मक कामेण] रेवो कम्म = कामेण (अ २ ४ पण्य २१ (पण्य)। कम्मण न [कर्मण] १ कर्म-सम शरीर (अ २२)। २ धीय पन् धारि के हाथ मोहन बलीपण्य कम्मण धारि कर्म (अ १४ टी स १ ३)। गारि वि [कारिण] २६

कामण करनेवाला (गुर १ २८)। ओय पुं [योग] कर्म-समयोग (आपा १ १४)। कम्मण न [मोहन] मोहन (पुन)। कम्ममाण रेवो कम्म = कम्म।

कम्मय रेवो कम्मय (अपा पं०)।

कम्मय सक [उप + मुय] उपयोग करना।

कम्मय (हे ४ १११ पण्य)।

कम्मयण न [उपयोग] उपयोग काम में जाना (पुन)।

कम्मस वि [कम्मस] १ मणि। २ न पाप (पाप ह २ ७६ प्रापा)।

कम्मा की [कर्म] किया व्यापार (अ ४ २—पण्य २१)।

कम्मर पुं [कम्मर] १ छोटा लोहकार (वि ११५५)। २ हाथ-विशेष (बाह्य १)।

कम्मर [वि कम्मर, क] १ नीकर, कम्मरग, बाकर (अ ११७ योष ४ ६४ कम्मरय टी)। २ कापीयर, शिथी (सीव १)।

कम्मरिया की [कम्मरिया] की-नीकर, बासी (पुन ११)।

कम्मि [वि कम्मि] कर्म करनेवाला कम्मिअ [कम्मिअ] कम्मिअ

'उपकम्मियउ उप पापीउ के' दुस पाहारीयो। मोदय मोदयपनहम्मि मयपसली पुका। (य १६४)।

२ पाप कर्म करनेवाला (पुन १ ७ ६)।

कम्मिया की [कम्मिअ कम्मिअ] १ अण्यय से कण्ठ होनेवाली बुद्धि (आपा १ १)।

२ दाशीय कर्म विशेष अरिष्ट कर्म (अन)।

कम्मइ न [कम्मइ] पाप (पण्य)।

कम्मइ [करमात्] क्यों किम कारण से? (धीय)।

कम्मर रेवो कम्मर (हे २, ४)। अ न [अ] केन, पुं पुन्य (पुन)।

कम्मइ पुं [वि] माली मालाधार (वि २ न)। कम्मर रेवो कम्मर (पुन २४२ वि १२ ३१२)।

कय पुं [कय] कय, बात (हे १ १०० पुन)।

कय पुं [कय] बरीणा (पुन १४४)।

कय रेवो कय = कय (पापा पुन प्राप् १२)।

कयउ उअ वि [पुण्य] पुण्यप्राप्ती आयप्राप्ती (अ १०० पुन १ ३)। क

रेवो ग (पण्य १ २)। कय वि [कय] कयार् सपुन-मनोरथ (आपा १ ८)।

करण वि [करण] प्रमाप्ती इवाम्पास (बृह १ पण्य १ १)। किम वि [करय] इवार् मयन मनोरथ (पुन २०)। ग वि [क] १ धारी अलपि में घुसे की मपेता करनेवाला प्रयत्न-मय (वि १ ८३० स ६३१)। पुं हास विशेष पुनम 'मयगवर्त का वलमवर्त का कयमवर्त का' (वि ६)।

१ न मुसर्त सोपा (पण्य)। गय वि [ग] उपहार न माननेवाला इत्यय (पुन २ ४४ पुन २८८)। कापुय वि [कायक] इत्यय उपहार को माननेवाला (वि ११८)।

पुन वि [क] अकार को माननेवाला, किय हुए अकार की कदर करनेवाला (कम्म २९)। पुन्या की [कया] इत्यय पुन्यालमली विशेष माला (अप पु ८६)।

त्य वि [रिय] इत्यय बटियाई सख-मनोरथ (पण्य २१)। नासि वि [नासि] इत्यय (पण्य १९९)। क, न्य रेवो पुन, 'न कियितसियया कियेयक-नरिद कयनपु' (पुन १ १ न्या स ११ या २८)। पञ्जलि वि [माजलि] इवाम्पासि ममत्कार के लिए जिसने हाथ ऊँचा किया हो वह (घान)। पडिक्क की [प्रतिकृति] १ प्रकुपकार (पं० १६)।

२ विनय-विशेष (अ २)। पडिक्कया की [प्रतिकृति] १ प्रकुपकार (आपा १ २)। २ विनय का एक मेद (अ ७)।

पडिक्कम वि [पडिक्कम] जिसने देश की पूजा की है वह (अ २ ३० आपा १ १९—पण्य २१० टी)। मंगय की [मंगय] १ य भाग की एक नवरी (पं०)।

मास, मासय वि [मास, क] १ जिसने माता बनाई हो वह। २ पुं कुन-विशेष कनेर का गाव, 'पंथेयविमसयइयमयवतमास-सतइ' (अ १ ३१ टी)। १ विमस-नामक पुन का धर्मिष्ठायक देव (अ २ १)।

कम्मय वि [कम्मय] जिसने धनने शरीर किन्ही को अन्न किया हो वह (अ १ ११ आपा १ १)। व वि [व] जिसने किया हो वह (वि ११२१)। वयमास-

पिय पुं [बनमासप्रिय] रस नाम का एक
कथ (विना २, १)। बन्म पुं [बन्म]
गुप्त-विराज भस्मात् विमलगत्य का विना
(चर १२१)। वीरिय पुं [वीर्य] का-
वीर्य के विना का नाम (सुप १)।

कथं च [कथम्] चरम् चर (उपर १४४)।
कथमात्रा की [कथमात्र] व्यापरी नगरी के
सरोवर की एक नगरी (नर)।

कथय पुं [कथाम्] १ यम सुपुत्र मरुत
(मुना ११६)। २ राज्ञः पित्रांश्च
'नृणां पित्रांश्च कथं तं कथयिष्ये' च वारिषि
(शर्मा ११७)। ३ गुणः ११६)। ४ यमः कथ
इय नाम एक पुत्र (पत्रम ३६ ३१)।

मुह पुं [मुह] यमकन के एक लेखक
का नाम (पत्रम २४ ६२)। वयग पुं
[वयन] यम का एक लेखक (पत्रम
२४ ४)।

कथं च कथं कथं (हे १ ११६) वरु)।
कथं च कथं कथं (मण्ड १ १ २२२)।

कथं च [कथम्] मनुष्य, 'अप्यारो विम
कथं जीवन्मर्त्यं च एवम् कथं' (संकोच
२)।

कथं च [कथम्] यमकन विमुक्ति
(रज्य)।

कथं च कथं कथं (रज्य)।

कथं च [कथम्] भस्मात्-यम (वर्ष २६९
४१४)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] १ कथं कथं विमली
२ न कथं कथं विमली-यम वारिषि
'नृणां पित्रांश्च कथं तं कथयिष्ये' च वारिषि
(विने ११६ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (पत्रम)।

कथं च [कथम्] रस नाम का एक
कथ (विना २, १)।

कथं च [कथम्] विना मार भस्मात् (हे १
२१७)।

कथं च [कथम्] १ कथं कथं विमली
नगरी। २ कथं कथं (वर्ष १ टी)। कथं
कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] १ कथं कथं विमली
नगरी। २ कथं कथं (वर्ष १ टी)। कथं
कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

कथं च [कथम्] कथं कथं (वर्ष १ टी)।

करण्यभूमिभो बमिहो (पा १४४) । २
पाणि-मस खासी (पा) । य पु [म]
नम (पा १७२) । रुह पुन [करह]
१ नम (हे १ १४) । २ पु गुण-विरोध
(पत्र ७७ ८८) । आपन न [सपन]
कमा-विरोध हल-आपन (कम) । यनृण न
[मन्तन] नन्दन का एक बाप एक प्रकार
का मुकुट समस्तर बन्य करना (रुह १) ।
करअभी ० की [दे] स्तूल वस्त्र मोटा कपड़ा
करअभी ० (हे २ १६) ।
करआ की [करक] बरना घोला रिता-
हुटि (अण्ड १४) ।
करअभी की [दे] गुण-गुण सुखा पेड़ (हे
२ १७) ।
करक पुं [दे] करक १ निम्न-नाम (हे २
११ बरह) । २ पयोध-क (हे २ ११) ।
करक पुन [करक] १ हठी हाडा 'करक-
मयीसणे मयसणि' (मुपा १७१) । २
पनिन-गड, हाड-गड (अ ७२ ८ टी) ।
३ पलान, नाम बोलख खल की छोटी पेदी
'सौलकराशिखी' (मनु) । ४ हड्डि
का डै (गुर १ २ ४) ।
करह क [मण्ड] खोदना खोदना
हुनाहा । करह (हे ४ १ ६) ।
करज पुं [करज] गुण विरोध गरिबा (गण
१) हे १ ११ या १११) ।
करज पुं [दे] गुण-व्यक्त सुखी लषा (हे
२ ८) ।
करजिभ वि [मज] बोना हुना (हुमा) ।
करह पुन [करह] बंधनार हठी (उंड
१२) ।
करह पुं [करह क] १ करह
करहा } रिता यंत्रिा (पण्ड १ ३)
करहय } या १४ अ ४ ४) ।
करहिया की [करहिया] छोटा रिता
(छाया १ ७ गुण ४२८) ।
करही की [करही] १ रिता पटिना (या
१४) । २ हठी पाय-विरोध (अ १११) ।
करह्य न [दे] रीठ के पाय की हठी (पण्ड
१ ४—पत्र ७८) ।
करह दोष कर = ह ।
करह पुं [करह] दरी दौर भाग या बग

हुना एक बाप ह्य्य दधीयल (पाय) हे २
१४ गुण १११) ।
करहिय वि [करहिय] व्यास कथित (मुपा
१४ मण्ड) ।
करह्य पुं [करह्य] १४ नाम का एक
परिचायक ताप-विरोध (पीप) ।
करह्यु पुं [करह्यु] एक बैन महर्षि
(महा, पति) ।
करह्यिय वि [करह्यिय] करह्य यादि से
काया हुना (सणु ११४) ।
करह्य वि [दे] करह करह्य १ बलि
गण्य (उवा) ।
करह्य की [दे] करह्य विचर निष्कीय
बस-विरोध या प्राचीन काल में बस्य गुरा
को पशुना बना या (विप १ २—पत्र
२४) ।
करह्य पुं [करह्य] करह्य करह्य पाय
(पण्ड १ १) ।
करह्य पुं [करह्य] कर-कर सामान (छाया
१ १) । उंड पुन [हण्ड] गुण-विरोध
(पण्ड १—पत्र ४) ।
करह्य पुं [करह्य] गह-विरोध पहाहि
हासक देव-विरोध (अ १, १—पत्र ७८) ।
करह्य दोष करह्य = बारह (छेवि १) ।
करह्य पुं [करह्य] १ करहा घोला (या २
मोष १४१ की १) । २ पाटी की कसछी
बत पाय (सणु १ या १६ गुण १११
११४) । रेशा करह्य = करह ।
करह्य दोष करह्य (स १११) ।
करह्य दोष करह्य (समस्त १७१) ।
करह्यय पुं [दे] रिता, हुन की नलाई
(हे २ २२) ।
करह्यो-विरोध की [दे] पापी लाल (गुण २
११) ।
करह्य पुं [दे] पतिविध यम की कालेवला
बाह्य (गुण्ड २ ७) ।
करह्य पुं [करह्य] १ नाव बीया (बर १
१४) । २ हठी या पाय-वस्त्र (गुण ११६
पाय) । ३ पाय-विरोध (विक = ७) । ४
गुण-गुण । ५ गरी-गुण । ६ गरी-
गुण । ७ गरी-गुण । ८ पाय-विरोध
(हे २, २१ टी) ।

करह्य पुं [दे] १ व्यास, रो । २ वि करह
विचरक (हे २ ११) ।
करहा की [दे] लषा—१ एक प्रकार का
करह्य । २ पति-विरोध बत । ३ अमर,
बीत । ४ पाय-विरोध (हे २ ११) ।
करहि पुं [करहि] हठी हठी (गुर २
११ गुण १ १११) ।
करही की [दे] करही पाय-विरोध 'मनुस्यं
करही' (अ २) ।
करह्ययम न [दे] पाय-विरोध (पिठ) ।
करह्य न [करह्य] १ हिय (गुर ४ २११
(हुमा) । २ पायन पयान बोलख (हुमा) ।
३ पति-विरोध पायन (हुमा) । ४ हठि
विता विपल (अ ४ ४ गुर ४ २४१) ।
५ करह्य-विरोध साधनम (अ १ १
विसे ११११) । ६ पति-विरोध (पोष
१११) । ७ व्यासम व्यास-वस्त्र (अ ४
१११) । ८ बीर-कुर्या (अ १ १—पत्र
१ १) । ९ योधि-शास-प्रतिष्ठ ब-बाल-वर्ष
कण्ड (गुर २ १११) । १ निमित्त प्रबो
यम (सणु १) । ११ बत कैवला (मि) ।
१२ वि को किया वाय बह (पोष २ अ
१) । १३ करह्यला (हुमा) । हिय पुं
[विपि] १ बत का मय्य (मि) ।
साय की [साय] व्यासम (स ४
हारि पत्र १ ८ २) ।
करह्य की [करह्य] १ मनुज विवा ।
२ धर्मगुण (छाया १ १—पत्र १) ।
करह्यसा की [करह्यसा] व्यास-मिद
(स १ १ टी) ।
करह्य की [दे] हिय नर्म (सणु १११) ।
करह्य की [दे] १ ह्य पातर (हे २ ७
गुण १ १ ४७१ पाय) । २ साहय मया
मता (सणु) । ३ धनुराल मय बरना
(मण्ड) । ४ वीरार, प्रीकार (अ ४
१८२) ।
करह्य दोष कर = ह ।
करह्य वि [दे] साम, सार 'मयसम
सौरी-पति-मै' बममोरी (मि) ।
न करह्यो (स ११२) 'बहुमय-विरोध'
बहुमय-विरोध (गु ११२) ।
करह्य दोष कर = ह ।

करपत्त न [करपत्त] करपत्त करपत्त (विप्रा १ १)।

करम पुं [करम] करं, ऊरु (पञ्च १ १ पञ्च)।

करमी की [करमी] १ करी ली-की, ऊँटी (सिंह)। २ बाण मले का बड़ा पाण (बृह २ अ०)। बेहो करमी।

करम वि [रे] कीरु बुद्ध (दे २ १ पञ्च)।

करमइ पुं [करमइ] फलवाला बुद्ध-विरोध (अव०)।

करमइ पुं [करमइ] बुद्ध-विरोध करीय (सकल १—पञ्च १२)।

करमरी ली [रे] हट-हट ली बोधी (दे २, १५ पञ्च वा ३२० पाठ)।

करव बेहो करवा (अन ७२ टी पञ्च १ कुमाय लता ७)। १ पति-विरोध (पञ्च १ १)।

करबरी की [रे] मल्लिका बेला का बाण (दे २ १८)।

करपर भक् [करकरा] 'कर-कर' भावान कला। नक् करपरव (पञ्च २४ १३)।

कररु पुं [कररु] अन्त-विरोध (विप्रा)।

कररु } की [कररु, 'री'] १ पताका।
कररु } २ होरा की एक नाति। ३ हाथी का एक घामरु (दे १ १२ कुमाय)।

कररु पुं [रे] करक कल-नाम 'पानिकरवा' कीर पाएर पुष्पिणी (कुमा २१४ १११)।

करबरी की [करमरी] अन्त-विरोध एक बाण का पेड़ (दे, ८ १३)।

करपत्तिना की [करपातिना] कल-नाम-विरोध (आ ११)।

करवास पुं [करवास] बड़ा लकवा (पाण १)।

करविना की [रे] करकिम पान पाण-विरोध (कुमा ४४४)।

करवीर पुं [करवीर] बुद्ध विरोध, क्रोध का बाण (महा)।

करसी [रे] बेहो कइसी (दे १ १७४)।

करइ पुं [करम] १ ऊँट, उट्ट (पञ्च ११ ४०० नाम कुमाय कुमा ४२०)। २ बुद्ध की अन्त-विरोध (अन ११८)।

करहाइ न [करहाइ] अन्त-विरोध (विप्रा)।

करहाइ पुं [करहाइ] बुद्ध-विरोध करहाइ, शिख कम्, मेलकल (महा)।

करहाइय पुं [करहाटक] १ अन्त बेहो। २ अन्त-विरोध 'करहाइयविप्रा' नामक अन्त-विरोध (अन २२१)।

करमी बेहो करमी। १ इस नाम का एक कण (विप्रा)। २ बि [रीह] ऊँट सवार, ऊँटी पर सवार करने वाला (महा)।

कराइगी की [रे] राक्षसी बुद्ध विप्रा का पेड़ (दे २, १८)।

करावु पुं [करावु] स्वभाव कपाल एक रत्ना (टी १७)।

कराव वि [कराव] १ ऊपर ऊँटा (पञ्च १)। २ कुर्या विप्रा का बल कला की बाहर लिखा हो वह (महा)। ३ कपाल कलेक (अन)। ४ कालेवाला। ५ विप्रा (दे १ ४१)। ६ व्यवस्थित (दे ११ १३)।

७ बि इस नाम का विप्रा-विरोध करवा (अन १)।

कराव एक [कराव] १ व्यवस्था कल कला। २ विप्रा करवा। करार (दे १ ४१)।

कराव वि [कराव] १ कुर्या विप्रा की बाहर लिखा हो कला (दे १२ १)। २ व्यवस्थित कला कला (विप्रा ११ १३)। ३ कल करवा (अन)।

कराव ली [रे] करवा ली बुद्ध करणे का कल (दे २ १२)।

कराव न [कराव] करवा नामक, लिपि (कुमा ११२, अन्त न टी)।

कराव वि [कराव] करवा कला (दे १२४ महा)।

कर पुं [करि] हाथी हाथी (पञ्च १११)। करणद्वय न [करणद्वय] हाथी की न कले करी—अन्त, रत्ना (पाण)।

नाह पुं [नाह] १ पैरपण अन्त का हाथी। २ कल हाथी (कुमा १ ६)। बंधन न [बंधन] हाथी पकड़ने का घाँट (पाण)।

अन्त पुं [अन्त] अन्त-हाथी (पाण)।

करि पुं [करि] एक महाबुद्ध (पञ्च २)।

करि } बेहो कर = क।
करिअव } बेहो कर = क।

करिआ ली [रे] मरिप परीमने का पाण (दे २ १४)।

करिअव } (अन) बेहो करवा (दे ४ करिअव) ४१८ कुमा वि २१४)।

करिअ बेहो कर-क।

करिअिना } ली [करिअि] हाथी हाथी
करिअि } (अन) पञ्च ११ ११ मुता १)।

करिअ पुं [करिअ] हाथी हाथी (दे ११ कुर्यापण)। कुमाय। अन्त-विप्रा-विरोध (अन १ टी)।

करिआ } बेहो कर = क।
करिआण } बेहो कर = क।
करिअव }

करिमरी [रे] बेहो करमरी (पा १४ १३)।

करिअ न [रे] १ अन्त-विप्रा, अन्त का अन्त-विप्रा (अन) ११ ११)। २ करिअ, अन्त-विप्रा 'अन्त-विप्रा' (विप्रा ११ ११)। ३ अन्त-विप्रा (अन)। ४ अन्त-विप्रा (अन)। ५ अन्त-विप्रा (अन)। ६ अन्त-विप्रा (अन)। ७ अन्त-विप्रा (अन)। ८ अन्त-विप्रा (अन)। ९ अन्त-विप्रा (अन)। १० अन्त-विप्रा (अन)। ११ अन्त-विप्रा (अन)। १२ अन्त-विप्रा (अन)। १३ अन्त-विप्रा (अन)। १४ अन्त-विप्रा (अन)। १५ अन्त-विप्रा (अन)। १६ अन्त-विप्रा (अन)। १७ अन्त-विप्रा (अन)। १८ अन्त-विप्रा (अन)। १९ अन्त-विप्रा (अन)। २० अन्त-विप्रा (अन)। २१ अन्त-विप्रा (अन)। २२ अन्त-विप्रा (अन)। २३ अन्त-विप्रा (अन)। २४ अन्त-विप्रा (अन)। २५ अन्त-विप्रा (अन)। २६ अन्त-विप्रा (अन)। २७ अन्त-विप्रा (अन)। २८ अन्त-विप्रा (अन)। २९ अन्त-विप्रा (अन)। ३० अन्त-विप्रा (अन)। ३१ अन्त-विप्रा (अन)। ३२ अन्त-विप्रा (अन)। ३३ अन्त-विप्रा (अन)। ३४ अन्त-विप्रा (अन)। ३५ अन्त-विप्रा (अन)। ३६ अन्त-विप्रा (अन)। ३७ अन्त-विप्रा (अन)। ३८ अन्त-विप्रा (अन)। ३९ अन्त-विप्रा (अन)। ४० अन्त-विप्रा (अन)। ४१ अन्त-विप्रा (अन)। ४२ अन्त-विप्रा (अन)। ४३ अन्त-विप्रा (अन)। ४४ अन्त-विप्रा (अन)। ४५ अन्त-विप्रा (अन)। ४६ अन्त-विप्रा (अन)। ४७ अन्त-विप्रा (अन)। ४८ अन्त-विप्रा (अन)। ४९ अन्त-विप्रा (अन)। ५० अन्त-विप्रा (अन)। ५१ अन्त-विप्रा (अन)। ५२ अन्त-विप्रा (अन)। ५३ अन्त-विप्रा (अन)। ५४ अन्त-विप्रा (अन)। ५५ अन्त-विप्रा (अन)। ५६ अन्त-विप्रा (अन)। ५७ अन्त-विप्रा (अन)। ५८ अन्त-विप्रा (अन)। ५९ अन्त-विप्रा (अन)। ६० अन्त-विप्रा (अन)। ६१ अन्त-विप्रा (अन)। ६२ अन्त-विप्रा (अन)। ६३ अन्त-विप्रा (अन)। ६४ अन्त-विप्रा (अन)। ६५ अन्त-विप्रा (अन)। ६६ अन्त-विप्रा (अन)। ६७ अन्त-विप्रा (अन)। ६८ अन्त-विप्रा (अन)। ६९ अन्त-विप्रा (अन)। ७० अन्त-विप्रा (अन)। ७१ अन्त-विप्रा (अन)। ७२ अन्त-विप्रा (अन)। ७३ अन्त-विप्रा (अन)। ७४ अन्त-विप्रा (अन)। ७५ अन्त-विप्रा (अन)। ७६ अन्त-विप्रा (अन)। ७७ अन्त-विप्रा (अन)। ७८ अन्त-विप्रा (अन)। ७९ अन्त-विप्रा (अन)। ८० अन्त-विप्रा (अन)। ८१ अन्त-विप्रा (अन)। ८२ अन्त-विप्रा (अन)। ८३ अन्त-विप्रा (अन)। ८४ अन्त-विप्रा (अन)। ८५ अन्त-विप्रा (अन)। ८६ अन्त-विप्रा (अन)। ८७ अन्त-विप्रा (अन)। ८८ अन्त-विप्रा (अन)। ८९ अन्त-विप्रा (अन)। ९० अन्त-विप्रा (अन)। ९१ अन्त-विप्रा (अन)। ९२ अन्त-विप्रा (अन)। ९३ अन्त-विप्रा (अन)। ९४ अन्त-विप्रा (अन)। ९५ अन्त-विप्रा (अन)। ९६ अन्त-विप्रा (अन)। ९७ अन्त-विप्रा (अन)। ९८ अन्त-विप्रा (अन)। ९९ अन्त-विप्रा (अन)। १०० अन्त-विप्रा (अन)।

करीसिय हि [कमिन] दुर्बल किया हुआ
(गुप्त १ १)।

करीर पुं [करीर] हृदय-विशेष करीर, करीस
(उप ७२८ टी; भा १९; प्रामु १२)।

करीस पुं [कराय] पतले के लिए मुक्ताया
हवा मोहर, बंया मोहरा (हि १ १)।

करुण देखो करुण (लज्ज ११; गुप्ता २१९)
'करुण उदारमार्ग' इतिहास करुण्यं च
प्राप्तुम् (गठ १)।

करुणा श्री [करुमा] दया करने के कुछ को
हूर करने की इच्छा (गठ १)।

करुणादय हि [करुणादित] विमपर करुणा
की गई हो वह (गठ १)।

करुणित हि [करुणित] करुणा करनेवाला
दयालु (गठ १)।

कर लज् [करय] करना । करेह (आङ्
१)।

करेअय्य [केरी कर = ६]
करेह

करकु पुं [रे] इन्नाम निर्दिष्ट, सट (हि
२, २)।

करेण पुं [करण] १ हस्ती हाथी । २ कनेर
का बाघ, 'एनो करेण' (हि २ ११५) । ३
श्री हस्तिनी हस्तिनी (हि २, ११५; छाया १
१ गुर = ११६) । ४ दणा श्री [दणा]
इन्द्रजित् ब्रह्मर्षी की एक श्री (उप ११) ।
मेणा श्री [सेना] देवी पुर्वाक्ष धर्म
(उप ११)।

करेणुभा श्री [करेण] हस्तिनी हस्तिनी
(पाप महा)।

करेमाय [केरी कर = ६]
करेअय्य

करेयादिय हि [करेयादित] धन-कर के
वीर्य, मरुपुत्र के देव (वीर)।

करोह पुं [रे] १ मरिचक मायिक । २
बाग बीज । ३ इय, रीत (हि २, २४)।

करोह्य पुं [रे] पान-विशेष करोह्य (मि
१)।

करोहि श्री [करोहि] फिर की हरे (गुप्त
२ २१)।

करोहिय पुं [करोहिय] वातातल विपु-
विशेष (छाया १ = बज १२)।

करोहिया } श्री [करोहिय, टी] १ बुझा,
करोही } बड़े बुझ का एक पात्र वास्य-
पात्र-विशेष (गणु दे ७ १२ पाप) । २

स्वगिता पानवान (छाया १ १ टी—पत्र
४१) । ३ मिट्टी का एक सड़ का पात्र
(वीर) । ४ कपल मिता-पात्र (छाया १

८) । ५ पवित्र का एक जलकर (दे, २
३५)।

करोही श्री [रे] एक प्रकार की पीठी पुत्र
जन्म विषय (दे २ १)।

करोही श्री [रे] गुण्य शय (गुप्त १ २)।

कल लक [कल्य] १ सखा करना । २
प्रशान करना । ३ बाना । ४ पवित्रपना ।

५ संख्या करना । कलह (हि ४ २२६;
पह) । कलहति (विदे २ २६) । यदि

कलहति (वि १११) । कल कलिय (विन
२ २६) । कल कल्य (गुप्ता ४) । कलह

कलियत (गुप्ता २४) । कल कलियत
कलिय (महा मनि १८२) । कल कलियत,

कलकीय (गुप्ता १२२५ वि ६१)।

कल हि [कल] १ मधुर, मोहर (पाप) । २
पुं धाम्यक मधुर शय (छाया १ ११) । ३

गोरायक बलवत (वीर १६) । ४ करंय
बीज, बीज (मल ११) । ५ धाम्य-विशेष

पोल बना मटर (हा २, ६) । कंठी लो
[कंठी] बीजिता बीज (हि २, १

कण्य) । संजुल हि [संजुल] कल
के मधुर (पाप) । यंठ पुं [कंठ] बीजित

बीज (गुप्ता) । यंठी लो कंठी (गुप्त
४ ४५) । ईम पुं [ईम] एक लो,

यम-ल (गणु गठ १)।

कनक पुं [कनक] १ बाण, बीज (गणु ६४) ।
२ लाल, पित्त (गुप्ता गठ १)।

कनक लक [कनक] कनकित करना ।
कनक (महि) । कनकियत (गुप्ता ४८८

४८९)।

कनक पुं [रे] १ बीज पौध (हि २ ८) ।
२ बीज की बगई हुई बाड़ (छाया १ १) ।

कनक न [कनक] कनकित करना
(पत्र ८)।

कनक हि [कनक] कनकित करना
(वीर ५५)।

कनकियमागि हि [कनकियमागि] गुप्त
म्यागुल (गुप्त २, २ ८१; ८१)।

कनकियमाग पुं [कनकियमाग] १ गुप्त
के म्यागुल । २ संसार-परिग्रह (छाया

२ १९ १२)।

कनकिय श्री [रे] कृति बाड़ कनकिय
परिग्रह स्थान-परिग्रह (हि २, २४)।

कनकिय हि [कनकिय] कनकित लो (हि
४ ४१८)।

कनकिय हि [कनकिय] कनकित लो (हि
४ ४१८)।

कनकिय न [कनकिय] म्याग म्याग (गुप्त
१२५)।

कनक पुं [कनक] १ गुप्त गुप्त रंय
पात्र (गुप्ता) । २ कति के पात्र एक प्रकार

के मधुर (हा १—पत्र ३२८)।

कनक पुं [कनक] १ हृदय-विशेष मीन
कनक का गाव (हि १ २२२; गठ ३८-

गणु) । बीर न [बीर] कनक-विशेष
(विना १ ९—पत्र ११) । कनकिय श्री

[बीरिय] कनक-विशेष मिनका घट म्याग
कति लोप होला है (वीर १) । धानुमा

श्री [धानुमा] १ कनक कण्य के धार
वाली बुनी । २ लक की लो 'कनकिय-

गुप्ता इन्द्रजित् पण्य' (उप १६)।

कनकिय श्री [रे] कनक-विशेष मायिका (हि
२ १)।

कनकिय न [कनकिय] कनक-गुप्त का गुप्त
'पापयकनकिय' हि मधुमयिपयम' (गणु)

कनकिय पुं [रे] लो कनकिय (गणु १;
गुप्त ४)।

कनकिय श्री [कनकिय] १ कनक गुप्त
क कनक बीज-बीज । २ एक बीज का कनक

जहाँ पर मधुरा मधुरा की कनकली
के मधुरा का (गणु)।

कनकिय श्री [कनकिय] जम में होनेवाला
कनकिय की एक कति (गुप्त २ १ १८)।

कनकिय पुं [कनकिय] कनक-गुप्त (गुप्त
१२)।

कनकिय पुं [कनकिय] १ बीजित कनक
कनक (गणु १६) । २ कनक कनक

पाराव (परा १ ११ पाव) । १ बुला पावि
दे मिथिअ कस (पिया १ १) ।

कसकस पाक [कसकसय] 'कसकस'
पाराव करना । वर कसकसई कसकसिन
कसकसई कसकसमाय (परा १ १ १
पीत) ।

कसकसिन न [कसकसिन] कसकस करण
(रे १ ११) ।

कसकसिन वि [कसकसिन] कसकस राव
से पुक (तिरि ११५) ।

कसकस केओ कसकस = कसस (रा ७ २) ।
कसकुसि पु [कसकुसि] १ मयि विरोप ।

२ इन नाम का एक कसि-नरा (सिग) ।
कसक केओ करण 'गेमुनि कसकेपु हापु
मुहकको' (पण्ड २) ।

कसक न [कसक] १ टव पाराव । २
संभान मिमी (विदे २ २) । ३ बाण
करा (मुना ५१) । ४ बाणा (मुना ११) ।

५ प्राणि, पण्ड 'बुट्टे वा लम्बकसलमसो
परापरापुसस' (पा १६) ।

कसगा की [कसगा] १ इति करण 'बुट्टे
केपु-कस विडुकरकसलगा' इति स कसगा
(कस) । २ बाण करण, बाणा 'मसमस
सिखिअरपकसल' (कस) ।

कसजिअ केओ कस = कसपु ।
कसस न [कसस] की मार्मा (शानु ७९) ।

कसबोव केओ कसहोय (पीत) ।
कसम पुके [कसम] १ हावी का कसा
(शानु १ १) । २ कसा, कसक 'उवमापु
परापरापरापरापरापरापरापरापरा' (रे १ ७) ।

कसमिअ एही [कसमिअ] हावी का ली
बहा (छाया १ १—परा ११) ।

कसम पु [रे कसम] १ पोर लकर (रे २
१ पाय पाया) । २ एक प्रकार का कसम
पावत (परा १ २ पाय) ।

कसमस पु [कसमस] १ रेव ना मव (रा १
१) । २ वि बुट्टिअ बुट्टिमवा (रा १११)

कसमस पुन [रे] १ मरन-मरन (सं ५७) ।
२ कसम कसपण्ड इण 'पुमिअ पण्डो
कोडिअमिअमलपण्डो' । मरनि मिथिअ
मपु मसमस बाण प्रियमिअ' (परा १११) ।

कसप केओ कसप (रे १ १७) ।

कसप पु [रे] १ मरुन कस । २ सोगार,
गुणलीकार (रे २ ५५) ।

कसप पु [कसप] सोगार गुणलीकार (परा) ।
कसमि वि मि [रे] १ प्रविड विष्णव । २

एही कस विरोप पावरी पावस (रे २ ५८) ।
कसपजिअ न [रे] मोह-मोह होठ पर लगामा
बादा ले-विरोप (मनि) ।

कसपस केओ कससस (रे २ २२ ३ पाय;
पा २५१) ।

कसपसि वि [कसपसिअ] कसपस करण-
बाला (कस ६१) ।

कसकहापी की [कसकहापी] इस नाम का
कस (सिग) ।

कसक न [कसक] १ बीय बीर रोडित का
समुदाय 'पारपरापरा पण्ड सुतसुतपुवर्षीमिअ
कसक' (परा ११ ५) 'वसकससस-
सोडिअ—' (परा ११, ५४) । २ बर-
केल बर । ३ बर के पण्डक कस वि-विहार
(परा) । ४ बीर कीचक कसप (परा) ।

कससि वि [कससिअ] कससिअ बीचबाला
पिना हवा 'मससोअकससिअमिअसेरकी
कालकमसिअपरा' (परा) ।

कससि पु [कससिअ] पवि विरोप बटक
पीया ली बीरवा (पाव) पण्ड ।

कससु ली [रे] मुम्बी पाव (रे २, १२;
परा) ।

कसस पु [कसस] १ बसरा, बसा (कस
छाया १ १) । २ लम्बक कस का एक से,
कस-विरोप (सिग) ।

कसस पुन [कसस] १ एक सेव विमान ।
(सिग १५) । २ बाण-विरोप (परा १
१) ।

कससिवा ली [कससिअ] १ छोटा कस
(परा) । २ बाण विरोप (परा १) ।

कसस पु [कसस] लोह, मसका (परा पीत) ।
कसस केओ कसस (कस परा ७५ २) ।

कसस न [रे] लमवार की म्याल (रे २,
पाय) ।

कसस पाक [कसहाय] मसका करना
नहीं करना । वर कससई कससमाय
(परा २५ ४) मुना ११ १११ २५१) ।

कसस न [कसस] मसका करना (परा) ।

कससमाय केओ कसस = बसहाय । कससमि
(पी) (पाव) । वर, कससमई (पा १) ।

कससमाय वि [कससमिअ] बसहाय
मसकापीर (पाव) ।

कससि वि [कससिअ] मसकापीर (रे २,
५५) ।

कससोय न [कसपीत] १ मुहई घोप
(घा) । २ बीर रजत (बसका परा १ ५
पाय) ।

कसस ली [कसस] १ घोट कस माता
(परा ५) । २ समय का सुन मप (विदे
२ २८) । ३ कसका का कोहल दिसा
(परा ६२) । ४ कसा विना विमान (कस
परा ११२) । पुस कोय कसा के
सुख कसपीर बीर ली-मोय कसा के पुस
पीठ मेव है 'इलपरी कसा' (परा);
'बसलकसपमिअमिअ पुसिअ' (परा १११);
'बसलकसपमिअ' (छाया १ १) । पुस
कसा के है—१ मिथि बाण । २ संभानपरा ।
३ विम कसा । ४ मातकसा । ५ पाय, पाय ।

६ बाण बसला । ७ लर कस (परा कस
बसल लरों का बाल) । पुस कस (परा
परा विरोप बसल का बाल) । ८ समय
(घोट के दाव का बाल) । ९ घुट कसा ।

१० बसल (बीरों के दाव बाण संभान
कसे की विधि) । ११ पाय का केट । १२
परापरा (बीर कसने की रीति) । १३
रीर बसल । १४ कस-पुसिअ (परापरा
विधि) । १५ पाय कसा । १६ पाय-मि
(बसल के पुस-मोय का बाल) । १७ बस
विधि (बस की संभान की रीति) । १८
विरोप-विधि । १९ लय-विधि । २० मार्मा
(कस विरोप) बसल की रीति । २१ प्रेमिका
(विरोप कसि परेमिअ—मुसल पदा) ।

२२ मयमिअ (कस विरोप) । २३ बाण
(कस विरोप) । २४ बीर (कस-विरोप) ।

२५ लीक (मुसपु कस) । २६ विरोप
पुसि (बीर के मापुल की कसपम
मोका) । २७ मुहई-पुसि । २८ मुहई-पुसि
(मुसि पदाव बनने की रीति) । २९
मयमिअ विधि (पापुली की बसल) ।

३० लयी बसल (ली की मुसल बनने

[illegible][illegible]

प्रायः ३) । २ कनिष्ठा देहा वा राजा (विष्णु १०) ।
 कलिष्ठा वृ [कलिष्ठा] भयवान् पाणिनाय
 वा एक मुख (श्री १४) ।
 कलिष्ठ देहा कलिष्ठ (गा ७३) ।
 कलिष्ठा वृ [कलिष्ठा] का चर्या (निष्क १०) ।
 कलिष्ठ न [दे] घोषी सङ्घा (दे २ ११) ।
 कलिष्ठ पुन [कलिष्ठ] १ बंभ का पान
 विरोध 'कनिष्ठा यंशकान्तो' (गण्ड २) । २
 मुखो मङ्गरो (भाग ८ १) ।
 कनिष्ठा न [कलिष्ठा] नगर पर पहुँचा जाया
 एक प्रकार वा बर्ष मय करण (छाया १
 १ जीन) ।
 कलिष्ठ न [दे] कमान पथ (हे २ १) ।
 कलिष्ठ देहो कलिष्ठ = कनकप (संयु ४१) ।
 कलिष्ठ वि [कलिष्ठ] पहन घना कुम्भ
 (पाद्य) ।
 कलुष वि [कलुष] १ बीन, क्या अनक
 ब्यापान (हे १ २५४ प्राय १२९ मुर
 २ २२६) । २ पुं साह्यि शास्त्र त्रिगुह
 नर एषो में एक एव (मणु) ।
 कलुषा रोगो कलुषा (पत्र) ।
 कलुष वि [कलुष] १ नगिन घनक
 'कलिष्ठमूल' (विना १ १ पाद्य) । २ न
 पाव शीतल (न ११२ पाद्य) ।
 कलुषीय वि [कलुषिण] पाव-वस्तु मगिन
 (से १ २ वज्र) ।
 कलुमीक्य वि [कलुमीक्य] मगिन किया
 हुआ (उर) ।
 कलर पुं [दे] १ कंकन मलिन-कलर । २
 वि कलप कलक (दे २ २१) ।
 कलपर न [कलपर] कलर, देह (पाठ ४५
 विष्णु) ।
 कलमुष न [कलमुष] लज्ज-विरोध (बृह
 २ २) ।
 कल्यार्थ शी [दे] पाव-विरोध (भाषा २ १
 २ १) ।
 कल्य न [कल्य] १ कल क्या हुआ वा
 साधक नि (पाद्य छाया १ १; हे ८
 १०) । २ कल्य माया । ३ मन्त्रा गिनती
 (विष्णु १६४२) । ४ साधक निरोध
 'कल्यार्थ' (विष्णु १४१६) । ५ प्रलय
 मण्ड (भाग) । ६ वि विरोध पैर शक्ति

कसा की [कसा, कसा] बर्न-यष्टि, बाहुक
बीरा (विना १ १ गुना १५४) ।

कसा केओ कामा (पर) ।

कसा वि [कसावि] १ कसाय रंजना ।
२ होन-जान-मान-मौलबला (परण १८
भाषा) ।

कसाय वि [कसायि] ऊपर देखो (पा
४८२) वा ११ भाषा) ।

कसाय ल [कसाय] वस्त्र करना
पाणा । भूवा बसाहवा (भाषा) ।

कसाय पु [कसाय] १ होन माल माया
धीर लोभ (वि १२२१ बं ३) । २ रस-
विशेष बर्नमा (अ १) । ३ बर्न-विशेष
माल-नीला रंज (अ २२) । ४ कसाय
कसा । ५ वि बर्नमा स्वाभला । ६ कसाय
रंजना । ७ गुणबी कुतूहल (वि २
१९) ।

कसार [क] केओ कसार (बहि) ।

कसि वि [कसि] मारनेवाला, निगमक
'कसारि एर कसियो कसावा' विनिवि मुनाई
कुरम्यवत् (गुन १ १) ।

कसिज न [कसिज] प्रती, बाहुक 'प्रंभी
म ए वरुणोप कसिज पाद' (प्रती १) ।

कसिमा की ऊपर देखो (गुन ११ १७) ।

कसिमा की [वि] कस-विशेष धरण्यवापी
नामक वस्त्रवि का कल (वि २, ६) ।

कसिद (वि) केओ कड = टट (पर) ।

कसिग केओ कसज = कसज कुल (वि २,
७३ गुना पाद ३४ १२) ।

कसुगीरा की [कसुगीर] एक ऊपर मारवी
वेग (मार्क २ ११) ।

कसेर } पुन [कसेर, क] वशीय कस-
कसंरुप } विशेष (बख पहण १) ।

कसेरग पुन [कसेरग] बकन होनेवाली वन-
रूपि की एक बर्न (गुन २ १ १ भाषा
२ १ ३) ।

कसीय की [वि] बाय-विशेष 'गहाहि
बलोहि भीषा कसीय' (गुन १ १७) ।

कसत पु [वि] बड बर्न काही (वि २, २) ।

कसस न [वि] प्राण कसरार, जे (वि २,
१९) ।

कससय पु [कससय] १ रस-विशेष कससय
बंगुरो' (वि १३) । २ कसि विशेष
(बहि २१) ।

कड लक [कडय] कडगा मोलगा । कड
(वि ४२) । कड बरग, कडिग (वि १
१७४ ४ २५४) । बड कडिग कडिग,
कडिमाण (एण ७२, गुन ११ १४८) ।

बड कडिग कडिग, कडिगमाण
(एन गुन १ ४४ वा १२८ गुन १४
२४) । लड कडिग, कडिग (बहा
कल) । कडिगिज, कडिगिज कडिगिज,
कडिगीय (गुन १ १ १, गुन ४ १२२;
गुन ११४ एण २ ४ गुन १२ १७) ।

कड लक [कड] कसाय करना उबाना ।
कड (पर) ।

कड पु [कड] बक, शरीरव्य बाहु-विशेष
वर्णय (कुम) ।

कड केओ कड (वि १ २४ गुना पर) ।

कडि लेओ कड रूयि (कड ल ७२८
टी) । वि केओ कडि (गुन ११४
१४१) ।

कडिग य [कडिग] विरल गीर पापक धर
की वजलेबला धमक (वि ७ १४८) ।

कड य [कडय] १ कैरे, किय लख ?
(अण ४२ गुना) । २ कसी किस विप ?
(वि १२, पर गहा) । कडि य
[कडयि] किसी लख (पा १४८) ।

'कडा की [कडा] धन-धन को जल
करनेवाली कसा लिकमा (भाषा) । 'वि
की य [वि] किसी लख, किसी
प्रकार-से (पा १२७ अ ३६ टी) । 'वि य
[वि] किसी लख (पर) ।

कडक पु [कडक] प्रमोद-वस्तु कल कुटी
का लोह (अ १—पद ११९) कप) ।

कडक यक [कडकय] कुटी का लोह
भगना । बड, कडकवि (एण १ २) ।

कडकक पु [कडकक] कुटी का लोह
(क) ।

कडक पु [कडक] कलगीय (भाषा २,
१३ २) ।

कडग वि [कडग] १ कडगा (गुन १
२१) । २ पु वन-वार (अ १ ३१ टी) ।

कडग न [कडग] कल गीर (अ १ ३१ टी) ।

कडग न [कडग] कल गीर (अ १ ३१ टी) ।

कडग न [कडग] कल गीर (अ १ ३१ टी) ।

कडग न [कडग] कल गीर (अ १ ३१ टी) ।

कडग न [कडग] कल गीर (अ १ ३१ टी) ।

कडग न [कडग] कल गीर (अ १ ३१ टी) ।

कडग की [कडग] ऊपर देखो (अ १ ३१
उ ४८ १२८) ।

कडग केओ कडग (वि १ १४८) ।

कडग पुन [वि] बर्न, कडग (अ १ ३१
उ ४८ १२८) ।

कडा की [कडा] कसा बाणा इरीय (गुन
२ २३, गुना लण ७३) ।

कडाभा [न] [कडाभा] १ कसा कल
पडाभा (अ १२; ल ३ ११८) । २
प्रमोद प्रमोद 'कड से कड बलिबलि
कडगुलियर' (अ १२३ ३८८) । ३
प्रमोद काय कडगुलियर' (अ १२३ ३८८) । ४
प्रमोद काय कडगुलियर' (अ १२३ ३८८) ।

कडाय लक [कडय] कडगा गुनगना ।
कडिग (गहा) ।

कडाय पु [कडाय] विना-विशेष (वि २,
७१ २३; कुम) ।

कडायि वि [कडयि] कडगाय गुन (गुना
१२, ४२७) ।

कडि [य] [कड कड] कडि विन लण
कडिग [य] [कड कड] कडि विन लण
कडि (वि २, ७३; कुम) ।

कडि वि [कडयि] कडगाय गुन (गुना
१२, ४२७) ।

कडि वि [कडयि] कडगाय गुन (गुना
१२, ४२७) ।

कडि वि [कडयि] कडगाय गुन (गुना
१२, ४२७) ।

कडि वि [कडयि] कडगाय गुन (गुना
१२, ४२७) ।

कडि वि [कडयि] कडगाय गुन (गुना
१२, ४२७) ।

कडि वि [कडयि] कडगाय गुन (गुना
१२, ४२७) ।

कडि वि [कडयि] कडगाय गुन (गुना
१२, ४२७) ।

कडि वि [कडयि] कडगाय गुन (गुना
१२, ४२७) ।

कडि वि [कडयि] कडगाय गुन (गुना
१२, ४२७) ।

कडि वि [कडयि] कडगाय गुन (गुना
१२, ४२७) ।

कडि वि [कडयि] कडगाय गुन (गुना
१२, ४२७) ।

कडि वि [कडयि] कडगाय गुन (गुना
१२, ४२७) ।

धम पुं [धम] १ इन्द्रक कामना अधिष्ठाता (पुत्र १४ भाषा प्रामु १६) । २ सुखर राज्य, कय बौद्ध विषय (मय ७७ डा ४४) । ३ विषय का अधिष्ठाता (कुमा) । ४ मरुत कर्मणं (कुमा प्रामु १) । ५ इन्द्रिय-श्रीति (धर्म १) । ६ मैत्रुन (पण्ड २) । ७ धम्म-विरोध (विप) ।
 धम न [धन्त] देव-विमान-विरोध (बीच १) । धम न [धम्म] सात्विक देव-भोक् के धम् का एक साधन-विमान (डा १—पण्ड ४१७) । धाम वि [धम] विषय की बाहुल्यता (पण्ड २) । धमि वि [धमिन्] विषय-अधिष्ठाता (धापा) । कुड न [कुट] देव विमान-विरोध (बीच १) ।
 गम वि [गम] १ स्नेह-वाचो लैरी (बीच १) । २ न केो कम् (बीच १) । गामी की [गामी] विद्या-विरोध (पठन ७ ११४) । गुण न [गुण] १ मैत्रुन (पण्ड १ ४) । २ राज्य-मनुष्य विषय (जट १४) । गड पु [गट] इन्द्रिय बीज को केलाता विषय बरता (भा १४) । गड न [गड] स्थान-वीज विषय बेटकर एला विद्या बाता है गड पट्ट 'किराण्डी' पु कामवन' (निष्ठ ११) । गुग पुं [गुग] पति-विरोध (बीच १) । गम्प न [गम्प] देव-विमान-विरोध (बीच १) गम्पया की [गम्पया] इस नाम की एक देवता (विपा १ २) । 'ट्टि वि [गम्पिन्] विषय-अधिष्ठाता (धापा ११) । विड्डय पुं [विड्डि] १ कैल धातुओं का एक गड (डा ६—पण्ड ४१६) । २ न कैल दुमियों का एक गुड (एव) ।
 जयर न [जगर] विद्या-वर्षों का एक नगर (रु) । जाहपी की [जाहिन्] ईश्वर पत्र को केलाती विद्या-विरोध (पठन ७ ११४) । गुहा की [गुहा] कमके (भा ११) । 'देव दृष्ट पुं [देव] १ कर्मय नगर (मट एण्ड १४) । २ एक कैल वाक्क का नाम (ज्वा) । 'वेणु की [वेणु] ईश्वर पत्र केलाती पी (रुक्) । पाड पुं [पाड] १ देव-विरोध (बीच) । २ कलदेव हताशु (वाप) । (पपासय वि [पिपसय] विषय-अधिष्ठाता (मप) । पुर न [पुर] इस धम का एक विद्या-वर्ष (रुक्) । प्यस

न [प्रम] देव-विमान-विरोध (बीच १) । प्यस पुं [प्यस] वह-विरोध बहा-विद्याता देव-विरोध (गुज २) । महावय न [महावय] बगल के समीप का एक कैल (भा १४) । रूप पुं [रूप] देव-विरोध को बाताम में है (विप) । सेस्स [सेत्तय] देव-विमान-विरोध (बीच १) । यण्ड न [यण] एक देव-विमान (बीच १) । सरव न [सारव] रति-साधन (धर्म १) । सममुण्ड वि [सममुण्ड] कामा वज कामन्व (धापा) । 'सिंहार न [सिंहार] देव-विमान विरोध (बीच १) । सेड न [सिड] एक देव विमान-विरोध (बीच १) । तवट्ट न [तवट्ट] देव-विमान-विरोध (बीच १) । त्वसाहल की [त्वसाहल] बोपी का एक उण्ड का दीर्घ बिल में बोरी पत्थरी इन्द्रक अनुसार सर्व पदार्थों का धर्मोचित में सारित करता है (एव) । तंसा की [तंसा] विषय-अधिष्ठाता (डा ४ ४) ।
 धर्म म [धम्म] इन धर्मों का सूचक कथ्य—१ धर्म-चारा (धुम २ १) । २ अनुमति सम्पत्ति (निष्ठ ११) । ३ धम्मपगम स्वीकार (धुम २ १) । ४ धर्मिष्ठ, धर्मिक (वि २, २१७) ।
 धर्मग न [धम्मग] कर्मणं का करोक स्थान बरैय (धुम २ २) ।
 धर्मगुहा की [धम्मगुहा] कमके, स्थित बलु की केलाती विष्णु की (पठन २ १४) ।
 धर्मय पुं [धम्मय] विषयानु, पीछ कमी (प्रामु १७१) ।
 धम्मफितोर पुं [वि] पर्यन्त कता (वि २, १) ।
 धम्मग वि [धम्मग] १ धर्मिय-श्रीति, वाक्क-श्रीति (पण्ड १ १) । २ बाहनेलता इन्द्रक (धुम १ २ २) ।
 धम्मग न [धम्मन] बाह अधिष्ठाता 'पण्ड विष्णु-मयपी थीता बरपमि कर्मणं' (महा) ।
 धम्मय केो धम्मग (ज्वा) ।
 धमि नि [धमिन्] विषय-अधिष्ठाता (धापा बरव) ।

धमि वि [धमिन्] धम्मिन्नी (धुम १२४) ।
 धम्मिन् नि [धम्मिन्] धम्मिन्नी धम्मिन्नी (धुम २५२) ।
 धम्मिन् वि [धम्मिन्] १ धम्म-धम्मिन्नी, विषय-सम्पत्ति (मट १११) । २ न, धर्म-विरोध (पी २८) । ३ शरीर-विरोध, विषम स्थित नम मिश्रा है (एव) । ४ वि इन्द्रक वृष्ट करोलता (डा ११) । ५ वि इन्द्रक इन्द्रकाला, धम्मिन्नी (विपा १ १) ।
 धम्मिन्नी की [धम्मिन्नी] इन्द्रक धम्मिन्नी, 'धम्मिन्नी-विद्युति इन्द्रक' (महा १ १) ।
 धम्मिन्नी पुं [धम्मिन्नी] धम्मिन्नी (वि २ २६) ।
 धम्मिन्नी पुं [धम्मिन्नी] एक कैल धुमि, धर्म गुरु-स्थिति का एक स्थान (कम्प) ।
 धम्मिन्नी न [धम्मिन्नी] कैल धुमिों का एक कुल (कम्प) ।
 धम्मिन्नी की [धम्मिन्नी] कम्प, की (धुम २) ।
 धम्मिन्नी वि [धम्मिन्नी] कम्प विष्णु बाहो कम्प (वि २७२) ।
 धम्मिन्नी वि [धम्मिन्नी] कामी विष्णु-अधिष्ठाता धम्मिन्नी (वि २१६, महा) । 'सरव न [धम्मिन्नी] काम-साधन, रति-साधन (धुम २ १) ।
 धम्मिन्नी-विष्णु न [धम्मिन्नी-विष्णु] देव-विमान-विरोध (बीच १) ।
 धम्म पुं [धम्म] १ कर्मण्य की एक बरि (धुम २ १ ११) । २ एक धम्म (धुम २) । ३ धुम बीज विषय बीज-धम्म 'पयाई कमाई पनेल्ला' (धुम १ ७ २) ।
 धम्म वि [धम्म] बका शरीर-साधन (धुम २ १ ११) । वह पुं [धम्म] बीज-हता (धापा १४६) ।
 धम्म पुं [धम्म] १ शरीर, देह (डा १, १ कुमा) । २ समुद्र, रति (वि २) । ३ कैल-विष्णु (पण्ड १ १) । ४ वि उण्ड पत्र में रखेलाता (महा १) ।
 धम्म वि [धम्म] शरीर की वर में रखेलाता (मप) । 'गुमि की [गुमि] शरीर की वर में रखला विरोध-पदा (मप) । जोम भोग पुं [धम्म] शरीर ध्यान, शरीर-विष्णु (मप) । भोगि नि [धम्मिन्नी] शरीर-धम्म

कम पुं [कम] १ शब्द नामना धनिताया
(अत १४) याथा प्राप्त १६)। २ सुन्दर शब्द, रूप
बनेरु विषय (मन ७ ७ अ ४४)। ३ विषय
का प्रतिभाषा (कुमा)। ४ पञ्च बन्धन (कुमा)
प्राप्त १)। ५ अक्षिप-श्रीष्टि (बर्मे १)। ६
मैत्रुण (परह २)। ॥ छन्द-विशेष (विम)।
कन न [कान्त] देश-विमान-विशेष (बीज
३)। कम न [कम] साम्नाक देश-सोफ
के इष्ट का एक नाम-विमान (छ १ — पञ्च
४१७)। काम वि [काम] विषय की
वाह्यता (परह २)। कामि वि
[कामिन्] विषयान्तापे (वापा)। कूड
न [कूट] देश-विमान-विशेष (बीज ३)।
कम वि [काम] १ स्वेच्छापाठो स्वेष्टो
(बीज ३)। २ न देखो कम (बीज ३)।
कामि की [कामी] विमान-विशेष (पञ्च
७ १११)। काम न [काम] १ मैत्रुण
(परह १ ४)। २ कर्म-प्रमुख विषय (अत
१४)। कड पुं [कट] स्थित बीज को
केवलता विषय बलत (आ १४)। जल न
[जल] लगान-नीक, बिस्तर बैठकर लाल
किन्ना बन्ना है बड़ पड़ा विद्यालयीय पुं
कामयव (विह १३)। जुग पुं [जुग]
पञ्च-विशेष (बीज ३)। उन्मय न [ज्वल]
देश-विमान-विशेष (बीज ३) उन्मया की
[ज्वल] इस नाम की एक देश्या (विपा
१ २)। द्वि वि [जिम्ब] विषयान्तापे
(आया ११)। द्विपु पुं [द्विपु] १ कैल
छात्रों का एक कड (अ १ — पञ्च ४३१)।
२ न. कैल धुमिलों का एक कड (एव)।
जयर न [जमर] विद्यापठों का एक जयर
(एव)। दाहणी की [दाहिनी] स्थित
पञ्च की केवलता विद्या-विशेष (पञ्च ७
१११)। दुहा की [दुहा] कामकेतु (आ
११)। देव देव पुं [देव] १ अर्धव
बन्धन (नाम स्पष्ट ३३)। २ एक कैल
कारक का नाम (आ)। जेपु की [जेपु]
स्थित कम केवलता की (कम)। पाड
पुं [पाड] १ देश-विशेष (बीज)। २ बलदेव
हमसुव (वाप)। पेपासय वि [पिपासक]
विषयान्तापे (मन)। पुर न [पुर] इस
नाम का एक विद्यापठ (एव)। प्यम

न [प्रम] देश-विमान-विशेष (बीज ३)।
कस पुं [कस] ग्रह-विशेष ग्रहविज्ञाना
देश-विशेष (धुम २)। महापञ्च न
[महापञ्च] बगल के समीप का एक
सैव (मन १५)। रुज पुं [रुज] देश-
विशेष को याताम में है (विम)। होस्म
[होस्म] देश-विमान-विशेष (बीज ३)।
वण्ण न [वर्ण] एक देश-विमान (बीज
३)। सख न [शाख] पर्व-शाख (बर्मे
२)। समयुग्ग वि [समयोज] कया
छड, कयाव (वापा)। सिंगार न
[शृङ्गार] देश-विमान-विशेष (बीज ३)।
सिप न [शिप] एक देश-विमान-विशेष
(बीज ३)। चट्ट न [चर्त] देश-विमान-
विशेष (बीज ३)। तसाइत की [तसा
यिता] बोरी का एक छड बादेरवर्ष जिसमें
बोरी अपनी इच्छा क अनुसार छर्ष पचावों
का चर्चनित में समवेष्ट करता है (पञ्च)।
तससा की [तस्ता] विषयान्तापे (अ
४ ४)।
कर्मय [कामय] इस पद्यों का सुख
कामय—१ प्रवचन (धुम २ १)। २
धनुमति सम्पत्ति (विह ११)। ३ धनुमकम
स्वीकार (धुम २ १)। ४ धनुमि, धनुमि
(हे २ २१७)।
कर्मग न [कामग] कर्मों का बलदेव
लाल बनेरु (धुम २, २)।
कर्महुडा की [कामहुडा] कामकेतु, स्थित
बलु की केवलता विषय की (पञ्च २
१४)।
कर्मय पुं [कामय] विषयानुर, सीध वाली
(प्राप्त १७१)।
कर्मकिरीट पुं [कि] धर्म, नवा (हे २,
१)।
कामग वि [कामक] १ धर्मविषयसीध, वाक्य-
वीय (परह १ १)। २ वाक्योपल्ला इच्छु
(धुम १ २ २)।
कामय न [कामय] वाह धनिताया 'पञ्च-
विद्यामहेष्टो बीधा नवविम बन्धन' (महा)।
कामय देखो कामय (आ)।
कामि वि [कामिन्] विषयान्तापे (वापा,
बड)।

कामि वि [कामिन्] धनि
कामिअ वि [कामित] —
(धुम २५१)।
कामिअ वि [कामि
विषय-सम्पत्ति (मन
विशेष (बी २८)।
स्थित सम्पत्ति
इच्छा पूर्ण पञ्च
इच्छु इच्छा
कामिआ की [कामिआ]
"कामिआ"
कामिनुड पुं
२ २६)।
कामि—
धुमि—
कामि
एक
काम
५
कामि
—
का
पा
—
प
—
पा
(
—
का
५
—
(वा—
काम पुं।
कुमा)।
देश-विशेष।
में पुनेताया
शरीर की बड
की [रुमि] ६
विशेषिका (कम)
[रुमि] शरीर व्याप
(मन)। जोगि वि [रुमि]

१ श्री काशी नदी बजारस गहर (गुमा) ।
पुर न [पुर] काशी नदी बजारस गहर
(पत्रम १ ११७) । राय पुं [राय] काशी
रेठा ना राजा (उत्त १८) । व पुं [व]
काशी रेठा का राजा (पत्रम १ ४ ११) ।
वह्मण पुं [वर्धन] इस नाम का एक
राजा विजये भगवान् महावीर के पास शीला
वी की (ठा ८—पत्र ४१) ।

कासिञ्च न [रे] १ मूल्य बरु बापिक
कड़ा । २ छत्रे बरु (रे २ ११) ।
कासिञ्च न [कासिञ्च] लोक सुद (राज) ।
कासिञ्च न [रे] कासिञ्च-नामक रेठा (रे
२, २०) ।
कासिञ्च नि [कासिञ्च] काशी रोपनामा (विषा
१ ७—पत्र ७२) ।

कासी की [कासी] काशी बजारस (गुमा
१ ८) । राय पुं [राय] कम्प्री का राजा
(विष) । स पुं [स] काशी ना राजा
(विष) । सर पुं [सर] काशी का राजा
(विष) ।

काह एक [कय] कथा । काहपति (गुप्त
१ ११ १) ।

काह रेको काहार (स ४ १ टी) ।

काह नि [रे] १ गुड, कोमल । २ छत्र, बुरत
(रे २, २८) ।

काह नि [काह] कय, अलोक, कभीर
(हे १ २१४ २२४) ।

काह पुं [काह] १ नाथ-विशेष (गुर १
१६ कीप एरि) । २ सम्पद वाचक (अष्ट
२ २) ।

काहस की [काहस] नाथ-विशेष सहा-
कता (विष ८७) ।

काहिया की [काहिया] धामपुण-विशेष
(पत्र २०१) ।

काहरी की [रे] ठपरी गुपरी (रे २, २६) ।

काहरी की [रे] १ बरु करने का नाथविष ।
२ ठपा विहार पुरी या पुरी बरुए पकरी
बाती है (रे २, २६) ।

काहार पुं [काह] कहार, एक भाति नौ पानी
करने धीर होनी बरुए होने का नाम करती
है (रे २ २०) अर्थ) ।

काहार पुं [रे] कनर, बहीरी (गुप्त १ ६) ।
३१

काहिया पुं [काहिया] शिकार-विशेष (हे
२ ७१ पण्ड १ २ पत्र (प्राय) ।

काहिय नि [काहिय] कमा-कार, मार्ग करने
वाला (वह १) ।

काहिक पुं [वि] गोपाल ग्वला, जी स
(रे २ ३८) ।

काहिया की [रे] ठपा विहार पुरी प्रावि
पकरी बाती है (प्राय) ।

काहीय रेको काहय (गम्ह १ ६) ।

काह्याय न [कारियायनिदान] धामपुण
की धारा से दिया बाधा यान (ठा १) ।

काह्ये व [काह] कम किस समय ? (हे २,
१३, पत्र २४ प्राय) ।

काह्यु की [रे] गुहा सात रती (रे २
२१) ।

कि रेको कि (हे १ २६ पत्र) ।

कि एक [कु] कथा बनाता 'कुर्वि कण्ठ'
(विषे १३) । कण्ड किञ्च (गुर १
१ ३ १४ २६) ।

किञ्च रेको कय = इत (काय १२३, प्राय १३,
सम् ४ नै १३३ बजा ४) ।

किञ्च रेको किञ्च = इत (पत्र) ।

किञ्च नि [किय] कितना (सण) ।

किञ्च रेको कय (अष्ट २१) ।

किञ्चादिमा की [कञ्चादिका] ग्हा का उग्रत
मय (प्राय) ।

किञ्च की [कवि] इति किया, विधान (पत्र
प्राय ल) । कम्प न [कर्म] १ कर्म
प्रलयन (स २१) । २ कर्म-करण (स
१४ १) । ३ विद्यापणा (अष्ट ना १२) ।

कि ल [किम्] कील क्या करें, निषा
प्रल घटितय धरता धीर साहस्य की
बलनालेनाला सव (हे १ २१ ३ ३८-
७१ गुमा विषा १ १ निष्ठ ७१) 'कि
कुर्वति गरीषी वात स्रग्मेहि निर्वति'
(प्राय ४) । सय व [पुम] ठव फिर,
डिर क्या ? (प्राय) ।

किञ्चक्या रेको किञ्चायक्या (प्राय २,
२, १) ।

किञ्च पुं [किञ्च] इस नाम का एक
गुह्य (पत्र) ।

किञ्च पुं [किञ्च] नीकर बाकर, बस (गुप्त
१ २२१) । सय पुं [सय] १ पर
मेघर, परमाणा । २ धम्यु विष्णु (अष्ट
२) ।

किञ्च की [किञ्च] दासी नीकरायी
(कपु) ।

किञ्चाय रेको केकाय (अष्ट २१२) ।

किञ्चायक्या की [किञ्चायक्या] क्या
कथा है यह जानना । मूढ नि [मूढ]
किञ्चाय-विमूढ हृदयका नीचता यह
मनुष्य जिसे यह न मूम पड़े कि क्या किया
जाय (महा) ।

किञ्च पुं [किञ्च] सम्पद सम्प-विशेष
(विषि २४१) ।

किञ्च नि [रे] छत्रे, पत्र (रे २ ११) ।

किञ्चाय नि [किञ्चाय] हृदयका
यह मनुष्य जिसे यह न मूम पड़े कि क्या
किया जाय (या ७) ।

किञ्चिया की [किञ्चिया] सुद बरिदका,
करनी (गुप्त १२६) ।

किञ्चि की [किञ्चि] ऊपर रेको (गुप्त
१२४ गुमा) ।

किञ्चि रेको किञ्चि (विहार ४६१) ।

किञ्चि नि [किञ्चि] सुद नीट-विशेष,
नीचिय कीच की एक भाति (राज) ।

किञ्च व [किञ्च] समुद्र-धोतक सम्पद, धीर
वी वृष्ट वी (गुर १ ४ ४१) ।

किञ्च न [किञ्च] १ सम्प-हण नीट
(विषे १४१) । २ व, गुह्य, किञ्चि (अष्ट
२) ।

किञ्च न [किञ्च] इय वरु (उत्त ३२,
= गुप्त ३२, ८) ।

किञ्च नि [किञ्च] गुह्य प्रयास
(गुप्त ४१) ।

किञ्च व [किञ्च] सम्प ईय, घोस
(वी १; सन ४७) ।

किञ्चमाय नि [किञ्चमाय] स्वयं बहुत
नीच, घटितार (गुप्त १४२) ।

किञ्च नि [किञ्च] गुह्य नाम पुर्ण-नाम
(वीय) ।

किञ्च पुं [किञ्च] गुप्त-पण पण
(गुप्ता १ १) ।

उत्तमं भित्ति बाधा है उस तरह विद्या हुआ (अ)।

किट्ट नि [किट्ट] क्लेश-युक्त (अ) १ २, बीष १)।

किट्ट नि [कट्ट] बीषा हुआ हृत्-विचारित (पुर ११ २१; मय १ २)। २ न वेद विमान विरोध 'ये वदा विरिचक्य विरिचाम नंदं मत्सं किट्ट (१ ट्ट) बाधोपपन्नं यद एतद्विचर्य विमलं देवताय उच्यते' (सन १६)।

किट्टि स्त्री [कट्टि] १ कर्ण २ बीषा बाधकर्मणः। ३ देवविमान-विरोध (मय ६)।

कट्ट न [कट्ट] देवविमान विरोध (सन ६)। बीस न [पाप] विमान विरोध (सन ६)। मुक्त न [मुक्त] विमान-विरोध (सन ६)। वस्य न [व्यस्य] विमान विरोध (सन ६)। प्यस न [प्यस] वयविमान विरोध (सन ६)। वज्ज न [वज्ज] विमान-विरोध (सन ६)। 'सिग न [शृङ्ग] विमान-विरोध (सन ६)। 'सिह न [शिष्ट] एक देव विमान (सन ६)।

किट्टिवाचक न [कट्टवाचक] देवविमान-विरोध (सन ६)।

किट्ट दुत्तरविज्ञा न [कट्टदुत्तरवर्त्तक] इस नाम एक देव-विमान वेद-यजन (सन ६)।

किट्टा नि [कीट्टक] बीषा कलेवाला (सूय १ ४ १ २ टी)।

किट्टि दु [किट्टि] सुकर, सुसर (हे १ २३१ पद)।

किट्टिकिडिया स्त्री [किट्टिकिडिका] युष्ठी हठी की माना (शासा १ १—पत्र ७४)।

किट्टिम दु [किट्टिम] रोप विरोध एक प्रकार का सुख कोष्ठ (बहुम १३ मय ७ ६)।

किट्टिया स्त्री [के] बिड़की बीषा डार (स ३०१)।

किट्ट एक [कीट्ट] सेना कीड़ा करता। नर किट्ट (सि १४७)।

किट्टकर नि [कीट्टकर] बीषा-कारक (वीर)।

किट्टा स्त्री [कीट्टा] १ बीषा सेना (विना १ ७)। २ वायनास्ता (आ १—पत्र ३१६)।

किट्टाधिया स्त्री [कीट्टिका] बीषा-भागी वासक को सेन-युद्ध करनेवाली बाई (शासा १ २६—पत्र २११)।

किट्टि नि [के] १ संयोग के लिए जिसको एकांत स्थान में लाया जाय वह (नय ३)।

२ स्वविर, कूट (सह १)।

किट्टिन न [किट्टिन] संघासिनों का एक पात्र, जो बीस का बना हुआ होता है (मय ७ ६)।

किट्ट स [की] करीबना। विचार (हे ४ ३२)। वड 'ये किट्ट मिथ्यामेयसे हूयें वायमारों' (सूय २ १)। किट्टत (सूय ३६६)। उट्ट, किट्टिता (सि ५०२)। प्रयो किट्टमेर (सि ३३१)।

किट्टा दु [किट्ट] १ कर्ण-विष, कर्ण की मिश्राणी (पत्र ३)। २ मोस-बीब। ३ बुद्धा वाज (सूय ३ ३६)।

किट्टय नि [के] सोनित विद्रुपित (पत्र १२ ६)।

किट्टय न [क्रयण] बीका करीब, कम (उप दु २३०)।

किट्टा सेवी किट्टा (प्रम ६ १ १६)

किट्टि नि [क्रयिन्] करीबनेवाला (सम्बोध १६)।

किट्टिकिय नक [किट्टिकियन्] किण-किण बसावा करना। वड किट्टिकियित (बीष)।

किट्टिय नि [कीट्ट] बीषा हुआ करीब हुआ (सूय ४४४)।

किट्टिय दु [किट्टिक] १ मनुष्य की एक बाधि, जो बाधा बनाती घोर बसाती है (नय ३)। २ लकी बनने का नाम कलेवाली मनुष्य बाधि 'किट्टिया उ वरतासी बलित' (वीर)।

किट्टिय न [किट्टित] वास-विरोध (पत्र)।

किट्टिया बी [किट्टिका] छोटा छोटा कुनडी 'यमेवि सई महीयलमिथिय पुण्यकिट्टिकोमिस्सा।

मालुवकम्पकीकम्पयिगहा

कवि किट्टित' (स १०)।

किट्टिस एक [राजप] तीरछ करना, पैर करना। किट्टिस (सि)।

किट्टो य [किट्टि] क्यों किट्टित? (हे २ ११ हे २ २१६) पात्र गा १७ मही)।

किट्टा नि [कीट्टे] १ लकीर, बुद्धा हुआ 'उचमकिट्टेयम् बट्टमयिम्' (सूय २७१)।

२ धित, कैंका हुआ (आ ६)।

किट्टा दु [किट्ट] १ यमनासा हुन-विरोध जिससे वाक बनता है (गठक भाषा)। २ न सुख बीन किट्ट-युक्त के बीन जिसका वाक बनता है (उत्तर १)।

सूय बी [सूय] विप-युक्त के पत्र से बनी हुई मछिण (नय ३)।

किट्ट नि [के] रोममान रावमान (हे २ १)।

किट्टा य [किट्टम्] प्रस्तावक अध्यक्ष (नय)।

किट्टर सेवी किट्टर (नं १ पत्र ६६)।

किट्टा य [कट्टम्] क्यों क्यों कर, कैसे? 'किट्टा यदा किट्टा पत्ता (विपा २ १—पत्र १ ६)।

किट्टा य [किट्ट] इन सभी का सुकक सम्बन्ध—१ प्रसन्न। २ विरत। ३ साहस्य। ४ स्वाग, स्वस। ५ विकल्प (उप स्वय ३४)।

किट्टा केवा कट्ट (स १३, शासा १ १; उर ६ ३, पत्र १७)।

किट्ट त [के] १ बारीक कपड़ा। २ लट्ठ कपड़ा (हे २ ३६)।

किट्टा दु [के] बर्पाकल में बड़ा घाघि में होलासी एक तरह की कढ़ी (बीस ३६)।

किट्टा सेवी कट्टा (आ ४, १—पत्र १३१ कम ४ ११)।

किट्टा दु [किट्ट] सुकर, बुद्धा (हे ४ ५)।

किट्ट सेवी किट्ट (पत्र २)।

किट्ट सेवी किट्ट—बीसपु। यदि किट्टरत्त (पत्र)। उट्ट किट्टरत्ताय (पत्र ११६)।

किट्टा न [कीट्टन] १ लावा लुति 'तव म विरुत्त पति किट्ट' (पत्र ४ ६ ११ ११३)। २ बर्णन प्रतिपादन। ३ वजन, पत्रि (पत्रि ६४; वरक मुम)।

किट्टा बी [कीट्टा] कीर्तन, बर्णन प्रशंसा (पत्र ७५५)।

किरिगिष्ठ नि [किरिगय] किरिगयाना
वेसली (मुर २, २४२)।

किराह [किराह] १ प्रताप वेग रिदेह
किराय (पत्र १४८)। २ मीन एक जमीनी
बासि (मुर २ २७; १८। मुरा १११ हे
१ १८३)।

किराह (ली) रेवो किराय (ग्रह ८१)।

किरि रेवो किर = निम (किरि ८१२ ८१४)।

किरि वु [किरि] मारु की माराम बरवाह
किरिपि बरवाह किरिपि बरवाह किरिपि
किरिपि वरा (पत्र १४ ४२)।

किरि वु [किरि] मारु, मारु (गठ ३)।

किरिआय रेवो किराय 'मर्म'उपयहिमनुम
किरिआयों (बुधक २१)।

किरिउरिया [ली] [दे] १ कर्णोत्कर्षिका
किरिकिरिआ [एक नाम मे कुम्हरे कान मई
हई बाह वा। २ कुम्हुरन कीमुक (हे २,
११)।

किरिकिरिया ली [दे] बाध-विरोध बाध
बाधि की बन्ना—सकरी से बना हुआ एक
प्रकार का बाधा (माका २ ११)।

किरिउय रेवो किराय (ग्रह—मास १७)।

किरिवा ली [किपा] १ मिया इति क्या
वार, प्रवाल (मुर २ १; छ ३ १)। २
शालकोट मनुमान, बर्मिमान (मुर २ ४
पत्र १४८)। ३ शारय व्यापार (मुर १७
१)। ४ हाज न [रधान] कर्मकाय का
बारण (मुर २ २ बाध ४)। वर वि
[पार] मनुमान-मुदण (वर १)। बाह वि
[बादिम] १ मालिक कीबादि का मालिक
मानवाना (छ ४ ४)। २ बैसन जिय से
ही मोय होता है ऐसा मानेवा (छ ४
२)। पिसास न [विशार] एक
बैन प्रकार, लछना पूर्व-जन्म (छ २४)।

किरीह वु [किरीह] कुट, किरि मुरण
(माम)।

किरीह वु [किरीह] घट्टन मयम बाणवर
(रेवी ११२)।

किरीन नि [कीन] कैना हया, मरीदा हया
(ग्रह)।

किरीय वु [किरीय] एक मनेय टो। २
उपन कनय मनेय बादि (पत्र)।

किरीह वु [किरीह] घट्टन मयम बाणवर
(रेवी ११२)।

किरीन नि [कीन] कैना हया, मरीदा हया
(ग्रह)।

किरीय वु [किरीय] एक मनेय टो। २
उपन कनय मनेय बादि (पत्र)।

किरोसय न [किरोसक] फन-विरोध किरो-
सिवा मरीदा का फन (वर १ २)।

किह रेवो किर = निम (हे २ १८६) पत्र
मुयो)।

किहल नि [हान] निम, माल (वर १)।

किहल न [किहल] बाध का एक पाष
विषम मैय मनेय की खाना सिमाया भावा
है (उवा)।

किहल न [किहल] दुण-विरोध (बर्मि
११२ १११)।

किहलिक म [किहलिक] निम
किहल घासन कला हुका 'निमविरोध
व्य वहरिण मलिहकीकिरिगिरीलेण' (मयु)।

किहलिकिय न [किहलिकिय] किम
किहल र्वली हुय-निम (मास)।

किहली ली [ह] रया, ली (हे २ ११)।

किहलम म [ह] कनय होना निम
होना। निममह (कयु)। निममयि (बमा
१२)। वर किहलम (हे १११)।

किहलम न [कीहलम] म नाम का
एक छत्र—हुल (निम)।

किहलम वु [किहलम] हुक का विचार-विरोध
मारी (हे २ २२)।

किहलम म [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलम म [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलम वु [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलम वु [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलम वु [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलम वु [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलम वु [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलम वु [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलम वु [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलम वु [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलिक म [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलिक म [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलिक म [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलिक म [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलिक म [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलिक म [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलिक म [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलिक म [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलिक म [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलिक म [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलिक म [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलिक म [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलिक म [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलिक म [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलिक म [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलिक म [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलिक म [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलिक म [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलिक म [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलिक म [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

किहलिक म [ह] कनय कनय निम
बला मयमि उलय करना। किहलम
(हे १११)। वर किहलम (मय २, १)।

कीया पुं [कीयक] विष्ट पेट के रासा का साता जिसको भीम ने याद था (उप १५५ टी)। भर्मा ब्रूम विष्टमर, ठण लो गुम कि (१०) यां यष्टममर (छाया १ १९—पत्र २ १)।

कीया की [कीय] मयन ठाण 'अरजतम चारकसितनकलकीमराधिसम्' (छाया १ १ टी—पत्र १)।

कीर पुं [कि] चर] मुक्त गोला मुग्गा (वि २ २१ उर १ १४)।

कीर पुं [कीर] १ दण-विरोध बरमीर देर। २ कि बरमीर देर संकी। ३ कि बरमीर देर में उत्पन्न (विदे ५६५ टी)।

कीरव कीरमाय } देको कर = क।

कीरक पुं [कीरक] देठ-विरोध (पत्रम १८ १४)।

कीरिस देको केरिस (वा १०५ वा ४)। कीरी की [कीरी] सित-विरोध कीर देठ की सिरि (विदे ५६५ टी)।

कीरक मक [कीर] कीड़ा कपटी, बेला। कीमर (मर)। बह कीरस कीरमाय (पुर १ १२१ नि २५)। संह कीरसेठा कीरिजम (पुर १ ११७ नि २५)।

कीर कि [कि] लोक मयन कोषा (वि २ २१)।

कीर देको कीर (पत्र)। कीर पुं [कि] कीर] दण पठा (पुत्र १ २, १ २)।

कीरम म [कीरम] कीर से बन्धन, कीरे में सिद्धनरा 'अरिमण्णीलीउण्ण' किम्पिण्डि पुहविरीए' (मर २)।

कीरम न [कीरम] कोषा सेल (वीप)। माइ की [माइ] बाण की सेल-बुह बरनेमानी बर (छाया १ १)।

कीरगय न [कीरनक] बिनीना (पति २४२)।

कीरसिज्या की [कि] रम्पा मयो (वि २ कीरणी) } ११)।

कीर की [कि] १ न-बहु बुनदिन (वि २ ११)।

कीर की [कीर] मुक्त समय में बिया बाण हृष-गान्ध विरोध (वि २ १४)।

कीर की [कीर] सेन कीरन (पुत्रा १२५ पुर १ ११७)। बास पुं [बास] कीड़ा कले का स्वात (रु)।

कीरम न [कीरम] बरि बून एक (उप ८६ पात्र)।

कीरसिज्या वि [कीरसिज्या] रबि-मुक्त, बून-बला (मर)।

कीरगय न [कीरन] बल करणा (छाया १ २)।

कीरसिज्या न [कीरनक] बिनीना (तिर १ १)।

कीरन न [कीरन] कीर एण कीरन (उप १२५ व २४१)।

कीरिज्या वि [कीरिज्या] बूटा लेका हुवा 'मिस्सिब नीपिय' (मर २४५)।

कीरिज्या की [कीरिज्या] १ दण बूटा, बूटी (कम १ १२)। २ राठीर संहम-विरोध राठीर का एक प्रकार का बाँधा जिसमें दूधिया केवल बूटी से दो बीबी हुई हों ऐसा राठीर-बन्धन (उप १४८ कम १ १२)।

कीर पुं [कीर] १ मुक्त (हृ ४)। २ वि काठ, घनीर (पुर २ १५ छाया १ २)।

कीर पुं [कि] कीर] पति-विरोध (पत्र १ १—पत्र ८)।

कीर वि [कीर] कीना विर दण का (मर ५४५ पत्र १४)।

कीर वि [किर] कीन स्वभावता कीरे स्वभाव का (मर)।

कास म [कम्म] कर्मा विष्ट स विर कास से ? (उप १ १, १८)।

कीर देको किस्सि। कीरि वि (उप १ १२, वि ११)। बह कीरिय वि (८३)।

कु म [कु] १ दण बीड़ा। २ विविध, विषा वि। ३ बुविष्ट, विविष्ट (वि २ २४७)। से १ २१ कम १)। ४ विरोध प्यास (छाया १ १४)। उरिष्ट पुं [पुस] बरल माली बुन (वि १२ ११)। बर वि [बर] बरण बाल-बन-बला, बरणार रविष्ट (प्यास)। 'हं ह पुं [हं] वार-विष्ट विष्टका माल माल का होवा है ऐसा उर-वार (पत्र १ १)। बरिष्ट वि [विष्ट] वर वर बीड़ा हुवा मय

(विषा १ १)। ठेरि म [ठेरि] १ बलाय में चलने का बरण मार्ग (मर ४)। २ बुविष्ट बरान (पुत्र १ १ १)। ३ ठेरि वि [ठेरि] बुविष्ट मर का मनुष्यी (मुमा)। दंडिम देको बंडिम (छाया १ १—पत्र १७)। दंसम न [दंस] बुष्ट मर बुविष्ट बर (पत्र २)।

दंसम वि [दंसम] १ बुष्ट बरानि। २ बुविष्ट मर का मनुष्यी (वा १)। 'दिष्टि की [दिष्टि] १ बुविष्ट कर्तन (उप २८)। २ बुविष्ट मर का मनुष्यी (बर्न २०)।

दिष्टि वि [दिष्टि] बुष्ट बरण का मनुष्यी विष्णुकी (पत्रम १ ४४)। पत्र-मय न [प्रचन] १ बुविष्ट शान्। २ वि बुविष्ट विष्टा को मान्यता (मर)।

प्रावचणिय वि [प्रावचनिक] १ बुविष्ट विष्टा का अनुष्ठान करणता (पुत्र १ २)। २ बुविष्ट मयन-संकी (मनुष्य) (मर)। मर न [मर] बरण मयन (पत्रम २ १९९)। मार पुं [मार] १ बुविष्ट मर (पुत्र २, २)। २ मर-मर मर, बुल-मयन करणता मान (छाया १ १४)।

रंडा की [रंडा] रंड विष्टा (वा ११)। रंड लय न [रंड] १ बरण मर (उप १९२ टी पत्र १ ४)। २ माया विरोध (का १२ ३)। 'विम [विम] १ बुविष्ट मय (१४)। २ पुं कीट वपण्ड बुष्ट मर (विदे १७२५)। ३ वि बुविष्ट मयन का मनुष्यी (पत्रम)। 'विमि पुं [विमि] १ कीट वपण्ड बुष्ट मर (पत्र ४८८)। २ वि बुविष्ट मयन का मनुष्यी (पत्र १ २)। मय न [मय] बरण मय

को सोहृ बूटो कडण्डमार्ग विरिष्टमार्ग।

को विविष्ट पुत्र बर मयन मुनर दे' (बर्न ११)।

'विमप पुं [विमप] बुविष्ट विष्टा (पुत्रा ४४)। 'बुरि देको बरि (पत्र ११, ४२)। संमर पुं [संमर] बरण मयन बुन-संमरि (बर्न १)। मर पुं [मर] बुविष्ट मयन मयन-मर विष्टा 'मयमयार मय मय' (विष्ट

विष्टमार्ग)।

विष्टमार्ग)।

विष्टमार्ग)।

विष्टमार्ग)।

विष्टमार्ग)।

हुंम पु [हुंम] १ स्वभाव प्रविष्ट एक राजा
 समस्त मन्त्रिणां का पिता (सम १११ पृष्ठ
 २ ४२) । २ स्वभाव-व्यक्त ब्रह्म महर्षि
 ध्यायन्तं दीर्घक के प्रथम शिष्य (सम
 ११२) । ३ बुद्धत्वं का एक पुत्र (सि १२,
 ६३) । ४ एक विद्यावर बुद्ध का नाम
 (पञ्च १ ११) । ५ परमात्मिक ज्ञेयो की
 एक भाति (सम २३) । ६ कर्मल नदी
 (महा कुमा) । ७ हारी का कर्ण-सम्बन्ध
 (कुमा) । ८ बाल्य मान्य का एक परिचाय
 (मनु) । ९ वल्ले का उपकरण (मिह १) ।
 १ बसाह, घन्य-सम्बन्ध (पञ्च २) । ११
 अण्ड पु [हुंम] राजा के छोटे भाई का
 नाम (१५ ११) । आर पु [हुंम]
 बुद्धार, बड़ा भावि मित्र का बल्लभ भगिने-
 बाला (११ ३) । 'हर न [पुंर] नगर
 विष्टेय (संघ) । गार जैको आर (महा) ।
 'मा न [म] मन्त्र-केत-प्रविष्ट एक परिचाय
 (सामा १ ५—पञ्च १२३) । 'सेण पु
 [सेन] अतिरिष्टी मन्त्र के प्रथम दीर्घक
 के प्रथम शिष्य का नाम (शिष्य) ।
 हुंमंड न [हुंमण्ड] कल-विष्टेय कोईका
 कुम्हार (कण्ठ) ।
 हुंमार पु [हुंमकार] बुद्धार, बड़ा भावि
 मित्र का बल्लभ भगिनेबाला (११ ३) ।
 'पाव पु [पाव] बुद्धार का बल्लभ
 कर्म का स्नात (ठा) ।
 हुंमि पु [हुंमिम] १ हस्ती हारी (संघ) ।
 २ मनुष्य-विष्टेय एक प्रकार का पंड कुण्ड
 (पुत्र १२७) ।
 हुंमिध जैको हुंमिय (पञ्च १) ।
 हुंमिणी लक्षे [हुंम] नग का बर्ण (११ १) ।
 हुंमिय मि [हुंमिम] बुद्ध-परिचायबाला
 (सं ४ २) ।
 हुंमिध पु [हुंमिमिध] १ भोर, स्नान
 (११ १२, मिह २५) । २ विष्णु बुद्ध
 (११ ६२) ।
 हुंमिमि मि [हुंमिमि] १ वीरले मोग (११ १३) ।
 हुंमो ली [हुंमो] १ वान-विष्टेय बड़े के
 व्यापारबाला योग नेष्ट (मन ११५) । २
 हुंम, पदा (३ १) । पाव पु [पाव] १

हुंमि में पकना (पण्ड २ ५) । २ नगर की
 एक प्रकार की यातया (संघ १ १ १) ।
 हुंमी ली [हुंमोण्णी] कोईका का बाध,
 'अतिथो बुद्धोय वंदुय' (बद्ध) ।
 हुंमी ली [हुंमि] केत-रचना केत-संयम (११ १४) ।
 हुंमील पु [हुंमील] वनवर प्राणि-विष्टेय
 मन्त्र यवर (बाह १४) ।
 हुंमुमम पु [हुंमुमम] अति-विष्टेय
 समस्त अति (कण्ठ) ।
 हुंमिमि मि [हुंमिमि] कण्ठ कर्म करके-
 वाला (संघ १ ७ १८) ।
 हुंमल ली [हुंम] गयोहा कुचिल (११ २
 ११) ।
 हुंमल [हुंम] जैको हुंमकुल (पञ्च १ ११४) ।
 हुंमल्ल न [हुंमल्ल] चले सम का
 कल-विष्टेय (संघ) ।
 हुंमल पु [हुंमल] कपीपाणि की की
 धाम (पण्ड १ १) ।
 हुंमल जैको कोकल । हुंमल (मि ११७)
 ४ ५) ।
 हुंमल पु [हुंम] गुप्ता हुंमल, 'हुंमलेहि
 हुंमलेहि न हुंमलेहि' (पुण्ड ११) ।
 हुंमल्लय न [हुंम] व्यापार-विष्टेय 'मनु
 धर्मणि धर्मकार हुंमल्लय मे पञ्चमार्हि'
 (संघ १ ४ २ ७) । जैको हुंमल्लय ।
 हुंमी ली [हुंमि] गुप्ता हुंमल (पुण्ड ११) ।
 हुंमल मि [हुंमल] मंड की लक्ष शरीर
 के समर्थों की कुण्डला करलेबाला (वर्ग २,
 पञ्च १) ।
 हुंमल्ल न [हुंमल्ल] बुद्धि कागोलात्मक
 धर्म-निकार (पञ्च ११ १७) भाषा) ।
 हुंमल्ल मि [हुंमल्ल] धामन्धल करलेबाला
 (सं २१) ।
 हुंमल्ल ली [हुंमल्ल] धमल्लय, धरल
 लक्ष्य नर गुप्ता लला (११ १) ।
 हुंमल्लय मि [हुंमल्लय] मंड की लक्ष
 बुद्धि करलेबाला, नाम-नेष्टा करलेबाला
 (मन धीय) ।
 हुंमल्लय न [हुंमल्लय] काय-बुद्धि
 'अतिरिध न कयलावला लक्षिधार-रुद्धिहि
 अण्णं' । कण्ठसु' (गुप्ता ३ ६) पवि) ।

हुंमल्ल पु [हुंमल्ल] कण्ठिष्ठय वनु की लक्ष
 भाति (संघ ११ १४) ।
 हुंमल्ल पु [हुंमल्ल] १ हुंमल्ल गुप्ता (म
 ३ २१) लला) । २ वनस्थिति-विष्टेय (मन
 १२) । ३ विद्या द्वारा किया बाध हल-
 प्रयोग-विष्टेय (मन १) । मंसय न [मंसि-
 क] १ गुप्ता का मंड । २ वीजपूर वनस्थिति
 का गुप्ता (मन १२) ।
 हुंमल्ल मि [हुंम] मल जलल (११ २, १७) ।
 हुंमल्लय न [हुंमल्लय] जैको हुंमल्लय
 (संघ १ ४ २ ७ टी) ।
 हुंमल्लय न [हुंमल्लय] ली [हुंमल्लय] ली
 हुंमल्लि । हुंमल्लि गुप्ता (सावा १ १)
 विद्या १ १) ।
 हुंमल्लि ली [हुंमल्लि] माया कल (मि
 ११७) ।
 हुंमल्लसर न [हुंमल्लसर] दीर्घ-विष्टेय
 (ली ११) ।
 हुंमल्ल पु [हुंमल्ल] गुप्ता लला (पञ्च
 २४ ५ गुप्ता १७७) ।
 हुंमल्लय पु [हुंमल्लय] निर, वल्ल (११ २, ११) ।
 हुंमल्लय पु [हुंमल्लय] बाल्य भावि का लला
 गुप्ता (११ २ १६) लक्ष १ १ १४) ।
 हुंमल्लय पु [हुंमल्लय] पति-विष्टेय (मन) ।
 हुंमल्लय न [हुंमल्लय] चले सम का लक्ष
 का कल-विष्टेय (संघ ११) ।
 हुंमि मि [हुंमि] जैको हुंमि (११ २,
 १४) मीन लला (११ ११) ।
 हुंमि-मरि जैको हुंमि-मरि (वर्ग १ १२) ।
 हुंमलेयम जैको हुंमलेयम (संघ १) ।
 हुंमल्ल पु [हुंमल्ल] १ बसाह, हल (पञ्च
 २४ ६ टी) । २ वन-बन्धु विष्टेय, 'हुंमल्ल-
 पाहासवन्धुपुंमो' (गुप्ता १२१) ।
 हुंम पु [हुंम] लक्ष (कुमा) ।
 हुंमो न [हुंमो] नल्ल (वर्ग १ १७) ।
 हुंम पु [हुंम] की बाल लला ली का ल-
 नल (संघ २२ १) ।
 हुंम न [हुंम] १ शारी-सुंम (पञ्च धर्म
 १११) । २ लक्ष-विष्टेय (पण्ड १ ३) जैको
 हुंम ।
 हुंमल्लय ली [हुंमल्लय] शारी-सुंम का लक्ष
 करलेबाला (धोर १ १५) ।

कुबज बि [कुबज] घर-नामक वाद्य वा बजा हुमा (पाया २ २, १ १४)।

कुबज } बेको कुबज (पाया २ २, १
कुबज } काल)। १ कुबजी लुण-निमित्त
तुलिका जिसेत रौबल में बुना सवाया जाता
है (उप ५ १४१; कुबज)।

कुबज बि [कुबज] दाहो-मू लपला (बह
१)।

कुबज छक [कुबज] मित्रा करना बिहारना।

१ कुबज कुबजिज (पा २०; पछ १
१)।

कुबज पुं [कुबज] १ क्षय-विशेष १ १ गोक-
क्रिमेन 'विरेल' ए धर्मविनभूतस कुबजपुं
सस' (कम)।

कुबज बेको कुबज = कृत्।

कुबज पुं [कुबज] बनसवि विशेष (मुप
२, २)।

कुबजिज बेको कुबज = कृत् 'बालि
कुबजिज बासाय बनसविजि हि' (बा
२०)।

कुबजा बी [कुबजा] मित्रा इना कुबजा
(मोष १००० उप १२ टी)।

कुबज पुं बी [कुबज] १ जर, पे (हि १
१२ उवा मडा)। २ पनवालीय घंघुल वा
माल (हा २)। 'किमि पुं [कुबज] जर में
बलन होनेवाला बीड़ा ग्रीविन नकु-विशेष
(पछ १)। धार पुं [धार] १ बहान
का धान करनेवाला ग्रीकट 'कुबजिज
कारकमनवर्धनाछात्रावसिधम' (छाया १
८—पच १११)। २ एक प्रकार का बहान
का व्यापारी (छाया १ ११)। पूर पुं
[पूर] जल-पुति (बज ४)। 'बेवणा बी
[बेवणा] धर वा रोम-विशेष (बीज १)।
मुप पुं [मुप] रोम-विशेष (छाया १
११ पिता १)।

कुबजिमरि बि [कुबजिमरि] प्रेकपट्टे पेट्टे
स्वामी 'हा विपचरिपुलि (१ जिं)
भिए। (रंम)।

कुबजिमरी बी [कुबजिमरी] गौली
धाम-साला (हे २ ४१ पछ)।

कुबजिमरिका (मा) बेको कुबजिमरी (आह
१ २)।

कुबजिज बि [कुबजिज] बरण निमित्त
गहिव (पंचा ७ धर्म)।

कुबजिज म [बे] १ बुवि का बिबर, बाइ का
धि (हे २, २४)। २ सिद्ध बिबर (पाम)।

कुबजिज पुं [कुबजिज] तपनार, बजप
(हे १ १११ पच)।

कुबज पुं [कुबज] बुज पेइ (ब २)।

कुबज पुं [कुबज] नुपारी लुपाओर (मुप
१ २ २)।

कुबज बि [कुबज] १ कुबज कुबजा नामन
(मुप २ कपू)। २ पुन, पुन-विशेष (पछ)।

कुबज पुं [कुबज] १ कुबज-विशेष खलविषा
(पचम ४२ व कुवा)। २ न, उल कुब वा
पुन 'बनेव कुबजपुं' (हे १ २१)।

कुबज छक [कुबज] कोब करना मुस्ता
करना। कुबज (हे ४ २१० पछ)।

कुबज छक [कुबज] १ कुबजा पीना ताइन
करना। २ कला बेना। ३ बरन करना।

४ कलात्म बेना। गवि कुबज (वि २२८)।
बह, कुबज (मुप ११ १)। कब, कुबज
लव कुबजिमाण (मुप १४; प्राय ११
पच)। कुबज, कुबज (पच १४ व)।

कुबज पुं [कुबज] बका कुबज (मुप २ ७)।

कुबज पुं [कुबज] १ कोट, निरा 'विबंति कना-
बा कुबजिज का लंविजि' (मुप २ १)।

२ बज, खर (मुप १२ व)। बाइ पुं
[बाइ] कोबल नपर-लक (मुप १२
व)।

कुबज म [कुबज] १ कोल लुण येन
(मोष)। २ कुबजा ताइन (हे ४ ४१८)।

कुबजा बी [कुबजा] गारिफ पीडा (मुप
१ १२)।

कुबजा बी [कुबजा] १ कुबज एक प्रकार
की मोटी सक्की जिसेत जाल बाधि मर
नू जाते हैं (बह १)। २ इरी कुबज
कुबजि (रंम)।

कुबजि बी [बे] बेरी पारवी (हे २ १४)।

कुबजा बी [बे] गीरी पारवी (हे २, १४)।

कुबज पुं [बे] जमनार, मोमी (हे २ १०)।

कुबज बेको कुबज = कुबज।

कुबजिमा बेको कुबजिमा (पच)।

कुबज [बे] बेको कुबजिमा (पाम)।

कुबजिमी बी [कुबजिमी] कुली इरी (कपू
रंम)।

कुबजिमी बेको कुबजिमी = कुबजिमी (मा ८
पच बीज १)।

कुबजिमा बि [कुबजिमा] १ कुबज कुबज ताजित
(मुप १२ उवा १२)। २ सिद्ध लैवि
(बह १)।

कुबज पुं [कुबज] १ पंथारी के यहाँ बेकी जाती
एक वस्तु, कुबज (वि २२१; पछ २ २)। २
रोम-विशेष कोइ (बज १)।

कुबज पुं [कुबज] १ जल, पेट 'बहा विरं
कुबज संवमुविवापया। बेजा हावि मतिहि'
(पच)। २ कोइ कुबज नामन मने का
बका मानन (पछ २ १)। कुबज बि
[कुबज] एक बार जाते पर गीरी मुपने-
वाला (पछ २, १)। बेको कुबज कुबज।

कुबज बि [कुबज] १ लपिप क्षमिप। २ न,
खा क्षमिप-लप 'कुबज कुबज केहि पचंवा
बापया लप' (मुप २२)।

कुबजा पुं [कुबजा] मुप पर (बह १ १
२ १२)।

कुबजा बी [कुबजा] समी बिचा (बह १)।

कुबज बि [कुबज] कुब रोमवाला (मुप
२४१ २०१)।

कुबज पुं [कुबज] १ पच कपरा (हे २ १२
वा २२६; वि २४२)। २ पच। ३ हापी
बयल का बलन-स्थान (छाया १ १—पच
११)। ४ कुब पेडा 'कुबजिजिहंमिजिपु
बगो' (मुप १२२)। कुब पुं [कुबज]
पाम-विशेष बका के बैना पाठ (हे २
२)। रोहिणी बी [रोहिणी] बका भर
हुब केलाती (मा २१०)।

कुबज पुं [कुबज] १ कुबज निरुज सदा
बयल मे बहा हुमा लान (मा १८; हेवा
१ २)। २ बज जंगल (ज २२ टी)।

३ बने की जाती बंध की बने हुई बज
(बह १)। ४ बज, कोट (पच)। २ बज-
पहन (छाया १ व कुवा)।

कुबज पुं [बे] कुबज लज-पहन लज मे बहा
हुमा पर (हे २ १०; मडा पाप पछ)।

कुबज बी [कुबज] सदा-विशेष (पच २१
७२)।

कुटी की [वे] कुटी कुट्टी (रंभा) ।
 कुट्ट प [कुट] क्हा किस स्थान में ?
 (नगर ४) ।
 कुट्ट स [कोय] सदाता ओ बाऊ
 हरेमा ओ सतिन कुट्टियमा (पत्र १३८
 टी) कुट्टे (१ ली) क्हा (प्रपु १९१) ।
 नवि कुट्टि (१ लि) हिई (पिठ २३८) ।
 क. कुट्ट (वसति १ २४) ।
 कुट्ट सेको पड । कुट्टि कुट्टु (वा
 ५ १ घ) ।
 कुट्टा कीन [कोयन] सदाता सदाता
 (वस ४) ।
 कुट्टर न [वे] १ विज्ञान (वि २ ११) । २
 कोट्ट कूट की पाल मङ्गर (मुना २४१) ।
 ३ सर्व नैरु क विन (न ३१० टी) ।
 कुट्टल सेको सेल्ल, कुट्ट (१ ल) लस
 मरुत्तय (वसि २०) ।
 कुट्टुव पु [कुट्टुव] बाय विठेय (उम) ।
 कुट्टुमरी को [कुट्टुमरी] कस्तारि-विठेय
 वसि (प्रपु १—पत्र ११) ।
 कुट्टुम पुन [कुट्टुम] मणि-विठेय को
 विष्णु की छाती पर रखी है (हेका २३०) ।
 कुट्टुमरय न [वे] सीधी नाग इमारज
 (वि २, ३८) ।
 कुट्टे सेको कुट्टो (वि १ १०) ।
 कुट्टि [वे] प्रमूट प्रडर (वि १ १४) ।
 कुट्टु पु [वे] पटक प्हा (वि २, ३८) ।
 कुट्टव पु [कोट्टव] बाय-विठेय कोसो,
 कोरव (मय १२) ।
 कुट्टा पु [कुट्टा] १ भूमि कोसो क
 सावन कुट्टा, कुट्टी (मुना २२९) । २
 कुट्ट-विठेय (वि २) ।
 कुट्टि [वे] कुट्टि कुट्टि कोष-कुट्ट (महा) ।
 कुट्टि (वि) घ [कवि] गिरी बाळ में
 (प्रक १२१) ।
 कुट्ट स [कुट्ट] कोष करना कुट्टा
 करना । कुट्ट (आ महा) । वर कुट्टय
 (मुना १९०) । ४ कुट्टियव (वि ११) ।
 कुट्ट स [माप] नीलमा बहना । कुट्ट
 (मि) ।
 कुट्ट न [कुट्ट] मुर्ली और जाती की छोड़
 कर फल पाउ और मिठी नीरु के क ह

पूह-जगण 'कोट्टा' उबनको कुट्ट (वि
 १५ पवि) ।
 कुट्टव पु [वे] १ प्रहाचार, वर का रिवाज ।
 २ समुहाचार, सहाचार (वि २ ११) ।
 कुट्टर न [वे] गुल के समय किना बाता
 हवन-साङ्ग-विठेय । २ समुहाचार, सहाचार ।
 ३ नर्त, हरी टीटा (वि २ १४) ।
 कुट्टर पु [कुट्टर] १ कछेछि हाथ का
 मय माय । २ बाण, कुट्टा । ३ रव का
 बाय-विठेय (वि ३) ।
 कुट्टर पु [कुट्टर] सेको कुट्टर । सीत की
 पल, सीत का नील-नील वर 'एवापो
 पाङ्गाव-कुट्टर' कुरण-मिठेय (वड) ।
 कुट्टल सेको कुट्टल (वि २३०) ।
 कुट्टास पु [कुट्टास] कछु कचनी
 वनामी नुगी (वि १ ७२ कय पाय) ।
 कुट्टिय पु [कुट्टिय] १ कुट्टि कुट्ट । २
 न कोष कुट्टा 'कुट्टिय' नाम बुद्धि
 (माय ४) ।
 कुट्टिय सेको कुट्टास (वि १ ७२ दे २
 ४) ।
 कुट्टर पु [कुट्टर] भगवान् मल्लनाय का
 रासना-विठेय क (वस २६) ।
 कुट्टे पु [कुट्टे] भगवान् मुकुन्द के प्रथम
 पावक का नाम (विचार ७७८) ।
 कुट्टे पु [कुट्टे] १ कुट्टे, कच-राज वनेश
 (पाय, वड) । २ कच-राज मल्लनाय का
 रासना-विठेय क (वि ८) । ३
 काळभुर के एक राजा का नाम (पत्र ७
 ४२८ टी) । ४ एक बैन मुनि (कय) ।
 [वसा पु [कुट्ट] उत्तर विठा (मुन २
 ४२) । नयरी की [नगादी] कुट्टे की
 रावमाओ धनका (पाय) ।
 कुट्टे की [कुट्टे] बैन छात्र-गल की एक
 रावमा (कय) ।
 कुट्टव वि [वे] कुट्टा कुट्ट बायन (या
 १०) ।
 कुट्टर पु [कुट्टर] विधाय के एक पुत्र का
 नाम (सीत ३) ।
 कुट्ट पु [कुट्टा] बैन-विठेय की जाति
 (वि २, ३—पत्र ८२) ।

कुट्टि पु [कुट्टा] १ कच-विठेय
 कुट्टा सेको ना स्तानी (वि २, १) ।
 कुट्टर सेको कुट्टर (वि १ १० मुना २४१,
 १५१ कुमा) ।
 कुट्टरी सेको कुट्टरी (कय, पाय) ।
 कुट्टर पु [कुट्टर] १ प्रथम-वस का बायक
 पाय वर ठक का लड़का (हा १ पाय
 १ २) । २ मुनराज रावमाई पुस (पण्ड
 १ ३) । ३ भयल्ल कसुपुय का रासना
 विठेय क (वि ७) । ४ लोकार, लोहार
 'कोट्ट-कुट्टि' कुट्टाई वर विन (उत
 २१) । ५ कचिनेय कच (पाय) । ६ कुट्ट
 पत्नी । ७ कुट्टरा । ८ विष्णु ल । ९
 कुट्ट-विठेय वर-कुट्ट (वि १ १०) । १
 कचिनाहित कुट्टारी (वस २) । गगन
 पु [प्रास] प्रास-विठेय (नामा २ १) ।
 पवि पु [नवि] इस नाम का एक
 सेलर (बायन) । घन्म पु [घर्म] एक
 बैन छात्र (कय) । बाळ पु [पाळ]
 विधम की बापूनी रावमा की कुट्टर का
 एक कुट्टि बैन राजा (वि १ ११ टी) ।
 कुट्टर पु [वे] कुट्टर का महीमा मारिवन
 मास (हा २ १) ।
 कुट्टा की [कुट्टा] इस नाम का एक
 वसिनेय उषो भस कुट्टा उषिने
 पायो (बायन) ।
 कुट्टर पु [कुट्टर] १ कुट्टर, वीरि
 (वि १) ।
 कुट्टरिया की [कुट्टरिया] सेको कुट्टरी
 (वि १२) ।
 कुट्टरी की [कुट्टरी] १ प्रथम वस की लड़की
 २ कचिनाहित कन्हा (वि १ ३२) । ३
 कस्तारि-विठेय कोट्टारी (पत्र ४) । ४
 मयल्लिका । ५ नदी-विठेय । ६ कच-दीन
 का एक बाय । ७ कस्तारि-विठेय वर
 रावमा । ८ सीता । ९ बड़ी इमाणी । १
 कन्हा कन्ही की वडा । ११ पवि-विठेय
 (वि १ ३२) ।
 कुट्टरी की [वे] कुट्टरी की पावरी (वि
 २ ३२) ।
 कुट्टर पु [कुट्टर] १ इस नाम का एक
 बाय (वि १ १४) । २ कचिनेय-वर का

एक विजय-युक्त भूमि इवैव-विशेष (छा २
१-यम न) । १ न. बन्ध-विशाली कम्प
(छाया १ १-यम २६ से १ २४) । ४
संस्था-विशेष कुमुदाज्ञ की चौखली लाव ध
मुलने पर को संस्था कम्प हो बहु (को २) ।
२ विशर विशेय (छा ५) । १ वि एकी में
प्राप्त्य प्रलोभा । ४ बरान प्रीतिशाला
(वि १ २६) । देवो कुमुद ।

कुमुद पुं [कुमुद] देव-विशेष (विशि १९७) ।
चंद पुं [चन्द्र] प्राच्य सिद्धेय विवाकर
को भूमि धरणा का नाम (सम्पत् १४१) ।

कुमुदं न [कुमुदाज्ञ] संस्था-विशेष
'महात्म्य' की चौखली लाव ध मुलने पर
को संस्था कम्प हो बहु (को २) ।

कुमुदा की [कुमुदा] १ इस नाम की एक
पुष्करिणी (बं ४) । २ एक तपती (दीप) ।
कुमुद्वी की [कुमुद्वी] १ बन्ध-विशाली
कम्प का रंग (कुमाद रंग) । २ इस नाम
की एक रणी (क १ ११ टी) ।

कुमुद देवो कुमुद (क) । देव-विशाल-विशेष
(वन ११ १३) । गुम्न न [गुम्न] बन्ध-
विशाल-विशेष (सम १३) । पुर न [पुर]
नगर-विशेष (क) । ज्यमा की [ज्यमा]
इस नाम की एक पुष्करिणी (बं ४) । जय
न [जन] मनुष्य काटी के धनीय का एक
बन्धन (दी २१) । तार पुं [तार] कुम्भ-
पट्ट कुम्भों से बरा हुआ बन्ध (पट्ट १ ४) ।

कुमुदं देवो कुमुदं (क) ।

कुमुद न [कुमुद] एव-विशेष (सूच
२ २) ।

कुमुदी की [कुमुदी] कुली कुला (वि १ १३) ।
कुम्भ पुं [कुम्भ] कम्प कम्पना (पाथ) ।
मास पुं [मास] मन्त्र देव के एक शक्ति
का नाम (क १ २) ।

कुम्भाय वि [कुम्भा] मन्त्र देव के एक शक्ति
का नाम (मासा २ १२, २) ।

कुम्भास पुं [कुम्भास] १ बन्ध-विशेष जय
(दीप १३१ पट्ट २, २) । २ बोधा नीचा
हुया ब्रह्म बरीय कम्प (पट्ट २, २-यम
१४७) ।

कुम्भी की [कुम्भी] १ कुम्भी, कम्पनी ।
२ नाव की माटा का नाम (पठम ११
१२) । पुत्र पुं [पुत्र] दो हाव ऊँचा इस
नाम का एक पुष्प बिहने मुक्ति पाई की
(दीप) ।

कुम्ह पुं [कुम्ह] देव-विशेष (वि २ ७४) ।

कुम्ह देवो कोहूँ (माह २२) ।

कुम्ह की देवो कोहूँ (माह २२) ।

कुप पुं [कुप] १ स्तन बन्ध । २ वि लिखित
(बन्ध ४) । ३ बलिख (मिह १) ।

कुपवा की [कुप] बली-विशेष (पट्ट १—
यम १३) ।

कुपं पुं [कुप] १ गुप की एक बाटि
(बं २) । २ कोई भी गुप हरिण (पट्ट १
१ पठम) । की गी (पाथ) । खड़ी की
[खड़ी] हरिण के नेत्र केने नेत्रबन्धी की
मुकाबरी की (बाय २) ।

कुपंय पुं [कुपंय] बृह-विशेष विप्राहा
(उप १ ११ टी) ।

कुपुद देवो कुपुद । नक कुपुदार्थ
(रंग) ।

कुप पुं [कुप] बन्धविशेष-विशेष (पट्ट १—
यम १३) ।

कुप न [कुप] पुष्प विशेष (बन्धा
१ १) ।

कुप पुं [कुप] कुप-पत्नी जन्मेय (पट्ट
१ १ उप १ १६) ।

कुपरी की [कुपरी] पृथु बालन (वि १ ४) ।

कुपरी की [कुपरी] १ कुप-पत्नी की माता ।
२ पत्नी कप का एक नेत्र (मिह) । ३ देवी
देवी (रंग) ।

कुप पुं [कुप] १ देव बाल 'कुप'
कुपिह बलिषो वमालाधामनी धरुपिहरी
(गुमा २४ पाथ) । २ पति-विशेष (दीप १) ।

कुप की [कुप] १ देवी की नक धरा
(गुमा १ २४) । २ कुप-पत्नी 'कुप'
गर्हो मन्त्र (पठम १७ ७३) ।

कुपय पुं [कुपय] कुप-विशेष नयरीया
(य ४ मा ४) । लिख २३ स ४१४ कुमा
३ ३, ३) ।

कुप की [कुप] बर्ध-विशेष धर्म भूमि-

कुपिज न [कुपि] वडा बंधन सर्वकर प्रती
(दीप ४७७) ।

कुप पुं [कुप] १ धर्म देव-विशेष को
उत्तर बाण में है (छाया १ ५) कुमा ।
२ धर्मात् धर्मिण का इस नाम का एक
पुष्प (दी १४) । ३ धर्म-भूमि विशेष (छा
१) । ४ इस नाम का एक रंग (रंग) ।
गुपी कब रंग में उत्पन्न कुप बरीय (छा
१) । 'छाया' बरी देवो नीचे बरा 'बरी'
(पठ) । लोच 'कन्धेय न [कुप] १
पिपी के पाथ का एक मेषान नहो नीर
वीर पाएवों की बड़ाई हुई की । १ नव
रेश की राजमानी हस्तिनपुर नगर (बनि
दी १६) । चंद पुं [चन्द्र] इस नाम का
एक रजा (बन्धा धारण) । बर वि [बर]
कुप देव का पत्नीला । की बरा
बरी (वि १, ११) । 'जगत्त न [जगत्त]
कुप-भूमि देव-विशेष (बनि दी ७) । पाह
पुं [पाह] कुपान (मा ४४१) कम्प) ।

वच पुं [वच] इस नाम का एक छोटी
वीर बैन मन्त्र (उप २) संघ) । मई की
[मई] धर्मधर बन्धनी की पत्नी (यम
१३२) । राय पुं [राय] कुप देव का
रजा (छा ७) । वाह पुं [वाह] कुप देव
का रजा (क ७२ टी) ।

कुपकुमा की [कुपकुमा] पांश का प्रताप
(दीप ११) ।

कुपकुप क [कुपकुप] 'कुप-कुप' धारण
कला पुनकुमा बन्धकला । कुपराधर्म
(वि ११) । नक कुपकुपमंड (रंग) ।
कुपकुपिज न [कुप] एव-विशेष दीपुल (वि
२ ४२) ।

कुपुद देवो कुपुद । कुपुदवि (छा १) ।
कुपुद पुं [कुपुद] १ कुपुद, बन्ध-भूमि-विशेष ।
२ न-पट्ट उपास (वि २ ४१) । देवी
कुपुद ।

कुपुद वि [कुपुद] धर्म, धर्म (वि २ १३) ।

कुपुद वि [कुपुद] १ निर्धन मिहुर (वि २ १३
बनि) । २ मिहुर नरुर (वि २, १३ रंग) ।

कुपुद न [कुपुद] पत्नी का या कुपुद का बन्ध
(रंग) ।

कुपमाध न [कुप] कुमा-...

केशरी की [केसरी] ज्योतिष विद्या-विशेष
(सम्प १२१ १२२)।

केशरुं [केशर] केश बाल (उप ७६८ टी।
मयी २६)। गुरन [गुर] भोजन पर
स्थित एक विद्यापर-नगर (रुक्)। लीला
पुं [लीला] केशों का समुत्पन्न (मय पण्ड
२ ४)। वायिज न [वायिज] केश
वाले बीबों का व्यापार (सा ८३)। हस्त
हस्तपुं [हस्त] केशपात्र समा-
पन्न केश संवत् बाल (कम्प पाठ)।

केश देवी केरिस। की सी (समु १११)।

केश देवी केरिस (उप ७६८ टी। सम्प
२२)।

केशर पुं [केशीपर] केशन कवि सेठ कवि
(उप ७२८ टी)।

कसर पुं [कसर] एक वैद्यमान (विश्व
१४२)।

कसर पुं [कसर] १ पुन-रेणु पला क्रिजक
(सि १ ५)। २ वृत्त वीर्य
के कंधा का बाल केशप (सि १ ५ मुपा
२१२)। ३ पुं कुरु कुरु (कम्प गठ-
पाठ)। ४ न दस नाम का एक पञ्चम
वर्णमन्त्र नगर का एक जनन (उप १७)।
५ कन विशेष (पान)। ६ मुसल लोना।
७ कन-विशेष (हि १ १४६)। ८ पुन
विशेष (गठ ११२२)।

केसरा की [केसर] १ सिंह वीर्य क स्मरण
पर के बानों की सद्य केसर म वीहारी
(शानु २१ गठ पाठ)।

केसरि पुं [केसरि] १ सिंह वरपात्र
कन्दरीज (उप ७६८ टी-सि ८ ४ पण्ड
१ ४)। २ हृद-विशेष मीतकन वर्ण पर
स्थित एक हृद (सम १ ४)। ३ पुन-विशेष
पल्लव-लोक के वन्य प्रति वानुदेव (सम
१२४)। ४ वृं [वृं] वृ-विशेष (उ
२ ४)।

केसरिका की [केसरिका] साक कले का
बने का दुग्ध (मय गिरे २४३२ टी)।

कसरिक वि [केसरिक] वनवासा
(गठ)।

कसरि की [केसरि] देवी कसरिका तिर

कुर्याद्विषयकमुद्रासुखविषयकेशरीहृत्पण्यं
(शास्त्र १ २-वर्ग १ २)।

कसय पुं [कसर] १ धर्म-वक्रवर्ती राजा
(सम)। २ वीहृत्पण्य वानुदेव माधवग
(गठ)।

कसि वि [केशि] कसेर-पुन किनट (विशे
३११४)।

कसि पुं [कसि] १ एक केन मुनि भववत्
पार्ष्णिक के शिष्य (उप ५५)। २ वानुदेव
विशेष परक क वम की वारण कलकल
एक वैद्य विश्वको वीहृत्पण्य ने माप का
(मुद्रा २६२)।

कसि पुं [कसि] देवी केसव (पठन ७५
२)।

कसि वि [कसि] केशपात्रा नाक-पुन।
की आ (पुन १ ४ २)।

केसी की [केसी] वानय वानुदेव की माता
(पठन २ १८४)।

केसी की [केसी] केशपात्री की 'विश्व-
केसी' (लगा)।

केसुम देवी केसुम (हि १ २६ ८६)।

केड (पण) वि [कीर] कैड, किड लख
का ? (मि पण्ड; मुद्रा)।

केडि (पण) व सिप, बाले (हि ४ ४२२)।

केडन न [केडन] कपट, वम (हि १ १ ग
१२४)।

केड देवी केड (हि २, ४२ टी)।

केड देवी केड (वम)।

केड देवी केड (पाठ)।

केड देवी केड [वि+कस] विषयना
विषयना। वीमास (हि ४ १६२)।

केड देवी केड [वि+कस] विषयना
विषयना। वीमास (हि ४ १६२)।

केड देवी केड [वि+कस] विषयना
विषयना। वीमास (हि ४ १६२)।

केड देवी केड [वि+कस] विषयना
विषयना। वीमास (हि ४ १६२)।

केड देवी केड [वि+कस] विषयना
विषयना। वीमास (हि ४ १६२)।

केड देवी केड [वि+कस] विषयना
विषयना। वीमास (हि ४ १६२)।

केड देवी केड [वि+कस] विषयना
विषयना। वीमास (हि ४ १६२)।

कोड की [वि] कोड की वानि कथिपानि
(हि २ ४८५ पाठ)।

कोड की [वि] कोड की वानि कथिपानि
(हि २ ४८५ पाठ)।

कोड की [वि] कोड की वानि कथिपानि
(हि २ ४८५ पाठ)।

कोड की [वि] कोड की वानि कथिपानि
(हि २ ४८५ पाठ)।

कोड की [वि] कोड की वानि कथिपानि
(हि २ ४८५ पाठ)।

कोड की [वि] कोड की वानि कथिपानि
(हि २ ४८५ पाठ)।

कोड की [वि] कोड की वानि कथिपानि
(हि २ ४८५ पाठ)।

कोड की [वि] कोड की वानि कथिपानि
(हि २ ४८५ पाठ)।

कोड की [वि] कोड की वानि कथिपानि
(हि २ ४८५ पाठ)।

कोड की [वि] कोड की वानि कथिपानि
(हि २ ४८५ पाठ)।

कोड की [वि] कोड की वानि कथिपानि
(हि २ ४८५ पाठ)।

कोड की [वि] कोड की वानि कथिपानि
(हि २ ४८५ पाठ)।

कोड की [वि] कोड की वानि कथिपानि
(हि २ ४८५ पाठ)।

कोड की [वि] कोड की वानि कथिपानि
(हि २ ४८५ पाठ)।

कोड की [वि] कोड की वानि कथिपानि
(हि २ ४८५ पाठ)।

कोड की [वि] कोड की वानि कथिपानि
(हि २ ४८५ पाठ)।

कोड की [वि] कोड की वानि कथिपानि
(हि २ ४८५ पाठ)।

कोड की [वि] कोड की वानि कथिपानि
(हि २ ४८५ पाठ)।

कोड की [वि] कोड की वानि कथिपानि
(हि २ ४८५ पाठ)।

कोड की [वि] कोड की वानि कथिपानि
(हि २ ४८५ पाठ)।

कोड की [वि] कोड की वानि कथिपानि
(हि २ ४८५ पाठ)।

कोड की [वि] कोड की वानि कथिपानि
(हि २ ४८५ पाठ)।

कोड की [वि] कोड की वानि कथिपानि
(हि २ ४८५ पाठ)।

कोषाक्षी की [रे] रेखी पोठ (इह १)।
कोषिज } पुं [कोषिज] राजा मेरिपुत्र का
कोषिजा } पुत्र, नृप-निरिप (संज्ञा) राजा १
१ महापुत्र)।

कोषु की [रे] रेखा लकीर, रेखा (हे २ २१)।
कोषोट्टिया की [रे] पुष्पा पुं 'बणोळी'
(पुं) इ हारि पत्र ७६) रेखी,
बणोट्टिया।

कोष्य पुं [रे] कोष्य गृह-कोष्य घर का
एक कमर कोष्य (हे २ ४२)।

कोष्य न [कीटव] मृग के रोष से निष्पन्न
मुला (रज)।

कोषुहक रेखी कुकुरा (कम)।

कोषुलक्ष की [रे] एक बटोले का लम्ब
पात्र-विशेष (१ १४)।

कोषिज वि [कीटविक] कीटवी कुसुमी
(का १७२)।

कोषिज पुं [कोषिज] १ मुमि-उपन करने-
वाला वागमय (पौन)। २ न. एक प्रकार
का मनु (अ ६)।

कोरव रेखी कोरव = कीरा।

कोरव न [रे] १ विहग (हे २ १३)। २
बीटर, लहर (सुना २४७) निवृ १३)।

कोरव पुं [रे] १ कुपुत्र कोष (हे २,
४)। २ कोल्ती मैला (उ १६२)।
कोर की [कोरी] नींद नींद विशेष
(रा १)।

कोरुम } पुं [कीरुम] बालके क कल-
कोरुम } लय की गति (टी १) प्रस
कोरुम } महापुत्र १६१) पण्ड १ ४)।

कोरुप पुं [कोरुप] कपुप, कपु, कपुम
वास (संज्ञा १६)।

कोरुमि } रेखी कु-रुमि (व ३) कपु)।
कोरुमि }

कोरुसग रेखी कोरुसग (का १, ७)।

कोरव रेखी कुदव (मन)।

कोरविया की [रे] मल्लव, पुत्र कीट-
विशेष (पुत्र १ १२)।

कोरव रेखी कुदव (पण्ड १ १—पत्र
२३)।

कोरविया की [कोरविया] कीरा कुदव,
कुदरी (मिना १ ३)।

कोष पुं [कोष] इस नाम का एक राजा
जिसने बाहरों परत के साथ पैल वीणा की
की (पत्रम ८२ ४)।

कोष्य रेखी कुपुप = कुपु। कोष्य (माट)।

कोष्य पुं [रे] मगरव कुमाह (हे २ ४२)।

कोष्य वि [कोष्य] होय पत्नीपिकर

'भरीपुत्रपुत्र' (पण्ड १ ३)।

कोष्य पुं [कोष्य] १ हाथ का मध्य भाग

(वीण २६१ या कुमाह १ १ २२४)। २

नवी का मिलाप लट, लहर (मोत्र ३)।

कोषेरी की [कोषेरी] विद्या-विशेष (पत्रम
७ १४२)।

कोष्य } पुं [कोष्य] पति-विशेष (संज्ञा
कोष्य } कोष्य)।

कोष्य वि [कोष्य] पुं, पुत्रुवार (वी १;
पत्रम ८२)।

कोष्य वि [कोष्य] १ कुमार से संकल्प

रखनेवाला कुमार-संकेत (मिना १ ७१)।

२ कुमार-संकेत (पत्रम)। ३ कुमार में

जलन (हे १ २)। की 'रिया दी

(का १३)। मय न [कोष्य] विष्णु

राज-विशेष जिसने बाहरों के लय पाल-

संकेत कीर्तन है (मिना १ ७—पत्र ७३)।

कोषारी की [कोषारी] विद्या-विशेष (पत्रम
७ १३७)।

कोषुया की [कोषुया] कीटव बालके

को एक नेरी की कलव की पुष्पा के समय

बवाई जाती की (विशे १७७)।

कोषुरी की [रे] पुष्पा की की पुष्पा

(हे २, ४७)।

कोषुरी की [कोषुरी] १ लक्ष्य मनु की

पुष्पा (हे २ ४)। २ बलिष्ठ बलि

(वीण, मय ११ टी)। ३ इस नाम की एक

लगी (पत्रम ३३ २)। ४ काटिक की

पुष्पा (रज)। माह पुं [माह] बगमा

बाग (बगमा ११ टी)। माहस पुं [माह]

लक्ष्य लक्ष्य विशेष (वि १६६)।

कोषुया रेखी कोषुया (पत्रम १ ३—
पत्र २)।

कोषुरी रेखी कोषुरी = कीटवी (उमा १
१ २)।

कोष्य वि [कीटव] बड़े के रोषों से बना

हुआ (बगमा) (पुत्र १४)।

कोष्य वि [कीटव] 'कोष्य' देश में निरप
(पत्रम २ १ १२)। रेखी कोष्यग।

कोष्यग } पुं [रे] कई से भरे हुए बने

कोष्यग } का बगमा हुवा प्रायः निरप,

रवाई (मामा १ ३७—पत्र २२३)।

कोषरी की [रे] वई से बना हुआ कमर

(इह १)।

कोरग पुं [कोरग] पति-विशेष (पण्ड १
१—पत्र ७)।

कोरग } पुं [कोरग] १ कुल-विशेष

कोरग } (पत्रम)। २ न. इस नाम का

सुरा (बगमा) लक्ष्य का एक लक्ष्य

(बगमा १)। ३ कोरग लक्ष्य का पुत्र (बगमा
१ ४—पत्र १)।

कोरग (टी) रेखी कुदव (माह ४४)।

कोरग } पुं [कोरग] कोरग लक्ष्य कुल

कोरग } लक्ष्य की लक्ष्य (पत्रम)। 'कोरग'

कोरग लक्ष्य (अ ४ १—पत्र १३३)।

कोरग रेखी कुदव (समस्त १७६)।

कोरविया की [कोरविया] रेखी कोरविया

(पण्ड १६)।

कोरव पुषी [कोरव] १ कुल-विशेष में लक्ष्य

(पत्रम १३२) अ ६)। २ कोरव-कोरव

३ पुं लक्ष्य लक्ष्य का लक्ष्य (वीण
१)।

कोरविया की [कोरविया] इस लक्ष्य की

पण्ड लक्ष्य की एक पुष्पा (अ ७)।

कोरग } रेखी कोरग (लक्ष्य १ १—

कोरग } पत्र १३ कपुप पत्रम ४२, ४३

कोरग } लक्ष्य लक्ष्य)।

कोष पुं [रे] प्रोषा लोक लक्ष्य (हे २ ४२)।

कोष पुं [कोष] १ लक्ष्य, लक्ष्य (पण्ड १
१—पत्र ७ ७ १११)। २ लक्ष्य लक्ष्य

'कोषीय'—(पत्रम)।

कोष पुं [कोष] १ देश-विशेष (पत्रम १७-
१९)। २ लक्ष्य लक्ष्य (अ ३३)। ३

लक्ष्य लक्ष्य, लक्ष्य (अ ३२ टी लक्ष्य

१ १) कुमाह पत्रम)। ४ लक्ष्य के लक्ष्य

का एक लक्ष्य (पण्ड १ १—पत्र ७)। ५

लक्ष्य-विशेष (बगमा ३)। ६ लक्ष्य की एक

नीच लक्ष्य (पण्ड ४)। ७ लक्ष्य-लक्ष्य

लक्ष्य लक्ष्य। लक्ष्य लक्ष्य-लक्ष्य लक्ष्य (अ २-
१) लक्ष्य १, २)। पत्रम न [पत्रम] लक्ष्य

विशेष जहाँ श्रीरामदेव सप्तशत का संस्कार है, यह नगर बसिण में है (ही ४४)। पाठ पुं [पाठ] वैच किये बण्डेन का मोक्षपात (ठा १—पत्र १ ७)। मुणय मुणइ पुंकी [मुनक] १ बग रुद्र, सूयार की एक पाति बंली बण्ड (पापा २ १ ५)। २ विकारी बुला (पण्ड ११)। की [विया (पण्ड ११)। [वास पुं [वास] काष्ठ, लक्ष्मी (सम ३६)।

कोष्ठ नि [कोष्ठ] १ यक्ष का वास्तव वास्तव मत का अनुयायी। २ वास्तव मत स संकल्प रखनेवाला 'कोलो बन्नी कस छो माइ रम्मे' (कण्ठ)। ३ न बबर-प्ल-संस्कृती (सा ६, १)। गुण्य न [गुण] बेर का बुरे, बेर का सत् (सम ३, १)। द्विज न [द्विज] बेर की दुष्टिया या दुष्टी (सा १ १)।

कोष्ठं पुं [वि] पिठ, स्वामी (दि २, ४७)। पाप)। २ गुष्ठ, बर (दि २ ४७)।

कोलय पुं [कोलय] गुण की छाया का भाषा हुआ मत नाम (सु २)।

कोलगीनी की [कोले, काठकी] कोल जाती की (पाप ४)।

कोलपरिय नि [कोलपुष्टिक] कुल्ल संस्कृती निरुप-संस्कृती निरुप से संस्कृति रखनेवाला (बग)।

कोलजा की [वि] बन्ध रखने का एक छद्म का मत (पापा २, १, ७)।

कोलर वैको कोलर (गा ११६ ५)।

कोलय न [कोलय] क्पीतिग-व्याक में प्रविष्ट एक कण्ड (नि ११४ ५)।

कोलय नि [कोलाय] १ दुष्कार-संस्कृती। २ न मिठी का पाप (बग)।

कोलायिप पुं [कोलायिक] मिठी का पाप बेचनेवाला (इह २)।

कोलाइ पुं [कोलाय] छाप की एक पाति (पण्ड १)।

कोलाइल पुं [वि] नदी की यात्रा पती का छद्म (दि २, १)।

कोलाइल पुं [कोलाइल] गुण छोख पीता हला बड़ा दूर बनेवाला लोकप्रार

का बल्लुट शब्द (दि २, १ हेम १ ३)। लल ६)।

कोलाइलिय नि [कोलाइलिक] कोलाहल-वाला सोलुलवाला (पत्र ११७ १६)।

कोलिम पुं [वि] एक प्रथम मनुष्य जाति (गुष्ठ २ १३)।

कोलिम पुं [वि] कोमी उलुवाय, बुलाहा कम्पा कुलवाया (दि २ ६४)। ली, पत्र २४ उप ४ २१)। २ बाल का कीड़ा, मक्का (दि २, २३)। पाप या २ पत्र ४ ४६)।

कोलिम न [वि] लम्पु बुला (दि २, ४६)।

कोलिम न [कोलीम] बुलीमडा कालगनी (बनवि १४६)।

कोलीक्य नि [कोलीक्य] स्त्रोहल संवीहल (पत्र)।

कोलीय न [कोलीय] १ किचरी की-बलाती वन-मृति (सा १७)। २ नि बंश-नर-पत्रक बुलक से धारात। ३ सतन बुल में उत्पन्न। ४ वास्तव मत का अनुयायी (माठ—महारी ११३)।

कोलीर न [वि] लाल रंग का एक पदार्थ, कुचिय कालीररतलुमणे (दि २ ४६)।

कोलुण्य न [कोलुण्य] बग अनुकम्पा कण्ठा (नि ११)। पक्षिया 'वक्षिया की [प्रविष्टा] अनुकम्पा की प्रविष्टा (नि ११)।

कोलुण्य पुं [वि] कीचे कोल बीर ऊपर बाई के सागर का बाण्य दाहि धरने का कोठा (पापा २ १ ७ १)।

कोलय पुं [कोलेयक] रत्नान बुला (समस्त १६ कर्षि २२)।

कोल पुन [वि] कोला नदी हुई लक्ष्मी का दुष्का (नि १)।

कोलर न [कोलर] नगर-विशेष (दि ४७)।

कोलपाग न [कोलपाक] रक्षिण देव का एक नगर जहाँ भी प्यनदेव का मन्दिर है (ही ४२)।

कोलर पुं [वि] पिठ, स्वामी वाली धारिया (दि २ ४७)।

कोलर पुं [वि] पिठ, स्वामी वाली धारिया (दि २ ४७)।

कोलर पुं [वि] पिठ, स्वामी वाली धारिया (दि २ ४७)।

कोलर पुं [वि] पिठ, स्वामी वाली धारिया (दि २ ४७)।

कोलर पुं [वि] पिठ, स्वामी वाली धारिया (दि २ ४७)।

कोलर पुं [वि] पिठ, स्वामी वाली धारिया (दि २ ४७)।

कोलपुर न [कोलपुर] पक्षिण देव का एक नगर, महालक्ष्मी का स्थान (ही ४४)।

कोलपुर पुं [कोलपुर] इस नाम का एक देव (ही ४४)।

कोलपुर [वि] वैको कोलपुर (बग १ ४६ १)।

कोलहाइल न [वि] पत्र-विशेष बिन्नी-प्ल (दि २ १६)।

कोलहाइल पुं [वि] १ शृगाल विमार (दि २ ६३)। पाप पत्र ७ १७ १ ३ ४२)।

२ कोलहाइल कल से रख निगमने का कल (दि २ ६३, महा)।

कोलक [कोपय] १ वृत्ति कला। २ वृत्ति कला। कोले (वृत्ति १२३)।

कोलक [कोपय] १ वृत्ति कला। २ वृत्ति कला। कोले (वृत्ति १२३)।

कोलक [कोपय] १ वृत्ति कला। २ वृत्ति कला। कोले (वृत्ति १२३)।

कोलक [कोपय] १ वृत्ति कला। २ वृत्ति कला। कोले (वृत्ति १२३)।

कोलक [कोपय] १ वृत्ति कला। २ वृत्ति कला। कोले (वृत्ति १२३)।

कोलक [कोपय] १ वृत्ति कला। २ वृत्ति कला। कोले (वृत्ति १२३)।

कोलक [कोपय] १ वृत्ति कला। २ वृत्ति कला। कोले (वृत्ति १२३)।

कोलक [कोपय] १ वृत्ति कला। २ वृत्ति कला। कोले (वृत्ति १२३)।

कोलक [कोपय] १ वृत्ति कला। २ वृत्ति कला। कोले (वृत्ति १२३)।

कोलक [कोपय] १ वृत्ति कला। २ वृत्ति कला। कोले (वृत्ति १२३)।

कोलक [कोपय] १ वृत्ति कला। २ वृत्ति कला। कोले (वृत्ति १२३)।

कोलक [कोपय] १ वृत्ति कला। २ वृत्ति कला। कोले (वृत्ति १२३)।

कोलक [कोपय] १ वृत्ति कला। २ वृत्ति कला। कोले (वृत्ति १२३)।

कोलक [कोपय] १ वृत्ति कला। २ वृत्ति कला। कोले (वृत्ति १२३)।

कोलक [कोपय] १ वृत्ति कला। २ वृत्ति कला। कोले (वृत्ति १२३)।

देव-विमान-विरोध (टी २६) । ३ पुं ध्वस्त
मेणीय देव-वाति-विरोध (पद ११४) ।
कोहड़ी की [कृष्णाणी] कोहड़ का गाव
(हे १ १२४ हे २ २ टी) ।
कोइण नि [कोपन] १ कोपी गुस्ताबोर
(सम १७ पदम १३ ७) । २ पुं इस नाम
का राजा का एक मुद्र (पदम २३ १२) ।
कोइस रेकी कुउइस (हे १ १०१) ।
कोइसिज नि [कुनसिज] कुनसिजी
कुनसिज रेकी की आ (मा ७१८) ।
कोइसिआ की [कृष्णाणिअ] कोइस का
गाव ।
‘अह संवेति पदमई निवयनई
मरहसि मोपण ।

तह मणो कीहसिप, मणई
कसंति कुट्टिसि (पा ७६८) ।
कोइसी रेकी कोहड़ी (हे २ ७३ हे २
२ टी) ।
कोइस रेकी कोइस (पद) ।
कोइसी की [रे] तापिका लवा, पचम-वाल-
विरोध (हे २ ४१) ।
कोइस रेकी कोहड़ी (पद) ।
कोहि } नि [कोपिय] कोपी कीपी-स्वगाव का
कोहिस } गुस्ताबोर (सम ४, १४ वृह २) ।
कोरय } रेकी कउरय (हे १ १ ५४) ।
कीअय } रेकी किमिय = कुरिय (अ
७२८ टी) ।

कूर रेकी कूर = कूर । (मा २६) ।
‘केर रेकी ‘केर (हे २ ६६) ।
कसंह रेकी खंड (गउर) ।
‘कसंह रेकी खम (से ३ २६) ।
कसम रेकी खम (ग्राम २७) ।
‘कउलण रेकी खउण (पद) ।
‘किसा रेकी सिंसा (गुपा २१) ।
कसु रेकी सु (कपु धमि ३७ वाह १४) ।
कसुच रेकी सुच (पद) ।
कसेह रेकी लेह (गुपा २२२) ।
कसय रेकी खेय ‘भारखेन व कय’ (अ
७२८ टी) ।
कसोदी रेकी सोदी (पद १ १) ।

॥ इस चित्पाइअसहमहण्यो के कपापमहंरतलो
इसमो वरये समरी ॥

र

र पुं [र] १ र्वरन-वरी विरोध इववा
स्वान कएठ है (ग्राम, ग्राम) । २ न, पाकपा,
मण्ड ‘मणी से देवा’ (हे १ १८७ गुमा
६ १ २२१) । ३ र्वरिय (विदे १४४१) ।
र पुं [र] १ रेकी अण (ग्राम हे २
२) । २ मणुय की एक जाति को बिचा
के बन से बाहर में समन करती है, बिचावर
कोक (गाप २६) । रेकी अय = अण ।
‘गइ भी [गवि] १ बाकपा-गवि । २ कर्म-
विरोध को बाकपा-गवि का बाकपा है (सम
२ ३ पद ११) । गामिणी की [गामिनी]
विचा-विरोध जिसे प्रभाव से बाकपा में
समन किया जा सकता है (पदम ७ १४२) ।
र पुं न [रुप] बाकपा-मुमुय बाकपावि
बाप (गुमा) ।

राम } एक [राम] र्वरिय-मुद्र करण ।
रउर } कयई कउरय (गउ ७३) ।

रइ नि [रुयिम] १ बाकपा, बाकपावा ।

२ बाय रीपवावा, बाय-रीपी (गुपा २६३
२७१) ।

रइम नि [रुपि] गमिठ उमुठि (वीप
गवि) ।

रइअ नि [रुवि] १ व्यात जटि । २
मरिठ विमुठि (हे १ १६३ वीप व
११४) ।

रइअ नि [रुवि] १ बावा गुमा, गुम,
कस (गाप व २२) । अय ४६) । २
बाकपा ‘रइ व होंति व बाकपा । बाकपी
कहि मणुएकी कयाइबाई न गुणे’ (प
११४) । ३ न, मोहन मणय ‘बाकएण न
वीपुव व न य एरी वाकपी हनन कया’
(पद ६२ अ ४ ४—पद २७६) ।

रइम नि [रुयिम] बाकपा कीअ ‘किमि
कायकायथी’ (गुर १६ १६१) ।

रइम पुं [रे] हैवाक स्वगाव (अ ४ ४—
पद २७६) ।

रइअ पुं [रुयिम] १ अय बिगाय
रइय } कपुन ‘से कि र कय ? कय
मणुई कपुनपरीय कयएण’ (कपु) । २
वि अय से अयय अय-अकपी बाय से
अयय अकपीबा । ३ कर्म-नाम से अयय
‘कपुनपययमो कयरी’ (विदे १४६४ कपु
१ १२, १ १६, ४ २२ सय २१) वीप) ।
रइअ न [रुयिम] रेकी का घुइह, मनेक लेठ
(वि १११) ।

रइय की [रुयिम] बाय-विरोध रेका गुपा
कीहि—बाय बाय ‘रुयिमपयययय-
विरोधी’ (अवि) ।

रइर पुं [रुयिम] रइर-विरोध रैर का गाव
(गापा गुमा) ।

रइर नि [रुयिम] कविठ-कउर-रैरकी (हे १
१७० गुपा १६१) ।

रइम [रे] रेकी रइअ (अ ४ ४—पद
१७६ टी) ।

देव-विमान-विरोध (ही २६) । ३ पुं व्यतर
 श्रेणीय देव-वाति-विरोध (पत्र ११४) ।
 कोईही की [कुम्पाण्डी] कोईही का भाव
 (हे १ १२४-६ २ २ टी) ।
 कोहण वि [कोपन] १ कोपी गुस्ताखोर
 (सम १७ पत्र १३ ७) । २ पुं इस नाम
 का रायण का एक गुप्त (पत्र ३६ ३२) ।
 कोहण रेवो कुहण (हे १ १७१) ।
 कोहलिम वि [कुहलिम] कुहली
 कुहल प्रेमी । की आ (वा ७९७) ।
 कोहलिआ की [कुम्पाण्डिअ] कोईही का
 भाव
 'जइ सविध परबई निजयई
 मजहनि मोयुण' ।

तह मणो कोईसिअ, यन्ई
 कर्त्तसि कुट्टिहिं (गा ७९८) ।
 कोईही रेवो कोईही (हि २ ७३ दे २
 २ टी) ।
 कोहण रेवो कोहण (पत्र) ।
 कोईही की [के] जाणिवा तथा पचन-पाच
 विरोध (दे २ ४६) ।
 कोईही रेवो कोईही (पत्र) ।
 कोहि } वि[कोपन] कोपी कोपी-स्वभाव का
 कोहिस } गुम्पाखोर (सम ४, १४ ३३ २) ।
 कोरप } रेवो कउरप (हि १ १ पं०) ।
 कीसय }
 किसिय रेवो किसिय = कुपित (स
 ७२८ टी) ।

'ककूर रेवो कूर = कूर । (वा २६) ।
 केर रेवो केर (हि २, ६६) ।
 कसंड रेवो संड (गउअ) ।
 कर्त्तम रेवो सर्म (ले ३ २६) ।
 कगम रेवो काम (प्रास १७) ।
 कउरसण रेवो स्वकम (गउअ) ।
 'किसिया रेवो मिसा (मुपा २१) ।
 कसु रेवो सु (कसु प्रमि ३७; वाप १४) ।
 कसुत रेवो सुत (गउअ) ।
 कसेह रेवो सेह (मुपा २२२) ।
 कसेह रेवो सेव 'मात्सेव न खप' (ज
 ७२८ टी) ।
 कसोही रेवो सोही (पण्ड १ ३) ।

॥ इस सिलिपाइअसहमहण्ये कयाउअनईछेअणो
 हसमा तरणे समती ॥

ख

ख पुं [ख] १ ध्वज-बर्तौ शिरोध हसवा
 खान बयठ है (प्रसा, प्राप) । २ म. बाकल
 यणत 'मयि से मेह' (हि १ १७७ कुमा
 ६ १ २१) । ३ छत्रिअ (विदे १४४३) ।
 ख पुं [ख] १ पत्नी खग (पाप) दे २
 २) । २ कसुय की एक जाति को बिचा
 के बन्धे बाकल में धसन करती है, बिचावर
 लोक (पाप २६) । रेवो खय = खन ।
 गइ की [गति] १ धाकल-गति । २ कर्म-
 विरोध जो धाकल-गति का कपण है (कम
 २, १ पत्र ११) । गामिनी की [गामिनी]
 बिचा-विरोध बिचके प्रयास से धाकल में
 पनन किया जा सकता है (पत्र ७ १४२) ।
 गुपक म [गुप] धाकल-कुलुस अर्धशायित
 बलु (कुमा) ।
 खम } धक [खम्] धपित-कुल करण ।
 खउर } खय, खउर (प्रा० ७९) ।
 खइ वि [खयिअ] १ धयवाचा कउरवाला ।

२ लय रोपवाचा धय-रोपी (मुपा २१३
 २७६) ।
 खइअ वि [खयिअ] गतिध कसुनित (वीप
 धवि) ।
 खइअ वि [खयिअ] १ व्यास, बटिअ । २
 गतिध विमुपित (हि १ १६३ वीप-ख
 ११४) ।
 खइअ वि [खयिअ] १ बाया हुपा बुक,
 धन्य (पाप-ख २२ ख पु ४६) । २
 पाकल 'छय होति व कथाय । कइसी
 कीहि मणुखो नखाक्याई न गुणे' (स
 ११४) । ३ न जीवन कउण 'कउण न
 पीएण न नय एवो छाईसी हउअ मया'
 (पत्र १२३ ख ४ ४-पत्र २७६) ।
 खइअ वि [खयिअ] लय-प्राप्त कीक 'किमि
 कयकअयेरी' (सुर १६ १६१) ।
 खइअ पुं [खे] रेवो खभाव (ख ४ ४-
 पत्र २७६) ।

खइअ पुं [खयिअ] १ धय, विनत
 खइअ } कसुनन 'सि कि रं कइअ' १ कइअ
 मणुहई कमपयकीए 'कउण' (कसु) । २
 वि धय से कपन लय-संभवो धय से
 संभव खबेनाला । ३ कर्म-नाम से कउण
 'नम्यकयउहावो कइसी' (विदे १४६३ कम
 १ १२ १ १६, ४ २२ सम्म २३; वीप) ।
 खइअ न [खेअ] खेरी का मणुह, धनेक खेव
 (वि ६१) ।
 खइया की [खयिअ] बाप-विरोध केन हुमा
 कीहि—बाप नामा 'बहियमयाउकइया
 मियोए' (धवि) ।
 खइर पुं [खयिअ] कउर-विरोध, कीर का भाव
 (पापा कुमा) ।
 खइर वि [खयिअ] कउर-कुल-संभवो हि १
 १७ मुपा १२१ ।
 खइय [खे] रेवो खइय (ख ४ ४-पत्र
 १७६ टी) ।

सूत्रं पुं [सुपुट] स्वनाम-प्रसिद्ध एक सैन्य-
धर्म (पाम पाम्) ।
सूत्र म [सुम] १ सुख होना कर से
विह्वल होना । २ एक कम्पित करना ।
सूत्र (हे ४ ११३) कुमा) 'सूत्रं हि
विष्णुः' (हे १, १) ।
सूत्र नि [सु] कम्पित 'सूत्रविष्णुः' (सु-
मध्यम-पत्र) (हे १ ४४ स १०) ।
सूत्र न [सू] सौर-कर्म, ह्यमात्र (हेम
१८१) ।
सूत्र पुं [सुपुट] सौर वरीय का चिह्न
एव नाम (सु १ नि ११) । अक्षिप
न [सुतिन] वास्तु का एक प्रकार का
पात्र (नि १४११) ।
सूत्र नि [सुपुट] वस्तुनि (पाम सु
१) ।
सूत्रिण नि [सू] द्रष्टव्य सुविष्ट के
द्रष्टा किमा हुमा (हे १ ४१) ।
सूत्रिण नि [सु] द्रष्टव्य, विवक्षया
हुमा (नि ४) ।
सूत्रिण्य नि [सुपुट] सौर वरीय को
एव चिह्न किमा हुमा
'वस्तुनि' व किन्तुको य
वस्तुको य व मतिविधी ।
कर्मणि एव जीवो वास्तुनि
सूत्र्यं केव (उप) ।
सूत्रोपसम पुं [सुपुट] सूत्र एव का
विनाश सौर सुत्र का हनन (सु) ।
सूत्रोपसमि नि [सुपुट] १ सुत्रो
पसम से अपसम सुत्रोपसम-संक्षेप (सु
१४१) अ २ १ सु) । २ सुत्र, सुत्रोपसम
(सु नि २१३३) ।
सूत्र पु [सु] स्याद-सु (ही २१) ।
सूत्र पु [सु] स्याद स्याद, विष्णु की
बाधनी स्याद की बाधनी से एक
पुत्रि, विष्णु की सुत्रण के स्याद विवक्षय
मे स्याद का (ही १) । सूत्र पु [सु]
वस्तु विरोध, स्याद का एक नाम, की स्याद
वस्तु 'ह्यावर्ध' के नाम मे प्रसिद्ध है (ही १) ।
स्य एव [सु] १ नीचना । २ वस्तु में
वर्तना । स्य (सि) : 'स्य नमः' सुत्रि-

सुत्रिं सुत्रं वा स्य पुं सुत्रधर्म' (सुत्र
११८) ।
सूत्रिण नि [सु] १ नीचा हुमा (स १०४) ।
२ वस्तु में विष्णु हुमा (सि) ।
सूत्र प [सु] अक्षिप होना (सु) ।
सूत्र नि [सु] अक्षिप होना (सु) ।
सूत्र न [सु] पादों में लोहे के डंठि के पाद
होना वाता सप्त धारि का नीच कपडा—
जो एक धारि में नीचा हुमा रहता है, नि
व्या 'अक्षिप' (सुत्र १४४) ।
सूत्र पु [सु] राहु वा कृष्ण पुत्राव
विरोध (सुत्र २) ।
सूत्र पु [सु] १ पक्षि-विरोध कर्मणी
(हे २, ७) । २ वस्तु विरोध 'सूत्रविरोध-
वस्तुविरोध' (सूत्र २११) ।
सूत्र पु [सु] १ कर्म कीच (हे २ ११,
पाम) । २ कर्म काय, वती (अ ४ २) ।
३ पादों के पक्षि के पीठ का काया कीच
(सुत्र १०—पम २२५) ।
सूत्र पु [सु] सुत्रा हुमा वेद (हे २, १८) ।
सूत्रा की [सु] अक्षिप-विरोध (सि) ।
सूत्रिण नि [सु] नीचा हुमा ही
पुत्रपुत्र (सु) ।
सूत्र [सु] सूत्र्यं सौम्या दुकका करना,
विष्णु करना । सूत्र (हे ४ ११७) । वस्तु
सूत्रित (हे ११ १२ सुत्रा ११३) । सूत्र
सूत्रिण्य (सु) । सूत्र सूत्रिण्य (उप
१२४ सी) ।
सूत्र पु [सु] एक गच्छ-साल (हेम २१) ।
कर्म न [सु] सूत्र्यं सौम्या कायधर्म
(सुत्र ४) ।
सूत्र (पम) केवो स्याद 'सुत्र्यं सूत्र्यं वस्तु
वस्तु' (सि) ।
सूत्र पुं [सु] दुकका धर्म, विष्णु
(हे २ १०४) कुमा) । २ नीची विष्णु (वर
१) । ३ सुत्रा का एक विष्णु
'सूत्र'—(सु) । सूत्र पु [सु] वस्तु
का वस्तु-पात्र (सुत्रा १ ११) ।
सूत्रा की [सु] स्याद १ स्याद वस्तु की
एक दुक (अ २, १) । स्य पु [सु]
विष्णु-विरोध पाम का एक वस्तु वा

वस्तु-पात्र (पम १, ४) । सूत्र पुं [सु] विष्णु-
पात्र (सुत्रा १ ११) । स्य पु [सु]
दुकका-दुकका वस्तु-वस्तु (सि १११) ।
स्य केवो स्य (अ १) ।
सूत्र नि [सु] १ सूत्र, सिर, मस्तक । २
वस्तु का वस्तु, स्याद-वस्तु (हे २ १८) ।
सूत्र की [सु] वस्तु की दुक (हे २ १०) ।
सूत्र पुं [सु] नीचा विष्णु (सु
१४१) ।
सूत्रा न [सु] विष्णु-विरोध (अ १
१८) ।
सूत्रा न [सु] विष्णु, वस्तु नम
(सुत्रा १ ४) । २ कर्म, नाम वस्तु का
विष्णु नाम कर्म 'अक्षिप' (सुत्रा १४) । ३ वि
वस्तु करेनाम,
मस्तक (सुत्रा ४१२) ।
सूत्रा की [सु] विष्णु, विष्णु
(सुत्र, नि १) ।
सूत्र पुं [सु] वस्तु, वस्तु
(सुत्रा १ १) । २ वस्तु, वस्तु । ३ कर्म
वस्तु करेनाम (सुत्रा १ १) ।
सूत्रा न [सु] वस्तु, वस्तु
करेनाम (सुत्रा १ १ वस्तु) ।
२ वस्तु-पात्र सुत्रा वस्तु करेनाम (सुत्रा
१ १) वि २११ । वस्तु) ।
सूत्रा न [सु] वस्तु का वस्तु-विरोध
विष्णु वस्तु के वस्तु वा (सुत्र—नीची
११४) ।
सूत्रा की [सु] विष्णु, नीची, वस्तु, वस्तु
(सि १०४) ।
सूत्रा की [सु] वस्तु का एक विष्णु
कर्म (सुत्र) ।
सूत्रा की [सु] वस्तु, वस्तु
करेनाम (सुत्रा १ १) । वस्तु
वि [सु] दुकका-दुकका विष्णु हुमा (सु
११ १११) ।
सूत्रा न [सु] वस्तु का वस्तु-विरोध
वस्तु का एक विष्णु-वस्तु (सुत्र) ।
सूत्रा न [सु] वस्तु का वस्तु-विरोध
वस्तु का एक विष्णु-वस्तु (सुत्र) ।

समाख्यान } श्री [समाख] समाख, माखी
समाखिय } मिला (सं १७ १ पं.) ।
समाखिय नि [समिख] माख किया हुआ
(हि १ १२२ गुण १९५) ।

समिय नि [समिख] माख किया हुआ
(सु १९) ।

सम्प कैसी सख = सम्प । सम्प (शब्द १८) ।

सम्पकसम्प पुं [सि] १ संघात सखाई । २
मन का सुख । ३ परमात्मन का निष्पन्न
(हि २ ७६) ।

सय कैसी सख । सय (पं) ।

सय सख [सि] सय पाल, मट्ट होगा । सय
(पं) ।

सय कैसी सख (पाठ) । १ पाण्डव एक ठोका
पहुँचा हुआ (हि २, ४२) । राय पुं [राय]
पसिदी का राजा पश्य-पसी (पाठ) । बह
पुं [पवि] पश्य-पसी (हि १२ २) ।

सय न [सुत] २ हट्ट बाब 'चारकोर' व
कप' (सं ७२८ टी) । २ नि हठित
बनाया हुआ 'सुखोत्पन्न कीर्तन' (भा
१४ गुण १४६ सु १२ २१) । तबार
सी पुं [बार] तिन्नाकापे छात्र या
छात्री (सं १) ।

सय नि [प्राव] बोध हुआ (पं ९१
४२) ।

सय पुं [सय] १ सय, सय, विपन्न (सं
११ ११) । २ रोप-विशेष राज-समा
(मृ ५ १२) । सयि नि [सयि] सय-
वारक (गुण ११२) । सय सय पुं
[सय] प्रलय-काल (सं ६ ४ १७७) ।
'सि' पुं [सि] प्रलय-काल की भाग (हि
१२ ८१) । नमि पुं [नमि] केवल
शरीर परिपूर्ण आत्मता सर्वज्ञ (हि
११८) । समय पुं [समय] प्रलय-काल
(मृ ५ १) ।

सय १२ नि [सय १२] माध-वारक (पं ७
१ ११ १४ गुण ८२) ।

सयनकर नि [सयानकर] माध-वारक
(पं १०) ।

सय १५ [सय १५] १ पाण्डव में अन्त-
बाणा गयी (जी २) । २ विद्यावर, विद्या
वत के पाण्डव में अन्तराला मनुष्य (गु

१ ८८ गुण २४) । राय पुं [राय]
विद्यावरों का राजा (गुण १७४) ।

सय १६ [सय १६] - सयि (पं १२ गुण
२२३) ।

सय १७ नि [सयि] सयि-सयिनी । श्री
'सय' (सु २ १) ।

सय १८ पुं [सि] संघ-पाल बाँध का मन
(सि) ।

सय १९ [सय] १ करवा, टपकना । २
मट्ट होगा । सय (हि १ ४३) ।

सय नि [सय] १ निष्ठुर, क्वा पक्ष बजोर
(गु २ १) २ २ ७८ पाठ) । २ पुं
बौर, पवा (पं १ १ पं २९ ४४) ।
३ पुं सय-निरोग (सि) । ४ न. सित का
लै (सं ४ १) । ५ न. [सय] क्वा
सय १६ की राजा (अ १ ४) । ६ न.
[सय] सयना पुं निरी का प्रथम कण-
संघ-विशेष (सं १) । ७ न. [सय]
विशेष सय १६ की ही हसि होती ही ऐसा
कम निष्ठुर बौरा (गुण २ २) । ८ न. [सय]
[सय] १ निष्ठुर क्वा करनेवाला ।
२ पुं सयना सयनापिक (सं २१८) ।

'सय' पुं [सय] सय सय (सि
सं १) । ३ न. पुं [सय] हट्ट नाम का
एक विद्यावर राजा की राजा का बहोली
का (पं १ १७) । ४ न. पुं [सय]
सयना क्वा, हट्ट प्रसी गुण ११९
४७४) । ५ न. [सय] १ निष्ठुर
हट्ट नाम का राजा या एक सुय
(पं २९, १) । ६ न. पुं [सय]
१ सय १६ निष्ठुर । २ सय १६ निष्ठुर
का विद्यावर (पं १ ४) । ३ न. श्री
[सय] १ सय-निरोग (पं २ २३
गुण २ सय) । ४ न. पुं सय १६ (सं
१) । ५ न. [सय] १ निष्ठुर बजोर
(गुण १ १) । ६ न. पुं हट्ट नाम का एक
सय क्वा (पं) । ७ न. [सय] १ संघ-
पाल का लै (सं ४ १) । ८ न. [सय]
[सय] १ निष्ठुर (सं १२) ।

सय २० [सय] १ सय १६ निष्ठुर बजोर
की एक बहोली (सं १२) ।

सय २१ [सय] १ सय १६ निष्ठुर बजोर
की एक बहोली (सं १२) ।

सय २२ [सय] १ सय १६ निष्ठुर बजोर
की एक बहोली (सं १२) ।

सय २३ [सय] १ सय १६ निष्ठुर बजोर
की एक बहोली (सं १२) ।

सय २४ [सय] १ सय १६ निष्ठुर बजोर
की एक बहोली (सं १२) ।

सय २५ [सय] १ सय १६ निष्ठुर बजोर
की एक बहोली (सं १२) ।

सय २६ [सय] १ सय १६ निष्ठुर बजोर
की एक बहोली (सं १२) ।

सय २७ [सय] १ सय १६ निष्ठुर बजोर
की एक बहोली (सं १२) ।

सय २८ [सय] १ सय १६ निष्ठुर बजोर
की एक बहोली (सं १२) ।

सय नि [सय] निष्ठुर, सयानी (सि
४५७) ।

सय २९ [सय] १ सय १६ निष्ठुर बजोर
की एक बहोली (सं १२) । २ न. [सय]
४५) ।

सय ३० [सय] १ सय १६ निष्ठुर बजोर
की एक बहोली (सं १२) । २ न. [सय]
४५) ।

सय ३१ [सय] १ सय १६ निष्ठुर बजोर
की एक बहोली (सं १२) । २ न. [सय]
४५) ।

सय ३२ [सय] १ सय १६ निष्ठुर बजोर
की एक बहोली (सं १२) । २ न. [सय]
४५) ।

सय ३३ [सय] १ सय १६ निष्ठुर बजोर
की एक बहोली (सं १२) । २ न. [सय]
४५) ।

सय ३४ [सय] १ सय १६ निष्ठुर बजोर
की एक बहोली (सं १२) । २ न. [सय]
४५) ।

सय ३५ [सय] १ सय १६ निष्ठुर बजोर
की एक बहोली (सं १२) । २ न. [सय]
४५) ।

सय ३६ [सय] १ सय १६ निष्ठुर बजोर
की एक बहोली (सं १२) । २ न. [सय]
४५) ।

सय ३७ [सय] १ सय १६ निष्ठुर बजोर
की एक बहोली (सं १२) । २ न. [सय]
४५) ।

सय ३८ [सय] १ सय १६ निष्ठुर बजोर
की एक बहोली (सं १२) । २ न. [सय]
४५) ।

सय ३९ [सय] १ सय १६ निष्ठुर बजोर
की एक बहोली (सं १२) । २ न. [सय]
४५) ।

सय ४० [सय] १ सय १६ निष्ठुर बजोर
की एक बहोली (सं १२) । २ न. [सय]
४५) ।

सय ४१ [सय] १ सय १६ निष्ठुर बजोर
की एक बहोली (सं १२) । २ न. [सय]
४५) ।

सय ४२ [सय] १ सय १६ निष्ठुर बजोर
की एक बहोली (सं १२) । २ न. [सय]
४५) ।

सय ४३ [सय] १ सय १६ निष्ठुर बजोर
की एक बहोली (सं १२) । २ न. [सय]
४५) ।

सय ४४ [सय] १ सय १६ निष्ठुर बजोर
की एक बहोली (सं १२) । २ न. [सय]
४५) ।

सय ४५ [सय] १ सय १६ निष्ठुर बजोर
की एक बहोली (सं १२) । २ न. [सय]
४५) ।

सय ४६ [सय] १ सय १६ निष्ठुर बजोर
की एक बहोली (सं १२) । २ न. [सय]
४५) ।

सय ४७ [सय] १ सय १६ निष्ठुर बजोर
की एक बहोली (सं १२) । २ न. [सय]
४५) ।

य पाण्डु य वड्ठ गहिओ मंथो प्रहसण्णव
(भा ११२; पञ्च १५ ११६)।

खाण न [क्याण] कयल वल्लि (पञ्च)।

खाणि की [खानि] काम धारर (दे २, १९ कुमा गुवा १५८)।

खाणिज वि [खानिय] कुववाया हुवा हि (१, २७)।

खानी देखो खाणि (पाप)।

खाणु } दु [खाणु] स्थाणु ठूठा हुइ धवध
खाणुय (पण्ड २ ३ दे २ ७ कय)।

खावि केओ खाइ = खासि (संज्ञ ६)।

खाम छक [क्षमय] खाना माथी मंथना।

खामेइ (ख)। कर्म खामिअइ, खानीअइ
(दे ३ १३१)। छंछ खामना (का)।

खाम वि [क्षम] १ इउ दुव्वन 'कामय'
कुचोव (उप ६८९ टी पाव)। २ धीउ
पण्ड (दे ३, ४६)।

खामय न [क्षमय] खाना (भावक १९६)।

खामना की [क्षमना] खाना माथी
मथना खाम-माथना (मुवा ३६४ विवि
७६)।

खामिय वि [क्षमित] १ जिके पाव खाना
मानी वई हो बड्ठ, खाना हुवा (विदे २३८८
दे ३ १३२)। २ बहन किया हुवा। ३
विस्मित विस्मय किया हुवा 'सिधिए
पडोरा पुण न खामिय मै कयण (पञ्च
४१ ११; दे ३ १३३)।

खाय दुं [खाय] पांकी नरक-मुनि वा एक
नरक-स्थान (देव ११)।

खायर देखो खाइर (वर्न ६)।

खार दुं [खार] १ एक नरक-स्थान (देव १
३) २ कुपरितर्ष की एक जाति (मुवा ३
१ २४)। ३ बेर, दुसरी (मुवा १ १)।
'खार दुं [खार] खार पकल की अट्टी
(काव २ १ २)। छंन दुं [खन]]
पाण्डेव ना एक बेर बादीकण (आ =
पञ्च ४२)।

खार दुं [खार] १ खण्ड मरणा संभव
(आ ६)। २ मय खार (उत्तर १ १३)।
३ खार, खार-परेव (मुवा १ ७)।
४ मण्ड मोन (दु ४)। ५ खामन-विरोध
(गण १)। ६ खरिवा खनी (मुवा १ ४ ३)।

७ वि कट्टा वा बरपय स्वाववाला कट्टा बीज
(पण्ड १७—पञ्च ३१)। ८ खारी बीज
मयकीन स्वाववाली वस्तु (भा ७ ९ सुम १
७)। वड्ठही [त्रपुपी] कट्टा वस्तु बरपय
विस्मय (पण्ड १७)। 'विह्व न [विह्व]
खारे से संस्कृत वैन (पण्ड २ ३)। मेह दुं
[मेध] खार रखवाले पानी को बर्षा (भा ७
९)। वल्लिय वि [पात्रिक] खार-पात्र में
बियाया हुवा। २ खार-पात्र का धाराय मुख
(धीय)। वल्लिय वि [वृत्तिक] खार में
छंका हुवा खार से सींचा हुवा (धीय वडा
१)। वापी की [वापी] खार से मरी हुई
वासी वृक्षा (पण्ड १ १)।

खारिफिरी की [रे] गोधा गोध; जन्तु-विरोध
(दे २ १)।

खारवृणय वि [खारवृणय] खारवृणय का
खारवृणय-वृणय (पञ्च ४२ १३)।

खारय न [वे] दुव्वन खनी (दे २ ७९)।

खारायण पु [खारायण] १ अग्नि-विरोध।
२ मण्डव्यमोच दे खकाभूत एक चीज (अ
७)।

खारि की [खारी] एक प्रकार की नाप १४
देर की टीन (भा ८ १२)।

खारिअरी की [खारिअरी] खारि-परिचित
वस्तु जिसमें प्र-सूके पैसा पात्र भर हुन के-
वली (भा ८ १२)।

खारिक न [वे] कम-विरोध कुवाप (सिदि
११६४)।

खारिय वि [खारिय] १ खारित मरणा
हुवा (मय ९)। २ पानी में बिछा हुवा
(अवि)।

खारी देखो खारि (भा ८ १२ को १)।

खारयाणिय दुं [खारयाणिक] १ स्नेह्य देश-
विरोध। २ वसने खनेवाली स्नेह्य जाति
(मय १२ २)।

खारोवा की [खारोवा] नदी-विरोध (पञ्च)।

खास छक [खास] खोवा पखाणा, पानी
से साव बनना। ३ खासणिअ (उप ३२९)।

खास कीम [रे] नाला मोटी, गंधी निरुज्जे
नानी (आ २, १) की खासा (हुवा)।

खासय न [खासय] ब्रह्मण पखाणा (मुवा
३२८)।

खासिअ वि [खासिअ] भील घोया हुवा
(वी ११)।

खायण न [क्यायण] प्रतिपादन (पंचा १
७)।

खायणा की [क्यायणा] प्रसिद्धि प्रकयन
'भक्त्याय कामणायिहय' का (विदे)।

खायिअर वि [क्यायमान] जिसको खिनाया
जाता हो वह 'क्यायिअर' 'खायिअर'
(विपा १ २—पञ्च २४)।

खायिय वि [क्यायित] जिसको खिनाया
गया हो वह 'क्यायिअर' 'खायिअर' (धीय)।

खायन वि [क्याययन] प्रक्याति करता
हुवा प्रसिद्ध करता हुवा (उप ८१३ टी)।

खास छक [खस] खसना खसी खाना।
खासई (उप १९)।

खास पु [खस] रोप-विरोध खसी की
बीमारी खसी (विपा १ १; मुवा ४ ४
छण)।

खासि वि [खसिम] खसी का रोगवाला
(मुवा ३७९)।

खासिअ न [कसित] खसी खसना (दे १
१८१)।

खासिअ पु [खासिक] १ स्नेह्य देश विरोध।
२ वसने खनेवाली स्नेह्य जाति (पण्ड १
१—पञ्च १४—इक सुम १ ३, १)।

सिअ छक [सि] धीउ होता। कर्म, 'खिअइ
खरंघरी' (उप १५४)। खीयति खीयति
(कम्म ६ ९९ टी)।

खिइ की [खिति] धूमि की वरा (पञ्च २
१३६, भा ४१६)। गोवर दुं [गोवर]
मनुष्य माणुव धारणी (पञ्च ३३ ४१)।

पण्डु न [प्रतिष्ठ] नदर-विरोध (म ९)।

पण्डुय न [प्रतिष्ठिय] १ इस नाम का
एक नगर (उप ३२ टी स ७)। २ पण्डुइ
नाम का नगर, जो प्राकृत शिखर में 'पण्ड'
नाम से प्रसिद्ध है (टी १)। 'सार'
दुं [सार] इन नाम का एक दुर्ग (पञ्च
न ३)।

पण्डुय छक [मिदुय] मिदि प्रागज नरता।
जिके। कर्म मिमिअर (मुवा ३ ११)।

मिअरविआ की [मिअरविआ] छुर पहिरना
(पञ्च)।

४) । २ न बारहवीं पुण-स्मालक (सम २६) ।
 'राग वि [राग] । नीचराय राग-नृपति ।
 २ पु निररन दीकर देव (पत्र १) ।

श्रीयमाग वि [श्रीयमाग] विरका धय
 होना जाता हो नह (या ६८८ टी) ।

श्रीर न [श्रीर] केला हो दिन का उपवास
 (संकोच २८) । 'हिंदिर पु [हिंदिर]
 ह-विरोध (दुप ७६) । 'हिंदिरा श्री
 [हिंदिरा] स्त्री-विरोध (दुप ७६) । वर
 पु [वर] । सपुत्र-विरोध । २ हीन-विरोध
 (मुद्र १६) ।

श्रीर न [श्रीर] । दुप दुप (हे २ १७
 प्रत्यु १३) । १६८) । २ पत्नी वन (ह २
 १७) । ३ पु धीरवर सपुत्र का वशिष्ठायक
 देव (जीव ३) । ४ सपुत्र विरोध श्रीर सपुत्र
 (पत्र ६६ १३) । कर्षण पु [कर्षण]
 इस नाम का एक ब्रह्मण-नरायण (पत्र
 २१ २) । काश्याय श्री [काश्याय]
 वनस्पति विरोध श्रीरविचारी (पण १) ।
 वल पु [वल] श्रीर-सपुत्र सपुत्र-विरोध
 (विप) । असतिहि पु [असतिहि] बही
 पुनोच पर्व (मुप २१६) । दुप दुप पु
 [दुप] दुपनामा वेद त्रिवर्ग दुप निरुमता
 है येन दुप की वारि (वीप १४६ निपु
 १) । धाद श्री [धारी] दुप विपलेवली
 बाई (छाया १) । पूर पु [पूर]
 जपना दुप (पण १७) । ८३ न
 पु [प्रम] धीरवर हीन का एक वशिष्ठाया
 देव (जीव ३) । 'मिह पु [मिह] दुप
 मयाज वरादराजी पत्नी की वर्या (विप) ।
 वर श्री [वरी] प्रपुत्र दुप देवताजी (ह
 ३) । वर पु [वर] हीन-विरोध (वीप
 १) । वारि न [वारि] धीर सपुत्र का
 वन (पत्र ६६ १८) । हर पु [हर]
 धर] धीर-मागर (रज्ज २४) । प्रम
 पु [प्रम] नमि-विरोध विपके प्रमा
 है वन दुप की वर सपुत्र मापुत्र हो ।
 २ होनी मयिपराणा जीव (पण २ १
 टी) ।

श्रीरदय वि [श्रीरदिन] संज्ञा-श्रीर, त्रिवर्ग
 दुप वन दुप हो वर, वर ही नगी
 पतिप वदिप मयिप वपुषा काग-पुषा

श्रीर (१ २) दया वरकना (छाया १ ७) ।
 श्रीरि वि [श्रीरि] । वृषकाता । २ पु
 विरमं वृष विरमता है ऐन वृष की वारि
 (व १ ६१ टी) ।
 श्रीरिजमाग वि [श्रीर्यमाग] विरका
 होन विप माग हो नह (या २,
 १ ४) ।

श्रीरिपी श्री [श्रीरिपी] । वृषपत्नी (या
 २ १ ४) । २ वृष-विरोध (पण १—
 पत्र ३१) ।

श्रीरि श्री [श्रीरि] धीर, पञ्चम-विरोध
 (मुप ११६ पण) ।

श्रीराय पु [श्रीराय] सपुत्र-विरोध धीर
 सगर (हे २, १८२ गा ११७ पत्र ३
 २३ टी व १६४) ।

श्रीरोया श्री [श्रीरोया] इस नाम की एक
 गरी (ह ८ २ ३) ।

श्रीरोय केनो का राग (ह ७) ।

श्रीरोय पु [श्रीरोय] । स-रायक । श्रीर सगर
 श्रीरायक । (छाया १ ८ टी) ।

श्रीराया केनो श्रीरोया (ह ३ ४—पत्र
 १६१) ।

श्रीर } पु [श्रीर, क] बीमा नृपति,
 श्रीर } नृपति (न १ ६ दुप १ ११ हे
 श्रीर } १८१ दुप) । मया पु
 [मया] मय-विरोध वरा वृषी वपुषा
 एन मे नृपति के निराज बनाये गये हैं (मुप
 १ ११) ।

संज्ञायम न [श्रीर] केन करणा श्रीर
 करणा । वार श्री [वारी] वैन-दुप
 करणनामी बाई (छाया १ १—पत्र १७) ।

श्रीरिया केनो श्रीरिया (जीव ४८) ।

श्रीरिया श्री [श्रीरिया] श्रीरि नृपति (यापन) ।

श्रीर पु [श्रीर] मय-वराय मय-वराय मय
 (हे २ ९१) ।

मु न [मुन] इस धर्मी का मुचक
 मय्य—१ निररन मय-वराय । २
 विरर विचार । ३ संक्षय संदि । ४ वंश
 बना । ५ विपय धार्य (हे २ १६८
 वर) । गा १ १४२ ४ १ राज ३ दुप) ।
 मु रोग मु । (पण ७ ४ नृप १६ ;
 छाया १ ११) ।

मुद्र श्री [मुद्रि] । टीक । २ टीक का
 निराज (छाया १ १६ मय १ १) ।

मुद्र वि [मुद्रि] । विपिप । २ विपिप
 छाया 'मुद्रा विप' (दुप १४) ।

मुद्रपुय पु [मुद्रि] नाक का धि (हे २ ७६
 पण) ।

मुद्रुजी श्री [मुद्रि] रमा, मुद्रुजा (हे २ ७६) ।
 मुद्रुह पु [मुद्रि] मय की एक उलम वारि
 (सम २१६) ।

मुद्र पु [मुद्रि] नृपति, नृपति । मोक्ष वि
 [माटक] । नृपति को मोक्षनामा बखे
 छुकर माग बनेनामा । २ पु इस नाम का
 एक हाथी (मा—मुद्र ८४) ।

मुद्र वि [मुद्रि] स्वमित स्वपय-वराय (हे
 २ ७१) ।

मुद्र (टी) वर [मुद्रि] । वला । २ विला
 नृपति । मुद्रि (पत्र ६१) ।

मुद्र वर [मुद्रि] नृपति वला । मुद्र
 (पत्र ६१) ।

मुद्रा श्री [मुद्रि] नृपति को रोपने के लिए बनाया
 जाता एक सुखम उपकरण (हे २ ७३) ।

मुद्र वि [मुद्रि] धीम उपजनाता
 (पण १ १—पत्र २३) ।

मुद्र वर [परि + मस] । रंजय । २
 निररन कण । मुद्र (पत्र ७२) ।

मुद्र } वि [मुद्र] । वृषका । २ वामन
 मुद्र } (हे १ १८१ ; या २१४) । ३ वर
 देवा (वीप) । ४ वर पर्व मे हीन (व
 ११) । ५ वर, संज्ञा-विरोध यदेव का
 वामन वाकर (ह ३ ४६, धीर) ।
 श्री मुद्रा (छाया १ १८) ।

मुद्रि वि [मुद्रि] वृषका (यापन) ।

मुद्र वर [मुद्रि] । विला करिण
 करण मुद्रा करण । २ वर-वृषा टीक
 होना । ३ वृषा वृषि होना । मुद्र (माट—
 माटिप २२६ हे ४ ११६) ; नृपति
 (व) ।

मुद्र वि [मुद्रि] वृषि, नृपति विप (हे २
 ७४ विप) ।

मुद्र केनो मुद्र = वर । मुद्र (हे ४ ११६) ।
 मुद्रि (न = ४) । वर 'नरविपयपय

सुब् पु [सुब्] बिजकी खाका धीर युक्त छोटे होते हैं ऐसा कृष्ण (छाया १ १—पत्र १११)।
सुब्ब पु [सु] दुस-विरोध, कर्णिक-गुण
पैटीला वात (हे २ ७४)।

सुब्ब रेको सुम् । सुम्ब (पत्र)।
सुब्ब न [सु] पते का पुइया रोना (पत्र २)।

सुब् रेको सुम् । सुम्बियम् (मुद्रा १११)।
सुब्बा की [सुब्] सुब्ब इड्डया (महा
प्राप्त २७१)। परिसह, परीसह पु
[परिसह, परीसह] सुब् की बेरना की
शक्ति से सहन करना (उत्तर २, पंजा १)।
सुब्बि न [सुम्बित] १ सोम-मास (व १
४६, मुद्रा २४१)। २ सोम संवत्स (पंजा ७)।

सुब्बा न [सुब्] मुम्बान, हामि (सुर ४
१११; महा)। २ वरसह इम्बान (महा)।
३ सुम्बा नमी (मुद्रा ७-४१)।

सुब्ब सक [सुब्ब] बिज करना, ले
जबाना। केर (विशे १४२ महा)।

सुब्ब पु [सुब्] १ केर, खोण शोक (उत्तर
७२२ टी)। २ तकतीक, पत्थिम (व १११)।
३ संयम विधि (उत्तर ११)। ४ कर्मगत
माहित (माया)। पत्र स वि [सु]।
निपुल दुत्तल नमुद, नानकार (उत्तर ६ २
धीर १४७)।

सुब्ब रेको सुब् (मुद्रा १ १ माया)।

सुब्ब पु [सुब्] व्याय, मोचन (वि १२, पत्र)

सुब्ब न [सुब्ब] १ केर, उदक। २ वि
केर जगन्मोक्षा (मुद्रा)।

सुब्ब रेको सुब्ब (मुद्रा १ ६)। बिज
पु [विधि] विचारणी का पत्रा (पत्र १५,
१७)। बिजपु पु [विधिपि] विचारणी
का पत्रा (पत्र १५, १४)।

सुब्ब रेको सुब्ब (मुद्रा १ ६)। बिज
पु [विधि] विचारणी का पत्रा (पत्र १५,
१७)।

सुब्ब रेको सुब्ब (मुद्रा १ ६)। बिज
पु [विधि] विचारणी का पत्रा (पत्र १५,
१७)।

सुब्ब रेको सुब्ब (मुद्रा १ ६)। बिज
पु [विधि] विचारणी का पत्रा (पत्र १५,
१७)।

सुब्ब रेको सुब्ब (मुद्रा १ ६)।

सुब्ब रेको सुब्ब (मुद्रा १ ६)।

सुब्ब सक [सुब्] लेडी करना वात करना।
सुब्ब (मुद्रा २७१)। 'यह प्रत्यय य युक्ति
हमारे सेविन कल्पकम्बे' (मुद्रा २७७)।

सुब्ब सक [सुब्] इड्डया। सुब्ब (विशे
११७ मुद्रा ७१)।

सुब्ब न [सुब्] १ सुब्बा का प्राकारणता नगर
(धीर पत्र १ २)। २ नदी धीर पत्रों
के केविन नगर (सुब् २ २)। ३ पु सुब्बा
शिकार (महि)।

सुब्ब न [सुब्ब] फलक इल (पत्र १
४)।

सुब्ब न [सुब्ब] लेडी करना (मुद्रा २७७)।
सुब्ब न [सुब्ब] नरेडना पीछे इड्डया
(उत्तर २२६)।

सुब्ब न [सुब्ब] सिखीला (वाट—
पत्रा ६२)।

सुब्ब पु [सुब्ब] १ विप अहर (हे २,
१)। २ वर-विरोध (मुद्रा)।

सुब्ब वि [सुब्ब] गाराक, मात करेपवाता
(हे २ १ मुद्रा)।

सुब्ब न [सुब्ब] छोटा वात (पत्रा १
१६२)।

सुब्बाका वि [सुब्ब] केर करेपवाता
कमासिगर (उत्तर १ ६८)।

सुब्बि न [सुब्ब] हल से विचारणी (हे १
१११)।

सुब्बि पु [सुब्बि] १ नारायण, नगर।
२ नारायणता (हे १ १)।

सुब्ब सक [सुब्] लेडी करना केर करना।
सुब्ब (हे ४ ११५)। सुब्बि (मुद्रा)।

सुब्ब न [सुब्ब] १ लेडी केर तमासा
सुब्बि १ नारायण (हे २ १७४ महा मुद्रा
१७)। स २ ६)। २ नारायण, नगर 'नर'
सुब्बि निरेड्ड (मुद्रा २२१)।

सुब्बा की [सुब्बा] लेडी केर तमासा
(धीर पत्र १ १७४ पत्र २)।

सुब्बा की [सु] बापी तमा 'नर'। पत्रिमा
सुब्बा (व ४४१)।

सुब्ब पु [सुब्] १ पत्रा (विशे २ ८८)।

२ सुब्बि सुब्बि केर (हे १)। ३ नमी,
सुब्बि। ४ देव, नमी नगर नरेड्ड स्वात
(कथा: पंजा: विशे)। ५ मार्ग की (उत्तर १)।

कल्प पु [कल्प] १ देव का रिवाज (हे
१)। २ क्षेत्र-संघर्षी कल्पान। ३ धर्म-विरोध
विशेष से क्षेत्र-विरोध धारा का प्रतिपादन
हो (पत्र)। पत्रिमाय न [पत्रिमाय]
काल का माय-विरोध (माय)। रियि पु
[रिय] मार्ग सुब्बि से ज्ञान मनुष्य (पत्र १)
१)। सुब्बि विरोध = क्षेत्र।

सुब्ब पु [सुब्ब] पत्र (मुद्रा २)।

सुब्बि वि [सुब्बि] क्षेत्रवाता क्षेत्र का स्वादी
(विशे १४२)।

सुब्ब न [सुब्ब] १ कुल कल्याण हित
(पत्र ११, १७ या ४६६ पत्र ११
पत्र ६)। २ प्राप्त वस्तु का परिभाजन
(सुब्बा १ ३)। ३ वि कुलका-मुक्त हित
कर, उपपन्न-विशे (सुब्बा १ ६ पत्र ७)।
४ पु नारायण के पत्रा विरोध का एक
प्रकार (माय १)। पुरी की [पुरी] १
नगरी-विरोध (पत्र २ ७)। २ विरोध
वर्ष की एक नगरी (उत्तर २, १)।

सुब्ब पु [सुब्ब] १ कुलकर सुब्ब-विरोध
(पत्र १ २२)। २ देवत क्षेत्र के नगरी
कुलकर-सुब्ब (सुब् १११)। ३ सुब्ब-विरोध
प्रतिष्ठापन देव-विरोध (उत्तर २, १)। ४
स्वभाव-विशे एक क्षेत्र सुब्बि (पत्र २१
न)। ५ वि कल्याण-कारक हित-नगरी
(उत्तर २११ टी)।

सुब्ब पु [सुब्ब] १ कुलकर सुब्ब-
विरोध (पत्र १, २२) देवत क्षेत्र का पत्रिमा
मुलकर सुब्ब-विरोध (सुब् १११)। २ वि
क्षेत्र-नगर कल्याण-विशे (पत्र)।

सुब्ब पु [सुब्ब] स्वभाव-विशे एक धर्म
हृद वैभुति (पत्र)।

सुब्ब पु [सुब्ब] पत्रा नारायण का
एक पुर्न-सुब्ब (मुद्रा १)।

सुब्बि वि [सुब्बि] क्षेत्रवाता क्षेत्र का स्वादी
की एक खाता (कल्प)।

सुब्बा की [सुब्बा] १ विरोध वर्ष की एक नगरी
(उत्तर २ १)। २ क्षेत्र-विरोध नगरी-विरोध
(पत्र २ १)।

१ १—पत्र ४३ टी. पत्रा २) । २ सन कय
बना हुआ बक (सन १२३ मग ३ १ ११।
पए २ ४) । ३ रेखायी बक (उप १ ४६
स २) । ४ नि धवली-संभवी
सन-संभवी (डा १ मग १ १
११) । पसिय न [मरत] विद्या-विरोध
मिसे बक में बैठा का धातुगम विद्यु
बाता है (डा १) ।

श्लोमिय न [मीमिक] १ कपास का बना
हुआ बक (डा १ ३) । २ सन कय बना
हुआ बक (कय) ।

श्लोमिय नि [मीमिक] १ रेणुम सम्मन्धी ।
२ सन-सम्मन्धी (पत्र १२७) ।
श्लेय बेको श्लेय (सम १२१ दक) ।
श्लोर } न [वे] पाम-विरोध कचोलक, कटीप
श्लेरय } (उप ३ १३३ एमि) ।
श्लोह पु [वे] १ छोटा पत्रा (रे २ ४) ।
२ बक का एक रेश (रे २ ४ १२, १
३३ १) । ३ मय का नीचला कीट-कर्म
(मात्रा २ १ ४ ३३ १) ।
श्लोह पु [वे] पुच्छपर, बामुप (पिंड १२७) ।
श्लोस न [वे] शीटर, मल्लर 'श्लोस कोलर'
(मिह १३) ।

श्लोसज्य नि [वे] क्लुस सन्ने बीर बाहर
मिक्ने हुए बतियाता (रे २, ७७) ।
श्लोसिय नि [वे] जीर्ण-प्राय किया हुआ
(पिंड ३२१) ।
श्लोह बेको श्लोम = श्लोम् । श्लोह (मदि) ।
बह-श्लोह (मि १२ ११) । बह-श्लोह
जंत (सि २ ३) ।
श्लोह बेको श्लोम = श्लोम (पए १ ४ कुमा
गुप १६७) ।
श्लोहण बेको श्लोमय (बा १२ गुप ३ २) ।
श्लोहिय बेको श्लोमिय (स्य) ।

॥ इय छिरिपादसहस्रमहण्यये क्षमापद्मसहस्रमहण्यो
पद्याहो लरणी धमती ॥

ग

गगु [गु] व्यामल-बर्षे विरोध इलका स्वाग
कएठ है (पामा मर) ।

ग नि [ग] १ बनेका। २ गच्छ होने-
वाला बेटे—पारय, बचन (बाबा म्हा) ।
गगर्बत नि [गगर्ब] मया हुआ (बाह
३३) ।

गग की [गदि] १ झल, धवली (मिसे
२३ २) । २ प्रकार, देव (सि १ ११) । ३
गमन, बचन वेदान्त-श्रान्ति (कुमा) ।
४ कल्याण-श्रान्ति सनल-मयम डा (१ १)
५) । २ देव मनुष्य, विरंजन गरक
बीर मुक्त बीष की प्रत्यक्षा बेकामि-योगि
(डा ३, १) । वस पु [गस] धमि
बीर बापु के बीर (क्रम १ १४ ४ १३) ।
'गाम न [नामन] बेकामि-मि क काय
पुन कर्म (सम ३७) । प्यवाय पु [प्रपात]
१ मति की निपटता (स्य १५) । २
पंचात-विरोध (सम ४, ७) ।

गगर्द पु [गगर्द] १ पैरण हामी एक
हटी । २ बीट हामी (गगर्द कुमा) । 'पय

न [पय] विचार पर्वत का एक बक-बीर
(टी ३) ।

गगर्दय बेको गय = गत (गुज २ २२) ।
गद } पु [गो] बेक गुपम लोह (हे १
गदम } १२८) । पुच्छ पु न [पुच्छ]
१ बैल की पूँछ । २ बाध-विरोध (कुमा) ।

गदम पु [गदय] दो-मुख प्राकृतिवाता बंसी
पशु-विरोध गीक पाय (कुमा) ।

गदका की [गो] बैसा यी (हे १ १२८) ।

गदह पु [गोह] १ स्वनाम कयल के
बंसा का पूर्वी भाग (हे १ २ २ गुप
३४६) । २ गीह केत का निवाली (हे १
२ २) । ३ गीह केत का राका (गद
कुमा) । वह पु [वह] नाकविपान का
कामया हुआ प्राकृत-मापा का एक कर्म-यंत्र
(बज) ।

गदण नि [गीण] अप्रबाल धनुष्य (सि
१ १) ।

गदणी की [गीणी] शक्ति-विरोध शब्द की
एक शक्ति (रे १ १) ।

गदण बेको गदण (कुमा १ १९१) ।

गदयिय नि [गौरिय] गौर-मुक्त किया
हुआ बिचका बाहर—सम्माल किया बना
हो बह 'उचकणपारं सत्पापमार्गं वेदिं बैव
विदेहिं वरुणियाईं पस्यमाणे' (गुप
३३६ ३६) ।

गदरी की [गौरी] १ पार्वती रिज-मली
(गुप १ ९) । २ बीर बर्तुवाली की । ३
की-विरोध (कुमा) । पुच्छ पु [पुत्र]
पार्वती का पुत्र स्वन्व काचित्केय (गुप
४ १) ।

गई बेको गय = गत 'दीप्य बहागयार्
पश्चिम पद' (रेमा) ।

गंग पु [गङ्ग] मुनि विरोध, विप्रिय मय का
प्रचलक धार्या (डा ७) मिसे २४२२) ।

गच पु [गच] १ एक बैल मुनि जो पछ
बागुषे के पुर्वेकम के दूक से (सि १२१) ।
२ गचर्ब बागुषे के पुर्वेकम का नाम (पत्रम
२ ७१) । ३ दल नाय का एक बैल मेहरी
(बन २९ ३) । 'बचा की [बचा] एक
धार्मिक की की का नाम (मिप १ ७) ।
गंग बेको गंग । 'प्यवाय पु [प्रपात]

गंध न [गण्ड] घोष नाप (सुप १ १)। माणिया की [मानिय] पाच-
करोय (उप १४)। बिहवाय दु [बिहवा]
पात] क्योविच-पाच-प्रतिष्ठ एक घोष (संयोग
१४)।

गंधइया की [गण्डकिर] गंध-करोय
(भास्य)।

गंधय दु [गण्डक] १ गंध, जानवर-करोय
(पाच १७ २७)। २ लोकोपया करने-
वाला पुष्प टेर लयलेवाला पुष्प (सोच
१४४)।

गंधकी की [दे] गंधी ऊज का टुकड़ा (उप
१ १)।

गंधा केो गंधि = पत्थि (भाह १८)।

गंधाय दु [गण्डक] गंध, हुनाम (वाता
२, १ २ २)।

गंधि दु [गण्डि] कण्ड-करोय (उप १)।

गंधि वि [गण्डिच] १ बरखमाला का रोग-
वाला (सिवा)। २ बरख रोपवाला (पह
२ ३)।

गंधिया की [गण्डिका] १ गंधी ऊज का
टुकड़ा (महा)। २ लोहार का एक उपकरण
(उ ४ ४)। ३ एक वर्ष के अधिकारवाली
ग्रन्थ-पदवि (सन १२६)।

गंधिल केो गंधिल (रक)।

गंधिलबई केो गंधिलबई (रक)।

गंधी की [गण्डी] १ लोहार का एक उपकरण
(उ ४ ४—यप २७१)। २ काल की
कणिका (उप ११)। सिंदुरा न [सिन्दु] क
बन-करोय (दी १७)। 'यप दु [यप]
हावी बनेछ बसुपय वालवर (उ ४ ४)।
पोरमय पुन [पुस्तक] पुस्तक-करोय (उ
४ २)।

गंधी की [दे] गंधी ऊज का टुकड़ा
(रि २ २२)।

गंधी न [गण्डीच] १ धुन ना कण्ड
(विणी ११२)।

गंधी न [दे] गण्डीच कण्ड कान्ठक (रि
२ २४—पाप)।

गंधीचि दु [गण्डीचि] कण्ड, गण्डय
बाएन (विणी २८)।

गंधुका न [गण्डु] धोतीवा, सिपागा (महा)।

गंधुख न [गण्डुख] एण-करोय (रि २,
७२)।

गंधुख दु [गण्डुख] कर्म-करोय जो के में
पेरा होरा है (की १३)।

गंधुबहाय न [गण्डोपधान] बाब कालकिया
(यप ८४)।

गंधुपय दु [गण्डुपय] कण्ड-करोय (उप)।

गंधुख केो गंधुख (पह १ १—यप २३)।

गंधुस दु [गण्डुस] पानी का कुन्ना (या
२७ गुवा ४४६) 'बहुमदरपयहुसपय'
(उ १ २७१ टी)।

गंधुस दु [गण्डुस] पानी का कुन्ना (सुपनि
३४)।

गंध केो गंध।

गंधव } केो गंध = यप।
गंधा }

गंधिय न [गण्डुच] पुस्त-करोय (पह १—
यप १३)।

गंधी की [गण्डी] गंधी शकट (भास्य १२
टी गुवा २७७)।

गंध केो गंध = यप।

गण्डपधाना की [गण्डाप्रत्यागता] गिस्त-
नकर-करोय के गुणों की मिला का एक
पथर (उ १)।

गण्डकाम वि [गण्डुकाम] जाने की दण्डा
वाला (या १४)।

गण्डमय वि [गण्डुमयस] ऊपर केो
(सुप)।

गण्डुय } केो गंध = यप।
गण्डुय }

गंध केो गंध—यप। गंध (पि १११)।

कर्म गंधीचि (पि १४७)।

गंध दु [गण्ड] १ काक, धुन पुस्तक (रि
२८४ ११८३)। २ नम-नाम गंधि का
मिथ्याय कोष, माग बावि गण्डयस्तर कवि
परिच्छ (उ १ १)। ३ गंध (रि २३७३)।

३ नम पैला (रि २३१)। ४ बरखन लोहनी
लोन (पह २ ४)। ५ गंध दु [गंधीच]
केन काण्ड (सुप १ ४)।

गंधि वि [गण्डिय] रचना-कर्ता (समत्त
१३६)।

गंधि केो गंधि (पह १ १—यप ४४)।

गंधिम केो गंधिम (लामा १ ११)।

गंधिस की [गण्डिस] केो गंधिस (रक)।

गंधीणी की [दे] गंधी-करोय जिसमें गंध
बंद की जाती है, गंध-मिचौनी (रि २ ८१)।

गंधुख केो गंधुख (पह)।

गंध दु [गण्ड] १ कण्ड नासिका से पड़ने
करने योग्य पदार्थों की नास मूत्र (घोष)
यप है १ १७७)। २ नम वेरा (रि १
१)। ३ एण करोय (पह १ १)। ४

काम्यस्तर केो की एक जाति (रक)। ५

न देव-विमान करोय (मिर १ ४)। ६ वि

कण्डुक पदार्थ (सुप १ १)। ७ की की

[कुटी] कण्ड-यप का नर (कठ) है १

न)। कसाइया की [कसायिया]।

गुणिय कयाय रंघ की धात्री (जवा) यप ८,

११)। गुप्य दु [गुप्य] कण्ड-यप इण

(सप)। इय न [इय] कण्ड-यप का

चुली (उ १ १—यप ११७)। इह वि

[इय] कण्ड-यप गुणवपूरी (यप) २)।

जाम न [जामय] कण्ड का हेतुपुत्र कर्म

करोय (सुप)। 'तिष्ठ न [तिष्ठ] सुनिष्ठ

वि (कण्ड)। दण्ड न [दण्ड] सुनिष्ठ

बसु, गुणाविष्ठ इय (उप १)। देवी की

[देवी] केो-करोय लीन देवको की

एक देवी (मिर १ ४)। दुगि की

[धारि] कण्ड-यप (उप १ १—यप

२३, धीन)। जाम केो जाम (सन

१७)। मय दु [मय] कण्ड-यप गुण

कण्ड-यप इण (गुवा २)। मय वि

[यप] १ गुणविष्ठ सुकण्ड-यप। २

पहिल कण्डवाला करोय कण्ड से मुक्त

(उ ४ ४—यप १११)। माइण,

मायय दु [माइन] १ पर्वत-करोय इह

नाम का एक पहाड़ (यप १ १, पह २

२, उ २३—यप १६१)। २ गुण पर्वत-

करोय ना एक पर्वत (उ २ १—यप

८)। ३ न नगर-करोय (रक)। बइ

की [बडी] गुणकण्ड-यप नमोय का

पायाक-यप (दीन)। बइय न [बईय]

सुस्मित शेष-शब्द (विधा १ १)। बहि
की [बहि] एक-शब्द की बगल है दुई शीली
(छाया १ १)। बह पुं [बह]
पद, बह (कुमा ५ २४२)। बास पुं
[बास] १ सुस्मित बल का पुट। २ बह
विशेष (गुण १)। समिद्ध [समिद्ध]
१ सुस्मित सुगन्ध पूर्ण। २ न नगर-विशेष
(धाम १६)। साहि पुं [साहि] धूम-
स्मित शीर्ष, बाल (धाम १)। इस्ति पुं
[इस्ति] उत्तम इस्ती बिस्ती कल से बूरे
हाथी का जाते हैं (सन १ पवि)। इस्ति पुं
[इस्ति] कस्तुरिया विल (कण्ठ)। इस्ति
[इस्ति] १ इत नाम का एक श्लेष
है। २ कलहाटक केत का निवासी (पद
१ १—पद १४)।

गंधा पुं [गंधा] एक सर्व-वाति (ध
२, ५)।

गंधविशेष पुं [गंध] विशेष पठारी (वि २,
५४)।

गंधय शब्द गंध (महा)।

गंधय्या की [गंध] शक्ति शब्द (वि २ ५४)।

गंधवाह पुं [गंधवाह] पद (कु १५)।

गंधवत् पुं [गंधवत्] १ श्व-गन्धक सर्व-गन्धक
(क १ १४)। २ एक प्रकार की के-वाति
कातर केत की एक वाति (पद १ ४
श्री)। ३ पद-विशेष मलाल कुमुदाय का
श्वरवातिप्रधान बह (वि १)। ४ न,
श्वर-विशेष (सन ११)। ५ सुगन्धक शीत,
याम (विधा १ २)। कंड न [कण्ड] राज
की एक वाति (राम)। कर न [कर]
संघट-मूह संघट-मूह, संघट का धम्म-
स्मल (वि १)। पारा, मारा न [पारा]
मलाल-मारा, शब्द के सम्य में वातात में
श्रीवाता शिवा-मारा, की शब्दी ज्ञात का
पुष्प है (गुण ११)। पुर न [पुर]
शेकी पारा (पद)। डिभि की [डिभि]
मिनि-विशेष (सन १४)। बहाह पुं
[बहाह] कल-विशेष विवाह, की-गुण
की शब्द के धनुषारे विवाह (कण्ठ)। बाह्य
की [बाह्य] मल-शब्दा संघट-मूह, शब्दी
कात (पद १)।

गंधक वि [गंधक] १ श्वर-संघटी श्वर
से संघट रखनेवाला (वि १ ५ पवि ११४)।
२ पुं जल-श्रीत विवाह विवाह-विशेष
'बन्धन-विवाह' सम्य विवाह (वि
(कण्ठ)। ३ न कीट गंध (पद)।
गंधविशेष वि [गंधविशेष] शब्दाला (वी १)।
गंधविशेष वि [गंधविशेष] १ श्वर-विधा
में कुल (गुण १११)।
गंधा की [गंधा] नगरी-विशेष (कण्ठ)।
गंधान न [गंधान] कल-विशेष (वि)।
गंधार पुं [गंधार] देश-विशेष कलार (स
३५)। २ पर्वत-विशेष (स ३६)। ३ न,
नगर-विशेष (स ३५)।
गंधार पुं [गंधार] श्वर-विशेष पाली
विशेष (स ३५)।

गंधारी की [गंधारी] १ लटी-विशेष कण्ठ
बल्लभ की एक की (वि १ ५४)। २
विवाह-विशेष (वि १)। ३ कलाल
मलाल की कलाल-विशेष (वि १)।

गंधारी की [गंधारी] विधा-विशेष (गुण
१ २ २५)।

गंधाह पुं [गंधापाति] स्वयं-मलिक
गंधाह पुं [गंधाह] एक पुट, वेताल पर्वत (क
२ १—पद १६, स ४ ४—पद
२५१)।

गंधि वि [गंधि] नग-गुल श्वराला
(कण्ठ ५४)।

गंधि वि [गंधि] पुष्प काय कलाला (वि
२ १)।

गंधि पुं [गंधि] कल-शब्द वेतालाला
पठारी (वि २, ५४)।

गंधि वि [गंधि] श्वर-गुल 'धुल्लवर'
कल-विशेष (श्री)। साह की [साह]
श्वर श्वर-गुल कलालाला श्वर न श्वर (पद
१)।

गंधि वि [गंधि] कल-गुल कलालाला
(स ३५१ या ३५२, ५४२)।

गंधि पुं [गंधि] श्वर-विशेष विधा-श्वर-
विशेष (स २, १ ५४)।

गंधि वि [गंधि] श्वर-विशेष (स २ १)।
२ नगरी-विशेष (स ११)। कण्ड न [कण्ड]

१ श्वराला पर्वत का एक श्वर (वि १)।
२ वेताल पर्वत का श्वर-विशेष (स १)।
गंधि की [गंधि] छाया बह (वि १ ११
टी)।

गंधि पुं [गंधि] श्वर-विशेष (वि २, ५४)।

गंधि की [गंधि] १ छाया, बह। २ न-
गंधि (वि २ १)।

गंधोवा न [गंधोवा] सुस्मित बला
गंधोवा न [गंधोवा] सुस्मित बला (श्री १, ११)

गंधोवा की [गंधोवा] १ श्वर-विशेष (वि २ ११)।

गंधि वि [गंधि] श्वर-विशेष (वि २ ११)।

गंधि वि [गंधि] श्वर-विशेष (वि २ ११)।

गंधि वि [गंधि] श्वर-विशेष (वि २ ११)।

गंधि वि [गंधि] श्वर-विशेष (वि २ ११)।

गंधि वि [गंधि] श्वर-विशेष (वि २ ११)।

गंधि वि [गंधि] श्वर-विशेष (वि २ ११)।

गंधि वि [गंधि] श्वर-विशेष (वि २ ११)।

गंधि वि [गंधि] श्वर-विशेष (वि २ ११)।

गंधि वि [गंधि] श्वर-विशेष (वि २ ११)।

गंधि वि [गंधि] श्वर-विशेष (वि २ ११)।

गंधि वि [गंधि] श्वर-विशेष (वि २ ११)।

गंधि वि [गंधि] श्वर-विशेष (वि २ ११)।

गंधि वि [गंधि] श्वर-विशेष (वि २ ११)।

गंधि वि [गंधि] श्वर-विशेष (वि २ ११)।

गामा पु [गामे] १ अग्रि-विरोध । २ गोर विरोध को गोरम गोर की एक शाखा है (डा ७) ।

गामा पु [गामे] १ एक बैल महान (उप २७ १) । २ बिन्धन को बाँधनी शब्दाधी का एक योदी (पुन १५१) ।

गामा पु [गामे] पर्यं योष में ऊपर अग्रि-विरोध (उप २७) ।

गामार वि [गामार] १ गव पायाकला, बलि प्रत्येक बछा (प्राय) । २ बानर या कुक से प्रत्येक कक (हे १ २१२, कुमा) ।

गामारी की [गामरी] यपटी छोटा पका (हे २ ८२; पुन ११२) ।

गामार केको गामार 'कलमिबरे गे' (पा २५१; छठ) ।

गाम्ब छक [गम्] १ जाना समन करना । २ जाना । ३ प्रस करना । गम्बह (प्राय) पद् । ४ वि गम्ब (हे १ १०१ प्राय) । गम्ब गम्बह, गम्बमाण (पुर १ ११) गग १२ १) । संह. गम्बिज (कुमा) । हेतु गम्बिजप (नि ३२८) ।

गाम्ब पु [गम्ब] १ समूह, समूह, संघात (स १५०) । २ एक पायार्य का पहिार (वीना सं ४०) । ३ प्रस-परिहार, प्रस-परिहारो नको छल बसवारा छिबप विना (पंचक नै १) । बास पु [बास] प्रस-पुन में पछा बम्बपरिहार के साथ निरास (बन १) । विहार पु [विहार] गम्ब की छानापाटी बम्ब का पाचार (बन १) । सारणा की [सारणा] गम्ब का शाण (पद्) ।

गम्बगामिदि य बम्ब-नम्ब ठे होकर (वीन) । गम्बिज वि [गम्बिज] गम्बजना, गम्ब में खनेवाला (हे १) ।

गम्ब केको गय = गय (पद्) । प्राय १०१ १५) । सार पु [सार] एक बैल बुनि, पहर-पय का कटी (बं ४०) ।

गम्ब पु [गम्] बय यर बम्ब-विरोध (हे २ ८१ प्राय) ।

गम्ब न [गम्] छप रहित बाय प्रकय (डा ४ ४—पय २८०) ।

गम्ब छक [गम्] गम्बना गम्बजना बम्ब-पहना । गम्ब (हे ४ १८) । बम्ब. गम्बह, गम्बहय (पुर २, ७२; पय २८) ।

गम्बज न [गम्बेन] १ बम्ब प्रयागक बयि, मेय या सिंह का नाय । २ गम्ब-विरोध (उप ४२२) ।

गम्बजसह पु [हे गम्बेन-सह] पयु वीर हावी की शाखा (हे २ ८८) ।

गम्बज वि [हे] गम्ब-विरोध में ऊपर गम्बज (बन) (पाका २ ५, १ २१) । गम्बज पु [गम्बेन] पयिपोतर रिता का पयन (पयन) ।

गम्बर पु [हे] बम्ब-विरोध बाबर, यबर इनका जाला बम्ब-पयन में निविह है । (पा ११ की २) ।

गम्बज वि [गम्बेन] गम्बेन करेबना (निपु ७) ।

गम्बह केको गम्बज (पयन) ।

गम्बि की [गम्बि] गम्ब, हावी बनेरू की शाखा (कुमा पुना ५६, उप १ ११०) ।

गम्बिज वि [गम्बिज] १ बिजले परीन विना हो बम्ब, सन्नि (प्राय) । २ य. बम्बेन मेय बनेरू की शाखा (पद् १ १) ।

गम्बिज वि [गम्बिज] गम्बेन करेबना गम्बिज १ परकेबना (डा ४ ४—पय २, ६, या २२) ।

गम्बिजिज न [हे] १ प्रकुटी प्रकुटाष्ट । २ बंय-पय्येय हेनेबना रीनाय प्रसक (पद् ११) ।

गम्ब वि [गम्ब] गम्ब-पयन (स १४; विसे १० ७) ।

गम्ब पु [गम्ब] बम्बेन की गम्ब-पयन का पयिबि (पय) ।

गम्बि की [हे] गम्बि प्रकुटी 'गम्बपिना' (निपु ११) ।

गम्ब न [गम्ब] १ निरीले विना, मोय पयन (हे २ ११) । २ बनेरू का (पुर १ ११ ११) । गम्ब (पा) केको गय = गय (प्राय) ।

गम्बज पुन [हे] गम्बेन, प्रयागक बयि हावी बनेरू की शाखा 'पा गम्बेन' कुलीनो समारपी गम्बरी लम्ब 'गम्बेन' सनेरू वि

लो बम्बो गम्बेन 'पुम्बेन' (पुना २ ८१ २५२) ।

गम्बज छक [हे] गम्बेन करना बयानक पायन करना । बम्ब. गम्बजह (पुना १२५) ।

गम्बजकी की [हे] बम्ब-निरीन बम्बजपायन मेय-पयन (हे २ ८५, छठ) ।

गम्बज न [हे] बम्बज गीममल (पुना २५१) ।

गम्बिज } केको गय = गय ।
गम्बज }

गम्बज न [हे] बाबर वीरू का बीया-पयन बाबर बाबि का बोन (बन २) ।

गम्ब पुकी [गम्ब] पम्ब पम्ब (हे १ १२, प्राय पुना ११५) । की गम्ब (हे १ १५) ।

गम्ब न [हे] गम्ब, गम्बी (ही १५) ।

गम्बिज } की [हे] मेरी मेरी प्रकुटी
गम्बिज } 'गम्बिज-पयन' प्रकुटी-पयन बनेरू
विपायन (बन १ १ ५) ।

गम्बि की [हे] १ छागी बना बम्ब (हे २ ५४) । २ मेरी मेरी (छठ १८) ।

गम्ब पुकी [गम्बेन] पम्ब गम्ब बर (हे २, १०) । बाहय पु [बाहय] पम्ब बयान (कुमा) ।

गम्बिज } की [हे] बाबी छठ (वीन १ ८६
गम्बिज } टी: हे २ ८२; पुना २२२) ।

गम्ब न [हे] पम्ब विनीना (हे २ ५१) ।

गम्ब केको पम्ब = पम्ब. पम्ब (हे ४ ११२) ।

गम्ब पुकी [हे] पम्ब, पुनेरू विना, मोय (हे २, ८२; पुना २२, १ १) । की गम्ब (कुमा) ।

गम्बिज वि [गम्बिज] बम्ब हुपा बम्बिज (कुमा) ।

गम्बिज वि [गम्बिज] १ बम्ब हुपा निपु-पम्बिज-पयन (पय) (उप २ ८५ टी: प्रकुटी १ ५) । २ बम्बिज प्रकुटी निपु (उप १ १) ।

३ बम्ब पयन, (पाका २, २ २) पम्ब १ २) ।

गम्ब छक [गम्ब] १ गम्ब विनीन करना । २ बाबर करना । ३ बम्ब करना बम्बिज करना । ४ पयिनीयन करना । पम्ब. गम्बेन (कुमा गम्ब) । बम्ब गम्बी गम्बेन (पा ४ १ १५) । ५ गम्बेन (उप २ २२२) ।

गह न [गृह] घर, मकान। वह दु [पति]
गृह्य गृही संघार (पत्र २ ११९
प्रश्न)। गहनी की [पत्नी] पृथिवी की
(सुभा २२६)।

गहकसोख दु [वि गहकसोख] पण्ड, पण्ड
विरोध (वि २ ७१ पाद)।

गहगद मर [हे] हर्ष से मर जाना आनन्द
पूर्ण होना। गहगद (अभि)।

गहगद न [गहगद] १ आनन्द स्वीकार (वि ४
११ आयु १४)। २ आनन्द, सम्मान। ३
ज्ञान आनन्द (वि ४ ११)। ४ गहगद,
आनन्द (आभा २ १ १ आनन्द)। ५ वि
गहगद करनेवाला। ६ न हर्षित (वि ४
१७ ७)। ७ कर्म-पूर्व का उत्पन्न—गहगद
(आभा १२ ६)। ८ वि गहगद, निष्कर्म गहगद
क्रिया काय गह (उत्त १२)। ९ न, निष्कर्म-
विरोध (आभा)।

गहगद न [गहगद] गहगद करना, आनन्दकार
करना। 'नो आदि संन्यासगहगद' (कुमा)।

गहगद न [गहगद] १ आनन्द का कारण। २
आनन्द 'गहगद कर्म गहगद कर्म' (उत्त
१२ २२)।

गहगद न [गहगद] गहगद-कर्म (आभा २, १
१)। 'विदुष्या न [विदुष्या] पर्वत के
एक प्रदेश में स्थित दुर्ग-वस्ती-समुदाय (सुभा
२, २ ८)।

गहगद नि [गहगद] १ निश्चित दुर्गों दुर्गों
'नमो गहगदस्थिते बोधीगहगदस्थिते श्रीसुखे
हान' (वि ४६)। 'अन्यथागहगदस्थिते'
(पत्र ४)। २ गह, गहनी बना बनान (आभा
मन)। ३ गह-गहगद, दुर्ग का कोटर (विभा
१ ६—पत्र ४६)।

गहगद न [हे] १ निश्चित-आनन्द बन-गहगद
प्रदेश (वि २, ८२ आभा २, १ १)। २
कर्मक गहगद, विरोधी (कुमा २४८)।

गहगद न [हे] गहगद, गहगद (सुभा १२४)।

गहगद की [गहगद] गहगद स्वीकार, जान-
ना (वीन)।

गहगदी की [गहगदी] उत्पन्न होकर (पत्र १
४ वीन)।

गहगदी की [गहगदी] कुक्षि पेट (पत्र १ ०६)।

गहगदी की [हे] गहगदस्थी हृण की हृण की
गहनी या गहनी (वि २ ८४ से ८, ४७)।

गहगति दु [गहगति] किरण, विषय (आभा)।

गहगद दु [हे] गह, स्वीकृत (वि २ ७४
पाद)।

गहगद पुन [गहगद] १ किङ्कर। २ वन वनक।
३ वन, कर्म। विषय-स्वान। ४ रोदन।

५ सुख। ६ अनेक गहनी का संघटन 'गहगद'
(आभा २४)।

गहगद दु [गहगति] कर्म केटी करनेवाला
(आभा)।

गहगद नि [हे] १ आनीक वन का एक-
वाला (वि २ १)। २ दुर्ग गहगद वन
(वि २ १ ३ पाद आभा १२)।

गहगति नि [हे] गहगति मोक्ष हुआ ठेका
क्रिया हुआ (वि २ ७३)।

गहगति नि [गहगति] १ उत्तर स्वीकृत (वीन)
अ ४ ४)। २ कर्म हुआ (पत्र १ १)।
३ आठ उत्तरक विविध (उत्त २, पाद)।

गहगति नि [गहगति] आनन्द स्वीकृत (आभा)।

गहगति की [हे] १ कर्म-वीन के लिए
विश्वी आनन्द की जाती हो गहनी (वि २,
८४)। २ गहगद करने योग्य की (पत्र)।

गहगति नि [गहगति] गहगद, गहगद, गहगद
(वि १ १ १ कर्म २२३, कर्म गहगद-
वीन आभा)।

गहगति नि [गहगति] गहगति से आनन्द,
आनन्द (आभा २४)।

गहगति नि [हे गहगति] गहगति-गुण,
गहगति आनन्द-विषय (पत्र १२१
४१ पाद)। या १२३ उत्त २२८ टी गति)।

गहगति के गहगति—गहगति (आभा १२) पत्र
२ ८)।

गहगति के गहगति (आभा १)।

गहगति न [गहगति] गहगति, गहगति (वि २ १ ७)।

गहगति न [गहगति] गहगति, गहगति-
आनन्द (वि ४ ४१६)।

गहगति के गहगति—गहगति (वि २ ७३)।

गहगति (पत्र) के गहगति—गहगति (पत्र)।

गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। २
गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। ३ आनन्द, आनन्द।

गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। २
गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। ३ आनन्द, आनन्द।

गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। २
गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। ३ आनन्द, आनन्द।

गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। २
गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। ३ आनन्द, आनन्द।

गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। २
गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। ३ आनन्द, आनन्द।

गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। २
गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। ३ आनन्द, आनन्द।

गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। २
गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। ३ आनन्द, आनन्द।

गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। २
गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। ३ आनन्द, आनन्द।

गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। २
गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। ३ आनन्द, आनन्द।

गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। २
गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। ३ आनन्द, आनन्द।

गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। २
गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। ३ आनन्द, आनन्द।

गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। २
गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। ३ आनन्द, आनन्द।

गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। २
गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। ३ आनन्द, आनन्द।

गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। २
गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। ३ आनन्द, आनन्द।

गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। २
गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। ३ आनन्द, आनन्द।

गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। २
गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। ३ आनन्द, आनन्द।

गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। २
गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। ३ आनन्द, आनन्द।

गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। २
गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। ३ आनन्द, आनन्द।

गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। २
गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। ३ आनन्द, आनन्द।

गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। २
गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। ३ आनन्द, आनन्द।

गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। २
गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। ३ आनन्द, आनन्द।

गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। २
गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। ३ आनन्द, आनन्द।

गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। २
गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। ३ आनन्द, आनन्द।

गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। २
गहगति [गहगति] १ आनन्द, आनन्द। ३ आनन्द, आनन्द।

गात्र वि [गात्र] १ गात्र विविध वस्त्र (पाप
पुर १४ ४८) । २ मन्त्रोद्गृह्य (पुर ४
१३०) । ३ विविध धातुज द्रष्टव्य (कर्म) ।
गान न [गान] गीत गाथा (हृ ४ ९) ।
गाय वि [गायन] गैया गीत-प्रदीप (हृ
२ १ ५) ।

गायत्रिजिह्व पुं [गायत्रिजिह्व] वा ही माघ
के भीतर एक वायु-मण्ड से दूसरे मण्ड में
गानेवाला वायु (हृ १ १) ।

गायी की [ये] गायत्री नोचर-मुनि (हृ २
५२) ।

गाया केही गाथा (कर्म विप) ।

गाय वि [गाय] घस्ता-पठ्य कर्म गाय
(हृ ४, २४) ।

गाम पुं [गाम] १ वज्र निपात 'वज्रलो
हिकम्पनो' (पुर २ १३५) । २ घट्ट-वज्र, वज्र-
निम्बर (विदे २०१६) । ३ गौ वल्लि
वाम (कर्म छाया १ १५) । ४

अग्नि-वज्र (कर्म गौ) । कंडग कंडव
पुं [कंडव] १ अग्नि-वज्र कर्म कंडव
(कर्म गौ) । २ कुन्नों का एक वस्त्राल

कडी (माघ) । वायव वि [वायव] वायव
का माघ करनेवाला (परा १ १) । जिह्ममय

न [निर्मम] वायव का पाणी बाले का
दस्ता गाथा (कर्म) । घर्म पुं [घर्म]

१ विमर्शनाय, विमर्श की वाग्म्य (अ
१) । २ अग्नि-वज्र का लम्बा । विप-
मर्श (माघ) । ४ मैत्र (हृ १ २,

२) । ३ लम्बा, कम बरीह अग्नि-वज्र का
विप (परा १ ४) । ४ वायव का वर्म वायव

का कर्म (अ १) । अ पुं [अ] वायव
वायव । २ अघर अघर अघर का अघर (मिहृ १२) । मारी की [मारी] वर्म अघर

में कडी हुई बीमा-विदेव (बीम १) । रोम
पुं [रोम] घाम-व्याघ्र बीमारी (अ २) ।

बह पुं [पवि] वायव का मुनि (वायव) ।
तुमाम न [तुमाम] एक वायव से दूसरे

वायव (वीम) । पार पुं [पार] विप
(घाम) ।

गमड पुं [गमड] १ वायव का मुनि (हृ २,
गमड १) । २ गमड १) ।

गामिप न [गामिप] १ वायव की बीमा

(वायव) । २ वि वायव की बीमा में खनेवाला
(वायव १) । ३ पुं, वैदेव वारि-विदेव
(गम २, २) ।

गामगोह पुं [गोह] वायव का मुनि (हृ २
५२) ।

गामग पुं [गामग] वायव की वायव गम (वा
११) ।

गामग न [गो गमन] मुनि में वज्र वज्र-
(कर्म ११ ११) ।

गामग न [गो] वायव-वायव वायव-वायव
(वर्ग) ।

गामगि केही गामगी (हृ २, ५२) ।

गामगिपुत्र पुं [गो] वायव का मुनि (हृ
२ ५२) ।

गामगी पुं [गो] वायव का मुनि (हृ २ ५२)

गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२)

गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२)

गामगी पुं [गो] वायव का मुनि (हृ २ ५२)

गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२)

गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२)

गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२)

गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२)

गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२)

गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२)

गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२)

गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२)

गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२)

गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२)

गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२)

गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२)

गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२)

गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२)

गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२)

गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२)

गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२)

गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२)

गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२)

गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२)

गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२)

गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२)

गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२)

गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२)

गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२)

गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२)

गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।
गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।
गामगी वि [गामगी] १ वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गामगी की [गो] वायव का मुनि (हृ २, ५२) ।

गणितशिव्य शब्द [गणितशिव्य] गणित-शिव्य
संघटित-संघटनी। श्री. या (पृष्ठ २३४)।

गणक } वि [गणक] १ गणक संघटनी।
गणक } २ सप के विष को बढायेवाला,

सर्व-विष को बढ करकेवाला। ३ पुं। सर्व विष
को बढ करकेवाला मन्त्र (छ ६८ टी। छे

१४ २७)। ४ न. शास्त्र विरोध मन्त्र-शास्त्र-
विरोध सर्वविष-गणक मन्त्र का जिसमें बोलुन

हो वह शास्त्र (छ ६)। संत पुं [गणक]
सर्व-विष का गणक मन्त्र (मुद्रा २१६)।

‘मिद वि [गणक]’ गणक मन्त्र का बालकार,
गणक शास्त्र का बालकार (छ ६८ टी)।

गणक शब्द [गणक] १ गणक मन्त्र।
२ गणक करता। ३ सर्वविष करण गणक-
मण करता। यत्तम (विदे १४)। बह

गणलेमण (मन् ६ ११)। कनक गण-
कवि (मुद्रा १७१) प्रयो यत्तमविद (शाया

१ १२)।

गणक मन्त्र [गणक] गणक मन्त्र (पहल
१)। छ ६ ३०६)।

गणक्या श्री [गणक्या] १ गणक्या यत्तम।
२ गणक्या। ३ गणक्या (विदा १ १)।

गणक्याद्विद्या श्री [दे] कौटी गौका कौटी
‘गणक्याद्विद्या समाख्या पञ्चगव्यविद्या विद्या-
मन्त्र’ (छ १२६)।

गणिक श्री [गणिक] गणिक गौरी गणक्या,
गणक्या (मुद्रा १७)।

गणिक वि [गणिक] १ गणिक विद्या। २
गणिक विद्या। ३ गणिक विद्या। ४ गणिक,
गणिक विद्या निरुद्धनी विद्यामो गणक्या (मुद्रा)।

गणिके श्री [गणिके] गौरी गणिक (पृष्ठ १७)।

गणक (मन्) गौरी गणक (मन्)। गणक
गणक (मन् २४४)।

गणक (मन्) गौरी गणक (मन्)। गणक
गणक (मन् २४४)।

गणक वि [दे] गणक, गणक विद्या गणक विद्या
(पृष्ठ १)।

गणक पुं [गणक] १ गणक, गणक
गणक्या (पाम)। २ गणक विद्या (है ३

२१)।

गणिक (मन्) गौरी गणिक (मन्)।
गणिक श्री [ग] गौरी गणिक (है ३, १७४) विद्या
१ २) गणिक)।

गणक पुं [गणक] गणक मन्त्र (मुद्रा ४८७)।
गणक पुं [गणक] गणक मन्त्र (पृष्ठ २३४)।

गणक गौरी गणक = गणक। गणक गणिक (मन्)।
गणक गणक [गणक] गणक मन्त्र। गणक

(मन्)।
गणक गणक [गणक] १ गणक मन्त्र। २

गणक मन्त्र करण। ३ गणक मन्त्र करण।
४ गणक मन्त्र। गणक (गौ) (मुद्रा ७२)।

कनक गणिकवि (मन् ४)।
गणक पुं [गणक] गणक मन्त्र गणक (छ ४

४)।
गणक पुं [गणक] १ गणक, गणक, गणक, गणक

गणक-विद्या, गणक (है २, ८१)। गणक ४
गौरी २)। २ गणक, गणक (विदे २१६६ पञ्च

१६, १२)। ३ गणक मन्त्र (मुद्रा १)।
४ गणक मन्त्र सर्व को गणक मन्त्र मन्त्र

गणिक (मुद्रा १)। गौरी श्री [गौरी] गौरी
विद्या (छ २ १—पृष्ठ ४)।

गणक वि [गणक] १ गणक मन्त्र, गणक,
गणक (मुद्रा ११)। २ गणक मन्त्र

गणक मन्त्र (मुद्रा १४१)। ३ गणक मन्त्र
गणक मन्त्र गणक (मन्)। ४ गणक

गणक। श्री गणिक (मन्)।
गणक वि [गणक] गणिक मन्त्र गणक ‘गणक’

गणक मन्त्र (है १६२)।
गणक मन्त्र [गणक] १ गणक मन्त्र। २

गणक मन्त्र ‘गणक मन्त्र’ गणक मन्त्र
गणक मन्त्र गणिक (पञ्च)। ३ गणक

गणक (मन् ४)। ४ गणक-मन्त्र, गणक,
गणक (पृष्ठ २, २)।

गणक मन्त्र श्री [गणक] गणक गौरी (पञ्च
गणक)। ५ गणक-मन्त्र, गणक (है १)

गणक गौरी गणक मन्त्र, गणक-मन्त्र
(पृष्ठ ११ ११)।

गणक श्री [गणक] १ गणक-विद्या, गणक
गणिक (छ २, १) गणिक १७, १७)। २

गणिक। ३ गणिक ‘गणक मन्त्र’ गणक
(मन् ४)। ४ ‘गणक मन्त्र’ गणक मन्त्र गणक

गणक (मुद्रा १ १)।
गणक श्री [दे] गणक, गणक, गणक ‘गणक मन्त्र’

गणिक (मन् ८)। गणक मन्त्र

[पणिक] १ गणक मन्त्र गणक (छ ४
४) गणक २२६)। २ गणक मन्त्र (पृष्ठ

१)। ३ गणक मन्त्र गणक (मन् २७)।
श्री गौरी (छाया १, १, गणक)।

गणक पुं [गणक] गणक-विद्या गणिक
गणक विद्या (मन् १)।

गणक श्री [गणक] १ गणक विद्या।
२ गणक-विद्या। ३ गणक-विद्या, गणक

गणक मन्त्र गणिक मन्त्र (मन् ४)।
गणक विद्या वि [गणिक] गणिक मन्त्र गणक

मन्त्र गणक मन्त्र गणक (मन् ११ १६३)।
गणिक श्री [गणिक] १ गणिक मन्त्र

श्री २ गणक-विद्या (मन्)।
गणिक मन्त्र [गणिक] गणक-विद्या (मन्)।

गणिक वि [गणिक] १ गणिक मन्त्र
मन्त्र गणक मन्त्र गणक (मन् ११ १६३)।

गणिक वि [गणिक] १ गणिक मन्त्र
गणिक मन्त्र (मन् ११ १६३)।

गणिक वि [गणिक] १ गणिक मन्त्र
गणिक मन्त्र (मन् ११ १६३)।

गणिक श्री [गणिक] गणक-विद्या (मन्)।
गणिक मन्त्र [दे] गणक, गणक, गणक, गणक

गणक विद्या (है २ ४६)।
गणिक विद्या गौरी गणक = गणक (मुद्रा २६४)।

गणिक [पृष्ठ] १ गणक मन्त्र गणक २।
गणक मन्त्र गणक गणक (है १ २६)।

गणिक [दे] गणक मन्त्र (गणक)।
गणिक [दे] गणक मन्त्र (गणक)।

गणिक (मन्) गणक मन्त्र (है ४ ४४२)।
गणिक गणिक (मन्)।

गणिक गणक गणक।
गणक मन्त्र [गणक] गणक मन्त्र गणक

गणक (है ४ २१७)। गणक
(गणक १ ८)। गणक गणिक (गणक)।

गणिक मन्त्र [गणक] गणक मन्त्र गणक
गणक (है ४ २१)।

गणिक गणिक गणिक ‘गणक मन्त्र’ गणक मन्त्र
गणिक मन्त्र गणिक (मन् ७२८ टी गणक)

गणिक श्री [दे] गणिक मन्त्र गणक मन्त्र
(पृष्ठ १८)।

गिण देवो गण = गणम् । गिण्डि (संज्ञि ६७) ।

गिण्ड देवो गण = गण । गिण्ड (कण्) । वह गिण्ड गिण्डमाय (गुण ११३) लाया १ (१) । वह गिण्डि, गिण्डि रूप गिण्डिमा (सि १७४ २८३ २८२) । हे गिण्डिमाय (कण्) । हे गिण्डिमाय गिण्डेयव (ध्रुव गुण ११३) ।

गिण्ड देवो गण्य = गण्ड (गिरि १४७ सि १४६ टु ३) ।

गिण्डा जी [गण्ड] जगत्तम भावत (उप १६ २७) ।

गिण्डाविज वि [गण्डित] गण्ड कटाक्ष हुमा (मनी ११६) ।

गिण्ड पु [गण्ड] पक्षि-विरोध क्षेत्र (गण्ड लाया ११६) ।

गिण्ड वि [गण्ड] घातन कर्म लोचन (गण्ड १ २ भाष १) ।

गिण्डपट्ट न [गण्ड पट्ट, गुणपट्ट] गण्ड विरोध भाव्यता के सम्बन्ध से क्षेत्र क्षति को घटा खीर बिना होता (वच १३) ।

गिण्डि यो [गण्डि] एक क्षेत्र-विभाग (क्षेत्र ११४) ।

गिण्डि जी [गण्डि] मन्त्राणि नम्यन्ता वाच्यं (गुण १६) ।

गिण्डा देवो गिण्डा (उप १६ २७) ।

गिण्ड पु [गिण्ड] कृष्ण-विरोध गण्डो का मीमंसा (हे २ ७४ भाष) ।

गिण्डा यो देवो गिण्डा 'गिण्डा' (गुण २, ३७) ।

गिर न [गु] १ बीमता, वन्धन नरता । २ निमता निमता । गिर (वच २) ।

गिरा जी [गिर] गण्डो भावा, वाच (हे १ १६) ।

गिरि पु [गिरि] १ वहाव पर्वत (वच १ २३) । अही जी [वटी] पर्वतीय नदी (वच १) । कण्ठजी कण्ठजी जी [कण्ठ] कण्ठ-विरोध गण्ड विरोध (गण्ड १—वच १३) वा २) । कूट न [कूट] १ पर्वत का शिखर । २ पुं उपवन का वट (वच ७ ४) । जम्बु पु [जम्बु]

कोक्य देव में वर्षाकाल में किया जाता एक प्रकार का उत्सव (वच १) । जई जी [जई] पर्वतीय नदी (सि १३५) । जास पु [जास] प्रसिद्ध पर्वत-विरोध जो कश्मिर-बाग में पञ्चनख जी 'विराट' के नाम से विख्यात है (श्री १) । वारिणी जी [वारिणी] विद्या-विरोध (पञ्च ७ १३६) । नई देवो जई (गुण १३३) । पञ्चसूत्र न [पञ्चसूत्र] पञ्च पर से विद्या (गिरि ११) । यक्ष न [यक्ष] पर्वत का मध्य भाग (वच १) । पञ्चमार पु [पञ्चमार] पर्वत-विरोध (संघा) । राव पु [राव] क्षेत्र पर्वत (वच) । वर पु [वर] प्रधान पर्वत जम्बु पहाड़ (गुण १७६) । वरि पु [वरि] क्षेत्र पर्वत (वा २७) । सुमा जी [सुमा] पर्वतीय लीप (सि १) ।

गिरि पु [गिरि] बीम-क्षेत्र (हे १ १४७) । गिरि पु [गिरि] १ क्षेत्र पर्वत । २ क्षेत्र पर्वत । ३ विद्यालय (कण्ठ) ।

गिरिकसी जी [गिरि-कसी] (वच ४) । गिरिकसी जी [गिरि] पर्वतों के बीच की खाड़ी का उपवन-विरोध 'वसतिगिरि पर्वत' (गुण २३७) ।

गिरिनगर न [गिरिनगर] विद्यालय पर्वत के बीच का नगर, जो प्रायः 'हुताव' के नाम से प्रसिद्ध है (गुण १७६) ।

गिरिपुष्टि न [गिरिपुष्टि] नगर-विरोध (गिरि ४६१) ।

गिरि पु [गिरि] ब्याधेय शिव (वाच ६, १ १२१) । वास पु [वास] कैलाश पर्वत (सि १ ७३) ।

गिरि पु [गिरि] १ विद्यालय पर्वत । २ गण्डो शिव (सि १) ।

गिरि वच [गु] निमता निमता मन्त्राण कण्ठ । गण्ड गिरिकण्ठ (गण्ड) ।

गिरि न [गिरि] गिरिण गण्ड (हे ४ ४७३) ।

गिरि न [गिरि] गिरिण गण्ड (हे ४ ४७३) ।

गिरि न [गिरि] गिरिण गण्ड (हे ४ ४७३) ।

गिरि न [गिरि] गिरिण गण्ड (हे ४ ४७३) ।

गिरि न [गिरि] गिरिण गण्ड (हे ४ ४७३) ।

गिरि न [गिरि] गिरिण गण्ड (हे ४ ४७३) ।

गिण्ड जी [गिण्ड] १ बीमता रोम । २ क्षेत्र, वन्धन (वा ३) ।

गिण्ड देवो गिण्डा; निमता कर्म (उप ७६७) ।

गिण्डा वि [गिण्डा] १ बीमता, रोम (वच १ ३ ३) । २ पर्वत, पर्वत पर्वत वच (वा ३ ४) । ३ कश्मिर, पर्वत-विरोध (गण्ड १ १३३ हे २ १ १) ।

गिण्डा जी [गिण्डा] गिण्डा क्षेत्र, वन्धन (वा ३ १) ।

गिण्डा वि [गिण्डा] गिण्डा क्षेत्र, वन्धन (वा ३ १) ।

गिण्डा वि [गिण्डा] गिण्डा क्षेत्र, वन्धन (वा ३ १) ।

गिण्डा वि [गिण्डा] गिण्डा क्षेत्र, वन्धन (वा ३ १) ।

गिण्डा वि [गिण्डा] गिण्डा क्षेत्र, वन्धन (वा ३ १) ।

गिण्डा वि [गिण्डा] गिण्डा क्षेत्र, वन्धन (वा ३ १) ।

गिण्डा वि [गिण्डा] गिण्डा क्षेत्र, वन्धन (वा ३ १) ।

गिण्डा वि [गिण्डा] गिण्डा क्षेत्र, वन्धन (वा ३ १) ।

गिण्डा वि [गिण्डा] गिण्डा क्षेत्र, वन्धन (वा ३ १) ।

गिण्डा वि [गिण्डा] गिण्डा क्षेत्र, वन्धन (वा ३ १) ।

गिण्डा वि [गिण्डा] गिण्डा क्षेत्र, वन्धन (वा ३ १) ।

गिण्डा वि [गिण्डा] गिण्डा क्षेत्र, वन्धन (वा ३ १) ।

गिण्डा वि [गिण्डा] गिण्डा क्षेत्र, वन्धन (वा ३ १) ।

गिण्डा वि [गिण्डा] गिण्डा क्षेत्र, वन्धन (वा ३ १) ।

गिण्डा वि [गिण्डा] गिण्डा क्षेत्र, वन्धन (वा ३ १) ।

गिण्डा वि [गिण्डा] गिण्डा क्षेत्र, वन्धन (वा ३ १) ।

गिण्डा वि [गिण्डा] गिण्डा क्षेत्र, वन्धन (वा ३ १) ।

विरोध (यक) । सेय पुं [“सेन”] इस नाम का एक प्रसिद्ध राजा (स १) । इर बि [“यर”] । छुणों को बाण्ड कलनामा छुणी । २ वनु बाण्ड । की रा (गुण १२७) ।

तर पुं [“कर”] छुणों की जान घनेक छुण-बाणा छुणी (पञ्च १२, १८, प्राप् १३४) ।

गुण बेको पराण [“गुणवर्ति”] यामने मुगलबेन-रु बह ह्यामने (कम्प २, क ४ २४-२६ वा ४४) ।

गुण बि [“गुण”] गुना घाहूत “बीमणुलो” हीसछुणों (कुमा प्राप् २९) ।

गुणत्र न [“गुणन”] १ छुणकार (यक २११) । २ कम्प-पञ्चवैत भावित “गुणणु” (३ गुण णणु) व्यास म घसतो (विह ११४) ।

गुणणा की [“गुणना”] अर बेको (कम्पकचो १२) ।

गुणवाकिस बीन [“एकीनवत्तारिगम्”] जनकामीन १२ (यम २६) ।

गुणबुद्धि की [“गुणबुद्धि”] समारार घाड रिता का जराका (मंकीच २८) ।

गुणसज पुं [“गुणसज”] एक कैन भाषायों को गुमनित ह्याचार्य के प्रसू बे (दुम १६) ।

गुण्य की [“वि”] मिष्टार विरोध (यक) ।

गुणाधिय बि [“गुणित”] वक्राण हुया पाकिर “वक्र” हो मकपण वक्राणो कम्पुबेबाहारायो महलविजायो कुप्राधियो (यका) ।

गुण्य बि [“गुण्य”] छुण-गुण छुणबाणा (उम २६७ टी बहम प्राप् २६) ।

गुणिअ बि [“गुणिअ”] १ गुना हुया निमवा गुणा किमा बना हो बह (भा ६) । २ निमित्त याद रिमा हुया (स ११ ११) । ३ पठित बीनल (बीय १२) । ४ बिज पठ की भावित की बई हो बह पठारित (यक ३) ।

गुनिन्न बि [“गुणन”] छुणी छुण-गुण (वि २१२) ।

गुण्य बेको गण्य (धणु १४) ।

गुण्ड (यन) बेको गिण्ड । गुण्ड (भाह ११६) ।

गुण न [“गोत्र”] कण्डुव कण्डुन (गुण २, क १) ।

गुण बि [“गुण”] उत प्रपन्न, किमा हुया (गामा २ ४ गुण २१४) । २ रचित (कच

१२) । ३ सन-वर की रक्षा करीबाणा, छुति मुक्त, यन बीरु की निर्दोष प्रवृत्तिबाणा (यक ४ ४) । ४ एक स्वामन प्रसिद्ध जीनाचार्य (भाह) ।

गुण बेको गोस (पाय मय पायम) ।

गुणपदाम न [“वि”] विद-सर्प (वि २, २१) ।

गुण्य की [“गुण”] १ बैबजाना जेन (गुर १

३३ गुण २१) । २ कठवच (गुण २१) ।

३ मन, बचन बीर कम्प की धगुन प्रवृत्ति को रोचना । ४ मन बीरु की निर्दोष प्रवृत्ति छ २ १ यम य) । “गुण बि [“गुण”] मन बीरु की निर्दोष प्रवृत्तिबाणा संघत (पण्ड २ ४) । पाळ पुं [“पाळ”] जम का एतक बैबजाना का धम्यन (गुण ४१७) । मण पुं [“सेन”] ऐरच लेन में कपल एक क्लिदेव (यम १२१) ।

गुण्य की [“गुण”] गोपन छाण (उ १२) ।

गुण्य की [“वि”] १ कम्पन (वि २ १ १ यवि) ।

२ कम्पन भविताया । ३ बचन धाराय ।

४ लता बह्नी । ५ तिर पर पड़नी बह्नी

छुन की मला (वि २ १ १) ।

गुणिय बि [“गुणिय”] द्विप-निपह करने

बना, संघवेतिव (मग छाया ४ ४) ।

गुणिय बि [“गोत्रिक”] एतक, रलण करने-

बाणा मगरुतिप छाहावे (कम्प) ।

गुणिय बि [“गोत्रिक”] मोठी समाल वोक्-

बला गोविदा (दुम १४४) ।

गुणियाव बेको गुणिय-पाळ (यवि २१) ।

गुण्य बि [“प्रमित”] गुणिक हुवा हुया (स

१ १ प्राप् वा १३ कम्प) ।

गुण्य पुं [“वि”] भाव-यकी पक्ति-विरोध (वि

२, २२) ।

गुण पुंकी [“गुण”] गीक गुण (वि १ ४२) ।

गुण्ड न [“गोत्र”] मगर-विरोध (मोह ८८) ।

गुण यक [“गुण”] व्याकुल होना । गुण्य

(वि ४ १३, यक) । बह गुण्य, गुण्यमाय (हुया १ १ २३ कम्प बीन) ।

गुण बि [“गोत्र”] १ विधाने गोय । २ न

एकान्त विजन (छ ४ १) ।

गुण्य बि [“गोत्र”] बी वा बीर हुवे कलना

गण्य को सचरिते बगहि, जिम्बुहुर दुणई-

गीरे (कम्प २२ टी) ।

गुण्य न [“वि”] १ रोमनीय, शम्पा । २ बि

बीयित रचित (वि २ १ २) । ३ संपुष्ट,

गुण्य वक्राणा हुया, व्याकुल (वि २ १ २)

वि १ २ २ ४) ।

गुण्य बेको गो-यय (गुण ११) ।

गुण पुं [“गुण”] कीनी पैर की गठ (स

११, वि २ ३) ।

गुणगुमिअ बि [“वि”] बुनको बुनय-गुण

(वि २ २१) ।

गुणम बेकी गुण (यक) ।

गुम छ [“गुण”] हुँबना गलना । गुनह

(वि १ २१६) ।

गुम छ [“अय”] बुनना पर्यंत करना

अमण करना । गुनह (वि ४ १११) ।

गुमगुम [“यक”] गुमगुमाय । १ “गुन

गुमगुमाय” गुम भाषाव करना । २ मकु

यम्यक वरति करना । बह गुमगुमव,

गुमगुमव, गुमगुमायव (बीय छाया १

१ कम्प पञ्च ३३ २) ।

गुमगुमाय बि [“गुमगुमायव”] विजन

“गुम-गुम” धारक किमा हो बह (बीय) ।

गुमिअ बि [“प्रमित”] प्रमित बुनमा हुया

(हुया) ।

गुमिअ बि [“वि”] १ बह गुण । २ कल

बहण । ३ प्रवृत्तिव । ४ पाणु मणुर (वि

२ १ २) ।

गुमगुमगुम बेको गुमगुम । बह गुमगुम

गुमव गुमगुमगुमव (पञ्च २ ४, २१ २) ।

गुम्य यक [“गुण”] गुण होना वक्राणा

व्याकुल होना । गुमह (वि ४ २ ७) ।

गुम्य पुं [“गुम्य”] परिहार, परिकर “हन्वी

गुम्यपरिहृते” (गुण २ २ २३) ।

गुम्य पुं [“गुम्य”] १ लता बह्नी कम्पति-

विरोध (गणु १) । २ बह्नी गुन-यय

(गाम) । ३ कैना-विरोध विजय २७ हावी,

२७ रच ८१ बीम बीर ११२ याता हो

कैनी मेला (पञ्च १६ २) । ४ बुन, वणु

(बीय-गुण २ २) । ५ कम्प का एक हिस्सा

कैनुमि-बमल वा एक पंथ (बीय) । ६

स्थान, यण्ड (बीय १२१) ।

गोडी की [गोडी] दुध की बनी हुई गरिया, दुध का घार (हृ २)।

गोडू बि [गोडू] १ दुध का बना हुआ। २ मुरद, मोठा (मय १८ १)।

गोडू [बू] रेको गोड (मुग्ध १२)।

गोण पु [बू] १ खाली (बि २ १४)। २ जेल शुभ, बहीबर (बि २ १४ बुमा है २ १७४ गुवा १४७ दीन बर १ १)। बाबा २ १ ११ ल १४ बिपा १ १)।

हुम बि [बू] याव बाबा बीषों का मासिक (गुवा १४७)। ब पुकी [पवि] बीषों का मासिक, बी बाला (गुवा १४७)।

गोन (शी) पुन [गो] बैक 'गोणो मेरा' (मह ८८)।

गोप पि [गोप] १ दुध लिप्पल दुध-मुक्त कपार (बिपा १ २)। बीप)। २ धनधान समुच्च (बीन)।

गोप्यता की [गवाहता] कैया, गाम (गुवा ४६२)।

गोणस } पुन [बू] बिष का बीमार रक्ते गोणसय } का बीसा (ज ११ स ४४४)।

गोणस पु [गोणस] सर की एक बाति कण-सहित सो की एक बाति (पहू १ १)। व ४ ४ १)।

गोषा की [बू] बर, पैसा पऊ (पहू)।

गोपिक पु [बू] गो-सुदू, बीषों का सुदू (बि २ १७ पाप)।

गोपिय बि [बू] बीषों का व्यापार (ब ११)।

गोपी की [बू] याव देना (बीन २१ भा)।

गोप्य रेको गोप = वीप (कय छाया १ १—पत्र १७)।

गोपिहाजी की [बू] गोपिहाजी की बीनला दी की बहकी (छंद १२)।

गोप पु [गोप] १ पर्वत पहाड़ (पा १४)। २ न नाम धमिधान बाक्या (से १३, १)। ३ कर्म-विशेष जिसके प्रभाव से प्राणी उन्मय या दीन बाति का कलुषता है (हा २, ४)। ४ पुन. मोठ मेल, मुक्त बाति 'छत मुनपीला पसपसा' (झ ७)।

'कस्तुरिप न [स्त्रकिप] माय-विपयम एक के बरे बुरे के नाम का उच्चारण (११ १७)। 'देवता की [देवता]

कुव-वेरी (पा १४)। 'कुस्त्रिया की [स्त्रिया] बली-विरोध (पण १)।

गोच पुन [गोच] १ पूर्वव प्रथम के नाम से प्रसिद्ध अवयव—संघति (छवि ४१ मुग्ध १ १६)। २ बि बाणी का उक्त (मुग्ध १ १६ २)।

गोचि बि [गोचि] समान यौववाता, कुटुम्बी स्वजन (मुवा १ १)।

गोचि रेको गुचि (ब २४२)।

गोचि बि [गोचि] समान यौववाता स्वजन यौव-वै (पा ७)।

गोचुय रेको गोचुय (ब ७)।

गोचुया रेको गोचुया (ब ७)।

गोचुय, पु [गोचुय] १ बापहरे बिन-गोचुय २ देव का प्रथम-स्त्रिय (ब १३२ बि २ ८)। २ देवद्वार नामधन का एक दामन-पर्वत (स ११)। ३ न. मनुष्योत्तर पर्वत का एक बिन्दु (बीन)। ४ कस्तुरि-एक (स १३ ८)।

गोचुया की [गोचुया] १ बाप-विरोध प्रथम पर्वत पर की एक बाणी (झ १ १)। २ खोरे की एक प्रथम-स्त्रिय की राजधानी (झ ४ २)।

गोचा की [बू] गात्रा नवी-विरोध गोचापी (ब ४)। पा १३२)।

गोय पु [गोय] १ म्नेच्छ देव। ३ गोय देव का निवासी मनुष्य (राज)।

गोया की [गोया] मोह, हाव से कलनेवाली एक छाप की बाति (पहू १ १ छाया १ ८)।

गोय रेको गोपन (छाया १ ११—पत्र २ १)।

गोपुर रेको गोठर (ज १)। धमि १८३)।

गोपये रेको यो की [गोपये रेको] बीषों को बाले की बाह (पात्रा २ १ २)।

गोफया ली [बू] गोफन पत्तर फैलने का प्रत्य-विरोध (राज)।

गोमहा ली [बू] यया मुक्ता (बि २ ११)।

गोमाय २ पु [गोमाय] मुक्ता बिन्दु, मोह गोमाय ३ (पाट—मुक्ता १२ १ १६३)। छाया १ ४ स २११ पाप)।

गोमाणसिया ली [गोमानसिया] सम्या कर स्वात-विरोध (बीन १)।

गोमाणसी ली [गोमानसी] ऊपर रेको (बीन १)।

गोमि २ बि [गोमि] बिमके पास धनेक गोमि ३ गो हो वह, (मनु लि २)।

गोमि रेको गोमिम (राज)।

गोमि ३ [बू] रेको गामा (मनु २१२)।

गोमि (पा) [गोमि] समान (मह १ १)।

गोमा ली [बू] कलकल मीनिय मनु विरोध (बी ११)।

गोमुह पु [गोमुह] १ यद-विरोध मयपत्र अपमय के राखन-वत् (संति ७)। २ एक सम्यगीन द्वीप विरोध। ३ गोमुह-दीप का निवासी मनुष्य (हा ४ २)। ४ न. उपवेन (बि २ १८)।

गोमुही ली [गोमुह] बाध-विरोध (मनु राय)।

गोमुही [गोमुह] बाध-विरोध (राय ४६ मनु १२८)।

गोमेय २ पु [गोमेय] यन की एक बाति गोमेय ३ छात्र (कुमा ७ ल २)।

गोमेह पु [गोमेह] १ यद-विरोध मयपत्र निवास का राखन-वत् (सं ८)। २ यद-विरोध विषम की का बर किया जाता है (पत्र ११ ४१)।

गोमिम पु [गोमिम] कोउल नगर एक (पहू १ २)।

गोमी रेको गोमी (राज)।

गोय रेको गोप (स ११ कय १)।

'बाह बि [बाह बि] यसे कुल की उद्यम मानेवाला बंधनमयी (बाबा)।

गोय न [बू] उजुवर—दूतर बरैह का फल (पात्र १)।

गोय न [गोय] मीन, बाध-संय (मुग्ध १ १४ २)। बाय ३ [बाय] मोक-मुक्ता कपन (मुग्ध १ २, २७)।

गोयम ३ [गोयम] यद-विरोध (हा ७)। २ बीय मेक (बीन)। ३ न. गोय-विरोध (कय हा ७)।

गोचम वि [गीतम] १ गोचम गोच में उत्पन्न
 गोचम गोचम "गोचमया ते हविर्वा पश्यतां"
 (यजु. ४०. ३१) २ गु. अथवा महतीर
 वा प्रमत्त-विषय (मय १४ ७३ अथवा)।
 ३ इन भाव का एक राज्य-गार, राजा
 राज्य-सुविष्ट का एक पुर, जो मन्त्रालय, मेधि-
 नाभ के पास होता है। हस्त-सुविष्ट पर
 युक्त हुआ वा (अथ २)। ४ एक मनुष्य
 जाति जो बैत हाथ निवासी नर यमना
 निवसि बसती है (साता १ १४)। ५ एक
 ब्रह्मण्य (अथ ११७)। ६ गोच विषय (अथ
 ४० पत्र २१७ टी)। "सिद्धि-
 वि" [करीय] "उत्तर-अथवा" वृत्त का एक अथ-
 वान् जितमें गौतम स्वामी गौर केरुलुगि का
 संभव है (अथ २१)। समुत्तर वि
 [संगोत्र] गोचम गोचम (अथ ११७)।
 "सामि पु" [सामि] मन्त्रालय मन्त्री
 के सर्व-प्रधान विषय का नाम (विता १ १—
 पत्र २)।

गोचमविषय की [गीतमविषय] कैमूनि-
 गोचमविषय का की एक राजा (अथ
 ४०)।

गोचर पु [गोचर] १ गोचर की चरने की
 चर, 'गो गोचर छो बराचरिमाथ' (हस्त
 १)। २ विषय "गोचरिमाथ" अथवा
 चरने (अथ २)। ३ अथवा विषय अथवा
 'अथ राजा चरने' की चरने अथवा
 चरने (अथ २)। ४ विषय विषय के लिए
 प्रमाण (अथ ११७ अथ २, १)। ५
 निवासा मन्त्री (अथ २ ४)। ६ वि वि
 में विचार-विषय "विचार-विषय" अथवा
 (अथ २)। अथवा [गोचर] विषय के
 लिए प्रमाण (अथ ११७ टी अथ ४ १)।
 भूमि की [भूमि] १ भूमि की चरने की
 चर (अथ १ ४)। २ विषय-अथवा की
 चर (अथ १)। अथ वि [अथ] वि
 विषय विषय अथवा (अथ २ ४)।
 गोचरी की [गोचरी] विषय मन्त्री (अथ
 ११७)।

गोचर पु [गोचर] १ भूमि-चर, अथवा २।
 २ वि वि विषय, भूमि (अथ २ अथ २)।
 ३ अथवा विषय (अथ १ ४)। ४ गोचर पु

[अथ] अथ की एक जाति (अथ १)।
 "गिरि पु" [गिरि] वर्षत विषय विषय
 (अथ १)। "मिग पु" [मिग] १ अथ की
 एक जाति। २ अ. अथ अथ के चरने का
 चर हुआ चर (अथ २ १, १)।

गोचर के गोचर (अथ २)।
 गोचर वि [गोचर] गोचर अथवा
 भूमि अथवा (अथ)।
 गोचरि की [गोचर] गोचर अथवा, अथवा-विषय
 (अथ २ २०)।

गोचरि वि [गोचर] अथवा अथवा (अथ)।
 गोचर न [गोचर] १ अथवा अथवा (अथ
 १)। २ अथवा, अथवा अथवा (अथ
 ११७ अथ २)। ३ अथवा, अथवा (अथ २)।

गोचरि वि [गोचरि] अथवा अथवा अथवा
 अथवा अथवा अथवा (अथ ४ ४)।

गोचर वि [गोचर] गोचर-विषय (अथ १
 २० अथ १०७)।

गोचर पु [गोचर] गोचर अथवा अथवा
 अथवा अथवा (अथ १ ४ अथ ४ १)।

गोचर पु [गोचर] गोचर अथवा अथवा
 (अथ १४)।

गोचर पु [गोचर] अथवा अथवा अथवा
 (अथ २, ४, १)।

गोचर की [गोचर] अथवा अथवा अथवा
 अथवा अथवा (अथ १ ४)। २
 अथवा अथवा (अथ १ ४)। ३ अथवा अथवा
 (अथ १ ४)।

गोचर के गोचर (अथ १ ४)।

गोचर न [गोचर] अथवा अथवा अथवा
 (अथ)।

गोचर की [गोचर] १ अथवा-अथवा की (अथ
 १)। २ अथवा अथवा-अथवा (अथ २ अथ २)
 ३ अथवा अथवा की एक अथवा
 अथवा (अथ १)। ४ अथवा अथवा की एक अथवा-
 अथवा (अथ १)। ५ अथवा [अथवा] अथवा-
 अथवा-विषय (अथ)।

गोचर की [गोचर] अथवा-विषय (अथ २, १,
 २०)।

गोचर न [गोचर] अथवा अथवा (अथ १
 १२)।

गोचर पु [गोचर] १ अथवा (अथ १, २, १)। २

गोचर का अथवा-अथवा अथवा (अथ १
 २)। ३ अथवा अथवा (अथ ३)।

गोचर पु [गोचर] १ अथवा-विषय अथवा-विषय-
 अथवा-विषय (अथ २)। २ अथवा-
 अथवा, अथवा, अथवा अथवा अथवा (अथ ४ ४
 अथ २)। ३ अथवा अथवा (अथ २)।
 ४ अथवा, अथवा (अथ ४ ४)।

गोचर पु [गोचर] गोचर अथवा अथवा अथवा
 (अथ ४ ४)। अथवा (अथ ४ १५)।

गोचर पु [गोचर] अथवा अथवा अथवा
 (अथ २)। २ अथवा अथवा (अथ २)।

गोचर अथवा अथवा [गोचर अथवा] अथवा-विषय
 (अथ १ १५)।

गोचर की [गोचर] अथवा अथवा (अथ २, १ ४
 अथवा)। २ अथवा अथवा अथवा (अथ २, १ ४)
 अथवा अथवा (अथ २, १ ४)। अथवा
 अथवा (अथ २ १ ४ अथ २ १४ अथ २ १४)
 अथवा (अथ २ १४, १४ अथवा, अथवा)।

गोचर पु [गोचर] अथवा अथवा अथवा
 (अथ २)।

गोचर की [गोचर] १ अथवा अथवा (अथ
 अथवा)। २ अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा
 अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा
 (अथ २)। ३ अथवा अथवा अथवा अथवा (अथ ४)
 अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा
 १ अथवा अथवा। २ अथवा-विषय (अथ
 ४—अथ ४ ४)।

गोचर अथवा अथवा [गोचर अथवा] अथवा-विषय,
 अथवा अथवा अथवा की एक अथवा है। २ वि,
 अथवा-विषय-अथवा (अथ ३)।

गोचर की [गोचर] अथवा अथवा, अथवा,
 अथवा अथवा अथवा अथवा (अथ २, १२)।

गोचर न [गोचर] अथवा-अथवा अथवा अथवा
 (अथ १ ४ अथवा)।

गोचर पु [गोचर] १ अथवा-विषय (अथ २)
 २ अथवा-विषय अथवा अथवा अथवा
 अथवा है। ३ वि अथवा अथवा अथवा
 (अथ ४)।

गोचर की [गोचर] अथवा, अथवा-विषय अथवा
 अथवा (अथ २ १२ अथवा अथवा)।

गोचर अथवा [गोचर] १ अथवा। २ अथवा
 अथवा। अथवा, अथवा (अथ ४ ४)। अथवा।

घ

ब धु [घ] कष्ट-स्वादीय व्यञ्जन बर्त-विशेष (प्रातः प्रातः) ।

पञ्चमर्ष न [घ] कुङ्कुम, रम्य (पद्) ।

पञ्च (पञ) घ. पाञ्च-पञ्च घोर घनवर्ष घनवर्ष (हे ४ ४२५ कुमा) ।

पञ्चोद्य [घ] [पुनोद्य] १ लघु-विशेष पञ्चोद्य २ विष्णु पानी घी के तुल्य स्थावित (हे १६८ टा ७) । २ घेन विनये (पिब) ३ वि विष्णु पानी घी के तुल्य पञ्चुर ही वेषा बलात्म्य । घी आ वा (बीच १ पञ्च) ।

पञ्च धु [घ] वृक्ष कपट, वर (हे २ १ ३५) साक्षा जी [घास] घनत्व-लक्षण मिश्रण का घनत्व-स्वात (घोष ११६) वन ७ भाषा) ।

पञ्चल (पञ) न [मृष्ट] १ ममका वन (हे ४ ४२२) । २ मेष, वनपट्ट (कुमा) ।

पञ्चसिद्ध वि [घ] वनवाता हुवा (घे १ ५) बर्मे ११४) ।

पञ्चोर वि [घ] भ्रमर-दीप्त मलक-वज्रा (हे २ १ ६) ।

पञ्चिध धु [घ] देवी देव निकलनेवाला कुचपटी मे 'पञ्च' (धुर १६ १६) ।

पञ्च धु [घ] कष्ट नास-निमित्त बाध विशेष (घोष १ भा) । जी टा (हे १ १६५) पञ्च) ।

पञ्चिय धु [पञ्चिक] कष्टनास का कुच-वेवता कष्ट विशेष (हे १) ।

पञ्चिय धु [पञ्चिक] कष्ट वनमेवासा (कम्प) ।

पञ्चिया जी [पञ्चिक] १ जीटी कण्टी (प्रातः) । २ किमिणी कुङ्कुम (धुर १ १४८ नं २) । ३ साकप-विशेष (साया १ ६) ।

पञ्च धु [पञ्च] बर्मे ११५ विनय (साया १ १—पञ्च ११५) ।

पञ्चास न [पञ्च] विनय रज (हे ४७) ।

पञ्चिय धु [पञ्चि] विनय हुवा रजका हुवा (घोष) ।

पञ्चधु जी मे ।

पञ्चधु न [घ] वन वन लहौ घिर्मे के वनमे वा एक वन (हे २ १ ७) ।

पञ्चधु धु [पञ्च] १ लघु-विशेष (घा ७) । २ वीरवाता कष्ट 'पञ्चधु-विनय' (हे १ १७) ।

३ वीरवाता वाताका 'पञ्चधु-विनय' (धुर १ १११) । ४ न. वनपट्ट लोभ वा वनपट्ट वनपट्ट ना कुङ्कुम (पञ्च) ।

पञ्च लक [पञ्च] १ स्पर्श करना हुवा । २ विनय करना । ३ वनपट्ट करना । ४ घात करना । घट्ट (धुरा ११६) । वन पञ्च (टा ७) । कष्ट पञ्चिर्धु (हे २ ७) ।

पञ्च लक [पञ्च] हिलावा । वन पञ्चिर्धु (घा १ १ १) ।

पञ्च लक [पञ्च] घट्ट होना । वन (पद्) ।

पञ्च धु [घ] १ कुचपट्ट रंघ से रंघा हुवा वन । २ मदी कन वाट । ३ वन वन वन (हे २ १११) ।

पञ्च धु [पञ्च] १ लघु-विशेष-वाताका वन-धुवि का एक वनवाता (घा) । २ वन वन (भा २५) । ३ वनपट्ट कष्ट 'वनपट्ट' (धुरा २११) । ४ वि वाता विनय 'पञ्च वनपट्ट' (धुरा ११) ।

पञ्च धु [पञ्च] १ लघु-विशेष-वाताका वन-धुवि का एक वनवाता (घा) । २ वन वन (भा २५) । ३ वनपट्ट कष्ट 'वनपट्ट' (धुरा २११) । ४ वि वाता विनय 'पञ्च वनपट्ट' (धुरा ११) ।

पञ्च धु [पञ्च] १ लघु-विशेष-वाताका वन-धुवि का एक वनवाता (घा) । २ वन वन (भा २५) । ३ वनपट्ट कष्ट 'वनपट्ट' (धुरा २११) । ४ वि वाता विनय 'पञ्च वनपट्ट' (धुरा ११) ।

पञ्च धु [पञ्च] १ लघु-विशेष-वाताका वन-धुवि का एक वनवाता (घा) । २ वन वन (भा २५) । ३ वनपट्ट कष्ट 'वनपट्ट' (धुरा २११) । ४ वि वाता विनय 'पञ्च वनपट्ट' (धुरा ११) ।

पञ्चधु न [घ] वन-विशेष वन-विशेष वन-विशेष (धुरा १११) ।

पञ्चधु वि [पञ्च] वन-विशेष वन-विशेष (धुरा १११) ।

पञ्चधु न [पञ्च] १ वन-विशेष वन-विशेष (धुरा १११) ।

पञ्चधु धु [पञ्च] १ वन-विशेष वन-विशेष (धुरा १११) ।

पञ्चधु धु [पञ्च] १ वन-विशेष वन-विशेष (धुरा १११) ।

पञ्चधु धु [पञ्च] १ वन-विशेष वन-विशेष (धुरा १११) ।

पञ्चधु धु [पञ्च] १ वन-विशेष वन-विशेष (धुरा १११) ।

पञ्चधु धु [पञ्च] १ वन-विशेष वन-विशेष (धुरा १११) ।

(बं १) । २ वन-विशेष वन-विशेष (धुरा १ १) ।

पञ्च वि [पञ्च] १ वन-विशेष वन-विशेष (धुरा १ १) ।

पञ्च लक [पञ्च] १ वन-विशेष वन-विशेष (धुरा १ १) ।

पञ्च लक [पञ्च] १ वन-विशेष वन-विशेष (धुरा १ १) ।

पञ्च लक [पञ्च] १ वन-विशेष वन-विशेष (धुरा १ १) ।

पञ्च लक [पञ्च] १ वन-विशेष वन-विशेष (धुरा १ १) ।

पञ्च लक [पञ्च] १ वन-विशेष वन-विशेष (धुरा १ १) ।

पञ्च लक [पञ्च] १ वन-विशेष वन-विशेष (धुरा १ १) ।

पञ्च लक [पञ्च] १ वन-विशेष वन-विशेष (धुरा १ १) ।

पञ्च लक [पञ्च] १ वन-विशेष वन-विशेष (धुरा १ १) ।

पञ्च लक [पञ्च] १ वन-विशेष वन-विशेष (धुरा १ १) ।

पञ्च लक [पञ्च] १ वन-विशेष वन-विशेष (धुरा १ १) ।

पञ्च लक [पञ्च] १ वन-विशेष वन-विशेष (धुरा १ १) ।

पञ्च लक [पञ्च] १ वन-विशेष वन-विशेष (धुरा १ १) ।

पञ्च लक [पञ्च] १ वन-विशेष वन-विशेष (धुरा १ १) ।

पञ्च लक [पञ्च] १ वन-विशेष वन-विशेष (धुरा १ १) ।

पञ्च लक [पञ्च] १ वन-विशेष वन-विशेष (धुरा १ १) ।

पञ्च लक [पञ्च] १ वन-विशेष वन-विशेष (धुरा १ १) ।

पञ्च लक [पञ्च] १ वन-विशेष वन-विशेष (धुरा १ १) ।

पडापडी की [वे] थोड़ी, सभा मण्डी
(पङ्) ।

पञ्चाय सक [घनय] १ गनाया । २
गनयाना । ३ संयुक्त करना मिलाना ।
पञ्चाय (दे ४ ३४) । संज्ञ पञ्चायिता
(घातक) ।

पडि रि [पटिम्] स्यवाया (प्रुल १४४)
पडि की [पटी] ऐको पडिभा = भक्ति
(प्राप् ११)। मलय, मलयन [मायत्र]
छोटे बड़े के धारक का पात्र-विशेष (राज
कृत)। ज्ञान [यमत्र] रूट, रूढ़न पात्र
निकलने का कर्म (पत्र)।

२ संसक्त संवत् १८८८, मिना हृषा (पाम
स ११४) प्रीप म्हा) ।

घटिअचढा बी [दे] बीछी मएछी (३१५)।

पडिला की [चन्द्रिका] १ चौथी पदा
नवरी (वा ४६ या २७)। २ वरी
मूर्त (मुपा १ न)। ३ समय बहनेवाला
मन की-मन पड़ी (पाप)। छय
[चय] मर्यादा, बहदा बहने का स्था
(मर ७ १७)।

पडिभा } जी [दे] पोछी, मण्डीनी (पड
पडी } दे २ १ ३) ।

घडिगा देखो घडिआ (सूच १ ४ २ १४)
घडी जी [घटी] देखो घडिआ (स २१
प्राक) ।

पदुक्त्य वृ [चटोरुप] सीम वा पुत्र (४ २६६)।

२५ अग्नि-मिथोय समस्त्य मुनि (प्राह) ।

घट्ट न [बे] ब्रह्म, टीका स्तुप (पाप्य) ।

४२ प्राप्नु ७२) । २ हृषीका (वि १. ११)

१ मण्डित-विशेष तीन वर्गों का पूरा कर
 जैसे हो का बन ग्राह होता है (अ १०—
 ४२६ विसे १२४) । ४ वाप का रा
 विशेष कायदाय बन्दू (अ २ १)

११७ टी)। व ग्रथिताय ग्रथिक ग्रथक
(राय)। १ कठिन तपसा-वृष्टि स्थान
(बी ७ ठा ३ ४)। १ न. वेदविमान-
विरोध (मम १७)। ११ पिण्ड (धृम १
१ १)। १२ बाध-विरोध (गुण १२)।
उद्धि देखो घणोद्धि (मम)। "निधिय
वि [निचित] घटनति निष्ठि (मम ७ क-
वीय)। तव न [तपसु] तपन्यते
विरोध (उत्त ३)। एवं पुं [वय] १
इत नाम न्व एक संसर्गादि। २ उत्तम
निपातो भण्य (ठा ४ २)। मातृ न
[मातृ] वेतात् पर्वत पर विवत विदावर
नार-विरोध (इक)। सुरंग पुं [सुरङ्ग]
येव की तण् नम्यीर यथाकाला बाध
विरोध (वीय)। रक्ष पुं [रय] एक नैम
सुनि (पञ्च २ ११)। वात पुं [वायु]
स्थान शत्रु, जो गरुड-पुष्पी के नीचे है
(उत्त ३९)। वाय पुं [वार] ऐवो वात
(मम बी ७)। बाह्व्य पु [बाह्व्य]
निपातों के पदार् का नाम (पञ्च १ ७७)।
"विश्रुता जी [विश्रुता] वेदी-विरोध
एक विश्रुतादी वेदी का नाम (इक)। समय
पुं [समय] वर्षा-काल वर्षा शत्रु (कुमा
पत्र)।

घर्षणगुल दूध [घनाकुल] परिमाल-विशेष
सूची से गुना हमा प्रवणगुल (मसु १३.५)।

पञ्चसंमह पु [पञ्चसंमह] ज्योतिष-प्रसिद्ध
योग विशेष जिसमें कर्म या धर्म ग्रह प्रत्यक्ष
कर्म के बीच में होकर जाता है वह योग
(सूत्र १२—पञ्च २३३)।

अनन्यभाहूय न [अनन्यभाहूयित] एव की
अनन्यभाहूय मा अकृष्णभाहूय अकृष्णभाहूय-
विशेष (पृष्ठ १३)।

यथाह्यं पुं [दे] इत् स्वर्गपति (वि २
१ ७) ।

पणसार पुं [पनसार] कपूर (पाप; भवि) ।
 "मंजरी श्री" [मंजरी] एक श्री का नाम
 (कृष्ण) ।

धणा की [धना] बरएने की एक मय-सहिषी
इन्द्रासी-कियोय (छाया २ १—पद्य २५१)

घण्टा की [घुंटा] बूझा पुराना बर्ताना (प्रश्न)

घञिन् य न [घञित्] घञेना घञेन (गञ ३)

पणोदहि षु [पनोदधि] पत्पर श्री लण
कठिन बल-समुह (सम १७) । 'पत्तय न
[पत्तय] बलपाभर कठिन बल-समुह
(पण २) ।

पण्ण पुं [वे] १ उर, बलस् क्षात्री ।
२ वि रक्त रंगा वृषा (वि २, १५) । ३
पाल्य मार बासने योग्य (सूत्र ४ २-७
पत्र ४१) ।

पञ्चमः [क्षिप्] १ कङ्का दाहय ।
२ प्रेरणा । पञ्च (हि ४ १४१) । सं-
'धकायो पञ्चिऊय धरनीस्' (पञ्च ४
३ ४ १४१) ।

यत्तु एक [मह] प्रहण करता । यत्ति
यत्तिस्व (प्रयौ ११) ।

षट् सङ्क [गवेपय्] षोडशा षड्
संज्ञान कणा । षट् (हे ४ १५६) । सङ्क

पश्चिम (कुमा) ।
पश्च सक् [यत्] सक् करना, उद्योग करना ।
पत्ता (छं २६) ।

यत्त कि [घात्य] १ मार डालने योग्य । २
 जो मार वा सके (पि २८१ सूत्र २
 ६ अ) ।

यत्तप्य स [यत्तप्य] कौशल्या (कुमा) ।
यत्ता श्री [यत्ता] कन्य विरोध (विम) ।

यत्तार्थं न [यत्तानन्द] अन्व-विशेष (पिंग) ।

पञ्चि थ [६] शीघ्र कल्लो (प्राक् ८१) ।

अधिय वि [क्षित] श्रेयि (स २ ७) ।

पशु नि [पाशुङ] मासेवाला बावत खजाना
(उप १५ ७) :

अस्य नि [अस्त्] यहीत पक्का हुआ (विह
३१९) ।

अथ बि [प्रस्त] १ अक्षिण निगधा ह्रस्वा
कक्षिण (पञ्च ७१ ३१ परा १ ३) ।
२ आक्षान्त अभिभूत (भूपा ३२२; महा) ।

षष्ठमं पुं [धर्म] नाम परमी संताप कृत
(३१ ८७ वा ४१४) । २ पक्षीनां स्वर
(३४ १२७) ।

पद्माक्षी [पद्मा] पद्मी नरक-दुषिनी (छ ७) ।

पम्मोडी जी [६] मध्य-विरोध (वि २, १६)।
पम्मोडी जी [६] १ मध्य-काश। २
मरक मण्डर, धुव पणु-विरोध। ३ ग्रामणी
ग्राम-रुका (वि ३ ११३)।

पय न [पुन] की कृ (हि १ १२६ गुर १९ ११)। आमय पुं [पय] मित्रा
बन की को छह सपुर मने रमा लविमान्
पुरय (पयन)। (रह न [किट] की
का मेन (पय २)। (पट्टिया की [कि
ट्टिया] की का मन (पय ४)। गाल न
[गाल] का पीर पूर की बनी हुई एक
प्रार की मित्रा, मित्रा-विरोध (गुरा
६११)। पट्ट पुं [पट्ट] की का मेन
(रह १)। पुन पुं [पुन] केर, मित्रा
विरोध (उन १४२ छे)। पूर पुं [३२]
केर का केर, मित्रा-विरोध (गुरा ११)।
पुनमित्र पुं [पुनमित्र] एक लैन कुमि
पार्यपय गुरि का एक मित्र (पाह १)।
मंड पुं [मण्ड] ऊपर का की घुमार
(बीर १)। [मित्रा की [मित्रा]
की का पीर पूर कन्-विरोध (का १९)।
"मंड पुं [मिच] की के तुल्य पासी बलने
बानी बर्ष (अ १)। वर पुं [वर] शून
विरोध (रह)। सागर पुं [सागर]
मनु-विरोध (वीर)।

पयम पुं [प] मरह मंड, मंडा (का
५२ ४ २०३ वंश ४)।

पयपुम पुं [पुनपुम] एक लैन महामि
(हुन १२)।

पर पुं [पर] बर मान, गुर (हि २ १४०
टा २ गानु ७३)। कुडा की [कुडा]
१ बर के बाहर की कोटि। २ की के
भीर की कुडिया (बीर १ १)। ३ की
का शरीर (गुर)। गोड्या का कुडिया
की [कुडिया] गुरोरा, बिगनी (मि,
गुरा ६४)। गोडी की [गोडी] गुर
पीर, बिगनी (४ १ १२)। गोडिया
की [गोडिया] बिगनी कन्-विरोध (६
२, १६)। जामाडय पुं [जामाडय]
का-बर्षा, मनु पर व [ह] हमरा घनेमाना
कामाडा (गुरा १ १९)। ह्व पुं [ह्व]
परी संगरी बरापी (गानु १११)। नाय
न [नामय] यानी नाम, बलमिक नाम
(रह)। बाडय न [बाडय] बनी हुई
बनीय बला बर (पाय)। बार न [बार]
बर का बरमान (का १६३)। मरवि

पुं [शकुनि] पातु बलवर (पय २)।
मनुवापिय पुं [समुवापिय] बानीयक
मत का अनुवापी बापु (बीर)। सामि
[स्वामि] बरका मानिक (हि २ १४०)।
मायिणी की [स्वामिनी] पुष्टिणी की
(हि २२)। "मूर [मूर] यानी गुर,
मूर गुर, बर में ही बहापुटी बिबानेबाबा
(६)।

परंयन न [गुराङ्ग] बर का ययन बीक
(का ४४)।

परकुली की [गुरकुली] की-शरीर (हुन ४)।
परा देवी पर (बीर १)।

परघट पुं [रे] बरक बीरिया ली (६ २,
१ ७ पाय)।

परधरा पुं [रे] यका का बापुबल-विरोध
(अ १)।

परह पुं [परह] बला बनी यल पीधने
का पापाय यल (पा ५ छण)।

परह पुं [रे] परह परह बनी का
बला (लुह १)।

परही की [परही] छट्टी तोर (६ १ १)।
परणी केवी परिणी। "त बरपरहि बरहि
ब" (७२५ टो गानु ८२)।

परयन पुं [रे] बापरी बरल लीडा (६ २
१ ७)।

परास पुं [रे गुराबास] गुरमन गुरलामन
(रह १)।

परसण देवी परसण (रह)।

परिय वि [गुरयन] परबला गुरल (का
१४)।

परिणी की [गुरया] परबानी की भारी
कली (का ७२८ टी ६ २ १ गुर २
१ गुरा)।

परंय पुं [गुरय] गुरी संगरी बरबारी
(का ७१९)।

परिडा की [गुरिय] परबानी की बली
(गुरा)।

परिडी की [रे गुरिडी] गुरिणी कली
(६ २ १ ९)।

परिम पुं [परि] बरिण रण (पाया १
१९)।

परिसण न [परि] बरिण रण (रह)।
परोइसा की [रे] गुरोरा बिगनी, मित्र
इया (वि १६५)।

परोड न [रे] गुर-बीर-विरोध (६ २
१ ९)।

परोडिया } की [रे] गुरोरीयका बिगनी;
परोडी } गुरोरी में "परोडी" (पाह १
१ ६ २ १ ५)।

पलपल पुं [पलपल] "लन लन" बाबा
बलि-विरोध (मि १ ९)।

पल ल [पल] केंका "गना, नामय।
पल, बला (मि ६ ४ ११४ ४२२)।

पल वि [रे] बरुल, मेनी (६ २ १ १)।

पलपु पुं [रे] बीरिय बीर की एक
पलपु } बाति (गुर ११ १३) उर
१९ १९)।

पल्लिभ वि [पल्लिभ] केंका हुमा बला हुमा
(मि)।

पल्लिभ वि [रे] बलि निमित मित्रा हुमा,
बल्लु लै छल्लि बलिमी लिबल्लुल्लुल्लुल्लु
(गुरा २४६)।

पल ल [पल] १ मित्रा रणन। २
मारीन कला छल्ल कला। बल (महा
पह) छल्ल "बलिकल्ल पल्लिपु बापी
पल्लिपु मय पल्ल" (गुर ७ ६५६)।

पल बीन [रे] १ छट्टी हुई बनीय बल्लानी
बुमि (पाह २, १ २)। २ गुरि पुमि
पेली बनीय। ३ गुरा गुरि (रह १ १२)।

पलपल केवी पलपल (गुरा १४६ १ १६६)।

पलपल वि [रे] बलि, बलि (रह)।

पलपल की [परि] बर-देवा देवी लरीर
(४ १२७)।

पल की [रे] १ पेली बनीय। २ पुमि-
पल, लरीर (रह)।

पलपल वि [पल] मित्रा हुमा, रणन हुमा
(रह २)।

पलपल वि [मसि] बल्ल-पल्ल बल्ल बली-
बला (बीर १११ का)।

पल की [रे] १ पुमि-पल लरीर। २
बीरिय बरल (रह)।

पल की [रे] बलीय का बला, बल (पाह
२, १ २, १)।

धनुसर वि [धनुसर] खले की धनुसरना
बाधुक (भाङ्ग २८) ।

धाइ वि [धाविय] बाठक नाथक हिमक
(गा ४४७ विसे १२१० मय) । धम्म न
[धम्म] कर्म-विशेष शलाकरण कर्म
बण्ण मोहणीय बीर धम्मयय मे बार कर्म
(संग) । धाउक न [धनुक] धुबोठ बार
कर्म (भाङ्ग) ।

धाइअ वि [धावित] १ मारित विमारीत
(णाय १ ८ उअ) । २ बरना हुवा की
छाँट-कुम्भ हुवा हो कामधर्मस्थित करणार्थ
धारार्थ बाया मय् वेमणा मंठा (मुर ४
२१६) ।

धाइआ की [धाविक] १ विनस्य करनेवाली
की मालेबली की (बं २) । २ बाठ
हुवा । ३ पाव करना (मुर १६ १५) ।

धाइअमाय } देवी धाय = इव् ।
धाइअय्य

धाइअय्य देवी धाय = धायय् ।

धाइर वि [धाविय] मूलनेपना (गा ८०६) ।

धाउअम वि [धनुअम] मारले की इच्छा
बाला (छाया १ १८) ।

धाउन देवी धाय = इव् ।

धाउ सक [अंश] अट होता कुट होता ।
बाइर (पद्) ।

धाउ दु [पाट] १ विनका लीहार्थ (इह
छाया १ २) । २ मलक के लीके का शयन
(छाया १ ८—१० १११) ।

धाविय वि [धाविक] बयस निव (छाया
१ २ इद १) ।

धाइअय्य दु [दे] बणीत की एक गाँव (१)
अ गुरु सीगुगुहाकराजुनिबडा दुई मय् बडा ।
धारतययना इव धरबण्ण मे बनावीण
(उप ७२८ सी) ।

धाग दु [दे] १ पानी कीज् जिन्-नीह-
नय (तिर) । २ पान करी धादि में एक
बार डामने का परिवारण (मुस १४) ।

धाग दु [धाग] शत मदिना 'दे पाणा'
(मुण १६ पर १४८ सी दे २ ७६) ।
धिस दु [धोस] मदिना में होने-
वाला रोग-विशेष बीज (धोप १८४ म) ।

धाणिणिय न [धाणित्रय] नासिक, नाक
(उअ २६) ।

धाय सक [धुन] मारना मार डालना, बिनाश
करना । बहू-धाग्य (उअ) । बहू ध्यापित
रितमईहं (पउम ६ १७) । धायव
(पउम २४ २६ विसे १७६१) । कनक 'से
कले विनाशणुं कोलेछाणसुहा वंहा कोर
सय्ही सज्जि गिहं धाइअमाणं पामर' (छाया
१ १८) । बहू धाइअय्य (पउम ६६ १४) ।

धाय सक [धावय्] मरवाना डुबरे डार
मार डालना बिनाश करना । बहू-
धायमाण (मुय २ १) । क-धाइअय्य (पउम
१६ १४) ।

धाय दु [धाउ] गमय, गति (मुय १ १) ।

धाय दु [धाउ] १ ध्याउ, चोट बार (पउम
२१ २३) । २ नक (मुय १ ३ १) । ३
लगा बिनाश, हिसा (मुय १ १ २) । ४
संसार (मुय ७)

धायाग वि [धायक] बार डालनेवाला, बिना-
शक (उ २६४ मुग २ ७) ।

धायाग न [हनन] १ इच्छा नाथ दिना
(मुग १४४ ३ २६) । २ वि हिसक मार
डालनेवाला (य १ ८) ।

धायाय दु [ह] मालक लवेया (दे २ १ ८
हे २ १७४ य) ।

धायाग की [हनन] मारण हिसा बय
(कण्ड १ १) ।

धायाय देवी धायग (विसे १७६१ ४ २६७) ।
धायाय दु [धागक] मरक-स्वान विशेष
(वेनेउ २६१ १) ।

धायागना की [धावना] १ मरवाना डुबरे
डार मारना । २ कृपायत मरवाना 'बहुगम-
मयावाणायि लविम' (धिया १ १) ।

धार सक [धारय्] १ धिप का फैला
धिप की धारन मे फैलन होना । २ मक धिप
से फैलन करना । ३ धिप से मारना । कर्म
'धारिणी व लयी विण' (उ १८६) । ईहू-
धारिअउं (उ १८६) ।

धार दु [धि] धाहाउ, बिना, दुर्ग (दे २,
१ ८) ।

धारन दु [धि] धनुवर, वेनर, एक प्रकार की
कीड़ा (दे २ १ ८) ।

धारण न [धारण] धिप की धसर मे होने-
वाली बेचैनी (मुग १२४) ।

धारिय वि [धारित] को धिप की धसर से
बेचैनी हुआ हो 'उत्तमी भोगी । समाय
ववुषपाया विजपाविमोयानुदीपित' (उप
४४२) 'विजपा' (१ मा) रिक्ख मइ ना
मणुअमणुअममिणीसीसे' (उवर ६७) ।
विजपाविमो धि धरुमो धि मोहण किं
लणो धि' (मुग १२४ ४४७) ।

धारिया की [धि] मिटान-विशेष दुबराती में
बिने 'धारे' कहे हैं (मधि) ।

धार की [दे] १ छुनिना पदिन-विशेष (दे
२ १ ७ पय) । २ धन विशेष (सिा) ।

धास सक [धुप] १ पिचना । २ पीड़ा
करना । कर्म धास (मुय १ ११ १५) ।

धाम दु [धास] दल कुम्भी को खाने का
लुण (दे २ ३३, धीर) ।

धास दु [धास] १ कनक कीर (धीन उत
२) । २ धाहाउ भोजन (भावा धीय ११) ।

धास दु [धपे] धपण एण् 'बो मे उअमि-
ली इह करउअयणेण कणणपावेण' (मुग
१४) ।

धासमया की [धासियगा] धाहाउ नियमक
मुदि धासुडि का पयसीचन (धीय ११८) ।

धि देवी य । धधि धिद्ध (विसे १ २३) ।

धर्म विजति (द्रायु ४) । संक धिनाम
(मुग ७४६) । ईह धिन् (मुग २ ६) ।

ध धिपस्य (मुग १४ ७७) ।

धिन न [धुत] की धीय धायम (गा २२) ।

धिम वि [धि] धरिण विनस्य धरणीरित
(दे २ १ ८) ।

धि' } दु [धीय] १ परकी की अणु, धीय
धियु } नाम 'धिविदित्त' (धोप ११)

धा उअ २ ८ नि १ १) । २ मरजी
धविजार (मुय १ ४ २) ।

धिट्टि धि [धि] दुम्भ दूकडा (दे २, १ ८) ।

धिट्टि धि [धुध] पिना हुमा, रवका हुमा (मुग
२७ : मा १२६ म) ।

धिया की [धिया] १ उज्ज्या धरवि । २
वया धनुगगा (दे १ १२८) ।

धियिधि धि [धुनाय] १ धागना नर
रव करनेवाला (तिर १७१) ।

पिप (पर) पि [पिपि] पिका हुआ जाता
हुआ (पिपि)।
पिपुमज पि [पिपुमज] बहल करने
की इच्छावाला (पुपा २ ६)।
पिपुण } ऐसी पि।
पिप्य }
पिप सक् [पिप] प्रथमा निपसना प्रयाण
करना। पिपह (हि ४ २ ४)।
पिसरा की [पे] मन्त्री परदेस का वास्त-
विशेष (पिपा १ व—पत्र ८३)।
पिसिज पि [पिपि] कबलित निगला हुआ
मसित (कुमा ७ ४४)।
पुपुक्क दु [पे] ऊपर, इव डेर सपुह
(हि २ १ ६)।
पुं पु [पे] इष्ट एक बार सीधे योग्य वाली
धाति (हि ४ ४२३)।
पुप्य } (परा) पुं [पुपिप्य] कर्म-विष्ठा
पुपिप्य } कर्त्तृ की विष्ठा (हि ४ ४२३
कुमा)।
पुपुक्क न [पे] केर, वनसीक परियम
(हि २ ११)।
पुपुकि दु [पे] मस्त्रक, मेक मेक्क (हि २,
१ ६)।
पुपुप्पुम पि [पे] निःशंक हीकर क्या हुआ
(वर)।
पुपुप्पुसय न [पे] शरक वचन शरक-
पुत्र बन्धी (हि २ १ ६)।
पुपुप्पुप्य पक् [पुपुपुपाय] 'पु'
वाचन करना पुक का जन्म का बोला।
वक्-पुपुपुपुपय (पत्र १ २, ३६)।
पुपुय पक् [पुपुय] ऊपर केही। वक्
पुपुयव (शाय १ व—पत्र १३३)।
पुपुय दु [पुपुय] जिसे हूय पाव की निकले
अपत्तर (पिप १३)।
पुपुपिपि न [पे] प्याह की बड़ी चिला
(हि २ ११)।
पुपु पि [पुप] बोधित कीही वाचन से
बाहिर किया हुआ (पत्र ३, ११८ अधि)।
पुपुक्क पक् [गर्ज] बरना, पबोरन
करना। पुपुह (हि ४ ३६३)।
पुन दु [पुन] कठ-पक्क कीट, पुन (डा
४, १) पिपि १३३६)।

पुनहुजिआ } की [पे] कसोपकलिका
पुनाहुजी } कानाकानी (हि २ ११,
महा)।
पुपिय पि [पुपिय] कुपों से पिठ हुआ हुआ
(वह १)।
पुपुय ऐसी पुपुम। वक् पुपुणव (गात्र)।
पुपुजिप पि [पुपिपि] १ पुना हुआ। २
भास्य भटका हुआ (हि ४, ४६)।
पुपिपि पि [पे] ज्योतिष ज्योतिषित बोना
हुआ (हि २ १ ६)।
पुम } ऐसी पुपुम। पुमह (पिप)। वक्
पुम } पुमव (पत्र १ ३)।
पुमपुमिय पि [पुमपुमिपि] १ जिसने 'पुम'
कुम' वाचन किया हो वह। २ न. 'पुम-कुम'
ज्योतिष 'महर्षयोरपुमपुमिपिपिपिपि' (पुपा
३)।
पुमय पक् [पुम] पुपया बलकार किरा।
पुमह (हि ४ ११० वर)। वक्-पुमव
पुममाप (हि ३३) शाय १ ६)। वक्
पुमिपिपि (महा)।
पुमपुन न [पुमपुन] बलकार प्रयत्न (कुमा)।
पुमपिपि पि [पुमपिपि] पुमाया हुआ (वक्
१२२)।
पुमिपि पि [पुमिपि] पुमा हुआ बल की
तख किरा हुआ (पुपा २४)।
पुमिपि पि [पुमिपि] हुमेलता किरनेवा, बलकार
हुमेलता (पुप १२३) या १ ;
महा)।
पुमा दु [पे] एक तख का ऊपर, जो पाव
केही की पिपका करने के लिए तख पर
किया जाता है, तख या बन्धी (पिप)।
पुमर ऐसी पुपुपु। वक् पुपुपु (या
१२)।
पुमक पक् [पे] हुमका हुमका बरना।
'हुमपिपि' (महा)।
पुमकार दु [पुमकार] पुमर यापि की
वाचन (किपल ६)।
पुपुपु पक् [पुपुपुपु] हुपुपुपु, 'हु'
हु' वाचन करना, वाचन केही का बोला।
पुपुपुपि (पि ३३)। वक् पुपुपुपुपु
(पुपा ३ ३)।

पुपुपुपि दु [पे] मस्त्रक, मेक मेक, मेक
(हि २, १ ६)।
पुपुपुपु } ऐसी पुपुपु। हुपुपु (महा)।
पुपुपु } वक् पुपुपुपुपु (पत्र)।
पुपु ऐसी पुपुम। पुमह (हि ४ ११०)।
पुपिपि की [पे] हकी की खाना कर-रन
(पिप)।
पुपुपुपु पक् [पुपुपुपुपु] 'पुम-पुम'
वाचन करना। वक् पुपुपुपुपुपुपु (पि
३३८)।
पुपिपि पि [पुपिपि] बलकार पुमा हुआ
(कुमा)।
पुपु की [पे] कीट-किरोय कीपिपि वक् की
एक धति (पत्र)।
पुपुपु ऐसी पुपुपु (कुमा)।
पुपुपु पक् [मक्] मक्का विनोदना।
पुपुह (हि ४ १२१)।
पुपुपिपि पि [पुपिपि] मक्क विनोदित
(कुमा)।
पुपिपि न [पुपुपि] पुपुपु पुपुपुपुपुपुपु
विरोय केवर (हि १ १२८)।
पुपिपिपि पि [पुपुपुपु] पुपुपुपुपु,
पुपुपुपु (कुमा)।
पुपिपिपि पि [पे] ज्योतिष ज्योतिषित (हि
१ ६)।
पुपिपि न [पे] पुपुपु पुपुपु (वर)।
पुपिपिपि न [पे] प्रसन्न निज के वक्-
र में स्नान के पक्के बाना बाठा मपुपि
का पिपल, जवन (हि २ ११)।
पुपुपु ऐसी पुपुपु। वक्-पुपुपुपु पुपुपिपि
(पिप २८०, २०३)।
पुपुपुपु न [पुपुपु] विनोदना (पिप २)।
पुपुपुपु [पुपु] वक्क लक्क, पकि विरोय
(शाय १ व पत्र १ २, ३६)। की पुपु
(पिपा १ ३)। पिपि दु [पिपि] वक्, कीप
वाचन (पुपु)।
पुपुपा दु [पुपुपा] वक्क-वक्क बन्धित-
विरोय वक्क-विरोय (गात्र १)।
पुपु की [पे] १ वक्, वक्। २ वक्क,
तपेर का वक्क-विरोय 'वक्क' का पुपुपु
कपिपि' (पुप २, २, ४२)।
पे ऐसी गृह-वक्क। वेर (वर)। वक्

बेन्ड (विने ११२०) । बन् वेन्ड (हे ४ २२६) । कन्ह- चेप्यत, चप्यसाय (गा २०१ म्मा स ११२) । छह चेऊण, चक्कण चक्कय, चेसुआण, चेसुआण चेसुय चेसुल (माट-माली ७१ वि २८४ हे ४ २१ वि ७७ प्रय) । हेक चेसु चेसुण (हे ४ २१ पन्म ११८ २२) । ह चेसकन (हे ४ २१ प्रय) ।

बेउर पुन [हे] बेउर, कउर, मिटान-विरोप 'हा म्पण निस्वेदेवि ह पयेउरमोयण' सम-कुण्ड (मुपा ११) ।

चैककय देवा च ।
चलमग वि [महीतमनस्] धल्लकले की चम्पलवना (पन्म १११ १६) ।

चप्य }
चप्यत } बेको चे ।
चप्यसाग }

चवर [हे] बेको चउर (हे २ १ न) ।
चोह } एक [पा] चीन, पाय करना ।
चोहय } चोह (हे ४ १) । चक. चोह
यंत (स २१) । हेह चोहिन (कुमा) ।

चोह बेको घुम्म । चोह (हे २, १) ।
चोह } चुंकी [चोट क] चीका मध
चोहग } हय (हे २, १११ पंच २२)
चोहय } ज्वा, ज्वा २ न) । २ पुं कानो-

लगा का एक दोय (पय ३) । रक्कजा पुं
[रक्क] चपयन चरिस (ज २८० टी) ।
जीव [मीन] मधवीन-नामक मधिवानुके
हयविरोप (पायन) । मुह न [मुक]
बैनेउर दाऊन-विरोप (मणु) ।

चोबिय पु [हे] निग कसस (हृ ३) ।
चोडी की [चोटी] १ चोडी । २ हउ-विरोप
'चोबिचोबिचकुनकनकाउरविरोप' (स २२६) ।

चोय न [चोय] चोई की नाक (छठ) ।
चोयस पु [चोयस] एक प्रकार का चाय
(पन्म १८, १७) ।

चोया की [चोया] १ नाक नासिका (पाय) ।
२ चोई की नाक । ३ सुपर का मुक-अवैठ
(स २ २४ मउठ) ।

चोर मक [चुर] पिठा में 'हुट-हुट' धामान
करना । चोरवि (गा ८) । चक चोरत
(स ४२४ जय १ ११ टी) ।

चोर वि [चोर] १ नासिग विगारित । २ पुं
कीच पल विरोप (हे २, ११२) ।
चोर वि [चोर] मयकर, मयलक विकट (मुय
१ ३ १ मुपा १४४; चुर २ २४३; प्रामु
१३६) । २ निर्वय निजुर (पाय) ।

चोरि पु [हे] लम्प-पयु की एक चावि (हे
२ १११) ।
चोख बेको घुम्म । चोख (हे ४ ११७) ।

चक चालत (कय गा १०१ कुमा) ।
चोख चक [चोख] १ चिखना, लणका । २
निमामा (विसे २ ४४ स ४ ३२) ।

चोख न [चो] काने से जाला हुआ चोई (पय
१३) ।
चोखन न [चोखन] बरंण राइ (विसे
२ ४४) ।

चोखना की [चोखना] गलर बीछ का पानी
की राइ से मोलकार होना (स ४७) ।
चोखन } न [चो] एक प्रकार का चाप
चोखनय } इय बहीबड़ा (पमा १३; म्या
२ ; मुपा ४६३) ।

चाळाविज वि [चाळिज] मिथिव किया हुआ
मिलामा हुआ (स ४ ३२) ।
चाळिज न [चो] १ मितासल । २ हउ-कप
बकाकार (हे २, ११२) ।

चोळिज वि [चोळिज] कुमामा हुआ (पय) ।
चोळिज वि [चोळिज] चपकत चीन 'चक-
रिचिचो जविणु सईन चोळियो' (मुक २
१३) ।

चोळिज वि [चोळिज] धाय को तरह चोला
हुवा (मुय २, १ १३) ।
चोळिज वि [चोळिज] रागा हुआ मजित
(वीय) ।

चोळिर वि [चोळिर] नूनलवाला चकमकर
फिलेवासा (गा १३८ स ३७० मउठ) ।

चोस चक [चोपय] १ चोपला करना ठंकी
धावान से बाहिर करना । २ चोबना ठंकी
धावान से धमपन करना चोर-चोर स बीस
कर पड़ना या छटना । चोसह (हे १ २६
प्रामा) । प्रयो चोसावेह (यय) ।

चोस पु [चोप] १ ठंकी धावान (स १ ७-
कुमा गा ३४) । २ धानीर-पछी पछीरो का
मझा पछीर टोली (हे १ २६) । ३ चोह
चीकी का बाड़ा (ज २ ४-यय ३६; पाय) । ४
लविणकुमार बेवीं की पसिल पिठा का हउ
(हा २ ३) । ५ चकास धावि स्वर विरोप
(बह १) । ६ म्पुनाइ (सा ६ १) । ७ न

जेच-मिलान विरोप (यय १२ १७) । सेण
पुं [सेन] साठई बाहुदेव का पूर्वजन्म का
बर्न-मुक एक बीन मुनि (पन्म २ १७६) ।

चोस न [चोप] लगातार ग्याह बिनों का
चपवाल (संबीच ३०) ।

चोसय न [चोपय] १ ठंकी धावान (मिह
१) । २ चोपसा बिरोप मिठाकर बाहिर
करना (पय) ।

चासगा की [चोपगा] ऊनर बेको (छाया
१ १६ या ३२४) ।

चासय न [चो] बरंण का चप बरंण रखने
का चपकय-विरोप (यंत) ।

चोसाइ की [चोपायकी] नठान-विरोप
(पय १७-यय २६) ।

चोसाबिवा बेको चोसाई (पय ३१) ।
चोसाई } की [चो] राए म्पुन में होने
चोसाडी } वाली चपन-विरोप (हे २, १११
पण १-यय ३३) ।

चोसाचन न [चोपय] चोसहा बीकी या कुपे
मिठा कर बाहिर करना (ज २११ टी) ।

चोसिभ वि [चोपिठ] बहिर किना हुआ
(यच) ।

३)।३ वि बगुल कालावार काल (६)

बह सक [बह] बहन यात्रि ना विपिन
कण्ड। बहने (बनी १३)।

बह पु [बह] हेमाचार्य के पिता का नाम
(पृष्ठ २)।

बह पु [बह] समस्तमम बहन बगैह
का शरीर में उपनेय (दे ६, ७७)।

बहार न [बहार] बीहड़ा बीहड़ा बीहड़ा
बीह (छाया ११; पण्ड ११; सुर ११९
(दे २ १२ कुमा)।

बहारि न पु [दे बहारिक] प्रमद, बीह
(पठ)।

बहारिया की [बहरीका] १ श्रव-विशेष
(पठ)। २ बेहो बहरी (न १ ७)।

बहरी की [बहरी] १ शीत-विशेष एक
प्रकार का मान 'निराश्रित्यबहरीरुद्राह्मिभ
आलुमुने' (सुर १ १४); 'पारमिबहरी
सीमा' (सुपा १३)। २ गलेबासी टोपी
मानेवासी का पुन 'भरत' मयलमहमे
नियमन निषिक्तसाम्पन्मरबहरीपु' 'कह
नीयबहरी सम्राट् बहरीए समाचल
परिमर्श' (स ४२)। ३ कप-विशेष
(पिप)। ४ हाथ की लाली की धारा
(प्राय १)।

बहसा की [दे] बाध-विशेष 'बहुवर्ष बह-
सर्ग, बहुवर्ष बहसावापन' (पठ)।

बहा की [दे] १ शरीर पर सुगन्धि पदार्थ
का लक्षणा विशेष (दे १६, पाठ, न
१ छाया १ १ पय)। २ लज-प्रसार,
हृत् की लाली (दे १ १६; पठ)।

बहार सक [सपा + सम] उत्तमम केना
लगाहना देना। बहपाय (पठ)।

बहिक वि [दे] १ मरिष्ठ विमुक्ति
'बहुवर्षबहिकला रिघा' (दे १ ४);
'अनुपहारा-बहिकर' (पद्य १ टी);
'समुद्र प्रलयप्रबहिकर' (बह १६)। २
पुन विपिन बहगवि सुपनि बहपु का
शरीर पर सक्त (दे २, ४७); 'बहिको'
(पठ); 'बहुवर्षबहिकरि' (पद्य
२० २६ टी) 'वेन्द्रादुर्गलसर्व सुरक्षित
वक्रबहिक' (हा ४१८ टी); 'अणुवेन्द्र
वक्रबहिक' (पुष्प ११)।

बहिय वि [बहिय] विपिन (वेद्य ८४२)।
बहमुप सक [अपेय] धरण करना
देना। बहमुप (दे ४ १६)।

बह्य सक [सह] द्वितीया कटाया।
बह्य (दे ४ १६४)।

बहियम वि [सह] द्वितीया कृपा (कुमा)।

बह सक [हम्] देवता प्रसन्नोक्त
करना। बह (दे १ ४ पठ)।

बह्या की [बह्या] १ धावण बहने। २
बलम मनन। ३ परिभाषा उचित (विदे
२ ४४)।

बहिय वि [हट] प्रसन्नोक्त देना हुमा
(पठ)।

बहुवर्ष बेहो बहुवर्ष (पा १६२)।

बहु सक [दे] बहना स्मरुह करना 'न
म प्रसन्नोक्त विल कोह बहने' (पठ)।

बहु पु न [दे] १ मूक कुमुता 'नीरति
अपिपिषा बहदुष्किना न नीरति' (पृष्ठ
७)। २ पु बहू पिषास्य। माळ की
[आळा] बहगला बहवार, छोटे बासकों
की पडला (बह १)।

बहु वि [बहिन] बानेबासा (कपु)।

बहु पु [दे] १ बह-बह कठ की
बहुवर्ष } कला प्रीतने का पाच-विशेष
बहुवर्ष (दे १ १ गा १२२ प)।

बह सक [आ + रह] बहना कपर
देवता धाम्नु होना। बह (दे ४ १६)।
बहु बहिक बहिक (सुपा ११४ कुमा)।

बह पु [दे] रिखा बोटी (दे १ १)।

बहिक पु न [दे] १ बह-बह, बहका (दे
४ ४ ४ वि)। २ बह-विशेष (पद्य
४ १६)।

बहिकरि वि [बहिकरि] 'बह' सक
कलेबासा (पठन यात्रि) (पठ)।

बहका बेहो बहय (पण्ड १)।

बहार पु [दे] १ समुद्र, मय बहना (पद्य
१ १३, छाया १ १—पठ ४६)। २
धाम्नु, भावीय 'भूमा बहारसलेख'
धाम्नु हण्ड (बह १)।

बहिकर पु [बह-बह] 'बह-बह' धावना
(विपा १ ६)।

बहबहबह सक [बहबहय] 'बह
बह' धावना करण। बहबहबह (विपा
१ ६)।

बहिक पु [बहट] धमि-विशेष विपनी के
विपनी की धावना (सुर २ ११)।

बहल न [आरोहण] बहना, कपर बैठना
(पा १४ प्राय १ १ उप ७२८ टी मोष
१ सट्टि १४२ बहना ४४)।

बहपह सक [दे] बहपयन कपयन।
बहपयना। बह बहपह (सुपा ७२)।

बहय पु की [बहक] बह-विशेष भार्या
पत्नी (दे १ १ ७)। बी. बा (दे १ १६)।

बहवर्ष की बेहो बहना (पण्ड १ १—
पठ ४६)।

बहावण न [आरोहण] बहना (पा १२२)।

बहाविय वि [आरोहण] बहना हुमा
कपर स्वापिठ. 'पण्डमउपनिखरे बहाविया
कणयमकला' (सुपि १ ६ १ सुर १३
१६ सट्टि)।

बहाविय वि [दे] प्रेक्षित देना हुमा
'बहवियिपि ठेग बहाविय सट्टि सपा
सी' (सुपा १६२)।

बहिय वि [आक] बहा हुमा धाम्नु
(सुपा १३७ १२३ १२६ दे ४ ४४२)।
बहिकर पु [दे] धाम्नु, धाम्नु (दे
१ ३)।

बहु पु [बहु] १ जिन बलन विव बास्य।
२ कला का एक धमन। ३ जवर, पै। ४
पुन जिन धाम्नु कृणाम (दे १ १७
प्राय)। आर वि [धर] कृणाम करन-
बाला कृणाम (पण्ड १ १)। आरज
वि [धर] कृणाम (पा ६ ६)।

बहुकारि वि [बहुकारि] कृणाम (पि
४१४)।

बहुकारिया की [दे] १ जवर। २
बाध-विषय (मोह ७)।

बहुयारि बेहो बहिकरि (पिठ ४८६)।

बहुव वि [बहु] १ बहल बलन (सि २
४२, पद्य ४२, ६६)। २ कप-बासा हिनदा
हुमा (सि १ २२)।

बहुवर्ष वि [दे बहुवर्ष] बह-बह किया
हुमा, 'बहुवर्षबहुवर्ष' (पुष्प ७१)।

(१ ७)। करण न [करण] संयम कर
मूल और उत्तर दुष्ट (सुम १ १ सम्म
११४)। करणानुयोग [करणानुयोग]
संयम के मूल और उत्तर दुष्टों की व्याख्या
(मिष्ट १३)। कुसीखपुं [कुसीख] चरित्र
की मतिन करनेवाला छात्र, शिक्षावादी
छात्र (पत्र ९)। जय [जय] किया की
मुख्य मानकेवाला मन्त्र (भाषा)। मोह पुं
[मोह] चरित्र का व्यापक कर्म-विशेष
(कर्म १)।

चरम वि [चरम] १ अन्तिम धर्म का
पर्यन्तवर्ती (अ २ ४ मा ३ १)। कर्म १
१५ ४ १९; १७)। २ अन्तर मर्म में
श्रुति वाक्यता। ३ कियवा विधान का
प्रतिपद हो वह (अ २ २)। कर्म पुं
[कर्म] मरुतमन्त्र (पत्र ४)। कर्मवि
पुं [कर्मवि] प्रतिपद सङ्ग स्वर्गद्वय
सङ्ग (ब्रह्म २)।

चरमव पुं [चरमव] हव से अन्तिम वच
के प्रत्ययवर्ती (सम १९)।

चरम वैको चरमा (वीच छात्रा १ १३)।
चरि पुं [चरि] १ पशुओं को चले की
वस्तु। २ चार, चरुओं की चले की बीच
वास (सुम १७)।

चरिया वैको चरिया = चरिया (पत्र)।

चरित न [चरित] १ चरित धारण। २
व्यवहार (भाषा प्रातः ४)। ३ स्वभाव
प्रति (सुमा)।

चरित न [चरित] बीच-नचा, बीचकी
वहाड़ी (कर्म १२)।

चरित न [चरित] संयम विधि से
मिम (अ २ ४ ४ ४ म)। कर्म पुं
[कर्म] संयमप्रमाण का प्रतिपादक कर्म
(संयम)। मोह पुं [मोह] कर्म-विशेष
संयम का व्यापक कर्म (कर्म)। मोहविषय
[मोहविषय] यही दुर्बोध धर्म (अ २
४)। चरित न [चरित] धर्मिक
वच, व्यापक-धर्म (पत्रि मन्त्र २)।
चार पुं [चार] संयम का अनुमान
। त्रिपु पुं [त्रिपु] चरित से धर्म

—मि (पत्र १)।

चरित पुं [चरित] संयमवाला छात्र,
श्रुति (अ २ ११ संयम १)।

चरित वैको चरम (सुम १ १)। धीरा मन्त्र;
अ २, ४)।

चरित पुं [चरित] चर-पुत्र का वारुण वृत्त
(सुमा २२८)।

चरित न [चरित] १ वैदित भाषण
(वीच प्रातः ८६)। २ बीचकी बीच-चरित
(सुमा २)। ३ चरित-धर्म (सुमा ११८)।
४ वैदित धारित (वह १ १)।

चरिया की [चरिया] १ पञ्चमिषिक, संयम-
विधी (वीच २१८)। २ किता और नगर
के बीच का मार्ग (सम ११७ पत्र १ १)।

चरिया की [चरिया] १ व्यापक अनुमान
‘वृत्तचरिया वृत्तचरि’ (पत्र १४
१३२)। २ वचन मति विहार (सुम १ १
४)। ३ मार्ग (व्यवसाय पत्र ११ मा, १८)।

चरिया वैको चरिया = चरिया ‘पञ्चमिषी
चरिया व वृत्तचरि’ (वीच ४२)।

चर पुं [चर] स्वामी-विशेष धाम-विशेष
(वीच ४४)।

चरगजव वैको चरगजव (वह)।

चरगजव न [चर] नाम व्याख्या (वि १ १)।

चर उ [चर] १ चलना धर्म कर्म।
२ धर्म का भाषा शिक्षा। चरव (यह
पत्र)। चर चरित व्यापक (मा ११९;
सुम १ ४ म)। चर चरित (वा
४८४)। प्रती चर चरित (वह २, १)।

चर वि [चर] १ चरित धर्म (अ २
४ मा १९)। २ पुं चरित का एक वृत्त
(पत्र ३६ १३)।

चरचर वि [चरचर] १ चरित धर्म,
‘अन्तर्गतविधिचरचर’ मन्त्रार्थ उप-
लब्धि (कर्म १)। २ पुं चरि में चरि चरि
हृदी बीच का चरित धर्म (मिष्ट ४)।

चरपु पुं [चरपु] धर्म चर, चर (वीच १
६, १३)। माधिया की [माधिया]
चर का प्रातःपुन-विशेष (पत्र १२, ४३ वीच)।

चरपु न [चरपु] चर चर चर चर
प्रमाण प्रमाण-विशेष (पत्र ४ २ १)।

चरपु न [चरपु] चरिता चरि, चरिता
चरिता (वि १ १३)।

चरपु की [चरपु] १ चरित पत्रि। २
कर्म विषय (मन्त्र १३, १)।

चरपुत्र पुं [चरपुत्र] कुतः, पुत्र
(वि १ ७)।

चरपुत्रा मोह पुं [चरपुत्रा] चर वैको
(वह)।

चरपुत्रा की [चरपुत्रा] चर वैको (वीच
१७९)।

चरपुत्रा } की [चरपुत्रा] चर वैको (वीच
चरपुत्रा } चरपुत्रा की चरपुत्रा का कर्म
वच (पत्र १२)।

चरपुत्रा की [चरपुत्रा] चरपुत्रा का एक
उपपद (वीच ११३ म)। २ चर उच का
वीच (वीच १ म ७ १)।

चरपुत्रा न [चर] चरपुत्रा, चरपुत्रा (पत्र
१ २, १)।

चरपुत्रा वि [चरपुत्रा] चर चरित
(पत्र ११९ १)।

चरपुत्रा वि [चरपुत्रा] चर चरित
में प्रत्यय चरित की चरपुत्रा का वच में ही
वह (भाषा २ ३, १)।

चरपुत्रा न [चरपुत्रा] १ चरपुत्रा चरपुत्रा,
चरपुत्रा (पत्र)। २ चर चर चरपुत्रा, चरपुत्रा
(चरपुत्रा)। ३ चरपुत्रा (पत्र ४)। ४ चरपुत्रा
(पत्र १)।

चरपुत्रा वि [चरपुत्रा] चरपुत्रा, चरपुत्रा,
चरपुत्रा चरपुत्रा ‘चरपुत्रा चरपुत्रा’ (अ १ १९;
सुमा ७९; २१७; अ ४१)।

चरपुत्रा वैको चरपुत्रा = चरपुत्रा (वि २ ११;
पत्र)।

चरपुत्रा न [चरपुत्रा] चरपुत्रा चरपुत्रा (वह)।
चरपुत्रा की [चरपुत्रा] चरपुत्रा चरपुत्रा की एक चरपुत्रा
की पत्रि (कर्म)।

चरपुत्रा की [चरपुत्रा] चरपुत्रा चरपुत्रा (वीच ४७)।

चरपुत्रा वैको चरपुत्रा (सुम २ ११; अ ३
४)।

चरपुत्रा चरपुत्रा चरपुत्रा, चरपुत्रा। चरपुत्रा
(वि ४ २)। चरपुत्रा चरपुत्रा (सुमा)। चरपुत्रा
चरपुत्रा (वि)।

चप घक [चपु] मरणा अन्तार में बाणा ।
चपह (हे ४ २१२) । संक-चपिऊण
(प्राक) । च-चपिचक (ठा ३ १) ।

चप पुं [चपच] मरुल दीत 'मनेला मणुण
चप' (उत १ १४) ।

चपचप पु [चपचप] 'चप-चप' घाजान
अति-विरोध (वीज २०६ सा) ।

चपण न [चपयन] १ मरुल अन्तार-प्राप्ति
(सुर २ १३३ छ म ३ ४) । २ पवन
गिर जाला (हृ १) ।

चपल नि [चपल] १ चपल अस्तिर (सुर
१२ १३३; प्राहु १ १) । २ बाहुल स्या
कुल (मीन) । ३ पुं रावण का एक भुम
(पद्य २१ ३६) ।

चपल पुं [च] मरु-विरोध बीजा (वा १०) ।
चपल्य पुं [च] बान्य विरोध पुनराती में
'कोक' (प १४४) ।

चपल्य की [चपल्य] विद्वत्, विवर्धी (बीज
१) ।

चपिच नि [चपुत] मूठ अन्तार-प्राप्त
(कुमा २ २६) ।

चपिच नि [चपिच] उक्त कहा हुआ (अभि) ।
चपिचा की [चपिच] ननस्पति विरोध
(पण्य १०—पम ३११) ।

चपिचा [च] की [चपेदा] सयाका, चपुड
चपेदा (हे १ १५ कुमा) ।

चपेदी की [च] १ मित कर-संयुत । २ संयुत,
समुद्र, जिम्मा (हे १, १) ।

चपण न [च] चपनीय लोकपचार (हे १
४) ।

चपेता देवी चपिचा (प्राक) ।

चपु उक्त [चप] चपामा (संति ३४) ।
चठव (ही) कैदी चप = चप । चपचि (प्राक
३१) ।

चपचिच नि [च] चपचित्त कृते से पीता
हुया 'चपचिकमा न मुनेण माधिया (सुपा
४२३) ।

चपचन न [चपेण] चपला (हे ७ ७२) ।

चपचाइ देवो चपचागि (उम) ।

चपचाउ पुं [चपचा] नास्तिक हृत्सलित
चपचागि का शिष्य लोकचपलक (प्रीती
७३) चप) ।

चपचागि नि [चपचाकि] १ चपलेबासा ।
२ कुर्म्यहारी (मन १) ।

चपिच नि [चपिच] चपला हुया (सुर
११ १२३) ।

चस उक्त [चपु] चपला घात्वा सेना ।
चक चसत् (ही) (रंग) । हेक चसितुं
(ही) (रंग) ।

चसग पुं [चपच] १ शक पीने का प्यासा
चसय (च ३३ पाय) । २ पाय-माल प्यासा
(सुर २ ११ पद्य १११ १) । ३ चपि-
विरोध (हे १ ४४२) ।

चपुलिया की [च] कुटकी कुटकीवर 'चोप-
कुणलचहिसामेपचकवेण' (काल) ।

चपुट घक [च] चिपकमा चिपट्या, चपनाट
पुनराती में 'चपुट' २ मूठ कुड़ घकपे
भीलाह चपुट्ट कहा चित्त' (धविन १६) ।
चपुट्ट (सुम २४६) ।

चपुट्ट नि [च] १ निमग्न भीन (हे ३ २
बला १०) 'मण-ममरो-मुण टीए गुहाविरो-
चिच महट्ट' (उ ७२० टी) ।

चपुट्ट नि [च] [च] चिपका हुया चप
चपुट्टिय [च] हुया (मनेवि १४१; उ ७२०
टी कुम २७) ।

चपुट्ट पुं [च] एक मनुष्य जाति (अभि) ।

चाइ नि [चपामि] १ व्याप करनेवाला
कोइनेबासा । २ बाणी बाल देनेवाला, छार
(सुर १ २१०; ४ ११०) । ३ नि-संघ,
निरीह, धर्मही (बाणा) ।
चाइय नि [चपामि] कोइनामा हुया (वर्गी
८) ।

चाइय नि [चाकि] जो धर्मही हुया हो
(पद्य ७ १२१; सुप १ १४) 'सम्भोषा
एहि चपामेपुण न चाइया सुखिणे' । वहाँ
से नेरका' (पद्य ११३, २४) ।

चाउअंगी की [चापेङ्गी] सुचार धंणवाली
की (प्राक २६) ।

चाउअङ्ग पुं [चामुण्ड] राखत-चंस का एक
रामा, एक चपु-मणि (पद्य ३ २६१) ।

चाउअङ्गल न [चामुण्ड] चार चपल चार
समय (मिसे ११७६) ।

चाउअङ्गल नि [चामुण्डेण] चार कोलनाला,
चपुल (बीज १) ।

चाउअङ्गल नि [चामुण्ड] चार धंणवाला,
चाउअङ्गल } चार चपलामी से मुक्त (छामा
१ १ मग १ ३३; गिर १) ।

चाउअङ्गल न [चामुण्ड] चार महापठ
साधु-धर्म—अहिंसा छप घरेये धीर धरि
घह ये चार साधु-धर्म (छामा १ ७ ठा ४
१) ।

चाउअङ्गल न [चामुण्ड] बामभीनी समा
चपल छामाभी धीर नाकेसर (मन ५
१ ६, महा) ।

चाउअङ्गल देवो चाउअङ्गल (उम ३) ।

चाउअङ्गल पुं [चामुण्ड] रोप विरोध नीचे-
नीचे हिन पर होनेवाला चपल, नीयमा
हुकार (बीज १) ।

चाउअङ्गल की [चामुण्ड] विवि-विरोध
चपुर्सी नीरस 'हीसुपुण्णचाउअङ्गल'
(उमा) ।

चाउअङ्गल की [चामुण्ड] ऊपर देवो (मग
बी १) ।

चाउअङ्गल (अप) नि ४ [चामुण्ड] नीरस,
१४ (मिग) ।

चाउअङ्गल देवो चाउअङ्गल (मग) सुपा ११३

चाउअङ्गल न [चामुण्ड] चपुचिच चार
प्रकार क (उत २ २६, सुप २ २६) ।

चाउअङ्गल पुं [चामुण्ड] १ भीमा
चाउअङ्गल } बड़े घापाइ से नेकर कातिक
उक्त के चार महीने (उप ५ १६) पंचा
१७) । २ चापाइ, कातिक धीर चपुण्ण
माच की मुक्त चपुर्सी 'चपिच चाउअङ्गल'
(महप १६) ।

चाउअङ्गल नि [चामुण्ड] १ चार
मात सम्भवी बने घापाइ से नेकर कातिक
उक्त के चार महीने से सम्भवी छानेवाला
(छामा १ ३; सुर १४ २१३) । २ न,
घापाइ कातिक धीर चपुण्ण माच की मुक्त
चपुर्सी विवि पर्व-विरोध (वा ४७) धनि
३०) ।

चाउअङ्गल की [चामुण्ड] चार माच,
भीमावा घापाइ से कातिक कातिक से
चपुण्ण धीर चपुण्ण से घापाइ उक्त के चार
महीने (पद्य ११३, ३०) ।

चारिण्या की [चारिण्य] पणित-विशेष (मोच २१ टी)।

चारमड पुं [चारमड] मूर पुण्य लङ्घिया किमि (पण्ड १ २ १ ३ इह १)।

चारमड पुं [चारमड] कुष्ठ (पिड २०६)।

चारय रेवो चारय (मुप २ ७ न १३)।

चारवाय पुं [चै] शीम श्रुत का पवन (हे १, २)।

चारवड रेवो चारमड (बम् १२ टी मणि)।

चारवडा की [चारमटी] शीमश्रुति किमि कृति (मुप २४१ ४२४ हे ४ १२९)।

चारमार न [चारमार] कैरवाणा जेनवाणा (मुप ११ १७)।

चारि की [चारि] चाप पठुमों के जाने की बीच बस प्रावि (मोच २१८)।

चारि पि [चारिपि] १ प्रवृत्ति करनेवाला। (पिडे २४३ टी ज्ञ बाबा)। २ करने वाला धर्मन शीम (मीन)।

चारिअ पि [चारिअ] १ निवकी जिलाया म्मा हो वर (हे २, २७)। २ विज्ञापित ज्ञाया हुमा (पण्ड १७—पण्ड ४६७)।

चारिअ पुं [चारिअ] १ चर पुण्य बामुठ (पण्ड १ २; पण्ड २९ ६३)। 'चोरमि चोरिअति व होइ जयो परचारमिअति' (पिडे २१७१)। २ वंशज ना बुझिया पुण्य श्रुतवा का मद्रुता (घ ४ २)।

चारिअ रेवो चारिअ = चारि (मोच ९ का ज्ञ १७७ टी)।

चारिअ रेवो चारिअ (मुक १२४)।

चारिअअ रेवो चर = चर।

चारिया की [चया] १ धारण इतर-इतर गमन, कीचका। २ भेटा (उप १६ ५१ ५२; ५४ ५३)।

चारी की [चारी] रेवो चारि = चारि (घ ४ ७ मीप २१८ टी)।

चारि पि [चारि] १ मुचर, शीम प्रवर (उप १०)। २ दुं जीने विनयेन ना प्रवम शिप्य (म ११२)। ३ म्म प्रवृत्ति विशेष उग्र-विशेष (मोच १; यम)।

चारिअय पुं [चारिअय] १ कैर-विशेष। २ पि ज्ञ भेट का निवासी (मीप-भेट)।

चौ (पण्ड १)।

चारुअय पुं [चारुअय] ऊपर रेवो (मीप)।

चौ [पिया] (मीप) खम्बा १ १)।

चारुअयि पुं न [चारुअयि] कैर-विशेष (पण्ड ६८ १४)।

चारुसेणा की [चारुसेनी] ऊपर-विशेष (पिड)।

चारल सक [चारल] १ ज्ञाना ज्ञिमाना रूपाणा। २ विनय करना। चारल (उप ४७४ महा)। कर्म, चारिअय (उप)।

चर चारल चारुसेमाय (मुप २२४ मीप १)। कर्म चारिअयमाग (शाया १ १)।

हेर चारिअय (उप)।

चारल न [चारल] १ ज्ञाना ज्ञिमाना (रेमा)। २ विचार (पिडे १ ७)।

चारल न [चारल] शीम प्रवम पुर्वपक्ष (पेण्ड २०१)।

चारलया की [चारलया] शीम पुर्वपक्ष व्यस्ये (मपु ४६ १)।

चारलया की [चारलया] शीम पुर्वपक्ष व्यस्ये (मपु ४६ १)।

चारलया की [चारलया] शीम पुर्वपक्ष व्यस्ये (मपु ४६ १)।

चारलया की [चारलया] शीम पुर्वपक्ष व्यस्ये (मपु ४६ १)।

चारलया की [चारलया] शीम पुर्वपक्ष व्यस्ये (मपु ४६ १)।

चारलया की [चारलया] शीम पुर्वपक्ष व्यस्ये (मपु ४६ १)।

चारलया की [चारलया] शीम पुर्वपक्ष व्यस्ये (मपु ४६ १)।

चारलया की [चारलया] शीम पुर्वपक्ष व्यस्ये (मपु ४६ १)।

चारलया की [चारलया] शीम पुर्वपक्ष व्यस्ये (मपु ४६ १)।

चारलया की [चारलया] शीम पुर्वपक्ष व्यस्ये (मपु ४६ १)।

चारलया की [चारलया] शीम पुर्वपक्ष व्यस्ये (मपु ४६ १)।

चारलया की [चारलया] शीम पुर्वपक्ष व्यस्ये (मपु ४६ १)।

चारलया की [चारलया] शीम पुर्वपक्ष व्यस्ये (मपु ४६ १)।

चायस न [चायस] ऊपर रेवो (घ २२६)।

चायाकी की [चायाकी] ग्राम विशेष इत नाम का एक गाँव (माचन)।

चायि पि [चायि] ज्ञाया हुमा (कर्मपि ४६ १४६)।

चायि पि [चायि] मरवाया हुमा (पण्ड २ १)।

चायेकी की [चायेकी] विद्या-विशेष जिवने हुवेरे लो उमाचा मारने पर बीमार प्रायमी का रोम क्का बाडा है (म ४)।

चायेमन रेवो चाय = चय।

चायोप्य न [चायोप्य] विमान-विशेष एक वैश-विमान (म १६)।

चास पुं [चास] पण्डि-विशेष लख-बातक परीक्षा लहोरेवा (पण्ड १ १ पण्ड १७)।

चाया १ १; मोच ५४ म्म उर १ १४)।

चाम पुं [चै] चाप हन-विशेष भूमि रेखा छोटी (हे १ १)।

चाह सक [चाहस] १ चाहना, बाहना। २ भेटना करना। ३ याचना। चाहस, चाहसि (मि पिड)।

चाहिणी की [चाहिनी] हेमाचार्य की माता का नाम (मुप २)।

चाहिअ पि [चाहिअ] १ चाहिअ यमि चाहिअ। २ चाहिअ। ३ चाहिअ (मि)।

चाहुआ म पुं [चाहुआ] १ एक प्रसिद्ध चरित्र-वंश बीहान वंश। २ पुं की बीहान वंश में उत्पन्न (मुप २२६)।

चि रेवो चिज। कर्म चिअर, चिअर, चिअरि (हे ४ २२१ म्म)।

चिज य [चय] निज्य को बतलानावा प्रत्यय 'चालुअ' से चिज कामिणी' (हे २ १५४ मुप ५ १९ ४६ ५१)।

चिज य [चय] निज्य को बतलानावा प्रत्यय 'चालुअ' से चिज कामिणी' (हे २ १५४ मुप ५ १९ ४६ ५१)।

चिज य [चय] निज्य को बतलानावा प्रत्यय 'चालुअ' से चिज कामिणी' (हे २ १५४ मुप ५ १९ ४६ ५१)।

चिज पि [चिज] १ इन्द्रा विद्या हुमा (म)। २ व्याज (मुप २४१)। ३ मुट, मांस (उप ८ ४ टी)।

चिअ न [चिअ] रेट प्रावि ना कैर (मपु १२४)।

चिअ रेवो चिअ = चिअ प्राड २१)।

चिअ रेवो चिअ = चिअ प्राड २१)।

नन्मा मण्णुयन्मा दीर्घं कालं एकं खणेमासा
(मगं पुप १ ३, १); 'एसाईं फासाईं
कुण्ठिं वानं निरेतरं एव चिरुत्थिं' (पुप
१ ३, २); 'ययं पुं [ययं] बहु कालं
दीर्घं कालं (माभा)।

चिरमक [चिरम] १ वित्तम करना। २
पालन करना। चिरमदि (ही) (पि ४६)।
चिरं य [चिरम्] दीर्घं कालं एकं क्षणं
समय एक (स्वल् २६; भी ४६)। ठण
वि [ठण] पुण्णा बहुत काल का (महा)।

चिराचय वि [चिरचित्त] चिरकाल से उप-
जित—इच्छा किया हुआ या बढ़ा हुआ (पंच
३, १६७)।

चिरही की [हे] बर्ल—माता पञ्चरत्नकी
'चिरुत्थिं वसवणं सोपा सोएहिं चोरवन्म-
हिण' (दे १ ११)।

चिरहिहिह [हे] रेको चिरहिहिह (पाम)।
चिरमाह सक [प्रति + पाहय] परिपालन
करना। चिरमाह (प्रक ७३)।

चिरया की [वे] कुटी-कोन्दो (दे १ ११)।
चिरम्म य [चिरम्म] बहुत काल तक (उत्तर
१७६; हुमा)।

चिराय रेको चिर = चिरम्। चिरयह (उ
१२६)। चिरयसि (मे १२); मदि चिरयसं
(गा २)। बहु चिरयमाण (भा—
मासी २७)।

चिरयय वि [चिरयिक] पुण्णा प्राचीन
(साया १ १ दीप)।

चिरा य वि [चिरादीह] पुण्णा प्राचीन
(चिरा ११)।

चिराय य [चिराय] चिर काल से लम्बे
समय से (पुप १६७)।

चिरायय (मर) वि [चिरान्न] पुण्णन
पुण्णा, प्राचीन (मदि)।

चिरायय वि [चिरान्न] ऊपर रेको (हृ १)।

चिराय यक [चिरम्] १ वित्तम करना।
२ पालन करना। ३ सक. किलम करना
एक रचना चिरयह (मदि)। चिरयह
(काल) 'मा से चिरयहे' (पञ्च ३ १२६)।

चिरायि वि [चिरायिह] १ किले चिरय
रिया हो वह। २ चिरायिह होना सया।
३ न वित्तम देवो 'मदिमो मययय वि
मज चिरायिं यमि' (वज १ ३, १ १)।

चिरिचिरा की [वे] यत्तया, वृद्धि (दे १
११३)।

चिरिका की [वे] १ पानी मने का बर्ण
मात्रम मरक। २ घसर वृद्धि। ३ प्रवा-
काल सुख (दे ३ २१)।

चिरिचिरा [वे] रेको चिरिचिर (दे ३
१३)।

चिरिही रेको चिरही (पा १११ य)।

चिरिहिहिह न [वे] यवि वही (दे ३ ४)।

चिरिहिही की [वे] कुञ्ज कुण्ठा नास
रती (दे ३ १२)।

चिरायय पुं [चिराय] १ वगार्थ देव-निरोप।
२ चिराय देव में खड़ेरानी स्नेह-जाति

लिप्ता पुनिह (दे १ १७३, २२४ पण्ड १ १;
दीप हुमा)। ३ वन चारवाह (भ्याराटी)
का एक वास—जीवर (छाया १ १८)।

चिरायया की [चिरायिका] चिराय देव की
खड़ेरानी की चिरायिन (छाया १ १)।

चिराय की [चिरायी] ऊपर रेको (हृ)।
पुत्र पुं [पुत्र] एक बाली-पुत्र और भीन
महर्षि (पमि छाया १ १८)।

चिराय रेको चिराय (प्रक १२)।

चिरिचिरिआ की [वे] बाप वृद्धि (पञ्च)।

चिरिचिरिचि वि [वे] भीमा या भीमा हुया
माहित भीमा (उं १८)।

चिरिचिह [वि [वे] बाईं भीमा (पण्ड
चिरिचिह १ १—पञ्च ४३ दे ३
चिरिचिह १ २)।

चिरिचिह [वे] रेको चिरिचिह 'अद्ययसंयमि
य चिरिचिहो लहमहायमो' (दीप ११३)।

चिरिचिह की [वे] वरणिमा, पण्डा
चिरिचिहिया } शालाग्राम-पट (दीप मा)
चिरिचिहिया } गृप २, २ अन्त कष्ट
चिरिचिहिया } दीप ७७५ न १)।

चिरिचिह न [वे] धनुषि भीमा यत्त-युव
'अद्ययि चिरिचिहो मयिचिहो मयिचिहो मयिचिहो'
(का १ ११ टी)।

चिरु पुं [वे] १ नास बहा महरा (दे ३
१)। २ बेला शिप्य (मायन)।

चिरु पुं [चिरु] १ वृत्त-निरोप (पञ्च)। २
य पुण्ण निरोप।

'युव कुण्ठिं रेका कंथणकुमुमेणु चिरुचिरायं।
अह पुण्ण चिरुचिरायं, नरेण पुण्णा चिरुचिरायं।'
(पञ्च १६ १६)।

चिरु न [वे] युव पुण्ण धाम (प्रक २८)।

चिरुय न [वे] देवोयमान चमकटा 'मह
खोहणयणायहिं केहिं केहिं चिरुयय-
पत्तसेहामयहिं चिरुयहिं' (मजि २८; दीप)।

चिरुय [वे] रेको चिरुयि (पण्ड १ ४—
पञ्च ७१ टी)।

चिरुय [वे] रेको चिरुय (दे) (माभा २,
३ ३)।

चिरुया की [चिरुया] एक सती की राजा
भौतिक की पत्नी (पमि)।

चिरुय न [वे] वनकु, सज्ज वीह (पण्ड
१ १ टी—पञ्च २३)।

चिरुय पुं [चिरुय] १ वगार्थ देव निरोप।
२ वस देव का निवासी (हृ)।

चिरुय पुं की [वे] १ वायव पण्ण-विरोप
भीमा (पण्ड १ १—पञ्च ७ छाया १ १—
पञ्च ४३)। की 'चिरुया (पण्ड ११)। न
कालोमासा वसमय चोय लमाय मावि
(छाया १ १—पञ्च १६)। ३ देवोयमान,
चमकटा (छाया १ १६—पञ्च २११)।

चिरु की [वे] भीन पति-निरोप लुकिमा
(दे ३ ६ न म पाप)।

चिरुयि वि [वे] १ भीन वासक (छाया १
१)। २ देवोयमान (छाया १ १; दीप
(कण)।

चिरुयि पुं [वे] वस्तक, मन्दर, कुञ्ज वज्र
निरोप (दे ३ ११)।

चिरुय न [वे] पुण्ण एक प्रकार की मोटी
लकड़ी जिससे वाद्ययन्त्र यात्रि ध्वज बूँट बने
हैं (दे ३ ११)।

चिरुय पुं [वे] वन-मार्ग, पट्टि की लकड़ी,
गुजराती में 'वीर्यो' (पुण्णा २८)।

चिरुयि वि [चिरुयि] चिरुय देव या
चिरुयि } भीमा हुमा (प्रक) 'चिरुयिमा'
(पि २४५ पञ्च २७ १३१ पण्ड)।

चिरुया की [चिरुया] वन-मार्ग-निरोप
(दे ३, ७१)।

चिरुय रेको चिरुय (पुण्ड ११ १८१)।

विष्णु पुं [विष्णु] वैश्व ब्रह्म (यस्या सुता २५१)।

वी } वीर्यो वेदय (हे १ १२१)। वीर्य
वीर्य } २७१ १२)।

वीर्य न [विष्णु] दुर्ग को वृद्धि के लिए
कुली हुई ब्रह्मविद्या का वेद 'वीर्य वेदुक्त न
परिष्कार' (गुर १ ४)।

वीर्य देवी वेदय (गुर १, ७२)।

वीर्य नि [वे] ब्रह्मा काच नी परिवर्तना
(हिरि २८)।

वीर्य नि [वीर] १ वीर्य, लक्ष्मी 'वीर्यनिवि-
द्वयमन्मदा' (छाया १ ५—यम ११३)।

१ पुं स्त्रीश्च देव-विशेष वीर्य देव (पञ्च
१ १)। २ वीर्य देव का विष्णु

वीर्य या वीर्य (पञ्च १ १)। ४ ब्रह्म-विशेष,
वीर्य हा वेद (छाया)। 'वीर्यपुर' छवि

वर्णन दिव्य (पञ्च)। पञ्च पुं [पञ्च]
वीर्य देव में होनेवाला ब्रह्म-विशेष (पञ्च १

४)। विष्णु न [विष्णु] विष्णु-विशेष (छाया,
पञ्च ४)।

वीर्यसु पुं [वीर्या, व] १ वीर्य-विशेष
वीर्यसु १ वीर्य के लक्षणों से ब्रह्म बनता है

(इह १)। २ वीर्य देव का ब्रह्म-विशेष
वीर्यसु विष्णु-विशेष (गुरा १४)। लक्ष्मी

४ २)।

वीर्य की देवी वीर्य = विष्णु 'वीर्य
पत्नि' लक्ष्मी वीर्यिणी बनती (गुर १,

८)।

वीर्य न [वीर] ब्रह्म-विशेष का देव का दुर्गा
(वीर्य ११) का १२ गुण (१११)। वीर्यसु

गणपति पुं [गणपति] वीर्य लक्ष्मी का
एक उपर्युक्त वीर्यसु का ब्रह्म-विशेष

(विष्णु ४)।

वीर्य पुं [वीर्य] वीर्य देवी (ब्रह्म १)।

वीर्य पुं [वीर्य] १ लक्ष्मी न वीर्य देव
वीर्य की परिवर्तना विष्णु। २ वीर्य-देव

का देव परिवर्तना एक लक्ष्मी-वादि (छाया
१ १२—यम ११३)।

वीर्य की [वीर्य] वीर्य देवी (गुर
१ ८५)।

वीर्य की [वीर्य] १ ब्रह्म-विशेष ब्रह्म का
दुर्गा 'वीर्य देव परिवर्तना वीर्य

कोटि' (गुरा १५४)। २ वीर्य वीर्य-विशेष
वीर्य (गुरा ११ २५)।

वीर्य की [वीर्य] वीर्य वीर्य वीर्य-विशेष
(हे १ १४)।

वीर्य न [वीर्य] ब्रह्म, वीर्यविशेष या विष्णु
के वीर्य का कर्मा (गुर १ १८५)। वीर्य

२, २)।

वीर्य की [वीर्य] वीर्य, विष्णु, वीर्य,
वीर्य की वीर्य या वीर्य (गुर १

१८५)।

वीर्य की [वीर्य] वीर्य का वीर्य-विशेष (हे १,
१४ ४२)।

वृक्ष [वृक्ष] १ वृक्ष ब्रह्म-विशेष में वीर्य।
२ वीर्य। वीर्य ब्रह्म-विशेष (कर्म)। वृक्ष

वृक्ष वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)। वृक्ष

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

वृक्ष [वृक्ष] वृक्ष वृक्ष (वृक्ष १)।

प्रतीट वेदवा की प्रतिमा 'कलाखे मंगलं
वेदं पञ्चमहाभाषो' (वीणा मंग) । इ अर्ह-
प्रतिमा, जिन-वेद की प्रति (अ १ १ उमा
पण्ड २, १ धार २ पवि) 'विश्वेण
उपायुर्न मीश्वरवर दीपे समोत्पन्नं कण्ड,
तहि वेदमार्गं वेद' (अ २ १), 'विश्व
विदे मंगलवेदमिति सयममुलो विदि' (पत्र
७१) । १ उपाय, वेदोपा 'मिहिमाए वार
बन्धे सोमपण्डप मणोरम' (उत्त ११) । ७
समा-बुद्ध समा-मुद्र के पास का बुद्ध । = बहुरूप-
वाला बुद्ध । १ वेदों का चिह्न-मुद्र बुद्ध । १
बहु बुद्ध बहो विमल को केवल ज्ञान उत्पन्न
होवा है (अ = सम ११ १२१) । १ बुद्ध
वेद 'ब्रह्मण हीरमण्यमि वेदमिमं मणोरम'
(उत्त १ १) । १२ यज्ञ स्वात । १३
मनुष्यों का विमान-स्वात (पत्र १२
१ ७) । स्वमं पुं 'स्वस्वम' लुप बुद्ध,
(मम ११) यम नुत्र १८) । 'धर न
[गृह] विमन्तिर्न ह्यमन्ति' (पत्र २
१२ १४ २१) । उमा की 'मात्रा'
जिन-प्रतिमा-सम्बन्धी महोत्सव विशेष (मं
१) । ब्रूम पुं 'ब्रूम' जिन-मन्दिर क
समीप का लुप (अ ४ २) ७ १) । वृत्त
न 'वृत्त' वैद-ब्रूम जिन-मन्दिर-संघी
स्थावर वा बर्तन विस्मय (बह ४ पत्रमा
अ ४ ७ ४ ४) । परिव्राटी की 'परि
प्राटी' ब्रम स जिन मन्दिरों की यात्रा (मं
२) । मह पुं 'मह' वैद-सम्बन्धी कण्ड
(मात्रा २ १ २) । उत्पन्न पुं 'वृद्ध'
१ बहुरूपवाला बुद्ध जिनके लीके नीचरा
बन्धा हो ऐसा बुद्ध । २ जिन-वेद का जिनक
लीके कण्ड बाल उत्पन्न होना है बहु बुद्ध ।
१ बहुरूपों का चिह्न मुद्र बुद्ध । ४ वेद-समा
के नाम का बुद्ध (सम ११ १२१ अ ८) ।
बन्धु न 'बन्धु' जिन-प्रतिमा की
मन बचन धीर काया मे सुनि (पत्र १
४ प १ १) । बंधुणा की 'बन्धुना'
बही पुरोक मय (सं १) । धाम पु
'वास' जिन-मन्दिर में बसियों का निवास
(मं) । हृह रेडो घर (वीड १ पत्र
१३, १२) गुग ११) ४ १३) उत्तर १७) ।
पश्य वि 'चित्त' इत विहित 'उत्तर २

धारादि धारा' बहामई मरति' (मात्रा २
१ २ २) 'वेदार्थ कलामर्तु' (हृह २ वस) ।
वेद वेदो चिप (मम) ।
वेदा वेदो च = वन्द्य ।
चट्ट मर [वेद] प्रयत्न करना धारण
करना । बह चट्टमाण (मं) ।
वेदु रेडो विदु = स्वा (रे १ १०४) ।
वेदुण न [म्याम] विहित अवस्थान (मं ४)
वेदुण रेडो विदुण = वेदुण (उत्तर ११) ।
वेदो की 'वेदो' प्रयत्न धारण (अ १
१ गुर २ १ १) ।
वेदिय रेडो चिदिय = वेदित (वीन मम) ।
वेद पुं 'वे' बाल कुमा, मिथु (रे ३ १
उमा १ २ हृह १) ।
वेद } 'वे' चिट क १ वाच नीचर
वेदग } (वीन कय) । २ गुण-विशेष
वेदय } वैशाखिना नवी क एक स्वनाम
प्रसिद्ध राजा (माह १ मय ७ १, महा) ।
१ वेदा वेदवा, वेद की एक बन्धव वाति
(गुग २१७) ।
वेदिमा की 'वेदिमा' काली नीचरणी
(मम १, १३ कय) ।
वेदी की 'वेदी' उत्तर रेडो (मम) ।
वेदी की 'वे' कुमाटी बाला नवी (मम) ।
वेद न [वेद] वैद-विशेष (मं) ।
वेद पुं 'वेद' १ मास-विशेष, वैद मास
(सम २१, १ १ २२) । २ वैद बुद्धियों
का एक पण्ड (हृह १) ।
वेदी की 'वेदी' १ वैद मास की पुरिया ।
२ वैद मास की प्रयास (गुग १ १) ।
वेदि रेडो बह (मम) ।
वेदीम पुं 'वेदीम' वेदि वेद का राजा
(मम) ।
वेदम वि 'वेदिक' बाता, वैशाखा (उत्तर
१३७) ।
वेदय पुं 'वेदय' १ बाला जीव प्राणी
(अ ४ ४) । २ वि वेदमात्रमा ज्ञानवाचक
'बुद्धि कयल न विमर्क' (विदे १८२३) ।
वेदया की 'वेदय' ज्ञान वेद वैदय बुद्ध
कयल (मात्र १ गुर ४ २४१) ।
वेदयण } न 'वेदय' उत्तर रेडो (विदे
वेदय } ४७३) गुग २ १ गुर १४ म) ।
वेदय वेदवा यत्र = वेदयः

'वैशाखेण वाचिरे' कट्टुवाचिमवेयरे ।
वे वंत्तयय वेदु, म्माहोह पट्टुम्व' ।
(सम ११) ।
वेदा रेडो वेदया 'पत्तयममावाधो न रेणु-
वैमं न समुपय वेदा' (विदे १११२) ।
वेद } न 'वेद' बह, कयल (मात्रा
वेदय } मम) । कण्ड न 'कण्ड'
मम-विशेष एक ठाह का पन्ना (अ २४१)
गोड न 'गोड' बह का गेट, कट्टु
(गुग १ ४ २) । हूर न 'गृह' वन्द्य,
प-मण्डप रावटी (अ २३७) ।
वेदय न [वे] वृत्त-मात्र 'वेदिगुणाय वृत्त'
वृत्ति न विदवेदय विदिय' (ममा ११) ।
वेदिय रेडो वेद: 'पदार्थकलवेदियवृत्तम
ममरिया' (पत्रम ११, २३ धारा) ।
वेदुण न [वे] गुणम गुण (मं १ ११) ।
वेद } 'वे' रेडो चिट (१) (पत्रम १७
वेदय } १३) ११ स ४१३) वनि १
उत्तर २१८) ।
वेदग } 'वे' रेडो चिटमा (पण्ड १
वेदय } ४-पत्र १८) उत्तर ११) ।
वेद य [एव वेद] १ प्रयास गुणक
ममय निबन्धनरक ठाह 'वे' गुणय परस
बुद्धि पत्रम त वेद को मण्ड-पण्ड' (प्राय २१)
महा) 'ममहावेद वेदवदो मं' (विन
१३११३) । २ पाश्चात्यक ममय (पत्रम =
मम) ।
वेद ३ [हृप] माहक-वीचक ममय, 'वेदम
ममहावेदय उत्तरमय' वर वेद' (पत्रम १
४ पत्र ११ १) ।
वे रेडो वेद (१ १ १०१) कुमा सम १ ;
वीन मम, छाया १ १ १४ विना १ १ ;
गुर ११ ४ ४) । ज्ञान की 'वैशाखि
शान' वैशाख मीर वाद, ४४ (मं २१ ४)
बद्धि की 'पति' नीचर १४ (कय) ।
वचरि की 'समति' उत्तर धीर वाद, ७४
(सम ८४) ।
पोम वर [वाहय] १ प्रेरणा करना ।
२ ननुय । गोदर (उत्तर ११) । कयल
पाश्चात्य वाहयमाय (गुर २ १ ; छाया
१ १६) । वंह वाहयमाय (महा) ।
पोमम वि [वाहय] प्रेरक, प्रयत्न-वर्ता, गुर
पटी (मम) ।

ब म [एव] यथावाच्य-सूचक सम्भव (हे २
१८४ कुमा, वर) ।

विद्य वेको विद्य = एव (हे २ १८४
कुमा) ।

वेक } वेको वेक = एव (हे २२ जी १२) ।
वेक }

॥ इम विरिपाहसहस्रहृण्यमिम यथावाच्यसंक्रमणो
चतुस्समी तरेयो समयो ।

त्र

ख पुं [ख] १ छात्र-स्वामीय व्याख्यान बहो
विरोध (प्राप्त प्राप्त) । २ व्याख्यान, बहना
'ख ति य वेसाख बहने होइ' (बावन) ।

ख नि ब [पु] संख्या-विरोध ख 'ख
अभिप्रायी निष्ठासहस्रमि' (बा १ जी १२
मग १ ८) । उत्तरसय नि [उत्तर
रावचम] एक ही बीर बहना (पत्रम १ १
४२) । इमम न [कर्म] क प्रकर के
कर्म जो बहना के कर्म हैं, यथा—
यत्रम, यानम धर्म्यम धर्म्यमन राग बीर
प्रतिष्ठा (मिबू ११) । काय न [काय]
क प्रकर के बीर धर्म्य, धर्म्य, धर्म्य, धर्म्य
बहु बहसति बीर मय बीर (बा ७
पंचा १२) । गुण गुण नि [गुण]
बहुना (डा १ नि २०) । कारण पुं
[कारण] प्रकर, मीप (कुमा) । अवि
निक्रय पुं [जीवननिक्रय] वेको काय
(बाका) । पत्रम, पत्रम [पत्रम]
संख्या-विरोध प्रकर ११ (मग १८ पत्रि
१) । बीस बीन [त्रिंश] संख्या
विरोध बहो ११ (कम) । बीसत्रम
नि [त्रिंशचम] धर्म्यधर्म (पत्रम ११
४१) पत्रम ११) । इस नि ब [पत्रम]
पत्रम धर्म्य । 'इसस्य ब [पत्रम]
पत्रम प्रकर का (मग ४) । दिसि न
[पत्र] क विद्यार्थ—युर्व पत्रि
पत्र, पत्रि अर्ध बीर धर्म्यधर्म (मग) ।
डा म [पा] क प्रकर का (कम १
१) । नवइ नवइ अत्रइ वेको
'पत्रम' (कम १ ४ १२ मग ४) ।

अत्रय नि [अत्रय] बहनेवा ११ जी
(पत्रम ११ १) । पत्रम पत्रम बीन
[पत्रम] अत्रय ११ (पत्रम, मग
७१) । पत्रम नि [पत्रम] अत्रयवा
(पत्रम ११ ४८) । अत्रय पुं [माग]
बहना विरु (नि २०) । अत्रय बी
[माग] माग, अत्रय माग बीरलेनी
पत्रमिका बीर धर्म्य य वे क माग
(रमा) । मागिय, अत्रयिय नि [पात्र-
मागिक] क माग में होवना क माग
अत्रय (मग २१ मग) । बरिस नि
[मागिक] क नर्व की अत्रयता (मग
२१) । बीस वेको बीस (मग) ।
निब नि [निब] क प्रकर का (कम
नव १) । बीस बीन [बिरादि]
अत्रय, बीर बीर (मग ४२) । अत्र-
सत्रम नि [त्रिंशविद्यम] १ अत्रयवा
२१ जी (पत्रम २१, १ १) । २ अत्रयवा
बाह्य धर्म का अत्रयता (गामा १ १) ।
'मटि बी [पटि] संख्या-विरोध साठ
बीर क' (कम २ १८) । अत्रयवा बी
[सत्रयि] विद्यम (कम २, १०) ।
डा वेको डा (कम १ २, ८) ।
अत्र वेको अत्रि = अत्रि (बा १२) ।
अत्र नि [अत्रयि] मागुल मागुल
विरोध (हे २ १० पत्र) ।
अत्र नि [नि] विरम नव, होविम
अत्र (नि १ १ २२) या ७१ ; यथा
पात्र कुमा) ।
अत्र नि [नि] अत्र, अत्र, पत्रम (१ १, २१) ।

अत्रय पुं [अत्रय] १ कम, अत्रय माग
(मग १ पत्र) । २ अत्रय अत्रय (हे २
११२ पत्र) । ३ अत्रय मागुल (मग
१ डा १ १) ।
अत्रम ॥ [अत्रम] अत्रयवालीय धर्म
बार बाकी कर्म (मग १४१) ।
अत्रमय नि [अत्रमय] १ अत्रय संयुक्त
अत्र से अत्रय । २ अत्रय, अत्रय (डा
४ १ १ ७) ।
अत्रय वेको अत्रय (पत्रम विर ११ ८) ।
अत्रय बी [अ] अत्रय, अत्रय-विरोध
अत्रय अत्रय (१ १ २४) ।
अत्र पुं [अ] अत्रय वन का अत्रय वन
अत्रय । २ नि अत्रय, अत्रय अत्रयता (१
१ ११) ।
अत्र सक [अत्र] अत्रयता । अत्रय (गुवा
२१८) ।
अत्रय न [अत्रय] अत्रय अत्रयता (गुवा
१११ कुमा) ।
अत्रा बी [अ] वेको अत्र (पात्र) ।
अत्रय नि [अत्रय] अत्रय अत्रय (गुवा ११८) ।
अत्र वेको अत्रय = अत्रय (पात्र १२;
पत्रि) ।
अत्रय नि [अ] अत्रय अत्रय (पत्र) ।
अत्रय नि [अत्रय] अत्रय अत्रय, अत्रय
(पात्र पत्रि) ।
अत्र सक [अत्रय] १ अत्रय अत्रयता । २
अत्रय अत्रय अत्रय अत्रय । १ अत्रय अत्रय
अत्रय

चक्षु-विज्ञा-शास्त्र (भा २) ।

सूत्र देवी सूत्र = पृ. (नम १, ६) ।

सूत्र एक [सूत्र] ठगना कथना ।
सूत्रिग्रेय्या (स २११) । सूत्र-सूत्रि
सूत्रिऊय (महा) । सूत्रिऊय (भा १४) ।

सूत्र न [सूत्र] १ कथ्य माता (महा) । २
यान बहना (नम प्रमू ११४) । ३ यत्र
विद्यत वचन-विद्यत एक एव का वचन-
सूत्र (मृच १ १२) । ४ ययय न [ययन]
यय वचन-विद्यत (मृच १ १२) ।

सूत्रसि नि [पहल] पद-नीय क कोशबला
(अ) ।

सूत्रसि नि [पहलिक] अः नीउबला
(मृच २ १ १३) ।

सूत्रन न [सूत्रन] प्रोपण केंडना (भाषाणि
१११) ।

सूत्रन न [सूत्रन] ठगई, कथना (मृच १
१११) ।

सूत्रना की [सूत्रना] १ ठगई, कथना
(नीय ७८३, ज ७७९) । २ सूत्र माया
गान (मिरे २३४४) ।

सूत्रय नि [पहल] अः सर्वशाला (मिरे
१ १) ।

सूत्रमीय कीन [पहल] कथना-विद्यत
पानी धीर अः १ (महा) ।

सूत्रमीय की ऊपर देवी (नम ६२) ।

सूत्रि नि [सूत्रि] १ बलिष्ठ विद्यवादि
अना हुमा (मिरे २३४४) । २ शूत्रार-नाम्य
३ नीर ना रसय, उत्तर-बंका (महा) ।

सूत्रि नि [दे] विद्यय चलाय कुर (दे
१ २४४ वाय) ।

सूत्रि न [सूत्रिक] नाय-नीय (भा ४) ।
सूत्रि नि [मार्गि] स्वयन-शाल (नीय
७८६) ।

सूत्रिया एनी सूत्रिया 'नीयार' सूत्रियान-
नीय (महा) ।

सूत्रिय १ १ [पहल] देविष्ठ नम नम
पहल । २ नम नम नम (नम ८०)
सूत्रिय (मिरे ११ १) 'नम' सूत्रिय-नी-
नम (नम) सूत्रिय (मिरे २३ २४२३) ।

सूत्री की [दे] रसा, वचन धान (दे ३
२४) की ११ ना ११२ अ ४ १ रसा
१ ११) ।

सूत्रिय देवी सूत्रिय (पि १४८) ।

सूत्र देवी सूत्रि । सूत्रि (मृच २७१) ।

सूत्रि की [दे] नम चाम चमई (दे १
२३) ।

सूत्रि की [सूत्रि] १ कानि तेन (कुमा
वाय) । २ धन, धीर (पहल १ १) ।

नम, चमई (वाय नीय १) । ४ धनय
(पहल) । ५ धीर धीरि (अ ४ १) । ६
यन-धन-नीय (मृच) । ७ धन पुं
[नम] धन ना विद्येय धनय कथन
(पहल) । ८ धनय न [नम] धनय
धनय (पहल १ १) । ९ धन न [नम]
चमई का धनयान कथन नम (कथ २) ।

सूत्रि नि [सूत्र] कृमा हुमा (भा २७) ।
अपेयय न [सूत्रि] धीरिष्ठ धीरिष्ठ
(नम २, २४) ।

सूत्रि नि [सूत्रि] कृमा हुमा (भा २७) ।
अपेयय न [सूत्रि] धीरिष्ठ धीरिष्ठ
(नम २, २४) ।

सूत्रि नि [सूत्रि] कृमा हुमा (भा २७) ।
अपेयय न [सूत्रि] धीरिष्ठ धीरिष्ठ
(नम २, २४) ।

सूत्रि नि [सूत्रि] कृमा हुमा (भा २७) ।
अपेयय न [सूत्रि] धीरिष्ठ धीरिष्ठ
(नम २, २४) ।

सूत्रि नि [सूत्रि] कृमा हुमा (भा २७) ।
अपेयय न [सूत्रि] धीरिष्ठ धीरिष्ठ
(नम २, २४) ।

सूत्रि नि [सूत्रि] कृमा हुमा (भा २७) ।
अपेयय न [सूत्रि] धीरिष्ठ धीरिष्ठ
(नम २, २४) ।

सूत्रि नि [सूत्रि] कृमा हुमा (भा २७) ।
अपेयय न [सूत्रि] धीरिष्ठ धीरिष्ठ
(नम २, २४) ।

सूत्रि नि [सूत्रि] कृमा हुमा (भा २७) ।
अपेयय न [सूत्रि] धीरिष्ठ धीरिष्ठ
(नम २, २४) ।

सूत्रि नि [सूत्रि] कृमा हुमा (भा २७) ।
अपेयय न [सूत्रि] धीरिष्ठ धीरिष्ठ
(नम २, २४) ।

सूत्रि नि [सूत्रि] कृमा हुमा (भा २७) ।
अपेयय न [सूत्रि] धीरिष्ठ धीरिष्ठ
(नम २, २४) ।

सूत्रि नि [सूत्रि] कृमा हुमा (भा २७) ।
अपेयय न [सूत्रि] धीरिष्ठ धीरिष्ठ
(नम २, २४) ।

सूत्रि नि [सूत्रि] कृमा हुमा (भा २७) ।
अपेयय न [सूत्रि] धीरिष्ठ धीरिष्ठ
(नम २, २४) ।

सूत्रि नि [सूत्रि] कृमा हुमा (भा २७) ।
अपेयय न [सूत्रि] धीरिष्ठ धीरिष्ठ
(नम २, २४) ।

सर्वशाला की सूत्रियता है सर्वशाला
(मम ११ पण ११) ।

सूत्रियो नि [सूत्रियो] १ धन-धन,
धनयाना (कुमादि) २ पुं धनयान धन,
धनयान धन (अ ४ १) ।

सूत्रि नि [सूत्रि] १ धन-धन (अ ४,
१) । २ पुं धन धनयान । धी, धी (पि
२३१) ।

सूत्रि नि [सूत्रि] १ धन-धन (अ ४,
१) । २ पुं धन धनयान । धी, धी (पि
२३१) ।

सूत्रि नि [सूत्रि] १ धन-धन (अ ४,
१) । २ पुं धन धनयान । धी, धी (पि
२३१) ।

सूत्रि नि [सूत्रि] १ धन-धन (अ ४,
१) । २ पुं धन धनयान । धी, धी (पि
२३१) ।

सूत्रि नि [सूत्रि] १ धन-धन (अ ४,
१) । २ पुं धन धनयान । धी, धी (पि
२३१) ।

सूत्रि नि [सूत्रि] १ धन-धन (अ ४,
१) । २ पुं धन धनयान । धी, धी (पि
२३१) ।

सूत्रि नि [सूत्रि] १ धन-धन (अ ४,
१) । २ पुं धन धनयान । धी, धी (पि
२३१) ।

सूत्रि नि [सूत्रि] १ धन-धन (अ ४,
१) । २ पुं धन धनयान । धी, धी (पि
२३१) ।

सूत्रि नि [सूत्रि] १ धन-धन (अ ४,
१) । २ पुं धन धनयान । धी, धी (पि
२३१) ।

सूत्रि नि [सूत्रि] १ धन-धन (अ ४,
१) । २ पुं धन धनयान । धी, धी (पि
२३१) ।

सूत्रि नि [सूत्रि] १ धन-धन (अ ४,
१) । २ पुं धन धनयान । धी, धी (पि
२३१) ।

सूत्रि नि [सूत्रि] १ धन-धन (अ ४,
१) । २ पुं धन धनयान । धी, धी (पि
२३१) ।

सूत्रि नि [सूत्रि] १ धन-धन (अ ४,
१) । २ पुं धन धनयान । धी, धी (पि
२३१) ।

सूत्रि नि [सूत्रि] १ धन-धन (अ ४,
१) । २ पुं धन धनयान । धी, धी (पि
२३१) ।

सूत्रि नि [सूत्रि] १ धन-धन (अ ४,
१) । २ पुं धन धनयान । धी, धी (पि
२३१) ।

विधिधर पुं [विधिधर] विचार-सूचक
वा कृत-सूचक रूप, वि: वि (वि ४३१)।
विधि [वि] दे विधि-विधि [वि] वि. वि.
विष् मन् प्रोक्त विचार (दे २, १७० पद)।
विष् वैको विष् = विष्। हेङ्. विधिधर
(दे १)।

विष् मि [विष्] १ वरिष्ठ किंवा वा सके।
२ केने योग्य (सू २ ३)। ३ न केन,
विष्ने, विष्मन्पद 'प्राचीन ब्रह्महोदयविष्म-
मरुत्तमसाधार' (सू ४९ आ पुन १५६)।

विष्मन् वि [विष्मन्] सव पाठा दुर्लभ
होता 'विष्मन् विष्मन् विष्मन् विष्मन् विष्मन्
विष्मन् विष्मन्' (सू १४७)।

विष्मन्
विष्मन् } वैको विष्

विष्मन् न [विष्मन्] १ विष्मन् विवर (पद २
११२, सु १७ उ ११८)। २ वरिष्ठ
व्यवहार (पद २ ३)। ३ वृद्ध वीर (सू १
११)। पाणि पुं [पाणि] एक प्रथम
आ वेन साधु (पा २ १ ३)।

विष्मन् पुं [विष्मन्] धाकृत वन (सू २
२—पद ७७३)।

विष्मन् वैको विष्मन् (शा १ १५ सू १
५)।

विष्मन् पुं [विष्मन्] बार, उन्नत (दे १ २७
पद)।

विष्मन्मोडन न [विष्मन्] शीघ्र गुरुण बन्दी
(दे १ २२)।

विष्मन्मय वि [विष्मन्] टंक वे विष्मन् (पा १)।
विष्मन् की [विष्मन्] प्रसीत दुष्मन् (दे १ २७)।

विष्मन्मय पुं [विष्मन्] बार, बार, उन्नत विष्मन्मा
या विष्मन् (दे १ २७ पद)।

विष्मन्मयित्री की [विष्मन्] प्रसीत दुष्मन्
विष्मन्मयित्री की [विष्मन्] प्रसीत विष्मन्
मयिष्मन्मयित्री। (सू २३, दे १ २७)।

विष्मन्मयित्री की [विष्मन्] दुष्मन् दुष्मन् (पा १)
बार (दे १ २७)।

विष्मन्मयित्री की [विष्मन्] दुष्मन् दुष्मन् (पा १)
बार (दे १ २७)।

विष्मन् मि [विष्मन्] सट्ट, दूमा दूमा (दे १ २७
वा १३ सु २ ४ पा १)।

विष्मन् [विष्मन्] वैको विष्मन् (सू २ २२)
उप २ १७ उ ११८)।

विष्मन् की [विष्मन्] केन विष्मन्, वरिष्ठ
(वि १ ४३१ न १७० पद)।

विष्मन् पुं [विष्मन्] केनेमात्रा (पद २)।
विष्मन् वैको विष्मन् (शा १ २ ४ ३, १
पद ४३ ६)।

विष्मन् पुं [विष्मन्] कोटी मन्त्री (दे १ २६)।

विष्मन् वि [विष्मन्] विष्मन्-मुक्त, विष्मन्मा
(मन्त्र)।

विष्मन् वि [विष्मन्] १ वरिष्ठ दुर्लभ केन-मुक्त
(सू १४७ उ ११८)। २ विष्मन् विष्मन्
(सू १ १)। ३ न केन वरिष्ठ (सू १ ३)।

विष्मन् वि [विष्मन्] लेख-पठित लेख-मुक्त
(पद २, ३)। २ पुं लघवी साधु मुनि
मित्र (सू १)। ३ वरिष्ठ पुं [वरिष्ठ] नम-
विष्मन् प्रथम सूच की वरिष्ठ सूच की वरिष्ठा
वे वरिष्ठ मानेमात्रा मन्त्र (सू १)। ४ वरिष्ठ
वि [विरिष्ठ] माने-विष्मन् वरिष्ठ वीर
नगर वरिष्ठ मुक्त वीर हो ऐसा पदार्थ (सू १)
१)। २ वरिष्ठ वि [विरिष्ठ] वरिष्ठ वीर या
वरिष्ठ के वीर के वरिष्ठ वीर वरिष्ठ न हो
(सू १)। ३ वरिष्ठ वि [विरिष्ठ] वरिष्ठ वीर
वरीर वरिष्ठ वीर होनेवाली नमस्वति (वीर
१)। पद १६)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर वरिष्ठ वीर
(सू १ ३)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर वरिष्ठ वीर
(सू १ ३)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर वरिष्ठ वीर
(सू १ ३)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर वरिष्ठ वीर
(सू १ ३)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर वरिष्ठ वीर
(सू १ ३)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर वरिष्ठ वीर
(सू १ ३)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर वरिष्ठ वीर
(सू १ ३)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर वरिष्ठ वीर
(सू १ ३)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर वरिष्ठ वीर
(सू १ ३)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर वरिष्ठ वीर
(सू १ ३)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर वरिष्ठ वीर
(सू १ ३)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर वरिष्ठ वीर
(सू १ ३)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर वरिष्ठ वीर
(सू १ ३)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर वरिष्ठ वीर
(सू १ ३)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर वरिष्ठ वीर
(सू १ ३)।

विष्मन् पुं [विष्मन्] वरिष्ठ वीर, वरिष्ठ वीर
दूमा वीर (दे १ २७)।

विष्मन् पुं [विष्मन्] वरिष्ठ वीर, वरिष्ठ वीर
(दे १ २७)।

विष्मन् की [विष्मन्] वरिष्ठ वीर, वरिष्ठ वीर
(दे १ २७)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर, वरिष्ठ वीर
(दे १ २७)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर, वरिष्ठ वीर
(दे १ २७)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर, वरिष्ठ वीर
(दे १ २७)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर, वरिष्ठ वीर
(दे १ २७)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर, वरिष्ठ वीर
(दे १ २७)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर, वरिष्ठ वीर
(दे १ २७)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर, वरिष्ठ वीर
(दे १ २७)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर, वरिष्ठ वीर
(दे १ २७)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर, वरिष्ठ वीर
(दे १ २७)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर, वरिष्ठ वीर
(दे १ २७)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर, वरिष्ठ वीर
(दे १ २७)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर, वरिष्ठ वीर
(दे १ २७)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर, वरिष्ठ वीर
(दे १ २७)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर, वरिष्ठ वीर
(दे १ २७)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर, वरिष्ठ वीर
(दे १ २७)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर, वरिष्ठ वीर
(दे १ २७)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर, वरिष्ठ वीर
(दे १ २७)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर, वरिष्ठ वीर
(दे १ २७)।

विष्मन् वि [विष्मन्] वरिष्ठ वीर, वरिष्ठ वीर
(दे १ २७)।

विश्वे पत्नी विरोध करने की कमा बौद्धों
ऐसी मुद्रा (अ ४ २, प ८)।

विश्विज वि [रघु] १ घृमा हुआ (दे ३
२७) २ न. सरां घृमा (दे २ ८)।

विश्विज न [रे] ईश का दुश्मा (दे ३ २७)।
विश्विज [रे] दो दो दुश्मा (आ १ २
४)।

विश्विज वि [रे] इति बनावणी (दे ३
२७)।

विश्विज न [रे] १ निम्नार्थक मुख-विद्रुण,
मर्त्य-प्रकारक मुख विकार विशेष। २ विश्व
विद्रुण (दे ३ २८)।

विश्विज [रघु] सरां बरना घृमा।
विश्विज (दे ४ १८२)।

विश्विज न [शिल्प] मयूर की शिल्पा (आमा
१ १—प ३७ टी)।

विश्विज पुं [रे] श्री का बना हुआ मिश्रण
विश्व, पुनःपुनः में निवे 'विश्व' बहते हैं
(दे ३ २८)।

विश्विज पुं [शिल्प] मयूर १ मयूर, मोर।
२ वि मयूरविषय के कारण बनेवाला
(आमा १ १—प ३७ टी)।

विश्विज की [रे] शिल्पा मोटी (दे ४ ४)।

विश्विज की [रघु] सहा समिताप (आमा
दे १ १२५ प ४)।

विश्विजिमिज न [रे] वधि बड़ी (दे ३
४)।

विश्विज वि [रघु] घृमा हुआ (आमा)।

वीज कीज [रघु] शिल्पा वीज (दे १
११२ २ १७) वीज १४४) वधि। वी,
आ (आ २७)।

वीजमाय वि [रघु] वीज करता (आमा
२, २, १)।

वीज वि [वीज] शय प्राप्त इष्ट, पूर्णत (दे
२, ४; ग ४४)।

वीजय वि [रघु] शय करता (वी ८)।

वीर न [वीर] या पत्नी। २ वृष वृष
(दे २ १७) या २१७)। विपरीत की
[विपरीत] वनस्पति-विरोध भूमि-वृक्षण
(प ११ १—प ३३)।

वीर पुं [वीर] हाथ से बनेवाला एक
पद ना लघु, शय की एक भाति (प ११
१ १)।

वीरिज [रे] दो दो विरोध (आ १ १)।

वीरक [रघु] १ वीरता। २ वीरता।
वीर पुनः (अ)। वीरक, वृद्धमान (अ
१)।

वीर दो वीर (आमा)।

वीर दो वीर। वृद्ध (आमा ७४)।

वीर की [रे] वीरता कर्तव्य (दे ३ १)।
वीर की [रे] कर्तव्य के वीरता का वेद
(दे ३ १४)।

वीरमय न [रे] वृद्ध, लघुवृद्ध
लघुवृद्ध (दे ३ ११)।

वीर वि [आ + क्रम] वीरमय करना।
वीर (दे ४ ११; प ४)।

वीरक [रे] वृद्ध, वृद्ध (दे ३ १)।

वीरक न [विषकरण] विषकाला,
विष (दे ४ २)।

वीरक वि [रघु] वृद्ध, वृद्ध वृद्ध (दे
१ २ ४)।

वीरककरक [रघु + क] 'कृ' का
वृद्ध करना वृद्धि की वृद्धि की
वृद्धि करना। वृद्धि (आमा)।
वृद्धिमान वृद्धि वृद्धि।

वीरक [रघु] वृद्धा वृद्ध-वृद्ध होना।

वीर (वधि)। वृद्ध (वृद्ध २ टी)।

वीर वि [वृद्ध] वृद्ध हुआ, वृद्ध-वृद्ध
(आमा १ ७ वृद्ध ४२)।

वीर वि [रे] वीर वृद्ध (आमा)।

वीर न [वीर] वृद्धा वृद्धि (आमा
२७)।

वीर वि [रे] १ वृद्ध, वृद्ध (दे ४ १८२;
४२२)। २ वृद्ध, वृद्ध (दे ४ ४ १)।

वीर वि [रघु] वृद्ध वृद्ध, वृद्ध वृद्ध
(वीर)।

वीरिज की [वृद्ध] वृद्धा वृद्ध-वृद्ध
(प २ २ १—प ३३ टी)।

वृद्ध वि [वृद्ध] १ वृद्ध वृद्ध-वृद्ध किया
हुआ। २ वृद्ध विनाशित। ३ वृद्ध (दे
२ १७ प्राय)।

वृद्ध वि [वृद्ध] वृद्ध, वृद्ध हुआ (दे २,
१८८; वृद्ध)।

वृद्धि की [रे] वृद्ध वृद्ध (वृद्ध ४२)।
वृद्धि की [रे] १ वृद्ध वृद्ध वृद्ध;
२ वृद्ध वृद्ध (दे ३ १८)।

वृद्धि दो वृद्धि (वृद्ध २ १—प ४
१४२)।

वृद्ध दो वृद्ध (आमा)।

वृद्ध वि [रे] वृद्ध वृद्ध (वृद्ध)।

वृद्ध वि [वृद्ध] वृद्ध (आमा २२)।

वृद्ध पुन [वृद्ध] वृद्ध वृद्ध (वृद्ध
४२२)।

वृद्ध दो वृद्ध 'वृद्ध' वृद्ध वृद्ध वृद्ध
वृद्ध वृद्ध (वृद्ध २२)।

वृद्ध दो वृद्ध।

वृद्ध वृद्ध [वृद्ध] वृद्ध होना वृद्धि
होना। वृद्धि (वृद्ध ११)।

वृद्ध वृद्ध [रे] वृद्ध वृद्ध वृद्ध (दे ३ ११)।

वृद्ध दो वृद्ध। वृद्ध, वृद्ध (वृद्ध वृद्ध
२)। वृद्ध वृद्ध (वृद्ध ११)।

वृद्ध दो वृद्ध (वृद्ध १)।

वृद्ध वृद्ध [वृद्ध] १ वृद्ध वृद्ध, वृद्ध।
२ वृद्ध वृद्ध वृद्ध। ३ वृद्ध वृद्ध
(आ १२; वृद्ध २८ २८)।

वृद्ध पुं [वृद्ध] १ वृद्ध वृद्ध का वृद्ध। २
वृद्ध का वृद्ध वृद्ध। ३ वृद्ध-वृद्ध
वृद्ध। ४ वृद्ध वृद्ध वृद्ध (दे ३ १७
प्राय)। ५ वृद्ध वृद्ध (वृद्ध १)।

वृद्ध न [वृद्ध] वृद्ध वृद्ध वृद्ध वृद्ध
वृद्ध वृद्ध वृद्ध (वृद्ध १)।

वृद्ध न [वृद्ध] वृद्ध वृद्ध वृद्ध (वृद्ध १)।

वृद्ध न [वृद्ध] वृद्ध वृद्ध वृद्ध (वृद्ध १)।

वृद्ध न [वृद्ध] वृद्ध वृद्ध वृद्ध (वृद्ध १)।

वृद्ध न [वृद्ध] वृद्ध वृद्ध वृद्ध (वृद्ध १)।

वृद्ध न [वृद्ध] वृद्ध वृद्ध वृद्ध (वृद्ध १)।

वृद्ध न [वृद्ध] वृद्ध वृद्ध वृद्ध (वृद्ध १)।

वृद्ध न [वृद्ध] वृद्ध वृद्ध वृद्ध (वृद्ध १)।

वृद्ध न [वृद्ध] वृद्ध वृद्ध वृद्ध (वृद्ध १)।

वृद्ध न [वृद्ध] वृद्ध वृद्ध वृद्ध (वृद्ध १)।

वृद्ध न [वृद्ध] वृद्ध वृद्ध वृद्ध (वृद्ध १)।

वृद्ध न [वृद्ध] वृद्ध वृद्ध वृद्ध (वृद्ध १)।

सुटी की [सुटी] सुटी बाहु (रे २ ४-
प्राप् १२)।

सुहृद यो सुहृद (प्रा १२२)।

सुहृदयुक्त यो सुहृदयुक्तः। सुहृ-
युक्तः (सुपति ११ टी)।

सुप एक [सुप] सपत्नी करना सुप।

कर्म सुप, सुपिन् ४ (य २४२)।

कर्म सुप (उ ११२ ७२२ टी)।

सुहृद वज्र [सुप] कर्मका वाक्ता। सुहृद

(ज्या ६ ४ १४३)। सुहृद सुहृद जोहृद

(स २३, सि १ १)।

सुहा की [सुहा] १ धनुष धनुष (हे १

२१३, युग)। २ बही, मकान पोखने का

रोज हस्त-विशेष सुप (हे १ ७८ युग)।

अर पु [कर] कर्म नमना (पठ)।

सुहा की [सुहा] सुहा सुह सुहा (हे

१ १७ ६२ ४२)।

सुहायन नि [सुपित] सुहा सुहायित

(पाप)।

सुहायन नि [सुहायन] ऊपर देखी (ना

१ १)।

सुहाय नि [सुहाय] ऊपर देखी (उप ३

१९ १९ टी)।

सुहाय नि [सुहाय] ऊपर देखी (उप ३

१९ १९ टी)।

सुहाय नि [सुहाय] निध, पोता सुहा (हे १

१)।

सुहाय नि [सुहाय] निध, पोता सुहा (हे १

१)।

सुहाय नि [सुहाय] निध, पोता सुहा (हे १

१)।

सुहाय नि [सुहाय] निध, पोता सुहा (हे १

१)।

सुहाय नि [सुहाय] निध, पोता सुहा (हे १

१)।

सुहाय नि [सुहाय] निध, पोता सुहा (हे १

१)।

सुहाय नि [सुहाय] निध, पोता सुहा (हे १

१)।

उद्यम नि [दे उद्यम] १ विपुल निर्यज (पंचा

१ ११३ १८)। २ न कालीपित द्वित (वर्ग

४ २४४)।

उद्यम पु [उद्यम] १ नाथ विनाश 'विजयान्वेदी

कर्म वा' (पुर ५ १२४)। २ बरप

विमान (वि १ ७)। ३ उद्यम कर्मका

'वीर्याधर्म' (पा १२३) से ७ ४८)। ४

का: वैन प्राक्म-वन्म के दे हैं—नित्यैकमुन

महागिरीयमुन वरा-मुनकमन वृहत्कमन

व्यवहारमुन, पञ्चकमनमुन (सि २२२३)।

५ उद्यम विमान वस्तु विना सुपा धर्म (वि

७ ४८)। ६ कर्म मुक्ता (पंचा १९)।

७ प्राक्म-विमान (ठा ४ १)। ८ मुक्ति

परीक्षा का एक संघ वर्ग-मुक्ति वागने का

एक सत्य निर्मल ब्रह्म व्याकरण 'लो

उद्यम मुक्ति' (पंचा १)। रिह न

[रिह] प्राक्म-विमान (ठा १)।

उद्यम नि [उद्यम] उद्यम नरनेवला

उद्यम काटनेला (गाय, सि १२३)।

उद्यम न [उद्यम] १ बरपन कर्मन विना

करण (सम ११) प्राप् १४)। २ वनी

मुक्ता ज्ञान (वाचा)। ३ उद्यम हविषार

(सुप २ १)। ४ विनायक वपन (हृ

१)। ५ उद्यम वपन (हृ १)। ६ वप

जीव-नित्य (सुप २ १)।

उद्यम न [उद्यम] १ उद्यम नरनेवला

उद्यम काटनेला (गाय, सि १२३)।

उद्यम न [उद्यम] १ उद्यम नरनेवला

उद्यम काटनेला (गाय, सि १२३)।

उद्यम न [उद्यम] १ उद्यम नरनेवला

उद्यम काटनेला (गाय, सि १२३)।

उद्यम न [उद्यम] १ उद्यम नरनेवला

उद्यम काटनेला (गाय, सि १२३)।

उद्यम न [उद्यम] १ उद्यम नरनेवला

उद्यम काटनेला (गाय, सि १२३)।

उद्यम न [उद्यम] १ उद्यम नरनेवला

उद्यम काटनेला (गाय, सि १२३)।

उद्यम न [दे] उद्यम नरनेवला उद्यम काटनेला

(हे १ १२)।

उद्यम न [दे] उद्यम नरनेवला उद्यम काटनेला

(हे १ १२)।

उद्यम न [दे] उद्यम नरनेवला उद्यम काटनेला

(हे १ १२)।

उद्यम न [दे] उद्यम नरनेवला उद्यम काटनेला

(हे १ १२)।

उद्यम न [दे] उद्यम नरनेवला उद्यम काटनेला

(हे १ १२)।

उद्यम न [दे] उद्यम नरनेवला उद्यम काटनेला

(हे १ १२)।

उद्यम न [दे] उद्यम नरनेवला उद्यम काटनेला

(हे १ १२)।

उद्यम न [दे] उद्यम नरनेवला उद्यम काटनेला

(हे १ १२)।

उद्यम न [दे] उद्यम नरनेवला उद्यम काटनेला

(हे १ १२)।

उद्यम न [दे] उद्यम नरनेवला उद्यम काटनेला

(हे १ १२)।

उद्यम न [दे] उद्यम नरनेवला उद्यम काटनेला

(हे १ १२)।

उद्यम न [दे] उद्यम नरनेवला उद्यम काटनेला

(हे १ १२)।

उद्यम न [दे] उद्यम नरनेवला उद्यम काटनेला

(हे १ १२)।

उद्यम न [दे] उद्यम नरनेवला उद्यम काटनेला

(हे १ १२)।

उद्यम न [दे] उद्यम नरनेवला उद्यम काटनेला

(हे १ १२)।

उद्यम न [दे] उद्यम नरनेवला उद्यम काटनेला

(हे १ १२)।

उद्यम न [दे] उद्यम नरनेवला उद्यम काटनेला

(हे १ १२)।

उद्यम न [दे] उद्यम नरनेवला उद्यम काटनेला

(हे १ १२)।

उद्यम न [दे] उद्यम नरनेवला उद्यम काटनेला

(हे १ १२)।

राटीर-रचना (सम ४४ १४१ सम, कम्प १ ११) । २ कर्म-विरोध जिसके उदय से पूर्वोक्त संघर्ष की प्राप्ति होती है वह कर्म (कम्प १ ११) ।

छेबाही [वे] देखो छिबाही (पव ३ निम्न १२) कीव ३) ।

छह पुं [वे] छेपुं प्रेष्ठ छेपण 'तो वय परिणामोपायमुपयानिस्समाएधिद्विज्जे' (सि ४ १७) ।

छहत्तरि (पव) देखो छाहत्तरि (पिग) ।

छोअ पुं [वे] छिनका (सम २ १ १५) ।

छोअ पुं [वे] वास लीकर (वे १३) ।

छोअया की [वे] छिनका ईव वीए की वास (पव ७१= टी) । 'छहत्तरि' परिपण छोअसं पछामि' (महा) ।

छोअरी की [वे] छोअरी लकड़ी (दुम २३) ।

छोटि की [वे] अचिन्ता बूझई (सि ४ ५०) ।

छोह सक [छोअ] छोहना कमान है युक्त कम्पा । छोह, छोहरे (यसि महा) । छह छोहियि (सुपा २४१) ।

छोहियि वि [वे] छोहा लड़ (बन्ना १५४) ।

छोहायि वि [छोटि] छुवाया हुआ बन्धन-युक्त कपटा हुआ (स १२) ।

छोहियि की [वे] छोटी लकड़ी लुह (पिग) । छोहियि वि [छोटि] १ छोहा हुआ कन्धन युक्त किया हुआ 'बत्तायो छोहियी मंछे (सुपा २ ४-४ ४११) । २ बहियि बाह्य (पण्ड १ ४—पव ७५) ।

छोहियि देखो छोहियि (वीप) ।

छोहियि वि [वे] छोहकर (दुम ३१) ।

छोहियि } देखो छुह ।
छोहियि }

छोप वि [छुअ] छप-योग्य छुने लायक (वाता २ १३ ३) ।

छोअप पुं [वे] पिगुन, लल दुर्जन (व ३ ३३) । देखो छोअ ।

छोअम वि [छोअ] छोअ योग्य, सोमणीय 'होति छपपरिजिया य छाया (?) म्मा' छिपकलासमयस्यपरिजिया' (पण्ड १ ३—पव ३३) ।

छोअमर वि [वे] यमिय बगिछ (वे ३ ११) ।

छोअमरही की [वे] १ बल्लरवा छुने के प्रयोग । २ छोआ धारोतिक की (वे ३ १२) ।

छोअ [वे] देखो छोअम (वे ३ ११ टि) । १ निस्वहाय वीन (पण्ड १ ३—पव ३३) ।

३ न धम्माकान कर्मक-भाटोपलु होयापेप (इह १ व २) । ४ न. कन्धन-विरोध हो कमासमण-कय बन्धन (दुमा १) । ५ भाषाव 'छोअ कनकपटो वंछकरोमे वे देह सो एमि' (महा) ।

छोअ देखो छुअम (आवा १ ६—पव १५७) ।

छोअर पुं [वे] छोरा बड़का, छोकरा (पव ५ २१२) ।

छोअिय देखो छोअम = छोटि (पिग) ।

छोअ सक [वह] छोअना छान उठारना ।

छोअह (पव) । कर्म कीछिज्जंनु (हे ४ १२३) ।

छोअण न [वहण] छोअना निलुपोकरण छिनका छारना (आवा १ ७) ।

छोअियि वि [वह] छिनका छारा हुआ पुप रहियि किया हुआ (पव १७३) ।

छोह पुं [वे] १ समूह मूख बत्ता । २ विरोध (वे ३ १२) । ३ भाषाव 'वाय य सो मायंयो छोह वा देह कट्टरिज्जि' (महा) ।

छोह पुं [वे] १ छेपल कँकना 'निम्यद्विज्ज' अवरप्रमववापहि' (सुपा २२५) ।

छोह [वे] देखो छोअर (सुपा २४२) ।

छोहियि वि [छोअ] सोम-वाय बड़काया हुआ, व्याकुल किया गया (पव १३७ टी) ।

॥ इय छिरिपाइसहमहण्यवमि छुवापाइसहसंरमणो
पंवरसवो छरंगो समवो ॥

ज

ज पुं [ज] जाडू-स्थानीय ब्रजजन बर्छे-विरोध (प्राणा प्राप) ।

ज स [यज्] जो जो कीई (छ ३ १) जी = जुमा, या १ १) ।

ज वि [ज] धरम 'यथायायतयेवी होर निसेण येहो व्दुणो' (मा ७३१) 'धार' 'न' (पावा) ।

जाअर पुं [जयअर] जीव, धम्भुय (शाह ३) ।

जाअरयक [वज्] लपकना छोपना करना । यजय (हे ४ १७ ; पव) । नह जाअरय (हे ४ १७) । प्रयो ब्रजधरति (सुमा) ।

जाअर वि [वे] धम धाम्यारित बना हुआ (पव) ।

जह पुं [यति] १ जाडू मित्रेणिय संभावनी (वीन सुपा ४४४) । २ छत्र-वाय में ब्रह्म विद्या-स्थाप, बजिदा वा विद्या-स्थाप (बम्प १ टी) ।

जह वि [यति] जिन्ना (पव १) ।

जह स [यज्] जिस समय, जिस बज (यज) ।

जह स [यति] यति, जो यमर (मम १३३

जंण न [अण्ण] छिह कण कहुना
(वा १२ गठक)।

जंण न [वे] १ मसीति प्रययत् २ पुन
हुंह (वे ३ २१ मति)।

जंण नि [अण्ण] नौननेवासा भाक
(पण्ड १ ३)।

जंणाय न [अण्ण] १ बाह्म-विरोध गुहा
सुन, निरिका विरोध (अ ४ ३) चीन गुना
१६३ अ ६२६)। २ मूतक-वाग शन-वाग
(गुना २१६)।

जंणिकय नि [वे] निरको के उठी की
बाहुनेवासा (वे ३ ४४ पाय)

जंणिय नि [अण्ण] नपिठ उठ (प्राप्त
१ १)।

जंणिय रेको जंण।

जंणिर नि [अण्ण] १ बलाक बाबा
(वे २ ६७)। २ नौननेवासा, भाक (हि
२ १४५; वा २७) गा १६२ गुना ४ २)।

जंणिकरमगिर } नि [वे] निरको के
जंणिकरमगिर } उठी की भाषा कले-
वासा (पण्ड १ ४४)।

जंणिक नि [अण्ण] कीकण की एक
पत्नी (वंत १४ पाय १)।

जंणन पुं [अण्ण] एक विद्यावर
रत्ना (कुट २२६)।

जंणन नि [वे] १ जंणन शैलन नमन
विहार वा वेशार (वे ३ ४२ पाय)।

जंणन पुं [अण्ण] १ कर्षण कर्षणे रक
(पाय अ ३ १)। २ बण्ड, गर्भ-कल कर्ष
(गुन १ ७)।

जंणीरिय (मर) न [अण्ण] कीक वा कीक
कल-विरोध (पण्ड)।

जंणु पुं [अण्ण] १ बन्धु, विद्याए 'अण्ण-
हृदय-विरोध' (पण्ड १ ३, २७)। २ एक
प्रतिष्ठ केन मुनि मुन्य-स्वामी के शिष्य
प्रतिष्ठ बन्धी (कण्य बगु विना १ १)। ३
न. वन्धु बन्ध का कल बाण्ड (वा १६)।

जंणु पुन [अण्ण] वन्धु बन्ध का कल बाण्ड
के विनि बन्ध मसीती (संक्षेप ४०)।

जंणु देगी जंणु (का हुका इक पण्ड २६,
२२१ मे १३ ५६)।

जंणु पुं [वे] १ वेतल बृज वेत २ पथिय
विपणल (वे ३ २२)।

जंणु पुं [अण्ण] १ सिवार, पीर
जंणु (प्राप्त १०१ उप ७९ न टी पठम
१ ४ १४)। २ न वन्धुबन्ध का कल
बाण्ड (गुना २२६)।

जंणु पुं [वे] १ बागीर बृज वेत २ न
महाबन्ध सुखाय (वे ३ ४६)।

जंणु नि [वे] बन्धक बाण्ड, बन्धवा
(पाय)।

जंणु बन्ध रेको जंणु (वंत पठि)।

जंणु की [अण्ण] १ बृज विरोध बाण्ड
का वेत (पाय १ १) चीन)। २ बृज बृज
के बाबा का एक उल्लस शायत पचार
मुहूर्तना विरके कारण यह द्वीप बन्धुवि
कहासा है (वं १)। ३ पुं एक मुनिवि
केन मुनि मुन्य-स्वामी का वन्धु शिष्य (वं
१)। दीप पुं [द्वीप] बन्धुवि विरोध
बन्ध द्वीप वीर वन्धु के दीप का द्वीप विरके
बन्ध भाग बाण्ड लेन बन्धमान है (वं १
६६)। द्वीप नि [द्वीप] बन्धुवि
संक्षेप वन्धुवि के वन्ध (अ ४ २१)।
द्वीपपण्डि की [द्वीपपण्डि] केन
प्राप्त-वन्ध-विरोध विरके बन्धुवि का वन्ध
है (वं १)। वीर [वीर] नगर-विरोध (इक)।
मात्र पुं [मात्र] राख का एक पुन
राख का एक पुन (पण्ड २६, २२ मे
१३ ५६)। 'मेषपुर न [मेषपुर] विद्या
वर-नगर-विरोध (इक)। संक्षेप पुं [पण्ड]
प्राप्त-विरोध (पाय)। सामिपुं [सामिप]
मुनिवि केन मुनि-विरोध (पाय)।

जंणु पुं [अण्ण] १ सिवार, पीर (पण्ड
२४ पा)।

जंणु पुन [अण्ण] १ मुन्य, चीन
(गम १३, पण्ड २ २२६)। २ पुं स्वान
प्रतिष्ठ एक रत्ना (पण्ड ४५ ६५)।
अण्ण पुं [अण्ण] उरक प्रातन-विरोध
(उरक)।

जंणु पुं [वे] पुन मुन्य बाण्ड वीर का
विपणल (वे ३ ४)।

जंणु रेको जंणु = बन्धु।

जंणु नि [अण्ण] १ वीर रेकोनेवासा।
२ पुं कल-वेरों की एक बाण्ड (कण्य
गुना ४)।

जंणुगण नि [वे] स्वन्ध-वन्धो की
जंणुगण } मसीती में बाण्ड बन्धोने
जंणुगण } वासा (पण्ड ३ ४४)।

जंणु की [अण्ण] उरक-विरोध विद्या
विरोध (गुन २ २ पण्ड ७ १४४)।

जंणु रेको जंणु (पाय १ १ वंत म
१४ ५)।

जंणु पुं [वे] बन्धु मुन्य मन्ध (वे ३ ४१)।

जंणु की [अण्ण] वीर, बन्धु (विद्या
१)।

जंणु की [अण्ण] एक रेको का नाम
(विद्या ३)।

जंणु १ बन्धु [अण्ण] वीर, बन्धु।
जंणु १ वीर, बन्धु (वे ४ १२७-
२४) प्राप्त वह)। बन्धु जंणु जंणु
(वा २४६ वे ३ ६३; कण्य)।

जंणु नि [अण्ण] वीर, बन्धु
(विद्या)।

जंणु नि [अण्ण] १ वीर, बन्धु। २
प्राप्त-विरोध वह) कल-वन्धु महावीर के
कल-वन्धु उल्लस गुना का यह वन्धु वार-
वाण्ड वन्धु के वान के वन्धु-विरोध नदी के
विहार वर का (कण्य)।

जंणु पुं [अण्ण] १ कल-वेरों की एक
बाण्ड (पण्ड १ ४ वीर)। २ कल-वेर, वीर-
वाण्ड-विरोध (पण्ड)। ३ एक विद्यावर-वन्धु
को राख का मसीती बन्ध का एक वन्धु
(१ २)। ४ द्वीप-विरोध। ५ वन्धु-विरोध
(वे २ ६)। ६ वान कुटा 'वन्धु वान-विरोध-
हृदय वन्धु-विरोध वन्धु-विरोध' (पण्ड १६३
पा)। कल-वेर पुं [कल-वेर] १ कल-वेर, वीर,
बन्धु कल-वेर वन्धु का वान-विरोध विपणल
(विद्या)। २ द्वीप-विरोध। ३ वन्धु-विरोध
(वे २ २)। गण्ड पुं [गण्ड] वान-वेर,
वन्धु वान-विरोध (वीर ३ ३ २)। वाण्ड
पुं [वाण्ड] वान का वान-विरोध वन्धु
(गण्ड)। वान न [वान] रेको वीर
विपणल (पण्ड २६)। विद्या की [विद्या]
वन्धु वन्धु की वान एक वान-विरोध

अण्वही की [दे] भीती नाथ इबारत
(११४)।

अण्वही की [आह्वी] १ धरत बज्जती
की एक पत्नी मरीच की कननी (पद्य
२२१)। २ पङ्कान्नी मासिनी (पद्य
२११; क्रमा)।

अण्वुं [अह्व] १ घट-नीरय एक राजा
(पद्य ६२७३)। सुभा की [सुवा]
गहान्नी नानीरी (पद्य)।

अण्वुआ की [दे] बन्, पुआ (पद्य)।
अण्वुआ की [अह्व, अम्या] नया-नी
(पद्य १११)।

अण्वु देवी अम = मन् । अणि अतिहासि
(पद्य १११)।

अण्वु [अम] करोय, चयन केडा (पद्य
५७८)।

अण्वु की [पात्रा] १ केलातर-नाम, केलातर
(अ ४ १ बीर)। २ मम, अणि 'अण्वु
होइ गमल' (पद्यका बीर)। ३ देव-पुत्रा के
निमित्त किया जाता लक्षण-विशेष मराठीका
रम-भावा पद्य 'हुं मार पात्रा विहासमणु
पद्यमी' (पद्य १ १८)। ४ लीक-मम
लीक-ममल (पद्य २)। ५ मम-प्रति (मम
१५, ११)।

अण्वु की [पात्रा] संयम-निर्वाह (अ
११८)।

अण्वु की [दे] १ शिवा। २ देवा मुषपा
'पद्मलताए दमनी क कदा लीम बैण्डि'
(भा २७)।

अण्वु देवी अण्वु (अ २ ११)।

अण्वु रि [पात्रा] विनता (अ २ ११
पात्रा)।

अण्वु देवी अण्वु (६ २ ११)।

अण्वु य [यम] वही जिये (६ २ १११;
अण्वु ७६)।

अण्वु देवी अण्वु = पति (अण्वु २)।

अण्वु देवी अण्वु (६ २ ११)।

अण्वु देवी अण्वु = पुत्र (अण्वु ३)।

अण्वु देवी अण्वु (अ २ ११)।

अण्वु देवी अण्वु (अ २ ११)।

अण्वु देवी अण्वु (अण्वु १ २ ४ पद्य
११ ४६)।

अण्वु रि [अण्वु] १ पद्म-हित लोच-हितकर
(पद्य २ १२)। २ अण्वु होत योग
(अण्वु २०)।

अण्वु की [दे] बयल पुनरुत्थी में 'अण्वु'
अण्वु (पद्य १६६ अ ७६८ टी)।

अण्वु देवी अण्वु देवी (पद्य ४)।

अण्वु देवी अण्वु (पद्य १६, ११)।

अण्वु देवी अण्वु देवी (पद्य २ ११)।
अण्वु देवी अण्वु देवी (अण्वु ११)
११-अण्वु २११)।

अण्वु देवी अण्वु देवी (अ २ २)।

अण्वु देवी अण्वु देवी (अ २ २)।

अण्वु रि [अण्वु] बाप कलका (अ २)
अण्वु देवी अण्वु देवी (अ २)। अण्वु
(पद्य २११)।

अण्वु देवी अण्वु देवी (अ २)।
अण्वु देवी अण्वु देवी (अ २)।

अण्वु रि [पात्रा] मम कलने योग
अण्वु म 'यान' बाह्य-विशेष रिपिका
(६ १ १२२)।

अण्वु रि [यम] अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि

अण्वु रि [अण्वु] १ अण्वु रि अण्वु रि
(अण्वु)। २ अण्वु रि अण्वु रि (अण्वु २)।

अण्वु रि [यम] १ अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि

अण्वु रि [यम] १ अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि

अण्वु रि [यम] १ अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि

अण्वु रि [यम] १ अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि

अण्वु रि [यम] १ अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि

अण्वु रि [यम] १ अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि

अण्वु रि [यम] १ अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि

अण्वु रि [यम] १ अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि

अण्वु रि [यम] १ अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि

अण्वु रि [यम] १ अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि

अण्वु रि [यम] १ अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि

अण्वु रि [यम] १ अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि

अण्वु रि [यम] १ अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि

अण्वु रि [यम] १ अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि

अण्वु रि [यम] १ अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि

अण्वु रि [यम] १ अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि

अण्वु रि [यम] १ अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि

अण्वु रि [यम] १ अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि

अण्वु रि [यम] १ अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि

अण्वु रि [यम] १ अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि

अण्वु रि [यम] १ अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि

अण्वु रि [यम] १ अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि

अण्वु रि [यम] १ अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि

अण्वु रि [यम] १ अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि

अण्वु रि [यम] १ अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि

अण्वु रि [यम] १ अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि

अण्वु रि [यम] १ अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि

अण्वु रि [यम] १ अण्वु रि अण्वु रि
अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि अण्वु रि

जमा स्त्री [जामी] स्त्रीय विद्या (अ १ - पत्र ४७) ।

जमाटि पु [जमाटि] इन्द्राय-क्याट एक एक-मुद्रा का क्यमाट महावीर का जमाटा का जिसे ब्रह्मा महावीर के पास बीजा भी थी श्रीर पीजे से इन्द्रा क्यम एक मित्राभा का (शाक १ ८ अ ७) ।

जमावय न [जमव] १ नियन्त्रण करना । २ नियम बनाने को मन करना (विष्णु १) ।

जमिष वि [जमिष] निमित्तित संघमिष, कानू में दिया हुआ (सि ११ ४१; शुभा ३) ।

जमुणा केरी जँडया (सि १७६ २११) ।

जम्मी की [जम्] ईशानेय की एक धरा मन्दिरी का नाम (इह) ।

जम्न वर [जम्] वरदा होना । कम्पद (सि ४ ११६ पर) । बड़ जम्मेत (कुमा) । 'जम्मेत' दोहो बरवैत' ए व बरवैत विद्या (द्वन्द्व ८) ।

जम्न वर [जम्] बला, बगल करना । पल्लव (बद) ।

जम्न पुन [जम्नप] जम्न कल्पित (अ १; महा प्रादु ३) ।

जम्माय न [जम्माय] जम्न ज्ञाति कर्माय (ह २ १०४ छाया १ १; मुर १ ९) ।

जम्मा की [याम्या] रीगल पिठा (अ ३ १०३) ।

जम्माय } केरी जम्माय । जम्माय, जम्माय } जम्माय, जम्माय (अ ३ १०३) ।

जय नर [जि] १ कीर्तन । २ बर वरदा । ३ बर नर नरना । जय (महा) । जयति (अ १) । धाँ जयता (अ १) ।

जय नर [जय] १ युवा वरदा । २ वाम वरना । जय (अ १२, ४) । बड़ जयमान (अ १२) ।

जय धर [जय] १ वर वरना केरा करना । २ वर वरना जयमान वरदा । जय (अ १) । धर वरगायि (अ १) । बड़ जयन जयमान (अ ११) । या २१; धर ११४ मूक २११) । ३ जयवय (अ-मुर १ १४) ।

जय न [जयान] जय, युक्ति संसार (महा १२३ से ६, १) । जय न [जय] वरवै मयवीर पातान नाम (गुता ७६ १४) । जाह पु [जाय] परमेस्वर, परमात्मा (पञ्च ८९ १४) । पञ्च पु [जय] परमेस्वर (गुता २८; ८१) । एष वि [जय] जय को प्राप्त करनेवाला (पञ्च ११७ ६) ।

जय वि [जय] १ संघ जितेन्द्रिय (अ २२) । २ स्वयंसेवक करनेवाला कर्म करनेवाला (अ २; धाव ४) । ३ न कर्म का प्रदानक (कर्म ४ ४८) । ४ कर्मात् स्वयंसेवक करनेवाला (छाया १ १-पत्र १३) । जय करे करे बिट्टे (अ ४) ।

जय पु [जय] वेन लीज-यन बीह (पाम) ।

जय पु [जय] १ वर वीर युवा का पञ्चव (वीर कुमा) । २ स्वयंसेवक एक वर-कर्मी पजा (अ १२) । वर न [जय] मर-विशेष (अ १) । कर्मा की [कर्मा] विद्या-विशेष (पञ्च ७ १११) । जाय पु [जाय] १ वर वरति । २ स्वयंसेवक एक वेन युनि (अ २२) । बर पु [जय] १ विजय की बाह्यी लताकी का बगीचा का एक वनस्पत पाम । २ पञ्चवै लताकी का एक वनस्पत (अ २४) ।

जया की [जाया] शत्रु पर बहादी (गुता २४१) । पञ्चाया की [पञ्चाया] विजय का मन्त्र (आ १२) । मुर देवी हर (मुर) । 'मंगला की [मंगला] एक धन-कुमारि (अ १) । लक्ष्मी की [लक्ष्मी] बक-लक्ष्मी विजयकी (सि ४ ११; वाम ७४१) ।

जय वि [जय] वर-वाम विजयी (पञ्च १२ ४६) । बरह पु [जय] वर-विजय (अ १) । 'सीम पु [सीम] पुण्डरीक-नामक पजा का एक मन्त्र (महा ४) ।

'सिंध पु [सिंध] बरी लीक बर (अ ४) । मर पु [मर] विजय-मूकक पातान (धो) । 'सिंह पु [सिंह] १ सिंदूर बीर का एक पजा (अ ४) । २ विजय की बाह्यी लताकी का पुत्रपन का एक जित पजा विजय मूकक नाम 'सिंह' का 'सिंह' बरवैतरी पजा बरवैत ।

जय की [जयकी] १ वर की मन्त्री पज (गुता १ १४) । २ बरवै बरवै की वीर-विजय (विहार १२६) ।

जय की [जयकी] १ बरी-विजय बरवै, बरवै पज (अ १) । २ वर वरवै की वरता (अ १) । ३ सिंध बरवै की वरता (अ १) । ४ बरवै-मन्त्र बरवै की वर वरवै (अ ४) । ५ बरवै के वर वरवै विजय में (विहार १२६) ।

जय की [जयकी] १ वर की मन्त्री पज (गुता १ १४) । २ बरवै बरवै की वीर-विजय (विहार १२६) ।

जय की [जयकी] १ बरी-विजय बरवै, बरवै पज (अ १) । २ वर वरवै की वरता (अ १) । ३ सिंध बरवै की वरता (अ १) । ४ बरवै-मन्त्र बरवै की वर वरवै (अ ४) । ५ बरवै के वर वरवै विजय में (विहार १२६) ।

जय की [जयकी] १ वर की मन्त्री पज (गुता १ १४) । २ बरवै बरवै की वीर-विजय (विहार १२६) ।

जय की [जयकी] १ बरी-विजय बरवै, बरवै पज (अ १) । २ वर वरवै की वरता (अ १) । ३ सिंध बरवै की वरता (अ १) । ४ बरवै-मन्त्र बरवै की वर वरवै (अ ४) । ५ बरवै के वर वरवै विजय में (विहार १२६) ।

जय की [जयकी] १ वर की मन्त्री पज (गुता १ १४) । २ बरवै बरवै की वीर-विजय (विहार १२६) ।

जय की [जयकी] १ वर की मन्त्री पज (गुता १ १४) । २ बरवै बरवै की वीर-विजय (विहार १२६) ।

जय की [जयकी] १ वर की मन्त्री पज (गुता १ १४) । २ बरवै बरवै की वीर-विजय (विहार १२६) ।

जय की [जयकी] १ वर की मन्त्री पज (गुता १ १४) । २ बरवै बरवै की वीर-विजय (विहार १२६) ।

जय की [जयकी] १ वर की मन्त्री पज (गुता १ १४) । २ बरवै बरवै की वीर-विजय (विहार १२६) ।

जय की [जयकी] १ वर की मन्त्री पज (गुता १ १४) । २ बरवै बरवै की वीर-विजय (विहार १२६) ।

जय की [जयकी] १ वर की मन्त्री पज (गुता १ १४) । २ बरवै बरवै की वीर-विजय (विहार १२६) ।

जय की [जयकी] १ वर की मन्त्री पज (गुता १ १४) । २ बरवै बरवै की वीर-विजय (विहार १२६) ।

जय की [जयकी] १ वर की मन्त्री पज (गुता १ १४) । २ बरवै बरवै की वीर-विजय (विहार १२६) ।

जय की [जयकी] १ वर की मन्त्री पज (गुता १ १४) । २ बरवै बरवै की वीर-विजय (विहार १२६) ।

जय की [जयकी] १ वर की मन्त्री पज (गुता १ १४) । २ बरवै बरवै की वीर-विजय (विहार १२६) ।

जय की [जयकी] १ वर की मन्त्री पज (गुता १ १४) । २ बरवै बरवै की वीर-विजय (विहार १२६) ।

जय की [जयकी] १ वर की मन्त्री पज (गुता १ १४) । २ बरवै बरवै की वीर-विजय (विहार १२६) ।

जय की [जयकी] १ वर की मन्त्री पज (गुता १ १४) । २ बरवै बरवै की वीर-विजय (विहार १२६) ।

जय की [जयकी] १ वर की मन्त्री पज (गुता १ १४) । २ बरवै बरवै की वीर-विजय (विहार १२६) ।

जय की [जयकी] १ वर की मन्त्री पज (गुता १ १४) । २ बरवै बरवै की वीर-विजय (विहार १२६) ।

जय की [जयकी] १ वर की मन्त्री पज (गुता १ १४) । २ बरवै बरवै की वीर-विजय (विहार १२६) ।

जय की [जयकी] १ वर की मन्त्री पज (गुता १ १४) । २ बरवै बरवै की वीर-विजय (विहार १२६) ।

जय की [जयकी] १ वर की मन्त्री पज (गुता १ १४) । २ बरवै बरवै की वीर-विजय (विहार १२६) ।

जय की [जयकी] १ वर की मन्त्री पज (गुता १ १४) । २ बरवै बरवै की वीर-विजय (विहार १२६) ।

जय की [जयकी] १ वर की मन्त्री पज (गुता १ १४) । २ बरवै बरवै की वीर-विजय (विहार १२६) ।

जय की [जयकी] १ वर की मन्त्री पज (गुता १ १४) । २ बरवै बरवै की वीर-विजय (विहार १२६) ।

(धृपा २ २)। बड़ खसंत (भा०)। कबड़.
जबिअंत (धृ ११ १८६)।

जब धुं [जब] बाप पुन पुन मनोबाराण
बार-बार मन ही मन बेबदा क नम-स्मरण
(पृष्ठ २ १ धृपा १२)।

जब धुं [जब] १ धन-विशेष जब बा बी (धृपा
१ १; पृष्ठ १ ४)। २ परिमल-विशेष बाठ
धुका की नल (अ ८)। पाकी की [नाकी]
बहु नाकी बिधमें बी बीर बले हों (भापू
१)। मरम्भ न [मम्भ] १ धन-विशेष
(पृष्ठ २२ २४)। २ बाठ धुका का एक
नाम (पृष्ठ २३)। मरम्भ की [मम्भ] १
इत विशेष प्रतिमा-विशेष (अ ४ १) राय
धुं [राय] धन-विशेष (पृष्ठ १)। बंसा
की [बंसा] बल-विशेष (पृष्ठ १)।

जब धुं [जब] बेव बीर सीध गति
(धृपा)।

जब धुन [जब] एक बेवमिल (बेवम
१४)। नासध धुं [नासध] कन्या का
कण्डू (धृ ८ ८ टी)। झ न [झ]
बल निरस्त परमात्र शीघ्र विशेष जब की
बीर, बाउर (पृष्ठ २३३)।

जबजब धुं [जबजब] धन-विशेष एक तरह
का नम नाम (अ १ १)।

जबजब न [ज] इन की सिंहा इन की मोटी
(१ १ ४१)।

जबज न [जबन] बल धुन धुन नम का
कबाण मरिया हनुस बर की कल्लो
मंत-जबजलि (पृष्ठ ८६ १ ४ ३)।

जबजब नि [जबन] १ बैन के बनेबादा (अ
४६ ८ टी)। २ धुं बैन, सीध गति (भापम)।

जबज धुं [जबन] १ मन्त्र-विशेष
(पृष्ठ १८ १४)। २ धन-विशेष में धन-बली
मनुष्य-भाति (पृष्ठ १ १)। ३ बल-विशेष
का धना (धृपा)।

जबज न [जापन] निरिह, धुबाण (अ
८)।

जबज नि [जापन] ऊपर बेहो (पृष्ठ १)।

जबजागिया की [जबजानिज] निरि-विशेष
(पृष्ठ)।

जबजानिज की [जबजानिज] कन्या का
कण्डू (भापम)।

जबजानिज की [जबजानिज] परण (१ ४ १
पृष्ठ ८)।

जबजानिज बेहो जब = जाय।

जबजानिज की [जबजानिज] परण धान्ना-विशेष पट
(१ २ २३)। २ धन-विशेष धृती (मति
३७)।

जबजानिज की [जावनी] १ बल की की। २
बल की मति (अ ३४, विष्ट ४६४ टी)।

जबजानिज बेहो जब = जाय।

जबजपमान धुं [ज] बाउर-विशेष बाउ-विशेष
प्रत्य-बाउ (पृष्ठ ८)।

जबज { धुं [ज] जब का धन (१ १
जबज)।

जबज की [ज] जब बेव 'जबज' विष्ट-
विष्ट परण-विष्ट-विष्ट-विष्ट (धृपा
२७६)।

जबजानिज [ज] बेहो जबज (पृष्ठ ८)।
जबज [जबज] १ धन-विशेष 'विष्ट-
विष्ट' (अ ७८ ८ टी) जप धुं [ज] १
धुं बीर-विशेष (धृपा २ ३ २)।

जबा की [जाप] १ बली-विशेष बली-विशेष
का धुं। २ धन-विशेष का धुं धन-विशेष का
धुं (धृपा)।

जबास धुं [जापम] धन-विशेष एक धन-
विशेष धन-विशेष 'जापम' (भा २ १
पृष्ठ १)। जबासाधुधुं १ बा (पृष्ठ
१७)।

जबि { धि [जावि] १ बैन-विशेष बैन-विशेष
जावि { धृपा ११२)। २ धन-विशेष बीर
(पृष्ठ)।

जबिज नि [जापि] १ बिष्ट-विशेष बाप-विशेष
गया ही बहु (मन-विशेष) (धृ १६६)।
२ न, मन्त्र-विशेष प्रत्य-विशेष धावि बनीय (धृपा
२ १३)।

जबिज नि [जापि] १ धन-विशेष धन-विशेष
२ धन-विशेष (धृपा)।

जब धुं [जाप] १ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा)। २ धन-विशेष धावि
विष्ट (पृष्ठ १, पृष्ठ २, २)। ३ धन-विशेष
(पृष्ठ ३)। ४ धन-विशेष धन-विशेष का धन-
विशेष (अ १३२)। ५ धन-विशेष धन-विशेष

का धन-विशेष धन-विशेष (धृपा)। बिष्ट
की [बिष्ट] धन-विशेष धन-विशेष (धृपा १
२; धृपा १)। मध धुं [मध] धन-विशेष
का धन-विशेष (धृपा १४)।

म मध धि [मध] १ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)। २ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)।

मध धि [मध] १ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)। २ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)।

मध धि [मध] १ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)। २ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)।

मध धि [मध] १ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)। २ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)।

मध धि [मध] १ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)। २ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)।

मध धि [मध] १ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)। २ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)।

मध धि [मध] १ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)। २ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)।

मध धि [मध] १ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)। २ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)।

मध धि [मध] १ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)। २ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)।

मध धि [मध] १ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)। २ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)।

मध धि [मध] १ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)। २ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)।

मध धि [मध] १ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)। २ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)।

मध धि [मध] १ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)। २ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)।

मध धि [मध] १ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)। २ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)।

मध धि [मध] १ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)। २ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)।

मध धि [मध] १ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)। २ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)।

मध धि [मध] १ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)। २ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)।

मध धि [मध] १ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)। २ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)।

मध धि [मध] १ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)। २ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)।

मध धि [मध] १ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)। २ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)।

मध धि [मध] १ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)। २ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)।

मध धि [मध] १ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)। २ धन-विशेष धन-विशेष
धावि (धृपा १४)।

७ मय-विरोध (विना १ २)। आआब पुं
[आअय] जाति की समलता बतला कर
विना प्राप्त करनेवाला साधु (छा ५, १)।
‘मिर पुं [रविरे] साठ बर्य की उम्र का
मुनि (छा १ २)। ‘नाम न [नामम्]
कर्म-विरोध (मम १७)। प्यरगगा की
[प्रसन्न] जाति के पुन्यों में बावित मरिच
(बीज १)। फळ न [फळ] १ बुद्ध-विरोध।
२ फळ-विरोध। बायटल एक गर्भ महाभा
(मुर ११ ३१ सण)। संत बि [मन्]
कर्म जाति का (भाषा २ ४ २)। मय
पुं [मय] जाति का समिमान (छा १)।
मसिया की [पत्रिका] १ मुनिवित
कनकाका बुद्ध-विरोध। २ फळ-विरोध। एक
मर्म मनाता (कण)। सर पुं [रमर]
१ बुन जय की स्तुति। २ रि बुन कर्म
का स्वरण करनेवाला पूर्वजन्म का ज्ञान
वाला ‘बाह्यपद’ मर्म इमाई मयसाई
संप्रदायवाल् (मुर ४ २ म)। मरण न
[रमरज] पूर्व जन्म की स्तुति (बठ १६)।
‘सर रेवो सर (कर्म विने १९७१) उर
२२ दी)।
आइ स्त्री [जाति] १ ग्याम-ग्याम-प्रक्रिष्ट
बुधलाता—कर्मय बुधल (मर्म २१
न ७११)। २ बला का बंध (नि ३१ म)।
आइ रेवो आया (वड)।
आइ की [रे] १ मरिच मुच बाक (रे
१ ४५)। २ मरिच-विरोध (मिया १ २)।
आइ बि [माजिम्] बह-वर्ग (सवि १
१४५)।
आइ रि [याजिम्] बालगता (छा ४ ३)।
आअ रि [याजिन] प्रसिद्ध भाषा हूया
(विने २२ ४ या १२४)।
आइअ रेवो आय = बाठ (रमका १७७)।
आरिपिड } रि [पाटिपिड] १ हच्छा
आरिपिड } मुगल-व्येथ (मर्म १२)।
२ हच्छा-मुगली (मर्म १ २)।
आरिपिड रि [पाटिपिड] स्वेषा-मिमिन
(विने २२)।
आइअन रेवो आय = बाठ २।
आइअन } रेवो आय = बाठ २।
आइअमान }

आणी स्त्री [याकिनी] एक बैन साप्पी,
मिमरी मुनिविद बैन सम्भार की हरिप्र
मुरि धारी धर्म-माता समझते थे (उप
१ १६)।
आइअमय न [पातम्प] गमन गति (मुस
२ १७)।
आइअ बि [अपीय] जाति-सम्बन्धी
(भाषक ४)।
आठ न [आमु] सीरेया यन्त्रा यंति की
बाजी लपसी काय-विरोध (नि ६२४)।
आठ म [आमु] बराचित कमी (उमकृ ११)।
आठ म [आमु] किसी लच्छ (उर २७७)।
‘कण्य पुं [कमे] पुनर्मात्रपद मलक का बीज
(रक)।
आठ की [याह] १ देव-मयी देवपती।
२ रि जानेवाला (संक्षि ४)।
आठया की [याहका] देव-पत्नी पति के
छोटे आई की थी देवपती (छाया १ १९)।
आठर पुं [द] कविपुत्रक कैय का फल
(रे १ ४४)।
आठल पुं [आठल] नली-विरोध (पण
१—पत्र ११)।
आठहाय पुं [याहपान] उखल (उर १ ११
टी। पाथ)।
आग पुं [याग] १ यज्ञ सम्भार होम हवन
(पत्र १४ ४७-४ ७१)। २ देव-पूजा
(छाया १ १)।
आगर क [आग] जागत, निज-व्याग
करता। बायर (पठ)। बह जागरमाय
(नि ७०१६)। हेर जागरिचय, जाग-
रचय (कर्म मम)।
आगर रि [आगर] १ जानेवाला पाया
(भाषा कर्म या २५)। २ पुं बायर
निज-व्याग (मुस १८७ मम १२ २ मुर
११ २७)।
आगरपु बि [आगरि] जानेवाला
(या २१)।
आगरि रि [आगु] बाध हूया निज-
रहित प्रकृष्ट (छाया १ ११२ या २४)।
आगरि रि [आगरि] निज-रहित (भा
१ २)।

आगरिया की [आगरिका जागया]
बायरण निज-व्याग (छाया १ १ मीर)।
आगरि रि [आगरि] जागत, जाग-
हूया, जाने के स्वभाववाला (मर्म ११९)।
आजावर रि [यायावर] गमनयोग निजघर
(सम्भट १७४)।
आजा की [र] मुख्य लक्ष-प्रधान (रे १ ४४)।
आज क [हा] जानया ज्ञान प्राप्त करण
समझता। बाण (रे ४ ७)। बह आर्जित
जायनाण (कर्म विना १ १)। सं-
जायिऊण, जायिठा, जायिचु (नि
२७६ महा मम)। हेर जाणि (वि
२७६)। ह जायिअय (मम, वर १२)।
जाण पुं [यान] १ खादि बाहन सवार
(बीज पण २ ४४ ४ १)। २ यान
वाय नीरा बहान भाए संसारमुहाण
बहुत बाण (पुन १७)। ३ यमन गति
(पठ)। पच वचन न [पात्र] पहान
बीका (मर्म २ मुर ११ ११)। माळ की
[याळा] १ लोहा प्रत्यक्ष। २ बाहुन
बनाते का वास्तव्य (बीज भाषा २ २ २)।
जाण न [ज्ञान] ज्ञान, बीम समझ (मम
मुसा)।
जाय रि [जानम्] जानता हूया ‘जाए
कण्य छाट्टी’ (मम १ ३, १)। मापु
परखेण बाणया (भाषा)।
आपद की [जानधी] बीका चदनली
(पत्र १ १ १८ से १ १)।
आगग रि [प्रायक] पालनार, मारी
बालन-ता (मुस १ १ १)। महा मुर
१ १२)।
आगगी रेवो जागद (पत्र ११७ १८)।
जायय न [र] बध, पुनरी में ‘जान’
‘जो ठहराएण सुविधोपति पाणजगदी’
(उर २६७ टी)।
जायय न [ज्ञान] जानता जानारी
समझ, बीम (रे ४ ७ उर २१ मुसा
४११)। मुर १ ७१ रमर १४ महा)।
जाणयया } बी, ऊपर रेवो (उर २११;
जागया } विने २१४५ बाण पाण)।
जायय रेवो जायग (भा मरा)।

आपय वि [आपय] ज्ञानेयता, समग्रते
नामा (वीर) ।
आपयया श्री [ज्ञान] ज्ञान समय, कामकारी
‘एषि पयसं आपययत् सर्वलयाय’ (मन्) ।
आपयय वि [आपयय] १ पय में लयल
देव-संघी (मन् लया १ १—पय १) ।
आपय सक् [आपय] ज्ञान करण
जन्म । आपयय वयस्येय (मुपय मन्) ।
हृह आपयविजं आपयवेजं (वि १३१) ।
हृ आणावयस्य (उप २२) ।
आपयय न [आपय] ज्ञान, जीवन (पय
११ न मुप ११) ।
आपययया श्री [आपय] विद्या-विशेष
आपययया (उप ४२, मन्) ।
आपययि वि [आपय] ज्ञान विज्ञात
मात्र करण, निवेदि (मुप १३१
पय) ।
आपि वि [आपि] ज्ञान ज्ञानकार (मुप) ।
आपि वि [आपि] ज्ञान हुआ विधि
(मुप १२४ ७ २२) ।
आपु न [आपु] १ बौद्ध, मुप १ । २ ठ
वीर वय हा वय वय (उप निर १, २,
छाया १ २) ।
आपु { वि [आपु] ज्ञान ज्ञान ज्ञान
आपु { ज्ञानकार (उप १ ४ छाया १
११) ।
आप य [आप] ज्ञानेय-मूलक ज्ञान
नामा (मि ११) ।
आप मय [आप] ज्ञान करण, लय
वय । आपय (माट—पय) ।
आप पु [आप] १ प्रह, लीन वय का
समय (मन् ४४ मुप १ २२२) । २ वय
मिना मय पय वय । ३ वय विद्येय
माट मय वय मय मय माट वय माट वि
मय वय वय वय मय (माप) । ४ वि वय
मय वय मय वय (मुप ४ ५) । ५ वि
वि [पय] १ प्रह (हृ १ १३६) ।
२ पु प्रह पय वय, मय (मुप ४
५) । ३ वय [वि] वय वय
वि (मुप ४ ५) । ४ वय [वि] वय
वि वय (मन्) ।

आप येओ आप = पाय (पाप ११) ।
आमाह येओ आमाह (वि ४२४) ।
आममहाय न [आममहाय] प्रहिकर
पयवरी (मुप २, ११) ।
आमाह { पु [आमाह, क] ज्ञान
आमाह { ज्ञान, वय वय पय (पय
४५ ४ हृ १ १३१ मा १३१) ।
आमि श्री [आमि, यमि] वय वय
(पय) ।
आमि येओ आमि (मन् ११३) ।
आमि पु [आमि] प्रहिकर पयवय,
पय वय (उप ४१३) ।
आमि श्री श्री [आमि] पय, पय (उप
७२२ टी) ।
आमि येओ आमि (मुप १२४ २२१) ।
आमि पु [आमि] ज्ञान, मय, मय, मय,
मय मा पु (मन् १२२) ।
आय सक् [आय] ज्ञान करण मय ।
वय ज्ञान (मन् १३) । वय ज्ञान
ज्ञान (पय १ १३) ।
आय सक् [आय] ज्ञान करण मय ।
वय ज्ञान (मन् १३) । वय ज्ञान
ज्ञान (पय १ १३) ।
आय येओ आय (छाया १ १) ।
आय वि [आय] १ ज्ञान, जो पय हुआ
हो (छा १) । २ न वय, पय (वि
४) । ३ वय मय (छा १ नि १३) ।
४ वि प्रह (वीर) । ५ पु वय पु
(मय १, १३ मुप २०६) । ६ न वय
ज्ञान नय वय वय वय वय पु
वय (मुप २६) । ७ वय ज्ञान
(छाया १ १) । वय न [वय]
१ प्रहिकर (पय १ १) । २ वय
वि (मन्) । ३ पु [वय] वय,
वय (मय २) । ४ वय श्री [नि] वय
वय वय श्री (मय १ २) । ५ वि [वय]
वि [वय] वय वय वय (मय १ १) ।
६ वय [वय] १ वय वय वय (वीर) ।
७ वय वय (उप २३) । ८ वय
वि (मय १२) । ९ वय पु [वय]
वय वय (मय १२) ।

आय वि [आय] पय, वय हुआ (मय १
१ १) । २ वय (मय १ १) । ३ न
वय वय (माप) ।
आय पु [आय] वय वय वय वय
(पय—माप २४) ।
आय वि [आय] १ वय वय । २
पु, वय (मा २३ मुप ४१) ।
आय वि [आय] वय वय वय (उप
२६, १) ।
आय न [आय] वय, वय (मा
१४ प्रति ११) ।
आय न [आय] वय, वय (मन्
१ २) ।
आयया श्री [आय] ज्ञान ज्ञान
ज्ञान (उप १३ १३ मय ४,
उ २२१) ।
आयया श्री [आय] वय वय वय
(पय १ १) ।
आयया श्री [आय] ज्ञान वय वय
(उप ४ १) ।
आयया श्री [आय] वय वय वय
वय वय (छाया १ १३ वय २ २६) ।
आयया श्री [आय] निवेदि, वय, वय ।
मय वि [माय] वय वय वय वय
वय वय वय वय वय वय वय
न वय न (वि ४५१) ।
आयया श्री [आय] श्री वय (उप १
मुप १३६) ।
आय येओ आय (मन् २, ४ मुप १ ७) ।
आयया श्री [आय] वय वय वय वय
वय वय (मय १ २) ।
आयया पु [आयया] वय वय वय
वय वय वय (उप २५ १) ।
आय पु [आय] १ वय, वय (हृ १ १००)
२ वय का वय वय (वीर १) ।
आयया वि [आयया] वय येओ (मय) ।
आयया वि [आयया] वय वय वय
(हृ १ २२२) ।
आयया वि [आयया] वय वय, वय
वय वय वय वय वय (हृ ७) ।
आयया वि [आयया] ज्ञान वय वय
वय वय वय वय वय वय वय
(मन्) । ४ वयया वि (मन्) ।

जास न [जास] १ समूह, संघट (गुर ४ ११४) स ४४१) । २ माता का समूह नाम निरु (पय) । ३ बाणेश्वराने धिरो से युद्ध शरीर, गजद-विरोध सरोबा (वीर) लाया १ १) । ४ मझली बरैख पम्पने का पात पस्त-विरोध (पण्ड १ १) । ५ मझली बरैख पम्पने की बात पस्त-विरोध (पण्ड १ ४) । ६ पौर का धानुपण-विरोध बना (पौन) । कजरा पुं [पजक] १ सन्धिग्र गजालों का समूह । २ सन्धिग्र गजाल-समूह से बरैख प्रवेष्ट (वीर १) । घरा न [गृहक] सन्धिग्र गजालबाता मझन (पय) लाया १ २) । पंजर न [पंजर] मझन (वीर १) । हरन केही घरा (वीर) ।

जास पुं [जास] काला बनिन-विरोध बाग की सपट (गुर १ १००) की १) । जालंदर न [जासलंदर] सन्धिग्र गजाल का मध्यमान (घन ११०) ।

जालंदर पुं [जासलंदर] १ पंजाब का एक स्वतन्त्र-काल गुर (सिं) । २ न लोक-विरोध (घन) ।

जालंदरपय न [जासलंदरपय] लोक-विरोध (घापा २, ११) ।

जासना केही जास = काल (पण्ड १ १, १३) कीन लाया १ १) ।

जासना पुं [जासक] कीनिय जीव की एक बरि मझी (घन ११ ११) ।

जासपडिजा की [ज] बजराबा, बगुलिया, सटरी (१ ४१) ।

जासय केही जास = जान (सट) ।

जालपमी की [ज] संशय समान बजरा पुनपनी में 'जासल' (किरि १०६) ।

जास्य की [जास] १ धनिन की मिया (घापा गुर २ २४१) । २ मयम बजमरी की माला (मय १२२) । ३ मयमल बजमय की रामनेनी (सिं १) ।

जास म [२४१] जिस समय जिस बात में-काला बजमरी दुगा बाग है लदियपुदि केपनि (१ १ ११) ।

जास्य पुं [जासपु] कीनिय पन्नु-विरोध मझी (घन) ।

जासय सक [जासय] कालना बाह देला । नह जासयत (मझनि ७) ।

जासयिज वि [जासयिज] काला दुगा (गुप १०६) ।

जासि पुं [जासि] १ राजा मेथिक ना एक पुन, जिसने मझन मझीर के पास बीशा की थी (पण्ड १) । २ बीहण्य का एक पुन, जिसने बीशा से कर लुनक्य पर्वत पर बुलि पाई थी (सं १४) ।

जासिय पुं [जासिय] बाल-बीषि बाणिक बहिया बिरोमार (पण्ड) ।

जासिय वि [जासिय] काला दुगा पुन-बाग दुगा (ज ४ १२७ टी) ।

जासिया की [जासिया] १ कन्नुक (पण्ड १ १—पय ४४१ पण्ड) । २ कण (पय) ।

जालुगाल पुं [जासलुगाल] मझनी पम्पने ना सासन-विरोध (पयि १०३) ।

जास केही जासय (घापा २, २, १ १) ।

जास सक [जासय] १ पयन कणल दुगा रना । २ बजमय । ३ शरीर का प्रतिपादन करना । बास (घापा) । बास (१ ४ ४) बास (सुप १ १) ।

जास थ [जासय] इन धनों का वृषक मध्यम—१ परिमाण । २ मयस । ३ पम्प-कारण निम्न 'जासय' परिमाण मझास-एकपाणो बे' (बिं १२११) सास १ ७) । जीव की न [जास] जीव पर्वत (घापा) । की या (बिं १२१० वीर) ।

जीबिय वि [जीबिय] बासजीव-संकेती (१ ४४१) । यही जास ।

जास पुं [जास] मम ही मम बार बार देवता का स्मरण मम ना उबारण (गुर १ १०४१ गुप १०१) ।

जासय पुं [ज] बज-विरोध (पण्ड १—पय १४) ।

जासय वि [जासय] विना, 'जासय' बजलुगाल (मय ४४१ मय १४) ।

जास-की [जासपरी] १ कन्नु-विरोध (ज ११ १००) गुप ११ १००) । २ गुपलनसि की एक जासि (सट १—पय १४) ।

जासय पुं [जासपरीक] कन्नु-विरोध (घन १० १००) ।

जास केही जास (पयम १० १) । 'जास' थ [जासय] १ गणित-विरोध । २ गुणकार (ठा १) ।

जासय केही जासय (मय १ १) ।

जासय केही जासय = मायक (सति १) ।

जासय न [जासय] १ विनामा पुनरना । २ बुर करण हयना (ज १२ टी) ।

जासया टी [जासया] ऊपर केही (ज १०२ टी) ।

जासयिज वि [जासयिज] १ बी बीताया बाय पुनरने योग । २ जल-मुक्त 'जास' यिवाय 'ठिरीरिम' (पकि) । तंत न [जासय] पन्नु-विरोध (मय २) ।

जासय वि [जासय] १ बीतायना । २ पु ल-जास-मयिज कल-लेक हेतु (ज ४ १) ।

जासय वि [जासय] बीतायना विनामा 'जासय' (पकि) ।

जासय पुं [जासय] मयमल घमता माव का रं (सट १०१) ।

जासयिज वि [जासयिज] १ बाम्बे दुनार कलेनाबा (सट १) । २ बास-बाह्य (पय २१०) ।

जासिय वि [जासिय] बीताया दुगा (पण्ड १ १०) ।

जास पुं [जास] विना-विरोध (पय) ।

जासुमय । पुं [जासुमय] १ कल जासुमय । का दुगा पुनपन (पण्ड १ जासुमय) । लाया १ (१) । २ न बाग बा दुन (पण्ड १ १; मय) ।

जासय पुं [जासय] बज-विरोध विनाम शरीर में काहे होते हैं, सटरी या साहिन (पण्ड १ १ बिं १४२४) ।

जासय न [जासय] सटरीन बासविना (बिं १२०६) ।

जासयन केही जास-संन 'जासयनमयिज' निपय' बाह्यापी यं (ज १०६) ।

जास थ [जास] विन कनय न (१ १३; मय १ १०) ।

जि (घा) केही पय-पय (१ ४ ४२ गुप-बना १४) ।

जिम्ब मरु [जीव] जीवा ग्राम-भारण
करता : जिम्ब, जिम्ब (दि १, १ १)। नक-
सिर्वात (प १२७)।

जिम्ब पु [जीव] ग्राम्या, ग्रामी जीव (पुर
२ ११३) जी १ ग्राम्य ११४ ११)।
छेज पु [छेज] छेज, छेजिया (पुर
१२ १२३)।

जिम्ब न [जित] जीत वन (ग्राम्य ७)।
गासि नि [गसि] जीत वन होनेवाला
विजेता (मन्त्र २१७)। सप्त पु [शप्त]
शप्त-विता वा वातकार वृक्ष (उप-
विचार ४७३)।

जिम्ब नि [जित] १ जीता हुआ पशुपुत्र
पशुपुत्र (कुमा पुर १ ३२)। २ परिचित
(वि १४२)। प्य नि [प्य] जिम्ब
जिम्ब धर्मो (पुरा २७६)। माण पु
[मान] पशुपुत्र का एक पशु एक
संस्कृत (पञ्च ३ २३६)। मनु पु
[मनु] १ मनुष्य प्रविष्टा का पिता
(मम १३)। २ मनुष्य (महा वि १
३)। सेण पु [सेन] १ जीव धारक-
विशेष। २ मनुष्य-विशेष। ३ एक पशुपुत्र
पशु। ४ स्वनाम-व्युत्पन्न एक पुत्र (उप-
विचार १३)। ५ भगवान् स्वनाम-व्युत्पन्न का
पिता (मम १३)।

जिम्बना जी [जिम्ब] जीव-विशेष (पण्य
१)।

जिम्ब नि [जातवन्] जात-जात (पण्य
१ १)।

जिम्बिष [जि] जिम्बिष जिम्बिष को
जिम्बिष [जि] न म पशुपुत्र धर्मो
(पञ्च १३ ३६ २३७)।

जिम्ब सक्त [जि] जीवता वक्त होता। कृ
जिम्ब [जि] (वप)।

जिम्ब न [ग्राम] जीवता वक्त होता (प
२७७)।

जिम्ब जी [ग्राम] कृषि जीव (पण्य
१ १)।

जिम्ब नि [ग्राम] जीवता वक्त होता।
जिम्ब पु [जि] कृषि जीव जिम्बिष-
वर्ण (पण्य १ १)।

जिम्ब पु [जि] कृषि जीव (पण्य १३)।
जिम्ब } जीव जीवता। जिम्ब (ग्राम
जिम्बा) २४१)। नक. जिम्बाजीत (प
११ १)।

जिम्बिया जी [जिम्बिया] कृषि, कृषि
पुत्र जिम्बिया (पुरा २७६)।

जिम्बिया जी [जिम्बिया] वन की वृक्ष
(पुरा २७६)।

जिम्बिष जी [जिम्बिष] जिम्बिष (पण्य १)।
जिम्बिष नि [जि] ग्राम जीवता (पण्य
१ १)।

जिम्ब } जीव जिम्बिया = वि।
जिम्बिया } जीव जिम्बिया = वि।

जिम्ब नि [जिम्ब] १ मनुष्य वृक्ष वृक्ष (पुरा
२४४) कृषि ४ ५१)। २ जीव उद्यम।
३ पुत्र वृक्ष जिम्ब निम्ब निम्ब निम्ब
(वर्ण २)। मृष्ट पु [मृष्ट] जीव वृक्ष
विशेष (पण्य १७)। मृष्टी जी [मृष्टी]
मृष्ट मनुष्य को पुष्टि (मृष्ट)।

जिम्ब पु [जिम्ब] मनुष्य-विशेष जीव (पण्य)।

जिम्ब जी [जिम्ब] १ मनुष्य मनुष्य की
पुष्टि। २ मनुष्य मनुष्य की पत्नी (पण्य
२३ ७)। ३ मनुष्य-विशेष (पण्य १)। देवो
जिम्ब।

जिम्बिया जी [जिम्बिया] जीव जीव की पत्नी
पत्नी वा देवता (पुरा २७७)।

जिम्बिया जी [जिम्बिया] जीव जीव की पत्नी
(पण्य ७ १)।

जिम्ब सक्त [जि] जीवता वक्त करता।
जिम्ब (पण्य १ २४१ मृष्ट)। कर्ष जिम्ब
पञ्च, जिम्ब (पण्य १ २४२)। नक जिम्ब
जिम्बिष (पण्य १ २४३ पञ्च १११ १७)।

जिम्ब जिम्बिया (पण्य ७ २२)। जिम्ब
जिम्बिया जिम्बिया जिम्बिया जिम्बिया जिम्बिया
(पण्य १ २४३ पण्य १११ १७)।

जिम्ब जिम्बिया जिम्बिया जिम्बिया जिम्बिया जिम्बिया
(पण्य १ २४३ पण्य १११ १७)।

जिम्ब जिम्बिया जिम्बिया जिम्बिया जिम्बिया जिम्बिया
(पण्य १ २४३ पण्य १११ १७)।

जिम्ब जिम्बिया जिम्बिया जिम्बिया जिम्बिया जिम्बिया
(पण्य १ २४३ पण्य १११ १७)।

जिम्ब जिम्बिया जिम्बिया जिम्बिया जिम्बिया जिम्बिया
(पण्य १ २४३ पण्य १११ १७)।

जिम्ब जिम्बिया जिम्बिया जिम्बिया जिम्बिया जिम्बिया
(पण्य १ २४३ पण्य १११ १७)।

जिम्ब (पण्य १)। ४ जीव पुत्र जीव वा
जातकार (पण्य १)। ५ जीव वृक्ष-विशेष,
जिम्बिया जीव। ६ धर्म-जात धर्म-
जिम्ब जातजाता (पण्य ४ ५ ५)। ७
जि जीवजाता (पण्य १ २)। जिम्ब
[जिम्ब] जीव देव (पुरा ५ ५१)। मृष्ट
पु [मृष्ट] एक प्रकार के जीव वृक्ष का
जातकार, जातकार-विशेष (पण्य १, ४ ५१ १)।
कृषि पु [कृषि] एक प्रकार के जीव
वृक्ष (पण्य ११३)। जिम्बिया जी [जिम्बिया]
जिम्बिया का जातकार हुआ वृक्षजात (पण्य
१)। पण्य न [जिम्बिया] जिम्बिया-विशेष (पण्य २,
५ छाया १ १३—पण्य २१)। जिम्ब
[जिम्ब] १ जिम्बिया जीव देव (पण्य १
१ पण्य २३)। २ स्वनाम-व्युत्पन्न जीव जातकार
विशेष (पण्य १२ पण्य)। जिम्बिया जी [जिम्बिया]
जिम्बिया देव की पुत्रा के उत्पन्न में जिम्बिया जात
उत्पन्न-विशेष पण्य-जात (पण्य ७)। नाम
न [नाम] कर्ष-विशेष जिम्बिया प्रकार के
जीव जातकार होता है (पण्य)। पण्य पु
[पण्य] १ स्वनाम-व्युत्पन्न जीवजात-विशेष
(पण्य २३ छाया १३)। २ स्वनाम-व्युत्पन्न
एक जीव वृक्ष (पण्य २ ११३)। पण्य
न [पण्य] जिम्बिया-विशेष-जातकार जात
वृक्ष 'जिम्बिया' जिम्बिया-विशेष जात
जात (पण्य ४ ५१३ पण्य १)। पण्य पु
[पण्य] १ स्वनाम-व्युत्पन्न एक जीव जातकार
(पण्य १)। २ स्वनाम-व्युत्पन्न एक जीव वृक्ष
जातकार, जिम्बिया-वृक्ष का जातकार
(पण्य २)। 'जिम्ब पु [जिम्ब] १ जिम्बिया
देव (पण्य ७)। २ स्वनाम-व्युत्पन्न जीवजात
(पण्य)। ३ एक जीव जातकार (पण्य ४)।
पण्य पु [पण्य] जिम्बिया देव का जातकार
जात जीव जात (पण्य १ २ १ १ १ ७)।
पण्य पु [पण्य] जिम्बिया देव
(पण्य २३३)। पण्यिया जी [पण्यिया]
जिम्बिया देव की पुत्रि (पण्य १ १३—पण्य
२३)। पण्यिया जीव ३- 'जिम्बिया-विशेष' जात
जातकार (पण्य २)। पण्यिया न [पण्यिया]
जिम्बिया देव जातकार जिम्बिया-विशेष जात
(पण्य १३३)। पण्यिया नि [पण्यिया]
जिम्बिया-विशेष जिम्बिया-विशेष जातकार ३

५)। पण्डु पुं [पण्डु] विन-नेव धर्म्म देव (अ १२ टी)। पाणिहरेण [पाणिहरेण] विन-नेव को धर्म्म-नामक देव-कृत प्रयोग कृष्ण धारि पाठ नाम विप्रविद्या। बर्म्म दे-१ मर्याद कृष्ण २ मुद्र-कृत पुन-कृष्टि ३ विष्णु धर्मि ४ चामर ५ विद्वत्पुत्र ६ धामाकृत ७ पुन-विनायक, नक्षत्र (अ १)। पात्रिय पुं [पात्रिय] बन्ना गरी को निचारी एक मोहि-पुत्र (एणा १ २)। त्वय न [विष्म] विन-मृति विन-देव की प्रतिमा (पनि १ वा ७)। मद्र पुं [मद्र] स्वनाम-प्रसिद्ध एक वन धार्या को मुमसिद्ध वैन चम्पकार दीहृतिष्ठ मृति के पुत्र से (मार्थ २८)। मद्र पुं [मद्र] स्वनाम-प्रसिद्ध वैन धार्या वीर चम्पकार (मात्र ४)। मयण न [मयण] धर्म्म मन्तर (पंचव ४)। मय न [मान] वैन हर्म्म (१ वा ४)। माया की [माद्र] विन-नेव की बन्नी (अ ११)। मुद्रा की [मुद्रा] विन-देव जिस तरह से भयो-धर्म में रहते हैं उस तरह शरीर का विन्यास, धामन-विदेव (१ वा १)। यंद् देको यंद् (गुर १ १ मुद्रा ७५)। रक्षिण्यपुं [रक्षिण] स्वनाम-क्यात एक धर्म-वह-पुत्र (एणा १ २)। वर पुं [पति] विन-नेव धर्म्म-नेव (मुद्रा ८६)। यद् की [वाच] विन-नेव की बन्नी (हृ १)। वयन न [वयन] विन-नेव की गणी (अ १)। वयण न [वयन] विन-देव का मुद्र (वीर)। वर पुं [वर] धर्म्म देव (पञ्च १ ४ वा १)। वरिद्र पुं [वरद्र] धर्म्म देव (अ ७७६)। वरुद्र पुं [वरुद्र] स्वनाम-क्यात एक धर्म्म धार्या वीर प्रसिद्ध लोच-मन्त्र (मृग १०)। वनद्र पुं [वपन] धर्म्म देव (पञ्च)। सयद्रा की [मकिय] विन देव की पतिव (अ १ २)। सामयन न [शासन] वैन हर्म्म (उत्त १८ मुद्र १ १ ४)। हंस पुं [हंस] एक वैन धार्या (अ ७७)। हर देको वर (पञ्च ११ ४ मुद्रा १६१ मद्र)। हरिण पुं [हर्ष] एक वैन मुनि (मृग १४)। त्वयन न [त्वयन] विन-देव का मन्त्र (पंचव ४)।

जिण्ड देको जिमिन्द्र 'सम्ये मिलेना मुनिव बर्म्म' (पनि की ४८)। जिण्डकिय पुं [जिनकिय] वैन मुनि का एक देव (१ वा १८ १)। जिण्डग न [जयन] वय वीर (एणा)। जिण्डपह पुं [जिनपह] एक वैन धार्या (टी २)। जिमिन्द्र पुं [जिनमद्र] विन मयपान, पण्ड देव (प्राय २२)। गिह न [गृह] विन मन्त्रि (गुर १ ७२)। चंद् पुं [चन्द्र] विन-नेव (पञ्च १२ १६)। जिण्डय वि [जिण्ड] पण्डु बर्म्म (मुद्रा १२२ एणा २७)। जिमिसर देको जिमिसर (अमल ७९/७७)। जिमिस्तर देको जिमिसर (१ वा १६)। जिण्डयन पुं [जिनायन] विन-नेव (पनि ४)। जिण्ड देको जिमिन्द्र (विष्म २)। जिमिस पुं [जिनय] विन मयपान, धर्म्म देव (मुद्रा २६)। जिमिसर पुं [जिनय] १ विन देव धर्म्म देव (पञ्च २, २१)। २ विष्म की व्याख्या शताब्दी क स्वनाम-क्यात एक प्रसिद्ध वैन धार्या वीर चम्पकार (गुर १६ २१६)। धर्म ७६, पु ११)। जिण्ड वि [जीण] १ पुण्ड, बर्म्म (हृ १ २ वा ४६ प्राय ७६)। २ वना हृया 'विशले भोपछम' (हृ १ २)। ३ हृय हृया (हृ १)। सक्ति पुं [सक्ति] १ पुण्डा छेड। २ योति पद से जुव (प्राय ४)। जिण्ड (परा) देको जिम = विव (विन)। जिण्डासा की [जिण्डासा] बान्ने को हृया (१ वा १)। जिमिन्द्र १ (परा) देको जिमिन्द्र (विन)। जिण्डासा की [जे] हृय, हृय (मात्र ६)। जिण्ड वि [जिण्ड] १ जिण्ड, वीर-नेवना विजयी (माया)। २ पुं पण्डु, मय्य वीर (पञ्च)। ३ विष्णु धर्म्म-पुत्र। ४ मुर्म्म यति। ५ एण्ड वन-माय (हृ २, ७३)।

जिण्ड देको जिम = विव (महा मुद्रा १२५ १४३)। जिमिन्द्र १ वि [यापन] जिमिन्द्र (हृ २ जिमिन्द्र १२५ पण्ड)। जिमिन्द्र (परा) ऊपर देको (कुमा)। जिमिन्द्र (परा) य [यया] अने जिम तरह से (हृ ४ ४ १)। जिम देको जिमिन्द्र (मुद्रा १)। जिमिन्द्र वि [जिमिन्द्र] बान्ने क निद्र हृय बान्ने क निद्र बाह्य हृया (मात्र ७२)। जिमिन्द्र पुं [जिमिन्द्र] पुण्डे वीर हृय-कृत मन्त्र धारि की मुद्रा (मुद्रा ३ ६)। जिमिन्द्र पुं [जिमिन्द्र] एक नरक-स्थान (विष्म १५ २६)। जिमिन्द्र की [जिमिन्द्र] वीर रत्ना (पण्ड २, २ एण्ड १८६ टी)। जिमिन्द्र वि [जिमिन्द्र] रत्नोन्मय वीर (अ ४ २)। जिमिन्द्र की [जिमिन्द्र] १ वीर। २ वीर क धार्या-वैरी वीर (अ ४)। जिम एक [जिम, मुद्र] वीरना वीरना करना बान्ना। जिम (हृ ११ पण्ड)। जिम (परा) देको जिम (पण्ड धर्म)। जिमयन [जिमन वीरना] वीरना वीरना (मा ११ वीर ३६)। जिमयन [जिमन] विमला, वीर (धर्मि ७)। जिमयन वि [जिमिन्द्र, मुद्र] १ जिमिन्द्र वीरना हृया हो बह (पञ्च १ १२७ मुद्र १२५ मद्र)। २ वीर बान्ना यया हो बह मीण्ड (हृ १, ४१)। जिम देको जिम = विव। जिमिन्द्र (हृ ४ २१)। जिमिन्द्र पुं [जिमिन्द्र] १ वीर-विदेव जिमिन्द्र बान्ने से प्रायः एक बर्म्म एक वीरना में विम-नाम रहती है (अ ४ ४-पञ्च २०)। २ वि. मुनि कयटी माया (अ ७१)। ३ मय, वयन (अ २)। ४ न. माया कयटी (अ २)। जिमिन्द्र न [जिमिन्द्र] मुद्रिण्डा पण्डा माया कयटी (अ ७१)।

सिच केओ जीव भावारइ इहं यीशोयी बसम्भा
बन्ध विचयमा तुमए (बर्चसि २)।

जिर्वे १ (अप) केओ सिच (हुमा पद् ६
सिह ४ ११७)।

जिह्रा केओ जीह्रा (पद्)।

जीम केओ जीय = जीप्। जीय (पा १२४
६ १ १)। नक जीमंत (सि ३ १२
पा १६)।

जीम केओ जीव = जीव (पद)। १ पली
बन (सि २, ७)।

जीम केओ जीविज (६ १ २७१ प्राप्ता सुर
२, २१)।

जीम न [जीम] १ भावार, रिजल अवा कदि
(बीन पद्, गुपा ४१)। २ प्रामाणिक है
सम्बन्ध रखनेवाला एक ठण्ड का रिवाज
बैल लुनों में ठण्ड ठण्डि से किन्ना ठण्ड के
प्रामाणिकों वा परम्परागत आधार (ठा ३,
२)। ३ आधार-विशेष का प्रतिपत्तिक रूप
(ठा ३ २ ब १)। ४ मर्यादा, स्थिति
स्मृत्या (संवि)। कम्प दु [कम्प] १
परम्परा से प्राप्त आधार। २ परम्परागत
आधार का प्रतिपत्तिक रूप (पंका ६ बीठ)।
कपियस वि [कपियस] बीठ कपयसत्ता
(अ १)। चर वि [चर] १ आधार
विशेष का आधार। २ स्थापन-स्वात एक
बैठपाय (संवि)। वक्कहार दु [वक्कहार]
परम्परा के अनुसार व्यवहार (बर्च २,
पंका १६)।

जीमगा केओ जीमग (सं-विठ २१)।

जीमव वि [जीमवत्] बीमवत्ता
बीठ बीमवत्ता (पद् ६ १)।

जीमा की [जमा] १ लुप को गोर (गुमा)।
२ दुर्गती भूमि। ३ माता कन्या (सि २,
११३; पद्)।

जीम न [दे अजिन] बीम, मरल बी पीठ
पर लिप्या माया बर्चमय मायन (पंका ४४)।

जीमूअ दु [जीमूअ] १ मैम कर्वा (पादा
पद)। २ पैम-विशेष मिहले कर्कसी से
कर्मन पठ कर्च तक विचरती खूनी है
(अ ४ ४)।

जीर केओ जर = दु।

जीरण न [जीर्ण] १ क्षम पाक। २ वि
पुराण, पंका हुमा 'अनीरु' (सि २७)।

जीरय न [जीरक] बीरय मसाला-विशेष
(सुर १ २२)।

जीरय सक [जीरय] पचाला। बीरय
(कुप २१६)।

जीव पक [जीव] १ बीना प्रमत्त कापड़
करना। २ सक-आपय करना। जीवह
(हुमा)। नक जीर्वय जीवमाण (विपा
१३, लप ७५५ टी)। ३ जीविर्ह (अवा)।
संक्र-जीविज (पाठ)। ४ जीविजक
जीवपियज (सुर १ ७)। अथो जीवविर्ह
(सि ३३२)।

जीम पुव [जीव] १ भद्रमा केतव प्रमोही
(अ १ १; बी १; गुपा २१३) 'जीवार्'
(सि ३१७)। २ बीरय, प्रमत्त-कापड़
'जीवोति' बीवले पाठकापड़ जीवविर्ह
पकमा' (सि ३३ ८, कन १)। ३ दु-
हृत्सति सुप-दुप (गुपा १ ८)। ४ नव
पञ्चम (का २ १)। ५ केओ जीव =
बीव। कय पु [कय] बीव-पति
बीम-बन्धु (सुर १ ११)। माह न
[माह] किन्ने को पकड़ना (खारा २)।
पिकय पु [पिकय] बीव-पति (अ
१)। पिकय पु [पिकय] बीव
पुद्ग, बीव-पति (अ १ १; अणु)। ६ य
वि [य] बीवित केनेला (सुर १)।
यमा की [यमा] प्राति-यमा, दु-बी बीव
का पुक से पण्ड (पद् ११ २)। 'देव पु
[देव] स्थापन-स्वात प्रसिद्ध बैल आधार
बीर अन्तरा (गुपा १)। पयस पु
[प्रदेशाजीव] बर्चमय प्रदेश में ही बीव की
स्थिति को माननेवाला एक बैलगात घर-
मिह (पाठ)। पयसिय पु [प्रदेशिक]
केओ पूर्णक पर्व (अ ७)। डोग 'डोय
पु [डोय] १ बीव-पति, प्राति-बीक
बीव-पद्ग (अवा)। 'विचय न [विचय]
बीव के स्वरय वा पिपल (पाठ)। 'जिअति
की [जिअति] बीव का घेर (अ ११)।
'मुर्दिय न [मुर्दिय] पण्ड, संपति,
पण्डति (संवि)।

जीव न [जीव] घाट रिन का बछर
अवास (संघोष १५)। 'विस्ति दु
[विस्ति] बही पर्व (संघोष १५)।
जीव-जीव पु [जीवजीव] १ बीव-कय घण-
पण्डपय (अ २, १)। २ बछेर-पही
कका (अव)।

जीवंत केओ जीव = जीप्। मुक पु [मुक]
बीवमुक, बीव-कय में ही संघ-कय से
मुक म्हापया (अणु ४७)।

जीवमा पु [जीवमा] १ पति-विशेष (अ
२ ८)। २ गुप-विशेष (सिच)।

जीव-जीवमा पु [जीवजीवमा] बछेर पही,
कका (पद् १ १—पंका ८)।

जीवण न [जीवन] १ बीना विचरी (सि
३३२१; पक ८ २३)। २ बीनार,
माजीविका (अ २२७ ३१)। ३ वि-
विमलेला (अव)। 'विस्ति की [विस्ति]
माजीविका (अ २५४ टी)।

जीवमजीव पु [जीवजीव] बैल बीर न
पराय (पानन)।

जीवमजीव केओ जीव-मुक (अव १११)।
जीवमजीव की [दे] मुकों के घाटपंठ के
घाटन-पुव आन-पुवी (६ १ ४६)।

जीवा की [जीवा] १ लुप को गोर (अ
३ ४)। २ बीन बीन (सि ३३२१)।
३ लेन वा विचम-विशेष (अ १ १)।

जपाउ पु [जीवाउ] विमलेला बीव,
बीवनीपय (हुमा)।

जीवाविच वि [जीविच] विचाला हुम (अ
७ १ टी)।

जीवि वि [जीविम] बीवलेला (अ ८४)।

जीविम वि [जीविम] १ बी विमा हो।
२ न बीवित बीव, विचरी (६ १ २७)।
प्रम)। 'मह दु [नाय] प्रम-पति
(गुपा ११३)। रिसिक की [रिसिक]
कमसति-विशेष (पद १—पंका ११)।

जीविमा की [जीविमा] १ धात्रीविक,
विहि-साक हति (अ ४ २; अ २१८
खारा १)।

जीविओससिय वि [जीविओससिक]
बीव में अणु के गुण, बीवलेला क
बनान (अ २, ११; अणु)।

जेठ देखो उद्धृष्ट (ति ११) ।

जेष्ठिअ [जि] मावन् [जिता] (हे २

जेष्ठिअ [११७; पा ७१; बहः) ।

जेष्ठिअ (ही) ऊपर देखो (पाठ २५) ।

जेष्ठुअ } (पा) ऊपर देखो (हे ४ ४१३) ।

जेष्ठुअ

जेह देखो जेष्ठिअ (हे २ ११; प्राप्) ।

जेम अक [जिम् गुम्] जीमन करता ।

जेमर (हे ४ ११ पाठ) । वह जेर्मत

(पत्र १ १ ४३) ।

जेम (पत्र) य [यवा] जेने तिन तह छे

(गुण ३४३ अर्थ) ।

जेमम } न [जेमन] जीमन जीमन (घोष

जमपा) = जेमि ।

जेममय न [हे] बहिष्ठ अर्थ, गुणगती के

'जम्मु' (हे १ ४६) ।

जेमपी जी [जेमनी] जीमन (संयोग

१७) ।

जेमावज न [जेमन] जीमन करता जिमाव

(धन ११ ११) ।

जेमापिय नि [जेमिअ] मोहित स्थिति

जीमन करना दया हो वह (उप ११६ टी) ।

जेमिय नि [जेमिअ] बीमा हुवा मिलने

भोजन किया हो वह (छाया १ १—पत्र

४१ टी) ।

जेमम् देखो जेमि = नि ।

जेव (ही) देखो जेव = एव (रत्ना कण्ठ) ।

जेव (पत्र) देखो जेव (हे ४ १६७) ।

जेवह (पत्र) देखो जेष्ठिअ (हे ४ ४७) ।

जेवज (ही) देखो जेव = एव (ति नाट) ।

जेह (पत्र) नि [पाहम्] बेधा (हे ४

४ २ पत्र) ।

जेहिअ पु [जेहिअ] स्वतन्त्र पत्र एक पैत

मुनि (कण्ठ) ।

जो } अक [टार] देवता । जोड़ (कण्ठ) ।

जोम } एवाहु बर्बरके नीचे गुह गुह

केण (गुण १ १२६) । जोषि (घ १६१) ।

नर्म जोमर (रत्न १२) । वह जोर्मत

(बन्ध ११ टी; महा, गुण १ २४७) ।

नवर जाडर्मत (गुण २७) ।

कमा । जोड़ (गुमा) । गुमा जोड़

(पत्र) । वह जोर्मत (गुमा महा) ।

जोम अक [धावम्] प्रकटित करना ।

जोय (गुण १ १ ११) । 'उत्सवि य

गिहं पुण वासपयिमा जोय दुहिया' (गुण

१११) । जोयना (विने ११२) ।

जोअ अक [योजम्] १ समाप्त करना

कृतम करना । २ करना । जोय (गुण

१ १२—पत्र १४, १८६; गुण ११—

पत्र २१३) ।

जोअ अक [योजम्] जोड़ना बुझ करना ।

जोय (महा) । वह जोहयम् जोयमम्

जोयपिय जोयणिअ (अ ११६; घ

५६) । जीन निह १) ।

जोअ पु [हे] १ पत्र चक्रमा (हे १ ४८) ।

२ गुण गुण (छाया १ १ टी—पत्र

४६) ।

जोअ देखो जोम (अर्थ २३, घ १११;

गुमा) । वहय न ['चक'] चूर्ण-विरोध

पावक चूर्ण, हावमा (घ २१२) ।

जोअगण [हे] देखो जोहगण (अर्थ) ।

जोअग नि [धावक] १ प्रकटनेवाला २ न

प्राकट्य-प्रतिष्ठ निपात नदेख पत्र (विने

१ १) ।

जोअह पु [हे] लघोय कीट-विरोध बुझ

(बह) ।

जोअग न [हे] जीमन लेन वह, अर्थ

(हे ३ २) ।

जोअग न [योजन] १ परिमाण-विरोध नार

कोय (अर्थ १६) । २ अन्वय संयोग जोड़ना

(स्वाह १ १) ।

जोअग न [योजन] गुणावस्था, लघुता

नवाणी (अर्थ १४२ टी गा १६७) ।

जोअगा टी [योजना] जोड़ना संयोग

करना (अर्थ १११) ।

जोआ जी [यो] १ स्वर्ग । २ धाकत

(पत्र) ।

जोआवहण नि [योजयिअ] जोड़नेवाला

संयुक्त करनेवाला (छा ४ १) ।

जोअ नि [योजिअ] १ बुझ, संयोगवाला ।

२ निपात-विरोध करनेवाला, समाधि नवाले

वाला । ३ पुं मुनि बधि, छात्र (गुण २१६)

२१७) । ४ रामचन्द्र का स्वयम-व्याप ह

गुण (पत्र ६० १) ।

जोअ पु [योविस्] १ प्रकट, देव (स्व

छा ४ १) । २ धर्म बधि 'अर्थ' अर्थ

बधा पविर् जोमग्ने' (गुण १ ११) ।

प्रदीप धर्म प्रकटन वस्तु 'बधा वि पने अ

वाहण' (गुण १ १२) । ४ धर्म वा

काम करनेवाला कर्मज्ञ (अर्थ १७) ।

५ वह नवज धर्म प्रकटन पदार्थ (अर्थ १)

६ ज्ञान । ७ ज्ञान-बुद्धि प्रसिद्धि-बुद्धि ।

८ स्वर्ग-कारक (छा ४ १) । ९ स्वर्ग ।

१० वह नदेख का विमात (अर्थ) । ११

योविस्-वाक (तिर १ १) । अंग पु

['अ'] धर्म का काम करनेवाला वस्तु

बुझ-विरोध (छा १) । रस न ['रस']

रस की एक भावि (छाया १ १) । देखो

जोहस = योविस् ।

जोहस पु [हे] कीट-विरोध लघोय, बुझ

पानीजमा (हे १ ११) ।

जोहस नि [टट] देहा हुवा निर्मोह (अर्थ

१ १७) महा धर्म) ।

जोहस नि [योजित] जोड़ा हुवा (अर्थ

२२४) ।

जोहस देखो जागिय (अर्थ) ।

जोहगण पु [हे] कीट-विरोध, हन-नोत (हे

१ २) ।

जोहस पु [योविच्छ] प्रदीप धर्म प्रक

टन पदार्थ 'नि वृत्त वृत्तादिभ्ये वाहर्त्त-

तर् नवेधोयि' (रत्ना) ।

जोहस पु [हे] योविच्छ १ प्रदीप दीप

(हे १ ४२ पत्र ४-अर्थ ७) । २ प्रदीप

धर्म का प्रकट (अर्थ १११) ।

जोहपी जी [योहिनी] १ योहिनी वस्त्र-

सिन्धी । २ एक प्रकार की कीट योहिनी है

(अर्थ ११) ।

जोहस नि [हे] स्वमित (हे १ ४६) ।

जोहस न [हे] लघु (हे १ ४६) ।

जोहस देखो जोह = योविस् (अर्थ १) कण्ठ

विने १८७ । जो १: छा १) । राह पु

['राह'] १ सुर्व । २ कण्ठ (गुण २ ११) ।

स्वय पु ['राह'] सुर्व धर्म रस (अर्थ

१६) ।

सोपन्न नि [४] मसिद्ध पराचिद्ध (दि ४
४४)।

आग ईश्वर आगगा इय सो न एत्व पोयी

उत्पत्ति-स्थान (टा ७) । ४ श्री-चम्पू वय
(मण) । [पद्याय न विविधान] प्रत्यति

राज (विने १७७१)। मूल न [शुल] योनि कम एक राग (सम्प १ १६)।

ओगिय वि [योनिङ पयनिङ] यनार्य षट्-विशेष स उत्पन्न। श्री या (इक योनि स्यात् १ १-यम १७)।

ओणसुखिया श्री [दे] यम-विशेष बुधारि (वि १ ५)।

ओण्ड वि [योस्तन] १ मूल, धल 'कबो बा ओण्डो बा केसुमारोण्ड पंढर' (बुध १३)। २ दु मूल पद (को ४)।

ओण्डा स्त्री [योस्तना] यम-अकार (पह १ १७)।

ओण्डा वि [योस्तनायन] योस्तना यत्ना यन्त्रियुक्त (दे २ १३३)।

ओण देवो जुच = मुक्त (बुध १ १)।

ओण } न [योक्त्र क] ओण रस्ती या
ओणय } यमके वा ठस्ता त्रिषले केव वा
पोदा, बाड़ी या हल में ओण जाणा है
(पह २ ३, मा १३२)।

ओव कैओ ओज = हट। ओवह (गह १ मंवि)।

ओव पु [दे] १ किनु। २ वि स्तोत्र मोड़ा (दे १ ३२)।

ओव न [दे] १ यम कम 'माउमोवण'।

(योव १ मा)। २ यम कम मयन धम-मयन (योव १ धा)।

ओवारि स्त्री [दे] यम-विशेष बुधारि (वि १ ५)।

ओविय वि [एत] विभक्ति (स १४७)।

ओविय न [योवन] १ वास्य बचानी (प्राय कय)। २ यम माव (सि २ १)।

ओवयगीर } न [दे] यम-परिणाम बुद्धय
ओवयगिरे } बुद्धय 'ओवयगीर' उक्त-
लक्षणे वि विविधियाण पुनिषाण' (वि १ ३३)।

ओवयणिया स्त्री [वीचनिक] यीचन, बचानी (यम)।

ओव-ओवय न [दे] बुद्धय, बुद्धय यव (वि १ ३३)।

ओस कैओ सुम = बुध। यह ओसंत (राव)। प्रभो चंद्र ओसियाण (यम ७)।

ओस पु [मोप] यवयान यव (युय १ २ ३ २ डि)।

ओसिज वि [मुप] विविध (युय १ २ ३)।

ओसिआ स्त्री [योपिण] स्त्री यक्षिणा गरी (यम कर् २)।

ओसिपी कैओ ओण्डा (यमि १३)।

ओह यम [मुप] यत्ना। ओह (मंवि)।

ओह पु [योव] बुध- योडा (वीच बुमा)।

हाण न [रवान] बुधों कम बुध-करीय लीर नियम, यम-रवान-विशेष (अ १ किनु २)।

ओहणा कैओ ओण्डा (मं ७१)।

ओह स्त्री [योधा] बुध-परिचर की दह पाठि (युय २ १ २३)।

ओहार यम [दे] बुधारा ओहार यम, प्रमाण करना। कम ओहारियव (यम २३ १३)।

ओहार पु [दे] ओहार, प्रमाण (यम १८)।

ओहि वि [योधि] लक्षणाया, बुध (यम ७१)।

ओहि वि [योधि] लक्षणाया लक्षणा (यम)।

ओहिपा स्त्री [योधि] बंधु-विशेष हल से लक्षणाया एक प्रकार की धर्म-वादि (वीच २)।

ओज } (वी) य [दे] यवयान-लक्षणा
ओज } का लक्षणा यमय (प्राय ३५)।

ओव } (वी) कैओ यम = यम (वि ११)।
ओव } ५)।

यमय कैओ मूड। यमय (दे ४ ११ डि)।

यमयरायि वि [दे] लिखित लिखत-प्राय (यम)।

॥ इम विरियायसदमहण्णमि अयापसदसंयसलो
ओलहो लरंओ समरी ॥

मं

मं पु [मं] १ वात-स्त्रीय यमयन यलं मिरेन (यमा प्राय)। २ यम (विने ११३)।

मंवार पु [मंवार] बुध वरैय की यमाय (गुर १ १५: यमि यल)।

मंवारिज न [दे] यमयन बुध वरैय वा यमाय का बुधन (वि १ ३६)।

मंय नक [दे] स्त्रीवार यत्ना। मंयह (यम) (किरि १४)।

मंय यम [मं + यम] यंयत होना, संवार करना। मंयह (दे ४ १४)।

मंय यम [मि + यम] लिखत यत्ना, यवयान यत्ना। मंयह (दे ४ १४)।
यह मंयन (बुमा)

'यमयायापी नहिनीयुपी यंयत मरेठ' (एत बु)।
योयोवि यमय मंयवि बुधेव यलोहययिपी
(या १४)।

मंय लक [यम + यम] यालंय देना यमायना देना। मंयह (दे ४ १४)।

मंय यम [मि + यम] लिखत यत्ना।
मंय- (दे ४ २ १)।

मूसमाण (पाषा) । धंर मूसिचा
मूसिचाम मूसेचा (दीपा वि २०३
पं २७) ।

मूसगा धी [जोपया] केसा पापचना (उषा
पं ११) ।

मूसरिज वि [रे] १ धरय, धरयत । २
स्वच्छ निर्मल (रे ३ १२) ।

मूसिय नि [जुय] १ क्षयि पापविज
(छाया १ १) धीन । २ क्षयित निज,
परिमल (उषा ठा २ २) ।

मूसुय दु [रे] मूसुय मूस (रे ३ २३) ।
मूस देवी मा ।

मूस दु [रे] मूसला पय (रे ३ २६) ।
मूसिग दु [रे] मूस-विरोध (दुप ५७९) ।
मूसी धी [रे] धर्म-महिती मूस की एक
वादि (रे ३ २६) ।

मूसिमा धी [रे] रस के समान एक
प्रकार की मीठा (रे ३ १) ।

मूस सक [शाटय] वेद धारि ॥ पय
बयैह को गिरना । मूस (वि १२६) ।

मूस व [रे] १ वेद धारि से पय धारि का
गिरना । २ भीरु वृष (छाया १ ११—
पय १७१) ।

मूसव न [शाटन] पावन गिरना (पय १
१—पय २६) ।

मूसव दु [रे] १ चला धर-विरोध (२
पुणे के का सक (रे ३ २६) ।

मूसिग दु [रे] व्याव शिखरी बहेनिया
(रे ३ १) ।

मूसिमा धी [रे] मूसिमा धीनी
मूसिमा धीनी कीपनी (रे ३ २६ सुप
१ ५) ।

मूस देवी मूस । मूसेह (धवा) । वक

मूसमाय मूसमाय (पुषा २१: पाषा) ।
छंर 'मूसेहसाय' सम मूसिचा निवर्ध
दु' (पुर १ २५६) ।

मूस सक [गबेपय] क्षोत्रा क्षेपल
करना । मूसेहि (वृह १) ।

मूस सक [मूसय] क्षोत्रा प्रवेय करना ।
ह मूसेयय (वय १) ।

मूस दु [मूसय] पति-विरोध निज के गले
से समान धगाकार हो बह छवि (वय १) ।

मूस दु [रे] मूसला दूर करना (म ३, २) ।
मूसय न [रे] क्षेपल मार्ग 'मूसेह' से
वि वा मार्ग से वि वा मूसेह वि वा एह
(वय २) ।

मूसमा देवी मूसमा (वय ११६ वय) ।
मूसमा धी [जोपया] धर सय की
पापचना, क्षेपना (पापक १७७) ।

मूसिमा देवी मूसिय (धवा) १ ५ २१७७

॥ इम विरिपाद्मसहस्रनाममि ममापदहर्षनमो
छछयुवी धरणी धरणी ॥

ट

ट दु [ट] दुर्ग रक्षणीय ध्यानम कर्ण विरोध
(शका प्राग) ।

टया धी [रे] धाता-धर, दुकाते की
धामना दुनली में दीर्घ (दुप ३ १) ।

ट दु [ट] विज-विरोध निज वर वा
विज (पया १ १२) ।

ट दु [ट] १ लगर धारि वा धर धाम
(पया १ १—पय १) । २ एक प्रकार
का निज (पा १२ सुप २१४) ।

१ एक विना में विज धरन (छाया १ १—
पय ११) ५ धर धामने का धर धरणी
देवी (मे २, १२ धर दु ११२) । २
विज-विरोध धर धाम की धर (निज) ।
१ विज-विरोध (जीव) ।

ट दु [रे] १ लगर, धरधर । २ धर,
गुप दूषा धरधर । ३ धर धर । ४

विज धी । २ धर, धरधर (रे ५ ५) ।
१ धर धर (रे ५ ५ से २, १२) ।

५ वि धर धर धर धर धर धर (रे
५ ५) ।

ट दु [ट] मूसय की एक धरि
(वि १७७७) ।

ट दु [ट] मूसय की एक धरि
की धरधर (पा २) ।

ट धी [रे] १ धी धर (पाषा) । २
धरधर-धरधर एक धी (दी ५४) ।

ट धर [ट] धर धर धर धर धर (धर) ।
ट धर [रे] धी धर धर धर (धर) ।

ट धर वि [रे] धर धर धर धर (रे ८ १) ।
ट धर वि [ट] धर धर धर धर (रे ५ २) ।

ट धर वि [ट] धर धर धर धर (रे ५ २) ।

ट धी [ट] धर धर धर धर धर
धर (धरधर २१७) ।

ट धर वि [रे] धरधर, धर धर (रे
५ ५) ।

ट धर [ट] धर-विरोध (रे १ ११२) ।
ट धर वि [ट] १ धर-धरधर । २ धर
की एक धरि (दुप १२) ।

ट धर [रे] धी धर धर धर धर धर
(पुर १२, १७ धर १) ।

ट धर धी [रे] धरधर, धरधर में धर
का धरधर (वय १ टी) ।

ट धर धी [रे] धरधर-धर धर धर (रे
५ २) ।

ट धर [ट] धरधर १ धर-विरोध धर धर
धर । २ धरधर धर-विरोध (रे १
१ २ धरधर) ।

टबक पुं [ट] मन्त्री धारिक धापाठ की धारा (पुर १ १)।
 टट्टा की [ट] जगिता परा (दे ४ १)।
 टप्पर नि [ट] रिक्तल कर्तारवा भ्रमकर
 नागना (दे ४ २ मुता २२)। बन्धु।
 टमर पुं [ट] टम-नय बाय-सुपू (दे ४ १)।
 टपर देवा टगर (मुता)।
 टसल्ल सक [टसल्लाय] 'टम-ल' धारा
 कला। बह टसल्लन (मम् ११३)।
 टसल्लिय नि [टसल्लिन] 'टम-ल' धारा
 बाला (जा ४४८ टी)।
 टसल्लय सक [ट] टसल्लाना टसल्लान।
 २ परचम, टसल्लाना। टमरल्लन (वर्ग १८)।
 बह टसल्लन (वर्ग १८)।
 टस्मि नि [ट] टसा टसा टसा टसा (वर्ग १८)।
 टमर न [ट] विमोहन मोहन (दे ४ १)।
 टमर पुं [टमर] टमर, एक प्रकार का फल
 (दे १ २ २ मुता)।
 टसरट्ट न [ट] टसर, मरतम (दे ४ १)।
 टसरिय नि [ट] टसा फिमा टसा, 'टसरिय'
 नाम बायी निम्नरी बीर बई सोर (वर्ग १८)
 १४० गुमन १२)।
 टार पुं [ट] टारम मय हरी घोडा (दे ४ २)
 'मरतमिमायी' न मुपद, मरतम
 टारम टारत (भा २०)। २ टट्ट, टोम
 घोडा (जा १३२)।
 टाम न [ट] टोमन मय टुनी टामन हानि
 के चने की धारा बाता बत (वर्ग ०)।
 टिट [ट] टोटा टोटा (मर्ग)। माय
 टिग [ट] टो [टामा] टुल्लाना टुला
 टोने का मूला (मुता ४६२)।
 टिब [ट] टुन [ट] टुन-विरोध टुन का देव
 टिबन (दे ४ १ जा ११ टी-नय)।

टिबल्ला की [ट] टार बैली (नि २१८)।
 टिब न [ट] १ टीरा, टिबन। २ विर का
 सक मस्तक पर रक्ता धारा टुपु (दे ४ १)।
 टिबि (टी) नि [ट] टिबक विमुपित
 (कण्)।
 टिगर नि [ट] स्विर, टुड टुडा (दे ४ १)।
 टिटिम पुं [टिटिम] १ वनि-विरोध टिटि
 हरी टिटिदा। २ वन-वन्धु विरोध (पुर १
 १८३)। टी टी (मिपा १ १)।
 टिटियाय सक [ट] मोलने की प्रेरणा करना
 'टिटि' धारा बरने को निगमना।
 टिटियादे (छाया १ १)। कफ टिटिया
 येजमान (छाया १ ३-नय २४)।
 टिपयव न [टिपयव] विरल छापी
 टीका (मुता १२४)।
 टिप्या की [ट] टिबक टीका (दे ४ १)।
 टिटिटि सक [ट] टुमना टिगना
 बनना। टिटिटिन (दे ४ १११)। बह
 टिटिटिन (मुता)।
 टिटिवि नि [ट] विमुपित (वर्ग २१)।
 टिटिवि सक [मण्डव] मण्डव करना
 विमुपित करना। टिटिविन (दे ४ ११२
 मुता)। बह टिटिविन (मुता २८)।
 टिटिविनि नि [मण्डव] विमुपित
 धर्मप (वाच)।
 टुन नि [ट] टिन-टिन विरल हय कटा
 हमा ही मू (दे ४ १)। मन् १२२ १४३)।
 टुडय सक [टुडय] 'न न' धारा
 बरना। बह टुडय (भा २८२ का
 १६३)।

टुबय पुं [ट] धारा-विरोध टुबय की में
 'टुब' (पुर १२ १०)।
 टुट सक [टुट] टुटा क बाता। टुट
 (विप)। बह टुट (वि १ १३)।
 टुपरम न [ट] टिन टाट का एक टीटा पान
 (मुता ११)।
 टुबर पुं [टुबर] १ विरल बाड़ी-मू ट न
 बही ही ऐसा बरल्लो। २ विरल बाड़ी-मू
 बट्या की हो ऐसा प्रदिरार (दे १ २ १
 मुता)।
 टेट पुं [ट] १ मन्-स्वित मणि-विरोध।
 नि मण (कण्)।
 टेटा की [ट] मुमाला मुता टेने का
 बट (दे ४ १)।
 टेटा की [ट] १ मन्-मोसक। २ छापी का
 मुक वण (वन्धु)।
 टैपयव न [ट] कन-विरोध (भा २ १
 ८१)।
 टहर न [ट] लन प्रदे (दे ४ १)।
 टोबन } न [ट] टाक माने का बरल्ल
 टाक/मण्ड (दे ४ ४)।
 टोबिमा की [ट] टोनी विर बर लने का
 मिला हमा एक प्रकार का बट (मुता २६१)।
 टोप पुं [ट] टेटि-विरोध (न ४३१)।
 टोपर पुं [ट] टिटि-विरोध टोनी
 (विप)।
 टोड पुं [ट] १ टाम, वन्धु-विरोध। २
 विरल (दे ४ ४ मन् १६२)। गह की
 [गनि] टुप-नयन का एक बीन (वर्ग १)।
 टाड की [टड] मण्ड टाकारना
 (मन्)।
 टाड पुं [ट] १ टिटो टिटो (वर २)। २
 वृष (पुर २८)।
 टालेय पुं [ट] मन्धु टा-विरोध मूला
 का देव (दे ४ ४)।

ठाप्पा न [स्वातक] शपिरी की शिष्ट-विशेष
(पृष्ठा १८ १२)।

ठापि बि [म्यानिन्] स्वागवत्ता स्वाग-
पुरु (गुप १ २३ जय) ।

ਠਾਣਿਯ ਖੋਠੋ ਠਾ ।

ठागिज्ज नि [दे] १ पौरुषित सम्मानित (बि
४ ५) । २ न. पौरुष (पङ्क) ।

ठाणुषादिय } वि [म्वानोरुदुक्क] १ सङ्क-
ठाणुषकुदिय } हुक्क प्रासमवाभा (पण्ड २,
१: भव) । २ न. प्रासम-विशेष्य (हुक्क) ।

ठाणु पैसो खणु । खंड न [खण्ड] १
 स्वाणु का भवव । २ वि स्वाणु की तण
 ऊँचा धीर त्विर रहा हुमा, स्वन्मिष्ठ शरीर
 बल्ला (पाया ? १—पृष्ठ ११३) ।

ठाम } (अप) । धो ठाण (पिणः सस) ।

ठाय वृ [स्थाय] स्थान प्राप्तम् (मुञ्च २
१३)।

ठाव सक् [स्थापय्] स्थापन करणा, रहना।
 ठावह, ठावेह (पि १११ कय्य म्हा)। बाह्
 ठावत, ठावित (बच २ ; घुषा ५८)। संह
 ठावइत्ता ठावेत्ता (कय्य म्हा) ह्. ठावयम्
 (घुषा १११)।

ठाकुर न [स्थापन] स्थापन, बाण (पंच
१३)।

ਠਾਥਮਧਾ } ਥੇਠੀ ਠਥਧਾ (ਠਥ ੨੮੬ ਟੀ, ਠਥ
ਠਥਧਾ } ੧੧ ਗੁਰੂ ੨) ।

ठावय [स्यापठ] स्वायन करेवासा (एवाया
१ १८, मृपा २३४) ।

ठावरणि [स्यावर] एनेवासा स्वायी (मण्डु)

११) ।
ठाधिअ वि [स्थापित] स्थापित रत्ता वृथा
(ठ ३ १) आ १२, महा) ।

ठावित्तु वि [स्यापयितु] क्त्वर वेत्तो (ठा
१ १) ।

ठिगमल म [दे] लप्पं ठंणा (दि ४ ६) ।

ठिङ् बी [स्थिति] १ व्यवस्था क्रम मर्यादा
निबन्धन 'अव्यवस्थित' एवम् (ठा ४ १; उप ७२८
टी) । २ स्थान व्यवस्था (सम २) । ३
व्यवस्था कला (बी ४८) । ४ प्रामुख्य सम
काव्य-मर्यादा (मव १४ १; मव ३३; पदसू

४ प्रीति । कल्प पुं [कल्प] धातु का
 छत्र मण्ड (विवा २ १) । पडिया वे
 बडिया (कम्प) । वंश पु [वंश]
 कर्म-व्यं की कान्त-मर्यादा (कम्प ४ २२) ।
 बडिया की [पडिता] पुन-व-म-सम्पन्नी
 वामन-विशेष (छाया १ १) ।

ठिक्का न [बे] पुस्तक-विषय (दि ४ २) ।

ठिक्करिया की [दे] ठिक्की बड़ा का दुष्का
(मा १४)।

ठिय जि [सिधत] १ प्रवसित (अ २ ४) ।
 २ व्यवसित नियमित (सूय १ १) । ३
 बड़ा (अय ८, ११) । ४ निष्पण बैठा हुमा
 (निष् १ प्रप्य हुमा) ।

ठिर धिनी धिर (अण्ड १; ना १११ अ) ।

ठिठिया न [वे] १ अर्ध ठिठिया । २ निष्ठ
समीप । ३ हिण्ठा हिण्ठी (दे ४ १) ।

ठिञ्च सक [षि + चुद्] मोक्षना । संह
ठिञ्चिऊण (सुपा १६) ।

ठोण पि [स्त्यान] १ नमा हुमा (वृत् धारि)
 (हुमा) । २ ध्वनि-कारक पात्रान कले-
 बाला । ३ न नमाव । ४ धान्त्य । ५ प्रति-
 ध्वनि (हे १ ७४ २ ३३) ।

कुंठ पुनः [वे] हृत् हृत् स्थाणु (अं १) ।
 कुंठ शक [ह] व्याप कर्त्ता । कुंठक (प्राक्
 ११) ।

ठर पुंल्लि [स्वधिर] क्य, कृदा (पा ८८३
य पि १११)

‘પરજીવાણી’ નામો મનુમાસો
જોમણ પદે ઠેપે ।

बुधखुमुरा सप्तमी मा होउ कि मरु ?

(या ११७) । की री (या १२४ घ) ।
 ठोड वु [वि] १ भोडिपी बैबल । २ धुयेविठ
 (नया १२३) ।

॥ इमं चिरिपाद्भक्तसहस्रहृज्जगन्निष्ठं त्रयाण्यसदृशं जगत्सु
 दृष्टुं शक्यं भक्तो नरैः ॥

4

इ णुं [इ] मूढं-स्वाभाव्य व्यञ्जन कर्ण-विरोध
(ग्रामा प्राप) ।

बभ्रुपर न [बभ्रुदर] पै वा रोम-विरोध
पक्षोर (पिबु १) ।

हं ५ [६] १ हं, बुधिर (विष्णु) मादि वा
कर्म (पण्ड ११) । २ हं-स्वायं, जहाँ पर

शुद्धिपदं यादि उक्तं हो. 'नहं सप्तसदिरक्यं
रिषं निरंमिस्तु संकर्मणिष्ठि' (गुप्ता १. १)।

हक्रिय पैली हक = ५८ (मै ५८) ।

हंगामा श्री [३] डॉ. ज्ञानेश्वर महि (मुद्रा २३८-३८८ ३४९) ।

हंस देवी हंस (हं १ १२०-प्राप्त) ।

बहन [२] बहन के सीए हए दुम्मे (२
४५)।

संज्ञा की [इष्टता] वलिय है। एक
प्रतिष्ठित व्यवस्था—संज्ञा (मन्त्र)।

संहय नू [वि] रप्या मयूला (वि ४ क) ।

इतिहास्य न [अप्राप्य] इतिहास्य न

इंडिसिअ [दे] १ घाम का मर। २ घाम का बूत (दे ४ १५)।
 इंडुलस रेडो इंडुलस। इंडुलस (घण)।
 इंडोस एक [गवेपय] बोनना मनेपण करना। इंडोस (दे ४ १०६)। इंडोसिअ (हुमा)।
 इंडोस्स रेडो इंडुलस। इंडोसिअ (घण)।
 इंडस एक [वि + वृत्] बसना बसकर रहना फिर पड़ना। इंडस (दे ४ ११०)।
 इंडसमाय (हुमा)।
 इंडसय न [दे] मस्य, घनपीठि (दे ४ १४)।
 इंडक एक [आय] १ इकना मोच्यजन करना बन्ध करना। इंडक (दे ४ २१)।
 मनि इंडकल (या ११४)। कर्न 'इंडक-बन्ध कुनई' (पुर १२ १ २)। इंडक 'एक इंडकल' 'एक' इंडकलया इंडक-ऊण (हुमा ६४)। मया पि २२१)। इंडककेपयव (स २)।
 इंडक वृ [इकक] १ ईश-विरोध। २ ईश-विरोध में एतेवली एक बाटि (सिध)। ३ मां की एक बाटि (उप ५ ११२)।
 इंडकय न [दे] ठिक (दे ४ १४)।
 इंडकरी वि [दे] मरुत, मरुत-बन्धन (दे ४ ४२२)।
 इंडकययुज रेडो इंडकययुज (पन ४)।
 इंडक की [इकक] बाय-विरोध इंडक, मयाइ इंडक (या २२६; हुमा मुस १४२)।
 इंडकज वि [आविठ] बन्ध किया हुमा बाय-विरोध (स १४६; हुमा)।
 इंडकम न [दे] डेल की बर्जना (मणु २१२ मुप २, १)।
 इंडमगमा की [दे] 'इप-बन्ध' बाबाय पादो बयैल पीने की माताका 'लोसिय' कामकामाए बीट्यो' (स २३०)।
 इंडमंत रेडो इंडमंत (पि २११ २१६)।
 इंडु पु [दे] मेठ बाय-विरोध (दे ४ ११)।
 इंडुव वृ [दे] पड़ (मुप २)।
 इंडुव वृ [दे] १ बड़ी माताय महाप्यमि (मोप ११६)। २ न, इंडकनन का एक

मोप बड़े स्वर से प्रणाम करना (हुमा २२)।
 ३ नि इड इड 'इंडु-सहाय मनेय' (घावै १८)।
 इडिय वि [अनिठ] सभित बभित (मुर ११ ८४)।
 इडम न [दे] १ पिठ, स्थाली या पासी (दे ४ १०) पाय)। २ गरम पासी ऊण बन्ध (दे ४ १०)।
 इडम पु [दे] १ स्थाय (दे ४ ११ पाय)। २ रथी देप (दे ४ १६)।
 इड एक [दे] टपकना नीचे पड़ना बिरना। २ झुका। इड इडल (हुमा) 'इडलदेयबामरली' (उप ६८६ टी)।
 इडिय वि [दे] झुका हुमा (उप ५११८)।
 इडल एक [दे] १ बासना नीचे गिरना। २ झुका। बायर बयैल का बीजना। काल (हुमा ४०)।
 इडलजय वि [दे] मुड, कीमज मुसायम (बन्ध ११४)।
 इडिय वि [दे] गिर हुमा स्थलित (बन्ध १)।
 इडिय वि [दे] नीचे गिरना हुमा 'इडियमो बायियो मुरो' (मुर १ २२८)।
 इडय वृ [दे] बायल, निर्बन्ध (हुमा)।
 इडि वृ [इडि] पति विरोध (पण्ड १ १—पन ८)।
 इडिय } वृ [दे] मुड जणु-विरोध नी
 इडिग } पावि की बन्धनामा कोट-विरोध
 (पन की १८)।
 इडिकीमा की [दे] पाय-विरोध (मिदि ४२६)।
 इडिग रेडो इडि (पन)।
 इडिय वि [दे] बन्ध में पतिव (दे ४ १६)।
 इडिक एक [गज] सजि का मयना। इडिक (दे ४ १६)। बह इडिकमाय (हुमा)।
 इडिकय न [दे] गिय हयेगा सवा (दे ४ १६)।
 इडिकय न [गजन] सजि की बर्जना (पन)।
 इडिजस न [इडिजस] ईश-विमान-विरोध (बन्ध)।

इडिज वि [दे] डोता शिपिम (पि १५)।
 इडिस्वी की [इडिस्वी] मारतबर्ष की प्राचीन और मयतन राज-बानी विन्नी रहर (पिग)।
 नाह वृ [नाय] विन्नी का घमा (हुमा)।
 इडुल एक [अम] हुमा किरा बसना। हुकुमाह (दे ४ १११)। हुकुमति (हुमा)।
 इडुल एक [गवेपय] इडुमा बोनना मनेपण करना। हुकुमाह (दे ४ १०६)।
 इडुलम न [गवेपय] बोन मनेपण (हुमा)।
 इडुलिय वि [गवेपय] मनेपण इडुमा हुमा (पाय)।
 इडुक एक [डीक] १ नै करना मयंय करना। २ जसियत करना। ३ एक लकवा प्रवृत्त करना। ४ मितना। बह इडुकल (पिग)। कल इडुकल (उप ६८६ टी; पिब)।
 इडुक एक [प्र + विरा] हुमा पुनना मनेय करना। इडुक (माफ ७४)।
 इडुक वि [दे डीकिंग] १ जसियत हायर (स २११)। २ मितित (पिग)। ३ प्रवृत्त 'विचिड इडुको' (या २०३; सय सवि)।
 इडुकलुडक न [दे] बन्ध से मडा हुमा बाय-विरोध (मिदि ४२६)।
 इडिकम वि [डीकिंग] ऊपर रेडो (पिग)।
 इडु } एक [अम] मयल करना हुमा।
 इडु } हुमा हुमा (दे ४ १११; हुमा)।
 इडुल रेडो इडुल = मय। बह-इडुलल (बन्ध १२८)।
 इड वृ [इड] एक बन्ध पावी पति-विरोध (बन्ध १४)।
 इड की [दे] १ इड मुली। २ इडुव, इडमी दूय-मुना (दे ४ १०)।
 इडिय रेडो इडिय (पन)।
 इड की [दे] बसाका बड-विडि (दे ४ १३)।
 इडुग वृ [दे] मयल बटन (दे ४ १४)।
 इडिय वि [दे] मयल हुड किया हुमा (दे ४ १६)।
 इडियाय } वृ की [इडियायल] पति
 इडियाय } विरोध (मण्ड १ १)। की
 निपा (मणु ४)।
 इड वि [दे] निर्बन्ध सजि (दे ४ १६)।
 इडिय रेडो इडु = डीर। डीरय (मन)।

होइय वि [होकि] १ हो- किया हुआ २
उत्पन्न किया हुआ (महा मुपा १५५
अधि)।
होमर वि [हे] प्रमल होत हुएक
हुमनेवला (हे ४ १२)।
हायन देको होमय (विजय २२५ मुप १२८)।

होयजिया थी [होकिमि] उपहार, भेंट
(बर्गि ७१)।
होछ पु [हे] प्रिय, पति (संति ४७ हे
४ ११)।
होछ पु [हे] १ होत पट्ट २ देत विरोध,
विचकी राजधानी बीनपुर है (विप)।

होवन } न [होवन क] १ भेंट करवा,
होवनय } धर्मल करना (मुमा) १ उपहार,
भेंट (मुपा १८)।
होविय वि [होकि] उत्पन्नित प्रसिद्ध
किया हुआ (ह २ म)।

॥ इय गिरिपाइससहस्रण्यमि हवापाइससहस्रकमरो
एकजीसहसो हरनो समती ॥

रा तथा न

प पु [ग न] व्याजन बल-नियेय इसका
उत्पादन-स्थान मुर्दा है इससे यह मुर्दोय
महावा है (प्रल प्राभा)।
प प [म] निगोर्गक धम्मय, नहीं भंत
(मुमा वा २ प्राप् १११)। उज उजा
उमाइ उजोय [पुन] न पु नहीं
कि (हे १ १५, वर)। संतिपरसंगवड
वि [शान्तिपरसंगवडवि] नील बीर
परलोच नहीं है ऐसा माननेवला (अ)।
प म [न] यह (हे १ ७ मुमा)।
प ठ [इय] यह इन (हे १ ७७ उर
१५; वा १११ १२६)।
प रि [स] जलवार, परिणत विचराल
(मुमा २ म)।
पभ देगी पभ = नर (ना १ वा—
बैर ४२)। शीम पु [शोष] बंगाल का
एक विषय नगर वा व्याप-राज्य का देश
जिहा बाबा है जिसकी प्राकृत 'शिया'
बहने है (ना—अठ १२६)।
पअरबर देगी पलबर (अठ)।
पा छी [मि] १ नवन, नमन २ धन
बाज, कप (उय ४६)।
पा छ १ निबध मुचक धम्मय गरी-लार (हे
२ १ ४ वर)। २ निगोर्गक धम्मय;
'नर भाषा वैर रिध' (मुप १ १ ८)।

पाइ केको पाइ (पठ १ २, २७) वा १५७
मुप ११ १५)।
पाइय वि [नयिक] नम-मुच, धर्मिप्राम-विरोध
बाबा (उय ४)।
पाइय देको पी = पी।
पाइमासय न [हे] वाली में होनेवाला फल
विरोध (हे ४ २१)।
पाइपय न [नीरमय] आला का बाधक।
बाध पु [वाह] आला के धरितय को
नहीं माननेवला दर्शन, बीज तथा पारंग
बत (बर्गि ११ २)।
पाई छी [नहा] नदी पर्वत धारि में बिरसा
बड़ होत को लघुय वा बड़ी ली में बाहर
जिने (हे १ २२२ वाच)। कपट पु
[कपट] ली के डिमारे बरनी प्यही
(उपा १)। गम पु [गाम] ली
के डिमारे पर स्थित गम (गाम)। गाह पु
[गाव] लघु बावर (वर ७१८ बी)।
पाइ पु [पति] कपट बावर (पठ १
४)। संसार पु [संसार] ली उत्तरा
बद्वय धारि है ली पार जला (राज)।
सोपा पु [सोपास] ली का प्रवाह
(वा १ ४)।
पाउ (पर) देगी इय (मुमा)।
पअय न [पुन] 'अनुय' वा बीपयी

बात से पुगने पर को संख्या लख हो वा
(अ २ ४ इक)।
पअय न [पुन] 'अनुय' को बीपयी
से पुगने पर को संख्या लख हो वा (अ २,
४ इक)।
पाउ की [नवति] संख्या-विरोध लखे १
(उय १४)।
पाउय वि [नयत] १ ना (उय १
११)।
पाउय पु [नकुल] १ लोका, वैरा (पठ
१ १; बी २२)। २ पार्षा पाउय (उय
१ १५)।
पाउय पु [नकुल] बाध-विरोध (उय ४६)।
पाउसी छी [नकुल] एक बड़ीवि (दी २)।
पाउसी छी [नकुल] विद्या-विरोध ल-विद्या
की प्रधिरा किया (उय)।
पै य [हे] यन बर्गी का मुचक धम्मय—
प्रल १ २ वाका (वा ७२)।
पै य १ बापालार में प्रयुक्त विद्या यदा
धम्मय (हे ४ २२१; उपा बधि)। २ नरक-
मुचक धम्मय ३ स्तीरार-लीन धम्मय
(उय)।
पै (ली) देगी जगु (हे ४ १ १)।
प (पर) देगी इय (हे ४ ४४४ और ना)
बधि)।

पंगम वि [दे] बर रोका हुआ (पह) ।
पंगर पु [दे] संवर, बहान को बस-बसा में
बसने के लिए पानी में जो रस्सी धारि वाली
बाँधी है वह (अ ७२७ टी मुर १३ १८३
छ २ २) ।

पंगर } न [स्यङ्गल] हल विधेय भेद जोता
पंगल } धीर मोया बाटा है (पदम ७२ ७३
पर १ ८ पाय) ।

पंगल पुं न [दे] बज्ज, बाँध बाँध 'बडाउलो
रहो गहल्लेमु पहरा, बगाल्लो बिल्ल-
बल्लमने' (पदम ४४ ४) ।

पंगल पुं न [स्यङ्गल] एक देव विमान (देवेष्ट
१३३) ।

पंगलि पु [स्यङ्गल] बलम हनी (बुला) ।

पंगलि पु [स्यङ्गल] हल क भाषाजानी
छल्ल-विधेय को बाट्टा करने वाला मुस
(बन्ध कीय) ।

पंगल न [स्यङ्गल] पुष्प, पुंछ (अ ४ २
है १२५) ।

पंगलि नि [स्यङ्गल] १ सामी पुँछलता
२ पुं बाल, बलर (हुमा) ।

पंगलि केतो पंगोडि (अ २६२) ।

पंगोल केतो पंगल (आरा १ ३ नि १२७) ।

पंगानि पुं न [स्यङ्गल] क १ बल
लंगोलिय १ धीर-विधेय । २ उवडा निगाडी
मुत्त (नि १२७ डा ४ ३) ।

पंगान न [दे] बर बरडा (अ ३३ ३) ।

पंग बल [नन्द] १ कुप होना घामिब
होना । २ मयुड होना । एँवर एँवर (पह) ।
कक अँवरजामा (धीर) । ३ पंगि
अध्य अँवरध (बह) ।

पंग पुं न [दे] १ स्वनाम-प्रथिद पायिपुत्र
नगर का एक राजा (हुमा ११ एँरि) ।
२ बल्ल-नीर के भारी प्रथम बागुदेर (अ
११४४) । ३ बल्ल-नीर में हल जाने नरनें
टीरवर का पुँर बाँध नाम (अ १३४) ।
४ स्वनाम-प्रथिद एक पुँर बुनि (अम २
२) । ५ स्वनाम-प्रथिद एक पेडी (हुमा
११८) । ६ न. देव विमान विधेय (अ २६३) ।
७ मोर का एक प्रकार का कुप धामन (आरा
१ १—अ ४१ टी) । ८ नि कण्ड होने

बाला (धीर) । ९ न [अन्] देव
विमान-विधेय (अम २६) । कूड न [कूड]
एक देव-विमान (अम २६) । कम्प न
[अन्] एक देव-विमान (अम २६) ।
पम न [अन्] देव विमान-विधेय (अम
२६) । मई स्त्री [मता] एक मयुड
सामी (अम २५, पम) । मेस पुं [मिअ]
मल्लेय में होने वाला द्वितीय बागुदेर (अम
१६४) । जेत न [जेट] एक देव-विमान
(अम २६) । बई स्त्री [बई] १ मयुड
बागुदेर की माता (पदम २ १८६) । २
एँवर पर बल पर स्थित एक देव-नगरी
(धीर) । कण्ड न [कण्ड] देव-विमान-
विधेय (अम २६) । मित न [मिट] एक
देव-विमान (अम २६) । सिड न [सिड]
देव-विमान-विधेय (अम २६) । मीरी स्त्री
[मी] स्वनाम-प्रथिद एक पेडी-पत्ता (डी
१७) । सेगिया जा [सेगिअ] एक देव
सामी (अम २५) ।

पंगु पुं [नन्द] वात विधेय कीहुपल का वातक
पोपल (बडा १२२) ।

पंग पुँछी [नन्द] पय की पट्टी (प्रतिष्ठा)
पडी धीर एकाम्परी विधि (हुमा १ १३) ।

पंग न [ब] १ ऊँच बीलने या पेटने का
बाला । २ बुरा वात विधेय (अ ४४३) ।

पंगु पुं [नन्द] बागुदेर का वातक (पर १
४) ।

पंगु पुं [नन्द] १ पुन मडका (आ
१ २) । २ पम का एक स्वनाम-प्रथिद मुस
(अम १७ १) । ३ स्वनाम-प्रथिद एक
बल्लेर (अम ६३) । ४ बल्लेय का भारी
काटा बागुदेर (अम १३४) । ५ स्वनाम-
प्रथिद एक पेडी (अ ३३) । ६ कीहुपल
पम का एक पुन (निर १ २) । ७ पैर वरुँ
पर स्थित एक प्रथिद बल (अ २ ३ ३६) ।
८ एक पोय (अ १ १) । ९ बई (अह
१४) । १० नगर विधेय (अ ७२८ टी) ।

पंग नि [अ] बई-मालक । कूड न
[कूड] मल बल का टिगर (अम) । अह
पुं [अ] एक देव पुनि (अम) । पम न
[अ] १ स्वनाम-प्रथिद एक बल को पैर

पवँत पर स्थित है (अम १२) । २ उपा
विधेय (निर १ ५) ।

पंगु पुं [दे] मयुड नीकर, वास (अ
१६) ।

पंगु पुं न [मन्द] एक देव-विमान (देवेष्ट
१४३) । २ न संतोप (अ ४४) ।

पंगु की [नन्द] मडकी पुनी (पाय) ।

पंगु की [नन्द] पुनी मडकी (धिर
१४) ।

पंगुतय पुं [नन्द] मयुड कीहुपल (आह
२७) ।

पंगुतय पुं [नन्द] मयुड की हुकी एक
वाति (पर १ १) ।

पंगुतय पुं [नन्द] मयुड १ एक देव
पंगुतय १ विमान (देवेष्ट १३३) । २ पुं
बगुदिध वात की एक वाति (अ १६
१४८) । ३ न कपाडार एस्वीम दिनों का
उपवास (अ ४४ ४८) ।

पंगु की [नन्द] १ मयुड मयुड की
एक पत्नी (अम १ ११६) । २ राजा कीहुपल
की एक पत्नी धीर मयुडमार की माता
(आरा १ १) । ३ मयुड की कीहुतनाम की
माता (अम १३१) । ४ मयुड मयुड की
मयुडमार नाम मयुड की माता (अम १३१) ।

५ पंगु की एक पत्नी (अम ७४ १) ।

६ पंगु की एक पत्नी (अम ७४ १) ।

७ पंगु की एक पत्नी (अम ७४ १) ।

८ पंगु की एक पत्नी (अम ७४ १) ।

९ पंगु की एक पत्नी (अम ७४ १) ।

१० पंगु की एक पत्नी (अम ७४ १) ।

११ पंगु की एक पत्नी (अम ७४ १) ।

१२ पंगु की एक पत्नी (अम ७४ १) ।

१३ पंगु की एक पत्नी (अम ७४ १) ।

१४ पंगु की एक पत्नी (अम ७४ १) ।

पाकम ईप-विशेष (एरि) । ८ बाल्या
पन्तिव पाङ्ग (सम ७१) । २ नाभार
पाप की एक मूर्ध्नि (अ ७) । १ पु
स्वनाम क्पात एक चक्रुमार (विषा १ १) ।
११ एक वैत मुनि जो पतने बाबाजी मध
में गिरीय बनेर होला (पञ्च २ ११) ।
१२ कुप-विशेष (पञ्च २ १२) । आबत
केरो यापत (इ) । उड्डर पु [उड्डर]
एक प्राचीन नरि वा राम (कपु) । अर,
गर वि [अर] मयन-बारक (पञ्च लाया
१ १) । गाम पु [गाम] क्षय-विशेष
(अ ११७ छात्र १) । घाम पु [घोप]
१ बाछ प्रसार के बायो की धागाव
(एरि) । २ न देशविनाम-विशेष (सम
१७) । कुचमग न [कुचम] होठ पर
छावने वा एक प्रकार का बूछे (पुष १
४ २) । मूर न [मूर] एक साब बग्या
बाला बाछ छछ ना बाघ (इह १) । गुर
न [गुर] क्षयिहस वैत का एक नगर
(अ १ ११ टी) । फल पु [फल] कुच
विशेष (गामा १ ७ ११) । मास न
[मास] उपर-विशेष (इह १) ।
मिच पु [मिच] १ केवा गंध-मिच
(उच) । २ एक चक्रुमार, निम्ने क्पात
मन्तिनाम के साब चीना ली की (लाया १
७) । मुद्रग पु [मुद्रग] एक प्रकार का
मृद, बाप-विशेष (उच) । मुद्र न [मुद्र]
गंध-विशेष (उच) । यर केरी अर (पञ्च
११६ ११७) । बाघ पु [बाघ] १
हस्ति-विशेष (वीर पञ्च १ ४) ।
२ एक लोपायन देव (अ ४ २) । ३ छुत्र
जन्तु-विशेष (पण्ड १) । ४ न देर
निना-विशेष (उच) । राघ पु [राघ]
बाल्या के नन-भागीन एक चक्रा (लाया
१ १९—पञ्च २ ८) । राघ पु [राघ]
नमुद्रि में हर् (अ २ ३) । रग्य पु
[रग्य] कुप-विशेष (पण्ड १) । बड्डगा
केरो पड्डगा (इ) । यड्ड न [यड्ड]
१ बाल्य बदारी का गेउ आता (पण)
२ नन-विशेष (पण) । ३ एक चक्रुमार
(विषा १ १) । ४ न, नन-विशेष (गुग
१) । यड्डा की [यड्डा] १ एक

रिक्तुमापी केरी (अ ७) । २ एक पुष्करिणी
(अ ४ २) । सेज पु [सेज] १ ऐरवत
बर्ष में क्पात बाबुर् भिन-देन (सम १११) ।
२ एक कैल नरि (अभि ७८) । ३ एक चक्र
कुमार (ठा १) । ४ स्वनाम क्पात एक
कैल मुनि (अर) । ५ देव-विशेष (राग)
सेया की [सेया] १ पुष्करिणी-विशेष
(वीर १) । २ एक चक्रुमापी केरो (वीर)
संणिया की [सेयिका] चक्रा मणिक की
एक पत्नी (अंत) । स्सर पु [स्सर] १
देवो जहासर (उच) । २ बाछ प्रकार के
बायो का एक ही साथ धागाव (वीर १) ।
पवित्र न [पे] सिद्ध की चित्ताहट ब्याह (दे
४ ११) ।
पंखि वि [पान्ख] १ समुद्र (वीर) २
कैलुनि-विशेष (पण) ।
पवित्र पु [पे] सिद्ध, मुनेत्र (दे ४ ११) ।
पविपाठ पु [पनिपे] बाघ विशेष
(उच ४) ।
पवित्र न [पनित्र] कैल मुनिो का एक
दुल (कपु) ।
पविर्षा की [पविर्षा] पुनी लकड़ी (पञ्च
४८, २) । पित्र पु [पित्र] नवनाथ
महावीर का एक स्वनाम-क्पात मुहस क्पा-
सक (अ) ।
पविर्षा की [पे] पड्ड, गेवा पाव (दे ४
१८ पाव) ।
पवित्र पु [पनित्र] बावर्षपु के चित्र एक
कैलमुनि (एरि १) ।
पवित्रसर १ पु [पनित्रसर] १ एक डीप । २
पनित्रसर १ एक समुद्र (पुष ११) । ३ एक
देर विनाम (विनेत्र १४४) ।
पनी केरो पवि (सहा कोष १२१ ना पण्ड
१ १ वीर सम १२२ एरि) ।
पनी की [पे] बड्ड, पाव, गेवा (दे ४ १
पाव) ।
पनित्रसर पु [पनित्रसर] स्वनाम प्रसिद्ध एक
डीप (लाया १ पण्ड) । पार पु [पार]
करीरार-डीप (अ ४ ७) । पारा पु
[पारे] नमुद्र-विशेष (वीर १) ।
पनित्र पु [पनित्र] देव-विशेष, नाक-
कुमार के पुनाम-नामक इय के देव-विशेष
का धर्माणि देव (अ २ १ इह) । पवि

सम न [पवित्रसर] एक के-विनाम (सम
२१) ।
पनित्र पु [पनित्र] १ पवित्र एक
पर्वत पर रहनेवाली एक रिक्तुमापी केरी
(ठा ८ इह) । २ इय-नामक इयली की
एक चक्राकी (वीर १) । ३ पुष्करिणी
विशेष (अ ४ २) । ४ चक्रा वैरिह की
एक पत्नी (अंत ७) ।
पनित्र पु [पनित्र, पनित्र] 'ल' वा 'न'
पनित्र (विने २८१७) ।
पनि पु [पनि] १ नन-विशेष इह,
नाका (पण्ड १ १ पुषा) । २ चक्रा का
एक स्वनाम क्पात पुषा (पञ्च २१ २७) ।
पनि पु [पे] १ नाक नाटिका (दे ४ ४६)
विषा १ १ वीर) । २ वि पुष बाबा-
नाथ-नाटिक से रहित पुष (दे ४ ४६) ।
पनि की [पनि] नाक का चित्र (पण्ड)
पनित्र पु [पनित्र] १ चक्रा । २ वीर ।
३ विनाम । ४ वि पवि में कनने डिने-
वाला (दे १ १७७) ।
पनित्र पु [पनि] नन नाम (दे २, १८,
पण्ड) । अ वि [अ] नन के क्पात (प
१७१) । आहड पु [आहड] चिह्न,
मुबारि (पुषा) ।
पनित्र पु [पनित्र] इतिहास, प्रसिद्ध
पत्नी भावि ग्योचिन्म-विशेष (बाघ पण्ड
इह पुष १) । समज पु [समज]
चक्रा वंश का एक चक्रा एक नकेय (पञ्च
२, २९९) । मास पु [मास] क्पातिव
शाब में प्रसिद्ध समज-नाम-विशेष (बन १) ।
मुद्र न [मुद्र] का, पति (उच) ।
संयपुद्र पु [संयपुद्र] क्पातिव-क्पात
प्रसिद्ध बर्ष-विशेष (अ १) ।
पनित्र वि [पनित्र] १ क्पातिव-विशेष के
बावर्ष बाव करेनेवाला (बर्ष १) । २
पुन एक देव-विनाम (विनेत्र १४१) ।
पनित्र वि [मास] नन-नामकी क्पात
वा (अ ७) ।
पनित्रपति पु [पे] पतिप्रतिपत्ति विना,
माघपण (दे ४ २२) ।
पनित्रपति न [पे] नन वीर बग्या विना-
मने का चक्रा विशेष (इह १) ।

पमिष्ठा स्त्री [नमिता] १ स्वनाम-क्यात एक स्त्री । २ 'जाताभर्म'क्यामूत्र' वा एक मध्यमन (णाया २) ।

णमिरि कि [नम्र] नमन करनीवाला (कुमा
सूपा २७; सुख) ।

अमुहं पृ [नमुपि] स्वनाम-वशात् एक मन्त्रो
(माहा) ।

गामुदय पृ [नमुदय] प्राचीनिक मत का
एक उपासक (मम ७ १) ।

पञ्चमः पं. [नमोः] बुद्ध विरोध (पुर ७ १६
स १११)।

पमो ष [नमस्] नमस्कार, नमन (भग-
वन्मा) ।

पद्मोद्धार पं. [नमस्कार] १ नमन प्रणाम
(ह १ ३२ २ ४) । २ नैन-पात्र में प्रसिद्ध
एक पुत्र—मन्त्र-विरोध (निधे २० ३) ।
सहिष न [सहिष] प्रमादप्रान-विरोध
पुत्र-विरोध (पडि) ।

जामोयार देवो जामोयार (चंड) ।

पद्म पुंन [नर्मन्] १ हंसी उग्राह । १
 श्रीदा केमि (दि १ १२) या १४ ३२,
 १४ पाप) ।

पञ्चमया श्री [नमदा] १ स्वनाम प्रसिद्ध नदी
(मुपा ३५) । २ स्वनाम-क्यात एक राज-
पत्नी (म ३) ।

गाय देवो णाद् = मद् विम्बरं नमई नमं
(धम ३) ।

णय पं. [नग] १ पद्माक्ष पर्वठ (आ. १२३९
गुप्ता १४४) । २ वृत्त पद (हं १ १०७) ।
दित्री णय ।

जय [नय] नदी (उप ७१३ टी)।

पाय [मन] १ नमो हृष्या भुक्ता हृष्या प्रपन्न
नम्र (पादा १) २ विह्वलो नमस्कृत शिष्या
मया हा बहु श्रीगुरुदेवविद्याविष्णुनन्दनो
विह्वलो याम्ना (गुणा २६६) ३ न. वैश्वामान
विह्वले (नम २७) । नम्र पृ. [मनस्य]
धीर्यस्य कारावस्य (मण्ड ७) ।

गायत्री [नय] १ गायत्री मीति (विश्व १११११)
मुता १११११ १) २११११ (१११११) ।
१ प्रसाद, मीति 'यमरा वि देव' यमरा
मुता १११११ 'यमरा' (१११११) । ४ यमरा

के घनेक घमों में किसी एक को मुख कप से स्वीकार कर घाय्य घमों को ज्येष्ठा करनेवाला मत एकरा-माहक बोध (धम्म २११ बिंते १६३-४ ३)। ५ बिधि (बिंते ३३६२)।
 चन्दु [चन्दु] स्वनाम-रुपात एक बैन
 घाय्य (रमा)। रय वि [रियिम्]
 म्मया भाहूनेवाला (या १४)। य, यत् वि
 [यत्] नीतिवाला म्मय-परायण (सम
 २ मुपा ५४२)। विजययु [विजय]
 बिम्ब की सपर्ययी सभायी के एक बैन मुख
 के मुनपिठ विडाउं थी सरोविचयनों के मुख
 के

अथ यथा न [नयनक] एक प्राचीन नैन
प्रमाण-ग्रन्थ (सम्पत् ११) ।

पञ्चम न [मयन] १ ने जाना प्राप्त (ज
१५)। २ जाना प्राप्त। ३ विषय (विदे
१५)। ४ वि ने जाना प्राप्त 'मयणा'
गुप्तहमणा' (गुप्ता १५)। ५ पुन घ घ
नेर लोचन (ह १ १५ पाद्य)। ज्ञान न
[जल] घ घ घ (पाद्य)।

नयय धू [दे नयत] ऊन का बना हुआ
भास्वरण-विशेष (शास्त्रा १: १—पृष्ठ ११)।

जयपुर के छोटी जगह (है १: १७४ मुर ३ २
श्रीप मय) ।

अपरंगगा की [नाराजना] बेरया परिष्ठा
(पा २७)।

जयरी की [नगरी] शहर, पुरी (बंगाल) १९११)।

[illegible]

[नाय] राजा मुपात (मुपा ४)। मुर १
 २१)। यहु पुं [यमु] राजा नरेय (ज
 ७२८ टी। मुर २ ८४)। पीरुसि पु
 [पीरुसि] राज-पिरेय (ज ७२८ टी)।
 जोय पु [जोय] मनुष्य लोफ (मी २२)।
 मुपा ४११)। वर पुं [पति] नरेय राजा
 (मुर १ १)। वर पुं [वर] १ राजा
 नरेय (मुर १ १११)। १२ १४)। २ उत्तम
 युवप (ज ७२८ टी)। वरिंद पुं [परेण्ड]
 राजा भूमि-पति (मुपा ३१ मुर २ १७१)।
 वरुतर पुं [वरुतर] ब्रह्म राजा (वत
 १८)। वरुस वरुह पुं [वृषम] १
 रेवो उत्तम (पण्ड १ ४ सम १३१)।
 २ राजा नृपति (पठम ३ १४)। ३ पुं
 हरिहर का एक हनाम प्रसिद्ध राजा (पठम
 २२ २७)। बाळ पुं [पाय] राजा
 मुपात (मुपा २७१)। बाण पुं [बाण]
 स्वभाव-म्यात एक राजा (भाऊ १ छण)।
 बेय पुं [बेय] पुण्ड्र केय युवप की की के
 ल्यौ की म्मिनाय (धम्म ४)। मिप
 सिंह, मीह पुं [मिह] १ उत्तम पुण्ड्र
 मीह युवप (मुर १३१)। पवन १ (१६)।
 २ वर्ष भाग में पुण्ड्र का बीर वर्ष भाग में
 सिद्ध का दायाज्जला भीष्म्य नायकण
 ण्या १ १६)। सुंदर पुं [सुन्दर] स्व
 भाग-ज्जात एक राजा (धम्म)। दिव्य पुं
 [दिव्य] राजा नरेय (गा १६४ मुपा
 १२१)।

परायणं पुं [नरपञ्चक] नरपञ्चक-विशेष
(दोष्ट १) ।

परकं वृं [नदृष्ट] एतन्नी एक पात्रि
(धप १७)।

पारमिह पु [मरमिह] १ बन्नेन त्पत्तो
मोयम्मि बलदेरो मरमिहा णि पविद्धो (कुत्र
१ ३) । २ एक राजकुमार (कुत्र १ ५) ।

पणम } १ [नरक] नारक जीर्ण वा रणम
 नरय } (निग) १ पटन १४ १६; वा
 १ प्रागू २६ जे)। बास, बाउय
 १ [बास क] परमायानिक देन वा नरक
 क जीर्ण को दण्डना (पिडा दे) ह (पटन
 २६ ११; क २३०)।

जपञ्च } पुन [नाराञ्च] १ लोहमय वस्त्र ।
जपञ्च } २ चङ्कन-विशेष शरीर की रचना
का एक प्रकार (हि १ १७) । ३ छत्र-विशेष
(पिम्) ।

जपञ्च पु [नाराञ्च] लोहमय विष्णु
(पिम्) ।

जपरि पु [नरेन्द्र] १ राजा नरोत्त (सम
१११) ग्राम १ ७ कम्) । २ धार्ष्टिक
सर्प ॥ विप की ज्वालामाला (स २११) ।
जंन न [जन्त] जन्म-विशेष (सम
२२) पद्म पु [पद्म] राज-भार्य महारथ
(पञ्च ७१ न) । बसह पु [बृषम] वेष्ट
पत्रा (नट ६) ।

जर्दुत्तरवर्द्धिसग न [मरेन्द्रात्तरवर्द्धिसग]
जन्म-विशेष (सम २२) ।

जरीम पु [नरेन्द्र] राजा नरपति 'जो मर
हृदयजो होई पुरखो न छोड़ो' (गुर १२,
) ।

जरीसर पु [नरेन्द्र] राजा नरपति (सवि
११) ।

जदत्तम पु [नयेत्तम] ध्वजपुष्प (सिदि
४२) ।

जदत्तम पु [नयेत्तम] जतन पुष्प (पञ्च
४७ ७३) ।

जरेह केजो जरीह (सि १११; पिम्) ।

जरीसर केजो जरीसर (ज ७२७ टी गुण
११; १११) ।

जन्न न [नह] दुष्ट-विशेष शीघ्र से पोला
छपकार कृष्ण (हि २ २ २ अ) ।

जन्न न [नह] १ ऊपर केजो (पद १ अ
१ ११ टी ग्राम ११) । २ पु राजा राम
कन्न का एक मुकुट (सि १) । ३ भयमय
का एक स्वप्न-व्यास पुष्प (पिम् ४) ।
कुम्भर कुम्भर पु [कुम्भर] १ कुल्लुपुत्र
का एक स्वप्न-व्यास राजा (पञ्च १२
७२) । २ भयमय का एक पुष्प (आयव) ।
गिरि पु [गिरि] बरहस्पति राजा का
एक स्वप्न-व्यास हस्ती (महा) ।

जन्नय न [हि] पत्नी, बहव का पुत्र (सि ४
११ पाय) ।

जन्नाह केजो जन्नाह (हि २ १२१ गुण) ।

जन्नाह केजो [जन्नाह] जन्मा की
ज्वालामाला (गुण) ।

जन्नाह न [हि] गृह घर, मकान (सि ४
२ पद) ।

जन्नाह न [मन्नि] १ सगुप्तार वैदिक दिन का
उपवास (संवीच ३७) । २ पुन. एक देव
विमान (विश्व ११२) ।

जन्नाह न [मन्नि] १ एक मकान (राय
४२ १) । २ धार्ष्टिक कर्ष का एक
विशेष प्रवेश-विशेष (अ २ ३) । ३
'मन्नि' की बीरपी माह से हुने पर जो
संख्या मान्य हो वह (अ २ ४ अ) । ४
देव-विमान विशेष (सम ११ १३) । ५
कन्न पर्यंत का एक विस्तर (पीच) । कूट
पु [कूट] बालस्वर-पर्यंत-विशेष (अ २
३) । गुम्प न [गुम्प] १ देव-विमान
विशेष (सम १३) । २ गुप्त-विशेष (अ ७) ।
३ मन्त्र-विशेष (पाय ४) । ४ राजा
केजिक का एक पुत्र (राय) । जह की
[जह] विशेष कर्ष का एक विशेष प्रवेश
विशेष (अ २ १) ।

जन्नाह न [जन्नाह] संख्या-विशेष पद
की बीरपी माह से हुने पर जो संख्या
मान्य हो वह (अ २ ४ अ) ।

जन्नाह न [जन्नाह] कमलिनी पत्नी
जन्नाह } (पाय, छाया १ १) । गुम्प
केजो जन्नाह-गुम्प (गिर २ १ पिम्) ।
जन् न [जन्] जन्म-विशेष (गामा १) ।

जन्नाह न [जन्नाह] लघु-विशेष
(पीच) ।

जन्नाह न [हि] १ शक्ति विवर, बाह का छिद्र ।
२ प्रयोग । ३ मिथित कारण । ४ वि
करोति नीचबला (सि ४ ४६)

जन्नाह केजो जन्नाह (पद १ ११; १११;
२२४) ।

जन्नाह न [जन्] नया युवक, नवीन (पद
ग्राम ७१) । जन्नाह न [जन्] नवीन
कुल्लुपुत्र (हि २ १ गुर १ २२) ।

जन्नाह न [जन्नाह] संख्या-विशेष नह ॥
(अ ६) । ३ की [जि] संख्या-विशेष कन्ने
६ (छाया) । गन् [क] नह का समुदाय
(सि १) । जायपिय वि [जोसमिक]

नह योजन का परिमाणवाक्य (अ १) ।

जन्नाह, नज्ज की [नज्ज] संख्या-विशेष,
विशेष २६ (अ २६ १) । जन्नाह
वि [नज्ज] २६ का (पञ्च २६, ७३) ।
नज्ज केजो जन्नाह (कम् २, १) ।
नज्जमिया की [नज्जमिया] जन्म साधु का
वृत्त-विशेष (सम ७७) । म वि [म]
नज्ज (छाया) । मी की [मी] विधि-विशेष
पद्म का नज्ज (अ २६) । मानस
पु [मीपस] मानस विन घट्टी (अ १) ।
जन्नाह केजो जन्नाह (सि १ १ १ १
छाया) ।

जन्नाहमी की [मन्नाहमी] जन्म-
विशेष वृत्त-विशेष (संवीच ३७) ।

जन्नाह (अ २) वि [नज्ज] जन्नाह नह
(हि ४ ४२२) । की की (हि ४ ४२) ।

जन्नाह पुन [जन्नाह] नज्ज मन्त्र का
(कम् ४१) । जन्नाह (अ २६ २१) ।

जन्नाह न [जन्नाह] जन्म-विशेष (पाय १) ।

जन्नाह न [जन्नाह] जन्म-विशेष (पाय १) ।

जन्नाह न [जन्नाह] जन्म-विशेष (पाय १) ।

जन्नाह न [जन्नाह] जन्म-विशेष (पाय १) ।

जन्नाह न [जन्नाह] जन्म-विशेष (पाय १) ।

जन्नाह न [जन्नाह] जन्म-विशेष (पाय १) ।

जन्नाह न [जन्नाह] जन्म-विशेष (पाय १) ।

जन्नाह न [जन्नाह] जन्म-विशेष (पाय १) ।

जन्नाह न [जन्नाह] जन्म-विशेष (पाय १) ।

जन्नाह न [जन्नाह] जन्म-विशेष (पाय १) ।

जन्नाह न [जन्नाह] जन्म-विशेष (पाय १) ।

जन्नाह न [जन्नाह] जन्म-विशेष (पाय १) ।

पदरत्न की [नगराति] नगर विलो का
आधिन मय का एक पद (सुवि ७८)।

पदरि य [दे] शीघ्र, जसो (श्राव ५१)।

पदरि } देको पदर (दे १ १८८ से १
पदरिख } ११ प्रामा नुर, २६: पद या
१७२)।

पदरिख न [दे] सधा जसो सुल (दे
५ २२ पदम)।

पदर देको पावर (पं०)।

पायज्या की [दे] नह ल जिनमें पति का
नाम पुखे पर जे नहीं बलितेवासी की
पत्नी की लता से बाधित की जाती है (दे
५ २१)।

पावज देको पाव-नर (दे २ १९५) कुमा-
र ७२८ टी)।

पायमिख न [दे] उपमावितक मनोटी (दे
५ २२ पाव नवा ५९)।

पाया की [नवा] १ नोडा बुलित। २
मुनरि की (मुन १ १ २)। ३ बिउकी
सीसा निप चीन बरें हुए हैं ऐसी साप्पी
(नर ५)। ४ य प्रतापक धम्मय, प्रयवा
नहीं? (पद १७)।

पावि य १ वैपरीत-सूचक धम्मय 'एवि हा
बणे' (दे २ १७८) कुमा)। २ निपेवाचक
धम्मय (पद ३)।

पाविन देको जमिअ-नर हि ३ १२६
नरि)।

पाविन वि [नर] द्रुल नवा (पावा २
२ १)।

पावीन वि [नर] न द्रुल नवा (मोह ५१
नरि १११)।

पावुत्तरमय वि [नवा] उत्तरावतम एक ली
नरवा (पद १ २ २७)।

पावुत्तरय (पद) देको पाव-नर (कुमा)।

पावडा की [नवा] नर-विवाहिणी की
दुमपिन (नर १८७)।

पावोदरण न [दे] कथित, हडा (दे ५
२१)।

पावय पुं [दे] पावक नां का पुंथया (दे
५ १७)।

पावय वि [नर] द्रुल, नवा, नरोन
(पा २७)।

पावय देको पा-ना।

पाव्यावत पुं [दे] १ शीघ्र, नगरा नोपी।
२ निगोपी का पुन सुवेवार का लड़का (दे
५ २२)।

पावय एक [नि+अस्] स्थापन करना।
नयेन (विदे १५६)। कर्म मसए (विदे
१७)। सङ्ग नसिऊण (य ९ ८)।

पावय एक [नर] धागला पचापन करना।
एवम (विम)।

जमण न [अवसत] म्यास स्थापन (वीन १)।
जसा की [दे] नर नाग 'जमुईसनिजमणे'
हृदयकर्मन चम्पकपथे' (पुवा १२३)।

जमिख वि [नर] नगर-माल (पुवा)।

जमस देको जस-नर। एवम एवमए,
(य ५ कुमा)। नर नर्यत, नरसमाण
(भा १९ पुवा २१३)।

जमसर वि [नर] विनय, मंगुल, नास
पाववाला 'जमसरपद' कर्मा' (पुवा
२५६)।

जमसा की [नासा] नायिका प्रयोगविष
(ना-मुम्भ १२)।

जह देको पावस (य ९ कुमा)।

जह न [नमस्] १ शाफर, गवन (श्राव ६
१२)। २ पुं मालण नास (दे ११११)।
जह वि [नर] १ शाफर में विचलेवाला
(दे १५ १८)। २ पुं विवाह, पावम-
विवाह मयुय (नुर १ १८९)। 'किउमविष'
न [किउमविष] विवाहरी का एक
नर (नर)। गमा की [गमा] शाफर-
वायिनी विवा (नुर १ १८९)। गामिनी
की [गामिनी] शाफर वायिनी विवा
(नुर १ २८)। जह देको जह (य
११७ टी)। नरुणय न [नरुणय]
नर उलारे का रुक (पाव २ १ १)।

विखय न [विखय] १ नगर-विदेय।
२ नरुण-विदेय (य २५ १०)। वाहण
पुं [वाहन] नर-विदेय (नुर १ २९)।

'सिर न [सिरम्] नर का घघ याय
(य २ ५)। 'मिहा की [मिहा] नर
का घघ याय (य २)। सय पुं [सिन]
परा बरोन का एक पुन (य २)। हरीणी
की [हरीणी] नर उलारे का रुक (दे १)।

पहसि वि [नर] नरवाला (य १
१२)।

पाहमुह पुं [दे] नर उम्भ (दे ५ २)।

पाहर पुं [नर] नर नाग (पुवा ११
१ ९)।

पाहरण पुं [दे] नबी नरवाला नरु, प्राप
(नर २२)।

पाहरणी की [नर] नरुणी नर
उलारे का रुक (य २ १)।

पाहुरा पुं [नर] नरवाला प्राप नरु
(य २१ टी)।

पहरी की [दे] हुरिका हुरी (दे ५ २)।

पहयली की [दे] विपुल, विनो (य
५ २२)।

पाहर न [नर] स्थापु स्थापु या नर नाग।
जहि पुं [नर] नर-माल नरु, स्थाप
नरु (य ५)।

पाहि वि [नर] जह देको (य १५२)।

पाहि य [नर] निपेवाचक धम्मय नहीं
(स्वय ५१ विप य ५)।

पाहु य [नर] जह देको (नर-मुम्भ
१११ पुवा १२)।

पा वर [नर] बादना समझा। नरि
एविह (विदे १ ११)। एविहि (वि
११५)। कर्म एवम एवम (दे ५
२२२)। नरुण-पावत पावमाम (दे
११ ११ य १ टी)। सङ्ग पाव
पावण पावण पावा पावण (महा
वि २८९ यो: नर १ २ १ वि २८५)।

ह पावय पाव (नर की १)। नुर ५
७ ६ २: दे २ १११ नर ११)।

पा य [नर] निपेवाचक धम्मय (य २३)।

जमस देको पावण (श्राव २९)।

जमस देको पावण (विम)।

पाह पुं [पावि] दरागु बर में दराग
विचलेविदेय। पुन पुं [पुन] मयवा
की यवावीर (पावा)। सुय पुं [सुन]
मयवा की मयवीर (पावा)।

पाह की [पावि] १ नाग मयवा नावि
(य २ १ ११ यो: य २)। २ नाग
विवा पावि रुचन नवा (पावा १ १)।
३ नाग नीन (पावा २ १)।

पारंग वु [पारङ्ग] १ कुञ्ज-विशेष संतरे का
कुण्ड । २ न. कम-विशेष कमला नील संतप
(पञ्च ४१ १; मुद्रा २१; ३११ यउअ
मुद्रा) ।

पारंग वैद्यो पारय = नारक (विशे १॥) ।

पारय देवो पारय (प्रवी ३१) ।

पारसीध वि [नारसीध] नारक-सम्बन्धी
नारक का (प्रवी ३१) ।

पारय वु [पारय] १ इति-विशेष नारक
शुचि (सप्त १२४ अ १४८ टी) । २ लम्ब
सिन्धु का स्थिति-विशेष (ठा ७) ।

पारय वि [नारक] १ नारक में उत्पन्न नरक-
संबन्धी नरक का 'जाम्ब नारय कुण्ड' (मुद्रा
११२) । २ वृत्त नरक में उत्पन्न शाली नरक
का शीत (सप्त) ।

पारमिह वि [पारमिह] नर्मिह-सम्बन्धी
(अ १४८ टी) ।

पाराय वु [पाराय] ठीलने की छोटी छत,
बन्ध; आचय निरुद्ध संक्षेप बोध, न
गुरु कि अणिमी । पुत्र सप्त नखरं ठीलने
नह न करने छि १ (अग्रा १२ १३१) ।

पाराय देवो पाराय (वि १ १७ अत्र सप्त
१४२ अत्र १४) । मुद्रा वु ठीलने (पुण्य
भाषा ४१ १) । पञ्च न [अञ्ज] अञ्ज-
विशेष (पञ्च ३ १ १) ।

पारायन वु [पारायन] १ निष्पन्न नीलपण
(मुद्रा १४२) । २ प्रसन्न-वस्त्रां पञ्चा
(पञ्च ३ १२२ अ २) ।

पारायन वु [पारायन] एक शक्ति (पुण्य
१ ३ ४ २) ।

पारायनी धी [पारायनी] देवी विशेष नीली
कुर्वा (नार) ।

पारि देवो पारी (अप्य ४३) । कंठा धी
[अप्य] नदी-विशेष (सप्त १७ ठा २
१) ।

पारिपर वु [पारिपर] १ पारिपर का
पारिपर ३ ४३ । २ न. पारिपर का पारिपर
का अण (अपि १२३; वि १२) । देवो
पारिपर

पारिग न [पारिग] नरकी का अण नील
नील अण नील (अप्य) ।

पारी धी [पारी] १ धी दीर्घ अन्त
अन्त (देव २१; अण्य १२ १३६) ।

२ मरी-विशेष (अप्य) । कौण्यपाय वु
[अप्यपाय] अह-विशेष (ठा २ १) ।
देवो पारि ।

पारुष्ट वु [वि] कुसार, गताभारस्थान (पाम्य) ।

पारुष्ट वु [वि] १ बिज सौम प्राय का छोले
का स्थान विवर । २ कुसार, गताभार स्थान
(दे ४ २१) ।

पारुष्ट न [पारुष्ट] १ कमल-वस्त्र (वि १ २) ।
२ पर्व का आचरण (अप्य १७४) ।

पारुष्टविध वि [नारुष्टविध] १ नारुष्ट-
संबन्धी । न नारुष्ट के सवीप में प्रतिपादित
अप्ययन-विशेष 'पारुष्टविध' वृत्त का छावर्ग
अप्ययन (अप्य २ ७) ।

पारुष्टा धी [नारुष्टा] पञ्चम नगर का एक
गुरुता (अप्य १७४) ।

पारुष्टिध न [वि] पारुष्टिध अत्यन्त-अप्ययन
(दे ४ २४) ।

पारुष्टिध वु [वि] कृष्ण केरु वस्त्र (दे ४
२४) ।

पारुष्टिध न [पारुष्टिध] वृत्त-विशेष (पुण्य १) ।
पारुष्टि धी [पारुष्टिध] नारी नम विप (वि १
पारि १ २७ मुद्रा) ।

पारुष्टि धी [पारुष्टिध] परिपारुष्टि-विशेष प्रवर्ती
(अप्य ३३) ।

पारुष्टि वि [वि] प्रस्त विप वृत्ता (अप्य ३३)

पारुष्टि वि [वि] वृत्त वृत्त, अज्ञान (वि ४
४२१) ।

पारुष्टि देवो पारिपर (वि २ १; पञ्च
१ २) । दीप वु [दीप] दीप-विशेष
(अप्य १ ११) ।

पारुष्टि धी [पारुष्टिध] १ नम इती
पारुष्टिध ३ अण्य की इती (अप्य २ १ १) ।

२ पारुष्टिध-विशेष वृत्त वृत्त (अप्य १३७) ।
३ पर्व वृत्त का अण्य धी पारुष्टिध वृत्तों
(वि २ २) । ४ नदी 'नह' वृत्त पारुष्टिध
अप्ययन विपुलपारुष्टिध (अप्य १३७) ।
५ वृत्त वृत्त वृत्त (वि २ टी—
अप्य १३१) ।

पारुष्टि धी [पारुष्टिध] १ पारुष्टिध (वि
२ १) । २ पारुष्टिध वृत्त वृत्त वृत्त का
एक वृत्त का अण्य (पाम्य; वि २३७) । ३
अप्ययन वृत्त वृत्त वृत्त वृत्त वृत्त वृत्त
(अप्य ३३) । ४ वृत्त-विशेष वृत्त वृत्त का

वृत्ता (अप्य अण्य १, ७) । ठील दे
[अप्य] एक वृत्त की वृत्त-विशेष (अप्य) ।

पारुष्टिध देवो पारिपर (अप्य १ १) ।

पारुष्टिध धी [पारुष्टिध] पारिपर का अण्य
(अप्य वि १२१) ।

पारुष्टि धी [पारुष्टिध] १ अत्यन्त-विशेष, एक
वृत्त (अप्य १) । २ पारिपर, वृत्त (अप्य १) ।

पारुष्टि धी [पारुष्टिध] १ वृत्त-विशेष (अप्य १
४) । २ वृत्त वृत्त वृत्त वृत्त वृत्त वृत्त वृत्त

वृत्त वृत्त वृत्त वृत्त वृत्त वृत्त वृत्त वृत्त वृत्त
(अप्य ३३) ।

पारुष्टि धी [पारुष्टिध] नारी नम विप (वि १
१) ।

पारुष्टि धी [पारुष्टिध] नारी नम विप (वि १
१) ।

पारुष्टि धी [पारुष्टिध] नारी नम विप (वि १
१) ।

पारुष्टि धी [पारुष्टिध] नारी नम विप (वि १
१) ।

पारुष्टि धी [पारुष्टिध] नारी नम विप (वि १
१) ।

पारुष्टि धी [पारुष्टिध] नारी नम विप (वि १
१) ।

पारुष्टि धी [पारुष्टिध] नारी नम विप (वि १
१) ।

पारुष्टि धी [पारुष्टिध] नारी नम विप (वि १
१) ।

पारुष्टि धी [पारुष्टिध] नारी नम विप (वि १
१) ।

पारुष्टि धी [पारुष्टिध] नारी नम विप (वि १
१) ।

पारुष्टि धी [पारुष्टिध] नारी नम विप (वि १
१) ।

पारुष्टि धी [पारुष्टिध] नारी नम विप (वि १
१) ।

पारुष्टि धी [पारुष्टिध] नारी नम विप (वि १
१) ।

पारुष्टि धी [पारुष्टिध] नारी नम विप (वि १
१) ।

पारुष्टि धी [पारुष्टिध] नारी नम विप (वि १
१) ।

पिबिद्धु वि [निष्ठु] सयम गोष होम
कय्यः 'पासिपिबिद्धुपाविद्धुपावि बहा' (या
१४ २०) सुपा २०१ छट्ठि १४८)।

गिबिद्धम सक [निर् + क्री] निष्कय्य करण,
बरीयता। पिबिद्धुपावि (सुप २१)।

गिबिद्धिम वि [निष्ठु] पण्डितम
पयसी स्वावधिक (वर २८१ टी)।

गिबिद्धि वि [निष्ठु] विद्या-पण्डित, पण्डित
(सुप १ २)।

गिबिद्धि वि [निष्ठु] इवा-पण्डित निर्दय
(पाप ५ ३) ; सुपा ४ ६)।

गिबिद्धि वि [निष्ठु] वनम गति
(पय २ १)।

गिबिद्धु पु [निष्ठु] वानम वपाय (पय ३)।

गिबिद्धु की [दे] बीटा हुमा, विगिबिद्ध
(दे १ ४)।

गिबिद्धु न [निष्ठु] वनम विदेष
(सुप १ १—पय २१)।

गिबिद्धु सक [निर् + क्री] १ बुर करना।
२ पाप बरीयता के पुँह का बन करना। ३
पाप धारि का उलट करना। पिबिद्धु
(सुप १)।

गिबिद्धु न [निष्ठु] १ पाप धारि के
पुँह का बन करना। २ पाप धारि का
उलट (सुप १)।

गिबिद्धु पु [दे] १ बोर। २ घुबल कायन
(दे २ ४०)।

गिबिद्धु पुन [निर् + क्री] बीटा, मोहर, गुग्रा
मग्री बयपा (दे २ ४)।

गिबिद्धु केो गिबिद्ध (सुप १ सम
१२१) कय)।

गिबिद्धु वि [निर् + क्री] स्वय-पण्डित वाली
पण्डित (या ४१५ घ)।

गिबिद्धु न [निष्ठु] गावता (सुप
१२१)।

गिबिद्धु वि [निष्ठु] बर-पण्डित धर्मिय
पण्डित (नि १११)।

गिबिद्धु सक [निर् + क्री] १ बर
निष्ठता। २ बीटा सेना, बीटा सेना।

गिबिद्धु (मय) : गिबिद्धि (कय)।
गुग्रा गिबिद्धि (कय)। धर्म गिबिद्ध

गिबिद्धि (कय)। बर गिबिद्धममाय
(याता १ ३, पयम २२, १०)। बर
गिबिद्धम (कय)। बर, गिबिद्धममाय
(कय) कय)।

गिबिद्धु पुन [निष्ठु] १ निर्दय। २
बीटा-गुग्रा (अ १ ३ व १)।

गिबिद्धु न [निष्ठु] ऊपर देयो (सुप
११) : याता १ १९ पयम २३ ४)।

गिबिद्धु वि [निष्ठु] गावता हुमा (सुप
२३)।

गिबिद्धु वि [दे] निष्ठु गिबिद्ध माय
हुमा (दे ४ १२ पाप)।

गिबिद्धु वि [निष्ठु] गिबिद्ध गिबिद्ध
विगिद्ध (पय ११)।

गिबिद्धु वि [दे] गिबिद्ध गिबिद्ध
गिबिद्ध गिबिद्ध (दे ४ ४१)।

गिबिद्धु वि [दे] गिबिद्ध गिबिद्ध-गिबिद्ध
(पय)।

गिबिद्धु वि [निष्ठु] १ स्वय स्वय
(पाप पय १ १)। २ बुर, पयिद्ध
(याता १ १ व २)। ३ पाप-गिबिद्ध
गिबिद्ध (पय २ १)। बर वि [बर]

पाप-गिबिद्ध गिबिद्ध गिबिद्ध गिबिद्ध
गिबिद्ध गिबिद्ध (पय २ १ व १)।

गिबिद्धु वि [निष्ठु] १ निर्दय। २
गिबिद्धु वि [निष्ठु] १ निर्दय। २
गिबिद्धु वि [निष्ठु] १ निर्दय। २

गिबिद्धु वि [निष्ठु] १ निर्दय। २
गिबिद्धु वि [निष्ठु] १ निर्दय। २

गिबिद्धु वि [निष्ठु] १ निर्दय। २
गिबिद्धु वि [निष्ठु] १ निर्दय। २

गिबिद्धु वि [निष्ठु] १ निर्दय। २
गिबिद्धु वि [निष्ठु] १ निर्दय। २

गिबिद्धु वि [निष्ठु] १ निर्दय। २
गिबिद्धु वि [निष्ठु] १ निर्दय। २

गिबिद्धु वि [निष्ठु] १ निर्दय। २
गिबिद्धु वि [निष्ठु] १ निर्दय। २

गिबिद्धु वि [निष्ठु] १ निर्दय। २
गिबिद्धु वि [निष्ठु] १ निर्दय। २

गिबिद्धु वि [निष्ठु] १ निर्दय। २
गिबिद्धु वि [निष्ठु] १ निर्दय। २

गिबिद्धु वि [निष्ठु] १ निर्दय। २
गिबिद्धु वि [निष्ठु] १ निर्दय। २

गिबिद्धु वि [निष्ठु] १ निर्दय। २
गिबिद्धु वि [निष्ठु] १ निर्दय। २

गिबिद्धु वि [दे] बरम गिबिद्ध (दे ४,
२५)।

गिबिद्धु पुन [निष्ठु] १ निर्दय, बीटा,
गिबिद्ध (सुप २१)। २ निर्दय-पय (गिबिद्ध
१२३-४ व २, १२)। ३ गिबिद्ध गिबिद्ध
बर के पाप का बीटा (पय २२)।

गिबिद्धु पु [निष्ठु] गिबिद्ध-गिबिद्ध (गिबिद्ध
१२३)।

गिबिद्धु न [निष्ठु] गिबिद्ध-गिबिद्ध (गिबिद्ध
१२३)।

गिबिद्धु वि [निष्ठु] गिबिद्ध-गिबिद्ध (गिबिद्ध
१२३)।

गिबिद्धु वि [निष्ठु] गिबिद्ध-गिबिद्ध (गिबिद्ध
१२३)।

गिबिद्धु वि [निष्ठु] गिबिद्ध-गिबिद्ध (गिबिद्ध
१२३)।

गिबिद्धु वि [निष्ठु] गिबिद्ध-गिबिद्ध (गिबिद्ध
१२३)।

गिबिद्धु वि [निष्ठु] गिबिद्ध-गिबिद्ध (गिबिद्ध
१२३)।

गिबिद्धु वि [निष्ठु] गिबिद्ध-गिबिद्ध (गिबिद्ध
१२३)।

गिबिद्धु वि [निष्ठु] गिबिद्ध-गिबिद्ध (गिबिद्ध
१२३)।

गिबिद्धु वि [निष्ठु] गिबिद्ध-गिबिद्ध (गिबिद्ध
१२३)।

गिबिद्धु वि [निष्ठु] गिबिद्ध-गिबिद्ध (गिबिद्ध
१२३)।

गिबिद्धु वि [निष्ठु] गिबिद्ध-गिबिद्ध (गिबिद्ध
१२३)।

गिबिद्धु वि [निष्ठु] गिबिद्ध-गिबिद्ध (गिबिद्ध
१२३)।

गिबिद्धु वि [निष्ठु] गिबिद्ध-गिबिद्ध (गिबिद्ध
१२३)।

गिबिद्धु वि [निष्ठु] गिबिद्ध-गिबिद्ध (गिबिद्ध
१२३)।

गिबिद्धु वि [निष्ठु] गिबिद्ध-गिबिद्ध (गिबिद्ध
१२३)।

गिबिद्धु वि [निष्ठु] गिबिद्ध-गिबिद्ध (गिबिद्ध
१२३)।

गिबिद्धु वि [निष्ठु] गिबिद्ध-गिबिद्ध (गिबिद्ध
१२३)।

गिबिद्धु वि [निष्ठु] गिबिद्ध-गिबिद्ध (गिबिद्ध
१२३)।

पिमाक्षि वि [निगक्षित] नियमित (हमीर १)।

पिमाक्ष पुं [वि] बर्न बान बानी (वि ४ २७)।

पिमाक्ष वि [नक्ष] नया बक्ष-नक्षित (सुष १ २ १ २)।

पिमाक्ष सक्त [नि + गक्ष] १ बक्षता। २ पक्षता सम्पाद करना। बक्ष- पिमाक्षमात्र (विसे ८३)।

पिमाक्ष पुं [निमाक्ष] १ प्रकट बीज (विसे १२८)। २ व्यापार-व्यापन स्थान जहाँ व्यापारी बिरोध संस्था में रहते हैं पैसा व्यवहार (पण्य १ ३; बीज व्यापार)। ३ व्यापार-संस्थान (सम ३१)।

पिमाक्षन न [निमाक्षन] अनुमान प्रमाण का एक प्रत्यक्ष उपसंहार (बसनि १)।

पिमाक्षि वि [वि] निमाक्षित (पण्य १)।

पिमाक्ष पुं [निक्ष] सक्ष, पक्षि, बक्ष (विषा १ ९ उवा)।

पिमाक्षन न [निक्षन] काण्ड हेतु (सम ७ ७)।

पिमाक्षि वि [निक्षित] सर्वथा शोधित (पण्य १ ४)।

पिमाक्ष केवि पिमाक्ष १ २ केवि के व्यापार का बीजर्षि प्राप्यक-विरोध (मैत्र)।

पिमाक्षि केवि पिमाक्षि (वि २)।

पिमाक्ष केवि पिमाक्ष = निमाक्ष (वि १ ४३)।

पिमाक्ष न [निमाक्ष] जलक, व्यतिथ्य (उ ३, २ वा १९)।

पिमाक्ष पुं [निक्ष] पक्षार, बीज, निमाक्ष, बीज (सम २४, ७)।

पिमाक्षि केवि पिमाक्षि।

पिमाक्ष केवि पिमाक्षि (सुष १ ८९)।

पिमाक्षि वि [नान] नान नय (प्रासा २, २ ३, ७ ८ १ वि १३३)।

पिमाक्षि न [नाम्य] नमात्र नमात्र (उ ३, २; सुष ३, २१)।

पिमाक्षि सक्त [नि + माक्ष] १ निमाक्ष करना, बक्ष करना निमाक्ष करना। २ रोचना। ३ बक्ष- बीजा स्थिति करना।

सक्त निमाक्षि, पिमाक्षि (उ ७ ७ कम्प २७)। ४. निमाक्षि, यक्ष (उ ३ २१)।

पिमाक्षि सक्त [नि + माक्ष] १ निमाक्ष सम्पाद करना। २ बीज नमात्र। बक्ष निमाक्षि (उ ३ २ १ २ १ २)।

पिमाक्ष केवि पिमाक्ष = निमाक्ष (प्रासा २)।

पिमाक्षि वि [निमाक्ष] सुष-नक्षित (पण्य १ २)।

पिमाक्ष केवि पिमाक्ष (पण्य १ ४)।

पिमाक्ष वि [निमाक्ष] १ सुष प्रकट (कम्प)। २ बीज बीज खलेपना (उवा)।

पिमाक्ष सक्त [नि + माक्ष] निमाक्ष गोपन करना। पिमाक्ष (उवा: महा)। पिमाक्षि (उ ३ २ १)। सक्त- पिमाक्षि (उ ३ २ १)।

पिमाक्षि न [निमाक्ष] गोपन निमाक्ष (उवा १२)।

पिमाक्षि वि [निमाक्ष] निमाक्ष निमाक्ष गोपित (सुष ३ १८)।

पिमाक्ष पुं [निमाक्ष] सक्त बीजों का एक साधारण शोध-विरोध (सक्त पण्य १)। बीज पुं [बीज] निमाक्ष का बीज (सम २३ १ कम्प ४ ४३)।

पिमाक्ष केवि पिमाक्ष = निमाक्ष + माक्ष। बक्ष- पिमाक्षि (मैत्र)।

पिमाक्षि वि [निमाक्ष] निमाक्षि (मैत्र)।

पिमाक्षि केवि पिमाक्षि (मैत्र)।

पिमाक्षि केवि पिमाक्षि (मैत्र)।

पिमाक्षि केवि पिमाक्षि (मैत्र)।

पिमाक्षि केवि पिमाक्षि (मैत्र)।

पिमाक्षि केवि पिमाक्षि (मैत्र)।

पिमाक्षि केवि पिमाक्षि (मैत्र)।

पिमाक्षि केवि पिमाक्षि (मैत्र)।

पिमाक्षि केवि पिमाक्षि (मैत्र)।

पिमाक्षि केवि पिमाक्षि (मैत्र)।

पिमाक्षि केवि पिमाक्षि (मैत्र)।

पिमाक्षि केवि पिमाक्षि (मैत्र)।

पिमाक्षि केवि पिमाक्षि (मैत्र)।

पिमाक्ष पुं [वि] १ बक्ष, बक्षता (वि २ २)। ४ बक्षर बाने का वाता (वि ४ १३)।

३ प्रस्थान प्रमाण (उ ३ १)।

पिमाक्षि न [निमाक्ष] १ निमाक्ष बक्षर निमाक्ष (उवा १ २; सुष ३ २ २ २)।

२ प्रमाण भाग बाना। ३ प्रमाण (वि १)।

पिमाक्षि वि [निमाक्ष] बक्षर निमाक्ष निमाक्ष (प्रा १९)।

पिमाक्षि वि [निमाक्ष] प्रमाण निमाक्ष निमाक्ष (सम १ २३)।

पिमाक्षि वि [निमाक्ष] निमाक्ष बक्षर निमाक्ष निमाक्ष (विसे १२४ उवा)। जस्त वि [बक्ष] बिक्षा यत्र बक्षर में पैसा हो (उवा १ १८)। मोक्ष वि [मोक्ष] बिक्षा यत्र मोक्ष बक्षर में हो (प्रा)।

पिमाक्षि वि [निमाक्ष] हामी-नक्षित (मैत्र)।

पिमाक्ष केवि पिमाक्षि। ४ पिमाक्षि, यक्ष (सुष ३ १८)।

पिमाक्ष पुं [निमाक्ष] १ बक्षर निमाक्ष (प्रा १७; प्रा ९)। २ निमाक्ष बक्षर निमाक्ष (सम ७ ८)। ३ बक्षर निमाक्ष निमाक्ष (सम ४ ८)। ४ निमाक्ष निमाक्ष (प्रा ४ ८)। ५ निमाक्ष निमाक्ष (प्रा ४ ८)।

पिमाक्षि वि [निमाक्ष] निमाक्ष निमाक्ष (प्रा १ २२)।

पिमाक्षि वि [निमाक्ष] निमाक्ष निमाक्ष (प्रा १ २२)।

पिमाक्षि वि [निमाक्ष] निमाक्ष निमाक्ष (प्रा १ २२)।

पिमाक्षि वि [निमाक्ष] निमाक्ष निमाक्ष (प्रा १ २२)।

पिमाक्षि वि [निमाक्ष] निमाक्ष निमाक्ष (प्रा १ २२)।

पिमाक्षि वि [निमाक्ष] निमाक्ष निमाक्ष (प्रा १ २२)।

पिमाक्षि वि [निमाक्ष] निमाक्ष निमाक्ष (प्रा १ २२)।

पिमाक्षि वि [निमाक्ष] निमाक्ष निमाक्ष (प्रा १ २२)।

पिमाक्षि वि [निमाक्ष] निमाक्ष निमाक्ष (प्रा १ २२)।

पिमाक्षि वि [निमाक्ष] निमाक्ष निमाक्ष (प्रा १ २२)।

पिमाक्षि वि [निमाक्ष] निमाक्ष निमाक्ष (प्रा १ २२)।

पिमाक्षि वि [निमाक्ष] निमाक्ष निमाक्ष (प्रा १ २२)।

पिमाक्षि वि [निमाक्ष] निमाक्ष निमाक्ष (प्रा १ २२)।

विष्णुसम है। विष्णुसम (क) सार्थ १४३।
विष्णुसम एक [निर् + वि] निरवयव करना
निरवयव करना। वह विष्णुसमाग (क)
७२८ टी)।

विष्णुसम पु [निरवयव] १ निरवयव निर्वाय
(मम प्राप्ति १७७)। २ निरवयव निर्वाय
(पत्र)। ३ नय-विरोध इत्यादि मम
वास्तविक पदार्थों को ही माननेवाला मत
परिहास-वाक्य (इह ७ पंथा १३)। च्छा
की [क] पयवान (निष् २)।

विष्णुसम एक [निष्] वेदना, काटना।
विष्णुसम (इ २ १२४)।

विष्णुसमवि [विष्णु] काटा हुआ (कुमा
४ २३८) बरत।

विष्णुसम वि [विष्णुसम] कानिष्ठ-वर्द्धित
योग-हीन (पञ्च १ २)।

विष्णुसम वि [विष्णुसम] सार-वर्द्धित,
निष्ठापन-वर्द्धित (मा २७)।

विष्णुसम वि [विष्णुसम] विष्णु-वर्द्धित (आया
१ ९ उप २११ टी)।

विष्णुसम वि [विष्णुसम] वृक्ष-वृक्ष कलाप
किया हुआ काट्य हुआ (विदे २७३)।

विष्णुसम वेदो विष्णुसम (उ ११)।

विष्णुसम वेदो विष्णुसम (गुण ४२३
मन्त्र)।

विष्णुसम वि [विष्णुसम] निष्ठा, निर्वाण
मर्त्यविषय (आया १ १ मन्त्र)।

विष्णुसम वि [विष्णुसम] वीर वर्द्धित वृक्ष-
वर्द्धित (पञ्च १)।

विष्णुसम वि [वि] निर्वाण कल्याण-वर्द्धित (इ
४ १२)।

विष्णुसम वि [निर्वाणवर्द्धित] निष्ठा, कृता
हुआ (गुण ४ ७२)।

विष्णुसम एक [नि + विष्] १ बाहर
निगलना। कृकला। विष्णुसम (मन्त्र)।
कर्म विष्णुसम (वि ११)। कर्म विष्णुसम
वर्द्धित (वि १२)। कर्म विष्णुसम, विष्णुसम
(मन्त्र विर १ १)। प्रयो। विष्णुसम
(आया १ ८)।

विष्णुसम पु [विष्णुसम] निष्ठापन (वि
१७२)।

विष्णुसम न [विष्णुसम] निष्ठापन
निष्ठापन (निष् १)।

विष्णुसमाविष वि [विष्णुसम] निष्ठापन-
बाहर निगलना हुआ (आया १ ८)।

विष्णुसम एक [नि + विष्] बालना।
विष्णुसम (गुण ७ ११)।

विष्णुसमा की [विष्णुसम] बाहर निष्ठापन
की भाँडा, निर्वाण (आया १ १९ टी—
पत्र २)।

विष्णुसम वि [विष्णुसम] १ वृक्ष-वृक्ष निर्वाण
(इ ४ २३८)। २ कर्म-कर्म निर्वाण
(आया)। ३ निष्ठापन निष्ठापन (आया
१ ८—पत्र १४३; १ १९—पत्र १११)।

विष्णुसम न [विष्णुसम] वृक्ष कलाप (विदे
२ १)।

विष्णुसम एक [निर् + वृक्ष] १ बाहर
निष्ठापन के लिए बमकला। २ निर्वाण
करना। ३ वृक्ष-वृक्ष। विष्णुसम विष्णुसम
(आया १ १९ १८)। विष्णुसम (वर्द्धित)
कर्म विष्णुसम (मन्त्र १२)।

विष्णुसम न [विष्णुसम] निर्वाण बाहर
निष्ठापन की पदार्थ (क)।

विष्णुसमा की [विष्णुसम] ऊपर वेदो
(आया १ १९—पत्र १११)।

विष्णुसम वि [विष्णुसम] सदा किया
हुआ (विदे २७३)।

विष्णुसम एक [निर् + वृक्ष] कीलना,
कलाप उठाना। विष्णुसम (निष् १)। वह
विष्णुसम (निष् १)। वह विष्णुसम
(मन्त्र)।

विष्णुसम वि [विष्णुसम] निष्ठापन वृक्ष-वृक्ष
(गुण १ २)।

विष्णुसम वेदो विष्णुसम (उ ४ १)।

विष्णुसम वेदो विष्णुसम = नि + वृक्ष। विष्णुसम
(गुण १ ४८)।

विष्णुसम वेदो विष्णुसम (मन्त्र १२)।
विष्णुसम न [विष्णुसम] निष्ठापन, नार्थ में
समाप्त, सार-वर्द्धित (क ७२ टी)।

विष्णुसम वेदो विष्णुसम (क ७२ टी)।

विष्णुसम वि [वि] वृक्ष वीर्य हुआ (इ ४ २३३
मन्त्र)।

विष्णुसम वेदो की = की।

विष्णुसम वि [निर्वाण] १ निष्ठापन मनुष्य-
वर्द्धित गुण-वर्द्धित। २ वृक्ष-वृक्ष (मन्त्र)।

विष्णुसम वि [निर्वाण] १ निर्वाण-वर्द्धित।
२ निर्वाण वृक्ष को वृक्ष-वर्द्धित-वर्द्धित-वर्द्धित
विष्णुसम-वर्द्धित-वर्द्धित-वर्द्धित (पञ्च
२ ३)।

विष्णुसम एक [निर् + वृक्ष] १ क्षय करना
नाश करना। २ कर्म-वर्द्धित को क्षय से
क्षय करना। विष्णुसम, विष्णुसम, विष्णुसम
(मन्त्र ४ ४ १)। वृक्ष, विष्णुसम, विष्णुसम
वृक्ष (वि ३७९ मन्त्र)। वह विष्णुसम-वर्द्धित
(उ ४ १)। वह विष्णुसम (मन्त्र १८
१)। वह विष्णुसम (मन्त्र १८ १
मन्त्र)।

विष्णुसम न [निर्वाण] नीचे वेदो (वीर)।

विष्णुसमा की [निर्वाण] १ क्षय क्षय।
२ कर्म-क्षय कर्म-क्षय। ३ विष्णुसम को क्षय
विष्णुसम ही वृक्ष-वर्द्धित (मन्त्र १४ १२)।

विष्णुसम की [निर्वाण] कर्म-क्षय कर्म-विष्णुसम
(पञ्च, मन्त्र २४)।

विष्णुसम वि [निर्वाण] क्षय विष्णुसम-
वर्द्धित (वृक्ष)।

विष्णुसम वि [निर्वाण] निर्वाण कल्याण-वर्द्धित
(पञ्च १२ १४)।

विष्णुसम वि [निर्वाण] १ निर्वाण करने
वाला। २ सार-वर्द्धित सार-वर्द्धित कल्याण-वर्द्धित
(पञ्च २८ मन्त्र)। ३ वृक्ष-वर्द्धित-वर्द्धित-वर्द्धित
को क्षय के साथ प्रत्यक्ष का भी वृक्ष-वर्द्धित
वर्द्धित विष्णुसम कर के विष्णुसम वह वृक्ष
निर्वाण वृक्ष (उ ४ मन्त्र २३ ७)।

विष्णुसम की [निर्वाण] १ क्षय, वृक्ष-वर्द्धित
वर्द्धित कर्म का प्रत्यक्ष (विदे २३२)।
२ वृक्ष (पञ्च १ १)।

विष्णुसम वेदो विष्णुसम (पञ्च २८ मन्त्र टी)
४ ४२)।

विष्णुसम वि [निर्वाण] ऊपर वेदो
(पञ्च १४)।

विष्णुसम एक [निर् + वृक्ष] बाहर निष्ठापन।
विष्णुसम (मन्त्र)। वह विष्णुसम-वर्द्धित
(वीर)। वह विष्णुसम (मन्त्र २, १)।

पिञ्जाय न [निर्याण] १ बाहर निष्पन्ना निर्जन (ठा २५ ३) । २ प्राप्ति-वृत्त सम (धीन) । ३ योद्धा युक्ति (भाव ४) ।

पिञ्जायिषि नि [निर्याण] निर्याण-संज्ञा, निर्याण-संज्ञा (मय १३ १) निष्प ८) ।

पिञ्जामा १ पुं [निर्याण] बह्वार, पिञ्जामय १ बह्वार का निष्पन्ना (मिथे २२१३) याया १ १० धीन गुर १३ ३८) ।

पिञ्जामन न [निर्वाण] बह्वार पुष्पा 'अपिञ्जामन' (बव १) ।

पिञ्जामव पुं [निर्याण] १ शीघार की देवा-पुष्पा करनेवाला पुनि (पव ७१) । २ निष्पन्न-कारक (पव-भाषा १०) ।

पिञ्जामिषि नि [निर्याण] वार पुष्पाया हुना वापि (महा) ।

पिञ्जाय पुं [नि] जनकार (बे ४ १४) ।

पिञ्जाय नि [निर्वाण] निर्वाण निष्पन्न (बहु उप ६ २८६) ।

पिञ्जायन न [निर्याण] वैर-मुक्ति, बह्वार (महा) ।

पिञ्जायना की [निर्याण] ऊपर से (उप ४११ टी) ।

पिञ्जायन सेवो पिञ्जामय (धनि) ।

पिञ्जाय पुं [निर्वाण] कुली का यव योद्धा (धुम २ १) ।

पिञ्जाय नि [निर्वाण] बीजा हुना पचमुत्त (मोच १८ ज टी गुर ६, १८ धीन) ।

पिञ्जाय वक् [निर् + जि] बीजा पचन करना । निष्पन्न (बीज) संज्ञा निष्पन्निक्य (महा) ।

पिञ्जायिषि सेवो पिञ्जाय (धुम १६) ।

पिञ्जाय नि [निर्वाण] नाश-प्राप्त निष्पन्न १ बीज (मय ठा ४ १) ।

पिञ्जाय नि [निर्वाण] बीज-वृत्त केपय बनिष्ठ (धीन भा २ महा) ।

पिञ्जाय [निर् + मुज] जनकार करना (मिथे २२१ टी) ।

पिञ्जाय नि [निर्वाण] १ बीज, संयुक्त (मिथे १ २) बीज १ भा) । २ बनिष्ठ, बनिष्ठ (धीन) । ३ बनिष्ठ प्रत्यय (भाव ४ १) ।

पिञ्जाय की [निर्याण] व्याख्या विवरण टीका (मिथे २२१३ धीन २ उप १ ७) ।

पिञ्जाय सेवो पिञ्जाय (उप ४०) ।

पिञ्जाय नि [निर्याण] १ निष्पन्न निष्पन्न (भाव १ १—पव १४) २ जननीय प्रमुत्त (धोच २४८) । ३ प्रमुत्त प्रमुत्त ४ प्रमुत्त (बसि १) ।

पिञ्जाय नि [निर्वाण] वृत्त 'निष्पन्न' वत्त (मय न २२) ।

पिञ्जाय वक् [निर् + मुज] १ पिञ्जाय करना । २ रचना निर्वाण करना । कर्म निष्पन्निक्य (मि २२१) । ३ पिञ्जायिषि (बव २) । ४ पिञ्जायिषि (कम) ।

पिञ्जाय पुं [निर्वाण] १ बीज धनि, प्रमुत्त प्रमुत्त (बे ४ २८ उप १ १) ।

२ बह्वार योद्धा 'यव वापि विवर' योद्धा 'निष्पन्निक्य' (मय २ टी बव १) । ३ द्वार के पास का बह्वार-विवर (भाव १ १—पव १२ पव १ १) । ४ द्वार बह्वार (गुर २ ८१) ।

पिञ्जाय नि [निर्याण] प्रमुत्त से प्रमुत्त करनेवाला (बसि १ १४) ।

पिञ्जाय न [निर्याण] सेवो पिञ्जाय (उप १६, २११ पव २) ।

पिञ्जाय याया की [निर्याण] १ निष्पन्न निष्पन्न १ यव बाहर निकलना (बव १) । पिञ्जाय (अ ४ १) । २ विवरना निर्वाण (मिथे २२१) ।

पिञ्जाय सेवो पिञ्जाय (बसि १ १३) ।

पिञ्जाय नि [निर्याण] वृत्त (पव १४४) ।

पिञ्जाय पुं [नि] १ प्रकार, वापि । २ पुष्पा का वापक (बे ४ १३) ।

पिञ्जाय पुं [निर्याण] १ जनकार पिञ्जाय १ वापन (उप ४४४ पव १३ २३) । २ जनकार (मिथे २२१) ।

पिञ्जाय पुं [निर्वाण] १ पिञ्जाय, पिञ्जाय १ वापनी 'पिञ्जाय' (धोच ११८ भाषा १ १—पव १४) ।

पिञ्जाय पुं [नि] १ यव, योद्धा (बे ४ १३) ।

पिञ्जाय वक् [निर्वाण] संज्ञा करना । पिञ्जाय (भाव ४ १) ।

पिञ्जाय वक् [नि] बीजा होना । पिञ्जाय (बे ४ २ १ पव) । २ पिञ्जाय (धुम १ १३) ।

पिञ्जाय नि [नि] बीजा, पुष्पा (बे ४ २१) । पिञ्जाय पुं [निर्याण] यव यव के पिञ्जाय वापि का प्रवाह (बे १ २८ २ २) ।

पिञ्जाय न [निर्याण] ऊपर से (मय २४ २३ गुर १ १४ पुना ११६) ।

पिञ्जाय की [निर्याण] नवी उन्मिल (धुम) ।

पिञ्जाय वक् [निर्याण] सेवना निष्पन्न करना । पिञ्जाय, पिञ्जाय (बे ४ १) ।

वक् पिञ्जाय सेवना पिञ्जाय (भा ४ भाषा २ १ १) । वक् पिञ्जाय सेवना, पिञ्जाय (महा भाषा) ।

पिञ्जाय वक् [निर् + वक्] निष्पन्न करना । वक् पिञ्जाय (भाषा) ।

पिञ्जाय नि [निष्पन्न] सेवना (भाषा) ।

पिञ्जाय पुं [निष्पन्न] सेवना, निष्पन्न (उप १६; उप १३) ।

पिञ्जाय पुं [निष्पन्न] योद्धा निष्पन्न करनेवाला (ठा ६) ।

पिञ्जाय नि [निष्पन्न] १ वृत्त, निष्पन्न (उप १३१३ वक् ४२) । २ वक्, निष्पन्न (भाषा—उप १) ।

पिञ्जाय नि [निर्वाण] निष्पन्न (उप १४८ टी) ।

पिञ्जाय नि [नि] निर्वाण, व्यापक (बे ४ १३) ।

पिञ्जाय नि [निष्पन्न] वृत्त, निष्पन्न (गुर १ १८४ पुना ४४४) ।

पिञ्जाय नि [नि] बीजा, पुष्पा (बे ४ २१) । पिञ्जाय वक् [नि] सेवना वापक । पिञ्जाय (बे ४ १२४) ।

पिञ्जाय पुं [नि] सेवना सेवना (धुम) ।

पिञ्जाय पुं [निर्वाण] नि [निर्वाण] वक् करनेवाला कर्मी का वाप करनेवाला (भाषा) ।

पिञ्जाय नि [नि] १ टंक-निष्पन्न । २ निष्पन्न, निष्पन्न (४ २) ।

पिञ्जाय नि [निष्पन्न] निष्पन्न वक् वापि (धुम २६) ।

पिण्ड-द्रुम मक [हर] टयकता ह्या ।
पिण्ड-द्रुम (हे ४ १७१) ।

पिण्ड-द्रुम अ [हरित] टयकता ह्या (पाथ) ।
पिण्ड-द्रुम मक [बि + गम्] क्य भावा,
नट होना । पिण्ड-द्रुम (हे ४ १७२) ।

पिण्ड-द्रुमो पिण्डा = नि + स्वा । पिण्ड (मधि) ।

पिण्ड-द्रुम [नि + स्वापय] ? समान
पिण्ड-द्रुम [करना पूर्ण करना । २ कर्म करना
कर्म करना । ३ विरोध क्य से स्वापन
करना स्मर करना । मूक, पिण्ड-द्रुम (भा
२३ १) । संज्ञ पिण्ड-विज (मि) । क
पिण्ड-यजिज (का ३३७ टी) ।

पिण्ड-द्रुम न [निद्रापन] ? कर्म करना
समाप्त । २ बि नाश-कारक कर्म करने-
वाला (मुवा १११ वरह) । ३ समाप्त करने
वाला (बी ३) ।

पिण्ड-द्रुम बि [निद्रापन] समाप्त करनेवाला
(भा ९) ।

पिण्ड-द्रुम बि [निद्रापन] ? समाप्त किया
हूया (वचन २) । २ बिनाशित (सि २, १) ।

पिण्डा मक [नि + स्वा] कर्म होना
समाप्त होना । पिण्डा (वि १२७) ।

पिण्डा बी [निद्रा] ? कर्म कर्म, समाप्त
(वि २०११ मुवा ११) । २ कर्म (भा १)
१) । भावि बि [भावि] पिण्ड-द्रुम
कौलनेगता, निरूप-पूर्वक कर्म करना
(भा १) ।

पिण्डा न [निद्रा] कर्म-द्रुम-मुक भोजन
(म = २२) ।

पिण्डा न [निद्रा] ? बी बीय व्यञ्जन
(हा ४ २ पद २ ३) । १ समाप्त (मि
१) । कर्मा बी [कर्मा] मक-कर्मा-विरोध
हरी कर्म व्यञ्जन की बात-बी (हा ४
२) ।

पिण्डा न को पिण्ड-द्रुम (मुवा ११७) ।

पिण्ड-द्रुम बि [निद्रा] ? समाप्त किया हूया
पूर्ण किया हूया (का १ ११ टी कर्म ४
७४) । २ नट किया हूया निरुद्ध (मुवा
४४८) । ३ स्मर (सि ४ ७) । ४ निरूप
मि (भा ३ १ १) । ५ मू मोक्ष मुक्ति
(भा १) । ६ बि [निद्रा] इच्छा (का

३१) । 'द्रि बि [निद्रा] प्रवृत्त, मोक्ष कर्म
कर्म (भा १) ।

पिण्ड-द्रुम बि [निद्रा] पिण्ड-द्रुम पिण्ड-द्रुम
(पद २ ३) ।

पिण्ड-द्रुम वु [निद्रा] द्रुम वृह का पानी
(रभा) ।

पिण्ड-द्रुम बीय [निद्रा] द्रुम कर्मा ।
२ कर्म (वि ७४ टी) । बी या (का
१) ।

पिण्ड-द्रुम न [निद्रा] द्रुम (द्रुम ३) ।

पिण्ड-द्रुम बि [निद्रा] द्रुम-द्रुम (पद
२ १ बीय) ।

पिण्ड-द्रुम न को पिण्ड-द्रुम (पद २ १) ।

पिण्ड-द्रुम बि [निद्रा] पिण्ड-द्रुम कर्म
पिण्ड-द्रुम [भा १ २४४ पाथ वरह) ।

पिण्ड-द्रुम न [निद्रा] द्रुम कर्मा
(का १) । २ बि कर्म-द्रुम (हा १, १) ।

पिण्ड-द्रुम मक [नि + स्वा] पिण्ड-द्रुम
करना निरुद्ध होना स्वप्न होना । पिण्ड-द्रुम
(हे ४ १७ पद) ।

पिण्ड-द्रुम मक [नि + स्वा] द्रुम
पिण्ड-द्रुम (वु ४१) ।

पिण्ड-द्रुम बि [निद्रा] स्वप्न निरुद्ध (सि ४
११) ।

पिण्ड-द्रुम न [निद्रा] द्रुम वृह का
पानी कर्मा (भा १) ।

पिण्ड-द्रुम बि [निद्रा] द्रुम-द्रुम कर्म-
द्रुम कर्म करनेवाला (द्रुम) ।

पिण्ड-द्रुम बि [निद्रा] द्रुम पिण्ड-द्रुम कर्मा
(सि ४ ४१) ।

पिण्ड-द्रुम बि [निद्रा] द्रुम (सि ४ २३) ।

पिण्ड-द्रुम न [निद्रा] भाव भाव (सि
निद्रा २१) । पद १ २७ मुवा
२०) ।

पिण्ड-द्रुम [निद्रा] पद-द्रुम (पाथ) ।

पिण्ड-द्रुम न [निद्रा] कर्मा कर्म (का ३३३
टी) ।

पिण्ड-द्रुम को पिण्ड-द्रुम । पिण्ड-द्रुम (मुवा
पद) ।

पिण्ड-द्रुम वु [निद्रा] द्रुम भाव भाव
(पाथ १ १३ पद १, १ १३ से १ १) ।

पिण्ड-द्रुम बि [निद्रा] ? भाव भाव (का
१२, का १ ११ टी) । २ बि बि मोक्ष कर्म
(हे ४ ४२) ।

पिण्ड-द्रुम बि [निद्रा] भाव भाव (का
१२, का १ ११ टी) । २ बि बि मोक्ष कर्म
(हे ४ ४२) ।

पिण्ड-द्रुम बी [निद्रा] भाव भाव (का
१२, का १ ११ टी) । २ बि बि मोक्ष कर्म
(हे ४ ४२) ।

पिण्ड-द्रुम बि [निद्रा] भाव भाव (का
१२, का १ ११ टी) । २ बि बि मोक्ष कर्म
(हे ४ ४२) ।

पिण्ड-द्रुम वु [निद्रा] ? निरूप कर्म-द्रुम
(हे ४ २८) । २ कर्म (मुवा २४) ।

पिण्ड-द्रुम को पिण्ड-द्रुम (पाथ) ।

पिण्ड-द्रुम बि [निद्रा] भाव भाव (का
१२) ।

पिण्ड-द्रुम बी [निद्रा] कर्म, कर्म (सि ४
११) ।

पिण्ड-द्रुम मक [निद्रा + स्वा] कर्म
करना । कर्म निद्रा-मि (मुवा ३४४) ।

पिण्ड-द्रुम वु [निद्रा] कर्म-द्रुम (मि) ।

पिण्ड-द्रुम बि [निद्रा] कर्म-द्रुम (मि) ।

पिण्ड-द्रुम बि [निद्रा] कर्म-द्रुम (मि) ।

पिण्ड-द्रुम बि [निद्रा] कर्म-द्रुम (मि) ।

पिण्ड-द्रुम बि [निद्रा] कर्म-द्रुम (मि) ।

पिण्ड-द्रुम बि [निद्रा] कर्म-द्रुम (मि) ।

पिण्ड-द्रुम बि [निद्रा] कर्म-द्रुम (मि) ।

पिण्ड-द्रुम बि [निद्रा] कर्म-द्रुम (मि) ।

पिण्ड-द्रुम बि [निद्रा] कर्म-द्रुम (मि) ।

पिण्ड-द्रुम बि [निद्रा] कर्म-द्रुम (मि) ।

पिण्ड-द्रुम बि [निद्रा] कर्म-द्रुम (मि) ।

पिण्ड-द्रुम बि [निद्रा] कर्म-द्रुम (मि) ।

पिण्ड-द्रुम बि [निद्रा] कर्म-द्रुम (मि) ।

विष्मद्भूत वि [निमित्त] रचित इत (गा २ १ म)।

विष्मद्भूत न [निर्मयन] १ विनाश २ वि विनाश 'एव य पयद्रु सिद्धं एवविष्मद्भूतं' (गुप्ता ७१)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] नास रचित मृत्क (गाथा १ १ भग)।

विष्मद्भूत श्री [दे] देवी विरोध कापुण्ड्र (दे ४ १३)।

विष्मद्भूत वि [दे] निरमृद् रक्षक बनान (गुप्ता २६ ४ १२)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विष्मद्भूत = निर्मासिक (नर)।

विष्मद्भूत रक्त [नि + रक्त] विरोध करना। विष्मद्भूत (अवि)।

विष्मद्भूत न [निर्मास] विरोध (अवि)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] मास्य-रहित, ईर्वा-मृत् (उप ३ ८४)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विनाश (अवि)।

विष्मद्भूत न [निर्मास] १ मरिचक का घनाश २ विनाश निर्गतता (अवि १८)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] मयत्त-रहित देह्य (दे १ १११)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] उरालिप्त (उ ७३)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] मय रचित (अभ्य १२)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] मय-रहित (अभ्य १२)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] १ निरन्तर मयन बालेयता २ पुं चोरो की एक बाण (अभ्य १ १)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विनाश मयन क्रिया गया हो (अभ्य १ १)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] १ मयत्त-रहित, निः स्रु (अभ्य २१ गुप्ता १४) २ पुं माय-वर्त के एक घनी विनयेर (अभ्य १२४)।

विष्मद्भूत वि [दे] मय गया हुआ (दे ४ १४)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] मय-रहित विष्मद्भूत (अभ्य ७ १ गुप्ता १११) २ पुं मय-वर्त-वर्त की एक मय (अभ्य १४)।

विष्मद्भूत न [निर्मास] देव का उच्छिष्ट इत्य वेदा पर बड़ाई हुई वस्तु का बना हुआ (दे १ १८ पद)।

विष्मद्भूत रक्त [निर् + रक्त] बनाना रक्त का करना। विष्मद्भूत (दे ४ १२ पद)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] (अभ्य १२२)।

विष्मद्भूत रक्त [निर् + माय] बनाना करना (अभ्य ४ ४ गुप्ता)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] बनाना बना (अभ्य ४ ४)।

विष्मद्भूत न [निर्मास] रक्त का रक्त (अभ्य १४८ टी गुप्ता २१ १४ १ २)।

विष्मद्भूत न [निर्मास] बनाना करना (अभ्य)।

विष्मद्भूत वि [निमित्त] बनाया हुआ रचित (गुप्ता गा १ १ गुप्ता ११ ११)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] बनाना हुआ (गुप्ता)।

विष्मद्भूत रक्त [गम्] १ बना मयन करना २ रक्त, रक्तता। विष्मद्भूत (दे ४ ११२)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विष्मद्भूत (दे ४ १२) १३ १३ उ १२१)।

विष्मद्भूत पुं [निर्मास] १ विनाश २ वि विनाश (अवि)।

विष्मद्भूत न [निर्मयन] १ विनाश २ वि विनाश-कारक (गुप्ता ७३) श्री गा (गुप्ता ११ १८४)।

विष्मद्भूत वि [गम्] मया हुआ (गुप्ता)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विनाश (दे ४ १)।

विष्मद्भूत देवो विष्मद्भूत विष्मद्भूत (गुप्ता १४)।

विष्मद्भूत देवो विष्मद्भूत (गुप्ता १४)।

विष्मद्भूत रक्त [निर् + रक्त] बनाना करना, रक्तता विष्मद्भूत (दे ४ १२ पद)।

विष्मद्भूत न [निर्मास] १ रक्तता बनाना, रक्तता २ रक्त-विरोध रक्त के रक्तता के निर्मास में विनाशक रक्त-विरोध (अभ्य १७)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] मय-रहित (वि १ ४२)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] निर्मास-वर्त, बनानेवाला (वि १ ४३)।

विष्मद्भूत वि [निमित्त] रचित बनाया हुआ (गुप्ता)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] धर्मावित विरक्त (अवि)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] मय-रहित (गुप्ता ४४)। श्री सी (महा)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] १ रचित रचित इत (अभ्य ४४)। २ विष्मद्भूत मय-रहित (अभ्य ४४)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विष्मद्भूत (अभ्य १२ ४२)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विष्मद्भूत (अभ्य १२ ४२)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विष्मद्भूत (अभ्य १२ ४२)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विष्मद्भूत (अभ्य १२ ४२)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विष्मद्भूत (अभ्य १२ ४२)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विष्मद्भूत (अभ्य १२ ४२)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विष्मद्भूत (अभ्य १२ ४२)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विष्मद्भूत (अभ्य १२ ४२)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विष्मद्भूत (अभ्य १२ ४२)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विष्मद्भूत (अभ्य १२ ४२)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विष्मद्भूत (अभ्य १२ ४२)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विष्मद्भूत (अभ्य १२ ४२)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विष्मद्भूत (अभ्य १२ ४२)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विष्मद्भूत (अभ्य १२ ४२)।

विष्मद्भूत वि [निर्मास] विष्मद्भूत (अभ्य १२ ४२)।

गिरुत्तिअ वि [निरुत्तिअ] भुत्तिअ के अनुवार
जितका धरि किना जाय वह खम्ब (धनु) ।
गिरुत्तिअ न [निरुत्तिअ] गिरुत्ति, भुत्तिअ
‘ओ नत्थि वरुत्ति गिरुत्तिअ केरुत्तिअ’
(संयोग—११) ।

गिरुत्तर वि [निरुत्तर] छोटा येगनाला
अनुवर । ओ रा (पण्ड १ ४) ।

गिरुद्ध वि [निरुद्ध] १ रोका हुआ (छाया
१ १) । २ बाहुत धान्यप्रति (सूय १ २
१) । ३ पुं मलय की एक वाटि (अण्य) ।
अरुद्ध वि [निरुद्ध] बोझा संशित (सूय १
१४ २१) ।

गिरुद्धञ्ज वि [निरुद्धञ्ज] रैको बिहंस ।
गिरुद्धमन्त्र वि [निरुद्धमन्त्र]

गिरुद्धि पुंवि [वि] कुम्हार—नाक की जाहति
वाला एक कण्डु (१४ २४) ।

गिरुद्धि वि [निरुद्धि] रैको गिरुद्धि (अण्य) ।

गिरुद्धमन्त्र वि [निरुद्धमन्त्र] १ ओ क्रम न
दिपा जा सके वह (मनुष्य) (सुर २ ११२
सुरा २ ४) । २ विप्रदीप्त धावा, निय-
नितनकर्मविग्रहप्रवृत्तमगारितबद्धी (सुरा
३६) ।

गिरुद्धय वि [वि] धरत गद्दी किया हुआ
(१४ ४१) ।

गिरुद्धि वि [निरुद्धि] क्लेश-वर्जित
कु-वर्णित (अण्य २५, ७) ।

गिरुद्धकट वि [निरुद्धकट] शोक वाहि
हेरी ॥ उचित (अ ७) ।

गिरुद्धकट वि [निरुद्धकट] शब्द से न कहा
जा सके वह, अनिर्वचनीय (अर्णव १४१
११) ।

गिरुद्धा वि [निरुद्धा] प्रतिपादक (अण्य
११) ।

गिरुद्धगारि वि [निरुद्धगारि] अकार ओ
नहीं माननेवाला प्रत्युपकार नहीं करनेवाला
(धाम्य) ।

गिरुद्धगारि वि [निरुद्धगारि] अकार नहीं
करनेवाला (अ ४ १) ।

गिरुद्धगारि वि [निरुद्धगारि] गिरुद्धा
वाला (धाम्य) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
धाम्या-वर्जित (धाम्य) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(धाम्य) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] वास्तविक
तथ्य (छाया १ १) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] उपकार-वर्जित
(अण्य) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] लेप-वर्जित अ-
क्षय (अण्य) । ‘अण्यवि विरुद्धय’ (अण्य
१४ १४) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] १ उत्तम-वर्जित
अक्षय-वर्जित (सुरा २०७) । २ पुं मोक्ष
वृद्धि (चिंत्त २) । ३ न, उत्तम-वर्जित
अक्षय (अण्य १) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] १ अक्षय-वर्जित
अक्षय (अण्य १) । २ अक्षय से मुख्य
धाम्यवर्जित (सुरा २१५) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] धाम्य-वर्जित
अक्षय (अण्य १) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य १ १ १) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य १ १ १) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य १ १ १) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य १ १ १) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य १ १ १) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य १ १ १) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य १ १ १) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य १ १ १) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य १ १ १) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य १ १ १) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य १ १ १) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य १ १ १) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य १ १ १) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] १ रैको हुआ (वि
११ ११) । २ अक्षय-वर्जित
अक्षय हुआ । ३ विवेचित प्रतिपादित (वि २
४) । ४ विवेचना हुआ । ५ अक्षय-वर्जित
(अण्य) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य) ।

गिरुद्धय वि [निरुद्धय] अक्षय-वर्जित
(अण्य) ।

विमुद्धि की [विमुद्धि] १ बुद्धि का अभाव
(छ २ ३) । २ विन भी छोटाई (मन) ।

विमुक्त शब्दो गिज्ज (मनु २६) ।

विमुक्त शब्दो विमुक्त = विमुक्त (म ३ ४०) ।

विमुद्धि की [विमुद्धि] परिदेष्टु (प्राह १२) ।

विमुद्धि शब्दो विमुद्धि (गुप २, ७ १८) ।

विवेचन म [नि + वेद्य] १ सम्मानपूर्वक

ज्ञान करना धर्म करना । २ परीक्ष करना ।

१ मासुम करना । धर्म विवेचन (विमु १) ।

छंद विवेचन (म २ १६) । हेतु विवेचन

(वंचा १३) । छ विवेचनगीत (व १२) ।

विवेचना वि [निवेद्य] सम्मानपूर्वक ज्ञान

करनेवाला श्राप्य (मुग २६) ।

विवेचन म [निवेद्य] सम्मानपूर्वक

विवेचनाय १ ज्ञान, विम (वंचा १) । विमु

११) । २ मैत्रेय शैवता को प्रतिष्ठित मन्त्र धारि

(पञ्च ३२ ३) ।

विवेचना की [निवेद्य] ऊपर शैवता

(लाता १३) । पिंड पु [पिण्ड]

शैवता को प्रतिष्ठित पद धारि, मैत्रेय (विमु

११) ।

विवेचन शब्दो विवेचना (मुग २२३; व

२१६) ।

विचन्य वि [निवेद्य] सम्मानपूर्वक ज्ञानि

(बरा ४६) ।

विवेचनय वि [निवेद्य] निवेद्य

करनेवाला (वचि ११६) ।

विवेचन शब्द [नि + दराय] स्थाप्य

बनाना, बैठाना । विवेचन विवेचन (बरा

बन) । छंद विवेचनाय विवेचन

विवेचनय विवेचनय विवेचनय

(वच ३२ मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र) । छ

विवेचनय (मुग ३६४) ।

विचन पु [विचन] १ स्थाप्य धारण

(छ २ ३ २३) । २ वचन (विमु ४) ।

१ धारण-धारण शब्द (वच १) ।

विचन पु [विचन] १ मन्त्र धारण

धारा (मुग ४६१) ।

विवेचन म [निवेद्य] १ स्थाप्य बैठाना

(धापा) । २ एक ही वस्तुवासे धारण गुरु

(वच ४) ।

विवेचन म [निवेद्य] गुरु, वर (जस

१३ १८) ।

विवेचनय वि [निवेद्य] बैठाना धारण

(यथा) ।

विचन म [नीय] छदि, पत्त-पत्त (वे ४

४८३ पाठ) ।

विचन म [नीय] ऊपर के ऊपर का ऊपर

(छदि १२६) ।

विचन म [वे] १ कटु, पिंड । २ व्याज

बहाना (वे ४ ४८) ।

विचनय वि [वे] परिष्ठाव-उद्धि लय

(गुप १२७) ।

विचनय वि [नियत] वस्त्र-उद्धि

(वि १२) ।

विचनय शब्दो विचनय = निर + वचय ।

छंद, विचनय (छ २ ४) ।

विचनय (वच) शब्दो विचनय (वे ४ ४२२ छि) ।

विचनय वि [निवेद्य] बलात्कृत, कृत

(साध ४) ।

विचनय शब्दो विचनय (वच ७ ११) ।

विचनय वि [निवेद्य] निवेद्य

बलात्कृत (साध २ ४ २) ।

विचनय शब्द [मुच] मुच की धारण ।

विचनय (वच) ।

विचनय शब्द [मु] १ मुच होना मुच

होना । २ शब्द होना । विचनय (वे ४

१२) ।

विचनय शब्दो विचनय = निर + वच (मुग

१२२) ।

विचनय वि [मुच] १ मुच-मुच को

मुच हुआ हो (वे १) । २ शब्द-मुच

को मुच हुआ हो (गुरु ७ ४) ।

विचनय वि [निवेद्य] निवेद्य, निवेद्य

(साध) मुच-मुच य मुच-मुच य धर्म

धर्म विचनय (मुग १२२) ।

विचनय वि [वे] वच, वच (वे ४ २) ।

विचनय वि [निवेद्य] वच-उद्धि वच

वचि विचनय वच (धापा १ ३ धी) ।

विचनय शब्द [निर + वचय] १ स्थाप्य

बनाना, बैठाना करना । २ वचन । वच

विचनय (वे ४ ४४) वच १ ११ छि

वच) ।

विचनय शब्द [निर + वचय] वचन,

वचन, विचनय (वच) ।

छंद विचनय, विचनय (वच) ।

विचनय शब्द [निर + वचय] वच

वचन वचन वचन । वच, विचनय

वचन (वच) ।

विचनय वि [निवेद्य] विचनय, उद्धि

निवेद्य (यथा धी) ।

विचनय वि [निवेद्य] वचन वचन, वचन

(वच २) ।

विचनय म [निवेद्य] विचनय, वचन,

वचन (वच ४ १८१) । विचनय,

विचनय की [विचनय] वचन

वचन की विचनय (छ २, १ ४) ।

विचनय म [विचनय] वचन वचन

विचनय (वच ४ १८१) वचन वचन

विचनय (वच ४ १८१) वचन वचन

विचनय वि [निवेद्य] विचनय, वचन

वचन (विच १२४२; व २२१; व २

३) ।

विचनय की [निवेद्य] विचनय विचनय

(विच ३ २) । वचन विचनय

विचनय वि [निवेद्य] विचनय, वचन

वचन (व २२१; व २२१; व २२१; व २

३) ।

विचनय वि [निवेद्य] वचन वचन

वचन (वच) ।

विचनय वि [वे] वचन (वे ४ १६) ।

विचनय शब्द [निर + वच] वचन वचन

वचन (वच ४ १६) ।

विचनय वि [निवेद्य] १ वचन वचन

वचन (वच ४ २) । २ वचन वचन

वचन (वच १) ।

विचनय वि [निवेद्य] १ वचन वचन

वचन (वच ४ २) । २ वचन वचन

वचन (वच १) ।

विचनय वि [निवेद्य] वचन वचन

वचन (वच ४ २) । २ वचन वचन

वचन (वच १) ।

विचनय वि [निवेद्य] वचन वचन

वचन (वच ४ २) । २ वचन वचन

वचन (वच १) ।

विचनय वि [निवेद्य] वचन वचन

वचन (वच ४ २) । २ वचन वचन

वचन (वच १) ।

जिम्ब्रेथ धु [निर्वेध] मुक्तिही रहना
(धम्मप ११६)।

जिम्ब्रेथ धु [निर्वेध] १ कोट, विपुल (हुमा
३ १२)। २ संसार की विपुलता का धन
बाण—निबन्ध (शाल) करना (उप १८९)।

जिम्ब्रेथ न [निर्वेध] १ कोट, वैराग्य।
२ वि वैराग्यमन। औ. धी (उप २)।

जिम्ब्रेथ धु [निर + वेद्य] १ नाच
करना धन करना। २ बेचना। ३ बाँधना।

बहु जिम्ब्रेथु (विप २७४)। धावा २,
३ २)।

जिम्ब्रेथ धु [निर + वेद्य] त्याग
करना। छिन्नरेड (मुग्ग २ १)।

जिम्ब्रेथ धु [निर + वेद्य] यन्त्रही
ने बैठना करना। जिम्ब्रेथ जिम्ब्रेथ
(धावा २ ३ २) वि ३ ४)।

जिम्ब्रेथ वि [वि] नाल सेवा (वि ४ २८)।

जिम्ब्रेथ धु जिम्ब्रेथ (उप २६, २)।

जिम्ब्रेथ वि [निर्वेध] वैर-युद्ध (मग्ग ३६)।

जिम्ब्रेथ वि [वि] १ निर्धन, निष्कल।
२ धम्मल धर्मिक (वि ४ १७)।

जिम्ब्रेथ धु [निर + वेद्य] धूरना, धन
छूटना, धावित होना। जिम्ब्रेथ (वि ४ ७)।

जिम्ब्रेथ धु [निर्वेध] मरुति धुं
मुक्त (वि ११ १६)।

जिम्ब्रेथ धु [निर्वेध] वेप-युद्ध (वि १३,
६९)।

जिम्ब्रेथ धु [निर्वेध] १ काम प्रार्थि (उप
५, २)। २ धर्मत्वा 'कम्माए कम्मपाए'
बारी कम्मपरीनु की जिम्ब्रेथ' (अग्ग १०)।

जिम्ब्रेथ धु [निर्वेध] नालवि
फिरोप (मुग्ग २ ३ १९)।

जिम्ब्रेथ धु [निर्वेध] निर्वेध-योग्य
बहुत करने योग्य निम्नले सामक (धाय ४)।

जिम्ब्रेथ धु [वि] धौष से हाठ को मलिन
करना। जिम्ब्रेथ (वि ४ ९६)।

जिम्ब्रेथ न [करण] धौष से होठ की
मलिन करना (हुमा)।

जिस धौष जिस (हुमा पठन १२ ६९)।

जिस धु [नि + धस] त्याग करना।
छिन्नरेड (पौग)।

जिस धु [निराग्र] १ धन मुन्य हुमा
(छाया १ ४ ४)। २ धम्मल ठंडा
(धायम)। ३ धर्म का धनसंग प्रभाव
'बहा रिपिसे धनसंगिवासी पयायई केवल
धायुं धु' (धु ६ १ १४)।

जिस धु [निराग्र] धूर, निर्धन (हुमा
४ ६)।

जिस धु [निराग्र] १ स्वभाव प्रकृति (उप
२ १ १७)। २ निर्धन त्याग
(विपे)।

जिस धु [निराग्र] स्वभाव से होनेवाला
स्वाभाविक (मुग्ग ५४८)।

जिस धु [निराग्र] धायम की धन
स्वभाव से धनता (मुग्ग २ ३ १९)।

जिस धु [निराग्र] स्वाभाविक (उप)
जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिस धु [निराग्र] जिस धु [निराग्र]

जिसाम बि [निशाम] मासिक-रहित
मिरत (दे २, ४७)।

जिसामण केओ जिसमण (पुपा ११)।

जिसामि बि [निशमि] १ घुल-
घासिण्ड (दे ४ १७ ना २३)। २ उर
रहित ब्यावा हुवा। ३ मिथ्या हुवा,
छोकोरि। 'मत्वापिओ करानोयो' (स
११८)।

जिसामिर बि [निशमिर] मुकेशला
(कल)।

जिसाव बि [दे] प्रपुन (दे ४ ११)।

जिसाय बि [निशाय] यज बिना हुवा
छिन्त (कल)।

जिसाय दु [निशाय] १ कतराए एक प्राचीन
बावि (दे ४ १३)। २ स्वर-किरेव (अ ७)।

जिसाएव बि [निशायएव] सीछ बार
बजा (मम)।

जिसाव छ [नि + साव] निजबल
बलाय। क जिसावपंत (पल ११
७१)।

जिसाव केओ जोसाव (मम)।

जिसि केओ जिता (दे १ = ७२) पर
दुर १ २७)। पाकन दु [पाकन]
कल-किरेव (मम)। मर न [मर]
एवि-मोन (दीप ७७७)। सुख न
[सुख] एवि-मोन (पुपा ४११)।

जिसिज केओ जिसीज एविमर (छ
कम)। छ किमिरता (कम)।

जिसिज बि [जिसिज] काल बिना हुवा,
सीवर (दे २, ४८, मर ६ ४ ११)।

जिसिज छ [नि + सिज] प्रपेव कपल,
गला। छेक. जिसिजि (भाषा)।

जिसिज केओ जिसज (कम वम १३
अ २, १)। १ कपल व ठापुरी का बला
(वम ४)।

जिसिज केओ जिसज (कम वम १३
अ २, १)। १ कपल व ठापुरी का बला
(वम ४)।

जिसिज केओ जिसज (कम वम १३
अ २, १)। १ कपल व ठापुरी का बला
(वम ४)।

जिसिज केओ जिसज (कम वम १३
अ २, १)। १ कपल व ठापुरी का बला
(वम ४)।

जिसिज केओ जिसज (कम वम १३
अ २, १)। १ कपल व ठापुरी का बला
(वम ४)।

जिसिज केओ जिसज (कम वम १३
अ २, १)। १ कपल व ठापुरी का बला
(वम ४)।

जिसिज बि [निपिज] प्रतिपिज, पिबारित
(वम १२)।

जिसिज बि [मर] स्थापित (वम ७१)।

जिसिज न [निपन] कपल (वम)।

जिसिर छ [नि + सिर] १ बाहर निक-
ला। २ बैठा रयाग कला। ३ करना।

जिसिर (मास ३५ मम) 'पिपरायाए'
जिसिरि के वम वम ठेपि हु पावित निष्ठा' (दुर
१३ २१४)। कल. जिसिरिज,
जिसिरिज (किरे ११७)। कल. जिसिरिज
(मि २१३)। कल. जिसिरिज (मि २१३)।

जिसिरिज (मि २१३)। कल. जिसिरिज (मि २१३)।

जिसिरिज (मि २१३)। कल. जिसिरिज (मि २१३)।

जिसिरिज (मि २१३)। कल. जिसिरिज (मि २१३)।

जिसिरिज (मि २१३)। कल. जिसिरिज (मि २१३)।

जिसिरिज (मि २१३)। कल. जिसिरिज (मि २१३)।

जिसिरिज (मि २१३)। कल. जिसिरिज (मि २१३)।

जिसिरिज (मि २१३)। कल. जिसिरिज (मि २१३)।

जिसिरिज (मि २१३)। कल. जिसिरिज (मि २१३)।

जिसिरिज (मि २१३)। कल. जिसिरिज (मि २१३)।

जिसिरिज (मि २१३)। कल. जिसिरिज (मि २१३)।

जिसिरिज (मि २१३)। कल. जिसिरिज (मि २१३)।

जिसिरिज (मि २१३)। कल. जिसिरिज (मि २१३)।

जिसिरिज (मि २१३)। कल. जिसिरिज (मि २१३)।

जिसिरिज (मि २१३)। कल. जिसिरिज (मि २१३)।

जिसिरिज (मि २१३)। कल. जिसिरिज (मि २१३)।

जिसिरिज (मि २१३)। कल. जिसिरिज (मि २१३)।

जिसिरिज (मि २१३)। कल. जिसिरिज (मि २१३)।

जिसीहिवा के [जिसीहिवा] १ स्थाप-
न बिध कपल-स्थान (भाषा २ २, २)।

२ जोड़े वम के लिए ज्ञात स्थान (म
१४ १)। ३ बाघापल मम वम
वम (भाषा २ २ २)।

जिसीहिवा के [जिसीहिवा] १ स्थाप-
न बिध (वम ४)। २ वम-मम वम
(वम ४)। ३ वम-मम वम (वम ४)।

जिसीहिवा के [जिसीहिवा] १ स्थाप-
न बिध (वम ४)। २ वम-मम वम (वम ४)।

जिसीहिवा के [जिसीहिवा] १ स्थाप-
न बिध (वम ४)। २ वम-मम वम (वम ४)।

जिसीहिवा के [जिसीहिवा] १ स्थाप-
न बिध (वम ४)। २ वम-मम वम (वम ४)।

जिसीहिवा के [जिसीहिवा] १ स्थाप-
न बिध (वम ४)। २ वम-मम वम (वम ४)।

जिसीहिवा के [जिसीहिवा] १ स्थाप-
न बिध (वम ४)। २ वम-मम वम (वम ४)।

जिसीहिवा के [जिसीहिवा] १ स्थाप-
न बिध (वम ४)। २ वम-मम वम (वम ४)।

जिसीहिवा के [जिसीहिवा] १ स्थाप-
न बिध (वम ४)। २ वम-मम वम (वम ४)।

जिसीहिवा के [जिसीहिवा] १ स्थाप-
न बिध (वम ४)। २ वम-मम वम (वम ४)।

जिसीहिवा के [जिसीहिवा] १ स्थाप-
न बिध (वम ४)। २ वम-मम वम (वम ४)।

जिसीहिवा के [जिसीहिवा] १ स्थाप-
न बिध (वम ४)। २ वम-मम वम (वम ४)।

जिसीहिवा के [जिसीहिवा] १ स्थाप-
न बिध (वम ४)। २ वम-मम वम (वम ४)।

जिसीहिवा के [जिसीहिवा] १ स्थाप-
न बिध (वम ४)। २ वम-मम वम (वम ४)।

जिसीहिवा के [जिसीहिवा] १ स्थाप-
न बिध (वम ४)। २ वम-मम वम (वम ४)।

जिसीहिवा के [जिसीहिवा] १ स्थाप-
न बिध (वम ४)। २ वम-मम वम (वम ४)।

जिसीहिवा के [जिसीहिवा] १ स्थाप-
न बिध (वम ४)। २ वम-मम वम (वम ४)।

जिसीहिवा के [जिसीहिवा] १ स्थाप-
न बिध (वम ४)। २ वम-मम वम (वम ४)।

जिसीहिवा के [जिसीहिवा] १ स्थाप-
न बिध (वम ४)। २ वम-मम वम (वम ४)।

जिसीहिवा के [जिसीहिवा] १ स्थाप-
न बिध (वम ४)। २ वम-मम वम (वम ४)।

मिहाण न [निधान] बहु स्थान वहाँ पर
बन यात्रि गाढ़ा म्या हा बनाना मरहवार
(अन्ता वा ११५ पदक)।

मिहाय दु [हे] १ स्वेद, पसीना (वे ४ ४८)।
२ समुद्र, बन्ना (वे ४ ४८, से ४ ३८)
३ ४८८, पक्षि: पाय: पदक सुर १ २११)।

मिहाय दु [निधाव] धावात धास्यस्तन
(से १३, ७ महा)।

मिहाय सेको मिहा = नि + धा नि + हा।

मिहाय दु [निहाव] धास्यस्तन (मुक्त
४ ९)।

मिहार दु [निहार] निर्वय (पण्ड १ ३३
८ ८)।

मिहारिम न [निहारिम] बिबेके मुक्त
शरीर को बाहर निकालकर संस्कार किया
बाय रुकना मरहा (मग)। २ कि दूर जाने-
वाला दूर तक फैलनेवाला (पण्ड २ ३)।

मिहाड सेको मिमास। मिहासेहि (स
१ १)। बहु-मिहासेत मिहासेत (अ
१४८ टी १८९ टी)। संक मिहासेत
(पण्ड १)। ३ मिहासेत (अ १ ७)।

मिहाकन न [निमाकन] निरुपय मन्त्रोक्त
(अ ८ ७२ सुर ११ १२)। गुणा २३)।

मिहाकन नि [निमाकन] निरुपय
(पासा ३ १)।

मिहि नि [निधि] १ बनाना संसार (पासा
१ १३)। २ न बन यात्रि से बच हुआ पाव।
(हे १ १३)। ३ १३: हा ३, १)। 'अन्धेरि
मिहि निधि सने रज्ये न धनमपण्ण'।
(वा १२३)। ३ कन्धर्वा रजा की संघर्ष
मिहि निधि सने यात्रि न निधि (अ १)।
'नाह दु [नाय] दुदेर, कनेध (पासा)।

मिहि दुंधी [निधि] कपाय न व निध का
कपाय (संघीय ३८)।

मिहिम नि [निहित] स्थापित (हे २ १३३
अम)।

मिहिण नि [निमित्त] विचारित (अण्ड
१८)।

मिहिण सेको मिहिम (वा ३१३) काय
२ ८) अम)।

मिहिण्य सेको मिहा = नि + धा।

मिहिम नि [निहित] सब सकल (अण्ड
२ ४४ २२)।

मिहिम सेको मिहिम (मुक्त २, ४१)।

मिहि की [नि] नमस्तुति-विरोध (पासा)।

मिहिण नि [निहिण] म्भुम (मुक्त ४२४)।

मिहिण नि [निहिण] मुक्त, कपाय हलका
मुक्त, 'अथि मिहिणे हेहि कि एगमिषण्ण'
मुक्त ?' (अ ७२८ टी)।

मिहु की [मिहु] दीपति-विरोध (वीच २)।

मिहुय नि [मिहुय] १ श्रुत अण्डन, फिसा
हुया (से ११ १३, महा)। २ निवीर म्भुवत
(से ४ २९)। ३ म्भु, बीना (पासा महा)।

४ निम्न स्थिर (अ १८)। ५ धर्ममन्त्र
संभारणित (अ ९)। ६ श्रुत बाण्ड फिसा
हुया। ७ निर्वन, एकजट। ८ धर्म होने के
लिए अस्थित (हे १ १११)। ९ उपराज
(पण्ड २, २)।

मिहुय नि [नि] १ व्यापार-परिच मनुष्य,
निरुपय (वे ४ २ से ४ १ सुप १ ब
४३ १)। २ सुपणीक, नील (वे ४ २,
सुर ११ ८४)। ३ न सुप म्भुम (वे ४
२ महा)।

मिहुय सेको मिहुय (वा ४८३)।

मिहुया की [नि] अमिता संयोग के निध
प्रामित की (वे ४ २६)।

मिहुय न [नि] व्यापार, बन्ना (वे ४ २६)।

मिहुय नि [नि] निमग्न, हुया हुया (पण्ड
१ २ ११७)।

मिहुयियमगा की [नि] नमस्तुति-विरोध
(पण्ड १—पण्ड १३)।

मिहुय सक [काम्य] संयोग का धर्मियाय
कला। मिहुय (हे ४ ४४)।

मिहुय न [मिहुय] मुक्त संयोग (अण्ड
काम ११४)। 'मिहुयण्णमिमासाहि' (मि
४ ४२)।

मिहुय न [नि] १ मुक्त म्भुम (वे ४ २९)।

२ नि धर्मिकार (मिसे २११७)। सेकी
मीक्य।

मिहुय न [नि] १ मुक्त, मर, मरम (वे ४
२३)। हे २, १०४- हुया अ ७२८ टी स
१८)। पासा मधि)। २ कला की के कला
के नीचे का पाय (वे ४ २१)।

मिहुय न [नि] १ मुक्त, मर, मरम (वे ४
२३)। हे २, १०४- हुया अ ७२८ टी स
१८)। पासा मधि)। २ कला की के कला
के नीचे का पाय (वे ४ २१)।

मिहुय न [नि] १ मुक्त, मर, मरम (वे ४
२३)। हे २, १०४- हुया अ ७२८ टी स
१८)। पासा मधि)। २ कला की के कला
के नीचे का पाय (वे ४ २१)।

मिहुय न [नि] १ मुक्त, मर, मरम (वे ४
२३)। हे २, १०४- हुया अ ७२८ टी स
१८)। पासा मधि)। २ कला की के कला
के नीचे का पाय (वे ४ २१)।

मिहुय न [नि] १ मुक्त, मर, मरम (वे ४
२३)। हे २, १०४- हुया अ ७२८ टी स
१८)। पासा मधि)। २ कला की के कला
के नीचे का पाय (वे ४ २१)।

मिहुय न [नि] १ मुक्त, मर, मरम (वे ४
२३)। हे २, १०४- हुया अ ७२८ टी स
१८)। पासा मधि)। २ कला की के कला
के नीचे का पाय (वे ४ २१)।

मिहुय न [नि] १ मुक्त, मर, मरम (वे ४
२३)। हे २, १०४- हुया अ ७२८ टी स
१८)। पासा मधि)। २ कला की के कला
के नीचे का पाय (वे ४ २१)।

मिहुय न [नि] १ मुक्त, मर, मरम (वे ४
२३)। हे २, १०४- हुया अ ७२८ टी स
१८)। पासा मधि)। २ कला की के कला
के नीचे का पाय (वे ४ २१)।

मिहुय न [नि] १ मुक्त, मर, मरम (वे ४
२३)। हे २, १०४- हुया अ ७२८ टी स
१८)। पासा मधि)। २ कला की के कला
के नीचे का पाय (वे ४ २१)।

मिहुय न [नि] १ मुक्त, मर, मरम (वे ४
२३)। हे २, १०४- हुया अ ७२८ टी स
१८)। पासा मधि)। २ कला की के कला
के नीचे का पाय (वे ४ २१)।

मिहुय न [नि] १ मुक्त, मर, मरम (वे ४
२३)। हे २, १०४- हुया अ ७२८ टी स
१८)। पासा मधि)। २ कला की के कला
के नीचे का पाय (वे ४ २१)।

मिहो य [न्यय] नीचे (मुप १ २, १ २)।
मिहोड सक [नि + धारय] निवारण कला
निरोध कला।

मिहोड (हे ४ २२)। बहु मिहोडन
(हुया)।

मिहोड सक [पाठय] १ विपना। २ मार
करना। मिहोड (हे ४ २२)।

मिहोडिय नि [पाठित] १ गिरामा हुया
(वे १)। २ विमार्शित (अ १६७ टी)।

मी सक [गम्] जाना, समन कला। लोह
(हे ४ १६२ वा ४६ घ) मधि लोहमि
(वा ७४६)। बहु गित, गैत (से ३ २,
गडवा वा १३४- सप २३४ टी वा ४२)।

संघ गित्प, नीट (गडवा मिसे २२२)।

मी सक [नी] १ से जाना। २ जानना। ३
जान कपना, बदलाना। लोह, गुपह (हे ४
१३७ मिसे ११४)। बहु गैत (वा ३,
हुया)। कण्ठ गित्पत जीअमाग (वा
१८२ घ से १ ८३)। गुप (वा ७४६)। संघ
पाडय गैत, गैतआय गैतय (म—
मुक्त १६४ हुया)। बहु वा १०२)। हेड
गैत (वा ४६७ हुया)। क गैत, गैतय
(पण्ड ११९ १७ वा ११६)। प्रयो
छेमावह (अण्ड)।

मीअय नि [नि] समीचीन, सुन्दर (निध)।

मीअय न [नि] समीचीन बनी रजन का
छेय कनर (वे ४ ४१)।

मीअ की [नीति] १ म्याय सचित म्भुहाद,
म्याय म्भुहाद (अ १६९ महा)। २ मय
बन्नु के एक वर्त को मुक्तमया माननाना
मय (अ ७)। सत्य न [शास्त्र] नीति-
विचारक शास्त्र (सुर १ १३३ गुणा १४
महा)।

मीअ की [नाय] दुस्य मर, सापण
(हुया)।

मीअय नि [निमय] निमित्त संयुक्त 'नय
मीअयमपण्ण' शीट बाण्ड मुक्तय (मिहार
८)।

मीअय न [मापेय] १ नीचे, घन (हे
१ १३४)। २ नि नीचा, मय-नित्य
(हुया)।

मीअय सेको मिहोड (अधि)।

पीलुप स [गम्] बाना वयन करण ।
पीलुप (हि ४ ११२) ।
पीलुपस म [नीलोत्पल] नील रंग का
फल (हि १ ४०४ कुमा) ।
पीलुप दु [र्] धन की एक सप्तम भाति
(सप्तम २१६) ।
पीलोमास दु [नीलोमास] १ पहाणि
सप्तम देव-नित्येय (अ २ १) । २ नि नील
कल्प को नीला मासुय देता हो (राया
१ १) ।
पीव दु [नीव] कुल विरोध कल्प का पेड़
(हि १ २३४ कल्प राया १ १) ।
पीवार दु [नीवार] कुल-विरोध सिद्धी का
पेड़ (गवड) ।
पीवार दु [नीवार] वीर्य-विरोध (द्वय १
१ २ ११) ।
पीवी की [नीवी] सुन-वन वृंणी । २ वाय
इवारवाक (वर् १ कुमा) ।
पीसंक केवो जिस्तंक = निस्तंक (वा १ ४३
कुमा) ।
पीसंक दु [र्] धन, जैन (वर) ।
पीसंकित केवो जिस्तंकित (विश ११२
दुर ७ ११३) ।
पीसंक वि [निस्तंक] संकषा-रहित, घसका
(द्वय ११३) ।
पीसंचार केवो जिस्तंचार (पञ्च ३२, १) ।
पीसंय दु [निप्यस्य] रस-रसुति रस का
रस (पञ्च) ।
पीसंरिज वि [निप्यस्यिव] कप हुआ,
टाका हुआ (वाप) ।
पीसंरिज वि [निप्यस्यिव] कलेकला एक-
कलेकला (द्वय ११४) ।
पीसंपाय वि [र्] बड़ा बगपद परिभाष्य
हुमा हो वह (रे ४ ४२) ।
पीसंदु वि [निस्तंक] १ विदुष (पञ्च १
१ पत्र १०) । २ प्रसन्न (हृ २) । ३ त्रिभि
धनितव, धन्यव 'पीलुपुमयणी ए वा
धर' (उम) ।
पीसय दु [निस्तंक] धामान, राज कर्मी
(दुर ११, १०२ दुर ११) ।
पीसयिआ की [र्] निचोपि कीड़ी (रे
पीसयी ४ ४१) ।

पीसय वि [निस्तंक] सत्य-हीन वन-रहित
(पञ्च २१ ७३, कुमा) ।
पासद वि [निस्तंक] राज-रहित (रे ७
२० धर्म) ।
पीसर धक [र्] बीड़ा करना रमण करना ।
पीसर (हि ४ ११०) कृ पोसरणिज
(कुमा) ।
पासर धक [निर + च] बाहर निकलना ।
पीसर (हि ४ ७८) । बड़ नीसरंत
(बो ४४० टी) ।
पीसरण न [निस्तंक] फिलान सप्तम
(वर् ४) ।
पीसरण न [निस्तंक] निर्गत (रे १,
१०) ।
पीसरिज वि [निस्तंक] निर्गत निर्गत
(द्वय २४०) ।
पीसक वि [निस्तंक] १ निस्तंक स्थिर ।
२ बह्म-रहित सप्तम सप्त नीसकतिय
कलापति विरियवन्निष्कामैर' (दुर ६ ७२) ।
पीसक वि [निस्तंक] राज-रहित (धर्म) ।
पीसक स [नि + भाष्य] निर्वाण करना
लाय करना । बड़ नीसकमात्र (विशे
२७४४) ।
पीसका केवो पीसका (धाम) ।
पीसका वि [निस्तंक] राज-रहित विपत
रहित (पञ्च ४ वि २७४) ।
पीसका वि [निस्तंक] निर्वाण करनेवाला
(विशे १७४४) ।
पीसक स [निर + च] नीसक सेना,
रहात की पीसा करना । पीसक (वर) ।
बड़ पीसक पीसकमात्र (वा ११
दुर ४१) धामा २, २, १) । बड़ पीस-
सिज पीससिज (गाटा भाषा) ।
पीससय न [निस्तंक] निस्तंक (कुमा) ।
पीससिज न [निस्तंक] निस्तंक (हि
१ १०) ।
पीसद वि [निस्तंक] धन, धनक (हि १
११ कुमा) ।
पीसद वि [निस्तंक] धान-रहित (वा
२३) ।
पीसा की [र्] पीसने का कवर (वर् ४,
१) ।

पीसा केवो जिस्ता (कल्प) ।
पीसा वि [निस्तंक] स्वा-रहित (विश
१) ।
पीसाय केवो जिस्ताय = (रे) धर्म (८) ।
पीसामण्य वि [निस्तंक] १ धन-
पीसामण्य २ पाख (पञ्च कुमा ११: हि २,
२१२) । २ धन (वाप) ।
पीसार स [निर + सारय] बाहर
निकलना । पीसार (धर्म) । कर्म नीसा
रिज (दुर १४) ।
पासार दु [र्] नहण (रे ४ ४१) ।
पीसार वि [निस्तंक] धार-रहित फल (हि
१ ४०) ।
पीसारण न [निस्तंक] निस्तंक, बाहर
निकलना (दुर १४, २ १) ।
पीसारय वि [निस्तंक] बाहर निकलने
वाला (रे ४ ४०) ।
पीसारिज वि [निस्तंक] निस्तंक (दुर
४, १००) ।
पीसाय केवो जिस्ताय (हि १ ११ कुमा
प्रज) ।
पीसाय २ वि [निस्तंक] निस्तंक
पीसाय ३ सेवक (विशे २७११, २७१४) ।
पीसाहार केवो जिस्ताहार 'नीसाहार य
पञ्च धर्म' (दुर ७ २१) ।
पीसिच वि [निस्तंक] धन्यव विच
(वर) ।
पीसीमिज वि [र्] निर्वाण देत-बाहर
किया हुआ (रे ४ ४२) ।
पीसय केवो जिस्तय (नीव १) ।
पीसिज की [निस्तंक] कीड़ी (दुर ११
१२) ।
पीसेस केवो जिसेस (गवड धर्म) ।
पीसेदु ध निस्तंक कर (धामा २ १ २) ।
पीसेदु ध [नि + च] बाहर निकल कर
(धामा २, १ ४) ।
पीसे वि [निस्तंक] १ निर्गत निर्गत
(धामा २ १ १) । २ बाहर निकलना हुआ
(हृ १: कर्म) ।
पीसेदु की [निस्तंक] धन्यव रस में
ले जाया जाता है (हृ २ दुर १०) ।

पौष्पमक [निर + हम्] निष्पन्ना ।
पौष्पम (हे ४ ११२) ।

पौष्मिप्रति [निर्मासित] निर्मित, निस्सृत
(हे ४ ४१) ।

पौहारमक [निर + ह] ? बाहर निष्प-
न्ना । पौहार (हे ४ ७१) । बह् पौहारंत
(सुता ४८२) । पौ. पौहारिण (मिष्ट १) ।
ह. पौहारियम् (सुता ११) ।

पौहारमक [धा + हम्] मात्मान्य करना,
विस्तार। पौहार (हे ४ १११) ।

पौहारमक [निर + ह] प्रविष्टि
करना । बह्. पौहारंत, पौहारिणंत (हे ४
११ २, ११) ।

पौहारमक [निर + हाम्] बाहर निकालना ।
ह. पौहारिण (अन ४, ४) । ह. पौहारियम्
(सुता ४८२) ।

पौहारमक [निर + ह] पत्तागना बाला
पुष्टपत्तनं करना । पौहार (हे ४ १११) ।

पौहारमक [निस्सरण निर्हारण] ? निर्म
मक निर्मय बाहर निकालना (मिष्टा १ ६,
छाया १ १४) । २ पट्टिमान (मिष्ट १) ।
३ वपस्मान (सुष्ट २ २) ।

पौहारिण के पौहार = निर + ह ।

पौहारिण [निस्सृत] निर्मित प्रविष्टि (सुष्ट
१ १११, १ ७१ पाद्य) ।

पौहारिण [निर्हासित] प्रविष्टि (हे
११ १११) ।

पौहारिण [हे] लम्. मात्मान्य कर्त्तु (हे
४ ४२) ।

पौहारिण के पौहार = निर + ह ।

पौहारिण [माहार] ? हिम गुपार (बह्
७२, लज्ज १२ कुमा) । २ विष्णु या बृह
का बरतनं (धम १) ।

पौहारिण [निस्सारण] निष्पन्न (अ २
४) ।

पौहारिण [निर्हारिण] ? निष्पन्नता ।
२ किरनेता । 'पौष्पल्लवार्णवा घरोष्ठ'
(मात्मान्य धम १) ।

पौहारिण [निर्हारिण] शेष करकेबाला
प्रवनेता (अ १ । नि ४ ३) ।

पौहारिण के पौहारिण (अ २ ४ शीत
छाया १ १) ।

पौहारिण [निर्हारिण] हास-व्यति (अन २२,
२४) ।

पौहारिण [हे] पत्तिविकार, पुष्प यी नहीं
कर सकनेवाला 'पञ्चपण्डितगुणार्ण' (धमनि
७८७) । रेखी पिष्टुम ।

पुष्प [सु] इन धर्मों का पुष्पक प्रत्यय—१
कीय प्रविष्टि । २ बनेति (अ १४६) । ३
वितर्क (अन) । ४ प्रल । ५ विष्णु । ६
पुनः । ७ हेतु, प्रयोग । ८ वपस्मान । ९
वपुषः । १० वपस्मान । ११ वपस्मान, वपुषः
(अन २ २१७ २१८) ।

पुष्प [सु] १ निष्पत्तुषक प्रत्यय (अन २,
२) । २ निरुपे (मिष्ट १११) ।

पुष्प [सु] बालम्बर (या १ २) ।

पुष्प [सु] पुष्प [सु] पुष्प [सु] पुष्प [सु] पुष्प [सु]
(अन) ।

पुष्प [सु] कम्. क्रिया पुष्प, पुष्पित
'कृषिाय योष्ठ कृषिण पुष्पितं से बरतनं,
मिष्टा य ह्या' (अ २८६) ।

पुष्प [सु] ? प्रविष्टि । २ वितर्क
ह्या (हे १ १२) ।

पुष्प [सु] नि + असु] स्वापन करना ।
पुष्प (हे ४ १११) ।

पुष्प [सु] लाव्य] बकला मात्मान्य
करना । पुष्प (हे ४ २१) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

पुष्पमक [सु] नि + असु] स्वापन करना । पुष्पमक
(अन) ।

(पि १११) । बह्म-पञ्चायमाण (छाया १ ११) । संकृष्ट-पञ्चायमाण, पञ्चायिमाण (पि १११) ।

पञ्चाण न [स्नान] गहाना गहान (कण्य-प्राप्त) । पीठ पुन [पीठ] स्नान करने का पट्टा (छाया १ १) ।

पञ्चाणमस्त्रिया की [स्नानमस्त्रिया] स्नान-योग्य पुन-विशेष मानवो-पुन (पय ३४) ।

पञ्चायिमा की [स्नानिमा] स्नान-विषय (पय ४-४-पय १११) ।

पञ्चायिमा वि [स्नानिमा] जिसने स्नान किया हो वह (पय ११८) ।

पञ्चाय वि [स्नान] जिसने स्नान किया हो वह, गहाना हुआ (कण्य-प्राप्त) ।

पञ्चायमाण वेको पञ्चा

पञ्चाक न [स्नायु] १ अस्त्रि-बन्धनी निपात, बन्धनी (धम १४६ पय १ १; छा १ १; छाया) । २ अष्टावरा धेणी में की एक धेणी कुम्हार, फेन धाति (बोधप्रकाश ४६४ पय १११) ।

पञ्चाय वेको पञ्चा । एकावह एकावेद (अभि-पि १११) । बह्म-पञ्चायज (पि १११) ।

संकृष्ट-पञ्चायिमाण (पञ्चा) ।

पञ्चायिमा वि [स्नायित] गहाना हुआ

जिसकी स्नान किये गये हो वह (गहा-अभि) ।

पञ्चायिमा पुं [नायित] हजाम गार्ह (हे १ २३ कुमा) । 'चेतुण एकाविमं धापयण मु कविमो कुमरो' (जय १ टी) । पसेवय पुं [पसेवक] गार्ह की धपने धपकरण रखने की यैकी (उप २) ।

पञ्च य [हे] निरुपय-सूचक अर्थय (बीवत १८) ।

पञ्चसा की [स्तुपा] पुन-बहु पुन की प्रायः, पञ्चो (वाचपय पि १११) ।

पञ्चसा वेको पञ्चसा (शिरि २३१) ।

॥ इस विरिपाइअसहमहणये गम्मापडसहसंनणो मअएसेउ
नम्मापडसहसंनणो बार्हसहो तरणी समतो ॥

त

त पुं [त] बन्ध-स्वामीय ध्यायन बली-विशेष (प्राप्त-प्राप्ता) ।

त न [तन्] वह (छा १ १ हे १ ७) कण्य, कुमा) ।

त त [तन्] दु । कय वि [तन्] वेप किया हुआ (न ६८) ।

त वेकोतया = तन् । दोसि वि [दोपिय] १ बर्ह-वेको । २ कुटी (पि ४७३) ।

तअ वेको तअ = तन् (आय ११३) । तअ वि [तनि] कउन (पय १) ।

तअ (पय) म [तअ] बह्म, कयवे (बह्) ।

तअ म [तन्] धन समय (प्राप्त) ।

तअम नि [तनीय] तीवरा (हे १ १ १ कुमा) ।

तअ (पय) वि [स्वदीय] कुम्हार (अभि) ।

तअय म [तन्] उम समय-अभिप्रीति रत्ना भेदी

परमापर तअय बन्ध-वेको ।

ताएउ यह गणियो

अभिप्रीति अण्णिम धापयणा (पुर १ १२१) ।

तअमहा (पय) म [तन्] बह समय (अभि-पय) ।

तअमा म [तन्] उम समय (हे ३ १३, ना ६२) ।

तअमा की [तनीया] तिनि-विशेष तीव (पय १६) ।

तअमा की [तनीया] तीवरी विप्रादि (बन्ध-६८) ।

तअय वेको तअ (पय ६२६) ।

तअयेइ की [तिलोकी] तीव तीव—हर्ष-पयवी तीव माता (पुना ६८) ।

तअयेइ म [तनीय] ऊपर वेको तअयेइ (पय १ १ ३ म २ २ म ३७३) । पुर १ २ ; पुना १०२ ; १२ ; ४४) ।

तअस (पय) वि [ताहरा] बैसा धन तअय (हे ४ ४ ३ पय) ।

तअ की [तनी] तीव ना तअय (पुना ६८) ।

तअय वेको तअय = तनीय (ना ४११) । तअ } न [तनी] कानु-विशेष तीव

तअय } तीव (पय १२३) । तीव-कय ६८६ तीव (पय) ।

तअय की [तनीय] कान का धापयण विशेष (हे ३, ३३) ।

तअस न [तनुय] वेको तअसी (पय) ।

'मिजिया की [मिजिय] पुर तीव विशेष तीविय कानु की एक कति (तीव १) ।

तअम न [तनुय] तीव कानु (हे ८ ३३) ।

तअसी की [तनुय] बर्ह-तीव तीव ना

गाय (ना ४३४) । तअ म [तन्] कनन कय नाएउ (पय १) । तअ में (उप १ तिना १ १) ।

तअयारिम वि [तअय] पुन तीव, पुनायी तअय (न ३२) ।

नअ वेको तअ (छा ३ १ ना ७८) ।

तणुनी } देको तणुइ (हे २, १११
तणुनीभा } (कुमा)।

तणुनी [तणु] शरीर काया (भा ७८-
पात्र ११)। २ शिराग्रामाजामक श्रुति
(डा ८)। अ वि [अ] १ शरीर से
क्या। २ पुं मङ्गल, पुन (वा १८४)।
‘अतया की [अतय] शिराग्रामाजामक
श्रुति। तिलपर युक्त कीम रखते हैं, मित्र
हिमा (सम २२)। रहु पुन [रहु] बेरा
रोम बाल (जय ११७ टी)।

तणुन्य देको तणुइअ (गङ्ग)।

तणुन्य (सम) घ लिए बाते (हे ४ ४२४,
कुमा)।

तणुनिय पुं [के] तणुन-यति (हे ३१ पर)।

तणुन्य पुं [तणुन] बल बध्ना (पात्र ४
११ गङ्ग)।

तणुन्य वि [के] धात्र भीता (हे २ २
पात्र गङ्ग) वे १ ११ ११ (१११)।

तणुनी की [तणुन] १ व्यास विप्रावा
(पात्र)। २ सङ्ग, बाम्ना इच्छा (वा २ १)
मीन)। लु लुन वि [तणु] तणुन-
बाला व्यास ‘समस्ततणुन’ (तणुन न ८७
८ ४७)।

तणुनइअ वि [तणुन] तणुन-यति व्यास
(बर्तन १४१)।

तणु देको तणु = तणु (डा ४ ४)।

तणु न [तणुन] तणु स्वक तणु, परमाण
(वा ७२४ टी पुन १२)। आ घ
[तणु] तणुन (वा १८१)। तणु वि
[तणु] तणु न बालवार (वका १)।

तणु पुं [तणु] १ तीव्र गङ्ग-श्रुति वा एक
गङ्ग-श्रुति (हे २२)। २ प्रथम गङ्ग
श्रुति वा एक गङ्ग-श्रुति (हे २२)।

तणु नि [तणु] गण किंवा हृषा (कम ११२३,
विगा १ १) हे १ १ १)। जडा की
[तणु] गङ्ग-श्रुति (वा २ १)।

तणु व [तणु] वहा। मङ्ग, दोन वि
[तणु] तणु न बालवार (वका १)।

तणुतणु न [तणुतणु] एक प्रथम गङ्ग
श्रुति-तणु (गङ्ग ७७)।

तणुनिय न [के] रंगा हृषा कमडा (गङ्ग
२ ४१)।

तणुनी की [तणुनी] तणुनी श्रुति (कुमा, क
२४)। अ वि [मणु] तणुनी-श्रुति,
तणु श्रुति (गङ्ग)।

तणुनी की [के] १ बाधेरा, हृषा (हे २ २
गङ्ग)। २ तणुन (हे २)। ३ किंवा
विचार (वा २ २१ २७३ वा सुपा २१७
२८)। ४ बाधेरा बाध (वा २ २७३ २)।

५ कार्य प्रयोग (गङ्ग १ २ ४४ २)।
तणुनिय वि [तणुन] तणुन (गङ्ग १११)।

तणुनिय वि [के] तणुन (गङ्ग)। २, ३
तणुनिय वा २१७ गङ्ग २१)।

तणु (सम) देको तणु = तणु (हे ४ ४ ४
कुमा)।

तणुनिय न [के] तणुन श्रुति (हे २ १)।

तणुनिय वि [के] तणुन (गङ्ग)।

तणुनी देको तणुनी (कुमा की २१)। तणु
वि [तणुनी] तणुनी श्रुति तणुनी श्रुति
(गङ्ग २ २१४)।

तणुनी न [के] तणुनी श्रुति तणुनी श्रुति
(गङ्ग)।

तणु व [तणु] वहा तणुनी (हे २ १११)।
अव वि [तणु] तणुनी श्रुति तणुनी श्रुति
(गङ्ग २११)। ४ वि [तणु] वहा तणुनी श्रुति
(गङ्ग २११)।

तणुनिय वि [तणुन] तणुन श्रुति तणुनी श्रुति
(गङ्ग)।

तणुनी देको तणु = तणु (बर्तन १ ४ ४
२१)।

तणुनिय पुं [तणुनिय] तणुन-श्रुति तणुनी श्रुति
(गङ्ग २११)।

तणुनी देको तणुनी (कुमा की २१)।

तणुनी न [के] तणुनी श्रुति तणुनी श्रुति
(गङ्ग २११)।

तणुनी न [के] तणुनी श्रुति तणुनी श्रुति
(गङ्ग २११)।

तणुनी न [के] तणुनी श्रुति तणुनी श्रुति
(गङ्ग २११)।

२ तणुनिय प्रयोग की प्राप्ति का कारण-तणु
श्रुति (गङ्ग)।

तणुनी देको तणुनी (कुमा की २१)।

तणुनी देको तणुनी (गङ्ग २ २ १७४)।

तणुनी देको तणुनी (गङ्ग २ २ १७४)।

तणुनी देको तणुनी (गङ्ग २ २ १७४)।

तणुनी देको तणुनी (गङ्ग २ २ १७४)।

तणुनी देको तणुनी (गङ्ग २ २ १७४)।

तणुनी देको तणुनी (गङ्ग २ २ १७४)।

तणुनी देको तणुनी (गङ्ग २ २ १७४)।

तणुनी देको तणुनी (गङ्ग २ २ १७४)।

तणुनी देको तणुनी (गङ्ग २ २ १७४)।

तणुनी देको तणुनी (गङ्ग २ २ १७४)।

तणुनी देको तणुनी (गङ्ग २ २ १७४)।

तणुनी देको तणुनी (गङ्ग २ २ १७४)।

तणुनी देको तणुनी (गङ्ग २ २ १७४)।

तणुनी देको तणुनी (गङ्ग २ २ १७४)।

तणुनी देको तणुनी (गङ्ग २ २ १७४)।

तणुनी देको तणुनी (गङ्ग २ २ १७४)।

तणुनी देको तणुनी (गङ्ग २ २ १७४)।

तणुनी देको तणुनी (गङ्ग २ २ १७४)।

तणुनी देको तणुनी (गङ्ग २ २ १७४)।

१। भी २)। १ एक स्थान से दूसरे स्थान में जाने-माने की दक्षिणाया प्रार्थी (मिथु १२)।
 २) कथय ३ [कथयि] जयम प्रार्थी,
 कीर्तिपाति बीज (पुरु १ १)। कार्य पुं
 [कथय] १ बस-समुह (अ २ १)। २
 बंजन प्रार्थी (पाठा)। जाय, नाम न
 [नामम्] कर्म-विशेष जिसके प्रभाव से
 बीज वसन्त में उगता होता है (कर्म १
 सम १७)। रेणु पुं [रेणु] परिमाण
 विशेष बसीच हवार साठ ही घनछट पर
 माणसे का एक परिमाण (मनु १२४)।
 बाह्या स्त्री [पादित्र] बाह्यत्र जन्तु
 विशेष (बीज)।

तस्य न [त्रसन] १ स्वभाव वसन हितन
 (पत्र)। २ वसाम्न (सुप १ ७)।

तसनाभी स्त्री [त्रसनाभी] तस बीजों के रहने
 का प्रदेष्टा की ऊपर-नीचे फिसाकर नीबड़
 रन्ध्र परितः है (पत्र १४३)।

तसर केओ टसर (कम्प)।

तसिध वि [रे] शुष्क सूखा (वे ३ २)।

तसिध वि [पुषित] सुखानुद विप्रासित
 व्यासा हुआ (मेष ८४)।

तसिध वि [त्र] भीत डरा हुआ (बीज
 १ महा)।

तसिधक्य केओ तस = क्य।

तसेय वि [त्रमतर] ऐकेशिव बीज स्थावर
 प्रार्थी (सुपा १२८)।

तह म [तवा] १ उड़ी वण्ड (कुमा प्रार्थ
 १४) स्वप्न १)। २ भीर, तथा (हे १
 १७)। ३ धनुर्धर में प्रयुक्त किया जाता
 ध्वज्य (मिथु १)। ऊपर पुं [तार] तवा
 शब्द लघाण्य (उत २९)। जाय वि
 [त्रान] प्ररक क उतरी की बालनेवाला (अ
 १)। २ न. लय ब्रज (अ १ १)। ति म
 [त्रि] स्वीकार-योडक ध्वज्य—बैसा ही
 बैसा मत फमता है (पाया १ १)।
 य म [त] १ एक वर्ष की हड़ता-सुषक
 ध्वज्य। २ धनुर्धर-सुषक ध्वज्य (वैरा २)।
 पि म [पि] ठो सी (कर्म)। थिह वि
 [विध] ज्ञ प्रकार का (सुपा ४३३)।
 केओ तहा।

तह वि [तथ्य] लय सत्य, सच्चा (सुप
 १ १३)।

तह पुं [धय] बाह्यकारक बाध, नीकर (अ
 ४ २—मेष २११)।

तह न [तथ्य] १ स्वभाव स्वल्प
 तहीय (सुमान १२२)। २ सत्य वचन (सुप
 १ १४ २१)।

तह केओ तह = तथा (बीज)।

तहरी की [रे] गुरुवासी सुर (वे ३ २)।

तहठिया की [रे] गो-नाट, पीछी का बाड़ा
 गोपाला (वे ३ ८)।

तहा केओ तह = तथा (कुमा गठन प्राचा
 सुर १ २७)। गय पुं [गव] १ युक्त
 वात्सा। २ सर्वज्ञ (पाथा)। मूय वि
 [मूय] उक्त प्रकार का (पत्र २२ १३)।

क्य वि [क्य] उक्त प्रकार का (मेष
 १३)। वि वि [विह] १ मिथुन क्युर
 २ पुं सर्वज्ञ (सुप १ ४ १)। हे म
 [हि] बहु ब्रज प्रकार (उत २८९ टी)।

तहि केओ तह = तथा (गा ८८८ उत १)।

ठहि म [तत्र] बहो छर्म (वा २ १)

तहि म [तत्र] प्रायः गा २१४ उत १ १)।

तहिय वि [तथ्य] लय, सच्चा बल-तत्त्विक
 (काया १ १२)।

तहिय म [तत्र] बहो छर्म (मिथे २७८)।

तहिय म [तथ्य] उड़ी वण्ड, उड़ी प्रकार
 वहीय (कुमा बज)।

ता म [तव] लयसे उत करण से (हे ४
 २८०—वा ४६ १७८ क्य)।

ता केओ ताव = ताव (हे १ २७१ गा
 १४१ २ १)।

ता म [तवा] लय उत सम (रैवा कुमा)

यण)।

ता म [तवि] ठो व (रैवा कुमा)।

ता की [ता] बसी (सुर १९, ४८)।

ता म [तव] बह। गीप पुं [गण्य] १

ध्वज्य कर्म। २ उल्टे कर्म के समान कर्म

(पाण १७)। फास पुं [स्पर्श] १

ज्यका स्पर्श। २ बैसा स्पर्श (पुरु १७)।

रेस पुं [रेस] १ बहु स्पर्श। २ बैसा

स्पर्श (पुरु १७)। कर्म न [कर्म] १

बहु कर्म। २ बैसा कर्म (पुरु १७—मेष
 ३२२)।

ताम केओ ताव = ताव (वा ७६७ म १४
 हेका ३)।

ताम पुं [ताव] १ ताव पिठा मय (सुर
 १ १२३; उत १४)। २ पुत्र बल (सुप
 १ १, २)।

ताम उक्त [त्रे] उद्यम करना। ३ तावक
 (वा १२)।

तामप्य न [तावाम्य] तमपता मनेव,

अनित्य (पत्र २४)।

ताड वि [स्वायिम्] ज्ञान करलेवाता (मा
 २१)।

ताडि पुं [स्वायिम्] उक्त परिपक्व (उत
 ८)।

ताडि वि [स्वायिम्] ताव-मुक्त (सुप १ १४)।

ताडि वि [स्वायिम्] उक्त उद्यम करनेवाला
 (उत २१ २२)।

ताडि वि [स्वायिम्] ज्यकाटी (सुप १ २
 २ १७)।

ताडि पुं [स्वायिम्] मुनि वाधु (वचन २
 ६)।

ताडि वि [त्राव] रमिष (ज)।

ताडि (पत्र) केओ ताव = ताव (कुमा)।

ताठा (पु) केओ ताठा (हे २ १२३)।

ताड उक्त [ताड्य] १ ताड़न करना

पीना। २ प्रेरणा करना धावत करना।

३ धुआकार करना। ताड (हे ४ २७)।

यवि ताडिस्त (पि २४)। बड ताडिस्त

(कर्म)। कर्म ताडिस्तमा ताडीमंड,

ताडीममाण (सुपा २९ पि २४)। धमि

(१२१) हेक ताडिस्त (कम्प)। ४ ताडिस्त

(उत १६)।

ताड पुं [ताड] ताड़ का पेड़ (उ २१९)।

ताडि पुं [ताडि] कर्म का धानुस्य-

विशेष मुद्रक (वे ६, ६३; कम्प कुमा)।

ताडन न [ताडन] १ ताड़न पीटना (उत
 २८९ टी गा ४४६)। २ प्रेरणा धावत

(पि १२ २३)।

ताडिस्वि वि [ताडिस्त] पिटाया गया (सुपा
 २८८)।

ताडिस्वि केओ ताड = कर्म।

ताडिस्वि वि [ताडिस्त] १ पिटाया ताड़न

किया गया हो बड, पीटा हुआ (पाथा)। २

त्रिपरा दुगावार विवा हो बहु 'रुक्माकीरि'
ता बरउवाएणाएण' ताहिवा होर' (पा २)।
ताहिअय न [दि] ऐरन ऐना (२५, १)।
ताहिअमाय देखो ताह = ताह्यु।
ताही की [ताही] बुन-विरोध (पद)।
ताहाअन
ताहीअमाय } देखो ताह = ताह्यु

ताग न [ताग] : यण रणण वरता (मुपा
३०४)। २ ताण (कम ३१)।
ताग पु [तान] सीण-अभिज स्वर-विरोध
आजा एणएणएण (कमु)।
तागप न [तानप] इरुता दुर्बलता (विज्ज
१३)।

तामिअ वि [तानिअ] ताव हुमा (की १३)।
ताइ ऐनी ताअ = ताण (आइ १२)।
ताइय न [ताइय्ये] उरुअव जलके लिप
(आइ १२४, १२७)।

ताइय्य न [ताइय्यय्य] स्वययय यययय
बरी यययय ययययययय (बर्ग ४ ४
४ २ ४१३)।

ताइय्य देयो तारिस (मा ३३ = आनु १४)।
ताम ऐना ताम = तह। तारय (पा ३३१)।
ताम (या) ऐरोमाय = ताह्यु (हि ४ ४ १)
यि)।

तामर वि [वि] रम्य गुनर (वि ३ १ :
वाय)।
तामरम न [तामरम] नमल यय (वि ३,
१ वाय)।

तामरम न [वि] पाणी में कय्य हनेगला
गुण (वि ३ १)।

तामसि पु [तामसि] (कमल-स्वाययय यययय
(आ १ १ : का ६)।

तामसिअ की [तामसिअ] एक आणीय
आनी बंद देव की आणीय यययय (आ
१ १ : का १)।

तामसिअ की [तामसिअ] कैययय
बंद की एक ययय (कम)।
तामस न [तामस] : कययययय : २ ययय
आयययय (देव १३१)।
ताम : (वि [तामस] ययययययय (ययय
२ गुण ११) ययय [वि] ययय
ययययययय ययययय (ययय २)।

तामहि (यय) देखो ताव = तावत (यय :
तामहि) ययय वि २६१, हु ४ ४ १)।
तायय न [ताय] रतल (बर्ग १२)।
तायसीसाय पु [तायसीसाय] शुद्ध-स्वाणीय
देव-आति (आ १ १ : कय्य)।

तायसीसा की [तायसीसा] : १ ययय-
विरोध ऐसीय। २ ऐसीय ययययययय ऐसीय।
'तामसीसा कोययय' (आ वि ४७७ कय्य)।
ताययय देखो ताअ = ये।

तार पु [तार] : १ बीबी नरक का एक स्वाय
(देव १)। २ गुड योती। ३ ययय
ययययय : ४ ययययय 'ययय' यययय : ५
ययय ऐना (हि १ १७०)।

तार वि [तार] : निर्मल स्वयय (वि ३,
४२)। २ ययययय ययययययय (ययय)। ३
ययय ययय (वि ३ ४)। ४ ययय ययय
स्वर (ययय का ४६४)। ५ ययय ययय (की
२)। ६ पु ययय-विरोध (वि १ १४)।

तार की [तारी] एक ययय-ययय (आइ ४)।
तारंग न [तारंग] उरुअ-ययय (वि ३ ४२)।
तारंग वि [तारंग] ययययययय ययययय
ययय (आ ३ १२)। २ पु ययय-विरोध
यययय ययययययय (ययय २, १२६)। ३
ययय ययय यय (आ १) देखो तारय।

तारंग की [तारंग] : ययय (ययय २ ६)।
२ एक ययययी यययय-यययय ययय की एक
यययय (आ ४ १)। देखो तारय।

तारंग न [तारंग] : ययय यययय (मुपा
१२०)। २ वि यययययय (मुपा ४१७)।
तारयय पु [वि] यययय (दे १ १)।

तारय देयो तारय (कम १ : आनु १ १)। ४
ययय ययय (वि)।
तारया देखो तारया : १ ययय की ययय
(ययय का १० २२४)।

तारय की [तारय] : ययय की ययय (का
४१३ ४१३)। २ ययय (आ २, १ १ १
१४)। ३ ययय की की (मे १ १४) ४
ययय यययय की ययय (ययय १२२) ५
ययय ययय (आ १)। ६ ययय की ययय-
देवी (ययय ४२३)। ७ ययय [ययय] ययय-
ययय (ययय ४२३) ययय पु [ययय] एक
यययययय (ययय ७२ १)। ययय पु

[तमय] ययय-विरोध ययय (वि ११
२७)। ययय पु [ययय] यययय, ययय
(ययय)। ययय पु [ययय] यययय (ययय
११ ११)। ययय की [ययय] यययय
यययय (ययय)। 'ययय न [ययय] यययय
यय यययय ययय की यययय ययय ययय
'ययय यययय ययय' (मुपा १७०)। 'ययय
पु [ययय] यययय (ययय)।

तारि वि [तारि] यययययय ययय
(यययय २१)।
तारि वि [तारि] यययय ययय ययय
(ययय २१)।
तारि वि [तारि] ययय ययय ययय
(ययय)।

तारिया की [तारि] ययय के यययय की
एक यययय की यययय यययय, यययय
'यययययययययययय' (मुपा १ ७१)।

तारि वि [तारि] ययय, ययय ययय य
(ययय ययय ययय)। की, सी (आइ
१२६)।

तारी की [तारी] ययययययय देवी (ययय
१२ ४)।

तारु वि [तारु] यययययय (ययय
१२१)।
तारुय } न [तारुय] ययययय ययय
तारुय } (ययय ययय ययय ययय ११६)।
तारु देयो तारु = ताह्यु। ययय (वि १४ ४)
ययय ययययय (ययय १)। ययय
ययययय, ययययययय (ययय ११६
१ : वि २४)।

तारु ययय [तारुय] ययय यययय ययय
ययय। ययय यययय (मुपा ४१ १)।

ताव पु [ताव] : ययय-विरोध (ययय ४ ४)।
२ ययय-विरोध यययय (ययय २ १)। ३
ययय (ययय २)। ४ ययय यययय (वि १
१६)। ५ ययय-ययय (ययय)। ६ यययय
ययय एक यययय (ययय २ ३)। ७ ययय
ययय ययय यययय की ययय (आ १११)।
८ ययय ययय का ययय (२ १ १ २)। 'ययय
न [ययय] यययय ययययययय ययय-विरोध
(ययय १ १४ मुपा ११०-१११)। ययय
पु [ययय] : ययय-विरोध ययय १)। २ वि

ताल की लक्ष्य लक्ष्यो जीवनाला (छाया १
८) । मलय पुं [मलय] १ मलय
(मलय) । २ मलय-विशेष (वर्ण १) । ३
मलय पहाड़ (दी १) । पर्वत पुं
[मलय] मलयपर्वत का एक प्रमाण (म
८ १) । पिसाय पुं [पिसाय] शीत-
काय पक्ष (पक्ष १) । पुष्ट देखो लक्ष्य
(वा १२) । यर पुं [यर] एक मनुष्य
वालि बाण (घोष ३११) । यिन् विन
बेट, बोट न [बुट] व्यजन, पंथा (वि
११ मट—देखो १ ४ ६ १ १० प्रार्थ) ।
संयुक्त पुं [संयुक्त] ताल के पक्षों का संयुक्त,
ताल-नय संयुक्त (युग १ ३, १) । सम
वि [सम] ताल के मनुष्य स्वर, स्वर
विशेष (अ ७) ।
वालेक पुं [वालेक] १ कुशल काम का
धाम्प्य-विशेष । २ अन्त-विशेष (विन) ।
वालेकि पुंषी [वालेकि] अन्त-विशेष ।
के गी (विन) ।
वालगा न [वालगा] वाला द्वार बन्द करने
का क्रम (वर ११६ टी) ।
वालगा देखो वालगा (दीन) ।
वालगा की [वालगा] कपेय वाहि का
प्रहार (पक्ष २, १) ।
वालफकी की [वे] बाड़ी लीकली (६ ३,
१) ।
वालप देखो वाला (पुता ४१० पुत्र २३२) ।
वालसम न [वालसम] वेय वाय का एक
मेर (वर्ण २ २१) ।
वालहल पुं [वे] यानि कीर्ति (६ ३ ७) ।
वालम [नरा] उम समय 'वालम' वाधति
दुष्टा वाला वे लक्ष्मिपति पितादि' (६ ३
११, वा २११) ।
वालमी की [वे] वाला कीर्ति, मान का वाला
(६ ३, १) ।
वालपय पुं [वालपय] ताल (वाध) बजाये-
बाना (विदु ११) ।
वालपय } पुं [वालपय] १ शीत-विशेष
वालपय } ताल देवाना शीत (छाया
१ १) । २ मट लक्ष्य अन्त मनुष्य-वादि
(६ ३) ।

वालमि वि [वालमि] वाला पीया हुआ
(छाया १ ३) ।
वालमि सक्त [वालमि] पुमाना फिदगा ।
वालमि सक्त (६ ३ १) ।
वालमि न [वालमि] व्यजन पंथा (घ
१ ८) ।
वालमि वि [वालमि] पुमाना वाला
(पुमा) ।
वालमि देखो वाला = वाला ।
वालमि देखो वालमि (उत् ३, ११) ।
वाली की [वाली] १ अन्त-विशेष (वा १ १) ।
२ अन्त-विशेष (विन) । 'वाल' न [वाल]
वाल-नय के पक्ष का बना हुआ पंथा
(वा ११) ।
वालु } न [वालु] क वाला, मुँह के बन्द
वालु } का अन्त वाला लक्ष्य (उत् ४६
छाया १ ११) ।
वालुवालमी की [वालुवालमी] विना-
विशेष, वाला वाला की विना (वर्ण) ।
वालुवाल पुं [वे] १ केन कीर्ति । २ कति
कुल लक्ष्य का वेर (वे ३, २१) । ३ वाला का
वाल (वे ३, २१ वा १० वाल) । ४ पुं,
वाल का मय (विन ३२) ।
वालमि देखो वाला = वाला ।
वाल सक्त [वालपय] १ वाला मय करना ।
२ संवाप करना, पुनः जाना । वालमि
(वा ३३) । कर्त वालमि (वा ७) । क
वालमि (मय १३) ।
वाल पुं [वाल] १ वाली वाल (पुमा ३०६,
वर्ण) । २ संवाप पुनः (वाल ४) । ३ मय
रवि । वाला की [वाल] मय-वालि
विना (वा ३) ।
वाल घ [वालपय] एन वाला का लक्ष्य
मय्यय । १ लक्ष्य (पक्ष १८, २) । २
मय्यय वाला (वालमि) । ३ लक्ष्य-वाल
४ वालमि हय । ५ वालमि । ६ प्रवाल ।
७ वालमि-वाल । ८ वाल । ९ वालम्य,
वालमि । १० लक्ष्य वाल (वे १ ११) ।
वालमि वि [वालमि] लक्ष्य, मय्यय (पक्ष
३३) ।
वालमि वि [वालमि] अन्त (उत् १०४
मय) ।

वाल देखो वाला = वाला (मय) ।
वाल } (मय) देखो वाला = वाला
वालमि } (पुमा) ।
वालप पुं [वालप] वाली मय्यय वा एक
मय्यय (वा ३८) । २ वाला वाला
(वि २७) ।
वालप न [वालप] १ मय वाला वाला
(वि १) । २ पुं लक्ष्य वाला का एक
वाल (पक्ष ३ ३) ।
वालमि देखो वाला = वाला ।
वालमि } देखो वाला-मय्यय (मय
वालमि } वि १४२, ४३८ कल) ।
वालमि } वाला-मय्यय
वालमि } देखो वाला-मय्यय (वि ४३८) ।
वालप पुं [वालप] १ वाला मय्यय
वालमि-विशेष (मय) । २ एक मय्यय
(मय) । 'वाल' न [वाल] वाला का मय
(वाल) ।
वालमी की [वालमी] मय मय्यय की एक
वाल (मय) ।
वालमी की [वालमी] वालमि मय्यय
(मय) ।
वालमि वि [वालमि] वाला हुआ मय
मय्यय (वा ३३ विना १ ३ मय ३
२२) ।
वालमि की [वालमि] वाला पुमा वाल
मय्यय का वाल (वे ३ ३६) । २ वाला
मय्यय (मय) ।
वालमि पुं [वालमि] मय्यय वाला
वा वाल (पुमा ६ १ ३७ मय ३८) ।
वालमी की [वालमी] मय्यय वाला (पक्ष ३३,
१) वा २३६) ।
वाल पुं [वाल] १ मय रर (वा ३ ३३) ।
२ मय्यय वाला (पक्ष १ १) ।
वालमि वि [वालमि] वाला वालमि-
(पक्ष १ १) ।
वालमि वि [वालमि] १ वाल-मय्यय मय्यय
२ वाल-मय्यय (वा ३ २३ मय्यय) ।
वालमि वि [वालमि] मय्यय वाला का
वाल मय्यय की मय (मय) ।
वाल म [वाल] लक्ष्य मय (वे ३ १३) ।
वि म [वि] लक्ष्य मय (मय ३४२) ।

१२ १४ ४२२)। मूलपाणि पुं [शूल-
पाणि] १ महारथे स्थितः। २ विरुद्ध का
हस्त में रखनेवाला मुष्ट (पञ्च २६, ३२)।
मुत्त्रिया की [शूलिका] छोटा विरुद्ध
(मुष्ट १ २ १)। हस्तार वि [सामर]
विप्लवर्त्ता ७३ की (पञ्च ७३ ३६)। हस्त
म [पा] तीन प्रकार से (वि ४२१ अणु)।
हुजग, हुजग, हुजग न [सुयन] १
तीन बाण, स्वर्ग मर्त्य क्षीर पाताल लोक
(हुमा मुर १ = प्राप् ४२ अणु १२)।
२ पुं, राजा हुमापाल के पिता का नाम
(हुम १४४)। हुमावपाल पुं [सुयन-
पाल] राजा हुमापाल का पिता (हुम
१४४)। हुमावर्त्तार पुं [सुयनवर्त्तार]
राजा के पट्टहस्ती का नाम (पञ्च ७३
१२२)। हुमाविहार पुं [सुयनविहार]
पट्टय (हुमपल) में राजा हुमापाल का कम
बाना हुआ एक कैम मन्दिर (हुम १४४)।
केही से।

"ति देवो इज = दत्ति (हुमा कम २ १२
२१)।

तिज (पन) क [तिम्, तिम्] १ बाण
होना। २ एक-बाण करना। तिज (प्राक्
१२)।

तिज न [तिज] १ तीन का लघुपद (या १
उप ७२ न टी)। २ बहु बाण बढ़ा तीन
पल्ले मिलते हैं (मुष्ट १ ११)। संज्ञ
पुं [संयज] एक राजपि (पञ्च ३ ११)।
देवो तिज।

तिज वि [तिज] तीन के उत्पन्न होनेवाला
(पञ्च)।

तिजम् १ [तिजम्] स्वनाम-क्यात एक
कैतुजि (पञ्च)।

तिजम् न [तिजम्] तीन का लघुपद (विदे
२६४१)।

तिजदा की [तिजदा] स्वनाम-क्यात एक
राजकी (वि ११ ८७)।

तिजमगी की [तिजमगी] छत्र-विशेष (पिप)।
तिजम न [तिजम] तीन का लघुपद (विदे
१४२२)।

तिजलुक [न] [त्रिलोक्य] तीन बाण—
विश्वलोक्य स्वर्ग मर्त्य क्षीर पाताल लोक
(बर्मा १; लघुपद २)।

तिजस पुं [तिजस] देव देवता (हुमा मुर १
२)। गज पुं [गज] ऐषवत या ऐषवत
हाथी हज का हाथी (वि २ ११)। नाह पुं
[नाम] हज (उप २८६ टी गुप्ता ४४)।

पट्ट पुं [पट्ट] हज देव-नामक (गुप्ता
४७ १०६)। सिस्ति पुं [आपि] नाह
मुनि (हुम १७३)। लोप पुं [लोप]
स्वर्ग (उप १ १६)। विजया की

[बनिवा] देवी की देवता (गुप्ता २६७)।
सरि की [सरि] गंगा नदी (हुम)।
सेल पुं [सेल] देव पर्वत (गुप्ता ४८)।

लज्य पुं [लज्य] स्वर्ग (हुम १६ उप
४२ न टी मुर १ १७२)। दिक्षि पुं
[दिक्षि] हज (गुप्ता १४४)। दिक्षि पुं
[दिक्षिपति] हज (गुप्ता ७६)।

तिजसप्ति पुं [तिजसप्ति] हजसप्ति
(सम्पत् १२)।

तिजसिं पुं [तिजसिं] हज देव-पति
(बर्मा १२४)।

तिजसिं देवो तिजसिं (विम २१)।

तिजसांस पुं [तिजसांस] हज देव-नामक
(वि १ १)।

तिजामा की [तिजामा] पति, पत्न (अणु
४४)।

तिजस्य एक [तिजस्य] सहज करना।
तिजस्य (यात्रा)। बह वि-कर्ममाण
(यात्रा)।

तिजस्य की [तिजस्य] यमा, सविष्णुवा
(यात्रा)।

तिजस्य वि [सुदीय] तीसप वि ४४६,
तिजस्य संज्ञि २)।

तिजस्य न [तिजस्य] बाध-विशेष
(सवि ११)।

तिजस्य ह [त्रोटय] १ लोहना। २ गरि
व्याज करना। तिजस्यका (हुम १ १
११)।

तिजस्य घट [त्रट] १ द्रव्य। २ घट
होना- "सम्पत्तुका तिजस्य" (हुम १
१४, २)।

तिजस्य वि [त्रट, त्रटित] १ द्रव्य हुमा। २
घटपट (यात्रा)।

तिजस्य पुं [त्रट] यमास मोर-विच्छ (यात्रा)।

तिजस्य पुं [त्रिपुटक] बाण विशेष (अजि
१ न पञ्च १२६)।

तिजस्य न [त्रि] १ मालन देव में प्रसिद्ध बाण्य
विशेष (या १८)। २ लोण नभय (या पञ्च
२६)।

तिजस्य न [त्रिपुर] एक विद्यावर-नगर (हज)।

तिजस्य पुं [त्रिपुर] समुद्र-विशेष (वि २४)।
गाह पुं [नाय] बही (वि ८७)।

तिजस्य की [त्रिपुरी] नगरी-विशेष बेरि देव
की राजधानी (हुमा)।

तिजस्य वि [त्रि] मन बजन क्षीर कल्या की
वीका पहुँचनेवाला कुच का हेल (उप २)।

तिजस्य देवो तिजस्य (वि न ८१ ११ ६८)।

तिजिआ की [त्रि] कर्म-रज (वि २, १२)।

तिजिच्छ देवो तिजिच्छ (हज)।

तिजिच्छायाय न [विचित्रायाय] नग्न
मोम-विशेष (हज)।

तिजिच्छि की [त्रि] कर्म-रज पद का रज
पदम (वि २, १२) मरका है २ १७४ न ४)।

तिज वि [वीमि] क्षीना हुमा (वि ११२;
है ४ ४११)।

तिजि वि [त्रि] बहुरूप करनेवाला
विचित्रिय बहुरूपनेवाला बाधिय नाम

॥ होने पर बेर से मन में जो धारित हो बोलने-
वाला (बर्मा १ डा ६—पञ्च १७१ नम)।

तिजिणी की [तिजिणी] १ बिना इनकी
का वेद (पिप ७१)।

तिजिणी की [त्रि] बहुरूपता (बर्मा १)।

तिजिणी की [तिजिणी] बहुरूपता (हुम-विशेष (हुम
१ २)।

तिजुय पुं [तिजुय] १ बुरा-विशेष लोह
विजुय का वेद (यात्रा पञ्च २ १७ सम
१२२ पण्य १७)। २ न. कर्म-विशेष
(पण्य १७)। ३ व्यापरी नगरी का एक
कपाल (विदे २६ ७)।

तिजुय पुं [तिजुय] भीषिय कर्म की
विजुय एक बाध (उप १६ ११६, मुष्ट
१६, ११६)।

वि देवो नमः = सुतोय (बम्म २, १९) ।
 भाग भाव हाम पुं [भाग] सुदीय
 भाव, दीनय हिम्मा (बम्म २) राजा १
 १९-१२ २१८ बम्म) ।

वि देवो धीः उदुयु धर्यति कुर्वि मय्यतिपुता
 विपौ पयविपार्यति (रंश) ।

वि विच [वि] दीन, सो दीर एक (नर भ-
 यदा) । अमुत्र न [अमुत्र] दीन पर
 भाग्यो दे बत्ता ह्या ह्य, 'मपुपउरहि
 पाट्टये विष्णुपे वि विदेहा' (उत्तम
 ११९) । नग वि [गुम] १ सेवमुच ।
 २ नग एवम दीर ह्यम दुगगना (अष्ट
 १) । उणय वि [गुमि] सेवमुच
 (अरि) । उन्नमय वि [उन्नमय] नम
 एक नो दीनय १ ३ वा (उत्तम १ ३
 १७९) । उत्त वि [गुम] १ दीन को
 पीनेसाय । २ दीन को दीनेसाया (उत्तम
 १ १-१२ ९४) । ओयन [आजस्]
 विच विचरिणेन (अ ४ ३) । कंठ
 कंठा वि [कण्ठ क] सेन वायसाया
 दीन भागसा (बम्म १ ९) । कटुत्र
 न [कटु] का नदीय दीर दीन
 (वग) । कटा सेन गला (उत्त) ।
 कान न [कान] नुन कान्य दीर वरं
 मान कन (अग गुा) काल देवा
 का (गुा १९९) । गंध वि [गण्ड]
 दीन वासाय (अ १८९ टी) । गंडा
 दिव पुं [गण्डाधिव] वरं वरुछो
 उता बापुन (उत्त ११ २६) । गण
 गणुन देवा वपुत्र (अ २२८ २९१) ।
 गण न [ग] नन वचन दीर बाया
 (अ २) । गुन देवो 'उता (वग) ।
 गुण वि [गुन] कर्तिगि धरिः सोम
 न गला मन्ना (अ) गमय वि
 [ग] दीन कोसाय (उत्त) । गणा
 अ [गण] दीन को (बम्म ४
 २२ ११ न [गणा] गरी वरं
 दीर वचन को (वि ११) । गणय पुं
 [गण] नग र वि (अ २२, २ ग
 ११ २११ गग) । गुण सेन उता
 (गुा १ १ टी-१२ ९३) । गिग
 (अ) सेन को । गग ७७ [ग

गिरान्] १ संवा-विदेय ११ । २ सेतीव
 संवासाता सेतीव (कपा वी १९) गुर १२,
 ११९ ४ २७) । ईड न [दण्ड] १ इति-
 वार एवने का एक उरकण्ड (महा) । २ दीन
 एव (वीर) । ईडि पुं [दण्डम] संवादी
 संवर मत्त का वनुवापी साधु (अ ११९ टी
 गुा ४१९ बदा) । नपय की [नपयि] १
 संवा विदेय विद्याने । २ विद्याने संवा
 बत्ता (बम्म १ ११) । पंच वि, न
 [पञ्चम] पंच (वोष १४) । पंचासहस्र
 वि [पञ्चास] विनवा (पत्र २१ १२) ।
 पड न [पड] वरं दीन एवने एरुवि
 एने हों वड ल्मान (उत्त) । पाचन न
 [पाचन] १ उदीर, इतिव दीर प्राण इन
 तीनों का नाश । २ मन वचन दीर नाया
 का विनय (वि) । पुंड न [पुण्ड]
 विनय-विदेय (अ २) । पुर पुं [पुर] १
 वनय-विदेय । २ न दीन वर (उत्त) ।
 पुच की [पुच] विनय-विदेय (गुा
 ११७) । 'पर्मगी की [मणी] उद-विदेय
 (वि) । मधुर न [मधुर] वी उदीर दीर
 मधु (मधु) । माभिजा की [मियासिद्धि]
 विचरी वरवि सेन मात की है ऐसी एक
 वरिया, उद-विदेय (अ २१) । मुद वि
 [मुद] १ दीन कुसाया (उत्त) । २ पुं
 म्मगय संवासादी वी शागन-दीर (वलि
 ७) । एता न [पत्र] दीन रात्र (अ
 १४२) । 'ममाराण गुणोति वुवरी म्मिउ
 विर' (गु ११८) । एति न [एति]
 दीर वरीर दीर मोदीय वी दीन एतिव
 (उत्त) । एत्त न [एत्त] एतं वरं
 दीर वरता लंक (गुा प्राण ८९ वं १) ।
 एवम पुं [एवम] मयोय वि
 (वा २७ पत्र २ १२२) वि) । एव
 पुत्र पुं [एवपुत्र] वागरीकर के विदे
 में उताय एक विनय (उत्त ७२ ११) ।
 एव की [एव] सेन लोअ (उत्त
 न १९१) । एव सेन एव (उत्त ४
 १) व की [एव] १ दीन वरा वा मपुत्र ।
 २ मपु में दीन वर वर वा मपु (वीर) ।
 ३ एव विदेय (वग १९) । वग पुं
 [वग] १ वरं वरं दीर वर व सेन

पुसाय (अ ४ ४-४-४-४-४ १
 उता पु ४ ७) । २ लोक वि वीर वर
 इन दीन का वरं । ३ वर वरं वीर इन
 सेनों का वरुह (पाड १) वारम) । वग
 पुं [वग] वराय वग (कुा) । वरिग वि
 [वरी] दीन वरं वी वरवासाय (अ
 १) । वरि की [वरी] वगरी वी दीन
 देवा (कम्पु) । वरिग वि [वरी] दीन
 देवासा (उत्त) । वरं देवो वरि
 (वा २७७ वीर) । 'वहु पुं [वृत्त] मपु-
 लोष के मयो लवन वानुदेर (अ १२२) ।
 वप न [वप] दीन वीरसा (अ २, १) ।
 वहा की [वगा] वंसा वदे (अ ९
 ८) मपु १) । वापया की [वापय]
 सेनो वापय (पट्ट १ १) । विदु
 विदु पुं [विदु] मपुल्लेन में
 उत्तम वरम वरं-वचन वी उता वा नन
 (अ ८७ पत्र २, ११२) । वर वि
 [वि] दीन वरार का (उता वी १ ।
 न १) । विहार पुं [विहार] उता
 कुमाराल का वरसाया ह्य वरुह वा
 एक वी वरि (गु १४४) । सहु पुं
 [सहु] मपुल्लेन एक उता (वग २२) ।
 संव न [संग] वरात वसाय दीर
 वराराल वा वयय (गु ११ १ १) ।
 सहु वि [वद] विनवा ९१ वी (उत्त
 ११ ७१) । सहु की [वदि] विनय
 ९१ (वग) । सच वि [सच] उदीन
 (वा ९) । सचनुको व [सच
 वयय] उदीन वर (उता १ १) गुा
 ४४६) । सचय वि [सचय] दीन
 वयय में वराय होनेसा दीन वरन वी
 वरविवासा (अ १४) । सारय न [सार]
 दीन वर वा मदीसाया हार (उता १
 १ वीर न) । २ सार विदेय (उत्त १९
 ४४) । सार की [सार] वयपी वरने
 वा वर-विदेय (वि १ ४) । सरिय न
 [सरि] १ दीन वर वा मदी वरा ह
 (वग) । २ वर-विदेय (उत्त १११ ११) ।
 ३ वि वाग विनय-वीर वी (उत्त १ २
 १११) । सग पुं [सग] उदीन
 (टी) । गु २ न [गु] उदीन-विदेय (उत्त

१२ ३४ ४ ११६)। सुसपाणि पुं [सुस-
पाणि] १ महानेव शिव । २ शिव का
हाथ में रहनेवाला मुष्ट (पञ्च ३६ ३५)।
सूक्ष्मा श्री [सूक्ष्म] शोभा विष्णु
(पञ्च १ १)। हृत्तर [सप्तव]
विष्णुवर्मा ७३ वीं (पञ्च ७३ ३५)। हा
थ [भा] तीन प्रकार के (पि ४४ १ अणु)।
हुजण, हुण, हुणन [सुधन] १
तीन जन्म, स्वर्ग मर्य दीर पाताल लोक
(कुमा गुर १ = प्राप् ४६ अणु १६)।
२ पुं राजा कुमारपाल के पिता का नाम
(कुम १४४)। हुजणपाळ पुं [सुधन-
पाळ] राजा कुमारपाल का पिता (कुम
१४४)। हुजणपाळकर पुं [सुधनपाळ-
कर] राजा के पड़ोसी का नाम (पञ्च ८१
१२२)। हुणविहार पुं [सुधनविहार]
पाठ्य (हुजण) में राजा कुमारपाल का नाम
बना हुआ एक कैल मन्दिर (कुम १४४)।
केतो तं ।

ति रेको इय = इति (कुमा कम्म २ १२
२५)।

विज (वज) सक [विम् विम्] १ ब्राह्म
होना । २ सक. वज करना । विजय (सक
१२)।

विज न [विज] १ तीन वा छत्राद्य (वा १
अ ७२ व टी)। २ वह बाण बड़ा तीन
पल्ले मिलते हैं (गुर १ ६१)। संज्ञा
पुं [संज्ञ] एक राजर्षि (पञ्च ५, ६१)।
केजो विज ।

विज नि [विज] तीन से उत्पन्न होनेवाला
(पञ्च)।

विजं हर पुं [विजंहर] स्वनाम-क्यात एक
कैतुनि (पञ्च)।

विजरा न [विजरा] तीन वा छत्राद्य (विजे
२६४१)।

विजरा की [विजरा] स्वनाम-क्यात एक
राजकी (वि ११ ४७)।

विजरा की [विजरा] धन-विशेष (विज)।

विजय न [विजय] तीन वा छत्राद्य (विजे
१४४१)।

विजयसूक्त [न [त्रिलोक्य] तीन जगत्—
विजयसूक्त] स्वर्ग मर्य दीर पाताल लोक
(वर्मा १ ३ अणु ६)।

विजय पुं [विजय] देव देवता (कुमा गुर १
६)। गज पुं [गज] देवपथ या देवपथ
हाथी इन्ड का हाथी (वि १ ११)। नाह पुं
[नाय] राज (वज ६८६ टी गुण ४४)।
पहु पुं [प्रसु] राज देव-नायक (गुण
४७३ १७५)। रिसि पुं [रसि] नायक
मुनि (कुम १७१)। जोग पुं [लोक]
स्वर्ग (उप १ १६)। बिजया की
[बनित] देवी की देवता (गुण १६७)।
सरी की [सरि] गंगा नदी (कुम)।
सेठ पुं [शेठ] भैरव पर्वत (गुण ४४)।
लख पुं [लख] स्वर्ग (गुम १६ उप
७२४ टी गुर १ १७२)। दिव्य पुं
[विषय] राज (गुण १४)। दिव्य पुं
[विषय] राज (गुण ७५)।

विजयसूरि पुं [विजयसूरि] ब्रह्मलिंग
(अमृत १२)।

विजयसिं पुं [विजयसिं] राज देव-पति
(वजरा १२४)।

विजयसेव केजो विजयसिं (वजरा ६१)।

विजयसीस पुं [विजयसीस] राज देव-नायक
(वि १ १)।

विजयमा की [विजयमा] पति, रात (अणु
४४)।

विजयसक [विजयसक] सहज करना ।
विजयकर (भाषा) । नक विजयसमापन
(भाषा)।

विजयसकी [विजयसकी] समा, सीधिया
(भाषा)।

विजय [वि] [वृत्तीय] तीसरा वि ४४६,
विजय [संति २)।

विजयकर न [विजयकर] बाण-विशेष
(विज ११)।

विजय सक [जोटय] १ तीसरा । २ परि
व्याप करना । विजयसकी (गुण १ १
१)।

विजय घर [इद] १ इत्या । २ मुक्त
होना । 'सम्पदुक्ता विजय' (गुण १
१४, २)।

विजय वि [इद, मुदित] १ इत्या इत्या । २
अपत्य (भाषा)।

विजय पुं [वि] कला मोर-विषय (पाम)।
विजयसुं [विजयसुं] बाण-विशेष (वसति
६ ८ पञ्च १५१)।

विजयन [इ] १ मातृ देव में अधिक बाण
विशेष (वा १८)। २ मौर्य, लख (वा पञ्च
६६)।

विजय न [विजय] एक विद्याभर-नगर (इद)।
विजय पुं [विजय] धनुर-विशेष (वि ६४)।
गाह पुं [नाय] गौरी (वि ८७)।

विजय की [विजय] तपती-विशेष केवि देव
की राजधानी (कुमा)।

विजय वि [वि] यत् नयन दीर कला की
वीणा पूर्वजानेवाला दुःख का हेतु (उप २)।

विजय केजो विजय (वि न ४६, ११ ६८)।

विजय की [वि] कला-रज (वि ३, १२)।

विजय केजो विजय (इद)।

विजय केजो विजय (इद)।

विजय की [वि] कला-रज पञ्च का राज
पराय (वि ३, १२) परका १ २ ७४ व ४)।

विज वि [विजय] बीना हुआ (वि ११२
६ ४ ४१६)।

विजय [वि] [वि] बड़बड़ करनेवाला
विजय [वि] बड़बड़ करनेवाला बाकिरा नाम
न होने पर बेर से मत में जो माने को बीजने
वाला (वज १ डा १—पञ्च १७१ वज)।

विजय की [विजय] १ बिना इपरी
का पैर (पमि ७१)।

विजय की [वि] बड़बड़ (वज १)।

विजय की [विजय] बड़बड़ (वज १)।

विजय पुं [विजय] १ इद-विशेष वृद्ध
विजय का पैर (पाम पञ्च २ १०; वज
१२२; पण १७)। २ म. पञ्च-विशेष
(अणु १७)। ३ बाधती नदी का एक
छाया (विजे २३ ७)।

विजय पुं [विजय] श्रीमय बाण की
विजय एक बाण (उप १६ ११६, गुण
१६, ११६)।

सुगिया की [सुगिया] नयन-विशेष (सग)।
सुगियायन न [सुगियायन] एक योच का
नाम (कम्प)।

सुगी की [सुगी] १ राशि, राश (वे ३, १४)।
१ समुद्र-विशेष 'अक्षिपरसुसुतसुगीर्य'—
(कम्प)।

सुगीय पु [सुगीय] पर्यटन-विशेष (सुर १
२)।

सुग कील [सुग] १ सुग सुह (स ४ २)।
२ धन-भाग (विश्व १)। की की 'कि
की कि कीरिन्दी कीरुन अक्षिप सुगीर्य'
(सुपा १२२)।

सुगीर न [सुगीर] मधुर विन्दी-कम्प (वे ३,
१४)।

सुगुल पु [सुगुल] कीरिं क, पुराणा नका (वे
३, १३)।

सुगुलसुगि वि [सुगुल] जल-सुग (वे ३
१९)।

सुगुल न [सुगुल] जल, जल (वे ३ १४) जल
७२२ दी)।

सुगि वि [सुगि] नका पेटनाला संविन
सुगि (कम्प नि ३३३, जल ७)।

सुग न [सुग] सुगी यमना, लीकी (पम्प
२३ १४) योच ३० सुग १३३)। २ चाकी
की नाकि 'न हि सुगमि विरुद्ध' यथा
सामान्या हित' (यामन)। ३ 'जातायमकना'
सुग का एक यमकल (सम)। नग न
[नग] संविन-विशेष, एक नाच का नाम
(सम २३)। बीगा वि [बीगा] बीगा-
विशेष को बजानेवाला (बीन ३)। बीगिण
वि [बीगिण] नदी पूर्वीक यम (बीन
कम्प २ ४ सामा १ १)।

सुग न [सुग] बहिर के बीच का सोला यम
नग (समि ४३)। बीगा की [बीगा]
बाग-विशेष (सम ४९)।

सुगुल केही सुगुल (सम)।

सु का की [सुका] बीरपाल देवी की एक
यमकल परियु (अ ३ २)।

सु बाग सुग [सुग] नदी, लीकी (सम ३, १
७)।

सुगि की [सुगि] बीन-विशेष (वे ४
४९०: यम)।

सुगि की [सु] १ मधु-पल मधुपुगा।
२ सुगल ऊष्म (वे ३, २३)।

सुगी की [सुगी] १ सुगी यमना, लीकी,
नदी (वे ३, १४)। २ बीन साधुओं का एक
पान उपणी (सुपा १४१)।

सुगुल पु [सुगुल] १ सुग-विशेष 'विन
का पैर (वे ४ ३)। २ यमन देवी की एक
बाति (पराय १) सुपा २३४)। ३ यमना
सुगिनाय का यमनायिनायक देव (समि
७)। ४ सोने के यमन-दीप का यमनवि
देव-विशेष (अ ७)।

सुगुल पु [सु] एक उत्तम बाति का यमन
का बीन 'यमन व उत्तम पता सुगुलपुनरना
वागिनीया' (सुर ११ ४४) कवि)। केही
योकसार।

सुगुल सुगी [सुगुल] रिखा रिखि यमुनी
यमनी तथा यमुनी रिखि (सुग १
१३)।

सुगुल वि [सु] यमसुगुल, सुगा बीण
(वे ३, १४)।

सुगुल वि [सुगुल] १ सुगका यमकल, निरुद्ध,
हीन (साया १ ३ साय २३)। २ यमन
बीन (सम २, १३)। ३ सुग रिख, काली
(बाया)। ४ ससार, निहार (सम १८
३)। ५ यमुनी (सम ४ ४)।

सुगुल वि [सु] यमन यमुन-प्रात
सुगुल (वे ३, १३)।

सुगुल सुगी [सुगुल] सुगुल (यमना
१३९)।

सुगुल न [सु] बाग बाया (सुग १)।

सुगुल यम [सुगुल] १ सुगुल यमन हीन
बागिण होना। २ सुगुल, यमना, बीन।
सुगुल (यम) सग है ४ ११९)। 'अक्षिप
देवसवि सुगुल न सायरे यमसवि' (यमना
१३९)। नदी-सुगुल (सम)।

सुगुल वि [सुगुल] सुगुल यमन, यमन
(स ७१०) सुगुल १७ वे १ २९)।

सुगुल न [सुगुल] यमन, सुगुलपुल (सुग
१ १ १ यमना ११९)।

सुगुल वि [सुगुल] सुगुल विन बागिण
(सुग)।

सुगुल वि [सुगुल] सुगुल (यमना १३९)।
सुगुल वि [सुगुल] सुगुल (यमना १३९)।

सुगुल की [सुगुल] १ सुगुल, यमना, बीन
(स २ सुग १ २३ सुग २४)।

सुगुल की [सुगुल] १ सुगुल, यमना, बीन
(स २ सुग १ २३ सुग २४)।

सुगुल यम [सुगुल] सुगुल यमन हीन। सुग
(वे ४ ११९)।

सुगुल की [सुगुल] १ सुगुल, यमना, बीन। २ सुग
सुगुल (वे ४ ११९)। ३ सुगुल, बीन (स
१ ११९)।

सुगुल न [सुगुल] यम-सुग, यमना
'सुगुलपुलपुलपुलपुल' (बीनवि १)।

सुगुल न [सुगुल] यम-सुग, यमना
(सुग १३—यम ११९)।

सुगुल वि [सुगुल] सुगुल यमन, यमना
(यमना १३ वे १ ११९) सुग १)।

सुगुल न [सुगुल] १ सुगुल, यमना, बीन
बाया (बीन) यमन व ३ यमना २, ३)।

सुगुल यम [सुगुल] सुगुल यमन हीन (वे ३
१३)। २ सुगुल यमन व ३ यमना २, ३)।

सुगुल यम [सुगुल] सुगुल यमन हीन (वे ३
१३)। २ सुगुल यमन व ३ यमना २, ३)।

सुगुल यम [सुगुल] सुगुल यमन हीन (वे ३
१३)। २ सुगुल यमन व ३ यमना २, ३)।

सुगुल यम [सुगुल] सुगुल यमन हीन (वे ३
१३)। २ सुगुल यमन व ३ यमना २, ३)।

सुगुल यम [सुगुल] सुगुल यमन हीन (वे ३
१३)। २ सुगुल यमन व ३ यमना २, ३)।

सुगुल यम [सुगुल] सुगुल यमन हीन (वे ३
१३)। २ सुगुल यमन व ३ यमना २, ३)।

सुगुल यम [सुगुल] सुगुल यमन हीन (वे ३
१३)। २ सुगुल यमन व ३ यमना २, ३)।

सुगुल यम [सुगुल] सुगुल यमन हीन (वे ३
१३)। २ सुगुल यमन व ३ यमना २, ३)।

सुगुल यम [सुगुल] सुगुल यमन हीन (वे ३
१३)। २ सुगुल यमन व ३ यमना २, ३)।

सुगुल यम [सुगुल] सुगुल यमन हीन (वे ३
१३)। २ सुगुल यमन व ३ यमना २, ३)।

सुगुल यम [सुगुल] सुगुल यमन हीन (वे ३
१३)। २ सुगुल यमन व ३ यमना २, ३)।

सुगुल यम [सुगुल] सुगुल यमन हीन (वे ३
१३)। २ सुगुल यमन व ३ यमना २, ३)।

मुञ्जिय नि [मुञ्जित] रङ्ग किया हुआ, लीला
हुआ (इह १) ।

मुञ्जि म [मुञ्जीम्] नील कुपी कुम्भी
कुपचाय कुम्भे, नील होकर (यनि) ।

मुञ्जि पु [वि] सुकर, सुपर (रे ३, १४) ।

मुञ्जि केओ मुञ्जि = मुञ्जीम् (प्राक् १२) ।

मुञ्जिज नि [मुञ्जीक] नील रङ्ग हुआ,
मुञ्जिहू [नील रङ्गेवाला] कुप रङ्गेवाला
(प्राक् ५ ३४४ सु ४ १४८) ।

मुञ्जिहू नि [वि] मुञ्जि-निम्ब (रे ३, १३) ।

मुञ्जीज केओ मुञ्जिहू (सज्ज ४२) ।

मुञ्ज केओ मुञ्ज (मुपा २१७) ।

मुञ्ज केओ मुञ्ज । मुप (प ४) । न-मुञ्ज
(निवे १४७) ।

मुञ्ज पु [तोव] प्रतीक, मरारत रंडा, नकुल
(सुप १ ३, २, ४) ।

मुञ्जय न [मुञ्जय] रङ्ग करना (नम्ब १ ७) ।

मुञ्जय केओ मुञ्ज्याय (उंकि १९४) ।

मुञ्जार पु [मुञ्जकार] रङ्ग करनेवाला शिको
(यनि ७१) ।

मुप पु [वि] १ नकुल । २ विवाह शादी ।
३ धर्म्य सखी, काम-विरोध । ४ कुप की
मादि मरने का बर्न-पात्र (रे ३, २२) । ५
नि प्रविष्ट कुम्भ हुआ भी मादि के लित
(रे ३, २२ कम्पा ५ २२ २८३ रे १
२) । ६ लिंग स्नेह-मुक्त (रे ३, २२)
नीव १ ७४) । ७ न कुप की (रे १३,
१ न मुपा ११३४ मुपा) ।

मुप नि [वि] रेष्ठि (यपु २१) ।

मुपपहम्
मुपसिज
मुपविज
मुपविज } नि [वि] भी के लित (वा
३२ ४) ।

मुममुम पु [वि] शोक-हृष्ट मनो-विचार विरोध
(अ न-पत्र ४४१) ।

मुममुम पु [वि] १ सुकारवाला बज्र,
शिरकार बज्र पु (सुप १ ३, २७) ।
२ बान-कमल 'पुपमुममुम' (जत २८,
१३) । ३ नि मुमरे के बाद कहेनेवाला
(उंकोप १७) ।

मुमुक पु [मुमुक] १ शीत-हर्षण कुच, भ्या-
नक लीला (मरक) । २ न तोरुल (पाय) ।

मुम्ह च [मुम्हात्] तुम भाप (रे १
२४५) ।

मुम्हकेर नि [स्वीय] मुम्हाप (मुमा) ।

मुम्हकेर नि [मुम्हावीय] भापका मुम्हाप
(रे १ २४५ १ १४७) ।

मुम्हार (यप) ऊपर केओ (यनि) ।

मुम्हारिनि नि [मुम्हाहार] भापके केओ

मुम्हारे केओ (रे १ १४२३ कम्ब मरु) ।

मुम्हेयय नि [मोम्हाय] भापका मुम्हार
(रे २ १४८ मुपा ३४) ।

मुम्हय म [स्वा + मुत्] पाय को कुपला
कण्ट किल्ला । मुम्हय (कम्पा मय) ।

मुम्हय, मुम्हय (यप वीप) । हेतु मुय
हियय (पाया) । क-मुयहियय (पाया
१ १) मय वीप) ।

मुम्हय न [स्वमर्चन] पार्थ-परिवर्तन
कण्ट किल्ला (मोय १३२ या वीप) ।

मुम्हयय न [स्वमर्चन] कण्ट किल्ला (पाया) ।

मुम्हायहूया केओ मुय ।

मुय म [स्व] लय होना बली होना
लीय होना । न-मुय मुय मुय मुयमाय,
मुयमाय (रे ४ १७२ प्रासु २८५ वर) ।

मुय पु [स्व] लीय होना, बली (रे ३,
मुय १९) । वीप नि [वन्] लय-मुय,
मुय पु [मुय] मय, मोका (मुपा प्रासु
११७) । २ यमयय का एक मुय (यम
३८, १८) ।

मुयमाय पु [मुयमाय] मय, मोका (पाय;
जि) ।

मुयमाय की [मुयमाय] मोकी (पाय) ।

मुय केओ मुय ।

मुय पु [वि] मुय [१] केय-विरोध, मुकि-
स्तान । २ यमयी भाति-विरोध मुय (वी
१४) ।

मुय केओ मुय (यम ११ ११, यम) ।

मुय पु [मुय] यमयी केय-विरोध (यम
१ १८) । 'मिहुय पु [मिहुय] यमयी
केय-विरोध (यम १ ३, १ टी) ।

मुयमाय केओ मुयमाय (उंकि ३७ टी) ।

मुयमाय केओ मुय ।

मुय पु [मुय] १ मय, मोका (यय १
४) । २ केय-विरोध (सिग) । ३ 'मिहुय-यय'
न [विहापकरण] मय को सिमरना र्थ-
रना मरुगार करना (पाय) । केओ मुय ।

मुयमुय केओ मुय-मुय (यम २७४) ।

लपमाया मयमान (रे ४ ३ १) ।

मुयि नि [स्वयि] १ लय-मुय लयमान
(पाय ६ ४ १७२; वीप प्रासु) । २ निवि
लीय बली (मुपा ४९४ मयि) । गय नि
[गयि] १ लीय मयिमान । २ पुं
यमिगयि नामक मय का एक लोपमान
(अ ४ १) ।

मुयि नि [मुय] नीला बलुय (मुय ४
२३ कम्पा ४ ९९; मुपा ४९४) । निहा
की [निहा] मयमय (क ५ १४३) ।

मुयि न [मुय] भाप भाविक भावा मुयि
यसं लीयमाण निम्बेय यमय मुय (क
२२ १२) ।

मुयिमयि केओ मुयमयी (यम) ।

मुयि की [वि] १ लीय मुय । २ यमया का
लपमाण (रे ४ २२) ।

मुय न [वि] भाप-विरोध (मिह ५७) ।

मुय न [मुय] मुयमयि मय-विरोध को
हय करने में कम भावा है, लीयान, निम्ब
(यम ११७ पाया १ १ यम २ ११;
वीप) ।

मुय पु [मुय] १ केय-विरोध मुकिस्तान ।
२ नि मुकिस्तान का (अ १३) ।

मुय की [मुय] निवि विरोध (निवे
४९४ टी) ।

मुयमाय की [वि] मय-विरोध (यम १२) ।

मुय केओ मुय ।

मुय म [तोय] १ लीय । २ यमया ।
३ लीय-लीय निम्ब करना । मुय मुय
(रे ४ २३ यम ३३८) । न-मुय
(सिग) । लीय मुयलय (इह १) । क-
मुयमय (रे ४, २२) ।

मुय केओ मुय (मुपा ११३) ।

मुयमाय केओ मुयमाय (यपु ५) ।

मुयमाय नि [वि] कायमानि मय (रे ५,
१३; रे ४ १७) ।

हुगिया की [हुगिया] नगर-विशेष (मग)।
हुगियायण न [हुगियायण] एक मोष का
नाम (मध्य)।

हुगी की [हु] १ धरि, रात (दे २, १४)।
१ भस्म-विशेष 'धतिलपुत्रपुत्रीसंबन्ध-
(नाम)।

हुगिय पु [हुगिय] वर्ष-विशेष (पुर १
२)।

हुङ्ग की [हुङ्ग] १ हुङ्ग पु (भा ४ २)।
२ धर-नाम (वि १)। की की [हु] फि
कीर कीर-नाम कीर-ग्रन्थ हुगिय
(पुरा १२२)।

हुङ्ग न [हु] मङ्ग-विशेष-नाम (दे २,
१४)।

हुङ्ग पु [हु] बोरी पट, हुङ्गा बरा (दे
२, १२)।

हुङ्गमुक्ति नि [हु] लघु-मुक्त (दे २,
१६)।

हुङ्ग न [हुङ्ग] बर, पट (दे २, १४) ज
३२२ दी)।

हुङ्ग नि [हुङ्ग] बरा केवलामा सोरेव
हुङ्ग (मध्य नि २२२, कट ७)।

हुङ्ग न [हुङ्ग] हुङ्गी बरा, लोरी (पञ्च
२२, १४) लोप १-हुङ्ग १२२)। २ पासी
की नाम 'न हि हुङ्गी निरुद्ध' बरा
कादायामा हुङ्ग (मात्र)। ३ 'जातावर्षना
हुङ्ग का एक सम्पत्ति (बन)। बन न
[बन] बनिरेल-विशेष एक वर्ष का नाम
(गर्भ २२)। बीय नि [बीय] बीय-
विशेष को बनीरामा (बीय १)। बीय नि
[बीय] बनी हुङ्गी लघु वर्ष (बीय
२२२ २ न लाय १)।

हुङ्ग न [हुङ्ग] बरिद के बीय का लोप बर
बर (गर्भ ४१)। बीय की [बीय]
काद-विशेष (मात्र ४१)।

हुङ्ग केरी हु पु (दे)।

हुङ्ग की [हुङ्ग] सोरामा देवी की एक
सम्पत्ति बरिद (भा १ २)।

हुङ्ग पु [हुङ्ग] बर, लोरी (ला २, १
४)।

हुङ्ग की [हुङ्ग] बनी-विशेष (दे ४
४१)।

हुङ्ग की [हु] १ मङ्ग-पञ्च मङ्गु।
२ कृष्ण ऊष्ण (दे २ २१)।

हुङ्गी की [हुङ्गी] १ हुङ्गी, पञ्च लोरी
कृ (दे २, १४)। २ लोप का पु एक
पाप लोप (पुरा १४१)।

हुङ्ग पु [हुङ्ग] १ हुङ्ग-विशेष विष्णु
का देव (दे ४ ४)। २ लोप की लोप
बरा (पञ्च १२) पुरा २२४)। ३ लोप
लुप-विशेष का लोप-विशेष लोप (लुप
४)। ४ लोप के लोप-विशेष का लोप-
विशेष लोप (लुप ४)।

हुङ्ग पु [हु] एक लोप बरा का लोप
का लोप 'लुप' व लोप पुरा लोप-विशेष
लुप-विशेष (पुरा १२ ४१) लोप)। लोप
लोप-विशेष।

हुङ्ग पु [हुङ्ग] लोप लोप लोप लोप
लोप लोप लोप लोप लोप लोप लोप
(पुरा १ २)।

हुङ्ग नि [हु] लोप लोप लोप लोप
(दे २, १४)।

हुङ्ग नि [हुङ्ग] १ लोप, लोप लोप
लोप (लाय १ २, लोप २२)। २ लोप
लोप (लाय २, ११)। ३ लोप लोप, लोप
(लोप)। ४ लोप, लोप (लोप १२,
३)। ५ लोप (लाय ४ ४)।

हुङ्ग पु [हु] लोप लोप लोप लोप
लोप लोप लोप लोप लोप लोप लोप
(दे २, १२)।

हुङ्ग पु [हुङ्ग] लोप लोप लोप लोप
(दे २, १२)।

हुङ्ग न [हु] लोप लोप लोप लोप
(दे २, १२)।

हुङ्ग पु [हुङ्ग] लोप लोप लोप लोप
(दे २, १२)।

हुङ्ग पु [हुङ्ग] लोप लोप लोप लोप
(दे २, १२)।

हुङ्ग नि [हुङ्ग] लोप लोप लोप लोप
(दे २, १२)।

हुङ्ग न [हुङ्ग] लोप लोप लोप लोप
(दे २, १२)।

हुङ्ग नि [हुङ्ग] लोप लोप लोप लोप
(दे २, १२)।

हुङ्ग नि [हुङ्ग] लोप लोप लोप लोप
(दे २, १२)।

हुङ्ग की [हुङ्गी] लोप लोप लोप लोप
(दे २, १२)।

हुङ्ग पु [हुङ्ग] लोप लोप लोप लोप
(दे २, १२)।

हुङ्ग नि [हुङ्ग] लोप लोप लोप लोप
(दे २, १२)।

हुङ्ग की [हुङ्गी] लोप लोप लोप लोप
(दे २, १२)।

हुङ्ग पु [हुङ्ग] लोप लोप लोप लोप
(दे २, १२)।

हुङ्ग नि [हुङ्ग] लोप लोप लोप लोप
(दे २, १२)।

हुङ्ग की [हुङ्गी] लोप लोप लोप लोप
(दे २, १२)।

हुङ्ग पु [हुङ्ग] लोप लोप लोप लोप
(दे २, १२)।

हुङ्ग नि [हुङ्ग] लोप लोप लोप लोप
(दे २, १२)।

हुङ्ग की [हुङ्गी] लोप लोप लोप लोप
(दे २, १२)।

हुङ्ग पु [हुङ्ग] लोप लोप लोप लोप
(दे २, १२)।

हुङ्ग नि [हुङ्ग] लोप लोप लोप लोप
(दे २, १२)।

हुङ्ग की [हुङ्गी] लोप लोप लोप लोप
(दे २, १२)।

हुङ्ग पु [हुङ्ग] लोप लोप लोप लोप
(दे २, १२)।

हुङ्ग नि [हुङ्ग] लोप लोप लोप लोप
(दे २, १२)।

हुङ्ग की [हुङ्गी] लोप लोप लोप लोप
(दे २, १२)।

हुङ्ग पु [हुङ्ग] लोप लोप लोप लोप
(दे २, १२)।

हुङ्ग नि [हुङ्ग] लोप लोप लोप लोप
(दे २, १२)।

हुङ्ग की [हुङ्गी] लोप लोप लोप लोप
(दे २, १२)।

हुङ्ग पु [हुङ्ग] लोप लोप लोप लोप
(दे २, १२)।

सूत्रण पुं [कु] मुख्य धारणी (हे २ १७) ।
 ते° देवो ति=ति । आर्यस्य जीव
 [चत्वारिंशत्] १ संख्या-विशेष जालीय
 धीर धीन की संख्या । २ तेषांतीय की
 संख्यावत्ता (सम १८) । आर्यस्यस्य वि
 [चत्वारिंशत्] तेषांतीयता ४१३ (पठन ४१
 ४१) । आर्यो की [अर्योति] १ संख्या-
 विशेष वस्ती धीर धीन । २ तिरासो की
 संख्यावत्ता (वि ४४१) । आर्योस्य वि
 [अर्योतिवत्] तिरासीय (सम ८१ पठन
 ८१ १४) । इन्द्रिय पुं [इन्द्रिय] स्वर्ग
 धीय धीर नाक इव धीन इन्द्रियवत्ता प्रती
 (अ २ ४ धी १७) । ज्ञेय पुं
 [ज्ञेयस्य] विषय चित्त-विशेष (आ ४
 १) । ज्ञेय की [ज्ञेयस्य] विषयके कथे
 धीर धीय, ११ (सम १७) । ज्ञेय वि
 [ज्ञेयस्य] विषयके ११ नां (कथन पठन
 ११ ४) । ज्ञेय देवो ज्ञेय (मुपा
 १२४) । धीस, धीस धीन [ज्ञेयस्य]
 शास्त्र । देवो धीय धीर धीन (अथ सम
 १८) । धी नां (हे १ ११३ वि ४७७) ।
 धीसस्य वि [ज्ञेयस्य] देवोस्य (पठन
 ११ ४७) । वृद्धि की [पठि] विच्छेद,
 वृद्ध धीर धीय, ११ (वि ११३) । वृद्ध, वृद्ध
 धीन [पञ्चास्य] वेपथु, वेपथु धीर
 धीन, १३ (हे २ १७४ बद्, सम ७२) ।
 वधिर की [वधिर] विद्वधिर (वि ११३) ।
 धीस धीन [वयोविरासि] वेध धीर धीन
 धीन १३ (सम ४२ हे १ ११३) । धीस,
 धीसस्य वि [वयोविरासि] वेधस्य (पठन
 २ ८२ २३ २९ आ ६) । संध्य
 [संध्य] प्रतः, मध्यध धीर सार्वज्ञा का
 संध्य (पठन १९ ११) । सद्धि की
 [पठि] देवो "वर्द्ध (सम ७७) । सीध
 की [अर्योति] तिरासी वस्ती धीर धीन
 (सम ८१ बद्) । सीधस्य वि [अर्योति]
 तिरासीय (स्य) ।
 तम वृक [तमस्य] तेज कलाय पैनाय बार
 तेज वरना, तीरण वरना । तेज (यद्) ।
 तेज देवो तमस्य = एधीय (१८) ।
 तम पुं [तमस्य] १ कथित धीन प्रयास,
 प्रया (वया मयः, युवा, अ ७) । २ रात्र

धर्मिता (युवाय सुय १ २ १) । ३ प्रताप ।
 ४ मन्त्राध्य, प्रयास । ५ वत पराक्रम
 (युवा) । मंद वि ["विम्"] तेजनाभा
 प्रमा-युक्त (पण्ड २ ४) । वीरिय पुं
 [वीर्य] मत्त चक्रमर्त्य के प्रवीन का वीर्य
 विशको धार्य मय में केवलज्ञान हुमा ना
 (अ ८) ।
 तेज न [तोय] धीर (यप २ ७) ।
 तेज देवो तेजस्य (यप) ।
 तेज पुं [?] ठेक स्थान ।
 तेजसि वि [तेजस्य] तेजनाभा तेज-युक्त
 (धीन पण्ड ४ यप महा सम १२२
 पठन १ २ १४१) ।
 तेजस्य देवो तेजस्य (धीन) ।
 तेजस्य न [तेजस्य] १ तेज कलाय पैनाय ।
 २ वयोवत्ता (हे ४ ४ ४) । ३ वि उत्पन्न
 कलावत्ता (युवा) ।
 तेजस्य न [तेजस्य] धीर-सद्धादी सुक्त
 धीर विशेष (अ २ १ ४, ११ बद्) ।
 तेजसि पुं [तेजस्य] १ मनुष्य काचित्त-विशेष
 (अ १ ४८) । २ एक मन्त्री के पिता का
 नाम (आमा १ ४) । पुत्र पुं [पुत्र]
 राजा कथ्यते का एक मन्त्री (सुता १
 १४) । पुत्र न [पुत्र] वर-विशेष (आमा
 १ १४) । सुप पुं [सुप] देवो पुत्र
 (यप) । देवो तेजसि ।
 तेजस्य वृक [प्र + धीप] १ धीपना
 वयकता । २ वयता । तेजस्य (हे ४ १२२
 बद्) ।
 तेजसास्य देवो तेजसास्य (हम्मीर २७) ।
 तेजस्य वि [प्रधीन] वया हुमा (युवा) ।
 २ वयका हुमा उद्गीत (यप) ।
 तेजस्य वि [तेजस्य] तेज विद्या हुमा (हे
 ४ ११) ।
 तेजसि पुं [तेजस्य] हत्वाङ्क वृक के
 एक राजा का नाम (पठन २, २) ।
 तेजा की [तेजा] एव धी तेजस्यो पठ
 (पुत्र १ १४) ।
 तेजा की [तेजस्य] मयोस्टी तिष्ठि (धी
 ४ ७ ७) ।

तेजा की [तेजा] पुत्र-विशेष वृक पुत्र
 "तेजाङ्को व वरधारी रामो धीमातकपण-
 संयुक्ती" (धी २९) ।
 तेजा देवो तेजस्य (सम १४२ वि १४) ।
 तेजासि पुं [तेजा] वृक-विशेष (पण्ड १,
 १—पण्ड १४) ।
 तेजस्य न [चैत्रस्य] विश्रिता-कर्म,
 मदीकार (वृक १) ।
 तेजस्य की [चैत्रस्य] मदीकार, हत्वा
 वया (यथाय आमा १ ११) ।
 तेजस्य देवो तेजस्य (विपा १ १) ।
 तेजस्य की [चैत्रस्य, चैत्रस्य]
 मदीकार, हत्वा (यप) ।
 तेजस्य वि [चैत्रस्य] १ वृकप । २
 वर-विशेष, बाड़ा देकर धीर-धीर-विष
 पर धारणावत्ता वर, विद्या (वृक १) ।
 तेजस्य देवो तेजसि (पुत्र ७ २१७ युवा
 ११) ।
 तेज पुं [तेजस्य] १ धाव, धाव (म ६
 ११) । २ तेजना-विशेष तेजो-नेत्या (मय;
 कथन ४ २) । ३ धावितक नामक इव
 का एक लोकपाल (अ ४ १) । ४ धाव,
 धावित (यप १ १ १) । ५ प्रकाश
 वयो (यप २ १) । आय देवो काय
 (यप) । कय पुं [कय] लोकपाल तेज-
 स्य (अ ४ १) । काय पुं [काय]
 धाव का वीर (अ १ १) । काय पुं
 [काय] धाव का वीर (वि ११३) ।
 कयस्य देवो कायस्य (पण्ड १) । वीर
 १) । यप पुं [यप] धावितक नामक
 इव का एक लोकपाल (अ ४ १) । यपस्य
 पुं [यप] कय स्वर्ग (यथा) । लेस
 वि [लेस] तेजो-नेत्यावत्ता (मय) ।
 लेसा की [लेसा] वप विशेष के प्रयास
 से तेजनामी धाव-विशेष के उत्पन्न होवो
 तेज की वयाता (अ १ १; सम ११) ।
 लेस देवो लेस (पण्ड १७) । लेसा
 देवो लेसा (अ १ १) । "लेसा पुं
 [लेसा] एक लोकपाल (अ ४ १) ।
 वीर न [वीर] मय धावित के विद्या
 बाता वीर (अ २, २) ।

तृहण पुं [रु] पुण्य प्राप्ती (वे १, १०)।

त रेको वि० वि०। आर्यस कीन
[वत्सविस्म] १ संवत्-विरोध वालीस
वीर दीन की संख्या। २ देवासीस की
संख्यावाला (अप ६५)। आर्यसहम वि
[वत्सविस्म] देवासीसवा ५५वां (अप ५५
५६)। आसी की [वत्सवि] १ संवत्-
विरोध वाली वीर दीन। २ विराटी की
संख्यावाला (वि ५५५)। आसीहम वि
[अर्यविस्म] विराटीवां (अप ५६ पत्र
५३ १५)। इविय पुं [इविय] स्पर्त
वीम वीर नाक इन दीन इवियवाला प्राणी
(अ २ ५ वी १०)। ओय पु
[आजस] विपन पट्टि-विरोध (अ ५
१)। जड्ड की [नववि] विपनवे नवे
वीर दीन, २३ (अप ६०)। जडय वि
[नववि] विपनवेवां २३ वां (अप पत्र
६१ ५)। जडय रेको जडय (मुपा
६१५)। वीस, वीस कीन [अर्यवि]
यान् [देवीस वीर वीर दीन (अप पत्र
२५) की सा (हे १ ११५, वि ५५०)।
वीसहम वि [अर्यविस्म] देवासीस (अप
११ १५५)। वट्टि की [पट्टि] विपन,
सट्ट वीर दीन, ११ (वि ११६१)। बण्य, वन्य
कीन [पट्टासु] वेण, ववाव वीर
दीन २३ (हे २ १०५ बट्ट; अप ७२)।
बचरि की [सप्तवि] विपन (वि ११३)।
वीस वीन [प्रयोविस्म] वेण वीर वीर
दीन, २३ (अप ५२ हे १ ११३)। वीस
दीमहम वि [प्रयोविस्म] वेणवां (अप
२ ५२, २३ ११ अप १)। मंडन
[अर्यवि] प्राण पन्था वीर सावराज का
अपम (अप ११ ११)। सट्टि की
[पट्टि] रेको 'बट्टि' (अप ७०)। माइ
की [अर्यवि] विपनी वाली वीर दीन
(अप ५६)। वन्य। सीहम वि [अर्यवि]
विपनीवां (अप)।
तम थक [तजय] तेज वरम, वेगना, बार
तेज वरना ठीक वरना। तेज (अप)।
तज रेको तजय = वृद्धि (देवा)।
तम पुं [तजय] १ कर्म-वृद्धि वरना,
वरा (अप पत्र; मुपा ६५)। २ वर,

वर्मिना (मुपा सुप १ ५, १)। ३ वरना।
४ माहम्य प्रमथ। ५ वर पठम्य
(मुपा)। मंत वि [विम] तेजवाला
प्रमथ-युद्ध (अप २ ५)। वारिय पुं
[वीर्य] मल वरमवी के प्रमथ का वीर
विपको धारण मल म के वरमवान् हुमा वा
(अ ५)।
तम न [तम] वीरि (अप २ ७)।
तेज रेको तेजय (अप)।
तम पुं [?] ठेक लयम।
तेमंसि वि [तेजसि] तेजवाला तेज-युद्ध
(वीर एप ५ मय; असा अप १५२
पत्र २, १५१)।
तेजय रेको तेजय (वीर)।
तेजय न [तेजय] १ तेज करना पैना।
२ जतम (हे ५ ५ ५)। ३ वि जतमि
करेवाला (मुपा)।
तेजय न [तेजय] वीर-वृद्धि सुप
वरीर विरोध (अ २ १ ५, १ मय)।
तेमंसि पुं [तेजसि] १ सुप्य वरम-विरोध
(अ १ १५)। २ एक मन्त्री के पिता का
नाम (अप १ ५)। पुच पुं [पुच]
पना कनधर का एक मन्त्री (अप १
१५)। पुच न [पुच] वर-विरोध (अप
१ १५)। सुय पुं [सुय] रेको पुच
(अप)। रेको तेमंसि।
तेमय थक [प्र + वीर] १ वीरना
वमकम। २ वरना। तेमय (हे ५ ११२,
अप)।
तमवाप रेको तमवाप (हमीर १०)।
तमविय वि [मदीम] वना हवा (मुपा)।
२ वमना हुवा उगीत (वाप)।
तमविय वि [तेजसि] तेज किया हवा (वे
८ १३)।
तमसि पुं [तमसि] १ हवाय वीर के
एक राजा का नाम (अप ५, ५)।
तमा की [तमा] पत्र की तेजरी पत्र
(मुपा १ १५)।
तमा की [तमस] वमन्टी विवि (वी
५ ५ ७)।

तेमा की [तेमा] वृष-विरोध वृषय पुप
पेमाये य वसपी रामो वीरमवृष-
वृषपीरि' (वी २६)।
तेमा रेको तेमय (अप १५२ वि १५)।
तेमासि पुं [रु] वृष-विरोध (अप १,
१—अप १५)।
तमस न [विकिसि] विविता-कर्म,
प्रतीकार (अप १)।
तमस की [विकिसि] प्रवीर, इमान
वना (आपा आमा १ ११)।
तेमसि रेको तेमसि (अप १ १)।
तेमस की [विकिसि, वीरि] प्रवीर,
इमान (अप)।
तमस वि [वर्गीय] १ वीरप। २
वर-विरोध वारा देकर वीर-वीरि वि
पर वमवना वर, विराट (अप १)।
तेम रेको तेमंसि (अप २ १० मुपा
११)।
तेड पुं [तेजस] १ वप वीरि (अप १
११)। २ वेण-विरोध वेण-वेण (अप
कम ५ ५)। ३ वीरि-वप नामक वृष
का एक लोकपाल (अ ५ १)। ४ वप,
वमिना (अप १ १)। ५ वप,
वमिना (अप १ १)। ६ वप,
वमिना (अप १ १)। ७ वप के वप
(अप)। वन पुं [वम] वीरपाल वे-
विरोध (अ ५ १)। काइय पुं [वमि]
वमि का वीर (अ १ १)। वम पुं
[वम] वमि का वीर (वि ११३)।
वमव रेको वमव (अप १)। वीर
१)। वम पुं [वम] वमि-वमि नामक
वम का एक लोकपाल (अ ५ १)। वम
पुं [वम] वप वमि (अप)। वम
वि [वम] वेण-वेणवाला (अप)।
'तेमा की [तेम] का विरोध वेम
वेमवरी वीर-विरोध वम वम
तेम की वमना (अ १, १ म १)।
'तेम रेको तेम' (अप १)। वम
रेको 'तेमा' (अ १ १)। वम
[वम] वम वीर (अ ५ १)।
वम न [वम] वम वीर (अ ५ १)।
वम वीर (अ ५ १)।

(वोप २१६)। ग्राह पुं [नाय] तीनों
बन्धु का नामी परदेयर (पर)। मंडप
न [मण्डन] १ तीनों जगह का मुण्ड।
२ पुं घरण का गूढ़-बस्ती (परम ८
१)।

तद्ध न [मिड] ठैन विन का रिफार, लिख
इत्य-विशेष (हे २ ६८ धनुष ४४)।
किंता की [किंता] मिट्टी का ध्वजन-विशेष
(उज)। वस न [वस्य] ठैन एतन का
मिट्टी का ध्वजन-विशेष (बला १)।
पायरा की [पायिरा] घुड़ बन्धु-विशेष
(पायस)।

तेहना न [मिड] मुण्ड-विशेष (बीज १)।
तवित्र पुं [मिड] ठैन बेचनेवाला (बज १)।
तहाम
तहोका { १ तो तलुख (वि १६९ आर)।
तहो { (पर) तेतो तह = तथा (हे ४
तहोड : १६७) दुमा)।

तपड वि [तपड] ठिलठ की संख्यागना
विशेष निरुद्ध ध्वनि हो ऐसी संख्या 'तित्रि
तेहना' पाण्डुपयवाई (वि २१३)।

तपड (पर) वि [तापड] रजना (हे ४
४ ७) दुमा)।

तपणमा की [त्रिपञ्चारान्] मेन,
२१ (आह ११)।

तवीमड की [प्रवाचिचयि] ठेईव (आह
११)।

तवुकारि वेतो न-बचरि (कम्म ४, ४)।

तह (पर) वि [ताह] जमक पैका बीना
(हे ४ ४ २ बह)।

तह (पर) व बावै विह (हे ४ ४२३
दुमा)।

तहिय वि [उवादिह] ठैन विन का (वीरम
११६)।

तहुराँर वेतो न-बचरि (कम्म १०६)।

ता वेतो न-मा (पाण्डु दुमा)।

ता य [तदा] ठैन जठ कवच (दुमा)।

तामप पुं [दि] बजक बजो (हे ४, १८)।

तोड वेतो १६ (हे २ ११६) आर)।

तोडि की [दि] बजक की मंड की बही
है एक पाण्डु (हे ४, ४)।

तोडय वि [दि] विना ही मारण ठैनर होने
वाला (हे ४ १८)।

तोड्यार वेतो मुकमार 'मुण्डुलपयोलीय-
मयसंघटोपायलपुण्डु' (मुर १२ २१)।

तोडय न [तोडक] धन-विशेष (विप)।

तोड य [तोड] १ तोडना मेहन करना।

२ यक हटना। तोडर (हे ४ ११६)। बह

तोडव (धवि)। उड ताडिई (धवि)

ताडिचा (ही ७)।

तोड पुं [ताड] दुपि (उज ४ १८)।

ताडण वि [दि] धमहन धडिण्डु (हे ४,
१८)।

ताडण न [तोडन] ध्या, वीर-कण्ड
(उज)।

ताडर न [दि] टांडर, माक-विशेष (सिटी
१ २३)।

तोडहिआ की [दि] बाण्ड-विशेष (पाषा २
११)।

तोडिअ वि [तोडिअ] तोडा हुआ (बहा
कण)।

तोड पुं [दि] घुड़ कोट-विशेष बगुण्डिय
की की एक नाडि (उज)।

तोण पुन [तुण] ठायि माया तरफ नुणीर
(पाषा की १ १ १२३; विरा १ ३)।

ताणर पुन [तुण] ठायि माया (पाषा
१ १२४ धवि)।

तास न [तास] टोपी, बीन को धारने या
हूँचने का बेल का बाण्डु-विशेष पैसा
योग बाण्डु (पाषा हे ३ १६ गुण २३७
मुर १४ २१)।

तोसकि [दि] वेतो मौनकि (पाषा)।

तास वि [तास] ध्या उरजनेवाला
पीठ-बाण्ड (उज २)।

तास पुन [दि] तासर बगुण्ड बगुण्डकी
का पर या दगा का बगुण्ड तासर बगुण्ड
बगुण्डनाम उरजती (बवि १२४)।

तास पुं [तासर] १ बाण्ड-विशेष एक बगुण्ड
का बगुण्ड (पाषा हे १ १२३ २६ बीन)।
२ न का-विशेष (विप)।

तासरिअ पुं [दि] १ टास का बगुण्ड बगुण्ड-
वाला (हे ४ १८)। २ टास-बगुण्ड (बज)।

तासरिअ की [दि] बगुण्ड-विशेष (पाषा)।

तास की [दि] बगुण्ड तास (हे ४, १७)।

तास (पर) वेतो तास (वि ४१४)।

तास न [तास] पासी, वस (एह १ ३
बला १४ ३ ४७)। घरा घारा, धी

[घाण] एक बिगुमावे वेतो (रुन का ८)।

पट्ट, पिट्ट न [पिट्ट] पासी का बगुण्ड
ध्या (एह १ ३; बीन)।

तास पुं [तास] ध्या, तोडा (का ४ ४)।

तास न [तासन] १ टास का बगुण्ड-विशेष
बगुण्ड (का २६३)। २ बगुण्डना, घुड़
का बगुण्ड की माया (ध्या) जो बगुण्ड में

नकई बाडी है (बीन)। उर न [तुर]
बगुण्ड-विशेष (बहा)।

तासिअ वि [दि] उरजित (पाषा) पुन
१२२)।

तासमा की [दि] नैन का टोप-विशेष
(बहा ३)।

तास वेतो मुल = वोलपु। तोस, तोस
(विग बहा)। बह तास (बला १२८)।

बह तासिअमान (मुर १२, २४)।
तासिअ (न १२२)।

तास पुन [दि] मय-वेध प्रविष्ट वन विर
माण्ड-विशेष (उज)।

तास पुं [दि] गुण बासी (हे ४, १७)।

तास न [तासन] ठैन करना ठैनना
बाण्ड (पाषा)।

तासि वि [तासिअ] ठैन हुआ (बहा)।

तास न [तास] ठैन ठैन बगुण्ड (दुन
१४६)।

तोस पुं [दि] १ बगुण्ड का बाण्डु-विशेष।
बगुण्ड की बगुण्ड (हे ४ २३)।

तास न [तास] गुण्ड, ध्या, बीन (पाषा
१२४)।

तास वि [दि] १ बगुण्ड का बाण्डु-विशेष।
बगुण्ड का बाण्ड (पाषा)।

तास न [दि] वन बीन (हे ४ १०)।

तासिअ पुं [तासिअ] १ बगुण्ड-विशेष। २
बगुण्ड-विशेष। ३ टास का बाण्ड (उज)।

<p>पुत्र [पुत्र] एक मक प्रदिष्ट कै बापासँ (बाप) ।</p> <p>पोसकिय पु [पोसकिय] पोसकिय-नाम का बनौत किय (बाप) ।</p> <p>पोसकिय वि [पोसिय] कुल किया हुआ पोसकिय } बंटीय (सि १ १२ ; पक्ष ५७ पक्ष) ।</p> <p>पोहार (पक्ष) बेबी मुहार (पिय; सि ४९४) ।</p> <p>पि वि [पि] पाय-पय, एकका 'ककनल' ककनल एकका लोको गरीबी' (पुता १९८) ।</p> <p>"पिय बेबी वज (सि १ ९१) ।</p>	<p>"पि य [पि] ककनल-पुनक ककनल (बाप ५७) ।</p> <p>"पि बेबी वज य वज (ककनल वज १ वज) । वज बेबी वज (पा १९९) ।</p> <p>"वज सि [वज] स्थित रहा हुआ (बापा) । वज बेबी वज (पा १९) ।</p> <p>"वज बेबी वज = वज (सि १ १) ।</p> <p>"वज बेबी वज (वज) ।</p> <p>"वज बेबी वज (पा १) ।</p> <p>"वज बेबी वज (पुता) ।</p> <p>"वज बेबी वज (पा १) ।</p>	<p>"वज बेबी वज (सि १९७) । वज बेबी वज (वज वज) ।</p> <p>"वज बेबी वज (पि १९७) । वज बेबी वज = वज । वज. 'वज' (पाट) ।</p> <p>"वज बेबी वज (सि १ ४ ; पाट) । वज बेबी वज (पाट) ।</p> <p>"वज बेबी वज (पुता) । वज बेबी वज (पा ४२१) ।</p> <p>"वज बेबी वज (पुता) । वज बेबी वज (पाट-वज २४) ।</p>
---	--	--

॥ इयं शिरिपात्रयसहस्रहृज्जगन्मित्रि तस्यापामृष्टर्षकजयो

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

2

[illegible]

कुमारत का एक नगर, जो आनकन 'संसार'
नाम से प्रसिद्ध है (सी ११)। पुर न
[पुर] नगर-विशेष संसार (सिंह १)।
संभारणा की [स्वमन्ती] स्वम्भ-कण्ड (ठा
४ ४)।

संभारिणा की [स्वमन्तिना] विद्या-विशेष
(बर्हि १२४)।

संभारिणी की [स्वमन्ती] स्वम्भन करनेवाली
विद्या-विशेष (साया १ ११)।

संभार देवी सीम = स्वम्भ (धुमा)।

संभारि वि [स्वमिन्त] १ स्वम्भ किया हुआ
स्वमाया हुआ (धुम १४३)। कुमा कण
सीप)। २ सी स्वम्भ हुआ ही मगलम्भ
(स ४२४)।

सक सक [सका] रक्षा बैठना, स्थिर होना।
सकक (हे ४ ११)। यधि यधिकसक
(वि १ ६)।

सक सक [कम्] सीधे जाना। सकक
(हे ४ ८७)।
सक सक [कम्] सकना, स्थान होना।
सककि (सिप)।

सक वि [सिप] रक्षा हुआ (कुमा क ११)
१८ धुमा २१७; धाप ७७; सट्टि १)।

सक सु [हे] १ मरुत, प्रसाध समय (हे
५, २४) वर १ महा विसे २ ११)। २
वि. बना हुआ धातु 'सक' सम्बन्धित
सिप सुई सुपुई र' (धुर ७ १८३, ४
११३)।

सकिड वि [भान्] बना हुआ (सिप)।

सकक सक [स्थापय] स्थापन करना
रक्षणा। सककक (माह १२)।

साग हैनो सय = स्वाय्। यधि यध-सु
(वि २२१)।

सागाय न [स्वगान] विद्या, रक्षणा संरक्षण
आनरण व्याख्यात, वर्षा (हे २, ८३; ठा
४ ४)।

सागाय सक [सागायय] बहना
किया। सक सागाययि (साह)।

सागिय वि [सगिय] सिद्धि, व्याख्यात,
धाम्नु (बन ३, १; मानन)।

सागिय देवा सहस्र। सागिह पु [साहिन्]
साधुन-साहक नीर (धुमा ११६)।

सागाया की [हे] बह, बाँध (हे २ २६)।
साय सक [स्वाय] लक्ष की गहरी की
गायना। कर्म बगिचय (पन ८१)।

साय पु [हे] बाह, घसा, पानी के सीधे की
मुनि गहरी का कर्म सीमा (हे ५, २४)।
साया की [हे] ऊपर देनो (पाप)।

साह पुन [हे] १ ठा सीधे कुल सपुह,
युव बलाप 'गुह्यगुह्य' (धुमा २८८)
सिहक सह गुह्यगुह्यगुह्य (गह्य ४)।
२ ठा ठा सहा-सहा, समय साहय
(यधि)।

साहि की [हे] यध जानवर (हे २, २४)।
साह पुन [हे] ठा युव सपुह (यधि)।

साह वि [स्वय] १ निरस। २ यधियासी
साह (धुमा ४१७ २८२)।

साहिह वि [स्वमिन्त] १ स्वम्भ किया
हुमा। २ स्वम्भ निरस। ३ न गुह्य-नकन
का एक सीप सक कर सुब की किया
जाता गहान (धुमा २१)।

साय सक [स्वम्] १ घरना। २ साकय
कना, विनागा। ३ साकय कना। ४
भोर से नीचास सेना। सक सर्वात (गा
२१)।

साय पु [स्वम्] क, युव योपय, सी (साया)
धुमा क ११३)। सीपि वि [सीपिन्]
स्वम्भ-पाल घर निम्नेमला साक (सा १४)।

साह की [वरी] बड़े स्वम्भाली (गहक)।
सासा वि [सासायि]। स्वम्भ पर
विनेमला (गहक)। सुस न [सुस]
सह-युव (हे)। हर पु [मर] स्वम्भ का
गार का बोध (हे १ ८६)।

साययय पु [स्वम्भय] स्वम्भ-पाल करनेवाला
बानक छोटा बच्चा 'नियर' बाले बर्हि
साययय हि वि निम्न' (धुर १ १७
साय २३)।

सायय न [स्वम्भ] १ यमन घरना (धुम
१ २२)। २ साकय, विनाहट (धुम १
५, १)। ३ सायय यधिया (पन)। ४
साययवाला सीधास (धुम १ २, १)।

सायय पु [स्वम्भ] गहरी नरक-मुनि का
एक नरक-स्थान (विने १)।

सायकोसुय पु [स्वम्भकोसुय] गहरी नरक-
मुनि का एक नरक-स्थान (विने ७)।

सायिअ पु [स्वम्भ] एक नरक-स्थान
(विने १ २६)।

सायिअ न [स्वम्भ] १ यध का गर्जन (बना
१२४ हे २, २७)। २ साकय, विनाहट
(धुम ११३)। ३ पु यमनपति हैनो की
एक बाति (सीन पय १ ४)। कुमार
पु [कुमार] यमनपति हैनो की एक बाति
(ठा १ १)।

सायिअ सक [बोरय] गुहान बोरी करण।
बगिहस (माह ७२)।

सायिअ वि [स्वम्भ] स्वम्भाला (कम्पु)।
सायिअ पु [स्वम्भ] छोटा स्वम्भ (गहक)।
सायिअ हैनो साय (पा ४२२)।

सायिअ न [हे] विनाम (हे २, २६)।
साह देनो साह (धुम ११; या १ ४
बना १)।

साय न [स्वम्भ] स्वम्भ का हुन। सीपि वि
[सीपिन्] छोटा बच्चा (धुमा ११६)।
साय सक [स्थापय] रक्षना, बनी करना।
साय (सिप ८६७)।

साययय न [स्थापन] स्थापन स्थापन (धुर
११७)।

सायिअ वि [स्थापिन्] रक्षणा हुमा स्वम्भ
(सिप)।

साय सक [स्वम्भ] गहका करना।
कमर (धुम १ ११ १)।

साययय पु [हे] यधोष्मा गावरी के समीप
का एक गह-नर का सीप (सी ११)।

सायिअ वि [हे] विस्मृ (हे ३, २३)।

साय सक [स्वयय] सायययन करना
सायय कण, रक्षणा। बर, बरय (वि
१ ६, गा १ २)। यधि यधस (गा
११४)। हेह. साय (पा ११४)।

साय वि [स्वम्भ] प्यात मरुत (वि १ १)।
साय पु [स्वम्भ] सुनि स्वम्भन गुह्य-मूर्तिन
(यधि १६३ हे ४४)।

सायय न [स्वम्भ] ऊपर देनो 'सुपयय-
न' बगिचयगुह्य एगुह्ययि एया' (पाप २)।

पाळी की [स्याली] पाळ-पाळ हकी बटलोही
(छ १ १ मुवा ४८०)। पाळ बि [पाळ]
हकी में पचावा हुवा (छ १ १)।
पाय एक [स्वापय] १ स्थिर करना। २
रचना। पाय (वत २ ३२)।
पायवा की [स्वापय] हाफ्त-निवासी एक
मुहस की (छाया १ ३)। पुच पु [पुच]
स्वापय का पुच, एक बैन मुनि (छाया १
३) वीन)।
पायन न [स्वापन] म्वास म्वायन (स
२१३)।
पायन पु [स्वापन] समर्थ हेतु, स्वपय
साक हेतु (छ ४ १—यन २३४)।
पावर बि [स्वावर] १ स्थिर रखनेवाला। २
पु फेकेलिय प्राणी केमल सल्लसियवाला—
प्रकीर्ण पानी पीर बनसति पावि का कीच
(छ १ २ जो २)। ३ एक कियेय-नाम
एक मौनर का नाम (वत २३७ टी)। काय
पु [काय] एकेनिय कीच (छ २ १)।
पाम, नाम न [नामन] कम्ब-कियेय
स्वावपन-प्राति का काण्ड-मुल कर्म (वत
१ सम १७)।
पास [वे] दुहास (माव टियाऊ—यन
१६ १)।
पासा पु [स्पासक] १ बरख पासरी
पासय पु [पासा] गिवा १ २—यन २४)।
२ बरख के पासकर का पाव-विठेय (बीच
पुन छाया १ १ टी)। ३ घस का घमरणा-
कियेय (यन)।
पाह पु [वे] १ स्वाय, बगह। २ बि
मस्ताय पमीर बन-वाला। ३ विस्तीर्ण।
४ दीर्घ, लम्बा (वे ३, १)।
पाह पु [स्वाय] पाह, टका यहदी
का बरख बीमा (पास बि १३३२ छाया
१ ६, १४—वे ४)।
पाहिज पु [वे] पासाय स्वर-विठेय (पुवा
१६)।
पिच बि [पिचय] एह हुवा (स २७) बिसे
१ १३, मणि)।
पिच केो डिह (वे २, १० पउक)।
पिचिणी की [वे] कम्ब-कियेय 'पिचिणीय-
पउक' (उमय १४१)।

पिच एक [पुच] पुन होना संगुप होना।
पिच (प्राय)। पचि निचिपुति (प्राय =
२२ टी)। संक पिचिप (प्राय = २२
टी)।
पिगगळ न [वे] १ गिल-हार, भीत में किया
हुवा बरवावा (वत ३ १ १२)। २ कचे
पुच कर्म में किया बाधा संजान बरख
के बीचत भाग में लवाई पाठी कीच (पयस
१७) बिसे १४३६ टी)।
पिगगळ पुन [वे] १ छिद्र। २ गिले के बाह
दुस्त (लीक) किया हुवा गृह भाग (पाचा
२ १ १२)।
पिच केो थंड = स्वीय (संवीच ४२)।
पिण्य बि [स्वान] कडिन जमा हुवा (हे
१ ७७-२ २६ वे २, १)। रेको थीग।
पिण्य बि [वे] १ स्नेह-युद्ध बसावला।
२ धविवासी पर्व-मुक (वे ४ १)।
पिच बि [वे] गवित धमिलानी (पाव)।
पिच केो पिच। पिच (वे ४ १३८)।
पिच्य एक [वि+गळ] गल जाला।
पिच (वे ४ १७१)।
पिचु पु [सिमुक] कम्ब-कियेय (पुच १६
२६)।
पिच एक [सिच्य] पाह करता पोवा
करता। हेक बिमिर् (यन)।
पिमिज बि [वे सिमिज] स्थिर, निबन
(वे ३ २७) वे २ ४१ = ६१ छाया १
१) पिवा १ १ पयस १ ४ २ ३ बीच
पुन १ पुच १ १ ४)। २ मन्द, बीमा
(पाव)।
पिमिज पु [सिमिज] टका घमरकियेय
के एक पुन का नाम (वत १)।
पिम्य एक [सिच्य] १ बाह करना।
एक पाह होना। पिम्य (प्राह १२)।
पिर बि [पिर] १ म्वाय निम्बम (पिवा
१ १) सम ११६३ छाया १ ७)। २
मिम्य संजान (वत ७ १३६)। जाम
नाम न [नामन] कर्म-कियेय निके
कर्म से कप हकी म्वाय घमरनों की स्थिरता
होती है (कम १ ४६) सम १७)।
पिचिणी की [पिचिणी] कम्ब-कियेय
सर्व की एक मणि (बीच २)।

पिरणाम बि [वे] बर-विच बर-मनरक
(वे ३ २७)।
पिरणेत बि [वे] म्वाय, म्वाय (पह)।
पिरमीस बि [वे] १ निर्मक निर। २
निर्म। ३ जिघने मिर पर कम्ब बीच हो
बह (वे ३ ३१)।
पिरिम पु की [स्थेय] स्थिरता (वत)।
पिरीकाम न [पिरीकाम] स्थिर करना इह
करना बमाला (वा ३ उमय १६)।
पिच बि [वे] पुन (बलम विठुजने)।
पिचि की [वे] पाव-विठेय—१ दो मोड़े
की बगी। २ दो लकर प्रावि से बम यन
(मुच २ २ ६२ छाया १ १ टी—यन
४१ वीन)।
पिचिपिच एक [पिचिपिच] 'पिच पिच'
पावान करता। बह बिचिपिच (पिवा
१ ७)।
पिचु पु [सिमुक] बर-विच (बिसे
पिचुय) ७ ४ ७ ३, सम १४६)। संक्रम
पु [संक्रम] कर्म-प्राप्तियों का भावस में
संक्रमण-विठेय (पचा २)।
पिचु पु की [वे] कम्ब-कियेय (वत १६,
२६)।
पिचु पु [सिच्य] बर-विच-विठेय (यन)।
पी की [की] बी, महिला नाट पीच
(वे २ १३ पुवा प्राय १३)।
पीय रेको पिचन (हे १ ७४ वे १ ६१
हुवा पाव)। 'पिचि की [पिचि] निरुट
पिच-विठेय (छा ६, बिसे २१४) वत १३
२)। पि की [पि] म्वाय पिच-विठेय
(वत १३)। 'पिच बि [पिचि] स्थानवि
मिवा बमाला (बिसे २३३)।
पु य विठुकर-पुचक धम्य (पिसे २१)।
पुच बि [पुच] बिचिणी सुति की नई हो
बह, प्रसिद्ध (वे २ २७) वस ३; मणि
१ ७)।
पुच केो पुच। पुच (प्राह १७)।
पुच की [पुचि] स्तन डुल-कीर्तन (पुवा-
बीच १ पुच १ १ ३)।
पुद्धास पु [पुद्धास] बर-मन-मन (बिसे
७४४)।

घोडेय देवो घाडेय (अ ७२८ टी) ।
 घोभा बेवो घूणा (हि १ १२४) ।
 घोष न [स्तोत्र] लुपि स्व (हि २ ४४
 घुना २१६) ।
 घोत्तु देवो घुप ।
 गोम } घु [स्तोम क] 'न' न धाति
 गोमस } निरलक ध्वन्य का प्रयोग, 'अ' ॥

गकार हति य धकारणा गोमया हति (इह
 १ विवे १११ टी) ।
 गोर बेवो घुष्ट (हि १ २४४ २ ११) पठम
 २ ११ से १ ४२) ।
 गोर वि [वे] ह्य से विस्तीर्ण यय न योस
 (हि २, ४ ब्रह्मा ११) ।
 गोस पु [वे] बल का एक रेश (हि २, १) ।

गोव } वि [स्तोक] १ धन बोझ (हि
 गोवाग } २ १२४; उक्त का २४ घोष
 २४१ विवे १ १) । २ पु सम का एक
 परिमाण (अ २ १ मय) ।
 गोह न [वे] वय पदार्थ (हि २, १) ।
 गोहर्तुं को [वे] वसति-विशेष गृह्य का
 वेष्ट वेष्ट (घुना २ १) । को 'टी' (अ
 १ ११ टी) को १ । वय १) ।

॥ इम विरिपाहससम्राज्यमिमि कवापहससुडकमणो
 वल्लोचनयो वरंयो धमयो ॥

द

द पु [वे] वल स्वामीय ध्वन्यन-वर्ण विरोध
 (प्राप प्राप्ता) ।
 दधध्वर पु [वे] प्राप-स्वामी योष का
 ध्वनिति (हि २, १६) ।
 दधरी की [वे] घुप, मरिप, बाक (हि २,
 १४) ।
 दध की [दधि] मरक धर्म-निमित्त वल-यान
 (धोय १८) ।
 दधम वि [वे] पीत (हि २, ११) ।
 दधम पुंकी [दधिम] मरक धर्म-निमित्त
 वल-यान वमने का बना हुआ वह कैला
 नितमें वाली मरकर बाते हैं 'वधएण
 वलिका वा' (विष्ट ४९) । को छा (यसु
 १२२ विवका १४) ।
 दधम वि [दधित] १ मिय, धीम-यान
 'ब्रह्मो बरकापिछीदधो' (पुर १ १४१) ।
 २ मरीट, वलिक, 'धमहाय मणीवद्व
 रंघणमवि बुल्लई मने' (पुर १ २१८) ।
 ३ पु वति स्वामी मर्वा (पाक घुमा) ।
 यम वि [वर्म] १ धमन्य मिय । २ पु
 वति वी (वय ७७ १२) ।
 दधमा की [दधिता] की मिया, पलो
 (धुमा; महा पुर ४ १२१) ।

दधम पु [दधिय] वलन यमुर (हि १ १११;
 कुमा पाष) । सुप पु [सुप] शुक्
 शुभाचार्य (यम) ।
 दधम न [दधिय] वीनता, मरीकन मरीवी
 (हि १ १२१) ।
 दधम पुंन [दधिय] वय भाग्य, मरिप, मरिप
 पुन-कृतकर्म (हि १ १२१ कुमा महा
 पठम २८ १) । 'धमहा कुमिपो वरवी
 पुरिसे कि हएण वरवी' (पुर ८, १४) ।
 दध, पुपु पुं [दध] वीविपी, वीवि-
 यान का विष्ट (हि २, ८१ वर) । बेवो
 वेव = वय ।
 दधम न [दधिय] वय वेवता (पय २ १
 १ १२१ घुमा) ।
 दधम वि [दधिय] वय-वर्णनी मिय
 वय (स १ १) ।
 दधम बेवो दधम (हि १ १२१ २ ११)
 कुमा वय १४ ४) ।
 दधम (शी) य [द्राग] शीय, वली
 (प्राह ११) ।
 दधम } न [दधिय] योष-विरोध,
 दधम } मरीट, पानी से रेश का कुमा
 (पाय १ ११ विवा १ १) ।

दधोमास पुं [दधममास] वलन-धुन
 में विष्ट वेव-वय-यान का एक धावा-
 पर्वत (व) ।
 दध बेवो दध (मा—मली ११) ।
 दधि वि [दधिय] वने वलता मिय
 वल (मा—वेली २४) ।
 दध वल [दधिय] वना कला निष्ट
 कला । वल दधिय (प्राह ११) ।
 दध पुं [दध] १ वीक-विष्ट मर-यान
 (यम १ पाष १ १ अ १) । २ वयवी
 की वयवय के वलवय वीकिक या धाविक
 वल वना निष्ट, वय (अ १ १) प्राह
 ११ १ १२०) । ३ वली वति (व
 ११ टी) प्राह ७४) । ४ वल-वय,
 वलिय-वय (पाष) । ५ वय वय वीर
 वीर का वयम व्यापार (व १ ११, १
 ४६) । ६ वय विरोध (विग) । ७ एक वल
 वयवय का नाम (धंका ११) । ८ वय
 वलिय-वय (हि २ १२) वय का एक नाम
 (व) । ९ वय (अ १ १) । १ पुन,
 वय, वय, वीर (पय ११४ अ ११) ।
 वल पुं [वल] वल-विरोध (विग) । सुप
 न [सुप] वति-वय (पाष) । वयमा पु

[नायक] १ ब्रह्म-वादा व्यवहारविचार
कर्ता । १ विचारविधि केवली प्रतिनिधित्व
वैय ना नायक (पृष्ठ १ ४ वीर्य कथा
छाया १ १) । जीव जी [सीति] सीति-
विशेष, अनुवाचन (छ १) । यह पुं [यय]
मार्ग-विशेष वीर्य भाव (पृष्ठ १ ११) ।
वासि पुं [वासिन्] पारिम् १ ब्रह्म
वादा । २ वीर्यवाच (पृष्ठ १ २०) ।
[वृद्धय] न [प्रोच्यन्ते] ब्रह्मकार ब्रह्म
(बं ३) । भी वि [सी] ब्रह्म से इरी
वादा ब्रह्म-वीर्य (वाचा) । कथित वि
[त्यय] ब्रह्म वेनेवाला (बन १) । वह पुं
[ययि] केवली केवलीति (पृष्ठ १ २१) ।
वासिन्, वासिय पुं [वाच्यपाशिक]
वीर्यवाच (पृष्ठ १ २१, २ २१, ३ १ ११
छे) । वीरिय पुं [वीर्य] राजा नरक के
मंड का एक राजा जिसकी शक्त-बल में
केवलान्त व्यक्त हुआ वा (छ १) । यस
पुं [यस] एक प्रकार का नाम (कथु) ।
यव वि [यव] ब्रह्म की उच्छ्रुत शक्त्या
(बन वीर्य) । यव वि [यविक]
वीर्य की ब्रह्म की उच्छ्रुत शक्त्या केवलान्त
(वीर्य कथ ३, १) । [यविक] पुं
[यविक] ब्रह्मवादी प्रतीकार (मिष्ट १) ।
रज्य न [रज्य] रजित व्यक्त का एक
प्रतिष्ठ ब्रह्म (पृष्ठ ४१ १ ७२, १) ।
रजिय वि [रजिनिक] ब्रह्म वीर्य
वीर्यवाच कर वेनेवाला (कथ) । वेणी
वृद्धय ब्रह्म ।

वृद्ध पुं [वृद्ध] १ ब्रह्म-वाच्य केवलीति (बन
१) । २ जगत् कथन 'वृद्धिशील' विष्णु
मार्ग अनुवाचन वृद्ध कथ्य' (पृष्ठ १ ११
मिष्ट १ का विचार १ २०) ।

वृद्ध } वं [वृद्ध] १ ब्रह्म-वाच्य नगर
वृद्ध } वा एक राजा (पृष्ठ १ ११) ।
१ ब्रह्मवाच्य ब्रह्म-वाच्य केवलीति
(पृष्ठ १) । २ जगत् कथन वीर्यवाच्य
वृद्धिशील (बं १) । ४ न. रजित वाच्य
वा एक प्रतिष्ठ ब्रह्म (पृष्ठ १ ११, २ २१) ।
[वृद्धि] पुं [वृद्धि] वृद्धि विशेष (पृष्ठ ४२
१४) । वेणी वृद्ध (पृष्ठ २१) वृद्ध १ वृद्ध
२, २ पृष्ठ ४ ११) ।

वृद्धय न [वृद्धय] ब्रह्म-वाच्य विचार (पृष्ठ
२ २ २२, ३ १) ।

वृद्धपाशिका पुं [वाच्यपाशिक] वीर्यवाच्य
(मिष्ट १ २०) ।

वृद्धवाच्य वि [वृद्धवाच्य] ब्रह्म वेनेवाला
वृद्धवाच्य (बन १) ।

वृद्धवाच्य न [वृद्धय] राजा करणा मिष्ट
करणा (वा १४) ।

वृद्धाविधि वि [वृद्धि] जिसको ब्रह्म विचार
गया ही वह (वीर्य २ २० टी) ।

वृद्धि वि [वृद्धि] १ ब्रह्म-वाच्य । २ वं
ब्रह्मवादी प्रतीकार, ब्रह्मवाच्य (पृष्ठ ४ ११) ।

वृद्धि केवली वृद्धि (पृष्ठ ४४) ।

वृद्धि वं [वृद्धि] १ वाच्य राजा (बन
२ २१) । २ राज कथन वृद्ध (बन २ २१) ।

वृद्धि वि [वृद्धि] जिसको राजा ही वह
वृद्धि केवली (पृष्ठ ४४) ।

वृद्धि वि [वृद्धि] १ ब्रह्मवाच्य । २ पुं
राजा वृद्ध (बन ४) । ३ ब्रह्म-वाच्य, वृद्धवाच्य
विचार-कर्ता (बन १) ।

वृद्धिवाची वृद्धि [वृद्धि] वृद्ध वृद्धा वृद्धी राजा
वृद्धा वृद्धा, वृद्ध (वृद्ध १) ।

वृद्धिवाच्य वि [वृद्धि] वृद्धवाच्य, 'वृद्धिवाच्य'
वृद्धवाच्य वृद्धवाच्य वृद्धवाच्य (बन ४ ४४ टी) ।

वृद्धिवाची वृद्धि [वृद्धि] राजा वृद्धवाच्य
(मिष्ट २) ।

वृद्धि वि [वृद्धि] १ ब्रह्म से निर्वृत्त ।
२ व. राजा करके वृद्ध विचार हुआ ब्रह्म
(छाया १ १—पृष्ठ १ ३०) ।

वृद्धि वी [वृद्धि] १ वृद्ध-वाच्य । २ वृद्धा वृद्धा
वृद्ध-वाच्य (बं १ ११) । ३ वृद्धा वृद्धा वृद्धी
वृद्ध (छाया १ ११—पृष्ठ १ २२) पृष्ठ १
३—पृष्ठ ३३) ।

वृद्धि वि [वृद्धि] ब्रह्म कर्ता राजा (मिष्ट
२ २०) ।

वृद्धि पुं [वृद्धि] वी वृद्धवाच्य वेला (वृद्धी
२) ।

वृद्धि वि [वृद्धि] वी वृद्धवाच्य वेला (वृद्धी
२) ।

वृद्धि पुं [वृद्धि] वी वृद्धवाच्य वेला (वृद्धी
२) ।

वृद्धि वि [वृद्धि] वी वृद्धवाच्य वेला (वृद्धी
२) ।

वृद्धि वि [वृद्धि] वी वृद्धवाच्य वेला (वृद्धी
२) ।

वृद्धि वीर्य' (माधु १ ११) । २ वृद्धिवाच्य
(छाया १ १४ वृद्ध १) ।

वृद्ध पुं [वृद्ध] वीर्य वृद्ध (पृष्ठ १) ।

वृद्धी वृद्धी [वृद्धी] वृद्धा वृद्ध (वृद्ध) । वृद्ध
पुं [वृद्ध] वृद्ध वृद्ध, वृद्ध (पृष्ठ १) ।

वृद्धवाच्य न [वृद्धवाच्य] १ वृद्ध वाच्य करणा
वृद्धवाच्य । २ वृद्ध वाच्य करणे का कथ्य,
वृद्धवाच्य (पृष्ठ १ ४ निष्ठ १) । पृष्ठवाच्य
न [मृद्धाच्य] वृद्धी वृद्धी वृद्ध (पृष्ठ १
४ २) । वाच्य न [वाच्य] वृद्ध का वृद्धा वृद्धा
वाच्य (वाचा २ ४ १) । पुर न [पुर] नरक
विशेष (बन १) । वृद्धवाच्य न [मृद्धाच्य]
वृद्धी वाच्य (बन १) । माधु पुं [माधु]
वृद्ध-विशेष (बं २) । वृद्ध पुं [वृद्ध]
वृद्धवाच्य नरक का एक राजा (बन १) ।

वृद्धवाच्य वृद्धी [वृद्धवाच्य] वृद्धवाच्य-विशेष
(वृद्ध ३) । वृद्धवाच्य न [वाच्य]
वृद्धी-वृद्ध वृद्धवाच्य का व्यापार (बन २) ।

वृद्ध पुं [वृद्ध] वृद्ध वृद्ध वृद्ध वृद्ध वृद्ध वृद्ध
विशेष (पृष्ठ १) ।

वृद्धवाच्य पुं [वृद्धवाच्य] वृद्ध वृद्धवाच्य
विशेष (पृष्ठ १ ४२) ।

वृद्धवाच्य वृद्धी [वृद्धवाच्य] वृद्ध, वृद्धा (वृद्ध
४२) ।

वृद्धवाच्य पुं [वृद्धवाच्य] वृद्धवाच्य वृद्धवाच्य
(पृष्ठ १ १ २२) ।

वृद्धवाच्य न [वृद्धवाच्य] १ वृद्ध-वाच्य । २
वृद्धवाच्य वृद्ध वाच्य करणे का कथ्य (बं २, २२)
छा १—पृष्ठ ४१ वृद्धा वृद्ध ४) ।

वृद्धवाच्य वृद्ध [वृद्धवाच्य] वृद्धवाच्य (बन
१ २) ।

वृद्धवाच्य न [वृद्धवाच्य] १ वृद्ध-वाच्य । २
वृद्धवाच्य वृद्ध वाच्य करणे का कथ्य (बं २, २२)
छा १—पृष्ठ ४१ वृद्धा वृद्ध ४) ।

वृद्धवाच्य वृद्ध [वृद्धवाच्य] वृद्धवाच्य (बन
१ २) ।

वृद्धवाच्य न [वृद्धवाच्य] १ वृद्ध-वाच्य । २
वृद्धवाच्य वृद्ध वाच्य करणे का कथ्य (बं २, २२)
छा १—पृष्ठ ४१ वृद्धा वृद्ध ४) ।

वृद्धवाच्य वृद्ध [वृद्धवाच्य] वृद्धवाच्य (बन
१ २) ।

वृद्धवाच्य न [वृद्धवाच्य] १ वृद्ध-वाच्य । २
वृद्धवाच्य वृद्ध वाच्य करणे का कथ्य (बं २, २२)
छा १—पृष्ठ ४१ वृद्धा वृद्ध ४) ।

वृद्धवाच्य वृद्ध [वृद्धवाच्य] वृद्धवाच्य (बन
१ २) ।

वृद्धवाच्य न [वृद्धवाच्य] १ वृद्ध-वाच्य । २
वृद्धवाच्य वृद्ध वाच्य करणे का कथ्य (बं २, २२)
छा १—पृष्ठ ४१ वृद्धा वृद्ध ४) ।

वृद्धवाच्य वृद्ध [वृद्धवाच्य] वृद्धवाच्य (बन
१ २) ।

वृद्धवाच्य न [वृद्धवाच्य] १ वृद्ध-वाच्य । २
वृद्धवाच्य वृद्ध वाच्य करणे का कथ्य (बं २, २२)
छा १—पृष्ठ ४१ वृद्धा वृद्ध ४) ।

वृद्धवाच्य वृद्ध [वृद्धवाच्य] वृद्धवाच्य (बन
१ २) ।

पद्य नय-विशेष 'रश्मिद्विपल' सम्यक् सदा
 धनुष्यधनविपल' (धम्म ११ विदे ४१७)।
 'सिग न [सिङ्ग] बाध वेप (पंचा ४)।
 'सिगि नि [सिङ्गिन्] वेपवापि धातु (उ
 १)। 'सिस्ता की [सिस्ता] सटीर प्रापि
 पीत्यलिक वस्तु का रज का (पद्य)। 'वेय
 पुं [वेय] पुन्य प्रापि ना बाध धातार
 (पद्य)। 'ययिरि पुं [ययार्य] धनवान्
 धातार्य, धातार्य के पुत्रों से रक्षित धातार्य
 (पंचा १)।

द्वय न [द्वय] धोयता 'ययययि द्य-
 सरो पार्य न धोयताम्' इत्येति शिक्वा-
 रित' (पंचा १ १)।

द्वयसिधा की [द्वयसिद्धि] वन्यसि-
 धिरेव (पद्य १—पद्य १२)।

द्विरे वेयो द्वयी (पद्य)।

द्विरेविज न [द्विरेविज] लुल द्विज
 (पद्य)।

द्वयी की [द्वयी] कर्ण कनली नमनी मोई
 (पद्य)। २ सय की कन (हे ३ ३७)।
 अर कर पुं [कर] दीप सरी (हे ३
 ३७) पद्य १)।

द्वयी की [द्वे] वन्यसिद्धिरेव (पद्य १—
 पद्य १४)।

द्वय नि व [द्वय] द्य, नी बीर एक (हे
 १ ११२; डा १ १—पद्य ११६) मुपा
 २१७)। अर न [पुर] नगर-विशेष
 (विदे २१ १)। कंठ पुं [कंठ] पयरा
 एक कंठा-पटि (हे १३, १६)। कंवर पुं
 [कंवर] राजा पयरा (पद्य) कंठिय
 न [कंठिय] एक कैन धातार्य-पद्य (पद्य
 १)। ग न [क] कय ना पद्य (हे
 १ १२)। गुण नि [गुण] द्य
 गुण (डा १)। गुणिय नि [गुणिय]
 वन-गुण (गद्य का १)। गीय पुं
 [गीय] पयरा (पद्य ७१ ८)। द्य
 मिया की [द्वयमिया] कैन लानु ना
 एक धानिक धनुष्य, प्रसिद्धा-विशेष (सम
 १)। 'द्विभिय नि [द्विभिय] द्य
 रिग ना (लुमा १ १—पद्य १७)। अ
 पुं [द्वय] द्य ३ (सम १०) लाया १

१)। धनु पुं [धनु] ऐरत क्षेत्र के
 एक धानी कुम्भकर पुन्य (सम १३१)।
 पयसिय नि [पयसिय] द्य धन्य
 वता (डा १)। पुर वैयो वर (पद्य)।
 पुमि नि [पुमि] वर पुन्य-धन्य का
 धन्यायी (पद्य १)। वस पुं [वस]
 मन्त्रात् कृष्ट (पद्य) हे १ २१२)। य नि
 [य] १ दसनी (पद्य)। २ वार विनों का
 कनावार जगता (धाता लाया १ १; पुर
 ४ ३३)। यमपिय नि [यमपिय]
 वार विनों का नयसार जगता करनेवाला
 (पद्य २, ३)। यासिय नि [यासिय]
 द्य माये का औसता द्य माये का परि
 मायता (कय)। मो की [मी] १
 दसनी। २ रिचि-विशेष (सम २३)। मुदि
 यार्णता न [मुदिन्यन्यत] द्य की
 उमियों की वस धन्यिनी (पद्य)। मुह
 पुं [मुह] पयरा पयस-पयि (हे १
 २१२) प्रादा हेका १३४)। मुहसुय पुं
 [मुहसुय] पयरा का पुन्य नयस्य प्रापि
 (हे १३, २)। य वैयो ग (डा १)।
 रत न [रत] वर रत (पिया १ ३)।
 रत पुं [रत] १ धन्यकनली के पिता का
 नाम (सम १३३) पद्य २ १३१)। २
 जरीय कयपिणी-कय में जगता एक कुम्भकर
 पुन्य (डा १—पद्य ४४७)। यमुय पुं
 [यमुय] राजा द्यार्य का पुन्य—पद्य
 नयस्य पयरा द्यार्य-पद्य (पद्य ३३, ४७)।
 ययय पुं [ययय] राजा पयरा (हे १
 ३)। यय वैयो वर (पद्य)। यिह नि
 [यिह] द्य प्रकार का (मुमा)। यिह-
 किय न [यिहकिय] कैन धातार्य-कय-
 विशेव (पद्य १)। यिह। द्य ध [धा]
 द्य प्रकार से (पी २४)। ययय पुं [ययय]
 राजसेधर पयरा (हे १ १३)। यिह
 की [यिहका] पुन्य-नय के जगता में
 गिया बाता द्य विनों का एक जगता (कय)।

द्वय नि [द्वय] द्य वर की वर का
 (हे १७)।

द्वय पुं [द्वय] १ द्य वर (पद्य-मुमा)।
 २ व. द्य, बाता (पद्य १)। ययय पुं
 [ययय] द्य-पयरा, द्य (पुर १ १३३)।

द्वय पुं [द्वय] द्य-विशेष (पद्य २११
 टी मुमा)। द्य न [द्य] शिखर-विशेष
 (पद्य)। पुर न [पुर] नगर-विशेष
 (डा १)। मद्य पुं [मद्य] मद्य-पुन्य
 का एक विशिष्ट राजा की द्य-विशेष पद्य-
 से धन्याय मद्य-पुन्य की वर कये मया बा
 बीर विशेव मद्य-पुन्य की पयरा बीसा
 नी बी (पद्य)। वद्य पुं [वद्य] मद्य-
 द्य का राजा (मुमा)।

द्वयपुन्य न [द्वे] द्य-विशेष (पद्य १—
 पद्य ३४)।

द्वय वैयो द्वयपुन्य (पद्य १७ टी)।

द्वय की [द्वय] १ निचि जगता (पा
 २१७ २४४) प्रादा ११)। २ टी वर के
 मद्य की वर-वस वर की वरता (पद्य
 १)। ३ द्य बा जग का छोटा बीर पयरा
 बाध (पद्य ४२३)। ४ व कैन धातार्य-
 द्य-विशेष (पद्य)।

द्वय पुं [द्वय] १ लुल-विशेष प्रापि द्य
 पयरा (सम १२३ हे २, ३, पद्य २
 लाया १ ४—पद्य ३३)। २ वर-विशेष
 बीहक (लाया १ ११)। ३ कय-
 (पद्य)। ४ वर-विशेष की वरता (पद्य)।
 'विह पुं [विह] बीहक (कय)। नाह
 पुं [नाह] बीहक (पद्य)। वद्य पुं
 [वद्य] बीहक (मुमा)।

द्वय वैयो द्य (मुमा १४६)।

द्वय पुं [द्वे] द्य-विशेष (हे ३, १४)।

द्वयपुन्य न [द्वयपुन्य] १ एक टी
 वर। २ नि द्य टी वरनी ११ ना
 (सम ११ ४२)।

द्वय पुं [द्वय] द्य-पयरा, द्य, बीर, कय
 (पद्य १ ११)।

द्वय पुं [द्वे] द्य-नय (हे ३ ११)।

द्वय वैयो द्य = द्य-पयरा। द्य-द्वयपुन्य
 (सम १२)।

द्वयपुन्य वैयो द्वयपुन्य (पद्य २१)।

द्वय पुं [द्वय] बीर, कय (पा २७)।

द्वय द्य [द्वय] वरता, मय कय।
 द्य (पद्य)। वर द्य (हे ४ १२३)
 वर (पद्य)। वर द्य (पा २७)।

कवच वरुण दग्धमाणा (नाट—मासती
३ ; नि २२२) ।

वृह पुं [वृह] छत्र, वहा बभारय धीम
छत्रवर (भय उभा राया १ ४—पत्र
२१; गुण ११७) । कुशिया की
[कुशिय] बन्नी विरोध (पण्य १) । वरु
[वरु] की [यती] नदी-विरोध (अ २
१—पत्र ८ ब ४) ।

वृह रेवो वृह (हे १ २१२ ब १२ नि
२१२; पत्र ७८ २३; से १३ २४ प्रश्न
से १४ १६ ३ ११) १ ४ पत्र ८
४४ प्रश्न) ।

वृहण न [वृहण] १ वाह, मल्लीकण्ड १ २
दु, अग्नि वृह (पण्य १ १; अण्ड २ २२
गुण ४७४ का २८) ।

वृहणी की [वृहनी] विद्या-विरोध (पत्र ७
११८) ।

वृहोकी की [वृ] स्वामी बलिया बरिया
(हे ३, ११) ।

वृहपण नि [वृहक] जलनेवता (छा) ।

वृहि न [वृहि] की वृह का निकार (हा १
१ गामा १ १ प्रश्न) । अण्ड पुं [वन]

बलि-विरोध अविषय बना हवा बही (पण्य
१७—पत्र ३२२) । सुह पुं [सुह]
१ दीप-विरोध (पत्र ३१ १) । २ एक
नगर (पत्र ३१ २) । ३ पर्वत-विरोध
(राज) । बण्य वन पुं [पर्य] १
एक पना, नृन-विरोध (दुम ११) । २ वृत्त-
विरोध (वीरा वन ११२ पण्य १—पत्र
११) । वासुपा की [वासुध] कल्पति
विरोध (बीज १) । वाह्य पुं [वाहन]
नृन-विरोध (महा) । सर पुं [सर] वास-
व्य-विरोध मगार, (हे ३ २२ ३, ११) ।

वृहि नि [वृहि] १ वही 'कुन्दासीय मण्डो' (बर्मेन २३) । 'अर्मेन वही' (दुम ४, ११) ।
२ देता लगावरा दीन दित का बजवात
(संवीच २८) ।

वृहिरुप न [वृ] नवनीत मैत्रु मन्त्रन (हे
३, १२) ।

वृहिरु पुं [वृ] वृह-विरोध बलिया वेंच या
कैप वा वेद (हे ३ १२) ।

वृहिरु रेवो वृहिण (ना—वेणी १७) ।

वृहिरवर } पुं [वे] बहिर, बही पर की
वृहिरवार } मगार, वाह-विरोध (हे ३,
११) ।

वृहिरु पुं [वे] कर्षि बाहर (हे ३ ४४) ।

वृहिय पुं [वे] पति-विषय 'बं लावयति
विषयिभोरं मारुति अरोह नि के नि मोर'
(दुम ४२४) ।

वृह सक [वृ] देता कर्षयं करण । वाह, वेद
(यधि हे २ २ ३) धावा महार कस) ।
महि वाहं वाहमि वाहमि (हे ३ १७
धावा) । कर्षि विह (हे ४ ४१८) । वृह
विह वृह वृह, वेयमाय (दुम १ २२२;
वा २३ ४४४ हं ४ १७२ वृह १; गामा
१ ४—पत्र ८८६) । कर्षक विह, वृह

विहमाय वीर्यमाण (वा १ १; सुह १
७२) १ ३, वम ११; गुण ३ २; मा
११) । वृह, वृहा वृहं वृहण (मि
१ १ नि ४८७ गुण ४८) । वृह-वृह
(ववा) । वृह वायव्य, वेय (दुम १ ११
गुण २३३ अण्ड ३१२) । वृह, वेह
(म) (हे ४ ४११) ।

वा रेवो वृह । वाह्य न [वाहक]
कस से नीला वास (का १३—पत्र १८) ।
कसस पुं [कसस] पानी का छोटा वहा ।
कुंम [कुंम] कस का वहा । 'वृह
पुं [वारक] जल का पान-विरोध (पत्र
१३—पत्र १८) ।

वा रेवो वा = वाहव (हे ३ १) ।

वाह्य रेवो वाह = वरुण । वाह्य (मिह ८४४)
कस वाह्य (मिह ४१) । कर्षक-वाह्य
कर्ममाण (पत्र) ।

वाह्य पुं [वृ] अग्नि, वायिमहा, कर्षाक
कर्मणता (हे ३, १८) ।

वाह्य पुं [वाय] वाह, कर्षयं (गामा १
१—पत्र १७) ।

वाह्य नि [वायि] वृह्य कोवता (छा पु
१११) ।

वाह्य नि [वृहिय] विहवाया हवा (मिह
१ २२) ।

वाह्य पुं [वायि] १ वैष्णव संपत्ति का
विरोध (अण्ड ४७० महा) । २ वीर्य-
वमान-वीर्य (बण्य) ।

वाह्यमाण रेवो वाह = वरुण ।

वाह्यय न [वेयक] पाणिग्रहण के समय
वर-वृह को दिया जाता ब्रह्म (मिह ४१६) ।

वाह नि [वाह] वाहा वेनेवाहा (महा) हं १;
गुण १११) ।

वाह रेवो वा = वा ।

वाओययि नि [वाओवरिक] बनेवर रोप-
वाहा (मिह १ ७) ।

वाह्यय (वय) रेवो वृह्यय । वाह्यय
(वाह ११६) ।

वाह्य रेवो वाह (हे १ २१४) ।

वाहिम न [वाहिम] कस-विरोध मगार
(महा) ।

वाहिनी की [वाहिनी] मगार का वेह (मि
२४) ।

वाह्यानि रेवो वृह्यानि (वर्मेन १ ४१ टी) ।

वाह्या की [वृह्या] वहा वृह कस-विरोध
बीर्य वृह, वाह (हे २ ११; गवह) ।

वाहि नि [वृहिय] १ वृह्यावा । २ पुं
वृह्य वृह्य (मिह ४१) । सुह, वृह्य
कि वाहीममयो नियमं वृहं केवरी रिह
(पत्र ७ १८) ।

वाहिमा की [वे] वाही वृह के नीचे का
भाग समुद्र डुपरी के नीचे या हूरी पर के
बल (हे २ १ १) ।

वाह्यानि १ की [वृहिय] वाहि १ वाहा
वाहिगानि १ की वृह १ २ वृह-विरोध
(वृह १; वीर) ।

वाह्य पुन [वान] १ वाह कर्षयं व्याग
'एव वृहति वाह्य' (पत्र १४ २४ कप्य
प्राग् ४८ २७ १७२) । २ हाथी का मर
(वाय ४७ गवह) । ३ वी दिया वाय वृह
(गवह) । विरय पुं [विरय] एक पना
(गुण १) । साह्य की [शाह्य]
समावार (टी ८) ।

वाह्ययय न [वाह्ययय] नर-विरोध
विहके कस से पन की वी वृह्य नदी होती
हे (राय) ।

वाणपाठमिया की [वाणपाठमिया] वाह
कर्षयं वमपण्डा 'वृह्य विह्यारी वृह्यमा
देव्याविह वैर । वाह्यययिह्यी वा वृह्य
का वाणपाठमिया' (बर्मेन ७१७) ।

कुमार पुं [कुमार] एक देव-जाति (मम ११ ११)। ण्यु वि [कु] द्वीप के मार्ग का वातकार (उप २६२)। सामरपमति श्री [सामरपमति] सैन्य-विशेष जिसमें द्वीपों और मनुष्यों का गणन है (ठा ३ २—पत्र १२४)।

श्रीप पुं [श्रीप] श्रीपट्ट का एक नगर, श्रीन (पत्र १११)।

श्रीपशु पुं [श्री] इकसाव लिपि (दे ३, ४१)।

श्रीपशु पुं [श्रीपशु] १ प्रवीन दिया चिराय प्रतीक (भा २२२ महा)। २ वि श्रीपक, प्रकृत्य, रोमा-काष्ठ (कुमा)। ३ न छत्र विशेष (मवि २५)।

श्रीपशु पुं [श्रीपाशु] प्रवीन का नाम देवताओं के समुदाय की एक जाति (अ १)।

श्रीपशु पुं [श्रीपशु] १ श्रीपक (भा १)। २ श्रीपक, प्रकृत्य, रोमा-काष्ठ (कुमा)। ३ न छत्र विशेष (मवि २५)।

श्रीपशु पुं [श्रीपशु] १ श्रीपक (भा १)। २ श्रीपक, प्रकृत्य, रोमा-काष्ठ (कुमा)। ३ न छत्र विशेष (मवि २५)।

श्रीपशु पुं [श्रीपशु] १ श्रीपक (भा १)। २ श्रीपक, प्रकृत्य, रोमा-काष्ठ (कुमा)। ३ न छत्र विशेष (मवि २५)।

श्रीपशु पुं [श्रीपशु] १ श्रीपक (भा १)। २ श्रीपक, प्रकृत्य, रोमा-काष्ठ (कुमा)। ३ न छत्र विशेष (मवि २५)।

श्रीपशु पुं [श्रीपशु] १ श्रीपक (भा १)। २ श्रीपक, प्रकृत्य, रोमा-काष्ठ (कुमा)। ३ न छत्र विशेष (मवि २५)।

श्रीपशु पुं [श्रीपशु] १ श्रीपक (भा १)। २ श्रीपक, प्रकृत्य, रोमा-काष्ठ (कुमा)। ३ न छत्र विशेष (मवि २५)।

श्रीपशु पुं [श्रीपशु] १ श्रीपक (भा १)। २ श्रीपक, प्रकृत्य, रोमा-काष्ठ (कुमा)। ३ न छत्र विशेष (मवि २५)।

श्रीपशु पुं [श्रीपशु] १ श्रीपक (भा १)। २ श्रीपक, प्रकृत्य, रोमा-काष्ठ (कुमा)। ३ न छत्र विशेष (मवि २५)।

श्रीपशु पुं [श्रीपशु] १ श्रीपक (भा १)। २ श्रीपक, प्रकृत्य, रोमा-काष्ठ (कुमा)। ३ न छत्र विशेष (मवि २५)।

श्रीपशु पुं [श्रीपशु] १ श्रीपक (भा १)। २ श्रीपक, प्रकृत्य, रोमा-काष्ठ (कुमा)। ३ न छत्र विशेष (मवि २५)।

श्रीपशु पुं [श्रीपशु] १ श्रीपक (भा १)। २ श्रीपक, प्रकृत्य, रोमा-काष्ठ (कुमा)। ३ न छत्र विशेष (मवि २५)।

श्रीपशु पुं [श्रीपशु] १ श्रीपक (भा १)। २ श्रीपक, प्रकृत्य, रोमा-काष्ठ (कुमा)। ३ न छत्र विशेष (मवि २५)।

हरिणों के आश्रय करने के लिए रखी जाती है (दे ३ २३)। ३ व्याघ्र-संकीर्ण पिनके में रखा हुआ तिरिख ज्वा (आया १ १७—पत्र २३२)।

श्रीपिशा श्री [श्रीपिशा] छोटा दिया मनु प्रवीन (श्रीप ३)।

श्रीपिशा वि [श्रीपि] द्वीप में छप्य द्वीप में पैदा हुआ (आया १ ११—पत्र १०१)।

श्रीपी (पप) देवो दुषी (रमा)।

श्रीपी श्री [श्रीपिशा] मनु प्रवीन छोटा दिया 'श्रीपि ज्वा लीह कुडी' (भा १६)।

श्रीपुष्य पुं [श्रीपुष्य] कालिक बटी प्रभावत कीर्त्तनी श्रीपारवी (श्री १६)।

श्रीसंत { देवो दक्षः = दृष्टः। श्रीसमाज }

श्रीह वि [श्रीप] १ प्रभावत मन्वा (अ ४ २)। २ पुं श्रीपानावाला स्वर (विग)। ३ कोरल देश का एक राजा (उप ३ ३८)। काय [काय] धर्मिकार्य (आभा प्रम १—१—४)। कासिमी श्री [कासिमी] संज्ञा-विशेष बुद्धि-विशेष जिसमें सुधीर्ष युवकाओं की बातों का स्पष्ट और सुधीर्ष अधिपत्य का विचार किया जा सकता है (दे ३ ३९ विवे ३ ८)। कासिय वि [कासिक] १ श्रीर्ष काय से उत्पन्न चिरंजना श्रीकासिणी रोमा-काष्ठ (अ ३ १)। २ श्रीर्ष-मन्वा-मन्वा (आयन)। अथा श्री [यात्रा] १ मन्वी लहर। २ मण्डल नील (अ ३ ३३)। 'अथा श्री [यात्रा] जिसको वाप ने काय ही वह (मिष्ट १)। अथा श्री [नित्रा] मण्डल नील (रात्र)। अंत पुं [द्वय] १ प्रारतर्पण का एक माघी ब्रह्म-वर्ती राजा (मम १३४)। २ एक वैष्णव (अंत)। 'श्रीसि वि [श्रीसि] द्वारणी द्वारणी (गुर ३ ३३ ३ ३२)। दसा श्री ब [दसा] सैन्य-विशेष (अ १)। विट्ठि वि [विट्ठि] १ द्वारणी द्वारणी। २ श्री. श्रीर्ष-वर्ती (वर्ग १)। पट्ट पुं [पट्ट] १ धर्म शीप (अ ३ २२)। २ बरपाय का एक मन्वी (वह १)। पाश पुं [पाश] १ प्रवत क्षेत्र के लोगहर्ष माघी विम-ल (पत्र ७)। 'विहि वि [विहि] द्वार

वर्ती (पत्र २६ २२ ३१ १ १)। वाहु पुं [वाहु] १ मण्ड-क्षेत्र में होनेवाला दोषय वायुदेव (मम १३४)। २ गणना ब्रह्मम का पूर्ण-अर्धाय नाम (मम १३१)। मद् पुं [मद्] एक सैन्य मुनि (कम्प)। मद् वि [मद्] मन्वा यस्तावा (आया १ १८ ठा १ १ ३, २—पत्र २४)। मद् वि [मद्] श्रीर्ष-मन्वा गम्य (ठा ३ २—पत्र २४)। माठ न [मिपु] मन्वा मण्डल (ठा १)। माठ न [मिपु] मन्वा मण्डल (ठा १)। १ प, राय पुं [राय] १ मन्वी राय। २ बहु रात्रिमात्र चिर-वास (अंत १७ रात्र)। राय पुं [राय] एक राजा (महा)। 'जेग पुं [जेग] ब्रह्मल्लि का धीन (आभा)। खेरसत्य न [खेर-शकु] धर्मि बहि (आभा)। 'वेयद्व पुं [वेताद्व] खान-काठ पर्वत (ठा २ ३—पत्र ६६)। सुच न [सुच] १ बका घुसा (मिष्ट ३)। २ धामस्य मा कुण्डु कीहृत्त वरकक्षे श्रीर्ष वरिपुंठो (पत्र ३ १)। सेण पुं [सेन] १ मनुचर केवली-मन्वी मुनि-विशेष (पुन २)। २ इव वरवर्तनी मन्वा में उत्पन्न प्रवत क्षेत्र के पाठों विम-देव (पत्र ७)। उ, उय वि [मिपु, मिपु] मन्वी उग्रमाता बही मण्डलवा चिरंजीवी (दे १ २ ठा १ १ पत्र १४ १)। उण न [सिन] मन्वा (अ १)।

श्रीह देवो दिशह (कुमा)।

श्रीहय वि [श्रीहय] विन को केवले में वरवर्ती 'पटिमा श्रीर्षा (मामु १७९)।

श्रीहय श्री [श्री] शंख (दे ३, ४१)।

श्रीहयि देवो श्रीह-युद्ध (मिष्ट ३ ४)।

श्रीहय देवो श्रीह-युद्ध (मिष्ट ३ ४)।

श्रीहय देवो श्रीह-युद्ध (मिष्ट ३ ४)।

श्रीहय देवो श्रीह-युद्ध (मिष्ट ३ ४)।

श्रीहय देवो श्रीह-युद्ध (मिष्ट ३ ४)।

श्रीहय देवो श्रीह-युद्ध (मिष्ट ३ ४)।

श्रीहय देवो श्रीह-युद्ध (मिष्ट ३ ४)।

श्रीहय देवो श्रीह-युद्ध (मिष्ट ३ ४)।

श्रीहय देवो श्रीह-युद्ध (मिष्ट ३ ४)।

श्रीहय देवो श्रीह-युद्ध (मिष्ट ३ ४)।

श्रीहय देवो श्रीह-युद्ध (मिष्ट ३ ४)।

श्रीहय देवो श्रीह-युद्ध (मिष्ट ३ ४)।

श्रीहय देवो श्रीह-युद्ध (मिष्ट ३ ४)।

श्रीहय देवो श्रीह-युद्ध (मिष्ट ३ ४)।

श्रीहय देवो श्रीह-युद्ध (मिष्ट ३ ४)।

श्रीहय देवो श्रीह-युद्ध (मिष्ट ३ ४)।

श्रीहय देवो श्रीह-युद्ध (मिष्ट ३ ४)।

११२)। १। यद्वि [पिह] दुःख-यद्वि
(पञ्च १४, १)। २। सिया की
[मिमा] बेरना पोडा (डा ४ ४)।
बेको दुद = दुःख।

दुःखम् न [र] पञ्च की के वमर के पीके
वा मय वुन (दि ३, ४२)।

दुःखम् पञ्च [दुःखम्] १ दुःखम्, दई
मना। २ वर दुःखी करना फिर में
दुःखम् (व १ ४)। दुःखम् (दि ११
१३०)। दुःखम् (दुःख २ २ २४)।

दुःखम् बेको दुःखम् (पाठ २१)।

दुःखम् न [दुःखम्] दुःखम्, दई होना
(वा ७२१ दू २ २ २४)।

दुःखम् वि [दुःखम्] १ पञ्चमर्षे। २
मरण (उत्तर ११)।

दुःखम् बेको दुःखम् (मन ६६)।

दुःखम् वि [दुःखम्] १ वर मोकर
(मिह १६)।

दुःखम् वि [दुःखम्] १ वरी
मान्की (मिह १६)। २ बेरना बाण्डना
(मिह १)।

दुःखम् वि (मर) वि [दुःखम्] दुःख-मूक
(मरि)।

दुःखम् वि [दुःखम्] दुःखी मिया दुःख
(प ११४ मरि)।

दुःखम् पञ्च [दुःखम्] दुःख वनना
दुःखी करना। दुःखम् (दि ३३६)।
वा दुःखम् (पञ्च २४ २४)। वर
दुःखम् (मरि)।

दुःखम् न [दुःखम्] दुःखी करना,
दई करना (प १ १)।

दुःखम् वि [दुःखम्] दुःखी दुःख
(मरि)।

दुःखम् वि [दुःखम्] दुःखम् दुःखम्
(६ २ ७२ मरि ११ मरि ११)।

दुःखम् वि [दुःखम्] को दुःख में वर
मना पञ्च मरि वर वर में वर
हो (मरि १)।

दुःखम् वि [दुःखम्] को वर से वर
(मरि २—पञ्च १ ८)।

दुःखम् बेको दुःखम् (दि ४१६)।
दुःखम् बेको दुःखम् (मरि ११)।
दुःखम् वि [दुःखम्] दुःख-मरि (पञ्च
१ १ १२४; मुना १२१)।

दुःखम् वि [दुःखम्] मरि-मरि
(मुना १२१ १२१)।

दुःखम् वि [दुःखम्] को दुःखम् (वा
२६१ ११ मरि)।

दुःखम् बेको दुःखम् (मरि)।

दुःखम् वि [दुःखम्] को दुःखम् मरि को
मरि मरि (पञ्च १)।

दुःखम् वि [दुःखम्] को दुःखम् मरि कोडा (मरि
१ मरि १०; मरि ११)।

दुःखम् बेको दुःखम्। वर दुःखम् (मरि
४ ११)। वर दुःखम् (मरि ११ ११
दि ७४)।

दुःखम् की [दुःखम्] वर मरि
(पञ्च ११ ११)।

दुःखम् की [दुःखम्] वर मरि (पाठ
दुःख ४ ७)। बेको दुःखम्।

दुःखम् बेको दुःखम् (पञ्च ४१ १०)।

दुःखम् वि [दुःखम्] वर मरि
दुःखम् वि [दुःखम्] वर मरि (पञ्च
६ ४ ४)। वर दुःखम्, दुःखम्
मरि (मुना १० २११)। वर
दुःखम् (मरि २)। वर दुःखम्
(पञ्च ४६ १२)।

दुःखम् वि [दुःखम्] मरि मरि
मरि वा मरि (मरि ३८)।

दुःखम् वि [दुःखम्] वर मरि मरि
मरि)।

दुःखम् वि [दुःखम्] वर मरि (दि
७४)।

दुःखम् बेको दुःखम् (मरि)।

दुःखम् बेको दुःखम् (मरि)। मरि न
[मरि] को पीके का मरि (मरि १)।
मरि मरि न [मरि] मरि-मरि
मरि मरि मरि को मरि मरि
मरि होना (मरि १)।

दुःखम् वि [दुःखम्] वर मरि मरि
मरि मरि मरि (मरि २ ४६ ८)।

दुःखम् वि [दुःखम्] वर मरि मरि
(मरि ३०२)।

दुःखम् वि [दुःखम्] वर मरि मरि
मरि (मुना १२०)।

दुःखम् वर दुःखम्। दुःखम् (दि ४ ४
४)। वर दुःखम् (पञ्च १ २
७)। वर दुःखम् (पञ्च ८ २)।

दुःखम् बेको दुःखम् (मरि २ ४ मरि १
६ मरि २१६)।

दुःखम् वर [दुःखम्] वर मरि मरि
मरि (मरि २८४)।

दुःखम् बेको दुःखम् (मरि)।

दुःखम् बेको दुःखम् (दि १ १६ मरि
मरि)। मरि २ ८ ६ २)।

दुःखम् की [दुःखम्] वर मरि मरि
(पञ्च १)।

दुःखम् वि [दुःखम्] वर मरि (दि २ २४;
मरि ११)। २ मरि मरि (दि २
२४)। ३ मरि मरि मरि मरि मरि मरि
मरि मरि (मरि ११६)।

दुःखम् वि [दुःखम्] वर मरि मरि मरि
मरि मरि मरि मरि मरि मरि मरि
(मुना १२१)। ३ मरि मरि मरि मरि
(मुना १२८)। मरि मरि मरि मरि
(मुना १२८)।

दुःखम् वि [दुःखम्] वर मरि मरि मरि
मरि मरि मरि मरि मरि मरि मरि
(मुना १२८)। मरि मरि मरि मरि
(मुना १२८)।

दुःखम् वि [दुःखम्] वर मरि मरि मरि
मरि मरि मरि मरि मरि मरि मरि
(मुना १२८)। मरि मरि मरि मरि
(मुना १२८)।

दुःखम् वि [दुःखम्] वर मरि मरि मरि
मरि मरि मरि मरि मरि मरि मरि
(मुना १२८)। मरि मरि मरि मरि
(मुना १२८)।

दुःखम् वि [दुःखम्] वर मरि मरि मरि
मरि मरि मरि मरि मरि मरि मरि
(मुना १२८)। मरि मरि मरि मरि
(मुना १२८)।

दुःखम् वि [दुःखम्] वर मरि मरि मरि
मरि मरि मरि मरि मरि मरि मरि
(मुना १२८)। मरि मरि मरि मरि
(मुना १२८)।

दुःखम् वि [दुःखम्] वर मरि मरि मरि
मरि मरि मरि मरि मरि मरि मरि
(मुना १२८)। मरि मरि मरि मरि
(मुना १२८)।

दुःखम् वि [दुःखम्] वर मरि मरि मरि
मरि मरि मरि मरि मरि मरि मरि
(मुना १२८)। मरि मरि मरि मरि
(मुना १२८)।

दुःखम् वि [दुःखम्] वर मरि मरि मरि
मरि मरि मरि मरि मरि मरि मरि
(मुना १२८)। मरि मरि मरि मरि
(मुना १२८)।

दुःखम् वि [दुःखम्] वर मरि मरि मरि
मरि मरि मरि मरि मरि मरि मरि
(मुना १२८)। मरि मरि मरि मरि
(मुना १२८)।

दुःखम् वि [दुःखम्] वर मरि मरि मरि
मरि मरि मरि मरि मरि मरि मरि
(मुना १२८)। मरि मरि मरि मरि
(मुना १२८)।

दुग्धोपसिद्धि वि [दुग्धोपसिद्धि] कट से पारित (पात्र)।

दुग्ध वि [दुग्ध] दोष-मुक्त, इषित (योग ११; पात्र दुग्ध)। प्य पुं [साम्य] दुग्ध भीष पत्नी प्राप्ती (पत्र १ ११६, ७४ १२)।

दुग्ध वि [वि द्रिष्ट] दोष-मुक्त (योग ७४७ क्य) 'धरतद्रुष्ट' (दुग्ध १७१)।

दुग्धाय न [दुग्धाय] दुग्ध बगह (यव १६ २)।

दुग्धय [दुग्ध] कटय यदुग्ध (यव २ १ निर १ १ युग ११८; द्व ४ ४ २)।

दुग्धय दोषो दुग्धय (विक ३७ पात्रम)।

दुग्धयाम न [दुग्धयाम] १ शरीरित धरतः। २ दुग्ध नाम कटय प्राप्ता। ३ एक प्रकार का गर्भ (यव १२ ५)।

दुग्धिय वि [दुग्ध] पीयित्व दुग्धित (गा ११)।

दुग्धिय दोषो दुग्धिय (पात्र)।

दुग्धिमात्र न [वि] १ कनन पर निरत वक्र। २ कनन की के कनर के नीचे का भाग (वि ३, २१)।

दुग्धिमात्र वि [वि] दुग्धिय दुग्धापी (वि ३ ४३)।

दुग्धिमात्रम वि [दुग्धिमात्रम] नदी से निरुक्तता कन-वाय हो वह (पात्र ७ १)।

दुग्धिमात्रक वि [वि] १ दुग्धापी। २ कट से बो देना या सके (वि ३, ४२)।

दुग्धिमात्रक वि [दुग्धिमात्रक] दुग्ध से स्वापन करने योग्य (या ११४)।

दुग्धिमात्रक दोषो दुग्धमात्रक (पात्र)।

दुग्धिमात्रि वि [दुग्धिमात्रि] दुग्ध से बोना हुआ (वि १२, ११)।

दुग्धिमात्रि न [दुग्धिमात्रि] कटय कटुन यदुग्ध (पत्र ७ ३)।

दुग्धिमात्रि वि [दुग्धिमात्रि] दुग्धापी हतो, विही (मि ११)।

दुग्धिमात्रि वि [दुग्धिमात्रि] कट-कनक स्वाभाव-स्वान (यव २ ३)।

दुग्धिय वि [दुग्धिय] जिसका भाग कट-वाय हो वह (उत्तर १२८; का ३२८)।

दुग्धिविक्रम वि [दुग्धिविक्रम] दुग्ध को दुग्ध से घाल किया या सके वह (का ३, १)।

दुग्धर वि [दुग्धर] दुग्धरणीय दुग्धम्य (मुपा ४७० ११४; का ११)।

दुग्धरी की [दुग्धरी] १ नदी। २ कटय किंवा पत्नी नदी (कर्म १२ टी)।

दुग्धर वि [दुग्धर] कट से सपने योग्य दुग्ध से करने योग्य (वा) (पत्नी १७)।

दुग्धर वि [दुग्धर] दुग्ध से पार करने योग्य, दुग्धर (वि ३ २४३ १ १)।

दुग्धर वि [वि] योग्य, नदी (वि ३ ४१ पात्र)।

दुग्धरिक्क १ दोषो दुग्धरिक्क (पात्र) दुग्धरिक्क २ पात्र)।

दुग्धर पुं [दुग्धर] दुग्धर दुग्ध, (मुपा २ व)।

दुग्धर वि [दुग्धर] जिसको संतुष्ट करना कठिन हो वह (वद ३)।

दुग्धर वि [वि] कनन की की कनर के नीचे का भाग (वि ३ ४२)।

दुग्धर वि [दुग्धर] दुग्धर दुग्धर (का १ १) कन)।

दुग्धर न [दुग्धर] दुग्धर दुग्धर (मुपा २४७) 'नहि विदुग्धर' द्वि विदुग्धर (मुपा १४)।

दुग्धरिक्क वि [दुग्धरिक्क] १ दुग्धर विदुग्धर (यव ७४४ ववि घण)। २ निर्जन नदी (दुग्ध १४६)।

दुग्धरिक्क पुं की [वि] नग्न-शरीर, कन-शरीर (वि ३ ४७)। की का (वि ३, ४७)।

दुग्धरिक्क पुं [वि] दुग्धर, कन-शरीर (वि ३, ४७)।

दुग्धरिक्क पुं [वि] दुग्धर, कन-शरीर (वि ३, ४७)।

दुग्धरिक्क वि [दुग्धरिक्क] कन-शरीर (वि ३, ४७)।

दुग्धरिक्क वि [दुग्धरिक्क] कन-शरीर (वि ३, ४७)।

दुग्धरिक्क वि [दुग्धरिक्क] कन-शरीर (वि ३, ४७)।

दुग्धरिक्क वि [दुग्धरिक्क] कन-शरीर (वि ३, ४७)।

दुग्धरिक्क वि [दुग्धरिक्क] कन-शरीर (वि ३, ४७)।

दुग्धरिक्क वि [दुग्धरिक्क] कन-शरीर (वि ३, ४७)।

दुग्धरिक्क वि [दुग्धरिक्क] कन-शरीर (वि ३, ४७)।

दुग्धरिक्क वि [दुग्धरिक्क] १ दुग्धरिक्क से देना हुआ। २ वि दुग्धरिक्क (यव १ २-पत्र २६)।

दुग्धरिक्क न [दुग्धरिक्क] कन-शरीर (वि ३, ४७)।

दुग्धरिक्क वि [दुग्धरिक्क] दुग्धरिक्क से देने योग्य (का १२४)।

दुग्धरिक्क की [वि] नदी (वि ३, ४७)।

दुग्धरिक्क की [वि] नदी (वि ३, ४७)।

दुग्धरिक्क न [दुग्धरिक्क] दुग्धरिक्क (वि ३, ४७)।

दुग्धरिक्क न [दुग्धरिक्क] दुग्धरिक्क (वि ३, ४७)।

दुग्धरिक्क न [दुग्धरिक्क] दुग्धरिक्क (वि ३, ४७)।

दुग्धरिक्क न [दुग्धरिक्क] दुग्धरिक्क (वि ३, ४७)।

दुग्धरिक्क न [दुग्धरिक्क] दुग्धरिक्क (वि ३, ४७)।

दुग्धरिक्क न [दुग्धरिक्क] दुग्धरिक्क (वि ३, ४७)।

दुग्धरिक्क न [दुग्धरिक्क] दुग्धरिक्क (वि ३, ४७)।

दुग्धरिक्क न [दुग्धरिक्क] दुग्धरिक्क (वि ३, ४७)।

दुग्धरिक्क न [दुग्धरिक्क] दुग्धरिक्क (वि ३, ४७)।

दुग्धरिक्क न [दुग्धरिक्क] दुग्धरिक्क (वि ३, ४७)।

दुग्धरिक्क न [दुग्धरिक्क] दुग्धरिक्क (वि ३, ४७)।

दुग्धरिक्क न [दुग्धरिक्क] दुग्धरिक्क (वि ३, ४७)।

दुग्धरिक्क न [दुग्धरिक्क] दुग्धरिक्क (वि ३, ४७)।

दुग्धरिक्क न [दुग्धरिक्क] दुग्धरिक्क (वि ३, ४७)।

दुग्धरिक्क न [दुग्धरिक्क] दुग्धरिक्क (वि ३, ४७)।

दुग्धरिक्क न [दुग्धरिक्क] दुग्धरिक्क (वि ३, ४७)।

दुग्धरिक्क न [दुग्धरिक्क] दुग्धरिक्क (वि ३, ४७)।

दुष्टोदधि १ [दुष्टोदधि] समुद्र-विशेष
दुष्टोदधि १ विरुद्धा पानी दूध की तरह
स्वादि है और दुष्ट (भा ४७३ का २११
टी)।

दुष्टोदधि की [दि] को-विशेष विरुद्धी एक
बार शोधने पर फिर भी शोधन किया जा सके
ऐसी नाम कामधेनु (रे ३, १)।

दुष्टा केही दुष्टा (पवि १११)।

दुष्टिमित केही दुष्टिमित (पा २७)।

दुष्टय दु [दुष्टय] १ दुष्ट नीति कुलीति । २
बनेक बर्तव्यता वस्तु में किसी एक ही
बर्तों की मानकर अन्य पर्यं क प्रविष्टाव करने
वाला वस्तु (धम्म ११) । ३ वि दुष्ट नीति
अन्यात्म-नारी (जय ७१५ टी) । भारि वि
'भारि' अन्वय करनेवाला (धुपा १४६)।

दुष्टियम केही दोनियम (वन ७ १ टी—
प १ ७)।

दुष्टिगच्छ वि [दुष्टिगच्छ] विधवा गिरह दुष्ट
से हो सके खुद, अस्वार्थ (उप ५ १११)।

दुष्टिबोध वि [दुष्टिबोध] १ दुष्ट से बालने
योग्य । २ दुर्गम (धुपा १ ११ १२)।

दुष्टिमित केही दुष्टिमित (भा १७)।

दुष्टिय न [दुष्टिय] दुष्ट करने दुष्टय, 'वर्णीति'
वर्णित न दुष्टियति' (धुपा १ ७ ४)।

दुष्टियत्थ वि [दि] विट का लेववाला निष्क-
रीय वेप को बारछ करनेवाला । वेपल वपन
पर ही बल-वहिका दुष्ट 'भोर वि कुल्लसणी-
निं वरं दुष्टियत्थवदच्छं निव' (जय)।

दुष्टिरिक्ख वि [दुष्टिरिक्ख] को कछिअरि से
देखा जा सके खुद (अप्प ५६)।

दुष्टिचार वि [दुष्टिचार] दोषने के लिए
प्रत्यय विरुद्धा विचार्य दुष्टियन ॥ हो
सके वह (धुपा १११) महा)।

दुष्टिचारणीय वि [दुष्टिचारणीय दुष्टिचार]
आर केही (उ १४३ ७४१)।

दुष्टिसज्ज वि [दुष्टिसज्ज] कपण दीति के
रूप दुष्टा (अ ३, २—प ११२)।

दुष्ट केही विम = विन (पञ्च)।

दुष्टम वि [दुष्टम] १ दो धनवन्धवा ।
२ दु. अप्पुन (पट १)।

दुष्टपसिय वि [दुष्टपसिय] दो प्रवेष्टवाला
(प ४, ७)।

दुष्टपस्य दु [दुष्टपस्य] दुष्ट पस्य (धुपा १ १
१)।

दुष्टपस्य न [दुष्टपस्य] १ दो पस्य (धुपा १ २
१) । २ वि दो पस्यवाला (धुपा १ १२ ३)।

दुष्टपिग्गच्छ न [दुष्टपिग्गच्छ] दृष्टिमान का
एक दुष्ट (अ २२७)।

दुष्टपोजार वि [दुष्टपोजार] दो स्थानों में
विस्थापन समवेष्ट हो सके वह (अ २ १)।

दुष्टपोजार वि [दुष्टपोजार] ऊपर केही
(अ २ १)।

दुष्टपिज्ज केही दुष्टपिज्ज (धुपा १२ १)।

दुष्टय वि [दुष्टय] १ दो विरुद्धता । २ दु
अन्य (लाय १ । धुपा ४ ६) । ३ न
बाकी लम्ह (धोप २ ३ का)।

दुष्टय दु [दुष्टय] कपिलसुर का एक राजा
(लाया १ ११)।

दुष्टरिक्ख वि [दुष्टरिक्ख] दुष्टय दुष्ट
॥ दोषने योग्य (का ७१५ टी पयल १४)।

दुष्टरिक्खणीय वि [दुष्टरिक्खणीय]
दुष्टरिक्ख ऊपर केही (का)।

दुष्टस केही दुष्टस (अ ३, १—प १
१११)।

दुष्टय दु [दुष्टय] दुष्टय कृत (पञ्च २६,
२१)।

दुष्टेय वि [दुष्टेय] दुर्गम, कष्टनीय
(अवि)।

दुष्टय दु [दुष्टय] दुष्ट लावी (अवि)।

दुष्टयय वि [दुष्टयय] १ दुष्टयय करने-
वाला (अ २ १—प १११) । २ विरुद्धा
दुष्टयोप किया क्या हो वह (अ १ १)।

दुष्टययि वि [दुष्टययि] दोष-
नीय दुष्टयय ॥ गही पस्य हुआ धनवन्ध (ला-
वना १)।

दुष्टययि दु [दुष्टययि] दुष्टययि (अ ४)।

दुष्टययि वि [दुष्टययि] दुष्टययि
करनेवाला (पयल १ १—प ७)।

दुष्टय वि [दुष्टय] केही दुष्टय (धुपा
४७१)।

दुष्टयय वि [दुष्टयय] विरुद्धा अवा-
तन कटवाही वह (धुपा १)।

दुष्टययि वि [दुष्टययि] दोष-
नीय दुष्टयय (अ १)।

दुष्टययि वि [दुष्टययि] दुष्ट से नीचे-
वाला (अ ४)।

दुष्टययि वि [दुष्टययि] विरुद्धा
प्राप्यित दोष-दोष न किया गया ॥ वह
(विपा १ १)।

दुष्टययि वि [दुष्टययि] विरुद्धा
दुष्ट से किया जा सके (अ १)।

दुष्टययि वि [दुष्टययि] पहले के लिए
अवश्य (अ ४)।

दुष्टययि वि [दुष्टययि] १ दो
किसी तरह संतुष्ट न किया जा सके । २ यदि
कट से दोषनीय (विपा १ १—प ११,
अ ४ १)।

दुष्टययि वि [दुष्टययि] विरुद्धा अवा-
तन दुष्ट से ही सके वह (अ १ १—प १
११० १११) ३ ४५४ का)।

दुष्टययि वि [दुष्टययि] दोष-
नीय दुष्टा का सके वह (अ ४)।

दुष्टययि वि [दुष्टययि] दोष-
नीय दुष्टा (अ ४)।

दुष्टययि वि [दुष्टययि] दोष-
नीय दुष्टा (अ ४)।

दुष्टययि वि [दुष्टययि] दोष-
नीय दुष्टा (अ ४)।

दुष्टययि वि [दुष्टययि] दोष-
नीय दुष्टा (अ ४)।

दुष्टययि वि [दुष्टययि] दोष-
नीय दुष्टा (अ ४)।

दुष्टययि वि [दुष्टययि] दोष-
नीय दुष्टा (अ ४)।

दुष्टययि वि [दुष्टययि] दोष-
नीय दुष्टा (अ ४)।

दुष्टययि वि [दुष्टययि] दोष-
नीय दुष्टा (अ ४)।

दुष्टययि वि [दुष्टययि] दोष-
नीय दुष्टा (अ ४)।

दुष्टययि वि [दुष्टययि] दोष-
नीय दुष्टा (अ ४)।

दुष्टययि वि [दुष्टययि] दोष-
नीय दुष्टा (अ ४)।

दुष्टययि वि [दुष्टययि] दोष-
नीय दुष्टा (अ ४)।

दुष्पुत्र नि [दुर्गुण] अमय सार ह्य
(वावा)। मुनि पुं [मुनि] मुक्ति के लिए
अपराध साधु (वावा)।

दुष्पद नि [दुर्देह] दुर्देह, विषय बहल
वर्जित से हो सक्त बहु (म १११: मुर १
१४)।

दुष्पदा देहो दुष्पदा (दुष्पा मुर १ ११५)।
दुष्पाइ नि [दुष्पादिव] मयिपयका (एव
६ २)।

दुष्पाय पुं [दुष्पाइ] दुर्भन दुर्ग नित्त
'अन्तेपुत्रि दुष्पायो न य बावन्तो परस्व
कोपयते' (वचन १ १ १४१)।

दुष्पाय पुं [दुष्पाय] दुर्ग वचन (एव ४)।

दुष्पाय नि [दुष्पाय] दुष्प न छोटे योग
वर्जित (म १२ ११: का ६०१ टी मुग
१६० ४०१: एव १११)।

दुष्पायिनि देहो दुष्पायिनि = दीर्घादि (अज)।

दुष्पायो धी [दु] दुर्भावी (वावा)।

दुष्पाय पुं [दुष्पाय] एव मयि (एव
११५)।

दुष्पिअइ नि [दुर्गुण] वरिषान-वर्जित
मान मत्ता (म २, २-पत्र ११२)।

दुष्पिअइइ [दु] [दुर्गुण] अज का मूला
दुष्पिअइइ [दु] [दुर्गुण] अज का मूला
(वावा म १२)।

दुष्पिअजानय नि [दुर्गुण] दुष्प से माने
योग बान्ते की काम 'अनुपपत्तिजान
वर्जितदुष्पिअजानय' (वचन १ १)।

हुं फटप नि [दुर्गुण] दुष्प से वर्जित बान्ते
योग वर्जित न वर्जित योग (दुर्ग ११५)।

दुष्पिअज नि [दुर्गुण] वरिषीय अज
(वचन ११ १२ वचन)।

दुष्पिअजानय नि [दुर्गुण] अज से म
मान हुन (वावा)।

दुष्पिअज देहो दुष्पिअज (एव)।

दुष्पिअज नि [दुर्गुण] दुर्भाय दुष्प
न वर्जित वर्जित हो गते का (म २,
१ टी-पत्र १११)।

दुष्पिअज नि [दुर्गुण] अज देहो
(म १)।

दुष्पिअज नि [दुर्गुण] १ स्वच्छदी
विभाय। २ निहृद वर्जित अमय काम जोष
काम (उप १११ टी)।

दुष्पिअइ नि [दुर्गुण] अज दुष्पइ,
अज (म १४५ मुर १ १४५ १४
२१)।

दुष्पिअम नि [दुर्गुण] दुष्प बान्ते को
अज (वचन १४)।

दुष्पिअम नि [दुर्गुण] दुर्ग अजान
(वचन १ १२)।

दुष्पिअय नि [दुर्गुण] १ अज वरिष से
विभा दुष्पा दुष्पिअयविभायिनि विरिषी
(मुर ४ १२ ११ १४१)। २ अजुगिदिव
अजुगिदिव (म १)।

दुष्पाय नि [दुर्गुण] दुर्देह दुष्प से छोटे
योग (म १ २ ४ ४४ ११ ११) वचन
१५)।

दुष्पाय नि [दु] दुर्भाय दुष्प से माने
योग (म १ २)।

दुष्पइ न [दुस्सह] विषय निरति
(अज)।

दुष्पइ देहो दुष्पइ (अज)।

दुष्पय नि [दुष्पय] दो बार मुने से हो
उने अन्तेपुत्रि अज बार सेने की अजुगिदिव
(वचन १२ ०)।

दुष्पय नि [दुष्पय] दुर्भाय (म १
४-पत्र ११२)।

दुष्पयदुष्पमा देहो दुष्पयदुष्पमा (अज
१ ०)।

दुष्पयदुष्पमा देहो दुष्पयदुष्पमा (म १)
०)।

दुष्पमा देहो दुष्पमा (अज १ ० अज)।

दुष्पइ देहो दुष्पइ (म १ ११२ मुर १२,
११० ११६)।

दुष्पाइ नि [दुष्पाय] दुष्पाय, अज-अज
(वचन ८९, ११)।

दुष्पिअज नि [दुर्गुण] दुर्गुण
(वचन १४, ११)।

दुष्पिअज देहो दुष्पिअज (वचन)।

दुष्पिअज नि [दु] अज का अजुगिदिव
(म ४१)।

दुष्प अज [दु] देव बान्ता। वा
अजमान (म १ १२ १२)।

दुष्पइ न [दुर्गुण] अजुगिदिव (अज
२)।

दुष्पइ नि [दुर्गुण] अजुगिदिव अज
वा अज दुष्प (म २११ वरिष १०)।

दुष्पइ नि [दुर्गुण] अज देहो (मुर
१ ११)।

दुष्पइ पुं [दुष्पय] अजुगिदिव अज
अजुगिदिव वा अज (म १२६)।

दुष्पइ नि [दुष्पय] दुर्भाय (म १४)।

दुष्पइ नि [दुष्पाय] दुष्पइ (मुरा =
१६६)।

दुष्पइ देहो दुष्पइ (म ४)।

दुष्पइ नि [दुष्पय] दुष्पाय दुर्ग
(वचन वचन १)।

दुष्पइ देहो दुष्पइ (म ४)।

दुष्पइ नि [दुष्पय] दुष्पाय दुर्ग
(वचन वचन १)।

दुष्पइ नि [दुष्पय] दुष्पाय दुर्ग
(वचन वचन १)।

दुष्पइ नि [दुष्पय] दुष्पाय दुर्ग
(वचन वचन १)।

दुष्पइ नि [दुष्पय] दुष्पाय दुर्ग
(वचन वचन १)।

दुष्पइ नि [दुष्पय] दुष्पाय दुर्ग
(वचन वचन १)।

दुष्पइ नि [दुष्पय] दुष्पाय दुर्ग
(वचन वचन १)।

दुष्पइ नि [दुष्पय] दुष्पाय दुर्ग
(वचन वचन १)।

दुष्पइ नि [दुष्पय] दुष्पाय दुर्ग
(वचन वचन १)।

दुष्पइ नि [दुष्पय] दुष्पाय दुर्ग
(वचन वचन १)।

दुष्पइ नि [दुष्पय] दुष्पाय दुर्ग
(वचन वचन १)।

दुष्पइ नि [दुष्पय] दुष्पाय दुर्ग
(वचन वचन १)।

दुष्पइ नि [दुष्पय] दुष्पाय दुर्ग
(वचन वचन १)।

दुष्पइ नि [दुष्पय] दुष्पाय दुर्ग
(वचन वचन १)।

दुष्पइ नि [दुष्पय] दुष्पाय दुर्ग
(वचन वचन १)।

दुष्पइ नि [दुष्पय] दुष्पाय दुर्ग
(वचन वचन १)।

दुष्पइ नि [दुष्पय] दुष्पाय दुर्ग
(वचन वचन १)।

दुष्पइ नि [दुष्पय] दुष्पाय दुर्ग
(वचन वचन १)।

दुष्पइ नि [दुष्पय] दुष्पाय दुर्ग
(वचन वचन १)।

दुष्पइ नि [दुष्पय] दुष्पाय दुर्ग
(वचन वचन १)।

दुष्पइ नि [दुष्पय] दुष्पाय दुर्ग
(वचन वचन १)।

दुष्पइ नि [दुष्पय] दुष्पाय दुर्ग
(वचन वचन १)।

दूआ रेयो दूआ (पर) ।

दूइ रेयो दूई । पयसय न [पयसाक]
एक णेय (उवा) ।

दूअ घर [दू] पयस करना बिहरना
भावा । दूअइ (भावा) । बह-दूअज्जैव,
दूअभाय (धीन) छाया । १ भा
भावा; महा । हेइ दूअज्जिचय (अव) ।

दूअच न [दूअस्य] दूती का कार्य दूतीपन
(अव ११ ४२) ।

दूइ की [दूती] । दूइ के काम में निगुह की
हई की समाचार-हृदिछो दूतयो (हे ४
१६०) । २ वैन साधुओं के सिधे मित्रा का
एक दोष (हा १ ४—पय ११६) । बिह
दू [पयइ] समाचार पहुँचावे सिधे हई
मित्रा (भावा २ १ ६) । रेयो दूइ ।

दूय वि [दूय] दूयन किया हुआ 'हा वि-
क-यसं दूयो (१ छो) मए दुर्ग' (स ७९६) ।

दूय दु [दू] हली हावी (हे ४, ४४ पर) ।
दूय (अप) रेयो दुवज (विप) ।

दूयावड वि [दू] । अशाय । २ अशाय,
लगाव लागव (हे २, १९) ।

दूस घर [दूअय] दूसरा दुखित होना
सम्हा दुखीरि दुखिमा पहिअइ ब दुखनछो'
(भा १२) ।

दूभा रेयो दुभमग (एवा १ ११—पय
१६९) ।

दूभावा न [दीर्माय] दुष्ट भाव्य लपटा
नवीर (अ ४ ११) ।

दूम घर [दू, दायय] परीक्षा करना,
सोचन करना । दूमइ हुमेइ (मुग ८) ब्रथा
हे ४ २१) । बर्न इमिअइ (अवि) ।
बा दुमैन (ने १ ११) । कइइ दूयि
अन (मुग २६९) ।

दूम रेयो दूम = बलम् (हे ४ २४) ।

दूमर [वि [दायक] अशाय-यना धीन-
इमग] बलर (एव १ १; अय) ।

दूमन वि [दायक] अशाय करनेवाला (मुग
१ १ २ २०) ।

दूमग न [दयन दावन] बरिताव बाइव
(एव १ १) ।

दूमन न [पयअन] खरेव बरला (अव ४) ।

दूमग रेयो दुम्मग = दुर्मनस (मुग १
२ २) ।

दूमणाइअ वि [दुर्मनायित] जो अशय हुआ
हो अइअ-अनसक (भा—भावा १ ६६) ।

दूमिअ [दूय, दायय] संतापित पीड़ित
(मुग १ १११ २१) ।

दूमिअ वि [पयअन] खरेव भिया हुआ (हे
४ २४ अय) ।

दूयाअर न [दू] कला-विशेष (स १ १) ।

दूर न [दूर] । अतिष्ठत अमयीर 'खेव
बस बिरो बया दूर' (कुमा) । २ अतिष्ठत
अयय 'दूरअर अउते' (कुमा) । ३ वि
दूरिअत अमयीरवर्ती (मुग १ २ २) ।

४ अययिअ अययिअ (अउर) । ५ वि
[ग] दूरती अमयीरवर्ती (अ ४४८ टी-
कुमा) । गाइ गाइ वि [गयिक] ।

दूर बानेवाला । सोचने खादि वेकसक में
अयय होनेवाला (हा ८) । अउर वि
[अ] अयय दूर (अए १७) । अय वि
[अ] दूरिअत दूरती (कुमा) । अयिअ
दु [अय] दोष बल में अयिक को प्राप्त
करने की योग्यतावाला बीव (अ ७२८
टी) । य रेयो ग (मुग १ २, २) ।

अयि वि [अयि] दूर में अयनेवाला
(वि ६४) । अयय वि [अययिक] अयिक-
वाली (भावा) । 'अयय दु [अय] । दूर
अयिअ अयय । २ भाव । ३ अयिक का भाव
(भावा) ।

दूरणाइअ रेयो दूर-गाइअ (धीन) ।

दूरनरिअ वि [दूरअययिअ] अययय अययिअ
(अ १२८) ।

दूरअर वि [दूरअर] दूर अययवाला (अमो
१) ।

दूरय घर [दूरय] दूरिअत की अउर
भायुव होना दूरती भायुव पड़ना । बह
दूरययमा (अउर) ।

दूरिअय वि [दूरअय] दूर किया हुआ
(भा २८) ।

दूरिअय वि [दूरिअय] जो दूर हुआ हो
(कुमा १२८) ।

दूरन वि [दूरन] दूरिअत दूरती
(अय ४) ।

दूरन रेयो दुसइ (संवि १७) ।

दूस घर [दूय] दूरिअत की अउर
भायुव होना दूरती भायुव पड़ना । बह
दूरययमा (अउर) ।

दूरिअय वि [दूरिअय] जो दूर हुआ हो
(कुमा १२८) ।

दूरन वि [दूरन] दूरिअत दूरती
(अय ४) ।

दूस घर [दूय] दूरिअत की अउर
भायुव होना दूरती भायुव पड़ना । बह
दूरययमा (अउर) ।

दूस घर [दूय] दूरिअत की अउर
भायुव होना दूरती भायुव पड़ना । बह
दूरययमा (अउर) ।

दूस घर [दूय] दूरिअत की अउर
भायुव होना दूरती भायुव पड़ना । बह
दूरययमा (अउर) ।

दूस घर [दूय] दूरिअत की अउर
भायुव होना दूरती भायुव पड़ना । बह
दूरययमा (अउर) ।

दूस घर [दूय] दूरिअत की अउर
भायुव होना दूरती भायुव पड़ना । बह
दूरययमा (अउर) ।

दूस घर [दूय] दूरिअत की अउर
भायुव होना दूरती भायुव पड़ना । बह
दूरययमा (अउर) ।

दूस घर [दूय] दूरिअत की अउर
भायुव होना दूरती भायुव पड़ना । बह
दूरययमा (अउर) ।

दूस घर [दूय] दूरिअत की अउर
भायुव होना दूरती भायुव पड़ना । बह
दूरययमा (अउर) ।

दूस घर [दूय] दूरिअत की अउर
भायुव होना दूरती भायुव पड़ना । बह
दूरययमा (अउर) ।

दूस घर [दूय] दूरिअत की अउर
भायुव होना दूरती भायुव पड़ना । बह
दूरययमा (अउर) ।

दूस घर [दूय] दूरिअत की अउर
भायुव होना दूरती भायुव पड़ना । बह
दूरययमा (अउर) ।

दूस घर [दूय] दूरिअत की अउर
भायुव होना दूरती भायुव पड़ना । बह
दूरययमा (अउर) ।

दूस घर [दूय] दूरिअत की अउर
भायुव होना दूरती भायुव पड़ना । बह
दूरययमा (अउर) ।

दूस घर [दूय] दूरिअत की अउर
भायुव होना दूरती भायुव पड़ना । बह
दूरययमा (अउर) ।

दूस घर [दूय] दूरिअत की अउर
भायुव होना दूरती भायुव पड़ना । बह
दूरययमा (अउर) ।

दूस घर [दूय] दूरिअत की अउर
भायुव होना दूरती भायुव पड़ना । बह
दूरययमा (अउर) ।

दूस घर [दूय] दूरिअत की अउर
भायुव होना दूरती भायुव पड़ना । बह
दूरययमा (अउर) ।

दूस घर [दूय] दूरिअत की अउर
भायुव होना दूरती भायुव पड़ना । बह
दूरययमा (अउर) ।

दूस घर [दूय] दूरिअत की अउर
भायुव होना दूरती भायुव पड़ना । बह
दूरययमा (अउर) ।

दूस घर [दूय] दूरिअत की अउर
भायुव होना दूरती भायुव पड़ना । बह
दूरययमा (अउर) ।

देवकी देवी देवई । धन्य वृ [मन्त्र] धन्य (देवी १८१) ।

देवय नि [देवय] देव-यन्त्रणी (पत्र १२२) ।

देवय न [देवय] देव देवता (गुप्त १२७) ।

देवय देवी देव = देव (यशः, यशः १ १०) ।

देवया की [देवया] १ देव यमर (अभि ११७) प्राण । २ परमेश्वर परमप्राण (पंचा १) ।

देवर देवी देवर (ह १ १ गुप्त ४८२) ।

देवराणी देवी देवराणी (ह १ २१) ।

देवसिय नि [देवसि] विरज-संज्ञकी (धोष २२१) १११ गुप्त ४११) ।

देवसिमा की [देवसि] एक पवित्रता की

निमात्रा कुपय नाम देवता का (पुण्य १७) ।

देसि वृ [देसि] १ देवी का स्त्री, राज

(ह १ ११२ छाया १ = प्राप्ति १ ७) ।

२ एक प्रसिद्ध वैशाखाई वीर प्रसन्न (अन २१) । मूरि वृ [मूरि] एक प्रसिद्ध वैशा

काई वीर प्रसन्न (अन १ २४) ।

देसि वृ [देसि] देवविमान-विशेष

(देव १२) ।

देसिहि की [देसि] १ देव का निमान ।

२ वृ एक प्रसिद्ध वैशाखाई वीर प्रसन्न

(नयः) ।

देसिय नि [देसि] देव-संज्ञकी (गुर ४

२११) ।

देसि वृ [देसि] एक प्राचीन शक्ति (पुत्र

१ १४ १) ।

देवी की [देवी] १ देव-की (पंचा २) । २

पत्नी, राज-पत्नी (गिता १ १२) । ३ कुली,

वार्त्ता (नयः) । ४ राजवंश के राजा वीर

प्रसन्न हैं जिन-देव की भत्ता (नय १३१

१२२) । ५ राजवंश के वीर-प्राणी (नय १३२) । ६ एक विद्वान्-प्राण (पञ्च

१ ४) ।

देवीचय नि [देवीचय] देवी से बगाना हुआ

धर्मविमान-पत्नी वपनी वीर देवीचयी

मोर्छे (य १११) ।

देवचक्रिका की [देवचक्रिका] देवी की

हस्त, देवी की शक्ति (ह ४ ४) ।

देवदर वृ [देवदर] राज देवी का राजा

(गुप्त) ।

देवी वृ [देवा] समुद्र-विशेष (वीर १

ह) ।

देवीवधाय वृ [देवीवधाय] भरतकेन में

धामनी जन्मपत्नी काल में होनेवाले कैदमें

विमान-वध (य १२४) ।

देवय देवी देवय = देवय (य १०१ टी) ।

देवय देवी देवय (या ११२ महः गुर ११

४ अभि ११७) 'देवी व देवो छाया

यशापहोयो विराण' (य १२०) । छा

यज यजु नि [यज] भौतिकी योजि

राज की कल्पनाला (यज कय) ।

देवयज्जगुष } देवी वयज-ज (गुप्त १०) ।

देवयज्जगुष } देवी वयज-ज (गुप्त १०) ।

देस वृ [देस] एक ही हाथ परिमित बली

'हृत्पत्र वरु देवी' (नि १४४) । 'देस

वृ [देस] की हाथ से कम बली (नि १४४)

१४४) । राय वृ [राय] देव-विशेष

(छाया १ ३ १ ७) ।

देस वृ [देस] १ कथक कथक के ।

२ कलसा । वृ देसवर्त (गुप्त ४८२)

गुर १३, २४७) । वंश वसिष्ठा (ह १

४) ।

देस वृ [देस] १ वंश भाग (ह २ १

कय) । २ देव वयज (ह २ १ कय)

प्राप्ति ४२) । ३ वयज (नि १ ११) ।

४ स्थान जग (ह ३ १) । कदा की

'कदा' कलस-वयज (ह ४ १) । कदा

देवी 'यज' (नि १ ११) । जह वृ

'यज' व्यापक व्यापक के वयज

(कय २ टी याज) । यज नि [यज]

देव की शक्ति की कल्पनाला (य १७२

टी) । मासा की [मासा] देव की भौती

(ह १) । मूरण वृ [मूरण] एक

केरलवासी मूर्छि (पञ्च ११, १२२) ।

वाह वृ [वाह] वयज, वयज, योग

वयज (यज ११ २४) । राय नि

'राय' देव का राजा (गुप्त ४५२) ।

वयजसिय देवी वयजसिय (गुप्त ४५२) ।

'विरज की [विरज] व्यापक वयज के

मूरण का हस्त कलस, दिना याजि का

प्राप्ति स्थान (पंचा १ १) । 'विरज नि

'विरज' व्यापक व्यापक । २ न. वयज

गुप्त-वयज (यज २२) । 'विरज नि

'विरज' हस्त याजि में प्राप्ति हस्त

कल्पनाला (यज २ १) । 'विरज नि

'विरज' वही वयज (छाया १ ११—

यज १७१) । कलास न [कलास]

वयज का एक हस्त (गुप्त ४५२) । वयज

सिय न [वयजसि] वही वयज (यज

गुप्त ४५२) । हिय वृ [हिय] राजा

(यज ११ २४) । हिय वृ [हिय

पति] राजा (ह ४) ।

हंस देवी वंस न हंस (यज ११) ।

हंसवर्त नि [हंसवर्त] निमान देव का

विशेष (यज १ ११ टी गुप्त ४५२) ।

हंस देवी वंस न हंस (यज ११) ।

हंस न [हंस] कय, उपदेव, प्रमन्न

(ह १) । २ नि उपदेव प्रमन्न । की

जी (यज ७) ।

हंस की [हंस] कय, उपदेव प्रमन्न

(यज) ।

हंस नि [हंस] १ उपदेव, प्रमन्न

(यज १) । २ विमान-कलास कल्पनाला

(गुप्त १०१) ।

हंसवय नि [हंसवय] 'हंसवय' हस्त में

वयज हुआ हंसवयज का' (यज २ ३,

१ ७) ।

हंसि नि [हंसि] देव कल्पनाला (यज

११) ।

हंसि १ नि [हंसि] १ वंश प्राप्ति

देसिज । प्राप्ति (यज २४७) । २

विमान-कलास । ३ उपदेव (नि १४२,

यज १) ।

हंसि नि [हंसि] देव में कयज,

देव संज्ञकी (यज ७१ टी यज १) । स

वृ [राज] देवीवयज का कय (यज १)

हंसि नि [हंसि] १ कयज काटि ।

२ उपदेव (ह २२) प्राप्ति २१, ११३,

यज) ।

हंसि नि [हंसि] हस्त-कयली

विशेष (यज २ १ ७) ।

हंसि नि [हंसि] १ वयज प्राप्ति

(यज २४ ११, यज ११३) । २ उप

देव वयज (नि १४२) । ३ प्राप्ति प्राप्ति

मे ग्वा ह्या (सुर १ ११२) । 'सहा बी
[समा] बर्गाला (अ ५ ११२) ।

वैसिञ बेको वैसिञः 'पचिदम बसिदं सधं'
(पवि मा १) ।

वैसिञय पि [वैसिञयम्] बिजने उपदेश
बिया हो बह (सुप १ २, २४) ।

वैसिञय बेको वैसिञ = वैस्य (हह ३) ।

बसी बी [बेसी] भापाबिरोप परल्लत प्राचीन
प्राइत भापा का एक वेद (ह १ ४) ।

भासा बी [भापा] बही घमं (छाया १
१: क्षीय) ।

बेमुण पि [बिरोन] ब्रुम कम धंरा की वसी-
बत्ता (मम २ १ ३ व २०) ।

बेरस पि [हरय] १ बेकने योग्य । २ बेकने
को राज्य (स ११६) ।

बेह बेको बेकल । बेई, बेए (स १६ १;
पि ११) । बह बेहमय (मा ६ ११) ।

बेह पुंन [बिह] १ शरीर, बाय (बी २०: कुञ
१२३: प्राप् ६३) । २ पुं मिश्रण-क्रियेय
(हका वल्ल १) । रय न [रत] मैनुम
(बमा १ ०) ।

बहबलिया बी [बिहयलिया] मित्रा-भुति
भीच बी धामीबिया (छाया १ १९—पत्र
१६६) ।

बेहणी बी [बे] पंन बर्बन बाण कोरो
(ह ६, ४०) ।

बहरय (पत्र) न [बिहगृहक] बेह-मतिर
(बमा १ ०) ।

बहली बी [बिहली] बीवट, हार के लीचे की
कनही (वा २२३: दे १ ६३, कुञ १०१) ।

बेहि पुं [बिहिन] भासा भीच (स १६३) ।

बहु (भा) न [बिहकुल] बेर-न्याम, मतिर
(मति) ।

बा घ [बिया] बी प्रार से को ठण (मुग
२११: ११२) ।

बा पि ब [बि] से प्रन मुम (ह १;
६४) ।

बा पुं [बोस] हाय बाउ (निम ११३
रंभा वणु) ।

बाभई पी [बिपनी] एक्क-विरोन (पिय) ।

बाभाइ [बे] इज, ईन (ह २, ४६) ।

बोइ बेको बो—विभा (हह १) ।
बोयुर [बे] बेको बोयुर (वह) ।

बोकिरिय पि [बिक्किय] एक ही समय में दो
बिमारों के धन्य की मानेबत्ता (अ ७) ।

बोकर बेको बुकर (मति) ।

बोक्सार पुं [बिजअर] एण्ड नुवक
(हह ४) ।

बोम्यंड बेको बुम्यंड (मति) ।

बोर्लंड अ पि [बिर्लण्डस] बिजने दो ठुके
फिय गए हों बह (मति) ।

बोर्गल्ल पि [बुगुप्पिय] कृपा करनेबत्ता
(पि ७४) ।

बोगस न [बोगस्य] १ बुर्दि बुर्दा (पंन
४) । २ बाह्य निर्बनता (मुग २३) ।

बोगुलि बेको बागलि (पि २१३) ।

बोगुन्य पुंन [बोगुन्दक] एक बेर-विमान
(बेल्ह १४२) ।

बोगुदुय पुं [बोगुन्दक] सचन-भातोय बेर
क्रियेय (मुग ११) ।

बोग्ग न [बे] मुम गुम (ह ३, ४६: वह) ।

बोग्ग बेको बुग्ग (सुर ० १११) । कर
पि [कर] बुर्दि-मक (पत्र ७१ १) ।

बोग्ग बेको बोग्ग (वा ७१) ।

बोग्ग पुं [बे] हापी हली (पि ४११
बोग्ग) १ पर नाम महा लक्ष्य ४ स
बोपट (४६१) ।

बोवुड पुं [बिबुड] विचार कर क एक
छाया का नाम (पत्र ३, ४३) ।

बाय पि [बितीय] बुवप (मम २ ० बिपा
१ २) ।

बाय न [बोय] इल्ल, बूत-बर्ब (छाया १
० वा म४) ।

बोय घ [बिस्] बी बाप, से बत पर
न पिपिपिता बोर्ब सन्ध-सर्वतल (सुर
२ १६) ।

बोयंग न [बितीय] १ इयरा धन । २
पक्या ह्या वाक (हह २) । ३ तीपन,
कही (बीच १६० मा) ।

बोमीह पुं [बिम्बिह] १ बुर्न : २ बाप
(सुर १ २) ।

बोमक पि [बाक] बोन्दे योग्य (बाभा २
४ २) ।

बोण पुं [बोण] १ भुवर्द के एक मुमसि
धावाम बी पाएव्व बीर कीरों के पुक से
(छाया १ १६: बणी १ ४) । २ एक
प्रकार का परिमाण (बी २) । सुह न
[मुय] नग, जल बीर स्वम के मार्गबत्ता
गहर (पह १ ३: वण्ट बीर) । 'मिह पुं
[मिह] मेर-विरोप, जिसकी बाप से बही
बसरी पर बाय बह बर्पा (बिदे १४२०) ।

मुया बी [मुया] सवय की की ना
नाम बिरक्या (पत्र १४ ४४) ।

बोणअ पुं [बे] १ बामुक मीन का मुजिया ।
२ क्षानिक हलवाह, हल जोतनेबत्ता हलवाह
(ह ३ ३१) ।

बोयथा बी [बे] घरा न भुमकनी (ह ३
३१) ।

बोणी बी [डोणी] १ नौका छोटा जहाज
(पह १ १ ३ २ ४० बम्म १२ टी) ।

२ वाणी का बहा कृता (मणु मुप ४४१) ।

बोचबी बी [बुस्सटी] कु मदी 'एकतो
वर्ष की बतरी बोचबी बिपदा' (अ ३१
टी मुग ४११) ।

बोय ॥ [बोस्स] बुस्सवा बुर्दा बुर्दि
(वह ४ ७) ।

बोराय पि [बुर्दान] कुच से बने योग्य
(सिप ४) ।

बारिअ पुं [बे] बर्ब-बूत बर्बे का बत्ता
ह्या बायन-क्रियेय (ह ३ ४६) ।

बोवु पि [बोग्ग] बोवुन-वर्ब (स १ १ टी) ।

बोयघ } न [बोयक] एक्क-विरोप
बोयक } (पिय) ।

बोयार पुं [बिपायार] विचारण से भग
करता (अ ३ १—पत्र १४१) ।

बानिचम पि [बुर्दिचम] बायन कट से
बनने योग्य (मम ७ १—पत्र ३ ३) ।

बोयुर पुं [बे] बुम्बुद स्वर्न-मायक (पह) ।

बाय्यसिय बेको बुचसिय (भाभा २ ३
३ ३) ।

बाय्यस न [बायस्य] बुर्बता (पि २००;
मम ४२) ।

बाभाय पि [बिभाय] से भागरा, से
बलभाभा (अ १४० टी) ।

दोमणसिय नि [दोमैणसियः] शिखर शोक
 वस्तु (हा १, २—यम १११) ।
 दोमणस्य न [दोमैणस्य] वैभवस्य, दोष
 मय नो दुष्ठा (सुम २, २ क२१ क३) ।
 दोमामिभ नि [दोमैसिभः] दो माय का
 (यम मुर १४ २२) । बी. आ (सम
 २१) ।
 दोमिय (यम) दोमो वृमिभ = दारिद्र्य (यम) ।
 दोमिखी बी [दोमिखी] निनिन्विण्य (यम) ।
 दोमुह नि [दोमुह] १ दो दुर्भिक्षता । २
 दु दुर्भिक्ष्य (यम) । ३ दुर्भिक्ष (भा २२१) ।
 दोर दु [दो] १ दोष बाध मूल (यम ४
 २) । २ दुःख २२९ मुर १, १११) । २ दोषी
 एवी (मोष २३२ २४ य) । ३ कटि-दुःख
 (हे ३ १८) ।
 दोरिया दोरी दोरी (मिरि २९) ।
 दोरी बी [दो] दोरी एवी (भा १९) ।
 दोष मर [दोष] १ दिला । २ भूतना ।
 दोषद (हे ४ ४८) । दोषि (यम) ।
 दोषयम न [दोषयम] भूतन द्योतन
 (हे ८ ४३) ।
 दोषया } जी [दोष] चूरा दोषोमा (मुग
 दोष्य } २८६ मुग) ।
 दोस्मड नि [दोस्मड] १ दिला हुआ ।
 २ संतुष्टि (मिमा ११६) ।
 दोस्मडमण नि [दोस्मडमण] १ दिला
 हुआ । २ संतुष्टि कला हुआ (मुग ११७
 मर) ।
 दोमिया दोरी दोष्य (मुर १ ११६) ।
 दोमिर नि [दोमिर] भूतनेमा (मुग) ।
 दोष दु [दोष] एक यमो वरिष्ठ (यम) ।
 दोष्य बी [दोष्य] राजा दुष्य भी यम
 पावक-यमो (यम १ १९ का ६४ बी,
 यम) ।
 दोषयम दोरी दुषयम = दियम (हे १
 २४ मुग) ।
 दोषर (यम) दोरी दुषर (यम) ।
 दोषारिभ } १ [दोषारिभ] दारुण वर
 दोषारिभ } बार दारुण (मिह ६, ८, ९, १०
 ११ म ६ ११ मुग ४२६) ।

दोविह दोरी दुविह (यम ११ म १) ।
 दोनेली बी [दो] दारुण का भोवन (हे ४,
 ५) ।
 दोषयम दोरी दोषयम (हे ४ ४९, ५
 ८०) ।
 दोस दोरी दुस = दुस्य (मोष, यम ७९८ टी) ।
 दोस दु [दो] दुषय दुषय दो (मोष
 मुर १ ७३) दारुण ६ ; प्रमू ११) । "मु
 नि [दो] दोष का बालकार, विज्ञान (मि
 १ ४) । इ नि [दो] दोष-मालका भूषण
 पोखी दोषी दुष (मुग २२१) ।
 दोस दु [दो] १ यमो प्राभा (हे ४ २९) । २
 मोष मोष दुषय (हे ४ २९ य) । ३ दोष
 दोष (मोष) यमो हा १ यम ११ मुष १
 १९) यम २३ मुर १ ३३) यमो यमो
 मुष ३७१) ।
 दोस दु [दोस] हाव इल बाहु (मि
 २, १) ।
 दोसमिज्वर दु [दो] यम यमो यम (हे
 ४, २१) ।
 दोमा बी [दोमा] यम यम (मुर १ २१) ।
 दोमाकण नि [दो] मोष मोष (हे ४, २१) ।
 दोमाणिज नि [दो] निमल मिमा हुआ (हे
 ४ २१) ।
 दोमायर दु [दोमायर] १ यम, यम (यम
 ७२) २ यम २७२) । २ दोषी बी बाल
 दुष (मुग २७२) ।
 दोमायर दु [दो] दोमायर] यम यम
 (यम) ।
 दोमासय दु [दोमासय] दोष-दुःख, दुष
 (यम ११७ ४१) ।
 दोस नि [दोस] दोषनामा, दोरी (मुष
 ४३८) ।
 दोमिभ दु [दोमिभ] यम ना यमो
 (भा १९) यम १९२) ।
 दोमिय [दो] दोरी दोषी (यम २ २)
 दोमिया [दो] दोष दोरी (भा २, ४—यम
 १) । या बी [दो] यम भी एक यम
 यमो (भा ४ १ २४) लाभा २) ।
 दोमिनी बी [दो] दोषी] यमो, यम
 यमो (हे ४, ५) । यमिदुष्य दोषी
 यमो (मुष ४१) ।

दोसियमण न [दोसियमण] दोरी यम
 (यम) ।
 दोसिख नि [दोसिय] दोष-दुःख (यम
 ११ टी) ।
 दोसिख नि [दो] दोष-दुःख, दोरी (मि
 १११) ।
 दोसीय न [दो] यम का दोरी यम (यम २,
 ४) यम १४२) ।
 दोसीख नि [दोसीख] दुष यमो यमो (यम
 ७९) ।
 दोसीख नि न [दोसीख] यमो
 १२ (यम) ।
 दोष एक [दोष] दोष कला । यम दोष
 (यमो ४) ।
 दोष १ [दोष] दोष (हे २ ९४) ।
 दोष नि [दोष] दोष दोष (यम ६) ।
 दोष दु [दोष] दोषी (यम यम) ।
 दोषमा न [दोषमा] दुष यमो दुष
 यमो यमो (यम ४) मुर १ १७४ या
 ११२) ।
 दोषिया नि [दोषिया] दुष यमो यमो
 यमो यमो यमो यमो (भा १९) ।
 दोषयम [दोषयम] दोषा दुष निमल
 (यम १ १) । दोषयम न [दोषयम]
 दोषयम (मिह २) ।
 दोषयमोरी बी [दो] १ दोषयमोरी बी (हे
 १ १ यम २, २९) । २ यमो यमो यमो
 यमो यमो बी यमो यमो (हे ४, २९) ।
 दोष्यो बी [दो] यम यम, यम (हे ४
 ४८) ।
 दोष्य नि [दोष्य] दोषयमो (भा ४२९) ।
 दोष्य नि [दोष्य] दोष यमो यमो, यमो
 (भा १२७ टी यम) ।
 दोषयम [दोषयम] यमो यमो यमो
 (हे १ २१७ २२१ यम) ।
 दोषा य [दोषा] यमो यमो (हे १ २७) ।
 दोषादुष नि [दोषादुष] यमो यमो यमो
 यमो यमो यमो (हे १ २७ मुग) ।
 दोषादुष न [दो] यमो यमो यमो (हे ४,
 ५) ।
 दोषि नि [दोषि] यमो यमो, यमो यमो
 (भा ११६) ।

बोहि नि [बोहिन्] बोह करेबाता (यधि) ।
बोहिण्य नि [हिमिन्] बिहण्ड भिषका
बोहुका क्रिया गया हो बह (प्राक् २१) ।
बोहिन् वुं [बोहिन्] लड़की का लड़का वाली
(हे १ १ २, गुग २६४) ।

बोहिणी की [बोहिणी] लड़की की लड़की
नलिनी (पहा) ।
बोहुल वुं [बु] सब मुलक मुलस (हे ३,
४६) ।
होम रेकी दोस = (हे) अजियस्यहोयो
(कुप १) ।

ब्रधन (धय) न [बि भय] मय डर, भीति
(हे ४ ४२२) ।
ब्रह्म वुं [ब्रह्म] बड़ा बसतय सरोवर, मीन
(हे २ = कुमा) ।
ब्रेहि (भा) की [ब्रहि] नवर (हे ४ ४२२) ।
ब्रोह रेकी वाह = ब्रोह (पि २६५) ।

॥ इय विरियाइयसदमहण्यमिन् ब्यापयसद्वचनलो

पंचनीस-मो सरणी समयो ॥

घ

घ वुं [घ] बल-स्थानीय व्यन्जन बहो-विरोध
(प्राय प्राप्ता) ।

घन रेकी घन (वा २) ।

घन्य वुं [घ्यान्स] काक कीया (ज ५२३;
पंचा ११) ।

घंग वुं [वे] मौप प्रमद, मय (हे ३, २७) ।

घंत न [घ्यान्त] मन्त्रकार, धिचि (गुर १
१२; क ११) ।

घंत न [घ्यान्त] बजान (केन्द्र १) ।

घंत न [वे] घटि घटियन घट्यन्त 'बंठ-
पि मुपलमिन्' (पच २६; बिह ३ १६,
५६ १) ।

घंत नि [घ्यान्त] १ घीन में लपाया हुआ
(खाना १ १ भीन पण १ १७ बिहो
३ २६ धनि १४) । २ घन्य-मुक्त, उन्मिन्न
(पिह) ।

घंभा की [वे] नगना शरण (हे ३, २७) ।

घंमुक्य न [घंमुक्य] कुबयत का एक
नगर, जो घान कल 'बहुका' नाम से प्रसिद्ध
है (गुग ६२८; कु २) ।

घंमोक्षिय (घर) नि [अमित] कुमाया हुआ
(वण) ।

घंस घक [घंस] नट होना । घंसह, घंसह
(पह) ।

घंस घक [घंसय] १ गाय करना । २
बुर करना । घंसह (गुय १ २ १) । घंसह
(वम ३) ।

घमाह घक [मुय्] व्याप करना कीटना ।
घंसाह (हे ४ ६१) ।

घंसाहिय नि [मुय्] परित्यक्त छोड़ा हुआ
(कुमा) ।

घंसाहिय नि [वे] व्यंगत नट (हे ३,
३६) ।

घगघगा घक [घगघगाय्] १ 'बन्-बन्'
घावा करना । २ बसना, धसिराय बसना ।

बह घगघगत (खाना १ १; पचम १२
३१ यधि) ।

घगघगाइह नि [घगघगायित] 'बन्-बन्'
घावाघावा (कय) ।

घगघगा रेकी घगघगा । बह घगघगाइ-
माण (पि २३८) ।

घगीकय नि [वे] बघाया हुआ घटकल
प्रतीति 'कम्पी बाकीकयो ज पणोरो' (वा
१४) ।

घह रेकी घय = घन (कुमा) ।

घहु रेकी बिहु (हे १ ११; पचम ४६,
२६; कुमा १ ५२) ।

घहुमुय् } वुं [घटमुय्] घना हुआ का
घहुमुय् } एक पुन (हे २ २४७ खाना
१ १६ कुमा पह पि २७५) ।

घह न [वे] बह मने से नीचे का शरीर
(गुग २४१) ।

घहहिय न [वे] मर्दान मर्दान (गुग
१७६) ।

घय न [घन] १ बिच विनय स्वावर
जंगन सम्यति (उत ६; सुम २ १ प्राप्ता
३१ ७६ कुमा) । २ गणित धनि वेद
या परिच्छेद इत्य-विनयि ॥ बीरनन याधि
हे जय-विजय योग्य पदार्थ (कय) । ३ वुं
बुवेर, बन्-यधि 'बुव यो विट्ठी पणोभन
बणकमिधो' (गुग ३१) । ४ स्वनाम-व्याप
एक योही (उत ३३२) । ५ बय सार्वहाह ना
एक पुन (खाना १ १८) । इत इह
नि [बन्] यही बननामा (कुप २४३,
पि ३३२ धनि १) । 'गिरि वुं [गिरि]
एक कैम याधि जो बज्रस्वामी के पिता से
(कय उत १४२ टी) । गुप्त वुं [गुप्त]
एक कैम मुनि (धायम) । गोब वुं [गोव]
बय सार्वहाह ना एक पुन (खाना १ १८) ।
'बहु वुं [बहु] एक कैममुनि (कय) ।
यधि वुं [यधि] गुगना बन्-यध, हेव

धरमा वुं [दे] करास (दे २ २८) ।

धरम वुं [धरम] १ नाम-कृतार बेणो वा
कणिण-रिदा का इत्त (छा २ ३ धीय) ।
२ धरुबेणोय राजा धरम-क-मुत्ति का एक
पुत्र (धर १) । ३ धेरि-विरोप (धर ७२८
टी। मुत्ता २२६) । ४ म. धारण करना
(मे १ १ धर्य १; बजा ४८) । ५ सोलह
सौ के का एक धरिमण (जी २) । ६ धरना
देना, संबन्ध-पूर्वक उपदेशन (धर १८) । ७
तोमने का साधन (जी २) । ८ धि धारण
करनेवाला (हुमा) । ९ धम वुं [धम]
बरोल्ले वा उपास-पूर्वक (छा १) ।

धरणा की [धरणा] बेको धारणा (एहि) ।
धरम की [धरम] १ धूमि धुमि की (वीय
हुमा) । २ धरमण धरमाय की राखन-बेनी
(संति १) । ३ धरमण धरमण की प्रवह
धिया (धम १२१; धर ६) । ४ धरि वुं
[धील] मेर धरत (धर ३) । ५ धर वुं
[धर] धरम (धर १ ४७) । ६ धर
वुं [धर] १ धरत धरत (धरि १७) ।
२ धरमोया नपदी का एक धर-धरणीय राजा
(धर ३ ६) । ३ धरमधर वुं [धरमधर]
मेर धरत (धरि १६) । धरमधर वुं [धर
धरि] मेर धरत (धरि १७) । धर की
[धर] धरमण धरमण की प्रवह
धिया (धम १२१) । ४ धर न [धर]
धरि-धर धरम (धर १ २) । धर वुं
[धरि] धरमि धरम (धर १३४) ।
५ धर न [धर] धरि-धर, धरि-धर
(धर) । ६ धर बेको धर (धर १ ११) ।

धरमधर वुं [धरमधर] नाम-धरम की
रणिण रिदा का इत्त (धर ३, ३८) ।
धरमिमा वुं [धरमिमा] मेर धरत
(धर ३) ।

धरमी देना धरमि (धर ११ धि ३३; मे
२ २४ धर २२) ।

धर की [धर] धुमि धुमि (धर ३
१) । २ धर धर वुं [धर] धरत
धर (मे १ ७९ १८ ध २६६ ७ ३;
ध ७९८ टी) ।

धरम वुं [धरम] धरम (धर ४३) ।

धरमिमा धि [धरमिमा] धरम धरम (स
२ १ धर ३२२ धरि ३४) । २ धरमिमा
"धरमिमा धरम" (धर १४) ।

धरमि धि [धरम] १ धरमि धरम धरम (वा
१ १ धर १२२) । २ धरम धरम (म
२०९) ।

धरमिमा } बेको धर = ध ।
धरमिमा }

धरमिमा की [धरमिमा] धुमि धुमि (वाध) ।
धरमिमा की [धरमिमा] धुमि धुमि (ध
१२७ धरम २२६) ।

धरमि न [धरमि] १ धी धरमि में धरि कर
बेना धरम धर (धर १८ धरमा १ ८) ।
२ धरम धरम (धरमा १ १) । ३ धर
धर की नाल धरम (जी २) ।

धरिमधर बेको धर = ध ।

धरिम धर [धर] १ धरि होना धरि
होना । २ धरि होना धरम, धरि होना ।
३ धरिमा, धरि होना । ४ धरि धरि
करमा, धरमा । ५ धरि धरि करमा, धरि
करमा । धरिमा (धर) ।

धरिम धर [धर] धरम धरमा धरिमा
करमा । धरिमा (धर ३२ १२) ।

धरिमधर न [धरिमा] १ धरिम धरिमधर ।
२ धरिमा धरिमा । ३ धरिमा धरिमाधर ।
४ धरिमा १ धरिम, धरिम (धरि १ धर) ।
५ धरिमधर धरिमा धरिमा (धरि) ।

धरिमा बेको धर = ध ।

धर वुं [धर] १ धरि धरमा (धरमा १
१; धर ७) । २ धर-विरोप (धर १ ७
१ ११ टी धीय) ।

धरमा धर [धर] धरमा धरम धरमा
होना धरिमाधरमा । धरमा (धर) ।

धरमिमा धि [धर] धरमा धरमा धरमा
धरमा धरमा (धर) ।

धरम न [धरम] धीय, धरम धरिमा
धरम-धर (धर ७८) ।

धरम वुं [धर] धरमि में धरम (दे २
२७) ।

धरम धर [धर] धरम धरम धरम धरम
धरम (धर ७८) ।

धरम धि [धरम] १ धरम धरम (नाम
धरमा २२६) । २ धरम धरम (धर १३८) ।
३ धरम धरम (धरि १) । धरि धर
[धरि] धरम धरम (टी ४९) । गह
न [गह] धरम धरम (हुमा) । धर वुं
[धर] धरम धरम (धर ४७) । धर धर
[धर] धरम धरम (धरमा २२६) । धर न
[धर] धरम धरम (धर १२ धर) ।

धरम धर [धरम] धरम धरमा । धरम
(धरि ३३७) । धरम धरम (धरम) ।
धरम धर [धरम] धरम-विरोप धी
धरम धरम "धरम" नाम धरम धरम में धरि
है (टी १) ।

धरमधर न [धरमधर] धरम धरमा धरम
धरम (हुमा) ।

धरमधर धर वुं [धर] धर (दे २, ३३, धर) ।

धरमा की [धरमा] धी धरमा (गा १३८) ।

धरमधर धर [धरमधर] धरम धरमा ।

धरमधर धर (गा ६) ।

धरमधर धि [धरमधर] १ धरम धरम
की धरम धरम धरम धरम धरम । २ म.
धरम धरम की धरम धरम (धरम १) ।

धरमिमा धी [धरमिमा] धरम धरमा
धरम (धरमा ७४) ।

धरमिमा धि [धरमिमा] धरम धरमा
धरम (धरि) ।

धरमिमा की [धरमिमा] धरम धी धरम
(धरम) ।

धरम वुं [धर] धर (दे २ २७) ।

धर धर [धर] १ धरमा । २ धरि
धरमा । ३ धरम धरमा । धरम, धरम
(धर) ।

धरम वुं [धर] "धर" धरमा धरमा धरि
की धरमा धरमा धरिमा धरिमा धरिमा
(धरमा धरमा १—धर ४७) ।

धरमधर वुं [धर] धरम की धरमधर की धरमा
धरमधर में धरमधर; "धरमधरधरमधर"
(धर १४ धर १३३) ।

धरमिमा धि [धर] धर धरमा धरमा (वा
१४) ।

धरम धि [धर] धरिमा धरमा धरमा (दे २,
३८) ।

घारा भी [व] रख-मुक रख-मुमि का
प्रथम (दि २, २६)।

घारा भी [घारा] १ मक के घासे का भाग,
बार (मरुत) प्रामु २२)। २ प्रवृत्त छापी
(महा)। ३ घास की पति-विशेष (मुगा-
महा)। ४ जल बाध पानी की घारा। ५
बर्षा छुटि। ६ बर पानी का प्रवाह रूप से
पतन (मरुत)। ७ एक राख-गली (घासन)।
कन्यक दु [कन्यक] कन्यक की एक
जाति जो बर्षा से फलती-जुलती है (मुगा)।
घर दु [घर] येन (मुगा २ १)। बारि
न [बारि] बार स पिछा बस (घर १ १)।
बारिय नि [वारिक] बहा घाघ
से पली पिछा हो नह (घर १ १)।
हार नि [हल] बर्षा से चिक (कन्य)।
हर रेको घर (मुग १ १ २४)।

घारा भी [घारा] मालव देश की एक नदी
(लेख ८८)।

घाराघास दु [रे] १ लेक मड़क बैम (दि ३,
१३; पत्र)। २ लेक (दि ३, १३)।

घारि नि [घारि] मारु कलेबला (भीम
कन्य)।

घारि देको बार = बारम्।

घारिह न [घारि] घट्टा लक्ष्मणा ननं
साम (घास्ना म कोरा घ २१
घास्नीना कन्य पत्र २२६)।

घारिणी रेको घारणी (भीन)।

घारिचप रेको घार = बारम्।

घारिय नि [घारि] बारु निमा हुमा
(भीम बाबा)।

घारि रेको घारी (दि ३, ५१)।

घारि रेको घारा (मुगा)।

घारेराप } रेको घार = बारम्।
घारेरघ्य }

घास सर [घास] १ बीड़ा। २ मुख
करा बीना। बावह (दि ४ २२८; २३८)।
बह, घासन घासमाण (प्रामु ८८-
महा कन्य)। छह घासिऊन (महा)।

घासन न [घासन] १ वेन से कम, बीड़ा।
(मुग १ ७)। २ मगासन, बीना (मुग
१ १४)।

घासपय पु [घासन] बीड़े से हुए समानार
पहुंचाने का काम करनेवाला हुरकाप
रखिया (मुगा १ २ २६५)।

घासण्या भी [घास] स्तन-पान करना (उन
८६३)।

घासमाण रेको घास।

घासिज नि [घासिज] बीना हुमा (भीम)।

घासिर नि [घासि] बीड़नाला (घर,
मुगा १४)।

घारी रेको घाह = घाभी (उप ११६ दो
घ ११६; मुर २ ११२ ११ ६८)।

घाहा भी [हे] वाह, पुकार, बिस्माइट
(पत्र ३३ ८८५ मुगा ११७ १४)।

घाहायिय न [हे] वाह पुकार, बिस्माइट
(घ ३७; मुगा १८ ४६२ महा)।

घाहायि नि [हे] पकायित भया हुमा (बन्म
११ टी)।

घि घ [घि] बिस्माट, भी (रंगा)।

घिह को [घुति] १ वेन बीरज (मुग १
८ पत्र)। २ मारु (घासन)। ३ मारुटा,
ज्ञात विषय का अधिकार (विने)। ४
बारुह प्रमत्तान (मुग १ ११)। ५ दक्षिमा
(पत्र २ १)। ६ बैन की अधिकारिका
रेकी। ७ रेकी की प्रतिमा-विशेष (एन
घासा १ १ टी—पत्र ४३)। ८ सिमिन्ड-
रह की अधिकारिका रेकी (रुह डा २३)।

कुह न [कुह] घुति-रेकी का अधिकार
किर-विशेष (रं ४)। घर दु [घर]
१ एक कपलक्ष महावि। २ 'अंतपन-वसा'
पुन का एक सम्पन्न (लेख १८)। ३ म
नि [मन्] बीरजनाला (डा ८ पत्र
२, ४)।

घिह भी [घुति] रेका मगासार तीन निम
का कन्याम (संघीन २८)।

घिहय नि [घिहय] १ घिहयार हुमा
(बह १)। २ न. घिहयार, विस्कार
(रुह १)।

घिहयन न [घिहयन] विस्कार, विस्कार
(छाया १ १६)।

घिहयि नि [घिहय] विस्कार हुमा
(मुग १ ३७)।

घिहय पु [घिहय] १ विस्कार, विस्कार
(पत्र १ १३ २६)। २ घुमिक मनुष्यों
के समय की एक शब्द-नीति (डा ७—पत्र
१६८)।

घिहय सक [घिह + कारय] विस्कारना,
विस्कार करना। कक घिहयिजमाण
(दि २६१)।

घिहय न [घेय] बीरज घुति (दि २ १४)।
घिहय नि [घेय] मारु करने योग्य (छाया
१ १)।

घिहय नि [घेय] व्यान-योग्य विस्कारीय
(छाया १ १)।

घिहयि घुकी [घिहयि, घिहयि] [घिहयि,
घिहयि] घिहयि। भी 'घल' मगा नाम
घिहयि' (घासन)।

घिहयि घुकी [घिहयि, घिहयि] घिहयि
घिहयि घाय [घिहयि] घिहयि घिहयि (महा
उप १२६ घास १)।

घिहयि घिहयि न [घिहयि] निन्दनीय बीरज
(मुग २ २)।

घिहयि [घुट] बीर प्रकम। २ निरन्तर
बेधर (दि १ १३ मुर २ ६ मा ६२७
मा १४)।

घिहयि घुकी रेको घट्टा मुग (दि २०८)।

घिहयि घुकी [घुट] घट्टा बीरज (मुगा
१ २)।

घिहयि घ [घिहयि] भी बी (उन-
पिपी ३ ६११; रंगा)।

घिहय घक [घीय] बीरज नमनना।
विस्कार (दि १ २२१)।

घिहयि नि [घीय] रेकीयनाला कमरीना
(मुगा)।

घिय घ [घिहय] विस्कार, भी 'विह निर'
विह प्रिय' (उप ११४)।

घियरु घ [घिहय] विस्कार हो (छाया
१ १६ महा मारु)।

घियरु पु [घियरु] बहलति मुर-मुन
(पाप)।

घियि घ [घिहय] विस्कार, टी (मुगा
१ २६ सल)।

घी रेकी घीजा ननं मगात दुमिहयस बीर
मलीह रंगमरि मारु (मगत १२ २)।

धी की [धी] बुद्धि, मति (पाश. शाखा १. ११. कुम. ११४. २५०. मनु. २.). धन वि [धन] १ बुद्धिमत्ता विज्ञान। २ पुं एक मन्त्री का नाम (ज. ७१८ टी.)। ३ मंत्र वि [मन्त्र] बुद्धिवाली विज्ञान (ज. ७२८ टी. कर्मा. ४२८)।

धी य [धिक्] निष्कार, धी (ज. १२. १२.)।

धीमा की [दुहिम्] लक्ष्मी धुषी (मुक्क. १. १. वि. ११२. महा. धर्म. पञ्च. ४२.)।

धीइ देवी धिइ 'धुम्मा' वाचनविद्या धर्मि-धिया धुम्मा य धीइ' (पञ्च. २२ टी.)।

धीइस्त्रिया की [त्रि] पुठली (स. ७१७.)।

धीमछ न [धिह्मछ] निम्नीय मीन (छं. १३.)।

धीर छ [धीरम्] १ धीरज करना। २ छ. धीरज केना भावसाधन केना। धीरज (वज्र)।

धीर वि [धीर] १ धैर्यवान्, धुम्मा, य वज्रवत् (स. ४. १. या. ११७.) डा. ४. २.)। २ बुद्धिमत्, परिश्रम, विज्ञान (ज. ७१ टी. वन. २.)। ३ विवेकी श्रेष्ठ (सु. १. ७.)। ४ छद्मेषु (सु. १. ४.)। ५ परमेश्वर, परमात्मा जिनके। ६ महाबलवान् (शाखा. धन. ४.)।

धीर न [धिये] धीरज धीरज (हि. २. १४. कुमा.)।

धीरज छ [धीरज] धनकता केना विज्ञान केना। कर्म धीरजवर्ति (मु. २७३.)।

धीरजय न [धीरज] धीरज केना साधना (वज्र. १.)।

धीरजिय वि [धीरज] जिसने साधना की वह हो नह पायावि (स. १. ४.)।

धीरजय छ [धीरज] धीर होना धीरज करना। वज्र. धीरजय (सि. १२. ७.)।

धीराविम देवी धीरविम (वि. १२४.)।

धीरिम देवी धीर = धर्म (हि. २. १. ७.)। धीरिय देवी धीरविम (धर्म)।

धीरिम धुषी [धीरज] धर्म धीरज (ज. १२. १२. १. १.)। धीरि. धुष. ११.)।

धीर धु [धीर] १ मन्त्रीमात्र. धुषुमा मन्त्राह बलवीरी (कुमा. कुम. २५७.)। २ वि जयम बुद्धिवाता (ज. ७१८ टी. कुम. २५७.)। धुम देवी धुम = धाम्। धुमर (या. ११.)। धुम छ [धु] १ कपाला। २ कंकणा। ३ व्याप करना। वज्र धुममाय (सि. १४. ११.)।

धुम वि धुम = धुम (धर्म)। धुम-धर्मज (धर्म)।

धुम वि [धु] १ नमिष्ठ। २ न कर्म (मन्त्र. ७.)।

धुम वि [धु] १ नमिष्ठ (वा. ७. १. १. १७१.)। २ लक्ष (धीर)। ३ कर्मविम (सि. ४. ४.)। ४ न. कर्म (सु. २. १.)। ५ धीर बुद्धि (सु. १. ७.)। ६ व्याप, संव व्याप संवम (सु. १. २. २. धाया)। धाय धु [धा] कर्मनाश का कारण (धाया)।

धुममाय धु [ध] जगत्, धीर जगत् (सि. २. १७. धाय)।

धुमय देवी धुमय (ज. १. १.)।

धुमराय धु [ध] जगत् देवी (वज्र.)।

धुमराय धु [धुमराय] धुम-धर्मज (कुम. २११.)।

धुमराय की [ध] धर्मशी लक्षी (सि. २. १.)।

धुम छ [धु] धुम लक्ष्मी। धुमर (मन्त्र. ११.)।

धुमधुम छ [धुम] कर्मना 'धुम धुम' होना। धुमधुमर (या. १. १.)।

धुमधुमधुम [धु] धुमधुमर उल्लास-धुमधुमधुमिष्ठ [धुम] (सि. १. १.)।

धुमधुम देवी धुमधुम। वज्र धुमधुम-धुमधुम (धर्म)।

धुमधुम न [धु] संव संव (वज्र. ६.)। धुमधुम धुम [धुमधुम] 'धुम धुम' धामना करना। वज्र धुमधुमर (मन्त्र. १. १-४. ४.)।

धुमधुम देवी धुमधुम। धुमधुमर (हि. ४. १२२.)।

धुम छ [धु] १ कपाला विज्ञान। २ धुम करना इत्यादि। ३ धाम करना। धुमर, धुमर

(हि. ४. १२. धाय वि. १२.)। कर्म. धुमर, धुमिष्ठ (हि. ४. २५२.)। वज्र धुमर (मु. १२१.)। धुम धुमिष्ठ धुमिष्ठ धुमिष्ठ (यज. वज्र. १.)। धुम धुमिष्ठ (सु. १. १. २.)। धु. धुमिष्ठ (या. १.)।

धुमय न [धुमय] १ धर्ममत्त। २ परिश्रम, धीरता (यज.)।

धुमया की [धुमय] कर्म विज्ञान (धो. ११२. धो.)।

धुमा देवी धुमया (वज्र. २१. २७.)।

धुमा छ [धुम] कपाला विज्ञान। धुमाध (वज्र. १.)।

धुमाविम वि [धुमिष्ठ] कपाला धुमा (ज. ७१८ टी.)।

धुमि देवी धुमि (वज्र.)।

धुमिष्ठ [धुमिष्ठ] देवी धुम।

धुमिष्ठ वि [धुमिष्ठ] कर्म विज्ञान धुमा 'धुमधुम धुमिष्ठ' (मु. १२. १. १.)।

धुमिया } देवी धुम।
धुमिष्ठ }

धुमर वि [धुमर] १ धुम करने योग्य। २ ध. धाम। ३ कर्म (वज्र. ६. १. वज्र. १.)।

धुम वि [धुम] १ धन वज्रवत् प्रशस्त (मनु. ४. १. या. १२.)। २ धुमा धीरवत्ता। ३ धुम धुम धुम। ४ धुम धीर धीर-धुम। ५ धुम धुम धुम एक प्रकार का मीन (हि. २. १.)।

धुम वि [धु] १ धीरवत् (सि. २. १. १.)। २ धामना (धुम)।

धुम } धुम [धुम] धुमा। धुमधुमिष्ठ [धुम] (मु. ११४.)। वज्र धुमधुम (या. १२.)।

धुमधुम वि [धुमिष्ठ] धुमा धुमा, धुमिष्ठ (ज. ७१ टी.)।

धुमि की [धुमि] धुम धुमा (यज.)।

धुमिष्ठ वि [धुमिष्ठ] धुमिष्ठ धुमा (मु. ११४. या. १२.)।

धुमिष्ठ धुमिष्ठ [धुमिष्ठ] धुमिष्ठ धुमा (मु. ११४. या. १२.)।

धुमिष्ठ धुमिष्ठ [धुमिष्ठ] धुमिष्ठ धुमा (मु. ११४. या. १२.)।

धुमिष्ठ धुमिष्ठ [धुमिष्ठ] धुमिष्ठ धुमा (मु. ११४. या. १२.)।

धुमि की [धुमि] धुमि की (वज्र. १. १.)।

पड़्डा की [प्रतिष्ठा] १ धारण, सम्मान । २ श्रुति, कर्त । ३ स्वप्न (दे १ २ १) । ४ स्वापना स्वप्न (उपि) । ५ धनस्वान, स्थिति (पंथा ८) । ६ मुक्ति में ईश्वर के कृपा का धारणना 'विश्वामित्राह पड़्डा करता नि ३ धारणवत्' (पुर ११ ११) । ७ धारण, धारण (योग) ।

पड़्डा की [प्रविष्टा] १ गारणा वाचना (उपि १७१) । २ समाधान होना निपास-पूर्वक स्वपन-स्वप्न (दे १ २ ११) ।

पड़्डाय पुं [प्रविष्टान] कृत प्रवेष्ट (उप २७) ।

पड़्डाग न [प्रविष्टान] १ स्थिति, धनस्वान, 'काम्य पड़्डाय' रमिष्ठने कृप धन्यासी' (पठन ४२ २७) अ १) । २ धारण, धारण (न) । ३ मूल धारि की नीर (न १४८) । ४ गण-विशेष (भाक २१) ।

पड़्डाग न [वि] नगर, खर (दे १ २१) ।

पड़्डावक } केही पड़्डावय (छात्रा १ ११ पड़्डाका } राज) ।

पड़्डावय न [प्रविष्टापन] १ संस्वापन (पंथा ७) । २ स्वप्नस्वप्न (पंथा ७) ।

पड़्डावय नि [प्रविष्टापक] प्रतिष्ठा कर्ण-बाबा (योग नि २२) ।

पड़्डावय नि [प्रविष्टापिन] संस्वापित (उ १२ ७ ३) ।

पड़्डावय नि [प्रविष्टित] प्रतिष्ठ कका कृपा (भात्रा २, ११ १२) ।

पड़्डावय नि [प्रविष्टित] १ स्थित धनस्विक (न) । २ धारित 'रमयामरवीरपड़्डावय पुरिहास वं व धारि' (भात्र ७) । ३ धनस्विक (भात्रा २ १ ७) । ४ नीरपावित (दे १ १) ।

पड़्डावय नि [प्रविष्टित] निवम-संस्त विरहित (नर्मि २११) ।

पड़्डावय नि [वि] विपुल विपुल (दे १) ।

पड़्डावय नि [प्रविष्टित] प्रकर्ष में तीर्थ (धात्रा) ।

पड़्डावय नि [प्रविष्टित] १ विविध पड़्डावय } केही कृपा 'पण्यपण्यपण्य' पला पुनं सा पड़्डावय पूर्व' (भा १४) ।

१ धनक प्रकर से भिष्ट (पुं) । २ विपुल कृपा (अ १) । ४ विपुल (दे १) । २ न. वं-विशेष तीर्थक-वै के

साधन विपुल द्वारा बनाया हुआ वं (उपि) । कदा की [कदा] उत्तम साधन नियम-उत्तमो पण्यकृपा पण्यकृप धनवासी नियमकृपा पण्यकृप (निपु ३) । तब पुं [तब] उत्तम-विशेष (पंथा ११) । पड़्डावय की [प्रविष्टा] १ मूल धारण (भात्रा १ १) । २ नियम (योग पंथा ११) । ३ उत्तम प्रविष्ट धनमान-प्रमाण का एक धनधन साधन वचन का निर्देश (वचन १) ।

पड़्डावय (ही) नि [प्रविष्टान] विपरी प्रतिष्ठा की गई हो वह (भा १२) ।

पड़्डावय नि [प्रविष्टावय] प्रतिष्ठाला 'वैद्योक्तपण्यकृपा' (उप १ १ पुन १) ।

पड़्डावय पड़्डा = पड़्डा (मि) ।

पड़्डावय नि [प्रविष्टा] वला कृपा प्रवर्धित (दे १२, ७१) ।

पड़्डावय केही पड़्डावय = पड़्डावय (पुन ७४) ।

पड़्डावय (ही) केही पण्य (भात्रा—उपु ११) ।

पड़्डावय न [प्रविष्टित] हार रोय (नम) ।

पड़्डावय नि [प्रविष्टित] विविध (पुन १२, १) ।

पड़्डावय न [प्रविष्टित] प्रतिष्ठित, हार रोय (पुर १ ३) ।

पड़्डावय नि [प्रविष्टित] कृपाकर विपुल कृपा विपुल कृपा (धाम) ।

पड़्डावय केही पड़्डावय = प्रविष्टा (पण्य २ १ टी—न २ ३) ।

पड़्डावय } केही पड़्डावय (नम धारि भा १) ।

पड़्डावय केही पड़्डावय (नम ११) ।

पड़्डावय केही पड़्डावय (पुर १ १) ।

पड़्डावय केही पड़्डावय । कदा पड़्डावय (भा १११) ।

पड़्डावय न [प्रविष्टावय] प्रविष्ट, हार रोय (दे १) ।

पड़्डावय नि [प्रविष्टावय] प्रविष्ट प्रविष्ट की धन धनस्विक (छात्रा १ २ पण्य १ १) धारि ।

पड़्डावय की [प्रविष्टा] विपुल-विशेष प्रवर्धित मति (पुन्य १११) ।

पड़्डावय न [प्रविष्टावय] प्रविष्ट के धनस्विक होना धारण, प्रविष्ट प्रवर्ध (नर्मि १२ १) ।

पड़्डावय नि [प्रविष्टावय] धनस्विक (उप ७४४) ।

पड़्डावय [वि] विपुल वचन करना । पड़्डावय (पंथा २ १ २) । धारण, पड़्डावय (पंथा २ १ २) । धारि पड़्डावय (छात्रा २ १ २) । कदा, पड़्डावय (उ ७११) ।

पड़्डावय नि [वि प्रविष्टावय] १ धनस्विक (दे १ ७११) से २, ११) । २ विपुल विपुली (दे १ ७१) । ३ धनस्विक, हार (दे १ २८) । ४ पड़्डावय, विपुल (योग २४८—न १ १) । ५ निपास धनस्विक 'पड़्डावयविपुल मण्यकृपा विपुल' (नम) । ६ न. एकान्त स्वान विपुल स्वान, विपुल वचन (दे १ ७१) से २११) ७११) व वचन उ २११) ।

पड़्डावय (धन) केही पड़्डावय (पि ४४१) ।

पड़्डावय की [प्रविष्टावय] धन के वचन वचनस्विक धार की एक धारि (उप) ।

पड़्डावय पुं [वि पड़्डावय] १ धन-विशेष पड़्डावय धन-विशेष (अ २, १) । २ धन-विशेष धारण (पण्य २, ३) ।

पड़्डावय पुं [प्रविष्टावय] एक धारण का धारण (उप) ।

पड़्डावय न [प्रविष्टावय] धारण धार (पि २२) ।

पड़्डावय नि [प्रविष्टावय] प्रविष्टावय प्रविष्टावय (पि २४) ।

पड़्डावय वि [प्रविष्टावय] विपुल-धनस्विक (नम) ।

पड़्डावय पुं [प्रविष्टावय] विपुल धनस्विक (विपु २२) ।

पड़्डावय केही पड़्डावय । पड़्डावय (धारि) । पड़्डावय (दे १ १४ डि) । कदा, पड़्डावय (धारि) ।

कदा पड़्डावय (धारि) । कदा पड़्डावय (उ २१४) ।

पड़्डावय न [प्रविष्टावय] धार धन प्रविष्टावय (पि २२) ।

पड़्डावय केही पड़्डावय । पड़्डावय (धारि) ।

पइमार सऊ [प्र + पेइय] प्रवेष्ट करना ।
पइमार (गति) ।

पइमारिय वि [प्रवेष्टिय] जिसका प्रवेष्ट
कराया गया हो वह, 'पइमारियो म मपरि'
(महा मति) ।

पइरह वुं [रे] जयन्त हय का एक पुत्र
(रे १, १२) ।

पइहा सऊ [प्रति + हा] व्याप करना ।
सऊ पइहिऊय (यव) ।

पइ केओ पइ = पठि (पइ) हैं १ ४ गुर
(१७१) ।

पइइ वि [प्रवीत] १ विभ्रात । २ विरचस्त ।
१ प्रसिद्ध विष्णवत (विवे ७ २) ।

पइइ न [प्रतीक] संप व्यवस (ईना) ।

पइइ बी [प्रनीति] १ विरासत । २ प्रसिद्धि
(यव) ।

पइय देवो पडिब । पइइ (गच्छ) ।

पइय वुं [प्रवीप] दीपक, विद्या (पाय
बी १) ।

पइब वि [प्रवीप] १ प्रविष्ट (रे १
२ १) । २ वुं रुनु कुरमन (उव १४८ टी)
हे १ २११) ।

पइस (मर) देवो पइस । पइस (गति) ।

पउ (वर) वि [पतिव] मित्र हुआ (विंग) ।

पउअ केओ पागय = प्राइत (प्राइ २) ।

पाउअ वुं [वि] विन, विवस (रे १ २) ।

पउअ न [प्रयुज] संस्था-विद्येय 'प्रमुआ'
को बीछी लाय से दुणने पर ओ संस्था
लाय हो वह (उव २ ४) ।

पउअंग न [प्रमुआन] संस्था-विद्येय 'प्रमुआ'
को बीछी लाय से दुणने पर ओ संस्था
लाय हो वह (उव २ ४) ।

पउअ सऊ [प्र + युज] १ जीवता युक्त
करना । २ उपकारण करना । ३ प्रयुक्त
करना । ४ प्रेरणा करना । ५ व्यापार
करना । ६ करना । पउअइ (महा मति वि
२ ४) । पउअइ (वय) । वउ पउअइ,
पउअमाय (वीन वउ १२, १३) । वउअ
पउअमाय (मनी २१) । इ पउअइअइ
पउअ (लाय २, ३) । उ ३२८ टी विवे
११८४) पउअय (मर) (गुमा) ।

पउअज वि [प्रयोजक] प्रेरक, प्रेरणा करने-
वाला (वय १) ।

पउअज वि [प्रयोजन] प्रयोग करनेवाला
(पउम १४ १) । देवो पउअजण ।

पउअजय १ बी [प्रयोजना] प्रयोग (वीय
पउअजणा) (११४) । 'पउअ' बीअइ अइअ
अइअमि वउ पउअजा दुअअ (वउमा २) ।

पउअजि वि [प्रयुक्त] जिसका प्रयोग किया
गया हो वह (गुमा १४ ४४०) ।

पउअजिनु वि [प्रयोक्त्] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयाजयि] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयाजयि] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयाजयि] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयाजयि] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयाजयि] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयाजयि] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयाजयि] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयाजयि] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयाजयि] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयाजयि] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयाजयि] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयाजयि] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयाजयि] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयाजयि] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयाजयि] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयाजयि] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

सम्पत्तिविद्युत् नाम प्रयोजयिष्याणि (गुमा
४७२ गुमा) । २ विचार, समार (उव १) ।

पउअजिनु वि [प्रयुक्त] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयुक्त] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयुक्त] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयुक्त] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयुक्त] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयुक्त] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयुक्त] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयुक्त] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयुक्त] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयुक्त] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयुक्त] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयुक्त] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयुक्त] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयुक्त] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयुक्त] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयुक्त] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयुक्त] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयुक्त] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयुक्त] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पउअजिनु वि [प्रयुक्त] प्रकृति करनेवाला
(अ २ १) ।

पडामी (छाया २—पत्र २२३) । १ कम्पे-
पर राजा बलिबान की एक की का नाम
(पान ४) । २ राजा दूष्टिक की एक पत्नी
(पान ७ २) । ३ दयोप्या के राजा हरिचिह्न
की एक पत्नी (बन ८) । ४ ठेठमिपुर के
राजा नमकनेमु की पत्नी (बंद १) । ५
कीरावमी नगरी का राजा खटाधिक के पुत्र
उदयन की पत्नी (जिवा १ २) । ६ खलक-
पुर के राजा खोवक की पत्नी (छाया १ ५) ।
७ राजा दूष्टिक के पुत्र बामदुपार की
भार्या का नाम । ८ राजा महाराज की भार्या
का नाम (जिवा १ १ ३ नि १३६) । ९
बीचवें हीचकर कीमुनिगुहउस्वामी की माता
का नाम (पत्र ११) । १० दुएपीछी
नगरी के राजा महाराज की पत्नी (बाण
१) । ११ रम्यनामक विजय की राजमात्री
(बं ४) ।

पडमाबची (बार) की [पडमाबची] छत्र
विशेष (विण) ।

पडमिणी की [पडिमिणी] १ बममिणी,
बमल-मठा (राम गुहा १२३) । २ एक भेड़ी
की की का नाम (बन ७८६ टी) ।

पडमुचर पु [पडमाचर] १ नगरे बज्जली
कीमहापराय के पिता का नाम (राम
१२२) । २ नगर परंत के महराज बन का
एक सिंहासनी परंत (रुद्र) ।

पडमुचर की [पडमाचर] एक प्रकार की
छत्र, चाँद बीनी (छाया १ १०—पत्र
पान २२६, १७) ।

पडर नि [पडुर] प्रभु बहुर (हि १ ६८) ।
गुहा दूर ४ ७४) ।

पडर नि [पीर] १ दूर-संभवी नगर के संभवा
रामनामा । २ नगर में रहनेवाला (हि १
१९१) ।

पडर पु [पीर] पुत्रनामक पत्र-बीतीय
दूर का पुत्र (बं ४) ।

पडरा (बार) रेवो पुत्र (बं १) ।

पडर नि [पीर] पुत्रनामक, पुत्र का
बनाया हुआ केरल लहू बगल-बनाया
(बं ४ ६२) ।

पडरि स पुन [पीर] पुत्रनामक, पुत्रनाम,
पडरम १ बीरता मरवाली (हि १ १११
१४२) । 'पडरता' (प्राम) 'पडरता' (विज
५) ।

पडर स [पड] पकना । पडर (हि
४ ६) । २ १२ २६) ।

पडर स न [पडन] पडरना पडर (पडर १
२) ।

पडरि स नि [पड] पडा हुआ (पाण) ।

पडरि स नि [प्रयसिनि] राय बजा हुआ
(रुद्र) ।

पडर रेवो पडर । पडर (पडर १ ४ ६
१) ।

पडर नि [पड] पडा हुआ (बं ४ २) ।

पडर स न [पडन] रेवो का पात्र (बं ४
२) । २ २७ २) ।

पडरि स नि [प्रकुपित] विशेष दूष्टि कृत
(महा) ।

पडर स [प्र + प्रि] दूष्टि कृता । पड-
रेवो (पत्र २३ ५) ।

पडर स नि [नि] देश-विशेष में ऊपर । की
'मिया (बीप) ।

पडर स रेवो पडर । पडरि (दूर १७७) ।
बह पडरि पडरिमाग (पत्र १०६
२२) । बह पडरिमाग (स ११३) ।

पडर (बार) रेवो पडर (बं ४) ।

पडर न [नि] लहू, बार (बं ४ ४) ।

पडर स [प्रग] बहरे पुन 'पडरिमाग' का
कले बाधितवर्ण के पडरि (बीप
४७ ५) । 'बह पुन विवाहवता पडर न पडा
उत्तरवर्ण न लहे' (बीप ११८) ।

पडरिमाग पु [प्रियाधार] व्याघ्र की एक
जाति की हारिणी को बकने के लिए
हारिणी-गुह को बगले एवं पातले हैं (पडर
१—पत्र १४) ।

पडर पु [नि] १ बं-विबर, बाहू का धार ।
२ बाँध, धारा । ३ कंठीनामक पुत्र-
विशेष । ४ लो का धार । ५ कीला-धार
स्वर । ६ नि दुरीत दुराचारी (बं ४
४७) ।

पडर पु [नि] प्राविशिवन बहोमी (बं ४
१) ।

पडर पु [प्रदरा] १ बिबटा बिनाम न हो
सके ऐसा भूख भयभय (हा १ १) । २
कर्म-वम का संघ (न ३१) । ३ स्थान,
नगर (गुहा ४ २६) । ४ देश का एक भाग
प्रार (गुहा ५) । ५ परिमाण-विशेष विररा
भयभय-विशेष माप । ६ छोटा भाग । ७
पराण । ८ इष्ट । ९ प्रमाण कीन
परमाणुओं का समूह (पत्र) । १० न
[कर्म] कर्म-विशेष प्रदेष्टव्य कर्म
(मग) । ११ न [म] नमों के बिकों का
परिमाण (मग) । १२ नि [पन] निवि
प्रदेष्ट (बीप) । १३ न [नाम] कर्म
विशेष (हा ५) । १४ न [नाम] कर्म
इष्टों का परिमाण (ग ५) । १५ पु
[पड] कर्म-वमों का भाग-प्रदेष्टों के साथ
संघन (स ६) । १६ पु [संघन] कर्म-
इष्टों को निर स्वभाव वाले कर्मों के वन
में परिवर्तन करना (हा ४ २) ।

पडर स न [प्रदरान] उत्तर, 'पडर' का
छाया उपर्यो (बाण १) ।

पडर स नि [प्रदरा] कलेष्टक प्रदरक
विशेष-प्रदेष्ट (विशे १ २२) ।

पडरि पु [प्रदेष्ट] स्वनाम-व्यक्त एक
राज, की की पार्श्वमाग पराण के वेदि-
नामक नगर पर प्रभु हुआ का (राम दूर
१ २५ वा ६) ।

पडरि की [नि] पडर में छनेवाली की
पडरि (बं १ १ टी) ।

पडरि की [प्रदरिना] धंष्ट के पडर
की पडरि लगेनी (बीप १६) ।

पडरि रेवो पडरि (पत्र) ।

पडरि पु [पडर] देश (स ७ २२) ।

पडरि रेवो पडरि (बं १ २४ ५) ।

पडरिमाग न [प्रयाजन] १ दूर, निमित्त
बारण (गुहा १ १२) । २ कार्य, नाम ।
३ मज्ज (बहा पत्र २३ स्थान ४८) ।

पडरि (टी) नि [प्रयाजित] निमग
प्रयोग कृता पत्र ही बर (स—विशे
१ १) ।

पडर पु [प्रयोग] प्रयोग (गुम २, ७ २) ।

पञ्चो गुरु [प्रयोग] १ उन्मन्नीयना (कृत ११) । २ जीव ना व्यापार, केवल का प्रत्यक्ष 'उन्मन्नीय' दुर्गमयो पञ्चोपपत्तिरीय भिस्त्वो वैर' (धन २१) छ १ १ सम्म १२३, च २२४) । ३ प्रेक्षा (भा १४) । ४ जगत् (पाण्डु १) । ५ जीव के प्रकृत में बारह-मुष्ट मन धारि (ठा ३ ३) । ६ बल विचार साधारण (रसा ४) । कर्म न [नर्म] मन धारि की चेष्टा । धार्य-प्रदेशों के साथ संबन्धिता बर्त (पञ्च) । कर्म न [कर्म] जीव के व्यापार द्वारा होनेवाला किसी बस्तु का निर्माण 'होह च एष जीवव्यापारे वैर' अं विनिष्पत्तौ पञ्चोक्तपठे तर्क बहुशो' (विश्वे) । "किरिया की [किर्या] मन धारि की चेष्टा (ठा ३ ३) । पञ्चुय न [स्पर्धक] मन धारि के व्यापार-व्यापार की द्वि-द्वारा नर्म-परमार्थों में बहुनेमता एव (वम्पन २१) । पञ्च पुं [वन्ध] जीव-प्रकृत द्वारा होनेवाला कर्मन (मन १८ १) । मनु की [मनि] वाक्-विषय-परिचालन (रसा ४) । संपन्ना की [संपन्] भाषाई का वाक्-विषय सामर्थ्य (छ ८) । मा त्र [प्रमाण] जीव प्रकृत से (ति १६४) । पञ्चाक्ष केतो पञ्च = छ + कुन् । पञ्चोम (पञ्च ४४) । पञ्चाजग वि [प्रयोजक] विनिष्पन्न निर्माणक समक (पर्वत १२२१) । पञ्चाहु वैशो पञ्च = प्रकृष्ट (प्राज्ञ धीमति ४) । पञ्चाक्ष न [प्राज्ञ] प्रोज्ञ शान्त-व्यष्टि वैशो । धर पुं [धर] भक्तकी होनेनेमता, बहुल भाव भा भावेभाव (एषा १ १) । पञ्चाहु पुं [प्राज्ञ] ऊपर केतो (वीर) । पञ्चाध्यय पुं [प्रयोजक] १ प्रतीक जीव ना पुन । २ प्रतीक ना स्थित छिन्न काहेली छेल मन्त्रण निमलन धरयो पञ्चोपपत्तिमन्त्रण के भाव पाण्डुर (धन ११ ११ व २४८) । पञ्चाध्यय पुं [प्रयोजक] १ कणस । २ स्थित-मन्त्रण स्थित-मन्त्रण (म ११ ११—पञ्च २४ छी) ।

पञ्चोराशि पुं [पञ्चोराशि] समुद्र (वम्पन १७४) । पञ्चोक्ष पुं [पटाक्ष] पटल परवर, वरीय (एषा १) । पञ्चोक्षी की [प्रताक्षी] १ नगर के भीतर का रस्ता (धनु) । २ नगर का बरान्ता 'भोर्न पञ्चोक्षी म' (पाण्डु युवा २३१ या १२ उप पु ३३) धरि) । पञ्चोद्युक्त वैशो पञ्चाक्षरत्व । पञ्चोद्युक्तै (ति २८४) । पञ्चोद्याह पुं [पञ्चाद्याह] मेर वाक्क (पठन ८, ४१) छे १ २४ गुर २ ८३) । पञ्चोम छ [प्र + क्षिप्] होव करना और करना । पञ्चोम (मुन १ १४) । पञ्चोस पु [वि प्रदेव] प्रदेव प्रष्ट होव (छ १) धर एका वाक् ४ गुर १३, २ पुन ४१६, कर्म १ मन्त्रि ४ कुन १ छ १३९) । पञ्चोम पुन [प्रज्ञा] १ कल्पकाल रिन जीव राशि का धर्म-कर्म (ति १ १४ कुमा) । २ नि प्रष्टु रोशों से पुन (छे २ ११) । पञ्चोहण (धन) वैशो पञ्चाह (धरि) । पञ्चोहर पुं [पञ्चोहर] १ स्तन मन (पञ्चा छे १ २४ पठन गुर २, १) । २ वैक-वाक्क (वक्ता १) । ३ कर्म-विशेष (विन) । पञ्च पुन [पञ्च] १ करीब दोषक नाका कर्मो जीव 'कर्मविशेषि मो नर्म पञ्चैव वक्ष्यते' (भा १) छे १ १ ४१ १२८ प्राप् २३) । 'मुन्यह व पञ्च' (वक्ता १३४) । २ वाक् (वृष्ट २ २) । ३ सर्वगत इन्द्रिय जीव का धर्मिष्ठ (विष्ट १) । आश्रित्ता की [पञ्चिष्ठ] कर्म विशेष (विन) । पञ्चा की [पञ्चा] जीवी नरक-मृति (छ ८ ८६) । पञ्च छि [पञ्च] १ नर्म-प्रष्टु (पञ्च छे १ २ वाक्-प्रष्टु (मुन २ २) ।

पञ्च की [पञ्चा] जीवी नरक-मृति (छ ८ ८६) । पञ्चमा की [पञ्चमा] जीवी नरक-मृति (छ १६ १२८) । पञ्चापह की [पञ्चापह] पुनक्त नामक विषय के पश्चिम तरफ की एक नदी (इका ८ ४) । पञ्चिय वि [पञ्चि] पञ्च-पुन, जीववत्ता (धन १ १३ धरि) । पञ्चिष्ठ वि [पञ्चिष्ठ] करीबता (भा २८ वा ७९६ कर्मा कुन १८७) । पञ्चिष्ठ न [पञ्चिष्ठ] कर्म पञ्च (कर्म कुन १४१) । पञ्च पुं की [पञ्च] १ पञ्च पञ्चि पञ्च पञ्च (ति ७४४ एका पठन ११ ११८) या १४) । २ पञ्च पुन, पञ्चापह (पठन) । पञ्च न [पञ्च] पञ्च-विशेष (पञ्च) । पञ्च पुं की [पञ्च] पञ्चो विविधा पञ्चो (भा १४) । जी की (ति ७४) । पञ्चविधा की [वि] पञ्च न (कुन २३) पञ्चि की [वि] १९६) । पञ्च वक् [पञ्च] प्रष्टु करना । पञ्च (वि ४ ४२) । पञ्च न [पञ्च] धातु (कुन २३) । पञ्च वि [पञ्च] वाक् विकल कर्म संभक्त, युवा कीदा (पञ्चा वि १८ ८ विन) । पञ्च एक [पञ्च + छ] कर्म धातुधन करना । पञ्च (धरि) । पञ्च, पञ्चविधि (धरि) । पञ्चाल न [पञ्चाल] कर्म, नपस (वि १ १२३ युवा ना ७ २) । पञ्च छि [पञ्च] वैशो पञ्च (विना १ १) छे ७२ वाक्) । पञ्च छि व [पञ्च] वाक् २ (वि १ १२३ वक् युवा) । वक् न [पञ्च] वक्ताव (व २२२) । 'इन्द्रिय पुं [पञ्च] वक्ताव में छे ऊपर विचार करनेवाला (व २२) । पुं [पञ्च] वक्ताव

केतलवान पीर पिण्डि । २ काम्यस्मृत,
यहा देख्ये जिन-देव दीधिमलताय क पावों
कस्याणक हुए से (ही २४) । ३ लय-विरोध
(बीर) । कोठुरा नि [कोठुरा] १ पाँच
कोठो से युक्त । २ पुं पुरय (ही) । गळ
न [गळ] पाय के ये पांच पवार—हूब बही,
हुत सोयन पीर मून पंचक्य (कपू) ।
गाह न [गाह] पायाक्य बाके पाँच
पच (कय) । गुण नि [गुण] पाँचगुना
(डा ५ १) । निच पुं [निच] छु जिन
देव दीपचमन, जिनके पावों कस्याणक पिना
मलन में हुए से (डा १ १ कय) । जाम
न [याम] १ पड़िया छय मवीर,
छावय पीर द्याग के पाँच महाचर । २ नि
जिनमें इन पाँच महाचरों का निम्न हो बहु
(डा १) । जउइ की [नवति] पंचानने
२३ (काल) । जउय नि [नवत] २३
बां (काब) । वाक्रीस (घप) कीन
[वत्तारिया] पैरबीर ४३ (चिक
पि ४४) । दित्ती की [दीती] पाँच
दीती का सनुपाय (बर् २) । दीसइम नि
[दिशम] पैरीसर्वा १३ बां (पण्ड
१३) । दस नि न [दश] पण्ड १
(कपू) । दसम नि [दशम] पण्डरवां
१३ बां (समा १ १) । दसी की
[दसी] १ पण्डरवां १३ की (चि
२०३) । २ पुणिया । ३ यमलता (नुम
१) । दसुसरय नि [दशोसरय]
सम एक ही पण्डरवां ११३ बां (पण
११३ २४) । नउइ केओ जउइ नि
(४००) । नाचि नि [द्वानि] मति
भुन मति, यम-पर्यन पीर केतल इन पावों
कानों में युक्त सर्व (सम १३) । पळी
की [पली] मास की दो पळनी की नउइसी
पीर दस पंचमी ये पांच पिण्डियां (पण्ड
२५) । पुम्मासह पुं [पुर्वासाह] बलमें
जिनके पीरीसमनाय जिनके पावों कस्या-
णक पुर्वासाह मलन में हुए से (डा २ १) ।
पुस पुं [पुस] पण्डरवां जिनके दीधम
मास (डा ३ १) । बाण पुं [बाण]
कामदेव (पुर ४ २४५ इम) । मूय न
न [मूत] इकिरी, यल अगिन बागु पीर

बाकाय ये पाँच पवार (पुष १ १ १) ।
मूयवाइ नि [मूतवायि] बाला यादि
पवारों को न मान कर केस पाँच भूतों को
ही माननेवाला नासिक (पुष १ १ १) ।
महठवइ नि [महायिके] पाँच महा
ब्रतोंवाला (पुष २ ७) । महठवय न
[महायिके] हिंसा बलप कोरी मेनुन
पीर परिइह का छरवा परियाय (पण्ड २
३) । महामूय न [महामून] शुभिरी
मल अगिन बागु पीर बाकस ये पाँच
पवार (चि) । मुठिय नि [मुठिक]
पाँच मुठियों का, पाँच मुठियों से पूर्ण
क्रिया बाटा (बीर) । यापा १ १
कय महा । मुइ पुं [मुक] चिह
पंचानन (ज १ ११ टी) । यसी रेवो
दसी (पम ११ १४) । १२, राय
पुं [पाम] पाँच पल (सा ४१ पण्ड २
२—पण १४३) । रासिय न [राधिक]
गणिक-विरोध (डा ४ १) । रुधिय नि
[रुधिक] पाँच प्रकार के कल्याता (डा ४
४) । वायुग न [वस्तुक] बाबाय हरि
वस्तु-विचि क्य-विरोध (पंच १ १) ।
वरिस नि [वर्प] पाँच बर्य की वरसा
बाला (पुर २ ७१) । विह नि [विष]
पाँच प्रकार का (अणु) । वीसदम नि
[विशदितम] पचीसवां (पम २३, २४) ।
संगह पुं [संगह] बाबाय कीश्रित्यगुरि
हुत एक बैल चम्य (पंच १) । संबंकरिय
नि [संबंकरिय] पाँच बर्य परियाय
बापा पाँच बर्य की बायुगाला (सम ७३) ।
सहु नि [पड] पंडरवां १३ बां (पम
१३, २१) । सहु की [पड] पंड
१३ (कय) । समिय नि [समिय]
पाँच समियों का पालन करनेवाला (सं
८) । सर पुं [शार] कामदेव (पाक
पुर २, २१ गुग १, रंघा) । सीस पुं
[शीय] बैर-विरोध (बीर) । सुणय न
[शुण्य] पाँच प्राणिक-कल्प (पुष १
१ ४) । सुसग न [सुसक] बाबाय
कीश्रित्यगुरि-निमित्त एक बैल चम्य (पम
१) । सेछ सेछय, सेछय पुं [रीछ,
क] मगरीय में निचत पीर पाँच बर्यों

ये विमुपित एक कोटा हीन (महा ४४ ४) ।
सोगिधि नि [सोगिध] इयायी
अर्थ कपूर, कंधोस पीर बादीकन—जायकन
इन पाँच गुणित वस्तुओं से संवृत 'मलत'
पक्षोपधिपर्यंत बनीको, मलतकपूर-मासिहि
पचक्या (व) । हउर नि [समव]
पण्डरवां ७३ बां (पम ७३ ८६) ।
हउरि की [समठि] १ संख्या
विरोध ७३ । २ जिनकी संख्या पण्डर
हो के (पि २६४ कय) । हउयार पुं
[हउयार] मगान महापीर, जिनके
पावों कस्याणक लपकाकमुनी-मलन में हुए
से (कय) । उइ पुं [मुन] कमदेव
(छण) । जउइ की [नवति] १ संख्या
विरोध पंचानने २५ । २ जिनकी संख्या
पंचानने हो के (सम २७; पम २
१ १ पि ४४) । जउय नि [नवत]
पंचलवां २३ बां (पम २३ १३) ।
जाण पुं [जान] चिह मनेत्र (मुना
१७१ मति) । जण्डिय नि [जण्डिय]
हिंसा बलप कोरी मेनुन पीर परिइह का
आधिक व्यावस्ता (उवा दीन यापा १
१२) । जाम रेवो जाम (इह १) ।
जस कीर [जस] बलन-विरोध
पचास ३ । २ जिनकी संख्या पचीस हो
के 'पंचास कल्याणकालीनों' (सम ७) ।
जसग न [जस] बाबाय कीश्रित्यगुरि
हुत एक बैल चम्य (पंचा) । सीइ की
[सीति] १ संख्या-विरोध वस्तो पीर
पम ८३ । २ जिनकी संख्या पचाही हो के
(सम ८२ पि ४७१) । सीइम नि
[सीतिवम] पचासीवां ८३ बां (पम
८३ ११ कय पि ४७२) ।
पंचअण्य रेवो पंचअण्य (पम) ।
पंचाग न [पञ्चाग] १ दोहान ये यानु पीर
मलक ये पाँच छरीपचय । २ नि पुर्वाक
पाँच अंचलता (प्रमाण प्राधि) 'पंचयं किय
छाहे पण्डिय' (पुर ४ ६८) ।
पंचगुडि पुं [पे] परए-इज रंटी का पाख
(२१ १७) ।
पंचगुडि पुं [पञ्चागुडि] हउय हान (यापा
१ १ कय) ।

पञ्चगुह्या श्री [पञ्चागुह्या] नलो-
निये (पण १—पञ ११)।

पञ्चग वि [पञ्चक] पाञ (पञ्चा पाञि) की
कीमय का (पञि १ ११)।

पञ्चग न [पञ्चक] पाञ का पञ्च (पाञा)।
पञ्चजयन पुं [पञ्चाजयन] मोटप्य का मोट
(मप ८६२। पञ १७४)।

पञ्चत } न [पञ्चात] १ पञ्चपन पाञ
पञ्चात } काता (पु १ ५)। २। मरु
मोत (पु १ ५) काता का पु (१७७)।

पञ्चट्ट वि [पञ्चापुट्ट] पाञ स्वानों में
पुट्ट-पिठ (पठेटी) काता (पिठ का ५१)।

पञ्चपुन पुंन [पञ्च] मत्त-मत्तन विरोध
मत्तनी पञ्चन का कात विरोध (पिवा १
—पञ ८१ टी)।

पञ्चम वि [पञ्चम] १ पञ्चवां (पञा)। २
पुं लक्ष-विरोध (पञ ७)। पाण की
[पाण] पञ्च की एक छद्म की पञि
(मरा)।

पञ्चमहामूढ वि [पञ्चमहामूढिक] पाञ
महापुनों की मजनेराला, छावपन
का म्नुमायी (पु २ १ २)।

पञ्चमामिन् वि [पञ्चमामिन्] १ पाञ
मान की पञा का। २ पञ पाञ म पुण
होमगाता (ममिह्र मारि)। श्री आ
(मम २१)।

पञ्चमिन् वि [पञ्चमिन्] पाञवां, पञम
(मो ११)।

पञ्चां श्री [पञ्चां] १ पाञां (पाञा)।
२ त्रिपि-विरोध पञ्चां पिञि (पञ १६)
आ)। ३ क्मरपण इमिञ पाञातन
मिञि (पञा)।

पञ्चाग्न श्री पञ्चाग्न (पाञा १ १६
पु १ १५)।

पञ्चाग्न श्री [पञ्चाग्न] पुञाग्निकां
विरोध हाप के पञनेराला ला-माजीव झाणी
की एक पञि (पौर १)।

पञ्चनी श्री [पञ्चनी] पञ्च का-पञ्चगाता
एत स्वान बड़ा कीपञ्चनी के पञने
पञ्चान के लक्ष पाञात (पिवा का एत स्वान
का काजीव ८६ मोम 'पञि' मर के

पाञ मोरापनी नदी के पिन्नेराला माने हैं, पञ
कि आनुनिक स्वेपक मोम बस्तर एजवाड़े के
बहिरी ओर पर, मोरापनी के पिन्नेराला, इनका
होना सिद्ध करते हैं (अप ८६१)।

पञ्चवयन पुं [पञ्चवयन] सिद्ध मुनराज
(सम्पत ११)।

पञ्चापय न [पञ्चापय] ये पाञ वयन—बड़ी
हुन की म्नु तथा म्नु (पि २१८)।

पञ्चाट्ट पुं [पञ्चाट्ट] कायराज-मलेता एक
छदि (सम्पत ११७)।

पञ्चाट्ट पुं, न [पञ्चाट्ट पञ्चाट्ट] १ टेल-
विरोध पञ्चाट्ट टेल (पाञा १ व म्नु
म्ल १)। २ पुं, पञ्चाट्ट टेल का टाका
(पि १)। ३ क्मर-विरोध (पि १)।

पञ्चासिमा श्री [पञ्चासिमा] पुञ्चा की कलाहि
विरोध छोटी शिमा (पञ्चा)।

पञ्चासिमा श्री [पञ्चासिमा] १ हुन राज
की म्नु, मोरी (पेडी ११८)। २ का
का एक मर (पञ्चा)।

पञ्चावयन } मोम [पञ्चावयन] १
पञ्चावयन } क्मर-विरोध पञ्चम, ११।
२ त्रिपनी क्मर पञ्चम होवे (पु १, १७४
१ २ २७ के पु, १७४)।

पञ्चावयन वि [पञ्चावयन] पञ्चपञ्चा
(पञ ११, ११)।

पञ्चावयन वि [पञ्चावयन] १ वर की
पञ्चावयन } निमनी लक्ष मोम, पाञ
मोम की कात के पाञी इमिञा हो (पण
१) काप मोम १। मरि १। २ न लक्ष
मरि पाञ इमिञा (मम १)।

पञ्चावयन श्री [पञ्चावयन] १ पाञ की क्मर
मला। २ पाञ रिम का (मम १)।

पञ्चावयन श्री [पञ्चावयन] वर पीत
पुञ्चाव, पाञा की कापोजीव का कन
(पञ्चा)। श्री की (पा १)।

पञ्चावयन वि [पञ्चावयन] एक
की पाञा १ २ का (पञ १ ५, ११२)।

पञ्चावयन वि [पञ्चावयन] 'पञ्चावयन'
मोडल में पञ्चावयन पुञ्चावयन पञ्चावयन
(मरि)।

पञ्चावयन पुं [पञ्चावयन] पाञावयन पञ्चावयन
(पञ्चा)।

पञ्चावयन पुं [पञ्चावयन] पञ्चावयन पञ्चावयन
पिञ्चावयन (पञ १ ११ टी)।

पञ्चावयन पुं [पञ्चावयन] १ पाञावयन उताप्या
पञ्चावयन पाञि मुनि-मण। २ उताप्या-मन-
विरोध उताप्या-पञ्चावयन। ३ लक्षपञ्चावयन-
विरोध (मम १)।

पञ्चावयन पुं [पञ्चावयन] निजय निजका (पञ्चावयन,
पञ्चावयन २)।

पञ्चावयन पुं [पञ्चावयन] वहाव का कर्मावयन-विरोध
(पि १ ४७)।

पञ्चावयन वि [पञ्चावयन] निजरी में वर निज
हुमा (पञ्चावयन)।

पञ्चावयन वि [पञ्चावयन] वरत मोमा क्मर
(पु १ १६४ पञा १)।

पञ्चावयन पुं [पञ्चावयन] वहाव वरने के विर
मोमा हुमा वर-पञ्चावयन, वर-पञ्चावयन-विरोध
उताप्या कर-मण (पञा)। उता पुं [पुट]
पञ्चावयन-पुट, उताप्या कर-मण (पञ १११
पौर)। उता क्मर वि [पञ्चावयन]
विरोध वहाव के विर हाप मोम हो पञ
(मम पौर)।

पञ्चावयन न [पञ्चावयन] वरत वरत वरत वरत
'पञ्चावयन' कर्मावयन पञ्चावयन पञ्चावयन
(पि ११७)।

पञ्चावयन वि [पञ्चावयन] वर-विरोध में वरत।
श्री की 'पञ्चावयन' वर-पञ्चावयन-पञ्चावयन
(पञ्चावयन)।

पञ्चावयन पुं [पञ्चावयन, क] १ वर-पञ्चावयन
पञ्चावयन } (पञ्चावयन ११७ मम १११ पाञ)। २
पञ्चावयन } मम वर-पञ्चावयन का एक वर (पञ १
११७)।

पञ्चावयन पुं [पञ्चावयन] १ वर-पञ्चावयन
(पञ ११७)।

पञ्चावयन पुं [पञ्चावयन] १ वर-पञ्चावयन
पञ्चावयन } (पञ्चावयन ११७ मम १११ पाञ)। २
पञ्चावयन } मम वर-पञ्चावयन का एक वर (पञ १
११७)।

पञ्चावयन पुं [पञ्चावयन] १ वर-पञ्चावयन
(पञ ११७)।

पञ्चावयन पुं [पञ्चावयन] १ वर-पञ्चावयन
(पञ ११७)।

पञ्चावयन पुं [पञ्चावयन] १ वर-पञ्चावयन
(पञ ११७)।

पञ्चावयन पुं [पञ्चावयन] १ वर-पञ्चावयन
(पञ ११७)।

पञ्चावयन पुं [पञ्चावयन] १ वर-पञ्चावयन
(पञ ११७)।

पंचम पुं [पाञ्चम] राजा पाण्डु का पुत्र—
मुनिष्ठि, २ मीम १ कर्तुं ४ सहस्रव शीर
१ मनुष्य (छाया १ १९ उप १४८ टी)।

पंचम पुं [वे] सरन-रुद्रक (१) 'पिष्टि मुहूर्तेहि
वाचिपंचममयेति मरुतो द्रुहो' (सम्पत्
२१६)।

पंचमिज नि [वे] बसत्र पाणी के भीजा
हुमा (वि १ २)।

पंचिम नि [पञ्चिमत] १ बिहन्त खर्कों के
मर्मे को बातेबस्ता बुदिमाय, लण्ड
'कामजममा' छाम मयिमा होला बाकरी-
कनापडिया (पिपा १ २ प्राप् ७४
१२६)। २ संवत् साधु (पुन १ ८, ६)।

मरण न [मरण] साधु का मरण युग
मरण-विशेष (मग पञ्च ४६)। माय नि
[माम्य] विद्यामिमांसी निज को गणित
माननेवाला बुदिबाज मयपका मुष्टि मगारी
(शोक २७ म)। माणि नि [मानिन्]
देको पूरोंक क्षर्य (पुन १ १, २१ उप
१४ टी)। वीरिज नि [वीर्य] संवत् का
मरण-मग (मग)।

पंचिममाणि नि [पाञ्चिमतमानिन्] पंचिमाई
का ममिमा लखनेवाला पित्रता का बमंड
रखनेवाला (विद १६)।

पंचिज [न] [पाञ्चिज्य] पञ्चिजवाई,
पंचिज [न] निजरा केपुय (जग नुर १२,
१८) पुपा २१ रंधा ४१ ३०)।

पंची देको पंड न परम्य।

पंचीम (पय) देको पंडिज (पिप)।

पंडु पुं [पाण्ड] १ दुप-विशेष पाण्डवों का
पिता (जग १४८ टी पुपा २७)। २ रोग-
विशेष पाण्डु-रोग (न १)। ३ कर्ण-विशेष,
मुक्त शीर पीत कर्ण। ४ श्वेत कर्ण। ५
वि मुक्त शीर पीतवर्णवाला (जगु बरड)
६ श्वेत, श्वेत रंगे चर्म वनकई मयपाई
पंडु वर्ण के (पाप पंडर)। ७ पिता
विशेष, पाण्डुकन्या नामक पिता (न ४
१८)। कंचर्यसिद्ध श्री [कंचर्यसिद्ध]
मेव पर्वत के पाण्डव वन के वसिए शीर पर
स्तिष्ठ एक पिता वित पर विन-वैर्मी का
जन्मपदेक निजा कछा है (न ४)।

'कंचला श्री [कंचर्यसिद्ध] वही पुषोंक धर्य
(जग २ १)। राजम पु [राजम] पाण्डु
राज का पुत्र पाण्डव (मज ४८६)। मड
पुं [मड] एक कैम मुनि जो धार्य संयुक्ति-
विषय के शिष्य वे (कप)। मडिया
मडिया श्री [मुक्तिफ] एक प्रकार की
लठेय मिट्टी (मीर १: पाण १—पञ २२)।
मडुरा श्री [मडुरा] स्वामय-व्यास एक
नगरी पाण्डवों का बगई हुई मारुतवर्ण के
वसिए लठ की एक नगरी का नाम (छाया
१ १९—पञ २२३, संत)। राय पुं
[राय] राजा पाण्डु, पाण्डवों का पिता
(छाया १ १९)। सुय पुं [सुय]
पाण्डव (जग १४८ टी)। सेग पुं [सेन]
पाण्डवों का शीरवी वे लतल एक पुत्र
(छाया १ १९: जग १४८ टी)।

पंडुय नि [पाण्डुकुठ] १ श्वेत रंग का
क्रिया हुमा (छाया १ १—पञ १८)।

पंडुय [पु] [पाण्डु] १ बज्जरी का बगई
पंडुय की वृष्टि करनेवाला एक निधि (पञा
जग २, १—पञ ४४४ उप ६०९ टी)। २
लर् की एक बाधि (बाध १)। ३ न येव
पंडव पर लिख एक वन, पाण्डव-वन (सम
२६)।

पंडुर पुं [पाण्डुर] १ श्वेत कर्ण श्वेत रंग।
२ पीत-विशेष श्वेत कर्ण। ३ वि श्वेत कर्ण
वाला। ४ श्वेत-विशेष पीत कर्णवाला
(कप लण वे ४६)। जा श्री [या]
एक कैम लाम्बी का नाम (वायम)। रिबय
[रिथक] एक वन का नाम (बाध १)।

पंडुरा पुं [पाण्डुरा] संघाटी की एक
बाधि मयम बननेवाला संघाटी (पयु
२४)।

पंडुरा पुं [पाण्डुरा] १ शिब-मग
पंडुरा पुं संघाटी की एक बाधि (छाया
१ १२—पञ १६६)। २ देको पंडुरा
'केसा पंडुरा हविषि वे' (जग १)।

पंडुरिज [पु] [पाण्डुरिज] पाण्डुर कर्ण
पंडुरिज का नाम (पा १८८ पिपा
१ २—पञ २७)।

पंत नि [प्राय] १ कपवर्णी वसिय (मग
२ ११)। २ मरीज, मनुष्य (वाचम)

पंच १७ मा)। ३ वसियों के धनमुक्त
वसिय-वसिय (पण्ड २ २)। ४ मग
मस्य, वसिय (मीर १९ टी)। ५ मयसव
वीच बुट (छाया १ ८)। ६ वसि निर्भन
(मोय ११)। ७ वीर्य कप-मग वंश
मय— (बुट २)। ८ मयमल वसिय
'मिपत्रमयमयमई वंश' पंडव होइ नामर्ण
(इह १: भाषा)। ९ मीर सुय (जग ८)।
१ मुद्रावसि का सेने पर वजा हुमा। ११
पुनिय बानी (छाया १ १—पञ १११)।
कुल न [कुल] मीर कुल वस्य बाधि।
(जग ८)। वर नि [वर] मीर मगार
की वीच करनेवाला वस्यी (पण्ड २ १)।
वीरि नि [वीरि] मीर मगार वे
वाय-विशेष करनेवाला (जग १)। १। वर
नि [वार] कना-पुजा मगार करनेवाला
(जग १, १)।

पंताय वक [वे] वाकन करना माला।
पंतावे (पिड १२३)।

पंति श्री [पंक्ति] १ पंक्ति, वेणी कतार (हि
१ २६, पुपा ८ कप)। २ केना-विशेष निधमें
एक हाथी एक रज, तीन बोड़े शीर पांच
पंताई हों वेणी वेना (पुन २९ ४)।

पंति श्री [वे] वेणी केय-वजना (वि १ २)।
पंतिव श्री [पंक्ति] पंक्ति, वेणी 'छपसि
वा छपसिमासि वा छपसिपसिमासि वा'
(भाषा २ १ १ २)। श्री 'पंतिवमा'
(मयु)।

पंय पुं [पय, पयि] मय पतया पंच
किर वपिपा (हि १ ८८) 'पंचमि वह
पिर्य' (पुपा २१; इका २८ प्राप्
१७१)।

पंय पुं [पय] पयि, मयकिर (हि १ १
मज ७४)। कुटन न [कुटन] मार
वीरक वसियों की मय (छाया १
१८)। कोट पुं [कुट] वही मय (पिपा
१ १—पञ ११)। कोटि श्री [कुटि]
वही मय 'वे वीरिजानई मयपाई वा वान
पंचकोटि वा कांठ वसिय' (छाया १ १८)।
पंयय पुं [पाण्ड] एक कैम मुनि (छाया
१ २३ मज ६ टी)।

पंथय पुं [पाण्डय] राजा पाण्डु का पुत्र—
कुन्तिद्रि, २ सोम ३ धनुं ४ छन्द्रेण वीर
५ नृपुन (छाया १ १६ उप १५८ टी)।

पंथय पुं [पंथ] धरम-रक्षक (?)। पंथिष्ठ गृहदेहि
राधियपंथयपथेहि मरुतो रठो (सम्मत
२१६)।

पंथयिज नि [पंथ] बसत पानी से भीका
हुमा (दे १ २)।

पंथिय नि [पंथिय] १ निद्रान् शास्त्रों के
मर्म की बालेबाला बुद्धिमान, उत्तम
कायमयः। छात्रं यस्या होवा बालपथि-
कमानिहमा (विपा १ २ प्राप् ७४
१२६)। २ संयत साधु (सुम १ ८, ६)।
मरण न [मर्य] साधु का मरण मुम
मरण-विशेष (मय, पञ्च ४६)। माय नि
[मर्य] विद्यामित्री निज की पथित
मानेबाला बुद्धिरक्ष धनपका मुञ्च छात्री
(बोध २७ भा)। मायि नि [मर्य] य
देवो पूर्वोक्त धर्म (पत्रम १ ३ २१ उप
१३४ टी)। वीरिन न [वीर्य] संयत का
मरम-मन (म)।

पंथिबामाणि नि [पाण्डित्यमानि] पंथिवा
का धर्मिण रक्षनेबाला विद्या का धर्म
रक्षनेबाला (बेय १६)।

पंथि [न] [पाण्डित्य] पथिवा, पंथि
विद्या, वैदिक (उका कुर १२
६ नृपा २६ रंभा सं ३०)।

पंथी देवो पंथ = पथ्यम्।

पंथीय (पय) देवो पंथिज (पिग)।

पंथु पु [पय] १ मुन-विशेष पाण्डवों का
पिता (उप १५८ टी सुपा २७)। २ पय-
विशेष पाण्डु-पुत्र (अ १)। ३ वर्य-विशेष,
गुप्त वीर पीत वर्य। ४ श्रेष्ठ वर्य। ५
वि श्रेष्ठ वीर पीतवर्णबाला (कण्ठ बरत)।
६ श्रेष्ठ, श्रेष्ठ 'सर्व धर्म नाला' धर्मार्थ
पंथु बरन 'व' (पाम मरु)। ७ विना
विशेष पाण्डु-कन्या नामक पिता (अ ४
६८)। पंथयमिज की [कर्मयशस्वि]
मेर पर्वत के पथरुध वन के वधिरा छोर पर
स्थित एक शिवा प्रित पर दिन-दोनों का
कर्मविशेष किया जाता है (अ ४)।

पंथला की [कर्मयश] वही पूर्वोक्त धर्म
(अ २ ३)। 'पथय पु [पथय] पथु
राज का पुत्र पाण्डव (पठ ४८२)। मरु
पुं [मरु] एक शैव मुनि जो धर्म संयुक्ति-
विषय के विषय से (कय)। मरुया
मसिया की [मुसिका] एक प्रकार की
छत्रे मिट्टी (बीज १ पण्ड १—पत्र २३)।
मरुया की [मरुय] लगान-म्यात एक
नयी पाण्डवों द्वारा बनाई हुई पाण्डवों के
वधिरा छत्र की एक नयी का नाम (छाया
१ १६—पत्र २२३, धत)। राय पुं
[पय] राजा पय, पाण्डवों का पिता
(छाया १ १६)। सुय पुं [सुय]
पाण्डव (उप १५८ टी)। संय पुं [सेन]
पाण्डवों का वीर्य से उत्पन्न एक पुत्र
(छाया १ १६ उप १५८ टी)।

पंथुय नि [पाण्डुय] १ श्रेष्ठ रंग का
रिमा हुमा (छाया १ १—पत्र २८)।

पंथुय पु [पाण्डुय] १ वर्यवर्ण का बाल्यो
पंथुय की वृत्ति करनेबाला एक निज (पत्र
ठा २ १—पत्र ४४ उप ६८६ टी)। २
वर्य की एक वृत्ति (धाय १)। ३ न मेर
पर्वत पर स्थित एक वन पाण्डु-वन (सम
६६)।

पंथुय पु [पाण्डुय] १ श्रेष्ठ वर्य, श्रेष्ठ रंग।
२ पीत-मिश्रित श्रेष्ठ वर्य। ३ नि वर्य वर्य-
बाबा। ४ श्रेष्ठ-मिश्रित पीत वर्यबाला
(कय उप वे ४६)। ज्ञा की [पय]
एक शैव छात्री का नाम (पाम)। रियय
[रियय] एक नम ना याम (धाय १)।

पंथुरा पु [पाण्डुरा] संभावी की एक
जाति कर्म कपालेबाला संभावी (पय
२४)।

पंथुरा पु [पाण्डुरा] १ शिव-मक
पंथुरा संभावी की एक जाति (छाया
१ १३—पत्र १६३)। २ देवी पंथुरा
किसा वहुया हरीति (उप ३)।

पंथुरिज पु नि [पाण्डुरिज] पाण्डुर वर्य
पंथुरिज का नाम हुमा (पा १८८ विपा
१ २—पत्र २७)।

पंथ नि [पय] १ कथवर्ती पथिम (नय
३ १३)। २ यरीयन यनुर (पया

पय १७ भा)। ३ रियि की के यनुर
रियि-प्रतिपुन (पय २ ३)। ४ यम
यमय, पथिपु (बोध १६ टी)। ५ यमय
नीच गुण (छाया १ ८)। ६ रियि निर्जन
(बोध २१)। ७ वीर्य कय-पय-पय
नय— (इह २)। ८ व्यापन शिमट
शिमटबालागरी धर्म पंथय हार बावर्न
(इह १ भाषा)। ९ वीरय वृक्षा (उप ८)।
१ वृक्षमिष्ट का मेने पर बना हुमा। ११
पयुपि वामी (छाया १ १—पत्र १११)।
कुन न [कुन] नीच कुन कयय वाति।
(ठा ८)। वर नि [वर] नीच ब्राह्मण
की नीच करनेबाला वर्यी (पय २ १)।
वीरि नि [वीरि] नीच ब्राह्मण से
छोटी-निर्वाह करनेबाला (ठा ३, १)। हार
नि [हार] कन्या-मुखा ब्राह्मण करनेबाला
(अ ३, १)।

पंथाय वक [पं] हाक करना मारना।
पंथाय (पिठ १२३)।

पंति की [पंति] १ पंति, मेरी कठार (हि
१ २३ कुमा कय)। २ सेना-विशेष जिसमें
एक हाथी एक रथ, तीन घोड़े पीर पाँच
परासी हों मेरी सेना (पत्रम ३६ ४)।

पंति की [पं] मेरी, सेना-बना (हि १ २)।

पंथिय की [पंथि] पंथि, यही 'पथयि
का धर्मविशेष का धर्मविशेष' का
(भाषा २ ३ १ २)। की, 'पंथियाम' (मय)।

पंथ पु [पय पथि] माप रास्ता 'पंथ
किर धर्मता' (हि १ ८८) 'पंथमि यह
परिमृष्ट' (सुपा २३)। हेका २४ प्राप्
१७३)।

पंथ पु [पय] पंथि, मुनाकिर (हि १ ३ ;
पय ७४)। कुन न [कुन] मार
पीठकर पुनाकिर की वृक्षा (छाया १
१८)। कट पुं [कट] वही धर्म (विपा
१ १—पत्र ११)। कटि की [कटि]
वही धर्म से जोरलेखार्थ पामनर्न का धर्म
पंथकोटि का धर्म कटि (छाया १ ८८)।
पंथय पु [पय] एक वन मुनि (छाया
१ ३४ कय ६ टी)।

पंचाङ्ग देवी पंच = पञ्च पञ्चि, 'पञ्चमण्डले
पञ्चाङ्गमण्डले' (भा. ११)।

पञ्चिष्य पुं [पञ्चिष्य, पञ्चिष्य] मुद्राङ्गि,
पञ्च 'पञ्चिष्य एव पञ्च' (भा. ११५)।
महा. कुमा. शाल्या १ न। बन्ध १. ११५)।
पञ्चमुद्राङ्गी की [रे] कुरुर-मृ. से पञ्चमी बार
मालीव की (रे १, ११)।

पञ्चम वि [रे] शीर्ष वाम्य (रे १, ११)।

पञ्चम वि [पञ्चम] निरुचित (नि. १)।

पञ्चमि वि [रे] ज्येष्ठि विरुद्धी बीज की
की हो वह (रे १, १०)।

पञ्च घट [पांस्य] मलिन करना। पञ्चै
(वि. १, १२)।

पञ्चन वि [पांसन] कर्मवि कर्मवला
हृत्प नप्लेवला (रे १, ७ पु. १५३)।

पञ्च पुं [पांस, पांस] बुरी रज्य (रे
१८ पा. ५५)। कीकिय कीकिय
वि [कीकिय] विरुद्धे घात वचन में
पञ्च-कीकिय की की हो वह वचन का घात
(महा. ५५)। 'पिशाच पुंकी [पिशाच]
की रेणु-लित होने के कारण पिशाच के पुत्र
पांसुन पञ्चा हो वह (व. १२)। मुख्य
पुं [मुख्य] विद्यावत् ननुप-विद्येय
(पञ्च)।

पञ्च पुं [पञ्च] कुकर, पुरा (रे १, २१)।

पञ्च देवी पञ्च (व. १)।

पञ्चकार पुं [पाञ्चकार] एक रात्रि का भोज,
ऊपर नमस् (व. ३, ५)।

पञ्चसु पुं [रे] १ कीकिय कीकिय। १ बार,
कनति (रे १, ११)। १ वि. ५८, पञ्च
हुय (व. १)।

पञ्चसु पुं [पाञ्चसु] १ पुञ्च पञ्च-वाम्य
(पा. ११, १११)। १ वि. ५८-पुञ्च
(व. १)।

पञ्चम की [पाञ्चम] कुकरा कर्मविद्यापी
की (कुमा)।

पञ्चमि वि [पाञ्चमि] बुद्धि-पुत्र विद्या
हुय 'पञ्चमि-पुत्र' (व. १)।

पञ्चमि की [रे] पाञ्चमि] पार्थ की
हृदे (व. १११)।

पञ्चमि की [पाञ्चमि] कुकरा, कर्मविद्यापी
की (पा. ५८ ११, २ १ १०१)।

पञ्चम देवी पञ्च (वामा १, १)।

पञ्चम पुं [पञ्चम] पञ्च-विद्येय एक प्रकार
का बोझ (व. ५ १—प. २५८)।

पञ्चम पुं [पञ्चम] कर्म कर्मवला (व. ५)।

पञ्चम न [पञ्चमन] ऊपर देवी (पु. ५
१११)।

पञ्चमि वि [पञ्चमि] कर्म-पुत्र, कर्म
हुय (व. ५)।

पञ्चमि वि [पञ्चमि] कर्म-पुत्र (व. ५
११२)। की. 'पि' (व. ५)।

पञ्च वि [पञ्च] १ प्रसुत प्रसुत कर
नित वसती कर्म (व. ५ १—प. ११५
११५)। १ व. ५—प. ११५)। २ व.
लिमि (व. १५ ५)।

पञ्च देवी पञ्च = प्रसुत (व. ५ १)।

पञ्च देवी पञ्च। कर्म- पञ्च-विद्येय
मात्र (व. ५)।

पञ्च वि [पञ्च] १ प्रसुत-पुत्र। २ कीचा
हुय (व. ५)।

पञ्चम न [पञ्चम] कर्म-पुत्र कीचा
(वि. ५)।

पञ्च घट [प + घट] कर्म कर्म
प्रसुत करना। पञ्च (व. ५ १
११ वि. १५५)।

पञ्च घट [प + घट] १ कर्म में
वामा उपयोग में वामा। २ कर्मवला केला।
३ पञ्च (व. ५ १—प. १)। देवी
पञ्च = प + घट।

पञ्च घट [प + घट] १ कर्म,
वामा। २ कर्मवला कर्म 'पार्थ वर विधि
पञ्चमि' (पु. २, १ ११)।

पञ्च पुं [पञ्च] १ कर्म-पुत्र, कर्म
वामा (व. ५ १)। २ कर्मवला, कर्म
विद्येय (व. ५ ५८ टि. वि. १)। ३ कर्म-
विद्येय 'वामा' पुत्र वामा एक पञ्चम।
४ कर्मवला: 'पञ्चमि-विद्येय' वामा-पुत्र
(व. ५ ५)। ५ कर्म। ६ कर्मवला। ७
विद्येय प्रसुत केला (वि. १)। ८ व. ५
वामा का एक प्रकार का वामा-विद्येय

वामा (पञ्चम)। १ एक महापुत्र, ज्येष्ठि
विद्येय (पु. २)। २ व. ५ 'पञ्च'
एक वामा वामा, 'विद्येय' पुत्र (व. ५
१)। व. ५ 'विद्येय' 'विद्येय' वामा
का कर्मवला वामा, 'वामा विद्येय' वामा
पञ्चम-वामा कर्मवला (व. १)। व. ५
[व. ५] 'विद्येय' वामा का वामा
(वि. २)। देवी पञ्च = प्रसुत।

पञ्चम की [पञ्चम] कर्म-पुत्र कर्म
पञ्चम वि वा पञ्चम वि वा पञ्चम
(वि. १)।

पञ्चम की [पञ्चम] कर्म-पुत्र (व. ५
१५५ कर्म १५२)।

पञ्चमि वि [पञ्चमि] कर्म-पुत्र 'विद्येय'
पुत्र का वामा (व. १)।

पञ्चमि वि [पञ्चमि] ऊपर देवी (व. ५
१)।

पञ्चमि वि [पञ्चमि] कर्म हुय 'वामा'
पञ्चमि-पुत्र पञ्चमि (१ कर्म)। व.
वामा (व. २)।

पञ्चमि वि [पञ्चमि] १ कर्म-पुत्र (५
२)। २ विमि (व. ५)। ३ व. वामा-विद्येय
वामा 'वामा वामा कर्म-पुत्र' (व. १, ५
५)। देवी पञ्चमि।

पञ्च वि [पञ्च] कर्म कर्म में वामा हुय
(व. ११)।

पञ्च घट [प + घट] १ कर्म का वामा
कर्म। २ कर्म में कर्म। ३ कर्म।
पञ्च घट पञ्चमि पञ्चमि (व. ५ १)।
कर्म पञ्चमि (व. ५)। व. पञ्चमि
(व. ५)।

पञ्च देवी पञ्च = प्रसुत (व. ५—प. ५१)।

पञ्चम की [पञ्चम] कर्म कर्म
(व. ५)।

पञ्चमि वि [पञ्चमि] कर्म कर्म का
वामा-विद्येय हो वह (व. १ ११ टि. व. ५)।
पञ्चम न [पञ्चम] १ कर्म-पुत्र कर्म (व. ५
१)। व. वामा—व. २०)। २ व.
कर्म-विद्येय (व. ५ ५)।

पञ्च (व. ५) घट [पञ्च] कर्म। कर्म-
(वि. ५ ५५)।

पक्षम देखो पयास = प्रकण (विष) ।

पक्षि देखो पणिठ (राज) ।

पक्षिण वि [प्रक्षिण] १ सम, मोया हुआ ।

२ वर पिना हुआ 'बहि पक्षिया (शा)
विश्वि वि पुण्णा' (उत्त १२ १३) । देखो
पक्ष्म = प्रक्षिण ।

पक्षिप्रवि वि [प्रक्षिप्रवि] बहिष्ठ क्षिति
(सू १ ८) ।

पक्षिदे देखो पाइ = प्रक्षि (प्राह १२) ।

पक्षिदि (दी) देखो पाइ = प्रक्षि (स्वज
१ मनि ६३) ।

पक्षिम देहा पक्षिण (उत्त १२ १३) ।

पक्षिण न [प्रक्षिण] के के लिए केंद्रा
(वज १) ।

पक्षुम देखो पक्षर = प्र + कृ । पक्षुण्ड (कम्म
१ १०) ।

पक्षुम्य पक्ष [प्र + कृ] कोष करना
हुला करना । पक्षुम्यि (महावि ४) ।

पक्षुम्यि (इह) वि [प्रक्षुम्यि] कुल, कुपित
हुला हुआ (हि ४ १२९) ।

पक्षुमिअ उपर देखो (महावि ४) ।

पक्षुम्य सङ्ग [प्र + कृ, प्र + कृ] १
करने का प्राप्ति करना । २ प्रत्यक्ष करना ।

३ करना । पक्षुम्य (वि ३ ८) । वङ्ग
पक्षुम्यमास (सुर १६ २४ वि ३ ८) ।

पक्षुमिअ वि [प्रक्षुमिअ, प्रक्षुमिअ] १ करने-
वाला कर्ता । २ पुं प्राप्ति के कर शक्ति
करने में समर्थ हुए (इ ४६ ठा = पुण्ड
१५६) ।

पक्षुमिअ वि [प्रक्षुमिअ] कैंचि स्वर से चिह्नमा
हुला (अ ६ ११२) ।

पक्षेठ देखो पक्षाठ (पञ्च) ।

पक्षेय पुं [प्रक्षेय] हुला, क्षीन (पा १४) ।

पक्ष वि [पक्ष] पक्ष हुआ (हि १ ४७ २
७६ पाय) ।

पक्ष वि [पक्ष] १ सम बहिष्ठ । २ समर्थ,
पक्ष पक्ष हुआ (हि १ ९४ पाय) ।

पक्षवि वि [प्रमाप्ति] प्रपुष्ट प्राप्ति (पुवा
२०) ।

पक्षपाद पुं [पक्ष] १ मकर, मकरपाद (हि
१ २३) । २ पानी में बसेवाला सिंहासार
बन-जानु (वि ३, ५०) ।

पक्षग वि [पक्ष] १ समस्त, समस्तियु । २
समर्थ, शक्त (वि १ ९२) । ३ पुं वायुका
(उ १३) । ४ एक प्रकार का । ५ पुंभी-
प्रकार के चिह्न के पक्षेय में खुलेवाला एक मनुष्य

जाति (वीर राज) । भी. जा (छाया १ १
भीय वङ्ग) । ६ पुं एक मोन जाति का वर,
शम्भु-मुह (पञ्च १२) । उक्त व [पक्ष]
१ वायुका का वर (इह १) । २ एक पक्षि
कुल 'पक्षकुल' के वरों को सखी हयों के
पक्षियों होह (पाय १) ।

पक्षजि वि [पक्ष] १ बहिष्ठ शोभमान मूष
शोभना हुआ । २ मूष प्रयोग हुआ । ३
प्रियवच प्रियमायी (वि १ ६३) ।

पक्षमिय पुंभी [पक्ष] एक प्रकार के वर में
खुलेवाली मनुष्य-जाति (पञ्च १ १—पक्ष
१४—इह) ।

पक्षम न [पक्षम] केवल भी में वनी हुई
बटु, मिठाई खाति (पुवा १८०) ।

पक्षम सङ्ग [प्र + कृ] प्रकर्ष के समर्थ
होना । पक्षमह (स्य १३—पक्ष १०८) ।

पक्षम सङ्ग [प्र + कृ] १ प्रकर्ष के बला
बला जाग समान करना । २ एक प्रयत्न
होना । प्रक्षिप्त होना । पक्षमह (उत्त १
१३) । पक्षमही (उत्त २० १४—इह १
१३) । वायुमायमेव पक्षमह (पुव १ २
१ १३) ।

पक्षम पुं [प्रक्षम] प्रस्ताव प्रथम (पुवा
१७४) ।

पक्षमपी भी [प्रक्षमपी] विद्या-विशेष (पुव
२ २ २०) ।

पक्षवि वि [पक्ष] १ समर्थ, शक्त (हि २
१७४—पाय ११ १ ४—मज्झ ३४) ।
२ बर्त-मुह, पक्षि (सुर ११ १ ४—पा
११८) । ३ भीडा 'बहिष्ठ पक्षमवस्था'
(पा ११२ वि ४६१) ।

पक्षस देखो पक्षस (पाय) ।

पक्षलाभ पुं [पक्ष] १ शरण । २ व्याप (वि
१ ७३) ।

पक्षाइय वि [पक्षाइय] पक्षमा हुआ
'पक्षाइय' पक्षाइय (वज्झ ६३) ।

पक्षि सङ्ग [प्र + कृ] केंद्रा । वङ्ग
'छात्र व प्रक्षि व कक्षर व उपरि पक्षि
माया' (छाया १ २) ।

पक्षिप्रवि वि [प्रक्षिप्रवि] निचने क्षीरा का
प्राप्ति किया हो वह (छाया १ १ कृष्ण) ।

पक्षेय वि [पक्ष] पक्षा हुआ (उत्ता) ।

पक्षम पुं [पक्ष] वैदिका का एक भाग (पय
८२) ।

पक्षय पुं [पक्ष] १ पक्ष पक्षपाद, पाया
महीन पक्षय दिन-रात (उत्त २ ४—पक्ष
८६ कुमा) । २ कुल की कृष्ण पक्ष
उत्तमा वीर क्षेप पक्ष (वीर २ ६ २
१ ६) । ३ पक्ष पक्ष, कक्षा के लीचे
का पाय । ४ पक्षियों का प्रत्यक्ष-विशेष

पक्ष, पक्ष, पक्ष (कुमा) । ५ वक्ष्य-
प्रक्षिप्त अनुमान-प्रमाण का एक प्रत्यक्ष

वाक्यवाली बटु (विशे २८२४) । ६ वक्ष,
वीर । ७ जला, वक्ष टोली । ८ विष

पक्ष । ९ शरीर का पाया पाय । १
उत्तपक्ष । ११ वीर का वक्ष (हि २ ४७) ।

१२ उत्तपक्ष (वज १) । ग वि [पक्ष]
पक्ष-मायी वक्ष-प्रत्यक्ष (कम्म १ १८) ।

'पक्ष पुं [पक्ष] प्रत्यक्ष-विशेष—
जानु वीर वक्ष पर वक्ष वक्ष कर बैठना ।

१ बलों हाथों से शरीर का प्रत्यक्ष कर बैठना
(उत्त १ १३) । २ पुं [पक्ष] पक्षा वक्ष

कृष्ण (कृष्ण) । वक्ष वि [पक्ष] उत्त-
वक्ष-वक्ष (वज १) । वाइय वि [वाइय]

पक्षपाद करवत्ता उत्तपक्षी करवत्ता
(उत्त ७२८ ठा वक्ष १ ठा) । वाइ पुं

[वाइ] उत्तपक्षी (उत्त १७ स्वज
४२) । वाइ (दी) देखो वाइय (माट—
विज २ वाइ १५) । वाइ देखो वाइ

(पुवा २ १ २६३) । वाइ पुं [वाइ]
पक्ष-प्रत्यक्ष विचार (उत्त ६ १२२) । वाइ

पुं [वाइ] वैदिका का एक प्रत्यक्ष-विशेष
(वी १) । वाइय वि [वाइय] वक्ष

पाय (हि ४ ४ १) । वाइया भी
[वाइय] होम-विशेष (व ७२४) ।

पक्षम न [पक्षम] प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष-
'पक्षम' प्रत्यक्ष वक्ष ३१ ३१ (विह
६) ।

पगामसो म [प्रथमम्] द्वावल् अतिराग
‘पगामसो दुष्का’ (पठ १७ ३)।

पगार वु [पगार] १ मेर (पगार १)। २
‘तति एतत् पगारेण चर्चं चर्चं बवाविधो’
(महा)। ३ बावि बयेष्ट प्रपुति (पुण १
११)।

पगाम केरो पगाम = प्र + गाम्। बह
पगामे (महा)।

पगाम वु [प्रथम] १ प्रथम तति वनक
(छाया १ १)। ‘एवं यद् ओमुपवयनपुकि-
वप्रयतिमुपवयनपुकि’ यदि सुचारं ब्याज
(बहा)। २ प्रविदि ब्याति (पुण १ १)।
३ बाविर्भाष प्रादुर्भाव। ४ वरपोष पाण
(यज)। ५ होम दुष्का ‘छर्चं च पर्वत
यो कने न य वनकेष पगारं माहुरे’ (पुण
१ २, ३)। ६ वि. वनके वनक (पिपू
१)।

पगामग केरो पगाम (पठ)।
पगामग केरो पगामग (दीन)।
पगामगया की [प्रथमगया] प्रथम
बावीक (पीप ३१)।

पगामगया की [प्रथमगया] प्रथमकल
(उत्त ३२ २)।

पगामग वि [प्रथमग] प्रथम करनेकाल
(रिने ११३३)।

पगामग वि [प्रथमग] उद्योक्त कीन
ये नरिन्व बन्धुवनेण नगं विपगगह।
वयनिर्विधि (पुण १ १४ १२)।

पगाम केरो पगाम (दीन ११)।

पगामग म [म + ग] बावीक वा
प्रारम्भ होता। बन्धिविजय (उत्त १३
पुण ४ १६)।

पगामग केरो पगाम (पठ कीन वि
३६१)।

पगाम वि [पगाम] १ प्रथम पुन (पुण
७३)। २ वनक, बहि (पुण १ १ गुण
२१६)।

पगाम व [म + ग] १ वरण करना।
२ द्या। ३ बावण करना। ४ करना।
हो पगाम वा वनिर्विधायी पगि-
विन (वि १ २ २५३ की वाया ०
१ ४ १ वम)।

पगाम वि [पगाम] १ पगाम पुन (पठ
१७ ४८)। २ विसकी कीन बाई वई हो
बह (उत्त १११ टी)।

पगाम वि [पगाम] विपने छाने का प्रारम्भ
किया ही बह (पठ ४६)।

पगाम केरो पगाम (पुण १ १ २)।
पगामीकर व [पगामी + क] प्रगुष्ट करना,
छन्दार करना वनक करना। वनक पगु
जीकीरत (पुण ११ ३१)।

पगे व [प्रग] वृष्ट, प्रथम काव (पुण ७
७८ पुण १३३)।

पग व [प्रग] वृष्ट करना। पगव
(पठ)।

पगाम वि [के] पगाम वनक [वृष्ट
१ १)।

पगाम व [प्रग] वने के लिए वनका
हुवा वनक-पग (पुण २ १ ७१)।

पगाम वु [प्रग] १ वनि वनक
(पीप १६६)। २ वनक (वि ८, २७ १२,
३४)। ३ पगामी की वनक में वनाई बावी
होरी नाक की वनी नाक। ४ पगामी की
बावी की होरी वनी वनाह (छाया १ १,
३)। ५ वनक वृष्टि (छाया १ १)। ६ वृष्ट
काल। ७ वनक वृष्टि वनक वनक-
वृष्टि (पठ)।

पगाम वि [प्रग] १ वनक
वनक वनीह (पुण १)। २ वनक वनीह
(वत पीप)। ३ वनक वनीह (वत १
४ १)।

पगाम वि [प्रग] वनक केरो (वत)।

पगाम व [व] व [प्रग] वनक
पगाम व [व] व [प्रग] वनक (वत १ ४ ४
पुण)।

पगाम वु [के] वनक वनीह (१६ १२)।
पगाम व [म + ग] वनक वनीह
वनीह (पिपू १७)। वनीह वनीह वनीह
(पिपू १७)।

पगाम व [प्रग] वनक वनीह वनीह
वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह
(पिपू १)।

पगाम व [म + ग] वनक वनीह वनीह
वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह
(पिपू १)।

पगाम वु [प्रग] वनीह वनीह वनीह
वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह
(पिपू १)।

पगाम वि [प्रग] वनीह वनीह वनीह
वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह
(पिपू १)।

पगाम व [प्रग] वनीह वनीह वनीह
वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह
(पिपू १)।

पगाम व [प्रग] वनीह वनीह वनीह
वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह
(पिपू १)।

पगाम व [प्रग] वनीह वनीह वनीह
वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह
(पिपू १)।

पगाम व [प्रग] वनीह वनीह वनीह
वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह
(पिपू १)।

पगाम व [प्रग] वनीह वनीह वनीह
वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह
(पिपू १)।

पगाम व [प्रग] वनीह वनीह वनीह
वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह
(पिपू १)।

पगाम व [प्रग] वनीह वनीह वनीह
वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह
(पिपू १)।

पगाम व [प्रग] वनीह वनीह वनीह
वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह
(पिपू १)।

पगाम व [प्रग] वनीह वनीह वनीह
वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह
(पिपू १)।

पगाम व [प्रग] वनीह वनीह वनीह
वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह
(पिपू १)।

पगाम व [प्रग] वनीह वनीह वनीह
वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह
(पिपू १)।

पगाम व [प्रग] वनीह वनीह वनीह
वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह
(पिपू १)।

पगाम व [प्रग] वनीह वनीह वनीह
वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह वनीह
(पिपू १)।

पद्य वि [प्रत्ययिक] १ विरहाची विधास-
नाला (छाया १ १२) । २ ज्ञाननाला
प्रत्ययनाला । ३ न भूत-ज्ञान भाष्य ज्ञान
(विश्वे २११६) ।

पद्य वि [प्रत्ययिक] विरहासनाला विधा-
स (महा सुर १६, १६६) ।

पद्य वि [प्रत्ययिक] प्रत्यय से उत्पन्न
प्रतीति से संज्ञा (अ १ १—पद्य १११) ।

पद्य न [प्रत्यय] हर एक व्ययव (प्रत्य
११ कम्प) ।

पद्यविधि की [प्रत्ययिक] विधावेची-विशेष
-विधिविधिवर्धनपणा पद्यविधि पद्यविधि
विधा (मुद्रा १ १) ।

पद्य पु [प्रत्यय] १ अन्वयिक (प्रती
१६) । २ वि समीप्य देश संनिष्ठ प्रत्यय
ज्ञान (सुर २ २) ।

पद्यविधि वेची पद्यविधि = प्रत्ययिक (छाया
२ १ १ १) ।

पद्यविधि वि [प्रत्ययिक] समीप्य देश में
स्थित (अ २११ टी) ।

पद्यविधि वि [प्रत्ययिक] प्रत्यय देश से
ज्ञाना हुआ (वन्म ६ टी) ।

पद्यकल न [प्रत्यय] १ द्विचर प्राति की
छायाप्राति के विधा ही उत्पन्न होनेवाला ज्ञान
(विश्वे २६) । २ द्विचरी से उत्पन्न होनेवाला
ज्ञान (अ ४ १) । ३ वि प्रत्यय ज्ञान का
विषय 'पद्यकलमो मयागो एवो लक्षणी
महाप्रायो' (सुर १, १०१) ।

पद्यकल } एक [प्रत्या + कला] व्याप
पद्यकला } करना व्याप करने का निमित्त
करना । पद्यकला (प्रत्य) । पद्यकल-
मात्र पद्यकलापमात्र (वि २६१) ज्ञा ।
एक पद्यकलाप्राचा (वि १८२) । क
पद्यकलाय (धन ६) ।

पद्यकलाप न [प्रत्याकलाप] १ पद्यकला
करने की प्रक्रिया (मय ७७) । २ कल
कलापनविधेय नवर्वा पुनर्कलाप (धन २६) । ३
धर्म साधना—निध कर्मी से निष्ठित (कम्प १
१०) । ४ परम पु [वर्ण] कलाप-विशेष
साधन-विधि का प्रतिपन्नक शोक-साहि
(कम्प १ १०) ।

पद्यकलापि वि [प्रत्याकलाप] व्याप की
प्रक्रिया करनेवाला (मय ६ ४) ।

पद्यकलापी की [प्रत्ययानी] भाषा-विशेष
प्रतिवेधकन (मय १ ३) ।

पद्यकलाय वि [प्रत्याकलाय] व्यक्त धोड़
रिया हुआ (छाया १ १ मय कम्प) ।

पद्यकलाय वि [प्रत्याकलायक] व्याप
करनेवाला, 'यत्पद्यकलायक' (मय १४ ७) ।

पद्यकलाय एक [प्रत्या + कलापय] व्याप
करना किसी विषय का व्याप करने
की प्रक्रिया करना । पद्यकलायविधि
(धन ६) ।

पद्यकलाय वि [प्रत्ययिक] प्रत्यय ज्ञानवाला
(वन्म १) ।

पद्यकलाय वेची पद्यकलाय (मुद्रा ६२४) ।

पद्यकलायक एक [प्रत्यय + क] प्रत्यय
करना लक्ष्य करना । पद्यकलायक-
रिस्ति (धन १८८) ।

पद्यकलायिकि (टी) वि [प्रत्ययिक] प्रत्यय
क्रिया हुआ साक्षात् ज्ञाना हुआ (वि ४६) ।

पद्यकलाय मय [प्रत्यय + मय] प्रत्यय
होना साक्षात् होना । पद्यकलायमय
(धन ६) ।

पद्यकलाय वेची पद्यकला ।

पद्यकला वि [प्रत्यय] १ प्रवाल, मुख्य (अ
२४) । २ बौद्ध सुन्दर (अ १८६ टी, सुर
१ १११) । ३ मनुष्य, मया (पाथ) ।

पद्यकला वेची पद्यकलाय (धन ४ २,
१—पद्य ७६) ।

पद्यकला वेची पद्यकलाय (धन) ।

पद्यकलायिकि वि [प्रत्याकलाय] पद्यकला
में उत्पन्न पद्यकला-उत्पत्ती (अ ६६,
वि १११) ।

पद्यकलायिका वेची पद्यकलायिका (धन) ।

पद्यकलाय [कला] करना उपकला । पद्यकला
(वि ४ १०१) । पद्यकलाय (मुद्रा) ।

पद्यकलाय [मय] ज्ञाना गमन करना ।

पद्यकलाय (वि ४ १२२) ।

पद्यकलाय वि [कलाय] मय हुआ उपकला
हुआ (वि २ १०४) ।

पद्यकलाय की [वि प्रत्ययिक] मयी का एक
प्रकार का कण (वि १११०) ।

पद्यकलाय वि [प्रत्ययिक] विरोधी प्रतिपक्षी
बुरम (अ १४६ टी मुद्रा १ ७) ।

पद्यकलाय एक [प्रत्यय + मय] धन्य
करना । पद्यकलायमात्र (छाया १
२) ।

पद्यकलाय वेची पद्यकलाय । पद्यकलाय (अ
११ २३) ।

पद्यकलाय वि [प्रत्यय] विरक्त व्याप करने का
प्रारम्भ किया मया ही वह (अ ८२८) ।

पद्यकलाय न [वि] बाहु, कुलाम (वि ६ २१) ।

पद्यकलाय न [प्रत्याकलाय] विरक्ति (वि
२८३) । वेची पद्यकलाय ।

पद्यकलाय वि [प्रत्ययिक] प्रतिपक्षी विरोधी
बुरम (अ १ ११ टी पद्यकलाय १४१) ।

पद्यकलाय वि [प्राकलाय, पद्यकला] १ पद्यकला
दिता वरक का पद्यकला का । २ न पद्यकला
विधा पद्यकलायक साधनवेची बोधप्राप्त
स्थिति वेची बाहु, पाठ्य एवं पद्यकलाय
पद्यकलायिकि (अ) मय प्राचा (अ २ ३) ।

पद्यकलाय की [पद्यकला] पद्यकला विधा
(अ १०—पद्य ४०८ प्राचा) ।

पद्यकलायिकि वि [प्राकलाय] पद्यकला विधा
का विधा १ ७ वि ११६, ६ २) ।

पद्यकलायिका वेची पद्यकलायिका (धन ४ २,
१—पद्य ७६) ।

पद्यकलायिका वेची पद्यकलायिका (धन ४ २,
१—पद्य ७६) ।

पद्यकलायिका वेची पद्यकलायिका (धन ४ २,
१—पद्य ७६) ।

पद्यकलायिका वेची पद्यकलायिका (धन ४ २,
१—पद्य ७६) ।

पद्यकलायिका वेची पद्यकलायिका (धन ४ २,
१—पद्य ७६) ।

पद्यकलायिका वेची पद्यकलायिका (धन ४ २,
१—पद्य ७६) ।

पद्यकलायिका वेची पद्यकलायिका (धन ४ २,
१—पद्य ७६) ।

पद्यकलायिका वेची पद्यकलायिका (धन ४ २,
१—पद्य ७६) ।

पञ्चपक्षोऽयं वि [हे] मासक-विषय, तद्विषय
मासक (हे १ १४) ।

पञ्चभूमास पुं [प्रत्यामास] शिवस्य
प्रत्युत्पास (वि २१३२) ।

पञ्चमिजाय वैश्वो पञ्चमिजाय । पञ्चमि-
मासवि (ही) (वि १० ३१) ।

पञ्चमिजायि (ही) वैश्वो पञ्चमिजायिज
(वि ३१३) ।

पञ्चमिजाय एक [प्रत्यमि + जा] यहि
बालस्य पञ्चमिज होता । पञ्चमिजाय
(यह) । नञ् पञ्चमिजायमाय (छाया
१ १६) । ईह पञ्चमिजायिज
(यह) ।

पञ्चमिजायिज वि [प्रत्यमिजाय] यहि-
बाला ह्या (ह ३१३) ।

पञ्चमिजाय न [प्रत्यमिजाय] यहिजा
(ह २१३ नाट—छन्द ४४) ।

पञ्चमिजाय वैश्वो पञ्चमिजायिज (ह
१ १३ १४ ४४ महा) ।

पञ्चमाय वैश्वो पञ्च = पञ्च ।

पञ्चय पुं [प्रत्यय] १ प्रतीति ज्ञान शेष
(छा ४ १; वि ११४) । २ मित्र, मित्र
(वि २११२) । ३ ईह, कारण (छा
२ ४) । ४ शत्रु विरुद्ध उत्पन्न करने के
लिए किया या कथया बन्धु तत् माय धर्म
का वर्णन वीर्य (वि २१११) । ५ राज
का कारण । ६ राज का विषय, शत्रु वर्णन
(छा) । ७ प्रत्यय-बन्ध, प्रतीति का
उत्पन्न (वि २१११ धामय) । ८ विशाख
भ्या । ९ शत्रु, शत्रु । १० शिव, विवर ।
११ शत्रुता धामय । १२ व्याकरण-विशेष
प्रति में लक्षा शब्द-विशेष (ह १ १४) ।

पञ्चय वि [हे] १ पञ्च इत्यर्थ, पञ्चा
ह्या (हे १, ११३; पुत्रा १४४; लुर १ १४४
पुत्र १४४; पाप) । २ पञ्चय पञ्चविषय
(हे १, ११३) ।

पञ्चयिज } (यह) [प्रत्यय] शेषीय
पञ्चयिज } (यह), नञ् (हे ४ ४२) ।

पञ्चयिज (ही) वि [प्रत्यय] नञ् ह्या
यस्य नञ् पञ्चयिज (ही) नञ् विषय
मित्र (१) नञ् नञ् (यह २१४) ।

पञ्चयिज वि [प्रत्यय] १ मित्रया
ह्या । २ पञ्चयिज (धामय) ।

पञ्चयिज न [प्रत्यय] १ शत्रु-
पञ्चयिज, शत्रुपञ्चयिज (वि १ ४) । २
प्रतिपक्ष (यह १) ।

पञ्चयिज न [हे] मुक्त एक प्रत्यय की मोटी
लक्ष्मी जिससे बालक बालि बाल नञ् बाले
हैं (हे १ १४) ।

पञ्चयिज पुं [प्रत्यय] १ बाल, मित्र
व्यापार (छाया १ १, यहा छ २ १) ।
२ शत्रु ह्या (यह १४, १२३; यहा ३
यौन २४) । ३ यहा 'पञ्चयिज' शब्दों
विषयों (पुत्रा ११२) । ४ मुक्त यौन
(पुत्र ११२) ।

पञ्चयिज न [प्रत्यय] १ शत्रुपञ्चयिज
नञ् का प्रत्यय (यह १ १) । २ यहाँ
(यहा ३ ११३) ।

पञ्चयिज (ही) वि [प्रत्यय] १
मित्रिज (यह—छन्द ११३) ।

पञ्चयिज न [प्रत्यय] शत्रुपञ्चयिज (यह
१ १) ।

पञ्चयिजाय } वैश्वो पञ्चमिजाय । पञ्च-
पञ्चयिजाय } विषयवि (वि ११३) । पञ्च
पञ्चयिजाय (ह ४२) । ईह, पञ्चयिजायिज
(ह ४४) ।

पञ्चा ही [हे] मुक्त-विशेष पञ्चयिज (यह १ १) ।
'पञ्चयिज न [हे] बालक मुक्त की मुक्त
हैं बाल का बाल ह्या पञ्चयिज—बाल
यहा का एक उत्पन्न (छा १, १—यह
११) ।

पञ्चा वैश्वो पञ्चा (यही ११३; नाट—छन्द ४) ।
पञ्चायिज एक [प्रत्या + गम्] यौन
लिंग, नापक यौन । पञ्चायिज (यह) ।

पञ्चायिज (ही) वैश्वो पञ्चायिज (यही २३) ।
पञ्चायिज वैश्वो पञ्चायिज—यह + यहा ।

पञ्चायिज (यहा २ १३, ४, १) ।
यह पञ्चायिज (वि २१३) । यहा-
पञ्चायिज (वि ४२३) ।

पञ्चायिज (यहा १) [प्रत्यायिज] यहा-
यहा पञ्चयिज मित्रयिज (यह ११३) ।
पञ्चायिज पुं [प्रत्यायिज] यहायिज मित्रयिज
(यह ११३) ।

पञ्चायिज (यहा १) [प्रत्यायिज] यहायिज मित्रयिज
(यह ११३) ।

१३, यहा पुत्र १) । 'पञ्चायिज' मित्रयिज
(यहा) । वैश्वो पञ्चायिज ।

पञ्चायिज वि [प्रत्यायिज] १ नापक यौन
ह्या (यह ११३; हे १ १३) महा) । २ यहा
प्रत्यायिज (यह १—यह ११३) ।

पञ्चायिज एक [प्रत्या + यहा] यहायिज
यहायिज । यहायिज पञ्चायिज (ही) (वि
४२३ ५०४) ।

पञ्चायिज न [प्रत्यायिज] नापक से यहायिज
(यहा २४) ।

पञ्चायिज } एक [प्रत्या + यहा] यहायिज
पञ्चायिज } यहायिज । यहायिज पञ्चायिज (वि
११ ११३) ।

पञ्चायिज (ही) वि [प्रत्यायिज] नापक
यहायिज (वि ४२३; नाट—यिज १) ।

पञ्चायिज न [प्रत्यायिज] यहायिज होकर
यहायिज (यहा) ।

पञ्चायिज वि [प्रत्यायिज] मित्रयिज मित्रयिज
(वि ११३; यहा १) ।

पञ्चायिज पुं [प्रत्यायिज] मित्रयिज (यह
४२३ १३ नाट—यिज १) । वैश्वो पञ्चायिज ।

पञ्चायिज एक [प्रत्या + यहा] यहायिज
यहायिज होकर या यहायिज । यहायिज 'यहायिज'
ह्यायिज पञ्चायिज यहायिज (यहायिज) ।

पञ्चायिज पुं [प्रत्यायिज] यहायिज यहायिज
(यहायिज १—यह ४४ यौन) ।

पञ्चायिज एक [वि + यहायिज] १ प्रतीति
यहायिज । २ यहायिज यहायिज । पञ्चायिज (यह
४२३) । पञ्चायिज (ह १२४) ।

पञ्चायिज वैश्वो पञ्चायिज ।

पञ्चायिज न [प्रत्यायिज] यहायिज यहायिज
यहायिज (वि ११३) ।

पञ्चायिज वि [प्रत्यायिज] १ मित्रयिज-यहायिज ।
२ यहायिज-यहायिज (यिज ११३) ।

पञ्चायिज एक [प्रत्या + यहा] यहायिज यहायिज
यहायिज होता । पञ्चायिज (यहायिज) । यहायिज
पञ्चायिज (यहायिज ११३) ।

पञ्चायिज एक [प्रत्या + यहा] यहायिज वैश्वो ।
यहायिज (वि ११३) ।

पञ्चायिज वैश्वो [प्रत्यायिज] यहायिज
यहायिज यहायिज (यह १, १—यह ११३) ।
पञ्चायिज वि [प्रत्यायिज] यहायिज (यह) ।

पञ्चाङ्ग नि [प्रच्युत] प्रचुर छायावाधा
(पनि १६)।

पञ्चाङ्ग नि [प्रच्युत] १ रका हुवा
माध्याह्निक। २ क्षियावा हुवा (पत्र) पनि।

पञ्चाङ्ग देवो पञ्चाङ्ग = प्र + च्युत्।

पञ्चाङ्ग दु [प्रच्युत] पान बाधने क्य
कह्य (श्रीव २१६ या)।

पञ्चाङ्गि (श्री) नि [प्रच्युत] भोग्य हुवा
(नाट—मुञ्च २१६)।

पञ्चाङ्गि नि [प्रच्युत] देवो पञ्चाङ्गिनि
(पञ्च)।

पञ्चाङ्गिनि नि [प्रच्युत] पञ्चाङ्गिनि
पञ्चाङ्गिनि पञ्चाङ्गिनि कलेवाला (पञ्च १४१)।

पञ्चाङ्गो (श्री) देवो पञ्चाङ्ग = पञ्च (वि
१६)।

पञ्चाङ्ग न [पञ्चयन्त] पञ्च, पञ्च में
बाधे का योग्य 'बाधे करिने पञ्चाङ्गकल
भारि' (महा)।

पञ्चाङ्ग न [प्रच्युत] १ माध्याह्निक
कह्य। २ नि माध्याह्निक कलेवाला। या
श्री [०] माध्याह्निक 'पञ्चाङ्गपञ्चाङ्ग' (पञ्च)।

पञ्चाङ्ग देवो पञ्चाङ्ग। पञ्चाङ्ग (काव)।

पञ्चाङ्ग श्री [वि] पितृका, पितृका, पितृका
पितृका पञ्चाङ्ग-विरोध (१६ १)। पितृका
न [पितृका] 'पञ्चाङ्ग' क्य पितृका (पञ्च ७
न टी—पञ्च १११)।

पञ्चाङ्ग (पञ्च) देवो पञ्चाङ्ग (१६ १६०)।

पञ्चाङ्गन देवो पञ्चाङ्ग = प्र + च्युत्।

पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] १ पञ्च की मुञ्च
कलेवाला कर्म पञ्च का कर्म कलेवाला कर्म
(कर्म मुपा ११६; १२२)। २ पञ्च की मुञ्च
कलेवाला कर्म (पञ्चा १६ १)।

पञ्चाङ्ग नि [पञ्चाङ्ग] पञ्चाङ्ग नि पञ्चाङ्ग
का भागी, शोरी (उप १०६)।

पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] १ पञ्च निर्या (उपा
७४ १)। २ नि पञ्च निर्या का पायाव
(महा १२ २१ प्राय)। ३ पञ्चाङ्ग का
का 'पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग' (कर्म)। ४
पञ्चाङ्ग कर्म 'पञ्चाङ्गपञ्चाङ्ग' (कर्म)
(पञ्च १०६)। या न [पञ्चाङ्ग]

जतपथे जतरी पाधा द्वितीया (महा ७ २
१—पञ्च ८१)। सेख दु [पञ्चाङ्ग] पञ्चाङ्ग
पञ्चाङ्ग (पञ्च)।

पञ्चाङ्ग श्री [पञ्चाङ्ग] पञ्चाङ्ग निर्या (उपा
महा)।

पञ्चाङ्ग नि [पञ्चाङ्ग] पीछे से कर्म
पीछे का (विरो १०६२)।

पञ्चाङ्गपितृका देवो पञ्चाङ्ग-पितृका (पञ्च
१४)।

पञ्चाङ्ग (पञ्च) देवो पञ्चाङ्ग (पञ्च)।

पञ्चाङ्ग नि [पञ्चाङ्ग, पञ्चाङ्ग] १
पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग
पञ्चाङ्ग (वि १०६ १०६ १४)।

पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग
पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग
(१४)।

पञ्चाङ्गपितृका (पञ्च) नि [पञ्चाङ्गपितृका]
पितृका पञ्चाङ्गपितृका पञ्चाङ्गपितृका (पञ्च)।

पञ्चाङ्ग देवो पञ्चाङ्ग-कर्म (१६ १०६)।

पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग नि [पञ्चाङ्ग] पञ्चाङ्ग
कले की योग्य-साधनी कलेवा (१६ १०६)।

पञ्चाङ्गपञ्चाङ्ग १ नि [पञ्चाङ्गपञ्चाङ्ग] पीछे
पञ्चाङ्गपञ्चाङ्ग से कर्म (पञ्च)।

पञ्चाङ्ग कर्म [प्र + च्युत्] बीजना कह्य।

पञ्चाङ्ग (वि २१६)।

पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्गपञ्चाङ्ग] बीजना कर्म
कह्य (श्रीव ११६)।

पञ्चाङ्ग नि [पञ्चाङ्गपञ्चाङ्ग] कर्म कर्म
हुवा (या १०६)।

पञ्चाङ्ग नि [पञ्चाङ्ग] जलायक कला
कलेवाला (पञ्च ११४)।

पञ्चाङ्ग न [पञ्चाङ्ग] पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग (विरो
१०६ टी—पञ्च ७२२)।

पञ्चाङ्ग कर्म [प्र + च्युत्] १ विरोध कर्म
कलेवाला कर्म (पञ्च)। २ कर्मकर्म। कर्म

पञ्चाङ्ग नि [पञ्चाङ्ग] पञ्चाङ्ग कलेवाला

'पञ्चाङ्गपञ्चाङ्गपञ्चाङ्गपञ्चाङ्गपञ्चाङ्ग' (मुपा १)।

पञ्चाङ्ग कर्म [प्र + हा] व्याप कह्य। पञ्चाङ्ग
(वि २)। कर्म पञ्चाङ्गपञ्चाङ्ग (पञ्चा)।

पञ्चाङ्ग श्री [पञ्चाङ्ग] पञ्चाङ्ग-पितृका पञ्चाङ्ग
श्री श्री या कर्म (मुपा ११०)।

पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग [पञ्चाङ्ग] पञ्चाङ्गपितृका पञ्चाङ्ग
पञ्चाङ्ग, शोरी (विरो १०६)।

पञ्चाङ्ग देवो पञ्चाङ्ग—पञ्चाङ्ग (पञ्च)।

पञ्चाङ्ग नि [पञ्चाङ्ग] पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग
पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग (पञ्चा २
१ ४ २)।

पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग [पञ्चाङ्ग] पञ्चाङ्ग-पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग
पञ्चाङ्ग (१०६)।

पञ्चाङ्ग कर्म [पञ्चाङ्ग] पञ्चाङ्ग, पञ्चाङ्ग कह्य।

पञ्चाङ्ग (पञ्चा १ १)। कर्म 'पञ्चाङ्ग' पञ्चाङ्ग
पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग (मुपा १ २ १ २४)। कर्म पञ्चाङ्ग
(पञ्च ४)।

पञ्चाङ्ग नि [पञ्चाङ्ग] पञ्चाङ्ग-पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग (अ ४ ४—
पञ्च १०६)।

पञ्चाङ्ग नि [पञ्चाङ्ग] पञ्चाङ्ग-पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग 'पञ्चाङ्ग' कर्म
पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग (पञ्चा १ १६—पञ्च २ १)।

पञ्चाङ्ग देवो पञ्चाङ्ग (१ ११ कर्म १ ७)।

पञ्चाङ्ग दु [पञ्चाङ्ग] पञ्चाङ्ग, पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग
(१ १०६ २ ११; मुपा ४ २१६)।

पञ्चाङ्ग नि [पञ्चाङ्ग] पञ्चाङ्ग, पीछा (१६ ११)।

पञ्चाङ्ग नि [पञ्चाङ्ग] पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग
(पञ्चा १४ ७)।

पञ्चाङ्ग देवो पञ्चाङ्ग (मुपा १०)।

पञ्चाङ्गपञ्चाङ्ग दु [पञ्चाङ्गपञ्चाङ्ग] पञ्चाङ्ग (पञ्चाङ्ग
पञ्चाङ्गपञ्चाङ्ग १०६ २१६)।

पञ्चाङ्ग दु [पञ्चाङ्ग] पञ्चाङ्ग, पञ्चाङ्ग (पञ्चा १४
२ नाट—मुञ्च १०६)। देवो पञ्चाङ्ग।

पञ्चाङ्ग नि [पञ्चाङ्ग] पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग (पञ्चा)।

पञ्चाङ्ग नि [पञ्चाङ्ग] १ 'पञ्चाङ्ग' नि पञ्चाङ्ग,
'पञ्चाङ्ग' पञ्चाङ्ग (अ २ १ पञ्चाङ्ग १ १;
कर्म १ ४६)। २ पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग। ३
पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग ४ पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग, पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग
पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग (१ २ २४;
पञ्चा)। ५ पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग
पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग 'पञ्चाङ्ग' नि पञ्चाङ्ग १०६ है
कर्म कर्म (कर्म १ २१)। पञ्चाङ्ग पञ्चाङ्ग

[नामन्] प्रकृतर एक कर्म-विशेष (पञ्च-
तम १७) ।

पञ्चत न [पर्याप्त] नवप्रकार कीटीस विष
का कृतनाश (संश्लेष १८) ।

पञ्चतर [हे] केवो पञ्चतर (पद—पञ्च
२१) ।

पञ्चति की [पर्याप्त] १ यष्टि सामर्थ्य
(पृष्ठ १ १ ४) । २ बीज की नष्ट शक्ति,
विशेषेण प्राप्य पुष्पको को प्रकृत करने तथा
उत्पन्नो धात्रा, एतरेण धात्रि के रूप में वस्तु
को का काय होता है, बीज की पुष्पको को
प्रकृत करने तथा परिणामो या पशुको की शक्ति
(अर्थ; वस्तु १ ४६, पद ४ ४ ४) । ३
प्राप्ति पूर्ण प्राप्त (हे २ ११) । ४ यष्टि
विषयवत्प्राप्यबीजियास की लक्ष्य प्रकृति १
(अर्थ ७३८ टी) ।

पञ्चति की [पर्याप्त] १ पूर्ण पूर्णता
(वर्णन १८) । २ प्राप्त अन्तर्गत (पृष्ठ
२ ८) ।

पञ्चत पु [पञ्चत] यैक-विशेष विरक्त एक
बार बरछी से धूमि में एक हजार वर्ष तक
विनाशदा एतरी १० पञ्चतु (१७) को छ
प्रकृतों के छ अन्तर्गत का वस्तुप्रकार
अर्थ (अ ४ ४—पद २७) ।

पञ्चत पु [हे प्रार्थक] प्रविशन्तु, निशान्त
का विना परवत्ता (अर्थ ६३ वस्तु ७) मुर १
१७४ २२) ।

पञ्चत पु [पञ्चत] १ मृत-काल का एक वेद,
उत्पत्ति के प्रथम समय में सृष्ट-विशेष के कर्म-
वर्णन को की की मृत पद का अर्थ होता
है उक्त रूपसे समय में ज्ञान का निराला
अर्थ ब्रह्म है मृत मृतकाल (अर्थ १ ७) ।
२—केवो पञ्चत (अर्थ १ १) उक्ति
विशेष ४७८ ४७८ ४८ ४८१) । समाप्त
पु [समाप्त] मृतकाल का एक वेद अन्तर्गत
एक वर्ष-मृत का अनुप्रास (अर्थ १ ७) ।

पञ्चत न [पञ्चत] निरवध अन्तर्गत
(विशेष ८१) ।

पञ्चत हा [पञ्चत] ब्रह्म, बीजम् । पञ्च-
त पञ्च (हे ४ २, हे ६ २६ बुधा) ।

पञ्चतय पु [पञ्चत] एकप्रकार-नामक नरक-
पृथिवी का एक नरकनाश (अ १—पद
१६२) । मृतक पु [मृत] एक नरकनाश
(अ १—पद १६७ टी) । त्वष्ट पु [पञ्चत]
नरकनाश-विशेष (अ १) । त्वष्ट पु
[त्वष्ट] एक नरकनाश नरक-स्थान
विशेष (अ १) ।

पञ्चत केवो पञ्चत । पञ्चत (पञ्च) । वक्तु
पञ्चत (अर्थ) ।

पञ्चतय वि [पञ्चतय] अन्तर्गतता (अ
४ १) ।

पञ्चतय पु [पञ्चतय] तीव्रत नरक-पृथिवी
का एक नरक-स्थान (विशेष ८) ।

पञ्चतय वि [पञ्चतय] १ अन्तर्गतता बुधा
अर्थ (बुधा) । २ बुध अन्तर्गतता, केवो
अर्थ (पञ्च २) ।

पञ्चतय वि [पञ्चतय] १ अन्तर्गतता ।
२ बुध अन्तर्गतता (पुत्रा ११८) एतरी ।

पञ्चतय वि [पञ्चतय] अन्तर्गत (विशेष
११६) ।

पञ्चत पु [पञ्चत] १ परिच्छेद विधाय (विशेष
८३ अर्थ) । २ केवो पञ्चत (बुधा,
अर्थ विशेष २७२२ अर्थ १२) । अन्तर्गत न
[अन्तर्गत] अन्तर्गत पुत्र-अर्थ एक का अर्थ
अन्तर्गत-विशेष (विशेष) । अर्थ वि
[अर्थ] १ विश अन्तर्गत की अर्थ (पञ्च
२ २) । २ ज्ञान अर्थ बुधोन्तर्गत (अ १) ।
३ न. विषयवर्णन का अनुप्रास (बुधा) ।
अर्थ वि [अर्थ] अन्तर्गत (अ १) ।
द्विप पु [विशेष अर्थ, अर्थ] अन्तर्गत न
विशेष अर्थ की अर्थ (अर्थ १२) । अर्थ
ही मुख्य अन्तर्गतता अर्थ (अर्थ १) । अर्थ,
नय पु [नय] नही अन्तर्गत एक अर्थ
(अर्थ विशेष ७२) अन्तर्गत अर्थ अर्थ का
अर्थ अर्थ अन्तर्गत (अर्थ ११) ।

पञ्चतय न [पञ्चतय] परिच्छेद, निरवध (विशेष
१) ।

पञ्चतयय एक [पञ्चतय + अन्तर्गत] १
अन्तर्गत अर्थ अर्थ । २ अर्थ अर्थ ।
३ अर्थ अर्थ के अर्थ अर्थ अर्थ । अन्तर्गत

(ही) (या १६) । पञ्चतयय (वि
२१२) ।

पञ्चतयय न [पञ्चतयय] अन्तर्गत
(अर्थ) ।

पञ्चतयय न [पञ्चतयय] अन्तर्गत, अन्तर्गत
अन्तर्गत अर्थ (बुधा) ।

पञ्चत केवो पञ्चत (हे २ २१) ।

पञ्चत की [पञ्चत] मार्ग अन्तर्गत अर्थ न
अन्तर्गत अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ (अर्थ
१२०) हे १ १ अर्थ १७६) ।

पञ्चत की [हे] अन्तर्गत अर्थ (हे १ १) ।

पञ्चत की [पर्याप्त] अन्तर्गत, अन्तर्गत-अर्थ
(हे १ १ अर्थ) ।

पञ्चत केवो पञ्चत अन्तर्गत अर्थ अर्थ अर्थ
अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ (अर्थ ११) ।

पञ्चतय पु [पञ्चतय] अन्तर्गत अर्थ अर्थ अर्थ
अर्थ अर्थ (अर्थ ११) ।

पञ्चतय वि [पर्याप्त] अन्तर्गत अर्थ अर्थ अर्थ
अर्थ अर्थ (अर्थ ११) ।

पञ्चतयय एक [पर्याप्त + अन्तर्गत] अर्थ
अर्थ । अर्थ, पञ्चतयय (अर्थ) ।

पञ्चतय पु [पर्याप्त] १ अन्तर्गत अर्थ का अर्थ
अर्थ (विशेष २२) । २ अर्थ अर्थ (विशेष
८३) । ३ अर्थ अर्थ, अर्थ-अर्थ । ४ अर्थ
का अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ (विशेष १२१)
अर्थ, अर्थ । अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ
(१) । २ अर्थ अर्थ अर्थ (अर्थ १ १) ।
३ अर्थ, अर्थ (अर्थ) । ४ अर्थ अर्थ ।
अर्थ अर्थ (हे १ २४) । केवो पञ्चत तथा
पञ्चत ।

पञ्चतय पु [पञ्चतय] अन्तर्गत अर्थ अर्थ, अर्थ
(अर्थ १२२) ।

पञ्चतय एक [अ + अन्तर्गत] अर्थ अर्थ,
अर्थ अर्थ । अर्थ अर्थ (अर्थ) । अर्थ, पञ्चत-
यय, पञ्चतयय (अर्थ २, १) अर्थ ।

पञ्चतयय न [पञ्चतयय] अन्तर्गतता (अ
१२० टी) ।

पञ्चतयय वि [पञ्चतयय] अन्तर्गतता बुधा,
अन्तर्गतता बुधा (पुत्रा १११) अर्थ १) ।

पञ्चतय की [हे अर्थ अर्थ] १ अर्थ अर्थ
अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ । २ अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ,
अर्थ अर्थ (अर्थ १ १ ११) ।

पञ्चिजममाण देवो पञ्च = पाप्य ।

पञ्चुद्र नि [पयुंष्ट] पञ्चक्या ह्या (१)
मिग्री ए कया कयुं छातविधं धारयै ए
पञ्चुं (पा २२१) ।

पञ्चुन्नुद्य नि [पयुंस्तुक्त] घटि ठण्ठक
(गाट) ।

पञ्चुणसर न [इ] उच्च के दुस्य एक प्रसार
का दण (३ १ १२) ।

पञ्चुणपुं [प्रचुण] १ यीहण के एक पुत्र
का नाम (संत) । २ कामरन (दुया) । ३
विद्युत शाल में प्रतिपादित कयुंष्ट ह कय
निष्पु ए एक सौ (३ ४२) । ४ एक
वैद्युति (निष् १) । देवो पञ्चुण ।

पञ्चुच नि [प्रचुक्त] कटि कटि 'माणिह
पञ्चुचकपपमनलाहि' (स ११२) 'निष्
कामरनपञ्चुचकपुंरतपमारी' (स ११२) (अवि) ।
देवो प्रचुक्त ।

पञ्चुदास पुं [पयु दास] निवेध अनिवेध
(निवे २८१) ।

पञ्चुस देवो पञ्चुण (छाया १ १ संत
१४ पुं १८ गुण १२) । ३ वि कयी
मीनस प्रमुत बनभासा पञ्चुणयोवि
पञ्चुससससो' (दुया १२) ।

पञ्चुपट्टा वक [पर्युप + पट्टा] उपस्थित
होला । हेह- पञ्चुपट्टाहुं (शी) (गाट—
देवो १२) ।

पञ्चुपट्टिप नि [पयु पस्थित] उपस्थित
मीहुर धारिद, उत्तर (उत्तर १८ ४२) ।

पञ्चुवास वक [पयु प + वास्] सेवा
करना अधिक करना । पञ्चुवास पञ्चु
वासे (उर अर) । बहु पञ्चुवासमाण
(छाया १ १ २) । कयुं पञ्चुवासिस्स
माण (दुया १७८) । संर- पञ्चुवासिमा
(अर) । ३ पञ्चुवासमिस्स (छाया १
१ संत) ।

पञ्चुवासन न [पयु पासन] सेवा, अधिक,
जमाना (अर स ११९ ठा १२७ टी
अवि १८) ।

पञ्चुवागमाय } देवी [पयु पासन] ऊपर
पञ्चुवागमाय } शी (ठा ३ ३ का
छाया १ ११ संत) ।

पञ्चुवासय नि [पर्युपासक] सेवा करनेवाला
(वात) ।

पञ्चुसमण
पञ्चुसकण } न देवो पञ्चुसणा (बयोवि
पञ्चुससवण } २१ निवार १११) ।

पञ्चुसमण
पञ्चुसमाधी [पर्युपणा] देवो पञ्चोसवमा;
परिचयणा पञ्चुसणा पञ्चोसवणा य वास
वासोय' (निष् १) ।

पञ्चुसुमण } नि [पयु स्मृ] घटि ऊजुक्त
पञ्चुसुमण } विरोध ऊजस्थित (अवि १ २
वि १२७ ए) ।

पञ्चोस पुं [प्रचोस] १ प्रकाश ऊज्योत ।
२ सज्जितो मयी का एक राजा (उर)
गर नि [कर] प्रकाश-वर्ता (संय १
कय्य बीर) ।

पञ्चोदय नि [प्रचोतिय] प्रकटित (उर
७२८ टी) ।

पञ्चोय वक [प्र + चोय] प्रकटित
करना । बहु पञ्चोयत (विद्य १२४) ।

पञ्चोयण पुं [प्रचोतन] एक वैद्य वाचाय
(उर) ।

पञ्जासव वक [परि + वस] १ वास
करना रहना । २ वैनागम-श्रीक सुय एणा-
पर्व मगला । पञ्जोसवेह, पञ्जोसविधि
पञ्जोसवैति (कय्य) । बहु पञ्जासवत
पञ्जोसवमाण (निष् १ कय्य) । हेह
पञ्जासविचय पञ्जोसवचय (कय्य
कय) ।

पञ्जोसवण न- देवो पञ्जोसवणा (पञ्चा
१७ १) ।

पञ्जोसवणा की [पयु पणा] १ एक ही
स्थान में वर्षा-नाम स्वीकृत करना (ठा १
कय्य) । २ वर्षा-नाम (निष् १) । ३ वर्ष
विरोध आधार के बाह्य शिरो का एक प्रविष्ट
वैद्य पर्व 'वाचाविधी धमारी पञ्जोसवणांनु
विधी' (अवि १ २ गुर १६, १९१) ।

कय्य पुं [कय्य] कयु एणा में बने वीर्य
काय निमित्त वाचाय, वर्णकय्य (ठा २, २) ।

पञ्जोसवणा की [पर्योसवना पयु पजमना]
ऊपर देवी (ठा १०—पञ्च २ १) ।

पञ्जोसविच नि [पयुपिच] स्थित रहा हुआ
(कय्य) ।

पञ्जोस वक [प्र + मय्य] शब्द करना
वाचाय करना । बहु पञ्जोसमाण (उर) ।
पञ्जोसट्टा की [पञ्जोसट्टिका] धन-विरोध
(विच) ।

पञ्जोर वक [अर, प्र + अर] करना
टपकना । पञ्जोर (हे ४ १७१) ।

पञ्जोर पुं [पञ्जर] प्रकाश-विरोध (एणा २) ।
पञ्जोरण न [प्रञ्जरण] टपकना (वज्ज ४
२) ।

पञ्जोरिच नि [प्रञ्जरिच] टपका हुआ (पास
कुमा महा संवि १२) ।

पञ्जोस देवो पञ्जोर = वर । पञ्जोस- (विच) ।

पञ्जोसट्टा देवा पञ्जोसट्टा (विच) ।

पञ्जोस न [प्रञ्जात] पञ्जोरण चिन्तन (एणा
११६) ।

पञ्जोस नि [प्रञ्जात] चिन्तित सोचा हुआ
(अणु) ।

पञ्जुच नि [इ] कटि कटि बड़ा हुआ
(पास) । देवो पञ्जुच

पञ्जुस देवो पञ्जुस । बहु पञ्जुसमाण
(उर ८१) ।

पटउडी की [पटउडी] लंबू बद्ध-गुह, कय
कोर (गुर ११ २) ।

पटल देवो पटल = पटल (दुया) ।

पटह देवो पटह (अवि १) ।

पटिमा (वि ४२) देवो पटिमा (पट नि
१११) ।

पटोस की [पटोस] बस्ती-विरोध पोट्यकी
धारकस्ती (निवि १११) ।

पट्ट वक [पा] पीना, वान करना । पट्ट
(हे ४ १) । भूरा पट्टीय (दुया) ।

पट्ट पुं [पट्ट] १ पञ्जल का कपड़ा पट्टी नि
हो' हरी देवमाणेण सो य मयकरी (हह
१: वीर १४) । २ एणा भूटला 'ठिपुनि
माविपट्ट' भूण करे बया मावा' (दुया
१७१) । ३ वाचाय धारि का एणा कय-
'मणिकिमादुपयणोरो बयुनीनंर' (अवि
१) 'मिच-निमादुपयणोरो' (एणा
२२) 'पट्टुद्विवायपविचण' (उर १७१)
(वीर १) । ४ मावा पर के बीदी माजी एक
प्रसार की कपटी 'वसनि' पट्टुमा पञ्जला
वाया गुर्व बज्जक्या धामी' (मजा) । ५

पट्टा बन्नामा किमी प्रकार का बर्णिकार
पत्र (पुर ११ अं १) । १ रेशम । २ पाट,
घन (वा २२ बल्लू) । ३ रेशमी कपड़ा ।
४ घन का कपड़ा (कपट धीरा) । १
मिहसग गरी पट्ट (पुर २८ गुणा २५२) ।
१२ बसाबल्लू (घन) । १३ पट्टी कोषा
घाति पर होना बाता बन्मा बल्लोत
पाटा 'बल्लुपमालपट्टबल्लोत विरिबल्लोत'
किन्दि घाटल बल्लोत (महा विरा १ १) ।
१३ काट्टिबेल (गुन २) । १४ पट्ट
[वा] पत्र नाव का बुनिया (अं १) ।
१४ टी टी [कुटी] टंग बल्ल-गु (पुर १३
१३०) । करि पट्ट [करिन्] प्रमान हली
(गुना ३०३) । कार पट्ट [कार] ठगुवाय
नक बल्लोतना गुनाडा (पट्ट ११) । वासिना
की [वासिना] एक टिपे-मुकल (वि ४
४१) । साका की [साका] काप्य बल्ल
गुनि के रेशे का कलन (गुना २ ३) । मुन्न
न [मुन्न] रेशमी घुना (घावन) । हलि
पट्ट [हलिन्] प्रमान हली (गुना ३०२) ।
पट्टक [पट्ट] पत्र नाव का बुनिया
(पुर २०१, २११) ।
पट्टसुन न [पट्टासुन] १ रेशमी बल्ल । २
घन का बल्ल (वा २२, कपट) ।
पट्टा रेशमी पट्ट (नव) ।
पट्टन न [पट्टन] कपट, रेशम (महा धीरा
ब्रामा गुना) ।
पट्टदी की [पट्टदी] पट्टादी (विदि
११२२) ।
पट्ट रेशमी पट्ट (रवा लागा १ ११) ।
पट्टसुन न [पट्टसुन] रेशमी बल्ल (बर्नि
३२) ।
पट्टा की [पट्ट] पट्टा, कोषे की पट्टी बल्ल
'कोषिया पट्टा क्तापि पट्टा' (महा-
गुन १ १) ।
पट्टिय वि [पट्टिय] पट्ट पर सिवा बल्लो
नाव बल्लेय, गुनि पट्टिबल्लोत पट्टिबल्लोत
पट्टलो बल्लोत गुनि की घाति कुटीय
विर्तो (गुना २०१) ।
पट्टिया की [पट्टिया] १ कोषा कल्ल, बली
'विर्लोपिया' (गुना १) । २ कोषी
पट्टी 'पट्टलोपिया' (घन—अं १) ।

पट्टिस पु [पट्टिया] बल्लोत-विर्लोप एक
प्रकार का हलियार (पट्ट १ १ पत्र न
४२) ।
पट्टी की [पट्टी] १ गुनीट्टि । २ हावट्टिका
हाव पर की पट्टी 'कलीविर्लोपपट्टिय'
(विना १ १—पत्र २४) ।
पट्ट टुम गुन रेशमी पट्ट टुया 'पट्टटुम'
(गुन १ १) ।
पट्ट टुया की [पट्ट] पत्र-बल्लोत, नाव गुनपली
में 'कल्ल' विरिबल्लोत कोलेले ठगुवायी
पट्टटुम हलियार (गुना २१०) । रेशमी
पट्टटुमा ।
पट्ट टुमि न [पट्ट] कल्लिन्त बल्ल पत्रा बल्ल
'पट्टटुमि' नाव कल्लुतबल्ल (घावन) ।
पट्ट वि [पट्ट] १ पत्रादी पट्टर, गुना
(लागा १ १—पत्र ११) । २ कपट निगुल
३ प्रमान बुनिया (धीरा पत्र) ।
पट्ट वि [पट्ट] विरिबल्लोत कल्ल विना पत्रा
बल्ल (धीरा) ।
पट्ट न [पट्ट] १ पीठ, ठगीर के पीठे का
भाग (लागा १ १ गुना) । २ लव ऊपर
का बल्ल 'पट्टि' पट्ट न लल्ल (घावन) ।
कर वि [कर] कल्लोतनी कल्लोतनी (गुना) ।
पट्ट वि [पट्ट] विरिबल्लोत पट्टा पत्रा हो
न । २ न प्रमान, लल्ल 'कल्लि' पट्ट
पट्टर (अ १—पत्र १०२) ।
पट्ट लक [पट्ट+लकप] १ प्रमान
कल्लोत मेरना । २ प्रकृति कल्लोत । ३
प्राम्य कल्लोत । ४ प्रकृति से लल्लोत कल्लोत ।
५ प्राम्य कल्लोत । पट्टर (वि ४ १०) ।
गुना पट्टर (कपट) । ६ पट्टविबल्ल
(कल्ल गुना १२०) ।
पट्टा रेशमी पट्टक (कपट १ ११ टी) ।
पट्टक न [प्रमापन] १ बल्लोत लल्लोत ।
२ प्राम्य 'हल्ल गुना कल्लोत पट्टक' (कपट) ।
पट्टक की [प्रमापन] १ बल्लोत लल्लोत ।
२ प्राम्य लल्लोत 'पट्टि' पट्टक (कपट
(कपट १) ।
पट्टक वि [प्रमापन] १ प्रकृति प्रकृति
कल्लोतना (लागा १ १—पत्र ११) । २
प्राम्य लल्लोत (वि १२०) ।

पट्टविब वि [प्रमापन] मेरना गुना (घावन
गुना) । २ प्रकृति (वि २) । ३ विरि
विना गुना (घन १२, ४) । ४ प्रकृति से
लल्लोत लल्लोत (पट्ट ११) ।
पट्टविब की [प्रमापन] प्रकृति-
पट्टविब वि विरिबल्लोत प्राम्य विरिबल्लोत में
विना पट्टे प्राम्य विना नाव बल्ल (अ
२, २ वि २) ।
पट्टा रेशमी पट्टा । नव पट्टा (वा
४४) ।
पट्टा न [प्रमान] प्रकृति (गुना १४२) ।
पट्टा रेशमी पट्टा । पट्टा (वि ४ १०) ।
पट्टा (वि २२१) ।
पट्टाविब रेशमी पट्टविब (वि ४ ११, गुना,
वि २) ।
पट्टि की रेशमी पट्ट = पट्ट (नव लल्ल) । मंस
न [मंस] पीठ का नाव (पट्ट १ २) ।
पट्टि वि [प्रमापन] विरिबल्लोत विना
ही बल्ल, कल्ल (वि ४ ११, लल्ल ८१ पत्र
गुना ७) ।
पट्टि वि [पट्ट] पत्रा विरिबल्लोत (पट्ट) ।
पट्टिबल्ल वि [प्रमापन] प्रकृति का
बल्लोत (वा १४) ।
पट्टिग न [पट्ट] कल्ल, लल्ल ३ विरि
वा कल्ल विना (वि २ २१) ।
पट्टि रेशमी पट्टि (कल्ल कल्ल) ।
पट्टिबल्ल पु [पट्टिबल्ल] बल्ल के गुन दो बल्लो
पर विरिबल्लोत रवा बाता बल्लोत बन्मा (पत्र
१११) ।
पट्ट रेशमी पट्ट । पट्टि (टी) (नल्ल—कल्ल
१४) । पट्टि (वि २) । कल्ल पट्टिबल्ल
(वि १ २, २२१) ।
पट्टा रेशमी पट्टा (कपट) ।
पट्ट कल्ल [पट्ट] पत्रा, विरिबल्लोत । बल्ल
(कल्ल १ २ १४४) । बल्ल पट्ट
पट्टा (वा २१४, पट्टा धीरा १४ १) ।
पट्ट पट्टिबल्ल (नल्ल—कल्ल १०) । ६
पट्टिबल्ल (कपट) ।
पट्ट पु [पट्ट] बल्ल कल्लोत (धीरा कल्ल कल्ल
नल्ल, वा ११४ वा १८) । कर रेशमी गार
(घन) । कुटी की [कुटी] टंग बल्ल-गु
(वि १ १, टी १) । गार पु [गार]

पहुवाय, कपडा हुनेवाला (पहउ १ २—
पह २०)। खुदि वि [खुदि] प्रमूय
पुवायी को प्रहल करने में हुनेवाला
(पौग)। मंडह पु [मण्डह] ठंड, बह-
मंडह (वाक)। मा वि [म] मन्नाला
बहनाला (पह)। याम पु [याम]
बह में आना आता मुह्य-बहो पादि
मुयमिब फ्याथ (पहउ स ३१)। मायय
पु [शान्क] १ बह कपडा। २ बोटी
पहुने का बन्ना बह (मह ६, ११)। ३
बोटी दौर हुन्ना (छाया १ १—पह ३१)।
पहोवा की [दे] प्रपञ्चा] क्या बहुत का
बिज्ञा या बोरी (दे १ १४ पाय)।

पहोमुय बेको पडिमुय (वि ११२)
पहोमुया की [प्रतिमुय] १ प्रतिमुय,
प्रतिमि (दे १ ८८)। २ प्रतिज्ञा (कुमा)।
पहोमुया की [दे] ग्या बहुत का चित्ता
(दे १ १४)।

पहोमुय बेको पडिमुय (मह ३२)।

पहवर पु [व] बाबा बैबा विपुव मावि
(दे १, २२)।

पहवर पु [पहवर] बीर, छत्तर (मा—
मुन्ध ११८)।

पहवममाय बेको पहउ = प्र + उह ।

पहण न [पहन] पाठ, चित्ता (छाया १
१ मयु १ १)।

पहणीय वि [प्रत्यनीक] विरोधी प्रतिपक्षी
द्वैत (स ४५६)।

पहणीय बेको पहउ = पय ।

पहपुपिया की [पुपुपिया] कौट्य बह,
बनात (धोवी २)।

पहम बेको पहम (वि १ ४—माउ—छु २८)।

पहल न [पहल] १ समुह, संघाट, कुल
(कुमा)। २ बैन धातुओं का एक जगहकर,
जिसे के समय पाय पर डका जाता बह-
कर (पहउ २, २—पह १४०)।

पहल न [दे] बीह मरिजा, मही का बहा
हुया एक प्रकार का बागडा जिससे मकल
छाप जाले हैं (दे १, ५ पाय)।

पहलया [कीन] [दे] पहलक] बठीय वडि
पहलम] दुवपरी में 'पेठु' 'पेठनी'।

'पुण्यवममहोवापो' (छाया १ ८)। की
'जिगा', 'जिगा' (स २११। घुवा १)।

पहवा की [दे] पट-कुटी पट-माहवा बह
गुह ठंड (दे १ १)।

पहउ लक [प्र + उह] बहाला बह
करना। कनक पहउममाय (पहउ १ २)।

पहउ पु [पहउ] बाय-विरोध मज्जा होत
(धीन खि महा)।

पहउय वि [दे] पूर्ण बरा हुया (स १८)।

पहउय पु [पाटहिक] होख बहालेवा
बोली होखिया (पहउ ४८ ८१)।

पहउिया की [पहउिया] कौट्य होल (पुर
१ ११५)।

पहाअ बेको पहाय = पय + पय । क
पहाइमय (दे १४ १२)।

पहाइय वि [पहायि] विघने पहायन
जिया हो बह बागा हुया (दे १२ १२)।

पहाइमय बेको पहाअ ।

पहाइया की [पहाकि] छोटी पहाका
भतर-पहाक (कुम १४२)।

पहाग पु [पहाक, पहाक] पहाक ज्वा
(कय बीग)।

पहाग पु [पहाक] ज्वा ज्वा (मह
पहाया) पाय हे १ २ ४ प्राय मठ)।

पहाग पु [पतिपहाक] १ मय्य की
एक कावि (पिया १ ८—पह ८३)। २
पहाक के ऊपर की पहाका (धीन)। इरण
न [इरण] विजय-प्राप्ति (संवा)।

पहागार न [] नौका में लफने-
वाला बह (वरी ४ १ प्रारम बीर वय
१११)।

पहायाय बेको पहाय (दे १ २३२)।

पहायायि वि [पर्यायित] जिस पर पयो
बाधा गया हो बह (कुमा २ १११)।

पहाडी की [दे] १ पीक, बरौ (दे १
६)। २ नर के ऊपर की बगई बावि की
कन्धी छत (बह ७)।

पहाइ बेको पहल (माउ—मुन्ध २४१)।

पहि वि [पहि] बहनाला (मयु १४४)।

पहि य [प्रति] इन वषों का शुभक समय—
१ प्रम (मह १)। २ मयुगीता (विजय
७८२)।

पहि य [प्रति] इन वषों का शुभक समय—
१ विरोध 'पहिमय' 'पहिमागुदेव' (महका
पठम २ २ २)। २ विरोध निश्चिन्ता
'पहिमनितिविद्य' (धीन)। ३ बीसा म्याति
'पहिमवार' 'पहिमवार' (पहउ १ १ से १
३२)। ४ वायव पीछे: 'पहिमय' (पिया
१ १) मय गुर १ १४१)। ५ मयिमुख
संयुक्त 'पहिमर', 'पहिम' (पहउ २
२ गठ)। ६ प्रविष्टन बहात 'पहिदे'
(मिये ३२४)। ७ छिद वे 'पहिमि' 'पहिमि'
'पहिमि' (छा २४—दे १ १३)। ८
प्रतिनिधित 'पहिम' (उप ७८ से)।

९ प्रविष्टन निवेध 'पहिम' (मय
ख ३६)। १ प्रविष्टन, विपयवता
'पहिम' (दे २ ४६)। ११ स्वभाव
'पहिम' (छा २१)। १२ वायोवि निध
या 'पहिमि' (घुवा ३३२)। १३
मयिमुख मयिमुख 'पहिम' (धीन)। १४
वायव मुखता 'पहिम' (पठम १ २,
१११)। १५ मयुता छोटी 'पहिम' (कुम
पहउ २)। १६ मयुता ज्वा
'पहिम' (वीर १)। १७ मयिमुख,
बर्तमानता (अ ४ ४—पह १४०)। १८
विपयव वी हलक प्रयोग होता है, 'पहिम'
(पठम १ २, ६) 'पहिम' (मय)।
पहि बेको पारि (दे ४ ३ ३ १६ १६,
मह ७)।

पहिम वि [दे] विपयि, विपुल (दे १ १२)।

पहिम वि [पहि] १ विपुल (मा ११
मायु २, १ १)। २ मिये बहने की
प्रारम्भ किया हो बहा 'भागवतेश य
'पहिम' (मयु)।

पहिम बेको पहउ = पय ।

पहिमकिम वि [प्रपहि] १ विपुल।
२ उपलिय 'महपुपुपियावि पहिमि' (मिये)।

पहिमवत पु [दे] कर्मकर, नौकर (दे
१ ३२)।

पहिमग एक [मयु + मय] मयुगल
करना, पीछे जाना। पहिमग (दे ४
१ का बह)।

पडिपाहुड न [प्रतिप्रासुत] बरबे नी भेट
(सुपा १४२) ।
पडिपिडिह नि [हे] प्रवृत्त बडा हुवा (हे
१, १४२) ।

पडिपित्त सक [प्रति + क्षिप, प्रतिप्र +
ईरय] प्रेरणा करता । पडिपित्तह (सवि) ।
पडिपिच्छण न [प्रतिप्रेरण] १ प्रेरणा (सुर
११ १४१) । २ कम्पन प्रिया । ३ वि
प्रेरणा कर्मनामा । श्रीबसिहापडिपिच्छणमस्ते
मिस्मावि दीयसे' (सुर १११) ।

पडिपिह १ डेको पडिपेहा । संक पडिपिहिता
(नि १४२) ।

पडिपीछण न [प्रतिपीछण] पिरोव पीछन
सविक बराब (गठ) ।

पडिपुच्छ सक [प्रति + प्रच्छ] १ प्रच्छा
करना, चुम्बना । २ फिर से चुम्बना । ३ प्रस
न करवा देना । पडिपुच्छर (ज) । बक.
पडिपुच्छमाप (कम्) । छ पडिपुच्छ-
मिन्न पडिपुच्छपीय (ज) छाया १
१ पय) ।

पडिपुच्छण न [प्रतिप्रच्छण] नीबे डेको
(सं ज) ।

पडिपुच्छणमा १ डी [प्रतिप्रच्छणा] १
पडिपुच्छणा १ चुम्बना चुम्बना । २ फिर से
चुम्बना (ज २४, २ ; दी) । ३ छतर,
प्रस न बराब (स ४ ज २ १३५) ।

पडिपुच्छणिज १ डेको पडिपुच्छ ।

पडिपुच्छा डी [प्रतिपुच्छा] डेको पडिपु
च्छणा (पं २, ब २ ; सु १) ।

पडिपुच्छिड नि [प्रतिपुच्छ] विच्छेद प्रस
क्रिया यमा हो भू (वा २ ५६) ।

पडिपुच्छिय नि [प्रतिपुच्छिय] वसित धनिव
नरएनकरकडकसमुनिप्रिमिमयसिपुच्छि (१
पुत्रि पृष्ठ) यपपयनमहीहोबारमप
(छाया १ १—प १२) ।

पडिपुण्य डेको पडिपुण (ज २ नि २१८) ।

पडिपुण पुं [प्रतिपुण] प्रपुन पुन न पुन,
पीता श्रीकमिसेपियमिमपुणनपडिपुणन-
पुटीय' (सुपा १) । डेको पडिपुणय ।

पडिपुण नि [प्रतिपुण] परिपूर्ण संपूर्ण
(छाया १ १ ; सुर १, १ : ११४) ।

पडिपुण्य डेको पडिपुणियय (पज) ।
पडिपुण्य १ नि [प्रतिपुण्य] पूषा करे-
पडिपुण्य १ पासा (पज सम ११) ।

पडिपुण्य-नि [प्रतिपुण्य] प्रपुणकार-कटी
(ज १० ४) ।

पडिपुण्य नि [प्रतिपुण्य] पूर्ण क्रिया हुवा
(गठ १ १ १११ ७) ।

पडिपुण्य डेको पडिपिण्य (गठ १ १
३२) ।

पडिपेण्य न [परिप्रेण्य] डेको पडिपिण्य
(सि २ २४) ।

पडिपेण्य नि [प्रतिप्रेण्य] प्रेरित विरको,
प्रेरणा बी पी हो बह (सुर १४, १५
म्या) ।

पडिपेहा सक [प्रतिपि + पा] डकना
आच्छादन करना । संक पडिपिहिता (सुपा
१ २, ११) ।

पडिपोचय पुं [प्रतिपुत्रक] नटा कया
का पुन बकनी का बडका लटी (सुपा
१२१) । डेको पडिपुचय ।

पडिपह डेको पडिपह (ज ४२५ दी) ।

पडिपिच्छि नि [प्रतिस्पर्धि] सर्वा करे-
नामा (हे १ ४४ २ ३१ प्राप् संक्षि १६) ।

पडिपिच्छणा डी [प्रतिपिच्छणा] १ स्पर्धना ।
२ संक्रमण 'पडिपिच्छणापिच्छणापिच्छि-
वसुर्लो' (सुपा ५७) ।

पडिपिच्छिड १ नि [प्रतिपिच्छिड] १ प्रति-
पिच्छिड १ विच्छिड संक्रमण (सि १३,
११ ३ १ २७) । २ स्पर्धित (नाम) ।

पडिपिह सक [प्रति + बन्ध] रोचना घट
नामा । पडिपेहा (सि १११) । छ- पडि
बन्धयन्त्र (नयु) ।

पडिपिह सक [प्रति + बन्ध] १ बंधन
करना । २ रोचना । पडिपिह पडिपिहति
(सुपा १ ३ २ १) ।

पडिपिह पुं [प्रतिपिह] व्यापि निमय
(वर्ध १११) ।

पडिपिह पुं [प्रतिपिह] १ कलाट (लगा
कम्) । २ विज, धनपान (ज ५५७) ।

१ घरवाहर, बहुमान (ज ७७१ ; कपर
१४१) । ४ स्वेष्ट ग्रीति स्य (प्र ६, पंथा
१७) । २ आसक्ति, पयिर्जय (छाया १ १३
नय) । ३ बेटन (सुपा १ ३ २) ।

पडिपिह १ नि [प्रतिपिह] प्रतिपह
पडिपिह १ करेनामा रोचनेनामा (सि
२३ १ ज २४५) ।

पडिपिह न [प्रतिपिह] प्रतिपह कलाट
(सि २१८) ।

पडिपिहय डेको पडिपिह = प्रति + यन् ।

पडिपिह नि [प्रतिपिह] १ रोच हुमा,
संक्र 'नमुरिह कपिपिह' (नय ५५७
१ १) । २ उरान्ति कपासित (गठ
१ ५२) । ३ सचक्र संक्र, संक्रम 'सरिपाण
सरिपिहकमकपिपिहकमपिपिह' ।

पडिपिहनामा (गठ) सुपा १११ उवा) ।

४ सामने बीका हुमा 'पडिपिह' नवर तुमे
नरिपिह पयपिह' (गठ) । ५ व्यव
स्थित (पंथा ११) । ६ बेटित (वठ) । ७
समीप में स्थित 'शिव स सागरिमे बल्ल
घनुरे स पडिपिह' (सु १) ।

पडिपिह नि [प्रतिपिह] निमय व्याप (पंथा
७ २) ।

पडिपिह सक [प्रति + बाध] रोचना ।
हेर पडिपिहिउं (टी) (नाट—महानी
२६) ।

पडिपिहिर नि [प्रतिपिह] प्रतिपिहरो
यलोप (सम ४) ।

पडिपिह न [प्रतिपिह] १ पडिपिह प्रति-
च्छाया (सुपा २११) । २ प्रतिमा प्रतिपिह
(पाम प्राप्) ।

पडिपिहिय नि [प्रतिपिहिय] निवका
प्रतिपिहिय पडा हो बह (सुपा) ।

पडिपुण्य सक [प्रति + पुण] १ बोध
पना । २ बापुत होना । पडिपुण्य (ज ५) ।
बक. पडिपुण्य पडिपुण्यमाण (कम्) ।

पडिपुण्यमा १ डी [प्रतिपुणमा] १ बोध
पडिपुण्यमाण (सम) । २ बापुत (स
१२४ पीप) ।

पडिपुण्य नि [प्रतिपुण्य] १ बोध-पण्य (शसु
११२, ज) । २ बापुत (छाया १ १) ।
३ न प्रतिपिह (पाथा) । ४ पुं एक राजा
का नाम (छाया १ ८) ।

पडिपुण्यमा डी [प्रतिपुण्यमा] उरचय
पुष्टि (सुपा २ २, न) ।

पडिपिह डेको पडिपिह = प्रतिपिह (मा—
पाली २६) ।

कतो पुइलेहि विहा

बेसा पडियम्ह छपइह,
(बसा ११९) ।

पडियाइकस सक [अया + सया] एया
करना । पडियाइकस (वि ११९) ।

पडियाइकस वि [अया + कया] एक
परिपक्व, छोटा हुआ (छ १ १ भग बसा
क्या विरा १ १; जीन) ।

पडियायन न [दे पर्याणक] पर्याण के
श्रीने दिया जाता, कार्य यापि का एक उपकरण
(छाया १ १—पत्र २३) ।

पडियार्ण दु [अयान् + व] विशेष धान्य
प्रदुत धान्य, बहुत कार्ण (जीन) ।

पडियाणन न [दे पयानक, पयाणक]
पर्याण के शीने छा जाता बस भाषि का
एक बुझवारी का उपकरण (छाया १
१७—पत्र २३२ टी) ।

पडिवारणा की [प्रतिवारणा] निषेध (पंचा
१७ ३४) ।

पडियायूर सक [दे] चित्रा हुआ होना ।
ह- 'पडियायूरेयम् न क्माहि पाठ
कायुरि' (भाक २३, १४) ।

पडि वि [प्रति] निषेधना (हुना) ।

पडिर छेको पडिय (सा २३ भा वे ७
१६) ।

पडिरजिज वि [दे] कल हुआ हुआ (वि
९, १२) ।

पडिरिक्कस वि [प्रतिरिक्क] निषेधनी एना
की गई हो बह (यधि) ।

पडिर वु [प्रतिर] प्रतिपक्ष प्रतिपक्ष
(बग्न ५ ३३; सुट १ २४४) ।

पडिराय वु [प्रतिर] लाली रक्तपत्रा
'उभयहृदयपत्राद्विप्रेतुमिन्मन्त्रोत्तरादिराय' ।
पाछोमरतनहर न प्रतिहृदयस्य इया बय्यो'
(बग्न) ।

पडिरिगम [दे] शैको पडिरिजिज (वह) ।

पडिरु सक [प्रति + रु] प्रतिपक्ष करना,
प्रतिपक्ष करना । बह पडिरुज (वि १२,
६; वि ४७१) ।

पडिरं वु [प्रति + रु] १ शौकना
पडिरं वु घटकरना । २ व्याह करना । पडि

रं वु (वि ४ ३६) । बह, पडिरुंरं वु (वि
११ ३) ।

पडिरु वि [प्रतिरु] रोका हुआ, घटकरना
हुना (गुवा २३, बसा ३) ।

पडिरु वु [वि प्रतिरु] १ रज्य सुन्दर,
पडिरु वु बाद, मनोहृद (सम ११७ बसा
जीन) । २ कपवा, प्रसन्न कपवाता घट
भाइतिवाता (जीन) । ३ अयापण्य कपवाता ।

४ सुन्दर कपवाता (जीन ३) । ५ योग्य,
उचित (स ८७ सम ११७ वस ६, १) ।

६ सहाय समान (याया १ १—पत्र ६६) ।

७ समान कपवाता सहाय भाकरावाता (वस
२६ ४२) । ८ न. प्रतिपक्ष प्रतिपक्ष

'कय्यावि चित्तकण्य कय्या वि पन्नि वस
पन्नि वि चित्तकण्य' (सुर ११ २३८ राय) ।

९ समान कम समान भाइति 'पुत्राधिक-
कारि पाठह विज्याहरतुवा' (गुवा २६८) ।

१ पुं लक्ष-विरोध नृप-निराज का उत्तर
विरो का हन (छ २ ३—पत्र ८३) । ११

विजय का एक मेव (बस १) ।

पडिरुंरि वि [प्रतिरुंरि] रमणीय
सुन्दर (बासा २ ४ १) ।

पडिरुंरु वु [प्रतिरुंरु] प्रतिपक्ष
प्रतिपक्ष 'तिरिचित पडिरुंरु या देहकय्या' (पत्र
६६) ।

पडिरुंरुया की [प्रतिरुंरुया] १ समान
कय्य सहाय या साहाय । २ समान रूप

वाण्य (वस २६, १) ।

पडिरुंरु की [प्रतिरुंरु] एक बुझकर बुझ
की वणी का नाम (सम १३) ।

पडिरुंरु वु [प्रतिरुंरु] गुणरापण्य (सुत्र
३३) ।

पडिरुंरु वु [प्रतिरुंरु] इकावट (पत्र
५ ७१४) ।

पडिरुंरु वि [प्रतिरुंरु] रोक्नेवाता
(पत्र) ।

पडिरुंरु सक [प्रति + रु] प्राप्त करना ।
छह पडिरुंरु (सुप १ १३) ।

पडिरुंरु वु [प्रतिरुंरु] प्राप्ति वाप (सुप
२ ४) ।

पडिरुंरु वि [प्रतिरुंरु] लक्ष हुआ सम्पन्न
(वि २ ८६) ।

पडिरुंरु ल [दे] बलीक कोट-विरोध-नृप
मुक्तिका-सुप (वि ९ ३३) ।

पडिरुंरु सक [प्रति + रु] प्राप्त करना ।

पडिरुंरु (वस १ ७) । छह पडिरुंरु
(सुप १ १३ २) ।

पडिरुंरु सक [प्रति + रु] सम्पन्न सम्पन्न
पडिरुंरु साधु धारि को दान देना । पडि

बाइरुंरु (काठ) । बह पडिरुंरुमेमाण
(याया १ ३ बस उवा) । छह पडिरुंरु

मिचा (सम ८ ३) ।

पडिरुंरु ल [प्रतिरुंरु] दान देना
(रंवा) ।

पडिरुंरु वि [प्रतिरुंरु] मिचा हुआ
'सम्यं संवृत्तारि पडिरुंरु' (वि १४) ।

पडिरुंरु वि [प्रतिरुंरु] कर्मल सोन
(बसि ३३) ।

पडिरुंरु सक [प्रति + रु] निरीक्षण
करना देना । २ विचार करना । पडिरुंरु

वस कय्य 'पडेपु बापे पडिरुंरु सार्य
पडेपु काण्य य सार्य' (सुप १ ७ २) ।

छह भुंरुंरु बापे पडिरुंरु सार्य' (सुप १
७ १६) । पडिरुंरु (सम) । छह पडि

लेहिचप, पडिरुंरुचप (कय्य) । छ पडि
लेहिचप (सोप ४ कय्य) ।

पडिरुंरु वु [प्रतिरुंरु] शैको पडिरुंरु
(बस, २१६) ।

पडिरुंरु शैको पडिरुंरु (वस) ।

पडिरुंरु ल [प्रतिरुंरु] निरीक्षण (सोप
३ भा वीन) ।

पडिरुंरुया शैको पडिरुंरुया (वस २६,
१) ।

पडिरुंरुया की [प्रतिरुंरुया] निरीक्षण
निरुण्य (सम) ।

पडिरुंरुया की [प्रतिरुंरुया] साधु ना एक
उपकरण गुंरुंरु (पत्र ११) ।

पडिरुंरुया वि [प्रतिरुंरुया] निरीक्षण
शैकोवाता (सोप ४) ।

पडिरुंरुया की [प्रतिरुंरुया] निरीक्षण दान-
सोन (सोप ३ दा ६, १) कय्य) ।

पडिरुंरु वि [प्रतिरुंरुया] निरीक्षण
(सुप १ १ ३ २) ।

पडबोधिअ केओ पडिबाहिय (अभि २६) ।
 पडिबोह सऊ [प्रति + बोधय्] १ कण्ठा ।
 २ बोध देना सम्भन्ना ज्ञान प्राप्त करणा ।
 पडिबोह (अप्य मया) । कण्ठ. पडि
 बोहिक्रान्त (अभि २६) । छंङ पडिबोहिअ
 (गाठ—मल्लो ११६) । छंङ पडिबोहिअ
 (महा) । छंङ पडिबोहियाप (अ ७ ७) ।
 पडिबोह पुं [प्रतिबोध] १ बोध सम्पन्न ।
 २ मातृपि वामणा (अप्य वि १७१) ।
 पडिबोरा वि [प्रतिबोध] १ बोध के-
 वाला । २ ज्ञानपेत्ता (वि २४० टी) ।
 पडिबोहय न [प्रतिबोधन] केओ पडि
 बोह = प्रतिबोध (अप्य अ ७ ५) ।
 पडिबाहि वि [प्रतिबोधिन्] प्रतिबोध प्राप्त
 करनेवाला (आधा २ १ ५) ।
 पडिबोहिय वि [प्रतिबोधित] विलको प्रति-
 बोध क्रिया गया हो वह (आधा १ १)
 कय) ।
 पडिभंग पुं [प्रतिभंग] भंग विनाश (वि १
 १६) ।
 पडिभज अक [प्रति + भज्] भजना
 हुना । छंङ. पडिभजिउं (अ ४) ।
 पडिभंड न [प्रतिभाण्ड] एक बस्तु को
 देखकर उसके बसने में खटौटी वाली चीज
 (अ २ ५ कुर ६ १५) ।
 पडिभंस अक [प्रति + भ्र शब्] भ्रष्ट करना
 नष्ट करना 'पडिभंसो न पडिभंस' (अ ११६) ।
 पडिभग वि [प्रतिभग्न] नष्टा हुआ
 पतारिख (घोरा २११) ।
 पडिभड पुं [प्रतिभट] प्रतिपत्ती मोक्षा (वि
 ११ ७२ आध २६ अभि) ।
 पडिभय अक [प्रति + भय] डर देना
 डरा देना । पडिभय (अप्य कया गुना
 २१५) पडिभयानि (महावि ४) ।
 पडिभगिय वि [प्रतिभगिय] प्रत्युत्पत्ति
 जिना उत्तर दिया गया हो वह (अहा गुना
 ६) ।
 पडिभजिअ वि [प्रतिभजिअ] १ विपहय
 (अभि १५) । २ न. प्रत्युत्तर, निपटार
 (अभि ६) ।
 पडिभज अक [प्रति + भज्] भजना
 भजना करना । छंङ. पडिभजिअ (अप्य अ २ १)

पडि पडिभमिय पुडिबोही बर्णात् (अभि) ।
 पडिभमिय वि [प्रतिभाम्य परिभाम्य]
 भूमा हुया (अभि) ।
 पडिभमय न [प्रतिभमय] अय, डर (अप्य ७३
 १५) ।
 पडिभा अक [प्रतिभा] मासुम होना । पडि
 भावि (शी) (गाठ—अला ७) ।
 पडिभाग पुं [प्रतिभाग] १ बंघ, भाग
 (अप्य २३ ७) । २ प्रतिभाग (अप्य) ।
 पडिभास अक [प्रति + भास] मासुम
 होना । पडिभासवि (शी) (गाठ—अप्य
 १५१) ।
 पडिभास अक [प्रति + भास] १ उत्तर
 देना । २ नीलता, कृष्णता जैसी पडिया
 चीति (अप्य १ १ १६) ।
 पडिभिण्य वि [प्रतिभिन्] संघट्ट, संलग्न
 (वि ४ ५) ।
 पडिभिन्न वि [प्रतिभिन्न] भेद-भ्रान्त
 (अप्य—आधा १६ १६५ १५२) ।
 पडिभुज्य पुं [प्रतिभुज्य] प्रतिपत्ती
 कुर्वाण—भेषज-संपत् (अप्य २७) ।
 पडिभू पुं [प्रतिभू] वासिकार, बसना
 करनेवाला मनीषा (गाठ—अप्य ७५) ।
 पडिभज पुं [वि प्रतिभज] कालान्त निष्ठा
 'पडिभजो पचाय' (आधा) ।
 पडिभोह वि [प्रतिभोहिन्] परिबोध करने-
 वाला 'अकालपडिभोहि' (आधा २ १
 १ १५ ५ ५) ।
 पडिभ वि [प्रतिभ] अमल गुण्य (मोह
 १३) ।
 पडिभ केओ पडिया । हुह वि [स्थायिन्]
 १ अमोलन में रहनेवाला । २ स्थिर विरोध
 में स्थिर (अप्य १६ १—अप्य १ अ ५,
 १—अप्य २६१) ।
 पडिभंत अक [प्रति + भज्य] उत्तर
 देना । पडिभंत (अप्य १७, ६) ।
 पडिभस्य पुं [प्रतिभस्य] प्रतिपत्ती नञ
 (अभि) ।
 पडिभा की [प्रतिभा] १ मुक्ति प्रतिभयः
 विपण्यविमर्शलेख पडिभू (अभि १)
 पाय ना १ ११५) । २ वाक्तेजस्व । ३
 दिन-रात्रिक विपण्य-विरोध (अप्य २ १)

अप्य १६ अ २, १ २ १) । 'गिह न
 [गृह] मन्त्रि (अप्य १२) । केओ पडिभ' ।
 पडिभाण न [प्रतिभाण] निष्ठे पुच्छे पावि
 का लीन किया जाता है वह रती माया
 आदि परिमल (अप्य) ।
 पडिभाण न [प्रतिभाण] प्रतिभा, प्रतिभिन
 (अप्य ७३) ।
 पडिभि १ अक [प्रति + भा] १ लीन
 पडिभिण्य १ अक भाग करना । २ निष्ठे
 करना । कर्म पडिभिण्य (अप्य) । कण्ठ
 पडिभिण्यमात्र (अप्य) ।
 पडिभु अक [प्रति + भुज] खेचना ।
 छंङ पडिभुचिउं (वि १५ २) ।
 पडिभुज्या की [प्रतिभुज्या] नियंत्र
 निवारण (अप्य १) ।
 पडिभुज वि [प्रतिभुज] छोड़ा हुआ (वि १,
 १२) ।
 पडिभोभया की [प्रतिभोभया] कुम्भप
 (वि १ ५५) ।
 पडिभोक्कय न [प्रतिभोचन] कुम्भप (अ
 ५६) ।
 पडिभोयग वि [प्रतिभोचक] कुम्भप करने
 वाला (अप्य) ।
 पडिभोचन केओ पडिभोक्कय (मीन) ।
 पडिभय केओ पडिभ (अप्य) ।
 पडिभय न [प्रतिभय] कुम्भप-विरोध,
 लीन पुत्ती विम निपटार लीन पडिभ
 कण्ठपुत्ती न अमोलनि कण्ठपु (महा) ।
 पडिभमात्र न [प्रतिभागराज] कुम्भप,
 कर्म (अभि १ १६) ।
 पडिभय केओ पडिभ = प्रति + अ ।
 पडिभय न [प्रतिभय] प्रतीक, इका
 (अप्य ११६) ।
 पडिभयिअ वि [प्रतिभयिअ] वेधित देना
 किया हुआ (मोह १ ५) ।
 पडिभा की [प्रतिभा] १ अहंरम निरन्तर-
 पडिभय (अप्य आधा) । २ पडिभाय (अ ५
 २—अप्य १५५) ।
 पडिभा की [पडिभा] कर्म-विरोध
 'पुनरपडिभा न पुनरा
 बहुकया अहं ॥ कोकता विरोध ।

नतो पुसलेहि विद्या

बैद्या पडिअस वीपडह,
(बन्ना ११५)।

पडियाइकस सक [प्रसा + स्या] व्याग
करता। पडियाइकस (वि १५१)।

पडियाइकियस वि [प्रसा + स्या] त्यक
परिअक, कोडा हुमाग (अ २, १ सग जना
कस विना १ १: बीर)।

पडियाअस न [वि पयाग] पयाग के
मीने दिया बाटा बने धारि का एक उपकरण
(छाया १ १०—पत्र २१)।

पडियागई दु [प्रत्यानस] स्त्रिय पागस,
प्रपुत्र बाइल, बहान धानर (बीर)।

पडियागव न [वि पटानक, पयागक]
पयाग के मीने रखा बाटा बने धारि का
एक उपकरण का कपटण (छाया १
१०—पत्र २१२ छे)।

पडिबारजा की [प्रतिवारजा] मियेव (बीर
१० १४)।

पडियासूर सक [वि] चिहना पुस्ता होना।
ह- 'पडियासुरेअस न कयाइहि पाउ-
बायि' (भाक २३, १४)।

पडिरि [पटिय] गिलेनाता (हुमा)।

पडिरस बेको पडिर (ग ३१ का छे ७
१६)।

पडिरिअस वि [वि] सन हुवा हुवा (वि
१, १२)।

पडिरिअस वि [प्रतिवि] विवरी एका
की गई हई हई (अभि)।

पडिरस दु [प्रतिर] प्रतिअभि, प्रतिअस
(नरक या ३३, मुर १ २४४)।

पडिरस दु [प्रतिराग] लाली रकपन
'असहइ सयपडियापेटुमिअरउठोउठिअरि।
बाओउठनहरे न अतिहउठवइ इया नयण'
(नरक)।

पडिरिगस [वि] बेको पडिरिअस (वर)।

पडिरस सक [प्रति + क] प्रतिअभि करना,
प्रतिअस करना। बह पडिरिअर (वि १२,
६ वि ४०१)।

पडिरस वि [प्रति + क] १ रीकना
पडिरस वि [प्रति] २ ब्यात करना। पडि-

बीस (वि ४ १६)। नरक, पडिरिअर (वि
११ ३)।

पडिरस वि [प्रतिर] रोक हुमा, मटकया
हुमा (मुपा २३, बन्ना २)।

पडिरस वि [प्रतिर] १ रस्य मुनर,
पडिरस २ बाह, मभीहउ (सम ११० उना-
बीर)। २ क्यबाए, मरसल ल्यवाला बह
बाहतिवाला (बीर)। ३ घसाबारर क्यवाला।

४ मुपन क्यवाला (बीर ३)। ५ बाय,
अवि (स ४० सम १३ दस ६ १)।

६ सहर सधान (छाया १ १—पत्र ११)।

७ सधान क्यवाला सहर बाकारवाला (उत
२६ ४२)। ८ न. प्रतिअस प्रतिअभि

'कयायि विअसवर कयायि पडिमि वस'
पडिरस विअस (मुर ११ २३८ राय)।

९ समान क्य सधान बाहति 'मुनपडिरस-
बाहति वासइ विअसहुवा' (मुपा २१८)।

१ पुं सहर-विरोप मुन-विरोप का उतर
दिया का दस (अ २, ३—पत्र ४३)। ११

विनय का एक नेर (बन्ना १)।

पडिरस वि [प्रतिर] १ पलीय
मुनर (बाबा २ ४ २ ६)।

पडिरस पुन [प्रतिर] प्रतिअभि
प्रतिअस 'प्रतिरि पडिरसगा मरकस' (बाबा
३१)।

पडिरसपणया की [प्रतिरपणया] १ उना
नरक, सहरता वा सहरस। २ समान वेप
बाए (उत २६ १)।

पडिरस की [प्रतिर] एक मुनकर मुन
की पली का नाम (अ १३)।

पडिरस दु [प्रतिर] पुनपरीय (मुन
३२)।

पडिरस दु [प्रतिर] रकावट (नरक
या ७२४)।

पडिरिअ वि [प्रतिर] रीकना

पडिरस सक [प्रति + क] प्राप्त करना।
उत पडिरसिय (मुप ६ ११)।

पडिरस दु [प्रतिअस] प्रतीत नाय (मुप
२ ३)।

पडिरस वि [प्रतिअस] कया हुमा सयस
(वि ६ ४६)।

पडिरसस न [वि] बन्नीक कीट-विरोप-मुन
मुनिका-स्तुप (वि १ ११)।

पडिरस सक [प्रति + क] प्राप्त करना।
पडिरस (उत १ ७)। उत पडिरस
(मुप १ ११ २)।

पडिरस २ सक [प्रति + अयस्य] अयस्य
पडिरस ३ बाहु धारि को दान देना। पडि-
सहस्र (कास)। बह पडिरसमाग
(छाया १ २ सय उना)। उत पडिरस
मिया (स ४ २)।

पडिरस न [प्रतिअस] दान देना
(दया)।

पडिरिअस वि [प्रतिअस] सिखा हुमा
'अस मरि सुनारि पडिरिअस' (वि १४)।

पडिरस वि [प्रतिअस] अयस्य को
(अभि ११)।

पडिरस सक [प्रति + लेस] १ मियेय
कया देना। २ मियार करना। पडिरस
उत कया (स)। ३ मियेय काये पडिरस
उत काय (म ४४४)। ४ मियेय काये पडिरस
(मुप १ ७ १६)। पडिरसिया (अ)। ५ पडि
लेसिय, पडिरसिय (अ)। ६ पडि
लेसिय (अ ४ कय)।

पडिरस दु [प्रतिअस] बेको पडिरस
(अ २, ११६)।

पडिरस बेको पडिरस (अ)।

पडिरस न [प्रतिअस] मियेय (अ ४
५ का अ)।

पडिरसपणया बेको पडिरस (उत २६,
१)।

पडिरस की [प्रतिअस] मियेय
कय (अ)।

पडिरस की [प्रतिअस] मियेय कय
(अ ४ का अ)।

पडिरस की [प्रतिअस] मियेय कय
(अ ४ का अ)।

पडिरस की [प्रतिअस] मियेय कय
(अ ४ का अ)।

पडिरस की [प्रतिअस] मियेय कय
(अ ४ का अ)।

पडिरस की [प्रतिअस] मियेय कय
(अ ४ का अ)।

पडिरस की [प्रतिअस] मियेय कय
(अ ४ का अ)।

पडिरस की [प्रतिअस] मियेय कय
(अ ४ का अ)।

पडिरस की [प्रतिअस] मियेय कय
(अ ४ का अ)।

पहिसिद्ध नि [दे] १ शीत उष्ण हुमा । २ मन भुवि (दे १ ७१) ।

पहिसिद्ध नि [प्रतिपिद्ध] निपिद्ध, पिबारिष्ठ (पाप उष धोष १ टीा एषु) ।

पहिसिद्धि श्री [दे] प्रतिस्पर्ध (वध) ।

पहिसिद्धि श्री [प्रतिपिद्ध] १ अनुकूल सिद्धि । २ प्रतिपक्ष सिद्धि (दे १ ४४, वध) ।

पहिसिद्धि देवो पहिपक्षिद्धि (संति १९) ।

पहिसिद्धेग दु [प्रतिस्पर्ध] स्पर्ध के उत्तर में कहा गया स्पर्ध (सम्पत् १ ४५) ।

पहिसिद्धियद्ध दु [प्रतिस्पर्ध] एक स्वप्न का विरोधी स्वप्न स्वप्न का प्रतिपक्ष स्वप्न (कम्प) ।

पहिसिद्धि १ न [प्रतिस्पर्ध] १ शिरो पहिसिद्धि १ केवल पक्षी (कम्प) । २ शिर के प्रतिपक्ष शिर, विद्या (पाठ) धारि का गनाया हुमा शिर (पद्य १ २—वध १) ।

पहिसिद्ध दु [प्रतिपक्ष] १ ऐतत्त्व वर्ण के एक भारी कुलकर (सम्प १ ११) । २ मरुतले में उत्पन्न एक कुलकर पुत्र का नाम (पद्य १ ११) ।

पहिसुय सक [प्रति + भू] १ प्रतिज्ञा करना । २ स्वीकार करना । पहिसुयद्ध, पहिसुयैर (भीत वध उग) । बहु पहिसुयमाण (वध ११, नि १ १) । संक्षु पहिसुयिष्ठा पहिसुयेष्ठा (सम्प ४ कम्प) । हेर पहिसुयेष्ठा (नि १ ७०) ।

पहिसुयम न [प्रतिपद्य] क्षीकार (उद ४२१) ।

पहिसुयग की न [प्रतिपद्य] १ गुप्तता गुप्त रह गया नबानेना प्रत्युत्तर (वध २) । की मा (वध २) । २ मरुत (वध १ १२) ।

पहिसुयग की [प्रतिपद्य] १ क्षीकार, स्वीकार । २ दुर्भिक्षा का एक शीत भावार्थ—क्षीणारी विद्या साने पर कथना स्वीकार और अनुवीन (वध १) ।

पहिसुयग नि [प्रतिपद्य] गानी रिक्, रुक् 'य निरुष्ठा निबानिगुणा' (अ १ टी—वध ११) ।

पहिसुयि नि [दे] प्रतिपक्ष (दे १ १) ।

पहिसुय नि [परिगुह] अत्यन्त गुह्य (विषय ८ ७) ।

पहिसुय नि [प्रतिपद्य] १ स्वीकृत क्षीणकृत (वध १ १५४) । २ न, क्षीकार, स्वीकार (उद ११) । देवो पहिसुय ।

पहिसुया देवो पहिसुया = प्रतिपद्य (पद्य १ १—वध १८) ।

पहिसुया श्री [प्रतिपद्य] प्रवर्ग-विरोध एक प्रकार की वीसा (अ १ टी—वध ४७४) ।

पहिसुयद्ध दु [प्रतिपद्य] प्रतिपक्षी बोद्धा (कम्प) ।

पहिसुयग दु [प्रतिपद्य] गुप्तवर्ण की एक मेछी मगर-कार वर रक्षेनाला बाधुव (वध १) ।

पहिसूर नि [दे] प्रतिपक्ष (दे १ १९ पक्षि) ।

पहिसूर दु [प्रतिपक्ष] पूर्व के सामने देखा जाता उत्पत्ति-पुच्छ द्वितीय पूर्व (सम्पु १२) ।

पहिसूर दु [प्रतिपक्ष] हन्-बन्धु (उग) । पहिसेष्ठा श्री [प्रतिपद्य] सम्पत्-विरोध उत्तर-सम्पत् (वध ११ ११, नि १ १) ।

पहिसेग दु [प्रतिपक्ष] नक्ष के तीर्थ का भाग (उग १४) ।

पहिसेय सक [प्रति + सेय] १ प्रतिपक्ष सेवा करना निपिद्ध बन्धु की सेवा करना । २ छद्म करना । ३ सेवा करना । पहिसेय, पहिसेय, पहिसेयि (कथ वध १ वध) । बहु- पहिसेयैव, पहिसेयमाण (वध ११, वध ११, नि १७) 'पहिसेयमाणो कस्तर्ह्य प्रपद्ये प्रगर्भं टीहला' (वाचा) । ह पहिसेयियकट (वध १) ।

पहिसेय देवो पहिसेयय (निपु १) ।

पहिसेयन न [प्रतिपद्य] निपिद्ध बन्धु का सम्बन्ध (कथ) ।

पहिसेयग श्री [प्रतिपद्य] ऊपर देवो (सम्प १७, उग धोष २) ।

पहिसेय नि [प्रतिपद्य] प्रतिपक्ष तथा पक्षेनाला निपिद्ध बन्धु का वीर करनेवाला (सम्प १४, ७) ।

पहिसया श्री [प्रतिपद्य] १ निपिद्ध बन्धु का वीर (वध ४ १) । २ सेवा (वध ४२) ।

पहिसेयि नि [प्रतिपद्य] शास्त्र-प्रतिपक्ष बन्धु का वीर करनेवाला (उग पद्य १ २५) ।

पहिसेयि नि [प्रतिपद्य] बिध निपिद्ध बन्धु का वीर करनेवाला (उग वध १ २५) ।

पहिसेयि नि [प्रतिपद्य] प्रतिपक्ष बन्धु की सेवा करनेवाला (उग ७) ।

पहिसेय सक [प्रति + सिध] नियम करना निबाने करना । ह पहिसेयैव (सम्प) ।

पहिसेय दु [प्रतिपद्य] नियम निबाने रोक् (धोष ११ भाग वध ११) ।

पहिसेय नि [प्रतिपद्य] नियम-कटा (वध १४ ११२) ।

पहिसेय न [प्रतिपद्य] ऊपर देवो (नि १७११ वध २७) ।

पहिसेयि नि [प्रतिपद्य] बिधका प्रतिपक्ष किया गया हो वह निबाने (विपा १ १) ।

पहिसेयैव देवो पहिसेय = प्रति + विपु । पहिसेय दु [प्रतिपद्य] प्रतिपक्ष पक्षिण १ प्रगर्भ सम्पत् प्रगर्भ (अ ४ ४ १ ११ वध ११२, नि ११) ।

पहिसेय नि [दे] प्रतिपक्ष (वध) ।

पहिसेय देवो पहिसेय (नक्ष—मुच्छ १५५) ।

पहिसेयि की [प्रतिपद्य] परिसय (नक्ष—मुच्छ १२१) ।

पहिसेय दु [प्रतिपद्य] वीर वाधुओं की वधे का स्वप्न उनामय (धोष वध ४ वध ४७४ वध १५५) ।

पहिसेय देवो पहिसेय (वध ४ ४१) ।

पहिसेय सक [प्रति + भाय] १ प्रतिपक्ष करना । २ स्वीकार करना । बहु पहि रमावज्जन् (नाट—हेरी १५) ।

पहिसेय नि [प्रतिपद्य] मरनेवाला स्वप्नेनाला (उग) ।

पहिसेय सक [प्रति + भा] १ मरना । २ क्षीकार करना । पहिसेयि (वध २ १) । पहिसेयैव (वध १ १४ १४) ।

पहिसेय (वध १ २१) ।

पहिसेय नि [प्रतिपद्य] १ प्रतिपक्ष । २ स्वीकार (वध ४ १) । देवो पहिसेय ।

परिसह परिसह दु [परिपह, परिपह] १ कुडि का परे न करता २ कुडि के समाप्त में के न करता (मय = न पच ५६) । मय दु [मय] कुडि का प्रतिमान (पच १ १३) । वत वि [वय] कालबाध (पच) ।

पञ्चम वि [पञ्च] विहाय (पचा १ ३७) ।

पञ्चाह षेको पञ्चाह पञ्चाह (वि १ २३) ।

पञ्चास न [पञ्चान] १ प्रकट ज्ञान । २ सम्यग् ज्ञान (सन ३१) । ३ साधन साध (साध) । व वि [वय] १ ज्ञानबाध । २ शाब्द (साध) ।

पञ्चाराह (स्य) वि न [पञ्चदश] पचह (पिच) ।

पञ्चासास की [पञ्चसिंहासि] पचीस बीस कीर वसि २३ (पह) ।

पञ्चास कीन [दे पञ्चास] पचास ३ (वि १ २७ पच; वि २७४ ४४५, कुमा) । षेको पचास ।

पञ्चासग वि [पञ्चासक] पचास बरों की जल का (पु १ ३७) ।

पञ्चुलीस षेको पञ्चुलीस (स १४६) ।

पण्ड पुंकी [पण] प्रण इच्छा (वि १ ३३, कुमा) । बी. न्हा (वि १ ३३) । (वि १ ३३) । बाह्य न [बाह्य] केन मुनि-बल का एक दुल (बी १८) । बागमल न [क्याकमल] व्याख्या केन दैन-दैन (पण्ड २ ३ स १ विना १ १ स १) । षेको पणिस ।

पण्डय क [प्र + स्त] मण्ड, टण्डा एकरी पण्डय कड़ी (पा ४ ८ ४६२ स) ।

पण्डय पुं [दे प्रलय] १ सन-बाध पण्डय । सन से हुन का कृपा (वि १ १ वि २११ पचम सत का पच । २ मण्ड, टण्डा 'विधिपण्ड' (विज ४७७) ।

पण्डय पुं [पण्ड] १ सगर्व दैत-विरोध । २ वि पस सेठ का निपायी (पण्ड १ १—पच १४४) ।

पण्डय न [प्रमनयन] राण्ड करना (पिचा १ २) ।

पण्डयिष षेको पण्डुय (वि १ २३) ।

पण्डु षेको पण्ड ।

पण्डि पुंकी [पारिज] कीली का धनोमान कुल के बीषणा हिंसा एकी (पण्ड १ ३ ३७ १२२) ।

पण्डिवा की [प्रजिज] एकी, कुल का धनोमान, मिलापु गरीह्यामी नरले विषा रिज्य बाहिरी (विद्य ४८६) ।

पण्डुय वि [प्रस्तु] १ अरिष्ट म्हातृ हुधा । २ विरले करने का प्रारम्भ विधा हो बहु, 'पण्डुयरोहोपासी' (पचम ७६ २ हे २ ७३) ।

पण्डुय वि [प्रस्तो] म्हातृवासा 'हृत्पण्डित' बरपयोधि पण्डुय रोहोपुण्डे । धनोपायपण्डुय वि गुणय गुणोधि पाणिधिसि (पा ४६२) ।

पण्डोचर न [प्रलोचर] सवाल-जवाल (सुर १६, ४११ क्यु) ।

पण्डु षेको पण्डु (पच) ।

पण्डर क [प्र + पार] जला । सङ्क-पवारिक (सवि १७१) ।

पण्डरा वि [प्रारक] मण्डक जल (पचम १४७) ।

पण्डर वि [प्रती] वार पण्डा हुधा पण्डि । मित्तीछे (पच) पण्ड २ १—पच ६६) ।

पण्डुय न [प्रतु] वल्ल का बना हुधा पण्डुय । मल (पाचा २, १ ७) ।

पण्डरस वि [प्रयोद] प्रकट टेषणा । पण्डरस । बास न [पण्ड] १ प्रकट टेषणा बरों । २ प्रकट टेषणा बरों । ३ प्रविष्ट टेषणा बरों (पाचा) ।

पण्ड वि [प्रा] विना हुधा पामा हुधा (कय सुर ४ ७ गुपा ३३७ की ४४४ ४ ४६ प्राय १११ ११२ १२२४ का २४१) । काल याद न [काल] १ बीज-विरोध (पच) । २ वि धनसोपित (स ४६) ।

पण्ड न [पण्ड] १ पची पचा दल करो (कय, सुर १ ७२ की १; प्राय ४२) । २ पच पच पाक (पाचा १ १—पच २४) । ३ निधर निपा जाता है बहु, बाधन पण्डा

(स १२३ सुर १ ७२ से २ १७१) । च्छेज न [च्छेज] क्वा-विरोध (पीच स ३३) । मंत वि [य] पचबाधा (पाचा १ १) । छ पुं [य] पचो (पाचा) । 'सोहा की' 'सोहा' कण्ठावि से पच के बाहुविषयी क्वा-विरोध गुपा का एक प्रकार (मयि २८) । बली की [यली] १ पचबाधी सता । २ मूह पर काल सवि से की बाटी पच-मेणी-गुल एका (कुम १६६) । किं न [युन] पच का कयन (पि ३३) । विटिय वि [युन] गुनीय कीलिय कण्ठ-विरोध पच कल में कल्ल होता एक प्रकार का कीलिय कण्ठ (पण्ड १—पच ४३) । विच्छुय पुं [युन] कीन-विरोध एक पण्ड का युनिय कण्ठिपिच कीली की एक बासि (बीच १) । 'पेट षेको' (पि १३) । 'सगहिजा की' 'सगहिजा' पचों से मये हुई पायी (पच) । समिह वि [समिह] प्रयु पचैकता (पाम) । 'हार पुं' 'हार' कीलिय कण्ठ-विरोध (पण्ड १—पच ४३, सत १६ १३८) । 'हार पुं' 'हार' पची पर निह किनेकता मान्यत्व (पीच) ।

पच न [पात्र] १ सन (कुमा प्राय ३६) । २ बाध, सधय स्वात (कुमा) । ३ दल केने योग्य पुंकी लोच (स ६४५ टी मण्ड) । ४ लयावर पचीस ज्वात (धनोच ३४) । विद्य पुं [वय] पाचों को बाधने का करा (पीच ६६८) । षेको पाच = पात्र ।

पच वि [पाच] प्रवर्ध (कय) ।

पचइय वि [प्रययित] विरल (मय) ।

पचइय वि [पचकित] १ धल पचकता । २ कुसित पचकता (पाचा १ ७—पच ११६) ।

पचइर पुं [वि] कलिय-विरोध एक प्रकार का पाच (पण्ड १—पच ११) ।

पचइय न [पचइय] बाण से पची केने की कला (ज २ टी पच १३७) । २ लक्ष्मी का दल कोरने का काज (पाचा १ १२ १) ।

पचइय वि [वि प्रासावे] १ बहु-विधिय विज्य सवि गुण (वि १ १८ सुर १,

होता है (पृष्ठ ११)। सदीत्याम न
[शरीत्यामन्] वही पूर्वोक्त धर्म (धर्म
१७)।

पत्थेय वि [प्रत्येक] नाम नवरण (एवं
१३ १११ टी)।

परय एक [प्र + धर्म्य] १ श्रावणा करना।
२ धर्मिण्या करना। ३ घटकाता रोचना।
पत्थेय, पत्थेयि (उप धीर)। कर्म पत्थेय्यधि
(महा)। वृद्ध पत्थेय पत्थेयमाणा
(मट—मन्त्रि २३ गुण २१३ प्राम्
१२)। 'कर्म पत्थेयमाणा धर्माणा वधि
दुपय' (उप १३७ टी)। कण्ड पत्थेय्यत
पत्थेय्यमाणा (ग ४ गुर १ २ से
१ ११ क्य)। क् पत्थेय, परध्वजिज
पत्थेय्यन्व (गुण १० गुर १ ११३ गुण
१४)। पत्थेय २ ४)।

परय दु [पार्थ] १ धर्म्य नम्य पत्थेय
(स ११२ बेला १२३ गुण)। २ पाश्चात्
देव के एक राजा का नाम (पुन १७ न)।
३ भद्रिकपुर नगर का एक राजा (गुण
१२२)।

परय दु [पार्थ] १ श्रावण श्रावणा (उप)।
२ दो विनों का उपवास (उप १८)।

परय देवो परय = पथ (ग १४ पथ
१७ १४ पथ)।

पत्थेय देवो पत्थेय = प्र + धर्म्य।

पत्थेय दु [पार्थ] १ कुट्टन का एक परिमाण
(वृह १ बीजक ८८ टी २६)। २ शिवका
एक कुट्टन का परिमाण (उप ३ ६६)
'पत्थेया ड डे पुत्र शरीरी ईष्टनमरा ड ठेठुडा'
(वृह १)।

पत्थेय देवो पत्थेय = प्र + धर्म्य।

पत्थेय देवो पत्थेय।

पत्थेय देवो पत्थेय (उप)।

पत्थेय दु [प्रत्येक] १ रथवा-विद्येयनामा
धर्म्य (उप ४ ४—पथ १७६)। २ धर्म्य
के बीज का अष्टावध भाग (पृष्ठ २ सम
२१)।

पत्थेय वि [प्रत्येक] १ विद्याय ह्यमा। २
विना ह्यमा (मन ६ न)।

पत्थेय न [पार्थेय] श्रावणा (महा मधि)।

पत्थेयया } की [पार्थेय] १ श्रावणा
पत्थेयया } नामन् (पार्थ ४)। २ श्रावणा-
भाष। ३ विज्ञप्ति निवेदन (ग १२ ३-
गुर १ २ गुण २६६ प्राम् २१)।

पत्थेय देवो पत्थेय = पथ (उपाय १ १)।

पत्थेय वि [पार्थेय] धर्मिण्या करनेवाला
(गुण १ २ २ १६ स २३१)।

पत्थेय देवो पत्थेय = प्रथ (उप १७६ टी
धीर)।

पत्थेयय न [पथययन] शब्दक पाथेय मार्ग
में जाने का मुख्य कर्मका (उपाय १ १३
स १३)। पथ ८ गुण ६२४)।

पत्थेय एक [प्र + स्तु] १ विद्याना। २
विद्याना। ३ पत्थेय (कथ ४ ६)।

पत्थेय दु [प्रत्येक] पत्थेय, पाथेय (धीर-
कथ पथ १७ ३६ सिरि ३३२)।

'पत्थेयण्यसो कीवो पत्थेय' डकुमिचिद्ध।
मियातिथो सरे पथ धर्माति विमर्षि
(गुर १ २ ७)।

पत्थेय न [वि] पाठ-नाशन (स ४ ४)।

पत्थेय देवो पत्थेय (प्राम् धर्मि २)।

पत्थेय न [प्रत्येक] विद्याना 'पत्थेयपत्थेय'
एवं तथा एवं (धर्मि १४७)।

पत्थेयमात्रिज न [वि] कीर्त्या करना (वि ३
१६)।

पत्थेय की [वि] नरण-नात नात (वि ३
न)।

पत्थेयिज दु [वि] पत्थेय कीर्त्या (वि ३ २)।

पत्थेयिज वि [प्रत्येक] विद्याना ह्यमा
'पत्थेयिज मातुर्ध' (पार्थ)।

पत्थेय देवो पत्थेय (वि १ १८ गुण पथ
५ २१६)।

पत्थेय एक [प्र + धर्म] प्रस्थान करना
प्रस्थान करना। वृह पत्थेय (वि ३ ३७)।

पत्थेय न [प्रस्थान] प्रस्थान नमन (धर्मि
८१ धर्मि ६)।

पत्थेय दु [प्रत्येक] १ विद्याय (उप २६)।
२ पृथक्। ३ पृथक्विभिन्न शब्दा। ४

पिपन प्रस्थि प्रस्थि विद्येय (प्राम्)। ५
पिपन प्रस्थि की रचना विद्येय (उप १—पथ
३७१)। ६ विद्याय (पि ३ १३
३११)।

पत्थेयरी की [वि] १ विद्येय, समूह (वि ३
६६)। २ शब्दा विद्येयाना पुनरुक्ति में
'पत्थेयरी' (वि ३ ६६)। पाथ गुण १२)।

पत्थेय एक [प्र + स्थाय] प्रारम्भ
करना। वृह पत्थेयर्जन (ह्यस्य १२२)।

पत्थेय दु [प्रस्थान] १ प्रथेय। २ प्रथेय
प्रथेय (वि १ १८ गुण)।

पत्थेय वि [प्रस्थेय] १ विद्येय प्रथाय
विना हो वह (वि २ १६ गुर ३ ११८)।

पत्थेय न [प्रस्थेय] १ विद्येय प्रथाय
की नहीं हो वह। २ विद्येय प्रथाय की श्रावणा
की नहीं हो वह (ग ३ १ १८ १६
१ उप)।

पत्थेय वि [वि] छेद करनेवाला (वि
३ १)।

पत्थेय वि [प्रस्थेय] श्रावणा श्रावणा करने-
वाला (उप)।

पत्थेय वि [प्रस्थेय] विद्येय श्रावणावा
प्रथेय श्रावणावा (उप)।

पत्थेय की [वि] श्रावण का नाम गुण
पत्थेयमा श्रावण-विद्येय (धर्मि ४७९)।

'विद्याय विद्येय न [पिपन] श्रावण का
नाम गुण पत्थेय-विद्येय (वि १ १६)।

पत्थेय देवो पत्थेय = प्रस्थेय प्रस्थेय
(मार्क २६)।

पत्थेय दु [पार्थेय] १ राजा नरेय (उपाय
१ १६)। २ वि विद्येय की विचार
(उपाय)।

पत्थेय की [वि पार्थेय] पाथ श्रावणा 'पथ'
करवीरपत्थेय व श्रावणा मध पथ विद्येय
(स २४ प)।

पत्थेय न [वि] १ श्रावण वृह मया कपडा।
२ वि. श्रावण मया (वि ३ ११)।

पत्थेय वि [प्रस्थेय] १ प्रस्थेय-नाम प्राकर
शिक (गुर ३ १२९ प्राम्)। २ प्राथ
नम्य (गुण ४ १ १७)।

पत्थेय देवो पत्थेय = प्र + स्तु। वृह पत्थेय-
देव (कथ)।

पत्थेयमाणा
पत्थेय
पत्थेयमाणा
पत्थेय

देवो पत्थेय = प्र + धर्म्य।

पयोड नि [प्रतोड] १ प्रस्ताव करनेवाला।
२ प्रवर्तक। ली लोई (पद्य १ १—
पद्य ५२)।
पयम (ही) केओ पयम (नि १६)।
पय केओ पय = पय (अक स्वन ११५) हे ४
२७ पद्य २ १। गट—गट्ट ५१)।
पयड कट [गम्] बला गमन करना।
पयड (हे ४ १६२)। पयडि (हुमा)।
पयसिअ नि [प्रयसिअ] विचाराया हुमा
कलवाया हुमा (भा १)।
पयसिअ नि [प्रयसिअ] १ विरुद्ध दक्षिण
की तरफ से लेकर मस्त्रालापर प्रयत्न किया
हु। २ न दक्षिणान्तर्गत प्रयत्न 'पयसिअ-
लीक'प्रत्येको प्यार (प्रमो ११६)। केओ
पयसिअ।
पयसिअन सक् [प्रयसिअन] प्रयसिअ
करना दक्षिण से लेकर मस्त्रालापर प्रयत्न
करना। हेऊ. पयसिअगेड (पद्यम ४५.
१११)।
पयसिअना की [प्रयसिअना] दक्षिण की
ओर से मस्त्रालापर प्रयत्न (गाट—बीट
१५)।
पयन न [पयन] प्रस्तावन प्रतीति करणा
(अन ५५१)।
पयन (ही) न [पयन] पियन (गाट—
मालदी १७)।
पयन (ही) केओ पयन (गाट—गुच्छ ११६)।
पयन केओ पयन = पयन पयन पयन, पयन
(हक)।
पयसिअन केओ पयसिअ (दक्षि)।
पयसिअ न [प्रयसिअ] घंटाव बन्दी (हुमा)।
पयड नि [प्रयसिअन] केलावा (गाट—
मिळ ५)।
पयन न [प्रयान] दान निरूपण (पीप
धवि ५४)।
पयनि (ही) दु [पयनि] पैल नमनेवाला
हीनक (प्रवी १७-गाट—बीटी १६)।
पयवा नि [प्रयवाक] केलावा (मिठे
१२)।
पयन केओ पयन (पा १११)।

पयसिअ नि [प्रयसिअ] प्रयत्न दक्षिण
प्रकर्ष से दक्षिण दिशा में स्थित (बीन ३)।
केओ पयसिअन।
पयसिअनि (ही) केओ पयसिअनि (पा १।
गाट—मिळ २१)।
पयसिअ केओ पयसिअ (रान)।
पयसिअ की [प्रयसिअ] निरिद्धा दक्षिण दक्षिण
केओ 'पयसिअ' वाण पयसिअ मिळगु घं
(बाबा)।
पयसिअ केओ पयसिअ।
पयसिअ सक् [प्र + पयसिअ] १ कलावा। २
प्रकार करना। पयसिअ (मि १५५)। नक
पयसिअ (पद्यम १ २ १)।
पयसिअ केओ पयसिअ = प्रयसिअ (गाट—गुच्छ
१)।
पयसिअना की [प्रयसिअना] कोटा दिया
(गाट—गुच्छ ११)।
पयगुग गुन [प्रयगुग] कोटा, किता (बाबा
१ १ २)।
पयगुग नि [प्रयगुग प्रयगुग] निर्यो देव को
मात (अन १२ वृ ३)।
पयगुगेहय न [पयोगेहय] न-विनाश कीर
कल्लाई मय कय पापवरा (रान)।
पयसिअ नि [प्रयसिअ प्रयसिअ] प्रयत्न
पीपि (हक १)।
पयसिअ सक् [प्र + पयसिअ] देव करण।
पयसिअ (पया २ १२)।
पयसिअना की [प्रयसिअना प्रयसिअना] देव
मालवी (अन ५५६)।
पयसिअ सक् [प्र + पयसिअ] प्रकर्ष से केलावा।
पयसिअ (नान)। सँह 'पयसिअ न विस्ता
कयवाया' (अन १८ नि ११४)।
पयसिअ केओ पयसिअ = प्रयसिअ (पय)।
पयसिअ दु [प्रयसिअ] देव (नान १७)।
पयसिअ नि [प्रयसिअ] प्रयत्न प्रयत्नविता
(बाबा)।
पयसिअ केओ पयसिअ = दे, प्रयसिअ (पय १४
मिळ १)।
पयसिअ केओ पयसिअ = प्रयसिअ (रान)।
पय न [दे] १ बाग-रान (हे १ १)। २
कीटा की (पय)।

पय न [पय] लोको, हुत कल (गाट
२१)।
पयसिअ केओ पयसिअ = प्रयसिअ (पय १ ११ १)।
पयसिअ की [पयसिअ] १ नान, पला (हुमा
१८६)। २ पीप, केओ (अन २, ५)। ३
पयसिअ कय (बाबा)। ४ प्रयसिअ प्रयत्न
(बला २)।
पयसिअ दु [प्रयसिअ] प्रयत्न मात। [माबा दु
[माबा] कयान-पियेय वस्तु के मात होने
पर उठका की समान होता है-वह (मिठे
१८१७)।
पयसिअ नि [दे] कट्ट, घण्टा कीटा (हे १
१)। २ कीटा दुबलपी में 'पयसिअ' 'पयसिअ'
पयसिअ नान पयसिअ' (मिठि ४१२)।
पयसिअ नि [दे] केओ पयसिअ में पयसिअ
(पय)।
पयसिअ नि [दे] विरुद्ध दक्षिण नद पया हो वह,
दक्षिण (हे १, ११)।
पयसिअ केओ पयसिअ (नान)।
पयसिअ केओ पयसिअ (गाट—गुच्छ २ ३)।
पयसिअ केओ पयसिअ = प्र + पयसिअ। प्रयसिअ-
पयसिअ (बीन १५५)। २ पयसिअ (अन)।
पयसिअ सक् [प्र + पयसिअ] कीटा दक्षिण
दक्षिण से कला। सँह पयसिअ (गाट)।
पयसिअ न [प्रयसिअन] १ कीटा देव से
गमन। २ कय की कीटा मिळि (पा १)।
३ प्रयसिअन (नान १ ७५)।
पयसिअ नि [प्रयसिअन] १ कीटा हुमा
(गाट पयसिअ १ ४)। २ पीप-पीप (रान)।
पयसिअ नि [प्रयसिअन] कीटनेवाला (पा
२)।
पयसिअ न [प्रयसिअन] १ हुत देवा। २ एक
प्रकार का बाजेन इत्य (अन)।
पयसिअ नि [प्रयसिअन] विरुद्ध दक्षिण न
पया हो वह (रान)।
पयसिअ सक् [प्र + पयसिअ] कीटा। सँ
पयसिअ (पया २ १ १, १)।
पयसिअ नि [प्रयसिअ] कीटा हुमा (पीप)।
पयसिअ सक् [प्र + पयसिअ] कीटा। पयसिअ
(मि ५५६)।

पन देहो पंथ । ८, रस जि ब [ब्रह्म]
पनछ बस भीर पांथ १३ (कम्म १ ४
२२ ६८ जी २३) ।

पनय (वि बूढ़ी) देहो पणय = प्रथम (वि ४
३२३) ।

पन्न देहो पण्य = पत्न (सुता ३३८) कुप
४ ८) ।

पन्न देहो पण्य = वे (स्य कम्म ४ २४) ।

पन्न देहो पण्य = प्रज (भावा कुप ४ ८) ।

पन्न जि [प्राज्ञ] १ पंडित बालकार, विद्वान्
(छ ७ छ १३१ बर्नस ४२२) । २ वि
प्रज-संबन्धी (सुप २, १ ३६) ।

पन्न देहो पन्थ । ८, रस जि ब [ब्रह्म]
पनछ १३ (६ २२ सम २३३ मन्थ छण) ।
रस रसम जि [ब्रह्म] पनछणी १३
वां (सुर १३, २२ ; पठम १३, १ ०) ।
रसी की [बूढ़ी] १ पनछणी । २
पनछणी छिदि (कम्म) ।

पन्न देहो पणियम = पणय (स्य १ ३१ टी) ।

पन्नगया की [पण्णाङ्गना] वेसदा बाणङ्गना
(स्य १ ३१ टी) ।

पन्नग देहो पण्णा = पणय (विपा १ ७ ;
सुर २ २३८) ।

पन्नहि देहो पण्णहि (कम्म) ।

पन्नत्त देहो पण्णत्त (सामा १ १ ; का
स १) ।

पन्नत्तरी की [पन्नत्तसत्ति] पण्णत्त ७३
(सम ८३ वि १) ।

पन्नत्ति देहो पण्णत्ति (सुता १२३ ; सोंठ ३ ;
मुता) । २ पट्टट नाम । विचत्ते प्रवण छिदि
बाप बह (सु २४) । ३ पणिका भोग-बन्ध
मनसोपुष (पायक ३३३) ।

पन्नपु जि [प्रज्ञापयित] पायणता प्रतिपाक
(सि १८) ।

पन्नपयिया की [प्रमत्तयया] देहो पुण्य
तिपा (कम्म) ।

पन्नपमन्न देहो पन्नपमन्न (सि ४४८) ।

पन्नय देहो पण्यय (नाम) । 'रिउ दुं [रिपु]
सक बणी (पाय) ।

पन्नया छी [पन्नया] नयन नयनपात्री को
शासन-देवी (संवि १) ।

पन्नय देहो पण्यय । पन्नयैह (स्य) । कर्न
पन्नयिह (स्य) । बड पन्नययंत (सम
१३४) । छह पन्नयैरुण (सि २८३) ।

पन्नयय जि [प्रज्ञापक] प्रतिपाक प्रकृत
(कम्म २ ८३ टी) ।

पन्नयय देहो पण्ययय (सुता २८८) ।

पन्नयया देहो पण्ययया (स्य पणय १
छ ३ ४) ।

पन्नयय देहो पण्ययय (सम १६) ।

पन्नयय देहो पन्नयय ।

पन्ना देहो पण्णा = प्रजा (भावा छ ४ १ ;
१) ।

पन्ना देहो पण्णा = वे (स्य ३) ।

पन्नाह सक [अनु] मर्न करण । पन्नाह
(वि ४ १२३) ।

पन्नाहिम जि [सुवि] विनका मर्न किया
क्या हो बह (पाय कुमा) ।

पन्नाय देहो पण्णाय (पाय सि ६ १) ।

पन्नारस (स्य) जि ब [अन्धवराण] पण्ण
१३ (अधि) ।

पन्नास देहो पण्णास (सम ७ ; कुमा) ।

की सा (कम्म) । इस जि [वस]
पन्नास ३ वां (पठम ३ २३) ।

पन्ना देहो पण्ण (कम्म) ।

पण्ण (स्य) देहो पण्ण = वे शलव (अधि) ।

पण्ण देहो पण्ण (सुता २३३) ।

पण्णीय जि [प्रपञ्चयित] भावा ह्यय (सि
३४६ ३३७ नाम—मुच्छ ३८) ।

पण्णीयमह दुं [प्रणिगमह] १ अद्या
विभाता (राज) । २ विभायह का विभा
पराका (बर्नस १४८) ।

पण्ण दुं [पण्ण] वीम, पुन का पुन, पोता
(सुता ४ ७) ।

पण्ण दुं [पण्णी] वीम का पुन पोते
पण्ण का पुन पण्णीया (विदे ३६२ : राज) ।

पण्ण सक [प्र + आप] प्राप्त करना । पण्णी,
पण्णीति (सि ३ ४३ उत्त १४ १४) ।

पण्णीति (सी) (सि ३ ४) । छह पण्ण
(बण १७ : सीप २३ ; विदे ३२१) । क-
पण्ण (विदे २६७८) ।

पण्णय न [दे पर्यंक] नयनवि-विरोध (सुप
२, २० ६) ।

पण्णय दुं [पर्यंक] १ पायक सुप या
पण्णय । छह की बहुत पण्णी एक प्रकार
की रोटी (स्य ३७३ अधि) । २ पायक के
पाकयता सुप मुच्छय (सि १) ।
पायय दुं [पायक] नरकावास-विरोध
(विदे ३) । मोक्ष दुं [मोक्ष] एक
प्रकार की मिट बलु (स्य १७—पण
२३३३) ।

पण्णयिया की [पर्यंक] रिज भादि की
बनी हुई एक प्रकार की चाप बलु (स्य १
१) निज ३४६) ।

पण्णय देहो पण्णय (नाम—विज २१) ।

पण्णीय दुं [दे] बलक पण्णी पण्णीया या
पण्णीय (वि ६ १२) ।

पण्णय जि [प्रणुत्त] १ बलाय पण्णी वे
बीजा हुया (पण्ण १ १ श्यापा १ ८) ।

२ ध्यात 'नयनपुनवर्णय' न' (पण ४
टी) । ३ न कुला समिना (पठम १२८) ।

पण्णीह [दे] देहो पण्ण ।

पण्णय न [मयपन्त] प्रथन करकना
(राज) ।

पण्णय दुं [दे] मणि-विरोध (वि ६ ८) ।

पण्णयिज जि [दे] प्रतिस्वित (वि ६
२२) ।

पण्णय जि [दे] १ शीर्ष बन्ना । २ बहिम-
भाय, वरुण (वि ६ १४) ।

पण्णय सक [प्र + अनु] १ विजना ।
२ कुला । पण्णय (प्राह ७४) ।

पण्णयिज दुं [प्रकुटित] नरकावास-विरोध
(विदे २८) ।

पण्णय देहो पण्णया 'बाह्यपुनवर्ण' (सुप
२ २८) ।

पण्णय सक [प्र + अनु] १ करकना,
विजना । २ कर्माया । पण्णय (सि १३, ७७ ;
या १४७) ।

पण्णयिज जि [मयुजिन] करका हुया (वि
६ १८) ।

पण्णय सक [प्र + पुन] निरुपता । बह,
पण्णय (रस) ।

पण्णय जि [पण्ण] निरुपित विना हुय
(शाप १ १३ ; का ६ ११७ पठम १
६६, सुर २, ७६ ; बह ; या ११६ ८७) ।

परसण न [परसण] स्वसना (बर्ष १ ७६)।
 परमर्षतु [परमर्षतु] १—२ विद्युत्कार
 केनें के हुकिफत और हुस्सह नामक दोनों
 इन्दी के लोकपालों के नाम (अ ४ १—पत्र
 १६७ इह)।
 परमण सक [प्र + मण्] कहना बोलना।
 परमण (महा छण)।
 परमणिय वि [प्रमणिय] उक्त, कथित
 (छण)।
 परमण सक [प्र + मण्] प्रमण करना
 मण्णा। परमेसि (मु १३३)।
 परमण सक [प्र + मण्] १ समर्थ होना पहुँ
 चना। २ होना उत्पन्न होना। परमण (वि
 ४७३)। बहू परमवद (सुपा ८६)। नाट—
 तिक ४२)।
 परमण दु [प्रमण] १ उत्पत्ति बन्ना प्रसुति
 प्रवह (अ ६, बसु)। २ प्रपन्न उत्पत्ति का
 कारण (छणि) ३ एक कैमजुनि बान्धु-स्वामी
 का स्थान (कण्ड बसु, रावि)।
 परमबा की [प्रमबा] लुटिय बान्धुके की
 पटली (पत्र २ १८६)।
 परमविप वि [प्रमूठ] की समर्थ हुना हो 'छा
 विज्जा विदुषण उन्नयमुत्तमि परमविप ले' (बर्ष १ २३)।
 परमा की [प्रमा] १ कर्णित वेज (महा कर्णित
 १११३)। २ प्रकाश 'निगुण्योमा उमा
 सर्वपयसे विपर्ययि' (वेज ३९)।
 परमाइय [पुन [प्रमा] १ प्रादन्तल सुख
 परमाय [पत्र ७ ३६ सुर ६ ६६
 महा छ २४४)। २ वि प्रकाशित रमणीय
 परमाइय (अ १४८ टी)। 'तयय वि
 [संसगियन्] प्रामाणिक प्रमाद-उत्पत्ती,
 सुख का (सुर ६ २४४)।
 परमार पुं [परमार] प्रकट कर (अ १३३)।
 परमाय बेको परमाय = प्र + मायन्। परमाइ,
 परमायि (अ १४ १४४)। बहू परमायि
 (सुपा १७६)।
 परमाय बेको परमाय-प्रमाय (अ २४)।
 परमाय की [परमाय] १ लीकरे विज-
 देव की मठा का नाम (अ १३३)। २
 रावर की एक पत्नी का नाम (अ ४४

१३)। ३ उद्योग राजकी की पटरानी और
 बैदा गरीब की पुत्री का नाम (परि)। ४
 बमदेव के पुत्र निपन की भर्ता (महा १)।
 ५ राजा बल की पत्नी (अ ११ १३)।
 परमाय वि [प्रमाय] प्रमाय बहुलेवाला
 योगी की बुद्धि करनेवाला (आ ६ ३ २३)।
 २ उत्पत्ति-कारक। ३ यौव बलक (सुप
 १६८)।
 परमाय न [प्रमायन] पीने बेको (सु १)।
 परमायना की [प्रमायना] १ महापय,
 पौरव। २ प्रविष्टि प्रमायि (आया १
 ११—पत्र १२२ आ ६ ३)।
 परमाय वि [प्रमाय] यौव बहुलेवाला
 (संशोध १३)।
 परमायक पुं [प्रमायक] कुल-विरोध (राव)।
 परमायि बेको परमाय = प्र + मायन्।
 परमाय सक [प्र + माय] बोलना भाषण
 करना। परमायि (विदे ४६६ टी)। बहू
 परमायि, परमायय परमायसाय (अ
 ३ ३३ पत्र ३३, १३ = ६ १)।
 परमाय सक [प्र + माय] प्रकटित होना।
 परमायि (सुख १६)। मुक्का—परमायि
 (अ १ १३)। यवि परमायिस्ति (सुख
 १६)। बहू परमायसाय (अ १३)।
 परमाय सक [प्र + माय] प्रकटित
 करना। परमाय (अ १)। परमायि (सुख
 १—पत्र १४)। बहू परमायय परमायि
 साय (पत्र १ ८ ३३ अण ७३ कण्य
 ज्जा नीय अण)।
 परमाय पुं [परमाय] १ यवबाल महावीर के
 एक पल्लवर का नाम (अ १६ कण्य)। २
 एक विद्वत्प्राणी परमेय का अधिपतिरा वेज
 (अ १ ३—पत्र १६)। ३ एक कैमजुनि
 का नाम (अ १)। ४ एक पित्रहार का
 नाम (अ १६ टी)। ५ न तीर्थ-विरोध
 (अ १ ४)। ६ वैज-विपण-विरोध (अ
 १३ ४६)। 'विजय न [तीर्थ] तीर्थ-
 विरोध यादवर्ष की पवित्र विद्या से शिवत
 एक तीर्थ (इह)।
 परमाय की [परमाय] यवि, यवा (पत्र
 २ १)।

परमायि वि [परमायि] उक्त, कथित
 (सुप १ १ १६)।
 परमायसाय बेको परमाय = प्र + मायन्।
 परमाइ बेको परमाइ (अ ३३)।
 परमाइ विज [प्रमायि] इत्यादि बरीय
 (अ ३३)।
 परमाइ [प्रमायि] प्रारम्भ कट (महा
 परमाइ [प्रमायि] १) मुक्त कर, लेकट 'बाहमाभायो
 परमाइ [प्रमायि] (सुर ४ १९७ कण्य
 परमाइ [प्रमायि] महा छ ७३६ २७३ णि)।
 परमाय वि [परमाय] यति यौव भाषण उक्त
 हुमा (अ ३ १३)।
 परमाय पुं [परमाय] १ इत्यादि बर के एक राजा
 का नाम (पत्र ३ ७)। २ स्वामी मालिक
 (पत्र ३ ३ २३; बहू २)। ३ राजा मुन-
 'यमु यमा यमुयमु कुबयमा' (निर्ण २)।
 ४ वि लयक यविज्जा (आ २४ अ १३,
 बहा अ ४ ४)। ५ योग्य, बावक 'पञ्चुति
 वा योग्यति वा यमु' (निर्ण २)।
 परमाय सक [प्र + माय] मोन करना।
 परमायि (टी) (अ ३)।
 परमायि (टी) बेको परमाइ (कुमा)।
 परमाय वि [परमाय] १ विदने जाने का
 प्रारम्भ किया हो बहू (सुर १ २८)। २
 विज्जे योग्य किया हो बहू (अ ४)।
 परमाइ बेको परमाइ (पत्र १ ७६; अ
 परमाइ २७३)।
 परमाय वि [परमाय] प्रकट, बहू (अ १ पत्र
 ३, ३, आया १)। सुर ३ ८१)।
 परमाय (अ १) बेको लवमोग 'मौल-पदमेयमाय
 न किन्हे' (अ १)।
 परमाय वि [परमाय] यति यति (आया
 १ १)।
 परमायन वि [परमायन] १ प्रमायन विदे
 पन। २ विमाइ के समय किया पाठा एक
 राह का उद्योग (अ ४४)।
 परमायन वि [परमायन] १ विहित। २
 विमाइ के समय विद्वत् उद्योग किया गया
 हो बहू (अ ४४)।
 परमाय सक [प्र + माय, मायन्] मायन
 करना, हाक-मुक्क करना परमायि से
 बूति बरीय की बुर करना। परमाय (अ ४४)

परमसंज्ञ न [प्रमसंज्ञ] स्वसंज्ञा (बर्गैर)
१ ७६।

परमसंज्ञ पु [प्रमसंज्ञ] १—२ विदुल्लभ्यार
केन्द्रों के हरिकल्प और हरिस्तह नामक दोनों
हस्तों के लोचनपत्तों के नाम (अ ४ १—पत्र
१६०: ६८)।

परमसंज्ञक [प्र + भव्य] कहना बोलना।
परमसंज्ञक (महा सण)।

परमसंज्ञि वि [प्रमसंज्ञि] उक्त, कथित
(छल)।

परमसंज्ञक [प्र + भव्य] प्रमसंज्ञ करना
मत्तकना। परमसंज्ञक (सु १३१)।

परमसंज्ञक [प्र + भू] १ समर्थ होना पहुँ
चना। २ होना स्वयं होना। परमसंज्ञ (वि
४७३)। बहु परमसंज्ञ (सुपा ८६ नाट—
चित्र ४४)।

परमसंज्ञ पु [प्रमसंज्ञ] १ उत्पत्ति भव्य प्रवृत्ति
प्रसन्न (आ ६, बसु)। २ प्रसन्न उत्पत्ति का
कारण (एति)। ३ एक सैन्यसिंहासना नामी
का स्थित (अन्त बसु, एति)।

परमसंज्ञ की [प्रमसंज्ञ] लुप्तय बाहुवचन की
पट्टपत्ती (पत्रम २ १६६)।

परमसंज्ञि वि [प्रमसंज्ञ] को समर्थ हुआ हो 'छा
विश्वना सिद्धुपुत्र उक्तमुद्रामि परमसंज्ञि वि' (बर्गैर १२३)।

परमसंज्ञ की [प्रमसंज्ञ] १ कर्मण देव (महा बर्गैर
१३३३)। २ प्रभाव 'निष्कृत्योपा उप्ता
सर्वप्रभा दे विपत्ति' (द्वैत ३२)।

परमसंज्ञ पु [प्रमसंज्ञ] १ प्रातःकाल सुबह
परमसंज्ञ (पत्रम ७ १६१, सुर ३ ६३
महा स २४४)। २ वि प्रकाशित प्रमसंज्ञ
परमसंज्ञ (अ १४८ दी)। लक्षण वि
[संज्ञि] प्रमसंज्ञ प्रमसंज्ञ-सम्बन्धी
सुबह का (सुर ३ २४८)।

परमसंज्ञ पु [प्रमसंज्ञ] प्रकट गार (सम १३३)।

परमसंज्ञ के लो परमसंज्ञ = प्र + भाव्य। परमसंज्ञ
परमसंज्ञ (अ १४८)। बहु परमसंज्ञित
(सुपा १७६)।

परमसंज्ञ के लो परमसंज्ञ-प्रभाव (स्वयं ६८)।

परमसंज्ञ की [परमसंज्ञ] १ कर्मण देव (महा बर्गैर
१३३३)। २ प्रभाव 'निष्कृत्योपा उप्ता
सर्वप्रभा दे विपत्ति' (द्वैत ३२)।

११) १ उक्तय राजपति की पट्टपत्ती और
केन्द्र लोचन की पुनी का नाम (पट्टि)। ४
बर्गैर के पुत्र नियम की भाषा (आधु १)।
३ राजा बस की पट्टी (सम ११ ११)।

परमसंज्ञा वि [प्रमसंज्ञ] प्रभाव बढ़ानेवाला
शोभा की वृद्धि करनेवाला (आ ६ १२३)।
२ उत्पत्ति-कारक। ३ लोचन बलक (सु
१६८)।

परमसंज्ञ न [प्रमसंज्ञ] नीचे के लो (सु १)।
परमसंज्ञा की [प्रमसंज्ञ] १ महात्म्य
लोचन। २ वृद्धि प्रभावित (छाया १
१६—पत्र १२२ का ६ महा)।

परमसंज्ञ वि [प्रमसंज्ञ] लोचन बढ़ानेवाला
(छोबे ३३)।

परमसंज्ञ पु [प्रमसंज्ञ] वृद्धि-लोचन (पत्र)।

परमसंज्ञ के लो परमसंज्ञ = प्र + भाव्य।

परमसंज्ञक [प्र + भाव्य] बोधना साधण
करना। परमसंज्ञ (वि ४६ दी)। बहु
परमसंज्ञ, परमसंज्ञ परमसंज्ञ (अ
६ २३, पत्र ३३, १८, ८६ १)।

परमसंज्ञक [प्र + भाव्य] प्रभावित होना।
परमसंज्ञ (सु १६)। शुका—परमसंज्ञ
(सम; सु १६)। गति परमसंज्ञित (सु ६
१६)। बहु परमसंज्ञ (कर्म)।

परमसंज्ञक [प्र + भाव्य] प्रभावित
करना। प्रभावित (सम)। परमसंज्ञ (सु ६
१—पत्र १४)। बहु परमसंज्ञ परमसंज्ञ
मात्र (पत्रम १ ८ १३ स्वयं ७३, कर्म
ज्वा लीपा सग)।

परमसंज्ञ पु [प्रमसंज्ञ] १ कर्मण देव महावीर के
एक कर्मण का नाम (सम १६, कर्म)। २
एक विकटपत्ती परमसंज्ञ का वृद्धिवाला देव
(अ २ ३—पत्र १६)। ३ एक सैन्य सिंहासना
का नाम (बर्गैर १)। ४ एक विषय का
नाम (बर्गैर १६)। ५ लोचन-विषय (सम
१३ ४६)। दिव्य न [वर्गैर] लोचन
विषय साधन की परमसंज्ञा में दिव्य
एक लोचन (हृद)।

परमसंज्ञ की [परमसंज्ञ] वृद्धिवा बस (पत्र
२ १)।

परमसंज्ञ वि [प्रमसंज्ञ] उक्त, कथित
(सु १ १ १ १६)।

परमसंज्ञ के लो परमसंज्ञ = प्र + भाव्य।

परमसंज्ञ के लो परमसंज्ञ (अ ३३)।

परमसंज्ञ वि [प्रमसंज्ञ] इत्यदि बर्गैर
(सम ज्वा महा)।

परमसंज्ञ पु [प्रमसंज्ञ] प्रभाव कर (बर्गैर
परमसंज्ञ) के लो सु ६, केन्द्र: 'बासभावायो
परमसंज्ञ' (सुर ४ १६७ कर्म
परमसंज्ञ) महा स ७३३ २७३ ३)।

परमसंज्ञ वि [परमसंज्ञ] मति भीत प्रभावित उक्त
हृद (अ २ १६)।

परमसंज्ञ पु [प्रमसंज्ञ] १ स्वभाव बस के एक उक्त
का नाम (पत्रम ३ ७)। २ स्वामी मानिक
(पत्रम ३३ २३, ६६ २)। ३ राजा सुपा
'पत्र उक्त कर्मण सुपा' (सि २)।
४ वि स्वयं स्वयं (आ २७, स १६,
स ४ ४ ४)। ५ योग्य साधन 'पत्रुति
वा योग्यति वा एतद्' (सि २)।

परमसंज्ञक [प्र + भाव्य] मानिक करना।
परमसंज्ञ (दी) (अ ६)।

परमसंज्ञ (दी) के लो परमसंज्ञ (सु १)।

परमसंज्ञ (दी) के लो परमसंज्ञ (सु १)।

परमसंज्ञ वि [प्रमसंज्ञ] १ विदिते जाने का
प्रभाव किया हो बहु (सुर १ ३८)। १
विदिते बोधन किया हो बहु (अ ४ ४)।

परमसंज्ञ के लो परमसंज्ञ (पत्रम १ ७६) स
परमसंज्ञ (२७३)।

परमसंज्ञ वि [प्रमसंज्ञ] प्रभाव, बहु (सम पत्रम
३ ३, आभा १ १, सुर ३ ६३, महा)।

परमसंज्ञ (सम) के लो परमसंज्ञ 'लोचन-परमसंज्ञ' (सम)
न लिख्य (सम)।

परमसंज्ञ वि [प्रमसंज्ञ] मति मति (छाया
१ १)।

परमसंज्ञ न [प्रमसंज्ञ] १ प्रभावित विदिते
पत्र। २ विदिते के समय किया जाता एक
लक्षण का लक्षण (अ ४४)।

परमसंज्ञ वि [प्रमसंज्ञ] १ विदित। २
विदिते के समय विदिते लक्षण किया गया
हो बहु (बर्गैर सम ७३)।

परमसंज्ञक [प्र + भाव्य] मानिक करना, साधन-साधन करना, मति मति है
वृद्धि बर्गैर की बुर करना। परमसंज्ञ (बर्गैर)

पम्स लक [वि + स्मृ] विस्मरण करना
मूल कला। पम्सह (पह) : पम्सविभक्त्यु
(वा १४५)।

पम्साविप वि [विस्मरित] भुक्त्वा भुषा,
विस्मृत कृत्वा भुषा (बुध २ ४)।

पम्सा की [पहसा] १ शेरप-विशेष पध-
भेदात् प्राणा का मुखपर परिछान-विशेष
(कर्म १ २१ या २६)। २ विजय-शेर
विशेष (पञ्च)।

पम्हार पुं [हे] अपमृष्ट, केवीर मरछ
(हे १ १)।

पम्हाई की [पम्हावती] १ विजय-विशेष
की एक मणी (अ २ १; इक)। २ पर्वत-
विशेष (अ २ १—पर्म)।

पम्हुट्ट वि [हे] १ लट, नाट प्रान्त (हे ४;
२४५)। २ विस्मृता पम्हुट्ट विम्हरी
(शाय) 'कि व तर्प पम्हुट्ट (छाया १
४—पर्म १४५ विचार २१५)।

पम्हुत्तरसिंहसंग न [पम्होत्तरावर्तसङ्ग]
अम्लोक्त में स्थित एक शेर विमान (कर्म
१२)।

पम्हुस लक [वि + रक्ष] भुक्त्वा विस्मरण
करना। पम्हुसह (हे ४ ५४)।

पम्हुस लक [प्र + मुह] हन्ती कण्ठ।
पम्हुकर पम्हुस (हे ४ १ कुमा ७ २४)।

पम्हुस लक [प्र + मुप] कीपणा कीपे
कण्ठ। पम्हुमहा पम्हुगेह, पम्हुसिंह (हे
४ १५७) कुमा ११७ कुमा ७ २४)।

पम्हुसल म [विस्मरण] विस्मृति (वर्णा
१२, ११)।

पम्हुसिंह वि [विस्मृति] भिन्ना विस्मरण
हुषा की बह (दुपय २५ टी)।

पम्हुस लक [स्मृ] स्मरण करना, याद
करना। पम्हुसह (हे ४ ७४)।

पम्हुसह वि [स्मर्तु] स्मरण करैवन्ता
(कुमा)।

पर्म लक [पर्म] पराणा शक करना।
पर्म (हे ४ ६)। पर्म पर्यव (पण्)।
पर्म पर्म (दुप २१६)।

पर्म लक [पर्म] १ जला। २ जाला। ३
विपला। पर्म (विशे ४ ५)।

पर्म पुन [पर्मसु] १ कीर, हुवा 'पर्मो'
(हे १ ११) कीर १२१ पाप)। २ पार्थी
नक्ष (कुपा ११६) पाप)। हर वैशो
पर्मोहर (विप)।

पर्म पुं [प्रम] प्रार्थी कर्तु (पाषा)।

पर्म पुन [पर्म] १ विशिष्ट के साध का लम्ब,
'पर्मलम्बावर्त' शीर्षक न ल नाभियाई
पर्मविह (विशे १ १ मासु ११५ या
२१)। २ लम्ब-समुद्र, नाभय 'जम्बुद्वीप' का
लम्ब समुद्रार्ध (अ १ १५ या २१)।
३ पैर, पार्थ वरुण 'पार्थ' व लम्बाउल्लसीह
नक्षो ज्येष्ठा शेरप, कर्मपह बातो हर्ष
नाभ न लम्ब पर्म पर्मलम्ब विमोतो वि
(कुपा ११ कर्मवि २४ दुप १ १ ७ या
२१)। ४ पार्थ-विम, पार्थ (दुप २ २१२
कुपा १२७ या २१) प्रम २)। ५ पर्म
का नीचा हिस्सा (पण्)। ६ विपिच
अमल (शाला)। ७ लम्बा 'पर्मपाठपर्व'
हि लेवि (दुप २, १६७ या २१)।

पर्मो शिषिपार 'कुमारपण' कि नवि
पर्मोविह नक्षो विपुलो (दुप २ १७५
या)। ८ पार्थ शय्य। ९ प्रमो ११
जम्बुद्वीप (या २१)। १२ नुट जम्बु-विशेष
(दुप १ १ २८)। १३ लोम न [लोम]
विह कर्मपाठ 'कुम्हार' व लो पर्मोविह
(वर् ६ ४ ९)। १४ पुं [पर्म] पार्थ
विह पार्था पुण्णु लह नुपे पावरो पर्म
पर्मलेह (पर्म १ १ २)। पास पुं
[पास] नाड्य का ना धारि कर्म (दुप
१ १ ८०६)। १५ लक पुं [लक]
पार्थि व्यासा (पर्म १ ४ ५१)।

पर्मगह पुं [पर्मिह] पर्मिन्नेर (विशे
१ ९)। विभाग पुं [विभाग] कर्म
वीर पार्था का यथा-स्थान शिरोर साय-
वाटी-विशेष (पर्म १)। बीह वैशो पाय-
बीह (पर्म ४ कुपा १२६)। समास
पुं [समास] पर्म का लकुम (कर्म १
७)। अनुमासि वि [अनुमासि] एक नक्ष
मे शेरप समुद्र वरी वा बी कुम्हारप कर्म
वी शक्तिपार्था (वीर १)। 'अनुमासि'
रिपी की [अनुमासि] बुद्धि-विशेष एक
पर्म के अमल से हुनरे समुद्र वरी वा लम्ब
पार्था लोलेनानी बुद्धि (पर्म २१)।

पर्म (पर्म) वैशो पर्म = प्राप्त (विप)।

पर्म वैशो पर्म = प्रजा। 'पार्थ वि [पार्थ]
१ प्रजा का पातक। २ पुं दुप-विशेष
(शिरो ४४)।

पर्म वि [पर्म] दोषता, पीत्यर्ष (रम्)।

पर्म की [पर्मवि] संवि का पार्था (पण्
११२)।

पर्म वैशो पार्थ (या ११७; पर्म मर्ष
नक्ष ११ मर्ष ११४ कर्म, कुप १४६)।

पर्मवि पुं [पर्मोम्, पर्मोम्] वनमल्ल
वाटीय वैशो का हर्ष (अ २, १)।

पर्म वैशो पर्मवी (पर्म)।

पर्मवि पुं [पर्मवि] १ पुर्व पर्म (पार्था) 'वी'
हर्षकुम्हारपर्मो पर्मो हर्ष कुम्हारपर्मो
(कर्म ७२८ टी)। २ रं-विशेष, पर्म-
लम्ब-विशेष (कर्म ४ ४ शिरो १ १७)।
३ शयन पर्मवि, शयनता लोटा मर्म
(शाय १ १७ पर्म)। ४—५ वैशो
पर्म = पर्म, पर्म पार्था (पर्म ४ ४—
पर्म १५ पर्म)। बीहिया की [बीहिया]
१ लम्ब का कर्म। २ जिला के विप
पर्म की लक्ष कर्ता बीह में लो पार्था वरी
की कोने हुन शिला लो (अ १ १६)।
बीही की [बीही] बही पुर्वक पर्म (कर्म
१ १६)।

पर्मपुन पुं [प्रपम्पु] पर्मलम्ब-विशेष,
नक्षी पर्मो का एक प्रकार का ल
(विप १ ८—पर्म ४३)।

पर्मवि [प्रपर्म] १ पर्मो लोटा प्रम।
२ पार्था पर्मो (पर्म १, १११)।

पर्मवि [प्रपर्म] १ पर्मो लोटा प्रम।
२ पार्था पर्मो (पर्म १, १११)।

पर्मवि वैशो पर्म = पर्म।

पर्मवि लक [प्र + कर्म] पर्मिन्नेर पर्मो।
पर्म, पर्मपार्था (कर्म ११६)।

पर्मवि लक [प्र + जम्] १ नक्ष, लोता।
२ कर्मपार्था। पर्मवि (पर्म)।
पर्म पर्मविपर्म पर्मविपर्म (पार्था १
२ ४)। ३ पर्मविपर्म (या ४४ कुपा
१२२)।

पर्यपण न [प्रकल्पन] कल्प उक्ति (स
५ २१७)।

पर्यपिय वि [प्रकल्पित] धति कांया हुया
(स १७७)।

पर्यपिय वि [प्रकल्पित] १ कचित् कच।
२ प्र कल्प, कति १ कल्प, कति
अरान (विपा १ ७)।

पर्यपिय वि [प्रकल्पित] १ कल्पेनात्मा।
२ बाधत कल्पतो (सुर १९ ३० सुपा
४१३, या २७)।

पर्यस सक [प्र + पर्याय] विवक्षाना।
पर्यसि (सिधे ११२)।

पर्यस्य न [प्रत्यय] विवक्षाना (स ११३)।

पर्यसि वि [प्रत्यय] विवक्षाना हुया
(सुर १ १ १२ १२)।

पर्यस्येवो पादसक ()।

पर्यस्य सक [प्रत्या + कया] प्रत्याख्यान
करना प्रविष्टा करना। पर्यस्य (विचार
७३३)।

पर्यसिक्कन रेवो प्यसिक्कन = प्रत्येक (छाया
१ १९)।

पर्यसिक्कन रेवो प्यसिक्कन = प्रत्येक (छाया
१ १९)।

पर्यसिक्कन रेवो प्यसिक्कन (सुर ८ १ ३)।

पर्या रेवो पर्यय = पर्यय परक पर्यय (उक्त
५ १२५)।

पर्यय सक [प्र + पर्याय] रेवो पर्याय
करना। पर्यय (सहा)। छं. पर्ययकरना
(उक्त)।

पर्ययकरण न [प्रदान] १ दान कार्य (सुर
१ १२१)। २ वि केषात्ता (सहा)।

पर्यय सक [प्र + पर्याय] प्रविष्टा करना।
पर्यय (सि १ ४ १४० महा)। छं
पर्ययसक (सुरा १९९)। प्रयो. पर्ययसि
(स २२) छं पर्ययसि (स ४१३)।

पर्यय वि [प्रत्यय] १ भित्ते प्रविष्टि की हो
बह (सि २ २४ महा)। २ कतिपय पर्यय
कतिपय (पाम)।

पर्यय वि [प्रत्यय] प्रविष्टि करानेवाला
(सहा १ १)।

पर्ययसक वि [प्रत्यय] प्रविष्टि करानेवाला
(सहा)।

पर्ययसि वि [प्रत्यय] प्रविष्टि किया हुया,
किसी कार्य में लगाया हुया (सहा)।

पर्ययसि वि [प्रत्यय] प्रविष्टि कराने (सि
१ २९)।

पर्ययसि वि [प्रत्यय] प्रविष्टि-युक्त (सहा ४
२, सुख ४ २)।

पर्ययसि रेवो पर्ययसि (काव वि २२)।

पर्यय सक [प्र + पर्याय] प्रकट करना
व्यक्त करना। पर्यय, पर्यय (सहा महा)।

पर्यय सक (सुरा १ या ४ ९ यति)।
रेव पर्ययसि (सि १७७)। प्रयो पर्यय-
सक (सहा)।

पर्यय वि [प्रकट] १ व्यक्त करना (सुरा
महा)। २ विवक्षित विवक्षित प्रविष्टि
'विवक्षितो विवक्षितो पर्यय' (पाम)।

पर्ययसक न [प्रकटन] १ व्यक्त करना सुपा
करना (सहा)। २ वि प्रकट करनेवाला 'वे
गुण्य सुपा बहुलपर्यय' (सर्ववि ६९)।

पर्ययसक न [प्रकटन] प्रकट कराना (सहा)।

पर्ययसि वि [प्रकटित] प्रकट कराना हुया
(काव यति)।

पर्यय रेवो पर्याय (सहा २३ सि २१३)।
पर्ययि की [वि] यति रस्ता 'वे गुण
समाहिती रेव मलो 'बहुलपर्यय' (सहा
१२२)।

पर्ययसि वि [प्रकटित] प्रकट किया हुया
(सुर १ ४५ या २)।

पर्ययसि वि [प्रकटित] मिय हुया (छाया
१ = पर्यय ११३)।

पर्ययसि वि [प्रकटित] प्रकट किया
हुया (सहा)।

पर्ययसि सक [प्रकटी + क] प्रकट करना।
प्रयो पर्ययसि (सहा)।

पर्ययसि मूल वि [प्रकटीमूल] जो प्रकट
पर्ययसि हुया हो (सुर १ १८४ या
१९ महा सहा)।

पर्ययसि की [वि] १ प्रविष्टि, २ बाधित,
कार्य (सहा)। १ गति (सि १, ७२)।

पर्यय रेवो पर्यय (या ७७७)।
पर्यय रेवो पर्यय (सि १८३९)।

पर्यय } न [पर्यय, क] १ पाक पकाना
पर्यय (सहा सुपा)। २ पान-विषेप

पकाने का पाव (सुपा ८ १ १०१)।
साम्प की [शास्त्र] एक-स्वान (सहा २)।

पर्यय } वि [प्रत्यय] १ इत्त पकाना। २
पर्यय (सहा सुपा)। ३ पर्यय (सहा सुपा)
२४९ सुर १ १९२ सय ४ ४ २
पत्त १ १९९ सि ११ ३३३ या १८२
पत्त)।

पर्ययसक रेवो पर्ययसक (सहा १)।

पर्यय सक [प्र + पर्याय] प्रकट करना।
पर्यय (सहा) (सि ४७९)।

पर्यय रेवो पर्यय = प्र + पर्याय (काव)।

पर्यय सु [प्रत्यय] रेव पर्यय लोचन (सुरा
सहा सुर १ १ २ १२४ ४ ८२)।

पर्यय वि [प्रत्यय पर्यय] १ दिया हुया
(सहा)। २ सुभाषित संवत् (सहा ३)।

पर्यय रेवो पर्यय = प्रकट (सुर २ १५६
३ २४५ सि २ २४५ ४ ३ या ४१९)।

पर्ययसि वि [प्रकटित] प्रकट किया हुया
(काव)।

पर्यय सु [पर्याय] १ एक पर्यय प्रतिपाद
पर्यय पर्यय (सि १ १ ११३ २७१)।

२ एक (सहा १ १, सुपा २ ३)। ३ पर्यय,
बीम (पाम)।

पर्यय रेवो पर्यय = प्रत्यय (सहा)।

पर्यय रेवो पर्यय (सहा १२२ टी)।

पर्ययसक न [प्रकल्पन] कल्पना, विचार
(सर्ववि १ ७)।

पर्यय रेवो पर्यय = पर्यय (सि १ १७
कच)।

पर्यय वि [पर्यय] पर्यय-सीत सहा पर्यय
कल्पेनात्मा (पाम पत्त १ १९ सुर १ ४
सहा) 'पर्यय न पर्ययसक न पर्यय पर्यय
पर्ययसक' (सहा ४२९) पति)।

पर्यय सु [पर्याय पर्यय] १ बान-
व्यापार रेवो की एक बानि (सहा २, ३ पर्यय
१ इत्त)। २ पर्यय रेवो का बानि रिता का
रूप (सहा १, १९) पर्यय [पर्यय] पर्यय रेवो
का बानि रिता का रूप (सहा २ १ = पर्यय
४२९)।

पर्यय न [वि] यति, विचार (सि १ १)।

बन्ना देख (वा २३) । बाय वि [पाव्]
 प्रकट पैल्ला (वा २३) । बाय वि [बाक्]
 फीत शाति (वा २३) । बाय वि [बाय]
 १ शिरोय मल से शुद्ध की बिना करनेवाला ।
 २ पुं स्त्री धनत्व । ३ सुन्द, योडा (वा
 २३) । बाय वि [पाव] घाल-मुन्द,
 को प्रारम्भ में ही सुन्दर होइ (वा २३) ।
 बाय वि [प्राय] होइ विपदावाला
 (वा २३) । बाय वि [पाव] बँठ
 खावाला बिचरी खा का कलम प्रबन्ध
 होइ बह । २ अत्यन्त प्यार । ३ पुं उवा
 नरेठ (वा २३) । बाय वि [क्वाव]
 १ इतर के पास शिरोय बमल करनेवाला ।
 २ पुं निष्ठुर माचक (वा २३) । बाय
 वि [पायस्] १ हुँसे की खा के लिए
 द्विबार खनेवाला । २ पुं सुन्द योडा
 (वा २३) । बाया की [क्वाजा] नेववा
 बारोमला (वा २३) । बाया की [क्वागस्]
 बरही कुमटा (वा २३) । बाया की
 [क्वापा] धिपुन छुन्न की स्थिति (वा
 २३) । बाया की [पावा] कुर्त-नीनी
 (वा २३) । बाया की [प्राया] हुप
 क्वा (वा २३) । बाया की [पागा]
 मङ्ग-मुनि (वा २३) । बाया की
 [वाक्] करमीर-मुनि (वा २३) ।
 बाया की [बाक्] दुप-स्विति (वा
 २३) । बाया की [पाव्] छपवती
 बन्नु-शिरोय (वा २३) । बाया की
 [क्वावा] नेपे बाध-शिरोय (वा २३) ।
 बिपस पुं [बिदेरा] परदेरा, शिरोय
 (पदम ३२ ३६) । अस्स केो बस
 (ब ६ या २६३ मवि) । "सँतिग वि
 [सारक] पर-संभली परलीय (पण्ड १
 ३) । समप पुं [समय] इतर बहोन
 का सिद्धांत "बनइया मयबामा तावइया
 केव परामय" (सम १४४) । हुम वि
 [सुत] १ हुँसे से पुट, कप से पाकित
 (प्रज) । २ पुंजी, कीन्ता रिक पत्नी
 (कप) । की. बा (पुर १ २४ पाय) ।
 "पाय रेनो पाय (प्रामु १ ४४ म ३०) ।
 "पीण रेनो इयी (बर्मेति १९६) । पाय
 वि [पाय] परपीन परल्ल (पदम ६४

६४ अथ ६८२ महा) । "हीण वि
 [पीन] परल्ल परलय (माठ-मासवि
 २) ।
 परं रेको परा—य (वा २३ पदम ६१ ८) ।
 परं य [परम्] १ परल्ल निष्ठु, "यं तुनं
 बायुवेति परं तुह हुँरे मय" (महा) ।
 २ उवात्ता "यो से कपह पत्तो बाहि, ठेय
 परं, बल्ल मण्डरंछल्लरिचारां कसणीति ति
 केमि" (कस १ २१ २४—७४ १२—२६) ।
 ३ केवल कस "एस महु संतावे, परं
 माउसउमज्जणेय जह प्रबण्णवति" (महा) ।
 परं य [परम्] बायाली बर् "यजं कसं
 परं परदि" (बि २) "कसं परं परदि
 भुरिखा बिंतिमि घल्लसंपति" (प्रामु ११) ।
 परंग सक् [परि + सक्] बल्ला पति
 कला । कवह-परंगिमाय (वीप) ।
 परंगमण न [पर्यङ्ग] वीच से बल्ला,
 बँकमण (वीप) ।
 परंगमण न [पर्यङ्ग] बल्ला बँकमण
 कला (म ११ ११—पण्ड २४४) ।
 परंयम वि [परतम्] अन्त्य को हटाय करने
 वाला (अ ४ २—पण्ड २१९) ।
 परंयम वि [परतम्] १ अन्त्य पर कोष
 करनेवाला । २ अन्त्य-विषयक बल्लान रखने-
 वाला (अ ४ २—पण्ड २१९) ।
 परंतु य [परम्] निष्ठु (पुण्ड ४६६) ।
 परंयम वि [परतम्] १ अन्त्य को पीछा
 पहुँचाने वाला (अ ४ २) । २ अन्त्य को
 छुटाय करनेवाला । ३ अन्त्य दाहि की
 स्थितिवाला (अ ४ २—पण्ड २१९) ।
 परंपर } वि [परम्पर] १ क्रिय-क्रिय
 परंपरा } (उति) । २ धर्मवित्त "परंपर
 परंपरय विद—(पण्ड ११ ठा २, १
 ३) । ३ पुं न. परम्पर धर्मविष्णु बारा
 (अ ७ ११) "पुरिसपरंपरय देहिं इदुया
 बाणिमा" "एव बन्धपरंपरयो" (बाय १)
 "परंपरे" (कप) बर्मेति २११: १९ ६) ।
 परंपरा की [परम्परा] १ अनुक्रम, पतिपाटी
 (म, वीप पाय) । २ धर्मविष्णु बारा
 प्रवाह (शाय १ १) । ३ निष्ठुरता, अ-
 व्यवधान (अ ४ १) । ४ व्यवधान अन्त

"मलुतयेवणया केव परंपरेवणया
 केव" (अ २ २ म ११ १) ।
 परंभरि वि [परम्भरि] हुँसे का के मरने
 वाला (अ ४ ३—पण्ड २४७) ।
 परंमुह वि [पराक्रम] हुँह-रिप-विमुह
 (वि २६७) ।
 परकीअ [वि [परकीय] अन्त्य-सम्भली इतर
 परकीय] से सम्बन्ध रखनेवाला (विदे ४१
 परक] पुण्ड ३४९ मवि १२१ पर
 स्वय ४ स २ ७ पठ) "म सेविमवा
 पयया परक" (मोय ११) ।
 परक न [वि] छीय प्रवाह (बि ६ ८) ।
 परकट वि [पराक्रम] १ बिछने पराक्रम
 किया होइ बह । २ अन्त्य से बाह्यता "माया
 गुणान् इवञ्चनमाउल्ल कुबारां पुनरकटं
 कवह" (बाय) । ३ न. पराक्रम वत । ४
 उद्यम प्रयत्न । ५ अनुष्ठान "ने पड्डा
 महाभागा नीप मसन्तवहियो पड्डा
 वैवि परकट" (सुम १ व २२) ।
 परकम थक् [परा + कम्] पराक्रम
 करता । परकमे पदमेववा परकमेवादि
 (बाय) । क. परकर्मव परकममाय
 (बाय) । क. परकर्मियव परकम्स
 (शाय १ १ सुम १ १) ।
 परकम थक् [परा + कम्] १ बाला ।
 २ धारिवन करता । ३ द्रक प्रवृत्ति करता ।
 परकमे (ब ३ १ १) । परकमिन्वा
 (ब ४ व ४१) । थक् परकम्स (ब
 व ३२) ।
 परकम पुं [पराक्रम] बर्त धारि वि निम्न
 माय (ब ३ १ ४) ।
 परकम पुं [पराक्रम] १ बीय बह शक्ति
 सामर्थ्य (विदे १ ४६ ठा १ १ कुमा),
 "उल्ल परकमे नीपमाउं न तर मुर्द
 (मप्य २ ७६) । २ उवाह । ३ शिष्टा
 प्रवृत्त (बाय) ४ प्रामु ११ बाय) । ४
 शत्रु का नाश करने की शक्ति (ब ३) । ५
 पर-आत्मण पर-परायम (अ ४ १;
 बाय) । ६ पवन धति (सुम २, १ १) ।
 ७ मार्ग (अ ४ य ३ पु ४६) ।
 परकमि वि [पराक्रम] पराक्रम-संयन्त
 (बर्मेति १६ १२) ।

परसुहस पुं [रे] कल पेक्ष परसह (हे १ २२) ।

परस्तर पुं [रे] परपार] गेवा म्मु-विरोध (पण १; एन) । श्री री (पण ११) ।

परपुत्र वि [परमृत्] परमिष्ठ हृष्या यया (पत्र ११ ८) ।

परा म [परा] एत यतो का सुखं यन्मय—
१ यामिष्ठ्य संयुज्जवा । २ व्यास । ३ जयं । ४ प्राचात्य, मुक्तता । ५ विजय । ६ पति, यमन । ७ मङ्ग । ८ यमावर । ९ विजयार । १० प्राचावर्तन (हे २ २१७) ।

११ पुत्र, यमन (अ १ २ या २१) ।

परा श्री [रे परा] वृण विरोध (पण २ १—यम १२३) ।

पराह स [परा + जि] हृष्या परम
करता । सङ्ग पराहृष्या (युमि ११२) ।

पराह वि [पराजि] परमम प्राप्त (यम
२, ८१ योत १ ११४ सुर २ २३, १३
१०१ उत १२ १२) ।

पराह (यम) वि [परमाह] यमा हृष्या
(यमि) ।

पराह केवो पराजि । पराहृष (वि
४७१ म्) ।

पराह श्री [परम्या] इतर स संवाच रजने-
वासी बहु भासिका मो परपुत्र से मेम करे
(हे ४ ११, ११७) । केवो पराय =
पराजीम ।

पराह केवो पराहम (युम २: १ १) ।

पराह वि [पराह] निपुह्य निरस
(यम १) ।

पराह स [परा + ह] निपुह्य करता ।
पराहोप (ही) (गाट—सैत १३) ।

पराहय पुं [परामय] परिमय धनियव
हार (यम) ।

पराहय [स] स [परा + जि] परमम
पराजिम् करता हृष्या । युता, पराज-
मिष्ठा (पि ११७) । श्री परमिष्ठसह
(पि १२१) । सङ्ग पराजिमिष्ठा (अ ४
२) । इह पराजिमिष्ठा (यम ७ २) ।

पराजिमिष्ठा [केवो पराहम = पराजि
परजिप] (अ ५ १३, महा) ।

पराह केवो पराम = प्राह (गाट—सैत १४
११२) ।

पराणम वि [पराजीय] याम का इतर का
‘मत्त विपणमुपयण’ हृष्येण पराणयपि नो
विधे (पण २ २) ।

पराणिम वि [पराणम] पहुँचा हृष्या (अभि) ।

पराणी स [परा + जी] पहुँचाता । पराण
(अभि) । पराणि (अ २१४) ‘बह मणवि
ता निमेषमिषेण दुर्गं रायमिदं पराणिम’
(कुम १) ।

पराणयम न [पराणयम] पहुँचाता निमय
विणीपराणमो का सजा धवि य ऊतयो
पुं (अ ७२८ टी) ।

पराणय स [परा + मू] हृष्या । कनक
परायविजित परमयमाम (अ १२
टी एमा १ २ १८) ।

पराणय पुं [परमय] परमय, हार (विवा
१ १) ।

परामिष्ठ वि [परामू] यमिष्ठ हृष्या
हृष्या (मयी १८) ।

परामुह केवो परामुह (यम १८ ७३) ।

परामरिष स [परा + मू] १ विचार
करता विवेचन करता । २ स्पर्श करता ।
परामरिषह (अभि) । ३ परामरिषव
(अभि) । सङ्ग परामरिषम (गाट—युम
८७) ।

परामरिष पुं [परामरी] १ विवेचन विचार
(प्राप्ता) । २ युक्ति, कपति । ३ स्पर्श । ४
म्याय राज्ञोक्त व्याधि-निमित्त रूप से पक्ष का
ज्ञाप (हे २ १) ।

परामिह [वि [परामह] १ विचारित
परामुह] विवेचित । २ स्पष्ट, सुभा हृष्या
(गाट—युम ११ हे १ १११ स १
युम ११) ।

परामुम स [परा + मू] १ स्पर्श
करता, सुभा । २ विचार करता विवेचन
करता । ३ व्याख्यात करता । ४ पौष्टता ।
५ बीज करता । परामुमह (कम) । कर्न
‘युतो परामुमह व्यामिष्ठमिष्ठमिष्ठि’
(अ २१) । ६ मह, ‘मिष्ठमिष्ठमिष्ठमिष्ठ’
मयाही परामुमिष्ठमिष्ठमिष्ठ (कुम १६) ।

कनक परामुमिष्ठमाम (अ १४२) ।

परामुमिष्ठ केवो परामुम (महा पाय) ।

परामय स [म + राह] विरोध शोभा ।
बहु परामय (कम) ।

पराम पुं [पराम] १ स्त्री रज रणु पण
रयो परयो म (याम) । २ पुत्र-रज (कुमा
यम) ।

पराम [वि [पराजीय] पर-संवाची इतर
परायम] से संवाच रजनेवाला ‘मो म्पणा
परमा गुणो कस्यापि वृद्धि मुद्राय’
(वृद्धि १ ३३ हे ४ १७७, म्प ८ २) ।

पराय वि [परायम] इतर (कम १
१२) ।

परारि म [परारि] प्रापानो टीवप नयं
(प्राह ११ हे २) ।

परह केवो पलाह (प्राह १३८) ।

पराय (यम) स [म + आय] प्राप्त
करता । पराह (हे ४ ४४२) ।

पराय स [म + हु] १ बहना,
पराहता । २ पीछे सीढ़ा । परायह (अ २
८८) । ३ परायचमाणा (यम) ।

पराय स [म + वर्तय] १ चित्रता ।
२ शान्ति करता । परायचति (यम ७१)
परायचति (मोह ४७) । सङ्ग ‘तो वानरेण
अथिमे धरे परायचिज्ज निमयई’ (कुम
१७) ।

पराय पुं [पराम] परितर्जन हेरदे,
हेरदे (अ २२ उत ५ २७ महा) ।

पराय वि [परायति] परितर्जन कर-
वाला ‘वैसरपतिपुणी कुमिया’ (महा) ।

परायति श्री [परायति] परितर्जन, हेरदे
(अ १ ११ टी) ।

परायति वि [परायति] परितर्जित
बहना हृष्या (महा) ।

परसर पुं [परार] १ पुत्र-विरोध (यम) ।
२ अति-विरोध (यम पा ८२२) ।

परसु वि [परसु] प्राण-यिह मृग (या
१४; कर्न १७) ।

पराह केवो परामय = पराम (कुल १) ।

पराह वि [रे पराह] विपुत्र पुं-
पिह (अ २४५ से १ १४ का ५ १८८
श्री ११४ बरना २१) ‘महिषमपरसुयो’
(यम ११३ ७४ युम २ १७) ।

के बन्ध या उदय को रोक कर स्वयं बन्ध या
उदय को प्राप्त होती है (पंच १. १४ १
५६)। बन्ध २. १ टी)।

परिभ्रमया की [परिभ्रम] ऊपर देखो (कम्म
२. १)।

परिभ्रमयति वि [परिभ्रम] १ मोड़ा हुआ
‘बन्धियार्थं परिभ्रमय’ (पाण्डे)। २ देखो
परिभ्रमयति (परि)।

परिभ्रम सङ्ग [परि + चर] १ देखा करना।
बहु. परिभ्रमय (भा—शुद्ध १२८)।

परिभ्रम वि [हे] तीन निगम (दि १ २५)।

परिभ्रम पुं [परिभ्र] १ ब्रह्म-कर्मणा ‘सम्यक्
ब्रह्मपरिभ्रमय’ (मणि)। २ परिभ्रम, ‘परिभ्र-
मयिष्यमपरिभ्रमय’ (परिभ्रमय)।

परिभ्रम पुं [परिभ्र] देखक मूल ‘परिभ्र-
मयिष्य’ (परिभ्रमय)।

परिभ्रमया न [परिभ्रमय] देखा (सद्योय
१६)।

परिभ्रमया की [परिभ्रमया] देखा (सम्मत्त
२११)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] १ परि-
भ्रम-कर्मणा ‘परिभ्रमयिष्य’ (मणि, मणि सङ्ग)। २ परिभ्रम ‘सद्योय
सम्यक्परिभ्रमय’ (परिभ्रमय)।

परिभ्रम सङ्ग [गम्] बान्ध गमन करना।
परिभ्रमय (दि ५ ११२)।

परिभ्रम पुं [परिभ्र] पाप बन्धना मोक्ष
परिभ्रमयि [गम] (मणि ६ १२)।

परिभ्रमयि वि [गम] मया हुआ (हुया)।

परिभ्रम देखो परिभ्रम। परिभ्रमय (दि ५
११२)। सङ्ग परिभ्रमय (हुया)।

परिभ्रमय वि [परिभ्रमय] देखक, मूल
(भा २१)। की रिम (मणि ११६)।

परिभ्रम सङ्ग [बट्] बेटन करना,
बेचना। परिभ्रमय (दि ५ २१)।

परिभ्रमय वि [हे] परिभ्रम, परिभ्रमय
‘सो भयह भान्नापमय’

मुद्राविषयपरिभ्रमय।

परिभ्रमयिष्यति १ न

‘सो बहूवचनार्थ’ (पठक)।

परिभ्रमय देखो परिभ्रम (पाण्डे १ ५६
५ २ टी)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रम] मया हुआ देखा
हुया (हुया पाण्डे)।

परिभ्रमय देखो परिभ्रम (दि ५ २ १५)।

परिभ्रमयि सङ्ग [परा + पा] पैना।

परिभ्रमयिष्य (मूल २. १ ५६)।

परिभ्रमयमय (मय) य [परिभ्रमय]।
कार्य और से (मणि)।

परिभ्रम सङ्ग [परि + इ] पर्यटन करना। परि-
भ्रम (उत्त २७ १३)।

परिभ्रमय वि [परिभ्रम] मया (सम्मत्त
१२६)।

परिभ्रम (पौ) वि [परिभ्रम] परिभ्रमयिष्यति,
आठ पञ्चाना हुआ (मणि २५४)।

परिभ्रम सङ्ग [परि + भ्रम] भ्रमन करना।

परिभ्रमय (मणि)।

परिभ्रमय न [परिभ्रमय] सर्वत्र भ्रमन
(भा २२ हास्य ११५)।

परिभ्रमया की [परिभ्रमय] ऊपर देखो
‘सम्यक्परिभ्रमय’ (मणि)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] सर्वत्र भ्रमन
(मणि)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन (मणि २५४)।

परिभ्रमयि वि [हे] भ्रमयिष्य (मणि २५४)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन (मणि २५४)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन (मणि २५४)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन (मणि २५४)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन (मणि २५४)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन (मणि २५४)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन (मणि २५४)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन (मणि २५४)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन (मणि २५४)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन (मणि २५४)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन (मणि २५४)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन (मणि २५४)।

परिभ्रमय देखो परिभ्रम = परिभ्रम (स ११२)।

परिभ्रमय सङ्ग [परि + भ्रमय] भ्रमन
करना भ्रमयि करना। परिभ्रमय (मणि
सङ्ग)।

परिभ्रमय पुं [परिभ्रमय] भ्रमन भ्रमयि
भ्रमयि (मि ११ १ ५ १५ २ ६ स १५
मुद्रा १७)।

परिभ्रमय पुं [हे परिभ्रमय] भ्रमन भ्रमयि
(मणि)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन भ्रमयि
हुया (मि ११ २२ मणि)।

परिभ्रमय देखो परिभ्रम = परि + भ्रम।

परिभ्रमय सङ्ग [परि + भ्रमय] १ भ्रमन
भ्रमयि करना। २ भ्रमयि करना।

परिभ्रमय (उत्त ७ २)।

परिभ्रमय पुं [परिभ्रमय] भ्रमन भ्रमयि
(हुया १५)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन भ्रमयि
भ्रमयि (मणि)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन भ्रमयि
भ्रमयि (मणि)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन भ्रमयि
भ्रमयि (मणि)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन भ्रमयि
भ्रमयि (मणि)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन भ्रमयि
भ्रमयि (मणि)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन भ्रमयि
भ्रमयि (मणि)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन भ्रमयि
भ्रमयि (मणि)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन भ्रमयि
भ्रमयि (मणि)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन भ्रमयि
भ्रमयि (मणि)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन भ्रमयि
भ्रमयि (मणि)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन भ्रमयि
भ्रमयि (मणि)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन भ्रमयि
भ्रमयि (मणि)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन भ्रमयि
भ्रमयि (मणि)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन भ्रमयि
भ्रमयि (मणि)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन भ्रमयि
भ्रमयि (मणि)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन भ्रमयि
भ्रमयि (मणि)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन भ्रमयि
भ्रमयि (मणि)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन भ्रमयि
भ्रमयि (मणि)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन भ्रमयि
भ्रमयि (मणि)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन भ्रमयि
भ्रमयि (मणि)।

परिभ्रमयि वि [परिभ्रमय] भ्रमन भ्रमयि
भ्रमयि (मणि)।

परिग्राहो (रि २२३) गुर ११ १२४),
केचि पय्त्ता वाडं सतीपरिगम्यणे एवौ
(गुर २०१; वण्ट ४२) । २ संस्कार वा
कारण-गुर गम्य (रि १) । ३ परिकृत
रिगेण । ४ संस्कार-रिगेण एव वरुड की
गणना (दा १ — पत्र ४६६) । ५ मित्रावरण
(पत्र ११३) ।

परिक्रमणा की करार देवो भित्तमन्त्र
निम्न न तस्य परिक्रमणा नय विग्राहो
(रि २२४) गम्य २४५ संदीप २३३)
कारं ३४) ।

परिक्रम्यति नि [परिक्रमन्] परिक्रमे
रिगिष्ट, संस्कारिण (वण्ट) ।

परिक्रम देवो परिक्रम = परिवार (पिन) ।

परिक्रमन् न [परिक्रमन्] श्रमोण 'अथ
परिक्रमणमथ श्रमणमथ' (गुरा ३) ।

परिक्रमिन् नि [परिक्रमिन्] १ गुर, सविष्ट
(गिरि १ १) । २ ग्याल (गम्य २१३) ।

१ श्रम 'श्रमनिगिरिगम्यमं न पत्र ३६
मं' (वर्ग २३) ।

परिक्रमणा की [परिक्रमणा] श्रमणा
'होत्वापरिक्रमणागुर्वीर्यम' (गुरा ३) ।

परिक्रमन् नि [परिक्रमन्] सर्वतोमुख न
वतिन पण्डिता (वण्ट) ।

परिक्रमन् नि [परिक्रमन्] वतिन वतिन
वतिना (वण्ट) ।

परिक्रमन् न [परिक्रमन्] वतिना (वण्ट) ।

परिक्रमन् न [परिक्रमन्] वतिना (वण्ट) ।

परिक्रमन् न [परिक्रमन्] वतिना (वण्ट) ।

परिक्रमन् न [परिक्रमन्] वतिना (वण्ट) ।

परिक्रमन् न [परिक्रमन्] वतिना (वण्ट) ।

परिक्रमन् न [परिक्रमन्] वतिना (वण्ट) ।

परिक्रमन् न [परिक्रमन्] वतिना (वण्ट) ।

परिक्रमिन् नि [परिक्रमिन्] व्यापकित
वतिन (गुर ११) ।

परिक्रमिन् नि [परिक्रमिन्] १ परिकृत केरि,
'निग्राहणपरिक्रमो' (वर्ग ३४) । २
ग्याल (गुर १ २६) ।

परिक्रमिन् नि [परिक्रमन्] विरोध किन्
(गुर २६४ टी) ।

परिक्रमिन् वण्ट [परि + क्रम] १ गुरो
वतिन, हेतुन वतिन । परिक्रमेणो (वण्ट) ।

उक्त-परिक्रमिन् वतिन (गुर) ।

परिक्रमन् वण्ट [परिक्रमन्] गुर वतिन,
हेतुन (गुर २ २, २३ वतिन २ २३,
वर्ग २ २) ।

परिक्रमिन् नि [परिक्रमिन्] वतिन वतिन
वतिना (वण्ट) ।

परिक्रमिन् नि [परिक्रमिन्] वतिन वतिन
(रिगे १३३) ।

परिक्रमिन् नि [परिक्रमिन्] वतिन वतिन
(गुर २ १) ।

परिक्रमिन् नि [परिक्रमिन्] वतिन वतिन
(वर्ग १ २४) ।

परिक्रमिन् नि [परिक्रमिन्] वतिन वतिन
(गुरा १) । वतिन (वण्ट) ।

परिक्रमिन् नि [परिक्रमिन्] वतिन वतिन
(वण्ट) ।

परिक्रमिन् नि [परिक्रमिन्] वतिन वतिन
(गुर १ ३ ४ १३) ।

परिक्रमिन् नि [परिक्रमिन्] वतिन वतिन
(वतिन २) । वतिन वतिन । ३ वतिन
वतिन । ४ वतिन वतिन वतिन । वतिन
(वतिन २६) । वतिन वतिन (वतिन २३) ।

वतिन वतिन (वतिन २३) । वतिन वतिन
(गुरा १) । वतिन वतिन (गुरा १
२ — वतिन ३) वतिन वतिन (गुरा १
२ २) ।

वतिन वतिन वतिन वतिन वतिन (गुरा १
१ वतिन १ २४) ।

वतिन वतिन वतिन वतिन वतिन (गुरा २) ।

वतिन वतिन वतिन वतिन वतिन (गुरा २) ।

वतिन वतिन वतिन वतिन वतिन (गुरा २) ।

वतिन वतिन वतिन वतिन वतिन (गुरा २) ।

परिक्रमन् नि [परिक्रमन्] वतिन वतिन
(गुरा २२४) । वतिन वतिन (गुरा २२४) ।

परिक्रमन् नि [परिक्रमन्] वतिन वतिन
(गुरा २२४) । वतिन वतिन (गुरा २२४) ।

परिक्रमन् नि [परिक्रमन्] वतिन वतिन
(गुरा २२४) । वतिन वतिन (गुरा २२४) ।

परिक्रमन् नि [परिक्रमन्] वतिन वतिन
(गुरा २२४) । वतिन वतिन (गुरा २२४) ।

परिक्रमन् नि [परिक्रमन्] वतिन वतिन
(गुरा २२४) । वतिन वतिन (गुरा २२४) ।

परिक्रमन् नि [परिक्रमन्] वतिन वतिन
(गुरा २२४) । वतिन वतिन (गुरा २२४) ।

परिक्रमन् नि [परिक्रमन्] वतिन वतिन
(गुरा २२४) । वतिन वतिन (गुरा २२४) ।

परिक्रमन् नि [परिक्रमन्] वतिन वतिन
(गुरा २२४) । वतिन वतिन (गुरा २२४) ।

परिक्रमन् नि [परिक्रमन्] वतिन वतिन
(गुरा २२४) । वतिन वतिन (गुरा २२४) ।

परिक्रमन् नि [परिक्रमन्] वतिन वतिन
(गुरा २२४) । वतिन वतिन (गुरा २२४) ।

परिक्रमन् नि [परिक्रमन्] वतिन वतिन
(गुरा २२४) । वतिन वतिन (गुरा २२४) ।

परिक्रमन् नि [परिक्रमन्] वतिन वतिन
(गुरा २२४) । वतिन वतिन (गुरा २२४) ।

परिक्रमन् नि [परिक्रमन्] वतिन वतिन
(गुरा २२४) । वतिन वतिन (गुरा २२४) ।

परिक्रमन् नि [परिक्रमन्] वतिन वतिन
(गुरा २२४) । वतिन वतिन (गुरा २२४) ।

परिक्रमन् नि [परिक्रमन्] वतिन वतिन
(गुरा २२४) । वतिन वतिन (गुरा २२४) ।

परिक्रमन् नि [परिक्रमन्] वतिन वतिन
(गुरा २२४) । वतिन वतिन (गुरा २२४) ।

परिक्रमन् नि [परिक्रमन्] वतिन वतिन
(गुरा २२४) । वतिन वतिन (गुरा २२४) ।

परिक्रमन् नि [परिक्रमन्] वतिन वतिन
(गुरा २२४) । वतिन वतिन (गुरा २२४) ।

परिक्रमन् नि [परिक्रमन्] वतिन वतिन
(गुरा २२४) । वतिन वतिन (गुरा २२४) ।

परिक्रमन् नि [परिक्रमन्] वतिन वतिन
(गुरा २२४) । वतिन वतिन (गुरा २२४) ।

परिक्षेवि नि [परिक्षेपित्] तिरस्कार
करनेवाला (उत्तर ११८)।

परिक्षेव दु [वि] कटार, कटार, बलाहि
बाण्ड गोरु (दे २, २७)।

परिक्षेव सक्त [परि + क्खे] कुवाला
कुवाला। कबल 'परिक्षेवमाहमत्ययेयो'
(उत्तर २८९ टि)।

परिक्षेय न [परीक्षय] परीक्षा-करण
परीक्षा लेने परखने वा बोन करने का काम (पत्र
१८८)।

परिक्षेयि वि [परिक्षेयित्] परीक्षीय
'पुष्पमृगमणपरिक्षेयिचरीये' (महा)।

परिक्षाम नि [परिक्षाम] प्रति दुर्बल विरोध
कर (वा १२९)।

परिक्षित् बेको परिक्षित्त (सक)।

परिक्षित् बेको परिक्षित्त। परिचिब
(मन्त्र)। 'पदा ३ परिक्षित् दोहृन्महीछ
मन्त्रमि' (सम्पत् २१७ वेद्य १३९)।

परिक्षिवि बेको परिक्षित्त (सक)।

परिक्षिद्वि वि [परिक्षिद्वि] अस्तिम्य लोत्र
को प्राप्त (मन्त्र)।

परिक्षिद्वि वि [परिक्षेवित्] विरोध क्षिप्त
क्षिप्ता हुमा (सक)।

परिक्षेव (दौ) दु [परिक्षेव] विरोध क्षेत्र
(सम्पत् १८८)।

परिक्षेव सक्त [परि + लेप्य] अस्तिम्य
क्षिप्त करता। परिक्षेव (सक)। छेक
परिक्षेविय (मन्त्र) (सक)।

परिक्षेविय (मन्त्र) बेको परिक्षेविय (सक)।

परिगु बेको परिगम।

परिगय सक्त [परि + गय] १ कण्ठा
करना। २ चित्तन करना बिचार करना।

बह-पस कक्का मम समसुख तित परि
गपतिथ विचलविमो राजा' (महा)।

परिगप्यत्त न [परिगप्यत्त] कल्पना (बर्नस
१८१)।

परिगप्यत्ता बी [परिगप्यत्ता] कल्प बेको
(बर्नस १३)।

परिगप्यिय नि [परिगप्यित्] बलकी कल्पना
को पर हो बह (उत्तर ११९ बर्नस १६२)।

बेको परिगप्यित्।

परिगम सक्त [परि + गम्] १ वाला

बमन करता। २ बाएँ ओर से बैठन करना।
३ व्याप्त करना। छेक परिगम्तु (सक)।

परिगमत्त न [परिगमत्त] १ गुण पर्याय
परिगमत्त पञ्चाधो धरोकणपुण्योति
एकत्वा' (सम्पत् १२)। २ धमत्ता बमन
(मिष्ट १)।

परिगमिर वि [परिगम्य] बालेवाला (सक)।

परिगय नि [परिगत] १ परिक्षेष्टि 'मणु
स्वबन्धुपरिगत' (उत्तर वा २९) 'बहपरि
यणपरिगत' (सम्पत् २१७)। २ व्याप्त
'विश्वपरिग्याहि काकाहि' (उत्तर)।

परिगय दु [परिगय] परिचार, विचार
हु हृदिकर्ष परितरविह्वलमालादीति रात'
(बर्नस २२२)।

परिगयि वि [परिगयि] बेको परिगयि
(मुद्रा १२७)।

परिगल सक्त [परि + गल] १ पल वाला
कोय होता। २ भरना टपकना। परिगल
(काक)। बह परिगल (पत्र ११२
१३, उद्गु ४४)।

परिगलिय वि [परिगलिय] कला हुमा
परीक्षीय (मुद्रा ७ महा मुद्रा ४०) १२२)।

परिगलिर वि [परिगलिय] पल बालेवाला
कोय होनेवाला (सक)।

परिगल बेको परिगेण्। छेक. परिगलिय
(वा ४८)।

परिगल बेको परिगल (हुमा)।

परिगलिय बेको परिगलिय (हृ १)।

परिगल सक्त [परि + गै] गाल करना।
कबल परिगलमाणा (वाया ११)।

परिगलण न [परिगलण] बालन कालन
(पत्र ११)।

परिगलमाणा बेको परिगल।

परिगलम नि [परिगलम] बेको परिगेण्।

परिगल बेको परिगेण्। परिगल (वा
१)। बह परिगलित्त परिगलमाणा
(मुद्रा २१ ४४ वा ७—पत्र १३३)।

परिगल सक्त [परि + गले] गाल होता।
बह परिगलमाणा (वाया)।

परिगु सक्त [परि + गुय] परिगुण
करना गिनती करना। परिगुण (मन्त्र)
(मिष्ट)।

परिगुण न [परिगुण] स्वाध्याय (दीध
१२)।

परिगुय सक्त [परि + गु] १ व्याकुल
होना। २ सक्त सतत भ्रमण करना। बह.
परिगुयत्त (सक)।

परिगुय सक्त [परि + गु] शम्भ करना।
बह परिगुयत्त (सक)।

परिगुय सक्त [परि + गु] १ व्याकुल
होना। २ सक्त सतत भ्रमण करना। बह
परिगुयत्त (उत्तर १—पत्र ३)।

परिगु सक्त [परि + गु] शम्भ करना।
कक परिगुयत्त (उत्तर १—पत्र ३)।

परिगेण् सक्त [परि + गण] प्रहण
परिगण करता स्वीकार करना (प्राप्ता)।

बह परिगणमाणा (वाया १८ ११)।
छेक परिगिबिन्ध परिचिन्ध (वाया नि
३८९)। छेक परिचिन्ध (नि ३७९)।

परिगिबिन्ध परिचिन्ध, परिचिन्ध (उत्तर
१ ४९ मुद्रा ११ मुद्रा २१ ४८ नि
४७)।

परिगय बेको परिगय (उत्तर १२ ८)।

परिगय दु [परिगय] १ प्रहण स्वीकार।
२ बल यात्रि का संग्रह (पत्र १३ ३, मन्त्र)।

३ मन्त्र वृत्त (उत्तर १)। ४ मन्त्र-वृत्त
विचका सद्य किमा बाम बह (वाया, उत्तर
११ २)। बर्नस २)। 'विरमय न [विरमय]
परिगय विमृष्टि (उत्तर १ पत्र २३)।
तय वि [वा] परिगय-मुद्रा (वाया
नि १२९)।

परिगयि वि [परिगयि] परिगय-मुद्रा
(मुद्रा १२)।

परिगयि वि [परिगयि] स्वीकृत (उत्तर
मन्त्र)।

परिगयिवा बी [परिगयिवा] परिगय
शम्भ कीजा (उत्तर १३ १३)।

परिगयपर नि [परिगयपर] नेक्षि हु
(वाया)। 'हृदिकी बह विर विगयपरि
वाया वाया' (मन्त्र)।

परिपट्ट एक [परि + पट्ट] धावात करता ।
कनह परिपट्टिर्भव (पट्ट) ।

परिपट्टन न [परिपट्टन] धावात (नका १८) ।

परिपट्टन न [परिपट्टन] शिरोधर रत्नम्
(पिट्ट १) ।

परिपट्टिय नि [परिपट्टिय] छात्र्य तथिय
(बीज १) ।

परिपट्ट नि [परिपट्ट] १ निष्ठा कर्त्तव्य
किम्प मया ही वह निष्ठा ह्यम् । 'महोदय-परि-
पट्ट' (दि १ १७४) ।

परिपाय केही परिपाय (पय) ।

परिपास एक [परि + पास] किया, शोभन करता । ह्यङ् परिपासेर्ष (भावा) ।

परिपासिन् नि [परिपासिन्] परिपार्थ-युक्त
'कथा वा परिपार्थियुक्ते प्रसिद्धि' (भाषा १
१ १३१) ।

परिपुष्पि नि [परिपुष्पि] कनैः सनैः
कान्ता विस्तरा शोभता (पट्टन २ १) या
१४८) ।

परिपुष्पम्
परिपुष्पम्
परिपुष्पु
परिपुष्पु
केही परिपुष्पु ।

परिपोष एक [परि + पोष] १ शोभना ।
१ परिपोष्य करता । वह परिपोष्य
परिपोषेमान (दि १ ११ बीज छाया १
४—पट्ट २०) ।

परिपोष्य न [दि परिपोष्य] विचार (डा
४ ४—पट्ट २३१) ।

परिपोषि नि [परिपोषि] शोभनान्ता
(पट्ट) ।

परिपोष्य केही परिपोष्य = परिपोष्य (माट—
राष्ट्र ७०) ।

परिपोष्य केही परिपोष्य । ह्यङ परिपोष्य
परिपोष्य (पट्ट) ।

परिपोष्य नि [परिपोष्य] परिपोष्य नका
(दि १४) ।

परिपोष्य केही परिपोष्य (महा बीज) ।

परिपोष्य केही [परिपोष्य] सेवा अधिक
(गुप्ता १२६) ।

परिपोष्य एक [परि + पोष] विशेष नका ।
परिपोष्य (पिट्ट) ।

परिपोष्य नि [परिपोष्य] विशेष नका
ह्यम् (दि १ १६) ।

परिपोष्य नि [परिपोष्य] सेवा करीवान्ता,
शेक (माट—मासि १) । बी । राया
(माट) ।

परिपोष्य केही [परिपोष्य] पैपुन-पुष्टि
(डा १, १६) ।

परिपोष्य एक [परि + पोष] निम्न
करना विचार करना । परिपोष्य, परिपोष्य
(छात्र ७०) । कर्त्त परिपोष्य (पट्ट) (छात्र) ।
वह परिपोष्य, परिपोष्य (छात्र पट्टन
११ ४) ।

परिपोष्य नि [परिपोष्य] विशेष
निम्न किया गया हो वह (छात्र) ।

परिपोष्य नि [परिपोष्य] निम्न
करवान्ता (छात्र) ।

परिपोष्य एक [परि + पोष] छात्र स्थिति
करना । परिपोष्य (पट्ट) ।

परिपोष्य नि [परिपोष्य] छात्र बाण्य ह्यम्,
विष्णु ह्यम् परिपोष्य ह्यम् (बीज) ।

परिपोष्य केही परिपोष्य । परिपोष्यमान
(बीज) । छङ परिपोष्य (पट्ट १३) ।

परिपोष्य केही परिपोष्य (पट्टन १६ ७६) ।

परिपोष्य नि [परिपोष्य] विशेष कुम्भ
किया गया हो वह 'परिपोष्यमान' (पट्ट
२६ ६) ।

परिपोष्य एक [परि + पोष] परिपोष्य
करना, छोड़ देना । परिपोष्य, परिपोष्य
(पट्ट, पट्टि १७०) । वह परिपोष्य (पट्टि
११०) । छङ परिपोष्य परिपोष्य
परिपोष्य (पट्टि २६ पट्ट २३ २४
राय) । ह्यङ परिपोष्य, परिपोष्य (भा
माट) ।

परिपोष्य नि [परिपोष्य] निम्न परिपोष्य
किया गया हो वह (दि २ २, गुर १,
१२, गुप्ता ४१, माट—छात्र ११२) ।

परिपोष्य न [परिपोष्य] परिपोष्य (छा
२३) ।

परिपोष्य नि [परिपोष्य] परिपोष्य करी
करना (पट्टि पट्टि १४) ।

परिपोष्य १ [परिपोष्य] व्याप, मोक्ष
परिपोष्य (पट्टा ११ १४४ पट्ट ७६२
बीज ७०) ।

परिपोष्य नि [परिपोष्य] व्याप करने लायक
'अच्छे निष्ठा शोभनान्ता परिपोष्य'
(बीज २४) ।

परिपोष्य नि [परिपोष्य] व्याप करने लायक
(पट्ट) ।

परिपोष्य केही परिपोष्य (पट्ट १४२ टी) ।

परिपोष्य केही परिपोष्य 'अच्छे निष्ठा शोभनान्ता परिपोष्य'
(पट्ट १, पट्टि १) परिपोष्य (पट्ट ११) ।

परिपोष्य नि [परिपोष्य] परिपोष्य (पट्टन ११६
२१६) ।

परिपोष्य नि [परिपोष्य] परिपोष्य (पट्टन ११६
२१६) ।

परिपोष्य नि [परिपोष्य] परिपोष्य (पट्टन ११६
२१६) ।

परिपोष्य नि [परिपोष्य] परिपोष्य (पट्टन ११६
२१६) ।

परिपोष्य केही परिपोष्य (पट्ट ११६) ।

परिपोष्य एक [परि + पोष] १ निम्न
करना निम्न करना । १ पट्टा काट
करना । परिपोष्य (पट्टन १७१) । छङ
'परिपोष्य निष्ठा शोभनान्ता परिपोष्य'
(पट्टा—पट्टि नि ३ ६
२६१) ।

परिपोष्य नि [परिपोष्य] १ कटा ह्यम्
'अच्छे निष्ठा शोभनान्ता परिपोष्य' (पट्ट ११६) । १
निम्न निम्न (पट्ट ४) ।

परिपोष्य केही [परिपोष्य] १ परिपोष्य,
निम्न । २ पट्टा काट (पट्ट ११६) ।

परिपोष्य केही परिपोष्य (पट्ट ११६
पट्टन १४२) ।

परिपोष्य नि [परिपोष्य] १ परिपोष्य
(पट्ट ११६ पट्ट ११६) । १ परि
पोष्य (पट्ट ११६ १०) ।

परिपोष्य नि [परिपोष्य] परिपोष्य निम्न
(पट्टि ११६ पट्ट ११६) ।

परिपोष्य नि [परिपोष्य] परिपोष्य (पट्टि ११६
पट्टि ११६) ।

परिपूय वि [परिपूय] क्षमा हुमा (क्या
छंद १२)।

परिपूर सक्त [परि + पूरय] पूर्ण करना,
भरपूर करना। बहू परिपूरत (वि ११७)।
सह परिपूरित (भाट—भाषा ११)।

परिपूरिय वि [परिपूरित] भरपूर, व्याप्त
(सुर २, ११)।

परिपेच्छ सक्त [परि + ईच्छ] चेतना।
बहू परिपेच्छत (पञ्च ११)।

परिपेरंत दु [परिपेरंत] प्राप्त थाप (शामा
१ ५ ११) सुर ११, २ २)।

परिपेरिय वि [परिपेरित] जिसको प्रेरणा
की गई हो बहू (सुभा १८६)।

परिपेक्ष वि [परिपेक्ष] १ सुकर, सहज
छास साक्षात् (वि ११)। २ भाट १। ३
भि-सार। ४ बराक चीन (राज)।

परिपेक्षि सक्तो परिपेरिय (वा १७७)।

परिपेल सक्त [परि + ई] मेवना।
परिपेलर (अभि)।

परिपेक्षन न [परिपेक्ष] मेवना (अभि)।

परिपेक्ष वि [परिपेक्ष] सुन्दर, मनोहर
(सुभा १ ६)।

परिपेक्षिय वि [परिपेक्षित] मेवा हुमा
(अभि)।

परिपोय सक्त [परि + पोय] पूर करना।
बहू परिपोयत (राज)।

परिप्यमाण न [परिप्यमाण] परिमाण (अभि)।

परिप्यव सक्त [परि + प्य] ठीका गोठा
लाना। बहू परिप्यवत (वि २ २६)
१ ११ पाठ)।

परिप्युय वि [परिप्युय] व्याप्त व्याप्त
(राज)।

परिप्युवा श्री [परिप्युवा] शीका विशेष
(राज)।

परिप्यंद दु [परिप्यंद] १ रचना-विशेष
‘अथ भाषापरिप्यंदो’ (राज)। २ समस्त
चक्रन (वा ४२)। ३ श्रेष्ठ प्रयत्न ‘योगा
रंसेभि विभिन्नि साक्षरं बहू अंशयुक्तेभि’।
छ-परिप्यंदिय निय एषा अभिराजयतं न’
(गड)।

परिप्युद वि [परिप्युद] व्याप्त सप्त (वि
११ १ सुर ५ ११५ अभि)।

परिप्युद दु [परिप्येद] १ प्रत्येक मेवना।
२ वि कोनैवना विनेवना ‘तपपक्ष

परिप्युद वेव वैवना पञ्चमंतवन् (अभि)।

परिप्युद सक्त [परि + प्युद] चेतना।

परिप्युद वि (श्री) (भाट—उत्तर २८)।

परिप्युद न [परिप्युद] हितन चक्रन
(सक्त)।

परिप्युदिय वि [परिप्युदिय] स्फूर्ति-युक्त
‘अथ परिप्युदिय’ (अभि)।

परिप्युद दु [परिप्युद] सक्त छुना (वि
७५ १११)।

परिप्युद न [परिप्युद] ऊपर वेवो (ज
१८६ टी)।

परिप्युद वि [परिप्युद] निस्तार, बवार
(बनंत १११)।

परिप्युदिय वि [परिप्युद] व्याप्त (सक्त १
१ ७२)।

परिप्युद वेवो परिप्युद = परिप्युद (पञ्च १
८ प्राप्ति १११)।

परिप्युदिय वि [परिप्युदिय] कृत हुमा
अन (पञ्च ७८ १)।

परिप्युद वेवो परिप्युद। परिप्युद (सक्त)।
बहू परिप्युद (सक्त)।

परिप्युदिय वेवो परिप्युदिय (सक्त)।

परिप्युदिय वि [परिप्युदिय] छुना हुमा
मुद्रित (विन)।

परिप्युद सक्त [परि + प्युद] सक्त करना
छुना। बहू परिप्युद (बनंत १२१
१११)।

परिप्युदिय वि [परिप्युदिय] योका हुमा
(ज १ ५२)।

परिप्युदिय वि [परिप्युद] कृया हुमा
‘अथपरिप्युदिय’ बहूपरिप्युदिय

विपिप्युदिय विपिप्युदिय (शामा १ ११) ज
१५८ टी)।

परिप्युद न [परिप्युद] बहू अनय
(सुभा २ ५ १)।

परिप्युद वि [वि] १ विपिद निपाठि। २
नैव, उरलो (वि १ ७२)।

परिप्युदिय (श्री) श्री वेवो (वा १)।

परिप्युद वि [परिप्युद] पठित स्फूर्ति
(शामा १ ११ सुभा १ १) अभि १५८)।

परिप्युद सक्त [परि + प्युद] पर्वत
करना अटवना। परिप्युद (भाट ७९ अभि
ज)। बहू परिप्युद (सुर २ ८० १
५ ५ ७१ अभि)।

परिप्युद न [परिप्युद] पर्वत (महा)।

परिप्युदिय वि [परिप्युद] चक्रा हुमा
(वि ११ सक्त अभि)।

परिप्युदिय वि [परिप्युद] मय-भाट (पञ्च
११ १६)।

परिप्युदिय वि [परिप्युद] पञ्चम प्राप्त (सुभा
२५८)।

परिप्युदिय वि [परिप्युद] भागा हुमा
(भाषा १५)।

परिप्युद वेवो परिप्युद (महा वि ८३)।

परिप्युदिय वि [परि + प्युद] कहेवना
(सक्त)।

परिप्युद वेवो परिप्युद। परिप्युद (महा)।
बहू परिप्युद, परिप्युद (महा) सक्त
अभि सक्त १५)। सह परिप्युदिय
(वि १८३)। बहू परिप्युदिय (महा)।

परिप्युदिय वेवो परिप्युदिय (अभि)।

परिप्युदिय वि [परिप्युदिय] पर्वत करने
बना (सुभा २१६)।

परिप्युद सक्त [परि + प्यु] पञ्चम करना
विप्युद। परिप्युद (बहू)। कर्म परि

विप्युदिय (सोह १ ८)। ह परिप्युदिय
(शामा १ १)।

परिप्युद दु [परिप्युद] पञ्चम विप्युद
(श्री स्वप्न १) प्राप्ति १७३)।

परिप्युद दु [परिप्युद] पर्वत छात्र,
विप्युदिय विप्युदिय (बहू १)।

परिप्युद न [परिप्युद] ऊपर वेवो (राज)।

परिप्युद श्री [परिप्युद] ऊपर वेवो
(श्री)।

परिप्युदिय वि [परिप्युद] विप्युद (बनंत
१६)।

परिप्युद सक्त [परि + प्युद] भाटन,
विप्युद करना। परिप्युद (क्या)। बहू

परिप्युद, परिप्युद विप्युदिय
(शामा २ ११ १८ शामा १ ७—प
११७ १ १५)। बहू परिप्युद

परियाणित्र पुं [परियाणित्र] १ याग
वाहन । २ विनाश-विधेय (आ ८) ।

परियादि केतो परियाइ । परियादिपति
(नण) । संज्ञ परियादिपति (कण) ।

परियाय केतो पन्थाय (दा ४ ४ गुण ११)
रिये २०११ दीन धावा उवा) । ३

परियाय मत्त 'अदि' परियादि कोर्त्त बुया
कोर्त्त य' (नृप १ १ १ १) । १

प्रज्या दीया (आ ३ २—पञ्च १२२) ।
११ अद्यपय (धार ४) । १२ जिन-नेत्र के

केवच-माल की कर्त्तित का समय (छाया १
५) । धार पुं [शक्तिर] दीया की छोटा

के इह (आ ३ २) ।

परिवायनररूमि की [पर्यायान्तररूमि]
मूमि] जिन के के वचन भाग की उत्पत्ति

के समय से लेकर सन्तान्तर सर्व प्रथम मुक्ति
पानेवाले के बीच के समय का प्रान्तर (छाया

१ ८—पञ्च १३४) ।

परिवार लघु [परि + धारय] १ सेना-
मुखा करता । २ संशोध करना जिस

क्षेत्र वरदा । परिवार (आ ३ १) अण) ।
वह परिवारमान (धर) । कन्ह परि

वारिन्माल (आ १) ।

परिवार पुं [परिवार] वैकुण्ठ विजय-मेज
(परा १४—पञ्च ४ : आ १ १) ।

परिवारग रि [परिपारक] १ शिव-मेज
करेता (परा २ २ ४, ४) । २ सेवा

मुद्रा करनेवाला (रिया १ १) ।

परिपारण न [परिपारण] १ सेना-मुखा
(नृप १ ८—पञ्च २६१) । २ नाम को

(साधु १४) ।

परिपारणग य की [परिपारण] ऊपर
परिपारण } केतो (परा १४ दा ३,

१) । नद पुं [दाय] रिप-केवच के
मध्य का की का समय (विष्णु १ १) ।

परिपारण केतो परिवार (ताप ३४) ।
परिपारणय न [पर्यायान्तर] विचार,

विचन (नृप २) ।

परिपारण केतो परिपारण = परिवार (साधु
कोष १३४) ।

परिपारणय लघु [परि + धार] १ शक्ति
होय । २ सन्तान्तर के उत्पत्ति होय । ३

लक्ष सेवका । परिपारणय, परिपारणय
(कण यावा) ।

परिपारणय न [पर्यायान्तर] सन्तान्तर
प्रति (वि २) ।

परिपारणय की [पर्यायान्तर] सन्तान्तर
(आ ३ ४—पञ्च १३४) ।

परिपारणय केतो परिपारण (नृप २ २
१२) ।

परिपारणय की [परिपारण] परिपारण
सन्तान्तर (वीर) ।

परिपारणय की [परिपारण] सन्तान्तर
लक्ष सन्तान्तर स्थिति (साधु १ १४—पञ्च

१ २) ।

परिपारणय रि [पर्यायान्तर] स्थित अन्त-
परिपारणय रि स्थित (साधु २ १ १ १ ४

४) अण १४ २ वर) ।

परिपारणय रि [पर्यायान्तर] अन्त प्रात (साधु
२ १ २ १) ।

परिपारणय लघु [पर्याय + धारय] यावा
करता । परिपारणय (दा १ ८ ३४ गुण

१ ५ ३४) ।

परिपारणय पुं [पर्यायान्तर] मत्त, संख्या
का स्थान (साधु २ १ ५ २) ।

परिपारणय रि [परिपारण] दीपित (वदि) ।
परिपारणय रि [परिपारण] बाही एक

हृत्वा (वद) ।

परिपारण लघु [अन्त] अन्तान्तर दीपना ।
परिपारण (आ ४ ४) ।

परिपारण लघु [परि + रम्] आतिथ्य करना ।
परिपारण (ही) (वि ४६) । संज्ञ

परिपारण (नृप २ ४१) ।

परिपारण न [परिपारण] आतिथ्य (साधु
४ ४३, नृप २ ४३९) ।

परिपारण लघु [परि + रम्] परिपारण
करता । परिपारण (वदि) । परिपारण-

णीय (मिष्ठा ११) ।

परिपारण न [परिपारण] परिपारण (नृ
१ १ १ १) ।

परिपारण की [परिपारण] ऊपर केतो (वद
३६ २३, नृप २ ४३ वर) ।

परिपारणय रि [परिपारण] परिपारण
(वदि) ।

परिपारण रि [परिपारण] आतिथ्य (सा
३६ ४) ।

परिपारण पुं [परिपारण] १ परिपारण (नृ
३६ २३) पञ्च ८६, ११ पञ्च १३८ वीर) ।

२ पर्याय, समानार्थक लक्ष 'परिपारण
रि वा एकप्राय रि वा एकप्राय रि वा एकप्राय रि

वा एकप्राय रि (साधु १) । ३ परिपारण रि
कर करता 'परिपारण केतो लक्ष व संवरा

हु अन्त वा, व सन्तान्तर व अन्तान्तर
पञ्च, वी अन्तान्तर वी परिपारण—अन्त-

रिपारण (साधु १ १ १) ।

परिपारण लघु [परि + रम्] विपारण,
लोका । वह परिपारणमान (कण) ।

परिपारण लघु [परि + रिह] वचना
करता हिनता । वह परिपारणमान (नृ

३६ ४) ।

परिपारण लघु [परि + रम्] सेवना
करता । वह परिपारण (वद ४३४) ।

संज्ञ परिपारण (नृप १) ।

परिपारण रि [परिपारण] वचना करनेवाला
(वद) ।

परिपारण रि [परिपारण] मत्तान्तर
(वद) ।

परिपारण रि [परिपारण] आत्य वद
हृत्वा 'ही अन्तान्तर वीर' (नृप ३६ १) ।

परिपारण रि [परिपारण] वचना करनेवाला
(नृप ३६ १) ।

परिपारण रि [परिपारण] वचना करनेवाला
(नृप ३६ १) ।

परिपारण रि [परिपारण] वचना करनेवाला
(नृप ३६ १) ।

परिपारण रि [परिपारण] वचना करनेवाला
(नृप ३६ १) ।

परिपारण रि [परिपारण] वचना करनेवाला
(नृप ३६ १) ।

परिपारण रि [परिपारण] वचना करनेवाला
(नृप ३६ १) ।

परिपारण रि [परिपारण] वचना करनेवाला
(नृप ३६ १) ।

परिपारण रि [परिपारण] वचना करनेवाला
(नृप ३६ १) ।

परिपारण रि [परिपारण] वचना करनेवाला
(नृप ३६ १) ।

परिपारण रि [परिपारण] वचना करनेवाला
(नृप ३६ १) ।

परिहृष्टो पर = पर (वि १ १७) ।
 परिहृष्टास वि [वि] भद्राह-मति (वि १ ११) ।
 परिहृष्टो को परिहृष्टो = वि (एय ४९) ।
 परिहृष्टो को परिहृष्टो । बहु परिहृष्टि, परिहृष्ट (धीय) ।
 परिहृष्ट भक्त [परि + हृष्ट] विर पञ्चम सरक बला । परिहृष्ट (वि ४ १२७) ।
 परियहृष्टु वि [परिहृष्टि] गमन करने में समर्थ (अ ४ ४—यत्र २७१) ।
 परिवहण (भव) वि [परिवह] सर्वथा टेका (मति) ।
 परिवहण सक [परिवहण] जना । संह परिवहण (सम्पन्न ११७) ।
 परियन्वित्र वि [परिवन्वित्र] को ठग गया हो (वि ४ १८) ।
 परिवन्वि वि [परिवन्वि] कियोमी कुत्रयन (वि ४ २; मद्र—विह ७) ।
 परिवन्वय न [परिवन्वय] लुप्त प्रशंसा (भाषा) ।
 परिवन्वि वि [परिवन्वि] लुप्त पुनित (पत्र १ ९) ।
 परिवन्वि न को परियन्वि (धीय) ।
 परिवन्वि दु [परिवन्वि] परिवन्वि-वर्ग (पत्र २४ २४) ।
 परिवन्वि न [वि] वधवार्य निषय 'हाय-एव परिवन्वि' (कल्पना २१४२) ।
 परिवन्वि को परिवन्वि (अज्ञानेव ह्यपरिवन्वि) (हाय १ १९ टी—यत्र २२१ धीय) । को परिवन्वि ।
 परियन्वि सक [मति + पद] स्वीकार करना । परिवन्वि (मति) ।
 परिवन्वि सक [परि + वन्वि] विचार करना, परिष्कार करना । परिवन्वि (मति) ।
 संह परिवन्वि, परिवन्वि (भाषा वि २१९) ।
 परिवन्वि न [परिवन्वि] परिष्कार (मति ११२) ।
 परिवन्वि को [परिवन्वि] ऊपर देखो (अ) ।
 परिवन्वि वि [परिवन्वि] परिष्कार (अ) ।

परिवहृष्टो को परिवहृष्ट = परि + वन्वि । परि वहृष्ट (मति) । संह परिवहृष्टि (अप) (मति) ।
 परिवहृष्ट ॥ [परिवहृष्ट] भाष्यन भाष्यनः 'भाष्यनपरिवहृष्ट' (संभव ३६) ।
 परिवहृष्टो को परिवहृष्ट (भा २२) ।
 परिवहृष्टो को परिवहृष्ट (मति) ।
 परिवहृष्टु वि [परिवहृष्ट] योमकार (स ९८) ।
 परिवहृष्ट सक [परि + वन्वि] पञ्चम । वन्वि परिवहृष्ट परिवहृष्टमाण (वन्वि २ ९२ ९७ यत्र ५ ३) ।
 परिवहृष्ट वि [परिवहृष्ट] विप हुषा (मुषा १९ वन्वि २११ हन्वीर १; वन्वि १ २४) ।
 परिवहृष्ट सक [परि + वन्वि] वन्वि । परिवहृष्ट (मद्र मति) । मति परिवहृष्ट (धीय) । ह. परिवहृष्ट परिवहृष्टमाण, परिवहृष्टमाण (भा १४६, खामा १ १९ मद्र खामा १ १) ।
 परिवहृष्ट न [परिवहृष्ट] परिवहृष्ट, वन्वि (सक मति ८७३) ।
 परिवहृष्ट को [परिवहृष्ट] ऊपर देखो (वि २ २) ।
 परिवहृष्टो को परिवहृष्ट = परिवहृष्ट (मति १९ टी) ।
 परिवहृष्ट वि [परिवहृष्ट] वन्वि हुषा (भा १४२ ४१६) ।
 परिवहृष्टमाण को परिवहृष्ट ।
 परियन्वि सक [परि + वन्वि] वन्वि करना । ह. परिवन्वि (अप) ।
 परिवन्वि वि [परिवन्वि] विषय वन्वि किया को हृ (यत्र ७) ।
 परिवहृष्टो को परिवहृष्ट = परि + वन्वि । परि वन्वि (उत्तर ११ १) । परिवहृष्ट (भा ७) । ह. परिवहृष्ट (भा २८१) ।
 परिवहृष्टो को परिवहृष्ट = परि + वन्वि । ह. परिवहृष्ट परिवहृष्ट (स ६ शुभ १ २, १ १२) । संह परिवहृष्ट (भा ७) ।
 परिवहृष्टो को परिवहृष्ट = परिवहृष्ट (मति ११४) । २ संभव प्रयत्न (अप) ।

परिवहृष्टो को परिवहृष्ट = परिवहृष्ट (भा ७) ।
 परिवहृष्टो को परिवहृष्ट (वि २८६ मद्र—विह ७) ।
 परिवहृष्ट (अप) वि [परिवहृष्ट] पञ्चम यत्र परम किया गया 'यन्वि मति मुद्रा-मोर्' निमग्न परिवहृष्टो' (मति) ।
 परिवहृष्ट वि [परिवहृष्ट] वन्वि वन्वि ।
 परिवहृष्टो को परिवहृष्ट (मुषा २२२) ।
 परिवहृष्ट न [परिवहृष्ट] वन्वि, वन्वि (मति) ।
 परिवहृष्ट वि [परिवहृष्ट] भाष्यनः 'भाष्यनपरिवहृष्ट' (अप) परिवहृष्ट (धीय) ।
 परिवहृष्टो को परिवहृष्ट । ह. परिवहृष्टमाण (अप) ।
 परिवहृष्टो को परिवहृष्ट (उत्तर ११६ टी) ।
 परियहृष्ट सक [परि + वन्वि] विषय विहृष्ट । परिवहृष्ट (अप १ १) ।
 परिवहृष्ट सक [परि + वन्वि] किया करना । परिवहृष्टा परिवहृष्ट (भाषा) । ह. परिवहृष्ट (अप १ १) ।
 परिवहृष्ट वि [परिवहृष्ट] परिवहृष्ट (मुषा १२३) ।
 परिवहृष्टो को परिवहृष्ट = परिवहृष्ट (मति १ १) ।
 परिवहृष्ट सक [परि + वन्वि] वन्वि वन्वि । परिवहृष्ट, परिवहृष्ट (अप मद्र वि ४२७) ।
 परिवहृष्ट न [परिवहृष्ट] भाष्यन (अप) ।
 परिवहृष्टो को [परिवहृष्ट] वन्वि वन्वि (मति १ १) ।
 परिवहृष्ट वि [परिवहृष्ट] वन्वि वन्वि (मति १ १) ।
 परिवहृष्ट सक [परि + वन्वि] वन्वि वन्वि । परिवहृष्ट, परिवहृष्ट (अप मद्र वि ४२७) ।
 परिवहृष्ट न [परिवहृष्ट] भाष्यन (अप) ।
 परिवहृष्टो को [परिवहृष्ट] वन्वि वन्वि (मति १ १) ।
 परिवहृष्ट वि [परिवहृष्ट] वन्वि वन्वि (मति १ १) ।
 परिवहृष्ट सक [परि + वन्वि] वन्वि वन्वि । परिवहृष्ट, परिवहृष्ट (अप मद्र वि ४२७) ।
 परिवहृष्ट न [परिवहृष्ट] भाष्यन (अप) ।
 परिवहृष्टो को [परिवहृष्ट] वन्वि वन्वि (मति १ १) ।
 परिवहृष्ट वि [परिवहृष्ट] वन्वि वन्वि (मति १ १) ।

परिधीह न [परिपीठ] भासल-विरोध (अर्थ) ।
 परिधीस एक [परि-धीस्य] बसला ।
 छंङ परिधीसियाण (भाषा २ १ ८ १) ।
 परिधुह नि [परिधुह] परिधीस्य हेष्ठि
 (छाया १ १४ बर्नसि २४ दीप महा) ।
 परिधुव नि [परिधुव] १ छा हुआ । २
 न भास निवाह (पद ३४) । देखो
 परिधुसिख ।
 परिधुव देखो परिधुह (भाष १२) ।
 परिधुवि श्री [परिधुवि] हेष्ठि (भाष १२) ।
 परिधुसिख नि [परिधुसिख] स्विष्ट रछा हुआ
 'जे निम्न धनेसे परिधुसिख' (भाषा १ ४
 १ १ १ २) । देखो परिधुसिख ।
 परिधुसिख नि [परिधुसिख] फल श्रवण हुआ
 (भाषा २ १ १ १) ।
 परिधुह नि [परिधुह] समर्प (उप ३ २) ।
 परिधुह नि [परिधुह] स्तुत (भाष २६
 उप ३ १) ।
 परिधुह नि [परिधुह] १ बलान, बलिष्ठ
 (उप ३ २१) । २ नसिष्ठ गूढ (भाषा २
 ४ २, ३) ।
 परिधुह नि [परिधुह] बहन किया हुआ
 बीर हुआ 'न नस्यसिनि धर्मे पुत्र निरपदि
 हुह हर्न लोह' (बर्नसि ३) ।
 परिधुहय देखो परिधुहण (उप) ।
 परिवेह एक [परि + वेष्ट] वेष्टना
 कष्टेना । परिवेह (अर्थ) । छंङ परिवेष्टिय
 (निधु १) ।
 परिवेष्ट पुं [परिवेष्ट] हेष्ठि वेष्ट वा भाषण
 दो निष्कार केनारण्डुप्रविष्टि (धिरि
 ११८) ।
 परिवेष्टाविय नि [परिवेष्टि] हेष्ठि कष्टना
 हुआ (नि १ ४) ।
 परिवेष्टि नि [परिवेष्टि] वेष्टा हुआ कष्ट
 हुआ कष्टे हुआ (पर ३५ न टी: वण २ १
 नि १ ४) ।
 परिवेष्ट एक [परि + वेष्ट] कष्टना
 'कमपरिष्टि परिवेष्ट' (अर्थ) ।
 परिवेष्टि नि [परिवेष्टि] कष्टन-शील
 (पद ३) ।
 परिवेष्ट एक [परि + वेष्ट] कष्टना । नञ्
 परिवेष्टमा (भाषा) ।

परिवेष्ट एक [परि + वेष्ट] परोक्षता ।
 परिवेष्ट (छाया १८१) । कर्म परिवेष्टिभञ्ज
 (छाया १ ८) । नञ् परिवेष्ट परि
 वेष्टयत (निधु १२ छाया ११ छाया
 १ ७) ।
 परिवेष्ट पुं [परिवेष्ट] पुं १ वेष्टन (गठ ३) ।
 २ मञ्ज वेष्टावि से सुय-भास कर्त वेष्टाकार
 मञ्ज 'परिवेष्टो वेष्टे फलवण्यो' (पठम
 १६ ४७ छ ११ टी: गठ ३) ।
 परिवेष्टा न [परिवेष्टा] परोक्षता (उ
 १८७ निधु ११६) ।
 परिवेष्टा श्री [परिवेष्टा] ऊपर देखो
 (निधु ४४३) ।
 परिवेष्टि [परिवेष्टि] कष्टनी में रक्षते
 वाला (पद ३) ।
 परिवेष्टा एक [परि + वेष्ट] १ उपेष्टान्
 कर्म करता । २ बीक्षा सेवा । परिवेष्ट
 परिष्कृत्यावि (छाया १ १ ४ १ नि
 ४६) ।
 परिवेष्टा नि [परिवेष्ट] परिवेष्टि 'चाट
 पाणिमो निव वण्युपिष्ठमावेष्टे' (बधु) ।
 परिवेष्टा नि [परिवेष्ट] विरोध अर्थ
 (भाष—गुण ७) ।
 परिवेष्ट पुं [परिवेष्ट] कर्षा कर्ष करने
 का कर्म (उप ३ १ टी) ।
 परिवेष्ट एक [परि + वेष्ट] बहन करना
 भाषण करना । परिवेष्ट (बर्नसि २२) ।
 परिवेष्टा श्री [परिवेष्टा] संन्यासिनी
 (छाया १ ८ महा) ।
 परिवेष्टा (श्री) पुं [परि + वेष्ट] संन्यासी
 (भाष ४६) ।
 परिवेष्टा (श्री) पुं [परिवेष्टा] संन्यासी
 (नि १७७ भाष—गुण ४६) ।
 परिवेष्टा (श्री) देखो परिवेष्टा (भा २) ।
 परिवेष्टा देखो परिवेष्टा (सुपनि ११२
 शीप) ।
 परिवेष्टा पुं [परिवेष्टा] संन्यासी
 परिवेष्टाय साष्टु (अर्थ) ।
 परिवेष्टाय नि [परिवेष्टा] परिवेष्टा-क-
 उत्तमो (अर्थ) ।
 परिवेष्टा देखो परिवेष्टा (पद ४६२) ।

परिवेष्ट एक [परि + वेष्ट] मय करना
 इत्या । नञ् परिवेष्टमाणा (छाया १ १
 २) ।
 परिवेष्टि नि [परिवेष्टि] शीघ्र (पण्ड
 १ १) ।
 परिवेष्टा एक [परिवेष्ट + कर्मा] १ पञ्चो
 सष्ट नाम्ना । २ गिनी करना । छंङ
 परिवेष्टाय (उप ३ १) ।
 परिवेष्टा श्री [परिवेष्टा] संन्या गिनी
 (पठम १ ४६ शीघ्र ४ पञ्—गाथा
 ११ लघु ४ छण) ।
 परिवेष्ट पुं [परिवेष्ट] शीघ्र शीघ्र (हर्मो
 ११) ।
 परिवेष्ट पुं [परिवेष्ट] धर्मिष्ठ (पठम
 २१ ३२) ।
 परिवेष्टा नि [परिवेष्टा] शुक सहिष्ठ
 (बर्नसि ११) ।
 परिवेष्ट एक [परिवेष्ट + र्यापय] १
 संन्यास करना । परिवेष्टा (अर्थ) (विप) ।
 नञ् परिवेष्टावि (अर्थ ४६) ।
 परिवेष्टावि नि [परिवेष्टावि] संन्यासि
 (छंङ १८) ।
 परिवेष्टि नि [परिवेष्टि] स्विष्ट रछा
 हुआ (महा) ।
 परिवेष्ट नि [परिवेष्ट] नञ् हुआ (महा) ।
 परिवेष्टावि नि [परिवेष्टावि] धाप्रिष्ठ
 (उ ३६१) ।
 परिवेष्ट एक [परि + वेष्ट] बसना
 बसल करना इष्ट-अष्ट भूतम् । परिवेष्ट
 (अ १ टी: छ १३) । नञ् परिवेष्ट, १
 परिवेष्टमाणा (अ ३१ टी: छ ४१: ११६) ।
 छंङ परिवेष्टि (छाया १११) । छं
 परिवेष्टि (उ १६२) ।
 परिवेष्टा न [परिवेष्टा] परिवेष्टा (उ
 ३, ३२, ११ ३१: छाया २ १) ।
 परिवेष्टा नि [परिवेष्टा] १ पठ
 (अर्थ) । २ न. परिवेष्टा परिवेष्टा (ग
 १ १) ।
 परिवेष्टा नि [परिवेष्टा] नयन करने-
 वाला (छाया १ १ नि ३६६) ।
 परिवेष्टा (अर्थ) नि [परिवेष्टा] धर्मिष्ठ
 (छण) ।

परिचोण वि [परिचोण] जाल रैय का (बन्ध)।

परिचोणन न [परिचोणन] शुभला (पा १२८)।

परिचोषिभ वि [परिचोषित] घुलाया हुआ (घण)।

परिमोह सक [परि + मोहय] मुह करना। कबह परिमोहित (घण)।

परिस्त्व सक [परि + स्त्व] चालित करना। परिस्त्वदि (ही) (वि ११३)।

सह परिस्त्वह्य (वि ११३, नाट—छन्द ७२)।

परिस्त्व हेको परिसंत (शाया १ १ स्वन ४ ; धनि २१)।

परिस्त्व (ही) हेको परिस्त्वह्य। परिस्त्वह्य (जतर १७६)। बह परिस्त्वजित (धनि १११)। छह, परिस्त्वजित (धनि १२३)।

परिस्त्वम धु [परिस्त्व] मेहनत (बर्नस ७ वय स्वन १ धनि १६)।

परिस्त्वम सक [परि + मय] १ मेहनत करना २ विधान लेना। परिस्त्वमह्य (विजे ११२७ बर्नस ७६)।

परिस्त्व सक [परि + स्तु] गुण करना लम्बना। बह, परिस्त्वमाण (विजा १ १)।

परिस्त्व धु [परिस्त्व] धालन कर्म-बन्ध का काण्य (भाषा)।

परिस्त्व हेको परितह्य (भाषा)।

परिस्ताह्य हेको परित्तावि = परितावि (छ ४ ४—यज २७६)।

परित्ताव हेको परिचाप। छह, परिस्तावि-पाग (वि २६२)।

परित्तावि वि [परित्तावि] १ कर्म-कर्म करनेवाला (भा २३, १)। २ कुम्भकार, टपकरेवाला। ३ गुप्त बात को प्रकट कर देने-वाला (बन्ध १ २३ यथा १३, १४)।

परित्तावि वि [परित्तावि] १ कुम्भकार (हय ४६)।

परिह सक [परि + हा] पहिरना, पहनना। परिह (धनि १३, ४६)। 'धनि-हीणेवि परिह' बह 'यजमयान्त' (धनि १७६)।

परिह धु [वि] रीय प्रस्ता (१६ ७)।

परिह धु [परिह] धरणा याका (छण)।

परिहपह्य वि [वि] १ पट्ट, यज निगुण (१६ ७६ धनि)। २ धु, मय, रीय प्रस्ता (१६ ७६)। हेको परिहय।

परिहपह्य हेको परिहय (धनि)।

परिहपह्य सक [सुध, परि + पट्टय] धरना करना, धर करना कलना कुचबना। परिहपह्य (हे ४ १२१ नाट—साहित्य ११६)।

परिहपह्य सक [वि + लुह] १ धारणा धार कर विप देना। २ धारणा करना। ३ सुद सेना। ४ धक बनीन पर बोटना। परिहपह्य (भाह ७३)।

परिहपह्य न [परिहपह्य] १ धमिबल धारणा (वि ४ ४१)। २ धरय विवना (वि ४ ४१)।

परिहपह्य ही [वि] धारणा, धारयय धी-धाम (१६ २१)।

परिहपह्य वि [सुविह] विधका धरन किया क्या हो बह, 'परिहपह्यो नाणी' (धुना पाग)।

परिहपह्य न [वि परिधान] बह, कर्म (१६ २१ पाग हे ४ १४१ सुर १ २३ धनि)।

परिहपह्य धु [वि] १ धमिबल-विरोध 'परिहपह्यो नाणी' (धुना पाग)।

परिहपह्य धु [वि] १ धमिबल-विरोध 'परिहपह्यो नाणी' (धुना पाग)।

परिहपह्य धु [वि] १ धमिबल-विरोध 'परिहपह्यो नाणी' (धुना पाग)।

परिहपह्य धु [वि] १ धमिबल-विरोध 'परिहपह्यो नाणी' (धुना पाग)।

परिहपह्य धु [वि] १ धमिबल-विरोध 'परिहपह्यो नाणी' (धुना पाग)।

परिहपह्य धु [वि] १ धमिबल-विरोध 'परिहपह्यो नाणी' (धुना पाग)।

परिहपह्य धु [वि] १ धमिबल-विरोध 'परिहपह्यो नाणी' (धुना पाग)।

परिहपह्य धु [वि] १ धमिबल-विरोध 'परिहपह्यो नाणी' (धुना पाग)।

परिहपह्य धु [वि] १ धमिबल-विरोध 'परिहपह्यो नाणी' (धुना पाग)।

परिहपह्य धु [वि] १ धमिबल-विरोध 'परिहपह्यो नाणी' (धुना पाग)।

परिहपह्य धु [वि] १ धमिबल-विरोध 'परिहपह्यो नाणी' (धुना पाग)।

परिहपह्य धु [वि] १ धमिबल-विरोध 'परिहपह्यो नाणी' (धुना पाग)।

हह परिहपह्य, परिहपह्य (छ ३, १ काप ४ ८)। ह परिहपह्य, परिहपह्य (छ ३, १ काप ४ ८)। ह परिहपह्य, परिहपह्य (छ ३, १ काप ४ ८)।

परिहपह्य न [परिहपह्य] धारणा करना (बन्ध १)।

परिहपह्य न [परिहपह्य] १ धमिबल धरना (धुना)। २ धमिबल धरना (धुना)। ३ धमिबल धरना (धुना)।

परिहपह्य ही [परिहपह्य] ऊपर हेको (विज १७७)। 'परिहपह्यो होह परिहपह्यो' (छ ३ १ टी—यज ११८)।

परिहपह्य वि [परिहपह्य] धमिबल धरना (धुना)। २ धमिबल धरना (धुना)। ३ धमिबल धरना (धुना)।

परिहपह्य वि [परिहपह्य] धमिबल धरना (धुना)। २ धमिबल धरना (धुना)। ३ धमिबल धरना (धुना)।

परिहपह्य हेको परिहपह्य = परि + ह, ह।

परिहपह्य वि [परिहपह्य] धमिबल धरना (धुना)। २ धमिबल धरना (धुना)। ३ धमिबल धरना (धुना)।

परिहपह्य धु [वि] धमिबल धरना (धुना)। २ धमिबल धरना (धुना)। ३ धमिबल धरना (धुना)।

परिहपह्य धु [वि] धमिबल धरना (धुना)। २ धमिबल धरना (धुना)। ३ धमिबल धरना (धुना)।

परिहपह्य सक [परि + मय] धमिबल धरना (धुना)। २ धमिबल धरना (धुना)। ३ धमिबल धरना (धुना)।

परिहपह्य धु [वि] धमिबल धरना (धुना)। २ धमिबल धरना (धुना)। ३ धमिबल धरना (धुना)।

परिहपह्य धु [वि] धमिबल धरना (धुना)। २ धमिबल धरना (धुना)। ३ धमिबल धरना (धुना)।

परिहपह्य धु [वि] धमिबल धरना (धुना)। २ धमिबल धरना (धुना)। ३ धमिबल धरना (धुना)।

परिहपह्य धु [वि] धमिबल धरना (धुना)। २ धमिबल धरना (धुना)। ३ धमिबल धरना (धुना)।

परिहपह्य धु [वि] धमिबल धरना (धुना)। २ धमिबल धरना (धुना)। ३ धमिबल धरना (धुना)।

परिहपह्य धु [वि] धमिबल धरना (धुना)। २ धमिबल धरना (धुना)। ३ धमिबल धरना (धुना)।

परिहपह्य धु [वि] धमिबल धरना (धुना)। २ धमिबल धरना (धुना)। ३ धमिबल धरना (धुना)।

परिहपह्य धु [वि] धमिबल धरना (धुना)। २ धमिबल धरना (धुना)। ३ धमिबल धरना (धुना)।

परिहपह्य धु [वि] धमिबल धरना (धुना)। २ धमिबल धरना (धुना)। ३ धमिबल धरना (धुना)।

परिहपह्य धु [वि] धमिबल धरना (धुना)। २ धमिबल धरना (धुना)। ३ धमिबल धरना (धुना)।

परुष सक [प्र + रूपय] प्रतिपादन करना ।
परुषे, परुषीय (दीप, कथा, मय) । संक्ष.
परुषइसा (ठा १ १) ।

परुषा वि [प्ररुषक] प्रतिपादक (सका कुत्र
१८१) ।

परुषण न [प्ररुषण] प्रतिपादन (पण) ।
परुषणा की [प्ररुषणा] ऊपर देखो (भाष
१) ।

परुषिअ वि [प्ररुषित] १ प्रतिपादित
निमित्त (पण्ड २ १) । २ प्रकटित
'उत्पन्नकण्ठप्यणुपरुषिअनामुत्पन्नसमागुरि
सोय' (प्रति २३) ।

परुअ धुं [वि] स्थान (दि १ १२) पाष
पह) ।

परेय म [परेय] बार झल्लाह (यहा) ।
परयमय हैको परिक्रमण (कय) ।

परयय म [वि] पाष-पण (दि १ ११) ।
परय्य वि [परेयुस्तन] परलो का परलो
होनेवाला (दि २४१) ।

परो म [पर] एकट, 'परोरुहिं ठवैहिं'
(उवा) ।

परोइय केको परुषय (उप ७१६ टी) ।

परोक्ख म [परोक्ख] १ प्रत्यक्ष-कृत प्रमाण
'पक्खवपरोक्खाईं उल्लेख वयो वमण्णाईं' (सुर
१२, १; धवि) । २ वि परोक्ख-प्रमाण का
विषय समग्रण (मुना १४४ हे ४ ४१६) ।
३ न पीछे, पीछे की ओर में 'मम परोक्खे
कि ठए मयुपुन' ? (महा) ।

परोट्ट हैको पक्खेह=पर्वत (पह) ।

परोप्पर १ वि [परस्पर] आपस में (दि १
परोप्पर १२२ मुना कय पठ) ।

परोपकार धुं [परोपकार] दूसरे की सहाई
(माट—मुक्ख ११८) ।

परोपकारि वि [परोपकारि] दूसरे की
सहाई करनेवाला (कय २ १) ।

परोपर केको परोप्पर (माह २१ १) ।

परोपिय हैको परुषय (उप ७२८ टी व
४०) ।

परोह म [प्र + रुह] १ जलाह होना ।
२ बहना । परोहिय (टी) (माट) ।

परोह धुं [मरोह] १ जलाह (मुना) । २
हडि । ३ मंडप, मीनादेव (दि १ ४४) ।
४२

'पुद्गलपाण परोहे रहह व्यासावतिष्ण' (वर्गी
११८) ।

परोहइ न [वि] घर का पिछला दीवार, घर
के पीछे का भाग (पेठ ४१७) पाष या
१८२ या बज्जा १ १ १८) ।

पठ म [पठ] १ बीना । २ जाना । पठह
(पह) । हैको पठ = बत ।

पठ (पठ) म [पठ] पढ़ना विना ।

पठह (पिग) । म [पठ] पढ़ना (पिग) ।

पठ (पठ) सक [प्र + कटय] प्रकट करना ।

पठ (पिग) ।

पठ म [पठ + अय] भाषना—
'भोरण कणुपणय व

पागलहियण कुकुदी रहह ।

दे पठह पठह बाइयह

बहू उणुअणय पण्णी' (बज्जा
१४४) ।

पठ न [वि] खेद, पसोना (दि १ १) ।

पठ न [पठ] १ एक बहुत छोटी टील 'बार
लोबा (ठा १ १ मुना ४१७ बज्जा १८
मुना ४१६) । २ मांस (मुना १८६) ।

पठिय म [प्र + छरय] पठिकणय
करना । पठियेअ (पीप) ।

पठियण न [प्रलङ्घन] उत्सव (पीप) ।

पठिय धुं [पठ्याण] घब बूना दोहने का
काम करनेवाला करीयर, 'पठिये पठिये'
(प्राक् १) ।

पठिय धुं [पठ्याण] प्याम (उप १३
१८) ।

पठिय म [प्र + छय] लटकना । पठिय
(दि ४२०) । म [पठियेअ] (पीप) महा ।

पठिय वि [प्रलम्ब] १ लटकनेवाला लटकना
(पण्ड १ ४ पय) । २ जाना, दीर्घ (दि
१२, २३, मुना) । ३ धुं, पठ-विशेष एक
बहाह (ठा २ १) । ४ धुं—विशेष पठो

राज का धारणी धुं—(यम २१) । ५ धुं
आमरण-विशेष (पीप) । ६ एक तरह का
आम का केश (हह १) । ७ धुं—(उप
४४ १) । ८ एक पर्वत का एक शिखर
(आ ४—पय ४११) । ९ धुं—ऊन (हह
१ ठा ४ १—पय १८२) १ शैव-विशाम-
विशेष (यम १८) ।

पठिय वि [प्रलम्ब] लटक मुना (कय
अवि स्वय १) ।

पठिय वि [प्रलम्ब] लटकनेवाला लट-
कना (मुना ११ सुर १ २४८) ।

पठिय वि [वि] बज्ज 'इय विसवपण्णो'
(मुना ४२०) नाट) ।

पठिय धुं [पठ] बड़ का पड़ (मुना वि
११२) ।

पठिय न [पठ] कम-विशेष (पया २ १
८ ६) ।

पठिय वि [प्रलम्ब] पदी, मनुपम बज्ज—
'आमवपण्ण' — (पया १ १८) पीप) ।

पठिय म [पठि + अय] १ पठना,
बज्जना । २ एक पठना बज्जना । पठिय
(पिग) 'कोइअअणेहिं नो बज्जविहिं
पठिये' (सोवो १८) । संक्ष. पठिय (पय)
(पिग) । हैको पठिय ।

पठिय वि [प्रलम्ब] १ कथित उक्त, प्रभाव-
युक्त (मुना ११४ वे ११ ७१) । २ न
प्रभाव कम (पीप) ।

पठिय धुं [प्रलम्ब] १ बुझना, कयना-कयना ।
२ कयना का कयने कायल में बय (से २,
२ पय ७२, ११) । ३ विनाश; 'आमवज्जाह-
पय' (टी १) । ४ श्रेष्ठ-कय । ५ क्षिपना
(दि १ १८७) । म धुं [पठि] प्रभाव-कय
का धुं (पय ७२ ११) । पय धुं [पय]
प्रभाव का कय (सल) । लय धुं [लय]
प्रभाव का कय की भाव (सल) ।

पठिय न [पठ] १ किल-मूर्त किल-कोर
(पण्ड २ १) दि १३१) । २ मोन (मुना
१८७) ।

पठिय न [प्रलम्ब] १ प्रवीण (पया
१ १—पय ६२) । २ म-विशाम (पण्ड
२ ४) ।

पठिय सक [प्र + छय] ज्ञान करना बज्ज-
ना करना । पठिय (टी) (माट—पैपी
१७) । म [पठिये] पठयमाय (काव
सुर २ १२३ मुना २१ १४१) ।

पठिय न [पठ] लटकना, उल्लापन
'लयासमाअयो पठिये पाअमायो य'
(पीप ४४८) ।

पञ्चविज [वि] प्रत्ययित १ प्रत्ययक बहा
पञ्चविज [हुया] २ न प्रत्ययक बहाव (बहा
पञ्च १ १)।

पञ्चविज वि [प्रत्ययित] बहाव (वि ७
२१)।

पञ्चस न [वि] १ कर्तृ-पञ्च २ स्नेह
पञ्चिग (वि ६, ७)।

पञ्चस (पञ्च) न [पञ्चस] पञ्च पञ्चि (पञ्चि)।
पञ्चसु की [वि] सेवा पूजा भक्ति (वि
१, १)।

पञ्चसि पुंकी [वि] कपास (वि १ ४ पाप
बज्जा १५१ हे २ १७४)।

पञ्चविज वि [वि] १ विजय ब्रह्म २ पुत्र
ब्रह्म विजय का बाल्य (वि ६, १२)।

पञ्चविज वि [वि] उपजहृदय [पुत्र]
पापाहृदय (पञ्च)।

पञ्चपुत्र वि [प्रत्ययित] १ स्वयं बोहा २
बोहा (वि ११ ११ पञ्च)।

पञ्च केतो पञ्चय = पञ्च + मन् न न
कृतमि ध्वर्य सवर्ति बहि पञ्च तं पुत्र्य
(भाषा ११) पञ्चासि पञ्चासि (वि
११७)।

पञ्चमन [वि] केतो पञ्चय = पञ्च + मन्।
पञ्चमन

पञ्चमन [वि] [प्रत्ययित] १ पञ्च हुया
पञ्चय [पञ्च] पञ्चासि ब्रह्म (वि ११)

पञ्चमन वि [वि] पञ्चासि (वि ११)
११ पञ्च ११ न पञ्च ११७ पञ्च ११२

११ मुया २२ ११ ११ ११७ पञ्च ११७।
२ ११ पञ्चमन (वि ११)।

पञ्चय न [पञ्चयन] बहाव (हुया ४५४)।

पञ्चविज वि [पञ्चविज] विजय पञ्चासि
विजय ११ बहाव हुया ११७ विजय पञ्चासि

विजय ११ विजय ११७ विजय ११७ विजय ११७
विजय ११ विजय ११७ विजय ११७ विजय ११७

पञ्चय न [वि] पञ्चयन १ पञ्चयन ११७
पञ्चयन ११७ पञ्चयन ११७ पञ्चयन ११७

पञ्चयन ११७ पञ्चयन ११७ पञ्चयन ११७
पञ्चयन ११७ पञ्चयन ११७ पञ्चयन ११७

पञ्चयन ११७ पञ्चयन ११७ पञ्चयन ११७
पञ्चयन ११७ पञ्चयन ११७ पञ्चयन ११७

पञ्चयन पुं [वि] नौ पञ्चयन (वि १ ७)।

पञ्चयन केतो पञ्चासि = पञ्चासि (भाषा १
१ १ १११ पञ्च ११७ पञ्च ११७)।

पञ्चयन न [पञ्चयन] भाषा (पञ्च ११
पञ्च ११७)।

पञ्चायनया की कजर केतो (विजय ४५४)।

पञ्चयमान केतो पञ्चय = पञ्च + मन्।

पञ्चासि वि [प्रत्ययित] प्रत्यय भाषाभाषा (पञ्च
१५१)।

पञ्चासि न [प्रत्ययित] प्रत्यय भाषा (पञ्च
१ ११ पञ्च भाषा)। पीठय न [पीठय]
पञ्चासि का भाषा (पञ्च ११७)।

पञ्चासि वि [प्रत्ययित] पञ्चासि—पञ्चासि का
भाषा हुया (भाषा १, १ ११७)।

पञ्चासि सक्त [पञ्चासि] भाषा, पञ्च करता।

पञ्चासि (वि ४ ११)।

पञ्चासि पुं [प्रत्ययित] पञ्चासि की भाषा (पञ्च १
१)।

पञ्चासि पुं [प्रत्ययित] पञ्चासि का भाषा बहाव
(पञ्चा)।

पञ्चासि न [पञ्चासि] नष्ट करता बहाव
(हुया)।

पञ्चासि वि [प्रत्ययित] पञ्चासि पञ्चासि पञ्चासि
पञ्चासि पञ्चासि (पञ्च ११२, पञ्चासि ४५४
पञ्चासि ४५४)।

पञ्चासि वि [प्रत्ययित] पञ्चासि पञ्चासि
पञ्चासि पञ्चासि (पञ्च ११ २ ४५ पञ्च ११७
११७)।

पञ्चासि वि [प्रत्ययित] पञ्चासि पञ्चासि
पञ्चासि पञ्चासि (पञ्च ११२, पञ्चासि ४५४
पञ्चासि ४५४)।

पञ्चासि वि [प्रत्ययित] पञ्चासि पञ्चासि
पञ्चासि पञ्चासि (पञ्च ११२, पञ्चासि ४५४
पञ्चासि ४५४)।

पञ्चासि वि [प्रत्ययित] पञ्चासि पञ्चासि
पञ्चासि पञ्चासि (पञ्च ११२, पञ्चासि ४५४
पञ्चासि ४५४)।

पञ्चासि पुं [प्रत्ययित] पञ्चासि पञ्चासि
पञ्चासि पञ्चासि (पञ्च ११२, पञ्चासि ४५४
पञ्चासि ४५४)।

पञ्चासि पुं [प्रत्ययित] पञ्चासि पञ्चासि
पञ्चासि पञ्चासि (पञ्च ११२, पञ्चासि ४५४
पञ्चासि ४५४)।

पञ्चासि पुं [प्रत्ययित] पञ्चासि पञ्चासि
पञ्चासि पञ्चासि (पञ्च ११२, पञ्चासि ४५४
पञ्चासि ४५४)।

पञ्चासि की [वि] पञ्चासि पञ्चासि पञ्चासि
पञ्चासि पञ्चासि (वि १ १५)।

पञ्चासिया की [वि] पञ्चासि पञ्चासि पञ्चासि
पञ्चासि पञ्चासि (वि १ १५)।

पञ्चासि केतो पञ्चासि (विजय ११२)।

पञ्चासि केतो पञ्चासि (विजय ११२)।

पञ्चासि केतो पञ्चासि (विजय ११२)।

पञ्चासि केतो पञ्चासि (विजय ११२)।

पञ्चासि केतो पञ्चासि (विजय ११२)।

पञ्चासि केतो पञ्चासि (विजय ११२)।

पञ्चासि केतो पञ्चासि (विजय ११२)।

पञ्चासि केतो पञ्चासि (विजय ११२)।

पञ्चासि केतो पञ्चासि (विजय ११२)।

पञ्चासि केतो पञ्चासि (विजय ११२)।

पञ्चासि केतो पञ्चासि (विजय ११२)।

पञ्चासि केतो पञ्चासि (विजय ११२)।

पञ्चासि केतो पञ्चासि (विजय ११२)।

पञ्चासि केतो पञ्चासि (विजय ११२)।

पञ्चासि केतो पञ्चासि (विजय ११२)।

पञ्चासि केतो पञ्चासि (विजय ११२)।

पञ्चासि केतो पञ्चासि (विजय ११२)।

पञ्चासि केतो पञ्चासि (विजय ११२)।

पञ्चासि केतो पञ्चासि (विजय ११२)।

पवरंग न [दे प्रघराज] सिर, मस्तक (वे १, २८)।

पवरपुण्डीय पुन [प्रघरपुण्डीक] एक
है-विमान (प्राधा २ ११, २)।

पवरा श्री [प्रघर] भगवान् कायपुण्य श्री
शासनवेदी (पव २०)।

पवरिस घक [प्र+घप] बरघना वृष्टि
करता। पवरिसह (अभि)।

पवज बेको पवज (कप्यु १ २४०)।

पवस घक [प्र+वस] प्रयाण करना
विशेष करना। वक पवसत (सि १ २४
या १४)।

पवसण न [प्रवसन] प्रवास विदेश यात्रा
मुवाकिल (स १११ उप १ ३१ टी)।

पवसिध वि [प्रोपिध] प्रवास में क्या हुआ
(वा ४२ ८४; मुर ३, २११ गुवा ४०९)।

पवह घक [प्र+वह] १ बहना। २
सक, टपकना करना। पवहह (अभि
सिप)। वक पवहह (मुर १ ७३)। वक
पवहिया (सम ८४)।

पवह घक [प्र+ह] मार गलना।
वक 'पिच्छन पवहह' मग्न कराने कलिय
कराना (गुवा १७२)।

पवह वि [प्रवह] १ बहनेवाला। २ टपकने-
वाला। बहनेवाला 'मठ छलीयो घनघरण्य-
बहाम' (विपा १ १—पत्र १९)।

पवह दु [प्रवाह] १ बोल बहान बल-वाप
(वा १११, १४१ कुमा)। २ प्रवृत्ति। ३
व्यवहार। ४ घटन प्रवह (हे १ ९८)। ५
प्रवाह (पत्र)।

पवहण पुन [प्रवहण] १ नौका, बहाव
(शापा १ ३ वि १२०)। २ पानी घालि
बाहव 'पुनवणया भित्तियया भित्तियया
बहहलम्मा' (अभि मनु पाठ ७)।

पवहाइअ वि [दे] प्रवृत्त (हे १, १४)।

पवहायिय वि [प्रवाहित] बहावा हुआ
(अभि)।

पवा श्री [प्रवा] बलवान-स्वान वाणी-वाला,
प्राज्ञ (मीन पण्ड १ १) महा)।

पवाइ वि [प्रवादिन्] १ बाल करोलाता
वादी। २ धार्मिक (पुम १ १ १ पत्र
४०)।

पवाइअ वि [प्रवात] बहा हुआ (वापु)
'पवाइअ कर्त्तव्याय' (स १८१, पत्र १७
१७) छाया १ ८, स १११)।

पवाइअ वि [प्रवाति] बहावा हुआ (कण
वीर)।

पवाण (परा) बेको पमाण—प्रमाण (कुमा,
वि २११ अभि)।

पवाह सक [प्र+पाठय] पिठना। वक
पवाहेमाण (सम १७ १—पत्र ७२)।

पवादि बेको पवाइ (नर्मह १११)।

पवाय घक [प्र+वा] १ चुल वाता। २
बहाव (हवा का)। ३ सक बमन करना।

४ छिटा करना। पवायह (प्राज्ञ ७९)। वक
पवायह (वाचा)।

पवाय दु [प्रवाह] १ क्रिचली बलघुति
(गुवा १ उप १ २१)। २ परंपरा
प्राप्त करने। २ मत दर्शन 'पवायह पवाय
कावेका' (वाचा)।

पवाय पु [प्रपात] १ घट पवह (छाया १
१४—पत्र १११ हे १ २२)। २ ऊँच
स्वान से बिछा कल-छवूह (सम ८४)। ३

छट-छिटा निपटार परत-स्वान। ४ घट में
पकनेवाली बाह बाप (पत्र)। ५ पवन (अ
२, ३)। वह दु [वह] वह वृष्ट बहा
पवत पर से लगे पिछी हो (अ २ १—
पत्र ७९)।

पवाय दु [प्रवात] १ प्रकट पवन (पण्ड २
३)। २ वि बहा हुआ (पवन) (संति ७)।
३ पक-छिटा (हह १)।

पवायण वि [प्रवाचक] पाठक प्रव्यापक
(विदे १ ९२)।

पवायण न [प्रवाचन] प्रवचन प्रवचन
(सम्य ११०)।

पवायणा श्री [प्रवाचना] ऊपर बेको (विदे
२=१११)।

पवायह बेको पवायण (विदे १ ९२)।

पवाह पुन [प्रवाह] १ नवाहुट, क्रिचय
(पाय १४१ छाया १ १ गुवा १११)।
२ वृषा, विजुम (पाय कण)। ३ मत्त वन
वि [वह] प्रवाहना (छाया १ १;
मीन)।

पवाइअ वि [प्रपाति] जो पसने सवा हो
बह (उप ७२८ टी)।

पवास पु [प्रवास] विदेश-गमन परदेह-
यात्रा (गुवा ११०; हेका १०; सिदि १११)।

पवासि } वि [प्रवासिन्] प्रवासरि (पा
पवासु) १ पत्र; वि ११५ हे ४
१११)।

पवाह सक [प्र+वाह] बहना बहना।
पवाह (अभि)। अभि पवाहिति (विदे
२४१ टी)।

पवाह बेको पवह = प्रवाह (हे १ १८=८२;
कुमा छाया १ १४)।

पवाह दु [प्रवाच] प्रकट वृषा (विपा १
१—पत्र १)।

पवाहण न [प्रवाहन] १ बह पानी
(वाचन)। २ बहना बहल कपना (बिद्व
१२१)।

पवि पु [पवि] बह बह का घब-विशेष
(उप २११ टी गुवा ४१०; कुमा धर्मवि
८)।

पविवभिअ वि [प्रविजन्मिन्] प्रवृत्ति
समुत्पन्न (वा १११ प)।

पविआ श्री [दे] पवी का पल-वाह (हे १,
४ = १२; पाय)।

पविहण्य वि [प्रविदीर्ण] विपा हुआ (मीर)।

पविहण्य } वि [प्रविदीर्ण] १ व्याप्त
पविहण्य } (मीन छाया १ १ टी—पत्र
३)। २ विस्तार विस्तार (छाया १ १)।

पविहण्य सक [प्रवि + क] घात-स्वापा
करता। पविहण्य (सम ११)।

पविहण्य वि [प्रविहण्य] प्रवृत्ति से विक-
सित (पत्र)।

पविकिर सक [प्रवि + क] केंद्रना। वक
पविकिरमाण (अ ८)।

पविकिरअ वि [प्रवीक्षित] निर्दिष्ट
अवसर्गित (स ७४१)।

पविकिरण बेको पविकिर 'नापिकरुते व
यं पविकिरणं समुत्पन्न' (मुर ११
२ १)।

पविरय वि [दे] विवृत्त (पत्र)।

पविचरिय वि [प्रविचरिय] गमन-कारा सर्वत्र
गमन (पत्र)।

पञ्चम नि [प्रवृत्त] बड़ा हुआ विशेष हुआ
(१ १ १)।

पञ्चमि श्री [प्रवृत्ति] बड़ा (पञ्च ५, ११)।

पञ्च नि [मोक्ष] १ मो करने लगा हो,
जिसे मोक्षना प्राप्त किया हो वह (पञ्च
२० ११, १५ २१)। २ उक्त कवित
(मोक्ष ८२)।

पञ्च नि [दे] देको पञ्चम 'पञ्चम' पुर्ण वेत्तु
गाये पञ्चम (पञ्च २५, २१)।

पञ्च नि [प्रवृत्त] प्रवृत्त वे वाष्पयित
(पञ्च १२)।

पञ्च नि [प्रवृत्त] १ बारण किया हुआ
(१ ११)। २ निरुद्ध (पञ्च)।

पञ्च नि [प्रवेष्ट] १ निवेष्टित प्रति-
पत्ति 'पञ्च' सर्व निर्वर्तक न किन्ति
पञ्च (१ ५५ टी। पञ्च)। २ निवेष्टित
निवेष्ट (पञ्च)। ३ नैट किया हुआ (उप
११ ११, १५ ११)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित (पञ्च ३,
५५)।

पञ्च एक [प्र + वेद्यु] १ निवेष्टित
करना। २ नैट करना। ३ अनुमन करना।
पञ्च (पञ्च १ ५ २५)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] निप हुआ वेदा हुआ
(पञ्च १२, १ ५)।

पञ्च देको पञ्चः। पञ्चति (भाषा १ ८,
२ १२)। १ पञ्च (पञ्च)।

पञ्च नि [प्रवेष्ट] १ प्रवृत्त प्रतिपत्ति।
२ ज्ञान निवेष्ट। ३ अनुमन (पञ्च)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] प्रवसित (छाया
१ १—पञ्च ५५) उप २२, ११)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित (पञ्च
५५)।

पञ्च एक [प्र + वेद्यु] वृत्त। पञ्चति
(पञ्च)। पञ्चमति (पि ५६)।

पञ्च पु [प्रवेष्ट] मोत नी मृगता (उप ५
२—पञ्च २२२)।

पञ्च पु [प्रवेष्ट] १ नैट, वृत्त। (पञ्च
मन्त्र प्राप्ति २२)। २ नैट का एक
विस्तार (पञ्च)।

पञ्च पु [प्रवेष्ट] वसित (पञ्च)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वृत्त। पञ्च (उप)।
पञ्च पु [प्रवेष्ट] वीत का पुन (पञ्च ५)।
पञ्च पुन [प्रवेष्ट] १ वसित वीत (वीत
५८१) वी १२ गुण ५ ७)। २ वसित
वीत (गुण ५ ७ का २८)। ३ वृत्ति
वीत वसित वीत (उप ५—पञ्च १७,
गुण १)। ४ वसित वृत्ति वीत वृत्ति
वीत वसित वीत वीत

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वृत्त। पञ्च (उप)।

पञ्च पु [प्रवेष्ट] वीत का पुन (पञ्च ५)।

पञ्च पुन [प्रवेष्ट] १ वसित वीत (वीत
५८१) वी १२ गुण ५ ७)। २ वसित
वीत (गुण ५ ७ का २८)। ३ वृत्ति
वीत वसित वीत (उप ५—पञ्च १७,
गुण १)। ४ वसित वृत्ति वीत वृत्ति
वीत वसित वीत वीत

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पञ्च नि [प्रवेष्टित] वसित करनेवाला
(वीत)।

पसण्णा की [प्रसभा] मरिच बाक (खान्ना
१ १६) तिया १ २)।

पसत्त बि [प्रसत्त] १ बिपका हुमा (गठ
११)। २ घासत्त (गठ २११ जग)। ३
घासति-मत्त धमिति-मत्त के बीप से मुक्त
(विदे १२१६)।

पसत्ति की [प्रसत्ति] १ घासति धमिअन्त
(जग १११)। २ घासति-बीप (जग
११६)।

पसत्त बि [प्रसत्त] १ मरिचकीय, लताकीय।
२ मेल घण्टा (हे २ ४२) कुमा)।

पसत्ति की [प्रसत्ति] १ शोलाकीय बंध-
बर्तन (गठ ३२२)।

पसत्तु दु [प्रसत्तु] १ मेवाबायी मरिच
का प्रत्ययक (डा १ १)। २ बनी-खक
का पत्रक (डा १ १ बीर)। ३ मली
प्रनाय (पुष २१ ११)।

पसन्न केओ पसण्णा (महत्त नकि पुष
११४)।

पसन्ना केओ पसण्णा (पाम; पक १ २,
१२२ बुध २ २१)।

पसत्त दु [प्रसत्त] विस्तार, फैलाव (अम्य
१ १)।

पसत्तया बि [प्रसत्तया] १ प्रसर्प के कान्ने-
बाला दुपाकिरी करनेवाला। २ विस्तार को
मान्य करनेवाला (अ ४ ४—पम २६४)।

पसम सक [प्र+साम्] प्रसन्नी तरह प्रसन्न
होना। प्रसन्नति (बाक १६)।

पसम दु [प्रसम] १ प्रसन्नति शापित (कुमा)।
२ लज्जितार बी जन्मास (धोका २८)।

पसम दु [प्रसम] किरण मरिच—केव (घाव
४)।

पसमन्नन [प्रसमन्न] १ प्रसन्न रूपन (गिह
१११, मुर १ २४२)। २ बि प्रसाद करने-
वाला (व ११४)। की पी (कुमा)।

पसमाबिअ बि [प्रसामित] प्रसाद किया
हुमा (व १२)।

पसमिअल सक [प्रसम्+इअ] प्रसर्प
से बेचना। उअ पसमिअल (अव १४
११)।

पसमिअ बि [प्रसमिअ] प्रसाद करनेवाला,
गाद करनेवाला 'पामिअ, पावपमिअ पाव
मिअ पुह पामिअ' (अमि १७)।

पसम्म केओ पसम = प्र + सम्। पसम्मह
(पठ)। सक पसम्मत्त (व १ २२
गठ)।

पसय दु [वे] १ मुग-मिरोप (वे १, ४ पण्ड
१ १) नकि सऊ महु)। २ मुग-मिमु
(विपा १ ४)।

पसय बि [प्रसुत्त] फैला हुमा 'पसयमिअ'
(बका ११२ १४४)। केओ पसिअ =
प्रसत्त।

पसर सक [प्र+स] फैलना। पसर (पि
४७७, नकि)। सक-पसरत्त (मुर १ २६
नकि)।

पसर दु [प्रसर] विस्तार, फैलाव (हे ४
११७) कुमा)।

पसरण न [प्रसरण] ऊपर केओ (अम्य)।

पसरिअ बि [प्रसुत्त] फैला हुमा विस्तार
(बीप का ४) नकि शाया १ १)।

पसरेह दु [वे] फिअक (वे १ ११)।

पससिअ बि [वे] त्रेरिअ (पठ)।

पसस सक [प्र+स] कान्ने बेना करवा
करना। पससह (हे ४ २११)। पससति
(जग)। सक पससमाय (पुष ४१४)।

पसस (अप) सक [प्र+सि] प्रसार करना।
पससह (आठ ११६)।

पसस दु [प्रसस] १ कान्ने करवाति (कुमा)।
२ न पुण, कुमा 'मुमुम पसस पसस न'
(पाम) 'मुमुमिअ व मुमुमिअ व मुमुमिअ
वहेन हौत्त पससमिअ' (अमि १ ४६)।

पसस [वे] केओ पसय। 'पसस हसिअ एए'
(पम ११ ७७)। 'नाह दु [नाप] मुग-
राम सिह (व ११७)। राम दु [पज]
सिह (व ११७)।

पससअअ न [वे] फिलोअन (वे १ १)।

पससअन न [प्रससन] प्रसुति, कान्ने बनना
(अम्य अ ४४४ मुर १, २४८)।

पससि बि [प्रससिअ] कान्ने बेनेवाला (नाट—
रकु ७४)।

पससिय बि [प्रसुत्त] बी कान्ने बेने करा हो
विअने कान्ने किया हो बाह 'उमयेन पससिया

ह महुकिसेण नरनाह' (मुर १ २१;
पुषा १६)। केओ पसुअ = प्रसुत्त।

पससिय बि [प्रससिअ] कान्ने बेनेवाला
(नाट)।

पसस केओ पसस।

पसस बि [प्रसस] प्रसुत्त कान्नेवाला (पुषा
४४४)।

पसाइअ बि [प्रसाइव] १ प्रसव किया
हुमा (व १८६ ५७१)। २ प्रसव होने के
कारण किया हुमा 'अंगविअगमसअ पसाइअ'
कडयल्लाह' (मुर १ १६१)।

पसाइमा की [वे] कित्त के डिर वर का
करी-मुट, कित्त की पमरी (वे १, २)।

पसाइअअ केओ पसाय = प्र + सान्।

पसाम बि [प्रसाम] शाव होनेवाला (पठ)।

पसाच सक [प्र + सान्] प्रसन्न करना
मुग करना। पससति पसाचि (पा ६१
सिअ ११)। सक पसाअमाय (पा
७४२)। हेह पसाइअ पसाइअ (महु
पा १२४)। पसाइअअ (पुषा १६१)।

पसाय दु [प्रसाइ] १ प्रसव प्रसन्नता
कुरी 'अणमणपसयअअओ' (बहु)। २
हुमा, मेहुराजी (कुमा)। ३ प्रणय (पा
७१)।

पसायन न [प्रसायन] प्रसन्न करना, 'केव
पसायनपससअअओ' (जग ३, पुषा ७ महु)।

पसार सक [प्र + सार] स्वारण, फैलना।
पसारेह (महु)। सक पसारमाय (शाया
१ १)। पाओ)। सक पसारिअ (नाट—
मुण्ड २२१)।

पसार दु [प्रसार] विस्तार, फैलाव (अम्य)।

पसारण न [प्रसारण] ऊपर केओ (पुषा
३८१)।

पसारिअ बि [प्रसारिअ] १ फैलाया हुमा
(अण गठ—वेणी २१)। २ न प्रसारण
(अम्य १११ व ४ १)।

पसास सक [प्र+सास] १ शासन
करना, हुपस करना। २ ठिका देना। ३
पतन करना। सक 'रज्ज पसासेमागे
विअर' (शाया १ १ टी—पम १)।
१४—पम २८६ बीर महु)।

पसाह एक [प्र + साधय] १ बस में करना । २ सिद्ध करना । पसाह (गठ-बहि) । बड़ पसाहमाज (वीर) ।

पसाहरा वि [प्रसाध] साधक, सिद्ध करनेवाला (बर्ग २१) । उस वि [उम] १ जड़त साधक । २ ब. ब्याकरत-प्रसिद्ध कारक-मिथेय कण्ड-भारत (मिथे २११२) । कैो पसाहय ।

पसाहय न [प्रसाधन] १ सिद्ध करना, छावना विन्यायसाहपुरबविन्याहार संनिधनलो (धुर १ १२) । २ जड़त साधक 'समुत्तन मारचरत दुलाई पवचतुई पचकई केमसावत न निरंरिं बने' (ध ७४४) । ३ कलंकर, बुबल (साम्य १ ३) दे ३ ४४) । ४ बुबल मारि की छावाकट मुसलपसमणालेयि (बर्ग ११४ सुपा ११) ।

पसाहय कैो पसाहरा (काव) । २ सजाते-नावा (धन ११ ११) ।

पसाहा की [प्रसाह] राधा की राधा, कैदी राधा (राधा १) । वीर य्हा) ।

पसाहायि वि [प्रसाधित] विनियत करना पना कनवाया हुआ (पवि) ।

पसाहि वि [प्रसाधिन] सिद्ध करनेवाला 'मन्मथनस्योपि' (सर्वोप ८ २४) ।

पसाहिक वि [प्रसाधित] धर्मद्वय किम हुआ, सवाय हुआ (वि ४ ११; पाव) ।

पसाहिक वि [प्रसाधित] प्रशासन-बुल (धुर ३ १) ।

पसिध एक [प्र + सध] प्रदान होना । पसिध (वा १ ४ ४१३) दे १ १ १) ।

पसिधर (सठ) । सड़-पसिठय पसिठय (परा सुपा ७) ।

पसिध वि [प्रसूत] देना हुआ पसिठय नसिधायि । (वा २१ १२१) ।

पसिध ब [वि] प्रसन्न हुआ (वि १ १) ।

पसिध एक [प्र + सिध] देन करना । बड़-पसिधमाय (धुर १२ १०१) ।

पसिधि (वि) कैो पसिधि (पाव) ।

पसिधनय वि [प्रसिद्ध] दीकनवा (वा ११२ ध) ।

पसिधन न [प्रसूत] प्रदान होना 'धर-कमलें बहपसिधय' धनिधनप्रसिधयों (वा १०२) ।

पसिधिक कैो पसिधिक (दे १ ३४) वा १११ बड़) ।

पसिध भु [प्रसूत] १ दुष्क प्रदान (धुरा ११ ४११) । २ बर्ग मारि में देना का साहाय, मन्मथि-मिथेय (धन १२१) दृष्ट १) । 'विद्या की [विद्या] मन्मथि-मिथेय (ध १) । पसिध न [प्रसूत] मन्मथि के बस में देन यावि में देना के साहाय हाव बना हुआ मुकमुन पन का कन (पव २) दृष्ट १) ।

पसिधिय वि [प्रसिध] दुष्क हुआ (धुरा ११ १२१) ।

पसिध वि [प्रसिध] १ विन्याय विनृत (महा) । २ प्रपय वि मुक्ति की प्राप्त दुष्क (मिथि २११) ।

पसिधि की [प्रसिध] १ क्वावि (दे १ ४४) । २ संभ का धयावत धावेर का पहिरा (सुपु विम ४१) ।

पसिध कैो पसीम (मिथे १४) ।

पसीम कैो पसिध = प्र + सध । पसीम, पसीमर (धुर १) । सड़ पसीमय (सठ) ।

पसीम दु [प्रसिध] विम का विम (पव ४ ३१) ।

पसु दु [पसु] १ कण्ड-मिथेय वीय वृकला प्रसी कण्माय माधि-मात्र (कुमा वीर) । २ एक, ककर (धुरा) । मय वि [मय] पसु-कुम (धुर १ ४ १) । 'मिह दु [मिह] विमय पसु का धोय विवा कला ही नह का (पव ११ ११) । नह दु [पसि] म्हावि मिय (वा १) सुपा ११) ।

पसु वि [प्रसूत] रोपा हुआ (दे १ ४४) प्राय काया १ ११) ।

पसुति की [प्रसूति] १ प्रदान देन विम न्याय-विचारण होने पर भी धयेवना (धन) । कैो पसुह ।

पसु (पव) कैो पसु (पवि) ।

पसुहय दु [वि] कृम पद (दे १, ११) ।

पसु एक [प्र + सू] कन देना प्रदान करना । बह. पसुप्रमाय (वा १२१) । बड़-पसु (धन) ।

पसु वि [प्रसू] प्रदान-करी कन-कला (मिथे ११) ।

पसुध न [वि] पुन कुन (दे १, १, पाव) य्हा) ।

पसुध वि [प्रसूध] १ कण्माय को पस हुआ ही (काया १ ७) पव प्राप् १११) । २ कैो पसविज (पव) ।

पसुधय व [प्रसूत] कन-दान (धुरा ४ १) ।

पसुध की [प्रसूति] १ प्रदान कन, जपटी (पव २१ १४) प्राप् १२१) । २ एक प्रकार का दुष्ट रोग न्यायि विचारण करने पर भी दुष्क का पसविज, पसीम का पव बना (वि १) । 'रोमा दु [रोमा] रोम-विम (धन्य २४) ।

पसुधय दु [प्रसूति] कलरय-मिथेय (मिथि १११) ।

पसुध न [प्रसूत] कृम पुन (कुमा बड़) ।

पसेक दु [प्रसेक] पसीम (दे १ १) ।

पसेडि की [प्रमेयि] धयावर वीह—पवि (वि ११; पव) ।

पसेय दु [प्रसेत] कन्या पवर्तन के कन्य कन्य का नाम (विचार १०३) ।

पसेय दु [प्रसेनजित] १ कुल-कुल-मिथेय (पव १ १२, धन ११) । २ मुकल के पना कन्यकमिथेय का एक पुन (धन १) ।

पसेयि की [प्रमेयि] धयावर वीह 'धयावरविमयलोपी सौमि' (काया १ १—पव १०३) ।

पसेया कैो पसेय (धन) ।

पसेय एक [प्र + सेय] विम देना करना । बड़ पसेयमाय (धुर २१) ।

पसेयय दु [प्रसेयक] कन्या, कैवा प्यावि कन्यकमिथेय वीह वीह विम वस वसय (का) ।

पसेविजा की [प्रसेविज] कैो, कन्या (दे १, २१) ।

पस्त सक [हर] देवता। पस्तह (पह
प्राह ७१)। बह पस्तमाज (पावक पीरा
बहु, विपा १ १)। ह पस्त (हा ४ १)।
पस्त (ही) देवो पास = पस्त (धमि १८३
मवि २६ स्वज ३६)।

पस्त देवो पस्त = हर।

पस्तओहर वि [परयोहर] देवो ह्य
कोटि करेयाहा, सुनाए, सखा "अबु पसो
पस्तमोहो देवो" (उप ७२८ टी)।

पस्ति वि [द्वितीय] देवनेता (पण १)।

पस्तेय देवो पसेय (मुक २ ८)।

पह वि [प्रह] १ मत्र। २ विनीत। ३
बावक (प्राह २४)।

पह पु [पयिन्] मार्ग पाला (हे १ ८८)
माम कुमा या २८८ विसे १०३२, कण
मीन। "वेसय वि [वेराक] मार्ग-मार्क
(पठन १८ १०)।

पहपह पु [वि] मयुज पुमा बाव-विरोध (वि
१, १८)।

पहकर देवो पमकर (उप २३ ७९ गुह
२३ ७३ इक)।

पहकरा देवो पमकरा (इक)।

पहजण पु [मनजन] १ बाहु, पवन (पाव)।
२ हे-आदि-विरोध मननवि देवो की एक
मरान्तर वावि (मुना ४)। ३ एक राजा
(मवि)।

पहकर [वि] देवो पहयर (छामा १ १)
बन्ध पीरा कप ४ ४० विपा १ १ राजा
म १३)।

पहटु वि [वि] १ हात छवट (वि १ २)
विपा १ २ धर्मतर हट, कोरे ही समय के
पूर्व देवा हुना (पह)।

पहटु वि [महट] मायिन्त हर्ष-प्राय
(पीन म)।

पहण सक [प्र + हन्] मार बासना।
पहण पहणे (महा उप १८ ४६)।
कर्म पहणज (महा)। बह पहणत
(पठन १ २ १५)। कर्म पहमंत,
पहममाण (वि ३४)। मुर १ १४)।
हेर पहणित पहणे (मुय २३ महा)।
पहण न [वि] हुन मंत्र (वि १ २)।

पहणि की [वि] संयुक्त का निरोध सामने
बाए ह्य का मरकाय (वि १ ५)।

पहणिय देवो पहय = प्रहय (मुना ४)।

पहय पु [प्रहय] पणय का मामा (वि
१२ ३३)।

पहय वि [वि] सवा हट (वि १ १)।

पहम्म सक [प्र + हम्म] प्रहय से मति
करना। पहम्मह (वि ४ २६२)।

पहम्म न [वि] १ मुर-काट के-मुएह (वि
१ ११)। २ काट-काट मुएह। ३ विवर,
छिन्न (वि २, ४१)।

पहम्मंत
पहम्ममाण } देवो पहण-प्र + हन्।

पहय वि [प्रह] १ बट, पिटा हुना (वि
१ ३८)। २ मार कावा मया,
मिहय (महा)।

पहय वि [प्रह] जिस पर प्रहार किया गया
ही बह "पहय मविमिपयसे" (महा)।
पहय वि [वि] निकर, समुह, गुह (वि ३
१३, मय १३ पाव)।

पहय सक [प्र + ह] प्रहार करना। पहय
(महा)। बह, पहय (महा)। संक, पहयिन्
(महा)। हेर, पहयित (महा)।

पहय पु [प्रहार] १ मार, प्रहार (वि १ ९८
यह प्राय संति २)। २ महा पर प्रहार
किया ही बह स्वाय (से २ ४)।

पहय पु [प्रहार] पीन की का समय (वा २८
११ पाव)।

पहयण न [महयण] १ बह मायुज (बावा
पीन विपा १ १ गज)। २ प्रहार-क्रिया
(से ३ १८)।

पहयण्य देवो पहयण्य (पण १—पव
१४)।

पहयण पु [प्रमराय] नयनेन का छटका
प्रतिप्राय (सय १३४)।

पहयि वि [प्रहय] १ प्रहार करने के लिए
उपय (उप १ २६)। २ मिन पर प्रहार
किया गया हो बह (मवि)।

पहयि पु [प्रहय] बाक्य, गुणो "पायोमो
पहयि पीपी" (पाव मुर १ ४)।

पहयविद (ही) वि [प्रहयविद] बायिन्त
(स्वज १ १)।

पहय सक [पू] हुमना कमाना जोनय,
हिनता। पहय (वि ४ ११० पव)।
बह पहयित (मुर १ १६)।

पहयि वि [प्रययि] नयनेनता जोनता
(कुमा गुना २ ४)।

पहय सक [प्र + म] १ उपय होना। २
समर्थ होना। पहय (पवा १ ८ ७
संति ३६)। मवि पहयिन् (वि ३-१)।

बह पहयित (माट—मामवि ७२) १—

पहय पु [प्रमय] कपति-स्वाय (मवि ४१)।

पहय देवो पहय = प्रमय (स ११७)।

पहय देवो पहय = प्रहय (विसे १ ८)।

पहय पु [प्रमय] एक पैन मवि (कुमा)।

पहयि वि [प्रमय] को समर्थ हुना हो
"मविमुमतायुमाया संति नो पहयिन् मविस्व"
(गुना ११३)।

पहय सक [प्र + हस्] १ हुना। २
उपय करना। पहय (मवि सण)। बह
पहयत (सण)।

पहमय न [प्रहसन] १ उपय, उपय।
२ मारक का एक केह हाव-वत प्रयान
माटक काक-विरोध "पहयउपाय कयमय
बयण" (स ७१९ १७४, हस् ११६)।
पहयि वि [प्रहसित] १ को हसने बया
हो (मवि)। २ मरका उपय करना हो बह
(मवि)। ३ न हाव (हह १)। ४ पु
पयनय का एक विधान-विध (पठन
१३ ३६)।

पहा सक [प्र + हा] १ त्याग करना। २ सक,
कम होना पीण होना "पहेन मोह" (उप
४ १२३ वि ३६६)। बह पहियमाय,
पहयमाय (पव पठन)। संक, पहय
पहियण (बावा १ ६ १ १ १४ ३)।

पहा की [प्रवा] १ पीठ व्यवहार। २
क्यापि प्रविधि (बह)।

पहा की [प्रवा] कानि तेन पावोक पीति
(पीन पावा मुर २ २१४ गुना केय
३४४)। मरह देवो भागवत (पठन १
३६)। पव पु [कर] १ नृत्य पवि। २
पयनय के मरि मय व साव पीता केनेना
एक पयवि (पठन ४३, ४३)। बह पी

["पहा"] घाटों बागुने की चण्णी (पउम २ १८७)।

पहाय सक [प्र + भायम्] इकर उभर
झाना बुझाना। पहासि (मुदति ७ टी)।
पहास नि [प्रधान] १ नामक कुबिया
मुन्ना 'पहायमर' धरति हु मुन्नामरुति'
(मुना १ ८) 'उत्तमि बलिपहाला केन्ना
बेममलनामयो (मुना ११७)। २ उत्तम
मराल येथ सोमन (सुर १ ४७) पहा
मुना पहा १ (१२)। ३ बीच. प्रवि—
उपर उर बीर उबीरुल की साम्यावस्था
'ईमगुल बडे बीर पहाला' पहारे' (सुस
१ १, १ १)। ४ मुं नविन मली (अधि)।

पहाय मुं [पायम्] पकार (बउपम)।

पहाय न [पहाय] पकाय विमल (बर्त
८७१)।

पहाय धी [प्रहायि] झरर देवी (उप १
७ उर १८१ टी)।

पहाय नर [प्र + भायम्] टिपला, बुझाना।
नर पहासिजल (मि ७ ११)।

पहाय केनी पहा = प्र + हा।

पहाय न [प्रमान] १ प्रायः जान मनेर
(पउम मुना १६ १ २)। २ नि बजा
मुक (मि २ ४८)।

पहाय केनी पहाय = प्रहार (हे ४ १४१।
हाम ११२ अधि)।

पहाय केनी बाहाया (मुन्ना)।

पहाय नर [प्र + भायम्] १ विमल करना
निकार करना २ निवत करना। मुन्ना
पहाय, पहाय, पहायि (मुम १७
१६ पोर नि ११७ मुम १ १ १)।
नर पहायमान (मुम २ ४ ४)।

पहाय केनी पहाय = प्रहार (पहा १ १)।

पहायनया की [प्रहायिना] लिखिकेन
(मम ११)।

पहायि नि [प्रहायि] झरर कनेलाता
(मुना ११२ भाग २)।

पहायि नि [प्रहायि] झरर नर झरर निज
बस हो न (म ११)।

पहायि नि [प्रहायि] लिखित लिखित
(पम)।

पहाययु कि [प्रहायि] लिखित करनेवाला
'पहाय्यी' छलुबनेति नर पहायता मयति'
(मम १ १)।

पहाय सक [प्र + भायम्] प्रयाय-मुक
बला सीरित करना। पहाय (उप)।
उर पहायिऊल (उप)।

पहाय (धर) सक [प्र + मू] समर्थ होना।
पहाय (अधि)।

पहाय मुं [प्रभाय] १ उक्ति, सामर्थ्य। मुं
न केनिमुपल पहाय' (छाया १ १४
अधि १)। २ पहा बीर बल का होना।
३ मद्राज्य 'ठाकाहाय की केर मे अधिब
अविस्तर ति' (उ २६ पउम)।

पहायनया केनी प्रभायन (मुम २८४)।

पहायि नि [प्रभायि] लीक हुना (उ
१७४ या ११३ पउम)।

पहायि नि [प्रभायि] लीकनेवाला (बना
१२ उर २ २)।

पहाय सक [प्र + भाय्] बोलना। पहाय
(मुम ४ १), 'भाऊल मुनि' तं पहायिपना
पहायि भावा' (बहा)।

पहाय सक [प्र + भाय्] बयवना
महायना। नर पहासि (धर ११)।

पहाय मुं [प्रहाय] मद्राज्य बायि विरैय
हाय (मम १ ११)।

पहाय की [प्रहाय] बैरी-विरोध (बहा)।

पहाय नि [पाय पयिक] मुपायि (हे १
१२२ मुना बह का बह)। छाया
की [पाय] मुपायिना बर्तमान
(अधि ७ मरा)।

पहाय नि [प्रभिय] १ विगुन। २ अभि
विमल (पीर)। ३ पहाय-बीर नर एक
पहा एक लीक-नति (पउम ३: २६२)।

पहाय नि [प्रभिय] बेजा हुना त्रैवित (उ
१ ४२ ७९७ टी, मम १ टी)।

पहाय नि [प्रभिय] विरोध (हे १ १)।

पहाय केनी पहा = प्र + हा।

पहाय नि [प्रभिय] लिख करेलाता
(पीर ७२१)।

पहायनया केनी पहा = प्र + हा।

पहाय केनी पहाय = प्रहार (पीर मुर १
२४८, मुना ११ ४१७)।

पहाय सक [प्र + भा] पहाय, पहाय।
पहाय, पहायि (मि बर्त ७)। कने
पहायि (सोब १४)। नर. पहायि
(मि १८)। उर पहायि (अधि ११)।
प्रयो. उर पहायिऊल पहायिऊल
(मि ४२१ ७७)।

पहायनया न [प्रभायन] १ पहायन। २
पहायन. नैत में—हाम में दिवा बजा
बजायि हुपली में—'पहायनली' (या २८४)
पहाययि नि [प्रभायि] पहायन हुना
(महा अधि)।

पहायि नि [प्रभिय] पहाय हुना पहा
हुना (मम २ १७)।

पहाय नि [प्र] बहा प्रम (उर ४७
अधि १४१)। की की (मि ४२६)।

पहाय सक [प्र] पहाय नला मने बला।
पहाय (मि)। उर पहायि (मि)।

पहायि नि [प्रभायि] मुन्ना हिलनेवाला
ममल विमल (मम २ ८७)।

पहाय केनी मुदी = प्रवि (मा)।

पहाय नि [प्रहाय] १ पहाय (मि १११
मम)। २ पहाय (मुम २ १ १)।

पहा मुं [प्रमु] १ परमेश्वर, परमात्मा (मुम)।
२ एक उर-मुन्ना बयुर के किमपन न
एक मुन्ना (बहा)। ३ लानी मलिक (मुर
४ १११)। ४ मि समर्थ उरमना 'पहा
विमल पहाय ली' (भाग ४७)। ५ अधि-
नति मुधिया नायक (हे १ १)।

पहाय केनी पहाय (मम)।

पहाय केनी पहाय (मम)।

पहाय मुं [प्रमु] पाय नयि विमल विमल
(हे १ ४२)।

पहाय सक [प्र + मू] बर्तना। पहाय
(हे ४ ११)। नर पहायमान (पीर
१ ४)।

पहाय केनी पहाय (मम)।

पहाय केनी पहाय (हे १ १११ टी १
४२)।

पहाय मुं [प्रभाय] अधि ममल (भा
१ १)।

पदुमाय न [प्रापुण] घातिथ घातिथि
हरार 'नहाणमैरुपलवाहरुपलवाहणमु
णारि (१२) संपादे' (रंभा)।

पदुत वि [प्रभूत] १ पर्याप्त काको नभर्त
न पदुत (पाप यद्वं वा २००)। २
समर्प (मि २ ६)। ३ पदुता हृषा (ती
१२)।

पदुवि देवा पमिह (धर्म ५ प्राक १२)।
पदुप १ घट [प्र + भू] १ संयक्त होना
पदुप १ घटना। २ पदुपना। पदुपाह (हि
४ ६१ प्राक १२) एपायो वानियायी निप-
नियेमुपु वह पदुपति यह दुपुह (पुपा
२२)। पदुपामी (कात) पदुपिरे (हि ३
१४२)। बह 'कि छह कोपि कम्पनि पाप
महार पदुपयो पदुपमामि (पा ७ घोष
२४ ३ विरट १४)। कवक पदुपव्येत (वि
१४ २२ व १)। हेह पदुपिरे
(महा)।

पदुपी की [पुचिपी] सुनि बरती (भाट—
मालती ७२)। 'पदु दु [प्रभू] पना
(हम्मीर १७)। वर पुं [पति] गी धर्म
(हम्मीर १७)।

पदुप्येत देवी पदुप।

पदुम वि [प्रभूत] १ बहुत प्रभुर (व
४२६)। २ ज्यन। ३ मुन। ४ ज्यन
(प्राक १२)।

पदुजमान देवी पदु = प्र + हा।

पदुन न [वि] ननु की के बने पर रिता के
वर ही बानी बनीन (भापा २ १ ४ १)।

पदेन [न [वि] १ योगनोमान काय
पदुनग बहुत ही सेंट (भापा मुप २ १
पदुनग) २६ वा १२०६ ३ रिट ११३३
पाप १६ ७१)। २ लपल (वि ३ ७६)।

पदेरक न [पदेरक] धामरल-विशेष (गह
२, ४—पत्र १४६)।

पदेरिया की [पदेरिया] हाथ बाधवाली
बसिता (मुपा १२३३ दीर)।

पदोम सक [प्र + पाव] प्रसन्न करना
होना। पदोमन (भापा १ २ १ ११)।

पदोह वि [प्रभावित] कोलपना (वद ४
२९)।

पदोहज वि [वि] १ प्रसन्नित। २ प्रभुन
(वि ३ २९)।

पदोह सक [वि + लुल] हिलोना धनो
बना। पदोह (भापा १ ४४)।

पदोपय कीन [प्रपावन] प्रसन्नन दंतपदो
मण य (वद ३ १)।

पदोहिर वि [प्रभुगिर] हिलनेवाला जोलता
(वा ७५ १११ से ३ ४१ पाव)।

पदोह देवी पदोह। पदोहहि (भापा २ १
६ १)।

पा सक [पा] सोना, पान करण। यधि
वाहिहि पाहामि पाहामो (कप वि ३१६,
कप)। कने, निमर (उप) पोमि (मि
२१६)। कवक पिज्ज (गवक कुप १२)।

पीयमाय (व १०२) पेट (परा) वण।
सक पाउन पाऊण पाऊण (भाट—मुपा १६
गवक कुप १२)। हेह पाठ पापय (भापा)।

ह. पापक पिज्ज (मुपा ४१५ पण १
२ मुना २ ६) पम पवण (मुपा
४७७ १) पंज (भापा १ १ १०
उवा)।

पा सक [पा] रखण करना। पाह, पायह
(विसे ३ २३, हे ४ २४) पाठ (वि)।

पा सक [पा] सूचना गल देना। पाह
पायह (भापा २ २)।

पाह वि [पादिम] विनेवाला (वंभा ३
२)।

पाह वि [पादिम] पीनेवाला (वा २६७
हि ६)।

पाहज न [वि] बक-विस्तार, दुहेवा किआव
(वि ३ १६)।

पाहज देवी पागय = प्रहय (वि १ ४० प्राक-
वा प्रासु १) नना = पाय वि २६)। 'पह
पाहयो माधामो' (मुपा १ १)।

पाहज वि [पायिह] रितावा हृषा पान
करणा हृषा (मुप ७७ मुपा १६ व
४४४)।

पाहज देवी पाव = पापम्।

पाहज पुं [पायिह] प्यासा पैर से कलनेवाला
दील (हि २ ११५, मुपा)।

पाहज की [पायिह] प्रावरण नक (पा
२१५)।

पाहज देवी पाईण (मि २१२ टि)।
पाहजा (पप) की [पमिना] स्रन-विशेष
(मि)।

पाहज [री] वि [पाविज] पदनामा हृषा
(भाट—पत्र १२९)।

पाहज देवी पाहज (एति ४६)।

पाहज न [प्राविम] प्रतिभा बुद्धि-विशेष (कुप
१२२)।

पाहज वि [पाव्य] १ पकने योग्य। २
कात-प्राप्त मुन (वद ७ २२)।

पाहज वि [पाव्य] पिपन योग्य (भापा २,
४ २ ७)।

पाह की [पात्री] १ भाजन-विशेष (भापा १
१ टी)। २ छोटा पात्र (मुप २, २ ७)।

पाहज वि [प्रधान] १ पूर्वास्था-संभवो
'बनहार-पाहज' (१ रिणार) (मि ३ १६,
कप) सप १ ४)। २ न योग-विशेष। ३

सुधी जव योग में जपल 'येर मगमह
बाहु पाहिसकोसे (कप)।

पाईणा की [प्रावीणा] पूर्ण रिता (मुप २
२ २० व १—पत्र १२६)।

पाह देवी पाई = प्रापु (मुप २ ६ ११
उवा)।

पाह पुं [पायु] मुप पंज (वा १—पत्र
४२ पण)।

पाह पुं की [वि] १ मक, मय, मोजन। २
हृष, कव (वि ३ ७२)।

पाउम न [वि] १ विप प्रवरवाय (वि ३
१८)। २ मक। ३ हृष (वि ३ ७२)।

पाहज देवी पाउह = प्रापु (वा २२ व
१२ कीन नुर ६, ८) पाप है १
१११)।

पाहज देवी पागय (वा २, ११८) भापा
कप, विप)।

पाउमा की [पावुका] १ बार्ड कल न
हृषा (पप मुप २ २६ रि २७२)। २
हृषा पपली (मुपा २१४ दीर)।

पाह देवी पा = पा।

पाई म [प्रापु] प्रकट व्यक्त 'जति
जति बरिस्तानि पाई' (मुप १ १ १
१)।

पाअ यगमण न [पाओयगमन] अणयण-
विशेअ मणअ विरोय (अम ११३) औय कय
मम)।

पाओयगय वि [पाओयगय] अणयण विरोय
से मय (औय कय अंत)।

पाओस पुं [वि] प्रदेय) मयअ, वेय (अ ४
४—अम २०)।

पाओसिय रेओ पाओसिय (अम ११२)।

पाओसिया रेओ पाओसिया (अम १)।

पांडकिम वि [वि] अणयण पाणी से पीया
(११२)।

पांडु रेओ पंडु (अम २४७)। सुअ पुं
[सुअ] अणयण का एक मय (अ ४
४—अम २०३)।

पाक रेओ पाग (अम)।

पाकम न [पाकाम्भ] औय की मय अणयणों
में एक अणयण 'पाकाम्भ' अणयण अणयण
औय अणयण अणयण अणयण (अम २०७)।

पाकार पुं [पाकार] अणयण अणयण (अम २०७)।

पाकि (औ) रेओ पागय (अम २०७) मय—
रेओ वि ११२)।

पाकेअ रेओ पाकेअ (वि ११३)।

पाग पुं [पाक] १ अणयण अणयण (औय अणयण
अणयण १०४)। २ अणयण-विरोय (अम १)। ३
विपाक अणयण (अम ११३)। ४
अणयण अणयण (अम १)। साअय पुं
[साअय] अणयण, अणयण-विरोय (अ ४ २१३,
अम १२२)। साअणी औ [साअणी]
अणयण-विपा (अम २२२)।

पागइअ वि [पागइअ] १ अणयण अणयण।
२ पुं अणयण अणयण अणयण (अम ११३)।

पागइ अण [अ+अणयण] अणयण अणयण,
अणयण अणयण अणयण अणयण (अ ४ ४—अम १०३)।

पागइ वि [अणयण] अणयण, अणयण (अम ११३,
अम १०३)।

पागइअ न [अणयण] १ अणयण अणयण। २
वि अणयण अणयण (अम १)।

पागइअ वि [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ वि [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पागइअ न [अणयण] अणयण अणयण (अम १)
(अम १)।

पाठाविभ वि [पाठिन्] सम्पादित (प्राक् ११)।

पाठाविभवंत वि [पाठिवन्त] विद्यते पद्या हो मह (प्राक् ११)।

पाठाविभ } वि [पाठिविभ] पदलभावा
पाठाविभ } (प्राक् ११; १)।

पाठिविभ वि [पाठिवि] पद्यावा ह्यम्पादित (प्राक् १)।

पाठिविभवंत वि [पाठिविभवंत] (प्राक् ११)।

पाठिविभो [पाठिवि] पदनेवामी की (कण्)।

पाठिवि } वि [पाठिविभ] सम्पादक पद्याने-
पाठिवि } वाता (प्राक् ११)।

पाठीयं पुं [पाठीन्] सम्पादितेय 'पाठिया'
मन्त्री मन्त्र की एक वाति (मा ४११ विक १२)।

पाठोत्तमास पुं [पुथगासरी] बाधने द्य-
व्यं का एक म्पा (एति २११)।

पाथ सक [प्र + आनय्] निजला। बहु-
पाथप्रत (मह-पाठो २)।

पाथ पुं [वि] एतत् क्यशास (वि १ १०)
एत पुं १२५ महा पाथ हा ४ ४ व
१) की गा (मुक् १ १ महा)। 'उठी
की [कुटी] बाधशास की मंसरी (गा
२२७)। विजवा की [बनिदा] बाधशास
(वि ७११ टी)। 'हंघर पुं [हंघर]
मन्त्र-विद्येय (वच ७)। 'हिविष पुं [वि-
पति] बाधशास-नायक (महा)।

पाथ न [पाथ] १ पीना पीने की क्रिया (पुर
१ १)। २ पीने की चीज पाथी पाथि
(मुक् २ टी पति महा पाथा)। ३ पुं
कुम्भ-विद्येय 'कुम्भपाथ' मन्त्र-पाथ-
मन्त्रि-पाथी व (पण् १)। पथ न [पाथ]
पीने का मोहन प्यासा (वि) गमन न
[गमन] मन्त्र-गम (पाथ १ २ महा)।
'हारा पुं [हारा] एतत्पत्त (संकीर्ण
१०)।

पाथ पुं [पाथ] १ पीने के पाथार-भुत के
एत पाथी-पाथी-पाथी, मन्त्र, वचन और
गरीर का वचन उम्पात्त तथा नि-पाथ (की
२१ मण् १ महा हा १ १)। २ मन्त्र-
पाथी-पाथी, उम्पात्त-नि पाथ-पाथी-
पाथ (एत मण्)। ३ वचन, पाथी पीने

'वसुधाविषे विविहृति यथा' (मुप १ ७
११ हा १ पाथा कण्)। ४ पीने-
पीने (मुप २११; २११ कण्)। इय
वि [वन्] प्राधुन्यता प्राणी (वि १ १)।

व्य पुं [व्य] प्राधुन्यता (मुप २१२)
१२१) वाय पुं [व्याग] मण् १ मीत
(मुप ४ १०)। आश्व वि [वाचित]
प्राणी पीने वचन (पाथा १ १ १)।

माह पुं [माह] प्राधुन्यता पति स्वामी
(रंभा)। 'प्यया की [प्यया] की पली
(मुप १ १ २)। बह पुं [वच] विना
(पण् १ १)। विविहृति की [विविहृति]
वचन-विषय (महा)। सम पुं [सम]
पति स्वामी (पाथ)। सुमुक् न [सुम्भ]
सुम्भ वचन (वच)। 'हिय वि [हिय]
प्राधुन्यता (रंभा)। 'हिय वि [वन्]
प्राधुन्यता प्राणी (प्राध)। 'इवाहवा की
[विपातिनी] विना-विषयेय विना से होने-
वला कर्म-वचन (मन् १०)। 'इवाय पुं
[विपाति] विना (उवा)। 'उउ पुं
[विपु] सम्पादित विषयेय बाधवा पुं (वच
२२ २१)। 'पाथ पाथ पुं [पाथ]
उम्पात्त और नि-वचन (वच १ १ १)
१०)। 'पाथ पुं [पाथ] वचन
विषयेय-वचन मुम्भक और पूरक नायक
प्राणी की वचने का वचन (वच)।

पाथनकर वि [प्रागास्तकर] प्राधुन्यता
(मुप ११४)।

पाथविभ वि [प्रागास्तकर] प्राधुन्यता
'पाथविभ' वचन (मुप २२१)।

पाथन पुं [पाथन] १ वेद-वचन-विषयेय
(वचन)। २ पुं २ टी कण्)। २
वि वचन वचनेवामी (१)। 'ए पाथी व
उतो मण्णी' (वचन ८२; ७०)।

पाथवि की [वि] रथा मुद्रा (वि १ ११)।

पाथन वच [प्र + अय्] नि-वचन सेना।
पीने वाचन। पाथवि (वच २ १)।

पाथन न [पाथन] देवी पाथ = पाथ (विदे
२२०७)।

पाथन पुं [पाथन] स्वर्ग-विषयेय वचन देव
की (वच १०० मण् कण्)। २ विपाथनक
देवि-वचन-विषयेय (वचन ११२)। ३ प्राधुन्य

स्वर्ग का वचन (वच ४ ४)। ४ प्राधुन्य वच-
नक में वचनेवामी वच (मण्)।

पाथवा की [उपाधवा] वचन 'पाथवा' की
व वचन व वचनेवामी वचनेवामी (मुप १ १
१०)।

पाथवा वच पुं [वि] वचन वचन (वि १
१०)।

पाथवा पुं [पाथ] वि-वचन (मण्)।

पाथवा की [पाथवा] वचन-विषयेय (मन्
१ १)।

पाथवा की [वि] वचनेवामी का वचन (वि १
४)।

पाथि पुं [पाथिन्] वचन वचन वचन
(पाथा प्राधु ११४; १४४)।

पाथि पुं [पाथि] वचन, वचन (मुप २११
२१ १)। वचन देवी वचन (मन्)।

माह पुं [माह] विना (मुप १०१ वचन
२२१)। वचन न [मण्] विपाथ,
वाथ (विना १ १; वचन १ १; मन्)।

पाथि न [पाथी] पाथी वचन (वि १
१ १; मण् १ १ १)। वचन। वचन
की [वचन] वचन-विषयेय वचनेवामी
पाथि-वचन (वचन) वचनेवामी (वचन १
१२-वचन १०१)। वचन की [वचन]
वचनेवामी (वि १ ११ मन्)। देवी पाथी-
पाथी।

पाथिनि पुं [पाथिनि] वचन वचन वचन
कार वचन (वि १ १४)।

पाथिनी वच [पाथिनी] वचन-विषयेय
पाथिनि वचन (वि १ १ १)।

पाथी देवी पाथ = (वि)।

पाथी की [पाथी] वचनेवामी-विषयेय 'पाथी वचन-
वचनेवामी वचनेवामी' (वचन १-वचन
११)।

पाथी देवी पाथिनि (वि १ १ १; मण्
१ २)। वचन की [वचन] वचनेवामी (वचन
१ १ टी-वचन ४१)।

पाथ पुं [पाथ] १ प्राधुन्यता। २ वचन
वचन (वचन १ ४ टीन कण्)। ३
वचन-विषयेय-विषयेय 'वचनेवामी-वचन
पाथिनि वचन'। वचन वचन वचन
(वचन १२)।

पाठपर पु [दि] गगन पाठामन (दि ६ ४१)।
पाठपर पु [पाठापर] मनुष्य सागर (पाठ
पु २०)।

पाठपरि नि [पाठि] निचको पाठपर कपया
गया हो बर (पु ११२)।

पाठामर पु [पाठाशर] १ अग्नि-विरोध (पु ४
१ ४ १)। २ न गोत्र विरोध को
सहित गोत्र की एक शाखा है। ३ वि उग्र
गोत्र में प्रथम (हा ७—पत्र ३६)। ४
पुं मिथुन। ५ कर्म-स्थानी संन्यासी 'धर्मनि
वापसत धर्म' (पु २ ११)।

पाठिआसिय नि [पाठिओपिह] कृति-जनक
दान प्रथमता-मुक्ता दान पुस्तकार (सम्पत्
१२२)। व १६३ सु १९ १८३ रिषार
१०१)।

पाठिच्छा देतो परिच्छा 'व्यवस्थितान् बिडा
निह मयज्जनि लभि पाठिच्छा' (उ १०३)
व २ २०३)।

पाठिच्छन् देतो परिच्छन् (छाया १
८—पत्र ११२)।

पाठिज्ञा देतो पाठिय = पाठिज्ञ (पुमा)।
पाठिदुपयिवा छी [पाठिदुपनिर्दि] लक्षित
विरोध मन जाहि के कर्म में प्रथम प्रवृत्ति
(नम १ धीर कर्म)।

पाठिछी [मनुषि] आरण्य बर, कपड़ा
विहिराद कपुन-पत्रि कापरो पाठिछ बर
लेग' (प २१)।

पाठिगामिन्न देतो परिगामिन्न = पाठिगामिन्न
(कानू कर्म ५ ६६)।

पाठिगामिन्न छी देतो परिगामिन्न (वाक
पाठिगामिन्न) १ छाया १ १—पत्र ११)।

पाठिगामिन्ना छी [पाठिगामिन्ना] दूसरे
को परिगत—पुन कारने के रोपेगता
कर्म-कर्म (नम १)।

पाठिगामिन्ना छी [पाठिगामिन्ना] अर देतो
(नम २)।

पाठिगामिन्ना देतो पाठिगामिन्न (कानू पुन
२० कर्म)।

पाठिगामिन्ना देतो पाठिगामिन्न = पत्र ११
न वि-कर्म
कर्म (पु २६)।

पाठिगामिन्ना पु [पाठिगामिन्ना] र्जनि विरोध (नम
१ १—पत्र १)।

पाठिगामिन्ना पु [पाठिगामिन्ना] पुन विरोध कपुन
न वेह (कपु)।

पाठिय नि [पाठि] पूर्ण क्रिया हुआ (पय
१६)।

पाठिय पु [पाठिज्ञाह] १ देव-कर्म-विरोध
कर्म-सर्व-विरोध। २ कपुन का वेह 'कपुन
पाठियाह य पठियवरो माधर्मयो' (पुमा
२ १३)। ३ न पुन-विरोध कपुन का
पुन को रक्त बर्ण का धीर कपुन कोयम
मान होता है, 'गुहिए य विहमर पाठियविह
मुदीह' संभद बगद सपि' (नमि)।

पाठियका पु [पाठियात्र] देव-विरोध 'परि
धर्मतो पतो पाठियतपिय' (पु ३९९)।

पाठियका न [दि परिधर्म] पहिए के उह
माग की नाम परिधि (एहि ४१)।

पाठियाय देतो पाठिय = पाठियाह (पुमा
७६)। व १८ ३८ महा व ७३६)।

पाठियायमिवा देतो पाठियायमिवा (हा २
१—पत्र ३६)।

पाठियायमिवा देतो पाठियायमिवा (व
३३१)।

पाठियायमिवा नि [पाठियायमिवा] बाकी रखा
हुआ (नम)।

पाठियाय न [पाठियाय] संन्यासगत
संन्यास (पत्र ३२ २४)।

पाठियाय छी [पाठियाय, पाठियायिना]
छायावर्णी (उ २ २०६)।

पाठियाय नि [पाठियाय] संन्यास-संबन्धी
(पत्र)।

पाठिय नि [पाठिय] कर्म समाप्त
(नमि ६)।

पाठियायज्या छी [पाठियायज्या] परि
हास—विपदा के हानना कर्म-कर्म
(वाक ४)।

पाठिहदी छी [दि] कमा (दि ६ ४३)।
पाठिहदी छी [दि] १ मज्झिमे १ २ मज्झिमे
कार्यनी १ १ विरट्ठुस मज्झिमे बरु देर
१ १ मज्झिमे हरे मज्झिमे (३ ७)।

पाठिहदिय नि [पाठिहदिय] मज्झिमे के
मिथुन (हा ८—पत्र ४३६)।

पाठिहा य नि [पाठिहाय] कर्म-विरोध
परिहार कर्म-कर्म (नम)।

पाठिहाय न [पाठिहाय] पुन-विरोध
कर्म-विरोध के एक पुन का नाम (कर्म)।

पाठि छी [दि] दोहन-माह विहमर दोहन
क्रिया पाठा है वह पाठ-विरोध (दि ६, १०
पत्र ३७७)।

पाठिय नि [पाठिय] पार शत्रु कोर
मन्त्राण पाठियो' (पर्मि ११ विरि ४८६)
सम्पत् ७३)।

पाठिअग पु [दि] रिषा (दि ६ ४४)।

पाठिअह पु [दि] पुष्टि निरुद्ध (दि ६ ४४)।

पाठिसि देतो पाठिसिय (पाठा १ ६
१ १)।

पाठिह नि [दि] मातृगन सेतो हने मे
स्वाध्याय 'पन्थिनीय न पाठिहोमि' (दि
६ ४३)।

पाठिह नि [पाठिह] बहुरी बहुरी
की भाषा (नमि १ १)।

पाठिय पु [पाठिय] १ पठि-विरोध बहुरी
(दि १ ८ पुमा पु १२८)। २ पुन
विरोध। ३ न पठि-विरोध (पय १०)।

पाठिय नि [पाठिय] पठि-विरोध
पठि-संबन्धी (नमि ३ २)।

पाठिह देतो पाठिह (दि १ ४४ का ३०३)
पत्र ३)।

पाठिह नि [मज्झिमे] मज्झिमे मज्झिमे
भाषा (पत्र)।

पाठिह नि [पाठिह] पाठिह बरता पय
बरता। पाठिह (नम महा)। बर पाठिह
पाठिह, पाठिह, पाठिह (पु २ ७)।
न ४३) बर पाठिह कर्म)। पाठिह पाठिह
पाठिह, पाठिह (नम महा)। पाठिह
(नम) (दि ४ ४४१)। ४ पाठिह
पाठिह (पु ४ ४३ १०६ महा)।

पाठिह देतो पाठिह = पाठिह। बर पाठिह
(नम)।

पाठिह पु [दि] १ बरपाठिह पठिह के बरपाठिह।
२ वि कीरि कर्म-कर्म (दि ६ ४३)।

पाठिह पु [पाठिह] पाठिह-विरोध 'पुठिह का
कर्म का निर्याय का परिपुन का' (नम)।
३ वि बरपाठिह कर्म-कर्म को कर्म-कर्म
कर्म-कर्म (नम)। ४ वि (नम ४)।

कुमा)। अमा की [तमा] पली अर्था (कुमा)। अर वि [कर] शीति-नक (नष्ट—पिअ)। अरिणी की [अरिणी] धमबाय महावीर की माला का नाम मिशाला बेनी (कल्प)। राय पु [ग्रन्थ] एक प्राचीन बैन मुनि धाराय मुद्रिस्त दीर सुप्रसिद्ध का एक सिद्ध (कल्प)। आथ वि [आथ] जिसको पली प्रिय हो वह (या ११८)। आमा की [आमा] प्रेम-याव पली (या ११६)। दसज वि [दर्शन] १ विलका दर्शन प्रिय—शीतिवर हो वह (छाया १ १—पत्र १६ दीप)। २ पुं हेव-विरोध (ठा २ १—पत्र ७६)। दसला की [दर्शना] मकाल महावीर की पुत्री का नाम (धामन)। धम्म वि [धम्म] १ बने की मरुवाजाला (छाया १ ८)। २ पुं की उमबन्न के साथ बैन दीला बेनेनाला एक पत्नी (पत्रम ८३, ३)। माउग पु [भाउ] पति का भाई (जय १५८ टी)। मासि वि [मापिन्] प्रिय-वत्ता (महा २८)। मित पु [मित] १ एक बैन मुनि जो बन्ने पीछले धर्म में पाववां बामुदेव दुषा वा (पत्रम २ १७१)। मेजय वि [मेजक] १ प्रिय का भैल—संगीय करनेवाला। २ न एक दीय (छ १२१)। ठय वि [तुण्ण] बौद्ध-प्रिय। पम्प वि [पत्त, पल्लक] भारत प्रिय (भाषा)।

पिअ बेको पीअ, 'पीम्यापीअ विम्यापिअ' (मार्ग सण) बधि)।

पिअ बेको पिअ (महा ७१, १ ८)। हर न [गृह] पिता का घर, पीहूर, पीहूर, मैक (पत्रम १७ ७)।

पिअमा बेको पिअ (पा १६)।

पिअमाइ (धन) वि [पीअपिअ] शीति जन-आनेवाला, कुत करनेवाला (बधि)।

पिअमट्टिय (धन) बेको पिअ (बधि)।

पिअरर वि [पिअरर] १ मण्ट-कला हट-जनक (जय ११ १४)। २ पुं एक चम्मकी पात्रा (जय १७२)। ३ उमबन्न के पुत्र बन्न का पुर्न जन्म का नाम (पत्रम १ ४ २६)।

पिअरु पु [पिअरु] १ कुत-विरोध प्रिय, ककुली का पेड़ (पाय धीप सय १२२)।

२ बंश, मासकांगी का पेड़ 'पिअरुको बंश' (पाय)। ३ की एक की का नाम (पिअ १ १)। 'हाइया की [अरिण्ड] एक की का नाम (महा)।

पिअरय वि [पिअरय] मयूर भावी (सुर १ १३ ४ ११८—महा)।

पिअराइ वि [पिअरायिन्] ऊपर बेको (जय ११ १४ गुह ११ १४)।

पिअय न [रे] गुह गुह (दे १ ४८)।

पिअय न [पान] पील, 'गुहवन्नपिअयिन्' (बर्मी १२३ गुह ३ १) जय १३६ टी स २६३ गुहा २४६, कय २७)।

पिअया की [पुअना] कैला विरोध, जिसमें २४१ हावी २४१ रण ७२६ बोने दीर १२११ प्याई हो वह बत्तर (पत्रम २६ ३)।

पिअमा की [रे] प्रिय गुह (दे १ ४६ पाय)।

पिअमाहवी की [रे] कोमिला, पिअी (दे १ ११ पाय)।

पिअय पु [पिअय] कुत-विरोध विजयवार का पेड़ (सीप)।

पिअर गुं [पिअ] १ माता-पिता मां-बापा 'गुलुगु निअयपिअन पिअर' 'पिअराई बने-वा' (बर्मी १२२)। २ पुं पिता बान (मार्ग)।

पिअररररररररर [यज] शक्ति वाक्या। पिअररररररररर (महा ७४)।

पिअर (धन) बेको पिअ = प्रिय (विप)।

पिअ की [पिअ] पली, काता बार्मी (कुमा हेका २६)।

पिअमाइ पु [पिअमाइ] १ ब्रह्मा कपुरालन (दे १ १७) पाया जय २६७ टी छ २११)। २ पिता का पिता बाना (जय)। तणम पु [तनय] जन्मबन्न, मातर-विरोध (दे ४ ३७)। त्य न [रि] धन-विरोध ब्रह्मा (दे १३, ३७)।

पिअमाही की [पिअमाही] पिता की माता बारी (गुहा ७७२)।

पिअर (धन)। वि [पिअरर] प्यार (जय ३२ बधि)।

पिअरी (धन) की [पिअरर] प्यारी प्रिया पली (विप)।

पिअररररर [पिअरर] कुत-विरोध विजय बर्मी की का पेड़ (कुमा, पाय) दे १ २१, पयस १)।

पिअररर पु [पिअरर] कुत विरोध बिनी बिनी का गाव (छ २ ११)।

पिअरा बेको पिअरा (पा ८१४)।

पिअ बेको पीअ, 'पिअ पिअर विट्ट' (पत्रम ११ १४)।

पिअ पु [पिअ] १ पिता बाप (जय ७२८ टी)। २ मन्ना-मन्न का ब्रह्मात्मक बन्न (सुह १ १२ वि १३१)। मेह पु [मेअ] बन्न-विरोध जिसमें बाप का होम किया जाय वह पत्र (पत्रम ११ ४२)। वग न [वन्न] स्वगान (गुहा ३३६)। हर न [गृह] पिता का घर, पीहूर (पत्रम १८ ७ सुर ६ २३६)। बेको पिअ।

पिअर पु [पिअर] बापा बाप का भाई 'गुहापो बोरविअपिअनी (? कय)' (विचार ४७८)।

पिअर वि [पिअर] पिता का पिता-संनकी (धन)।

पिअ १ पु [पिअ] १ बाप पिता (सुर १ पिअर १ १७४ धीप कय) दे १ १११)।

२ पुं न बाप माता-पिता 'प्रमया यह पिअरि पाई पचाई' (बर्मी १४७ गुहा ३२६)। कम्म पु [कम्म] पिता-नर पिता-कुल (कुमा)। कुल न [कुल] पिता का बंध (पय)। धर न [गृह] पिता का घर, पीहूर (गुहा ११)। प्या ब्यादी की [प्यार] पिता की बहिन कुमा गुहा ३३३ (या ११ दे २ १४२) पाय छाया १ १६) 'कोति निअरि' (? कय) ककरोर' (छाया १ १६—पत्र २१६)।

'पिअ पु [पिअ] मुक्त-भोक्त माइ में पिता माता भोक्त (पाय १ २)।

भगिणी की [भगिनी] कुटी पिता की बहिन (सुर ३ ८२)। पय पु [पय] दम पायन (दे १ १३४)। वग न [वग] स्वगान (पत्रम १ ३, २१ पाय दे १ १४७)। 'सिआ की [प्या] कुटी (दे

विहग वृ [विण्डक] ऊपर देखो (कस) ।

विहग न [विण्डन] १ इयों का एकन संस्तेय (सिंह्य २) । २ ज्ञानवल्लीयति कर्म (निह ११) ।

विहगा की [विण्डना] १ घट्ट (वीथ ४ ७) । २ इयों का परस्पर संयोजन (निह २) ।

विहग देखो विह (घोषना ११) ।

विहग्य न [वे] यस्मिं यगार (१७ ४८) ।

विहग्य वि [वे] निहरीय विहगार विहा ह्या (१६ २४ पाठ) ।

विहग्य न [वे] पटमक पुन का मानन (डा ७) ।

विहग्याय वि [विहग्यायिक, वेण्डपातिक] षट्-ज्ञानात्मक, जिसकी मित्रा में आहार की प्राप्ति हो वह (डा १ १ कस वीथ प्राठ १) ।

विहग्य वृ [विण्डार] नोन गवाला (वा ७११) ।

विहग्य वृ [विण्डावृ] वन विहग (वा २) ।
विह देखो विहरी (मन लाया १ १ टी—पत्र २) ।

विहिस वि [विण्डिम] १ विह से बना हुआ बहुत (पण्ड २ २—पत्र १२) ।
२ पुन-समुद्रक संवादाकार (लाया १ १ टी—पत्र २ वीथ) ।

विहिय वि [विण्डित] १ एकजित इन्द्र विहा ह्या (सुमति १४ ; वंवा १४ ७ महा) । २ गुणित (वीथ) ।

विहिया की [विण्डिका] १ निहरी जिसकी कान के नीचे ना मानन घनघन (महा) ।
२ बर्तनाकार बलु (वीथ) । देखो विहरी ।

विहरी की [विण्डरी] १ गुनी गुण्ड (वीथ म्हा लाया १ १ जग १२) । २ वर का घाघार-मुन बलु-विहरी वीडा 'विहरी' यस्मिन्नेषां विहरी विहालपिम्पो' (पत्रक) ।
३ बर्तनाकार बलु, गोवा 'विहरीयविहरी' (पत्र २ १ २१) । ४ घट्ट-विहरी (नाट-शुद्ध १२) । देखो विहिया ।

विहरी की [वे] मन्थरी (१६ ४०) ।

विहरी न [वे विण्डरी] यस्मिं यगार (१६ ४८) ।

विहरीय की [विण्डरीयणा] मित्रा ग्रहण करने की रीति (डा ७) ।

विहरीय वि [विण्डरीयिक] मित्रा की सोन करनेवाला (मन २ ११) ।

विहरीय वि [विण्डरीयण्य] मित्रा से विहरीय विहा करनेवाला मित्रा का विहरीय प्राप्ति मित्र (वाचा जग २, २२ गुण २, २२ गुण १ १ १ १) ।

विह (घप) वर [वि + घा] इकना । विह (मन) । संक-विह (मन) ।

विहय (घप) न [विधान] इकना (मन) ।

विहरी की [वे] गुह से पवन भरकर बनाया जाता एक प्रकार का गुह-वाद्य (१६ ४०) ।

विह दुकी [विह] कोकिल पत्नी (मन) ।
की की (१६ २१) ।

विह देखो पक-पवन (१ ४०) पाठ वा २१२२) ।

विहस वर [प्र + इह] वैषय । विहस (यथ) । वह विहरी (यथ) । ह विहरीयक्य (गुर ११ १११) ।

विहस्य वि [मिहस] निहयक, हटा (टी १ ; मन्थी १२) ।

विहस्य न [मिहस] निहयक (पत्र) ।
विहस्य वि [मिहस] हटा (मि १२) ।

मिह देखो मिह (कुमा) ।

मिह वृ [मिह] कर्पस रई (१६ ७८) ।
'क्या की [मिह] गुनी कई की गुनी (१६ २१) ।

मिहम वृ [मिहम] निह वृन नीम का पेड़ (मोह १ १) ।

मिह वृ [मिह] वर-लोक घाघारी वर्य मिहा (वा १० गुण २ १ ; गुण १ १ १ १) । देखो पक ।

मिहा देखो मिह = वा ।

मिहिय वि [वे विहिय] गुटी हुई छान (डा ३, १—पत्र ११८) ।

मिहस वर [हृ प्र + इह] वैषय ।

मिहस विहरी विहस (क्या प्रमृ ११ ११) । वह विहरीय विहसमाण (गुण १४४ यथ) । कस विहस्यमाण (गुण २२) । संक विहस्य विहस्यक (प्रमृ २२ यथ) । ह विहस्यिज (क्या गुर ११ २२१) यथ ११) ।

मिहस न [मिहस] १ पत्र का घनघन पत्र का हिस्सा (उवा पाठ) । २ मयूर-मिहस, सिन्धु (लाया १ १) । ३ पत्र पात्र (जग ७६८ टी मरठ) । ४ वृक्ष, मातुल (पत्रक) ।

मिहस्य न [मिहस्य] १ बर्तन घनघन (वा १४ गुण ११) ।

मिहस्य न [मिहस्य, क] तमारा सेव मिहस्यय । भाग 'पाह्य' मिहस्यय वीह 'वा' (गुण ४८२) । लो कस्यमिहस्यय मिहस्य वीहस्य मिहस्यय (गुण २ ०) ।

मिहस्य वि [मिहस्य] १ लिग, लेह युक्त । २ मयूर (यथ) ।

मिहस्य की [मिहस्य] निहयक । भूमि की 'भूमि' रंम-मयूर रंमय (पाठ) ।

मिहस्य वि [मिहस्य] विहस्यमाण (वीथ) ।
मिहस्य वि [मिहस्य] मयूरक इग, देखने वाला (गुण ७८ कुमा) ।

मिहस्य वि [मिहस्य] १ लेह-युक्त लिग । २ मयूर विहस्य (गठ हास १४ १६ ४२) ।

मिहस्य की [वे] वरगा टप (१६ ४०) ।

मिहस्य की [वे] वृद्धा कीटी (१६ १७) ।

मिहस्य की [मिहस्य] पीछी (वा २७२) ।

मिहस्य की [मिहस्य] १ गुनी घनघनी पत्नी (कुमा) । २ बड़ी इलायची । ३ गुनवा । ४ कण्य वीरक । ५ विहरी (१६ १२८) ।

मिहस्य की [वे] नीम बजले की कविका (गुण ७ ४ पत्र १४४) ।

मिहस्य वर [मिह] वीगा । मिहस्य (१६ ४ १) । ह मिहस्यिज (कुमा) ।

मिहस्य गुन [मिहस्य] मयूर यगार (गुण १ ११ २; कय) ।

मिहस्य [वे] देखो पा = वा ।

मिहस्य की [मिह] बराह (निह ६२४) ।

मिहस्यिज वि [पायित] जिसकी पान कपटा क्या ही वह (गुण २ १०) ।

मिहस्य वर [पायित] वीडा करना । मिहस्यिज (गुण २ २ २२) ।

मिहस्य वर [मिह] नीचे गिरना । मिहस्य (पत्र) ।

पिट्टु चक [पिट्टु] पीठ्या ठाकन करना ।
पिट्टु, पिट्टु (भाषा) पिठ या १७१ सिदि
११२) । बड़ पिट्टु (पिठ) ।

पिट्टु न [पिट्टु] पैट, वरर (पैट १ १६; बर्मेसि
१११; बरर ११३ बर २१; गुप्ता १६१)
६२१) ।

पिट्टु न [पिट्टु] ठाकन भाषा (पुष्प २
१ १२; पिठ १११ पण्ड १ १; बोध
१६१) बर १ ६) ।

पिट्टु न [पीठन] पीठा कठेठ (पुष्प २
२ १२) ।

पिट्ट्या की [पिट्ट्या] ठाकन (बीज ११७) ।

पिट्टाकन्या की [पिट्टा] ठाकन करना
(भा ३ १—पण १ २) ।

पिट्टिय पि [पिट्टिय] पीठ हुया ठाकिय
(पुष्प २ १२) ।

पिट्टु न [पिठ] पण्डन या पि ना याटा
कर्म (शास्त्र १ १) १ १ १ १ ७७ वा
१) ।

पिट्टु न [पृष्ठ] पीठ शरीर के पीछे का हिस्सा
(बीजा ल) ।

बीज [लस्] पीछे से, पुन माग से
(वरा पिना १ १ बीज) । करेडा न
[करण्ड] पुन-पुन, पीठ की बड़ी हड्डी
(पुं ११) । बर पि [बर] ल-कन्यी
कन्यायी (गुप्ता) । बेको पिठि ।

पिट्टु पि [पृष्ठ] १ गुप्ता हुया । २ न. लपरी
(पण ११७) ।

पिट्टु पि [पृष्ठ] १ गुप्ता हुया । २ न. लपरी
कन्यायी बरपि पिठिय छ बरपे पिठि (पा
१५१) ।

पिट्टु न [पिठ] पुन भाक (पि
१ ५६) ।

पिट्टुलप की [पिठ] पण्ड-पुष्प, बन्धुप मरिच
(पि १ ५६) ।

पिट्टुलपरी की [पिठ] मरिच, बर (पाप) ।

पिट्टुलपि [पण्डप्य] पुनरी योग्य, गिरक-
परीपी पिठिय पिठि (पिठ) भा (पैट) ।

पिट्टुलपि पुन [पिठुलपि] पैट या पिठ क-
कन्य (पण्ड ७ ७१५) ।

पिट्टु की [पृष्ठ] पीठ शरीर के पीछे का
भाग (पि १ १२१; शास्त्र १ १) पैठा

कुमा पण्ड) । ग पि [ग] पीछे बसनेवाला
(पा १२) । बस्या की [बस्या] बस्या
कन्यी के पण्ड की एक नवरी (कन्य) । मंस
न [मंस] पण्ड में पण्य के बोध का
कीटाग, पिठियरी न काड्या (बन न
४७) । मंसिय पि [मंसिय] पण्ड में
बोध बोलनेवाला पीछे भिन्ना करनेवाला
(सन १७) । माइया की [मातुका] एक
कन्युल-पामिनी की 'पैटिया पिठियाप्या'
(पण्ड २) । बेको पिठु = पुठ ।

पिट्टी की [पिठि] याटा की बड़ी हड्डी मरिच
(पुं २) ।

पिट्टु पु [पिठ] १ बर-पण या पि का बसा
हुया पाक-पिठेय । २ कन्या बरिणीका 'भा'
ठाप ठैरी मरिच १ १ १ १ बर मड सिदि
पमियो' (गुप्ता १७१) ।

पिट्टा बेको पिठन = पिठक (बीज कना
पुन १६) ।

पिट्टा की [पिठ] लकी (पि १ ५६) ।

पिट्टन न [पिठक] १ बर-पण पाक-पिठेय
'बोयसि' (१ पि) बर करेडि (शास्त्र १
१—पण ८१) । २ बो कन्य बीर की पुनो
का कपूर (पुष्प १६) ।

पिट्टन पि [पिठ] मरिच (पण्ड) ।

पिट्टन ल [अर्य] पैठा करना, कन्या
करना । पिठन (पण्ड) ।

पिट्टा की [पिठिया] १ बर-पण पाक-
पिठेय (पि ४ ७ १, १) । २ छोटी नव्या
पैठी पिठिय (पण्ड १७७ १६७ दो) ।

पिट्टु ल [पीठ] पीठ्या । पिठु (भाषा)
(पि २७१) ।

पिट्टु ल [अर्य] बीज पिठन । पिठु
(पण्ड) ।

पिट्टुलपि पि [पिठ] पण्डन (पण्ड) ।

पिठ या [पुष्प] पण्ड पुष्प (पण्ड) ।

पिठर पुन [पिठर] १ पाक-पिठेय लकी
(पाप भाषा गुप्ता) । २ पुन-पिठेय । ३
पुठा, पीठा । ४ मन्नाक-पण्ड नवमिया (पि
१ २ १ पण्ड) ।

पिठन ल [पिठ + भा, पिठि + भा]
१ कन्या । २ पण्डिया । ३ पण्डिय । ४

बीज्या । पिठन, पिठन (पि १२१) ।
पिठन, पिठन (पि १२२, पण्ड) ।
पिठन पि [पिठन] १ पण्डा हुया (पाप
बीजा पा १२८) । २ बड़ मरिच (पण्ड) ।
३ पण्डाया हुया 'पिठनपिठि पिठनो लस'
सिदि रण्डपिचपयो' (गुप्ता १२१) ।
पिठनपिठि (पिठ) पि [पिठनपिठि] पण्ड-
भाया हुया (पाठ—पण्ड १६) ।
पिठन पु [पिठनपिठि] महापिठि (पाठ
बण्ड) ।

पिठन की [पिठ] पाठा पाठेठ (पि १ ५८) ।

पिठन पुन [पिठन] १ पिठ-पुन । २
महापिठि का कन्या (बर्मेसि ११) ।

पिठन बेको पिठन (बर्मेसि ११) ।

पिठन बेको पिठन (पण्ड) ।

पिठन पु [पिठ] बलाकार (पि १ ५६) ।

पिठन पि [पिठन पिठिय] बेको
पिठन = पिठन (पण्ड २ ४—पण्ड ११ १
बन बीर) ।

पिठन ल [पिठन + भा] बेको पिठन =
पिठ + भा । पिठ-पिठन (बीजा पि
१७८) ।

पिठन बेको पिठन (पण्ड) ।

पिठन की [पिठिय] पण्ड-पण्ड-
पिठेय पण्डन, पण्ड-पुष्प (पण्ड १) ।

पिठन की [पिठ] पाठा इठ की (पि १, पण्ड) ।

पिठ पुन [पिठ] शरीर-पिठेय बन्धु-पिठेय-
पिठ बन्धु (पाठ ४७) । बर पु [बर]
पिठ से हुया कन्या (शास्त्र १ १) ।

पिठन की [मुष्प] पिठ की बर-पण्ड
से होनेवाली बेकोपी (पिठि) ।

पिठन न [पिठन] बन्धु-पिठेय, पीठ
(पुष्प १५१) ।

पिठन पु [पिठन] पाठा, पिठ का
पिठिय } बर (पण्ड पण्ड १७१, सिदि
१२१ बर्मेसि १२७) ४ ५६५, गुप्ता ११५) ।

पिठन पि [पैठिक] पिठ का, पिठ
पण्डन (पुं ११ शास्त्र १ १; बीज) ।

पिठन या [पुष्प] पण्ड पुष्प (पि १
१ ३ गुप्ता) ।

पिठन बेको पिठन (पाठ—पिठ १ १) ।
पिठन पु [पिठन] कन्या पिठ या पिठ
पिठन } का ठेक पिठन से पण्ड वर को बण्ड

विष्णुमित्र वि [कचित्] १ कहा हुआ । २
सुमित (गुप्त २१; पाप कुत्र २७५) ।
विष्णुमय (पे) पुं [विमय] भावार्थ (प्राक्
१२४) ।

विह सक् [एह] इच्छा करना बाह्य ।
विहाह (नय १ २—पत्र १०३) । छंद
विहाहृता (नय १ २) ।

विह वि [पुनश्च] क्लिप्त हुआ 'विहविहृत्य'
(विदे ५४) ।

विहं व [पुनश्च] जनय (हे १ १३७—वह) ।

विहं व पुं [वि] १ भाव-विशेष । २ वि विमर्श
(हे १ ७२) ।

विहं व वैश्वसिद्धि (हे १ २ १) हुआ (नय) ।

विहय न [विधान] १ इच्छा, विहाय (गुर
१९ ११४) । २ इच्छा भाव्यजन (वेदा
१ ३२; अथर्व ४९ गुप्त १२१) ।

विहयना की [विधान] भाव्यजन इच्छा
(व ११) ।

विहय वैश्व विह = पुनश्च (कुमा) ।

विहा सक् [वि + धा] १ इच्छा । २ क्लेश
करता । विहाह (नय १ २); छंद विहाहृता
विहिक्रम (नय १, २ महा) ।

विधान वैश्व विहय (अ ४ ७) धन १२,
कर्म) ।

विधानिमा की [विधानिमा] इच्छा (गाम) ।

विधानी की [विधानी] ऊपर वैश्व (हे) ।

विहिन वि [विहित] १ इच्छा हुआ । २ क्लेश
करता हुआ (गाम कर्म का १ ४—नय
६५) गुप्त ६९) । ३ मन्त्र वि [विहिन] १

विहने भाव्य को पैना हो (व ४) । २
पुं, एक वैश्व भुक्ति का नाम (पत्रम २ १) ।

विहिय वैश्व विहय 'पाश्चात्य' केवल
विहिये नयव मन्त्रों के (वा १ पत्रि) ।

विहिय (पत्र) की [विहियी] भुक्ति करती ।

पाह पुं [पाह] पैना (नय) ।

विहिक्रम वि [पुनश्च] जनय किया हुआ
(नय १११) ।

पिहू वि [पुह] १ विहिक्रम (कुमा) । २

पुं एक उपाय का नाम (पत्रम ६५ १४) ।

पम पुं [पम] नील काल (हे १,
२ टी) ।

पिहू वैश्व विह = पुनश्च (गुर ११ १२;
सण) ।

पिहू वैश्व विहय, विहयव्य वि मो कर्ण
(व ४ १४) ।

पिहूह न [विहूह] नय-विशेष (जट
११ २) ।

पिहूह [वि] वैश्व वैहूह (गामा २ १ ७

१) । इहय पुं [इहय] मयूर-विहय का

विहय हुआ पैना (गामा २ १ ७ १) ।

पिहूह वैश्व पुहूह (हे ४) ।

पिहूह पुन [पुहूह] काय-विशेष विहय
(गामा २ १ १ ४ ४) ।

पिहूह वि [पुहूह] विहिक्रम (पत्र १ ४

पत्र १ १ १४९ कुमा) ।

पिहूह न [वि] पुहूह के नाम से बताया जाता
सुख-पाप (हे १ ४०) ।

विह वैश्व विहा । विहै, विहै (जट २१
११ गुप्त १ २, २ ११) । छंद विहैक्य
(वि १५५) ।

विहो व [पुनश्च] जनय क्लिप्त (विदे १) ।

विहोमर मि [वि] गुरु, इहय, पुनश्च (हे
१ २) ।

पी सक् [पी] पाल करना । वह 'पुनश्च-
छंद' की विहयव्य वैश्वमाजी (पत्र ११) ।

पीम पुं [पीठ] १ पीठ बर्त पीना रूप ।

२ वि पीठ बर्तना पीना (हे १ १७३

कुमा गाम) । ३ विहय पाल किया गया

हो वह (हे १ ४ १ १४४) । ४

विहने पाल किया हो वह (गाम) ।

पीम मि [पीठ] शीति-पुन, छंद (पीठ) ।

पीमर (गाम) पीम वैश्व (विह) ।

पीमर वैश्व पीम = पीठ (हे १ १७३

गाम) ।

पीमसी की [पीमसी] गेन-पाप की (कुमा) ।

पीह पुं [वि] पाल पीना (हे १ ११) ।

पीह की [पीठ] १ गेन पाप (कर्म

पीह) । २ पाप की एक कली का

नाम (पत्रम ७४ ११) । कर पुन [कर]

एक विहयव्य पाप का विशेष-विहय
(विहय ११४५ ११४५) । गम न [गम]

गामाव्य वैश्व का एक पाप-विहय (इका
पीठ) । गाम न [गाम] हर्ष होने के

कारण विहा काय पाल-विहय
गुर ४ ११) । धर्मिय न [धर्मि]

धर्मियों का एक गुण (कर्म) । ३

[मनस्] १ शीति-पुन विहयव्य

२ पुं गामाव्य वैश्व का एक कर्म

(अ न—पत्र ४१७) । इहय पुं [

कर्मिक भाव का शीति-पत्र नाम (गुर

११३ कर्म) ।

पीहय पुं [वि] गुरु-विहय, पुन

वेद 'पीहयव्य' इहयव्य यह वि

है (पत्र ११) ।

पीहय न [पीहय] इहय गुरु (गाम

पीह सक् [पीहय] १ इहय कर

करता । पीहय, पीहय (विहय हे ४

कर्म, पीहयव्य (विह) । कर्म, पीह

पीहयव्य (विहय हे ११ १ २, ग

सक्) ।

पीह वैश्व पीहय । नय मि [कर]

कारक (पत्र १ १ १४३) ।

पीहय की [वि] गुरु की की (हे १

पीहय की [पीहय] पीहय वैश्व

(गाम) । कर मि [कर] पीहय-कर्म

'धर्मिय' धर्मियव्य धर्मियव्य धर्मियव्य

धर्मियव्य धर्मियव्य धर्मियव्य धर्मियव्य

धर्मियव्य धर्मियव्य धर्मियव्य धर्मियव्य

धर्मियव्य धर्मियव्य धर्मियव्य धर्मियव्य

धर्मियव्य धर्मियव्य धर्मियव्य धर्मियव्य

धर्मियव्य धर्मियव्य धर्मियव्य धर्मियव्य

धर्मियव्य धर्मियव्य धर्मियव्य धर्मियव्य

धर्मियव्य धर्मियव्य धर्मियव्य धर्मियव्य

धर्मियव्य धर्मियव्य धर्मियव्य धर्मियव्य

धर्मियव्य धर्मियव्य धर्मियव्य धर्मियव्य

धर्मियव्य धर्मियव्य धर्मियव्य धर्मियव्य

धर्मियव्य धर्मियव्य धर्मियव्य धर्मियव्य

धर्मियव्य धर्मियव्य धर्मियव्य धर्मियव्य

धर्मियव्य धर्मियव्य धर्मियव्य धर्मियव्य

धर्मियव्य धर्मियव्य धर्मियव्य धर्मियव्य

पय का बीज-मिठा, कदत वा मय मण
(मीन)। कय पु [म] विष्णु योद्धव्य।
२ कयरी के एक पना का नाम (पुद्ग
२४३)। गय न [ग] बाघ किले का
नाम, कय-विशेष (मीन)। ख न [ख]
पुष्करनाम का बीज का धाया हिम्मा (पुद्ग
१६)। वर पु [व] बीज-विशेष (हा २
१ पवि)। संवट्टा सेयो पुग्गल्ल-रुपट्टव
(राय)। लवट सेयो पुग्गल्ल-रुपट्टव
(राय)।

पुग्गल्लिणा सेयो पावर्गल्लिणी (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्लम [प] पुष्कराक्ष, पुद्गल्ल-विशेष
पुग्गल्लेय [र] हा १ १ ० पुद्ग १६)।

पुग्गल्ल पु [पु] एक विजय प्रमत्त
विशेष जिसकी पुष्प मयों का नाम कोपवि
है (र)। २ पय कयलः प्रिविक्खिपुल्लम
पुग्गल्लार (पुद्ग २ १ १०)। ३ पय
केर (पाया २ १ ५-पुद्ग ४०)।
'विमंगल न [विमङ्ग] कय-मय (आका
२ १ ८-पुद्ग ४०)। संवट्ट संवट्टव
पु [संवट्ट व] कय-विशेष जिसके वर
वने के वय इनार वर वर कुपिनी काचित
एकी है (हा २ १)। हा ४ ४-पय
२०)। सेयो पुग्गल्लः।

पुग्गल्ल पु [पु] एक विजय प्रमत्त-
विशेष (हा २ १-पय ५)। २ कयल
केर-विशेष। ३ पुद्गल्लेय का सेयो में कयल
अवसे चनेगल्ला विपट्टेयि गुणिदिहि
पुग्गल्लो (१) (पय २ ११-पय ४३०)
['विपट्टेयि, वनिट्टेयि वर-विशेष (१) (पय
२ ११ वी-पय ४३)]। ४ वि कयल
कट्ट (पुद्ग ४१)। ५ कयल्लेयि वरिपुल्ल
(पुद्ग २ १ १)।

पुग्गल्ल पु [पु] कयल्ल-विशेष
पुग्गल्लेय-विशेष। ५ वर सेयो-मयी कयल्ल-वि-
शेष (पुद्ग २, १ १ १६)। सेयो
पावर्गल्लेय-विशेष।

पुग्गल्ल पु [पु] कयल्ल-विशेष
पुग्गल्लेय-विशेष। ५ वर सेयो-मयी कयल्ल-वि-
शेष (पुद्ग २, १ १ १६)। सेयो
पावर्गल्लेय-विशेष।

पुग्गल्लवट्टव पु [पु] कयल्ल-विशेष, पुग्गल्ल
वनेक [व] कयल्ल-विशेष पुग्गल्ल (पय)
वट्टव लं कयल्लेय के वनेक वनेक वर वर
वनेक (हा ४ ४)।

पुग्गल्लवट्टव पु [पु] कयल्ल-विशेष, पुग्गल्लवट्टव
वनेक [व] कयल्ल-विशेष पुग्गल्ल (पय)
वट्टव लं कयल्लेय के वनेक वनेक वर वर
वनेक (हा ४ ४)।

पुग्गल्लिणा सेयो पावर्गल्लिणी (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल पु [पु] कयल्ल-विशेष 'सेयो पुग्गल्ल
वनेक' (पुद्ग ४ १)।

पुग्गल्ल पु [पु] कयल्ल-विशेष 'सेयो पुग्गल्ल
वनेक' (पुद्ग ४ १)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुग्गल्ल सेयो पुग्गल्ल (पुद्ग २ १ २
१) बीज पाय)।

पुठु वि [पुठ] ज्यपित (छाया १ १ छ ४११) ।
 पुठु केओ पिठु = पुठ (ब्राह्म संक्षि १६) ।
 पुठुव वि [सुठुव] विरुणे स्वरं विरु
 हो नह (घाषा १ ७ न न) ।
 पुठुवई केओ पुठुवई (सुख १ १) ।
 पुठुवया की [मोठुवया] मज्ज-विरोध (सुख १ ३) ।
 पुठि की [पुठ] तोषय उपपन्न (विदे १२१
 वेस्य न) । २ प्रविद्या क्या (पदह २ १—
 पत्र २६) । म वि [मा] १ प्रतिपाला ।
 २ पुं ज्ञानात् महावीर का एक शिष्य (छु) ।
 पुठि केओ पिठि = पुठ, 'पास्तविषय पक्षो
 पुठि पुते उपायुर्विम्ब' (य ११ ११ न) ।
 ब्राह्म संक्षि १६) ।
 पुठि की [पुठि] पुष्कल प्रसन्न । य वि
 [ज] प्रसन्न-मिल (अ २, १—पत्र ४) ।
 पुठि की [सुठि] स्वरं । य वि [ज]
 स्वरं-मिल (अ २, १) ।
 पुठिया की [पुठिया] प्रल से होनेवाली
 क्षिया—कर्मत्व (अ २, १) ।
 पुठिया की [सुठिया] स्वरं से होनेवाली
 क्षिया—कर्मत्व (अ २, १) ।
 पुठिस केओ पुठि (अ २) ।
 पुठिया की [सुठिया] केओ पुठिया =
 सुठिका (न १ न) ।
 पुठिया की [पुठिया] पुष्कल से होनेवाली
 क्षिया—कर्मत्व (न १) ।
 पुठ पुं [पुठ] १ प प्रसार-विरोध । २ पुठ-
 परिचित बलु (पत्र १४) ।
 पुठ पुं [पुठ] १ निच संकल परस्पर
 वीक्षण विमल विमल 'मनविपुठ—
 'चाहे करतपुष्ट हो नीयो हो' (वीर महा) ।
 २ बल होत धारि का चक्रा 'हृत्पुष्ट
 संज्ञासंज्ञा' (का २४ टी पत्र ११६७)
 पुठा) । ३ संज्ञा ज्ञान, मित्रा हुया हो
 क्या 'विपुष्टासंज्ञा' (का २ पत्र १७३) ।
 ४ कोषवि पत्रा का पाठ-विरोध (छाया १
 ११) । ५ वनविपिच पत्र, वीणा (देवा) ।
 ६ पाठ्यापन इक्षण (का २ पत्र) । ७
 वनत पत्र 'पुष्टी' (मि १३) । अथ

न [मेहन] नगर, रहार (क) । बाय पु
 [पाक] १ पुठ-पातो से कोषवि का पाठ-
 विरोध । २ पाठ-विमल वीर-विरोध पुठ
 (१ न) बाण्डि (छाया १ ११—पत्र
 १७१) ।
 पुठ (सी) केओ पुठ = पुन (पि २२१; ब्राह्म) ।
 पुठइय वि [वे] विरुदीय एकपित (वे १
 २४) ।
 पुठइयी की [वे पुठइयी] नविनी, कथ
 निरी (वे १ २४ मि २१) ।
 पुठग पुं [पुठग] केओ पुठ = पुठ (का) ।
 पुठपुका की [वे] पुं से वीरि बनाव एक
 प्रकार की धमक बनाव (न १) ।
 पुठम केओ पुठम (अ ११; पि १ ४) ।
 पुठय केओ पुठग (अ ११; पु ११६) ।
 पुठिग न [वे] पुं वल । २ विपु (वे १,
 न) ।
 पुठिया की [पुठिया] पुं की पुठिया (वे १,
 १२) ।
 पुठु (सी) केओ पुठ = पुन (ब्राह्म) ।
 पुठ केओ पिठ (न) ।
 पुठम वि [प्रमम] वहा (हे १ २२; कुपा
 सज्ज २११) ।
 पुठवि केओ पुठवी (बापावि १ १ २ वन
 १६ १; पि २७) । काइय 'काइय वि
 [आयिक] पुठिरी लीपलता (वीर),
 (पल १ म १६ १) हा १ बापावि १
 १ २) । काय केओ पुठवा-काय (बापावि
 १ २ २) ।
 पुठवी की [पुठिरी] १ पुठिरी वणी भूमि
 (हे १ १११ हा १ ४) । २ कां-
 व्याधि पुठवाला पत्राई इय-विरोध—
 मुठिका पापरा बलु बाधि (पल १) ।
 ३ पुठिरीकाय का वीर (वी २) । ४ वीर-
 केय के एक लोकपाल की धम-वर्षी (हा
 ४ १—पत्र ४) । ५ एक विपुष्टापी
 वीर (अ ४—पत्र ४१६) । ६ वल्लव
 पुठारंगल श्री बापा का बाय (पत्र) ।
 काइय केओ पुठवि काइय (पल) । काय
 वि [काय] पुठिरी लीपलता (वीर)-
 (बापावि १ १, २) । वइ पुं [पठि]

रावा (अ ७) । 'सस्य न [राका] १
 पुठिरी काय राज । २ पुठिरी काय राज, इत
 मुठाव बाधि (पाषा) । केओ पुठरी, पुठरी ।
 पुठरीभूय वि [प्रमम] को पलन हुया हो
 (हुपा २१६) ।
 पुठम वि [प्रमम] वहा बाध (हे १ २२
 कुपा) ।
 पुठो य [पुठग] पत्र, मिल (हुपा १११;
 राज १; बाय ४; बापा) । वइ वि
 [अय] विमिल बापावला (बापा वि
 ७०) । काय पुं [अय] प्रमम मज्ज,
 बापावा लोक (सू १ १ ११) । विप
 पुं [वीर] विमिल प्रमम (सू १ १ २,
 १) । 'विमय' 'विमय वि [विमय]
 लोक प्रकार का वृत्ति (पत्र अ ४ ४—
 पत्र २०) ।
 पुठोका वि [वे पुठग] वृत्तिवृत्ति वि
 व्यासिच बमिठि-वली पुठोका (सू १
 १ १ ४) ।
 पुठोका वि [पुठिरी] पुठिरी की वल
 वल वल करेला (सू १ १, २१) ।
 पुठोसि वि [पुठिरी] पुठिरी के व्यास
 में खा हुया (सू १ १२, १३ बापा) ।
 पुय लक [पु] १ पत्रि कड़ा । २ वल
 बाधि को पुठपिठ करत, काय करत ।
 पुय (हे ४ २४१) । पठि (छाया १
 ७) । कर्म, पुठिबल, पुठव (हे ४ २४१) ।
 पुय थ [पुन] इत वली का वल
 धमक—१ नेद विरोध (विदे ११) ।
 २ वलपलल मित्तव । ३ प्रविद्या,
 प्रसार । ४ विरि वार, बाधक ।
 ५ पल्लव । ६ वल्लव (पल २, ६
 वल्लव कुपा वीर की १७; ब्राह्म २, २२;
 १६० सज्ज ७१ पत्र) । ७ वल्लव में वी
 धमक प्रवीर होत है (मि १) । करत न
 [करत] विर से बनता । २ वि, विर
 विर से बनत की बाय वल 'विर्ध संज्ञ
 न होइ पुठकण्ड' (अ) । 'व्यवधि [न]
 विर से गया बना हुया, ताका (पत्र ७१
 वी वल्लव) । 'पुन य [पुन] विर
 विर, बाधक । 'पुनवलय न [पुनकर]
 विर विर व्यास, बाधक विरि (१ १

३२)। कर्म पुं [मन्] किर से कर्ता
कि से कर्म-महण्य (विषय ११७-वीन)।
कर्म की [मन्] किर से विराहित की
निराका पुनर्लभ हुआ हो वह महिमा 'असिप
पुण्यमन्वयो' ति निराहिया पञ्चमि' (कुप
२ ८ २०६)। 'रवि' 'रवि म' [अवि]
कि से (रवा) उत १ १९। १३)।
रविमि की [आवि] पुन-मानस
(रवि)। कच नि [चल] किर से रहा
हुवा। २ न पुनर्लभ (विषय १ ८)। य
म [अवि] किर मा (मनि १२ माह
८७)। 'कर्म पुं [मन्] १ मन्त्र-विरोध
(धम १ १६)। २ मन्त्र-बाध के
पुन कर्म का नाम (धम १३३ पत्र २
१७२)।

पुन (म) रेकी पुण्य = पुण्य। अंत वि
[मन्] पुण्यमानी (मि)।
पुनम क [हन्] रेकना। पुण्यर (वाला
१४२)।

पुनर पुं [वि] कच बाण्डा (दि ९ १८)।
पुनर वि [वचन] वचन कलेका। की
की (कुना)।

पुनरुत्त १ म हठ-महण्य कर्तार, किर-रिह
पुनरुत्त' मर पुनरुत्त कर्मि छोड़दे कि
पुनरुत्त' (दि १ १७३ कुना) 'ए वि ल
छेयमार्ति इति पुनरुत्तपमर्त्यिका' (व
२७४)।

पुना म रेकी पुन = पुनर (वि १४३
पुनाह १ ११ पुना पत्र १ ६७
पुनाई) उता)।

पुनु (म) रेकी पुन = पुनर (पुना नि
१४२)।

पुनो रेकी पुन = पुनर (की पुना माह
८७)।

पुनाह रेकी पुन-रुत्त, पुनरुत्त (माह १)।
पुनाह क [म + नोद] १ रेका
रना। २ मन्त्र-रुत्त कला। पुनोदमायी
(कच ११ ४)।

पुनर पुं [पुन] १ पुन कर्तार पुन (वीन
मर माह ७३) पत्र)। २ दो कर्ता
रेका 'मर' पुं (१ एउ) मुनी (१ विम

पुनरुत्त एका' (संवीन ३८)। ३ वि
पवित्र 'मरुपुनियान्तपुण्य' (कुना)।
कर्मसा की [कर्म] माह देव के एक
की का नाम (पत्र)। पुन पुं [पुन]
विपारणों का एक स्वरूप-स्वात रवा (पत्र
१ १३)। अंत, अंत नि [मन्]
पुण्यवाला मायवान (दि २, १२६ ४३)।
रेकी पुन = पुनर।

पुण्य नि [पुन] १ संयुक्त, वरपुन, पुन
(वीन मय उता)। २ पुं कीपुनर रेकी
का कर्मिपुनर पुन (म)। ३ वरपुन वरपुन
का कर्मिपुनर देव (पत्र)। ४ विवि-विरोध
पुन की दोषों की लपों की वरपुन की विवि
(मुक १० १३)। ५ पुं, विपार-विरोध
(रक)। कर्मसा पुं [कर्म] संयुक्त क
(म)। दोस पुं [पाप] दोस क
का एक लयी निर-देव (धम १२४)। वर
पुं [वन्त्र] १ संयुक्त कर्मका। २ विपार
देव के एक पत्र का नाम (पत्र २, ४४)।
'पुन पुं [मन्] वरपुन की का कर्मिपुनर
देव (पत्र)। मर पुं [मन्] १ स्वरूप
स्वात एक पुन-रुत्त, विपने मन्त्रान्त मायवीर
के पास छोसा केर पुन पाई की (मय)। २
मन्त्र-कर्म का एक पुन (४ १)। ३ पुं, व
मन्त्र-पुन-रुत्तों का नाम (रक)। ४ वर का
कर्म-विरोध (वीन नि १ उता)।
मासी की [मासी] पुनिका विवि (१)।
सण पुं [सन] रवा मणिक का पुन
विपने वरपुन मायवीर के पास छोसा की की
(मन्त्र)। रेकी पुन = पुन।

पुनरमासिणी की [पुनमासी] विवि-विरोध
पुनिका (वीन मय)।

पुण्यवच म [वि] मानव के हठ कर्म (दि ९
१३ पाप)।

पुण्या की [पुन] १ विवि-विरोध पुन की
५, १ वीर ११ की विवि (संवीन ३८)
पुन १ १२)। २ पुं, वरपुन वीर मणिक
रक की वरपुन-मन्त्र-महिनी (रक
पात्र २)। 'पुण्यवच ए कर्मिपुनर
मन्त्रान्त मायवीर मणिक-विपनी पुण्यवचों
त मन्त्र-पुन (एउ) मन्त्रिका उता

वाला एव मायिक-स्वाति' (म ४ १
पत्र २ ४)।

पुनमाग रेकी पुनाग (पत्र ४१ १६ वे
पुनमाग १, १६ १ १, १६ नि २३१)।
पुनमाग की [वि] मन्त्रों, कर्म पुनमा
(दि १ २४ पत्र)।

पुनाह पुं [पुन्याह] १ पुनर वि पुन
विप (वा १२२, पत्र)। २ माय-विरोध
पुनसाहपुन (व ४ १ ७३४)।

पुनरमासी की [पुनमासी] पुनिका (संवीन
१६)।

पुनरमाग की [पुनमा] विवि-विरोध पुन
मासी (पात्र १२४)। य पुं [वन्त्र]
पुनिका का मन्त्र (महा ६८ पत्र)।

पुनरमासिणी रेकी पुनरमासिणी (धम
११ मा २८ पुन १ ३)।

पुन पुं [पुन] मन्त्र (म १० कुना पुना
१६ ११४ माह २७ पत्र) पात्र १ २)।
मर की [वरी] वरपुन की (पुना
२८)।

पुनरमाग पुं [पुनरमाग] वरपुन-विरोध,
पुनरी का विपारोका का पुं 'पुनरमाग' (व
११४)।

पुनर पुं [पुनर] रेकी पुन (महा)।

पुनर पुं की [वि] वीर वरपुन-मन्त्र, पुनर
मासी (विम ४७)।

पुनर पुं [पुनर] पुनिका (विम ८६१,
१२ १४)।

पुनरमाग की [पुनरमाग] वरपुन-विरोध पुनरी
पुनरमाग (पात्र १२४)। २ पुनरमाग
१२४ विम ८६१)।

पुनर रेकी पुन (माह १२)।

पुनर पुनर वि [पुनरपुनर] पुन
पुनर के मन्त्र, 'पुनरपुनर' विमि
कर्मि (पात्र १ १—पत्र १७)।

पुनरमाग की [पुनरमाग] १ पुनर मन्त्र
(विम १७४)। २ पुनरी (दि १ १९,
कुना)।

पुनर रेकी पुन (माह १२)।
पुना की [पुन] मन्त्र (पात्र)।

देव धर्मे (सम १; मन् पति) । ३ नीचा विचारविनिधि, कर्तुं वापुदेव (सम ७; पत्रम ५, १२३) । ४ मयावा मन्मथान का प्रथम भावक (विचार ३७८) । ५ पीछलग (सम्मत २२९) ।

पुत्री श्री [पुत्री] नगरी रह्य (कुमा) । नाह पुं [नाह] नगरी का अधिपति राजा (अ ७२८ टी) ।

पुत्रीय पुं [पुत्रीय] पिता (शाखा १ ८ स्व ११६ टी १२ टी पास) 'पुत्रपुत्रीये य रिन्वति' (मौषि १६) ।

पुत्र पुं [पुत्र] १ स्व-पाम-स्वात एक राजा (मति १७९) । २ वि प्रभुर, प्रभुत्वा । श्री. ६ (शङ्क २८) ।

पुत्रसुरिआ श्री [रे] बलरहस, जगुका (६६ ५) ।

पुत्रमिह श्री पुत्रिमिह (गठ) ।

पुत्र्य पुं श्री पुत्र्य=पूर्व 'ए धीरको पुत्र्य' विदुषी (स्वज १५) 'धर्मक-पाठ्य' 'सुप्रय' (गुा २२ नाट—पुत्र्य १२१ वि १२३) ।

पुस्त (श्री) श्री पुस्त (शङ्क ७१ स्वज २९ मति ५५; प्रवी ६९) ।

पुस्तोत्तम (श्री) श्री पुस्तोत्तम (वि १२४) ।

पुष्ट्य पुं [रे] पुष्ट कम्प (६९ २३) ।

पुष्ट्य पुं [पुष्ट्य] पुष्ट, स्व-पाम (गठ) ।

पुष्ट्य पुं [पुष्ट्य] एक स्व-पाम (वि ४ ५ ४) ।

पुत्रे श्री पुत्रे 'जल मति पुत्रे वषा मन्मे वल पुत्रोक्ति' (भाषा) । कइ वि [कइ] धोने विद्या हुआ पूर्व में दिया हुआ (श्री-पुत्र १ २ २ १ उत्त १ १) । कम्प न 'कम्प' पहले करने का काम पूर्व में तो वागे विद्या 'पुत्रोक्ति' में पुं पुं पुत्रोक्ति' (मोष ४८९ ६ १ २०) । बार पुं [बार] सम्मत, बार (उत्त २९ ७ गुा २६, ७) । बारइ श्री कइ (पण्ड ११—पत्र ७६९ पण्ड १ १) । वाप पुं [वाप] १ लम्बे बापु । २ पूर्व विद्या का पत्र (छाया १ १—पत्र ७०) । सीरिह श्री [रे]

सीरिह वि पहले ही किया जाता विमनवार—सीरिहवा (भाषा २ १ १ २ २ १ ४ १) । समुय वि [सीरिह] १ पूर्व परिचित । २ स्व-पाम का सगा (भाषा २ १ ४ ३) ।

पुत्रे पुं [पुत्रे] नगर-स्वामी (मति) । पुत्रे श्री पुत्रे (मोक्ष ४९ गुमा) । अ ग वि [ग] धर्मगामो, धर्मर (मति ४) । विरे २३४५) । गम वि [गम] नही धर्म (उप ४ १३१) । माइ वि [मागिम्] शीप को छोड़ कर पुत्र-भाष को ग्रहण करने वाला (मा—वि १७) ।

पुत्रक सक [पुत्रस् + क] १ धाये करना । १ स्वीकार करना । ३ सम्मत करना । उह पुत्रेकिम्, पुत्रेकिम् (मा १९ लूय १, १ १ १३) ।

पुत्रेचमपुत्र न [पुत्रेचमपुत्र] एक विचार नगर का नाम (हक) ।

पुत्रेय पुं [पुत्रेय] इल-निरुप (लोप) ।

पुत्रे पुं [पुत्रेयस्] पुत्रेय (अ ७९८ टी मौषि १४५) ।

पुत्रे पुं [रे] १ विपय धर्म । २ पम्पेक (१) (६ १ १३) । ३ पुं, बाहुय धीम का बाहु (६ १ १३) । ४ मन्मथ, वरमाणा धर्मगाम (लोप १२२) । ५ नाग, नागक-स्वमयप वल मन्मथ बरमा पुत्रेयस्मोक्ति । वर विदुषी सीरिह छापका (गुा २४२ वर २) ।

पुत्रेय पुं [पुत्रेय] पुत्रेय नामक होय मति से धर्म-कर्म करनेवाला बाहुय (गुमा काल) ।

पुत्र पुं [रे] पुत्र सीय कोहा पुत्री श्री श्री पुत्रा विरिह (अ १—पत्र २२१) ।

पुत्र वि [पुत्र] लुपित जगत् 'पुत्रनि-पुत्रा' (उत्त १ १९) ।

पुत्र सक [पुत्र] जगत् होता (उत्त १ १९) ।

पुत्र सक [पुत्र] देवता । पुत्र पुत्रय पुत्रय (मा ७१ ६ ४ १२१) । प्राय ५ ६६) । पुत्रय (वज्र १ ६३) पुत्रयि (मा २३१) । वर पुत्रेय पुत्रेय (वज्र १ ७५ नाट—मति १९ पत्र १ ७५)

१९ गुा ११ १२ १२ २०५ ७ २२२) । उह, पुत्रय (६ ९८६) ।

पुत्र पुं [पुत्र] १ रोमा (कुमा) । २ उत्त-निरुप, मति की एक बालि (पण्ड १ पत्र १६ ७७) कम्प) । ३ बलर कम्प निरुप पाह का एक मेर 'सीमावापुत्र' (१२) । कम्पुमा— (पण्ड १ १—पत्र ७) । कइ पुं [कण्ड] उत्त-निरुप मन्मथ की एक काल (अ १) ।

पुत्रय वि [पुत्र] देवदेवता, देवक (कुमा) ।

पुत्रयन [पुत्रयन] पुत्रयि होता (कम्प) ।

पुत्रयन सक [पुत्र + सक] उत्त-निरुप होता बलाव पला । पुत्रयन (६ ४ २ २) । वर, पुत्रयनमा (कुमा) ।

पुत्रय वि [पुत्र] देवा पुत्र (मा ११५ गुा १४ ११ पास) ।

पुत्रय वि [पुत्रय] रोमायि (पायः कुमा ४ १६ कम्प महा वा २) ।

पुत्रय सक [पुत्रय] रोमायि होता । वर पुत्रयय (उत्त) ।

पुत्रय वि [पुत्रय] रोमायि पुत्र रोमायि (उत्त १९४) ।

पुत्रय श्री पुत्रय = इह ।

पुत्रय पुं [रे] प्रमत् नीप (वर) ।

पुत्रय न [रे] मन्मथ निरुप (पण्ड १ १—पत्र ४२, पौग) ।

पुत्र पुं [पुत्र] पुत्रय = पुत्रय (वि २ १ इति पुत्रय) । रोमा १ १ उत्त १ ४ कम्प) ।

पुत्र पुं [पुत्र] श्री-निरुप (भाषा १ ११ १) ।

पुत्रा, पुं [पुत्रा] १ मन्मथ मन्मथ पुत्राय १ मन्मथ मन्मथ पुत्राय (उत्त १ ७ २२) । २ मन्मथ मति पुत्रय (उत्त १ १९ गुा २ २२) । ३ मन्मथ पुत्रय पुत्रय मन्मथ । ४ पुत्रय स्वमाता मन्मथ 'विदिह' होय पुत्रय मन्मथ मन्मथ पुत्रय (उत्त १) । ५ पुत्रय मन्मथ की निरुप मन्मथमा पुत्रि, विदिहमापौ मन्मथी का एक मेर (अ १ २; ३, १, श्रीय २८ पत्र ६३) ।

पुस पुं [पुव] मस-विपय वीव मास 'पुलो' (मङ्ग १) ।

पुसिख वि [पुसिखित मृष्ट] वोल्ल हृषा (पठ १ १ ४२ वा ४४) ।

पुसिख पुं [पुषय] पुन-विरोध (वा १२६) ।

पुसस पुं [पुस्य] १ नञ-विरोध इतिहा से छात्रो नयन (मङ्ग २९ मय सभ ८ १७ हा २ १) । २ वैदो नयन का धनि पति वेन (पुन १ १२) । ३ अवि-विरोध (पञ्च) । मापय, मापय पुं [मानय] मापय हृदि-मापक माट-मापय धावि (छाया १ ८-पञ्च १११ टी-पञ्च ११६) । देवो पुस = पुस्य ।

पुससवेवय न [पुस्यवेवय] कैतेवर हाव विरोध (संवि १२४) ।

पुससायन न [पुस्यायन] वोल विरोध (पुन १ १६) ।

पुह देवो पिह = पुनक (हि १ १४७) । पुह देवो वि [मूल] वसन को मुहा हुमा हो (धम ६) ।

पुहर् १ की [पुहिपी] १ एवीय वामुवे की पुहर् १) माहा का भाव (पञ्च २ १८४) । २ एव मापी का भाव (पञ्च २ १८८) । ३ मागल मुपाधेय की माहा का भाव (मुपा १६) । ४-देवो पुहकी पुहपी (मुपा है १ ८८ १११) । धर पुं [धर] राजा (पञ्च ४३ ४) । नाह पुं [नाह] राजा (मुपा १११) । पट्ट पुं [पट्ट] राजा (ज ७२८ टी) । पाल पुं [पाल] राजा (पुर १ २४६) । राय पुं [राय] विजय की बाटवरी रतापी का काप-मपी वेत का एक राजा पुहर्पणय धर्मपदीन-विरोध (पुति १ ६ १) । वड पुं [पति] राजा (मुपा २ १ २४४ २१६) । बाल देवो पाल (ज १४ टी) ।

पुहहसर पुं [पुहिपीयर] राजा (पुन १ ७ २४१) ।

पुदय न [पुययय] १ मेव कार्यय (मण) । २ विस्तार (पञ्च) । ३ हृदय (म १ २ ४१) । ४ वि विद वसन 'अभ्यारुहय' (निम १ ११) । 'विपय न [विपय]

मुसल ध्यान का एक मेव (संवीय ३१) । देवो पुहुत पोहृण ।

पुहसिय देवो पोहसिय (पञ्च) ।

पुहय देवो पिह = पुनक 'पुहय देवीण' (मुन) ।

पुहयि १ देवो पुहपी पुहर् (वि १ ८४) या पुहपी १) २४ मय प्रमू ३ १११ सभ १२१ स १२२) । ३ मयभाय भोवासाय की वीधा-विपिका (विचार १२६) । ४ एक सय का नाम (निप) । बड पुं [बड] एक राजा (पति २) । पाल पुं [पाल] १ एक राजकुमार (ज ६८६ टी) । २ देवो पुहर्-पाल (सिंर ४३) । पुर न [पुर] एक नगर का नाम (ज ४४४) ।

पुहवीस पुं [पुहिपीयर] राजा (हि १ ६) । पुहु वि [पुय] विपयन विस्तीर्ण । की ६ (मङ्ग २८) ।

पुहुय न [पुययय] १ दो वे नर एक की संख्या (म ४४ की १ ४) । २-देवो पुहय (ज १-पञ्च ४७१ ४८२) ।

पुहुपी देवो पुहु ह (हि २ ११३) ।

पू देवो पुं । तुम पुं [राक] ठीता नई विन-विधि (वा ३६१ वा) ।

पूय एक [पूयय] पूया करना । पूय (महा) । कर्न पूरयवि (पञ्च) । वड पूयवि (मुपा २२४) । कवक पूयय (पञ्च ३२, ६) । ३ पूयणीय पूययय, पूययिज (मा-गुन्य ११३; जवर १६६) । वीय छाया १ ६ टी वीका २ ८ जय ३२ टी) । वीय पूययन (महा) ।

पूय न [वि] धनि धरी (दे १ २६) ।

पूय पुं [पूय] १ पुन-विरोध गुवापी का भाव (पञ्च) । २ न. कन-विरोध गुवापी (म ३४२) । देवो पूय । पकडी 'पकडी की [पकडी] गुवापी का वेड (पञ्च २३ ७६, वल्ल १) ।

पूय न [पूय] छायाय गुवापी धावि गुवराय, वसन-भाय करना देव-मिहर वराया धावि वन-मपुन के दिव का भाव 'वपिवालि ददुवायि' (म ७११) ।

पूय वि [पूय] १ वीयन मुह (छाया १ ३; वीर) । २ न. लकायार का विरोध वा

जपवात (संवीय ३८) । ३ वि पूय भावि से छात्र-गुन-विधि किया हुमा (छाया १ ७-पञ्च ११६) ।

पूय न [पूय] वीय कुर्कन रय वल्ल दे निकता हुमा कता खरेद विमया हुमा नून (वल्ल १ १ छाया ३ ८) ।

पूयण न [पूयन] पूया सेवा (कुमा पीय गुपा २८४ महा) ।

पूयणा की [पूयना] १ ऊपर देवो (वल्ल २ १ वे ७६३; संवीय ६) । २ काम विमुपा (पुय १ १ ४ १७) ।

पूयणा की [पूयना] १ पुन-मपुन दे वान, पूयणी) माकिनी (पुय १ १ ४ १३) । विमया ४१ गुपा २३ वल्ल १ ४) । २ वावर, मेदी मेपी (पुय १ १ ४ १३) ।

पूयय वि [पूयय] पूया कतेवाता (पुर १ १ ४४) ।

पूयर देवो पोर = पूर (वा १४ की १३) ।

पूयल पुं [पूय] वपय पूया धाव-विरोध (हि १ ८८) ।

पूयखिया की [पूयिका] ऊपर देवो (पञ्च ४) ।

पूया की [वि] पिठाक-गुहीला मुवाविट्ट की (हि १ २४) ।

पूया की [पूया] पूयन वर्या सेवा (कुमा) । मय न [मय] पूय के सिद्ध निव्यायिज वोनन (वृह २) । मड पुं [मड] पूनोवन (पुन ८२) । 'वड पुं [रय] पसत-नयन के वसन एक राजा का भाव एक संका-वति (पञ्च २ २३६) । 'विह, वड वि [ह] वका-वोष (मुपा ४६१ मनि ११८) ।

पूयाविह वि [पूयावाय] पुनित-पूयन (ज ६ १ टी-पञ्च ४४२) ।

पूय वि [पुति] १ कुर्कनी कुर्कनराया (पञ्च ४४ २४ ज ७२८ टी वंनु ४१) । २ धन-विन (पञ्चा १६ २) । ३ टी कुर्कन ४ धनविमता (मुं ३८) । ४ विजा का एक वोन पुति-करी (नि २९८) । ५ रोच-विरोध एक माकिना-पीय माका-वोष (विने २ ८) । ७ पूय, वीका 'वपुन-विमड' (महा), पूर वल्लदिरुम' (पुर १ ४ ४६) 'वड कुली

cc 01 4337 r (c).

पेच्छय वि [वे] को देखे स्त्री को बहनेवाला
हस्त-मात का प्रक्रियायी (वे १ ३०)।

पेच्छा की [प्रेक्षा] प्रेक्षण समाप्ता के
नष्टक-पेच्छकको सिद्धाधिकारवाला बह
मुचलकीवि न निश्चिरेव (अप १ ३०। तुर
११ १० दीप)। देखो पेच्छा। 'पर
[गृह] देखो हर (अ ४ २)। संक्षय
पु [मण्डप] मान्य-गृह, केवल धार्मिक में
देवता के बैठने का स्थान (पञ्च २१३)।
हर न [गृह] नष्टक-गृह, केवल-समाप्त का
स्थान (पञ्च ८ ५)।

पेच्छि वि [प्रेक्षिन्] प्रेक्षक गटा (वेद
१ ३) या २१४)।

पेच्छिक्क वि [प्रेक्षिक्] १ निरीक्षण कर
नोक्ति (कुमा)। २ न निरीक्षण करनेवाला
(तुर १२ १८३) या २१३)।

पेच्छिक्क वि [प्रेक्षिक्] निरीक्षण गटा (पा
१७४ ३११)।

पेक्ष देखो पृ = का।

पेक्ष पुन [प्रेमन्] प्रेम अनुप्राण (सुष २
३, २२)। व्यापा। कल ११; वेद्य ११४)।

हंसि वि [हंसिन्] अनुप्राण (आमा)।

पेक्ष वि [प्रेमस्] प्रत्यक्ष प्रिय (वीप)।

पेक्ष वि [प्रेमस्] प्रेम प्रतीक (उप)।

पेक्ष देखो पेर = प्र + ईरम्।

पेक्षस्त [वे] प्रत्यक्ष (वे १ १७)।

पेक्षस्ति वि [वे] संवर्धित (पञ्च)।

पेक्षा देखो पेक्षा (वीप १४५ हे १ २४)।

पेक्षास्ति वि [वे] विपुल विस्तार (वे १ ७)।

पेक्ष न [वे] पद उत्तर (विप, पञ्च १)।

पेक्षे }

पेक्षे देखो पिटु = पिट (वीप १)। प्राह ३

प्रत्य)।

पेक्षे देखो पक्षय नक्षत्रप्रक्रिया (संवीप १८)।

पेक्षस्ति पु [वे] प्रत्यक्ष धार्मिक केवलवाला

वर्धित (वे १ २३)।

पेक्षस्ति न [पेक्षस्ति] समुह, बृहत्, नक्षत्र-
पेक्षस्ति हंसिन्वा माण (संवीप १३)। गुणा

३४५। तिरि १११ महा)।

पेक्षा की [पेक्षा] १ मान्यता फेरी (वे ३,

३) महा)। २ पेक्षाकार अनुप्राण गृह-वर्धित

में विचार-प्रत्यक्ष (उप १ १६)।

पेक्षास्ति पु [वे] पेक्षास्ति बड़ी मान्यता बड़ी
फेरी (गुणा ११)।

पेक्षास्ति पु [पेक्षपति] बृहत् का मान्य (गुणा
२४५)।

पेक्षा की [पेक्षा] मान्यता (गुणा २४)।

पेक्ष की पु [वे] वर्धित प्रेक्षा (वे १, ८)।

पेक्षा की [वे] १ वर्धित प्रेक्षा। २ द्वार,

वर्धना। ३ वर्धित प्रेक्षा (वे १ ८)।

पेक्ष देखो पीठ = पीठ (हे १ १ ६)। कुमा)।

'कट्या पेक्ष दधिया कल एता पविता' (दुप

११७)।

पेक्षास्ति वि [वे] १ विपुल (वे १ ७)। बह)।

२ अनुप्राण गौणाकार (वे १ ७)। पक्षय पाप)।

पेक्षास्ति [पीठवत्] पीठ-वृत्त (पञ्च)।

पेक्षास्ति पु [पेक्षास्ति] १ साधन बर्ष का धार्मिक

मासी निम्नरेव 'पेक्षा' अनुप्राण धार्मिकवि

नक्षत्रप्रक्रिया (पञ्च ४६)। २ गृह्य का पुनर्

में बहती निवार (पञ्च ४७)। ३ एक ब्रह्म

बर्षा केवल बहती का विचार (पञ्च ४८)।

पेक्षास्ति [पीठवत्] पीठ-वृत्त (पञ्च)।

पेक्षास्ति [पीठवत्] पीठ-वृत्त (पञ्च)।

पेक्षास्ति [पीठवत्] पीठ-वृत्त (पञ्च)।

पेक्षास्ति [पीठवत्] पीठ-वृत्त (पञ्च)।

पेक्षास्ति [पीठवत्] पीठ-वृत्त (पञ्च)।

पेक्षास्ति [पीठवत्] पीठ-वृत्त (पञ्च)।

पेक्षास्ति [पीठवत्] पीठ-वृत्त (पञ्च)।

पेक्षास्ति [पीठवत्] पीठ-वृत्त (पञ्च)।

पेक्षास्ति [पीठवत्] पीठ-वृत्त (पञ्च)।

पेक्षास्ति [पीठवत्] पीठ-वृत्त (पञ्च)।

पेक्षास्ति [पीठवत्] पीठ-वृत्त (पञ्च)।

पेक्षास्ति [पीठवत्] पीठ-वृत्त (पञ्च)।

पेक्षास्ति [पीठवत्] पीठ-वृत्त (पञ्च)।

पेक्षास्ति [पीठवत्] पीठ-वृत्त (पञ्च)।

पेक्षास्ति [पीठवत्] पीठ-वृत्त (पञ्च)।

पेक्षास्ति [पीठवत्] पीठ-वृत्त (पञ्च)।

पेक्षास्ति [पीठवत्] पीठ-वृत्त (पञ्च)।

पेक्षास्ति [पीठवत्] पीठ-वृत्त (पञ्च)।

पेक्षास्ति [पीठवत्] पीठ-वृत्त (पञ्च)।

पेक्षास्ति [पीठवत्] पीठ-वृत्त (पञ्च)।

पेक्षास्ति [पीठवत्] पीठ-वृत्त (पञ्च)।

पेक्षास्ति [पीठवत्] पीठ-वृत्त (पञ्च)।

पेक्षास्ति [पीठवत्] पीठ-वृत्त (पञ्च)।

पेक्षास्ति वि [प्रेमिन्] प्रेम अनुप्राण (सुष
१८५ टी)।

पेक्ष देखो पेक्ष (हे २ ६५ ३ २३) पु
१२५ माण ११३)।

पेक्षा की [प्रेक्षा] कल-विरोध (विप)।

पेक्षा की [प्रेक्षा] कल-विरोध बड़ी।

(उप ४३)।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

पेक्ष क [प्र + ईरम्] १ पक्षता।

१ १ ८) 'पोमनाई' (सुख ६) पक्ष १
४६) । २ न मोक्ष (पक्ष २६५ है १
११६) । 'रिधमाय' पुं [स्तिरामय]
पुन्यम-रक्ष्य पुन्यम-रक्षि (मय ३३
१) । पक्ष परियट्ट पुं [परिवर्त]
१ समस्त पुन्यम-रक्ष्य के साय एक-एक परमायु
का संयोग-विशेष । २ समय का एकत्रय
परिमाण-विशेष समस्त कालकर्म-परिमित
समय (काल ३, ८६; मय १२, ४ ठा ३
४) ।

योगसिद्धि वि [पुद्गादिन] पुन्यवला पुन्य
पुन्य (मय ३ १०—पक्ष ४२२) ।
योगसिद्धि वि [पुद्गादिन] पुन्य-मय पुन्य
सम्पत् पुन्य का (विषय १२४) ।

पोष वि [वि] सुनुना, कोमल कुनवती में
पोष (वि ६, १) ।

पोष वि [वि] १ पचा, निवार (छाया १
१—पक्ष १४) । २ क्षतिनिवार (पक्ष १
१—पक्ष १४) । ३ मजिन (मि ११) ।

पोषक पक्ष [मोक्ष + पोष] कल्पना
ऊँचा जाता । बड़ा पोषक (पुर १३
४१) ।

पोषाहण न [प्रस्ताहण] उत्तेजन (वि ३
१३) ।

पोषाहण वि [प्रस्ताहण] विशेष लब्धा
हित क्रिया क्रम, उत्तेजित (पुर १३ २२) ।

पोष्ट पुं [पुत्र] लक्ष्मी 'एनैर' चारव
पोष्टेण (बन १ टी) ।

पोष्ट न [र] पट लवर, मछली में 'पोष्ट' (वि
६ ६३) छाया १ १—पक्ष ११) पोषक
७६) या मछ १७२, २८२, छ ११३।
७१३) जग पुन्य २ १२, गुण २४४
प्राज्ञ १०७ पक्ष ११३) न २) । साधु पुं
[धाद्य] एक पञ्चाशक का नाम (वि २
२४२ २२) । सारणी की [सारणी]
महीवार पक्ष (पक्ष ४) ।

पोष्ट पुं न [वि] पोष्टा पट्ट, पट्टी
पाष्ट [कर्मविशेष] विशेष कर्मविशेषाव-
हसिपति । न मुद्रा धर्मगोष्ट (गुण
१२२) है २, २४ छ १) ।

पोष्टिका की [वि] पोष्टी मछरी (पुन्य
२ १०) ।

पोष्टिका वि [वि] पोष्टी पञ्चमाला,
मछरी-बाहुक (मि २१) ।

पोष्टिका [वि] वेतो पोष्टिका (उप ५
१८७ पुर १२७ ११ गुण २, १७) ।

पोष्टि की [वि] खर-पेछी (गुण्य २) ।

पोष्टि पुं [पोष्टि] १ चातुर्वर्ग का शरीर
नवर्ग शरीर-विन-देव (मय १२३) ।

२ चातुर्वर्ग के शरीर शरीर विन-देव का
पुन्यशरीर नाम (मय १२४) । ३ भगवान्
महावीर का मुख्य से छठवें भव का नाम
(मय १०४) । ४ एक कैम मुनि विष्टे
मन्वान् महावीर के समय में शरीर-नाम
कर्म बँधा का (ठा ६) । ५ एक कैम मुनि
(पक्ष २ २६) । ६ देव विशेष (छाया १
१४) । ७ वेतो पोष्टि (पक्ष) ।

पोष्टि की [पोष्टि] पवित्र-बाहुक नाम
एक की का नाम (छाया १ १४) ।

पोष्टि पुं [पोष्टि] एक कवि का नाम
(कल्प) ।

पोष्टर्षी की [मोक्षपरी] १ चातुर्वर्ग मास की
पूर्णिमा । २ शरीर की समावस्था (गुण्य
१ १४) ।

पोष्टि पुं [वि] भगवान् महावीर के
बास वीसा बैकर धनुसर-विमान में उत्पन्न
एक कैम मुनि (बन) ।

पोष्टि न [वि] दुष्ट-विशेष (पक्ष १—
पक्ष १३) ।

पोष्ट वि [मोक्ष] १ समर्थ (पक्ष) । २ मित्र
बन्धु । ३ प्रपन्न । ४ प्रसन्न, जीवन के बाध
की धर्मसाधना (उप ५ ८६ गुण २२४
रक्षा मा—माहव ११६) । वाय पुं
[वाह] प्रविष्टा-मूक प्रपन्नमान (मा
२२२) ।

पोष्टा की [मोक्ष] १ शीत से पचपल का एक
की की (गुण १८२) । २ नायिका का एक
सेव, शूङ्गार पक्ष में काम-काय धारि शब्दी
तद्वद् भाग्यशाली (प्राज्ञ १) ।

पोष्टि पुं की [मोक्षमय] प्रीति, प्रीति
(मोक्ष २) ।

पोष्टी की [मोक्ष] ऊपर वेतो (गुण ४ ७) ।

पोष्टि वि [वि] पूर्ण (वि ६ २८) ।

पोष्टि की [वि] पूर्ण से बंध हुआ लक्ष्मी
(वि ६ ११) ।

पोष्ट वेतो पोष्ट = पोष्ट (मोक्ष १ छाया
१ ८) ।

पोष्टज्या वेतो पोष्टजा (उप ५ ४१२) ।

पोष्ट पुं [पोष्ट] पुन का पुन पोष्टा (दे २
७२ या १४) ।

पोष्ट न [पोष्ट] प्रबहु लोका विनात्ममि
धोर्माध्याय सम्पाणि ऐण पोष्टाणि (उप
२६७ टी) ।

पोष्ट पुं न [पोष्ट] १ बन्ध कपडा (या
पोष्टा) १२ धोत्र १८ कल्प ४ ११२) ।
२ पोष्टी कटी-बन्ध (गुण्य १ १८ कट
बन्ध ८४ यावक २१ टी मछा) । ३ बन्ध-
बाहुक (वि ६ ८) ।

पोष्ट पुं [वि] पोष्टा वृषण प्रबहुकोय
(वि ६ १२२) ।

पोष्टि न [पोष्टि] बन्ध, सूची कपडा (अ
६, १—पक्ष ११८ कट २ २६ वि) ।

पोष्टि वि [पोष्टि] १ बन्ध-बाध । २
पुं लक्ष्मी का एक सेव (मीन) ।

पोष्टिका की [पोष्टिका] पुन की लक्ष्मी
(रक्षा) ।

पोष्टिका की [वि] चतुर्विध भन्नु की
एक नाति (उप १६ १४७) ।

पोष्टिका की [पोष्टिका पोष्टी] १ पोष्टी
पोष्टी १ पत्नी का बन्ध, डाढ़ी (वि २
११ १) । २ धोत्र बन्ध बन्ध-बाहुक 'बन्ध-
पक्षपाय पोष्टी दुष्ट बन्ध' (छाया १
१—पक्ष २३ वि २४ ६) 'दुष्टोत्पत्ति' (वि २ १) ।

पोष्टी की [वि] काय मीरा (वि ६ ६) ।

पोष्टिका वेतो पोष्टिका (छाया १ ८—
पक्ष २३६) ।

पोष्ट पुं न [पुन] क १ बन्ध, कपडा
पोष्ट्या (छाया १ ११—पक्ष १०६) । २
पोष्ट्या १ वेतो पुनका 'पोष्ट्या' बन्ध वि
मिच्छा (बन्ध या १२) गुण २८६ वि २
१४२६ छ १ प्राय मीन) ।

पोष्टा की [प्राय] मोक्षान् मुनोपति
(उप २ ११) ।

पोष्टार पुं [पुनकधर] पोष्टी निवेदना,
पोष्टी बन्ध का नाम करवेना विनो
वातरी निवेदना (मीन १) ।

*पुष्पाञ्जलि न [स्फुरन्ति] भाषित (शब्द वा ५४१)।

पुत्र पेक्षो पुत्र (कृपा रंज) ।

एफोड्यम रेडो फोड्य (ग्रा ३५१) ।

प्रसू (धृ) णो पस्स = ह्य् । प्रसूति (ह्रि
य १२१) ।

प्राप्स्व { (अप) षो पाय = प्राप्स् (हि ४
प्राप्स् { ४१४४ कुमा) ।

प्रिय (अप) मेडी प्रिय = प्रिय (दि ४ १२५,
कुमा)।

प्रमाण न [६] रूप पद्धत बल का विचार
(५५)

प्रेर्यङ्ग नि [रे] श्रुतं व्या (वि १ ४) ।

॥ इयं तिरिपावुमसदमहृण्यवन्मि यमारावसदसंनखो
सत्तावीजमो तरंगो पश्चिमतो ॥

सप्तमीरात्रौ तृतीया पश्चिमतो ।।

५

फ पृ [क] मोठ-स्थानीय व्यापक बर्ण-विशेष
(मात्र)।

पर्वत मन्त्र [२५] शीमा विज्ञान करणम् ।
 पर्वत, पर्वत (१५ १२५) अथ १२ ५३ ।
 यह पर्वत पर्वतमान (१५ १२ ५३)
 अथ १२ ५३ ।

पञ्च पुं [स्पन्द] विविध बालन (पद्मः पश्य)।
पञ्च न [स्पन्दन] ऊपर बैठो (विसे ? वाता-
वे २, ५३; प्रायः)।

पञ्चमा श्री [स्मन्वना] अमर वेद्यो (सुषमा
व दी) ।

पञ्चमि ति [स्पष्टित] १ कुम्भ द्वितीया कुम्भ
पञ्चमि कुम्भ (पञ्चम) । २ द्वितीया कुम्भ द्वितीया
पञ्चमि (बीज ३) ।

फाँक (घप) फा [क् + गम्] उच्चारण
कम्प (विग १४४ ३) ।

पुष्पस्य पु [रे] सदा-भेद, मातृ-पितृ (१, १)।

फणपण्ड (भा) वि [कम्प्यामित कम्पित]
कंपावा इत्या कम्प-धातु (पिप्प)।

नईस एक [बिसम् + बह] बसल्य प्रभासित
इना प्रभास-विषय होना, प्रभासत प्राप्ति

होना । चंदर (ई ४ ई १४) । प्रयो, मुला
चंदरिही (मुम्य) ।

पौनः षष्ठ [सप्तम] कृता । पौनः षष्ठि (दि
४ १७२) प्राक् २७) । कर्म पौनःषष्ठि
(कृता) ।

फैसल पुं [स्पर्म] लार्वा कृता (पत्न्या प्राप्ता
मार्ग २७- या २९९)।

फौजग न [कम्प्युन] सुना, स्पष्ट करना (का
३३ टी. बी. ४३ मी. २६)।

पाँसण हि [पांसन] अपसण, अपमण 'पुन
पाँसणो' (पुण ९ अ॥ स १३५) मणि) ।

प्रांसाज वि [वि] १ पुष्प, धंयठ । २ बलिग,
मैवा (वि १ अ०) ।

पं.मु. ६ [६] पु. ७, अ. १ (६, २) ।
पं.मु. ७ [६] नवमालिका पु. ७-अ. १

फर्रुखा की [फर्रुखा] राज्य का विषय

फगु वि [फगु] १ असार, निर्वाह पुष्प

(सुर = १; शीघ्र १६ या १६६ या) ।
१ जी. यन्त्रात् सञ्चितत्वात् की प्रथम शिष्या

(ब्रह्म ११३) । मित्रं पुं [मित्र] स्वभाव
व्याप्य एकैव भुवि (कर्म) । शक्तिराय पुं
[मित्र] स्वभाव (कर्म) । शक्तिराय पुं

जो ["मी"] इस ध्वनिसंज्ञी काष्ठ के पंचम स्वर में होवेइसी प्रमाण है। प्रमाण (विचार)

 $\mathbb{R}(x)$

फगु धू [हे फगु] बल्लम म फगु
फगु (हे धू मर) ।

फमसुन वु [फमसुन] १ मास-निलेप
फमसुन वु निलेप (पाच वर्य) । २ फमसुन
फमसुन फमसुन (वरा ११) ।

काशुजी की [काशुजी] १ काशुजी मास की
पुष्टिमा (१६) गुज १ १) २ काशुजी मास
की अमावस्या (गुज १ १) ३ १६ अमा-
वस्या की की (गुज)।

पद्मगुणी श्री [पद्मगुनी] गङ्गाधर-स्वरूप (व्र
२, ३)।

पदार्थ [संज्ञा] पदार्थ [संज्ञा] । पदार्थ
(संज्ञा) ।

पञ्च एक [स्फट्] १ कतिना । २ खेवता ।
पञ्च. 'पञ्च' पञ्चमाणीधो' (ध्रुवा १११) ।

फा. न. [३] धर्म का दर्शन खण्ड (वि. ६)

फल युग्म [बि फल] बाँप की पत्था (बि ९)

फाजली [३] पैसी फाजली (अ २३ अ) ।

(भाषा १ २३ वचन ३२ २३ वाचा मीप)।
म. वि. [२३] २३३३३३ (३३ ३३ ३३)

बैठ)।

फुरफुर धक् [पोस्फुरप्] धुव कोपना
करवतना लक्षणा। फुरफुरेया (महाणि
१)। बह्. फुरफुरेव, फुरफुरेव (पुर १४
२११ स ११२ २१२)।

फुरिज नि [सुरिज] १ कमित, दिवा हुमा
करका हुमा बसित (रि ६, ४४ सुर ३,
२२६ या ११७)। २ दीत (रि ६ ४४)।

फुरिज नि [रि] निवित (रि ६ ४४)।

फुरसुर रेवो फुरफुर। बह्. फुरसुरेव, फुर-
फुरेव (कण्ड १ ३ निव १३)। सुर ७
२११/१ याया १ ८—पत्र १११)।

फुर देवो फुर = लुट्. फुरह (नाट)। फुरे
(भव) (निव)।

फुर (भव) रेवो फुर = लुट्. फुरा (निव)।

फुर (भव) रेवो फुर = लुट् (निव)।

फुर (भव) रेवो फुर = लुट् (निव)।

फुरिज रेवो फुरिज = लुट् (निव ३, १)।

फुरिज (भव) रेवो फुरिज (निव)।

फुरिज पुं [सुरिज] धनिज-कस (याया १
१/३६ ११२ मस)।

फुर धक् [फुरत्] फुरा भुव-भुव होमा
विषय। फुरह, फुरह, फुरह (रि
कण्ड १४)। फुरिज (रि २ २१)। धनि
फुरिज (या ८)।

फुर रेवो कम = लुट्. फुरह (नाट १४)।

फुर न [फुर] १ इव भुव (हुमा बसित
२)। समत १४१; बसित १)। २ फुरा
हुमा भुवित (महा याया १ १—पत्र १८
हुमा)। मासिधा की [मासिधा] फुर
बेकनेवली मासाकार की की मासिध (पुर
१ ४४)। बसि की [बसि] भुव-भुव
सहा (याया १)।

फुरेव पुं [फुरेव] भुव-भुव भुव-भुव
भुव (या २११ १)।

फुरेव पुं [रि] भुव, भौव (रि ६, ४४
याया हुमा)।

फुरा न [फुरा] भुव की मासिधाला
भुव न मासिधाला (भौव)।

फुरा न [फुरा] भुव (भुव १२२)।

फुरा की [फुरा] भुव की मासिधाला
भुव न मासिधाला (भौव)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

फुरा की [रि] भुव की मासिधाला
(पण्ड १—पत्र ११)।

કુદરતી સંમાર્જની પદ્ધતિ

६१)।

न बंदुरा की [पम्दुरा] पत्तन-शासक, बज
निम्नेहि बंदुरापो, मुसेहि तुए' (ब ७२५)

पुष्पों का व्यापक में सम्मिल्य हो वह कर्म
(कर्म १ २४ ३१ ३२ ३३ ३४)।

बंभणया श्री [बम्भन] बम्भन (कम्) ।
बंभणी श्री [बम्भनी] विद्या-विशेष (पठन
५ १४२) ।

बंभय वैभो बंभय (एभि ४२) ।

बंभय पुं [बम्भय] १ घाई, प्राण । २
मित्र बन्धु, दोस्त । ३ मन्त्रेण, सर्वो
वैद्यः । ४ माता । ५ पिता । ६ माता-पिता का
सम्बन्धी यामा भावा द्यादि (हे १, ३
प्राप् ७६ उत १ १४) ।

बंभाप (घटो) घट [पम्भय] बंभाता
बंभाता । बंभापवति (वि ७) ।

बंभाविभ वि [बम्भित] बंभावा दुषा (गुण
३२२) ।

बंभिम वैभो बम्भ (गुण १ २, १ १५
वर्तति २६) ।

बंभु पुं [बम्भु] १ शरीर, प्राण । २ माता ।
३ पिता । ४ मित्र दोस्त । ५ सम्बन्ध
मन्त्रेण, लैय (गुण ३ माता प्राप् १ न
गुण १६ २४१) । ६ कम्भ-विशेष (वि ७)
बीय पुं [बीय] कम्भ-विशेष, कुम्हारिण
का पै (वल्ग १६ कुमा) । बीयका पुं
[बीयक] घड़ी घर्ष (शाय १ १ कम्भ
का) । बच पुं [बच] १ एक शैली का
नाम (महा) । २ एक शैल मुनि का नाम
(पञ्च) । सर्वे बर्दे की [सर्वी] १
ज्वालाय मन्त्रिणाय श्री कुम्भ लाभी का नाम
(छाया १ पञ्च १६ छम् १६४) । २
स्नान-क्याय श्री-विशेष (महा पञ्च) ।
तसरी श्री [श्री] श्रीराम राजा की पत्नी
(विना १ १) ।

बंभुर वि [बम्भुर] १ सुन्दर, पद्म (पञ्च) ।
२ मन्त्र मन्त्र (पञ्च २ २) ।

बंभुरिय वि [बम्भुरित] १ विविध (पञ्च
३ ३) । २ मन्त्रीय, मन्त्रा दुषा (पञ्च
२२१) । ३ प्रभुति कुम्भकुम्भ । ४ विभुति
(पञ्च २२१) ।

बंभुज पुं [बम्भुज] वैद्य-गुण घण्टी-गुण
(गुण १ १) ।

बंभुज पुं [बम्भुज] इन्द्र-विशेष कुम्हारिण का
पै (त ३१२) ।

बंभोष्ट पुं [वे] वेष्ट वेष्ट वेष्ट (हे
६ ५६ पञ्च) ।

बंभु पुं [बम्भु] १ बम्भ विभाता (बम्भ
१ ३१ टी ६६ २२ कुम्भ २ ३) । २ बम्भान्
शान्तिनाम वा शान्तिनामिनाम् बम्भ (वीति
७) । ३ कम्भान् वा शान्तिनाम् हे (अ २
१—पञ्च २२१) । ४ पर्वत वैश्वलोक का इन्द्र
(अ २ ३—पञ्च २२१) । ५ बाधुर्न नक्षत्रा
का पिता (अय १२२) । ६ द्वितीय बलवै
वीर बानुवै का पिता (अय १२२) । ७ अ—
पञ्च २२१) । ८ पर्वत-पर्वत प्रसिद्ध एक
शैल (पञ्च १७ १) । ९ बम्भान् मित्र
(कुम्भ ३१) । १० बम्भर्त राजा का एक
वैद्य-गुण (अय १२२) । ११ पिता
का नामां प्रसिद्ध (अय २१) । १२ कम्भ-
विशेष (वि ७) । १३ ईश्वरान्तराष्ट्र विभी
(अय २२) । १४ एक शैल मुनि का नाम
(कम्भ) । १५ गुण एक विद्यापदान वैद्य-
विशेष-विशेष (वेद्य १३१ १३४ अय
१६) । १६ वैद्य अयवर्त (गुण २, १
२) । १७ बम्भर्त (अय १५—श्रीराम
२) । १८ अय अयवर्त (गुण २, २, १) ।
१९ निम्बान् मुञ्च (भाषा १ १ २) ।
२० शौचान्तराष्ट्र अयवर्त (गुण २)
कौत न [कौत] एक वैद्य-विशेष (अय
१६) । कुम्भ पुं [कुम्भ] १ कुम्हारिण बर्त
वा एक बम्भान् पर्वत (अ ४) । २ न. एक
वैद्य-विशेष (अय १६) । बम्भन न [बम्भन]
बम्भर्त (गुण १२१) । बारि वि
[बारि] १ बम्भर्त पालक कर्णविला
(छाया १ १ अय १ २ पुं बम्भान् पर्वत
नाम का एक बम्भान्—प्रभु मुनि (अ
५६ ४२२) । अट, बोट न [बर्त] १
विभु-विशेष (भाषा १५२, ४५ १
७४ कुम्भ, अय ११; अय १४३) । २
विशेष-वापन विम-वापन (गुण २, ३,
१) । ३ अयवर्त [अयवर्त] एक वैद्य-विशेष
(अय १६) । बच पुं [बच] बम्भान् में
कम्भान् बम्भान् बम्भर्त राजा (अ २, ४
अय १२२ अय) । बीय पुं [बीय] बीय
विशेष (अय) । बीयिका श्री [बीयिका]
वैद्य-विशेष का श्री एक शान्ति (अय) । ४ अय

न [माम] एक वैद्य-विशेष (अय १६) ।
मुष्ट पुं [मुष्टि] एक राजा द्वितीय बम्भ
वैद्य का पिता (अय २ १५२) । बारि
विशेष बारि (छाया १ १ अय ११ कम्भ
गुण २७६ नम्भान् राजा) । श्री श्री (छाया
१ १४) । कुष्ट पुं [कुष्टि] अयवर्त-विशेष
एक बम्भान् बारि का पिता (अय ११
२२) । ३ अय न [अयवर्त] एक वैद्य-विशेष
(अय १६) । अयवर्त अयवर्त पुं [अयवर्त] एक
वैद्य, वीरवा वैश्वलोक (अय २२; अय
११) । अयवर्त-विशेष न [अयवर्त-विशेष]
एक वैद्य-विशेष (अय १७) । ४ अय वि
[अय] बम्भान् बम्भान् (भाषा) । बम्भान्
पुं [अयवर्त] अयवर्त-विशेष ईश्वरान्तराष्ट्र
विभी (अय २२) । बम्भ न [बम्भ]
एक वैद्य-विशेष (अय १६) । बम्भ न
[अय] बम्भान् (छाया १ १) । वि
वि [वि] बम्भ का नामां (भाषा) ।
बम्भ वैश्व वैद्य (अ २६ प्राप् १२१) ।
"वति पुं [वति] अयवर्त, बम्भान् बारि का
याम-वैद्य (अय ११; टी १२) । "विना न
[विना] एक वैद्य-विशेष (अय १६) ।
"विना न [विना] एक वैद्य-विशेष (अय
१६) । अयवर्त न [अयवर्त] अयवर्त अय-
विशेष (अय १६) । अयवर्त न [अयवर्त]
एक वैद्य-विशेष (अय १६) । वैश्व वैश्व
वैद्य ।

बंभोष्ट न [बम्भोष्ट] बम्भ, अयवर्त (अय
गुण ४ गुण ११ २२१) ।

बंभय पुं [बम्भय] बम्भान् मित्र (अ २१
गुण २, ११ गुण ११ ४ २
महा) ।

बंभयिका श्री [बम्भयिका] अयवर्त-विशेष
बम्भ-विशेष (गुण २१७) ।

बंभयिका श्री [बम्भयिका] अयवर्त-विशेष
बंभयिका श्री [बम्भयिका] अयवर्त-विशेष
(अय १६) । पञ्च १६, १६, ७२) ।

बंभयिका } श्री [बम्भयिका] बम्भयिका }
बंभयिका } १ बम्भान् का पिता । २ बम्भान्
वैश्व वैद्य । ३ न बम्भान्-वैश्व वैद्य । ४ अयवर्त

बहुला की [बहुला] १ की पैदा (पाप) ।
२ इस नाम की एक की (बना) । बण न
[यन] मण्डप लगी का एक प्राचीन बन
(टी ७) ।

बहुलि पुं [बहुलिन्] स्वप्न-कण्ठ एक
राम-पुत्र (उप ११७) ।

बहुली की [बि] मत्स्य कण्ठ बन्ध (गुण
११) ।

बहुसिद्धा की [बि] बड़े भारी की (बह) ।
बहुसी की [बि] बोधोपेत यन्त्रमालिका केले
की पुष्पों (पठ) ।

बहुसी केतो बहुद (दि २ १११) ।

बहुव्रीहि पुं [बहुव्रीहि] व्याकरण-प्रसिद्ध
एक समास (पणु १५७) ।

बहुव्रि नि [प्रभूत] बहु प्रभु (पठ) ।

बहुव्य पुं [विमोक्त] १ बहुधा का वेद
(दि १ ८८ १ २, २ १) । २ न बहुधा
का पत्र (कुमा) ।

बा नि [द्रा द्वि] दो दो की संख्या-
नाम । इस (पठ) केतो बीस (पिण) ।

ईस देवो बीस (सिं) । जगह की
[नववि] बलदे, १२ (सम ११ कम
१ २१) । पदम नि [नव] १२ बा
(पठम ११, ११) । 'मुन' केतो जगह
(पणु १२) । बाळ, बाळस बीस
[पालासिण] बमलीय बासीय बीस
बा ४३ (बन न ७ म; सम १११
कम; बीस) की बाळ, 'पानीसा (कम
१ १ कम) । बाळसिण नि [नव]
रिश्चम । बमलीय ४३ बा (पठम ४७,
१७) । २, इस नि [दरा] बाळ
१२ 'बामिनामिबरो' (बंभी २२,
कम ४ १ १३, म २ १ १७ कया
की २८ कम) । इस नि [दरा] बाळ
१२ बा (पुप २, १७) । इसी बीस
[दरा] बाळ बीस मंग-मं (पि ४११)

पि) की (पठ) । इस नि [दरा]
बाळ (पुप २, २ २१ म ४१ मग) ।
रसमासि नि [दरामासि] बाळ
मान बा बाळ-मान-दीवधी (पुप १४१) ।

रसम नि [दरा] बाळ का समुह (पौषम
११) । 'रसमरिसि नि [दरावायिक]
बाळ बा का (मोह १ २ कुम १) ।

'रसमरि नि [दरावि] बाळ प्रकार म
(म १) । 'रसाह न [दराह,
दराक्य] १ बाळ बा वि १ कम के बा
हूँ नि नि नि बाळा प्रलय बारी (छाया
१ २ कम बीस मुर १ २२) । रसी की
[पुत्री] बाळ बा वि नि बाळी (सम २२,
पठम ११७ १२ टी ७) । रसुचरस नि
[दरोचरस] एक की बाळ बा (पठम
११२ २१) । रह केतो रस = बहूँ (दि
१ २११) । दृष्टि की [पदि] बाळ,
१२ (सम ७३, पं ३, १८ मुर ११
२१८) केतो (११७) । कम (पण) । देवो
रस (पिण) । बण देवो वस (कुमा) ।
यचर नि [सप्त] बहुचर, ७२ बा
(पठम ७२, १८) । यचर की [सप्त]
बहुचर, ७२ (सम ७१) मग बीस मग
(१११) । बस बीस [पञ्चारा] बस
पञ्च बीस को २२ (सम ७१ मग)
'बाम' होंति विद्यमण (मुह १ १) ।
बस नि [पञ्चारा] बामना (पठम १२
१) । बीस बीस [बिरावि] बासि
२२ (म ७ की १४), की सा (पि ४४७) ।
बीस नि [पिरा] बासि २२ बा (पठम
२ ८२ व ४१) बीस देवो बीस =
विपति (म ७ व १८) । बीसम नि
[बिरावि] १ बासि २२ बा (पठम
२२, ११ पं २१) । २ बमारा बस
वि का बमारा (छाया १ १—पठ ७२) ।
बीसविह नि [बिरावि] बासि प्रकार
मा (सम ४) । सटु नि [पठ] बाळ बा
१२ बा (पठम १२, १७) । सटु की
[पदि] बाळ १२ (सम ७३, पिण) ।
'सी' सीह की [बिरावि] बासी ७२
(म २ ७ म ८१; कम कम ३, १७) ।
सीह नि [बिरावि] बमलीय ८२
बा (पठम ७२ १२२) । हचर (म) केतो
हचरि (म) । हचरि की [सप्त]
बहचर, ७२ (म ८८ मग गुण १११) ।

बाय पुं [बि] बाय मियु (बह) ।

बायप की [बि] ना मत्स्य कुदपी में 'बाई'
(कुम ८७) ।

बाउलया की [बि] १ पञ्चमालिका पुष्पी
वाउलिया की [बि] पञ्चमालिका पुष्पी
वाउलिया की [बि] पञ्चमालिका पुष्पी
वाउलिया की [बि] पञ्चमालिका पुष्पी

बाउस केतो वस (पि २४ पौष १४८) ।
बाउसि नि [बाउसि] 'बहु' बाउस
बाळा (मुह १ १) ।

बाउसिया की [बहुवि] 'बहु' बाउस
बाळी (छाया १ ११—पठ २ १) ।
बाउ वि [बाउ] १ पठिम बाउस मग
(उप १२) । पाय मग) । 'कचर पुं
[बाउ] लोकार-मूक उक्ति (पि १११) ।

बाय पुं [बि] १ पठम इस कचर का पठ ।
२ नि मुग (दि १ १७) ।
बाय पुं की [बाय] १ कुम-विरोध कचर का
का पाय (पठ १७—पठ २२१ कुमा) ।
२ पुं यह बाय (कुमा, पठ) । ३ पाय की
बमारा (मुर ११ २४१) । वचन [पाय]
लुपी, लुपी (दि १ १८) ।

बाय केतो बाह = बाह । कम बायामाय
(पि १११) ।
बाया की [बाय] विरोध (बर्म ११७) ।
बायि नि [बायि] विरोधना प्रयास
विद्य (बर्म २११) ।

बायप केतो बहूँ (दि १ १७ पठ) ।
बाय न [बाउ] बह-बहूँ (पा २१) ।
बाय नि [बाउ] १ स्तुन मीय बायप
(पठ १ ११ पठ ११२, दि ४७) । २ नरनी
गुण-बमारा (कम २ १ ३, ७) । 'नाम
न [नाम] बम-विरोध स्तुन-ग-हेतु कर्म
(सम १७) ।

बाय न [बाउ] बमारा (दि १ ७१) ।
बायप की [बाउ] स्वप्न-मण्डप मग
की बायप की बायप-मण्डप में 'बाय' के
की नाय वि प्रसिद्ध है (उप २२ २२ २७) ।
बायप की [बायप] १ कचर बाय (म
१११ छाया १ ३, का १४८ टी) । २
मग-मण्डप मग की बायप विरोध (विचार
१२१) ।

बायप की [बाय] स्वप्न-मण्डप मग
की बायप की बायप-मण्डप में 'बाय' के
की नाय वि प्रसिद्ध है (उप २२ २२ २७) ।
बायप की [बायप] १ कचर बाय (म
१११ छाया १ ३, का १४८ टी) । २
मग-मण्डप मग की बायप विरोध (विचार
१२१) ।

बायप की [बाय] स्वप्न-मण्डप मग
की बायप की बायप-मण्डप में 'बाय' के
की नाय वि प्रसिद्ध है (उप २२ २२ २७) ।
बायप की [बायप] १ कचर बाय (म
१११ छाया १ ३, का १४८ टी) । २
मग-मण्डप मग की बायप विरोध (विचार
१२१) ।

बाय पुं [बि] बाय मियु (बह) ।

बायप की [बि] ना मत्स्य कुदपी में 'बाई'
(कुम ८७) ।

बाउलया की [बि] १ पञ्चमालिका पुष्पी
वाउलिया की [बि] पञ्चमालिका पुष्पी
वाउलिया की [बि] पञ्चमालिका पुष्पी
वाउलिया की [बि] पञ्चमालिका पुष्पी

बाउस केतो वस (पि २४ पौष १४८) ।
बाउसि नि [बाउसि] 'बहु' बाउस
बाळा (मुह १ १) ।

बाउसिया की [बहुवि] 'बहु' बाउस
बाळी (छाया १ ११—पठ २ १) ।
बाउ वि [बाउ] १ पठिम बाउस मग
(उप १२) । पाय मग) । 'कचर पुं
[बाउ] लोकार-मूक उक्ति (पि १११) ।

बाय पुं [बि] १ पठम इस कचर का पठ ।
२ नि मुग (दि १ १७) ।
बाय पुं की [बाय] १ कुम-विरोध कचर का
का पाय (पठ १७—पठ २२१ कुमा) ।
२ पुं यह बाय (कुमा, पठ) । ३ पाय की
बमारा (मुर ११ २४१) । वचन [पाय]
लुपी, लुपी (दि १ १८) ।

बाय केतो बाह = बाह । कम बायामाय
(पि १११) ।
बाया की [बाय] विरोध (बर्म ११७) ।
बायि नि [बायि] विरोधना प्रयास
विद्य (बर्म २११) ।

बायप केतो बहूँ (दि १ १७ पठ) ।
बाय न [बाउ] बह-बहूँ (पा २१) ।
बाय नि [बाउ] १ स्तुन मीय बायप
(पठ १ ११ पठ ११२, दि ४७) । २ नरनी
गुण-बमारा (कम २ १ ३, ७) । 'नाम
न [नाम] बम-विरोध स्तुन-ग-हेतु कर्म
(सम १७) ।

बाय न [बाउ] बमारा (दि १ ७१) ।
बायप की [बाउ] स्वप्न-मण्डप मग
की बायप की बायप-मण्डप में 'बाय' के
की नाय वि प्रसिद्ध है (उप २२ २२ २७) ।
बायप की [बायप] १ कचर बाय (म
१११ छाया १ ३, का १४८ टी) । २
मग-मण्डप मग की बायप विरोध (विचार
१२१) ।

बायप की [बाय] स्वप्न-मण्डप मग
की बायप की बायप-मण्डप में 'बाय' के
की नाय वि प्रसिद्ध है (उप २२ २२ २७) ।
बायप की [बायप] १ कचर बाय (म
१११ छाया १ ३, का १४८ टी) । २
मग-मण्डप मग की बायप विरोध (विचार
१२१) ।

बायप की [बाय] स्वप्न-मण्डप मग
की बायप की बायप-मण्डप में 'बाय' के
की नाय वि प्रसिद्ध है (उप २२ २२ २७) ।
बायप की [बायप] १ कचर बाय (म
१११ छाया १ ३, का १४८ टी) । २
मग-मण्डप मग की बायप विरोध (विचार
१२१) ।

बाय पुं [बि] बाय मियु (बह) ।

बाह्य पुं [बाह्य] १ बाह्य केत (का २१४) ।
 २ बाह्य, विष्णु (मुद्रा प्रामु १११) । ३
 वि पूर्व प्रधानी (पाप) । ४ मया मूलव
 (कप्य) । ५ पुं स्वभाव-व्यापक एक विचार
 राज्ञ (पञ्च १ २१) । ६ वि सर्वव्याप
 सर्वव्यापक (का ४ १) । कश्च पुं [कश्चि]
 तच्छ कश्चि नम्य कश्चि (कप्य) । का पुं
 [का] स्मृत होता पूर्व (मुद्रा) । माह
 पुं [माह] यमराज की सार-सम्पत्ति करने-
 वाला मीकर (पुर १ १२२) । माहि पुं
 [माहिन्] बहो पूर्ववत् सर्व (छाया १
 २—नम ४) । पाय वि [पाय] बाल
 कृष्ण करनेवाला (छाया १ २ १५) । तब
 पुं [तपस] १ प्रधानी की तपस्वी
 (मत्त, दीप) । २ वि प्रधान-पूर्वक एक करने-
 वाला (कप्य १ २६) । तपस्वि वि
 [तपस्विन्] प्रधान-पूर्वक एक करनेवाला,
 पूर्व करनेवाला (वि ४ ३) । पञ्चि वि
 [पञ्चि] आठव लाल करनेवाला कुछ
 करने में लगे हुए मीर कुछ में भलाही (बन) ।
 बुद्धि वि [बुद्धि] व्यपन्न (बल ३) ।
 मरय न [मरय] बाह्य एक का मरय
 सर्वव्यापी की मीर (मत्त मुद्रा १३७) । विपय,
 विपय पुं [विपय] बालक, बालक, बालक
 (छाया १ १) की, 'अपह्णामी बालक-
 धरणी' (का ३, १—नम १ १३) । बाह्य पुं
 [बाह्य] बालक का सार-सम्पत्ति करनेवाला
 मीकर (मुद्रा ४२७) ।
 बाह्य केवो कश्च । एव कश्चि [कश्चि] बल
 की बालकवाला (बाधा १ २ ३, ३)
 बाधा ।
 बाह्य न [बाह्य] बालक, बालक, बालक
 बालक, बालक (का १ १) । केवो कश्च ।
 बाह्य केवो बाह्य = बाल (का १११) ।
 बाह्य पुं [बाह्य] बालक, बालक (का १, २२) ।
 बाह्यगोप्यता की [बाह्य] १ बाल-व्यापक
 व्यापक बाह्य में बालवा बाला बाह्य बाह्य ।
 २ बाली व्यपन्न (का २, २४) ।
 बाह्य की [बाह्य] १ मुद्रा की बालकी
 (मुद्रा) । २ मूल्य की बल घनत्वकी में
 बाली बला बल बल की बालकी (मुद्रा
 ११) । ३ बाल-व्यापक (विप) ।

बाह्यगोप्यता की [बाह्य] विपन्न, बालक
 (मुद्रा १४) ।
 बाह्य वि [बाह्य] बाल-व्यापक, बालक-
 बाला (मुद्रा १४ १) ।
 बाह्यता की [बाह्यता] बाला मुद्रा की
 लक्ष्मी (मुद्रा ३१ मद्रा) ।
 बाह्यता की [बाह्यता] १ बालकपन विपन्न
 (मत्त) । २ बालक बालकी 'विपन्न मूल्यता
 बाली' (बाधा) ।
 बाह्य वि [बाह्य] पूर्व बालक (पाप
 मत्त २६) ।
 बाह्य कश्च [बाह्य] १ विपन्न करता । २
 रोचना । ३ पीका करता । ४ विपन्न करता ।
 बाह्य, बाह्य (पाप १ १३, ३ १ ३७)
 का [बाह्य] (मुद्रा २) । कश्च बाह्यक
 बाह्यगोप्यता (पञ्च १ २६ मुद्रा १४३)
 बाह्य २४४) क. बाह्यगोप्य (कप्य) ।
 बाह्य पुं [बाह्य] कप्य, बाह्य (वि १ ७)
 पाप मुद्रा) ।
 बाह्य पुं [बाह्य] विपन्न (बाध १४) ।
 बाह्य केवो बाह्य (पञ्च १ ३७) ।
 बाह्य पुं [बाह्य] हाथ, मुद्रा (विप २) ।
 बाह्य वि [बाह्य] १ रोचनेवाला (पञ्च १
 ४६) । २ विपन्न 'अपह्णामी बालक
 (पापक ११२) ।
 बाह्य पुं [बाह्य] बालक, बालक, बालक
 का स्वभाव-व्यापक मीर (मुद्रा ६) ।
 बाह्य न [बाह्य] १ बाल विपन्न (बाल
 १२७) । २ विपन्न (पञ्च ११ ३) ।
 बाह्यता की [बाह्यता] अन्तर केवो (बाल
 ११२) ।
 बाह्य केवो बाह्य (बाधा) ।
 बाह्य पुं [बाह्य] बाल-व्यापक (बाध) ।
 बाह्य न [बाह्य] बालक, बालक, बालक
 बालक, बालक (पाप ४४ दीप) ।
 बाह्य की [बाह्य] १ बालक, बालक । २
 विपन्न (मुद्रा १११) । ३ पीका पञ्च
 लक्ष्मी के बालकी पीका (वि १) बल
 १४) ।
 बाह्य की [बाह्य] हाथ, मुद्रा (वि १ १६,
 मुद्रा मद्रा का दीप) ।

बाह्य की [बाह्य] बालक-व्यापक
 (विपन्न ७७) ।
 बाह्य वि [बाह्य] बाह्य (मुद्रा ११-
 बाह्य) वन २७१ मद्रा बाह्य मुद्रा ३२
 १४) वि ४८१) ।
 बाह्य न [बाह्य] बालक, बालक
 (विप २ ७) ।
 बाह्य वि [बाह्य] बाह्य (वि २ १४)
 पाप बाध, उव) । लो ध [तत्]
 बाह्य के (कप्य) ।
 बाह्य वि [बाह्य] बाह्य का (पाप
 २, १—नम १३, मत्त २, न दी) । कश्च
 पुं [कश्चि] बालक-व्यापक का एक
 लो ध पाप विचार, दीप के लो ध
 विचार बाह्य बालक-व्यापक (विप ४७१) ।
 बाह्य वि [बाह्य] बाह्य का बाल
 (मुद्रा २, १ ४२) ।
 बाह्य वि [बाह्य] बाह्य का बाल
 बाह्य के बालक करनेवाला (पञ्च १३)
 उव १ १) वि १११ मीर कप्य) ।
 बाह्य वि [बाह्य] बालक का बाल
 की बालक-व्यापक बालक का बाल
 (मुद्रा २ ७ ३१ २६) ।
 बाह्य वि [बाह्य] बाह्य का (मत्त
 २२२) ।
 बाह्य पुं [बाह्य] १ बाल, मुद्रा (वि
 ११) मद्रा मुद्रा) । २ पुं बालक-व्यापक
 का बाल बालक (मुद्रा ११) । कश्चि
 पुं [कश्चि] बालक-व्यापक का बाल
 बाल बालक का एक बाल (पञ्च १
 पञ्च ४ २३) उव) । २ बाह्य के बाल
 का बाल (पञ्च ४, ११) । मूल्य [मूल्य]
 बाला बाल (कप्य) ।
 बाह्य पुं [बाह्य] स्वभाव-व्यापक एक बाल
 (मुद्रा १ १ ४ २) ।
 बाह्य वि [बाह्य] बालक-व्यापक (मुद्रा
 ४४४) ।
 बाह्य की [बाह्य] बालक-व्यापक
 (बाध) ।
 बाह्य केवो बाह्य (मुद्रा ११) ।
 बाह्य पुं [बाह्य] बालक-व्यापक
 (बाल) ।

बाहुनेर दु [बाहुनेर] कली पाय का बहा
(मनु २१७)।

बाहुनेर न [बाहुनेर] बहुला बहुला
(विह १११) या मुला २७ का ॥ ७)।

बाहुनेर नि [बाहुनेर] ययययय (मुमा
मुला ४६)।

वि वि न [वि] दो २ विवि (हे ४
४१८) न ४ ४ २, २ कम् ४ २ १।
मु १ १४)। 'जिह्व दु [जिह्व] एक
महाहृद ज्योतिष्क देव-विरोध (मुम् २०)।
'हल न [हल] नमा धावि बहु काय
जिह्वे को हलदे बराबर के होते हैं 'बह
जिह्वे सुमिह' (वि १)। 'वाल केओ
वा-वाल (कम् १ १८)। 'याकसय पुन
[याकसय] एक ही केमलीस
१४२ (कम् २ २१)। विह्वि [विह्वि]
को प्रमदर का (वि)। लट्टि की [लट्टि]
बाह्य १२ (मुम् १ १०)। सपरि,
सपरि की [सपरि] बहुर, ७२ (प
११) नीवस २ ६ कम् २ ३)।

वि [वि] नि [वितीय] हुनय (कम् १ ११
विम [विम]। कसाय दु [कसाय]
धमयकलापरल नावक कयाव (कम्
४ २१)।

विम न [विम] दो वा बहुला हुन हुन
(मन नम १ ११) मनु १६)।

विआवा की [वि] नीट-विरोध संज्ञक एके-
बाहा नीट-कय (दे ६, ६१)।

विह्वि दो विह्वि (हे १ ३) व १६४)।

विह्वि दो बीजा (पय)।

विह्वि नि [विह्वि] १ हुनय (हे १
२४४) मनु १६)। २ सदाय बरक करो-
बावा (पय मुर १, १४)।

'जे दु-लमि न दुविवा,
धनरासे वि-यका केर।

बहुलो न वै व विष्वा
हुता परमपयी रोय'
(मु ७ १४२)।

विजय नि [विजय] हुना (हे १ ६४
२, ७२ या २४६)। रोय नि [रोय]
हुना करेयना (दी)।

विजय सक [विजय] हुना करना।
विजये (वि १३६)।

विन न [विन] फलिक का कल्प 'वयल
विट (पाम)। सुय की [सुय] मरिच
वाक 'विनय विनयजयिमा मरिच' (पाम)।

विन दो यो यो यो।

विवि वि [विवि] विनकी लका पीर
बीम मे दो ही लिका ही बह (बीम)।

विदु पुन [विदु] १ सल सेर। २ विनी
मुम्, अनुसार। ३ दोनों म्, पर मय
या। ४ रोवायित का एक विदु, 'विदुलो,
विदु' (हे १ ३४) कम् ४ १ २२) सल
१६) कय हुना। कम् की [कम्]
अनुसार, विनी (वि १६६)। सार न
[सार] १ नीवस पुन, केन लकाय-
विनय (कम् २१) विने ११२६)। २ पु
नीव बं का एक पना राका बरतय का
पुन (विने ८१२)।

विदुदम नि [विदुदम] विदु-मुल विदु
विमिच (पाम मम्)।

विदुदमन नि [विदुदमान] विदुको के
क्याय होना (वि ११ ११३)।

विदुपय न [विदुपय] मनुय के पाव
का एक पयल-नीव (शाह २७)।

विन सक [विन] प्रतिविमिच करना। कम्,
विमिच (मुम् ४६)।

विन न [विन] १ प्रविवा, पुन (मुमा)।
२ हट-विरोध (वि)। ३ न. विमोचन
मुम्नर का पम (उमा) ४ क-वम १२६
पाय हुना ६ २, १६)। ४ प्रतिविम
प्रविमया। ५ यम-कय वाकार, 'कय
बल पसति विमय' (मुप १ १३ क)।
६ मुन लका कय का मयस (मम् नय)।

विमय न [वि] कन-विरोध विमय
'विमय लकाय' (पाम)।

विमिसार केओ विमिसार (मम्)।

विनी की विम्या कन-विरोध, मुम्नर का
पाय (मुमा)। कम् न [कम्] मुम्नर का
कय (मुमा २६१)।

विमोयय न [वि] १ बीम। २ विमर।
३ बीमोना उम्नीय (दे ६ ६८)।

विह सक [विह] रोयल करना। क. दोओ
विहमिच।

विहमिच नि [विहमीय] पुन-यनम (य
४-वम १७३) उमा १ १-वम १६)।

विहमिच नि [विहमिच] १७ उपवि (हे १
१२८)।

विमगाइमा १ दो [वि] बीम-विरोध संज्ञक
विमगाइ २ उमा बीम-मुम्नर हुनय की में
'बय' (दे ६ ११)।

विम केओ बीज विम निव बहिया बहने'
(पम् ११ १६)।

विमर न [विमर] कन-विरोध एक लका
का बीह 'विमरनीयमिह' कुम्नर विम-
खाई सम्मर' (मुमा ११०)।

विमय (मम्) केओ विहम (मम्)।

विह पु [वि] वेदा, मयस पुन (मम्)।

विनी की [वि] वेदी पुनी लकी (मम् हे
४ ११)।

विह नि [वि] वेदा हुमा उपवि
(मम् ४०६)।

विहाल पु [विहाल] नावीर, विहाल विहाल,
विहाल (वि २४१)।

विहालिमा १ की [विहालिम, की]
विहाली २ विनी नावीर विहाली
विहाल (सम्मत १२२) वि २४१)। दोओ
विहालिमा।

विहिस दो विहिस (य १४२ टी)।

विमिच केओ विहम (य २०६)।

विमो की विमो नाय की एक मदी
(विह ४ १)।

विमोय पु [विमोय] १ दो की म्-वार
केओ-विरोध हट मर की मयस दोओ पर
मर के सम्मर मयमर-विम (पम् २ ४-
पम् १११) उमा १ ८-वम १४२) मम्
१ ६)। २ न उमा, उमिया मीमीना
'उमयोम मुनिय लमिमीन' (मम् १ ८)।

विमोय दु [विमोय] मय-विमर (मम्
१३६)।

विमोयय न [विमोयय] दो की म्-वार
केओ एक मर (पम् १, ४-वम १११)।

विमोयय न [वि] उमाय लमिया मीमीना
(उमा १ १-वम ११)।

बोहयेर न [बे] छम्प-विधेय (पाप) ।
 बोहिय पु [बोहिय] १ विस्मर वेन संघ
 थाय । २ वि विस्मर वेन संघथाय का
 भुम्भसी 'बोहियसिधुईयो बोहियसिधुस
 होर ज्यसी' (विदे १ ४१ २३३२) ।
 बोहिय वि [बे] मुसिख-मन्त्र (?)
 'बोहियसिधु बुन मण्ड' (बोधका ३१ टी) ।
 बोहुर न [बे] रमयु बाही-सूत्र (१ ६ २३) ।
 बोहिया की [बे] कपलिन कीही 'बेधरि
 न बहइ बोहियवि पय सखेति केवलि' (वि
 ५ ११३) ।
 बोहर वि [बे] पृथु, विद्याव (१ १ २६) ।
 बोहि केओ बोहि (बोध) ।
 बोहइ [ह] केओ बोहइ (पाप) ।
 बोहइ वि [बोह] बुद्ध-मन्त्र (संभव १४) ।
 बोहउव केओ बुद्ध ।
 बोहइ वि [बे] वरुण बबल (१ ७ ८) ।
 बोपय न [बोचन] बोच निष्ठा उपदेश
 (सम ११६) ।
 बोचव केओ बुद्ध ।
 बोधि केओ बोधि (ठा २ १—पय ४६) ।
 सच पु [सल] छम्पय शरीर को प्राप्त
 प्राप्ति, सर्वत्र के का मन्त्र बोध (मोह १) ।
 बोधिय वि [बोधित] भाविता समर्थित
 (मर्त १ ६) ।
 बोधय वि [बे] दूक (पय धकल ५०
 पय २४१) ।
 बोच न [बुद्ध] भन-विधेय वेर (य २ ।
 १ ३०) पय; कुमा) ।
 बोरी की [बुद्ध] वेर का याव (मोह ४ ६
 १ ३०) कुमा १६४ २३२) ।
 बोस एक [बोस] कुमा, 'संभवो सं
 बोस भिखवसिधुसिधुस संघ बजो' (पाप
 १२४) 'कुल्लं बोसय कर्मा' (सूत्र २६)
 बोसइ, बोसए (संभव १६) 'बेसि य धिपु
 भवे विनायो ज्ञापि बोसि स्यावसि' (सम
 १ १ १) बोसि (विदि १३८) ।
 'बुसमिणो बोय बोसइ बह' (उपर १३३) ।

बोह छक [बोध + कम्प] १ पसार होना
 पुबरा । २ एक उत्पन्न करण 'बूई छ
 एइ, बोधिय जगयो कागिणीवि बोहई' (पा
 ८४) 'पुणी सं बोधेण न बोहइ कयाई'
 (पाथक ३३) । बोसए (बंन) । वेओ
 बोह = पय ।
 बोह पु [बे] १ कलस्य बोहाइत (१ ६
 ३) यका यका कम्पु जय जय ३ ६)
 'हासबोसबुसा' (वीर) । २ समूह 'कम्प-
 पुणेण उद्यमि बोसणे पययुत्तबलबोहे'
 (मोह १ कुलक ३४) ।
 बोसय पुंन [बे] १ मन्त्र बुना ।
 २ कर्ण बोचय 'उत्तुव बोसय पयवेति'
 (विपा १ ६—पय १८) ।
 बोसिह वि [बोहित] बुनाया हुना (बचना
 २८) ।
 बोसिदी की [बे] निधि-विधेय बहरी निधि
 का एक मेरा 'भाहयेपेधरी दामिनिदी बोधि-
 निधी' (यप ३३) ।
 बोह छक [कम्पय] बोचना, कम्पा । बोहइ
 (१ ४ १ मोह ११६ सु ८ १२८)
 धवि) । कर्मा, बोसियर (यप) (कुमा) ।
 ३ बोसियर (यप) (कुमा) । ययो, बोहा
 बह (कुमा) ।
 बोहउ पु [कम्पय] बोध बचन (पा १ ३) ।
 बोहयय वि [कम्पयि] बोलेन का स्वका-
 नावा (वि ४ ४४६) ।
 बोस की [कम्पा] नावा बरा 'नीयबोसय'
 (य १ १३) ।
 बोहायि वि [कम्पय] बुनाया हुना (य
 ४२१ १६६) ।
 बोहिह वि [कम्पय] १ एक । २ न, धमि
 (विदि १ ३ ३८३) ।
 बोधन [बे] लेन वेद (१ २९) ।
 बोह एक [बोधय] १ समझना, जान
 कलना । २ बचना । बोहइ (कम्) । कर्मा
 बोहियर (यप) । बह बोहिह बोहइ
 (पु १३, २४४) यहा) । कम्प बोहियर
 (पु १ १४८, न १३२) । ठेठ बोहइ
 (यपक १७६) ।

बोह पु [बोध] १ जान समझ (वी १) ।
 २ बाणए (कुमा) ।
 बोहइ केओ बोहय (१ १) ।
 बोहण केओ बोधय (अ २ ६, सु १ १७-
 उपर १) ।
 बोहय वि [बोधक] बोध वेनाना जान-
 बाटा (सम १ यामा १ १) यग कम्प) ।
 बोहइर पु [बे] मायय लुधि-पाठक (१ ६
 २७) ।
 बोहारी की [बे] बुनायी संभासी मन्त्र
 (१ ६ २७) ।
 बोहि की [बोधि] १ बुद्ध बने का नाम
 उद्यम की भाति 'बुद्धा बोहि' (उप १६
 १३८) 'बोहो भिणेहि यथिया भवतेरे बुद्ध
 कम्पयपणी' (विहय १३३) संभव १४-सम
 ११६ कय ४८१ टी) । २ यथिया मनुज्या
 बवा (पणइ २ १) । केओ बोधि ।
 बोहिय वि [बोधित] १ भाविता समर्थिता
 हुना (यप) । २ विमज्जि विबोधिह 'एवि
 किरयवराबोधिपयस्वर' (कम्प) ।
 बोहिय पु [बोधिक] मनुज बुपनेवा
 पोर (मिह १; वेस ४४६) ।
 बोहित केओ बोह = बोधय ।
 बोहिय केओ बोहिय = बोधिक (उप) ।
 बोहिय पुंन [बे] प्रवृत्त बहान यमनाम
 मोम (१ ६ २६, य २ १ वेस २६४
 सु २२२ विदि १८३) छम्पय १३७
 सुपा २४४ यवि) ।
 बोहियवि वि [बे] प्रवृत्त-रिक्त (यप
 १३८) ।
 कर्मा केओ बोस (पुपा ५ ६) ।
 कमाय केओ यमाय (पा—सुपा १६) ।
 'कमाय केओ यमाया' किमु यमाया या
 रिदिकायेवि बुद्ध न नुमोइ (सुपा ३६७) ।
 'विम वि [मि] यमन कमेयना, बरा-
 कर्मा 'यमयम' (यामा १ ६ ४ ६) ।
 ओ (यप) केओ यू । बोहि (माह १२१) ।

भमाइअ जि [भमिअ] हुमाया हुया, छिपया
हुया (हे १ ११)।

भमाइ छर [भमय्] हुमाया छिपया।
भमाइ (हे ४ ३०) भमाये (हुमा ११४)।

बइ भमाइत (पठम १ १ ११)।

भमाइ देवा भम = भय। भमाइ (हे ४
१११) भवि।

भमाट दु [भम] भयण भयण बहर
(घोषय २४ टी १३ टी)।

भमाइण न [भमज] हुमाया (ज ४
२७०)।

भमाइम देवो भमाइअ (हुमा)।

भमाइअ जि [भमिअ] हुमाया हुया
छिपया हुया (पठम ११, २४)।

भमाय देवो भमाइ = भयम्। भमाय,
भमाये (नि १११, हे ४ ३)।

भमाम [वि] देवो भमत (हे १ १ १;
गाम)।

भमि की [भमि] १ धावट गयी का बह-
कार भयण (पठम ११)। २ बिभ-भम
करे नी खीछ (विसे ११११)। ३ रो-
विरोध बहर 'भमिपरिमियसरोपी' (हमरी

२८)।

भमिअ देवो भमाइअ (को ४० भवि)।
३ न भमरा; 'भमिअमिअइतदेवोभमिअ'
(वा ११४)।

भमिअ देवो भमाइअ (गाम)।

भमिअज्य } देवो भम = भय।

भमिअ } भमिअ

भमिर नि [भमिअ] भयण करेवाला (हे
२, १४२; गुर १ ११, १ १८)।

भमइअ [भ] नीके देवो 'भमाइ म्भुइ'
(गाम २, ११ १०)।

भमइअ की [भ] नी, नीके के ऊपर नी
रोप-नीपी (पठम ३० २, बीपा घावा
गाम)।

भम } देवो भम = भय। भमइ (गाम
भमइ) (११) भमइ (पा ४१२, ४७०)।

भमइ (हे ४ १११)। भमइ (हुमा)।

भमइ (वा) देवो भमइ (विष)।

भय देवो भय। बइ देवो भयत = भयत।

भय थक [भय] १ सेवा करना। २
बिभय से करना। ३ विभय करना। ४

प्रहय करना। भय, भयइ (सम
१२४ हुमा) भय, भयइ (हु १) भयति

(विसे १११)। तम्हा भय बीन केरम'
(यु ११)। बइ भयत भयमाय (विसे

१४४)। भय १ २ २, १०)। कपड
'सम्भुसयमायभयि' (कम)। उह

भयता (ठा १)। इ भयइ, भयइअ,
भययअ भय भयगिअ (विसे ११८

२ ४१८ उत ११, २१ २४-२५, कम
४ ११ विसे १११) उत १ ४ विसे

१२ २ ४४८ १८१ बीनम १४४, पं
४, का विसे १११) बीनम १४४)।

भय न [भय] बर, मल खीछ (घावा) लाया
१ १ या २ हुमा भय (हे १०१)।

भर नि [भर] भय-भय (हे ४, ४४
११ ०२)। अणणा की [भजननी] १

मात ज्यम करेवाली (हु १)। २ बिषा
विरोध (पठम ४ ४४१)। बाह दु [बाह]

राध-नीका का एक रत्ना एक रत्ना पति
(पठम २, १११)।

भय देवो भय (जम हुमा लण हुमा ४२;
गठ)।

भय देवो भय (बीपा पिप)।

भयकर नि [भयकर] १ भय-भयक घोषण
(हे ४ १११ लण भवि)। २ भयि-भय

हिा (पठम १ १)।

भयत देवो भय = भय।

भयत देवो भय = भयय (गुप १ ११ १)।

भयत देवो भयत (घोष ४० उत २ ११
बीपा)।

भयत देवो भय = भयय (विसे १४४१;
१४४१ १११४)।

भयत देवो भय = भयय (विसे १४४४
बीपा)।

भयत नि [भयत] भय से रत्ना बनेवाला
(बीपा गुप १ ११ १)।

भयत नि [भयय] भय से रत्ना करेवाला

'भयमाइअ' भयताये (सुम १ ४ १
२४)।

भयतु नि [भयत] सेवक सेवा करेवाला
(बीपा)।

भयक } दु [भयक] १ नीकर, कर्मकर
भयण } (ठा ४, १ २)। २ नि पोपित

(पठम १ २ लावा १ २)।

भयण न [भयण] १ सेवा (राज)। २
विभय (सम १११)। ३ दु बीपा (सुम १

४ ११)।

भयण देवो भयण (माट—बैत ४)।

भयणा की [भयणा] १ सेवा (नि १)।
२ विभय (सम १२४ १ ११ जम)।

भयणइ १ देवो बहसइ (हे २ ११४
भयणइ)।

भयणगाय दु [वि] मोरेक पुनपत का एक
नीक (हे १ १ २)।

भयणय नि [भयणय] भयकर, भय-भयक
(व १११)।

भयकि दु [भयकि] भयकर के भावी
बलाइय बिभय वा पुन-भयि नाम (सम

११४)। देवो छयासि।

भयलु नि [भीक] भीक, डरलोक (हे १
१ ७ गाम)।

भयवण देवो भयवण (भवि)।

भयवह नि [भयवह] भय-भयक भय-भयक
(सुम १ ११ २१)।

भर ल [भ] १ भरा। २ बाण करना।
३ पोषण करना। मछ (प्रवि पिप), भरतु

(कम ४ ७९)। बइ भरत (भवि)।
बह भरत, भरत भरिअ (हे १

४८४ ८ १ १०)। उह भरत (भाक १)। इ भरगिअ भरगीम,
भरव्य, भरव्य (गाम भा पा ४१ ४

४ १)।

भर ल [भ] भरल करना यात भरल।
भर (हे ४ ७४ गाम)। बइ भरत
(पा ४८१ भवि)। बइ भरिअ भरिअ
(हुमा)। भयि बइ भरपय (हुमा)।

भर दुन [भर] १ भरत भरत निभर
भरव्य इ एवाविअनि भयविभर

६८) । २ कृष्णमा हृषा 'मवलक्षितामाए
 यो मन्त्राय भाषिषो मंत्री' (मुद्रा १८०) ।
 माणु पुं [मातु] १ मूरे रवि (पञ्च ४८
 ११ पुष्ट ११४) तिरि १२) । २ तिरि
 (प्राप्त) । ३ मन्त्राय मन्त्राय का रिता एक
 राजा (उप १११) । ४ की एक हस्त्याणी
 एक की एक मन्त्र-मन्त्रि (पञ्च १ २
 १२६) । कण्य पुं [कर्ण] चण्य का
 एक पुत्र (पञ्च ७ १७) । मई की
 [मते] चण्य की एक पत्नी (पञ्च ७४
 १) । माक्षिणा [माक्षिनी] विद्या-विशेष
 (पञ्च ७ ११६) । मिश्र न [मिश्र]
 लक्ष्मीका क राजा स्वामिन् का छोटा भाई
 (राज्य विचार ४६४) । 'मैरा पुं [मैरा]
 एक विचार का नाम (महा ४७) । 'सिरी
 की [सी] राजा स्वामिन् की बहिन (राज्य) ।
 आम देवी ममाह ७ प्रपद । काय (हे ४
 १) । कण्य मांसिन्त्र (मा ४१७) । क
 मांसयक्य (टी ७) ।
 मांसय न [मांसय] कुला किरण (सम्पत्
 १०४) ।
 मांसय न [मांसय] १ नृप-विशेष प्रपदी का
 कन्या हुआ मू (पञ्च ४) । २ पुं दोषक
 चण्य का एक भेद (तिग) ।
 मांसरी की [मांसरी] १ नील-निरीय
 (रामा १ १७—पञ्च २२६) । २ प्रचलिका
 (कण्य रवि) ।
 मांसिज रि [मांसिज] १ पुत्रमा हुआ (हे २
 १९) । २ प्रत्य विद्या हुआ प्रत्य-विद्य
 विद्या हुआ 'कलमप्रमिषी हत (मन २७)
 चरवि ११) ।
 मांसिणी की [मांसिणी] १ मांसवती (हे
 १ १६) (पुनः) ।
 मांसिणी की [मांसिणी] १ नील-नीला की ।
 २ की मन्त्रि (मा ११ पुन १ ७१ पुन
 ४३१, पञ्च १६१) ।
 माय देवी भाउ (पुनः) ।
 माय देवी मा—यै ।
 मायन पुं [मायन] १ पात्र । २ पात्रार ।
 ३ कर्ष 'मायला मायन' (हे १ ११
 २९७) 'ति बिद मन्त्र न पुनमायन, सप्त
 जीविन मन्त्र (म ११०—पुनः) ।

मायन न [मायन] मायन पात्र (पञ्च
 २ २—पञ्च ७७६) ।
 मायन्य पुं [मायन्या] कलकल की एक
 भाषि पात्र देवतामा कलकल (पञ्च १ २
 १२) ।
 मायन्य देवी मायन्य (बर्षि १२
 काव) ।
 मायन्य देवी मायन्य—मायन्य ।
 मायन्य देवी भाउ (पुनः) ।
 मायन्य पुं [यै] मायन्य उत्तम भाषि का
 घोड़ा (हे ६, १ ४) पात्र) ।
 मायन्य पुं [माय] १ बोका कुल (पुनः) ।
 २ मायन्यी बल्लु, बोकापत्नी नील (मा
 ४) । ३ बाप संयम करने का धर्मिक
 'मायन्यदेवि पुते की निवमार हस्तियु निवपुते
 न य लाहै सकर' (पुन १७) । ४ परि
 मायन्य-विद्ये 'मायन्यदेवि हस्त' मायन्य माय
 पुत्रस कह लहा' (पुन १११) । ५ परिपद,
 यन-मायन्य यात्रि का संवह (पुन १ ६) ।
 मायन्य य [मायन्य] मायन्य के परिप्राय
 के 'बल्लुमलमल मूमायनी य मायन्यो
 य' (पुन १ ४—पञ्च १२३) । बह वि
 [यह] बोका बोकापत्नी (मा ४०) । 'यह
 वि [यह] बरी चर' (पञ्च १७ २६) ।
 मायन्य की [मायन्य] माया वाली माय
 कल (पात्र) । देवी मायन्यी ।
 मायन्य न [मायन्य] १ नील-विद्ये
 मायन्य न [मायन्य] की नील नील की एक छाया
 है (पुन १११) । २ पुं मायन्य
 नील के लक्षण 'यै नीलमा ले गमा ले मायन्य
 (१ हारा) ले संयम' (उप ७—पञ्च
 १६) । बल्लु-विद्ये (नीलमा ४७) । ४
 कुनि-विद्ये (ति २१७ २६८ १६६) ।
 मायन्य देवी माय (पुन १४ १६६) ।
 मायन्य न [मायन्य] १ मायन्यी बल्लु-विद्ये
 (पुनः) 'महा निवने बल्लुमलमल मूमायनी य
 कलकल' पुं (उप २ १ १४) । २
 कलकल कीती का पुत्र मूमायन्य (पञ्च
 १ २, १६) । ३ देव-विद्ये निवने मायन्य
 नील पुत्र का बर्षन है, यन-मायन्य प्रलीन
 मायन्य (पुन ४३ ७) । ४ बल्लु

मायन्य-प्रलीन मायन्य-मायन्य (पुन) । ५ वि
 मायन्य-सम्पत्नी, मायन्य का (ठा २
 १—पञ्च १६६) 'हस्त बल्लु हस्त पुने मूमाय
 पत्नी ल बहा—मायन्य निव मूमाय, एरव
 निव मूमाय' (पुन १ १) । 'हेत न
 [मैरा] मायन्य' (उप २ १ टी—पञ्च
 ७१) ।
 मायन्य वि [मायन्य] मायन्य-सम्पत्नी
 'मा मायन्य-पत्नी हस्त मूमाय-पुन्यन-बल्लु-विद्ये
 कोहमा' (पुन २६) ।
 मायन्य की [मायन्य] १ उत्तम देवी (पि
 २ ७) । २ देवी मायन्य (उप १६६) ।
 मायन्य वि [मायन्य] मायन्य मायन्य पुन
 (हे ४ २) पुन १ १ पुन—११४) ।
 मायन्य वि [मायन्य] १ मायन्य मायन्य
 (उप १ १४) । २ निव पर मायन्य लहा
 पत्नी ही बह, मायन्य विद्या गया (पुन
 २ २६) ।
 मायन्य देवी मन्त्रा (हे २ १ ७) पुनः
 पुन २) ।
 मायन्य वि [मायन्य] मायन्य मायन्य
 (बर्षि ११७) ।
 मायन्य पुं [मायन्य] की पुन हीर एक शरीर
 बल्लु पत्नी परि-विद्ये (कण्य मीन महा
 १६ १ ८) ।
 मायन्य न [मायन्य] लहा (पात्र पुनः) ।
 मायन्य की [यै] देवी मन्त्रा (पञ्च १६) ।
 मायन्य पुं [यै] मन्त्र-विद्ये कायन्यीका
 (पुन ४७) ।
 मायन्य पुं [मायन्य] १ मायन्य कल
 पल्लु बल्लु । २ निवने कल्लु । मायन्य
 (पिने १८) मायन्य (ति २२६) 'मायन्य
 मायन्य' (हे १६) मायन्य (पुन) । बर्ष
 मायन्य (पुन १७) । बह मायन्य
 मायन्य, मायन्य (पुन ४ १६१) पुन
 २६६) बल्लु । बह मायन्य, मायन्य
 (उप) महा) । ३ मायन्य, मायन्य
 मायन्य (पुन १४ ८४) ।
 मायन्य [मायन्य] १ विद्या लहा
 मन्त्र हीका । २ कल्लु हीका, कल्लु मन्त्र
 हीका

1. कार्य (कार्य) : यह विषय,

मिच्छुं मित्रिम् मित्रिकम् मेच्छाम्ना
मेच्छय (रत्न, पत्र ६, २२; गद्य—विष्
१७ सि २८५; ६ २ १४५; महा) । ईच्छ-
मित्रिचय, मित्रुं मेच्छुं (वि १७५) कम्प
सि २७४) । ई. मित्रियम् (पद्य २, १)
मेच्छम् (सि १, २६) ।

मिदय न [मेदय] वदय, निष्पेद (पुर १६
१६) ।

मिदयवा की [मेदय] ऊपर देवी (पुर १
७२) ।

मिदिवाह (ही) देवी मिदिवाह (गद्य
५७) ।

मिमह देवी मिमह (पुष्पा ५१; १२३,
सि २ ६) ।

मिमक्षिय मि विहृक्षित [विहृक्ष मित्रा
हुता 'ठा पम्ह मायों मिमहो म (१ म)
ममहक्षिमिषिषी' (कर्मि ५) ।

मिमसार पुं [मिमसार] देवी संमसार
(वीर) ।

मिमा की [मिमसा] देवी संसा (पत्र) ।

मिमिसार पुं [मिमिमसार] देवी संमसार
(छ ६—पत्र ४४ स वि २ ६) ।

मिमि की [मिमि] मात-मित्रेण कल (ठा
६ टी—पत्र ४६१) ।

मिमल क [मिम] श्रेष्ठ वाक्य वाचना
करा । मिमल (पंथीय ११) । गद्य
मिमलमय (पत्र १४ २६) ।

मिमन न [मिम] १ मित्रा श्रेष्ठ । २ मित्रा
वदय (वीरसा २१६; २१७) 'न कर्म
मम मिमले' (पत्र २३, ४) । जीविम
सि ["जीविक"] श्रेष्ठ से मित्रिहृ कलेवला,
मिमनमा (गद्य ६ सि ५४) ।

मिमल देवी मिमल (सि ६७ कुप १५३;
कर्मि १) ।

मिमलन न [मिमल] श्रेष्ठ वाक्य, वाचना
(कर्मि १) ।

मिमल्य की [मिम] श्रेष्ठ वाक्य (कर्म
पुष्पा २७७) मिप । सर सि ["सर"]
मिपु (कर्म) । मरिया की ["मर"]
मिदा के मिने कर्म (माता; जीव; जीवका

७४ कमा) । सामिय पुं ["सामिक"]
मिपुन-मित्रेण (वीर) ।

मिमसाग } सि [मिमसा] मित्रा वागने-
मिमसाय } माता मित्रा से शरीर-मित्रिहृ
कलेवला (छ ४ १—पत्र १८३, पाचा
२ १ ११ १; कट ३, २८५ कर्म) ।

मिमसु पुंकी [मिमसु] १ श्रेष्ठ से मित्रिहृ
कलेवला पाचु मुनि, संव्यासी क्षत्रि
(पाचा) पत्र २१ हुता पुष्पा १४६; प्राप्
१६६) मिमसागरीयो म लयी मिमसु सि
मित्रिपिषो सपय' (कर्मि १) । २
श्रेष्ठ संव्यासी 'कर्म कर्म न पम्ह कर्मिहृ
मिमसुमयमि' (मुपनि ११) । की जी
(पाचा २ ३ १ १ पम्ह ३ ११; कुप
१८५) । पडिमा की [मिमिमा] पाचु का
मित्रिहृ-मित्रेण मुनि का वल-मित्रेण (कर्म
वीर) । पडिमा की [मिमिमा] पाचु का
ज्येष्ठ पाचु के मिमिहृ, 'मिमसु वा मिमसुली
का से बं पुन कर्म वायेका मरियेण मिमसु-
पमियाय' (कर्म का वायों का रत्न वा' (पाचा
२, ३, १ ४) ।

मिमसु क देवी मिमसुहृ (पत्र) ।

मिमसुहृ देवी मिमसुहृ (पद्य १४) ।

मिमसारि (पत्र) मि [मिमसारि] मित्रापी
श्रेष्ठ वाक्यमाता (पिप) ।

मिगु देवी मिह (पत्र ४ ५६; जीव १७४) ।

मिगुहि देवी मिगुहि (सि १२४) ।

मिम पुं [मिम] १ वाच वेक शीकर (पत्र
पुर २, १२ पुष्पा १ ७) । २ सि मम्हो
वदय पोवक कलेवला (विना १ ७—पत्र
७२) । ३ सि. मरुपीय पोवपीय (पद्य १
१—पत्र ४) । माय पुं ["माय"] शीकर
(पुर ४ १३६) ।

मिमह देवी मिमल (सि ६७) ।

मिमह देवी मिमल (पा १६२) ।

मिमसुहृ सि [मिमसुहृ] १ मित्रापी
मित्रा से मित्रिहृ कलेवला । २ पुं श्रेष्ठ
पाचु (पाचा १ १३—पत्र १६६) ।

मिमन न [मिम] कर्म-रीति वदय-मित्रेण
(विना १ १—पत्र ११) ।

मिमना देवी मिमल (छ २, १—पत्र ७१
कर्म ७१) ।

मिमिय देवी मिमिय (कर्म) ।

मिमिहृ की [मिमिया] नृमि मोन (कर्म) ।

मिमिमिय सि [मिमिमिय] मोन का मिम,
मुनर (कर्म १ १—पत्र २३६) ।

मिमह क [मिम] श्रेष्ठ । कर्म 'मिमिहृ
वायि मिमिहृमलमलेधि' (सि १ ६) ।

मिमह न [मिम] श्रेष्ठ, कर्मिहृ मुनरपी में
'मिम' (सि ७४१ ६ १) ।

मिमहा की [मिम] ऊपर देवी (सि ११२) ।

मिमह क [मिम] मित्रा—१ मित्रा वदय,
छ माता । २ कर्म मुनेहृ कर्मा । मिम
(कर्मि) मिमिहृ (सि ४३) । कर्म मिमिहृ
(कर्म ३२ टी पत्रि) ।

मिमिय न [मिम] कर्मा, मुनेहृ 'लौदीरुहृ-
मिमिहृमलमलेधि' (पुष्पा २६६) ।

मिमिय सि [मिम] मित्रेण मुनेहृ की से गद्य
कर्म पुष्पा (पत्र) ममि ।

मिमियासि पुं [मिम] पत्रि-मित्रेण (पद्य १
१ पत्र ५) ।

मिमिय देवी मिम (पत्र ५ गद्य—वैद १४) ।

मरु (कर्म) पुं [ममाराप] कर्म का कर्म
वेक (पिप) ।

मिम देवी मिम (कर्मि २) ।

मिमसा } न [मिमसा] १ कर्म,
मिमसा } दुक्का । २ पाचा मित्रा (पत्र
२, ७ २, ७ ६, ७) ।

मिमर न [मिम] १ शार, कर्माता (६ ६,
१ ६) । २ श्रेष्ठ, कर्म (पत्र) ।

मिमि की [मिमि] श्रेष्ठ (पत्र पुष्पा) ।

मिम न [मिम] श्रेष्ठ—मीनार कर्म संव्या
वायि मिमिहृमले कर्मिहृ कर्म मुनिहृ-
मलेधि' (पत्र) ।

मिमिहृ सि [मिम] श्रेष्ठ से मिम (६ ६,
१ ६) ।

मिमिहृ न [मिमिहृ] एक कर्म-मिम (कर्म
५५) ।

मिमि सि [मिमि] श्रेष्ठ कलेवला (पत्र २) ।

मिमि देवी मिमि । मिमिहृ (पाचा २, १ ६,
६) । कर्म मिमिहृमलेधि (पाचा २ १ ६,
६) ।

१)। मणि विरिस्सि (भाषा २ १, ६ १)
२ १२२)।

मिन्न वि [मिन्न] १ विचारित कथित
(भाषा १ ८ उ० अ० पाठः यहा)। २
प्रस्तुति स्थिति (अ० ४, पृष्ठ २ १)।
३ धार विस्तर, विस्तर (अ १)। ४
परिष्कार, परिष्कार 'जीवार्थ धारो मिन्न'
(इह १ पाठ ४)। २ अ० क० अ०
(अ०)। अहा की [क्या] मैत्र-मित्र
वात, एतन्नाम (अ० ११)। पहाइय
वि [विष्णुपादिक] स्थिति अत्र वाहि
सेने की प्रतिष्ठावाता (पृष्ठ २ १—प०
१)। मास पु [मास] पचीस दिन
का महीना (गीत)। सुष्ठु न [सुष्ठु]
प्राप्तुर्दत्त अ० सुष्ठु (अ०)।

मिष्क पु [मीष्क] १ स्वभाव-स्वात एक
कुम्हटीय क्षयिण मयि जीम पितामह।
२ क्षयिण-मिष्क रस-विशेष अमल रस।
३ मि मन्त्र-मन्त्र मन्त्रकर (हे २, ३४
प्राक् १३३ कुमा)।

मिम्भल वि [मिम्भल] म्भल (हे २
३८: ६) प्राक् १४० कुमा बन्ना (१३६)।

मिम्भल न [मिम्भल] म्भल नाना
(कुमा)।

मिम्भल यक [मास् + यक = वाभास्व]
प्रत्यय दीपना। बहू. मिम्भलमात्र
मिम्भलमात्र (भाषा १ १—प० १८
प० २, ३५)।

मिमर पु [हे हिमोर] हिम का पञ्च पाप
(?) (हे २ १०४)।

मिषा यो मय (अ०)।

मिस्स पु [हे] अठ्ठ। यो मिस्सि (अ०
१०४ पृष्ठ २८२ कुली)।

मिस्सा यो मिस्सा (अ० १ १२)।

मिस्सा यक [हे] धर्म्य करना, मन्त्रित
करना। मिस्सा (भाषा २ ११ १४ ४
५) मिस् १०)। बहू मिस्सा (मिस्
१०)। प्रयो. मिस्साय (मिस् १०)
बहू मिस्साय (मिस् १०)।

मिस्सा पु [हे] धर्म्य-विशेष अमर
मिस्सा (अ० १० १ ७३)।

मिस्सि पु [हे] धर्म्य, धार्मिक-धर्म
मय (अ० १ ४ २, ८ १)।

मिस्सि पु [हे] मिस्सि द्विज पत्नी (अ०
१२४)।

मिस्सा की [हे] फटी हुई मीन, मयि की
रेखा—काट (भाषा २ १ २, ३)।

मिस्स पु [मिस्स] १ धर्म्य रस-विशेष (अ०
२०४)। २ एक प्रकार का मित्र (अ० २ ४
६ १४५ यहा)।

मिस्साय पु [मिस्साय] स्वभाव स्वात
एक प्रसिद्ध क्षयिण-मय (मिस् १२४)।

मिस्साय की [मिस्साय] मिस्साय का एक
(अ० १ ११ १)।

मिस्सि वि [मिस्सि] कथित छोटा हुमा,
'मन्त्र-मन्त्रो यो मन्त्रो मिस्सि यो मन्त्र'
(अ०)।

मिस्स यो आम = मास्। मिस्स (हे ४
२ ३ प०)। बहू मिस्स, मिस्साय
मिस्साय (अ० १ १२० ७३, १०४)
भाषा १ ११ मीन कुमा भाषा १ ११
२ ११२)।

मिस्स यक [प्लुप] जवाना (प्राक् १३,
भाषा १४०)।

मिस्स यक [भाष्य] करना। मिस्स, मिस्स
(प्राक् ६४)।

मिस्स न [मिस्स] १ धर्म्य, क्षयिण क्षयि-
स्थिति। 'मन्त्र-मन्त्र-मन्त्र-मन्त्र' (मिस् ३८:
अ० १२ १० ११: ११)।

मिस्स यो मिस्स (प्राक् १३, पृष्ठ १ १०
२, १८)। कथ्य पु [कथ्य] एक
प्रकार की जाने की मित्र बल (अ० १०—
अ० २३३)। मुष्सा की [मुष्सा] कथ्यिनी
(अ० १)।

मिस्स पु [मिस्स] १ धर्म्य विस्तरक
(हे १ १० कुमा)। २ धर्म्य मन्त्र-मन्त्र
का प्रत्यय (अ० १०)।

मिस्स यो मिस्स = मास्।

मिस्स न [हे] धर्म्य (हे ६, १ १)।

मिस्स यो मिस्स (भाषा १ १—प०
१२४)।

मिस्स यक [हे] कथ्य, जवाना। मिस्सि
(अ० ११२)।

मिस्साय यो मिस्स = मास्।

मिस्सा की [हे] धर्म्य वक्त्र का नाम
विशेष (भाषा १ ८—प० ८२)।

मिस्सा यक [भाष्य] करना। मिस्सा
(प्राक् ६४)।

मिस्सा की [हे] धर्म्य मन्त्र-मन्त्र
मिस्सा की धर्म्य का धर्म्य (हे १, १ २)
अ० १०३ भाषा १ ८ उ० अ० १४८
१० मीन मुष् २ १ ४८)।

मिस्सि यो मिस्स मिस्सि (अ०
१२२ यो)।

मिस्सि की [मिस्सि] कथ्यिनी पक्षिनी
(हे १ २१८ कुमा भा १०८ अ० ११
यहा पाठ)।

मिस्सि की [मिस्सि] यो मिस्सा (भाषा)।

मिस्सा न [हे] धर्म्य-विशेष (अ० ४ ४—
अ० २८२)।

मिस्स यक [मी] करना। मिस्स (अ०)
मी क अक्षय्य (अ० १४४)।

मी की [मी] १ मय, जो बन्धी बन्धी बनार
मेम्बार्थ (भाषा)। २ वि करनेवाला
धर्म (भाषा)।

मीन वि [मीन] अठ्ठ हुमा (हे २ १६६
४ २३ पाठ कुमा अ०)। मीन वि

[मास्] धर्म्य अठ्ठ हुमा (अ० १ ११५)।

मीन की [मीन] अठ्ठ हुमा (अ० १ ११५)
वि ८११ प्राक् २४)।

मीन वि [मीन] अठ्ठ हुमा (अ० १४४)।

मीन वि [मिस्स] करनेवाला 'मा मन्त्र-मन्त्र'
मिस्स यो मन्त्र-मन्त्र (अ०)।

मीन [हे] यो मिस्स। अठ्ठ मीनवि
(अ०) (अ०)।

मीन वि [हे] यो मिस्स (अ० १६१)।

मीन वि [हे] यो मिस्स (अ०)।

मीन वि [मीन] १ मन्त्र, धर्म्य (पाठ
अ० १२ ११ मी ४४ प्राक् १४४)।
२ पु एक धर्म्य मन्त्र-मन्त्र
३ धर्म्य-मन्त्र का धर्म्य विष्णु का अठ्ठ
(अ० २, १—अ० ८२)। ४ मन्त्र का
धर्म्य धर्म्य प्रतिष्ठावाता 'मन्त्र-मन्त्र'
मीन मन्त्र-मन्त्र का धर्म्य (अ० १४४)।
५ धर्म्य-मन्त्र का एक धर्म्य, एक मन्त्र-मन्त्र

जत ६, १। वि ५ ७। हे २ १५, कुमा
माक १५।। हेइ सुजिवाए, मोचु,
मोचग (वि १७० हे ५ २१२ बाबा)
सुजग (घर) (कुमा)। ह सुज, सुजि
यण सुजिवाए मोचकन सुचकन मोच
मोगा (कु ११। बर्षि ५१ उप ११६
टी बा १६ गुवा ५२३। निम ५२
सम्मत २१६। छाया १। पत्र ६५६५
हे ५ ११२ गुवा ५६३ बरम ६० २२३
हे ७ २१ मोप २१५। कप ५ ७३। गुवा
१९९ मरि)।

सुजग वि [मोचक] मोचन करनेवाला (वि १२३)।

सुजग वैको सुज = पुत्र।

सुजग न [मोचन] मोचन (वि १२१)।

सुजगा की कर केको (पत्र १ १)।

सुजग वैको सुजग (उप)।

सु जान एक [मोचग] १ मोचन करना।

२ पत्तन करना। ३ मोच करना। सुजगि
(महा)। कनक सुजाविजत (पत्र २
५)। बंके सुजाविजत, सुजाविचा
(वि ५२२)। हे सुजावै (पत्र १
५० टी)।

सुजावय वि [मोचक] मोचन करनेवाला
(व २११)।

सुजाविज वि [मोचित] निचके मोचन
करना वना हो वह (बर्षि १० कुप
१९५)।

सुजिम वैको सुज = पुत्र।

सुजिम वैको सुज (मरि)।

सुजि वि [मोचक] मोचन करनेवाला
(गुवा ११)।

सुज दुये [वि] सुज, कपड़ डनपकी में
'सुज' (हे १ १)। बी, बी, 'जिणी' (हे
१ ०९ टी) मरि)।

सुजा [वि] कर केको (हे १ १)।

सुजल न [वि] मध-पात्र (पत्र १ १९)।

सुहवि (घर) वैको सुमि (हे ५ १६५)।

सुध मर [कु] मुकमः खान का
मोचन। सुधर (वा ११५ प)।

सुधम दु [वि] १ खान दुहा। २ मध
धारि का मल (हे १, ११)।

सुधिम न [सुधित] खान का खन् (पाप
वि २ ६)।

सुधिर वि [सुधिय] मुकमेवला (कुमा)।

सुधला की [वि] सुसुधा। सुध सुधा (हे
१ १ १ छाया १ १—पत्र १०० महा
कप १७६ बाप १६ सम्मत १५७)।

सु वि [ब] सुधा (बर्षि ६६)।

सुधिलम वि [वि] सुसुधित। सुधा सुधातुर
(पाप कुप १२५। गुवा ५ १। उप ७२०
टी च १५६ हे २६)।

सुधसुधा मर [सुधसुधा] 'सुध' 'सुध'
मोचन करता। वह सुधसुधा (पत्र
१ ५, २६)।

सुधा वि [सुध] १ मोका हुआ मर, कुटित
(छाया १ ८—पत्र ११३। उपा)। वि
मन हुआ हुआ (छाया १ ८)। २ हाथ
मला हुआ कि मरक बोधिका पूर्णविप-
मकीपुत्रगाए (उप ७१० टी)। ५ गुवा
हुवा 'मरकम कुप' (गुप ५१२)।

सुध (घर) वैको सुज। सुधर (उप)।

सुजग वैको सुजग (मरि)।

सुजग वैको सुजग = पुत्र (बर्षि १२५)।

सुज वैको सुज कुज (वह)।

सुज पु [सुज] १ सुज-विरोध। २ न सुज
विरोध की बात (कपू उप १९७ गुवा
१)। पत्र मर न [पत्र] बरी धर
(पापम गट वि ११)।

सुज वैको सुज।

सुज वि [सुजस] सुजुत धनस (बीप
वि ५१५)।

सुखिय वि [वि] सुध १ गुवा हुआ पाप।
१ गु बाबा गुवा गुवा मर (कपू २ २—
पत्र १५५)।

सुजा मर [सुजम] फिर, पुन (उपा
गुवा १०२)।

सुण पु [सुण] १ बी का मरि। २ बालक,
मियु (बर्षि १७)।

सुत वि [सुत] १ मरित (छाया १ १
पत्र १५५ १०)। २ बितने मोचन किया
हो वह 'ये मापन न गुवा' (गुप १ १५।
गुप १९)। ३ लैपि। ४ मनुपुन 'मम

ताप मए मोपा भुता विचकोमवा' (उप
१६ ११ छाया १ १)। २ न मरण
मोचन। 'हाथगुताविवाणि म' (उप १६
१२)। ३ विप-विरोध (हा १)। मोगि वि
[मोगिय] बितने मोचो का वेषन किया
हो वह (छाया १ १)।

सुतपत वि [सुतपत] बितने मोचन
किया हो वह (वि १६७)।

सुतपत वैको सुज।

सुति की [सुति] १ मोचन (कपू १७।
कपू ५१)। २ मोच (गुवा १ ८)। ३
कावीपिका के लिए किया जाता मोच लेन
कादि पिउध 'जमेणी नाम पुटी रिमा
सस न गुवापुटीए' (का २११ टी कुप
१९६)। बाक पु [पाक] गिरसदार
(बर्षि १५५)।

सुपु वि [साक] मोचनेवाला (बा ६
घर १२)।

सुपुन पु [वि] सुप लीकर (हे १ १ ६)।

सुपथ पु [वि] बितनी को केका जाता मोचन
(कपू)।

मम वैको मम = मम। सुम (हे ५ १९१
उप)। संह सुमि वि (घर) (उप)।

सुम की [सु] मौ मांख के कर
ममगा की टोप पति (मर उपा हे २
मुमया १९७ बीप गुवा पाप पत्र
भुवा ७९)।

सुसिम वैको समिम = मम 'सुमिमपु'
(कुमा)।

सुमि (घर) वैको सुमि (वि)।

सुसिम की [वि] रिमा, म्हाली दिया
वि (हे १ १ १)।

सुसि वि [वि] सुसिम सुनि-मिहः
मरसुविहः 'पुमिपुसीधनुलेदि परिममा वि
सुसुविह' उप पती' (गुवा २२६, ६ ९,
१ ९)। सुसुप (१ ९) सुसिमो' (गुप
२११) सुसु ६ सुसि मा १०२)।

सुत मर [सुत] १ मरुत होता। २
मिहा। ३ सुपन 'सुसिमि ते मगा मगा
हा पगायी सुसिमो' (पाप १२ हे ५
१७७)।

भोद्धय न [३] पावेन-विदेय, प्रबन्ध-श्रुत
पावेय (३१ १ ८) ।

मोवाळ (म) रेवो भू-वाळ (मि) ।
मोहा (म) रेवो भू-म (मि) ।

मंति (म) रेवो मंति = मति (३१ १) ।

॥ इय निरिपाइअसहस्रमहज्जयमि मयापाइअसहस्रमहज्जयो

लीतरयो तरंको समतो ॥

म

म पु [म] मोह-रपावेय व्याप्त-मलो विदेय
(मा) ।

म घ [मा] मउ मरी (३४ ४७ म गुमा-
नि ३४ ११४ मरि) ।

मअमा : [मृगा] विहार (मि ३३) ।

मइ धी [मृति] मोह मरु (गुर १ १४५) ।

मं धी [मति] १ कुट्टि मरा मरीया

‘मरा मरीया’ (गाम गुर १ १३३)

गुमा मरु ७१) । २ मरु विदेय मरुय

मीर मन म उप्पन्न मोहनामा माग (छ ४

४) मुदि मरु १ १ ४ ११ १४

मि ३३) । मअम न [अउ न] विरुष

मरुणा विचारयन-मुक्क मरि माग (म

मि १४ मरु ४ ४१) । पाउ

पमान मोन म [मान] मान-विदेय

(मि १ ७ १४ ११० मरु १ ४) ।

मगागरा न [मानागरा] मरि-मान

वा मरुण मरु (मि १ ४) । नापि

मि [मान] मरि मानागरा (मा)

मरिणा धी [मरिणा] मरु पन कुट्टि

माग (मरु) । मरुम पु [मरु म] कुट्टि

मिण्ड (मरु गुमा ११३) । म मरि

मरि [म] कुट्टि-मरु माग १३

मरि माग ४१) ।

मइ रेवो मा-मा ।

मइअ मि [मि मरिठ] १ मरिठ विरुष

(३१ ११४) । २ म मरु मरु मरु के

माप्पणन म मरु मरु एक मरु-मरु

मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु

मरु (मरु ७ १० मरु १ १—मरु ८) ।

मअ मि [मय] मरुण-मरुण एक

मरुण-मरुण निरुठ मरु मरु मरु मरु

मरु मरु (मरु) ।

मअ मरु [मृगा] विहार (मि ११३३) ।

मइ पु [मरु] मरु मरु एक मरु मरु

मरु (मि ४ ७ ११ ८३) ।

मइ पु [मृगा] १ मरु मरु मरु (मरु

१ १ गुर ११ २४३ मरु १) । २ मरु मरु

मरु मरु (मि) ।

मइ मरु मरु मरु मरु मरु (मरु) ।

मइ मरु मरु [मरु] मरु मरु (मरु) ।

मइ मरु मरु धी [मि मरिमाही] मरु

मरु मरु (३१ ११३ मरु) ।

मइ मरु मरु [मरु] मरु मरु (मरु मरु

२ ११ मरु २० ३१ ११३) ।

मइ मरु मरु [मरु] मरु मरु (मरु मरु

३ १ १ मरु मरु १४ मरु १३

मरु) ।

मइ पु [मि] मरु मरु मरु मरु (३१

१४३) ।

मइ मि [मि मरिण] मरु मरु मरु, मरु

मरु मरु (३१ १४३ मरु १ ४०) ।

मइ मरु [मरिण] मरु मरु मरु, मरु

मरु मरु (मरु मरु ३३३) । मरु मरु मरु

(मरु ३३३) । मरु मरु मरु (मरु ३

१) । मरु मरु मरु (३३३) ।

मइ मरु [मरिण] मरु मरु मरु, मरु

मरु मरु (३३३) । मरु मरु मरु (३३

४० १ २०) ।

मइ मरु मरु [मरिण] मरु मरु मरु (मरु)

मरु मरु (३३३) । २ मरु मरु, मरु मरु ।

मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु

मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु

मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु

मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु

मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु

मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु

मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु

मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु

मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु

मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु

मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु

मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु

मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु

मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु

मह की [दे] गरिण, बाक (दे १ १११) ।
मह की [मृगी] हरिणी हरिण की माता
हरिणी (गा २०० से १ ८ ; दे १ ४९
पृष्ठ १) ।

मह देतो मह = मति । म, बहि [मन्]
द्विषत्मा (वि ७१। १२६ अ १४२ टी) ।

मह दे वि [मदीय] मेघ कपता (पह)
कुमा स ४००) महा) ।

मह दु [दे] परत पहाड (दे १ १११) ।

मह ३ वि [सुदु क] कोमल सुदुमार
मह ३ (दे १ १२० पर संय ४१) मुर
१ १०; कुमा) । की उह (माह १८
पृष्ठ) ।

मह अ वि [ह] सेत मरीच (दे १ १४७) ।

मह अ वि [मुद्रिण] को बोसल बना
ही (पठ) ।

मह दे देतो मह = मुद्र ।

मह दु [मुद्रन्] १ विष्णु कीदृश्य
(पठ) । २ काय-निष्ठेय 'कुद्रिपदेवमह
विमलामुद्रेण दूषदेण' (मुर १ १८)
'मद्रामदे' (पठ) (मह) ।

मह दे देतो माह = मुद्र (पठ) ।

मह दु [मुद्रन्] विष्णु-पुण्ड्र विष्ट,
विष्टेय (पठ १८ दे १ १० प्राय)
कुमा प्राय कोन) ।

मह दु [दे] यमिस्त कयी पृष्ठ
मह ३ (पठ) (पठ ११०) ।

मह दे देतो मोय (दे १ ११२) पठ) ।

मह पुन [मुद्रन्] १ काग-पुन पुन की
बनी, वीर (पठ) । २ बाण बाईना
छोटा । ३ पुनाल-बह । ४ कुल बा देह ।
५ कोन-पुन । ६ कोन-पुन । ७ विष्ट
पुन-पुन (दे १ १० माह ७) ।

मह ३ दु [ह] दुष्ट-विष्टेय काग-पुन
मह ३ (पठ) (पठ ११०) ।

मह दे देतो माह = मुद्र (दे ४ २१) ।
मह पुन [मुद्रन्] कोन विष्टिज बनी,
बनित वीर (पठ ११) । २ देह छीर ।
३ बाया 'बन' माली (दे १ १०
पठ) ।

मह दु [मुद्रन्] सङ्कषा संकुचित
होना 'मज्झिमे खण्ड' (गा ३) । बह.
मह ३, मह ३ (दे १ १२१ विष्ट ४२१) ।
मह ३ म [मुद्रन्] संकोच 'म' बह
मह ३ (पठ) (दे १ १८४ विष्ट
११ १ पठ) ।

मह ३ म [मुद्रन्] १ सङ्कषा । २
संकोचित करना । बह मद्रावित
(माह — पाठ १४४ वि १२१) ।

मह ३ म वि [मुद्रन्] संकुचाया हुआ
संकोचित (बह १२१) ।

मह ३ म देतो मह ३ म । कर्म मद्रावित
(वि १२१) । बह मद्रावित (पठ १३
८१) ।

मह ३ म वि [मुद्रन्] संकुचित करने-
कापा 'विरिचिह्नो विमलामदीय मद्रावित
म मद्रावित' (पठ) ।

मह ३ म देतो मह ३ म (उप ३ १२१
मुमा २ मति) ।

मह ३ मु [दे] दृढ-रस का वल्लभ
(दे १ ११२) ।

मह ३ मु [मुद्रन्] सं-विष्टेय (पठ १
१ — पठ ८ मण १ — पठ १) ।

मह ३ मु [मोक्ष] १ विष्ट-मुद्र विष्टे
मुद्र (पठ) । २ मद्रावित (पठ १८६)
कुमा मति २२ मद्रावित १४) । ३ विष्टे-
मुद्र विष्टेय एकतरु की पत्ती (पठ १८६) ।
४ कुमा बाड़ी । ५ संयत बह । ६ मु
मद्रावित ३० को मुनि द्विषो (दे १
११२ माह १) ।

मह ३ म वि [मुद्रन्] १ संकुचित (मुर
३ ४२ गा ११३ मे १ १२) । २ कुमा
बह विष्टा हुआ (वीर) । ३ पुन विष्ट
(पुमा) । ४ मुद्र-मुद्र विमल-विष्ट
(पठ) ।

मह ३ देतो मह ३ (दे २ ११३ कुमा) ।

मह ३ मु [मयूर] विमल-विष्टेय वीर (माह
१ १०१ पठा १ १) । की ही
(विष्ट १ १) । माह म [माह] एक
नवर (पठ १० १) ।

मह ३ की [मयूर] एक वनी महापठ
मह ३ की माता (पठ २ १४१) ।

मह ३ मु [मयूर] १ विष्ट विष्ट (पठ) ।
२ कति ठेक । ३ विष्टा । ४ शोभा (दे
१ १०१ प्राय) । ५ पुन बह के एक
पठा का माय एक संकोच-विष्ट (पठ १,
२१२) ।

मह ३ म [मयूर] म-मुद्र करना लभ्य
बनाता । बह मयूर (दे १ १०) ।

मह ३ म वि [माह] मेरे मेरा मेरे
मुद्र 'मयूरविष्टेय' पुरिम-विष्टेय हन
बनो-विष्ट (दे ११) ।

मह ३ म देतो म = मा (पठ) । दे ४ ४१ मा
कुमा) । अह ३ 'कार' 'मा' मयूर (हा
१ — पठ ४१५) ।

मह ३ देतो मह ३ (पठ) ।

मह ३ मु [मयूर] मद्रावित मुद्र की-विष्टेय
पुन-विष्टेय 'म' मद्रावित (वी ११) ।

मह ३ मु [मयूर] मद्रावित, मद्रावित । की
वी 'मयूर' मद्रावित मद्रावित मद्रावित
बह (पठ १८२) ।

मह ३ मु [मयूर] एक मद्रावित मद्रावित
(पठ १८२) ।

मह ३ मु [मयूर] 'म' मद्रावित (हा १ —
पठ ४१५) ।

मह ३ म [मयूर] मद्रावित मद्रावित (दे ४
११) ।

मह ३ देतो मद्रावित = मद्रावित (वि मति) ।
मह ३ मु [मयूर] मद्रावित मद्रावित-विष्टेय
(पठ १ — पठ ४१५) ।

मह ३ मु [मयूर] देतो मद्रावित (गा ७८२) ।

मह ३ देतो मद्रावित = मद्रावित । बह मद्रावित
(पठ) ।

मह ३ मु [मयूर] मद्रावित मद्रावित (दे १ ११२) ।

मह ३ मु [मयूर] एक मद्रावित मद्रावित की विष्ट
पठ विष्टावित मद्रावित-विष्टावित बह (पठा
१ १०१ मद्रावित २ ४० विष्ट १ ८,
मद्रावित) । मद्रावित मद्रावित १ मद्रावित का
मद्रावित । २ मद्रावित-मद्रावित मद्रावित (पठा १
४२ टी) ।

मह ३ म [मयूर] १ मद्रावित 'मद्रावित' बह
मुद्रावित-मद्रावित (हा १४८ टी) । २
मद्रावित मद्रावित (मुर १२, ८) ।

मंठ वि [रे] १ छट, कुच, नयनाय। २ पुं
नय (१६ १११)।

मंड एक [मण्ड] युमित कण सवाला।
मंड (प) मंडि (वि १२७)।

मंड एक [रे] १ घाते धरता। २ प्रारम्भ-
करता, पुनरुत्थी में 'मंडू' 'मो मंड रह
धरपुछो' मंडू (मंवि)।

मंड पुन [मण्ड] रस 'उपाएवर' व सी
नमनिहिरिमासे कर, मंडल चारमणु
गोचरमण्ड' (जवा)।

मंडम सेवो मंडव = मण्ड (मा—छट
२८)।

मंडम, पुं [मण्डक] बाध-विरोध मंडा
मंडग एक प्रकार की रोटी (ज ५ ११५
प ४ टी कुच ५३; नमंवि ११६)।

मंडग वि [मण्डक] विनयक, सोदा बड़ाने-
वाला 'संवि व' 'कोरलुमंडग'।
(कम)।

मंडम न [मण्डन] १ धुनल गुप्ता (नमंड
भासु १२२)। २ वि विनयक सोदा बड़ाने-
वाला (पदम कुमा) की की (भासु २५)।
भाद की 'बासी' धातुपण पहनावेवासी
बली (उत्पा १ १—प ३७)।

मंडक पुं [रे मण्डक] घात कुप्ता (१६
११५ पाय ४ १८८; कुच २८; धमस
१६)।

मंडक न [मण्डक] १ सड्ड नूच (कुमा
पदम धमस १६)। २ सेव (ज १४२
टी कुच ५६ २८)। ३ गोल बुलाकर
पराई (कुमा पदम)। ४ घोल धकार से
केल (ज १ ४—प ११५ पदम)। ५
चन-मुप धाति का धार-येन (धम १६)
पदम)। ६ लंछण, नम्य (उत्पा १६ ३)
७ ३, ६)। ७ एक प्रकार का पुष्ट रोप।
८ एक प्रकार की बुलाकर धार—छट (वि
१ ३)। ९ किम् 'दण्डम धमि' धमस
सिधल' धमप' धमयो' (पदम)। १० कुप्टों
का स्थापन-विरोध (पदम)। ११ मण्डकापार
परिमल (पुन १ ७; स १५६)। १२
मिड रोच (ज ७—प १६८)। १३ पु
मण्डाव-विरोध (विन १६)। १४ वि
[मण्ड] मण्डम में परिमणल करेवाला

(पुन १ ७)। द्विध पुं [विधिप]
मण्डापीरा (मंवि)। द्विध पुं
[विधिपति] नदी धर्म (मंवि)।

मंडल पुं [मण्डल] योडा व पुन सम का
धासन (नय १)। पवेस पुं [मंडेरा]
एक प्राचीन वैन शास (एवि १ २२)।

मंडलमा पुन [मण्डलम] लखवार, लण
(१६ १ १४ मंवि)।

मंडलम पुं [मण्डलक] एक मास बाण
कर्म-मापकों का एक बाट (पणु १२३)।

मंडलि पुं [मण्डलिम] १ मण्डकापार कला
बासु, बक-बात बनेवर (की ७)। २ माय
मिक राजा 'देवीर' सिधल पुनको
मंडलिपणो हात्ता' (धम ५२)। ३ लर्
की एक फाटि (पणु १—प ११)। ४
न नौचमण्ड को कील सोच की एक
शाखा (१६ १ पुंकी उस पोच में ललम (ज
७—प १६)। 'पुरी की [पुरी] नकर
विरोध कुचल का एक नय, की धारलम
की 'मंडल' नाम से मंडि है (पुता ६२६)।

मंडलिम वि [मण्डलित] मण्डकापार बना
हुता 'मंडलिम' की वड्डुकी को सिधल-
विधि (पुता ४ नम ६२) पदम)।

मंडलिम वि [मण्डलिक, मण्डलिक] १
मण्डकापारवाला। २ पुं मंडल रूप से स्थित
पर्वत शिरो (ज ३ ४—प ११९ पणु
१ ५)। ३ मण्डकापीय, सामान्य राजा
(उत्पा १ १; पणु २ ४ कुमा गुप
१२ महा)।

मंडली की [मण्डली] १ वडि मेरी धम
(से ३, ७६, मण्ड २ २६)। २ धम की
एक प्रकार की मति (से ११ १६) महा)।
३ बुलाकर मंडल—सड्ड (सीध १७
उच)।

मंडलीय सेवो मंडलिम = मण्डलिक 'पणु
लखवार' सिधल को सिधल-विधि-मंडलिम' (पुता
३ ३ ६ १—प ११९)।

मंडल पुं [मण्डल] १ विधाय-स्थान। २
नदी धाति से सिधल स्थाप (सीध १; लम
१६; महा कुमा)। ३ स्थाप धाति धरते का
पुन 'मण्डल' मंडलि 'मण्डल' मंडलि' (कम)
धरते)।

मंडल न [मण्डल] १ कोच-विरोध। २ पुंकी
उस मोच में ललम (ज ७—प १६)।

मंडलिका की [मण्डलिम] सोदा मण्डल
(कुमा)।

मंडलकापार न [मण्डकापार] पोच-विरोध
(पुन १ १६ इक)।

मंडाव न [मण्डन] सवाला विमुपित
करना। बाई की [मंडा] सवालेवासी
वासी (मापा २ १५ ११)।

मंडाव वि [मण्डक] सवालेवासी (निपु ६)।

मंडि वि [मण्डि] १ मुक्ति (कम)
मंडि कुमा)। २ पुं, मण्डाव महावीर के
पण लणवर का नाम (धम १६ विने
१८ २)। ३ एक मोर का नाम (नमंवि
७२; ७३)। कुचि पुं [कुचि] वैद्य-
विरोध (पद १ २)। 'पुच पुं [पुच]
मण्डाव महावीर का ललम पडवर (कम)।

मंडि वि [रे] दधि नमया हुता। २
विधाय हुता

'लंछण' ललमिधुता मंडि ललमिधुता मंडि पावे।
नमंडि ललमाला ललमालमाला ललमिधुता
(धम ८)।

३ धारो ललम 'मंड मंडि ललमललमिधुता
ललम' (मंवि)। ४ धारमा 'पुच मंडि
ललमिधुता ललम' (मंवि ललम)।

मंडि पुं [रे] धनु, पुता पण्डा-विरोध
(१६ १, ११७)।

मंडी की [रे] १ विधायिक, बन्दी (१६
१११; पम)। २ धम का धम ललम।
३ मंडी ललम ललम (मापा ४)। पाण्डिया
की [मण्डावि] एक मिठा-भोर धम के
ललम धमना मंडी की ललम धम में ललम
की ललम मिठा का ललम (मापा ४)।

मंडु की सेवो मंडु (मा २८ पणु १ १)
मंडु है २, २५ प ५; पाय)।

मंडुलिपा की [मण्डुलिपा, की] १ की
मंडुलिपा { मंडु मेरी, ललम (ज १५७
मंडु की { ११७ टी)। २ ललम-
विरोध ललमललम-विरोध (जवा;
प १४)।

मंठ वि [रु] १ रुठ, सुभा, नयया। २ पुं
कम्प (१६ १११)।

मंडक [मण्ड] भुवि कला सभा।
मंडक (पद) मंडित (वि १२०)।

मंडक [रु] १ भावे बरना। २ आरम्भ-
करना कुबरादी में 'मोड्ड' 'ओ मंडक रुठ
भण्डुओ कीधु (मंठि)।

मंडक पुन [मण्ड] रम 'कमाखेंतर' व लं
बर्चभक्षितिमयों कोर, मल्लय चाखएणं
भोयमसिंल (कमा)।

मंडक केओ मंडक = मण्डन (मण्ड-पुन
२८)।

मंडक पु [मण्डक] पाव-विरोध मांम
मंडक १ एक प्रकार की रोटी (ज ५ ११३
पन ४ टी पुन ४३) बर्चभ (११६)।

मंडक वि [मण्डक] निनुपक रोमा बड़ाने
बात्ता 'सवि व' "मोड्डमनुमर्ग"।
(कम्प)।

मंडक म [मण्डन] १ मूख भूषा (पठ
मानु ११२)। २ वि निनुपक रोमा बड़ाने-
कला (पठन बुना) को या (मानु १४५)
पाद दी [पाद]। मानुपण पहातेकानी
कनी (याता १ १-पन ३७)।

मंडक पु [रु मण्डक] पाव पुता (१६
१४) पाव स १६८; पुन २८; सम्पत् १४
१४)।

मंडक म [मण्डक] १ मण्डक पुता (पुमा
मण्डक १६)। २ टी (ज १४२
टी पुन ४६ २८)। ३ टी पुताकार
बर्चम (पुमा पठन)। ४ टी पुताकार से
केटन (ज ३ ४-पन १९१) पठन)। ५
कम-मुरी पादि वा बर-मोय (सम १६१
पठन)। ६ संवार, मण्ड (पन ११ ३।
४ ३ ६)। ७ एक प्रकार का पुन टीप।
८ एक प्रकार की पुताकार रम-पु (मिड
६)। ९ विष्वा 'कण्ड' कर्तव्यसमयक-
मिण्डकमण्डक मण्डकी (पठन)। १० पुनर्ग
वा रम्य-विरोध (पठन)। ११ मण्डकपार
परिभ्रमण (पुन १ ७; स १४६)। १२
रिण्ट धन (ज ७-पन १६८)। १३ पुं
मण्डकपार-विरोध (पिण्ड २६)। १४ वि
[कण्ड] मण्डन में परिभ्रमण करनेवाला

(पुन १ ७)। हिण्ड पुं [मिण्ड]
मण्डकपार (मंठि)। हिण्ड पुं
[मिण्डपि] कनी धर्म (मंठि)।

मंडक पुन [मण्डक] योडा का मुठ समय का
पावन (पठ १)। 'पेसेस पुं [मंडेरा]
एक प्राचीन कैत शास (एरि २ २)।

मंडकपुन पुन [मण्डकपुन] लपार, लप
(१ ३ ३४ मंठि)।

मंडकपुन पुं [मण्डकपुन] एक नाव बारह
कर्म-मार्गों का एक बाट (मण्ड १२३)।

मंडकपुन पुं [मण्डकपुन] १ मण्डकपार बनना
बाहु, कण्ड-बाहु बनेकर (मी ७)। २ मण्ड
मिड रुमा 'लेवीस' मिण्डकपुन पुन
मंडकपुनको हल्ला (सम ४२)। ३ कर्म
की एक कवि (पठ १-पन ३१)। ४
म पोप-विरोध को कीट पोप की एक
रामा है। ५ पुं की उस पोप में लपार (ज
७-पन ३४)। पुन की [पुन] मण्ड

विरोध पुनको का एक मण्ड, को पावन
मी 'मोड्ड' नाम से प्रसिद्ध है (पुमा १२६)।

मंडकपुन वि [मण्डकपुन] मण्डकपार बना
हुमा 'मंडकपुनको' मण्डकपुनको मंडकपुन-
विरोध' (पुमा ४ मण्ड १२) पठन)।

मंडकपुन वि [मण्डकपुन] मण्डकपुन १
मण्डकपारकाला। २ पुं मंडक रूप से सिव
पर्वत विरोध (ज ३ ४-पन १९१) पठन
२ ४)। ३ मण्डकपुन सामान्य रुमा
(याता १ १ पठन ३ ४ पुमा पुन
१२ कमा)।

मंडकी की [मण्डकी] १ पिक, लेणी समुह
(ज ३, ७६ मण्ड २ ३६)। २ मण्ड की
एक प्रकार की पिक (ज ११ १६ मण्ड)।
३ पुताकार मंडक-समूह (संवीप १७-
उप)।

मंडकीय केओ मंडकपुन = मण्डकपुन 'मण्ड
मण्डकपुनको' मण्डकपुनको मण्डकपुन' (पुमा
७ ज ३ १-पन १२९)।

मंडक पुं [मण्डक] १ विष्वा-मण्डक। २
कनी पादि से केटन रम्य (मी ३) पठन
१६; मण्डा पुमा)। ३ रम्य पादि करने का
मण्ड 'मण्डकपुन' 'मण्डकपुन' (कण्ड
मी)।

मंडक म [मण्डकपुन] १ पोप-विरोध। २ पुं की
उस पोप में लपार (ज ७-पन ३४)।

मंडकपुन की [मण्डकपुन] कौन मण्डक
(पुमा)।

मंडकपुन म [मण्डकपुन] पोप-विरोध
(पुन १० १९ कण्ड)।

मंडकपुन म [मण्डकपुन] रुमा विनियुक्त
करना। मण्ड की [पादा] रुमापेपनी
बाही (याता २ १६ ११)।

मंडकपुन वि [मण्डकपुन] रुमापेपनी (मिड १)।

मंडि १ वि [मण्डि] १ भुवि (कण्ड
मंडि १)। २ पुं मण्डकपुन मण्डकी के
एक पठन का नाम (सम १६, मिड
१८ २)। ३ एक मण्ड का नाम (बर्चभ
४३, ७९)। ४ मिड पुन [मिड] कैप-
विरोध (ज २ २)। पुन पुं [पुन]
मण्डकपुन मण्डकी का कर्म मण्डक (कण्ड)।

मंडि वि [मिड] पठन, कण्डा पुन। २
विष्वा पुन।

'मंडी' मण्डकपुन मण्डकपुन मंडि पाठे।
मण्डि मण्डकपुन मण्डकपुन मण्डकपुन मण्डकपुन

१ मण्ड कण्डा 'मण्ड मंडि मण्डकपुन
मंडि' (मिड)। ४ पादा 'मण्ड मंडि
मण्डकपुन मण्ड' (मिड मण्ड)।

मंडि पुं [मिड] मण्ड, पुमा मण्डकपुन-विरोध
(१९ ११०)।

मंडी की [मिड] १ मिडक, कण्डा (ज ६
१११) पाठ)। २ कण्ड का मण्ड रम मंडि।
३ मंडी मण्ड, मंड (पाठ ४)। पादा मण्ड
की [मण्डकपुन] एक मण्ड-मण्ड कर्म के
मंड कण्डा मंडी को मंडी नाम से मण्डक
की मंडी मण्डा का मण्ड (पाठ ४)।

मंडक १ मण्डक (पाठ २८) पठन)।
मंडक २ २, २८ मण्ड पाठ)।

मंडकपुन की [मण्डकपुन] १ मण्ड
मण्डकपुन मण्डकपुन मण्डकपुन मण्डकपुन

मंडकपुन मण्डकपुन मण्डकपुन मण्डकपुन
मण्डकपुन मण्डकपुन मण्डकपुन मण्डकपुन

मंडकपुन मण्डकपुन मण्डकपुन मण्डकपुन
मण्डकपुन मण्डकपुन मण्डकपुन मण्डकपुन

मंडकपुन मण्डकपुन मण्डकपुन मण्डकपुन
मण्डकपुन मण्डकपुन मण्डकपुन मण्डकपुन

संज्ञा पुं [संज्ञक] १ मेटक बाहुत
संज्ञा संज्ञकल्लरियो बन्धु प्रविष्टारो होइ
संज्ञक सुतल्ल (बन ७ कुमा) । २ कुम
संज्ञा विशेष स्वलोका सीमापार । ३
बन्धु-विशेष (संज्ञि १०) । 'संज्ञा' (प्रा) ।
४ स्तन-विशेष (सि) । पुत्र्य न [पुत्र्य]
मेक की बात । २ पुं स्तन-विशेष योग-
विशेष मेक की बति की तरङ्ग होमेबाया
मोल (सुत्र १२—पत्र २३३) ।

संज्ञोपर न [संज्ञोपर] मन्त्र विशेष (टी
१३) ।

संत एक [सन्त] १ पुत्र पचमरी करना,
ममलह्व करवा । २ काममय करना । संत
(सन्त मति) । मति संतरी (मप) (सि) ।
३ संत संत संत संत (सुपा ३३३) । ४
मति १२) । संत संत संत संत संत
संत संत (मति १२४ महा) ।

संत पुं [सन्त] १ पुत्र बल पुत्र बालो-
बला न बहिर्बल प्रविष्टारो मति (सि
१२३) । 'सन्त' बहिर्बल मति बालो-
मति ब' (मति १३ कुमा) । २ बन्धु पाप
कले योग ब्रह्मचारिक ब्रह्म-पदति (छाया
१ १४ डा ४ टी—पत्र १३३ कुमा
श्रुत १४) । अन्तरा पुं [अन्तरा] एक
बेज-जाति (स १४ टी—पत्र १३४) ।
'द्विपा' (द्विपा) मन्त्राभिष्टायक के
(पा १) । 'सु' नि [स] मन्त्र का बाकार
(सुपा ६ ३) । बाइ नि [बाइ] मन्त्रिक
मन्त्र की ही होइ बालो-बाला (सुपा
३३३) । 'सन्त' नि [सन्त] १ सप मन्त्र
मन्त्रिके द्वापरी होइ । २ बन्धु-मन्त्र । ३
ब्रह्म मन्त्र बाला 'सन्त' मन्त्रिके द्वापरी
का द्वापरी मन्त्र ब' मेक स संत संत
(मप) ।

संत नि [सन्त] मन्त्र-मन्त्रिकी मन्त्रिक
की 'मति' द्वापरी मन्त्र (मति २) ।

संत देवो मा = बा ।

संतपन न [सं] १ सन्त, सन्त । २ कुम
(१६ १४१) । ३ सन्त 'न' मेक मन्त्रिक
पाप मन्त्र (मप) ।

संतपन न [सन्तपन] १ पुत्र बालो-बाला पुत्र
ममलह्व (पत्र ३, २३; म ४३) । २
ममलह्व पचमरी सन्त 'संत' ल्ल ह्व
रियो मन्त्रिक विरुद्ध (म ११३) ।
३ बाइ 'पु' ल्ल पुणी संत संत ल्ल सुवर्ण (विषय
७३३) ।

संत देवो मन्त्र (मप) ।

संत म [सन्त] बालकार (सुपा १ १ ३;
पापा १ १ ३, १ १ ३ १ ३ ३ पि
३ २) ।

संत पुं [सन्त] १ मन्त्रि मन्त्रिक सीमा
(मप मप पाप) । २ वि मन्त्रो का बाल
कर (पु १२) ।

संत पुं [सं] निवाह-मन्त्र कोटी ज्योतिषिद
(१६ १११) ।

सन्त नि [सन्त] [पुत्र] रीति हो बालो
वि (मप) ।

सन्त देवो संत = मन्त्र ।

सन्त नि [सन्त] मन्त्र का बाता
मन्त्र संत संत म बाह्यो ल्लो मन्त्र
(मति १ म ११) ।

सन्त देवो संत = मन्त्र, निवृत्ति मन्त्र-
ल्लो मन्त्र (पत्र २१ १, १३ का
मति) ।

संत नि [सन्त] १ बाता, बालार । २ पुं
कोष शाली (सि १२३) ।

संत देवो मन्त्र (१२ ४४ पत्र २) ।
म नि [मन्] मन्त्रिक, कोप-पुत्र ।
की मन् (कुमा) ।

संत पुं [सन्त] मन्त्रिक 'मन्' निवृत्ति
वि (मप) ।

सन्त देवो [सं] मन्त्रिक (१६ ११३;
मति) ।

सन्त देवो [सं] मन्त्रिक मन्त्र (१६
११३) ।

संत एक [सन्त] १ विमोक्षण करना । २
पापा, द्वापरा करना । ३ मन्त्र, मन्त्रिक नाम ।
सन्त (१६ ४ १२१ प्रा ३३, म २) ।
मन्त्र संत संत संत संत संत संत
(पत्र ११३ ३३ पुत्र ३३३ १३३ म ३३)
३—पत्र ३३) । संत संत संत (मप
२३३) ।

संत पुं [सन्त] १ मन्त्रिकी मन्त्रिकी—मन्त्रिकी
मन्त्रिकी (सि १२४) । २ मन्त्रिकी-मन्त्रिकी
के समय मन्त्रिकी मन्त्रिकी बाता मन्त्रिकी-
मन्त्रिकी (डा ६ मप) ।

संत (मप) देवो मन्त्र = मन्त्र (सि) ।

सन्त न [सन्त] १ विमोक्षण, विमोक्षणी
विमोक्षणी मन्त्रिकी मन्त्रिकी मन्त्रिकी मन्त्रिकी
मन्त्रिकी (पा ११३) । २ मन्त्रिकी, मन्त्रिकी-
मन्त्रिकी (मन्त्रिकी १) । ३ पुत्र मन्त्रिकी,
मन्त्रिकी मन्त्रिकी मन्त्रिकी (मन्त्रिकी १४) ।
सन्त मन्त्रिकी मन्त्रिकी [मन्त्रिकी] १ मन्त्रिकी,
मन्त्रिकी मन्त्रिकी मन्त्रिकी मन्त्रिकी (मन्त्रिकी १४) ।
२ मन्त्रिकी मन्त्रिकी मन्त्रिकी मन्त्रिकी मन्त्रिकी
(१६ १३३) ।

सन्त देवो [सन्त] ऊपर देवो (१६
३३) ।

सन्त नि [सन्त] १ मन्त्र, मन्त्र (१६,
३३—मन्त्र पाप पुत्र १) । २ विमोक्षण
मन्त्रिकी (मन्त्रिकी १६ २२) । ३ पुं मन्त्रिकी-
मन्त्रिकी मन्त्रिकी मन्त्रिकी मन्त्रिकी मन्त्रिकी
मन्त्रिकी (मन्त्रिकी १६ २२) ।

सन्त नि [सं] मन्त्रिकी १ मन्त्रिकी मन्त्रिकी
(१६ १३३; मति) । २ मन्त्रिकी, मन्त्रिकी-
मन्त्रिकी मन्त्रिकी मन्त्रिकी मन्त्रिकी मन्त्रिकी
(१६ १३३) ।
मन्त्रिकी मन्त्रिकी मन्त्रिकी मन्त्रिकी (मप) ।

सन्त नि [सं] मन्त्रिकी मन्त्रिकी (१६
१३३; मति) ।

सन्त नि [सन्त] मन्त्रिकी मन्त्रिकी
(मप) ।

सन्त पुं [सन्त] १ मन्त्रिकी मन्त्रिकी
'मन्त्रिकी' मन्त्रिकी मन्त्रिकी मन्त्रिकी मन्त्रिकी
मन्त्रिकी (मन्त्रिकी १३ ३३ १३३) मन्त्रिकी
मन्त्रिकी मन्त्रिकी (१३ ३३) । २ मन्त्रिकी-
मन्त्रिकी (मप) ।

सन्त नि [सन्त] मन्त्रिकी (१६ ३३
मप) ।

सन्त पुं [सं] १ मन्त्रिकी-मन्त्रिकी (पत्र २, ३)
मन्त्रिकी १२ मन्त्रिकी १२, मप ३, १ ३३
३ २ ३३ मन्त्रिकी) । २ मन्त्रिकी मन्त्रिकी
(मप ३ ३) । ३ पुत्र मन्त्रिकी
मन्त्रिकी मन्त्रिकी मन्त्रिकी मन्त्रिकी मन्त्रिकी
मन्त्रिकी मन्त्रिकी (मप २ २) ।

मसल सफ [ससु] १ दुपकना, स्नेहान्वित
करना । २ बी, टैन आदि लिख्य इष्य से
मापित करना । मसल (यद्), मसलति
(का १४० टी) मसिल्लय मसल्लय
(भाषा २, १३ २) । हेतु मसल्लय
(बन) । ह मसिल्लय (योग १८२ टी) ।
मसलन न [मसल] १ मसलन मसलीत
(ह २२८ पया २२) । २ मसिल्लय मसल्लय
(मिह १) ।
मसलन पु [मसल] १ मसि । २ माल । ३
बंद बलि । ४ मसिल्लय बलि (मसि १३,
मि ३ ६) ।

मसिल्लय वि [मसिल्ल] दुहा दुहा (पाप
दे ८ १२ बीन १४२ टी) ।

मसिल्लय व [मसिल्ल] मसिल्लय-मसिल्लय मसु
(यद्) ।

मसिल्लय बी [मसिल्ल] मसिल्लय (वि १
१२१) ।

मसिल्लय वि [वि] हल-मसिल्लय हल मं बंधा
हल (मि १ १—यद् ४८ ४६) ।

मसल पु [मसल] मसल-मसल-मसिल्लय टीन
न मसल की बंधा (मि) ।

मसल्लय बी [वि] १ मसल की बंधा ।
२ मसल का बंधा । ३ मसल का मसल्लय
(यद् २, १४ १६) ।

मसल्लय बी [वि] मसल्लय (वि १
१२१ टी) । २ मसल की बंधा (हल
२ २ १४ १६) ।

मसल पु [मसल] १ मसल-मसल मसल
मसल (यद् १ २ बीन हल मसल १३
४३ मसल १ ४) । २ मसल (मसल २)

(बीन पु ४८ टी) । मसल न [मसल] मसल
मसल (मसल) । मसल मसल ।

मसल व [वि] मसल, मसल, मसल मं 'मसल'
(वि १ ४ टी) ।

मसल पु [मसल] मसल (मसल १) ।

मसल सफ [मसल] १ मसल । २
मसल । मसल मसल (यद् १४ १४)
३ मसल मसल मसल (पा २ २
४४ ४४ टी मसल मसल १) । मसल
मसल (मसल) (वि) । मसल मसल
(मसल) । ह मसल मसल मसल (वि
१४ २० मसल ११) ।

मसल सफ [मसल] मसल मसल मसल ।
मसल (वि ४ २१) ।

मसल पु [मसल] १ मसल, मसल (पाप १४
मसल मसल २ ११० मसल) । २ मसल
मसल (मि १ १४१) । मसल व [मसल]
मसल (वि १ १०) । मसल वि [वि]
मसल मसल मसल (यद् ४४) । मसल वि
[मसल] १ मसल मं मसल । २ मसल से
मसल मसल की मसल (मसल २ १ ६) ।
मसल वि [मसल] मसल-मसल (मसल मसल) ।
मसल वि [मसल] मसल का मसल (यद् २)
(यद् २) । ह वि [वि] मसल-मसल
(यद् ४४) । मसल वि [मसल]
मसल का मसल (मसल २) ।

मसल पु [मसल] १ मसल (मसल २ २—
मसल १४१) । २ मसल-मसल, मसल
मसल मसल (मसल १४१)

मसल पु [वि] मसल, मसल (वि १ ६,
मसल १११ वि १ ११ मसल २ १६)
मसल मसल ।

मसल वि [मसल] मसल-मसल (मसल
१४ ४१) ।

मसल पु [मसल] १ मसल (मसल १४)
२ मसल मसल (मसल) । ३ मसल
मसल (मि १ ११) । ४ मसल, मसल,
मसल (मसल मसल १ ११)

मसल पु [मसल] १ मसल (मसल १४)
२ मसल मसल (मसल) । ३ मसल
मसल (मि १ ११) । ४ मसल, मसल,
मसल (मसल मसल १ ११)

मसल पु [मसल] १ मसल (मसल १४)
२ मसल मसल (मसल) । ३ मसल
मसल (मि १ ११) । ४ मसल, मसल,
मसल (मसल मसल १ ११)

मसल पु [मसल] १ मसल (मसल १४)
२ मसल मसल (मसल) । ३ मसल
मसल (मि १ ११) । ४ मसल, मसल,
मसल (मसल मसल १ ११)

मसल पु [मसल] १ मसल (मसल १४)
२ मसल मसल (मसल) । ३ मसल
मसल (मि १ ११) । ४ मसल, मसल,
मसल (मसल मसल १ ११)

मसल पु [मसल] १ मसल (मसल १४)
२ मसल मसल (मसल) । ३ मसल
मसल (मि १ ११) । ४ मसल, मसल,
मसल (मसल मसल १ ११)

मसल पु [मसल] १ मसल (मसल १४)
२ मसल मसल (मसल) । ३ मसल
मसल (मि १ ११) । ४ मसल, मसल,
मसल (मसल मसल १ ११)

मसल पु [मसल] १ मसल (मसल १४)
२ मसल मसल (मसल) । ३ मसल
मसल (मि १ ११) । ४ मसल, मसल,
मसल (मसल मसल १ ११)

मसल पु [मसल] १ मसल (मसल १४)
२ मसल मसल (मसल) । ३ मसल
मसल (मि १ ११) । ४ मसल, मसल,
मसल (मसल मसल १ ११)

मसल मसल की [मसल] मसल-मसल मसल
(मि १ १४१) ।

मसल मसल वि [वि] मसल मसल मसल
मसल (वि १ १४१) ।

मसल मसल पु [मसल] मसल-मसल
मसल मसल मसल (मसल १४ १४१)

मसल मसल की [मसल] मसल-मसल
मसल मसल मसल (मसल १ ६) ।

मसल मसल वि [मसल] १ मसल-मसल
मसल मसल मसल (वि १, १६) । २ मसल
मसल, मसल (मसल) ।

मसल मसल वि [मसल] मसल-मसल
मसल मसल मसल (मसल १४१) ।

मसल मसल वि [मसल] मसल-मसल
मसल मसल मसल (मसल १४१) ।

मसल मसल वि [वि] मसल-मसल
मसल मसल मसल (मि १ १४१)

मसल पु [मसल] मसल-मसल मसल-मसल
मसल (मसल १ १४, १४ १४१) ।

मसल पु [मसल] मसल (मसल १ १४ १४१)
मसल मसल (मसल १ १४ १४१) ।

मसल मसल मसल [मसल] मसल-मसल
मसल मसल मसल (मसल १ १४ १४१)

मसल पु [मसल] १ मसल, मसल-मसल
मसल (मसल १ १४) । २ मसल मसल
मसल (मसल १४१ मसल २ १४१) ।

मसल मसल की [मसल] मसल-मसल
मसल मसल मसल (मसल १४१)

मसल मसल वि [मसल] मसल-मसल
मसल मसल मसल (मसल १४१)

मसल मसल की [मसल] १ मसल-मसल
मसल मसल मसल (मसल १४१)

मसल मसल वि [मसल] मसल-मसल
मसल मसल मसल (मसल १४१)

मसल मसल पु [वि] मसल-मसल
मसल मसल मसल (मसल १४१)

मसल मसल मसल [मसल] मसल-मसल
मसल मसल मसल (मसल १४१)

मसल मसल वि [वि] मसल-मसल
मसल मसल मसल (मसल १४१)

मसल मसल पु [मसल] मसल-मसल
मसल मसल मसल (मसल १४१)

मसल मसल [मसल] मसल-मसल
मसल मसल मसल (मसल १४१)

विशेष्य न [मध्यक] वैश्वोक्तविशेष
(इक) । द्विष वि [स्थित] उत्पन्न,
मध्यस्थ (रक्त ४) । ज्ञ, 'उह पुं
[ह] विन का मध्य मय शोहर (श्रम
मठ १८ मुया धनि ११, हे १ ८४
महा) । २ न तत्र स्थित पूर्वार्थे तत्र (बोध
५) । पठन् पुं [हृन्] कृत-विशेष
मध्यस्थ समय में धरत्यत कृतनेराने काल रीय
के कृतवत्ता हृन् (हुमा) । 'रव वि [रव]
उत्पन्न (उर त्व ४४८ टी मुर १९ ११) ।
२ बीच में छा हुआ (मुया २१७) । 'वेम
देवो दस (मुर १ १९) । अ देवो ज्य
(हे २ ८४ ध्या) । स वि [म] मध्य
का मन्ता बीच का (सक ता—विह
१) । 'रत पुं [पत्र] मिश्रक (व १११
७२८ टी) । रयसि की [रन्ति] मध्य पानि
(व १११) । ध्या पुं [ध्या] धार पर्वत
(पत्र) । वधि वि [वर्ति] मध्यवर्त
(मोह १४) । त्रिभि वि [त्रिभि] १
बीच में हुआ हुमा । २ चित में कुलित
(बन्ना १२) ।

समग्रम पुं [ह] नापित गाई हुआ (हे १
११५) ।

सामग्रार न [रे] मन्त्र, मध्य-मन्त्रार
(हे १ ११५, विह २८८ उक्ता या १) निवे
२४११ मुर १ ४२ मुया ४९ १ १
का १) 'धनोत्तरविश्वार समग्रमार्गिक
(नाप ७) ।

समग्रमि न [ह] मध्यमिन्, मध्यम (हे १
१२४) ।

समग्रमिन् न [मध्यमिन्] मध्यम (हे १
१२४) ।

समग्रमाम न [मध्यमाम] ठीक बीच (कम-
पिया १ १ मुर १ २४४) ।

समग्रार केनो सामग्रार (पत्र) ।

समग्रमिन् वि [मार्गमिन्] मध्यम-संवाची
(वर्ष १ १) ।

समग्रम न [मार्गम] उत्पन्न, मध्यमता
(व १११, बोध ४२) ।

हुमा) । २ पुं स्वर-विशेष (ठा ७—पत्र
१११) । 'रत पुं [पत्र] मिश्रक मध्य
पानि (व ७२८ टी) ।

समिग्रमिन् न [ह] उत्तर, मेट (वे १ १२५) ।
समिग्रमा की [मध्यमा] १ बीच को ठेकती
(वोध ११) । २ एक बीच मुनि-प्राजा
(क्या) ।

समिग्रमिन् वि [मध्यम] मध्यम-वर्ती बीच
का (धनु) ।

समिग्रमिन् केनो समिग्रमा (क्या) ।

समिग्रमि वि [मार्गमिन्, मध्यम] मन्त्रा,
बीच का (व १११, वेद २४८) ।

मह वि [ह] मध्यम-पति (हे १ १२२) ।

महिमा की [सुविम] मही मिही मही
(लता १ १) बीच हुमा महा) ।

मही की [सुन् सुविम] ऊपर देवो (बी
४ पत्रि हे) ।

महदुमिन् न [ह] १ परिशिष्ट की वा कोर ।
२ वि बहुपु । ३ धनुषि नेता (हे १
१४२) ।

मह वि [ह] धनस धालती मन्त्र, मन्त्र (हे
१, ११२, पत्र) ।

मह वि [सु] १ नापित मन्त्र (मुया १ १
१२) बीच) । २ मन्त्रा विन्ता (व ११७
वे ८) । ३ चिता हुमा (वोध १ २,
१७४) । ४ म विरल मरिच (हे १ १२) ।

मह वि [ह] सूत १ मत्त हुमा विनीय (हे
१ ४११) 'मन्त्रा मन्त्रा' (बना १४७)
'मन्त्र' (मा) (मोह १ १) । 'हृ वि
[हृ] मिनीय मन्त्र की कालेयता
(मन्त्र) । सिय पुं [मध्य] रम्यता (मि
१) ।

मह पुं [ह] कंड वता (हे १ ४४१) ।

महो न पुं [ह] मन्त्रा धाम-विशेष, विश्वके
पार्थी धोर एक मानस एक कोई मन्त्र न हो
ऐसा नाव (प्राया १ १, पत्र कय बीच
पह १ १ मन्त्रि) ।

महम पुं [ह] १ पर्व मन्त्रिया 'न किञ्च
नम्यु' (वोध १ मन्त्र) । २ मन्त्र,
मन्त्र मन्त्रा मन्त्रों में 'मन्त्र' (मन्त्रि) ।

महमिन् की [ह] छोटा मन्त्रा मन्त्रा
(पु १११) ।

महम पुं [ह] पर्व मन्त्रिया पाईका
महमर } 'मन्त्रा मन्त्रा' (मन्त्रि) मन्त्र
महमर } विन्ता (मुया २१, पु २२१)
२ मन्त्रा पर्व १ १ १२ पात्र मुया १
मन्त्रा ८४, पु २४१, लम्पत १११, मन्त्र
न टी नाव (क्या) ।

महम वि [महम] मन्त्र मान (पत्र) ।

महमम } पर्व [महमम] मन्त्र
महममम } मन्त्र मान करना । २ सक
मन्त्र मन्त्र मान हो उस उह माता ।

महमममम (पत्र २९ ११) । धनि
मन्त्रमन्त्र मन्त्रमन्त्र (मा) (वि ३२८
पत्र ११) ।

महमममम वि [महमममम] 'मन्त्र' 'मन्त्र'
मान हो उस उह माता हुमा (लता
१ १) ।

महम न [सुवक] मन्त्रा मुर्ध तत्र (पत्र) हे
१ २ १, मुया २११) । गिह न [सुह]
कन् (मि १) । 'विह न [विह] मुवक
के हाह होले पर या पाके पर बनाया पत्र
पत्र—स्मारक-मन्त्र (माया १ १ ११) ।

'हाह पुं [ह] पत्र, पत्र पर एक कूँके
पार्थी हों (माया २, १ ११) । धनि
की [सुविम] मुवक के स्थान पर बनाया
पत्रा छोटा मुव (माया २, १ ११) ।

महम पुं [ह] मायन मन्त्रा (हे १ १११) ।

महममम की [ह] मित्रिका पत्नी (हे १,
१२२) ।

महम वि [ह] १ मन्त्र, छोटा (हे १ ११७)
पत्रा लता) । २ स्वर मन्त्रा (मा १ ४)
व मन्त्रा मन्त्रा (४२) ।

महमर पुं [ह] पर्व मन्त्रिया (हे १ १२) ।

महमिन् वि [ह] मन्त्रिका मन्त्र किचा हुमा
(वन्त्र) ।

महमम वि [ह] मन्त्र छोटा 'मन्त्रमन्त्र'
कि मुह मन्त्रा कि वा मन्त्रि मन्त्रि
(बन्ना ४८) ।

महम की [ह] मन्त्रा की, मन्त्रा मन्त्रा
(हे १ ११४) ।

महमम वि [ह] १ हृ विमल । २
मन्त्र (हे १ ४४१) ।

महम वि [ह] मन्त्र मन्त्रा । मन्त्र (हे ४
१२७, मन्त्र १८) ।

मङ्गल्यं पुं [वि मङ्गल] वाच्य विशेष (राय
४५)।

महावी [२] १ बलात्कार, हठ, जबरबस्ती
(१६, १४ पाप्य सुर १ १३६ सुक्त २
१२)। २ ध्याना हुकुम (१६ १४ सुपा
२७१)।

मन्त्रिण वि [मन्त्रित] विचक्षण सर्वज्ञ किया
 गया हो वह (हे २ ३३ पङ्. पि २६१) ।
 मन्त्रिण वेणी मन्त्रिण (पङ्.) ।

मह देवी मह । मह (ह ४ १२९) ।

मनु पुनः [मनु] संख्यासियों का व्याख्यान शक्तियों
का निवासस्थान 'मन्त्र' (हे १ १११ सुपा
२१४ बज्जा १४ सवि); 'मन्त्र' (श्राव्य)।

सहित छह सत्र (कुमा) :

मङ्गिभ्य नि [व] १ ऋचि प्रवपसी मे 'मङ्गु'
 'एयात् प्रोसहीमो विवाचमस्मिन् वाचिषा'
 (विरि १७) । २ परिषेष्टि (वे २ ७५
 पाठ) ।

मही जी [मठिना] चीना मठ (बुधा ११३)
मण वक्क [मन] १ मलना । २ बालना । ३
चिन्तन करना । मण्ड मण्डि (वड् कुमा)
कण्ड मण्डिमाणा (मन १३ ७: विने
८१३) ।

मण धूम [मनस्] मन, धूमकरण [चित
(मण १३ ७ चिते १३२१ स्वप्न ४२,
ई २२ कुमा प्राप् ४४ ४८ १२१)।
अनुति की [अनुति] मन का संघर्ष
(ति १२१)। करज न [करज] चिन्तन,
प्राप्तिमान (भास्व ११०)। गुप्त वि
[गुप्ति] मन को संघर्ष में रणप्रवृत्ति (मन)।
गुप्त की [गुप्ति] मन का संघर्ष (उत्
२४ २)। आणुम वि [ह] १ मन को
बालप्रवृत्ति मन का बालकार। २ गुप्तर,
मनोर (प्राह १८)। जीविष्ठ वि
[जीविष्ठ] मन की धारणा जोनेवाला
(प्राह १ २—पत्र २८)। ओम्रु धु
[याग] मन की वैद्य, मनोव्यापार (का)
अ, प्यु प्युम वेदो आणुम (प्राह
१८ पत्र)। संमयी की [संमयी]
विद्या-विरोध मन को लक्ष्य करनेवाली विष्णु
शक्ति (पत्र ७ ११०)। नाय न [हानि]
अन न घाताकार करनेवाला हान न

पर्यव क्राम (कम्म ३ १८ ४ ११ १७)
२१)। नाणि वि [ज्ञानिण] भग-पर्यव
नामक ज्ञानवाक्ता (कम्म ४ ४)। पट्ठासि
की [पर्यासि] धूलों को भग के रूप में
परिणत करने की शक्ति (भग ६ ४)।

पञ्चय पुं [पर्यय] ज्ञान-विशेष दूसरे के मन की धारणा को जाननेवाला ज्ञान (मन-धीन विशेष न०)। पञ्चयि वि [पर्ययिन्] मन-पर्यय ज्ञानवाला (पञ्च २१)। पञ्चित्र विज्ञा की [प्रश्नविद्या] मन के प्रश्नों का उत्तर देनेवाली विद्या (सप्त १२३)। वल्लिज वि [वल्लिन्, क] मनो-व्यवस्था रङ्ग मनवाला (पण्ड २ १ शीघ्र)। माहृय वि [माहृन्] मन को मुख करनेवाला, विष्टाकर्षक (पा १२०)। योगि वि [योगिन्] मन की केंद्रवाला (मन)।

दमयाजी की [वर्णाजी] मन के रूप में
परिचित होनेवाला पुत्र-वधू (पत्र)।
वज्र न [वज्र] एक बिद्याभर-भगर
(रक्त)। समिति की [समिति] मन का
संयम (अ ८—पत्र ४२२)। समिति
[समिति] मन की संयम में रखनेवाला
(मन)। इस में [इस] कन-निधेय
(मन)। इस में [इस] कन-निधेय

(विषय) हर वि [हर] मनोहर, पुनर,
 विष्णु कर्मण (हि १ १११ श्रीम कृष्ण)।
 हरण पुन [हरण] विष्णु-विष्णु एक
 माया-नववि (विषय)। [मिराम] [मिरा
 नेड वि [अमिराम] मनोहर (धम
 १४१ श्रीम. उप. पु. ३२२ अ. २२ टी)।
 [म वि [जाप] पुनर, मनोहर (धम
 १४१ विषा १ १ श्रीम कृष्ण)। वेदो
 मणो।

मर्णं वेद्यो मणयं (प्राक् ३८) ।

मर्णसि वि [मनसियम्] प्रसस्त गणनाया
(हे १ २४) । जी र्णा (हे १ २४) ।

मर्णसिद्ध } श्री [मन-शिला] नाम बर्ण
मर्णसिद्धा } की एक उपवास, मगशिव
मैगशिव (जुमा है १ २६)।

मणग पुं [मनक] एक वैज बाल-मुनि महापि
राम्यसबमूरि ना पुन पीर शिष्य (कन्य
बर्मा १८) । वैजो मणय ।

मण्यगुणिषा श्री [६] योठिका (पद्य) ।

मण्यम [मनन] १ ज्ञान ज्ञानना । २
सममना (चित्ते १५२५) । ३ चित्तन (भाषक
३३७) ।

मणयं वृ [मनक] द्वितीय गरुडभूमि का
 तीसरा गरुडभूमि—गरुडभूमि-विशेष (देख
 ६) । देखो मणयं ।

मण्यर्थः [मनाम्] प्रत्य बोद्धा (हि २
१६८, पाप्मं पठ) ।

मणस ईदो मण-मम्स् 'पुनमणसो
करिस्तामि' (पदम १ ३६) 'बानो वेव
तवस्सिस्व हीह अहीसमणसस्व' (मोम
४१७)।

मण्यसिद्ध } यैवो मण्यसिद्ध (कुमा, हे १
मण्यसिद्धा } २६ बो १ स्वप्न ४४)।

मणसीक्य वि [मनसिहृत] चित्तिष्ठ (पण्ड
१४—१५ ७६२ सुपा २४७) ।

मणसीकर एक [मनसि + कृ] चिन्तन
करना मन में रखना। मणसीकरे (रत
१३३)।

मरणस्मिन् वैश्वे मरणस्मिन् (अर्थात् १५१)।

सामान्य विद्यार्थी सामान्य / से. ३, १९९३, कानून)

मन्त्राष्ट्र { (पय) ज्वर रोगो (कुमा भविष्यि
मन्त्राष्ट्र { ११४ वि ४ ५१६ ५३९।

महाराष्ट्र राज्य (सं. १४३) मध्ये.

मज्झिमा निकाय (अध्याय १३)

महाशिव्या की [मृणाळिका] पद्म-वन्द्य का

मृग (लघु २) । श्वो मृगसिद्धि ।
मृगसिद्धि श्वो मृगसिद्धि (ह १ २५)
ति १४) ।

मणि पुं० [मणि] पत्थर-निकेतन शुक्ल
 भाति रत्न (कथा प्रेम) कुमारी की ३ प्रत्यु
 ५)। लीग पुं० [अङ्ग] कल्प-वृक्ष की एक
 जाति की वानस्पृश श्रेष्ठ है (सम १७)।
 आर पुं० [आर] बहुरी रत्नों के चूर्णों
 का चमत्कार है ७ ७) मुद्रा ७८) लाया
 १ १३) बर्तन १४)। कंजय न
 [कञ्जयन] कल्प-वर्षत का एक टिखर
 (अ २, १-पद ७)। कूट न [कूट]
 कणक वर्तन का एक टिखर (दीप)
 कम्बोज वि [कम्पित] रत्न-वर्णित (नि
 ११६)। चक्रया की [चक्रिया] नदी-

बनै. मण्णसमहण्ण (गुण १०२)। यह
मण्णमाण (गट ११३)।

मण्णण ॥ [मानन] मतना धारर (ज
१५४)।

मण्णो देवो मन्ना (पत्र)।

मण्णिय देवो मण्णिय (पत्र)।

मण्णु देवो मन्तु (भा ११३, ५६, ६९, ७१)
देवो १७)।

मण्ण देवो मणो (कर्म)।

मत्त नि [मत्त] १ मत्त-मुत्त, मत्तवाता (व्या)
मत्तु १५४, १८८ प्रवि। २ म. मत्त वाक
(ठा ७)। ३ मत्त मत्ता (पत्र १७१)। अत्ता
की [अत्ता] नरो निरोप (ठा २ ३ ४८)।
मत्त खो मत्त = मात 'बसमत्तमिदुत्त'
(रंश)।

मत्त न [अमत्त मात्र] पात्र मत्तन (भाषा
२ १ १ ३ जोम २३१)। देवो मत्तय।
मत्त (वा) देवो मत्त = मत्त (यज)।

मत्तगय पुं [मत्तगय, व] कर्मगुण की
एक वाति मत्त केनाता बलतक (मम १७-
पा १७१)।

मत्तह पुं [मातण्ड] मत्त रति (मम्मत्त १५३
तिरि २ =)।

मत्तग न [व] देवग मत्त (गुण ६)।

मत्तग पुं [अमत्त मात्र] १ पात्र
मत्तय। २ छोटा पात्र बिज्जको
ममो होय (हृ ३ कर्म)।

मत्तय देवो मत्तग = दे (गुमक १३)।

मत्तगः भा [म] बनावार (दे १ ११३)।

मत्तपाण पुं [मत्तपाण] बरहा, बरमत्त
पाण (दे १ ११३, गुर १ १
मि)।

मत्तपाण पुं [व] मत्तपाण, मत्तपाण (दे १
११३, पत्र २ १७, गुण ५८६)।

मत्ता की [मात्रा] १ पत्ताप (तिरि १३१)।

२ पत्र पात्र हिता (म ५५३)। ३ मत्तय
भा गुण मत्त। ४ मत्त उपचार-मत्तपाण
मत्तपाण (तिरि)। ५ मत्त रति मत्त (पात्र)।

मत्ता य [मत्ता] मत्तार (मम १ २
१२)।

मत्तपाण पुं [व] मत्तपाण] बरहा मत्त
मत्त (दे १ ११३, गुर १ २०)।

मत्तिया की [मत्तिया] मिट्टी (पण्ड १—
पत्र २३)। यह की [यती] मत्ते-निरोप
मत्तिया की मत्तिया (पत्र २०३)।

मत्तय पुं [मत्तय, क] माता मिर (सि
मत्तय) १ १ स १५२, चीन)। स्य नि
मत्तय [स्य] मिर में मित (पत्र)
"मत्ति पुं [मत्ति] मिट्टीमिण प्रमाण गुण
(ज १५८ टी)।

मत्तय पुं [मत्तय] मत्त पत्र मत्तिय वा
मत्तय—मत्तार (भाषा २ १ ८
६)।

मत्तयपोय नि [व] धीतमत्तय] बाहर
से मुक्त गुणो से मुक्त किया हुआ (गुण
१ १—पत्र १७)।

मत्तयुग्म पुं [मत्तयुग्म] १ मत्तयुग्म-
मत्तयुग्म] मिर में से निरस्त एक प्रकार
का पिताप पत्नी (पण्ड १ १, गुर १ १)।

२ मत्तय मत्तयुग्म पति (ठा १ ४—पत्र
१७, गुर १ १)।

मत्तिय देवो मत्तिय = मत्तिय (पण्ड १ ४—
पत्र १३)।

मत्त देवो मत्त = मत्त (गुण ११ १६ नि
२ २)।

मत्त (वा) देवो मत्त = मत्त (शह १ ३)।

मत्त देवो मत्तय (लज ६६, भा—गुण
२३१)।

मत्तयमत्ता (वा) देवो मत्तयसत्तय (पण्ड
१—पत्र १८)।

मत्तया देवो मत्तय = मत्तय (पात्रा २—पत्र
२३१)।

मत्तयिज नि [मत्तयिज] वाकीरितक मत्त-
यिज (गुण १ १—पत्र १६ चीन)।

मत्त देवो मत्त = मत्त (भा १२, गुण १
१६२)।

मत्तय देवो मत्त (क १३२)।

मत्तया देवो मत्त (क १३२)।

मत्तयि की [व] गुणी मत्तय बरनवाणी
की (पत्र)।

मत्तय [मत्त] १ मत्तय देवो। मत्तिय
देवो मत्तय मत्तय। मत्तय (पत्र)।

मत्तय देवो मत्तय (भा—गुण १३३)। २
मत्तय (ति १५२)।

मत्तय न [मत्तय] १ मत्तय-मत्तय मत्तिय
(गुण २४)। २ हिता करना 'मत्तयामत्तय
मत्तय मत्तय' (उत्त)। ३ नि मत्तय करने-
वाता (टी १)।

मत्तय पुं [मत्तय] मत्तय-मत्तय मत्तय
(दे १ १६३, गुर १ १५८, ति १३७)।

मत्तयि नि [मत्तयिज] मत्तय बरनवाता
(गुण २४५, २४६)।

मत्तय न [मत्तय] मत्तया मत्तय, मत्तय
मत्तय-मत्तय (पीपा कर्म)।

मत्तय नि [मत्तयिज] मत्तय मत्तय 'मत्तय
मत्तय मत्तय मत्तय' (मम २ १ १७)
भाषा)।

मत्तयि नि [मत्तयिज, व] मत्तय देवो
(हृ ४, पत्र १)।

मत्तय देवो मत्तय (पात्र)।

मत्तय की [मात्रा] १ पत्रा पिण्णम की मा
का नाम (गुण १ १ १ टी)। २ पत्रा
पात्र की एक की मा नाम (मि १७१)।

मत्तय पुं [मत्तय] मत्तय मत्तय का
पात्रमत्तय का एक उपाय (मम १७
७—पत्र ७३)।

मत्तय पुं [मत्तय] मत्तय मत्तय का
पात्रमत्तय का एक उपाय (मम १७
७—पत्र ७३)।

मत्तय पुं [मत्तय] मत्तय मत्तय का
पात्रमत्तय का एक उपाय (मम १७
७—पत्र ७३)।

मत्तय देवो मत्तय (पत्र)।

मत्तय देवो मत्तय (पत्र)।

मत्तय पुं [मत्तय] एक मत्तय-मत्तय
(गुण १३२)।

मत्तय देवो मत्तय (ति १ १३६)।

मत्तय देवो मत्तय (मम ४ ४—पत्र
२०१)।

मत्तय की [व] मत्तय] मत्तय-मत्तय (पत्र)।

मत्त य [व] मत्तय देवो मत्तय मत्तय
(गुण)।

मत्तय देवो मत्तय (पत्र)।

मत्त देवो मत्तय मत्तय, मत्तय (पात्रा मत्त)
मत्तय मत्तय (पत्र)। मत्तय मत्तय
(मत्त)। मत्तय मत्तय मत्तय (गुर १५
१७१, भाषा मत्तय गुण १ ७, गुर १
१०४)।

मरुह पुं [दे] मृण-पिण्ड (दे १ ११४) ।

मरुय वैभो मरुअअ (गा १७७ कुमा विह २६) ।

मरुम वैभो मरिस । मरुवज (मरि) ।

मरु एक [मरु] बाण करण (भा ६ ११ टी—पत्र ४८) ।

मरु वैभो मरु । मरुह, मरुह (दे ४ १२५ प्राह १८ मरि) मरिपि (दे १ ११) मरिपि (पुर १ ६) । कर्म मरिअह (पंचा १५ १) मरु मरुव (दे ४ ४२) । कण्ड मरिअव (दे १ ११) । उह मरिअव मरिअण (कुमा, पि ५८५) । उ मरुअव (दे १६ निवा ३) ।

मरु पुं [दे] खेह, पलीता (दे १ १११) ।

मरु पुं [मरु] १ मरु (कुमा प्राहु २३) । २ पाप (कुमा) । ३ बीजा कुमा कर्म (विह १२२) ।

मरुपिय वि [दे] पत्नी मरुपिय (दे १ १२१) ।

मरुअ न [मरुअ, मरुअ] मरुअ मरुता (सम १२४, मरुह दे १ १४, पुगा ४४ पंचा ११ १) ।

मरुय पुं [दे] मरुह पास्तरण-विरोध (आमा १ १—पत्र ११ १ १७—पत्र १२६) ।

मरुय पुं [दे] मरुअ १ पहाड़ का एक भाग (दे १ १४४) । २ छान बनीया (दे १ १४४ पाप) ।

मरुय पुं [मरुय] १ बीजाव रेत में स्थित एक पर्वत (पुगा ४२४, कुमा पत्र) । २ सम-पर्वत के निचले-बर्ती देश-विरोध (पत्र २७१, विप) । ३ छत्र-विरोध (विप) । ४ देशविमान-विरोध (प्रेम १४५) । ५ न बीजाव कर्म (बीज १) । ६ पुंकी मरुय रेत मा निवासी (पण्ड १ १) । 'केह पुं [केह] एक राजा का नाम (पुगा १ ७) । 'गिरि पुं [गिरि] एक पुष्पक्षेत्र के नाम (पुगा १४२) । 'दि पुं [दि] पर्वत-विरोध (पुगा ४७७) । मरु वि [मरु] १ मरुय रेत में कर्म । २ न कर्म (पत्र) । मरु की

[मरी] राजा मरुयकेयु की बी (पुगा १ ७) । य [म] रेतो मरु (पत्र) ।

रुह पुं [रुह] कर्म का पेड़ (पुर १ २८) । २ न कर्म-कण्ड (पाप) ।

रुह पुं [रुह] मरुय पर्वत (पुगा ४२६) । गिरि पुं [गिरि] मरुयपर्वत से बहता शीतल पवन (कुमा) । 'यस वैभो रुहल (रंभा) ।

मरुय वि [मरुय] १ मरुय रेत में कर्म (मरु) । २ न कर्म (मरि) ।

मरुयही की [दे] ठरणी पुनवि (दे १ १२४) ।

मरुह पुं [दे] पुण्य-कर्म (दे १ १२) ।

मरि वि [मरिअ] मरुपत्ता, मरु-पुच्छ (मरि) ।

मरिअ वि [मरिअ] विरुद्ध मरुन किया गया हो मरु (पा ११ कुमा दे १ ११४, बीज आमा १ १) ।

मरिअ न [दे] १ मरु क्षेत्र । २ मरुह (दे १ १४४) ।

मरिअ वि [मरिअ] मरु-पुच्छ, मरिअ 'मरुमरिअदेवता' (पुगा ११६ गउह) ।

मरिअव वैभो मरु = मरु ।

मरिअ वि [मरिअ] मरु मरु-पुच्छ (कुमा पुगा १ १) ।

मरिअिय वि [मरिअिय] मरिअ किया हुआ (अ) ।

मरुमस वि [मरुमस] मरिअ मरुता (पाप) ।

मरुअ वैभो मरु = मरु ।

मरुअ वैभो मरिअव वि ८४ गउह—विह १८) ।

मरु एक [मरु] वैभो मरु = मरु (मय १ ११ टी) ।

मरु पुं [मरु] १ पहाड़ का पुच्छी लकने-वाला बाहु बोझ (बीज कपा पण्ड १ ४ पुगा) । २ पाप 'बीजविहपविमल' मरु मरिअ वि मरुता (पुगा १११) । ३ मरु का कर्म-मरु-कर्म । ४ मरु का वातावरण मरु (मय १ १—पत्र १७७) । मरु न [मरु] पुच्छी (कण्ड दे ४ १८२) । विह पुं [विह] एक राज-

कुमार (आमा १ ८) । बाह पुं [बाहिय] एक बुद्धिवाला प्राचीन वैभो मरुता वैभो मरुता (सम १२) ।

मरु न [मरु] १ पुण्य कर्म (अ ४ ४) । २ पुण्य की पुंकी पुंकी मरुता (पाप बीज) ।

३ मरुत-विह पुण्यमाता (ह २ ७६) । ४ एक वैभो-विमान (सम १६) । ५ मरि 'मरु वि मरुता' (पाप विह मा १ पत्र ११२) ।

मरु पुं [मरु, 'मरु] मरु-विरोध (भा बीज पि ८६) ।

मरु न [दे] मरुह १ पाप विरोध, मरुय शरण (विह २४४ टी विह २१)

पुं पुं मरुह मरुह मरुह १४ आमा १ ६ दे १ १४४, मरी ६७) । २ मरुत पाप-पाप (दे १ १४४) ।

मरुय न [दे] मरुय-वेभ एक ठरणी कुमा । २ वि मरुय से रक्त (दे १ १४४) ।

मरुपयी की [दे] मरुपयी मरुता (दे १ ११२ पाप मरु १८) ।

मरि वि [मरिअ] बाण-कर्ता (मय १ ११ टी) ।

मरि वि [मरिअ] मरुय-पुच्छ मरुता (बीज) ।

मरि की [मरि] १ मरुय-वेभ विह-वेभ का भाग (अ ४४ आमा १ ८, मरु १२ पत्र) । २ मरु-विरोध मरुय का भाग (दे २, १८) । पाह, माह पुं [माह] मरुय-वेभ विह-वेभ (मरु, मरु ११) ।

मरि की [मरि] पुण्य-विरोध (मय १ ११ टी) ।

मरिअपुय पुं [मरिअपुय] एक राजा का नाम (कुमा) ।

मरिअ की [मरिअ] १ पुण्य-विरोध (आमा १ ११ मरु ४६) । २ पुण्य-विरोध (कुमा) । ३ मरु-विरोध (विप) ।

मरिअ न [मरुय-पाप] १ पुण्य-विरोध-विमान । २ मरु-विमान (मय १, ११ टी—पत्र ४८) ।

मरु वैभो मरि (आमा १ ८; पत्र २० १५, विह १४४ कुमा) ।

महर्क [हे] मीन नाम्ना मोला कला ।
 महर्क [हे] ११६ टी। (महर्) ।
 महर्क न [हे] मोला मीन (११६ टी) ।
 महर्क [मापय] मापय माप करण
 मापना । महर्क (हिरि ४५३) । कर्मा
 'मापय' मतिर्भवति' (कर्म २ ८६ टी) ।
 महर्क-मतिर्भवत्यय (विश्व १४) ।
 मापयि वि [मापयि] मापय ह्य (ह्रु ११) ।
 महर्क (ना) की [मस्य] मस्यो (वि
 २३१) ।
 मस } पु [मस्य क] १ छत्तैर पर का
 मस्य } विनामर कला दान, विष (प
 २३७) । २ यच्छन् धुह जन्तु-विशेष (वा
 ५६ ; पाद १ ; ब्रह्मा ४६) ।
 मस्यस्यार न [मस्यस्यार] शत्रो का एक
 स्वर्ग प्राक्क्य विमान (वेद २३१) ।
 मस्य येनो मस्य (अप धीप पठ ३३
 १ = की ?) ।
 मस्ययि वि [मस्ययि] १ लिपय विष्णा ।
 २ धुनुमाह कोमल यच्छति । १ माह,
 मोमा (हे १ ११ कुमा) ।
 मसरक चक [हे] धुनुमाह कमेता । चक-
 न्धवि करणोन्म मसरकिकि (अप ४)
 (ली) ।
 मसाय न [मसरान] मसाय मरकट (वा
 ४ ; प्राय कुमा) ।
 मसार पु [हे] मसार] मस्यस्य-धन्यक
 पलायन-विशेष वहीटी का स्वर (हस्ता १
 १—पत्र ६ धो) ।
 मसारगह पु [मसारगह] एक राज-वादि
 (हस्ता १ १—पत्र ३१ कमा कण १६,
 १ हक) ।
 मसि धी [मसि] १ शत्रव कम्पक (अपु) ।
 २ स्थली विवाही (गु २ २, ३) ।
 मसिहार पु [मसिहार] कपिक-परिवाणक
 विशेष (वीर) ।
 मसिण केनो मसण (हे १ ११ कुमा
 वीर से १ ४३ २, ५४) ।
 मसिज वि [हे] मस्य, मसर (वि ३ ११) ।
 मसिपिण वि [मसिपिण] १ मृद, धुह
 विना ह्य नाति 'पेक्षिपि मसिपिण'

(पाद) । २ लिपय विना ह्य (वि ३
 १) । ३ विष्णुवि विमसि (मि १ ५३) ।
 मसी केनो मसि (व्या) ।
 मसूर पु [मसूर, क] १ भाय-विशेष
 मसूरा, मसुरि (अ ३ १ सम १४६, विह
 मसूर्य १२३) । २ उच्छेदक बीसीता
 (गु २ ३३; कमा) । ३ नलया वर्य का
 धातुमर प्राण (पत्र ८४) ।
 मसू येनो मसू (हंनि १३ वि ११२) ।
 मसूरा केनो मसूरा 'मसूरा य विह' (वीर ३२) ।
 महर्क [महर्क] माहना माहना ।
 महर्क (हे ४ १६२ कुमा सल) ।
 महर्क [महर्] १ मचना विरोध
 करण । २ माहना ; माहना (ज्या) ।
 महर्क [महर्] पुना । महर् (कुमा)
 महर् (हिरि ११६) । चक महर्क (कुमा) ।
 क महर्क (अप ५ १२६) ।
 महर् पु [महर्] कवय (विना १ १—पत्र
 २, रंगा पाका सल) ।
 महर् पु [महर्] यव (वीर पठ) ।
 महर् वि [महर्] १ बड़ा हृद । २ विपुल
 विहीरी । ३ कतम केन 'एग यई धनुषि' (हस्ता १ १—पत्र ११ कमा बी ७
 हे १ ३) । बी. इ (अप महा) । एपी
 की [हे] विहीरी पठनी (त्रि) । कंतस्य
 पु [नाम्यरास] राजव वी का एक
 पत्र, एक वीर-वति (पत्र २, २१३) ।
 कमाया न [कमाया] संयय-विशेष
 यव बाह कमा की वक्रा (वी २) ।
 कमाय न [कमाय] लय-कतम कमाय-
 वी (मि) । कमा केनो माह-कमा
 (वेद २२) । गह पु [गह] राजव वी
 का एक राजा, एक वीर (पत्र २, २१३) ।
 गहर् केनो माह-गह (अप २३) । गह
 वि [गह] माह-गह वीर (गु १
 १ १ कुमा १७) । गहवि वि [गहवि]
 १ गहर् कुल (वि १४ १७) । २
 विपुल ; 'मिगवर्धन-गुण-गहवि' (गु १
 १) । ३ स्यापिण 'अपिगवर्धन-गुण-
 गहवि' (अप १२३) । गहर् (अप)
 वि [गहर्] गह-गह,

महर् (मि) । महर् पु [महर्] १
 राजगुण-विशेष (विना २ ३; २) । २
 एक राजा (विना १ ४) । ग वि [अप]
 १ बड़ा पुराण-वाता । २ बड़ा पुना—सत्कार
 वाता (अ ३ १—पत्र ११०-अप) ।
 ग वि [अप] मति पुन्य (अ १ १
 अप) । गहर् वि [अप] बड़ा
 धारण (गु १ ११०) । गहर् पु
 वसु] धन्यय धन्यय वा साधय
 विनायक वे (पत्र २३; सल ७) । जाह
 की [जाह] विनायक-विशेष (सल १) ।
 गहर् वि [गहर्] महर् वेनाता
 (अप वीर) । गहर् की [गहर्] महर्
 वेन (अप) । गहर् वि [गहर्] महर्
 वि [गहर्] विनायक-विशेष (अप वीर
 १) । गहर् पु [गहर्] गह-गह
 (गु १ ११०; हे १ २६३) । पत्रा की
 [गहर्] १ बड़ी गह । २ गह-गह
 (अप ४ २७ टि गह ४) । गहर् वि [गहर्]
 वि [गहर्] गह-गह वि [गहर्] गह-
 (वी २) । गहर् न [गहर्] गहर्, गहर्
 (वा २७) । गहर् वि [गहर्] गहर् बड़ा
 (विना १) । २ गहर्, गहर् गहर्
 (अप वीर विना १ ७) । ३ गहर्-गह
 का राज (वीर) । बी. 'रिया री (अ
 ४ १—पत्र १६५; ३७) । गहर् वि [गहर्]
 गहर् गहर् (अप १ ७, वा १) ।
 गहर् न [गहर्] गह-विशेष बड़ा गहर्
 (अप ७ १७) । 'विम पु [गहर्]
 गहर् (मि) । गहर् वि [गहर्]
 गहर् गहर् (अप १२३) । गहर् पु
 [गहर्] गहर् गहर् (अप १ १—पत्र ४४
 वा १६५ अप) । 'गि की [गहर्] १ बड़ी
 पाका । २ पत्र (पत्र १ २—पत्र
 २२) । गहर् पु [गहर्] १ गहर् गह
 (हे ४ ४५३) । २ गहर् गहर् गह के एक
 गहर्-गहर् का गहर् (अ २, १—पत्र
 १ २) । 'गि वि [गहर्] गहर्-गहर्
 (कुमा) । गहर् पु [गहर्] गहर्
 (गहर्) । गहर् केनो गहर् (वा २) ।
 पाय न [गहर्] गहर्-विशेष (गि १११) ।
 पुंरुकी पु [पुंरुकी] गह-विशेष

पुन (निर ११)। कण्ठा की [कण्ठा]।
 पना येरिह की एक पत्नी (घंठ २३)।
 कपय पुं [कपय] १ बैन धन-विशेष
 (पंक्ति)। २ कपय का एक बरियण (घन
 ११)। कमाय न [कमाय] संख्या-विशेष
 बीपटी लाव महाकम्पाय की संख्या (को
 २)। कयन देवी मह इयन (घमाय
 १५५)। कपय पुं [कपय] १ योरोप
 होना का उत्तर दिश का एक (छ २, १
 ६६)। २ वि महाय शरीराला (ज्या)।
 कयय पुं [कयय] १ महाहृद-विशेष एक
 हृद-वेदा (दुपय २; छ २ ३)। २
 दक्षिण ललाट-सुख के पालक-कला का
 दक्षिणिक देव (छ ४ २—पत्र २२३)।
 ३ एक हृद, पिताम-निकाय का उत्तर दिश
 का एक (छ २, ३—पत्र ५३)। ४ पयमा
 शक्ति केन की एक बाति (घन २०)। ५
 बसु-कुमार केन का एक लोकपाल (छ ४
 १—पत्र १२५)। ६ वैश्वदेव एक का एक
 लोकपाल (छ ४ १—पत्र १६)। ७ गव
 निविर्धों में एक निधि को बालुओं की पुर्ण
 कला है (छ ६ ६५ टी छ ६—पत्र
 ४२६)। दलसी मरक-मुनि का एक
 मरकजाल (छ ६, ३—पत्र ३४१)। छन
 ३)। ६ निराव केन की एक बाति
 (घन)। १ जगन्निधि बगैरी का एक
 शरीर बैन मल्लर (दुप १७५)। ११ मित्र
 म्हादेव (घाव १)। १२ वज्रमित्री का एक
 हनदाल (घंठ)। १३ पना येरिह का
 एक पुन (निर ११)। १४ न एक के-
 विमल (घन १६)। काली छी [काली]
 १ एक विद्याभेदी (संति ६)। २ वयमा
 मुनिगत की शालक-देवी (संति ६)। ३
 पना येरिह की एक पत्नी (घंठ २३)।
 कण्ठा की [कण्ठा] एक यदा-मयी (छ
 ३ १—पत्र ११६)। कुमुद कुमुद न
 [कुमुद] १ एक वै-विमल (घन १३)।
 २ संख्या-विशेष बीपटी सहाय महापुत्राय
 की संख्या (को २)। कुमुदमंग न [कुमु
 दाह] संख्या कुमुद की बीपटी लाव से
 कुमुद पर को संख्या लय हो वह (को २)।
 कृमय पुं [कृमे] कृती-वहार (वज्र)।

कुल न [कुल] १ अष्ट कुल (विष् ८)।
 २ वि प्रसूत कुल में उत्पन्न निजन्तों के
 यक्षकुल (दुप १ न २४)। मंगा की
 [मगा] परिग्रह-विशेष (घन १३)। गह
 पुं [मह] १ सूर्य यावि ज्योतिष्क (घाव
 ५७)। गह वि [आमह] पायसी हृदी
 (घाव ८७)। गिरि पुं [गिरि] १ एक
 बैन गहवि (जग कय)। २ बड़ा पर्वत
 (कव)। गोव पुं [गोव] १ महाय राज।
 २ विन यक्षाय (जग विसे २६३६)।
 गोस पुं [गोप] १ ऐरवत क्षेत्र के एक
 घानी निजन्त (घन १२४)। २ एक एक
 सतिष्ठ कुमार केन का उत्तर दिश का एक
 (छ २ १—पत्र ३)। ३ एक दुलकर
 पुरय (घन १३)। ४ परमाधिक केन
 की एक बाति (घन २६)। ५ न. वैविमल-
 विशेष (घन १२ १७)। बन्ध पुं [बन्ध]
 ऐरवत नर के एक घानी शीर्षकर (घन
 १२४)। अजिन पुं [अजिन] बड़ी
 शर्मावा यावि नर के एक-मात्र शीप
 (कुमा)। अजवि ५ [अजवि] महा-लाप
 (दुप ४७४)। बस पुं [बस] १ बस
 यक्षकी का एक शीप (छ ४—पत्र ४२६)।
 २ ऐरवत क्षेत्र के कर्णव घानी शीर्षकर-देव
 (घन १२४)। ३ वि यक्षाय यक्षकी (जग
 १२ १३)। जाह की [जाति] पुन
 विशेष (पल १)। जाण न [जान] १
 बड़ा माल-बाहल। २ बावि, संयम
 (भावा)। ३ एक निजान-नगर का नाव
 (हृ)। ४ पुं. योश कुटि (घाव)। जुह
 न [जुह] बड़ी बहारी (को ३)। जुम
 पुं न [जुमा] माय पति (घन १३)।
 ज केनो यण 'मायपुत्रायदेव समकस्योदे
 महाकमन्दे का' (घोष ६६)। जई की
 [जई] बड़ी नदी (पत्र ४ पत्र ४ ११)।
 जविवाचत पुं [जम्पावर्त] १ शीप
 नामक एक का एक लोकपाल (छ ४ १—
 पत्र १६)। २ न. एक वैविमल (घन
 १३)। जगर केनो नगर (पत्र)।
 जजिय केनो नजिय (घन)। जीन न
 [जीन] १ छन-विशेष। २ वि घति शीप
 बर्णलता (बीच ३३ शीप)। जीन केनो

नीन (घन)। जुमाय जुमाय वि
 [जुमाय] महापुत्राय म्हाय (पद—
 यलसी ३२१ पत्र ४ ४ का सति १६)।
 जुमाय वि [जुमाय] बड़ी घन (पत्र
 २, १३; ३ १६)। ठमपदा की [ठम
 प्रमा] छनय मरक-मुनि की (पत्र १७२)।
 ठमा की [ठमा] बड़ी (वेस ७२६)।
 ठीरा की [ठीरा] गये-विशेष (छ ३,
 १—पत्र १११)। ठुविय न [ठुविय]
 महापुत्राय को बीपटी लाव से कुमुद पर
 को संख्या लय हो वह, संख्या-विशेष (को
 २)। वामदि पुं [वामादि] ईशनेय
 के कुपय-क्षेत्र का पवित्रि (हृ)। वामदि
 पुं [वामदि] बड़ी घन (छ ३ १—पत्र
 ११)। वुम देवी महा-कुमुद (हृ)।
 २ न. एक वै-विमल (घन १३)। वुमसेन
 पुं [वुमसेन] पना येरिह का एक
 पुन निजन्त यक्षाय महाशरीर के पना योश
 की बी (जु २)। वेव पुं [वेव] १ मह
 वैव निजन्त (घन १ ६ १२)। २ वि
 शीप-पति (पत्र १ ६ १२; घमाय ७९)।
 वैकी की [वैकी] पटली (कय)। वय
 पुं [वन] एक बरिह (पत्र ३३, १८)।
 वयु पुं [वयु] यक्षाय का एक पुन
 (निर १ ३)। नई की [नई] बड़ी नदी
 (घन २७; कय)। मेरिवाचत देवी
 जविवाचत (हृ)। नार न [नार]
 बड़ा यर (पत्र २ ४)। नय पुं [नय]
 बहुरा यावि बड़ी नदी (पत्र)। नजिन
 न [नजिन] १ संख्या-विशेष, बहुरायाय
 को बीपटी लाव से कुमुद पर को संख्या
 लय हो वह (को २)। २ एक वै-विमल
 (घन १३)। नजिन न [नजिनाह]
 संख्या-विशेष नजिन की बीपटी लाव से
 कुमुद पर को संख्या लय हो वह
 (को २)। निजामय पुं [निजामय]
 योश कर्णव (जग)। निहा की [निहा]
 कुमुद मरक (पत्र १ १६)। निनाय
 [निनाय वि [निनाय] प्रकय, प्रिह
 (घोष १; ५६ टी)। निरीह न
 [निरीह] एक वै-विमल-यक्ष (पत्र ३
 १६)। नीय की [नीय] एक यक्षकी

(हा १ १—पत्र १२१) । पदमधुं [पद्मा] १ मूलोक्त का भावी प्रथम दीर्घवर (सम १२१) । २ मुहुरीक्रीडा मयरी का एक राजा दीर वीर्य से राजवि (लाया १ १२—पत्र २४१) । ३ मादयवर्ष में उत्पन्न लवर्षा नक्षत्रार्थी राजा (सम १२२ पत्रम २ १४१) । ४ परतलेन का भावी लवर्षा नक्षत्रार्थी राजा (सम १२४) । ५ एक राजा (हा ६) । ६ एक मित्रि (हा ६—पत्र ४४६) । ७ एक इह (सम १ ४ हा २, १—पत्र ७२) । ८ राजा वीर्य का एक वीर (मिर १ १) । ९ वेद-विशेष (वीर) । १ बुध-विशेष (अ २ १) । ११ न संख्या विशेष महानपाय को नीचपटी मात से कुनये पर को संख्या लब्ध हो बहु (को २) । १२ एक वेद-विभाग (सम १३) । पदमार्जण न [पद्माङ्ग] लक्ष्मण-विशेष पद्म को नीचपटी मात से कुनये पर को संख्या लब्ध हो बहु (को २) । पद्मा की [पद्मा] राजा वीर्य का एक पुत्र-वधु (मिर १ १) । पद्मिनि वि [पद्मिनि] बह विद्वान् (रमा) । पट्टण न [पट्टण] बड़ा कटार (अ) । पण्य पद्म वि [पद्म] श्रेष्ठ बुद्धिमान (अ ७७३ वि २७३) । पम न [पद्म] एक वेद विभाग (सम १३) । पमा की [पद्मा] एक रात्री (अ १ ११ टी) । पम्ह दुं [पद्म] महाविशेष वर्ण का एक विजय—मन्त्र (हा २, १) । परिण्मा परिमा की [परिमा] बाबापण्य लुभ के प्रथम धृष्टकर्म का लक्षण मन्त्र (राज मात) । पसु दुं [पद्म] मनुष्य (वड) । पद्म दुं [पद्म] बड़ा दास्ता राज-मार्ग (मय पद्म १ १ वीर) । पाण न [पाण] धर्मोक्त-सिद्ध एक वेद-विभाग (उत् १ ८ १८) । पायाळ दुं [पायाळ] बड़ा पाठाप-कलश (हा ४ २—पत्र १२६) धम ७२) । पासि की [पासि] १ बड़ा पत्थ । २ बापेटम-परिधि मन्त्र-विधि—मायू 'महापासि महासले' बुधर्ष वरिष्ठधोषये । का या पाणिमहापासि विरमा वरिष्ठधोषये' (उत् १८ १८) ।

'पिठ पुं [पिठ] पिठा का बड़ा भाई (मिरा १ १—पत्र ४) । पीठ पुं [पीठ] एक लैन महर्षि (सहि ८१ टी) । पुंल न [पुंल] एक वेद-विभाग (सम २२) । पुंल न [पुंल] एक वेद विभाग (सम २२) । पुंलरीय न [पुंलरीय] १ विद्वान् श्रेष्ठ कर्मज (राय) । २ पुंल ग्रह-विशेष (सम १ ४) । ३ वर-विशेष । ४ वेदो पुंलरीय (राय) । पुर न [पुर] १ एक विद्यापार-मन्त्र (इक) । २ गण-विशेष (मिरा २ ७) । पुरा की [पुरी] महापद्म-विभाग की राजधानी (हा २, १—पत्र ८) । पुरिस दुं [पुरिस] १ श्रेष्ठ पुत्र (पद्म २ ४) । २ विष्णु-विभाग का उत्तर पिठा का इन्द्र (अ २, १—पत्र ८३) । पुरी वेदो पुरा (इक) । पौडरीय न [पुण्डरीक] एक वेद-विभाग (अ १३) । वेदो पुंलरीय (हा २ १—पत्र ७२) । पल्ल वेदो महा-पद्म (अ) । पल्लि न [पल्लि] पिठरी पर्यंत का एक उत्तर-पिठा-स्थित मूट (अ) । पल्ल वि [पल्ल] १ महात्मा बलबलता (अ) । २ पुंल ऐतल्ल लोभ का एक भावी दीर्घवर (सम १२४) । ३ लक्ष्मणी मरत के बंध में उत्पन्न एक राजा (पत्रम २, ४ हा ८—पत्र ४२६) । ४ सोमश्रेष्ठ एक मन्त्र-पति (पत्रम १, १) । ५ पार्थिव लक्ष्मण का पूर्व-लक्ष्मीय राजा (पत्रम २ १६) । ६ मादयवर्ष का भावी लक्ष्मण वधु (सम १२४) । बाहु पु [बाहु] १ लक्ष्मण-वर्ष का भावी वधु लक्ष्मण (सम १२४) । २ लक्ष्मण का एक मुद्रा (पत्रम २६ १) । लपर विश्व-वर्ष में उत्पन्न एक वधु (मात ४) । मद् न [मद्] लप-विशेष (पत्र २७१) । महा-विमा की [महाविमा] नीचे वेदो (वीर) । मद्दा की [मद्दा] लप-विशेष कायोत्तर-विभाग का एक वधु (हा २ १—पत्र १४) । मय वेदो महा-मय (माता) । माग वि [माग] महानुभाव महारथ (पत्रि १७४) महा मुद्रा ११८ पत्र १) । मीम पुं [मीम] १ राजा का वधु पिठा का इन्द्र (हा २ १—पत्र ८३) । २ मादयवर्ष का भावी दास्ता वरिष्ठधोषये

(सम १२४) । ३ वि बड़ा मयानक (वैत ४) । मीमसेण पु [मीमसेन] एक कुलकर पुत्र का नाम (सम १२) । मुज पु [मुज] वेद-विशेष (वीर) । मुजग पु [मुजग] श्रेष्ठ मात (सि ७ १६) । मोया की [मोगा] एक महा-नदी (अ ३, १—पत्र १२१) । मर्द दुं [मुक्त] वाच-विशेष (मग) । मंति पु [मन्ति] १ सर्वोच्च धामाय, प्रधान मन्त्री (वीर) मुद्रा २२१) छाया १ १) । २ हस्ति-वीर्य का धर्मज (लाया १ १—पत्र १६) । मंस न [मोस] मनुष्य का मांस (कप) । मन्ध पुं [अमाय] प्रधान मन्त्री (कुमा) । मन्ध पुं [माय] हस्तिपद हाथी का महापद 'वठो नरसिंहनिबल्ल कुंजय सिंहमयिहृदहमया । धवधुलिमहामाता मतावि पत्नारया मन्धि' (कुम १२४) ।

मर्या की [मर्या] राजा वीर्य का एक पत्नी (वैत) । मद् पु [मद्] महा-लक्ष (मात ४) । मद्द वि [मद्द] श्रेष्ठ बड़ा (मुद्रा २६४ व १६१) । माह (अ) की [माया] लक्ष-विशेष (विष) । मायया की [माय्या] माया की बड़ी बहन (मिरा १ १—पत्र ४) । माडर दुं [माडर] ईशान्तर के रक्षक का वरिष्ठ (हा ४, १—पत्र १ १ इक) । मायसिजा की [मायसिजा] एक विद्या-विधी (सहि ६) । माह्य पु [माह्य] बह ब्रह्मण (अ) । मुयि पुं [मुयि] बह बाहु (कुमा) । 'मेह दुं [मेह] बड़ा श्रेष्ठ (लाया १ १—पत्र ४ हा ४ ४) । 'मेह वि [मेह] बुद्धिमत् (अ १२२ टी) । 'मोक्ष वि [मूर्ख] बड़ा वेद-वधु (अ १ ११ टी) । यण पुं [यन] बह लोच (मुद्रा २२१) । यस्त वेदो जस्त (वीर कप) । यस्तस पु [यस्तस] लंका कपरी का एक राजा की वधु (अ २ पुत्रा ४ पत्रम २ १६) । यद्द दुं [यद्द] १ बड़ा वधु (पद्म २, ४—पत्र ११) । २ वि बड़ा वधु (अ ३) । ३ बड़ा योद्धा वधु

महाणसि वि [महानसिम्] रघोई बगाने-
नामा, रघोइना । श्री. पी (छाया १ ७—
पत्र ११७) ।

महाणसिय वि [महानसिक] ऊपर देखो
(विना १ ८) ।

महाविज न [दे महाविज] व्योम बाफात
(दे १ १२१) ।

महामति पुं [महामतिन्] महावत हसित
पक्ष (यम १२१ टी) ।

महारिय (धन) वि [महीय] मेर (धन
१) ।

महाह पुं [दे] नार, उपपति (दे १
११९) ।

महाजन्म वि [दे] तरुण बगान (दे १
१२१) ।

महाजन्म देखो मह = मज्ज (छाया १ ७—जना
धीय) 'मा कसि कम्माई महासमाई' (उप
१ १२९) । श्री 'सिया (धीय) ।

महालय पुं न [महालय] १ उत्तमों का स्थान
(धन ७२) । २ बड़ा मलय । ३ वि
बहुलाय बड़ा शरीरवाला (मूष २, २, ९) ।

महाजन्म पुं [दे महाजन्म] मातृ-यन्त्र
कर्मिण (प्रवृत्तों मातृपक्ष) मातृ का हृण्य
पक्ष (दे १ १२७) ।

महासद्री की [दे] नकिनी, कमलिनी (दे १
१२२) ।

महाविजय पुं [महाविजय] एक वेधविमान
(भाषा १ १३, २) ।

महामरण पुं [दे] घल्ल, घुक्त-गली (दे १
१२७) ।

महासद्री की [दे] सिखा नृगली (दे १
१२३) पाप) ।

महासेस वि [महासेस] महासेस नगर से
संलग्न स्थानवाला महासेस का (पत्रम ३३,
२३) ।

महि देखो मही (कुमा) । लछ न [लछ]
मुनीठ, मुनि-पुत्र (कुमा पत्रम ३३, २४) ।
गोयार पुं [गोयार] मज्ज (अधिक घल्ल) ।
पट्ट न [पट्ट] मुनि-पुत्र (पट्ट) । पाठ पुं
[पाठ] राजा (पट्ट) । मंडल न [मण्डल]
मुन-पुत्र (अधिक दे ४ १७२) । रमण पुं
[रमण] राजा (भा २७) । बह पुं

[पति] राजा (छाया १ १ टी) धीय) ।
बह देखो पट्ट (दे १ १२३) कुमा) ।
बह पुं [पट्ट] राजा (पट्ट १) । वाह
पुं [पाठ] १ राजा नरपति (दे १
१२३) । २ स्थिति बाहक नाम (अधिक
'बेह पुं [बेह, पीठ] मही-पुत्र मुनि-पुत्र
(दे १ ४ ४६) । सामि पुं [स्वामि]
राजा (कुमा) । हर पुं [हर] १ पर्वत
(पाप) से १ १८ ४ १७) कुमा ११७) ।
२ राजा (कुमा ११७) ।

महि वि [मवि] निवोषित (दे २, १७)
पाप) ।

महि वि [महि] १ पुत्रिप सकल (दे
१२ ४७ जना धीय) । २ न एक ईश-
विमान (धन ४१) । ३ पुत्रा सत्कार (छाया
१ १) ।

महि वि [महीयस्] बड़ा पुत्र 'मह्य-
मिषोको महियो को छाम ग्यापमिह करे'
(कुमा १८७) ।

महिपुत्र पुं न [दे] भी वा हिट्ट भट-मल
(पत्रम) ।

महिजा की [महिजा] १ लुप्त बर्ण मुक्त
कल-मुपार (पत्रम १ की ३१) । २ बुधिका
हुंम मुहय (धीय १) पाप) । ३ मेघ-
समूह 'महनिषो कविना महिया' (पाप) ।
देखो मिहिजा ।

महि पुं [महेन्द्र] १ बड़ा इन्द्र वैशाखी
(धीय कप्पा छाया १ १ टी—पत्र ९) ।
२ पर्वत-विशेष (दे ४ २६) । ३ स्थिति महा-
ल बड़ा (छ ४ २—पत्र २१) । ४ एक
राजा (पत्रम २ २९) । ५ ऐश्वर्य बर्ण का
असी १२ वां शीर्षकर (पत्र ७) । ६ पुन
एक वेध-विमान (धन १२) वैश्व १४१) ।
७ न [मह्य] एक वेध-विमान (धन
२७) । ८ पुं [मि] हनुमान के मातामह
का नाम (पत्रम २ १६) । ९ मज्ज पुं
[मज्ज] १ बड़ा धन । २ इन्द्र के धन
के धामा धन बड़ा इन्द्र-धन (छ ४
४—पत्र २१) । ३ न एक वेध-विमान
(धन २२) । इहिया की [इहिया]
धन-मातामह हनुमान की माता (पत्रम ३
२९) । विजम पुं [विजम] हनुमान

बंश का एक राजा (पत्रम २, ९) । सीह
पुं [सिह] १ कुल सेठ का एक राजा
(ज ७२८ टी) । २ हनुमान बहर्षी का
एक मित्र (महा) ।

महि वि [महेन्द्र] १ महेन्द्र-सम्पत्ती ।
२ महात-विशेष (पत्र २१२) ।

महिपुत्र (पत्रिमय न [महेन्द्रोत्तरपर्वसक]
एक वेध-विमान (धन २७) ।

महिया देखो महिया (जीव ३१) ।

महिपुत्र वि [महेन्द्र] महाकाशी (धन
२ २ ११) ।

महिपुत्र की [महेन्द्र] महाकाशी
अपवित्र नाम (पत्र १ २) ।

महिपुत्र वि [दे] महा से घंटा, एक-संस्कारित
(विना १ ८—पत्र ८१) ।

महिपुत्र वि [महि] क बड़ी अति
महिपुत्र } नामा महाप विमलवाला (भा
महिपुत्र } २७ पत्र धीय १ धीय

वि ७९) ।

महिपुत्र की [महिपुत्र] १ महाप माहात्म्य
गीत (दे १ ३२, कुमा पत्रम ३३) । २
भीषी का एक प्रकार का ऐश्वर्य (दे १ ३३) ।

महिपुत्र देखो मिहिजा (महा पत्र) ।

महिपुत्र की [महिजा] की गरी (कुमा
दे १ ४१ पाप) । धूम पुं [सुर] ब्रह्म

वाक का मित्र (वि २ १४) ।

महिपुत्र की [महिजि, महिजा] ऊपर
देखो (छाया १ २, पत्रम १४ १४३,
पत्र २४) ।

महिपुत्र की [मिहिजि, मिहिजा]
देखो मिहिजि (धन) ।

महिपुत्र पुं [मह्य] मेघा (पत्रम धीय
गा २४७) । सुर पुं [सुर] एक
नाम (४ १७७) ।

महिपुत्र पुं [दे] इन्द्र-विशेष ठिपु का पक्ष
(दे ४ १२) ।

महिपुत्र वि [महिपुत्र] मेघराजा, मेघ
अपनेपत्ता (धनु १४४) ।

महिपुत्र न [दे] मयिपो-युद्ध (दे १
१२४) ।

महिती की [महिती] १ राज-स्थिति (छ ४
१) । २ मेघ (पाप पत्रम २९ ४१) ।

महिरसर पु [महेसर] एक वन भुवनादि
को का वनर विरा का वन (अ २, १—
पत्र ८२)। कैो महेसर ।

मही की [मही] १ पृथ्वी भूमि बरती
(रमा. पाय) । २ एक नदी (अ ३, १—
पत्र १५) । ३ छत्र-विरोध (विम) । नाह
पु [नाह] राजा (अ ५ १११) । पाहु
पु [पाहु] राजा (अ ६२८ टी) । पय
पु [पय] बही धर्म (अ १३ टी वन) ।
रुह पु [रुह] कृत वेद (पत्रा गुर १
११ ११ २४) । मर पु [परि]
राजा (या २५ स ११६ टी गुण ३०) ।
मिह न [मिह] मृग-मल (गुर २ ७४) ।
म पु [म] राजा (या १४) । सख प
[सख] बही धर्म (या १४) । कैो
महि ।

महु पु [महु] १ एक कैम (सि १ १
अनु ४) । २ वनर कृतः 'मुण्डी महु
बसो' (पाय कुमा) । ३ कैम मास (गुर
१ ४ ११ १७ विर) । ४ पौषमा
अति-बाहुवै राजा (पत्र २, १११) । ५
एक राजा (सु ११) । ६ महुप का एक
राज-कुमार (पत्र १२ २) । ७ बल्लवी
का एक कैम-वृक्ष महुत (अ ११ ११) ।
८ महुक का वेद महुय का वाद्य (कुमा) ।
९ प्रत्येक-वृक्ष (पत्र) । १० म. म. वाक
(अ २ २७) । ११ नीरु वृक्ष (कुमा पत्र
४ अ ४ १) । १२ वन-वृक्ष । १३ महु
रम । १४ वन मानी (प्रवा हे ३ १२) ।
१५ वन-विरोध (विम) । १६ महु, मिह
बलु (पत्र २, १) । अर पुंकी [अर]
अमर, भीष (पाय सज ७३ वीमा
कम विर) । की रिरा री (धाय
१६ ॥ अर—गुप्त ५७) । अरविधि की
[अरविधि] माहुप न विरा-नृति (कुमा
१) । अरिरीय न [अरिरीय] नाय-
विधि-विरोध (महा) । व्यासवि [व्यास]
सन्नि-विरोधवाता निकले प्रवृत्त से वन
महुर को पैरी बलिवाता (पत्र १, १—
पत्र १) । सुसिपा की [सुसिपा]
रुह की नोनी (अ ४ २) । पय न
[पय] महुप (१३ ११) । मार

पु [मार] वन-विरोध (विम) । मकिलया,
मकिलया की [मकिलया] रुह की
मकी 'पय जिय्याठ ठामपुह्राठ महुसि
(मकिल)वाठ सन्नातो' (वर्षा १२४
या १३४) । मय वि [मय] महु से
मरा हुवा (सि १ १) । महु पु [मय]
विष्णु बाहुवै कलेत्र (पाय से १ १७) ।
२ अमर (सि १ ७) । महु पु [मह]
वसत का वसत (सि १ २७) । महण
पु [महण] १ विष्णु (सि ११ अण्णा २४
या ११७) हे ४ १८८ वि १४४ विर) । २
सुप्र सावर । ३ छेड, पुन (सि १ १) ।
मास पु [मास] कैत मास (विम) ।
'मिल पुन [मिल] कालदेव (कुमा
२२४) । 'मिहण न [मिहण] रोप-विरोध
महु-वनेष (पाय १ ६ १ २) । 'मिहवि
वि [मिहवि] महु-वनेष रोपवाता
(पाय) । 'मिह पु [मिह] बही धर्म
(पाय) । राय पु [राय] एक राजा
(पत्र ७४) । कटि की [कटि] १
वोषा-विरोध कटिपु, मुनेरी कैम महु ।
१ महु, कैम (हे १ २७७) । वय पु [वय]
१ वीरुप महु, वही वीर रुह । २ वीरुप
बार पुवा का कला जपवार (अ १ १) ।
वार पु [वार] कय वल (पाय) ।
'सिगी की [सिगी] वनस्वि-विरोध
(पत्र १—पत्र ११) । सुपय पु
[सुपय] विष्णु (वज्र गुण ७) ।

महुय पु [महुय] १ वन-विरोध महुय
का वाक (या १ १) । २ न महुय का
कल (अ १ १ २२२) ।
महुय पु [मि] १ पवि-विरोध वीरव वही ।
२ माय सुवि-पाठन (हे १ १४४) ।
महुय सक [महु] १ विनोद कय ।
२ विनाय कला । वहु 'मिहुकट्टराया
मविमकलपिपाकेता महुजित-वालाकल
मिपाया हुवा' (अ) ।
महुय (वय) कैो महुय (वय) ।
महुयसक [महुयसक] कय वय 'महुयस
वय वय' (पाय) ।
महुय पु [मि महुयसक] मिहुय, मुनी
कल (१६ १२२) ।

महुय पु [महुय] १ वय वय-विरोध । २
अस वय में वयवली वयव महुय-वयि
(पत्र १ १—पत्र १४) ।

महुय वि [महुय] १ मीठ, मिठ (कुमा
प्राय १३ गठन या ४ १) । २ कोमक
(अ २, १३; वीप) । मासि वि
[मासि] विम-मानी (पत्र १ १११) ।
महुय की [महुय] महुय की एक प्रविष्ट
नारी महुय (अ १; स १३१; पत्र
१ ३ ११ १३ कुमा वज्रा २२२) ।
महु पु [महु] एक प्रविष्ट कैमवयि
(विम २२) । हिम पु [हिम] महुय
का राजा (कुमा) ।

महुयसक वि [मि] परिमल (१६ १२२) ।
महुयि पुंकी [महुयिम] महुय का महुय
(गुण २४४ गुण १) ।

महुय पु [महुय] महुय का राजा
(कुमा) ।

महुय की [मि] रोप-विरोध पय-वय
(विम २) ।

महुयसक न [महुयसक] १ महुय, वीप
(अ ५ १ १) । २ वय-विरोध, कै के कै
में वय वय वय वय वय वय वय
(वय ११) । ३ वय-विरोध (स ६ १) ।
महुयसक कैो महुयसक (पत्र) ।

महुय कैो महुय = महुय (कुमा हे १
१२२) ।

महुयसक पु [महुयसक] वय वय (गुर १
१ ८ गठ—गुप्त २४) ।

महुय कैो महुय (सि ६ २२) ।

महुय पु [मि] एक कय (१६ १११) ।

महुय पु [महुय] वय वय (या ११) ।

महुय पु [महुय] वय वय (कुमा) ।

महुय की [महुय] की नारी (१
१४५ कुमा) ।

महुय पु [महुय] वय कैो (वि २४५ विम) ।

महुय पु [महुय] १ महुय विम (पत्र
१३, १४५ वर्षा १२) । २ विम, वय
(पत्र १ १ १२) । ३ वीरव
वाक (विम २२) । ४ महुय कैो के
अर विरा का वय (वय) । वय पु
[वय] एक वीरव (विम १ २) ।

महेशि बेहो महन्तिसि (सम १२३ पण्ड
१ १ उप १३७ ७२८ टी प्रति ११८)।

महोअर पुं [महोवर] १ राषण का एक
पाई (सि १२, ५४)। २ बि बहु-अओ
(निह १)।

महोअहि पुं [महोवधि] महोअवर (सि ३
२ महा)। ख पुं [१२] महोअर-अओ का
एक राजा (पठन १ ११)।

महोअवह बेहो महोअव (सुर १ ११)।

महोअहि बेहो महोअहि (पण्ड २ ४ उप
७२८ टी)।

महोअरा पुं [महोअरा] १ अन्तर बेहो की
एक बाधि (पण्ड १ ४—पत्र १८८ इक)।
२ बड़ा सोप। ३ महोअ-काय खर्च की एक
बाधि (पण्ड १ १—पत्र ८)। ४ 'त्य न
[अ] मन् विरोप (महा)।

महोअरकठ पुं [महोअरकठ] रज-विरोप
(उप १७)।

महोअव बेहो महोअव (मह—रज्जा २४)।

महोअहि की [महोअधि] महोअधि
(पठन)।

मा म [मा] मर नहीं (बिह १८४ प्राव
२१)।

मा ओ [मा] १ लकी बीवत (सि ३, १३
सुर १६, ३२)। २ सोय (सि ३ १३)।

मा ४ एक [मा] १ समान, घटना। २
माय ४ एक माप करना। ३ निबय कण्ठ
काक्य। माह, माअह, माअव माएआ (पत्र
४ कुमा प्राक १६) संवेय १८ बीय)।

४ कु-संव माअंत (कुमा ४ ३ सि २
६, पा २७८)। कव-क-सिखल मिलमाज
(सि ७ १६, उप ७६, बीय १४४)। कु-
माअवका 'माया सहस्र-माअ्या', माअव
(सि ६, ३; महा क्य)। बेहो मेअ = मेय।
माअहि पुं [माअहि] हज का छाधि (सि
१३, ११)।

माअर बेहो माअ = माव (कुमा है ३ ४४)।

माअहि बेहो माअहि (सि १३, ४६)।

माअहिआ की [रे] माअवका माया की
बहन (सि १ १११)।

माअही की [मागधी] काय की एक पीति
(क्य)। रेओ मागहिआ।

माआरा ४ की [माव] १ मा, नगरी (पत्र
माह ४ ३; कुमा सुपा १७७)।

२ बेवता बेवी (हि १ १३३, ३ ४६, सुख
३ ६)। ३ की नारी। ४ माया (वैपा १७
४८)। ५ धूमि। ६ विमुक्ति। ७ नवनी।

८ ऐवती। ९ धासुकरणी। १० नटापाओ।

११ हज-नायकी हजपायल (पत्र है १
१३३, ३ ४६)। घर न [गृह] बेवी-

नगर (सुख ३ ६)। टाण ठाण न

[स्वान] १ माया-स्वान (वैपा १७ ४८
उप १६)। २ माय कय-सोय (वैपा १७
४८) उपर ८४)। 'मिह पुं [मेअ] यज-

विरोप विचर्ष माता का बय भिया माय वह

क्य (पठन ११ ४२)। हर बेहो 'पर (हि
१ १३३)। बेहो माउ माया = माव।

माह बि [मायिण] माया-मुक, मायवी
(कम कय ४ ४)।

माह म [मा] मय, नहीं (प्राक ७८)।

माह ४ बि [रे] १ रोमर रोमबाला प्रभु

माअज ४ बालों से मुक (सि ६ १२८-शाया
१ १८—पत्र २३७)। २ स्मृति पुन

विरोपबाला (बीय मय छाया १ १ टी—
पत्र ३ पंथ)।

माअव बि [माव] समान हुया, घटा हुया
(सुख ६ १)।

माअव बि [मायिक] मायवी (सि ६, १७७
छाया १ १४)।

माअव बि [मात्रिक] माय-मुक, परिमल
(सुख २ पण्ड १ ४ पत्र ६८)।

माअव बेहो मा = मा।

माई बेहो माइ = ना (हि २, १११ कुमा)।

माईराग न [रे] हजक पंथ (ज १६१)।

माईह [रे] बेहो मायव (पत्र ४ ४६६)।

माईह पुं [मृगंग] सिंह, केवरी 'पहसर
पहपायिमाईहपहपहपहपहपहपह' (हजा
४२)।

माईहजाल ४ न [मायेमजाल] माय-नय,
मायवहा ४ नगावटी प्रवेज (सुर २ २२६
स १६)।

माईवा की [रे] धामगरी, धाममा का माय
(सि ६, १२६)।

माईहिआ की [मृगंग्यिका] पुन म यम
की भाति (ज २२ टी मोह २१)।

माईहि बि [रे] मृग कोमल (सि १ १२६)।

माईह बेहो माइ = माम् (सुपा १ ४ १
१८ थापा भा घोष ४११ पठन ११
२६) बीय ठा ४ ४)।

माईवाह ४ पुं की [रे] माववाह कीमय

माईवाह ४ वन्य विरोप सुद की-विरोप (उप
३६ १२६ की १३; पुण्ड २६३)। की हा
(सुख १८ १३ की १३)।

माउ बेहो माइ = माव (सम सुर १ १७८
बीय प्राप्ता कुमा पत्र है १ १३४
१३३)। गगम पुं [माम] बी-वर्ग (हह
१)। अहा बेहो 'सिआ (हि २ १४२
पा १४८)। 'पिठ पुं [पिठ] मा-माप
(सुर १ १७६)। स्मही की [मही] मां
की मा नानी (रंज २)। सिआ सी
'सिआ की [प्यव] मां की बहन मीदी
(हि २ १४२ कुमा बिना १ ३; सुर ११
२१६ सि १४८ बिना १ १—पत्र ४१)।

माउ ४ बि [माव, क] १ प्रगाथा

माउज ४ प्रमाउ-कटां छय भावना।

२ परिमाउ-कटां नानेनाला। ३ पुं, बीय।

४ बाकारा 'माउ' 'माउयो' (पत्र है १
१३१ प्राय प्राक ८ है १ १३४)।

माउब बि [मावक] मावा-संबन्धी (हि १
१३१ प्राय प्राक ८ पत्र)।

माउम पुं [मावक, क] १ मकार बाधि

अभासी अष्टक 'बीय' छुं बिरोप छायापीठ

माउमपठ' (उप ६६ पात्र ३)। २ हज
१ कण (हि १ १३१ प्राय प्राक ८)।

बीय बेहो।

माउआ की [मावक] १ माता मां (छाया
१ ६—पत्र १३८)। २ ऊपर बेहो (मम
१६)। पय पुं [पय] शांति के कार-भूत
खय—छपाक बीय की टीय (उप ६६)।

माउआ की [रे] मावक ४ पुं पावटी
क्या (सि १ १४७)।

माउआ की [रे] १ उड़ी हटेवी (सि १
१४७ पय; छाया १ ६—पत्र १३८)।

२ ऊपर के होउ पर के बल पुं 'पय' (पय ६६)

मन का (गुर ४ ७२) । ४ पु. मनुजस्य के पञ्चरत्नस्य का मायक (रुक्) ।

मायसिञ्ज नि [मानसिञ्ज] मन-संकेतनी मन का (पा २४ वीर) ।

मायसिञ्जा की [मानसिञ्जा] एक विद्या-वैरी (संति ६) ।

मायि नि [मानिन्] १ मान-युक्त, मानपाता (वज्र कुप्र २७६, कम्म ४ ४) । २।

णिगा (कुमा) । २ पु. पञ्च का एक कुम (पत्रम ३६ २) । ३ परित-विरोध । ४ कृत-विरोध (पत्र ६६) ।

मायिञ्ज नि [दि मानिञ्ज] क्कुमुव (३ १ ११ पाप) ।

मायिञ्ज नि [मानिञ्ज] सकल (मठ) ।

मायिञ्ज न [मायिञ्ज] रज विरोध मायिञ्ज (मुग २१७ बजा २ वज्जु) ।

मायिञ्ज रेको मागि (पत्रम ७१ २७) ।

मानिमइ पु [मायिमइ] १ यल निष्कम्भ के ऊपर लिटा का इल (अ २ १—पत्र ८२ ६६) । २ यलरों की एक वाणि (सिदि ११६ ६६) । ३ रेन-विरोध । ४ रिखर विरोध (पत्र ६६) । ५ एक रेन-विमान (पत्र) ।

मायिम रेको माग = माकम् ।

मायी की [मानिञ्ज] २२६ वर्षों का एक काप (सपु १२२) ।

मायुम पु [मायुप] १ मनुष्य, मानव मर्य (मुप १ ११ १ पण्ड १ १ छत्र गुर ३ ३६ प्राद कुमा) २ अणुप हिमवाणी के डेह में मनुष्य निर्मल (कुप्र ६) मयाणि

मायिप-कु-मनुष्याणि सम्पासि (कुप्र २६) । २ वि मनुष्य-संकेतनी 'सिदिह' बरान्तु सि पुण्यार्थपरबाम, व पहा सिदि विमामाणुस मनुष्य व (छ २) ।

मायुमी की [मायुमा] १ जी-मनुष्य मायमी (२२ २४१; कुप्र ११) । २ मनुष्य से संकेत रखनेवाली 'मनुष्यी घास' (कुप्र १७) ।

मायुमुत्तर } व [मायुमुत्तर] १ बर्तमान-मायुमुत्तर } विरोध मनुष्य-पौर का सोना

पाक परित (पत्र ६१ ४ वीर ३) । २ व. एक दो-विमान (पत्र २) ।

मायुमुत्तर } व [मायुमुत्तर] १ बर्तमान-मायुमुत्तर } विरोध मनुष्य-पौर का सोना

पाक परित (पत्र ६१ ४ वीर ३) । २ व. एक दो-विमान (पत्र २) ।

मायुमुत्तर } व [मायुमुत्तर] १ बर्तमान-मायुमुत्तर } विरोध मनुष्य-पौर का सोना

पाक परित (पत्र ६१ ४ वीर ३) । २ व. एक दो-विमान (पत्र २) ।

मायुस्त रेको मायुम (माया वीर बर्मेवि ११ उप २; विदे १ ७); 'मायुस्त' कां' (अ १ ३—पत्र १४२) 'मायुस्त' कां' भोगयोगाई (कम्प) ।

मायुस्त } न [मायुस्त, क] मनुष्य-व मायुस्तस्य } मनुष्य-मनुष्यता (मुग १२६, छ १११ प्राद ७७ पत्रम ३१ ८१) ।

मायुस्तो रेको मायुमी (पत्र २४) ।

मायुस रेको मायुम (गुर २ १७२ छ ३ १—पत्र १४२) ।

माणेसर पु [माणेसर] माणिष्ठ पत्र (मरि) ।

मायोपमा (मर) की [मनोरमा] छत्र-विरोध (विष) ।

मायंग रेको मायंग (वीर) ।

मायंगण रेको मायंगण (छ २, ३—पत्र ८) ।

मायुकिंग रेको मायुकिंग (पाचा २, १ व १) ।

मायुकिआ की [वि] माय, बनने (३ १ १११) ।

मायु रेको माय = की (प्राद ८) ।

मायवी रेको मायवी = मायवी (हास्य १११) ।

मायाह बुकी [वि] बयय-बयान, बयय-बयन धक्य (३ १ ११६, पत्र) ।

मायीसिञ्ज न [वि] ऊपर रेको (३ १ १२६) ।

माय व कोमल मायण्य का वृक्ष कम्प (पत्रम ३८ ३६) ।

माय } पु [वि] माया, मां व माई (मुग मायग ११; ११२) ।

मायग } वि [मायग] १ मयी वेरा मायग } (पाचा पण्ड ७१) । २ मयावासा (मुप १ १ २ २८) ।

मायय रेको मायग = (३) (पत्रम ६८ ३३, छ ७३१) ।

माया की [वि] मायी माया की बहू (३ १ १११) ।

मायाय वि [मायाय] 'मा' 'मा' बोधने-साया, विचारक (वीर ४३३) ।

मायाम पु [मायाय] १ बयवी वेर-विरोध । २ बयवी वेर में दये-वाणी मनुष्य-जाति (रुक्) ।

मायि व सखी के मामनण में प्रयुक्त बिना बाता प्रमय (३ २ ११५ कुमा) ।

मायिया } की [वि] माया की बहू (विपा मायी १ १—पत्र ४१; ३ ६, ११२; पा २ ४ प्राद ३८) ।

माय वि [माय] समया हुआ (कम्म ३, ८२ दी पुष्ठ १७२ महा) ।

माय वि [मायावन्] क्यट्वासा, 'कोहाए मण्णए मायए लीमाए' (पठि) ।

माय रेको मेन = पत्र 'लोमुन्वणउमायवि' (मुप २ १ ४८) ।

माय रेको माया = माया (पाचा) ।

माय रेको मया = माया । न वि [३] परिमाण का जानकार (मुप २ १ ३७) ।

मायइ की [वि] वृज-विरोध (पत्रम ३३ ७६) ।

मायंग पु [मायङ्ग] १ बयबान् मुनसर्वनाम का शासनपत्र । २ बयबान् महावीर का शासन-वज्र (संति ७ ८) । ३ हस्ती हाथी (पाप गुर १ ११) । ४ बाएमान भोम (पाप) ।

मायंगी की [मायङ्गी] १ बयबान् (विपु १) । २ विद्या-विरोध (मायू १) ।

मायंगण पु [मायङ्गण] परित-विरोध (रुक्) ।

मायंग पु [मायङ्ग] धूर्त, एवि (मुग २४२; कुप्र ८७) ।

मायंग पु [वि मायङ्ग] पाप धम का वेह (३ २ १७४ प्राद ३ १ १२८; कुप्र ७१ १ ७) ।

मायंगि रेको मायंगि (मर १८ १) ।

मायंगि की [मायङ्गी] मायंगि-विरोध (छ ६; कुप्र १ ४) ।

मायंगी की [वि] श्रेयाम्बर शायी (३ १ १२६) ।

मायंगिया की [मुग इतिगम] विरल में वल की अति बर-मरिचिवा

'नद कुममो मायंगियाए' प्रियो कोर बर-मुक्ति ।

वह विविध-वर्ग-रिनी गुरद धपम्येवि बयमय' (मुग २) ।

वह विविध-वर्ग-रिनी गुरद धपम्येवि बयमय' (मुग २) ।

वह विविध-वर्ग-रिनी गुरद धपम्येवि बयमय' (मुग २) ।

माछपेट वुं [माछपेट] १ पर्वत-विशेष (छ २, १—पत्र ११ = ख १ २)। २ एक रामकृष्णार (पत्र १ २२)। परि पाया, परिपाय वुं [परिपाय] पर्वत-विशेष (छ २ १—पत्र ८ ११)।

माछपिणी की [माछपिनी] त्रिपि विशेष (वि ४२४ टी)।

माछ की [माछ] १ कुल धारि कर हार, 'मसं माछा बाय' (पत्र खन ७२ गुण १११ ग्रामु १ कुमा)। २ पछि व ली (पाय)। ३ धनुष 'मसलकहमास' (सुधनि १११)। ४ छत्र-विशेष (पिप)। इट वि [यन्] माछा बन्ना (प्रप्र)। क्यारे वि [कारिय] माछी पुन-म्यवसायी। की. पी (गुण २१)। गार वि [कर] बही मसं (छ १४२ टी सं १८ गुण ११२) ज ५ १११)। घर वुं [घर] प्रतिमा के कर के माछ की रचना-विशेष (पत्र ११)। बार र रेको कर (सं १८ व ५ ११३ मा १११)। की. टी (कुमा व ११३)। हार की [घर] छत्र-विशेष (पिप)।

माछ की [रे] ग्योरनता बलिजा (वि १ १२०)।

माछकुडम व [रे] प्रवाल कुडम (वि १ ११२)।

माछि पुकी [माछि] बुद्ध-विशेष (स १२२)।

माछि वुं [माछि] १ पाछा-बंका का एक पना (पत्र १ २२)। २ रेड-विशेष (रक)। ३ वि माछी पुन-म्यवसायी (कुमा)। ४ तोम्बेवाला (कुमा)।

माछि वुं [माछि] कर रेको (वि २ ८) 'पण्ड १ २, गुण २७१ व ५ ११३)।

माछि वि [माछि] रोहित, भूमिपिप परकोट पुल बलप्रभातिमासिमासिमा कोलेटी (छ २१ पात्र ५ २१४ टी)।

माछि की [माछि, माछ] रेकी माछा = माना (पा २१ एन २१ चीर वरा)।

माछि न [माछि] एक दिन मुनि-मुन (कम)।

माछि की [माछि] १ माछी की की (कुमा)। २ तोम्बेवाली (पीप)। ३ छत्र विशेष (पिप)। ४ माछावासी (पत्र ४)।

माछिण [माछिण] मलिनता (व प माछि) ५ २२ गुण ११२ २८६)।

माछु वुं [माछु] १ भोमिप वन्तु माछु वुं [माछु] विशेष (गुण ११ ११८)। २ बुद्ध-विशेष (पण्ड १—पत्र ११ छाया १ २—पत्र ७८)।

माछु की [माछु] १ बन्नी लता (पुन १ ३ २ १)। २ बन्नी-विशेष (पण्ड १—पत्र ११)।

माछुवापी की [माछुवानी] लता-विशेष (पत्र ४)।

माछर वुं [रे माछर] कलिय के का पाछ (वि १ ११)।

माछर वुं [माछर] १ विल्ल वृत्त के का पाछ (वि १ ११ या २७२, वरु कुमा)। २ न के का कल (पात्र) पाछ)।

माह वुं [माह] १ माह (पुनमाता माह)। २ रेको व कयवाली)।

माकि वि [माकि] मापा ह्या (वि १ १ वे ८ ४८)।

मास रेको मंस = मास (वि १ २१ ७ कुमा व ७२८ टी)।

मास वुं [मास] १ महिला, ठीस दिन का समय (छ २ ४ ज ७१८ टी बी १३)। २ समय का 'कालमासे कार्य किष्वा' (मि १ १ २ गुण १२) 'पत्रमासे' (गुण ४ ४)। ३ पर्व—बनवालि-विशेष, 'बीरठा (१ टी) वह इटो व मने व' (पण्ड १—पत्र ११)। वस रेको गुस (वस)। कय वुं [कय] एक स्थान में महिला वर पने का माचार (ह १)।

ममाय न [ममाय] ममायार एक मास का कयवास (छाया १ १: विपा २ १: यने)। शुरु न [शुरु] छत्र-विशेष, एक रल वर (संकोष २७)। गुस वुं [गुस] एक दिन मुनि (वि २१)। गुस की [गुस] १ नयी-पिरी नयी वीर की राजमात्री (रक)। २ 'बर्त' के की राजमात्री 'पासा पीसि व मायुये बट्ट' (वर २७२)।

पुरिया की [पुरिया] एक दिन मुनि-राधा (कम)। लुग न [लुग] उप-विशेष पुरिया वुं [पुरिया] वर (संकोष २७)।

मास वुं [मास] १ धनाय के-विशेष। २ रेड-विशेष में धनेवाली मनुष्य-वादि (पण्ड १ १—पत्र १४)। ३ मास-विशेष उडर (वि १ २८)। ४ परिमास विशेष मासा (वज्या १३)। पज्या की [पज्या] वनस्पति विशेष (पण्ड १—पत्र ११)।

मासक रेकी मंसल (वि १ २१ कुमा)।

मासवि वि [मासवि] वृत्त किया हुआ (गवड गुण ४७४)।

मासाहस वुं [मासाहस] पर्व-विशेष 'मासाहसवर्षिषो कि वा विदुमि वं विसिमी' (सं १ उवा ४२ १ १)।

मासिज वुं [रे] विगुन वल नूनन (वि १ १२२)।

मासिज वि [मासिज] मास-सम्बन्धी (ववा पीप)।

मासिजा की [मानुष्य] मा की बहिन (बर्त २२)।

मास रेको मंस उमय (वि २ ८६)।

मासुरी की [रे] रमय, बासी-वृद्ध (वि १ ११: पाय)।

माह वुं [माह] १ मास-विशेष माह का महिला (पात्र: वि ४ १२७)। २ संवत्स मा एक प्रसिद्ध कवि। ३ एक संवत्स काय्य वष विगुनात-वष काय्य (वि १ ८७)।

माह न [रे] कुप का कुप (वि १ २२०)।

माहण वुं की [माहण, माहण] विपा ले निहृव मविष—१ मुनि, साधु मवि। २ मास के वषावक। ३ बहमण (मापा वष २ २ ४८ २४ मा १ ७: २, ३, ग्रामु ८: मा)। की वा (कय)। कुड न [कुड] मयन के का एक वाम (पात्र १)।

माहण वुं [माहण] १ महार गोर। २ महिला प्रयाग (वि १ ३३ मरु कुमा: गुर १ २१: ग्रामु १७)।

माहणवा की कर रेको (व ७६८ टी)।

माहय वुं [रे] वनस्पति विशेष (व ११ १४८)।

मीठ रेवो मिठ = मित्र (संज्ञ १७) ।
मीर्मस सक [मीर्मास्] विचार करना ।
ह. अ-मीर्मसा प्रुक् (स ७१) ।
मीर्मसा की [मीर्मासा] बैमिनीय स्तोन,
पूर्वमीर्मासा (मुच १ १; प्रवि १८) ।
मीर्मसिय वि [मीर्मासित] विचारित (का
१८९ टी) ।
मीय की [हे] दीर्घ दुष्की बड़ा कुम्हा
(दुपवि ७१) ।
मीळ सक [मीळ्] मीचला बन होला
सुबुलाना । मीलइ (हे ४ २१२ पद) ।
मीळ रेवो मिळ (वि ११) ।
मीळछीकर दु [मीळछीकर] १ यवन
रैठ-विरोध "मीलच्छीकारदेवोवरि बहिवो
कापरकाणाय" (हमीर १३) । २ एक
यवन राजा (हमीर १३) ।
मीळय न [मीळय] संकोच (कुमा) ।
मीळय रेवो मिलाज "कणवणमयामीलणीबसा
विस्म" (वि ११; राज) ।
मीळिय रेवो मिलाज = मिलाज (विन) ।
मीस सक [मिसय्] मिलाला मिषण
करना । कर्म, मीसिबइ (वि ६४) ।
मीस वि [मिस] १ संयुक्त, मिला हुआ
मिलित (हे १ ४१ २ १७ कुमा कर्म
२ ११ १३, ४ १५ १७; २४७ कर्म
२ ११ २२) । २ न लयदार टीम निर्मो
का उपवास (संकोच २८) ।
मीसासिय वि [मिस] संयुक्त मिला हुआ
(हे २, १७; कुमा) ।
मीसिय वि [मिभित] अंतर रेवो (कुमा
कर्म अर्थ) ।
मुस सक [मोयय्] कुत करना । कबइ
मुसज्य (सि ७ १७) ।
मुभ सक [मुय्] छोड़ना । मुभइ (हे ४
११), पुपति (पा ११६) । बह-मुज्य,
मुममाय (पा ५४१) से ४ १३; वि ४५३) ।
संछ, मुभता (सा) ।
मुज वि [मुय] मय हुआ (वि १ १२ पा
१४१, बसा १३५; प्राय २७; पदम १८
१४; उप ४५५ टी) । बहय न [बहय]
रज-यान, ठठी धापी (हे २ २) ।

मुभ वि [स्मृत] याव किया हुआ (मुच २
, ७ १५ पाया) ।
मुय्यक रेवो मियक (प्राङ न) ।
मुय्यग रेवो मियग (पद सम्मत २१८) ।
मुय्यगी की [रे] कीटिका नीटी (हे ६
१४४) ।
मुय्यग दु [रे] भाला बाझ धौर धाम्यधर
पुय्यलो से बना हुआ है ऐसा मिया ज्ञान
(अ ७ टी—यन ३८१) ।
मुय्यन न [मोचन] कुकराव कोकना (सम्मत
७५; विरे ३११५; उप ३२) ।
मुय्यल (यप) रेवो मुय्य = मुय (विप) ।
मुय्या की [युय्] मिट्टी (संज्ञ ४) ।
मुय्या की [मुय] एवं कुटी धानक
"मुय्यरसायोवि पुर्व सधियं जमयइतस
सा यवा" (रंसा) ।
मुय्याइकी की [रे] कुम्हो मोमिन चाएबालिन
(हे ६ ११३) ।
मुय्याविम वि [मोचित] कुम्हावा हुआ (स
४४४) ।
मुय वि [मोचिय] छोड़नेवाला (विरे १४ २) ।
मुय्य वि [मुयिय] १ हविष मोच-याव (हुर
७ १२३ प्राय १ ३; जय दीप) । २ दु
पण्य का एक मुय्य (पदम ३६ ३२) ।
मुय्य वि [रे] मोमि-मुय्य विरोध माताबसा
"मुय्यो की होई कोयिपुडो" (वीप—टी) ।
मुय्यग रेवो मुय्यगी "जबविपति कया
मुय्यगई नमरि कुं" (वि ३३१) ।
मुय्यग रेवो मियग (हे १ ४६ १३७-ब्रज
जय; कर्म मुया १३२; पाय) । "मुय्यर
पुन [मुय्यर] मुय्य का ऊपरवाला धान
(सा) ।
मुय्यगिया की [रे] कीटिका, नीटी (जय
मुय्यग) ११४ टी संभा ८९ विरे
१२ न विर १३१ टी) ।
मुय्यि वि [युरजिय] मुय्य बनावेवाला
(कुमा) ।
मुय्य रेवो मय्य = मुय्य (प्राङ न) ।
मुय्यज्य रेवो मुय्य = मोयय् ।
मुय्य वि [मोकर] छोड़नेवाला (यप) ।
मुय रेवो मिड (कर्म) ।

मुय्यद दु [मुय्यद] १ मुय-विरोध (मय्य
१६) । २ मुय्यमुय-विरोध (कर्म) ।
मुय्यद दु [मुय्यद] मिया पायण (मय—
सैठ १२६) ।
मुय्य रेवो मय्य = मुय्य (पद) ।
मुय्य रेवो मय्य = मुय्य (पद मुया ८४) ।
मुयायण न [मुयायण] मोय-विरोध विरम
नयन का मोय (इक) ।
मुय रेवो मुय = मुय्य । मुयइ, मुयए (पद
कुमा) । मुया मु की (मय ७६) । अर्थ
मोय, मोयिइ मुयिइ (हे १ १७१
वि ३२३) । कर्म मुय्यइ मुय्य, मुयि
(पाया हे ४ २ १ महा मय) । मयि
मुयिइ (मय) । बह, मुयव (कुमा) ।
कर्म मुयव (वि १४२) । संछ, मोयु,
मोयुआण, मोयुय (कुमा पद, प्राङ १४) ।
इक, मोय (कुमा) मुयगहि (यप) (कुमा) ।
क. मोयय्य, मुयय्य (हे ४ २१२ पा
१७२ मुया ३८६) ।
मुय पुन [मुय] मुय दण-विरोध जिसकी
रखी बगई बाही है (मुय २ १ १५;
नय्य २ १६, जय १४८ टी) । "मिहय
की [मिहय] मुय हा कविपुन (पाया १;
१६—यन २११) ।
मुयइ न [मीजिय] १ मोय-विरोध । २
पुकी मोय में बदल (हा ७—यन ३६) ।
मुयकर दु [मुयकर] मुय की रखी
बनावेवाला रिक्ती (यपु ४६) ।
मुयायण दु [मीजायन] अवि-विरोध (हे
१ १९ मय) ।
मुयि दु [मीजिय] अर रेवो (प्राङ १) ।
मुय वि [रे] हीन गरीबता
"ये बंमनेरमुदा पाए पाईति बंमपाटीए
ते हीति दुय्युय बोहिनि मुयुरा हेति"
(संकोच १४) ।
मुय सक [मुयय्] १ मुयना नाम
पनाइना । २ दीना देना संघात देना ।
मुयइ (यपि) मुयइ (मुय २ १ ११) ।
मयो, बह, मुयायत (यंभा १ ४५ टी) ।
इक मुयावेय, मुयायपय, मुयाबपय
(यंभा १ ४५; अ २, १ कर्म) ।

मुद्रिम् पुं० [वि] यत् चरुकार, प्रवृत्तते में
'मोदय'। 'कममुद्रिम्भीकृत्ये' (हम्मीर १३)।
रेको मोद्रिम्।

मुद्रि वि [मुद्र, मुषित] जिसकी चोटी हुई
हो मुद्र (सिंह ४६९)। सुर २ ११२३ मुषा
१११३ मद्रा)।

मुद्रि पुं० [मुद्रि] मुद्रि मुद्रि मुद्रि मुद्रा
'मुद्रिणा' मुद्रिणा (सिंह ४६९)। पाप
रक्षा मद्रि। मुद्रि न [मुद्र] मुद्रि न
की बारी बरार, मुद्रा मुद्रि (भाषा)।
मुद्रय न [मुद्रय] १ बार धनुष लम्बा
मुद्रावार मुद्रय। २ बार धनुष लम्बा
कनुषको मुद्रय (पत्र ८)।

मुद्रि पुं० [मोद्रि] १ मद्रय-विशेष।
२ एक मद्रय-मनुष्य-जाति (पत्र १ १—
पत्र १४)। ३ मुद्रि से कनेनाका मद्र
(पत्र २, ५—पत्र १४६)। ४ वि मुद्रि-
सम्बन्धी (कम)।

मुद्रि पुं० [मुद्रि] १ मद्रय-विशेष जिसकी
मद्रय ने मद्र का (पत्र १ ४—पत्र
७२)। २ मद्रय-विशेष। ३ एक
मद्रय-मनुष्य-जाति (कम)।

मुद्रि की [वि] हिन्दा हिन्दी (वि १
११४)।

मुद्रि रेको मुद्र (कुमा)।

मुद्रि वि [मुद्रय, मुद्र] मुद्र वेवकुच
(हम्मीर ३१)।

मुद्रय [मुद्रा मुद्र] बाला। मुद्रय,
मुद्रय, मुद्रि (वि ४ ७ कुमा)। कर्न,
मुद्रि (वि ४ २२२)। मुद्रि (वि ४
२२२)। मुद्रि मुद्रय मुद्रि (मद्रा
पत्र ४८ ६)। कर्न मुद्रि (वि ४ २२२)
(वि ४ २२२)। मुद्रि मुद्रि, मुद्रि मुद्रि
मुद्रि (वि ४ २२२)। मुद्रि मुद्रि (वि ४
२२२)। मुद्रि मुद्रि (वि ४ २२२)।

मुद्रय न [मुद्रा मुद्रय] बाल बाला
(मुद्र १२५)। मुद्रय मुद्रय (वि ४ २२२)
(वि ४ २२२)।

मुद्रय मुद्रय [मुद्रय मुद्रय] कर्न मुद्रय
मुद्रय (वि ४ २२२)। मुद्रय मुद्रय
मुद्रय (वि ४ २२२)।

मुद्रय पुं० [मुद्रय] १ कर्न के ऊपर
की बेल—मुद्रा (भाषा २ १ ५ ११)।
२ विद्रय कर्न। ३ कर्न के नाम
का मुद्रय—मुद्र (पाप १ ११)
(वि ४ २२२)। ४ कर्न का मुद्रय। ५ कर्न का
मुद्रय (पाप १ ११)।

मुद्रय पुं० [मुद्रय] १ कर्न-मुद्रय। २
कर्न-मुद्रय प्रदेय कर्न-मुद्रय का मुद्रय
मुद्रय (मुद्रा ४११)।

मुद्रयि [मुद्रय] १ [मुद्रयि] १
मुद्रयि विद्रय-मुद्रय, कर्न-मुद्रय का मुद्रय
(पाप—मुद्रा २१)। २ विद्रय का मुद्रय
(पत्र १)। ३ कर्न (वि ४ २२२)। रेको
मुद्रयि।

मुद्रि पुं० [मुद्रि] १ कर्न-मुद्रय-विशेष
मुद्रय, मुद्रय, मुद्रि (भाषा पाप कुमा
पत्र १)। २ कर्न-मुद्रय 'मुद्रयि' का
मुद्रय (मुद्रा ४८६)। ३ कर्न की
मुद्रय। ४ कर्न-मुद्रय (वि ४ २२२)।
मुद्रय [मुद्रय] १ एक मुद्रय-विशेष
मुद्रय, मुद्रय, मुद्रि (वि ४ २२२)। २ एक
मुद्रय-मुद्रय (मुद्रा ४८६)। नाह पुं०
[मुद्रय] मुद्रयों का मुद्रय (मुद्रा ४८६)
(मुद्रा ४८६)। मुद्रय पुं० [मुद्रय] मुद्रय
मुद्रय (मुद्रा ४८६)। मुद्रय पुं० [मुद्रय]
मुद्रय-मुद्रय (मुद्रा ४८६)। मुद्रय पुं० [मुद्रय]
मुद्रय (मुद्रा ४८६)। मुद्रय पुं० [मुद्रय]
मुद्रय (मुद्रा ४८६)। मुद्रय पुं० [मुद्रय]
मुद्रय (मुद्रा ४८६)।

मुद्रि वि [मुद्रय, मुद्र] मुद्र वेवकुच
(हम्मीर ३१)। मुद्रय [मुद्रय] मुद्रय-
मुद्रय (मुद्रा ४८६)। मुद्रय पुं० [मुद्रय]
मुद्रय (मुद्रा ४८६)। मुद्रय पुं० [मुद्रय]
मुद्रय (मुद्रा ४८६)। मुद्रय पुं० [मुद्रय]
मुद्रय (मुद्रा ४८६)। मुद्रय पुं० [मुद्रय]
मुद्रय (मुद्रा ४८६)। मुद्रय पुं० [मुद्रय]
मुद्रय (मुद्रा ४८६)।

मुद्रय वि [मुद्रय, मुद्रय] मुद्रय मुद्रय
(वि ४ २२२)। पाप मुद्रय (वि ४ २२२)
(वि ४ २२२)। मुद्रय पुं० [मुद्रय]
मुद्रय (मुद्रा ४८६)। मुद्रय पुं० [मुद्रय]
मुद्रय (मुद्रा ४८६)। मुद्रय पुं० [मुद्रय]
मुद्रय (मुद्रा ४८६)।

मुद्रय वि [मुद्रय] मुद्रय-मुद्रय मुद्रय-
मुद्रय (मुद्रा ४८६)। मुद्रय पुं० [मुद्रय]
मुद्रय (मुद्रा ४८६)।

मुद्रि पुं० [मुद्रि] मुद्रि मुद्रि (वि ४ २२२)
मुद्रि)।

मुद्रि वि [मुद्रय, मुद्रय] मुद्रय-मुद्रय
(मुद्रा ४८६)।

मुद्रि पुं० [मुद्रि] मुद्रि-मुद्रय (मुद्रा ४८६)
(वि ४ २२२)।

मुद्रि पुं० [मुद्रि] कर्न रेको (मुद्रा
४८६)।

मुद्रि वि [मुद्रय] मुद्रय-मुद्रय (मुद्रा
४८६)। २ मुद्रय (वि ४ २२२)।

मुद्रय [मुद्रय] मुद्रय-मुद्रय (मुद्रा ४८६)
मुद्रय (मुद्रा ४८६)।

मुद्रय [मुद्रय] मुद्रय-मुद्रय (मुद्रा ४८६)
मुद्रय (मुद्रा ४८६)।

मुद्रय [मुद्रय] मुद्रय-मुद्रय (मुद्रा ४८६)
मुद्रय (मुद्रा ४८६)।

मुद्रय [मुद्रय] मुद्रय-मुद्रय (मुद्रा ४८६)
मुद्रय (मुद्रा ४८६)।

मुद्रय [मुद्रय] मुद्रय-मुद्रय (मुद्रा ४८६)
मुद्रय (मुद्रा ४८६)।

मुद्रय [मुद्रय] मुद्रय-मुद्रय (मुद्रा ४८६)
मुद्रय (मुद्रा ४८६)।

मुद्रय [मुद्रय] मुद्रय-मुद्रय (मुद्रा ४८६)
मुद्रय (मुद्रा ४८६)।

मुद्रय [मुद्रय] मुद्रय-मुद्रय (मुद्रा ४८६)
मुद्रय (मुद्रा ४८६)।

मुद्रय [मुद्रय] मुद्रय-मुद्रय (मुद्रा ४८६)
मुद्रय (मुद्रा ४८६)।

मुद्रय [मुद्रय] मुद्रय-मुद्रय (मुद्रा ४८६)
मुद्रय (मुद्रा ४८६)।

मुद्रय [मुद्रय] मुद्रय-मुद्रय (मुद्रा ४८६)
मुद्रय (मुद्रा ४८६)।

मुद्रय [मुद्रय] मुद्रय-मुद्रय (मुद्रा ४८६)
मुद्रय (मुद्रा ४८६)।

मुद्रय [मुद्रय] मुद्रय-मुद्रय (मुद्रा ४८६)
मुद्रय (मुद्रा ४८६)।

मुद्रय [मुद्रय] मुद्रय-मुद्रय (मुद्रा ४८६)
मुद्रय (मुद्रा ४८६)।

कट्टी (धनीय २) । ३ शरीर, श्वे (पुर १ ३) पाय । ४ बाह्यिक बहिरात् (हि २ ३) प्रायः । मंत वि [मन्] मुचिबला मूर्त, बनी (बनीदि ६) मुता १३१ म् २०) ।

मुचि की [मुचि] १ मोक्ष निर्वाण (पाचा पात्र प्राप् १२३) । २ निर्मोचता, संतोष (पा ११) । ३ मुक्त धीवी का स्थान ईश्वरप्राप्त्यार मुचिनी (अ ४—पत्र ४४) । ४ निर्वन्धना (पाचा) ।

मुचि वि [मुचि] बहु-भूष रोचनता 'उचि' च पात्र मुचि च वृत्त्यर्थं च निवासिष्ठं (पाचा) । मुचि वि [मौचिम्, मौचिक] मोती पिरोने या वृत्त्ये बला (अ ३ २१) ।

मुचिच न [मौचिक] मुच्य मोती सि ३ ४८, कुत्र ६, कुमा मुता २४—२४६, प्राप् १२ १०१) । कैौ मौचिच ।

मुचोकी की [वि] १ मुचाम्य (तं ४१) । २ बहु श्रेय बला की उचर नीचे संवर्धनी धीर मध्य में विराज्य हो (पत्र) ।

मुच वि [मुच] मोचा मलमोचा (पत्र ३) की स्वा (संवीच ४४ कुमा) ।

मुच्य रेको मुसमा (अ ४—पत्र ३ २) ।

मुता की [मुच] हर्द कुटी । गर वि [चर] हर्दमक (पत्र १ ६) ।

मुद्रा पुं [वि] बह्-नित्येय पल-नमु की एक बाधि (वीच १ टी—पत्र १९) ।

मुद्र एक [मुद्रय] १ मोहर लकडा । २ बन्ध करना । ३ प्रबन्ध करना । मुद्रैह (बन्ध ११ टी) ।

मुद्रंग पुं [वि] १ लज्ज । २ सम्माल (?) (वि ४३ ३ ४४४) ।

मुद्रंग पुं [मुद्रिङ्ग] वीही (ला) 'कडो मुद्रय' पर । मुद्रि कि बहु बहुमिमुद्रयो 'स्यो' (पत्र ३३ २४) ।

मुद्रा की [मुद्रा] १ मोहर, छपर (मुता १२१ बन्ध १२९) । १ मीक्री (मुद्रा) । ३ धन-निष्पाद्य-नित्ये (वीच १४) ।

मुद्रिच वि [मुद्रिच] १ विच वर मोहर लवर्द वर हो वर । २ वर विद्या हुवा (गाथा १ २—पत्र ३९ अ ३ १—बन्ध १२१) ।

मुद्रिङ्ग की [मुद्रिङ्ग] वीही (पत्र १ मुद्रिङ्गा ४—पत्र वीच तं ४२) । वंष पुं [बन्ध] बन्ध-नन्ध बन्ध-नित्येय (वीच ४ २ ४४) ।

मुद्रिङ्गा की [मुद्रिङ्गा] १ बन्ध की लता (पत्र १—पत्र ३३) । २ बन्धना बन्ध (अ ४ १—पत्र २३६, अ ३४ १२, पत्र १२२) ।

मुरी की [वि] मुच्य (वि ६ ११३) ।

मुद्रय रेको मुद्रुग (पत्र १—पत्र ४६) ।

मुद्र रेको मुद्र (वीच कम् प्रोचवा १८ कुमा) । अ वि [म्य] १ मलक में जलन ।

२ मलक-मध्य प्रवेष्ट । ३ मुच्यवलीय रवार पावि बली (हुवा) । य पुं [च] केर बाल (पत्र १ १—पत्र २४) । मुद्र न [शुद्र] मलक-वीही रोज नित्येय (शाया १ १३) ।

मुद्र वि [मुद्रय] १ मुद्र, मोक्ष-मुद्र । २ मुद्र, मोहर, मोक्ष-मलक (हि २ ४४ प्रथम कुमा विवा १ ४—पत्र ४०) ।

मुद्रा की [मुद्रवा] मुद्रा की नयिका का एक नेत्र बाम-नेत्र-रहित शंखुविध नीचवा (कुमा) ।

मुद्रा (पत्र) केौ मुद्रा (कुमा) ।

मुद्राय केौ मुद्र (बन्ध कम्पा वि ४ २) ।

मुद्रय पुं [वि] वर के उचर का शिखर कल, मुद्राटी में 'वीच' (वि ६ ११३) । केौ मोचम ।

मुद्रयसु वि [मुद्रय] मुद्र हीने की गाह बाजा (वन्धत १४) ।

मुद्रयसु वि [मुद्रयसु] १ मलक मुद्र । मुद्रयसु २ मलक-माली (मुद्र १ १२ २, पत्र) ।

मुद्रय एक [मुद्रय] हुवा कुल करना । मुद्रय (पत्र ४२) ।

मुद्रय पुं [वि] कपीय मोईय (वि ६ २४०) ।

मुद्रय पुं [वि] मुद्रय १ कपीयमि मोईय की बाय (वि ६ २४० वी १) । २ मुद्रयि (वीच १ १८०) । ३ लल-मलक मलिन, लल निमित्त पाति-मल (अ १४ टी की २ वीच २) ।

मुद्रयु की [मुद्रयुकी] मनुष्य की कत कलापी में लवनी बन्ध—प ६ ६ वर

लक को बधना (अ १०—पत्र २१८) तं १६) ।

मुद्रयक [मुद्रय] १ निपाठ करना । २ लक जलीकन करना । ३ वीच बताना । ४ प्रवेष्ट करना । ५ व्याज करना । ६ नीचना । ७ केंचना । मुद्र (बाध ४३) ।

मुद्रयक [मुद्रय] लीलाय । मुद्र (वि ४ १२४ पत्र) ।

मुद्र पुं [मुद्र] रोज-नित्येय । रिड पुं [रिड] वीहम्प (टी १) । 'वेरिय पुं [वेरिय] बही पर्व (हुमा) । रिड पुं [रिड] बही पर्व (बन्ध १२४) ।

मुद्र की [वि] बरती मुद्रा (वि ६ ११३) ।

मुद्रय पुं [मुद्रय] मुद्रय, बाध-नित्येय (कम्पा मुद्रय पात्र-वा २२३ मुता १२३) मंत वनीदि ११२ कुत्र २८० वीच अ ३ २१९) । केौ मुद्रय ।

मुद्रय पुं, [मुद्रय] एक नालीय बन्धित केर केर केर विवर ए बिदा गुण कुमा (पत्र १) ।

मुद्रय केौ मुद्रय (वीच अ ३ २१९) । २ धन नित्येय, लल-नित्येय (वीच) ।

मुद्रय की [वि] मुद्रयिन पात्रय-नित्येय (वीच) ।

मुद्रय वि [मुद्रयि] बीला हुमा (कुमा) ।

मुद्रय वि [वि] १ मुद्रयि हुमा हुमा (वि ६ ११२) । २ मुद्रा हुमा बन्ध कम्पा हुमा (मुता २४०) ।

मुद्रय पुं [वीच] १ प्रविच वधिय-नय (अ २११ टी) । २ मीय वंत में जलन 'चमविष्टे मुद्रि मुद्रियननन' (विष्टे ११३०) ।

मुद्रय पुं [मुद्रय] १ प्रगाय केर-नित्येय (कम्पा पत्र २४०) । २ पत्रिनामुरि के धनय का एक घावा (विष्टे ४२४ ४२८) । ३ पुंकी मुद्रय केर का निवर्तनी मनुष्य (पत्र १ १—पत्र १४) की 'बी (वच) ।

मुद्रय की [वि] पत्रा-नित्येय (पत्र) ।

मुद्रय केौ मुद्रय = वृक्ष (वि २, ११२ कुमा मुता १११ पत्र २०) ।

मुद्रय [वि] वृक्ष केरी की वर (वि ६ ११०) ।

मेय वि [मेय] १ जातने योग्य प्रमेय पदार्थ, बस्तु (उत्तर १८-२३)। २ जातने योग्य (बस्तु)। अ वि [मे] पदार्थ-जाता (उत्तर १८, २३; सुख १८-२३)।

मेय पुन [मेयस] १ शरीर-स्वस्थ बाण-विशेष पर्वी (सुख ३८ छाया १ १२—पत्र १७३ पत्र)।

मेयञ्ज न [मे] वास्य घन (वि ६ १३८)।

मेयञ्ज पु [मेयार्थ] मेयार्थ योग में उत्पन्न (सुख २ ७ ३)।

मेयञ्ज पु [मेयार्थ] १ मन्त्रान् महावीर का स्वर्ण गणधर (सम १६)। २ एक कैल मन्त्रवि (उक्त सुपा ४ ६, विवे ४३)।

मेयव वि [मेयव] काला कृष्ण-बर्णी (पत्र ११६)।

मेयव वि [मे] घटहनु अचक्षिप्यु (वि १ १३८)।

मेयव पु [मेयव] पर्वत-विशेष। काला की [कल्या] नर्वाता ली (ताप)।

मेयवाङ्मय पुन [मेयवाङ्मय] एक भारतीय देश, मेयवाङ्मय वाङ्मय वाङ्मयि लक्ष्मिनि लक्ष्मिनि मेय वाङ्मय हन्नीयमेरु (हन्नीय २७)।

मेयवि १ की [मेयिनी] १ पृथिवी बर्णी मन्त्रिणी (सुपा ११; कुमा प्रान्त २२)। २ पदपदविन (सुपा १६; समस्त ४७२)। 'मेयव पु [मेयव] राजा (उत्तर १८९ सुपा १ ८)। पत्र पु [मेयवि] १ राजा। २ पदपदवत् की विष्णुसुखपदपदविन कोटमेरु न मेयविपक्षि न पु मावीनो (सुपा ११)।

मेयवि पु [मेयवि] राजा (उत्तर १८९ सुपा १ ८)।

मेयविपक्षि न पु मावीनो (सुपा ११)।

मेयविपक्षि न पु मावीनो (सुपा ११)।

मेयविपक्षि न पु मावीनो (सुपा ११)।

मेयविपक्षि न पु मावीनो (सुपा ११)।

मेयविपक्षि न पु मावीनो (सुपा ११)।

मेयविपक्षि न पु मावीनो (सुपा ११)।

[विपासा] बलवति-विशेष मेयविपक्षि (उत्तर १८—पत्र १८३)। बेतो मित्रः।

मेयव बेतो मेयव (पत्र)।

मेयव न [मेय] मान, लीस बट बटकर विस्तरे माना जाय बहु (पत्र १५४)।

मेय बेतो मेय (कुमा सुपा २ १)।

माखिनी की [माखिनी] मन्त्र नन के शिखर पर रहनेवाली एक विष्णुमाटी बेती (उत्तर १८—पत्र ४१७)। बह की [वती] एक विष्णुमाटी बेती (उत्तर १८—पत्र ४१७)।

वाहण पु [वाहन] एक विपासर राज-कुमार (पत्र २, १३)।

मेयव पु [मेयव] एक विष्णुमाटी बेती (उत्तर १८—पत्र ४१७)।

मेयव बेतो मित्रवत् = मेयव (वीच २४-वीच ७२ न टी सुपा २६७)।

मेयव बेतो मेय = मेय (पत्र १५४)।

मेयव बेतो मित्रवत् (महा ४ ११, ४ २४)।

मेय बेतो मित्र = मेय (पत्र १५४)।

मेयव पु [मे] मन्त्रा लला, पुनरुत्थी में लीसः 'पल्लव पदपदपदविन लीसः' मन्त्रा लला (सुपा १३३)।

मेयव पु [मे] मन्त्रा लला, पुनरुत्थी में लीसः 'पल्लव पदपदपदविन लीसः' मन्त्रा लला (सुपा १३३)।

मेयव पु [मे] मन्त्रा लला, पुनरुत्थी में लीसः 'पल्लव पदपदपदविन लीसः' मन्त्रा लला (सुपा १३३)।

मेयव पु [मे] मन्त्रा लला, पुनरुत्थी में लीसः 'पल्लव पदपदपदविन लीसः' मन्त्रा लला (सुपा १३३)।

मेयव पु [मे] मन्त्रा लला, पुनरुत्थी में लीसः 'पल्लव पदपदपदविन लीसः' मन्त्रा लला (सुपा १३३)।

मेयव पु [मे] मन्त्रा लला, पुनरुत्थी में लीसः 'पल्लव पदपदपदविन लीसः' मन्त्रा लला (सुपा १३३)।

मेयव पु [मे] मन्त्रा लला, पुनरुत्थी में लीसः 'पल्लव पदपदपदविन लीसः' मन्त्रा लला (सुपा १३३)।

मेयव पु [मे] मन्त्रा लला, पुनरुत्थी में लीसः 'पल्लव पदपदपदविन लीसः' मन्त्रा लला (सुपा १३३)।

मेयव पु [मे] मन्त्रा लला, पुनरुत्थी में लीसः 'पल्लव पदपदपदविन लीसः' मन्त्रा लला (सुपा १३३)।

मेयव पु [मे] मन्त्रा लला, पुनरुत्थी में लीसः 'पल्लव पदपदपदविन लीसः' मन्त्रा लला (सुपा १३३)।

मेयव १ की [मेयव] १ हिमालय की पत्नी। मेयव १ २ स्वर्ग की एक देवता (ममि ४२ नाट—विषय ४० पत्र)।

मेयव न [मात्र] १ धाकस्य संपूर्णता। २ धनधारण 'मेयवमेय' (वि १ ८२)।

मेयव [मे] बेतो मित्रवत् (सुपा १२ १२२)।

मेयवी की [मेयवी] मित्रा बोली (वि १ ६ या २७२ स ७१६)।

मेयविया बेतो मेयविया (सुपा १)।

मेय (पत्र) वि [मेयव] मेय (पत्र १२ पत्र)।

मेयव [मेयव, मेयव] १ लुप्त प्रवि-धायक राजा (पत्र २, १३३)। २ पुन-महा-विशेष (उक्त विपा १ २—पत्र २७)।

३ बलवति का स्वर्ण-पदविन दुष्का 'लक्ष्म-मेयव' (पत्र २ १ ८)।

मेय की [मेय] मन्त्रा (वि १ १३३)।

मेय की [मेय] मन्त्रा (वि १ १३३)।

मेय की [मेय] मन्त्रा (वि १ १३३)।

मेय की [मेय] मन्त्रा (वि १ १३३)।

मेय की [मेय] मन्त्रा (वि १ १३३)।

मेय की [मेय] मन्त्रा (वि १ १३३)।

मेय की [मेय] मन्त्रा (वि १ १३३)।

मेय की [मेय] मन्त्रा (वि १ १३३)।

मेय की [मेय] मन्त्रा (वि १ १३३)।

मेय की [मेय] मन्त्रा (वि १ १३३)।

मेय की [मेय] मन्त्रा (वि १ १३३)।

मेय की [मेय] मन्त्रा (वि १ १३३)।

मोज सक [मुक्] जोड़ना व्याख्या ।
मोज (शब्द ७ ११६) । मोज मोरत
(वि ८ ११) ।

मोज सक [मोज] कुड़वाला व्याख्या
करना । मोजपरि (शी) (गाठ-मासवि
४१) । कबह मोड़त (वा १७२) ।

मोज पुं [मोज] हर्ष कुटी (पयल १२३
गुह्य परि) ।

मोज वि [रे] १ अविपत । २ पुं निर्मल
भावि का बीजकोट (वि १ १४८) । ३ पुं
फेरा (पुप १ ४ २, १२ विर ४९८
कस पया १२) । पडिमा की [मविमा]
प्रचल-विपयक नियम-विशेष (ठा ४ २—
पत्र १४ कील वर ६) ।

मोज पुं [मोज] कुल-विशेष 'लम्बा-
मोमदासकुलवत्सलपताये करै य' (पयल
१—पत्र ११) ।

मोजा वि [मोज] मुल कलेवला (सम
१ पवि पुपा २१४) ।

मोजा पुं [मोज] लहू, मिठाक-विशेष
(सं १) पुपा ४ १) । रेको मोदल ।

मोजन न [मोजन] मोने रेको (वि १७३
वदर) ।

मोजना की [मोजना] १ पटियाय (बावक
१११) । २ मुक्ति, कुटकार (पुप १ १४
१८) । ३ कुड़वाला मुल करना (पत्र
११) ।

मोज रेको मोजा (वन; पत्र ११३, ३।
पुप ४ १) नाट-वि २१) ।

मोजा की [मोजा] कबरी कुल बैला का
मास (पत्र) ।

मोजा सक [मोज] कुड़वाला । मोला
रेसि मोलापेदि (गाठ—रुद्र २३, मुञ्ज
११६) । मवि मोलापेत्तवि (वि २९८) ।
कर्म मोलापेत्तवि (पुप २११) । बह
मोलापेत्त (पुपा १८२) ।

मोजावन न [मोजन] कुड़वा करना
(मि ११८ व ४७) ।

मोजावि [वि [मोज] कुड़वाला पुपा
मोड़ (वि २३९, नाट—मुञ्ज ८९)
मुर १ १) पुपा ४७०; बहुर मुर २
१९ ९, ७७ पुपा २१२; मवि) ।

मोड़ पुं [रे] बल-विशेष (गाठ) ।

मोड़ रेको मुड़ = मुड़ (वि १, ११९;
२ २) ।

मोड़ पुं [मोड़] धर्म-कुल धर्म का केंद्र ।
मोड़ सक [रे] मेवना मुड़परी में
'मोड़कु' मराठी में 'मोड़कु' । मोड़लह
(धर्म) ।

मोड़ रेको मुड़ = मुड़ (पत्र) ।

मोड़णिजा की [रे] हृदय कर्णिक, कर्म
मोड़णी का कला मय भाव (वि ९
१४) ।

मोड़ रेको मोड़ 'नियमित' भण्ड
तुर्न मोड़लह केण सिर्गवि' (पुपा ११२) ।

मोड़ रेको मुड़ (पुपा २८) है ४
११९) ।

मोड़वि वि [रे] १ प्रेषित, मेवा हुमा
(पुपा २२१) । २ विष्ट (पुपा १४) ।

मोड़ रेको मुड़ल = मोड़ (वीन पुपा;
है २ १७३; पत्र २१४ टी वर; वपु) ।

मोड़ रेको मुड़ल = मुड़ (पत्र २१२) ।

मोड़ल न [रे] कलवि-विशेष (पुप २,
२ ७) ।

मोड़ल न [मोड़ल] मुक्ति कुड़वा
(वि ४१८ मुर २ १७) ।

मोड़ल पुं [रे] बल-विशेष (पुपा ४ ८) ।
रेको मुड़ा ।

मोड़ल पुं [रे] पुन कलिका बीर (वि ६
११६) ।

मोड़ल पुं [मुड़ल] मुनय, मोजरी । २
कलिका का वै (वि १, ११९; २ ७७) ।

३ पुनकुल-विशेष मोय का बाळ (पयल
१—पत्र ११) । ४ रेको मुगार । पाणि
पुं [पाणि] एक बैल गाँव (सं १८) ।

मोड़ल वि [रे] संकुचित मुड़लित (वि
६ ११६ टी) ।

मोड़लपण न [मोड़लपण] व्याख्या
मोड़लपण १ मोड़-विशेष (इका ठा ७;
पुप १ १९) । २ मुड़ी जब मोड़ में
धन्य (वि ७—पत्र ११) ।

मोड़ल रेको मुगार । मोड़ल (१)
(वाला १४६) ।

मोड़ रेको मोड़ = मोड़ 'मोड़पयो' (पयल १ १—पत्र ११) ।

मोड़ रेको मोड़ = मोड़। सं. मोड़म
(मवि ४७) ।

मोड़ न [रे] धर्म-वी एक प्रकार का लुटा
(वि ६ ११६) ।

मोड़ रेको मोड़ = (वि) (पुप १ ४ २
१२) ।

मोड़ रेको मोड़ = मोड़ (वपु) ।

मोड़ल सक [रम्] लड़ा करना । मोड़ल
(वि ४ ११८) ।

मोड़ल न [रम्] रति-लड़ा रत मैनु
(पुपा) ।

मोड़ल न [मोड़लित] बिटा-विशेष वि-
क्या भावि में मयना से उत्पन्न बैल (पुपा) ।

मोड़ल न [रे] बलाकर (वि २१७) ।
रेको मुड़ल ।

मोड़ सक [मोड़] १ मोड़ना टेंका
करना । २ लोका । मोड़ (पुप ७ ६) ।

३ मोड़ल, मोड़ल, मोड़ल (मवि-
पया व २१७) । कब मोड़लमाग
(वा पु १४) । सं. मोड़ल (पुपा ११८) ।

मोड़ पुं [रे] लट, लट (वि ६ ११७) ।

मोड़ल वि [मोड़ल] मोड़लमा (पयल १
४—पत्र ७२) ।

मोड़ल न [मोड़ल] मोड़ल मोड़ल (वपु
१८) ।

मोड़ल की [मोड़ल] ऊपर रेको (पयल १
१—पत्र २३) ।

मोड़ल वि [मोड़ल] १ मन बाँध हुमा
(वा २४६ व्यापा १ ६—पत्र १२७;
पयल १ १—पत्र २३) । २ धर्म-वि
मोड़ हुमा (विपा १ १—पत्र १८ व
११२) ।

मोड़ पुं [मोड़] एक कलिका-मुल (पुप २) ।

मोड़ल न [मोड़ल] नगर-विशेष (वि ९
१ २३ टी ७) ।

मोड़ न [मोड़] मुनिल वाली वा संव
कुली (वीन पुपा २१७; पया) । वर वि
[वर] नील वपुमा वाली वा संव

सुवकृतिवत्स सीमिपुम्पपट्टिबकत्स बाज-
बामाहत्स (मुद्रा १ १) ।

मिम् बा पाव-मुत्ति में प्रबुद्ध मिम्मा पावा
अम्यय (विण) ।

मिम्मा देवी वृष (ग्राह २१) ।
महस देवी मंस = मन्त्र । मन्त्र (ग्राह ७१) ।

॥ इय छिरिपाइअसहमहणपमि मयापहसहकणो
अपणीवहसो तरुनो समसो ॥

य

य वृ [य] धनु-स्वातीय म्यज्ज बर्ल-विदेय
म्यज्ज बरार (ग्राम) ग्रामा) ।

य म [य] १ हेतु-सुचक म्यय (बर्ल-
१८२) । २ देवी व = य (ग्र १ १) ।
यम २, मय १२, २ आ १२, यावा
रमा कम २ ३१; ४ २) १० देवेय
११ ग्रम् २७) ।

य देवी त (ग्राम) ।

य वि [य] देवेनाता (दीप यम नीव १) ।

य देवा देवी जैन्मा (संति ७) ।

य व स [य] १ यमन करण । २
युवा कण । संक्ष यविष (ग्र २, १—
५१ १) ।

य व वि [य] प्रव्ययदेव कयोति 'य-यि'
(ग्र २, २ ११) ।

य देवी बर्ल (मुद्रा २२२) ।

य देवी बळ 'विता-य' (ग्र ८, ७१) ।

य देवी तळ = त (ग्र २३) ।

य देवी अण = वन (ग्र १ १२१) ।

य देवी अण = वन (ग्र १ १२१) ।
य देवी अण = वन (ग्र १ १२१) ।
य देवी अण = वन (ग्र १ १२१) ।

य देवी अण = वन (ग्र १ १२१) ।

य देवी अण = वन (ग्र १ १२१) ।

य देवी अण = वन (ग्र १ १२१) ।

य देवी अण = वन (ग्र १ १२१) ।

य देवी अण = वन (ग्र १ १२१) ।

य देवी अण = वन (ग्र १ १२१) ।

य देवी अण = वन (ग्र १ १२१) ।

य देवी अण = वन (ग्र १ १२१) ।

य देवी अण = वन (ग्र १ १२१) ।

य देवी अण = वन (ग्र १ १२१) ।

य देवी अण = वन (ग्र १ १२१) ।

य देवी अण = वन (ग्र १ १२१) ।

य देवी अण = वन (ग्र १ १२१) ।

याय स [या] बामा । याया, बामा
याये, यायेति बामा । यायेति (सि
२१०) । या अ बर्ल १७; य २३ ग्रम्
१ २) ।

याय देवी अण = यान (ग्र २) ।

याय देवी अण = यान (ग्र २) ।

याय (ग्र) देवी अण = यान (ग्र २) ।

यायवृद्ध वि [यायवृद्ध] म्ये, मिने ही
म्येयकता ही अना (ग्र २, २, २) ।

युव देवी सुच = युवा 'एव मयुच बर्ल'
(ग्र २ १७ रंय) ।

येव } (य वा) देवी एव (सि २,
येव } २२) ।

यविष (वा) } देवी विष = वा । यवि-
यविष (यि) } यवि (वाकायि भापे) (ग्राह
१ २) । यविष (यि) (ग्राह १२१) ।

येव (ही) देवी एव (ग्र २ २०) ।

येव देवी येव (सि २२) ।

॥ इय छिरिपाइअसहमहणपमि मयापहसहकणो
अपणीवहसो तरुनो समसो ॥

टी: धि २) । १ पुं **रंज-विरोध** (विरो) ।
४ वि. कुटी कलेवाक, पयकक (कुमा) ।

रंजण पुं [रं] १ बड़ा कुम्भ (रं ७ १) ।
२ बूझा पान-विरोध (रं ७ १ पाप) ।

रंजिय } वि [रंजित] राम-मुक्त किया
रंजित } हुआ (रंज से ३) ४ व यद
महा हिम २०२) ।

रंजा की [रंजा] रंज विवरा (वप ३ ११
बज्जा ४४ कपु विग) ।

रंजुन न [रं] रंजु रस्ती पुनपती में
‘रंजु’ (रं ७ १) ।

रंज वर [रं, राय] रंजना करना ।
‘रंजो रायसे’ स्तुत रंज (मह ७)
रंजि (स २४२) । बर रंजत (छाया १
७—पत्र ११७) । रंज रंजिण (कुप
२ २) ।

रंज न [रंज] छिन्न विवर (वा ६३२) रंज
रंजि) ।

रंजय न [रंजन रंजन] रंजना, पवन
पाक (मा १४ पत्र १८ सुमति १११ टी,
पुपा १२। ४ १) । पर न [रंज] गोक-
भू (परा ११२) ।

रंजय न [रंजन] पान-मुह, रंजोदर (छाया
१ १ १४) ।

रंज वर [रंज] क्षिप्ता पवना करना ।
रंज (रं ४ ११४) मह १४, वर) ।

रंजय न [रंजय] वरु-कण्ड, पवना करना
(कुमा) ।

रंज के रंज । रंज, रंज (रं ४ ११४
वर) ।

रंजय के रंजय (कुमा) ।

रंज वर [रंज] बाना पति करना । रंज
(रं ४ ११२) रंजित (कुमा) ।

रंज के रंज । रंज (बाता १४६) ।

रंज वर [रंज] व्याप्य करना ।
रंज (वर) ।

रंज पुं [रं] पयोधन-पत्रक द्वितीये का
कला (रं ७, १) ।

रंजा की [रंजा] १ कनवी नेता का काज
(पुपा ११४ १ ३) पुत्र ११७ काज) । २
विपय-विरोध एक मन्त्र (पुपा २२४)

रंज २) । १ वैरीयन पायक बलीय की
एक मन्त्र-पट्टि (रं २, १—पत्र १ २)
साया २—पत्र २२१) । ४ पञ्च की एक
पत्नी (पत्रम ७४ ५) ।

रंज वर [रंज] रंजना करना पान
करना । रंज (रंज-महा) । मुका. रंजोदर
(कुमा) । बर रंजित (वा १८, दीप मा
१७) । कनज-रंजोदरमाग (गाढ—मालती
२५) । ३ रंज, रंजयिण रंजिणपत्र,
रंजोदर (रं १ २) धर्म १ गव
पुपा २४) ।

रंज पुं [रंज] रंजत (वाप कुप
१११ पुपा ११ रंजि रंजोदर ४४) ।

रंज वि [रंज] १ रंज रंज करेना
(पत्र ३ ११८ कप) । २ पुं, एक रंज रंजि
(कप) ।

रंज के रंज = रंज ।
रंजय } वि [रंजय] रंजय-कर (गाढ—
रंजय) } मालति २१ रंज, कुप २११
धर्म १११) ।

रंजय न [रंजय] रंज, पान (पुत्र ११
११७) यद माय २१) ।

रंजया की [रंजया] रंज रंजो (रंज ८१
रंज) ।

रंजयिना की [रं] रंजो हरी की रंजित,
रंजो रंजत (पुपा १८१) ।

रंजया की [रं] रंजया रंज करेना
(महा) ।

रंजय पुं [रंजय] १ रंजो की एक बालि
(महा १४—पत्र १८) । २ विद्यावर-कपुर्वी
का एक रंज (पत्रम २, ११२) । ३ रंज-
विरोध में जलक मनुष्य, एक विद्यावर-कपुर्वी
के रंज विद्यावर रंजयमान कर्त लोप
(पत्रम २, ११७) । ४ विद्यावर, कपुर्वी (रं
१२, १७) गज—मुप ११२) । १ रंजोदर
की रंजोदर मुपुर्वी (पत्रम ११२) पुत्र १११) ।

रंजो की [रंजो] रंजा कनवी (रं १२,
८४) । रंजो की [रंजो] रंजो
धर्म (रं १२, ७८) । गज पुं [गज]
पलवी का रंजा (रं ८, १४) ।

रंज न [रंज] रंज-विरोध (पत्रम
७१ ११) । दीप पुं [दीप] रंज

दीप (पत्रम २, १२१) । गज के रंजा
(पत्रम २, ११) । गज पुं [गज] रंजो
का मुखिया (पत्रम २, १२१) रंज ११ १) ।
रंज पुं [रंजि] रंजो धर्म (रं १२, ७८
११) ।

रंजसिं पुं [रंजसिं] रंजो का रंजा
(पत्रम १२ ४) ।

रंजसी की [रंजसी] १ रंजत की रंजो
(गाढ—मुप २१८) । २ रंजि-विरोध (रंजि
४४ ४ टी) ।

रंजसिं के रंजसिं (रं १२ ७७) ।

रंज की [रंज] १ रंज पान (वा १,
पुपा १ १ १११) । २ रंज मन्त्र ‘रंजो
रंजय रंजय’ (पत्र २८ पुपा
११७) ।

रंजय वि [रंजय] १ रंजय (पत्रम वा
१११) । २ पुं एक रंजय रंजय (कप
रंजि २२५८) ।

रंजय की [रंजय] रंजय (रंज १७) ।

रंजो की [रंजो] रंजय मन्त्र का मुख
धर्म (रं १२१ पत्र ८) ।

रंजोय वि [रंजोय] रंज में रंज
(रंज १११) ।

रंज [रं] के रंज (पत्र) ।

रंज के रंज रंज (रं २, १ ७१)
वर) ।

रंजय [रं] कुमुद-वर (रं ७, १ पान;
वर) ।

रंज पुं [रंज] रंजय का एक रंजा
(पत्रम २२, २१) ।

रंज वर [रं] रंज रंज, रंजत होना,
रंजत करना । रंज रंजि रंज (कुमा)
वज्जा ११२) । रंज, ‘रंज रंजय रंज’
(कुप ११२) । बर, रंजत (रंजि) । रंजो,
रंजय (वज्जा ११२) ।

रंज न [रं] रंज २ रंजत । १ वि
रंजत करनेवाला, रंजतवाला (कुमा) ।
रंज वि [रं] रंजि रंजतवाला (कुमा) ।
रंजया के रंजया (रंज ११) ।

रंजया की [रंजया] मुखा (वा १११ दीप;
कप) ।

रत्नकन्दार न [रि] कीष्ट मय विरोध (रि ७ ४)।

रत्नचक्र पुं [रि] १ ईश्वर । २ व्यास (७ ११)।

रत्नचि (धप) देवो रत्ति = रत्ति (रि १२६)।

रत्नय न [रि] रत्नक] वस्तु कृत्वा का कुल (रि ७ १)।

रत्ना की [रत्ना] एक नदी (धप २७५ ४१ इत्)। वररूपयाय पुं [वरीमपाय] इह विरोध (अ २, १—पञ्च ७१)।

रत्ति की [रि] प्राज्ञा ह्रस्व (रि ७ १)।

रत्ति की [रत्ति] रत्त निरा (रि २ ७२ कुमा प्राप्त ६)। अंघय वि [अन्घय]

रत्त को नदी देह सम्बन्धला (गा ११७

रत्ता २१)। अर रि [वर] १ रत्त में

निहतेमसा। २ पुं रत्तव (पञ्च १६)

‘निहत्त न [निहत्त] रत्त-विह, ग्रहणित

(रि ८८)। देवो रत्त = रत्ति।

रत्तिवर देवो रत्ति = अर (वर्ग ७२)।

रत्तिविग्रह न [रत्तिविग्रह] रत्त-विह

ग्रहणित निहत्त (पञ्च ७८)।

रत्तिविग्रह न [रत्तिविग्रह] अर देवो

रत्तिविग्रह (पञ्च ८ १४ ७१ ८२)।

रत्तिव न [रत्तिव] की रत्त में न देह

सकृदा ही वह (प्राप्त १७१)।

रत्तीय पुं [रि] नापित इत्यादि (रि ७

१५ प्राप्त)।

रत्तपञ्च न [रत्तपञ्च] बाह वनस (पञ्च

१ ४)।

रत्तोभा की [रत्तोभा] एक नदी (रत्त)।

रत्तोपञ्च देवो रत्तोपञ्च (गा—पञ्च १४२)।

रत्ता देवो रत्ता (गा ४ अंत १२ गुर

१ १६)।

रत्त रि [रत्त, रत्त] रत्ता ह्या, वन (रि ११३ गुमा ११३)।

रत्ति रि [रि] प्रज्ञा, वेत्त (रि ७ २)।

रत्त रि रत्ता (गुमा ४ १ कुमा)।

रत्त क [आ + कम्] भाग्या कृता।

रत्त (पञ्च ७१)।

रत्त पुं [रि] वस्ती कृत्वा की ‘रत्तको’

(रि ७ १ प्राप्त)। २ रत्त-विरोध करि कृत्वा

पाप्मनिहत्त रत्त (रत्त)।

रत्तविग्रहा की [रि] बोभा पोह (रि ७ ४)।

रत्ता रि [रि] रत्त वसा (गा १४ अर २

१२) वर्ग ४२)।

रत्तस देवो रत्तस = रत्त (गा ८०२ ८१४

१४४)।

रत्त वक्त [रत्त] १ कीर्ता कृता। २ संयोग

कृता। रत्त रत्त, रत्ति रत्तव रत्तव

(कुमा)। वक्ति रत्तवक्ति, रत्तिवक्ति (कुमा)।

कर्म रत्तवक्ति (कुमा)। वक्त रत्तव, रत्त

माण (गा ४४, कुमा)। रत्त, रत्ति रत्तिव,

रत्तवक्ति, रत्तव (रि २ १४१ १ ११३

वक्ता रि ११२) रत्तवक्ति, रत्तवक्तिव,

रत्तवक्ति (धप) (रि १८८)। देह रत्तिव

(धप १८८)। रत्त रत्तव (गा ४४१)

देवो रत्तवक्ति रत्तवक्ति रत्त। प्रयो

रत्तवक्ति (रि ११२)।

रत्तन न [रत्तन] १ कीर्ता कीर्ता। २ वृत्त,

संयोग, रत्त-कीर्ता (पञ्च १८८ कुमा अर १

१८८)। ३ रत्त-वक्ति वक्ति (कुमा)।

४ पुं वक्त वक्ति (पञ्च)। ५ रत्त वर

स्वामी (वक्त ११ ११ रिग)। ६ वक्त-

विरोध (विग)।

रत्तवक्ति रि [रत्तवक्ति] १ वृत्त वक्तव

रत्त (पञ्च प्राप्त वक्ति २)। २ न एक

वक्त-विरोध (वक्त १४)। ३ पुं वक्तव

वक्ति के वक्त में वक्त वक्ति की वक्त वक्ति

एक वक्तवक्ति (वक्त २११ टी)। ४ एक

विरोध, वक्त-विरोध (अ २ १—पञ्च ८)

। रत्त की [रत्त] १ वक्ति की (पञ्च

अर १८८) प्राप्त ११३ १८)। २ एक

वक्तवक्ति (वक्त)।

रत्तवक्ति रि [रत्तवक्ति] रत्त, वक्तव

वक्ति ४। वक्त वक्त २१३ वक्ति)।

रत्ता की [रत्ता] वक्ति की (कुमा १)।

रत्तवक्ति देवो रत्त।

रत्तवक्ति रि [रत्त] १ वक्ति वक्ति वक्ति की

की वक्त (कुमा ४ १)। २ न, वक्त

कीर्ता (पञ्च १ १—पञ्च ११३ कुमा

गुमा १७३ प्राप्त ४४)।

रत्तवक्ति रि [रत्त] रत्ता वक्त (कुमा १

४४)।

रत्ति रि [रत्ति] रत्त कृतेवत्ता (कुमा)।

रत्त रि [रत्त] १ मनोरम रत्तव

(पञ्च १२ ४० गुर १ १३ प्राप्त ७१)।

२ पुं वक्त-विरोध एक वक्त (अ २,

१—पञ्च ८)। ३ वक्त का वक्त (रि १

४७)। ४ न एक वक्त-विरोध (धप १७)।

रत्तवक्ति पुं [रत्तवक्ति] १ एक वक्त वक्त

रत्तवक्ति विरोध (अ २ १—पञ्च ८)।

२ एक वक्त-विरोध वक्त-विरोध का वक्त-विरोध

(धप १२) अ २ १—पञ्च १७ इत्)। ३

न, एक वक्त-विरोध (धप १७)। ४ वक्त

विरोध का एक वक्त (धप ४४)।

रत्त देवो रत्त। रत्त (पञ्च १३)।

रत्त वक्त [रत्त] रत्ता ‘वो वक्तव

वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव

(वक्तव)।

रत्त वक्त [रत्तव] वक्तव वक्तव

वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव

वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव

वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव

वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव

वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव

वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव

वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव

वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव

वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव

वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव

वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव

वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव

वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव

वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव

वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव

वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव

वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव

वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव

वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव

वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव

वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव

वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव

वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव

वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव वक्तव

बाधो का बध्ना (पठ्य) । तस्य वि [मय]
बाधो का बना हुआ (प्राप्त) १ १—पत्र
१४० वि ७) ।

रमय पुं [रमय] मोदी (स २५६; पाठ) ।

रमयस्त्री स्त्री [र] विरह्य वास्य (वि ७ ३) ।

रमयाही स्त्री रमय-बाहिआ (सिंह ७३८) ।

रमय सक [रमय] बनवाना, निर्माण
करना । रमयेह रमयति, रमयेह (कण्य) ।

रमय रमयेहा (कण्य) ।

रमयविम वि [रचित] बनवाना हुआ (स
४१३) ।

रम्य स्त्री [र] प्रियपु, मालकर्मिणी (वि ७
१) ।

रम्य पुं स्त्री [र] बन्या मधुर रम्य (माल
३) ।

रम सक [र] १ कल्या मेलना । २ बन
करना । ३ रमि करना । ४ रम्य रमना ।

५ रम्य करना 'मुक्तं रमति परिसार' (मुप
१ ४ १ १८) रम्य (वि ४ २३१ संक्षिप्त)

१। नमः रमंत, रमंत (छाया १ १—
पत्र १३, लिंक, श्री) ।

रम सक [रमय] बुझवाना धातुमान करना ।

नमः रमंत (वीर) ।

रम सक [र] धार्य करना । रमि—रमिह
(संक्षिप्त) ।

रम पुं [र] १ रम्य धारावा (कण्य) मद्रा
सहा (रमि) । २ वि मधुर रम्यवाता 'रमं
प्रवर्त कलमंभुष' (पाठ) ।

रम (घण) स्त्री रम = रम्य (रमि) ।

रमंत } (रम) स्त्री रमन (रमि) ।

रमय न [रमय] धारावा करना 'पञ्चासके न
करेयुषा सवा रमयसीता धावी' (महा) ।

रमयण पुं (पत्र) स्त्री रम्य = रम्य (वि ४
रमस) ४१२; रमि) ।

रमय पुं [र] मन्थन-करण विरोधे की लक्ष्मी,
मुनराही में 'रमये' (वि ७ १) ।

रमय सक [रोरुय] १ रम्य धारावा
करना । २ बारंबार धारावा करना । नमः
रमयंत (वीर) ।

रमि वि [रमि] धारावा करणेवाला (वि १
२६) ।

रमि न [रमि] १ सूर्य सूरज (वि २, २२
गठन सण) । २ राशज-नील का एक रावा
(पठम ५, २१२) । ३ धर्म बुद्धि धारक का
वेद (वि १ १७२) । 'तैय पुं [तैयस]

१ ब्रह्मपुं रम का एक रावा (पठम ५,
४) । २ राशज नील का एक रावा एक
भक्ति (पठम ५, २१५) । 'तैया स्त्री

[तैया] एक विद्या (पठम ७ १४१) ।

'नैय पुं [नैय] रमि-ब्रह्म (मा १२) ।

'नैय पुं [नैय] धारक का एक रावा
(पठम ६ १८) । मत्ता स्त्री [मत्ता] एक
महीवि (वी ५) । मास पुं [मास]

नमय-विरोध सूर्यहास नमः (पठम १३,
२६) । वार पुं [वार] विन-विरोध रमिवा
(पुत्र ४११) । सुस पुं [सुस] १ रमिवा
र (वि ८ २८) गुप १६) । २ रमयन

का एक केमालि सुधी (वि १३, २३३) ।

दास पुं [दास] सूर्यहास नमः (पठम
२१ २७) ।

रमिय न [रमिय] विमपर सूर्य ही वह
मलय (वि १) ।

रमिय वि [र] धार्य किया हुआ सिवाया
हुआ (वि १४३६) ।

रमयारिज पुं [र] दूत विरह-हारक 'मेरा
प्रवर्तने रमयारिजो रि' (गुप ४२८) ।

रम सक [र] विज्ञाना धारावा करना ।

रम्य (मा ४१६) । नमः रमंत (मुद्र २
७३ गुप २७१) ।

रम पुं न [रस] १ विज्ञा का विषय—मधुर,
ठिक धारि 'एते रसे' 'एते रसाई रसाई
कासाई' (का १०—पत्र ४०१ प्राप् १७४) ।

२ स्वभाव प्रवृत्ति (वि ४ १२) । ३ वाक्पि
शब्द-प्रवृत्ति मृगार धारि नम रस (पत्र
१४ १२ नमि ११ सिंह १३) । ४

नम पाणी (वि २, २०; नमि १३) ।

५ गुण (पत्र १४ ११) । ६ धारि
मिलकसी (पत्र १३ पठम) । ७ धारि
विम (पाठ) । ८ मय धारि नम पाणी (पत्र
१ १ गुप १) । ९ पाठ, पाठ (वि १३)

१ गुण धारक नम मयिधाम लीरस
नम-विरोध (पठम) । ११ नम-विरोध (कण्य
२ ११) । १२ नम-धारि-प्रवृत्ति प्रसार

विरोध (विम) । ११ मापुर्न धारि रमयता
पवाही (सम ११ नम २८) । नाम न
[नामन] नम-विरोध (सम १७) । म

वि [म] रस नम धारक (गुप २११) ।

'मिह वि [मेविम] रमयानी नीलों का
मेल-मेल करणेवाला (पठम ७१ १२) ।

'मिह वि [म] रस-नम (मम ठा ५
१—पत्र १११) । 'वर्दे स्त्री [वरी] रसोई
(गुप ११) । ठा, ठा वि [म]

रमयता (वि २ १३३; मुद्र १ १) ।

'विम पुं [विम] मय की हुकान (पत्र
११२) ।

रस पुं न [रस] निव्यम मित्रो धार (वसि
१ १३) ।

रसन न [रसन] विज्ञा नीम (पत्र १
१—पत्र २१) धारा) ।

रसन्य स्त्री [रसना] १ मेवता कांवी (पाठ
गठम ११ १८) । २ विज्ञा, नीम (पाठ) ।

'छ वि [म] रमयता (गुप २१६) ।

रसह न [र] मुनी-मूल नम का मूल धार
(वि ७ २) ।

रसा स्त्री [रसा] मुनी की नयी (वि १ १७
१८ गुप १) ।

रसाव पुं [र] रसायुष प्रवर, नीम (वि
७ २ पाठ) ।

रसाय पुं [र] नम स्त्री (वि ७ २) ।

रसाय न [रसायन] वैद्यक-प्रवृत्ति धारक
विरोध (विम १ ७ प्राप् १६२ मयि) ।

रसाव पुं [रसाव] धारक-नम धार का पाठ
(सम्य १७४) ।

रसाव्य स्त्री [र] रसाव्य मानिवा मय
विरोध (वि ७ २, पाठ) ।

रसाव्य पुं [र] रसाव्य मानिवा धारक-
धारक-विरोध—नीम वी एक पत्र
मय, धारा धारक वही नीम निरवा तथा
नम पत्र नीमी या नम से नमता पाठ (का
१ १—पत्र ११८ गुप २ टी पत्र
१३३) ।

रसि स्त्री रसिज (पठ २६) ।

रसिज वि [रसिज] १ रमय रसिज,
नीमी (वि १ ३) । २ रस-नम, रमयता
(गुप १६ २१०; पत्र ११ ४६) ।

राह बेहो राधि (हे २ ८८) काय १०८ महा पद) । २ बमरेज भी एक राह महीरी (छ ५ १—यत्र १ २) । ३ द्वापरेज क सोम सोरपास भी एक पन्थनी (छ ४ १—यत्र २ ४) । मयत न [मय] राधि-भोजन राध में जाना (गुण ४८२) । मोक्षय न [मोक्षय] मही धर्म (सम १६ कव) । बेहो राई = राधि ।

राह बी [राजि] कीक ज्योरी (पास धीप) । २ रैमा लकीर (कम १ १६ गुण ११७) । ३ राई, राज-दीप एक प्रकार का मसाला (हे १, ८८) ।

राह बि [रागिन्] राग-पुष्क, राजबाबा (बसा १) । बी जी (महा) ।

राह बि [राजिन्] होमनेपासा (निष् १९) । राह बेहो राय = राजन् (हे २ १४५ ३ १२) २१ कुमा) ।

राहस बि [राजित] शोभि (हे १ २९ कुमा ९ ९१) ।

राहस बि [राजिक] राधि-सम्पत्नी (सत २६ ४६ धीप राधि) ।

राहसा बी [राजिक] राई का नाम, गेसाएईम कम्मे बमबेहो राहसा पचाई (पा १०१ म) । बेहो राहसा ।

राईर पुं [राजेन्] बड़ा राजा (कुमा) ।

राईरिन् पुं [राजिन्वि] राध-निक म्हापोपन (मग म्हापा कम्प पद ७८) सम ११) ।

राहस बि [राजस्य] राज-सम्पत्नी (हे २ १४८ कुमा) ।

राहस बी [राजिस] राई राज-बराहो (गुण ४२) ।

राहसिन् बि [राजिक] १ बारिबनसा, बंयपी (पेना १२, १) । २ पर्यय से म्हाउ, सागुर-प्राप्ति भी बरत्सा से बड़ा (सम १७, २८ कम्प) ।

राहसिन् बि [राजकस्य] राजा के समान बैमरसता, धीमत्ता (गुण १ २ ३ ३) ।

राहस्य पुं [रास्य] राजवंशीय राधि राहस्य (बम १११) कम्प धीप मय) ।

राहस्यपा संज्ञ. कीकर (मंथिप्यनक धविम राधिनिकता बैमवरी बुद्धि विपयक)

राहस बि [रागिन्] राग-पुष्क (बेनेज २७८) ।

राई बी [राजी] बेहो राह = राधि (पदक गुण १४४ मायु १२ पत्र २३२) ।

राई बी [राजि] बेहो राह = राधि (पास लाया २—पत्र १३ ; धीप गुण ४६१ कव) । निषस न [दियस] राधिपिय म्हागिन् (गुण १२७) ।

राईमई बी [राजोमता] राजा समवेन की पुत्री बीर समबन्ध मेमिना को पत्नी (पदि) । राईम न [राजीय] कमल पत्र (पास हे १ ८८) ।

राईसर पुं [राजेसर] १ राजाओं के नातिक म्हापाव । २ पुत्रराज (धीप) क्मा कम्प) ।

रावच पुं [राजपुत्र] राजपुत्र राधिय (प्रक १) ।

रावळ पुं [राजकुल] १ राजाओं का पुत्र राज-समूह (कुमा हे १ २९७ प्रक) । २ राजा का बंध (पद) । ३ राज-मूह बरत्सा, 'ए' निषस राजसल हूलेख पणानी कीरि बाल बमहागि एवं विरविर्बलि' (मोह ११) । बेहो राजोज ।

रावळिय बि [राजकुलिक] राजकुल-सम्पत्नी (गुण २ ३१) ।

रावळ बेहो राहस्य (प्रक १२) ।

रावसि पुं [राजवि] १ केह राजा २ म्हावि-पुत्र राजा संसारमा नृपति (धवि १६ विज ६८) मोह १) ।

राजो म [राजी] राध में (लाया १ १—पत्र ११ गुण ४६० कम्प) ।

राजोळ बेहो राहस्य

‘हो किं गणें सयलेहि
विमसिय किं नाथिउतेहि ।
किं नई राधोके एव
मधुपति म्हाकम्प ॥
(धमि १४४) ।

राग बेहो राय = राग (कम्प गुण १४१) । राधि बेहो राह = रागिन् (पदम ११७ ४६) ।

रावळ बेहो राहस्य । राजिणी बी [राजिणी] तीता बालपी (पदम ४९ २७) ।

राह } [है ३] बेहो राय = राजन् (हे राध } ११२ ३ ४३ प्रक) ।

राग बेहो राय = राजन् (हे ४ २९७ नि १६८) ।

राजस बि [राजस] राधो-गुण प्रभाव ‘राज राधितस्य गुरुत्व’ (गुण ४२८) ।

राधि बी [राधि] गुण विस्वाह (गुण २ १४) ।

राधि बी [हे राधि] संगम लहाई (हे ७ ४) ।

राडा बी [राडा] १ विमूढा (बमबं १ १८ कम्प) । २ ममता (बमबा १८) । ३ बंयस का एक प्रसव । ४ बंयस केह की एक नवरी (कम्प) । इच बि [वन्] म्हाय वाला ‘बंयसपहो बमो पकासास संपद’ (बमबा १८) । मयि पुं [मयि] काच-महि (सत २ ४२) ।

राज सक [वि + नम्] विरोध ममता । राख (१) (माला १४६) ।

राज पुं [राजन्] राजा राजा (बंयसि ११४) ।

राजय पुं [राजक] १ राजा राजा (ही १३ सि १२३ १२३) । २ सीय राजा (सि १६९ १ ४) ।

रायिमा } बी [राजिक, ही] राजी राज
राजी } पत्नी (कुमा ३) मावक ११ टी
सि १२३ १६७) ।

राम सक [रमय्] रमय कथना । ३ रामेयक (सत ८२) ।

राम पुं [राम] १ बी रामन राजा बरत्सा का बड़ा पुत्र (म १३ जय १७३ कुमा) । २ बरत्सापन (कुमा १ ११) । ३ धविन परिवाक-विरोध (धीप) । ४ बमरेज बतम्य बागुर का बड़ा माई (पास) । २ बि रमने बाला (पद २७२) । कम्प पुं [राम] राजा योधिक का एक पुत्र (पत्र) । कम्प बी [रम्प] राजा योधिक की एक पत्नी (धीप १२) । गारि पुं [गारि] परव-विरोध (पदम ४ १९) । गुण पुं [गुम] एक राजवि (गुण १ ३ ४ २) । लेख पुं [लेख] दीपकपत्र (पदम ४२, १६) । गुण पुं [गुम] एक देव मति (मनु २) । गुते बी [गुता] मनोना नवरी (ही ११) । रजिमा का [रजिमा]

ईशानेश्वर की एक पत्थरमी (छा. ४-५ म.
४३६ इ.स.।

रामनिज्ज न [रामप्पायक] रमणीयता
हीनये (वि. २८) ।

रामा जी [रामा] ? जी नदिया गाँरी (हंनु)
१. कृमा पाय बन्ना ? २. ऊन भैरव
दी) । ३. मर्ने जियेब की माया (कम)
१९६१ । ४. दैत्योब की एक प्यारली (ठा)
५—पुन ४९६१ हक) । ४. एम्-विरोध
(गिग) ।

रामायण न [रामायण] १ वाक्यविधि-
एक वाक्य न वाक्यविधि (पञ्च २ १११
महा) । २ रामायण तथा रामायण की लक्षणा
(पञ्च १ २, १६) ।

रामिअ वि [रमित] रमण वरुण लुभा (म
२६) वरुण व. १६)।

रामेश्वर पु. [रामेश्वर] इति ए. मा. का. ए.
प्रित्त-दीर्घं (सम्मत ८४) ।

राय बक [राज] समवता, सोमना : एव
(ह ४ १) । वह राय समवता
(बल) ।

राय देवी रा = ₹ । चपड (आक ११) ।

राय नु [रा] १ ग्रेम प्रीति (आयु १०)
 २ बलर, डी. 'न' केन्द्रा (केन्द्र
 २०) १ रीका, रंज ४ बर्षा।
 मनुष्य १ राजा मरुति ३ बन्ध, बलि
 ४ बान बर्ष १ बान रंजनी बन्ध
 १ बन्धु बलि रंज (के १०)।

[illegible]

‘किन्, का वि [‘कीय] राज-संयोगी (ह
२ १४८-कुमा पत्र)। गिह न [‘गृह]
मग्न कैत की प्राचीन राजवाणी को धारणकर
‘राजकेर’ नाम से प्रसिद्ध है (हा १—पत्र
४७७; उपा. श्रुत)। ‘गिह की [‘गृही]
नहीं मर्ने (ही १)। ‘नैपय पु [‘नैपयक]
कुल-विशेष प्रथम कर्णक-कुल (भा १२)।
अग्न पु [‘अग्नि] राजा का वरुण्य (गाढ—
उत्तर ४२)। घापी की [‘घापी] राज
कमल राजा का मुख्य कवर, नदी राजा
छाता हो (गाढ—कैत ११२)। पत्नी की
[‘पत्नी] राजी (मुर १३ ३-कुपा १७३)।
पसेयीय नि [‘पसेयीय] एक कैत आकर
गन्ध (पय)। पड़ पु [‘पड़] राज-मार्ग
(नष्ट गाढ—कैत ११)। ‘पिंड पु
[‘पिंड] राजा के घर की मिठा—साधार
(धय ११)। ‘पुल केरी कल (नउड)

पुर न [पुर] गण-विरोध (पद्य १) ।
 पुरिष्ठ पुं [पुरिष्ठ] राजा का भाषणी
 राज-मन्त्री (पद्य २ ४) । मर्या पुं
 [मार्ग] राजपथ, बड़का (धीन महा) ।
 मास पुं [मास] वायु विरोध बरपटी
 (या १० वीं पद्य ४३) । राय पुं [राज]
 राजा की का राजा, राजस्वर (मुद्रा १ ७) ।
 रिसि देखो रायसि (शब्दा १ ३—पद्य
 १११) । हय ७२२ टी मुद्रा छल) । रुक्म
 पुं [रुक्म] रुक्म-विरोध (धीन) । रुक्मिणी की
 [रुक्मिणी] राज-नैत्र (महि १११; मद्र) ।
 रुक्मिण पुं [रुक्मिण] भाष्टर कलश के पूर
 गण्य का नाम (पद्य १२३) । बहूय
 [बालक] राज-मन्त्री नागा-कुल (६ ९,
 १) । बली की [बली] नागा-विरोध
 (पद्य १—पद्य १६) । बाहिमा बाड़ी
 की [पाटिका 'पाटी'] अनुपम शैव-शक्त
 बरण राजा की अनुपम रोग के हार
 लपटी (मुद्रा कुम् ११२; १९ मुद्रा
 २२२) । 'सदृष्टम् पुं [शास्त्र] चन्द्र
 राजा की राजा (हय १२३) । 'सिद्धि
 पुं [सिद्धि] गण-रुद्ध (महि) । 'सिरी की
 [सिरी] राज-मन्त्री (पै १ १३) । मुद्रा
 पुं [सिद्ध] राज-कुल (पद्य ३० ७२२ टी)
 रुक्म पुं [रुक्म] हयम लोहा (हय ७२२

(१०)। सुअ दुं [सुअ] यञ-कितेयः शिखरे-
 ह्वागयेहे रावपुर याहमेइवमुनेहे (वज्र ११
 ४२)। सेअ दुं [सेअ] यञ-कितेयः
 (पिप)। सेहूर दुं [शेहूर] १ महादेव
 शिव १ १ एक राजा (सुपा ३२३)। २ एक
 कवि कर्पूरमंथरी का कर्ता (वज्र)। ईस
 दुंके [ईस] १ जयम ईस फकी। २ मठ
 राजा (सुर १२ १४ वा १२४ मठ राजा
 ११६ रंदा म्मि)। ३ 'सी' (सुपा ३३४
 गट—रंदा १३)। हूर न [हूर] राजा
 का महाव (वज्र २ २६, हे २, १४४)।
 हाणी बैहो यामेअ (सन म यञ २
 न)। हियअ हियअ दुं [अधियअ]
 राजाओं का राजा कनकरी राजा (सुपा
 सुपा १ २)। हिअ दुं [अधिप] बड़ी धर्म
 (सुपा १ ३)।

राज्य ऐसी राव = राव (सि. १. ५२) ।

सूत्र ५ [वि] ज्यम. श्रीमैत्रायणी (वि ५ ५) ।

ਸਭ ੪ [੪੪] ਕਹਿ ਕੇ ਪਾਸਾ ਪਾਸਾ (੨੦ ੭) ।
ਸਭ ੪ [੪੪] ਕਹਿ ਕੇ ਪਾਸਾ ਪਾਸਾ (੨੦ ੭) ।

ଏକ ସ୍ତୁ [ସ୍ତୁ] ପାରି ଏକ (ସ୍ତୁ) ।

एवम् एवम् एवम् = एवम् ।

सर्वधुम { पुन [६] १ वैतथ या वैत क

पश्यु २ पद (पञ्च ३७ १४) । २ पु

1954 (40 18) 1

पर्यस ३ [पर्यास] पर्य-पर्या, पर्य पर्य

१३

ययीस वि [यज्जासिन्] यववमावत्ता

खर का धर्म (शास्त्र) ।

यथागच्छ स्त्री [दे] कालिका बौद्ध (दे ७ ६)।

सप्तमः ५ [पञ्चमः] स्वर्गः ५

विशेष (अ २ व-पत्र ७५) :

राधायण केही राय = राजन, (हे ३ २१) पद)।

राधायण { पुन [राध] क] राधय-विशेष
राधायण { एक प्रकार की मृग (पुन २ २
राधय ११ ठा = यन ४ ३) विद
११२) कथा १४)।

राधय की [रे] दिव्यु मातकीनी (हे ७ १)।

राधय स [रे] बाई करता। यदि राधेविधि (विदे २४६ टी)।

राधय केही रंज = रज्य। राधे (हे ४ ४६)।
रंज राधिर् (कुमा)।

राधय स [राधय] पुनरना प्राप्ताय करता।
रंज राधे (कीय)।

राधय पु [राध] १ रौता कलकम (पाय)।
२ गुना, मायाज (गुना १४८ गुमा)।

राधय पु [राधय] १ एक स्वामन-प्रतिष्ठ
मंका-पति (वि ११)। २ पुन-विशेष
(पुन्य १—पुन १२)।

राधिय नि [रिध] रंजा गुमा (हे ७ २)।

राधिय नि [रे] भावना (हे ७ ३)।

राधय पु [राधय] क] एक प्रकार का मृग
राधय { निर्मल एक वृक्ष का हाथ पत्रक
नाथे-नाथे धीर मल करते-करते संसार
फिरा होता है (हे २ १३)। पाय कथा
१२४ समस्त १४१; बर्निवि ५१)।

राधय केही राधय (गुन २, १ २)।

राधय केही राधय (गुन १ ४६ गुना २;
४४१)।

राधय पु [राधय] रंज कथा (पाय
मया रंज)। धी ही (काल)।

राधय नि [राधय] न [राधय] क] राधय-विशेष
विशेष (पाय १२)।

राधय नि [राधय] न [राधय] क] राधय-विशेष
विशेष (पाय १२)।

राधय केही राधय (विधि १७)।

राधय पु [राधय] १ राधय कथ (पाय
४ का धीन गुन २ ३ गुमा)। २
कथ-विशेष-प्रतिष्ठ मय राधय बाधय राधय
(विधाय १)। ३ राधय-विशेष (ठा ४
१)।

राधय पु [राधय] १ राधय मात। २ राधय
मात (हे १ ११)। ३ एक कैल भावार्थ
(गुन २८२, गुन २ १२)।

राधय पु [रे] १ राधय विध। २ वि
विधाय। ३ राधय। ४ राधय। ५ राधय
संकेत कथमाता (हे ७ ११)। ६ राधय,
गुनर (पाय)।

राधय पु [राधय] १ राधय में उत्पन्न
राधय { (गुन २)। २ राधय-विशेष (हे
१२ २२)। ३ राधय (गुन)।

राधय की [राधय] १ राधय की एक प्रवाल
कोपी कीपय की पत्नी (कथा १२२)
विध)। २ राधय में राधय की पुत्री
(गुन २ ११)। ३ राधय-विशेष। ४ राधय
का राधय कथमाता माता (गुन ४२)।
मय पु [मय] राधय पर राधय
किया काय वह स्वान (गुना २१६)। "वेह
पु [वेह] एक राधय की कथ-विशेष विधय
नारायण गुनरी गुनरी की काय राधय कीपी
माती है (गुन ६१३ गुना २१२)।

राधय { की [राधय] ऊपर केही (वा
राधय) { न, हे ४ ४४२) माय ४२)।

राधय पु [राधय] १ राधय-विशेष (ठा २, १—गुन
४८ पाय)। २ राधय गुन-विशेष (गुन
२)। ३ राधय की राधय राधय के एक
कैल भावार्थ (गुन ११५ ११७)।

राधय न [राधय] निर्मल गुन धीर राधय
का राधय ही वह राधय (कथ १)।

राधय पु [राधय] राधय-गुन कथ (गुन ६;
१२ टी)।

राधय [रे] राधय-गुन कथ (गुन ६;
१२ टी)।

राधय [रा] राधय करता। कथ राधय
(विदे १११६)।

राधय स [रे] राधय करता। राधय राधय
विध (गुन २ २ २ गुना ४४५, गुन
२४ ४)। राधय राधय (गुन २८ ४)।

राधय स [प्र+विश] राधय करता राधय।
राधय (हे ४ १३१ गुना)।

राधय न [राधय] १ राधय पुत्री की राधय
मात (गुन)। २ राधय (गुन ८ ७)।

राधय नि [रे] गुन, राधय गुना (गुन)।

राधय केही राधय (हे १ १४१) गुना। पय
१४१)।

राधय नि [राधय] १ राधय कीपी (गुना
१४१)। २ राधय-विशेष राधय राधय-विशेष
गुन (गुन २००)। गुन पु [गुन] नय
विशेष (विदे २२१ २६ न)। राधय राधय।
राधय पु [राधय] राधय कीपी राधय (गुन २
१६ गुना)। राधय पु [मयन] राधय
राधय का एक राधय (गुन ३ २११)।

राधय की [राधय] राधय का राधय राधय
राधय राधय। राधय पु [वे] राधय राधय
राधय (गुना १ ३) कथ)।

राधय न [राधय] राधय राधय राधय (गुन
२२, १२)।

राधय नि [राधय] राधय राधय राधय
राधय राधय (गुन २२, १२)।

राधय केही राधय। राधय, राधय (हे ४ २१६
टी)। राधय (गुन)। राधय, राधय (गुन
१४६)।

राधय न [राधय] राधय राधय (गुन २)।
राधय की [रे] राधय-विशेष राधय-विशेष,
गुन राधय में राधय (हे २ ४४ २ न)।
राधय न [रे] राधय (हे ७ १)।
राधय न [राधय] १ राधय राधय की
राधय राधय के राधय राधय। २ राधय-विशेष का
एक राधय (गुना २४)।

राधय नि [राधय] राधय-विशेष (गुन)।

राधय (गुन) राधय राधय = राधय (गुन)।

राधय की [रे] राधय, राधय (हे ७ ७)
गुन २ २२ विदे १४१६ टी) राधय राधय
४४५ राधय १४८५ बर्निवि १७) राधय)।

राधय की [रे] राधय राधय, राधय की राधय का
कथ-गुन राधय-विशेष (हे ७ २)।

राधय नि [रे] राधय राधय (हे ७ १)।

राधय केही राधय = राधय (गुना राधय राधय
न ११५ गुन ४२२ राधय १६)।

राधय नि [रे] राधय राधय राधय (हे ७
७)।

राधय राधय [राधय] राधय। राधय
राधय राधय राधय राधय राधय राधय
राधय राधय (गुन १७)।

रिक्तवि [रि] १ बुद्धि दृष्टा १२ नुं नव-
परिणाम दृष्टा (रि १)।

रिक्तवुं [रिक्त] १ मातृ, स्थापन प्राप्ति-
विशेष (रि १, १२)। २ न नखन (पाप)
मुर १ २१। ११२)। यह पुं [रिक्त]
जगत्ता (दुर ११ १७१)। राय पुं
[रिक्त] गलरन्ध्र का एक घना (पञ्च
म २१४)।

रिक्तलन न [रि] १ वपस्य, अधिष्ठा १
कल्प (रि १ १४)।

रिक्ता वैको रेखा = रेखा (घोष १७६)।
रिक्ता एक [रिक्त] १ रेखा कोरेकोरे
रिक्ता १ कोर बनीन से रक्त काले हुए कसना।
२ प्रवेश करना। रिक्ता रिक्ता (रि ४ २२६,
६)।

रिक्ता पुं [रि] ज्ञेय (रि १ २)।

रिक्त दीन वैको रिट = रिट (वि २१,
११५)। को वा (गठ—उप ३०)।

रिक्त नि [रि] दृष्ट दृष्टा (रि १ १)।

रिक्त वैको रिक्त = रिक्त (रि १ १४,
२ ११; पाप)। रिक्त पुं [रिक्त]
आत्मनः, धम ना एक वेतापति (वि ४
१५) २३)।

रिक्तभक्त पुं [रि] भक्त, दीन (रि १ ७)।

रिक्त वैको रिट = रिट (अ)।

रिक्त वैको रिट = रिट (विने ७७५)।

रिक्त वैको रिट = रिट। रिक्त (पाप)।

रिक्त वैको रिट = रिट (रि १ १४)। रिक्त
१७) दुना)।

रिक्त एक [रिक्त] १ वृत्ता। २ दीनता
गुणि होता। रिक्त (अ)।

रिक्त पुं [रि] अरिष्ट, १ अरिष्ट, बुद्धि (वह)
नि ११२)। २ अरिष्ट-विशेष (पह, ७ १
१)। ३ वरन कीमा (रि १ १ लागा १
१—पञ्च ११, १२; पाप)। निमित्त पुं
[रिक्त] वारिधेय विनयेव (वि १४२)।

रिक्त पुं [रि] १ वेन-रीटन रिक्तभावक
विमान ना निशानी देन (लागा १
—पञ्च १५१)। २ वेताय वीर अ-
जयन नागर हतो के भीषण (छ ४
१—पञ्च १६)। ३ एक दण्ड कोट, विनयो

भीषण्य वे माप ना (वह १ ४—पञ्च
७२)। ४ पक्षि-विशेष (पञ्च ७ १७)।
५ न रण-विशेष (विशेष ११२, वीप
लागा १ १ टी)। ६ एक वेन-विमान (घम
१२)। ७ गुण फल-विशेष टीठा (छ ३ ४
४) बुद्ध १४ ४)। पुरी की [पुरी]
कक्षावटी-विनय की राजधानी (छ ३ १—
पञ्च ३ १६)। मणि पुं [मणि] दृष्टय
रण-विशेष (मि १ १२)।

रिक्ता की [रिक्ता] १ यक्षाकाल विनय की
राजधानी (छ २ १—पञ्च ८ ३७)। २
वाक्की मरक-भूमि (छ ७—पञ्च १५०)।
३ यक्षिण वाक (पञ्च)।

रिक्ता न [रिक्ता] १ एक वेन-विमान
(घम १४)। २ लोकाधिक वेनों का एक
विमान (पञ्च २१७)।

रिक्ति की [रिक्ति] १ वृद्ध, लम्बा (रि १
१)। २ अगुण। ३ पुं, पञ्च, विवर
(अंति ३)।

रिक्त एक [मण्ड] विनियुक्त करना। रिक्त
(पह)।

रिक्त न [रिक्त] १ करना या करे लम्बा
विना दृष्टय न (ग १११ दुना, श्रुत ७७)।
२ एक वाक्की। ३ बुद्धि विना। ४ बुद्धि विना।
५ वाक्पदक करे करे। ६ करे (रि १
१४१)। वैको कल्प = कल्प।

रिक्ति नि [रिक्ति] करणद्वारा, वाक्पदकी
(पञ्च ४११)।

रिक्ति य [रिक्ति] विमान विना (मि १ १७)।

रिक्ति नि [रिक्ति] १ वाक्की बुद्धि (वि १
११) ना ४६; यमी १ वीप १११)।

२ न विरेर ययान (छ २८, ११)।

रिक्ति नि [रिक्ति] १ अरिष्ट अक्षयता हुआ
(रि १ ८)।

रिक्ति न [रिक्ति] न, अक्ष (छ १२,
पाप ४६ बुद्ध ४ १ महा)।

रिक्ति नि [रिक्ति] अक्षि-अक्षय (लागा १
१) अक्ष वीप)।

रिक्ति नि [रिक्ति] एक पक्षा (रि १ १)।

रिक्ति पुं की [रिक्ति] लघु, अरिष्ट (रि १ १)।

रिक्ति की [रिक्ति] १ अंति अरिष्ट विना
(पाप विना २, १ दुना मुर २ १२५)

प्राप्त १२ १२)। २ बुद्धि। ३ वेन-विशेष।
४ अक्षि-विशेष (रि १ १२५ २ ४१)
पञ्चा ८)। ५ अक्ष-विशेष (विन)। म, ७
वि [मा] अगुण, अक्षि-अक्षय (घोष
१५४) पञ्च २, ११; मुर २ १५) मुना
२२३)। सुंदरी की [सुन्दरी] एक
वक्षि-अक्षय (ज ७२८ टी)।

रिक्त वैको रिक्त (कल्प)।

रिक्त न [रिक्ति] छ वीठ (रि १ १)।

रिक्ति न [रिक्ति] १ एक प्रकार का मातृ
(छ ४ ४—पञ्च २८२)। २ स्वर का
वैषम्य। ३ वि. स्वर वैषम्य से बुद्ध (पञ्च-
लागा १ १—पञ्च ११)।

रिक्ति नि [रिक्ति] घने की यक्षयता (रि १
७ ४६)।

रिक्ता की [रिक्ता] पञ्च की वाक्,
विनियुक्त (मण्ड ७२)।

रिक्ति नि [रिक्ति] वीन (रि १ ७)।

रिक्त एक [रिक्ति] दीनता। वक्ष, रिक्ति (अ)।

रिक्त वैको रिक्त = रिक्त (पञ्च ११ ४१,
४४ २; छ ११५) ज ११२)।

रिक्त पुं [रिक्ति] १ स्वर-विशेष (अ-
रिक्ति ७—पञ्च १६१)। २ अक्षि-विशेष का
अक्षयता अक्षय (घम २१, बुद्ध १
११)। ३ अक्षय अक्षि-विशेष के अक्षय का
वक्षयकार वेता-अक्षय रिक्ति व होत वृत्तों
(वीर ४६)। वैको कसस (वीन १६
१४१; छम १४६; कल्प २ ११) दुना
२९)।

रिक्त पुं [रिक्ति] वेन अक्षय (दुना)।

रिक्ति पुं [रिक्ति] बुद्धि अक्षय वक्षय (वीन
दुना ११; अक्षि १ १; ज ७९७
टी)। पाप पुं [पाप] बुद्धि-अक्षय (ज
४४१)।

रिक्ति एक [म + वि] अक्षय करना, वेताय।
रिक्ति (वह)।

रिक्ति १ अक्ष [रिक्ति] वाता, कसना। वीर,
वीन १ वेता, वेन वीरता (पाप) दुना १
१ २, २, ज २४ ७)। दुना, वेताय
(पाप)। वक्ष वीरय वीरताय (पाप)।
रिक्ति की [रिक्ति] वक्ष, वक्ष वक्षिता व वक्ष
विनियुक्त अक्षय नागरी (पञ्च १२)
वक्ष)।

रिड एक [मण्डय] भर्तृकृप करण। रीडह
(रि ४ ११३)।

रिडन न [मण्डन] धनकरण (कुमा)।

रिडन [रि] धनकरण धनावर (रि ७
५)। री. डा (पाय बन्म ११ टी. ५
२, ५१ ११३)।

रिड नि [रिण] १ लण्डि लुण। २ रीडिड
(ल २)।

रिड एक [रिड] रीडका बमकना रीडना।
रिड (रि ४ १)।

रिडिड नि [रिडिड] रीडिड (कुमा)।

रीडी री [रीडी] बगु-विरोध गीतक (कुम
११ कुमा १५२)।

रुखी [रु] रोप बीमारो 'रुख (१ क)
रुखको (रु ५४)।

रुख [रु] रोना। रुख (वः १६
११ रुख १५ म्हा)। रुखी रोखी (रि १
१५)। रुख रुख, रुख, रुखमाण (गा
२११ १३६, ४ रु २, १६ ११२
४ १२१)। रुख रोखु (कुमा १५)
१५)। रुख रोखु (माक १५)। रुख रोखु
(रि ४ २२२; रि ११ १२२)। रुखी-
रुखी (गा), रुखी (रु ५४)।

रुख न [रु] रुख धावाव (रि १ २८
रुमा १ ११ रु ७१ टी)।

रुख रीडी रुख = रु (रु)।

रुख रीडी रुख = (रि) (री)।

रुखी री [रुखी] बगु-विरोध (रुखी
५५)।

रुखी रीडी रुखी (रु)।

रुखी रु [रुखी] १ रुखी प्रमा (पह
१ ४-पम ७७; री)। २ वरु-विरोध
गुणको रीडी रुखी रुखी (री)। ३
री-विरोध (री)। ४ एक रुख (रु
१६)। ५ एक विमानास-रुख-विमान
(री ११२)। ६ रुखी का एक
पायमा विमान (री ११३)। ७ रुख-
रिड (रु ११ ७६ रु ११ ७६)।
८ रुख वरु ना रुखी रु (री)। ९
रुख वरु ना रुखी रु (रु)। १० रुख
न [रु] रुखी रुखी रु (रु)।

(रु २ १)। रुखी रु [रु] १ री
रिड (रु १६)। २ वरु-विरोध (पह
२ ४-पम ११)। ३ रुख-रिड (रु ४
११)।

रुखी रु [रु] रुखी रु (री)। रुखी रु
(री)। रुखी रु (री)। रुखी रु (री)।

रुखी रु [रु] रुखी रु (री)। रुखी रु
(री)। रुखी रु (री)। रुखी रु (री)।

रुखी रु [रु] रुखी रु (री)। रुखी रु
(री)। रुखी रु (री)। रुखी रु (री)।

रुखी रु [रु] रुखी रु (री)। रुखी रु
(री)। रुखी रु (री)। रुखी रु (री)।

रुखी रु [रु] रुखी रु (री)। रुखी रु
(री)। रुखी रु (री)। रुखी रु (री)।

रुखी रु [रु] रुखी रु (री)। रुखी रु
(री)। रुखी रु (री)। रुखी रु (री)।

रुखी रु [रु] रुखी रु (री)। रुखी रु
(री)। रुखी रु (री)। रुखी रु (री)।

रुखी रु [रु] रुखी रु (री)। रुखी रु
(री)। रुखी रु (री)। रुखी रु (री)।

रुखी रु [रु] रुखी रु (री)। रुखी रु
(री)। रुखी रु (री)। रुखी रु (री)।

रुखी रु [रु] रुखी रु (री)। रुखी रु
(री)। रुखी रु (री)। रुखी रु (री)।

रुखी रु [रु] रुखी रु (री)। रुखी रु
(री)। रुखी रु (री)। रुखी रु (री)।

रुखी रु [रु] रुखी रु (री)। रुखी रु
(री)। रुखी रु (री)। रुखी रु (री)।

रुखी रु [रु] रुखी रु (री)। रुखी रु
(री)। रुखी रु (री)। रुखी रु (री)।

रुखी रु [रु] रुखी रु (री)। रुखी रु
(री)। रुखी रु (री)। रुखी रु (री)।

रुखी रु [रु] रुखी रु (री)। रुखी रु
(री)। रुखी रु (री)। रुखी रु (री)।

रुखी रु [रु] रुखी रु (री)। रुखी रु
(री)। रुखी रु (री)। रुखी रु (री)।

रुखी रु [रु] रुखी रु (री)। रुखी रु
(री)। रुखी रु (री)। रुखी रु (री)।

रुखी रु [रु] रुखी रु (री)। रुखी रु
(री)। रुखी रु (री)। रुखी रु (री)।

रुखी रु [रु] रुखी रु (री)। रुखी रु
(री)। रुखी रु (री)। रुखी रु (री)।

रुखी रु [रु] रुखी रु (री)। रुखी रु
(री)। रुखी रु (री)। रुखी रु (री)।

रुखी रु [रु] रुखी रु (री)। रुखी रु
(री)। रुखी रु (री)। रुखी रु (री)।

रुखी रु [रु] रुखी रु (री)। रुखी रु
(री)। रुखी रु (री)। रुखी रु (री)।

रुखी रु [रु] रुखी रु (री)। रुखी रु
(री)। रुखी रु (री)। रुखी रु (री)।

रुखी रु [रु] रुखी रु (री)। रुखी रु
(री)। रुखी रु (री)। रुखी रु (री)।

रुखी रु [रु] रुखी रु (री)। रुखी रु
(री)। रुखी रु (री)। रुखी रु (री)।

रुखी रु [रु] रुखी रु (री)। रुखी रु
(री)। रुखी रु (री)। रुखी रु (री)।

रुखी रु [रु] रुखी रु (री)। रुखी रु
(री)। रुखी रु (री)। रुखी रु (री)।

रोहिणी की [रोहिणी] १ मन्त्र-विशेष (सप्त
१)। २ ब्रह्म की पत्नी (या १६)। ३
शोष-विशेष (सप्त १४ १)। ४
२२१)। ५ अथर्व में भारुहर्ष में तीर्थकर
होनेवाली एक भाविका (सप्त १५४)। ६

मन्त्रों ब्रह्मदेव का माता का नाम (सम १३२)। १ एक बिद्या देवी (संति ३)। ७ शम्भु की एक पत्नी (ठा ८—पृ ४२६)। ८ मत्स्य नामक हिन्दुदेव की एक पत्नी (ठा ४ १—पृ २४)।

ह सङ्केत के एक भोक्तृत्व की पदरतो (छ
४ १—पत्र २०४) । १ सप-रिपोप (पत्र
२०१ पत्रा ११, २१) । ११ गो मैया
(पत्र) । रमय पुं [रमय] जन्मा
(पत्र) । रोहीङ्ग न [रोहीङ्ग] मपर
विरोप (पत्रा ६८) ।

॥ ह्यसि विरिपाहसदमहण्णशमि रपाराइमरसंक्रमसो
तेत्तीसइमो वरंमो समत्तो ॥

ब

क पुं [ल] मूर्धस्वान्ध्रिय दन्तस्य व्यञ्जन
वर्ण-विशेष (वायु) ।

४३५ प. ले प्रत्यक्ष ठीक (मवि) ।

ਲਗੁ ਦੇਖੀ ਭਰੁ ॥ ੧੫ ॥

अथ वि [दे लगित] १ परिहित पणमा
हमा । २ अथ मे विमल (दे ७ १५ वि
२२१ अवि) ।

अहमह पृ [३] कृपम विल (३७ १६) ।

सहभा की [सविन्न लता] रही लम्बा
(गान—छला ७ यद्व स्र ७६५ टी) ।

सङ्गा } श्री [५] सता बत्ती (पद्) ॥
सङ्गी } ७ (६) :

अत्र वृ [अक्षुध] वृत्त-विशेषः यद्वत्तः यः
यस्य (यस्य वि ११८) ।

ਲੁਠਾਇਆਂ } ਪ੍ਰੰ [ਲੁਠਾਇਆਂ] ਨਾਮੀ ਜਾਨੀ ਭੰਗਾ ਜਾਣਾ,
 ਲੁਠਾਇਆਂ } ਘਟਿ (ਫੇ ੭ ੧੨ ਨੁਰ ੨ ਘ ਸੀਪ)।

सुखस्य } पुं [सङ्कुता] । अनामं देव-विरोध
सुखस्य } (पत्र २४४-२४५) । २ पुंस्त्री सङ्कुत
देव का निरासी मनुष्य । श्री संस्था (शाखा)
१ १-१४ २४-२५ का हक) ।

संज्ञा श्री [छात्र] नमो-विशेष विद्वत्प्राप्त की
 छात्राली (मे १ ११ पत्र ७१ १८)
 नमो। नमो [छात्र] संज्ञा-नमाली (नमो
 ११)। सुंदरी श्री [सुंदरी] इन्द्रप्राप्त की
 एक पत्र (पत्र ११, २१)। श्री

पु. [शोक] राजस बंध का एक राजा
(पठम २ २६२)। हिय पुं. [धिप]
सका का राजा (अप. पु. १०२)। हियह
पुं. [धिपति] बहो धर्म (पठम ४६ १०)।

संख्या की दि० राशिया (पन्ना १३) ।

सौरा } पूँछी [छत्र] बड़े बांस के ऊपर से
 सौरा } करेवाली एक गट-बासि (छाया) ?
 १—पत्र २, पृष्ठ २ ३—पत्र १२२; श्रीप
 कप्य) । श्री छाया (पत्र १ १४) ।

लंगल न [साहज] हय चिसेमु बहिनि
संन्याय धर्मा (वर्मणि २४; वे १ १२९
पृष्ठ ५)।

संगतिं पु [साम्प्रति] वलमय वलरेव
(कमा) ।

संगति } श्री [छात्रली] बत्ती-रिपेय
संगती } शरीर तत्रा (कुमा) ।

संगिम पुंल्लो [६] १ पणामो धीरन । २
सागानन नरीनडा रिनुण्ड वणुल्लुनी सीमि
नमिदि न' (कण्ठ) ।

संगम न [अङ्गुल] पुष्प. पूष (दि १
३३६) पाप नप्य नया) ।

लौगूळि वि [म्यद्गुल्लम] पुण्यराणा, वगु
(वृमा) ।

संगोष्ठ देवो संगुल (मूख १ ८) ।

संघ सक्त [सङ्गम्, सङ्गम्] ? नांवा,
प्रतिष्ठापन करना । २ योजना नहीं करना ।
संघ संघेद (महाः बधि) । कर्त्त संधिग्रह
(द्रुमा) । बह संघत संघर्षल (मुना २०१
पदम १० २१) । संघ संघिषा, संघिऊण
(महा) । हेह संघर्ष (पि ३०१) । क.
संघिषा (वि २ ४४) संघ (द्रुमा ?
१०) ।

संपन्न न [उद्धन] १ अतिव्यय (सुर ५, १११) । २ अन्नोन्न (अ ११५ टी) ।

संयि पि [संहित] संयन करनेवाला (कण्) ।
 संयिभ पि [संहित] शिमरा संयन द्विप्य
 यवा हो भव (मड्ड) ।

संय प्र [वि] कृतम्, प्रथम (वि ७ १७) ।

संपा ली [सञ्ज्ञा] पुन रिदरठ अस्मिन्(पाठ)
 पण्ड १ १—पण्ड ११ ११ १२ ७ १०
 मया १ ४)।

संविद्ध वि [अग्रिष्ठ] वृत्तान्त, विरक्त
ले कर वाच करौ गारा (वर १) ।

संज्ञक [संज्ञ] १. ज्ञान, सोदना ।
२. कर्मोक्त करना । कर्म, लक्ष्य (वस्तु)
= १४) ।

संस्कृत [सप्तम] शीतं शीतं एक पात्रि (विना
१ १—यस्य ११)।

स्यलप्य सक [सि + लप्] विहाय करता,
 निरुक्त होकर देना। सार्यपह (प्राक् ७१)।
 स्यलपिय न [सि] १ प्रवाह। २ बलौन।
 १ स्यलपिय (सि ७ २७)।
 स्यलप्य देको स्यलप्य। सार्यपह (प्राक् ७१)।
 स्यलप्य न [स्यलप्य] लेह-पूरक पालन (पत्रम
 २१ ५८)।
 स्यलप्य देको स्यलप्य। सार्यपह (प्राक् ७१)।
 स्यलप्य सक [स्यलप्य] १ बल बलना।
 २ बारबार बोलना। ३ यष्टि बोलना।
 बलपह (सुम १ १ १२)। बल
 स्यलप्यमात्र (उत्त १४ १; पाया)।
 स्यलप्यन न [स्यलप्यन] यष्टि बलन (पण्ड
 १ १—पत्र २१)।
 स्यलप्यन } देको स्यलप्य। सार्यपह, सार्यपह
 स्यलप्य } (प्राक् ७१; सार्यपह १२)।
 स्यलप्य न [स्यलप्य] साता सार (सि ४
 १२)।
 स्यलप्य नि [सि] १ मुह, कोमल। २ शीन
 इच्छा (सि ७ २१)।
 स्यलप्य नि [स्यलप्य] सम्यक्त लोचन (पाय
 १४ ४ १)।
 स्यलप्य की [स्यलप्य] सार, मुह से निरुक्त बल
 बल (पौप या १२१ कुना गुप २२१)।
 स्यलप्य देको स्यलप्य 'कुमुनिमहर्षिभक्त
 कण्वरंस्वरंरत्नासिधंयीयो' (सुत)।
 स्यलप्य नि [स्यलप्य] लेह-पूरक पालन
 (सि)।
 स्यलप्य (पत्र) पु [साक्षि] बल-विरोध
 (सि)।
 स्यलप्य नि [स्यलप्य] सार्यपह (गुप
 २२१)।
 स्यलप्य सक [स्यलप्य] कुलवाला कहलाता।
 सार्यपह (सुम १ ७ २४)।
 स्यलप्य देको स्यलप्य (अ ३ ७)।
 स्यलप्य न [सि] सुदनी सुह विरोध बलीर,
 बल (सि ७ २१)।
 स्यलप्य पु [स्यलप्य] १ पक्षि-विरोध (विषा
 सार्यपह) १ ७—पत्र ७४ पण्ड १ १—
 पत्र ७) २ नि काटनेवाला (सि १२ २)।
 स्यलप्य नि [स्यलप्य] बल से धंसल
 (विषा १ २—पत्र २७)।

स्यलप्य } देको स्यलप्य (वीर) रथा कस्त
 स्यलप्य } यष्टि २२; यष्टि।
 स्यलप्य देको स्यलप्य (उत्त)।
 स्यलप्य (पत्र) नि [स्यलप्य] साता हुमा (सि)।
 स्यलप्य की [सि] उल्लोम (सुम १ २
 १ १८)।
 स्यलप्य नि [स्यलप्य] काटनेवाला (सि १२२)।
 स्यलप्य सक [स्यलप्य] साता। सार्यपह
 (पत्र १ १)।
 स्यलप्य न [स्यलप्य] १ सार्यपह-यष्टि सेवक
 यष्टि (कुमा)। २ मुख, नाथ (पाय)। ३
 की का नाथ। ४ नाथ हल्य धीर गीत का
 समुदाय (सि २ २२)।
 स्यलप्य पु [स्यलप्य] १ राठ मानेवाला।
 स्यलप्य २ जय शब्द बोधनेवाला सार्यपह
 (पाया १ १ टी—पत्र २ वीर पत्र ७
 ४—पत्र १२२ कम्प)।
 स्यलप्य पु [स्यलप्य] १ सार्यपह
 देव-विरोध। २ मुकी सार्यपह देव-विरोध का
 रणेवाला। स्यलप्य (वीर सार्यपह १
 १—पत्र १७ इक शीत)। देको स्यलप्य।
 स्यलप्यमात्र पु [सि] स्यलप्यमात्र सार्यपह,
 मोर (सि ७ २१)।
 स्यलप्य सक [स्यलप्य] प्रवाह करना। सार्यपह
 (सि १ २७)।
 स्यलप्य देको स्यलप्य (अ ३ १२ या १२
 पाया १ २)।
 स्यलप्य न [सि] मोर्य सेव, नाथ वस्तु की
 मोर (सि ७ २१ १ १ सति ७८ टी;
 रथा १२)।
 स्यलप्य देको स्यलप्य (सि १ २२१; कुमा)।
 स्यलप्य देको स्यलप्य (सि १७)।
 स्यलप्य देको स्यलप्य (सि)।
 स्यलप्य देको स्यलप्य (अ)।
 स्यलप्य सक [सि] लेपन करना शीपना।
 स्यलप्य (प्राक् ७१)।
 स्यलप्य नि [सि] १ शीपना हुमा (सि १२२)।
 २ न, सेप (प्राक् ७)।
 स्यलप्य पु [स्यलप्य] वं कर्ण (प्राक् ७)।
 स्यलप्य पु [सि] वल बलका (सि ७ २२)।
 स्यलप्य नि [सि] १ साक्षि। २ शीन (सि
 ७ २२)।
 स्यलप्य देको स्यलप्य (गुप १२२)।

स्यलप्य सक [सि] १ सार्यपह। २ यष्टि
 करता। ३ साक्षिपन करना। कर्म सिंगिमा
 (संशोध २१)।
 स्यलप्य न [सि] १ यष्टि, निर्यामी (सुप
 २४ पत्र)। २ सार्यपह का सेप-बारण
 साधु का घण्टे बर्न के धनुसार सेप (कुमा
 सि १२८ टी सा २ १—पत्र १ १)।
 ३ धनुवाल प्रमाण का साक्षर हेतु (सि
 १२४)। ४ वृद्धि मुख्य का घण्टाबारण
 सिंग (गुप)। ५ शब्द का बर्न-विरोध
 पुनिम भावि (कुमा पत्र)। स्यलप्य पु
 [सि] सेपवापी साधु (उत्त ४८१)।
 स्यलप्य पु [सि] बली धर्म (अ ३ १)।
 स्यलप्य नि [सि] १ सार्यपह हनु स
 बली बली वस्तु (सि १२४)। २ सिंघी
 बर्न के सेप को बारण करनेवाला साधु,
 सार्यपह (पत्र २२३ सु २, २१)। की
 या (कुप ४४४)।
 स्यलप्य नि [सि] १ धनुवाल प्रमाण
 (सि २४)। २ सिंघी बर्न के सेप को बारण
 करनेवाला साधु, सार्यपह (सि १)।
 स्यलप्य न [सि] १ कुली-स्थान कुमा का
 स्यलप्य। २ सार्यपह (अ ७ टी—पत्र
 ४१२)। देको स्यलप्य।
 स्यलप्य न [सि] १ हापी भावि की सिंग
 कुपली में वीर (पाया १ १—पत्र ३३
 अ २४ टी टी २)। २ सार्यपह-यष्टि
 पुपय पाली (पण्ड २, ५—पत्र १२१)।
 स्यलप्य की [सि] १ घन—बकय भावि की
 सिंग, सेको कुपली में सिंघी (अ ३ २३)।
 स्यलप्य देको से ७ बा।
 स्यलप्य सक [सि] १ शीपना सेप करना।
 सिंग (सि ४ १२४; प्राक् ७१)। कर्म
 सिंग (पाया)। बल-सिंघी (पाया
 १ २)। कर्म-सिंघी, सिंगमात्र
 (सोप १२४, रथा २२)।
 स्यलप्य न [सि] सेप शीपना (सि २४४)
 गुप २२२)।
 स्यलप्य नि [सि] सेप करना हुमा
 (पत्र २४)।
 स्यलप्य नि [सि] शीपना हुमा (कुमा)।

छद्म नुं [ह] बाकी छम् न विधा होनेवासा
हीनिय जीव-विशेष (जी १४) ।

छद्म न [छमन] १ छाम प्राति । २ प्रहृष्ट
स्वीकार (या १४) ।

छद्म नुं [छद्म] एक वलिक-पुत्र (गुण
११७) ।

छद्म नुं [छद्म] छद्मि छिं वरन नष्टोत्त
छद्मिं } (अण प्राप् १६ गुण) ।

छद्मिभ्य नि [छमिभ्य] ज्ञाति ज्ञातव्यया
हुया (गुण २१२) ।

छद्मिभ्यो छद्मि (अण नि) ।

छद्मिभ्यो छमिभ्य (अण नि) ।

छद्म } नि [छप्] : छाटा अन्त्य (गुण
छद्मभ्य) गुण ११ नाम ७२ मन्त्र) ।

२ ह्रस्व (न ७ १६ पाठ) । गुण-
निःकार (अण १ १—अण २ पाठ २

२—अण ११६) । ४ स्तान्दीय प्रत्यय-
वि १२ ११) । ५ योरा अन्त्य (गुण

१६४) । ६ नमोदर मुनर (वि २ १२२) ।
छो ईं यी (अण प्राप् २५ पाठ ६

२, १११) । ७ न इच्छाद्वय गुणवि
अन्त्य अन्त्य । जीव-पुत्र (वि २ १२२)

८ छीम, कसी (अ ४१ पाठ २, २—अण
११६) । ९ स्मृति-विशेष (अण) । ११

कल्लसं नामक एक कर्मिभ्य (अण १ १६)
१२ नुं एक पादाभावात् अणर (वि २ ११७)

अन्त्य नि [छमभ्य] निवृत्त अन्त्य छी कर्म
परिचित छी हो, छीम मुनि-कर्म (गुण

१२४) । कर्म न [कर्म] कर्मला
वापुन (छाम १ १—अण ६२ अण)

परकम नुं [परकम] ईशान्तर का एक
परकम-कर्मणि (अ २, १—अण १ १

१६) । छमिभ्य न [छमभ्य] छमभ्य-
विशेष वक्ष्य छमभ्य (अण १ ७२) ।

छद्मभ्य छद्मभ्य छद्म + छद्म कर्मला,
छद्म कर्मला । वापुन, वापुन (या २,

या १४१) । कर्म-छद्मभ्य (न १२, १७) ।
छद्मभ्य नुं [ह] अन्त्य छद्म कर्मला वा वृद्ध

(वि ७ २) ।
छद्मभ्यभ्य नि [छप्] : छद्म कर्मला
छद्मभ्यभ्य } गुण (वि १ ४ १२ २४ अ

१, ५५५) ।

छद्मभ्य देवा छद्म ।

छद्मभ्य देवा छद्म (अण १ २५) ।

छद्मभ्य देवा छद्म ।

छद्मभ्य नि [छमिभ्य] कर्मला हुया (वि २
२१ अण २) ।

छद्मभ्य नि [ह] १ नृदीय, स्वीकृत (वि ७
२०) । २ छद्म (वि २ २१) । ३ न. भुया

नष्टक (वि ७ २०) । ४ भुवि को वावर
वावि छ मीपया (अण ११७ अण वीर

छाया १ १ टी—अण १) । ५ कर्मणि
छाया कर्मला (वि ७ २०) ।

छद्मभ्य देवा छद्म = वापुन ।

छद्मभ्य देवा छद्म = वापुन ।

छद्मभ्य नि [छद्म] कर्मला योग्य (अण ७
१४) ।

छद्मभ्य नि [ह] १ छाया के योग्य कोई क
योग्य । २ छाया के योग्य वीर नामक

(छाया २ ४ २, १६) ।
छद्मभ्य नुं [ह] इत्येव वेद (वि ७ १६) ।

छद्मभ्यो अछद्म (वि १ ११ अण कर्म
वीर) ।

छद्मभ्य इत्येव न [ह] योग्य वावि छ भुवि क
योग्य वीर कर्मला दे वेद वावि का

योग्य (अण १२) ।
छद्मभ्यो अछद्म (वि १ ११ अण) ।

छद्मभ्य (या) देवा अछद्म — अण (अण) ।
छद्मभ्य नुं [ह] भुवि एक प्रकार का वरकर्म

कर्म, लक्षण भुवरासी में 'ललो' (वि १ ४१
४१७) ।

छद्मभ्य न [छमभ्य] कर्मला वीर्य, लक्षण
(अण अण गुण १ १ गुण २०७ कर्म

१६) ।
छद्मभ्य नि [छमभ्य] कर्मला-भुवि, लक्षण

कर्मला (अण २६ ४२२ अण) ।
छद्मभ्यभ्य न [छमभ्य] कर्मला वीर्य, लक्षण

कर्मला (अण २ १—अण ३४२ अण ७ टी
गुण २ १ २०७ अण) ।

छद्मभ्य देवा छद्म = वापुन (वि २, १) ।
छद्मभ्य नुं [छद्म] वेद विशेष (गुण १२५ अण

२४४ अण १७ टी अण अण अण) ।
छद्मभ्यो अछद्म (वि १ ११ अण) ।

छद्मभ्य देवा छद्म = वापुन (वि १ ११ अण) ।

छद्मभ्य देवा छद्म देव विशेष एक धर्म देव
(वापुन १४ २०२ अण ४६) ।

छद्मभ्य नि [ह] १ निरीय वापुन देव कर्मला
वा निरीय कर्मला, कर्मला धाम निरीय

(गुण १ १ १ गुण २ १) । २ अण
गुण (अण १२, २) । ३ नुं, एक न

वापुन (अण) ।
छद्मभ्य नि [ह] वेद उत्तम (वापुन २ १ १

२) ।
छद्मभ्य न [छम] प्रहृष्ट पापन (अ ७ १) ।

छद्मभ्य देवा छद्म (अण) ।
अण नुं [छम] १ नक्षत्र अणभ्य (अण ११

११) । २ प्राति (अ १ ४) । ३ नुं,
अण (अ १२४) ।

अणभ्य इत्येव न [छमभ्य] कर्मला वापुन
अणभ्य कर्म (अण १ ११) ।

अणभ्य नि [ह] कर्मला-भुवि कर्मला
अणभ्य नि [ह] कर्मला-भुवि कर्मला

अणभ्य नि [ह] कर्मला-भुवि कर्मला
अणभ्य नि [ह] कर्मला-भुवि कर्मला

अणभ्य नि [ह] कर्मला-भुवि कर्मला
अणभ्य नि [ह] कर्मला-भुवि कर्मला

अणभ्य नि [ह] कर्मला-भुवि कर्मला
अणभ्य नि [ह] कर्मला-भुवि कर्मला

अणभ्य नि [ह] कर्मला-भुवि कर्मला
अणभ्य नि [ह] कर्मला-भुवि कर्मला

अणभ्य नि [ह] कर्मला-भुवि कर्मला
अणभ्य नि [ह] कर्मला-भुवि कर्मला

अणभ्य नि [ह] कर्मला-भुवि कर्मला
अणभ्य नि [ह] कर्मला-भुवि कर्मला

अणभ्य नि [ह] कर्मला-भुवि कर्मला
अणभ्य नि [ह] कर्मला-भुवि कर्मला

अणभ्य नि [ह] कर्मला-भुवि कर्मला
अणभ्य नि [ह] कर्मला-भुवि कर्मला

अणभ्य नि [ह] कर्मला-भुवि कर्मला
अणभ्य नि [ह] कर्मला-भुवि कर्मला

अणभ्य नि [ह] कर्मला-भुवि कर्मला
अणभ्य नि [ह] कर्मला-भुवि कर्मला

अणभ्य नि [ह] कर्मला-भुवि कर्मला
अणभ्य नि [ह] कर्मला-भुवि कर्मला

अणभ्य नि [ह] कर्मला-भुवि कर्मला
अणभ्य नि [ह] कर्मला-भुवि कर्मला

सुसिध वि [रे] कमुय मसिन वि ११
(४२)।

सुसिध सक [सुसिध] १ बाह्य धातुना। २
धनयन करना दूर करना। सुसिध (मधि)।
मुका सुसिध (बाधा)।

सुसिध वि [सुसिध] केर-रहित किया हुआ
मुसिध (दूर २१२ गुण १५१)।

सुसिध सक [सुसिध म + धम्य] मार्जन
करना पोषण। सुसिध (हे ४ १५ प्राक्
१७ भाषा १११)। वक् सुसिध (गुण)।

सुसिध सक [सुसिध] सुसिध। सुसिध (गुण
११२)। वक् सुसिध (वर्गवि १११)।
कनक सुसिध (दूर २ १४)।

सुसिध न [सुसिध] सुसिध (दूर २ ४६
गुण)।

सुसिध वि [सुसिध] सुसिध (वर्गवि १११)।

सुसिध वि [सुसिध] कन सुसिध चक्रवर्त
विधिना जगत्सिधमसता सुसिधोपय कमु
मपिपर्वतो बामिधमलेख (सुसिध २ १)।

सुसिध वि [सुसिध] बसाव वहीध बबर
बली से लिना हुआ (विग)।

सुसिध सक [सुसिध] १ बोध करना, विनाश
करना। २ लोचन करना। सुसिध, सुसिध
(प्राक् ७१ गुण १ ३ ६ ७)। कर्म
सुसिध (महा) सुसिध (गुण १ २ १
१३)। कनक सुसिध सुसिधमात्र (वि
वि १४२ उगा)। वक् सुसिध (वि
१४२)।

सुसिध वि [सुसिध] बोध करोवता
(भाषा गुण २ २ ६)।

सुसिध धी [सुसिध] विनाश (परा १
१—परा १)।

सुसिध वि [सुसिध] बोध करोवता
(भाषा)।

सुसिध धी [सुसिध] १ लवक कर्म का
दण्ड (हे ७ २५ गुण १ ११२ गुण
४१)। २ सदा बली (हे ७ २५)।

सुसिध सक [नि + सुसिध] मुका किया।
मुसिध (हे ४ ११, पर)। वक् सुसिध
(गुण १४२ ११)।

सुसिध सक [सुसिध] मुसिध (हे ४
११६)।

सुसिध वि [सुसिध] सुसिध, सीधा हुआ (परा)।
सुसिध वि [सुसिध] सुसिध गुण किया हुआ
(व्य ४६ ११५ विग)।

सुसिध वि [सुसिध] १ भजन (गुण)। २
बीमार, रोयो (हे २ २)।

सुसिध वि [सुसिध] मुसिध केर-रहित
(कन्य विग २१७)।
सुसिधमात्र दोहो लोच्य = मोक।

सुसिध वि [सुसिध] मुसिध हुआ करिष्य
(गुण)।

सुसिध वि [सुसिध] मुका गुण किया
हुआ (विग)।

सुसिध पु [सुसिध] १ स्वर्ण विरोध सुसिध स्वर्ण
(अ १ सम ४१) २ वि कदा स्वर्णाला
लोच्य रहित सुसिध कन्या (गुण) १—परा
७१ कन्य धीय)। दोहो सुसिध = कन्य।

सुसिध वि [सुसिध] १ भजन भाषा हुआ
(हे ७ २५)। हे २ २५ ४ २२५)। २ रोयो
बीमार (हे २ २५ ४ २२५ पर)।

सुसिध दोहो सुसिध = गुण। सुसिध (परा)।

सुसिध सक [सुसिध] मुसिध। सुसिध (परा)।

सुसिध दोहो सुसिध = लप। सुसिध (गुण १
१)।

सुसिध वि [सुसिध] मुसिध मया (वर्गवि ७)।

सुसिध पु [सुसिध] रोका, रोता ईद प्रावि क
दुसिध (हे ७ २६)।

सुसिध दोहो सुसिध (परा २१)।

सुसिध सक [सुसिध] मुसिध मेटना। वक्
सुसिधमात्र (स २५४)।

सुसिध वि [सुसिध] मेटा हुआ (गुण २ १
४ ११६)।

सुसिध दोहो सुसिध = गुण। सुसिध (हे ४ २४१)।

कर्म सुसिधमात्र, सुसिध (परा १ ४ २४१)।
सुसिध सुसिधमात्र सुसिधमात्र (परा ११
पर) सुसिध (परा) (वि १५८)।

सुसिध वि [सुसिध] बाधा हुआ (वर्गवि १२६
विगि ४ ४)।
सुसिध वि [सुसिध] बोध-प्राप्त 'कन्य मुसिध इमरो
त्य' (विग १०७)।

सुसिध न [सुसिध] पोषि का मात (भाषा
११६ टी)।

सुसिध पु [सुसिध] १ भ्याम (परा १ २
निग ४)। २ वि मोसुप मम्य (परा
विग १ ७—परा ७७ प्राप् ७६)। ३
न मोस (सुसिध १)।

सुसिध न [सुसिध] कन्य-धम-विरोध विगार्य
धनुना कनक सुसिध पदममसिध ध' (सुसिध १
१४)। दोहो सुसिध = मोस।

सुसिध पु [सुसिध] धार-विरोध (भाषा २
११ १)।

सुसिध सक [सुसिध] १ दोहो सुसिध।

सुसिध सक [सुसिध] १ मोस करना।

सुसिध सक [सुसिध] १ मोस करना। सुसिध सुसिध
(हे ४ ११६ गुण) सुसिध (परा)। ३
सुसिधमात्र (परा २ १—परा १४६)।

सुसिध दोहो सुसिध = गुण। सुसिध (सिध ११)।

सुसिध धी [सुसिध] बाध-विरोध (हे ७ २४)।

सुसिध दोहो सुसिध। सुसिध (विग)। वक् सुसिध,
सुसिधमात्र (गुण ११)। सुसिध १ २११)।

सुसिध वि [सुसिध] मेटा हुआ (गुण ४
१८)।

सुसिध वि [सुसिध] मुसिध बलित (वर्गवि
गुण काय ८११)।

सुसिध दोहो सुसिध = गुण। सुसिध (भाषा १११)।

सुसिध दोहो सुसिध।

सुसिध सक [सुसिध] मार्जन करना पोषण।
सुसिध (हे ४ १ १ पर प्राक् ११, मधि)।

सुसिध न [माजन] मुसिध (गुण)।

सुसिध दोहो सुसिध = गुण (परा)।

सुसिध धी [सुसिध] गुण-गुण्य मूर्ध-धर्य मे
जल को प्राप्ति (हे ७ २४)।

सुसिध धी [सुसिध] १ बाधिक रोम-विरोध
(वर्गवि १५ २७ गुण १४५)। सुसिध १२)।
२ बाध बलनेमता इति मकरी (धोप
१२५)। ३)।

सुसिध [सुसिध] मुसिध पोषि करता। सुसिध
मुसिध, मुसिध (वर्गवि ५)। संधि ११; गुण
१६)। हे. सुसिध (गुण १ ७)। वर्गवि
१२४)। यथे वक् सुसिध (गुण १२२)।

हिम दु [सिन्धु] इन्द्र-विरोध, भीम का पेश
मण्डप में 'हिम' (हे १ २३ कुमा
४ ३२)।

हिम नि [हे] १ नील। २ नम्र (एय ११)।

हिम दु [हे] हिमन्त घात-पक्ष-विरोध (छाया
१ १—पृ ११)।

हिमन्त (घर) केो हिम = हिमन्त कुनराटी
में 'हिमन्त' (हे ४ १०० नि २४०)।

हिमोद्भवी की [हे] हिमन्त (पृष्ठ २६)।

हिमरा केो हिमरा (नि २६)।

हिमरा [नि + रा] खिला। हिमरा (हे
४ २३, पृ २)। नम्र हिमन्त (कुमा)।

हिमरा न [सिन्धु] नेहा हिमरा-हिमन्त
परिपक्व हिमरा हिमरा (हिमि ४१)। कुमा
४२३)। केो छेकल।

हिमरा कीम [हे] छोट कीम (हे ७ २१)।

कीम (हे ७ २१)।

हिमरा की [हिमरा] १ नम्र दुष्ट छोट है
भीम—घर के बासी में हीमा कीम (हे ४,
६१, ६२)। २ परिपक्व-हिमन्त (पृष्ठ)।

हिमरा (घरी) घर [सिन्धु] खिलाया।
भीम विवाहविस्ले (नि ७)।

हिमरापित (घरी) नि [सिन्धु] खिलाया
हुमा (नि ७)।

हिमरा घर [सिन्धु] प्राप्त करने को
बादला। हिमरा (हे २ २१)।

हिमरा केो हिमरा (हा —पृ ४३०)।

हिमरापित केो सन्धु = नेच्छक (पृष्ठ)।

हिमरा की [हिमरा] बाग की हिमरा (पृ
६१, पृ २१)।

हिमरा नि [हिमरा] बाग की बादलाला
(पृष्ठ ६ १ कुमा)।

हिमरा (घर) नि [सिन्धु] नदी (पृष्ठ)।

हिमरा न [नि] १ बाग, गुणमय (हे ७
२२)। २ नि नम्र, मोनु (गुमा २६१)।

हिमरा देवी सेदु (पृष्ठ)।

हिमरा नि [सिन्धु] १ केन-मुक्त बिना हुमा
(हे १ १)। कुमा भीम)। २ सेदु (पृष्ठ
१ ३ ११)।

हिमरा पुत्री [हे] पृष्ठ बाग का रोष (हे
७ २२)।

हिमरा केो हिमरा (ग ११८, पृष्ठ)।

हिमरा केो छेकल (कुमा १५४)।

हिमरा [हे] केो हिमरा।

हिमरा [हिमरा] म [हिमरासन] मही-मुक्त

मोक्ष मोक्ष बाग (पृष्ठ २६)।

हिमरा केो हिमरा = हिमरा।

हिमरा नि [हे] १ हर बाग। २ हर

रैयबाग बागविस्तारपुनःकामिनेय मोनु

पृष्ठ नम्र न को फुई छेकल 'हिमरा' (वर्ग
७३)।

हिमरा की [सिन्धु] पृष्ठ-सेवन प्रक्रिया

हिमरा (घर १२ पृष्ठ)।

हिमरा घर [सिन्धु] गोमा सुतय घर

कला। हिमरा (हे ४ २४१)।

हिमरा घर [सिन्धु] धर्मिकन करण। भीम

हिमरापित (पृष्ठ २ ७ १)।

हिमरा नि [हे] वृक्ष कीम (हे ७ २२)।

हिमरा केो हिमरा = हिमरा। विस्ले (पृष्ठ
१ ४ १ २)।

हिमरा घर [हिमरा] १ हिमरा। २ रेखा

कला। हिमरा (हे १ १०० प्रा ७)।

नम्र हिमरा (नम्र)। प्रती. हिमरा, हिमरा

हिमरापित (पृष्ठ १४, हिमरा १५०)।

हिमरा घर [हिमरा] बाग। हिमरा (गुमा

प्रा ७)। नम्र हिमरा, हिमरा (हे
४ २४२)। नम्र हिमरा (पृष्ठ १४२)।

नम्र हिमरा (हे २ ४२)। नम्र हिमरा (गुमा
१ १०—पृ २३२)।

हिमरा न [सिन्धु] बाग (नम्र १ पृष्ठ
१० १४)।

हिमरा न [सिन्धु] १ हिमरा वेक (पृष्ठ
११)। २ रेखा करण (पृष्ठ १)। ३

हिमरा 'नम्र' हिमरा सन्धु नम्र

हिमरापित (पृष्ठ १५)।

हिमरा की [सिन्धु] केो रेखा = रेखा 'नम्र'

नम्र नम्र मोनु नम्र नम्र पृष्ठ १५

नम्र हिमरा (हिमरा ७)।

हिमरापित न [सिन्धु] हिमरा (नम्र
७२४)।

हिमरापित नि [सिन्धु] हिमरापित हुमा
(पृष्ठ ६)।

हिमरा नि [सिन्धु] १ हिमरा हुमा (गुमा
२०)। २ नम्र (नम्र)। ३ रेखा
हिमरा हुमा हिमरा (गुमा)।

हिमरा (घर) नि [सिन्धु] बिना हुमा
पृष्ठ (पृष्ठ)।

हिमरा नि [सिन्धु] १ बाग हुमा (गुमा
१५१)। २ नम्र 'नम्र' (१ हिमरा)
गुमापित (गुमा २)। ३ नम्र
(पृष्ठ १२२)।

हिमरा नि [सिन्धु] नम्र-मुक्त (गुमा)।

हिमरा दु [हे] नम्र (हे ७ २१)।

हिमरा की [सिन्धु] १ बिना भीम। २

भीम (गुमा पाठ प्रस्तु २१)। ३ नम्र

विरोध (पृष्ठ)। नम्र की 'नम्र' १ बिना-
नम्र की (प्रस्तु २१)। २ नम्र-विरोध (पृष्ठ)।

नम्र नि [नम्र] भीम-नम्र (पृष्ठ)।

हिमरापित न [सिन्धु] १ भीम निमि
(नम्र)। २ नम्र 'नम्र' 'नम्र' 'नम्र' (नम्र
१ ११ १)।

हिमरापित न [सिन्धु] १ भीम निमि
(नम्र)। २ नम्र 'नम्र' 'नम्र' 'नम्र' (नम्र
१ ११ १)।

हिमरापित न [सिन्धु] १ भीम निमि
(नम्र)। २ नम्र 'नम्र' 'नम्र' 'नम्र' (नम्र
१ ११ १)।

हिमरापित न [सिन्धु] १ भीम निमि
(नम्र)। २ नम्र 'नम्र' 'नम्र' 'नम्र' (नम्र
१ ११ १)।

हिमरापित न [सिन्धु] १ भीम निमि
(नम्र)। २ नम्र 'नम्र' 'नम्र' 'नम्र' (नम्र
१ ११ १)।

हिमरापित न [सिन्धु] १ भीम निमि
(नम्र)। २ नम्र 'नम्र' 'नम्र' 'नम्र' (नम्र
१ ११ १)।

हिमरापित न [सिन्धु] १ भीम निमि
(नम्र)। २ नम्र 'नम्र' 'नम्र' 'नम्र' (नम्र
१ ११ १)।

हिमरापित न [सिन्धु] १ भीम निमि
(नम्र)। २ नम्र 'नम्र' 'नम्र' 'नम्र' (नम्र
१ ११ १)।

हिमरापित न [सिन्धु] १ भीम निमि
(नम्र)। २ नम्र 'नम्र' 'नम्र' 'नम्र' (नम्र
१ ११ १)।

हिमरापित न [सिन्धु] १ भीम निमि
(नम्र)। २ नम्र 'नम्र' 'नम्र' 'नम्र' (नम्र
१ ११ १)।

हिमरापित न [सिन्धु] १ भीम निमि
(नम्र)। २ नम्र 'नम्र' 'नम्र' 'नम्र' (नम्र
१ ११ १)।

हिमरापित न [सिन्धु] १ भीम निमि
(नम्र)। २ नम्र 'नम्र' 'नम्र' 'नम्र' (नम्र
१ ११ १)।

हिमरापित न [सिन्धु] १ भीम निमि
(नम्र)। २ नम्र 'नम्र' 'नम्र' 'नम्र' (नम्र
१ ११ १)।

हिमरापित न [सिन्धु] १ भीम निमि
(नम्र)। २ नम्र 'नम्र' 'नम्र' 'नम्र' (नम्र
१ ११ १)।

हिमरापित न [सिन्धु] १ भीम निमि
(नम्र)। २ नम्र 'नम्र' 'नम्र' 'नम्र' (नम्र
१ ११ १)।

हिमरापित न [सिन्धु] १ भीम निमि
(नम्र)। २ नम्र 'नम्र' 'नम्र' 'नम्र' (नम्र
१ ११ १)।

हिमरापित न [सिन्धु] १ भीम निमि
(नम्र)। २ नम्र 'नम्र' 'नम्र' 'नम्र' (नम्र
१ ११ १)।

हिमरापित न [सिन्धु] १ भीम निमि
(नम्र)। २ नम्र 'नम्र' 'नम्र' 'नम्र' (नम्र
१ ११ १)।

हिमरापित न [सिन्धु] १ भीम निमि
(नम्र)। २ नम्र 'नम्र' 'नम्र' 'नम्र' (नम्र
१ ११ १)।

हिमरापित न [सिन्धु] १ भीम निमि
(नम्र)। २ नम्र 'नम्र' 'नम्र' 'नम्र' (नम्र
१ ११ १)।

हिमरापित न [सिन्धु] १ भीम निमि
(नम्र)। २ नम्र 'नम्र' 'नम्र' 'नम्र' (नम्र
१ ११ १)।

हिमरापित न [सिन्धु] १ भीम निमि
(नम्र)। २ नम्र 'नम्र' 'नम्र' 'नम्र' (नम्र
१ ११ १)।

हिमरापित न [सिन्धु] १ भीम निमि
(नम्र)। २ नम्र 'नम्र' 'नम्र' 'नम्र' (नम्र
१ ११ १)।

<p>सूत्र नि [सुम्भ] सुम्भेराता । औ औ तो नमि एव कये औ एव सुम्भेराताम्पत्तो । वससाण विमम्भुहि परिपत्तवि निभारेह ॥ (हिवा २२ । काय २१७) ।</p>	<p>सूत्रिण नि [सुम्भ] १ सुम्भिय सुम्भ वया (या २२) । २ सुम्भुत वीरिण (सम्पत्त १७२) । ३ विनासिय (संबोध १) । ४ विचित (धावा) । सूत्र वक [सुम्भ] सुम्भुय ॥ वीरणा । सुम्भ सुम्भिय (धय; धावा १ १—यय २१) । सूत्र सुम्भिया (वि २१७) । सूत्र सु [सुम्भ] सुम्भि वयस्य (सम्पत्त २ १) ।</p>	<p>सुम्भुय पु [सु] रोषा षोड (१७ २१) पाय) । सम्भ न [सम्भ] १ विरि-वर्ती पायास-गुह (धामा १ २—यय ७२) । २ निम्भ वयस्य पुत्र (कय) । विवि विष्णु [वि] कय- विरोध (वीय) । वेको सम्भय = वयस्य ।</p>
<p>सम्भ न [सम्भ] सुम्भ, षोड (य ४४१) । सुम्भ नि [सुम्भ] सुम्भ वया (य २१२) पयस्य १ १२ सुम्भ १ ७) । सुम्भ वेको सुम्भ = वयस्य (१७ २३) सुम्भ २२२) सुम्भ) ।</p>	<p>सूत्र नि [सुम्भ] १ सुम्भ कया स्वे-पयि धावा निर (२१ ७२) । २ सु सम्भ विरिण चारिण (सुम्भ १ १ १ १) । ३ न उप विरोध निर्विकल्पिक उप (संबोध २७) । वेको नुम्भय ।</p>	<p>सम्भ न [सम्भ] विरि, वीय (धर्म २२, कय १) । सम्भ गार पु [सम्भगार] विरि-विरोध यय ययवीर (यय १४१) । सुम्भ औ [सुम्भ] वेपन-विवा (यय ११, १२) ।</p>
<p>सुम्भ न [सम्भ] १ सुम्भ सुम्भ गोल गयस्य (वी ४) । २ सुम्भ वयस्य-विरोध (या २ । वर्ग २) । वेको सम्भय । सुम्भ न [सम्भ] वयस्य सुम्भयस्य षोड वयस्य (यय २११) । सुम्भ वक [सुम्भ] काया । सुम्भ (वि ४ १२४) ।</p>	<p>सूत्रिण नि [सुम्भ] वीरणा वया (धावा १ १—यय ११ कय वीय) । सुम्भ वक [सुम्भ] वेना वयस्य कया । वेर (वि ४ २१२) कुमा) । वयस्य विवा (सुम्भ २२२) विवा) । सुम्भ वयस्य (यय) (वि ४ ४४) । सुम्भ वयस्य (यय) (वि ४ ४४) ।</p>	<p>सुम्भ वेको सुम्भ (धावा सुम्भ २ २ १७) विवा १४१) । सुम्भ पु [सुम्भ] १ वेपन (यय १४ पयस्य २ १) । २ वयस्य-वयस्य (वीय १४) । १ सुम्भ वयस्य वयस्य-वयस्य (यय २० २) । कय १ वि [सुम्भ] वेपन-विवा (वीय २१२) यय ४ यी—यय ४४ विवा) ।</p>
<p>सुम्भ नि [सुम्भ] काया वया (यय १ ७२) । सुम्भ वक [सुम्भ] १ वयस्य कया मार वयस्य । २ वेको कयस्य कया वयस्य कयस्य । ३ सुम्भ कया । ४ वीय कया । ५ विनास कया । ६ वयस्य कया । ७ वेको कया । ८ वेको कया वयस्य वयस्य कया । सुम्भ वयस्य, सुम्भयस्य (यय १ १ १ १४ १ ७ २१ १ १४ १२ १ १४ १२) । सुम्भ, सुम्भ (धावा) । सुम्भ, सुम्भ (या १२) ।</p>	<p>सुम्भ न [सम्भ] १ वयस्य, वयस्य (यय ४२४) । २ वेको विवा (यय २१२) । सुम्भ वेको सुम्भ (यय) । सुम्भ वेको सुम्भ = वेक (यय १२) । सुम्भयस्य वेको विवायस्य (वि ७) । सुम्भयस्य पु [सुम्भयस्य] १ वयस्य-विरोध २ वयस्य वयस्य वयस्य (यय १ १२ १ यय कय वीय वीय) ।</p>	<p>सुम्भ न [सम्भ] वेपन-वयस्य (यय १११) । सुम्भ नि [सुम्भ] वेपन-वयस्य (यय १) । सुम्भ पु [सुम्भ] १ वयस्य वयस्य वयस्य (यय १७ २) । २ वेपन (यय १) । सुम्भ नि [सुम्भ] १ वयस्य । २ वयस्य । ३ विवा वयस्य-वयस्य । ४ सुम्भ (यय १७ २२) ।</p>
<p>सुम्भ नि [सुम्भ] १ वयस्य । २ वयस्य । ३ विवा वयस्य-वयस्य । ४ सुम्भ (यय १७ २२) । सुम्भ नि [सुम्भ] १ वयस्य । २ वयस्य । ३ विवा वयस्य-वयस्य । ४ सुम्भ (यय १७ २२) ।</p>	<p>सुम्भ न [सम्भ] १ वयस्य, वयस्य (यय ४२४) । २ वेको विवा (यय २१२) । सुम्भ वेको सुम्भ (यय) । सुम्भ वेको सुम्भ = वेक (यय १२) । सुम्भयस्य वेको विवायस्य (वि ७) । सुम्भयस्य पु [सुम्भयस्य] १ वयस्य-विरोध २ वयस्य वयस्य वयस्य (यय १ १२ १ यय कय वीय वीय) ।</p>	<p>सुम्भ नि [सुम्भ] १ वयस्य । २ वयस्य । ३ विवा वयस्य-वयस्य । ४ सुम्भ (यय १७ २२) । सुम्भ पु [सुम्भ] वेपन-वयस्य (यय १११) (यय) । सुम्भ न [सुम्भ] वयस्य वेको (विवा १ ७) ।</p>
<p>सुम्भ नि [सुम्भ] १ वयस्य । २ वयस्य । ३ विवा वयस्य-वयस्य । ४ सुम्भ (यय १७ २२) । सुम्भ नि [सुम्भ] १ वयस्य । २ वयस्य । ३ विवा वयस्य-वयस्य । ४ सुम्भ (यय १७ २२) ।</p>	<p>सुम्भ न [सम्भ] १ वयस्य, वयस्य (यय ४२४) । २ वेको विवा (यय २१२) । सुम्भ वेको सुम्भ (यय) । सुम्भ वेको सुम्भ = वेक (यय १२) । सुम्भयस्य वेको विवायस्य (वि ७) । सुम्भयस्य पु [सुम्भयस्य] १ वयस्य-विरोध २ वयस्य वयस्य वयस्य (यय १ १२ १ यय कय वीय वीय) ।</p>	<p>सुम्भ नि [सुम्भ] १ वयस्य । २ वयस्य । ३ विवा वयस्य-वयस्य । ४ सुम्भ (यय १७ २२) । सुम्भ पु [सुम्भ] वेपन-वयस्य (यय १११) (यय) । सुम्भ न [सुम्भ] वयस्य वेको (विवा १ ७) ।</p>
<p>सुम्भ नि [सुम्भ] १ वयस्य । २ वयस्य । ३ विवा वयस्य-वयस्य । ४ सुम्भ (यय १७ २२) । सुम्भ नि [सुम्भ] १ वयस्य । २ वयस्य । ३ विवा वयस्य-वयस्य । ४ सुम्भ (यय १७ २२) ।</p>	<p>सुम्भ न [सम्भ] १ वयस्य, वयस्य (यय ४२४) । २ वेको विवा (यय २१२) । सुम्भ वेको सुम्भ (यय) । सुम्भ वेको सुम्भ = वेक (यय १२) । सुम्भयस्य वेको विवायस्य (वि ७) । सुम्भयस्य पु [सुम्भयस्य] १ वयस्य-विरोध २ वयस्य वयस्य वयस्य (यय १ १२ १ यय कय वीय वीय) ।</p>	<p>सुम्भ नि [सुम्भ] १ वयस्य । २ वयस्य । ३ विवा वयस्य-वयस्य । ४ सुम्भ (यय १७ २२) । सुम्भ पु [सुम्भ] वेपन-वयस्य (यय १११) (यय) । सुम्भ न [सुम्भ] वयस्य वेको (विवा १ ७) ।</p>

में निमित्त-मृत इत्यादि इत्य (यण उवा)
 वीण पत्र ११२। वीण ७७। वीणोप ४८।
 पण्ड १७ कर्म ४ १। ११।

सेसा की [सेसा] ज्ञाता (यण ११। १७)।
 सेसिय वि [सेसिय] स्वेय-मुक्त (उ ७६२)।
 सेसुरसमयक दु [से] क्लोडा ॥ पुत्र
 (पञ्चम पत्र २४१)।

सेसा देवो ससा (नम)।

सेह देवो सिह = सिह। सेह (शक ७)।
 सेह देवो सिह = सिह। सेह (शक ७)।
 सेह (यण) देवो सस = नम। सेह (निय)।
 सेह दु [सेह] धनवेह, बाटन (पत्र २,
 २८)।

सेह दु [सेह] १ सिद्धता, सेहन धनर
 निम्न (य २४४ उवा)। २ वन सिद्धी
 (कर्म)। ३ देव सेवा। ४ सिद्धि। ५ वि.
 धन को सिद्धा नाम (वि २ १०६)। ६
 सेहक सिद्धताया "समर्थ सेहकसे उल्ला"
 (पत्रा १)। पाह वि [वाह] सिद्धी
 से बानेनामा पत्र-वाहक (पत्र ११ १
 गुण ४१६)। वाहता, वाहय वि
 [वाहक] वही धर्म (गुण ११६। ११७)।
 साह्य की [शाह] पाहताया (यण ७२८
 धी)। रिय दु [वार्य] उपायम सिद्धक
 (पत्र)।
 सेहक वि [दे] सम्यक् मुक्त (वि ७ २३
 ज)।

सेहम न [सेहन] बाटन साह्यक (पत्रम
 १ ७)।

सेहनी की [सेसता] कर्म सेहनी (पत्रम
 २६ ३। या २४४)।

सेह देवो सेह (य ४११)।

सेह देवो सिद्ध (वीण कर्म कर्म गुण
 ११२ स्तन १२)।

सहिय वि [सिद्धि] सिद्धताया हृष (धी
 ७)।

सेह दु [दे] सहा, रोह, देवा (वि ७ २४)।

सेह देवो रोह = रोहय। सेह सीध्या
 (कर्म)।

सेह सह [सेह] सहय देवता। सह
 साज्यत (शक)। सह सहमान (य
 १२२ धी)। सह-सेह (य १)।

सेह दु [सेह] १ बर्गस्थितय धारि ह्यो
 का धारारमुत धाकास-सेन बयद, संसार,
 भुवन। २ वीण धनीय धारि ह्य। ३
 समय, धारिका धारि कर्म। ४ गुण
 धारि-धर्म। ५ वन मयुष्य धारि प्राणि
 गर्ग (ठा १—पत्र १६ धी—पत्र १४ यण
 हे १ १८ गुण बो १४ शक २२ ७१
 शक १२१ १६)। ६ धारिक प्रकाश
 (पत्रा १६)। गग न [म] १
 ईष्याभार नामक द्विषी मुख-स्थान
 (छाया १ १—पत्र १ २ १६)। २ मुक्ति,
 मोक्ष निर्वाण (पाम)। गगधिया को
 [मस्तुपिध] मुख-स्थान ईष्याभार
 द्विषी (हक)। "गगधियुग्मना की
 [मस्तुपिध] वही धर्म (हक)। पामि
 दु [नमि] येव पर्वत (गुण ५)। पप्राय
 दु [महा] वन-मिह क्हावत (गुर २
 ४७)। मगक दु [मय] येव पर्वत (गुण
 ५)। वाय दु [वार्य] वन-मिह
 बोधेहि (य २६ मा ४८)। गगस दु
 [गगस] लोक-वेह, धारिक-मिह धाकास
 (यण)। [गगस] न [गगस] क्हावत
 बोधेहि (यण)। देवो सेहो।

सेह दु [सेह] मुक्त, मोक्षता केही का
 ज्ञापन ज्ञानम (गुण १२१ कुय १७१
 छाया १ १—पत्र १। योय लव)।

सेह दु [सेह] वरदान, निम्न (विषय
 १६१)।

सेहसिय दु [सेहसिय] एक देव-नाटि
 (कर्म)।

सेहय न [दे] सेहक] गुण-यहिल यव
 वराय नाम (कर्म)।

सेहय (यण) की [सेहय] कर्म (ह
 ४ ४२१)।

सेहय न [सेहय] धारि वयु नेव (हे
 १ १३ २ १८४ गुण नाम गुर १
 २२१)। वय न [पत्र] धारि नाम,
 वरणी, वय (वि ६ १०)।

सेहयिध वि [सेहयिध] धारिता
 (गुण २)।

सेहयिध की [दे] वनस्थिति-रोह (यण
 १—पत्र १६)।

सेहयिध वि [सेहयिध] निपेधित हृष (या
 २७१ य ७११)।

सेहयिध वि [सेहयिध] लोक-वर्गता वीणारिक
 (धारा; विना १ २—पत्र १ एया १
 १—पत्र १६६)।

सेहयिध वि [सेहयिध] लोक-वर्गता लोक-
 वेह वरायण "वीहयिध वरिध" (या १६
 विधे ८७)। देवो सेहयिध।

सेहयिध वि [सेहयिध] ज्वर देवो
 (या १)।

लोक वि [दे] वन बोया हृष (वि ७ २१)।

सेह दु [सेह] मन्-विरोध सेणी से प्रिय
 शर (यण १७१)। यय देवो यय
 (यण १६)।

सेह देवो सेह = लोक (ठा १ २ १
 १—पत्र १२४ कर्म गुण १७ १ ७७)
 हे १ ७७ शक २५ ४७)। गु १ एक
 देव-विमान (यन २१)। सेह न [कर्म]
 एक देव-विमान (यन २१)। कुह न
 [कुह] एक देव-विमान (यन २१)।
 "गगसिध की [मस्तुपिध] मुख-स्थान
 सिद्धि-सिद्धा (यन २२)। लता की
 [पात्र] लोक-व्यवहार रोनी (छाया १
 २—पत्र ८८)। हिह की [स्थिति] लोक-
 व्यवस्था (य १ १)। वरन न [वर्ग]
 वीण धनीय धारि पदार्थ-समुह (यण)।
 नामि दु [नमि] येव पर्वत (गुण ५
 धी—पत्र ७७)। नाह दु [नाह] वय
 का लता पदम्बर (यन १। यण)।
 वरिपुर्णा की [व २२२] ईष्याभार
 द्विषी मुख-स्थान (यन २२)। पाह दु
 [पाह] इहाँ के दिनाल देव-विरोध (य
 १ १ यण)। यय दु [यय] एक देव
 विमान (यन २१)। विनुसार पुन
 [विनुसार] वीहयिध पूर्व-यय (यन
 ४४)। मगसयिध पुन [मगसयिध]
 धारि-विरोध (य ४ ४—पत्र २४१)।
 मगसयिधयिध पुन [मगसयिध]
 वही धर्म (यण)। हय न [कर] एक
 देव-विमान (यन २२)। "लेह न [लेहय]
 एक देव-विमान (यन २१)। वय न
 [वय] एक देव-विमान (यन २१)।

(अ १—प १११) । कपुय पुं [कपुय]
उत्तर-म-नरक का एक नरक-स्थान (अ) ।

ओङ्गुवायिभ वि [वि] रथिभ-पुण्य भित्तो
पुण्या की हो वह (हे ७ २१) ।

ओङ्गुय वेको ओङ्गुय (पु २ १ ४४) ।

ओय सक [ओय] भोव करण भिन्वस
कला । ओवेद (महा) ।

ओय पुन [ओय] भिन्वस विनास, धपवेला
‘वन-लोवकाया’ (कु ४) ‘या ओ वे वामु
वहि ओय व पुन मरवसा होमु’ (बर्गेवि
१११) ।

ओह वेको ओम = ओम (कुमा प्रासु १७१) ।

ओह पुन [ओह] १ वामु-विरोध कोहा
(विवा १ १—प १११; पामा कुला) । २
वापु, ओह वी वामु: ‘वह ओहापु मुवर्ल
उपास वल्ल वरास उपास’ (पुवा
१११) । ओर पुं [ओर] ओहार (कु १
१११) । जय पुं [जय] १ अरुध में
उपलन विटीय प्रविशसुवध राजा (उम
११४) । २ राजा वरवसुवध का एक पुत्र
(महा) । ‘जयपय न [जयपय] मगुप
के वरवध का एक वन (टी ७) ।

ओह वि [ओह] ओह का ओह-निमित्त वि
(४ २) ।

ओहंगीमी की [ओहाङ्गिनी] उध-विरोध
(विह्व) ।

ओहस पुं [ओहस] उध-विरोध क्यय
उध (पद) ।

ओहार पुं [ओहार] ओहार, ओह का कय
करवेवाला शिष्य (ह ४, ७) अ न—प १
४७०) ।

ओह १ वेको ओहा ‘कुम्भु य पयलेमु
ओहिय १ य ओहियु य कहुमाहिङ्गोमु’
(सुपिण व ७: ७१) ।

ओहिय पुं [ओहिय] १ काम रीग उक्त-
कले: । २ वि उक्त बसुवाका पाव (वि २
४ उपा) । ३ न वधि, मुव (पम १
७१) । ४ ओय-विरोध को कौथिक नाथ की
एक शाखा है (अ ७—प १११) ।

ओहियेक पुं [ओहियेक, ओहियाह]
पठारी महापठों में वीरप महापठ (मुग्ग
२) ।

ओहियेक्य पुं [ओहियाह] १ एक महापठ
(अ २ १—प ७७) । २ वयरक
महिष-वैष का वधिपति (अ १ १—प १
२ इक) । ३ राज की एक जाति (शाया
१ १—प १११; कपु उत १६ ७१) ।
४ एक वेद विपल (वेवेन ११२: १४४) ।
५ उपाया वधिषी का एक कनक (उम
२ ४) । ६ एक पर्वत-पूत (इक) ।

ओहिया १ भक [ओहियाय] सल
ओहियाय होता । ओहियाह, ओहियेक
(वि १ ११० कुमा) ।

ओहियायु पुं [ओहियायुस] उपाया का
एक नरकपाठ (अ १०) ।

ओहिय पुं [ओहिय] प्राचार्य वृषविप के
विष्य एक वेद मुनि (एवि १११) ।

ओहिय १ न [ओहियायन] वीन-विरोध
ओहियायण (मुग्ग १ ११ टी इक,
मुग्ग १ ११) ।

ओहिया १ की [के] वलसवि-विरोध कय
ओहियाह विरोध (पयस १—प १११)
‘ओहियाह य वीह य’ (उत ११ १११; मुग्ग
११ १११) ।

ओहिय वि [के] ओमिन सन्त, मुग्ग (वि
७ २१ पम ८, १७ गा ४४४) ।

ओही ओ [ओही] ओही का वना हुवा
यावन-विरोध कएह (अ १११; पाव १) ।

ओस वेको ओस = मस । ओसह (माह ७२) ।

ओस यक [संस] विवचना सरकता
गिर पवता । ओसह (ह ४ ११७ पद) ।
वह ओसह (मग्ग १) ।

ओसण न [ओसन] विवचना पवन (पुवा
११) ।

ओसाय सक [संस] विवचना । संह
ओसायिभ (मुवा १ ८) ।

ओसायिभ वि [संसि] विवचना हुमा
(कुमा) ।

ओसिय वि [संस] विवक कर विप हुमा
(कु १०७ मग्ग ४४) ।

ओसिय वि [के] हविप (वह) ।

ओसुप वेको ओसुप (पयस १—प ४ ;
वि २१) ।

ओवि की [ह्वावि] मायाय, मनेव कुले
(राज) ।

ओव पुं [ह्वाव] ओर वेको (बर्गेव
२११) ।

ओविय पुं [ओविय] एक मगस वनुय-
पाति (पयस १ १—प १४) ।

ओविय यक [नि + ओ] विपता । विवकह
(ह ४ ११ पद ११) । वह ओविय
(कुमा) ।

ओविय वि [के] १ कट (ह ४ २१०) । २
पद (पद) ।

॥ यप विरियाइअसहस्रण्यो ॥ अथापसहस्रकला

वनीसहस्रो वरनी सपतो ॥

व

व द्रु [व] १ द्रव्यस्य स्थानस्य कार्य-विशेष
विशेषा नवावस्थानस्य द्रव्यं धीरं योऽर्थः
(आप्त प्रमाण) । २ द्रुमं वस्त्रं (वि १ १।
२, ११) ।

व द्रु [व] रेवो इव (वि २ ११ या १।
११, १४) ७८ कुमा हे २ १ २, प्राप्
१) ।

व रेवो वा = व (हे १ १७) वा ४२ ११४
कुमा प्राप् २९ यवि) ।

व रेवो पाया = वान् । वान्नेयज वि
[क्षेपक] वक्ता का विरक्त-वद्वज्ज (वा
४२ य) । व्याख्याय पु [पतिराज] एक
श्रीमान् ववि 'मन्त्रवर्ही' काव्य का कर्ता
(काव्य) ।

वज्रोभाषा की [हे] १ उत्पत्ति की । २ कुलीन
की (पद) ।

वज्रस्य वज्र [प्र + स] पसरता फैलना ।
वज्रस्य (पद) ।

वज्राक्ष रेवो वावाक्ष = वावाक्ष (पक्ष २) ।

वज्र व [वे] वज्र वज्रो वा वज्रस्य वज्रस्य—
१ वज्रावस्थ स्थित्य (वि १ १) । २
वज्रस्य । ३ वज्रोवस्थ । ४ वज्रस्य (वज्र) ।

वज्र व [वे] वज्र, वज्रस्य वज्र 'वज्रस्यवज्र
वज्रस्य' (कुमा ४९) ।

वज्र वि [वज्र] वज्रस्य वज्रस्य (उत्त
कुमा ४९६) । की वी (उत्त ३७१) ।

वज्र की [वान्] वज्र की वज्र (उत्त २३
कम्पा ४९ ४ वा ११ कुमा १०४ कम्पा
४ २४ १७१ २) । गुप्त वि [गुप्त]

वज्र की वा वज्रस्य (वावा ४९ ४ ४) ।
गुप्त वि [गुप्त] वज्र की का वज्रस्य
(वावा) । अर्थ, 'जोगा पु [योग]

वज्रस्य-वावा (मन्त्र पद १ २) । अर्थ
वि [वागिन्] वज्रस्य-वावा (वावा) ।

'मन्त्र वि [मन्त्र] वज्रस्य (वावा २,
१ ६, १) । मन्त्र न [मन्त्र] मन्त्रस्य
वज्रस्य (मन्त्र २४४ २ ४, ४४) । वज्र

पद ।

वज्र की [वज्र] वज्र कति वज्रि से वज्र
वज्र की वज्रस्य वज्र 'वज्रस्य वज्रस्य
वज्रस्य वज्रस्य' (वा १ १) वज्र वा २९।
वज्र १४४ वज्र १ १ १११ वज्र ४१।
'वज्र वज्रस्य वज्र' (वज्र २१) वज्र
४२) ।

वज्र रेवो वज्र = वज्र (वा १११ से ४ १४
कम्पा कुमा) ।

वज्र रेवो वज्र = वज्र ।

वज्र रेवो वज्र = वज्र ।

वज्रस्य वि [वे] १ वज्र, वज्रस्य वज्र
वज्र हो वज्र (वि १ १४) । २ वज्रस्य
वज्र वज्रस्य 'वज्रस्य वज्रस्य' (वज्र
(वावा) ।

वज्रस्य वि [वज्रस्य] वज्रस्य वज्र
वज्र हो वज्र, वज्रस्य वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा १७४ ७१ ४१) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] १ वज्रस्य वज्र
२ वि. वज्रस्य वज्रस्य वज्रस्य (वज्र
(वावा) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वज्रस्य वज्र [वज्रस्य] वज्रस्य वज्रस्य
(कुमा ४ १११ वज्र) ।

वहस्य वि [वृष्य] घटीकर (उत्तर ३२, १५)।

बहस्यदेव दु [बहस्यदेव] बैराल, धर्मि (निर ११)।

बहस्योत्तर दु [वैधान्त] ? बहि, धर्मि। १ विपक कृत्। १ धर्मदेव का धर्मक-विदेव (हि १ १२१)।

वहै केो बह = बाह (पाना)। मय वि [मय] बलालक (सू ६, १५)।

बहैत्र वि [बहैत्र] घटीय पुत्रा ह्या। मोग दु [शोक] एक सैन मुनि (पठम २२)।

बहैय एक [क्यति + प्रज्ञ] काना कण करण। बह-भोस्मावस्य धर्मिदेवस्य धर्मि-सामंकेल बहैयमाने बहैयलई मितामे (ज्मा)।

वहैबाय केो बहैबाय (पत्र)।

बह दुंके [ह] बाण्य छरी-कालिका 'बह' या बाण्ये' (वि ३)।

पत्र न [बहुष] छरी-के (पत्र)।

बहैत्रि वि [वि] दुल-भोय (वि ७४)। यममान केो कय = बह।

बहो केो बय = बहय (पाना)। मय न [मय] बाह मय, ठाह (विदे १११)।

बहो केो वय = बहय (पठम ६७, ११२)। यमोवकप्य दु [ह] विपुल, यमाल यमोवय, एत घोर किल्ला काह (वि २)।

बै केो वाया = बह। 'नियम दु [नियम] बाहो के भव्य (अ ७२ टी)।

वह वि [वह] बाह १ बाका टाह कुटिल (कुमा दु १७२ वि ७४)। २ गरी का बाह (हि १ २५ प्रा)।

वह दु [वि] कय, बाह (वि ७३)।

वह केो वंश (वि ८, २२ बह)।

वहैय दु [बहैय] एक प्रणित्र पुत्र-भुमार (धर्मि २२ वि)।

बहैय दु [बहैय] ऊपर केो, लयो बहा बहैयिओ के (धर्मि २३, २५)।

वहैय न [बहैय, बहैय] गरीकप्य दुमिह बागा (अ १ १—पत्र ४)।

वहैय वि [वहैय] बाका निवा ह्या (वि १ २५)।

वहैय वि [वहैय] वंश-युक्त (वि १ २५)। वंशिय दु [वहैय] बाका कुटिलता (वि ७४) हे ४ १७४ ४ १)।

वहैय केो वंश = वंश 'विहैयितविक-वैय'। विहैययवैयुडितविकवैय। एया-विहैयय वंशे' (स २२५) हे ४ ४१५ मयि वि ४)।

वहैय (टी) ऊपर केो (पत्र ६७)।

वहैय न [वि] वंशक भय (वि ७ २२)।

वहैय वि [वहैय] विहैय वंश वयवय वंशविहैयवैयुडितविकवैय। एया-विहैयय वंशे' (स २२५) हे ४ ४१५ मयि वि ४)।

वहैय दु [वि] प्रयय वंश का धर्मिदेव-विहैय (वि ७ २२)।

वहैय न [वहैय] वंश (पत्र)।

वहैय वि [वहैय] विहैय वंशक वंश (पत्र)।

वहैय दु [वि] वंशक वंश (वि ७ ४२)।

वहैय एक [वहैय] ठका। वंश (वि ४ २५) वंश; मय। कय वंशिय (वि)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

वहैय वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)। वंश वंशिय (मय)।

पद्म पुं [कर्ण] १ सप्तमीय सपुत्र (एति पुर १ ४ कुमा) । २ पण्डित-विशेष को समान संख्या का परस्पर सुसह (अ १०—पत्र ४२९) । ३ अन्ध-परिच्छेद धर्मका सर्म (हे १ १७० २ ७३) । मूल न [मूल] पण्डित-विशेष बहु धर्म निष्कर्ष करने किया गया हो कैले ४ का बर्न करने से १६ होता है । १६ का बर्नपुत्र ४ होता है (बोध १३७) । बर्ग पुं [कर्ण] पण्डित-विशेष धर्म से धर्म का पुराण कैले २ का बर्न ४ ४ का बर्न १६ यह २ का बर्नबर्न कहलाता है (अ १) ।

बर्ग एक [बर्ग] बर्न करना, किसी धर्म को समान धर्म से पुराण । बर्गपु (कर्म ४ ४७) ।

बर्ग वि [व्यय] ब्यापक (उत् १३, ४ व्यस्य ८०) ।

बर्ग दो बर्ग = बर्ग (विने १३४) ।

बर्ग दो बर्ग = बर्ग 'मुद्रा पण्डित धर्म' बहु धर्मबर्ग (रंभा) ।

बर्ग वि [बर्ग] बर्ग-वर्ग-बर्ग का बर्ग हुआ (आमा १ १ टी—पत्र ४९) ।

बर्गविश्व न [वि] बर्ग बर्ग (हे ० ४९) ।

बर्गविश्व वि [बर्गविश्व] एक प्राचीन वैत ज्ञान (एति २ २) ।

बर्गपु न [पुत्र] बर्गपु (वीप पुत्र १ ७) कर्म आमा १ १—पत्र १३) प्रायः ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (रंभा) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ १—पत्र २७) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (हे ७ ३८) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बर्गपु न [बर्गपु] बर्गपु (अ ७ ३८ टी) ।

बहु धक [पचय] १ भरतना । २ पिड
क ये बचना । ३ परोसना । ४ हज्जा
धाम्पन करना । बट्टी (सिंह २३६) ।
कचक बहुज्जमाय (घोर) ।

बहु वि [बुध] १ बहूय योजनाकार (यम
१६ धीन उवा) । २ धरतीय बुद्धा बुद्धा ।
३ बुद्ध । ४ धर्माय कल्प । ५ धर्माय ।
६ बुद्ध । ७ बुद्ध बहूय (हि २ २६) ।
८ म, बर्तन, बुद्धि बहूय (युध १ ४
२ २) । बहुर [बुर] [बुर] ये
मन्त्र (धोष ४१) । यम । सख, लेख, लेख
[लेख] कर्मा-विशेष (छाया १ १—यम
३८ स १ ३ धर्म ११ डि) केयो कल्प
सङ्ग । केयो वल विधि = बुद्ध । 'विद्वद्
पुं [विद्वत्] पर्य-विशेष (डा १) ।

बहु दुन [कर्मन्] बह, मारी छाया 'पकि-
कोस्य बहदा बदा मयतोमयमिच्छी बहो'
(छाया ११५ मुर १ ४ मुदा ११) 'बहु'
(डा २) । बाहज न [पचन] बुद्धा-
विधि को घाते में बुद्धा 'पर्यवेष्टुवाङ्ग-
बहाव्यपकणलपुद्गाह' (दुम १११), को
बहुनाम्येहि बहव्यपेहि बहव्यपेहि
(बर्मा १२१) ।

बहु दुन [बे] १ ध्याय, पुनरायी में 'बाधयो' ।
'पचमयु इति धर्मिना मोहा ह्याह निविधि'
बहु' (मुदा ४१६) । २ पुं धर्मि, पुनरायी
पुनरायी में 'बद्धो' । 'यमय धमकपयवि
पूला बहो वं हंदि' (मुदा ४४२) । ३ मोहक
स्मिता-पुष्क नीदा, 'बहुवपय' (यम १२,
१—यम ७५५) । ४ पाठ-विशेष बाही
बही (पद्य २ १—यम १४४) ।

बहु पु [यन] बह-विशेष (यम १७ टी) ।
'बहु पु [यन] बहदा (दुम) । केयो बहु (हि
२ १४ धर्म बह) ।

बहुत देहा बहु = ह्य ।

बहुत १ केयो बहुय = बर्तक (पद्य १
बहुता) । २ यम विना १ ७—यम
५२, यम २, २ १ २३५ ४१) ।

बहुय देहा यत्तन (यम) ।

बहुय देहा बहना (यम) ।

बहुय न [कर्मन्] कार्य, छाया (ध्याय
ध्याय) ।

बहुय देहा बहु = ह्य ।

बहुय न [बे] १ धर्म खरी । २ कल
अथ वा एक छह का बहिषास (हि ७
५६) ।

बहुय देहा बहु = ह्य (यम १ २ १२) ।

बहुय पु [वर्तक] १ पकि-विशेष, बहुर (युध
१ २ १ २ छाया) । २ बहम के के केने
का एक छह का बहुर का बहा ह्या पोष
विधीय (युध १) छाया १ १८—यम
२११) ।

'बहुय देहा बहु (यम) ।

बहु की [बे बहम] केयो बहु = कर्मन्
(हि ७ ११) ।

बहु की [बाधो] बह कना (युदा) ।

बहुय छक [बर्तय] बह्याय काम में
लयाया । बहुय (यम) ।

बहुय न [कर्तन] बह्याय कार्य बहना
(यम) ।

बहुय न [वर्तक] बह्यायना, प्रवर्तक
(यम काया १ १७—यम १ १२) ।

बहुय न [वर्तक] बह्यायना, प्रवर्तक
(यम १) ।

बहु की [बहि] १ बही दीपक में कल्पेबाही
बाही । २ छाया बाह में पुण्या लपने की
लकी वा छाया । ३ खरीपर छाया बाह्य एक
तख्त वा लेप । ४ लेख बिकना । ५ कल
पीछे (हि २ १) । केयो बहि विधि ।

बहुय वि [बहि] १ परिचित (हि २,
२७) । २ बहि (यम २१६ टी) । ३ बहूय
कोष (पद्य १ ४—यम ७५५ वं दु १) ।
४ प्रवर्तक (यम) ।

बहुय न [वर्तक] केयो बहि (यम
२१७ नाय—छाया २१ स २३६) ।

बहुय वि [बे] बहिषास (हि १४) ।

बहुय वि [बे] बहूय निमा ह्या, विधा ह्या
पुनरायी में 'बह्ये' 'बहिषास बाहिषासि
लोप' (म ११४) ।

बहुय न [बे] यम-बर्त (हि ७ ४) ।

बहु की [बर्त] केयो बहि (हि २, १) ।

बहु की [बहु] बहूय 'यम न बहिषासो
पहिषास एकपुष्पकी यमि' (मुदा ३४४
१२४) ।

बहुय न [बे] बह-विशेष (हि १) । बह
पुं [बह] मन्त्र-विशेष (यम) । बही की
[बही] पिच्छा-विशेष (यम) ।

बहुय वि [बहुय] १ मोह बुद्धाकार
(यम) । २ पुं न बह्याय—यम के लान
एक छह का कर्म-यम (हि २ १ डाक) ।

बहु देहा बहु = ह्य (यम वा १२) हे
१ ५४ ११६) ।

'बहु देहा बहो 'बा-बहु' (यम ७५५ पच
२ १८ वि २१२ ४५५) ।

बहु पुं [बे] १ डार क एक देहा बह्याय के
एक यम । २ धर्म (हि ७ ५२) । ३ मन्त्र
की एक बहि (पद्य १—यम ४७) । ४
विशेष (मिह २) । केयो बहूय 'बहव्यप
पहसास' (मिह १५२) ।

बहु पुं [बट] १ बुद्ध-विशेष बहदा, बह का
पि (यम १—यम ११ वा १४५ कम्प) । २
न बह-विशेष, 'बहव्यपपहसास' (छाया १
१ टी—यम ४५५) । तयार न [बह्य]
कर्म-विशेष (यम १ २, ५५) । बह न
[पह] १ बुद्धाय का एक लप, की छह
बह 'बहो' नाम वे प्रसिद्ध (हि २ ११६)
१ एक मोहक (यम २१७ टी) । सावित्री
की [सावित्री] एक केो (कम्प) ।

बह केयो बह = यम । बह 'अधर्मि मय
बहो' (हि ७ ७) ।

बह केयो बह = यम 'यमलपयनबहव्यप
बहो' (यम ४ ७५) । १ ११ मुर १ ११; १ १७५ वा
११६) ।

बह न [बट] कर्म-विशेष बह (मिह
४५७) ।

पहय केयो बह = बट (यम) ।

पहय देहा पहन (वा २१७; यम बहा) ।

पहय न [बे] १ बह्याय । २ मिहपर
पि (हि ७ ४) ।

पहय वि [पहय] १ बाधन दुन (योधय
५२) । २ विधन पुनरायी बाहुर निमल
ध्याय हो बह (यम) । ३ बर्तन के ऊपर
का नाव बिकना देहा हो बह (यम १
१—यम २३) । ४ धर्म का या धर्म का

२०) । २ मनुष्य पदार्थन (ईसा १२, ४१) । ३ विपत्ति । ४ स्थापन । ५ बर्तन, हस्त । ६ वि श्रुतिमान् । ७ पदोपलब्धि (वर्ति १) ।

बलदा भो [पञ्चम] ऊपर देखा 'बलदा-
नक्षत्रा' वर्तन (उत्तर २१ १ भाग्य) ।
बलदा भो [पञ्चमी] भाग्य राप्ता (पञ्च १
१—नर २८ विर १२ ३ मृगश्रि ११ टी
गुण २१०) ।

बलदा वि [वि] १ मृगश्रि । २ बहु शिष्टि
(दे ३ २) ।

बलदाय भू [बलदाय] १ बल-विरोध,
बलदा काल (ग्रन्थ ४१ १) । २ वि
बल-बल-बल-विरोध (विपदा १ १ भू विर
बलदा (वर्तन २०१) ।

बलदा देवा मर्त्य (कर्म ३१ ग्रन्थ १२४)
वि ४८४) ।

बलदा देवा पद = बल ।

बलदा भो [वि] मृगश्रि-बलदा मृगश्रि-
(कर्म १ ४—नर ३ ७ २) । देवा
पञ्चम = (४) ।

बलदा भो [पञ्चमी] १ बल, बल (वि १ १०
गुण १ ३ ग्रन्थ २ गुण) । २ बलदा
हस्त (पञ्च) । ३ मृगश्रि । ४ मृगश्रि
हस्त-बलदा । ५ बलदा विपदा ।
६ बलदा का मृगश्रि । बलदा-मृगश्रि
गुण (दे २ १) स्पष्ट भू [नर]
कर्म ३१ (वि २ १) ।

बलदा वि [वि] बलदा मृगश्रि (१० ४१) ।

बलदा भो [वि] बलदा (१० ३१) ।

बलदा ०१ पद (पद ११२ १२ विर
११४) ।

बलदा वि [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

४६ विर १४२२) । १ ईसा मी टीका—
बलदा (वि ११४२) ।

बलदा वि [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

बलदा भो [वि] बलदा (ग्रन्थ ४१ १) ।

यद् देवो दय = दय । वरसि वयम् (जना
मया कम्) । भुक्ता वयसो (मग) । हेतु
वयसि (कम्) ।

सर्व देशो वय = वय (प्राप्त १२ पाठ—मिळ
५६) ।

वर्षिषा वेयो षड्विंसा (६५) ।

यदिग्रन्थिष्वपि [ये] नमिठ लीटा ह्या
(रे ७ १)।

बहुमग देखो बहुमग (माजा) :

पहल म [वे वार्ड] १ परम काल मे-
परा बुद्धि (वे ७ १२ वे ४ १) मुदा
१२२, एका व्यवसाय का ३ ३-परा १२१।
२ वृ. छत्रों मरक का बुद्धि मरकेन्द्र-
मरक-स्वान (वेने १२)।

महर्षिणा श्री [दे वासुदेवा] कृष्णाय नमः
 ब्रह्म कुर्वन् (मम २ ११—पञ्च ४१७
 पौनः) ।

पठ रेखो यद्वत् = वर्धय् । कर्म ब्रह्मसि (मुपा
१) ।

यत्न पुनः [पार्श्व] वर्म-रज्जु, चक्रा बद्धो
(? कर्मो बद्धो) (पार्श्व) रे १ दन्त पत्र
८१ सम्मत (७४)।

यस्य स्यो यिदु = बुद्ध (प्राप्त प्राप्त ७) ।

यद्वज्र न [यर्थन] १ वृद्धि वृद्धी (शाखा
१ १ कण) । २ वि वृद्धिवासा (उप
१७१: मृत्) ।

पद्यगिमा } ओ [यर्धनिद्य, नी] धर्मावर्णी
 पद्यमी } मयङ् (दे व १७) च, ४१ टी।
 पद्यमात्रं पुं [यर्धमान] १ मयवान् मयानी

(पिबो २ १५, १ सम ५१) सित-कल्प
पहि) । २ एक प्रसिद्ध विद्यापात्र (साच ६१
मिबार ७१ टी १५ गु ५) । ३ सन्तान-
रोहित पदार्थ कल्पे पर बहामा ॥ ४५ पात्र

(धृत सौप) । ४ एक समस्त विम-वेर
२ एक समस्त विम-प्रतिमा (पर ३६)
६ न. गृह-विहप (उप ॥ ३४) । ७ सम

एवमपि वा एक प्रेक्षा-मूह-मात्र-प्राप्त
(पञ्चम ८ १) । ऐशो पदप्रमाण ।
परमाणु १ १ [परमाणु] १ परमाणु

देवविष्णु (दा २ १—३८) । २ एक देव
विष्णु (देव १८) । ११ पात्र-विष्णु
६४

शराव (खामा १ १—पत्र २४ पत्र
१ २ १२)। ४ पुं पुरुष पर भाव्य पुरुष
पुरुष के अन्धे पर बड़ा हुआ पुरुष। ५

स्वस्तिक-पञ्चकः । ६ प्रासाद विधेय एक
तरङ्ग का मास (आषा १ १—पञ्च १४
टी—पञ्च १७) । ७ म. एक मास का नाम

अस्मिन् ग्रामे अद्वितीयमस्त्व पञ्चमे बटमाण्डपं
ति नामं ह्येस्वा' (घावम) । ८ वि कृता
मिमान्, अमिमानी बर्षित (घोष) ।

यत्प्रय वि [य] प्रबान्, मुख्य (रे ७ १२)।
यत्प्रार सक् [यर्घ्य] ब्रह्मा पुनरुत्ती मे
'नभारु'। बह्, यत्प्रारव (सहि १२)

संक्षेप ४६ ६ ८) ।
 यत्पुत्रिय वि [यपिउ] यदाया हुपा (चपि) ।
 यदाय सह [यपिउ - यपिउ] यदाय

देना । यथावेह, यथावीथि (कृष्ण) । कर्म
यथावीथि (रत्ना) । बहू यथायित (गुणा
२३) । संज्ञ. यथाविद्या (कृष्ण) ।

पद्मावण न [धर्षण, धर्षापण] ब्याई,
मम्भुस्यनिदेव (मधिका सुर ३ २४ पद्मा-
वणा १३३ १३४)।

वद्व्यापजिमा को [यघनिष्ठ, वर्धापनिष्ठ]
ऊपर देखा (चिरि १५१२)।
वद्व्यापय वि [यघर्क, वर्धापक] अपाई दे

वर्मा (मुर १२ ७६ व २७ गुण
१९१) ।
यद्वाचिष्ठि वि [वर्धित, वर्धापित] जिसको

बपाई दी गई हो वह (मुता १२२ १२३) ।
यदिअ वु [७] १ फाह नपुसक (३७
१७) : २ नपुसक-विशेष छोटी उम्र में हो

क्षेत्र के कर निष्पत्ति प्रणालीय कलावा गया
 ही यह बर्षिया (पत्र १ २ टी) ।
 पतिज क्षेत्री पतिजुअ = बुध (यति) ।

पडा धी [रे] प्रत्यय-प्रत्यय प्रत्ययक
प्रत्यय (रे ७ १) ।
पडासक } प्रत्यय [रे पडासक] वा-प्रत्यय

यय देवा यद्व - यय (युया) ।
साधय देवो ययय - ययय

बभू देपो यन्तु (धीर) ।

यज्ञ देवो घण्टा = बर्ण्य। बर्णेहि (कुमा
यव)। देव. यज्ञिउ (कुमा)। इ यज्ञिउ
(मु. २ १७ खण्ड १४)।

वृद्ध देवो वृष्ण = वरुण (मयः स्रवा मुपा १ १,
 सत १६ कम्म ४ ४ : ठा १ ३) ।
 वृद्धा देवी वृष्णय (कम्म भा ३१) ।

वसुधैव कुटुम्बकम् (उप ७१८ टी); सिरि
७२७) ।
वसुधैव कुटुम्बकम् (उप ७२७) ।

यस्मिन्नेव यस्मिन्नेव (एवम्) ।
यस्मिन्नेव यस्मिन्नेव (एवम्) ।
यस्मिन्नेव यस्मिन्नेव (एवम्) ।
यस्मिन्नेव यस्मिन्नेव (एवम्) ।

‘सम्बन्ध कथिया मित्र नमरे ह्यु प्रविष्टि वाङ्मनो
पुष्ट’ (वर्ष १६)। २ सात रेंव की मिट्टी
(बी ३)।

बम्हि देखो यण्हि = बम्हि (उत्तर २२ १३)।
 बम्हि देखो यण्हि = बम्हि (बम्हि)।
 यण्हि देखो यण्हि = यण्हि (यण्हि)।

यस्य सक [त्वच्?] इत्या धातुद्वयम्
कृता । यस्य (धातु) १२१) ।
यस्य वृ [यप्] १ निबन्धन-विशेष संज्ञित

एक प्राप्त जिसकी पत्रबान्दी निम्नपा है
(ठा २ २—पत्र न ४)। २ पुन
किता कुर्ब कोट (वी ८)। ३ बेदार पठ

‘येहो बप्पी य ठी’ (पाद्य) । ३. उन्नत मू-

यस्य केश-जमोत 'वप्याणि वा ध्वजहाति
वा पाण्यणि वा (धारा १ १ २ ०)।
वप्य नि [६] १ वृ. कृत। २ वप्यान्,

[illegible]

सप्यगायत्री की [अप्रमयवी] अंगुली का एक विजय-संकेत, जिसको राजधानी का नाम

मयराजिता है (छा २ १—पत्र ८ दक्ष) ।
 यथा श्री [मय] उक्त धू-भाग देवदा
 ऊँची पानी (मय १२—पत्र १११) ।

यण्या की [श्या] १ भवराज नमिनादजी की
यांना या भाग (संख्या १५१) २ — ३

२. प्रभू ११४)। मंत वि ['बन्'] बन्ती
(भाषा २ १ १ १)।

पय पुन [पयम्] १ उग्र प्रभु (ठा १,
१ ४ ७१ गा २४२ उर पु १८ कुमा-
प्रभु ६८ भा १४)। २ पत्नी (बदर उर
पु १८)। 'स्य वि ['स्य'] वल्ल मुवा
(मुवा १ ११)। 'परिणाम पु ['परिणाम']
ब्रुता ब्रुता (वि ४ २१ पाय)।
पय पु ['पय'] पयल, पाक (भा २१)।
पय देवो पय=पय (१४२, भा २१
बदर कम्प से १ २४)।

'हय देवो पय=पय (कुमा)।
पयंग न ['वि'] पय-विपय (वि १ ११८)।
पयंतवि वि ['वृत्तपयंतवि'] भाव से विरो-
धित (वि २ १४)।

पयंस पु [पयस्य] क्षमल क्षमलता विम
(अ १ १-पय ११४ हे १ २१) मय।
पयंसि देवो पयंसि = पयसि (पय)।
पयंसि की [पयस्या] पयसी लक्ष्मी (कम्प)।
पयस पु ['वि'] पयसा पयसा (वि ४ १२)।
पयस न ['वि'] पयसि, मुद्रा। २ शय्य
विद्युता (वि ४ १२)।

पयस पुन [पयस] १ पुन पुन 'पयसो
भरण' (प्रक १४ वि ११८ मुर २ २४१,
१ ४० प्रभु ६२)। २ न, कयल लक्षि
(वि २ ४६४)।

पयस पुन [पयस] १ पयस, कयल 'पयसा
भरण' (वि १ ३१ पय २ मुर १ १४४
प्रभु १४१ ११४ ११; कुमा)। २ पयस
पयसि देवता का योग्य ध्याकर-प्राप्तोक्त
प्रत्यय (पय २ २ टी-पय ११८)।

पयसि वि [पयसोय] १ पयस, कयसोय
पयसि 'पयसि पयसि पयसि' (कम्प
= मुर २ १ १)। २ पयसोय (मुवा
१)। ३ पयसोय, पयसोय से
पयस (वि १)। ४ न, पयस राव (वि ४
११)। ५ पयस, कयस (वि ४ ११)।
पयस (वि ४ ११)।

पयस वि ['वि'] पयसि (वि ४ १४)।

पयस देवो पयस देव (कम्प उर पयसोय
न, पयस ११, पयस पयस)।

पयस देवो पयस=पयस (वि १ २२)।

पयस देवो पयस देव (वि १ २० टी)।

पयस वि ['वि'] १ पयस, पयस (वि ४
८४)। २ पु पयस कोलाहल (वि ४
८४ पाय)।

पयसि की ['वि'] लता-विरोध मित्राकपे लता
(वि ४ १४ पाय)।

पयस देवो पय=पयस, 'पयस' (पाषा
१ ४ २ २)।

पयस देवो पयस (वि १४४) मोह ४०
पयस ४४ स्वय ४४)।

पया की [पया] १ विपय, विपय। २ मेघ,
पयसी (भा २१)।

पया की [पया] १ पयसि विरोध। २ मेघा
पयसि (भा २१)। देवो पया।

पया की [पया] १ पयसि विरोध कय को
कोकने के लिए रज्जुबद्ध पय पयसि कलने
का कार्य। २ प्रेरक-कल (भा २१)।

पयस ['वि'] १ पयसि कयल संभव कयल।
२ पयसि कयल कयल। ३ पयसि
कयल। ४ पयसि कयल। पयस (वि ४ २१४
मुन ११ प्राप्ता पय)। 'पयस' (मुन
=)। 'पयस' पयसि (भा १२)।
पयसि पयसि (वि ४ ११)। ५ पयसि
(पयस २८ १ ४)।

पयस [पयस] १ पयस कयल की पयस
कयल। २ पयस कयल। पयस, पयसि
(पयस मुन ४४ 'के सुपि पयस' (मुन
१ १)। पयस, पयसि (मुन ४४)।

पयस पु [पयस] १ पयसि पयसि मुनस (वि ४८
स्वय ४१ भा ४ ४ ४० ४०६, पयसि)। २
पयस, पयसि पयसि पयसि (कुमा भा
१२ २४४ मुन ८ पयसि)। ३ पयसि
पयसि (कम्प महा कुमा प्रभु ४२ १०४)।
४ पयसि (भा १२ कुमा ८)। ५ न, मुन
पयसि, पयसि 'पयसि पयसि' (वि
१ १४) प्रभु २२ १४ १ ४)। पयस पु
['पयस'] १ पयसि पयसि पयसि का प्रय
पयसि (पय १२२ कम्प)। २ एक पय
पयसि (वि ४ १)। ३ पयसि
['पयस'] एक लीन (अ १ १-पय १२२-
४८ पय)। 'पयस पु ['पयस'] एक
पयसि पयसि, पयसि पयसि का पयस

पयसि (महा)। पयसि पु ['पयस'] पयसि
(पयस १४-पय ४२१ पय, पयस
पयस)। मयस पु ['मयस'] एक देव
पयसि (वि ४ १४)। मयसि की ['मयस']
पयसि पयसि पयसि पयसि पयसि पयसि
पयसि (मुन ४ ४)। पयसि पु ['पयस']
पयसि पयसि पयसि के लिए की पयसि पयसि,
पयसि पयसि कयस देव को पयसि (पयस
१ ४-पय १२१ पयसि) स १ १ मुर
११ १८ मुन ४२)। पयसि ['पयस']
पयसि पयसि (पयस २ १-पय १४८)।
पयसि पुन ['पयस'] पयसि पयसि का एक
पयसि (पयस १ ४-पय १२४ पयसि
२४)।

पयसि देवो पयसि। पयसि की ['पयसि']
पयसि (कुमा)। पयसि देवो पयसि 'पयसि-
पयसि' को देव पयसि पयसि पयसि' (मुन
१८२)।

पयसि वि ['वि'] पयसि-विरोध (वि ४ ४६)।

पयसि पु ['वि'] पयसि पयसि पयसि पयसि
(वि ४ ४८ पयसि)।

पयसि देवो पयसि=पयसि।

पयसि वि ['वि'] पयसि (वि ४ ४४)।

पयसि देवो पयसि=पयसि पयसि पयसि पयसि
पयसि पयसि (वि ४ ४२ स्वय २ १)।

पयसि पु ['पयस'] १ पयसि पयसि पयसि
२ पयसि पयसि (मुन ४४)।

पयसि पु ['वि'] १ पयसि पयसि पयसि
(पयस १)। २ पयसि, पयसि (वि ४ ४६
पयसि)। ३ पयसि पयसि, पयसि पयसि
पयसि पयसि पयसि पयसि पयसि (वि ४ ४६
पयसि)। ४ पयसि (पा ४१)।

पयसि की ['वि'] पयसि पयसि पयसि
पयसि (पयस १)।

पयसि न ['पयस'] पयसि-पयसि विरोध
पयसि (वि ४ ४४)।

पयसि पु ['पयस'] १ पयसि, २ पयसि। १
पयसि पयसि पयसि (वि ४ ४४)।

पयसि की ['पयस'] पयसि (वि ४
४४)।

करा न [करक] यन्मुख पाव कीर्ती
कल (पुष्पा २, १ ११ १) ।

करा दु [वे] बन्धन-विरोध (पु १२४) ।

करा [की] [वे] परा [की] १ टीकाटी, कीट
करा [की] विरोध, वीर्यहीन १ १ बंधन-प्रवर

कन्ध-विरोध (पुष्पा १२ १० ५४) ।

करा न [करा] १ सदाई, विहा-हो-बन्धन
(पुष्पा १२४ पु १ १२४ ५१) । २ छ
निष्ठा (पुष्पा) । ३ पुन लेन (पुष्पा १) । ४

आकार पिना (पा २४२) । ५ स्त्री-पद,
कल (पाव) । ६ को कीट-बन्धन । ७ दु,
केट-विरोध एक धार्य देना 'बहुराज बन्धन'

बहुराज बन्धन' (पुष्पा ११ टी १६) के को
बन्धन ।

करा न [करा] बुरा विरोध (पुष्पा) ।

करासि (पु) के को बारापसी (पि १२४) ।

करा की [करा] १ कल की एक गली
बन्धन (पाव) । २ बन्धन के की आधी
पुनबन्धन (पुष्पा ११ टी) । के को बन्धन ।

करा की [करा] १ ५ ।

करा वि [के] १ पीत । २ पतिव्रत । ३ पतिव्रत,
बन्धन (पु) ।

करा की [करा] १ पुन, पुनो पावा पिना
१ ५, पुना २२२) ।

करा दु [करा] कल की कलेबाला विहा का
आरक पुन (पु १, ११२) ।

करा दु [के] कल-विरोध एक उर का
बन्धन (पु १ ११) ।

करा वि [करा] १ पुन बन्धन विहा, रक
(पाव पु १ ११; १ १२२, पुना ११
ना २२२) । के दु (पि १ पि) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

करा की [करा] १ पुन बन्धन की पावा
(पाव) ।

बह एक [बम् हन्] मार मारता । बहैव
बहैव (उत्तर १० १: १: ५ ५२५) बहोव
५१) । कर्म बहैवर्तित (द्वय २१) । बह-
बहैन, बहमाय (पदम २१ ७७) मुना
१११ मायक १११) । बहन्- बहिनैव
बहन्माय (पदम ५१ २) पाया) ।
बह बहिनैव (महा) ।

बह बह [बम् हन्] १ गौडा कण्ठ । २
अक्षर कण्ठ । ३ बहैवक (पदम १ १—
पद १) ।

बह (अप) देवो हरिस = कृत् । बहनि (प्राक्
१२१) ।

बह पुंस्त्री [बह] बाप हत्या (ज्या कुपा
हे १ ११३ प्रत्यु १११ १११) । की हा
(मुच १ १, ५ १७) । अरी की [करी]
विद्या-विद्येय (पदम ७ ११७) ।

बह पुं [बे] १ कर्म पर का अक्षर । २ बह
बाप (हे १ ११) ।

बह पुं [बह] १ बुध-स्वराय वैध वा बन्ना
(मिना १ १—पद २७) । २ पटीमात्र, पापी
का प्रत्यय (हे १ ११) ।

बह पुं [बम् हन्] बहूत व्यभि का अक्षर (मुच
१ १ २ ११५ उत्तर १ ११) ।

बह देवो बह = पतिव (हे १ ११ १ १५
कुमा) ।

बहन्म वि [बे] सर्वत्र (पद १७७) ।

बहना वि [बम् हन्] बाह्य द्विक मार
कालैवमा (ज्या ५ २११ कुपा २१५
अप ५ व्ययक २१२ का २३) ।

बहना वि [बम् हन्] बाह्य द्विक कालैवमा (अ
२) ।

बहना पुं [बे] बन्धीय बहना (हे १ १७) ।

बहना पुं [बे] बन्धीय बहना (हे १ १७) ।

बहना न [बम् हन्] बह, बाह्य हत्या व्ययको
अन्वीयकमहृत्तमि (मुपा ५२५, बर्हिष
७१) मोक्ष १ १: मद्रा बायक १५५ २१७
का ५ ११५ मुपा १ ५५५ ५१ ५११) ।

बहना न [बम् हन्] १ अना (बर्हिष ७२) ।
१ पौत बहना बाह्य (बापा ५५ १११
कुमा ११) । १ अक्षर बाह्य बाह्य (उत्तर

२७ १५ मुपा १५२) । ४ वि बहना कर्णे
बन्ना (हे १ १ ११) ।

बहना (ली) देवो फाय = प्रकृत (प्राक् १७) ।

बहना (अप) देवो वसन्त = बहना (महि)
बहनाया की [बहना] विहा (सम्मा १
२—पद ११) ।

बहना की [बहना] बह बाह्य, हिया (प्राक्
१ १—पद ११) ।

बहना पुं [बम् हन्] एक बहना-स्थान 'अन्वी
प्राक् विष्णुवायुदे ह्य विष्णुकी वि (७५)
ह्यस्य य' (हेमन् २) ।

बहना देवो बहना = बहना (मुच १ ५ ५५
पदम २१ ५५५ बायक १ ५५५) ।

बहना की [बे] बहनाय (१५५) ।

बहना देवो बहना = बहना ।

बहना एक [बाह्य] बहना कण्ठ । कर्म,
बाह्यकण्ठ (बायक २१५ टी) ।

बहना वि [बम् हन्] मलमात्र ह्य (बा
२५) ।

बहना वि [बम् हन्] बहनाय (हे १, १) ।

बहना वि [बम् हन्] विमिष (पद १,
५५) ।

बहना वि [बम् हन्] बहना कर्णा ह्य (बन्ना
११२) ।

बहना वि [बम् हन्] विमिषा बहना कर्णा
ह्य (बहना १५५ पदम १, ११२,
विना १ १५५ का २१, २५) ।

बहना वि [बे] बहनाय विमिषा
'देवो बहनाय विमिषा' (ज्या) ।

बहना देवो बहना (पद १) ।

बहना एक [बम् हन् + बह] १ पर
प्राक् या पर-स्थी हे संयोग कर्णा । २ एक
मिमा-अप कर्णा । बहना बहनाय (उ
५११) ।

बहना पुं [बम् हन्] १ पर-स्थी या
पर-स्थी हे संयोग (उ ५११) । २ व्याकरण-
प्रतिष्ठ एक हे-स्थी (बर्हिष ५११) ।

बहनाय की [बे] बहना = बहना ।

बहना की [बे] बहना, हिया विमिषा की
विमिषा (सम्मा १५५ मुपा १ ५, १ १५
१५५ १११) ।

बहनाय की [बे] बहनाय, प्रत्यय-
विमिषाविमिषा विमिषा हे विमिषा (बर्हिष
५) ।

बहनाय पुं [बे] बहनाय, प्रत्यय-
विमिषा (पदम) ।

बहनाय वि [बे] प्रत्यय, प्रत्यय-विमिषा
विमिषा (हे ५ ५२५ कुमा ११५
११५) ।

बहना पुंस्त्री [बे] विमिषा, प्रत्यय-विमिषा
(हे ५ ११) ।

बहना देवो बहना (हे १ ५ पद १) ।

बहनाय की [बे] बहना, विमिषा (हे
५ ११) ।

बहनाय की [बे] बहना-विमिषा विमिषा
विमिषा (हे ५ ५१) ।

बहनाय पुं [बे] प्रत्यय-विमिषा विमिषा-
विमिषा (हे ५ ५१) ।

बहनाय की [बे] विमिषा विमिषा (हे ५ ५१) ।

बहनाय (अप) की [बम् हन्] बहना बहना
बहना की बहनाय (मिना) ।

बहनाय की [बे] बहनाय (हे ५ ५१) ।

बहनाय की [बे] बहनाय (हे ५ ५१) ।

बहनाय की [बे] बहनाय (हे ५ ५१) ।

बहनाय की [बे] बहनाय (हे ५ ५१) ।

बहनाय की [बे] बहनाय (हे ५ ५१) ।

बहनाय की [बे] बहनाय (हे ५ ५१) ।

बहनाय की [बे] बहनाय (हे ५ ५१) ।

बहनाय की [बे] बहनाय (हे ५ ५१) ।

बहनाय की [बे] बहनाय (हे ५ ५१) ।

बहनाय की [बे] बहनाय (हे ५ ५१) ।

समा 'अमृत' लगेले कासकहले
कामेणु बा' (हि १७ मृग १ ४ २
१३ मृग २ १ वन १) । ७ पाव-पुति
(अ २८, २८) ।

बाअड पुं [दे] मुक लोहा (पह) ।
बाअड देवो बाअड = व्यापृत, 'रक्षाप्रदा
दर्श' निर्धनि पुन सवह दाया (या ४) ।
बाइ वि [वाविम] १ बातेनेनाला वरु
(याबा मन अ ४ ४) । २ बाव
कता छाबो में पूनवस का प्रतिपावन
कमेनाला (सम १ २ विदे १७२१ मृग
४४ वेद १२४, समस्त १४१ का १) ।
३ शारीरिक लीनिक छर बने का अनुयायी
(हा ४ ४) ।

बाइ वि [वाविम] बावक धर्मिकायक कल-
नामा (विदे ८७४) ।

बाइ देवो बावि (पज) ।

बाइ वि [वाविम] कमान-सेरानी (बीप
म २४ पवि) ।

बाइ वि [वाविम] १ पविठ पडाया
हुवा (अ २७ १४ विदे २३३८) । २
पडा हुवा 'माममि बाइर छर' (मुवा
२७) 'मामि कि बाइर छर' (हि
२, १४६) ।

बाइ वि [वाविम] १ बाट से उत्पन्न
बानु-कम (रोष धर्मि) (अ १४५ १ १—
पम ॥ १७ १६) । २ बाइ से जुना
हुवा बाउ-रोषनाला (विदे २३३८ टी पम
११) । ३ लकबना, 'पपलमपपलमना-
हल्ल सीधे पमोसि निमर' (अ) 'पिपल
पुधि पसी निममो बाइरहु सुमसो' (धर्मि
४६) । ४ पुं मनुसक का एक रोष (पुम
१२७) बर १) ।

बाइ वि [वाविम] १ कनामा हुवा (पा
१२७ जुना २ ८ १६ ७) । २ कविता
धर्मिकायक, वरुछेड निमिच्छा बाइया
कम्हा' (स २१) ।

बाइ न [बाय] १ बावा बाविन (कम) ।
२ बावा बमो की कना (सम ४४ धीप) ।

बाइ वि [बाय] बा हुवा बमा हुवा
'पुनपुनपुनपुनपुनपुनपुनपुनपुनपुन' (सुर
२, ७१) ।

बाइराग न [वि] बैल कुलाक मेटा (अ
१६७ टी ६ ६ २६) ।

बाइरागो } बी [वि] बैल का पाव
बाइरागी } कुलाक (अ ७ पण १७—
पम २२७) ।

बाइरा [दे] देवो बाइया (अ १०११ टी) ।

बाइरम देवो बाय = बावपु ।

बाइरम देवो बाय = बावपु ।

बाइरम न [वाविम] बाय बावा (मृग ११
अधि) ।

बाइर वि [व्याविम] विपय से वरुमल
कम-मुसल पका हुवा (विदे ८३११) ।

बाइर वि [व्याविम] १ उपरिग जलित ।
२ मक देहा (अ ११ ४—पम ७ ४) ।

बाइर देवो बा = म्ये ।

बाइरम देवो बाय = बावपु ।

बाइरम देवो बावि (पज) ।

बाउ पुं [वायु] १ पम बाउ (जुना) । २

बाउ-शरीरनाला जीव (मृग ४ २ ११) ।
३ शरीर-विरोध (अ ११) । ४ शरीर-विरोध के
पद-विरोध का धर्मिपति देव (अ २, १—
पम १ २) । ५ लान-विरोध विरोध-
कम का धर्मिपति देवता (अ २ १—पम
७७ जुना १ १२ टी) । आम पुं

[कम] १ प्रमय पम (अ १ १—पम
१४१) । २ बाउ शरीरनाला जीव (अम) ।

कम पुं [कम] बाउ शरीरनाला
जीव (अ १ १—पम १११ वि १३३) ।

कम देवो आय (बी ७ वि १३३) ।
कुमार पुं [कुमार] १ एक देव-बावि
कमनाति देवो की एक कमातर बावि (अम) ।

२ हनुम का पिता (पम ११ २) ।
कमिया की [कमिया] बाउ-विरोध
नौक बाउनाला बाउ (पण १—पम २६) ।

बाइर देवो कमिया (अम) । कम देवो
आय (पज) । 'तरबहिंसग पुन [कम]
शरीर-विरोध एक देव-विवाग (अ १) ।

पवेस पुं [पवेस] गमाय मरुता-बावाय
(मोम १६४) । 'पवेस' बावि [प्रविज्ञान]
नाम के व्यापार से कमेनाला (अम) । 'मृग
पुं [मृग] अमना गमावीर का एक
कउपार—जुन शिष्य (अम) ।

बाउ पुं [दे] मृग, कम (दे ७ २१) ।

बाउ वि [प्रापु] १ प्रापु-विरोध कम
हुवा (अ २ १ पम ११) । २ कपड,
बल (अ १ १—पम २६१) ।

बाउ पुं [दे] १ विट । २ बार उपरि
(दे ७ ८५) ।

बाउपुमिया की [बाउपुमिया] अम-
परिपरी की एक बावि हुप से कमेनाला

कम की एक बावि 'बाउपुमिया' मृग
बाउपुमिया (पम ११) ।

बाउपुमिया पुं [बाउपुमिया] धनविषय
पम 'बाउपुमिया' (पम ११) ।

बाउपुमिया पुं [बाउपुमिया] धनविषय
पम 'बाउपुमिया' (पम ११) ।

बाउपुमिया पुं [बाउपुमिया] धनविषय
पम 'बाउपुमिया' (पम ११) ।

बाउपुमिया पुं [बाउपुमिया] धनविषय
पम 'बाउपुमिया' (पम ११) ।

बाउपुमिया पुं [बाउपुमिया] धनविषय
पम 'बाउपुमिया' (पम ११) ।

बाउपुमिया पुं [बाउपुमिया] धनविषय
पम 'बाउपुमिया' (पम ११) ।

बाउपुमिया पुं [बाउपुमिया] धनविषय
पम 'बाउपुमिया' (पम ११) ।

बाउपुमिया पुं [बाउपुमिया] धनविषय
पम 'बाउपुमिया' (पम ११) ।

बाउपुमिया पुं [बाउपुमिया] धनविषय
पम 'बाउपुमिया' (पम ११) ।

बाउपुमिया पुं [बाउपुमिया] धनविषय
पम 'बाउपुमिया' (पम ११) ।

बाउपुमिया पुं [बाउपुमिया] धनविषय
पम 'बाउपुमिया' (पम ११) ।

बाउपुमिया पुं [बाउपुमिया] धनविषय
पम 'बाउपुमिया' (पम ११) ।

बाउपुमिया पुं [बाउपुमिया] धनविषय
पम 'बाउपुमिया' (पम ११) ।

बाउपुमिया पुं [बाउपुमिया] धनविषय
पम 'बाउपुमिया' (पम ११) ।

बाउपुमिया पुं [बाउपुमिया] धनविषय
पम 'बाउपुमिया' (पम ११) ।

बाउपुमिया पुं [बाउपुमिया] धनविषय
पम 'बाउपुमिया' (पम ११) ।

बाहिम पुं [वि] म्मु-विरोध परस्मैक संज्ञा (२७ २७)।

बाहिम पुं [वि] इति कीट (२७ २९)।

बाही की [वि] इति बाहू 'बनारसे काष्ठिय कटपि बाहो' (कुत्र २२, वे ७ ४३; २७ ५२)।

बाहो की [वाटा] स्तोत्रा, उपान (बर्गव ४१)।

बाहि { पुं [वि] बहिष्क-उहाय वैश्य-मित्र बाहिज } (२७ २३)।

बाय उक् [वि + मन्] विरोध मन्ना— मन् होता। बायह (?) (भात्ता १२२)।

बाय वि [यान] बन में उदत्तल बन-संस्मयी (मौन) सम १ ३)। पश्य प्यत्त पुं [प्रत्य] बन में उदत्तलता वायव्य लुतीय वायम में स्थित प्रत्य (मौन) उप ३७७)। मन्त मन्तर मन्तर पुंकी [व्यस्तर] रेहो की एक बाहि (मन्त अ २ २) सुर १ १३७ दीक्षा की २४ महा वि २३१)। की री (पश्य १७—पय ४२६ नीम २)। बाहिज की [बाहिज] ऊप विरोध (बाहि ३३)।

बाय रेहो पाय = पाय; बाय न [पाय] पीने का यन्त्रा (वि १ २)।

वायय पुं [वि] वयम-कट, कम्पन वयम-सत्ता रिक्तो (२७ २४)।

वायर पुंन [वायर] १ कम्पन, कपि वयंठ (पश्य १ १ पाय)। २ विवाह-कृत्य की एक वंश। ३ वयन-वयं में कम्पन मन्मथ (पयम १ १)। वरी की [पुरी] किम्बन्धा समक एक प्राचीन प्राचीन वरी (वि १४ २)। 'कट पुं [कट] बायर वंश का कोई भी उमा (पयम २, २३२)। वीर पुं [वीर] एक वीर (पयम १ १४)। जय पुं [जय] हृदय (पयम २३ ४३)। यय पुं [यय] वृद्धि राजकन का एक वेषपति (वि २, ४१; १, ४२)। रेहो वायर।

बायवि पुं [वायेन्] बाय-वरीय पुष्यो वा उमा वस्ती (पयम २, ४)।

बायवाय पुं [वि] दय पुनर (वि ७ ६)।

बायवा रेहो पायवा वायवा = उमाह (वि १४२)।

बाया रेहो वायवा = वायवा। वायि पुं [वायि] वायम-कट करनेवाला वायु, रिक्त 'एहो जिय वा कीज बायम-विरोध उहो पुक कछ' (उप १४२ टी)।

वायारसी की [वायारसी] वायम-कट की एक प्राचीन वरी की वाय कट 'बनारस' नाम से प्रसिद्ध है (वि २ ११९ छाया १ ४ उमा एक उमा; वयमि २, वि १८२)। वायि रेहो वायि = वयमि (वयि); उमा 'पुच पुं [पुच] वैश्य-कुमार, वयमि का वयम (कुत्र २२, वय २२३; ४ ४ विरि १८४ वयमि १ ४)।

वायि की [वायि] रेहो वायि (वि ७)। वायिज पुं [वायिज] १ वयमि वायिज वैश्य (वा १२) सुर १ २४८, १२, २२ नाट—मुक्ता २३; वयु: विरि ४)। २ एक वयम का वयम (उमा वंश विवा १ २)। वायिज (वय) रेहो वायिज (सह)।

वायिज रेहो वायिज = वायिज (वा २२२ विरि ४ सुवा २२२)।

वायिजय पुं [वायिजय] वयमि, वैश्य वायिज (पयम काय ८६१ वा २३१ का सुवा २२२ २७३ प्रामु १२२)।

वायिज न [वायिजय] १ व्यापार, वेतार (सुवा १४४ पवि)। २ एक वयम वयि-वयम का वयम (कय)।

वायिज की [वायिजय] व्यापार 'वायिजय का वायिजय वयिजय' (छाया १ १२)।

वायिजय वि [वायिजय] वायिजय-कट व्यापारी (वयि)।

वाणी की [वाणी] १ वयम वायम (पयम)। २ वायम-कट, वायम-कट की (सुवा वयि ४)। ३ वयम-विरोध (विप)।

वाणीय रेहो वायिज (कय २२३)।

वाणीर पुं [वि] वयम वयम वायु का वय (वि ७ २१)।

वाणीर पु [वाणीर] वयम-वयम वय का वय (पयम वा २२२)।

वायु लुज पु [वि] वयिज वैश्य 'एहो रेहो वयम-कट वायु वयम-कट' (उप ७२८ टी)।

वाय रेहो वाय = वाय (अ २ ४—पय २६)।

वायि रेहो वाय = वायि (पय १ वायि १—पय २४ वयम ७२२)।

वाय रेहो वाय = वाय (पय)।

वायि रेहो वाय = वायि (वय)।

वायर रेहो वायर (विवा १ २—पय ३६; विरे ८६३; सुवा ११८) 'वयम-वयम-वायि न वायि वयम-विरोध विचित्र' (वयमि १११)।

वायि रेहो वायि। वायिज (पय)।

वायि रेहो वायि = वायिज (नाट—वेणी १७)।

वायवा की [व्यावाया] विरोध वीजा (छाया १ ४ वैश्य ३३३)।

वयम-कट [वयम] वयम-कट का कट। वयम, वयम-कट (वायि १४६)। वयम-कट वयम-कट (वयम वयम)।

वयम वि [वि] १ वयम (वि ७ ४७)। २ वायम-कट (वय)।

वयम वि [वयम] १ वयम, वयम (अ ४ २—पय २१९ सुवा १४ २ वयम)। २ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ३ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ४ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ५ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ६ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ७ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ८ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ९ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। १० वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ११ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। १२ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। १३ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। १४ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। १५ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। १६ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। १७ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। १८ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। १९ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। २० वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। २१ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। २२ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। २३ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। २४ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। २५ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। २६ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। २७ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। २८ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। २९ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ३० वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ३१ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ३२ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ३३ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ३४ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ३५ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ३६ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ३७ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ३८ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ३९ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ४० वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ४१ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ४२ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ४३ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ४४ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ४५ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ४६ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ४७ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ४८ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ४९ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ५० वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ५१ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ५२ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ५३ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ५४ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ५५ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ५६ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ५७ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ५८ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ५९ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ६० वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ६१ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ६२ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ६३ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ६४ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ६५ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ६६ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ६७ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ६८ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ६९ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ७० वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ७१ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ७२ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ७३ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ७४ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ७५ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ७६ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ७७ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ७८ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ७९ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ८० वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ८१ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ८२ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ८३ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ८४ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ८५ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ८६ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ८७ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ८८ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ८९ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ९० वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ९१ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ९२ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ९३ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ९४ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ९५ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ९६ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ९७ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ९८ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। ९९ वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)। १०० वयम-कट वयम-कट (वायि १४६)।

हाथ, पैर आदि घनक छोटे हैं और कड़ी
पेट आदि घुंघरी या फूलों की तरह होती है (आ
१—पृष्ठ १२७ पृष्ठ १२८; कर्म १ ४)।
२ बि ऊँच आकार के टोपीजाला लुप्त
कर (पृष्ठ ११ से २८ पृष्ठ)। श्री श्री
(श्री श्री छाया १ १—पृष्ठ १७)। ३ पु
नौकरी का एक दस्ता (पृष्ठ २८)। ४
कैप-रिपोर्ट एक फल-फल (पृष्ठ १९७)।
५ न कर्म विशेष जिसके ऊपर से बायल
टोपी की शक्ति हो गई कर (कर्म १
४)। कड़ी श्री [पृष्ठ] कैप-रिपोर्ट
(पृष्ठ १२)।

सामयिक बि [बि] नु वस्तु—सामयिक को
फिर से प्रकट करनेवाला (बि ३२)।

सामयिक श्री [बि] दोबो कठ की बाध (बि
३ २)।

सामयिक न [सामयिक] एक ठोप न
सामयिक हाथ आदि धर्मों का एक कुरे से
नौकरी (छाया १ १—पृष्ठ ११ कर्म)
(पृष्ठ)।

सामयिक पु [बि] बिह, बुद्ध (बि ३ २४)।

सामयिक पु [सामयिक] कर्मों के समक
(पृष्ठ पृष्ठ)।

सामा श्री [सामा] बचाने वाले की श्री
माता का नाम (पृष्ठ १२१)।

सामयिक श्री [सामयिक] पृष्ठ २१ १२)।

सामा श्री [बि] श्री महिला (बि ३ २१)।

सामयिक बि [सामयिक] प्रिण्ट बुक, कवि
(पृष्ठ ७२ ४ पृष्ठ ४४)।

सामयिक बि [सामयिक] ऊपर श्री
(बि)।

सामयिक बि [सामयिक] १ पृष्ठ, २
पृष्ठ १५। २ प्रिण्ट कटवा हुआ
(पृष्ठ)।

सामयिक बि [सामयिक] बिह, प्रिण्ट (पृष्ठ
१ २२१ २२ २२१ पृष्ठ ४)।

सामाह पु [सामाह] पुस्तक प्रिण्ट (पृष्ठ
१ २२१ पृष्ठ २१ पृष्ठ)।

सामाह बि [सामाह] प्रिण्ट-नक
(बि)।

बाय लक [बायल] १ पृष्ठ। २ पृष्ठ।
बायल, बायल (पृष्ठ १९२)। 'बायल' का
पुनर्प्रयोग पाठक पृष्ठ १९२। 'बायल' (पृष्ठ १९२)
मुक्त बायल जल-पृष्ठ (पृष्ठ २२)। कर्म बायल (पृष्ठ २२१)। कर्म
बायल (पृष्ठ १९२)। कर्म बायल (पृष्ठ
३ ४)।

बाय लक [बायल] कर्म, पृष्ठ १९२।
बायल (पृष्ठ २२)। कर्म बायल (पृष्ठ
२२ पृष्ठ ४ ४ पृष्ठ ४२)। कर्म २
१ ४)।

बाय लक [बि] मुक्त। बायल (पृष्ठ
१९ पृष्ठ)। कर्म बायल (पृष्ठ १९२)।

बाय लक [बायल] नवाग। कर्म बायल,
बायल (पृष्ठ २२१ ४२२)। कर्म
बायल (पृष्ठ १९२)।

बाय बि [बायल] मुक्त, मुक्त पृष्ठ (पृष्ठ
२२, २३ पृष्ठ पृष्ठ)।

बाय पु [बि] १ कर्म-विशेष (पृष्ठ २
१ १९)। २ न कर्म (बि ३ २१)।

बाय पु [बायल] कर्म, लक (पृष्ठ २२ पृष्ठ)।

बाय बि [बायल] लक, कर्म (पृष्ठ २२)
(पृष्ठ)।

बाय बि [बायल] कर्म, लक (पृष्ठ २२)
(पृष्ठ)।

बाय पु [बायल] १ पृष्ठ, बायल। २ कर्म
कर्म, लक (पृष्ठ २२)।

बाय बि [बायल] कर्म, लक (पृष्ठ २२)
(पृष्ठ)।

बाय पु [बायल] कर्म, लक (पृष्ठ २२)
(पृष्ठ)।

बाय पु [बायल] १ पृष्ठ, बायल। २ कर्म
कर्म, लक (पृष्ठ २२)।

बाय पु [बायल] कर्म, लक (पृष्ठ २२)
(पृष्ठ)।

बाय पु [बायल] १ पृष्ठ, बायल। २ कर्म
कर्म, लक (पृष्ठ २२)।

बाय न [बायल] कर्म, लक (पृष्ठ २२)
(पृष्ठ)।

बाय बि [बायल] १ कर्म, लक (पृष्ठ २२)
(पृष्ठ)।

बाय पु [बायल] १ कर्म, लक (पृष्ठ २२)
(पृष्ठ)।

बाय लक [बायल] कर्म, लक (पृष्ठ २२)
(पृष्ठ)।

बाय पु [बायल] कर्म, लक (पृष्ठ २२)
(पृष्ठ)।

बाय पु [बायल] कर्म, लक (पृष्ठ २२)
(पृष्ठ)।

बाय पु [बायल] कर्म, लक (पृष्ठ २२)
(पृष्ठ)।

बाय पु [बायल] कर्म, लक (पृष्ठ २२)
(पृष्ठ)।

बाय पु [बायल] कर्म, लक (पृष्ठ २२)
(पृष्ठ)।

बाय बि [बायल] कर्म, लक (पृष्ठ २२)
(पृष्ठ)।

बाय पु [बायल] कर्म, लक (पृष्ठ २२)
(पृष्ठ)।

बाय पु [बायल] कर्म, लक (पृष्ठ २२)
(पृष्ठ)।

बाय पु [बायल] कर्म, लक (पृष्ठ २२)
(पृष्ठ)।

बाय पु [बायल] कर्म, लक (पृष्ठ २२)
(पृष्ठ)।

बाय पु [बायल] कर्म, लक (पृष्ठ २२)
(पृष्ठ)।

बाय पु [बायल] कर्म, लक (पृष्ठ २२)
(पृष्ठ)।

बाय पु [बायल] कर्म, लक (पृष्ठ २२)
(पृष्ठ)।

बाय पु [बायल] कर्म, लक (पृष्ठ २२)
(पृष्ठ)।

बाय पु [बायल] कर्म, लक (पृष्ठ २२)
(पृष्ठ)।

बाय पु [बायल] कर्म, लक (पृष्ठ २२)
(पृष्ठ)।

बाय पु [बायल] कर्म, लक (पृष्ठ २२)
(पृष्ठ)।

बाय पु [बायल] कर्म, लक (पृष्ठ २२)
(पृष्ठ)।

बाय पु [बायल] कर्म, लक (पृष्ठ २२)
(पृष्ठ)।

‘अथवाएल्ल धर्मे मर’ (भा १२३) । ४
बनाया ‘मृतमृत्यवन्मृतमृत्य’ (धिरि
१२७) । ५ स्वीरं विरटा (भा २३) ।
‘एष पुं [पि] उत्पन्न-वर्ध’ ‘येहि सर्वं कुसल
वामर’ (पद्म ४१ ३७) । तेषां नि
[पि]यन् शास्त्रार्थ की ब्राह्मणा (पद्म
१ ३, २६) ।
‘बाय पुं [पाक] १ खोई । २ बालक । ३
हृद्य, खलव (भा २३) । देखो पता ।
‘बाय पुं [पाव] १ फल (स १५७ कुमा) ।
२ यमन । ३ उत्पन्न मूलन (स १ २३) ।
४ फली । ५ न पति-समुद्र (भा २३) ।
‘बाय नि [पाव] १ रक्षा कलेनाभा । २
पीनेनाभा । ३ सुखनेनाभा (भा २३) ।
वाय केको वाय (भा २३) ।
‘बाय पुं [पाव] १ पर्वत । २ पर्वत । ३
पुत्र । ४ पुत्र । ५ निराल । ६ विर । ७
बीजा मार (भा २३) । केको पाय = पाव ।
‘बाय केको पाव = पाय (भा २३) ।
वाय पुं [पाय] १ रक्षा रक्षण । २ नि
पीनेनाभा (भा २३) ।
‘बाय केको अवाय = अवाय ‘बहुनामसि नि
देहे विमुरम्माएल्ल वर मय्य’ (जब) ।
वायवत्त पुं [वि] १ विट, मँहुया । २ मार,
उपवर्ति (स ७ ८८) ।
वायवत्त न [वि] बँव, कुलाक मँटा (भा
२, संशोध ४४ पत्र ४) ।
वायविय नि [वायविय] वचन-वाच में
निर्मित (पत्र) ।
वायव पुं [वायव] १ अर्थवाचक, परिभा-
वित से धर्म का प्रकटक ठण्ड (सम्मत
१४१) । २ उत्पन्न पुन-पाठक पुनि (पद्म
३ संशोध २३, धर्म १४७) । ३ पुन-धर्मों
का वाचक पुनि (पद्म १—पत्र ४
सम्मत १४१) । ४ वा ९, ४३) । ५ एक
श्रीन के मय्य धीर वचनकार, उपवास
पुन का कर्ता की वचनवाचिनी (पत्र ९
४२) । ६ नि कयक मन्त्रिनाभा । ७ पुन-
नाभा (पत्र २) ।
वायव नि [वायव] वचनेनाभा (कुमा २,
महा) ।

वायव पुं [वायव] उत्पन्न वाचाहा (वि
१ २९) ।
वायवत्त पुं [वायवत्त] एक धैन पुनि-वत्त
(पत्रि ५) ।
वायव पुं [वि] एक वेहि-वत्त (कुमा १४३) ।
वायव नि [वायव] स्पष्ट, प्रकट धर्मनाभा
(वचनि ७) । देखो वायविय ।
वायवत्त पुं [वि] वायव-विटोय वरुं नयक
वाचा (स ७ १२) ।
वायवत्त पुं [वि] सर्व की एक वाचि (पद्म
१—पत्र २१) ।
वायव न [वायव] देखो वायव्या (भाट—
रत्ना १) ।
वायव न [वायव] १ वचना (पुपा १२
२२१ कुमा ४१; मया कय) । २ नि
वचनेनाभा (स ७ १२ टी) ।
वायव न [वि] ओम्बोवायव वाच पवार्थ
अ बोटा वाटा सहाय, वाचन (स ७ २७
पत्र) ।
वायव्या ७ की [वाचना] १ पत्र पुन-
वायव्या ७ धर्मो धर्म्यन (ज २२ १) ।
१ धर्म्यन, वचना (स १ ९, ज) ।
१ धर्म्यन (पत्र १४) । ४ पुन-वाच (कय) ।
वायविय नि [वायविय] वचन-वचनी
(भाट—विज ३२) ।
वायव देखो वायव = वायव (स २ २८) ।
वायव देखो वायव (स १ २१; कुमा
यनि पत्र) ।
वायव नि [वायव] वायु रोमनाभा, वाच-
रोमो (विना १ १—पत्र २) ।
वायव केको वायव (स ७ १७) ।
वायव नि [वायव] वायव कोस का
(पत्र ११३) ।
वायव पुं [वायव] १ वायुवत्त-वचनी
‘वायवत्तवाचि वरुं विनाई कयल वचना’
(पत्र ८ ४३, महा) । २ न, धी के वरु से
उभे हुई पुनि—पत्र ‘वायवत्तवाचि’
(कुमा) ।
वायव्या की [वायव्या] पविध धीर उत्तर
के बीच की विद्या, वायव कोष (अ १ —
पत्र ४७८ पुपा २८; २२) ।

वायव पुं [वायव] १ वचन कोमा (वना
पद्म ११६ हे ४ ३२२) । २ वायवत्त
का एक कोष वायवत्त में कीए की तरह
हटि की वरु-वचन वचना (पत्र ३) ।
परिमल्ल न [परिमल्ल] विद्या-विरोध
कीए के वरु धीर वचन वाचि से वचना
पत्र वचनालोवी विद्या (पुपा २, २ २७) ।
वाया की [वाय] १ वाचन वाणी (वाय
पद्म २ पत्रि स ४१२ स १ १०; म
३२ ४ १) । २ वाणी की वाचिवाचि
केी सचनी (भा २१) । ३ व्याकरण-
शास्त्र (वचन २) । देखो वरु = वाय ।
वायाव पुं [वि वायाव] मुक रोमा (स ७
२५) ।
वायाव नि [वायाव] वाचन वचना (पुपा
१६ वेद्य ११७ संवि २) ।
वायाव पुं [वायाव] वचन शास्त्रिक
वच (अ १—पत्र १६, उमा १ १—पत्र
१६; कय धीर वचन १६) ।
वायाव वच [वायाव] वचन वचना,
शास्त्रिक वच कता । वच ‘मुद्रा वि
वायावो काव न कय विवि पुय’ (ज) ।
वायाव पुं [वायाव] १ वचन वचना
(पद्म १६, २१ स २४१) । २
पुं वच का एक वचन (पद्म १७ १) ।
वायाव पुं [वि] विवि-वाच पुन-वचि में
‘वायाव’ (स ७ २१) ।
वायाव नि [वायाव] वचन, वचना (भा
१२ वाय पुपा ११३) ।
वायाव केको वायाव (स २, १७) ।
वायाविय नि [वायाव] वचना वाचा
(स २२७ कुमा ११३) ।
वायाव केको वायव = वायव (पुपा १ १२ कुमा
यनि १६) ।
वाय वच [वायव] वचना, निवच कता ।
वाय (ज २८ महा) । वच वारव (पुपा
१८१) । वच वारविय (कय १२१,
महा) । वच वारव (पुपा १ २, ७) ।
वच वारविय, वारविय (पुपा २२२
२२२) ।
वाय पुं [वि वाय] वचन वाच-वाच (स ७
२४) ।

वाचक पुं [दे] कुटुम्बी निम्बल (दे ७ १४) ।
वाचक वि [व्यापृत] १ व्यापृत (दे ७ २८ टी) । २ किसी कार्य में वाच्य हुआ (दे १ २ १ प्रायः कदा नुर १ २६) ।

वाचक वि [व्यापृत] नौदण्ड दुष्ट वाचक किम्ब हुआ (अ १४४) ।

वाचकरी कील [दे] विपरीत मैकुल (दे ७ २५) । की जा (वाच) ।

वाचन न [व्यापन] व्यापन करना (विदे २६) ।

वाचन्या वि [वाचनक] डिवायो, डिम्बा वीला, फेदे वर का (वचन्य न १११) ।

वाचणी की [दे] डिम विवर (दे ७ ३४) ।

वाचण्य वेको वाचन (सन्ना १ १२) ।

वाचपि की [व्यापपि] विवदण, मण्ड (वाच १ २—अ ११६) अ २ ३ ३ ३४ ४१२ वर्त ११४ २७३) ।

वाचपि की [व्यापपि] व्यापार (अ २ ३) ।

वाचपि की [व्यापपि] निवृत्ति (अ १ ४—अ ७४) ।

वाचन वि [व्यापन] विवदण-मण्ड (अ २, २—अ ११६ अ २ ३ ३ ३४ ४१२ वर्त ११४ २७३) ।

वाचन पुं [दे] वाचक, वाच का पुच्छिया (दे ७ ३४) ।

वाचक प्रक [व्या + पु] १ काम में लक्षा । २ एक काम में लक्षणा । वाचक (दे ४ ५ ५) वाचक (विदे), 'वच' विदे परिप्लव परिप्लवित वाचक (अ १ ३ ३ ३ ३४ ४१२ वर्त ११४ २७३) । ३ वाचक (अ २ ३ ३ ३४ ४१२ वर्त ११४ २७३) ।

वाचन न [व्यापन] कार्य में लक्षणा (विदे) ।

वाचक वेको वाचक = व्यापक (अ २ ३ ३ ३ ३४ ४१२ वर्त ११४ २७३) ।

वाचक पुं [दे] वाचक एक-विध (अ २) ।

वाचकारि वि [व्यापकारिक] व्यापकार वे लक्षणा लक्षणा (अ २ ३ ३ ३४ ४१२ वर्त ११४ २७३) ।

वाचक (१) धातु [अ + वाच] वाचक वाचक वाचक वाचक (वाचक १ २२) ।

वाचक धातु [व्या + वाच] वाचक वाचक वाचक (वाचक १ २२) ।

वाचक वाचक, वाचक (अ २ ३ ३ ३४ ४१२ वर्त ११४ २७३) ।

वाचक वाचक (अ २ ३ ३ ३४ ४१२ वर्त ११४ २७३) ।

वाचक वाचक (अ २ ३ ३ ३४ ४१२ वर्त ११४ २७३) ।

वाचक वाचक (अ २ ३ ३ ३४ ४१२ वर्त ११४ २७३) ।

वाचक वाचक (अ २ ३ ३ ३४ ४१२ वर्त ११४ २७३) ।

वाचक वाचक (अ २ ३ ३ ३४ ४१२ वर्त ११४ २७३) ।

वाचक वाचक (अ २ ३ ३ ३४ ४१२ वर्त ११४ २७३) ।

वाचक वाचक (अ २ ३ ३ ३४ ४१२ वर्त ११४ २७३) ।

वाचक वाचक (अ २ ३ ३ ३४ ४१२ वर्त ११४ २७३) ।

वाचक वाचक (अ २ ३ ३ ३४ ४१२ वर्त ११४ २७३) ।

वाचक वाचक (अ २ ३ ३ ३४ ४१२ वर्त ११४ २७३) ।

वाचक वाचक (अ २ ३ ३ ३४ ४१२ वर्त ११४ २७३) ।

वाचक वाचक (अ २ ३ ३ ३४ ४१२ वर्त ११४ २७३) ।

वाचक वाचक (अ २ ३ ३ ३४ ४१२ वर्त ११४ २७३) ।

वाचक वाचक (अ २ ३ ३ ३४ ४१२ वर्त ११४ २७३) ।

वाचक वाचक (अ २ ३ ३ ३४ ४१२ वर्त ११४ २७३) ।

वाचक वाचक (अ २ ३ ३ ३४ ४१२ वर्त ११४ २७३) ।

वाचक वाचक (अ २ ३ ३ ३४ ४१२ वर्त ११४ २७३) ।

वाचक वाचक (अ २ ३ ३ ३४ ४१२ वर्त ११४ २७३) ।

वाचक वाचक (अ २ ३ ३ ३४ ४१२ वर्त ११४ २७३) ।

वाचपि की [व्यापपि] व्यापन, निवृत्ति (वर्त १ २) ।

वाचक वेको वाचक = व्यापक व्यापक (अ २, २—अ ११६) ।

वाचक वेको वाचक : वाचक (अ २) ।

वाचक की [वाच] वाचक वेको वाचक (वाचक १ २) ।

वाचक वेको वाचक : वाचक (अ २) ।

वाचक वेको वाचक : वाचक (अ २) ।

वाचक वेको वाचक : वाचक (अ २) ।

वाचक वेको वाचक : वाचक (अ २) ।

वाचक वेको वाचक : वाचक (अ २) ।

वाचक वेको वाचक : वाचक (अ २) ।

वाचक वेको वाचक : वाचक (अ २) ।

वाचक वेको वाचक : वाचक (अ २) ।

वाचक वेको वाचक : वाचक (अ २) ।

वाचक वेको वाचक : वाचक (अ २) ।

वाचक वेको वाचक : वाचक (अ २) ।

वाचक वेको वाचक : वाचक (अ २) ।

वाचक वेको वाचक : वाचक (अ २) ।

वाचक वेको वाचक : वाचक (अ २) ।

वाचक वेको वाचक : वाचक (अ २) ।

वाचक वेको वाचक : वाचक (अ २) ।

वाचक वेको वाचक : वाचक (अ २) ।

२१)। मषण न [मषण] बही घबै (महा)। रेणु पुं [रेणु] सुक्यो रज (बीम)। हर न [गृह] खमन-गृह (पुर ६, २७ गुण ११२, अवि)।

पास पुं [पास] १ ऋषि-विशेष पुराण कही एक मुनि (हे १ ५ अन्)। २ विस्तार (अन २ = टी)।

पास न [पासस्] बह, कपडा (पास बन्ना १६२; अवि)।

*पास देखो पास = पास (महा)।

पास देखो पास = पारर (महा १ बह)।

पासना पुं [पासना] पासीक कलपा 'वाहो सा पशुना निरं न मोलुख विषय-पास' (अन १११ टी; कुत्र १११ अन पुं १२७)।

पासंठुं (पा) पुं [पासंठु] कप का एक पासंठु मेर (पिप १६१ १६१ डि)।

पासंत पुं [पासंत] बर्षा-काल का पास-नाम (अन ५५५)।

पासंतित्र वि [पासंतित्र] बहल-सम्पत्ती (हे १)।

पासंतित्र की [पासंतित्र] 'नी' लता-पासंतित्रा विशेष (बीम कय कुना पण पासंती) १—पत्र ३२ छाया १ १—पत्र १६ पण्ड १ ५—पत्र ७६)।

पासंती की [हे] कुत्र कय पुन (हे ७ ३२)।

पासना वि [पासक] १ खोबला (अन ७५८ टी)। २ बासना-कही संस्कार-पासक (बर्ष १२६)। ३ खब कलेबासा। ४ पुं क्रोत्रिय पासि यन्तु (भाषा)।

पासण न [हे] पास बरख, पुत्र-टी में 'पासण'। 'हिस्टे न पवत-पुत्रिये बरखणाय किं विरण-पासण' (म ६१ ६२)।

पासण न [पासन] पासि करण (बहनि १ १)।

पासणा की [पासना] संस्कार (बर्ष ३२६)।

पासना की [पुन] पनलोक निरीख (विसे ११७० प ४६७)। देखो पासणया।

पासय देखो पासन। सजा की [सजा]

पासिका क एक मेर, बह पासिका को मयक की प्रतीया में लयन कर देखो हो (कुना)।

पासर पुन [पासर] विषय विम (पास मरका महा)।

पासव पुं [पासव] १ हर देव-पति (पास मुना ५ ५-वेद्य २५)। २ एक पास-कुमार (मिपा १ १—पत्र १ १)। 'केउ पुं [केउ]

हरिच का एक राजा राजा जनक का पिता (पत्र २१ ३२)। दृष्ट पुं [दृष्ट]

विमपुर नगर का एक राजा (मिपा २ ५)। दृष्टा की [दृष्टा] एक पासायिका (अन)।

बगु पुं [बसु] हर-कुप (अन ४२६)। नगर न [नगर] समर-वती

एक-नगरी (कुना ६)। पुर की [पुर] बही घबै (अन पुं १७६)। सुअ पुं [सुअ]

हर का पुत्र वसुध (पास)। पासवपुषा की [पासवपुषा] राजा बह

प्रचोत की पुत्री और वसुध—बीष्माणलपन की पत्नी (जनि ३)।

पासवार पुं [हे] १ गुण भोज (हे ७ ३६)। २ पास कुता 'विदुस्मिन्नह पंपा

कमा कि पासवार्थि (वेद्य १५४)। पासबाळ पुं [हे] बाळ कुता (हे ७ १)।

पासस न [पासस] बह कपडा कुमोसण कुमासठा (पण्ड १ २—पत्र ४४)।

पासा देखो वरिसा (कुना पास वर २ ७८ गा २१)। रति की देखो वरिसा रत (हे ५ ३६२)। पास पुं [पास] कुर्यात

में एक स्थान में किया जाता निवास (बीम कला कय)। पासिय वि [पासिक]

बर्षा-काल सपानी (पासा २ २ ५६)। हु पुं [हु] मेक मेक (हे ७ २७)।

पासापिया की [हे पासनित्र] बलसि-विशेष (अन २ १६)।

पासापी की [हे] रम्या मुद्रा (हे ७ २२)। पासि वि [पासि] १ विषय कलेबासा

खलेबासा (मूभ १ १ ६, अनट मुना ६१५ गुण ४६ पीप)। २ बासल-कारक संस्कार

स्वापक (विसे १६७७)। पासि की [पासि] बनुना बहई क एक घस

—धीनप 'न हि पासिबहईएई घसेयो कहे-विध' (बर्ष ५५६)। देखो बासी।

पासिक १ [पासिक] बर्षा-काल सपानी पासिक १ (अन १२—पत्र २११)।

पासिदु न [पासिद] १ मोष-विशेष (अ ७—पत्र १६ कय मुत्र १ १६)।

२ मुषी, पाठिष्ठ गोश में कयम (अ ७)। भी हा डी (कय उत १४ २६)।

पासिदुया की [पासिदुया] एक बिन मुनि-राहा (कय)।

पासिमु वि [पासि] बरखनासा (अ ४ ५—पत्र २१६)।

पासिद १ वि [पासि] १ बहाना हुवा पासिय १ निवासि (मोह २१)। २ बासी

रहा हुवा (अन अवि) (मुना १२ ३१२)। ३ मुषी-वत किया हुवा (कय पत्र १३१)

महा)। ४ पासिद संस्कारि (अन)।

पासी की [पासा] बनुना, बहई क एक पस (पण्ड १ १ पत्र १४ ७८ कय

सुर १ २८ पीप)। सुअ पुं [सुअ] बनुके के गुण बहनासा एक ठण्ड का बीड,

बीडिय बनु की एक नाति (अन १६ ११६)।

पासु पुं [पासु] एक महा-नाम, पासुनि संस्कार (हे २ ११ या ६६

बहना टी ७ कुना सम्पत ७६)। पासुव पुं [पासुव] १ बीष्णु नायक

(पण्ड १ ४—पत्र ७२)। २ बर्ष-बहमर्षी राजा, निष्प्राण भूति का प्रतीक (अन १७ १३२ १३६ गुण)।

पासुपुत्र पुं [पासुपुत्र] पाठवर में कयम बाध में निज सपना (अन ६१ कय पत्र)।

पासुकी की [हे] कुत्र का कुल (हे ७ ४२)। वाह लफ [वाह] बहल कपना बहाना।

वाह, वाहई (अवि महा)। कपड वाहिल्याण (महा)। हेर बादिउं (महा)।

क वाह वाहिम (हे २ ७५ प्रापा २ ४ २६)।

वाह पुं [वाह] मुष्यक बहेलिया (हे १ १७५ पास)। की हा (गा १२१ पि १५२)।

वाह पुं [वाह] १ घय भोज (पास गुण १ २ १५ अन ७२८ टी कुत्र १७५ हम्पीर

१५)। २ प्रधान भोज 'वाहोप्राह लण्ड' (विसे १ २७)। ३ बारहन मोक डोना

(मुना १ ४ ४६)। ४ परिमारा-विशेष

पाठ सो पाहक क एक मान (सुत्र २६) ।
२ शास्त्रिक पाहो हाकेनाला (सुत्र १ २
१ २) । पाहिया को [पाहिय] ब्रह्म
सवादे (बर्गवि ४) ।

बाह्यग } पु [वि] मन्त्रो धर्मय प्रमान
बाह्यग } (१७ ११) ।

पाहक वि [वि] ब्रह्म मय हुमा बहुवाक्य
समाप्त (सुत्र ७ ११) ।

पाहदिया को [वि] कन्तर, बहोरो (सुत्र ७
११) ।

बाह्य पुन [पाहन] १ एक पाहियामा 'बहु
निष्परायणा होम' (सुत्र १ ३ उवा
चोन कम्) । २ उवाच नीला यलना
पुनराठी में 'बहस' (उवा विरि ४२३
मुन्ना ११) । ३ म. क्काना 'बाह्यापु-
परित्तो' (सुत्र १४०) । ४ एक, होम
पाहिय होमना, मार मार कर कलना (पह
१ २—पुन २४ ४ २६) । साह्य को
[बाह्य] पाह पाने वा कर (चोन) ।

बाह्या को [बाह्य] बह्य करना, होम
पाहिय होमना (पाहक २५ टी) ।

बाह्या को [वि] घेरा होर कवा (१७
१४) ।

बाह्या को [उपाह] पूजा (वीरा
उवा वि १४१) ।

बाह्यिय वि [बाहिनठ] बाह्य संकन्धे (उवा
७२० टी) ।

बाह्यिया को [पादनिग] बह्य करना
बलना, पादराष्ट्रियम् (उ ३) ।

पाहर्नु वेको पाहर ।

पाह्य वि [पाह] बर्गनेराला, हाकेनेराला
(उवा १ १७) ।

पाह्य वि [क्याहन] क्याहन-पाह (वीह
१ ७ उवा) ।

पाहर मक [क्या + ह] १ होमना कदना ।
२ पाहुन करना । पाहर (हि ४ २२६
मुना १२२ म्हा) । कर्म पाहिय, पाहिय
(हि ४ २२१) 'बर्गियंति पदाला पाहिय' (सुत्र ११ ११) कड पाहिय (सुना) ।

कड पाहर्न (य २ १ सुत्र १११) ।
कड पाहर्न (य १) । कड पाहर्नु
(वि ११ १११) ।

पाहरण न [क्याहरण] १ एक कपन
(सुना) । २ पाहुन (य २२२ ३ ६) ।

पाहरोविय वि [क्याहारित] कुबवाय हुमा
(सुत्र १२१ म्हा) ।

पाहरीय वेको बाहिय = क्याह (सुत्र १
१५ ४ १ मुना १२२ म्हा) ।

बाह्यर वि [वि] बाह्यरूपकर १ लेहो
भुगयो । २ उवा पुनराठी में 'बाह्यरूपी'
'बहु सवादे समानवर्गि । निष्पुन्य
कमलो कोहो बाह्यारूप' (बर्गवि १२०) ।

बाह्यिया को [वि] ब्रह्म मय होम पाह
पाहको १ प्रक (बन्ना २२ २४ ६ ७
१६) ।

पाहा को [वि] बाहुपा रेह (१७ १४) ।

बाह्या को [वि] ब्रह्म-विरोध 'वर्गियंति
वि वा बाह्यासंघिय वि वा वग्नियंति वि वा
वि वा (सुत्र ३) ।

बाह्यायि वि [बाह्य] क्याया हुमा (महा) ।
बाह्य वेको पाहर । संक-बाहिया (पाह
१ ३ वि १२२) ।

पाहिय मुन्ने [क्यायि] दोन बीपाटी 'बर्गियंति
बर्गि कन्ते' (हा ४ ४—पुन २१२ म्हा)
सुत्र ४ ७५ उवा प्राहु १११ म्हा) ।
'पाहयो लठ बाह्यो बाह्ययो' (महा) ।
बाहिय वि [पाहिय] क्या करनेराला, होमना
महा लठो बंध्यकरालो (उवा) ।

बाहिय वि [पाहिय] क्याया हुमा 'बाहिय
कर्म बंधुये संक' (महा) 'हो लेह
लेह पाह्य कालियलेह बाह्यो पाहो'
(मुना १२०) ।

बाहिय वेको बाहिय = क्याह (हि २ ६४
पह म्हा छाया १ १—पुन ६४) ।

बाहिय वि [क्यायि] दोन बीपाटी (विदि
१ ७) छाया १ १—पुन १०६ विपा
१ ७—पुन २४ पह्य १ १—पुन २४०
कम्) ।

बाहिया को [पाहिया] १ नको (बर्गवि १) २
वेको बाह्यक लेह बाह्यो राहियो वग्नियं
बहु विम (पाह) । ३ मन्त्र-विरोध विरो
१ हाथी, ४१ एक, २४१ कोहो पाह ४ २
पाहो दो बहु लेह (पुन २५ ६) पाह
पु [ना] १ मन्त्र-विरोध (विदि १) । २
पु [या] १ वि (विपा ११) ।

बाहिय वि [क्याह] १ कप कपि (हि
१ १२० २ ६६ म्हा) । २ पाहुन, कपि
(पाह लठ १ २) ।

बाहिय को [क्याहिय] १ एक, मन्त्र ।
२ पाहुन (पुन २) ।

बाहिय वेको पाहर ।

बाहिय वेको वाह = क्याह ।

बाहिया को [बाह्या] मन्त्र लेहने को
बहु (हि १४ मुना १२० म्हा) ।

बाहिय वि [क्यायि] दोन (कम् ४
टी) ।

पाहो वेको वाह = क्याह ।

पाहुनिय वि [वि] पाह बहिय 'हो बाहुनिय
बह्य' (सुत्र ४१) । वेको पाहुनिय ।

पाहुन वेको बाहिय = क्याह (वीन) ।

वि वेको बाहिय = मन्त्र (हि २ २१५ मुना ४
११ १० २३ कम् ४ १५ १ १५
रम्) ।

वि य [वि] ह्य यनो का सुचक मन्त्र—
१ विरोध प्रमियला । 'विमहा'
'विपीन' (हा ४ २ कम् १ ११ सुत्र
२ २१२) । २ विरोध 'विचिन्त'
(सुत्र १ १ २ २४ कम् १ १ टी) । ३
विचिन्त 'विचिन्त' 'विचिन्त'
(वीनक १५५ य १ टी पावन) । ४
सुत्रा बरनीन निम्न (उवा ७२० टी) ।
५ यवाच 'विचिन्त' (वि २१) । ६ यवाच
'विचिन्त' (मन्त्र) । ७ निचिन्त 'विचिन्त' (महा)
८ कौपीन, कौपीन 'विचिन्त' (वीनक
१११) । ९ पाहुनिय (पुन १७ ६७) । १०
पहो (हि १ १ सुत्र ११ ४१) । ११ वि
पहो, उटीनक । १२ यवाचक हाहक
कर्म समानवर्गिय पर विमन्त्र पदियल
(विदि १४१) ।

वि वेको विमन्त्र 'हो गुण होम विमन्त्र
मुन्नापुलाया पदमन्त्र' (विदि १११६) ।

वि वि [विह] बाह्यार, विह (पाह
वि ३) । क्या को [मुन्ना] विमन्त्र
विमन्त्र को विमन्त्र बाहु को विमन्त्र (या
टी—पुन १) ।

वि वेको विमन्त्र 'हो गुण होम विमन्त्र
मुन्नापुलाया पदमन्त्र' (विदि १११६) ।

विभोरमण न [म्युपरमण] विराजना,
विनाश [म्युपरमण] (धोपना ११
धोप १२६)।

विमोड नि [दि] मागिग ये-युद्ध (१०
११)।

विमोषाय दु [म्युषाय] अथ नाश
(घात) मृष १ १ ४)।

विमोसमा दु [म्युसर्मा] १ परियाम २
लभ-विशेष विप्रेतन से शरीर धारि कर
लान (सीत)।

विमोसमन देको विडसमय (मृष २ २—
पत्र ११८ २ ५—पत्र १४६)।

विमोसमिय नि [म्युसमिय] उपराज
किया हुआ (कृष १ १ ६)।

विमोसरमभा देको विडसरमभा (धोप)।
विभासय सक [म्युस + धामय] उपराज
करना व्यङ्ग्य करना, बना देना। संक्ष
'व' ध्वनिपण्यं क-विमोसवेवा' (कृष)।

विमोसविप } देको विमोसमिय 'धवि
विमोसिय } धोषयपयगु' (कृष १
१२ ४ २); 'विमोसमिय का पुणो लोरे
सु' (मृष १ १ ४ ४ ६)।

विमोसिज्जा म [म्युसिज्ज] परियाम कर
(भाषा १ ६ २ १)।

विमोसिय नि [म्युसिय] पर्यवसित पमात
किया हुआ (मृष १ १ ६ २)।

विमोसिय नि [विमोसिय] कोस-पण्य
निरपण्य नया 'विम' (यो) विमपण्य—
(मृष १ १—पत्र ४२)।

विमोसिर देको विमोसिर (नि २११)।

विमोह दु [विमोह] नावण्य कान्ति
(मति)।

विम न [वि] वाच-विरोध (पत्र)।

विमिपिय नि [वि] १ पाटिय विमिपि ।
२ भाग (१० २१)।

विमपु दु [विमिप] कन्-विरोध विमपु (हे
१ १२८ २ १६ ४६)।

विमर सक [वि + मर] पनन होना। विमर
(प्राक्ष ७१)।

विमिभ } देको विमपु (हे १ २६ २
विमिभ } ११ मृष १६ १६ १६) पत्र
११ १० प्राक्ष प्राक्ष २१; या २१० ४)।

विमपु देको वंजण 'वेदीसविज्जा' (वंत)।
विमपु देको विमपु = म्युज्ज पुनपटी में
'विमपु' (१५ २)।

विमपु दु [विमपु] १ 'वेदीस' विमपु
(या ११३; याया १ १—पत्र ६६)। २
म्याम बसिय (हे १ २३ २ २६ प्राक्ष)।
३ एक कोन पुनि (विसे २३१२)। ४ एक
वैदिय (मुषा २७८)।

विम सक [म्युस] बेटन करना सफेता
पुनपटी में 'विमपु' 'विमर वं उज्जा'।
हम्मपयपुनपटी (मुषा २७९)। प्रया
संक्ष. पिटापिठे (मुषा १८६)।

विम न [म्युन] पन-पन धारि का कनन
(हे १ ११८ प्राक्ष ४—१५ प्राय १ २)।

विम } न [वि] १ बरीकरस-विषा
विमिभ } 'म्या'पि 'मुकवि' (पत्र १०)।
ज्याई करवापनाई कम्पाई (विमि १०)।
२ विमिभ धारि का प्रयोग (हृह १)। विमि-
धायि पर्यवसित (मृष १ ११)।

विमिभ को [वि] गठरी पोछी पुनपटी
में 'विमपु'। 'ताम दुमरेण विमि कमुप्या
नलविमिभ' 'दीप विमिभ' (मुषा
२६१)।

विमिभ को [वि] १ गठरी पोछी (मुष २
२, क १८२ टी)। २ मुषिका धंकीपक
पुनपटी में 'वीदी' 'जन्मापरेरि पुष
कणपयविमिभ' (मुषा १११)।
'पविमप्रायो मयि विमि (विमि) यह धं-
कीपो वि' (स ७९)।

विमर दु [म्युनर] १ विमपु धारि कृष्ट मनु
(क २२४)। 'कुट्टाण को न बीह विमर
कम्पाण क कम्पा' (क १२)। २ एक
वेन-जाति। 'विमपु' गठरी हि विमर धवि
किकर' (या १२४ ब २)।

विमपु को [म्युन] बेटन का भाव
विम सक [विम] १ जानना। २ प्राप्त करना;
कर्म का निर्वहण ठग ठग' (मुष १ १६
२७)। बह. विमपु (याया १ १—पत्र
२६, विम १ २—पत्र १४)।

विम देको मर-हून (मति वि १६५)।
विमपु देको वंजण (मुषा २ १ नाट—
विमपु) लक्ष् ८८)। 'वर पु [पर] मर
(सम्य ७३)।

विमपु पुन [म्युपुन] मयुप का एक
वन (टी ७)।

विमपु नि [वि] १ उज्ज्वल देदीपयान।
२ मयुप सोपना कल-कल। ३ विमपु
म्यान। ४ विमपु' कंवाहि विमपु'।
वर्णविमपु' (मृषा २१०)।

विम देको मर (प्राक्ष १६)।

विमपु देको विमपु (प्राक्ष १६)।

विम सक [म्युस] बीजना, छेदना, बेचना।
विम, विमो (पि ८८६, म्म)। बह
विम (मृष २, २१)। संक्ष विमिभ
(मृष—मृष २११)। ईह-विमि (स
१२)। क विमपु (मुषा २६६)।

विमपु न [म्युपन] छेद, बेचना 'बह
विमपु'—(पमि २२)।

विमिभ नि [विम] जो देवा म्या हा बह,
विम (सम्य १२५)।

विमप देको विमपु = विमपु (मति)।

विमर देको विमर। विमपु (पि १११)।

विमपु नि [विमपु] मयुप पत्रपु
हृषा 'विमपु' (क २६७ टी कु १
२६८) धवि धोष ७३)।

विमिभ नि [विमिभ] धावने-धवि
'धोपु' धवि धवि विम (विमि) को न पन-
हो सीत' (क ११६ मति)।

विमिभ देको विमिभ 'म्यापविमपु'
(क ११६)।

विमिभ (टी) को [विमिभ] धवि २०
(परी २)।

विम सक [वि + मर] प्रयोग करना।
विमपु (मृष १ १४ २१)।

विमपु धक [वि + मर] द्विज जाना
कति होना। बह विमपु (मृष १
१४ १६)।

विम सक [वि + मर] १ विमान,
जाना। २ व्याप करना छोड़ना। ३ धन
पत्रपु व बाहर निमपु। ४ धेर प्रेर
करना। विमपु (मृष १ १)। संक्ष.
विमपु (मृष १ १)।

विमपु नि [विमपु] कर्म विमपु (पना
१५, १६)।

विभक्त वि [विभक्त] विभक्ति प्रत्यय (वि ७
८५) ।

विभक्त वक् [वि + क्त] कर्त्ता । वक् ।
विभक्त (पंजा १) ।

विभक्त वि [विभक्त] वायु हवा (तंजु
५२) ।

विभक्त वेद्यो विभक्त (पञ्च) ।

विभक्त वक् [वि + क्त] कर्त्ता ।
विभक्त (पञ्च १) — पञ्च १८) । वक्
विभक्तमात्र (पञ्च) ।

विभक्त वेद्यो विभक्त । विभक्ति (पञ्च १ ३
२ २) विभक्ति (पञ्च १ १—पञ्च १) ।

विभक्त वि [विभक्ति] विभक्त विभक्त
‘भवा क्ता विभक्त य द्वाभ्याम् य द्वाभ्याम्
य’ (तंजु २ १०) ।

विभक्त वेद्यो विभक्त । विभक्त विभक्ति
(पञ्च १ २१) । वक् विभक्ति (पञ्च
११) ।

विभक्त य न [विभक्तय] १ प्रत्यय क्ता ।
२ वि. प्रत्यय-क्ता (पञ्च ११ वर्ग
११) ।

विभक्तया क्ती [विभक्तया] कर्त्ता क्ता
(पञ्च १२८) ।

विभक्त वेद्यो विभक्त (पञ्च ११०) ।

विभक्त य न [विभक्तय] क्ता, कर्त्ता
‘पञ्चोत्तराक्ष-विभक्त्यादि य’ (पञ्च
१ १—पञ्च १) ।

विभक्तया वेद्यो विभक्तया (पञ्च १
११—पञ्च ११) ।

विभक्तय वेद्यो विभक्तय (पञ्च) ।
विभक्त वेद्यो विभक्त = विभक्त (पञ्च १ १—
पञ्च ११ १ १—पञ्च ११) ।

विभक्त वेद्यो विभक्त (पञ्च) ।

विभक्त वक् [वि + क्त] विभक्तवक् । कर्त्ता
विभक्ति (पञ्च ५०) ।

विभक्त य न [विभक्तय] विभक्त विभक्त
‘नमस्तस्मिन्विभक्तय’ (पञ्च १ ५—पञ्च
१२२) ।

विभक्त वेद्यो विभक्त (पञ्च) ।

विभक्त वेद्यो विभक्त = विभक्त ‘नमस्तस्मिन्विभक्त
नमस्त’ (पञ्च १ ५ विभक्ति १२२ पंजा १ ११) ।
वेद्यो विभक्त = विभक्त ।

विभक्त वेद्यो विभक्त । विभक्त (पञ्च) ।

विभक्तय वेद्यो विभक्तय (पञ्च) ।

विभक्त वेद्यो विभक्त (पञ्च ५१) ।

विभक्ति वि [विभक्ति] विभक्त-पञ्च
‘नमस्तस्मिन्विभक्तय’ (पञ्च ११
१) ।

विभक्त वेद्यो विभक्त (पञ्च १ ५१) ।

विभक्त वेद्यो विभक्त = विभक्ति (पञ्च १११८) ।

विभक्त वेद्यो विभक्त (पञ्च १ १
१) ।

विभक्तय वेद्यो विभक्तय (पञ्च १
२ १ टी ५ ८ टी—पञ्च ५४१) ।

विभक्त वि [विभक्त] १ कर्त्ता विभक्ति-
कर्त्ता (पञ्च) । २ क. कर्त्ता विभक्त
विभक्त क कर्त्ता (पञ्च १८) । वेद्यो
विभक्ति ।

विभक्त वक् [वि + क्त] वेद्यो । विभक्त
(पञ्च ५ २२) ।

विभक्त य न [विभक्तय] विभक्त, वेद्यो
(पञ्च) ।

विभक्त वि [विभक्ति] १ कर्त्ता, कर्त्ता
(पञ्च) । २—वेद्यो विभक्त विभक्त =
विभक्ति (पञ्च) ।

विभक्त वेद्यो विभक्त = विभक्ति (पञ्च १२) ।

विभक्त वि [विभक्ति] १ कर्त्ता (पञ्च १
१—पञ्च १) । २ वेद्यो विभक्त = विभक्ति
(पञ्च १ १—पञ्च ५१) ।

विभक्त वेद्यो विभक्ति (पञ्च २ १ टी) ।

विभक्त वक् [वि + क्त] विभक्त । २ क.
कर्त्ता । ३ कर्त्ता । कर्त्ता विभक्त
विभक्तय (पञ्च ११५ पञ्च) ।

विभक्त वेद्यो विभक्त (पञ्च ५१) ।

विभक्त वेद्यो विभक्ति (पञ्च ५१) । वेद्यो विभक्ति
२ विभक्ति (पञ्च) । वेद्यो विभक्ति ।

विभक्त वेद्यो विभक्ति । विभक्ति विभक्ति
(पञ्च) ।

विभक्त वेद्यो विभक्त ।

विभक्त वेद्यो विभक्ति (पञ्च ५१) ।

विभक्त वक् [वि + क्त] कर्त्ता कर्त्ता
कर्त्ता । कर्त्ता विभक्ति (पञ्च २ १
१, १) ।

विभक्त वक् [वि + क्त] कर्त्ता कर्त्ता ।
विभक्त (पञ्च ११०) ।

विभक्त वेद्यो विभक्त = वि + क्त, कर्त्ता ।

विभक्ति वि [विभक्ति] १ कर्त्ता, विभक्ति
(पञ्च १११) । २ विभक्ति (पञ्च १११) । कर्त्ता, विभक्ति
(पञ्च १११) । कर्त्ता, विभक्ति (पञ्च १ १—
पञ्च १२) ।

विभक्त वक् [विभक्ति] कर्त्ता कर्त्ता कर्त्ता
(पञ्च १११) । १ टी—पञ्च १) ।

विभक्त वक् [वि + क्त] कर्त्ता कर्त्ता कर्त्ता
कर्त्ता (पञ्च १११) ।

विभक्त वक् [वि + क्त] कर्त्ता कर्त्ता कर्त्ता
कर्त्ता (पञ्च १११) ।

विभक्त वक् [विभक्ति] कर्त्ता, कर्त्ता
(पञ्च १११ पञ्च १, १ टी—पञ्च १११) ।

विभक्त वेद्यो विभक्ति ‘को कर्त्ता विभक्ति
को वेद्यो विभक्ति’ (पञ्च ११) ।

विभक्त य न [विभक्ति] कर्त्ता, कर्त्ता
कर्त्ता ‘विभक्तिविभक्ति’ (पञ्च ११) ।

विभक्तय वेद्यो [विभक्तय] विभक्त
‘विभक्तिविभक्ति’ (पञ्च १—पञ्च
५४१) ।

विभक्ति वि [विभक्ति] कर्त्ता कर्त्ता
(पञ्च ५४१) ।

विभक्ति वि [विभक्ति] कर्त्ता-कर्त्ता (पञ्च
२) ।

विभक्त वक् [विभक्ति] १ कर्त्ता
विभक्तय २ कर्त्ता कर्त्ता विभक्ति । २
कर्त्ता । विभक्ति (पञ्च ५ ५१) । कर्त्ता
विभक्तय (पञ्च १ ५—पञ्च ५५) ।

विभक्ति वि [विभक्ति] कर्त्ता कर्त्ता
(पञ्च) । २ कर्त्ता-कर्त्ता, पंजा (पञ्च १
—पञ्च १११) ।

विभक्त वक् [वि + क्त] वेद्यो । कर्त्ता
(पञ्च २१ १) । कर्त्ता विभक्तय (पञ्च
२, १ ५२) ।

विभक्त वक् [विभक्ति] वेद्यो (पञ्च १११
पञ्च १ ५१) ।

विभक्त वेद्यो विभक्त (पञ्च) ।

विभक्त वि [विभक्ति] वेद्यो वेद्यो (पञ्च
१ १) ।

विच्छिन्नि शी [विच्छिन्नि] १ विच्छाद्य,
रचना (वाचा छ ३१३, मुद्रा ३७८ न०
२६०) गउड)। २ प्रातः नाम (सुर १
७०)। ३ संपत्त (ना ७००)।

विच्छिन्नरत्ना विच्छिन्न्य (विपा १ २ टी—
पत्र २८)।

विच्छिन्न एक [वि + स्त्रु] विरोध रूप
से स्पर्श करता। कश्च विच्छिन्न्यमाण
(कम्पा बीन)।

विच्छिन्न एक [वि + क्षिप्] छेदना।
संक्ष विच्छिन्न्य (मत्—कैट १८)।

विच्छु १ देखा विच्छु (वा २१७ जी
विच्छु) १८ उत्तर ३६ १४८ प्राप्ति
१६) लम्बा १ न—पत्र १११)।

विच्छुद्धि वि [विच्छुद्धि] १ विच्छुद्धि
हुमा मो क्षम्य हुमा ॥ विच्छिन्न व्यति
हू कालकेल्यं छरी क्षुद्रामो व्यति विच्छु
(पञ्चमिष्ये) (बन्ना १२९)। २ शुद्ध
(पत्र)।

विच्छुरि वि [वि] क्षुद्रं परतुल्य (वड)।
विच्छुरि वि [विच्छुरि] १ क्षिप्त
वत्ता हुमा 'क्षिप्तं विच्छुरि' (वाच)
(वाच)। २ क्षुद्र, जाका हुमा (वि १४
७६)। ३ श्यात (पत्र २, १०१ मुद्रा ३
२१२ सुर २ २२१)।

विच्छुरि एक [वि + क्षिप्] छेदना दूर
करना। विच्छुरि (वि १ ७१ ना ४२४
म)। ३ विच्छुद्धि (वि १ ३९)।

विच्छुरि एक [वि + क्षु] विच्छुरि करना
बन्धन हो जाता। विच्छुरि (वि १ १२२)।

विच्छुरि वि [विच्छि] १ छेदना हुमा दूर
करना हुमा (वि १ १६)। २ प्रच्छि (वाच)।

विच्छुरि वि [वि] विच्छुरि, विच्छि, विच्छि
विच्छुरि (वाच) (वि १०८)।

विच्छुरि देखा विच्छुरि = वि + क्षिप्।

विच्छुरि दु [वि] १ विच्छुरि। २ क्षम्य (वि
७ ६)।

विच्छुरि दु [विच्छुरि] १ विच्छुरि दुपराण
(वि १ १)। २ विच्छुरि (ना ६११)।
३ क्षुद्रान् विच्छुरि, प्रच्छुरि-विच्छुरि (कम्पा)।

विच्छुरि न [विच्छुरि] ऊपर देखा
(पत्र)।

विच्छुरि वि [विच्छुरि] विच्छुरि-छरी
(वि १)।

विच्छुरि वि [विच्छुरि] ऊपर देखा (सुर
२२)।

विच्छुरि वि [विच्छुरि] विच्छुरि किया
हुमा (मत्—विच्छुरि)।

विच्छुरि वि [वि] विच्छुरि (मत्)।

विच्छुरि देखा विच्छुरि। संक्ष-विच्छुरि
(पत्र) (वि ४ ४१६)।

विच्छुरि दु [वि] विच्छुरि नगर-विच्छुरि
'विच्छुरि' (मत् १८)।

विच्छुरि दु [वि] विच्छुरि, विच्छुरि (मत्)।
देखा विच्छुरि।

विच्छुरि एक [कम्पा] क्षम्य। विच्छुरि
पर (वि ८ ४६)। वक्ष विच्छुरि, विच्छुरि
(कम्पा सुर १ १७ १२, १३)।

विच्छुरि वि [कम्पा] क्षम्य हुमा
(मुद्रा २२२)।

विच्छुरि वि [विच्छुरि] नौत नोया
हुमा 'नोया विच्छुरि' (पत्र)।

विच्छुरि एक [वि] विच्छुरि करना
करना।

'कावेण कवेण' पत्रेपर

विच्छुरि-विच्छुरि।

विच्छुरि-विच्छुरि

विच्छुरि-विच्छुरि

(वि १८९)।

विच्छुरि दु [वि] विच्छुरि, विच्छुरि (वि ७ १२)
वि ४ २२९)।

विच्छुरि दु [विच्छुरि] १ विच्छुरि 'विच्छुरि'
हुमा-विच्छुरि-विच्छुरि-विच्छुरि-विच्छुरि (वा
२१)। २ विच्छुरि-विच्छुरि-विच्छुरि-विच्छुरि
(विच्छुरि) (विच्छुरि १२१)। ३ विच्छुरि
(पत्र २ १२८)।

विच्छुरि एक [वि + क्षुद्र] क्षिप्त करना
करना। विच्छुरि-विच्छुरि (मत्)।

विच्छुरि देखा विच्छुरि। विच्छुरि (वि १८९
वि)।

विच्छुरि वि [विच्छुरि] विच्छुरि, जीतना
(कम्पा मत्—विच्छुरि)।

विच्छुरि देखा विच्छुरि = वि + क्षुद्र। वक्ष
विच्छुरि (मत् १८९)।

विच्छुरि वि [विच्छुरि] विच्छुरि (वत् ११
८९)। वक्ष १९ १९ वक्ष २४२)।

विच्छुरि देखा विच्छुरि = विच्छुरि। मत् १९
देखा वक्ष विच्छुरि (वत् ११ ११)। वक्ष
१७७) वक्ष)।

विच्छुरि एक [वि + क्षि] १ वक्ष वक्ष
करना। २ वक्ष वक्ष में वक्ष वक्ष
वक्ष वक्ष (वक्ष २७९)। वक्ष (वक्ष २७९)
विच्छुरि (वक्ष २७९)। वक्ष वक्ष वक्ष
वक्ष वक्ष वक्ष (वक्ष २७९)। वक्ष वक्ष वक्ष
(वक्ष २७९)।

विच्छुरि दु [विच्छुरि] १ विच्छुरि वक्ष में वक्ष
वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष (वक्ष १८९)। वक्ष वक्ष
वक्ष वक्ष (वक्ष २२२)। २ वक्ष वक्ष वक्ष
(वक्ष)।

विच्छुरि दु [विच्छुरि] वक्ष वक्ष (वक्ष १
२६)।

विच्छुरि दु [विच्छुरि] १ वक्ष, वक्ष वक्ष
(वक्ष १८९)। २ वक्ष वक्ष वक्ष (वक्ष १८९)।
वक्ष वक्ष (वक्ष २७९)। ३ वक्ष वक्ष वक्ष
(वक्ष २७९)।

विच्छुरि-विच्छुरि-विच्छुरि वक्ष (वक्ष २६)।
४ वक्ष वक्ष, वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष
वक्ष वक्ष (वक्ष २७९)। ५ वक्ष वक्ष वक्ष
वक्ष वक्ष (वक्ष २७९)।

विच्छुरि-विच्छुरि-विच्छुरि वक्ष (वक्ष २६)।
४ वक्ष वक्ष, वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष
वक्ष वक्ष (वक्ष २७९)। ५ वक्ष वक्ष वक्ष
वक्ष वक्ष (वक्ष २७९)।

विच्छुरि-विच्छुरि-विच्छुरि वक्ष (वक्ष २६)।
४ वक्ष वक्ष, वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष
वक्ष वक्ष (वक्ष २७९)। ५ वक्ष वक्ष वक्ष
वक्ष वक्ष (वक्ष २७९)।

विच्छुरि-विच्छुरि-विच्छुरि वक्ष (वक्ष २६)।
४ वक्ष वक्ष, वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष
वक्ष वक्ष (वक्ष २७९)। ५ वक्ष वक्ष वक्ष
वक्ष वक्ष (वक्ष २७९)।

विच्छुरि-विच्छुरि-विच्छुरि वक्ष (वक्ष २६)।
४ वक्ष वक्ष, वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष
वक्ष वक्ष (वक्ष २७९)। ५ वक्ष वक्ष वक्ष
वक्ष वक्ष (वक्ष २७९)।

विच्छुरि-विच्छुरि-विच्छुरि वक्ष (वक्ष २६)।
४ वक्ष वक्ष, वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष
वक्ष वक्ष (वक्ष २७९)। ५ वक्ष वक्ष वक्ष
वक्ष वक्ष (वक्ष २७९)।

विच्छुरि-विच्छुरि-विच्छुरि वक्ष (वक्ष २६)।
४ वक्ष वक्ष, वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष
वक्ष वक्ष (वक्ष २७९)। ५ वक्ष वक्ष वक्ष
वक्ष वक्ष (वक्ष २७९)।

विच्छुरि-विच्छुरि-विच्छुरि वक्ष (वक्ष २६)।
४ वक्ष वक्ष, वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष
वक्ष वक्ष (वक्ष २७९)। ५ वक्ष वक्ष वक्ष
वक्ष वक्ष (वक्ष २७९)।

विच्छुरि-विच्छुरि-विच्छुरि वक्ष (वक्ष २६)।
४ वक्ष वक्ष, वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष
वक्ष वक्ष (वक्ष २७९)। ५ वक्ष वक्ष वक्ष
वक्ष वक्ष (वक्ष २७९)।

विच्छुरि-विच्छुरि-विच्छुरि वक्ष (वक्ष २६)।
४ वक्ष वक्ष, वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष वक्ष
वक्ष वक्ष (वक्ष २७९)। ५ वक्ष वक्ष वक्ष
वक्ष वक्ष (वक्ष २७९)।

२२१ ऋ) । १६ लेन-विरोध ग्राह्यविषे
 वरं न प्रत्य-मुत्प्रेष्ये (अ —न ४१३
 इक न ४) । २ उत्प्रेष्यं न्यपु विनयार्थं
 ब्रह्मर (साय १ १—न १ १) दीप-
 पय) । २१ पचनर करे पृष्ट कण्ड
 (ब्रुमा) । २२ विजय की प्रथम शताब्दी के
 एक दिन पाचार्य (पठन ११० ११०) ।
 २३ समुद्र (पय) । २४ समुद्रि (पय) ।
 २५ बाल की बपु का पूर्ण हार (इक) ।
 २६ बालोह समुद्र पुष्कर-वर्षीय तथा
 पुष्करोह समुद्र का पूर्ण हार (पय) ।
 २७ दण्ड पर्यंत का एक दूत (अ ५—पय
 ४१६ इक) । २ एक दण्डबुद्ध (सम
 ११) । २८ छल-विरोध (सिं) । ३ वि
 जीवनेवाला नरपुत्र विद्वत्पतिविजयवेधवे
 (सम्य २१६) । नरपुत्र न [नरपुत्र]
 एक विद्यावर-नगर (इक) । जडा की
 [विद्या] विजय के लिए किया जाता प्रयत्न
 (बर्हि २८) । इडा की [इडा] विजय-
 बुद्ध नदी (मुता २१) । इव दु [इव]
 ब्रह्मरुषी शताब्दी का एक दिन पाचार्य
 (पय १) । पुर न [पुर] नगर-विरोध
 (इक २२३ २२४ २२६) । पुष्ट पुष्ट
 की [पुष्ट] पचनवाली ममक विजय-
 यम की राजधानी (अ २ १—पय
 इक) । मान पु [मान] एक दिन पाचार्य
 (इ) । मंत वि [मन्] विजयी
 विवेका (सि १४) । पच न [पच] वेध-
 विरोध (नरपुत्रिक) । पचमान पुन
 [पचमान] वास-विरोध (विज १ १) ।
 पचयता की [पचयता] विजय-बुद्ध
 पञ्चा (वीर) । सापर पु [सापर] एक
 मूर्धरौ पञ्चा (पय २, ११) । सिंह,
 मीह पु [मिह] १ मुद्रिय प्रार्थन कैला-
 चार्य (मुता १२) । २ एक विद्यावर पच
 बुद्ध (पय १ १५०) । मृति पु [मृति]
 नरपुत्र क मय का एक दिन पाचार्य (बर्हि
 ४०) । सज पु [सज] एक प्रसिद्ध दिन
 पाचार्य का पाचमो मृति के शिष्य वे (पय
 २०६—पय १२६१)
 विजयता की [विजयता] १ पच की
 विजयता की ब्रह्मा पठ (मुता १ १०)
 २ एक पचो का ब्रह्म (अ ७२ की) ।

विजया की [विजया] मयान् यामिनाय
 की शैला-विजिका (विचार १२८) ।
 विजया की [विजया] १ मयान् यामिना-
 नायकी की माता का नाम (सम १११) ।
 २ पाचर्ष कबरेन की माता (सम ११२) ।
 ३ द्वादश ज्योतिष ग्रहों की एक पट्टासी (अ
 ४ १—पय २ ४) । ४ विजय-विरोध (पय
 ७ १५१) । ५ पूर्ण-वचन पर पूर्णवाणी एक
 विजयवादी केरी (अ ८—पय ४१६) । ६
 पाचर्ष कबरी तथा की पट्टासी—की-पल
 (सम ११२) । ७ विजय मयक वेध की
 राजधानी (सम २१) । ८ ब्रह्मा मयक विजय
 की राजधानी (अ २, १—पय ४ १ इक) ।
 ९ पठ की शाली पठ (मुता १ १४) ।
 १ एक वेष्टिनी (मुता १२८) । ११ मयान्
 यामिनायकी की राजधानी (पय २७ संदि
 १) । १२ मयान् मुद्रियवाणी की शैला-
 विजिका (सम १२१) । १३ एक पुष्करिणी
 (इक) ।
 विजल वि [विजल] १ जल-व्युत्पन्न (पय ४) ।
 २ न. जल-व्युत्पन्न पक (सं २, १ ४) ।
 केो विजल ।
 विजल एक [वि + इ] परिष्कार कण्ड ।
 विजल (पि २००) । संक विजलितु (पय
 ५, २) ।
 विजलगा की [विजलगा] परिष्कार (अ १
 १—पय ११६) ।
 विजलपय वि [विजलपय] विज पयि का
 बुद्ध पय का (अ १२ की) ।
 विजान केो विजान = वि + ज्ञा । संक
 विजानिष्ठा विजानिष्ठा (कय) ।
 विजाना वि [विजाना] पयनेवाला
 विजाना वि [विजाना] पय (पाचा मुद्रिय १२४) ।
 विजानुज वि [विजानुज] ऊपर केो
 (शङ्क १) ।
 विजानीध (की) केो विजानप (सा—वेत
) ।
 विजान न [वि] नाय निर्दिष्टा भवर्ष
 विजान (पय) ।
 विजान वि [विजान] पयपुत्र हाथ हुआ
 (पु २, २५, ४७) ।

विजुत वि [विजुत] विजुत (बर्हि
 १७४) ।
 विजुति (पय) की [विजुति] विजुती
 (सिं) ।
 विजुति वि [विजुति] मयान् 'वेद विजुती
 कयिष्ठा व' (विज १७३) ।
 विजयक केो विजय = वि + जि ।
 विजय एक [वि + पाजय] विजय
 कण्ड पयन कण्ड । संक विजयजि
 (पय २, १२८) ।
 विजयज न [विजयज] विजय, विज
 (सं २, १) ।
 विजयजि वि [विजयजि] बुद्ध विज
 हुआ (पय २०) ।
 विजयावाहयु वि [विजयावाहयु] विजयक
 पयन करनेवाला (अ ४ १—पय २१५
 २१६) ।
 विजोडा की [विजोडा] ब्रह्म-विरोध (सिं) ।
 विज एक [वि] होय । विजय विजय
 (वृ कय कय, मय) विजय (पय १
 ११ १) । ब्रह्म विजय, विजयमान (पु
 २, १७६) पय २, ४७) ।
 विज एक [विजय] पंचा पचता हुआ
 कण्ड । बर्हि विजयज (बर्हि) कण्ड
 विजयज (पयन ११ १७ कय १६) ।
 विज पु [विज] विजयक हृदय (पु
 १२ २४ गट—विज १२) ।
 विज पु न [वि] वेध-विरोध (पयन १५,
 १२) ।
 विज पु [विजय] विजय, वासकर
 (इ २ १५, मुता १२६) पय १ ५,
 २) ।
 विज केो बर्हि (पय १७ ७) ।
 विज केो विजय । मय (पय) केो
 विजय-वृ (पि २१६) । सिं वि [विजय]
 पय पयानी (सम्य १२१) ।
 विज केो विजय (पु १५६) ।
 विजय केो विजय (अ २, २४ वि
 १ १) ।
 विजय न [विजय] विजय (अ २, १
 ४) ।

विगम शब्द [वि + ग] शीघ्रता से कष्ट
लेना । विगमति (सूत्र १ १ १ २)
विगमो (पा ४४१) छंद विद्वन्मन (सूत्र
१ १ १ २) । छ. विगम (पद) ।

विगम शब्द [वि + ग] क्षय होना ।
विगम (वाता १२२) ।

विगमन [वि] शीघ्र, बलवान् ठेका न्यो
होती तन्मि पदे विगमं दारुण कुपयत्यु
मर्थे (वर्गीय १)

पात्र कदाप्येष्टेय विगमन

(१ ६) तद्वदप्राप्तयेष्टेय

मुनिपुत्र विगमतां वरिष्ठं

तानोद्वेगमिन् (छ ११४) ।

विगम नि [वि] विना ह्युक्त 'अहं एमि
देस वस्येष्टेय विगमते केष्ट हं विगम' (पा
४४१) ।

विगम केतो विगम = व्यर्थ ।

विगमविज नि [वि] १ निमित्त व्यस्त
'विगमविजरायकवामविगमविजरा' (अम ७
१—पद १ ७ अ) ।

विगमल केतो विगमल = विह्वल (अम ७
१ टी—पद १ ७) ।

विगमल शब्द [वि + भ्यापय] कुमला
शेषक धारि को कुल करण ठेका करण ।

विगमल (पद ७ कुल १२७) । कर्त
विगमल (पा ४ ७; छ ४ ४) । छंद.
विगमलैकज, विगमलिय (वर्गीय १२७
छ ४६६) । छ. विगमलिय (पद ७ ७
१७) ।

विगमलज कीन [विगमल] कुमला अ
राष्ट्रि (छ ४७१) अमल १२२ कुल २७) ।
को पा (छपा १) ।

विगमलिय नि [विगमलिय] कुमल ह्यु
कुल क्रिया हुआ ठेका क्रिया हुआ (सि ७ १४)
१२, ७७ या ११६ पद २ १२) ।

विगमल शब्द [वि + प] कुमल ठेका
विगमल = होना, कुल होना । विगमल (पा
४१ ६ २, २) । छ. विगमल (पा
१ २) ।

विगमल नि [वि + ग] १ कुल हुआ
विगमल = उपलब्ध (सि १ ११) छपा
१ १—पद ११ १ १४—पद ११ १

बहुत गुण ४४८ प्राप्ति ११७ पद २
१२२) । २ संक्षेप-विरोधा विगमलपाय
केष्टं संक्षेपलक्ष कुलमिति' (अमल २१) ।

विगमल केतो विगमल । विगमल (वा
४६६) ।

विगमलपाय केतो विगमलपाय (छ २६४ टी) ।

विगमलविज शब्दो विगमलविज (पद) ।

विगमलिय पुं [वि] नरल की एक काति
(पद १—पद ४७) ।

विगल केतो विगल (अम २६४ पात्र) ।

विह्वल शब्द [वि] व्यस्तप करण उच्छिष्ट
करण विह्वलता हृष्टि करण, व्यथित
करण । विह्वलति (सूत्र १ १२) । कर्त
विह्वलित्वं यथा कदाह कि वातापरी
(विद्य ११४) । बह विह्वलित्वं (सिदि
११४२) ।

विह्वल पुं [वि] व्यस्तप-धरणी कश्चित्ता
व्यथितता 'युद्ध वरिष्ठ बलवी, विह्वल
कुल' वा वरणाहि विह्वल कुल य
तेषु केन विह्वल' (कुल २४१ ६ ४
४२२) ।

विह्वल्य न [वि] कलर केतो (स ७ १) ।

विह्वल नि [वि] विह्वलित्वं व्यथित
करणता । की की (कपु) ।

विह्वलिय नि [वि] उच्छिष्ट क्रिया हुआ
व्यथित क्रिया हुआ विह्वल हुआ (वर्गीय
४२ सिदि ७१४ गुण ११४ १२) । पद) ।

विह्वी की [वि] कपटी, मोहणी (वीय ११४)

केतो विह्वी ।

विह्व नि [वि] वरणा हुआ (सि १ १७७
पद) ।

विह्व नि [वि] १ प्रसिद्ध, पैदा हुआ (सूत्र
१ १ १ ११) । २ उपलब्ध, पैदा हुआ
(सि १ १) ।

विह्व नि [वि] उपलब्ध हो कर लक्ष हुआ
(वर्) ।

विह्वल न [विह्वल] कुल नप्य (कुल
१ २) ।

विह्वल शब्द [वि + ह्वल] १ रोचना ।
२ उपलब्ध करण, लक्ष्य । विह्वल (वीय)
छंद विह्वलिया (वीय) ।

विह्वलपाय की [विह्वलपाय] व्यथना
(वीय) ।

विह्वल पुं [विह्वल] प्राप्त 'विह्वल' (अम;
पद ७ ७—पद; गुण ६) ।

विह्व की [विह्व] शीघ्र, वृष्टि मल (पद
वीय २६६ प्राप्ति १२०) । ह्व व
[वृष्टि] व्यथितप-व्यथित, ह्वी (पद ७ ७
१७) ।

विह्व की [विह्व] १ कर्म क्षय क्षय (सि
२, ४६) । २ व्यथित-वर्धित एक करण,
वर्धित विह्व (सिदि ११४७ स २६४) कपु
१६) । ३ लक्ष्य लक्ष्य (सुर १६ १) । ४
वेला, वरणी विह्व विना ही वरणीय या
वेला का कपता जाता क्षय (सुर ६, ११) ।

विह्व की [वृद्धि] वर्धित वरिष्ठ (सि १
११७ प्राप्ति ७) धर्मि १, पद २ ७
कुल १०७) । केतो वृद्धि ।

विह्वल नि [वि] वरिष्ठ (पद) ।

विह्वल न [विह्वल] विह्वल विह्वल (अम
६ १२ टी—पद ४६६) ।

विह्व पुं [विह्व] १ लक्ष्य या (कुल सुर १
११६) रंज) ।

विह्व न [विह्व] लक्ष्य-विह्वल एक पद का
कर्म (स ४ १) ।

विह्वल पुं [विह्वल] कपलपली, प्रसन्न
प्राप्ति के धारि को धार करण का वरणा हुआ
पक्षिण के धारि का व्याप ह्वरी (धाम्य १
१—पद ११६ ७ ७, ७७) ।

विह्वलिया की [वि] वेला, वेदी, वीरप
(सि ७ १७) ।

विह्वल केतो विह्वल (पद १ १—पद) ।

विह्वल पुं [विह्वल] १ वीर-विह्वल ।
२ वि वरिष्ठ विह्वल

विह्वल त एको वरणी व
य वरणी एक कीति धर्म्यो ।

अवधय एकोकेले विह्वलनेमा
मरालेष्टे (वर्णा १ ४) ।

विह्वल शब्द [वि + ह्वल] १ विह्वल
करण, व्यथित करण । २ कुल केता । ३
लक्ष्य करण । विह्वल विह्वल, विह्वल
(वर्णा कुल १२४ या १२१) । बह

विजिमिध वि [विनय] विरोध रूप से कृत
(अन-घोष छाया १ १ टी—पत्र ३) ।

विजिमिध वि [विनयित] नमाया हुआ
(बहक) ।

विजय दु [विजय] १ धन्युत्पन्न प्रशान्त
पारि धीक मुक्ता विहृत, नम्रता (भाषा,
अ ४ ४ टी—पत्र २३१ कुमां क्ता
धीप मन्त्र यहा प्रभु न) । २ संयय
वर्गीय (अम ११) । ३ बरदायक-विरोध
एक नरक-स्थल (क्षेत्र २६) । ४ धनयय
दुष्टकरक । ५ विजया कीर्ति । ६ धनयय ।
७ वि विजय-युक्त, विन्दत । ८ विहृत,
छान्त । ९ श्रित केंद्र हुआ । १० विजिभिन्ध-
संयमी (हे १ २४२) । ११ दु, काकनुसार
प्रता कर पल्लव (मन्त्र १७) । १२ वि
[वत्] विजय-युक्त (अ ४ ११६) ।

विजय वि [विनय] १ विरोध रूप से नमा
हुआ (धीप) । २ दुष्ट, एक वैच-विजय (अम
१७) ।

विजय केही विजय । वजय दु [वजय]
मन्त्र केही (मन्त्र १२२) । सुख दु [सुख]
वही धर्म (पत्र) ।

विजयवत् केही विजयवत् (पुत्र २६ ४) ।

विजयवत् दु [विजयवत्] एक केड का अम
(अम ७२ टी) ।

विजयवत् न [विजयवत्] विजय-विजय विजय
‘आश्चर्यदेवताओं धामाया विजयमधुन
अमया’ (विज ३२) ।

विजया की [विजया] मन्त्र की बाधा का
नाम (मन्त्र) । वजय दु [वजय] मन्त्र
मन्त्री (हे १ १६) । पुत्रा ११४) ।

विजय केही विजय । विजयवत् (अम ७ १
हुवा २१) ।

विजयि वि [विजय] विजय-विजय मन्त्र
(हे १ १६) ।

विजयस एक [वि + नम] मन्त्र होवा
विजय होवा । विजयवत् विजयवत्,
विजय (अम मन्त्रा वरीय ४ १) । वही
विजयविजय (मन्त्र) । वही, विजयसमाज
(मन्त्र) । ३ वजयस (वजय ४ १) ४ १) ।

विजयस केही विजय (वि ११६) ।

विजा ध [विना] विजय, विना (मन्त्र प्रभु
१ १११) १ १७) ।

विजामिध (ही) केही विजिमिध = विजयित
(मन्त्र—युक्त २१३) ।

विजायम दु [विजायक] अम एक वैच-वार्ता
‘उत्पन्न धामाया वी विजायको पुक्ता वार्ता’
(पत्र ११, २१) । २ मन्त्रवि, वही
(वही ७८ टी) । ३ मन्त्र (पत्र ७१ १७) ।
वत् न [वत्] वजय-विरोध वजयवत् (पत्र
७१ १७) ।

विजास केही विजयस । विजयवत् (मन्त्र) ।

विजास एक [वि + नाराय] वजय करना
मन्त्र करना । विजयवत् (अम मन्त्र) । वही
विजायवत्, विजयवत् (मन्त्र १२७ १२) ।
वही विजायवत् (मन्त्र) । वजय-विजय-
विजयवत् (मन्त्र) । ३ विजायवत् (पुत्र
१४२) ।

विजास दु [विजास] विजय (अम ६ ४
४१४) ।

विजास वि [विजास] विजय-वजय (मन्त्र
१७) ।

विजास न [विजास] १ विजय, विजय
(मन्त्र) । २ विजयवत् (मन्त्र ३ १—
पत्र ३६, वज ७ १३) ।

विजासिध वि [विजासिध] विजय-वजय
(मन्त्र मन्त्रा वही) ।

विजि केही विजि ।

विजिधसय न [विजिधसय] वजय वजयवत्
विजय वजयवत् (हे १ १६) ।

विजिधसय वि [विजिधसय] वजय-वजय,
वजय (वज १२१) ।

विजिधस केही विजिधस (अम २६, ४) ।

विजिधस वि [विजिधस] वजय में वजयवत्
(अम ३ ४२) ।

विजिधस दु [विजिधस] १ वजयवत्, वजय
(विज २४७) । २ वजय में वजयवत् (वज
७ १) । ३ विजयवत् वजयवत् (पुत्र २ १६) ।

विजिधस एक [वि + वजय] वजयवत्
वजयवत् । विजिधसवत् (मन्त्र) ।

विजिध केही विजिध = विजय + वजय ।

विजिधस वि [विजिधस] वजय कर
वजयवत् वजयवत् ‘वजयविजिधसवत् वजयवत्
वजयवत्’ (पुत्रा १८८) ।

विजिधस केही विजिधस । विजिधसवत्
(मन्त्र २७३, वि ४४१) ।

विजिधस एक [वि + वजय] वजय कर
विजयवत् । वजय विजिधसवत् (पुत्र १ १,
१ २२) ।

विजिधसवत् वि [विजिधसवत्] १ वजय
विजयवत् । २ विजय वजयवत् विजय हो
वजय, वजयवत् (अम १४७ टी) वजय ११ मन्त्र) ।

विजिधसवत् एक [विजिधस + वजय] १
वजय विजयवत् । २ वजयवत् वजय । विजि-
धसवत् (पत्र ११, ११४) । वजय-
विजिधसवत् (अम) ।

विजिधसवत् न [विजिधसवत्] १ वजय
विजयवत् । २ वजयवत् वजय (वज १ २६) ।

विजिधसवत् वि [विजिधसवत्] वजय वजयवत्
(मन्त्र—युक्त ११६) ।

विजिधसवत् एक [विजिधस + वजय] वजय
करवा वजय । वजय विजिधसवत् (अम
३ २१) ।

विजिधसवत् एक [विजिधस + वजय] वजय वजयवत्
वजय । विजिधसवत् (मन्त्रा २, १ १
२) ।

विजिधसवत् दु [विजिधस] वजयवत् वजय
विजयवत् (मन्त्र) ।

विजिधसवत् वि [विजिधस] वजय वजयवत्
वजय, वजय वजय वजय (हे १ १, वजय
वजय) ।

विजिधसवत् दु [विजिधसवत्] १ मन्त्र वजय ।
२ वजय, वजय-वजय (अम १ १—पत्र
२११) ।

विजिधसवत् एक [विजिधस + वजय] वजय
करवा । विजिधसवत् (मन्त्र) । वजय-
विजिधसवत् (अम) ।

विजिधसवत् दु [विजिधसवत्] वजय, विजय,
वजयवत् (मन्त्र १ १—वज १; अम १ १
अम) ।

विजिधसवत् वि [विजिधसवत्] विजय,
विजयवत् (अम, वजय वजय मन्त्र २, २ २) ।

विदुम वि [विदुस्] विद्वत्, ज्ञानकार
(सूच १: २ ३ १७)।

यिदुर नि [यिदुर] १ निचलण निच (कुमा) ।
२ नीर । न्यय, न्यायिक (हि १ १७७) ।
४ नू नीरों के एक प्रख्यात मन्त्री (खाम्बा
१ १६—पृष्ठ ३ म) ।

विदुषः न [विदुषः] संख्या-विशेष,
हमपुत्र को पीछे ही नाव से पुनः पर जो

विद्युत्प्रवाह की [विद्युत्प्रवाह] संख्या-विशेष
विद्युत्प्रवाह की औपसी मात्र से प्रकृत पर
की संख्या अन्य हो वह (एक) ।

विदुस देवो विदुः स पमाणं शरितं विदुषाणं
(वर्णनं पृष्ठ ५) ।

विदूषा } ५ [विदूषक] महकण एवा ने
विदूषय } साव एन्नाला मुसाइव (सा
५५ सम्मत् ३) ।

विदस कसो विपक्ष = विदेश (सामान्यतः)
२-पक्ष ७२ श्रीय पक्ष १ ६३ विपक्ष
१६७१ वामा वाम ७४१)।

यिदसि कि [यिदशिम] वरम्ये (मुपा ७२)
यिदसिथ नि [यिदशिक] अर इयो (वि
३३४) ।

विदेह पुं [विद्वह] १ पद्म जनक (सी ३)
२ पुं व देश-विशेष बिहार का उत्तरी
प्रदेश जो प्राकृत 'विद्वह' के नाम से प्रशि

हे 'अहं' ध्याये नामे पुनश्चेने विवेका एवा
जलनया' (सी १७ अर्था) । ३ पुनश्च न
स्वोद्य यदाविदेह-सोद्य (पर १६१) ।

वि विमिष्टं शयिष्याता । ३ निर्वेष मे
 रहित । ६ पुं स्त्रीयं नामने । ७ पुह-व
 (वृत्त ११) । ८ निर्वेष परित का

१-५४ ४२४) । 'ज्यौ श्री [अम्भु
अम्भुज-विटोप शिखे नाम मे यह अ

११) : 'विष्ठा' ध्ये 'इष्ठा' मया

बुद्धिभाष्ये [बुद्धि] राजा जनक
पुत्री सीता (टी १)। पुत्र वं [५]

विषेष्टविम पु [विषेष्टवत्] भगवान् महावीर
(अप्य ११ टी) ।

विदेहा की [विदेहा] १ मयराज महानीर
की माता, निरुता की (कम्प ११ टी)।
३ आन्धी की माता (पुनः ४४ १)।

विदेहि पुं [वेदहिम्] विदेह केत का
अभिपति विष्णु का राजा (सूक्त १३)

विदेही की [विदेही] राजा जनक की पत्नी
सीता की माता (पृष्ठ २६ २)।

विहङ्गिण वि [हे] नाशित नष्ट किया हुआ
(वि ७ ७) ।
विहङ्ग पं [विहङ्ग] एक नरक-स्थान

विह्वल सक [वि + आश्रय] ? विनाश

विहारी (कुप्र २८) । यह विहमयव

विहमिज्जतं (कुम २७ मुर १३ १७) ।
यिहम पुं [विहम] १ जगह जगह-

(कृष्ण २) । २ विभाग (छाया १ : ६—पत्र १६७ अर्थात् २६) ।

विश्वविज्ञान वि [पित्रियत] १ विज्ञानविज्ञान (वि
४ ९) १ २ विज्ञान विज्ञान विज्ञान विज्ञान
(या वद) १ ३ विज्ञानविज्ञान (मणि सखा) ।

विद्या यक् [यि + श्रा] अरुण हीमा । विद्याय
(सं ४ २४) ।
विद्याय वि [विद्याय] ३ अरुण विद्याय

१२४) 'अथैतद्विद्वान्मन्त्रो' (यति

गुग्गुलु (कुम्भ १६५) । २ शोकापुर, दिल्दीर
'विहाणो पयिम्हो' (म ४७३ ज २ ४
ज ३३ शो) ।

पिदाय नि [निष्ठ] १ दिवट (दुमा)
र पसायित । १ इत-धुक, इत-प्राप्त हि १

विहाय एक [विदूष्य] गुरु को विज्ञान
मागता । वहु. विहायमाण (भाषा) ।

विहार देखो विहार (बन १) ।
विहारण (बन) नि [विहारण] चोरलेखना

पञ्चमेवासा । स्त्री णा (मन्त्र) ।
 विहायिय देवो विह्विज (मन्त्र) ।
 विह्वुम वुं [पित्रुम] । प्रवात मूया सि

२६ गण-प्रीति। २ उत्तम गुण (मे २
२६)। ३ अम पु [३] गण-प्रीति का
पुन-पुन का पुन (पुन २ १६३)।

विदुष्य वि [चित्र त] धम्मिणु पण्डित
 'धम्मिण्यविदु' (२३) या (एतत् १ १—
 एतत् १ २) :

यिवृणां स्त्री [वि] लज्जा शरम (वे ७,
६३)।

विदेस वि [विद्वेद्य] द्वेय-योग्य अप्रिय

विहसण न [विह्वेण] एक प्रकार का
प्रभिकार-कर्म जिससे परस्पर में राहुता

विश्वेसि बि [विश्वेप्ति] होप-कर्ता (कुत्र ११७)।

यिहसिअ देवो बिहसिअ (मा १२) ।
यिहसिअ नि [बिभूषित] इय-युद्ध (भरि) ।
यिह भव [सुख] भविष्य देव भवः ।

निम्न (प्रायः १२१ माट—रत्ना ७) ।
कहल विद्विज्जं (बं ५५) । चं विद्विज्जं
(माट १२१, रत्ना ७) ।

विद्य वि [विद्य] बीजा हुमा सेष श्रिया
हुमा (वे १ ११ मणि) ।

यिदृशं चक [यि + ष्यं] क्तिन् होता ।

विट्स सङ्ग [वि + ष्यत्सङ्] विट्स

विद्युत्संयुतं [विद्युत्संयुत] १ विनाश (गुरु १)

२४) । २ वि विनाशकालः । यहा छ
तिमिरचिन्हके अतिदुर्लभ दिशामरे (मत्त ११
२४) ।

विपरीधी ऋ [विपञ्च] बाध-विरोध बीणा
(पृष्ठ १ ४—पृष्ठ १८ २, ३—पृष्ठ
१४६)।

विपञ्च वि [विपञ्च] पञा हुमा (उप १
२११)। ऋषो विपञ्च।

विपञ्च देवो विपञ्च विपञ्च विपञ्च-
लक्ष्मा (मुद्रा १ ३ २४)।

विपञ्चिभ्य वि [विपञ्चि] विपञ्चो दुरयन
(संशोध २६)।

विपञ्चय न [विपञ्चयि] बाधयै वैभ
धम सत्य का मुन-विरोध (सम १२७)।

विपञ्चनाम वि [विपञ्चनाम] १ को पञ्च
बाधा हो बहु (वा २ सं ६६) 'यामानु
ष्यकान् विपञ्चयामानु संकेतान्' (संशोध
४४)। २ इय होता जलता 'उन्निवृत्त-
जलानामविपञ्चालस्य बहु शिर्ष' (पञ्च
४१)।

विपञ्चय देवो विपञ्चय (उप)।

विपञ्चास देवो विपञ्चास (श्रुत-मुद्रा
२२६)।

विपञ्चिषि देवो विपञ्चिषि (सिधे
२११४ समस्त २२०)।

विपञ्चिषि स [विपञ्चि + सिध] निषे
कता। इ विपञ्चिषिः स (मन्त्र ३, ७—
पृष्ठ २१४)।

विपञ्चास स [विप + मास] प्रण
कता। विपञ्चास (वाचा १ ३ २ ३
वि २४४)।

विपञ्चा देवो विपञ्च = विपञ्च (वाच ३)।

विपञ्चि देवो विपञ्चि = विपञ्चि (वा ३=२
वा उप)।

विपञ्चाविद (हो) वि [विपञ्चाविद]
मास्य विपञ्चा मास्य विपञ्चा हो बहु
'एतए नोरिमाए एतए धरे नमहो विपञ्चा-
विद' (हस्त १२१)।

विपञ्चमुस स [विपञ्च + मुस] १ लम-
चक्र कता हिता कता। २ यो कतामा
देय कता। ३ य कतामा होता ज-
जमा। विपञ्चमुस, विपञ्चमुस विपञ्चमुस
(वाचा १ ७०)। देवो विपञ्चमुस।

विपञ्चमुस वि [विपञ्चमुस] विरोध
पञ्चमुस यथिभ्य धवाभीन (पृष्ठ १११
२२)।

विपञ्चिभ्य न [विपञ्चिभ्य] यथैर की
मास्य-प्रमाण यावि जिमा (वाचा २
न १)।

विपञ्चिभ्य वि [विपञ्चिभ्य] विपञ्चि
मुसि मास्य कन्ध-योगाता देवकता
विपञ्चि कन्ध कन्ध विपञ्चिभ्य (हस्त ३)।

विपञ्चिभ्य देवो विपञ्चिभ्य (उप)।

विपञ्चिभ्य स [विपञ्चि + सस] १
स्वविद होता विपञ्चि। २ मुस कता। बहु
विपञ्चिभ्य (समुद्र २२)।

विपञ्चिभ्य स [विपञ्चि + यम] १ बहु
लगा, कन्धको को प्राप्त होता। २ विपञ्चि
होता सस्य होता। विपञ्चिभ्य (वि
३२७)। बहु विपञ्चिभ्यमास्य (सम ७
१—पृष्ठ ३२३)।

विपञ्चिभ्य वि [विपञ्चिभ्य] कन्धको को
प्राप्त (वि २१३)।

विपञ्चिभ्य स [विपञ्चि + यम] १
विपञ्चि कता, जमा कता। २ कन्धको को
प्राप्त कता। विपञ्चिभ्य (स ३१३)। बहु विपञ्चिभ्यमास्य (उप)।

विपञ्चिभ्य न [विपञ्चिभ्य] १ कन्धको को
प्राप्त (वाचा १०१)। २ जमा विपञ्चिभ्य
विपञ्चिभ्य कन्धको को (मन्त्र ३११)।

विपञ्चिभ्य वि [विपञ्चिभ्य] कन्धको को
प्राप्त (सम १ १ १—पृष्ठ २११)।

विपञ्चिभ्य स [विपञ्चि + यम] १ बहु
जमा होता। विपञ्चिभ्य (सम २३ ७)।

विपञ्चिभ्य देवो विपञ्चिभ्य (उप)।

विपञ्चिभ्य स [विपञ्चि + यम] १
लगा। विपञ्चिभ्य (वाचा १ १२—
पृष्ठ १०३)। बहु विपञ्चिभ्यमास्य
(वाचा १ १२)।

विपञ्चिभ्य देवो विपञ्चिभ्य (मुद्रा १ १ ४
वा ३४ वा)।

विपञ्चिभ्य स [विपञ्चि + यम] १ बहु
मास्य। बहु विपञ्चिभ्य (वा २११)।
विपञ्चिभ्य देवो विपञ्चिभ्य (वि २३३)।

विपञ्चिभ्य वि [विपञ्चिभ्य] देवनेराभा
(वाचा)।

विपञ्चा देवो विपञ्चा (उप)।

विपञ्चिभ्य देवो विपञ्चिभ्य। बहु विपञ्चिभ्य
(उप)।

विपञ्चा देवो विपञ्चा (मुद्रा)।

विपञ्चिभ्य वि [वि] विपञ्चिभ्य, विपञ्चा हुमा (वि
७ ६१)।

विपञ्च देवो विपञ्च (वाचा १ १—पृष्ठ ७३)
कन्ध पृष्ठ २ १—पृष्ठ ६६)। वाहन मु
'वाहन' मास्य में होवेला वाहन
कन्धको पञा (सम १२४)।

विपञ्च न [वि] मुद्रा, मुद्रा मुद्रा (वि ७ २७)।

विपञ्च मु [विपञ्च] मास्य विपञ्च (वि १ १७
महा)।

विपञ्च मु [विपञ्च, विपञ्च] १ मुद्रा की विपञ्च
कन्ध। २ विपञ्च की मुद्रा 'मुद्राको विपञ्च
विपञ्चो विपञ्चा घने विपञ्चि विपञ्चा भवति
न पति पावस्य' (विपञ्च ७=१ कीन महा)।

विपञ्च देवो विपञ्चा (उप)।

विपञ्चिभ्य वि [विपञ्चिभ्य] विपञ्च हुमा
इय उय पञा हुमा (वि २ ३, कन्ध)।

विपञ्चिभ्य स [विपञ्चि + यम] इय उय पञा
विपञ्चिभ्य। विपञ्चिभ्य (उप)। बहु विपञ्चि-
भ्यमास्य (वाचा १ १—पृष्ठ १२७)।

विपञ्चिभ्य स [विपञ्चि + यम] १ विपञ्च
प्रयोग कता। २ विपञ्च कन्ध को जोड़ना
मुद्रा वाचाको विपञ्चिभ्य (वाचा १ ८
१ १)।

विपञ्चिभ्य } मु [विपञ्चिभ्य] कन्धको कन्ध
विपञ्चिभ्य } मुद्रा विपञ्च, विपञ्च (उप)
१३ स २०१ यम पृष्ठ ४२, ४३ वा
४३ उय १३ ८ महा)।

विपञ्चिभ्य वि [विपञ्चिभ्य] विपञ्च कन्ध को कन्ध
(सम ७ १—पृष्ठ १२४)।

विपञ्चिभ्य देवो विपञ्चिभ्य। बहु विपञ्चिभ्यमास्य
(वाचा १ १—पृष्ठ १६६)।

विपञ्चिभ्य देवो विपञ्चिभ्य (वि १६६)।

विपञ्चिभ्य वि [विपञ्चिभ्य] कन्धको कन्ध
मुद्रा (मुद्रा १ १ २ ३)।

विष्णुपरिस दु [विप्रमृ] दृष्टि मातृकता
का ध्यान 'वेदाविष्णुपरिस' (अर्गस
१२१७)।

विष्णुगात्र सक [नाराय विप्र + गात्रम्]
गात्र करता। विष्णुगात्र (हे ४ १११ पि
२२११)।

विष्णुगच्छि वि [नाराय, विष्णुगच्छि]
गच्छि (गुमा)।

विष्णुगच्छि वि [विप्रमृ] १ दूरवर्ती दृष्टि पर
लित (व २२१)। २ शीर्ष अन्त्य 'शार
विष्णुगच्छि' (छाया १ ११)।

विष्णुवय सक [विप्र + वयम्] कोक्या
व्याप करता। क. विष्णुवयस्य (तं
१२)।

विष्णुवय दु [विप्रसय] १ ध्वि, शरीर
(कत २१ २४)। २ वि प्रत्यक्ष-उद्भि
प्रतिरवलीय (अव)।

विष्णुवह वि [विप्रसी] परिष्क (छाया
१ २—यम ७१ वंसा १४ १ यम
१२११)।

विष्णुवह सक [विप्र + ह] परिष्काय कला
कोक्ये बना। विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह
(कत, यम दुप १ १ १ कत ४४)।
अथ विष्णुवहविष्णु (वि ११)। क
विष्णुवहमात्र (अ २, २—यम १२, पि
१)। क. विष्णुवहविष्णु विष्णुवहमात्र
(कत २१ ७१ मम)। क विष्णुवहविष्णु
विष्णुवहविष्णु (छाया १ १—यम ४४
पि १७१; छाया १ १—यम १४१)।

विष्णुवह न [विप्रहा] परिष्काय। संजिया
की 'विष्णुवह' बाजरी केन संक-यम का
एक परिष्क—संस्कृति (अ १२१)।

विष्णुवह न की [विप्रहा] प्रकृ
विष्णुवहमात्र [व्याप, परिष्काय] (कत २१
७१ धीरा विवे १ १; यम ११—यम
४४७)।

विष्णुवहिय वि [विप्रसी] परिष्क (पि
२२११)।

विष्णुवहिय के विष्णुवहिय (नं)।

विष्णुवहिय सक [विपरि + ह] विरोध होता
उभय होता। विष्णुवहिय (दुप १ १२१)।

विष्णुविधाय दु [विप्रविधा] प्रतिष्ठा
अटकन (छाया १ ११—यम १४१)।

विष्णुविह दु [विप्रविध] विरोध मार्ग
(य १ ११ टी)।

विष्णुविष्णु के विष्णुविष्णु (यम ७१
टी)।

विष्णुविष्णु की [विप्रविध] १ विरोध
(वि २४)। २ प्रतिष्ठा-यम (अ १११)।

विष्णुविष्णु वि [विप्रविध] १ विरोध
विरोध का से लीकार किया हो वह, 'विष्णु-
वहविष्णु' परिष्कविष्णु २ विष्णुविष्णु
विष्णु का एव यमि होता (छाया १
११—यम १७१)। २ विरोध-आठ विरोधी
का गुमा (छाया १ १ १; यम १ १
१ ११)।

विष्णुविष्णु सक [विप्रवि + वेद्य] १
विष्णुविष्णु १ कला। २ विष्णुविष्णु।
विष्णुविष्णु (छाया १ १, ४ ४) विष्णुवि
विष्णु (यम १ ११)।

विष्णुविष्णु वि [विप्रविध] पापक से
प्रतिष्ठा (यम १)।

विष्णुवी वि [विप्रसी] प्रतिष्ठा (यम
१७७)।

विष्णुवह वि [विप्रन] पक्षाधि, नाट-
मात्र (अ १११, कत)।

विष्णुवह सक [विप्र + यम] १ कला।
विष्णुवह २ कला उत्तर होता। विष्णुवह
(यम १ १२ १७)। क. विष्णुवह
(यम)।

विष्णुवह सक [विप्र + न] कत होता
विष्णुवह होता। विष्णुवह (कत)
अथ विष्णुवहविष्णु (माहि ४)

विष्णुवह दु [विप्रन] विष्णुवह (नवी
१७)।

विष्णुवह सक [विप्र + वार्य] कला।
विष्णुवह (नवी १७)। क. विष्णुवह-
वीरि (टी) (माट—यम ७४)।

विष्णुवी (टी) के विष्णुवी (माट-
विष्णुवी) यावती १ १ १११ गुण
४४)।

विष्णुवह दु [विप्रमा] विभिन्न प्रमा
(यम १ २४ १)।

विष्णुवह सक [विप्र + मुप] कोक्य
मुक कला। क. विष्णुवह (अ २१,
२१)।

विष्णुवह वि [विप्रमु] विष्णु (धीरा दु
१ २१७; गुमा ४४१)।

विष्णुवह न [हे] १ कत-विष्णु। २ कत। १
वि वापि। ४ मुप वेद्य (अ ७ २१)।

विष्णुवह सक [विप्र + वार्य] कला +
विष्णुवह विष्णुवह (दुप १; पि ६)।
क. विष्णुवह (दुप ४४)। क. विष्णुवह (पि ६)।
विष्णुवह (पि ६)।

विष्णुवह की [विप्रवार्य] कला
आई (दुप ४४; यम १४)।

विष्णुवह वि [विप्रवार्य] कला आ
गुमा (यम १ १)।

विष्णुवह वि [हे] विष्णु वीरि 'कत-विष्णु'
विष्णुवहविष्णु विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह
विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह
(छाया १ १—यम १४)। के विष्णुवह

विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह
विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह
विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह

विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह
विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह
विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह

विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह
विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह
विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह

विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह
विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह
विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह

विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह
विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह
विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह

विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह
विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह
विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह

विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह
विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह
विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह

विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह
विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह
विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह

विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह
विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह
विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह

विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह
विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह
विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह विष्णुवह

विष्परिभाषायां श्री [विषयसिन्ता] व्यत्यय
करता (मि ११) ।

विष्पुत्रश्च वि [विषयसिन्ता] विष्पुत्र 'हयविह
यसिपुत्रो बृषी (पञ्च ५ ५२) ।

विष्पुत्र देवो विष्पु = विष्प (प्रा ३७) ।

विष्पुत्रं सक [विष्प + छत्र] छत्रा ।
विष्पुत्रमिति (य २ ६) ।

विष्पुत्रं तु [विष्पुत्रम्] १ वक्षता ठपाय
(क २४) । २ मृत्प्रा की एक प्रवस्था—
जिसमें छत्रधनुषा होने पर भी विषय
समान्य नहीं होता (मुपा ११४) । ३ विष्प
यंश्च व्यत्यय वैरोप्य (बर्म १ ४) । विष्प,
विनोय (कम्प) ।

विष्पुत्रमन्त्र वि [विष्पुत्रमन्त्र] प्रचारक
छत्रावस्था (मुष्प ४०) ।

विष्पुत्रमन्त्र वि [विष्पुत्रमन्त्र] १ प्रचारित ।
२ विष्पुत्र (मुपा २१६) ।

विष्पुत्रश्च वि [विष्पुत्रश्च] वक्षित प्रचारित
(बा ४२ सं ४८ १५) ।

विष्पुत्रय गुण [दे] विविधता विविधता
'संस्तु' सो कर्म बाह्य संस्तुविष्पुत्रय'
(बर्म १२७) ।

विष्पुत्रविद् (टी) न [विष्पुत्रविद्] निरन्तर
बन बहकाव (लप २१) ।

विष्पुत्रय देवो विष्पुत्रय । मुक्ता, विष्पुत्र-
हत्वा (विपा १ २—पञ्च २६) । वक्ष-
विष्पुत्रयमात्र (छाया १ १—पञ्च १२) ।

विष्पुत्रय १ [विष्पुत्रय] १ विविधता
विष्पुत्रय २ टोना कर्म 'प्रविशो विष्पुत्र-
वालो' (सं ५० पृष्ठा १४) । २ विष्पुत्र-
यन बहकाव (सं ११ ११) । ३ विष्पुत्र-
यान (पञ्च ४४ १५) ।

विष्पुत्रिभाषय न [विष्पुत्रिभाषय] गुण-
बन्धन का एक रूप संस्तु बन्धन न करते
हीन में बाधित करते रूप बन्धन (पञ्च २—
पञ्च १२२) ।

विष्पुत्रपुत्रा वि [विष्पुत्रपुत्र] मृत्प्रावस्था
मुत्रा (पञ्च १ १—पञ्च ४६) ।

विष्पुत्राण वि [विष्पुत्राण] मृत्प्रावस्था
(य ७११) ।

विष्पुत्रय [विष्पुत्रय] १ देश का जलन
बाधित । २ मुत्रा टोना के राज्य बाधित से
अन (हि २ १) । ३ टोना की विष्पुत्र-
वता व्यत्यय (मुपा) ।

विष्पुत्रय न [दे] मृत्प्रावस्था विष्पुत्रा (वि ७
१६) ।

विष्पुत्रय सक [विष्प + यस्] प्रवास में
जाता देशान्तर जाता । संस्तु विष्पुत्रयसि
(छाया २ २, २ ३) ।

विष्पुत्रयसि वि [विष्पुत्रयसि] देशान्तर में
ज्या हुआ प्रवास में गया हुआ (छाया १
२—पञ्च ७६, १ ७—पञ्च ११२) ।

विष्पुत्रयसि वि [विष्पुत्रयसि] प्रवास देशान्तर
यमन (प्रवि १) ।

विष्पुत्रयसि वि [विष्पुत्रयसि] १ विष्पुत्र प्रवृत्त
मुत्र । २ प्रवृत्त-विष्पुत्र का मरण (उत् २
१८) ।

विष्पुत्रय सक [विष्प + यस्] विष्पुत्र । मुक्ता,
'वक्षे हयविह' विष्पुत्र विष्पुत्रयसि'
(वि ५१०) ।

विष्पुत्रय सक [विष्प + यस्] प्रवृत्त
मुत्रा । विष्पुत्रयसि (छाया १ ३ १ १) ।

विष्पुत्रय सक [विष्प + यस्] प्रवृत्त होता ।
विष्पुत्रयसि (उत् २, १ सुख २, १) ।

विष्पुत्रय वि [विष्पुत्रय] बाधित वक्षनी (गुर
६ २२१) ।

विष्पुत्रय वि [विष्पुत्रयसि] विष्पुत्र मृत्प्रा
हत्वा (प्रोप) ।

विष्पुत्रय १ [विष्पुत्रय] विष्पुत्र विष्पुत्र
विष्पुत्रय २ (सं ७७; क १११ वि १२;
२ १) ।

विष्पुत्रय वि [दे] हस्त-कर्म जलहास
कर्मवस्था (मुष्प १ ११) ।

विष्पुत्रय गुण [विष्पुत्रय] १ विष्पुत्र, विष्पुत्र
(छाया १ १०—पञ्च २११ या २१२ से
४ ११ ४ ४२१) । २ विष्पुत्रय गुण
(पाप) । आरय वि [कारक] १ विष्पुत्र-
कर्म । २ विष्पुत्रय-कर्म (हि ४ १४४) ।

विष्पुत्रय वि [दे] विष्पुत्र (वि ७ ७) ।

विष्पुत्रय की [विष्पुत्रय] विष्पुत्र (पञ्च १
१—पञ्च ४२) ।

विष्पुत्र की [विष्पुत्र] विष्पुत्र, विष्पुत्र यस्
'मुत्रपुत्राण विष्पुत्रा विष्पुत्र' (वीपा विष्पुत्र
१) ।

विष्पुत्रय वि [विष्पुत्रय] जलहास, जलहास-मुत्र
(वि ७ ७४) ।

विष्पुत्रय गुण देवो विष्पुत्र 'भन्तुस्स विष्पु-
त्रयसि' (विष्प ११४) ।

विष्पुत्रय सक [विष्प + यस्] विष्पुत्रय
करता देवता । वक्ष-विष्पुत्रयसि (पञ्च १
१—पञ्च १८) ।

विष्पुत्रयसि वि [विष्पुत्रयसि] विष्पुत्रयसि
(पञ्च १ ४—पञ्च १११ मन्त्र ११—
पञ्च ४११) ।

विष्पुत्रयसि की [विष्पुत्रयसि] विष्पुत्रयसि-
यसि-विष्पुत्रयसि जिसमें प्रवास से जाती के
विष्पुत्र और मुत्र का विष्पुत्र योपि का अन्त
करता है (पञ्च २ १—पञ्च ६६) । वीपा
विष्पुत्र ७७, संस्तु २ ।

विष्पुत्रय सक [वि + यस्] विष्पुत्र-यस्
वक्षता वक्षता । वक्ष-विष्पुत्रयसि
(छाया) ।

विष्पुत्रयसि वि [विष्पुत्रयसि] विष्पुत्र-यस्
यस्का हुआ परिभाषित

'वक्षयसि' जलहास वक्षय
विष्पुत्रयसि (विष्पुत्रयसि) विष्पुत्रयसि ।

विष्पुत्रयसि वि [विष्पुत्रयसि] विष्पुत्रयसि-
यसि मुत्रासि । (पञ्च ६६, ६२) ।

विष्पुत्रयसि वि [विष्पुत्रयसि] विष्पुत्रयसि (प्राप) ।

विष्पुत्रयसि वि [विष्पुत्रयसि] विष्पुत्रयसि
विष्पुत्रयसि (पञ्च ४ ४—पञ्च ७२) ।

विष्पुत्रयसि वि [विष्पुत्रयसि] विष्पुत्रयसि
(वि ७ ७) ।

विष्पुत्रयसि वि [विष्पुत्रयसि] विष्पुत्रयसि
(क ६ ११२) । २ विष्पुत्रयसि (मुपा ८१) ।

विष्पुत्रयसि सक [वि] विष्पुत्रयसि वक्षय
विष्पुत्रयसि (वर् १) ।

विष्पुत्रयसि देवो विष्पुत्रयसि । संस्तु विष्पुत्रयसि
(पञ्च) ।

विष्पुत्रयसि वि [विष्पुत्रयसि] विष्पुत्रयसि (वर् १ ६) ।

विष्पुत्रयसि की [वि] विष्पुत्रयसि (वर् १ ६) ।

विष्पुत्रयसि देवो विष्पुत्रयसि (पञ्च) ।

विष्पुत्रयसि वि [विष्पुत्रयसि] विष्पुत्रयसि (पञ्च) ।

विष्पुत्रयसि सक [वि + यस्] विष्पुत्रयसि । २
विष्पुत्रयसि । ३ विष्पुत्रयसि । ४ विष्पुत्रयसि
विष्पुत्रयसि (वर् १४ १४ १४ १४) ।
विष्पुत्रयसि (वर् १६, १४, १४, १४)
२२ १) ।

विभय—विभय

विभय रेडो विभज । विभय, विभयि (कम्म
१ ११। माभा उत ११ २३) ।

विभयणा णी [विभयजना] विभय (उम्म
१ १) ।

विभर छक [वि + ह्य] विभरस्य करण
भूम जाना । विभर (वि १११) ।

विभय रेडो विहय (उम) महा ।

विभवज न [विभवज] विभव-करण खण्ड
करणा (एव) ।

विभाइम वि [विभाइम] विभाइ-योग्य (अ
१ २—पत्र ११४) ।

विभाइम वि [विभागिम] विभाइ से कना
हुवा (अ १ २—पत्र ११४) ।

विभाग दु [विभाग] घंट, बाट (कल
छल) ।

विभागिम रेडो विभाइम = विभागिम (अ
१ १११) ।

विभाय रेडो विभाय (रंभ) ।

विभाय न [विभाय] प्रकाश कानि ठेज
(अ) ।

विभाय दु [विभाय] परिषय 'कस पिउ-
मवसाविमयो न होइ' (अ ११७) ।

विभाय छक [वि + भाय] १ विचार
करना काल करना । २ विवेक से बहल
करना ३ समझना । बह-विभायत, विभा-
यैत, विभावेमाय (हुग १७७ का ११७
टी. कम्प) । कम्प. विभाविज्जत विभा-
विज्जत (वि १२। अ ७१) । ईह
विभावेसय (अ) । इ-विभावणीय (जुल
२१४) ।

विभाय रेडो विभय 'छपा महाविभावेसु'
पुत्रण्य पेल्लना गय म' (महा) ।

विभायसु दु [विभायसु] १ वृद्ध, रवि । २
विचार (पत्रम १७ १७७) । रेडो
विभायसु ।

विभायि वि [विभायि] विचारित
(अ) ।

विभाय छक [वि + भाय] १ विवेक से
बहना स्पष्ट करना । २ व्याख्या करना ।
३ विवेक से विचार करना । विभायत (अ
७१ टी) । इ-विभायिष्य (अति १६
१००

विभ १२४) । इह विभासितं (विदे
१ ४४) ।

विभासय न [विभायय] व्याख्या व्याख्यान
(वि १४२८) ।

विभासय वि [विभायक] व्याख्याता
व्याख्या-कर्ता (विदे १४२४) ।

विभासा णी [विभाया] १ विकल्प-विधि
पाठिक प्राप्ति, अथवा विधि धीर नियम का

का विधान (वि १४१ १४४ १४२
११३, १ २ अ ४१४ टी इ १६) । २

व्याख्या विवरण स्मृतिकरण (विदे ११०२
१४२१ वि १२७) । ३ विज्ञान निबन्धन

(अ १८) । ४ विविध भाषण (वि ४१८) । ५ विरोधोक्ति (वेद ११७) । ६

परिभाषा संश्लेष (कम्म १ २८ २१) । ७
एक भाषावी (अ १ १—पत्र १११) ।

विभासिय वि [विभासित] प्रकाशित
उद्घोषित (अमल १२) ।

विभिष्य रेडो विभिष्य = विभिष्य (अ
विभिष्य १४७ ११० अ ११, १११) ।

विभीसय दु [विभीषय] १ एवम का एक
छोटा भाई (पत्रम १ १२) । २ विवेक बर्ण

का एक भावने (अ) ।

विभीसाय वि [विभीषय] भय-जनक
घर्षकर (अ) ।

विभीसिया णी [विभिषिय] सम्प्रवर्तन
(अ) ।

विमु दु [विमु] १ प्रभु, परमेश्वर (पत्रम १
११२) । २ गाय त्रायी मासिक (पत्रम

७ १२) । ३ इन्द्राहु बंध की एक राजा
का भाय (अम २, ७) । ४ वि व्यापक

(विदे १२८५) ।

विमुह णी [विमुहि] १ वैश्वी, वैश्व (अ.
वीप) । २ अत्यंत भूमाय 'महाविमुह'।

विमुह विजुलसय' (मुर १ १२ महा) ।
३ अक्षिप्त (पत्र २, १—पत्र १११) ।

विमुसय न [विमुसय] १ धर्मकार, ब्रह्मा ।
२ योग-विभक्तिकारविमुसय' (अ

वीप) ।

विमुसा णी [विमुसा] १ विचार की अथवा

२ शरीर-शोभा 'महासापी उमरतस वि
विमुसाह कानि' (अ १ २ ६१ ६६
६७ अ १६ १) ।

विमुसिय वि [विमुसिय] विमुपा-युक्त
यस्य, शोभित (अ १ १ १ महा

विभा १ १—पत्र ७) ।

विभेय दु [विभेय] १ मेहन विचारण
विभेय (अम १ २११) । 'अमराणकुम-

विभेयकसे' (अम ७ २८ टी) । २ मेव
प्रकार 'अमराणिकविभेय' विमुसय' (अ
१ ११४) ।

विभेय वि [विभेय] मेहनकर्ता 'परमम
विभेयो' (अम ७१) ।

विभय णी [विभयि] अन्व-विरोध (विम) ।

विभय वि [वि] मलिन विरल्लत (वि
७ ७१) ।

विभय वि [विमुकुल] विकटित विभा
हुवा (अ १ १ १—पत्र १११) ।

विभयि वि [विभयि] विकट बारे में मल
बहल—अत दुक्ति की नई हो नह (मुर ११

१७) ।

विभसिय वि [विभय विमरित] विचारित,
पर्यलोपित (वि १ ४१) ।

विभय रेडो विभय (अ) ।

विभय छक [वि + भाय] १ विचार
करना । २ अन्वेषण करना खोजना । ३

शायना करना सोफना । ४ इच्छा करना
बाहना । विभय, विभय' (अ १ १ १८) । नह विभय' विभयगामय

(अ १११ मुर २ १७ से ४ ११
महा) ।

विभयि वि [विभयि] १ विचारित
योग्य हुवा (वि १२७ मुर ४ १००) ।

२ अन्वेषित अन्वेषित (अम) ।

विभय न [विभय] अन्वेषण (अ) ।

विभय वि [विभय] १ विचारित
योग्य हुवा (वि १२७ मुर ४ १००) ।

२ अन्वेषण मल अन्वेषण (अ १ १ १८) । ३ विचार, इच्छा (अ
७१) । ४ विचार मल अन्वेषण (अ १ १ १८) ।

विमर्ह सक [वि + मर्ह] १ संघर्ष करना । २ मर्दन करना । कबह विमर्हि जमान (छिद्र १ १८) ।

विमर्ह दु [विमर्ह] १ विमल 'धातुपुष्टि-वर्धनविमर्हसुखं' (पुष्ट ३० पञ्च) । २ वन्द्य (पञ्च २२ पुन १६) ।

विमर्ह न [विमर्ह] झार देणो (श्वि) । विमर्ह ठ [वि + मर्ह] मलना भिगना । बहू 'ऊर्ध्वं मुष्टि व सं विमर्हन्ता' (पुन ४ २४४) ।

विमर्ह दु [वि] पर्यन्तसि-विशेष (पण्ड १—पञ्च ११) ।

विमर्ह (म) शीघ्र देणो । विमर्ह (मि) ।

विमर्हिस सक [वि + मर्ह] विचारणा । ह विमर्हिसिद्ध (टी) (मि १ ४) ।

विमर्हिस दु [विमर्ह] विमल विचार (यन) ।

विमर्ह नि [विमर्ह] १ मध-रहित विमुक्त निर्मल (वय घोष ५ ४६) पञ्च ३१ २०) दुग्ध प्राप्ति २ १३०) १११) । २ पुं, दत्त धर्मविलोपाय में कल्पित लेखने विशेष (बन ६४) पठि) । ३ व्याख्यार्थ में होनेवाले वाच्य विमल ब्रह्म (बन १३४) । ४ एक शब्दों में वाच्यार्थ और वचि विमर्हि विशेष की प्रथम शब्दांश में 'चक्रवर्ति' नामक विमल शब्दांश बर्ता है (पञ्च ११ ११) । ५ एक महापद, व्योम्निक-देव-विशेष (अ २ १—पञ्च ७८) । ६ ब्रह्मण्य धर्मिक-वाक्यानुष्मोय नाम (अन १३६) । ७ पुंन शब्दकार वलाक क द्रव्य का एक कार्यात्मिक विमल (अ —पञ्च ४३०) । द्रव्य-देवताक में विमल एक देव-विमान (अन १३४) वदेत (पञ्च ४१) देवत (४४) । ८ ब्रह्माकार धर्मिकों का नाम । ९ लकाकार धातु विमल का आकार (वटीय ५८) । १० पुं धातुका वज्र (पञ्च १—पञ्च १६) । 'पास दु [पाण] एक पुनकर दुग (अन १३) । वद दु [पाण] एक देव धर्मावर्ध (महा) । लला ७ [पाण] कायस्य दीपनायकी को धातु-विमर्ह (विचार ११६) । वर

दु [वर] मानव-प्राणत देवलोका के इन्द्र का एक धार्मिक विमान (अ १—पञ्च ११८) । वाहिन पुं [वाहिन] १ शारङ्ग-वर्ण के धारी प्रथम विमर्ह भिन्नके पुत्रों नाम देवदेव तथा महापुत्र होते (अ १—पञ्च ४२६) । २ पुत्रकर पुत्र-विशेष (अन १ ४१ १३ १३२ पञ्च १ ३३) । ३ व्याख्यार्थ का एक धारी चक्रवर्ति धारा (अन १३४) । ४ एक देव को ब्रह्मण्य धर्मिकान्त के पुत्रों नाम में पुत्र के (पञ्च २ १४ १०) । ५ पञ्चम्य संकल्पक का पुत्र-जन्मीय नाम (अन १३१) । सामि पुं [स्वामि] शिवचक्रकी का धार्मिक शिव (छिद्र २ ४) । सुन्दरी की [सुन्दरी] वह कामदेव की पटरणा (पञ्च २ १५१) ।

विमर्हय व [विमर्ह] मणि धातु की लाप पर विमर्ह वर्ण (दे १ १४८) ।

विमर्हदु दु [वि] कल्पक कोलाहल (दे ३ ७२) ।

विमर्ह की [विमर्ह] १ ऊर्ध्व दिग्ग (अ १—पञ्च ४०) । २ बरलेख के लोकपालों की धर्म-महिषियों के नाम (अ ४ १—पञ्च १ ४) । ३ शीतल शीत शीतल नाम के कल्पवर्तियों की धर्म-महिषियों के नाम (अ ८ १—पञ्च २ ८) । ४ शीतल विमर्ह की शीतल-महिषिका (अन १३१) ।

विमर्हिस वि [विमर्ह] विमल सर्वत्र विमल देणो वहू, वृ (दे ३ ७) ।

विमर्हिस वि [वि] १ मर्ह के लक्ष । २ लक्ष सहित शब्दाला (दे ३ ७२) ।

विमर्हिस दु [विमर्ह] शिवचक्रकी का धार्मिक शिव (छिद्र ७७६) ।

विमर्हिसर दु [विमर्हिसर] देवदेव वर्ण का एक कर्तव्य विमर्ह (अन १३४) ।

विमर्हिस (टी) नि [विमर्हिस] विमल भवन क्रिया मला हो वहू (महा—मायरी ४) ।

विमर्ह ओ [विमर्ह] कौशिकी वा (अन १३ १०१) ।

विमर्ह सक [वि + मानव] धामन बरल, उत्तरार करना । विमर्होमहू (महा ३६) ।

विमर्ह पुन [विमर्ह] १ देव का विमान-भवन (अन २, ५ १ १ १२) अ ८ १ १२) कल्प देवदेव २३ १ २३३) पण्ड ४ ४—पञ्च ४३३ (१२) । २ देव-मान धर्मिक-मान, धार्मिक में वधि करने में सर्वार्थ (अ ६, ७२) कल्प । ३ धर्ममान शिवस्वर । ४ वि मान रहित, प्रमाण कल्प (दे ३ ७२) । विमर्हिस की [विमर्हिस] विमल धर्म-विशेष (अन ११) । मयन म [मयन] विमानकार मू (अन) । वासि पुं [वासि] देवों की एक उत्तम जाति वैष्णविक देव (पण्ड १ ४—पञ्च १५३) (दे २) ।

विमर्हिया की [विमान्त] धर्मलक्षण शिवस्वर (अन १३२) ।

विमर्हिस वि [विमान्त] धर्मलक्षण (दे ४ १५) कल्प मला ।

विमर्हिस व [विमर्ह] विचार करके । गारि वि [गारि] विचार-पूर्वक करने-वाला (अ १५४ १२४) ।

विमर्हिस वि [विमर्ह] विमल निम्न हृद्य, पुन (पञ्च ४ ७) महा ।

विमर्हिसन न [विमर्ह] विमल विमान्त (अन १३१) ।

विमर्हिस वि [विमर्ह] विमल विमल (अन) ।

विमर्हिस देणो विमर्हिस (यन) ।

विमुक्त सक [वि + मुक्त] १ घोष कल्प-मुक्त करना । २ वधिमान करना । विमुक्त (महा) । कर्म, विमुक्त (आन १ १ १६) । बहू, विमुक्त (महा) । विमुक्त [विमुक्त] मान (आन २ १—पञ्च १३१) । ह विमान्त (अन २ १—पञ्च ४७) ।

विमुक्त देणो विमर्हिस (पण्ड १ ४—पञ्च ७२) ।

विमुक्त नि [विमुक्त] १ पुन हृद्य, कल्प-मुक्त नामविमान्त धर्मिक (महा ४६) पाण्य धार्मिक (१३१) । २ वधिमान 'विमुक्त-विमान्त' (महा ७७) । ३ वि. व. व. व. व. व. (आन २, १६) ।

विष्णु दुर्ग [दे] १ एकान्त विजय (दे ७ २१ लाया १ २—पत्र ७२ पुष्प १४४)।
 'धामाय देवीय धैर्यमयि य विष्णुयि य विष्णुयि य पविनायकालीनो २ विष्णुयि' (विष्णु १ २—पत्र ८६)। २ कुटुम्ब से रंगा हुआ कनका (दे ७ २१)।

विष्णुयाम [दे] कुटुम्ब से रंगा हुआ कनका (दे ७ २८)।

विष्णुयि [विष्णुयि] विष्णु की विष्णुयि (कुला)।

विष्णुयि [विष्णुयि] विष्णु-युक्त (मय) ऊँ हे ४ ३७७)।

विष्णुयि [वि + छे] १ नष्ट होना। २ श्रवित होना विषयना। ३ धृक्कर्म विष्णुयि होना। विष्णुयि (दे ४ १६)।

विष्णुयि [विष्णुयि] विष्णुयि विष्णुयि ऊँयोन। की पाँ (मह)।

विष्णुयि [विष्णुयि] शोकेनाला नमकका (दे २ २६)।

विष्णुयि [विष्णुयि] उम्भ-मुक्त धावान बाला (दे २ २६)।

विष्णुयि केको विष्णुयि = विष्णुयि (दे २ २६)।

विष्णुयि [विष्णुयि] कुतोयि (उवा) कीका महा)।

विष्णुयि [विष्णुयि] १ राम का समस्त विष्णुयि उवासीन (पुत्र ११ ऊँ ७२८ टी)। २ विष्णुयि-विष्णुयि कीकाय (पत्र १ ४ टी)।

विष्णुयि [विष्णुयि] के-विष्णुयि (ऊँ १४८ टी)। नयन न [नार] नयन-विष्णुयि (छाया १ ११—पत्र २ ६)।

विष्णुयि (पत्र) [विष्णुयि] एक उवासी का नाम (विष्णु)।

विष्णुयि [विष्णुयि] ऊँयोन विष्णुयि (पत्र ११)।

विष्णुयि [विष्णुयि] विष्णुयि कनका विष्णुयि, विष्णुयि विष्णुयि-विष्णुयि-विष्णुयि (पत्र २ ४—पत्र १११)।

विष्णुयि [वि + यज] शोम्ना नमकका। विष्णुयि (पात्र)। वज्र विष्णुयि, विष्णुयि (ऊँयोन कीका छाया १ १ टी—पत्र २ ६)।

विष्णुयि [विष्णुयि] १ विष्णुयि, विष्णुयि नष्ट (दे ७ १४—पत्र ७२ पुष्प १४४)। २ विष्णुयि (पात्र)।

विष्णुयि केको विष्णुयि (पत्र २ ४—पत्र १४६) पुष्प २ ४ वज्र १ पुष्प १११)।

विष्णुयि केको विष्णुयि (छाया १ १—पत्र १४ वि २४१)।

विष्णुयि की [विष्णुयि] १ पत्र १४ वज्र १ वज्र २ २ १८)।

विष्णुयि की [विष्णुयि] १ वज्र-विष्णुयि (पत्र ४ वज्र २ उवासी ४४)। २ वज्र-विष्णुयि (पत्र ११ १४८)। केको विष्णुयि।

विष्णुयि [विष्णुयि] उम्भ धावान (पत्र १)।

विष्णुयि [विष्णुयि] धावान कनकाय (पत्र १)।

विष्णुयि [वि + यज] १ कनकाय कनकाय शोम्ना। विष्णुयि (उवा)।

विष्णुयि [वि + यज] १ कनकाय कनकाय शोम्ना। विष्णुयि (उवा)।

विष्णुयि [वि + यज] १ कनकाय कनकाय शोम्ना। विष्णुयि (उवा)।

विष्णुयि [वि + यज] १ कनकाय कनकाय शोम्ना। विष्णुयि (उवा)।

विष्णुयि [वि + यज] १ कनकाय कनकाय शोम्ना। विष्णुयि (उवा)।

विष्णुयि [वि + यज] १ कनकाय कनकाय शोम्ना। विष्णुयि (उवा)।

विष्णुयि [वि + यज] १ कनकाय कनकाय शोम्ना। विष्णुयि (उवा)।

विष्णुयि [वि + यज] १ कनकाय कनकाय शोम्ना। विष्णुयि (उवा)।

विष्णुयि [वि + यज] १ कनकाय कनकाय शोम्ना। विष्णुयि (उवा)।

विष्णुयि [वि + यज] १ कनकाय कनकाय शोम्ना। विष्णुयि (उवा)।

विष्णुयि [वि + यज] १ कनकाय कनकाय शोम्ना। विष्णुयि (उवा)।

विष्णुयि [वि + यज] १ कनकाय कनकाय शोम्ना। विष्णुयि (उवा)।

विष्णुयि [विष्णुयि] ऊँयोन केको (पत्र १ २ ७८)।

विष्णुयि [विष्णुयि] १ विष्णुयि विष्णुयि। २ विष्णुयि, उवासीन (दे ७ २१)।

विष्णुयि [विष्णुयि] १ पत्र १४ वज्र १ वज्र २ २ १८)।

विष्णुयि की [वि] वज्र १ वज्र २ २ १८)।

विष्णुयि [वि] वज्र १ वज्र २ २ १८)।

विष्णुयि [वि] वज्र १ वज्र २ २ १८)।

विष्णुयि [वि] वज्र १ वज्र २ २ १८)।

विष्णुयि [वि] वज्र १ वज्र २ २ १८)।

विष्णुयि [वि] वज्र १ वज्र २ २ १८)।

विष्णुयि [वि] वज्र १ वज्र २ २ १८)।

विष्णुयि [वि] वज्र १ वज्र २ २ १८)।

विष्णुयि [वि] वज्र १ वज्र २ २ १८)।

विष्णुयि [वि] वज्र १ वज्र २ २ १८)।

विष्णुयि [वि] वज्र १ वज्र २ २ १८)।

विष्णुयि [वि] वज्र १ वज्र २ २ १८)।

विष्णुयि [वि] वज्र १ वज्र २ २ १८)।

विष्णुयि [वि] वज्र १ वज्र २ २ १८)।

विष्णुयि [वि] वज्र १ वज्र २ २ १८)।

विष्णुयि [वि] वज्र १ वज्र २ २ १८)।

विष्णुयि [वि] वज्र १ वज्र २ २ १८)।

विशङ्खयि वि [विप्रदीर्घ] विशङ्ख ह्रस्वा (पञ्च ७८ २२; से १, २२ ११ ८२)।

विशङ्ख नि [विशङ्ख] विरोध बाका टेका (स २२१)।

विशङ्खि बाकी [विपश्चिद] बाध-विरोध शेष (पाम)।

विशङ्ख नि [विपक्ष] १ पक्षी सङ्घ पूर्ण किया हुआ। २ प्रपञ्च को प्राप्त करण्य पका हुआ। ३ जन्म में प्राप्त पञ्चाभिमुख-विशङ्कतबन्धनेषण रेखाएँ प्रबन्ध बनाने (अ १, २—पत्र १११)।

विशङ्खल पुं [विपक्ष] १ बुद्ध, सिन्धु, विरोधी-विशङ्कलकेहि (पत्र ४ १२४) पञ्च ११)। २ व्यास-शास्त्र-प्रसिद्ध विशङ्कल, बड़ बलु जहाँ लाप्य प्रायि का प्रमाण हो (हर्षान १—पत्रा १४२)। ३ विपरीत करने (धनु)। ४ वैष्णवी सिद्धहस्ता (अ १ टी—पत्र ११)।

विशङ्कल की [विशङ्का] कहने की शक्ती (पत्र १ १ माघ ११ बसनि १ ७२)।

विशङ्क नि [विप्राय] व्यास के समर्थ से मका हुआ व्यास-वर्न-मुक्त (धमा २० ३, १ ३)।

विशङ्कास पुं [विपर्यास] विपर्यय विपरीतता, व्यप्यस, व्यस्य (उत्त १ ४ सुख १ ४ प्रोच २१८)।

विशङ्का की [विस्तार] १ एक महाशरी (हा १—पत्र ४७७)। २ बल-वर्धित की (पत्र)।

विशङ्क शक [वि + पङ्] मरना, मट होना। विशङ्कल, विशङ्कामि (स १११ पञ्च १४३ सुख २ ४२)। अर्ध विशङ्कही (पुत्र १८६)। बड़ विशङ्कल (माघ—पत्रा ७७)।

विशङ्क शक [वि + बर्त्त्य] परिष्कार करना। विशङ्केश (उत्त)। बड़ विशङ्कयंत, विशङ्कमाय (उत्त वर्म १ १२)। ३ विशङ्कयिज्ज, विशङ्कयीज्ज (उत्त ४१७ टी प्रमि १८१)।

विशङ्क नि [विशङ्क] १ रक्षित, बर्त्तित, मरविनम्रहणउत्त वर्म से देव प्रहस्य (पुत्रा २७१)। २ परिष्कार, परिहार (विह १२६)।

विशङ्कयि नि [विपक्ष] वर्त्तन करोगासा (सुख २ १ ३)।

विशङ्कय न [विपक्षेन] परिष्कार (उत्त २२)।

विशङ्कययि की [विपक्षेन] परिष्कार, विशङ्कयि न [विपक्षेन] परिष्कार, वर्त्तन (सम ४४ उत्त १२ २ बसङ्क २ ३)।

विशङ्कययि नि [विपर्यय] विपरीत, उलट (पत्रा ११ १७ कम्म १ २१)।

विशङ्कय पुं [विपर्यय] विपर्यास व्यत्यास, वैपरीय (पत्रा उत्त १४२ टी पत्र ११३ पत्रा ६ १ कम्म १ ३३)।

विशङ्कास पुं [विपर्यास] १ विपर्यय, व्यत्यास (पत्रा पत्रा ८, ११)। २ ज्ञय मिश्राज्ञान (सुर १ १३४)।

विशङ्कयि नि [विशङ्क] रक्षित बर्त्तित परिष्कार (उत्त ४ ११ सुर १ १११ रंभा बर्त्ति)।

विशङ्क शक [वि + वृत्] बहना, चहना। विशङ्क (हे ४ ११८)। बड़ विशङ्कमाय (पुत्रा ६ ८ रंभा)।

विशङ्कयि नि [विपश्चित] विप हुआ (कम्म १६ २२ मय ७ १ टी—पत्र ११८)।

विशङ्कल शक [वि + वृत्] बहना। बड़ विशङ्कमाय (पत्रा १ १ टी—पत्र १७१)।

विशङ्कल नि [विपक्षेन] बहनेवाला 'मयविशङ्कल' (उत्त १६ ७)। की जी (उत्त १६ २)। केको विशङ्कल।

विशङ्क की [विशङ्क] बहान बुद्धि (पत्रा १ ११)।

विशङ्कल नि [विशङ्क] बहा हुआ (माघ—विप)।

विशङ्क पुं [विपक्षि] १ बजार (पुत्रा २१)। २ हाट, हुकाफ-विशङ्की वह बजारों हट्टी (पाम)।

विशङ्कीय नि [व्यपनीय] दूर किया हुआ, हटाया हुआ (कम्म)।

विशङ्क केको विशङ्क=विपक्ष (उत्त २ ४७४ गा २१ म)।

विशङ्क नि [विपक्ष] १ कुम्भ कुटीन (से २ ४७ से १७१)। २ पीका, मिस्त्रेन म्मान (पत्रा १ १—पत्र २४ मे व ८७)।

विशङ्क नि [विपक्ष] १ दो १—ता। २ पुं कुल पङ्क (उत्त)।

विशङ्क पुं [विपक्ष] एक महापङ्क, व्योतिष्क देव-विरोध (सुख २)।

विशङ्क की [विपक्षि] १ बिनाश (पत्रा १ १—पत्र १३७ विप्रा १ २—पत्र १२ पुत्रा २१४, उत्त)। २ मरण मौल (सुर २ ३१ स १११)। ३ कार्य की परिधि (पुत्रा २१२ उत्त बड़ १)। ४ प्राणत का (पुत्रा २१२)।

विशङ्क नि [विपक्षि] छिपता हुआ-कुमाया हुआ (से १ ८)।

विशङ्क पुं [विपक्ष] एक महापङ्क (सुख २)।

विशङ्क की [विपक्षि] १ विपक्ष टीका। २ विस्तार (संदि १)।

विशङ्क न [विपक्ष] बुद्धि बढ़ान (कम्म)। केको विशङ्कल।

विशङ्का की [विपक्षेन] बुद्धि बढ़ान (सं १७३)।

विशङ्क पुं [विपक्षि] देव-विरोध (धनु १८२)।

विशङ्क केको विशङ्क=विपक्ष (पुत्रा ११६)।

विशङ्क नि [विपक्ष] १ मरत प्राय विपक्ष (पत्रा १ १—पत्र १३७) स १४२ पुत्रा २११)। २ मूठ, मय हुआ (पत्रा ४४ १ उत्त १ ४७) स ७२१ सुभनि ११२ वर्मनि १ ८४)।

विशङ्क शक [वि + वृत्] मरना करना विशङ्क करना। बड़ विशङ्कय (पुत्रा २४६) सम्पत्त २१३)।

विशङ्क नि [वि] विस्तीर्ण (पत्र)।

विशङ्क की [विपक्ष] कट हुआ (उत्त ७२४ म)।

विशङ्क शक [वि + वृत्] १ बाध रंभाला। २ विनाशना। ३ व्याख्या करना। विशङ्क (मर्दि) विशङ्क (सं ७११)। बड़ केको विशङ्क विशङ्कली (पुत्र २४२)।

विंशति पुं [विंशति] १ एक महाप्रह
ब्रह्मविष्णु ईश-विरोध (अ १ १—पृष्ठ ७८)।
२ वि ब्रह्म-यष्टि (यज)। कल्प
कल्पसप्त पुं [कल्प] एक महाप्रह (ब्रुम
२)।

विंशतिविट् न [विंशतिविट्] विविध कथा
धर्मक महात्मा (वीर)।

विंशति केवो दीर्घ (महा)।

विंशतिभया केवो विंशतिभया (वाचा १
८, १५)।

विंशतिभय वि [विंशतिभय] विविध साध
भयन भयि का व्यवहार न किन्ना बाध बह,
मन्त्री-बाध, समाज-बाध (अ १ १—पृष्ठ
१)।

विंशतिभोग पुं [विंशतिभोग] साध वैदिक भोग
साधि का व्यवहार (अ १ १)।

विंशतिभोग केवो विंशतिभोग (अ १ १—
पृष्ठ १११)।

विंशतिभय वि [विंशतिभय] १ वस्तु यष्टि
भयनप्रतिष्ठ (पाप स ४७१)। २ विंशति,
विट् (वि ११ ११)।

विंशतिभय प्रक [विंशति + पद] १ भयप्रतिष्ठ
होना वस्तु वस्तु, वस्तु वि विंशति न होना।
२ विंशति होना वस्तु होना। ३ विंशति
होना वस्तु होना। विंशतिभय, विंशतिभय
(वि १ १११ पृष्ठ) 'हो विंशति न भयो
विंशतिभय' (स १५)। ४ विंशति
'विंशति न' (मन ११)।
विंशतिभय (महा ४)। वक्ष, विंशतिभय
(अ ३ ७१ टी वर्ग १)।

विंशतिभय न [विंशतिभय] विंशति, वस्तु
का व्यवहार (अ ३ २१)।

विंशतिभय वि [विंशतिभय] १ विंशति भोग-
वाचा विंशति भोग (अ १ १)।
२ विंशति भोग होना वस्तु वि विंशति न
होना वस्तु वस्तु (अ १ ११)।

विंशतिभय वि [विंशतिभय] विंशति-वस्तु
(वि १ ११ पृष्ठ १)।

विंशतिभय केवो विंशतिभय = विंशतिभय (वर्ग
१५)।

विंशतिभय केवो विंशतिभय (अ १ ११
पृष्ठ)।

विंशतिभय केवो विंशतिभय (अ १ १—
पृष्ठ १११)।

विंशतिभय वि [विंशतिभय] मविन मीना (वि ७
७२)।

विंशतिभय पुं [विंशतिभय] १ वस्तु का भयन
विंशति वस्तु, विंशति वस्तु 'विंशतिभय-
विंशतिभय' (वर्ग १७) पुं १०५)। २
विंशति (वा १११)। ३ विंशति (वि १
१)।

विंशतिभय वि [विंशतिभय] १ वस्तु यष्टि
भयनप्रतिष्ठ। २ वस्तुभयन वस्तु (पुं १
७)।

विंशतिभय न [विंशतिभय] वीर केवो (अ
११, ४) पुं ११ ४८)।

विंशतिभय की [विंशतिभय] १ वस्तु
भयन। २ वस्तु वस्तु (अ ४ १—पृष्ठ
१११)।

विंशतिभय वि [विंशतिभय] वस्तु वस्तु
'विंशतिभय' वस्तु वस्तु (अ ४ १—पृष्ठ
१११)।

विंशतिभय केवो विंशतिभय (वाचा)।

विंशतिभय वि [विंशतिभय] वीर केवो (यज)।

विंशतिभय वि [विंशतिभय] वस्तु-वस्तु
विंशति वस्तु वस्तु (यज)।

विंशतिभय पुं [विंशतिभय] १ विंशति वस्तु
'विंशतिभय' वस्तु वस्तु (विंशतिभय)।
(विंशतिभय)। २ विंशतिभय, वस्तु वस्तु
विंशति (विंशतिभय)। ३ विंशतिभय, वस्तु
विंशति (विंशतिभय)।

विंशतिभय वस्तु [विंशतिभय] १
विंशति वस्तु, वस्तु। २ वस्तु वस्तु। विंशतिभय
(यज)। वक्ष, विंशतिभय विंशतिभय
(महा ४)। वक्ष, विंशतिभय (टी
(विंशतिभय)। ३ विंशतिभय (टी
(विंशतिभय)।

विंशतिभय की [विंशतिभय] विंशति (वर्ग
१५)।

विंशतिभय वि [विंशतिभय, विंशतिभय] १ विंशति
विंशति वस्तु वस्तु (टी १११)।

विंशति पुं ११, ११७)। २ वस्तु 'विंशति
विंशति वस्तु वस्तु वस्तु वस्तु' (विंशतिभय)
(यज)।

विंशति वस्तु [विंशति] वस्तु वस्तु, वस्तु
वस्तु वस्तु। विंशति (विंशति १७१ पृष्ठ)
विंशति (यज)। 'विंशति वस्तु वस्तु'
(यज)। वक्ष, विंशति (स १७१)।

विंशति वस्तु [विंशति + वस्तु] विंशति
विंशति वस्तु वस्तु। विंशति (वक्ष ७१)
विंशति (वक्ष १११)। वक्ष, विंशति
विंशति वस्तु (वक्ष १ अ ४ ४—पृष्ठ
१७१)।

विंशति वस्तु [विंशति + वस्तु] विंशति
विंशति वस्तु वस्तु वस्तु वस्तु। विंशति
(वक्ष १११)।

विंशति वस्तु [विंशति] विंशति वस्तु वस्तु वस्तु
विंशति (वक्ष १११)।

विंशति वि [विंशति] १ विंशति, विंशति (वक्ष
वक्ष १११)। २ विंशति वस्तु वस्तु
वस्तु (वक्ष ७७ वक्ष ११७ न १, वस्तु
वस्तु १ ४२ वक्ष १)। ३ विंशति विंशति,
विंशति, विंशति वस्तु-वस्तु वस्तु हो वक्ष
(विंशति १११)। वक्ष १११)। ४ विंशति
(वक्ष ७)।

विंशति वस्तु न [विंशति] विंशति वस्तु वस्तु
'विंशति'। वस्तु वस्तु वस्तु वस्तु वस्तु वस्तु
'विंशति' (वक्ष १११)।

विंशति } केवो विंशति (वक्ष)। १ १५१।
विंशति } वस्तु वक्ष १११)। 'विंशति वक्ष'
विंशति विंशति वक्ष वस्तु वस्तु (वक्ष)।

विंशति वि [विंशति] १ वीर वस्तु वस्तु। २
वीर वस्तु, वस्तु वस्तु (विंशति १११)। ३ विंशति,
वस्तु वस्तु वस्तु (वक्ष)। ४ विंशति, वस्तु
वस्तु वस्तु (विंशति १११)। ५ वस्तु
वस्तु (विंशति १११)।

विंशति वि [विंशति] १ वस्तु वस्तु वस्तु
वस्तु वस्तु 'विंशति' वस्तु वस्तु वस्तु वस्तु
विंशति (वक्ष १११)। २ वस्तु वस्तु
वस्तु वस्तु (वक्ष १११)।

विंशति केवो वस्तु वस्तु = वस्तु (विंशति १११)।

विंशति न [विंशति] वस्तु (यज)।

विसर्प नि [विसर्प] संज्ञा-पठित विसर्प
वर्जित (वि १ १६)।

विसर्प रेवो विसर्प = विपण्ड (महा वसु
पत्र)।

विसर्प नि [विसर्प] धरत-पठित (वस १)।
विसर्प रेवो विसर्प (शापा १ १—पत्र
११ स्वप्न ११ अ ७२८ टी)।

विसर्प रेवो विसर्प = विपण्ड (पण्ड १ ४—
पत्र ७२; कर्म नि २७)।

विसर्प दु [विसर्प] १ विरिष्ट छव्य। २
वि विरिष्ट छव्यवत्ता (पत्र)।

विसर्प नि [विसर्प] १ विषय शोध-वस्तु
विषयपुत्र (पण्ड १ १—पत्र ११५ सुर २,
१८ सु १२)। २ धातु छव्य (सुष
१ १२ १४)। ३ निपात 'विसर्प' के
संज्ञा विसर्प (शापा १ १—पत्र ११)।
४ दु संज्ञा (सुष १ ४ १ २२)।

विसर्प रेवो विसर्प।

विसर्प रेवो [विसर्प] विद्या-विशेष (पत्र
७ ११६)।

विसर्प सक [वि + सृ] कैलास विसर्प
व्याप्त होना। वर विसर्प, विसर्पमान
(कर्म अ धौन सं २१)।

विसर्प दु [विसर्प] एक गरुड-व्याप्त (केव
२७)।

विसर्प नि [विसर्प] कैलासवत्ता (सुष
४७७)।

विसर्प नि [विमर्प] ऊपर रेवो (सुष)।
विसर्प रेवो विसर्प = वि + सृ। विसर्प
(रंजा ११)।

विसर्प नि [विमर्प] १ अर्ध-श्रीवा उल्ला-
वस्तु (कुमा पत्र)। २ धरत धरत
धरत (मम, पत्र)। ३ धरत धरत
धरत, धरत—एक धरत, धरत धरत।
४ धरत धरत धरत। ५ धरत धरत
धरत धरत धरत (वि १ २४१ वर)। ६
धरत धरत (मम १ २)। विसर्प नि
[विमर्प] धरतधरतधरत धरत धरत
धरत (वि ४ २४)। विसर्प दु [विमर्प]
धरत धरत (पण्ड ११७)। धरत दु
[विमर्प] धरत धरत (सुष)। सर दु [विमर्प]
धरत (वि १; सुष १११; सुष)।

विसर्प नि [वि] अर्ध-श्रीवा (वि ७
१६)।

विसर्प रेवो विसर्प।

विसर्प नि [विमर्प] १ धरत-धरत में
धरतधरत (वि ८ ८७)। २ धरत धरत
(पत्र)।

विसर्प नि [विमर्प] धरत धरत धरत
(वि ८ ८७)।

विसर्प नि [विमर्प] धरत धरत धरत
धरतधरतधरत (वि ८ ८७)।

विसर्प नि [वि] १ धरत धरत। २
धरतधरत (वि ८ ८२)।

विसर्प नि [विमर्प] धरत धरतधरत।
धरत धरत (वि ८ ८२; पत्र १)।

विसर्प सक [वि + सृ] धरत धरत
धरत धरत। धरत धरतधरत (वि
१७४)। विसर्पधरत (वि ८ २)।

विसर्प नि [विमर्प] १ धरत धरत (सुष
४११; सुष ७८ टी)। २ धरत धरत
(पत्र)। ३ धरत धरत (धरत)।

विसर्प दु [विमर्प] १ धरत धरत (सुष ७
१)। २ धरत धरतधरत (वि ८ १)।

विसर्प दु [विमर्प] १ धरत, धरत धरत
धरत धरत धरत—धरत, धरत धरत धरत
धरत (पत्र)। २ धरत धरत (वि ८ १; सुष
११ पत्र)। ३ धरत-धरत, धरत 'धरत-
धरत' धरतधरतधरतधरत (वि १ १ टी—
पत्र ११४ कर्म १ १७ सुष ११; पत्र)।

४ धरत, धरतधरत धरतधरत 'धरतधरत'
(अ ८ २९ टी धरतधरत १)। विमर्प दु
[विमर्प] धरत धरत धरत, धरत (सुष
४१४)।

विसर्प सक [वि + सृ] १ धरत धरत।
२ धरत धरत, धरत। विसर्प (पत्र)।

विसर्प सक [वि + सृ] धरतधरत धरत
धरत धरत धरत। वर विसर्प
(शापा १ १—पत्र ११७ वि १४ २४)।

विसर्प सक वि + सृ धरत धरत धरत
धरत धरत धरत (वि ८ ११)।

विसर्प दु [वि] धरत धरत धरतधरत (वि ७
१२)।

विसर्प सक [वि + सृ] १ धरत धरत।
२ धरत धरत, धरत। विसर्प (पत्र)।

विसर्प सक [वि + सृ] धरतधरत धरत
धरत धरत धरत। वर विसर्प
(शापा १ १—पत्र ११७ वि १४ २४)।

विसर्प सक वि + सृ धरत धरत धरत
धरत धरत धरत (वि ८ ११)।

विसर्प दु [वि] धरत धरत धरतधरत (वि ७
१२)।

विसर्प दु [विसर्प] धरत, धरत धरत (सुष
१ सुर १ १८१ १ १४)।

विसर्प नि [विसर्प] धरतधरत (धरत)।

विसर्प धरत [वि] धरतधरत (महा)।

विसर्प रेवो [विसर्प] धरतधरत धरत
धरत धरत (वि ८ ८७—पत्र ११)।

विसर्प नि [विमर्प] धरत धरत धरत
(वि १११)।

विसर्प रेवो [वि] धरत, धरतधरत धरतधरत
(धरत)।

विसर्प नि [विसर्प] धरतधरत धरत-
धरत (धरत)।

विसर्प सक [वि + सृ] धरतधरत, धरत
धरतधरत (धरत)।

विसर्प नि [विसर्प] धरतधरत (पत्र
११ ११; धरत १८७)। धरत धरत
[धरत] धरतधरतधरत (सुष २ १ २७)।

विसर्प रेवो [विसर्प] १ धरत धरतधरत
(धरत)। २ धरतधरत धरत धरत (पत्र
११ १२)।

विसर्प सक [वि + सृ] धरत धरत धरत
धरतधरत 'धरतधरत' धरतधरत (वि ७ ७१)। धरत
विसर्पधरत (पत्र ११६)।

विसर्प रेवो विसर्प = वि + सृ। वर
विसर्पधरत (वि ८ १)।

विसर्प नि [विसर्प] धरत धरत धरत
धरत धरत धरत धरत (पत्र ४७४,
धरतधरत १४)।

विसर्प सक [वि + सृ] धरत धरत।
विसर्प (धरत)। वर विसर्प (वि १२
२१; सुष २११)। वर विसर्प (वि
१४१)।

विसर्प नि [विमर्प] धरत धरतधरत धरतधरत
धरतधरत धरतधरतधरत (धरत धरत)।

विसर्प रेवो धरतधरत (पत्र)।

विसर्प नि [विमर्प] धरत धरतधरत धरतधरत
धरतधरत धरतधरतधरत (धरत धरत)।

विसर्प सक [विमर्प] १ धरत धरत
(धरतधरत १६७)। २ वि धरतधरत (पत्र ७१
टी)।

विसर्प नि [विमर्प] धरत धरत धरत
(वि १ ११)।

विसर्प (धरत) धरत [विसर्प] धरतधरत
(धरत)।

पिमाह नि [विशद्वि] निशान्मुक्त शक
दत्त (संशोध ३६) ।

पिसाण न [पिपान] : हाथी का दाँत
(सू. १ — न नु २१) । ५
श्रेय दीप (मु. २ १ पा. ५) । १
गुदर का दाँत (ज. १) । ८ नू. ५. डे. ५-१०
(सू. २५ १२) ।

विश्वाम बह [पिराजय] विष्णु शाण
वर बहान । बर्ष विष्णुलीनवि (श्री)
(मृत—मृग १११) ।

विभाषि वि [विशेषिण] १ सीवशात् ।
२ वृ हारी, हारी । ३ शृंगारक विष्णुदा ।
४ कृष्ण नामक धौपप (धनु १४२) ।

विनायक [वि + स्वाइय्] विरोध करनेवाला
 शत्रु । वह विनायकमात्र (छाया १ : १—
 पत्र १७ पृष्ठ) ।

विंशत्यं पुं [विंशत्यं] कर् शोकः विंशत्यं
 पञ्चमेव (यं पञ्च नृणां १ ५ इति
 १२२)। यत् किं [यत्] शिव शोक
 पञ्च (पा १४)।

विष्णवे वि [[विष्णवे]] १ गुण दक्षिण वि
१३६) १ गुण, एक देव-विष्णवे (गण १)

विमार वि [विम्याह] स्वार-पीठ 'धाम'
मदप्रि विमार् विम्यत्त कमलत्त व वं पु
(विने ११६)।

प्रिमात मरु [वि + माहृ] प्रिमात
मरु प्रिमात (उत्त २२ १४) ।

विस्तार वृ [३] मध्य, देव्य (वर्) ।

विमलर वि [विमलर] वार धृष्ट, वि म्
(वृष्ट) ।

विमार्ग्य न [विरारण] अरण्य (वि
२६) ।

विमारणिय इति [विम्वारणिक] त्वाद्य
रत्न विम्वरी शब्द न त्वाद्य दशा हो
(शब्द) ।

उत्तराखण्ड वि. [१] ५४ सीड नमूने (४
५५) :

१५५।१०।१६ [१५५।१६] १५५।१६, १५५।१६
 १५५।१६, १५५।१६ १५५।१६, १५५।१६
 १५५।१६ १५५।१६ १५५।१६

विम्वारि वि [विम्वारिन्] कर्मनेवासा व्यापक
(मरुत)। श्री वा (कम्पु)।

विस्तारि वृ [वि] क्यभाषण, कदा (वि ७
६२)।

पिलाळ जि [पिझळ] १ बिलुव बड्डा,
 पिळोटी, बीडा (नाम) पुर २, ११५) ग्रामि
 १) । २ पुं एक गड-बेरा घाटीया गड-
 घडा येँ एक गडागड (डा २ १-पड
 ७८) । ३ एक एड इतिहास-पिझळ का
 नगर विद्या का इड (डा १ १-पड
 ८३) । ४ पुं, बेन-विमान पिळोव (डा १ १-
 बेड ११६) पड ११४) । ५ पुं, एक विद्या-
 नर-नर (इड) ।

विमानस्य द्वि [५] जसदि. समुद्र (दे ७
७१)।

विज्ञान की [विशाल] १ एक बड़ी ब
नाम उद्घाटनी उद्घाटन (नृप १ १ ज
१ ५) २ मन्त्रालय मन्त्रालय की वि
विधि (विचार १२१) ३ मन्त्रालय
विधि विधि मन्त्रालय मन्त्रालय है
४ मन्त्रालय मन्त्रालय (१३) ५ मन्त्रालय
मन्त्रालय की मन्त्रालय ना मन्त्र (नृप १ २
१ २२) ६ एक मन्त्रालय (मन्त्र)।

त्रिसप्तसिंहा षष्ठो पितरिस (उत्त १ १४) ।

विनासश्च वि [विशामन] विनाशश्च विना
 शश्च विनाशश्च विनाशश्च (गम्य १) ।

विशसिभ वि [वि०सिभ] : शक्ति
द्विभिन विभिन वय विभिन दं वयः २ विभिन
का वे विभिन : ३ विभिन विभिन विभिन
द्विभिन : ४ विभिन विभिन विभिन (वि ४ १३) ।

पिमादं पुं [विशाय] दशम कर्तव्ये
(पाठ) ।

रिमादा ध्ये [रिमादा] १ ग्याम-विद्ये
 (गम १) । २ ध्या-क-वाचक नाम एक ध्ये
 वा ग्याम (वचना १२३) । ३ एक रिमादापर
 ग्याम (गदा) ।

विष्णुसहस्रनाम [विष्णुसहस्रनाम] विष्णुसहस्रनाम
पृष्ठ १५ न. बर्हिषि बर्हिषिनाम्नः रति
नरद्विष्टि विष्टि द्वादि नाम (६४ वन
४९९)।

बिसाही धो [वैद्यराजी] १ वैद्यराज मास की
पूर्णिमा । २ वैद्यराज मास की अमावस्य
(सुज्य १ १) ।

विभिन्न जी [ने] -रि टारी मत्र पर्याप्त (रि
७ ११)।

निसि रेनो निसि (हि १ १२५ प्रा०) ।

धिसिञ्जमाण्येनो विस = वि-इ ।

प्रसिद्धि कि [विशिष्ट] : प्रमाण कुम्भ (पृष्ठ
 १ ६, ७) पृष्ठ २ १—पृष्ठ २६) । २
 विशेष-बुद्ध (महा) । ३ विशेष शिष्ट, मुख्य
 (पृष्ठ ११) । ४ बुद्ध, पवित्र (पृष्ठ
 २१—पृष्ठ १०१) । ५ वैदिक, कि
 विश्वव्यापी (विश्व) । ६ युद्ध सत्त, श्रेष्ठपुत्र
 शैलों का कर्तृ प्रसिद्ध का सत्त (पृष्ठ १—
 पृष्ठ ४४) । ७ म. भाषाओं का शब्द : विशेष वा
 क्यवाच्य (पृष्ठ १८) । ८ विधि को [विधि]
 पवित्र (पृष्ठ २ १) ।

पिसिङ्गि श्री [पिसिङ्गि] निगोपेय ब्रह्म (विद्वान्)
दत्तव्यः ।

बिासपुत्र वि [६] ऐम्य प्रकुर ऐमनासा (६
७ ६४) ।

विधिस्य वक् [वि + धिप्] मिथ्यलुप्त
वरणः । कर्म, विरिष्य विक्र(ति)भ्यस् पुल्ल
नमनात्, भूप्र ज्ये अलिप्तं (सम्भ २८;
२९) ।

पिसिह नुं [[विशिष्ट]] १ बाण्ड कोर (बाण्ड;
पडन = १ । गुण २२) विष्ट ११) ।
२ वि विष्टा यद्विष्ट (पडन २१८) ।

बिर्मा म्ये बिर्मा (हृ १: १९ भाग) ।

जिमी धे [जिशावि] बोन बोन क म्पुह
 'कशी(शिव)भाषा म्पुह' विनीषी (इस्व
 १९८)।

विंशतिमं यत् [वि + सत्] १ छेद करना ।
२ निषाद्य क्षान्ता, दूरना । निषीयत्, निषीयति
निषीषण, निषीष्यद् (नृप १ ३ ४ १) ।
३ ४ २, अ ४ ४—नृप २७ उ१) । यद्
विनीयते (वि ११७) ।

विष्णीश्च वि [विष्णवे] । नीलं, युतिः ।
 २५. ह्यन्ता नमस्ति ह्यन्ता नमस्ति विष्णवे
 विष्णु विष्णवे नमस्ति (गु. १२, १५२) ।

विमीरित व्या विस = वि + यु ।

विशील—विशोद्वि

विशील वि [विशील] १ प्रत्यक्ष-वर्णित
व्यक्तिपरी (नमः उप १२७ टी) । २ बहुरात्र
स्वप्नकाला विष्णु भावराजाला (उप
११ २) ।

विशुद्ध मरु [वि + शुद्ध] शुद्ध करना ।
विशुद्ध (उप) । कः विशुद्धमरु, विशु-
द्धमात्र (उप १२ टी कात्या १ १—पत्र
१४; जगत् पीत सुर १६, १११) ।

विशुण्य वि [विशुण्य] विनाश (पण्ड १
४—पत्र ८२) ।

विशुच वि [विशुच] १ प्रविष्ट । २
बहुरात्र (उप) ।

विशुचिया बेहो विशोचिया (भाषक २४
ख २, १ २) ।

विशुद्ध वि [विशुद्ध] १ निर्मल निर्दोष (उप
११६, उप ४ ४ टी—पत्र २८३ प्राप् २२)
उप १ १ १०) । २ विराज उन्मूलन
(पण्ड १४—पत्र ४८१) । ३ शुद्धि
लोक का एक प्रकार (उप १—पत्र ११०) ।

विशुद्धि औ [विशुद्धि] निर्मलता निर्दोषता
(पीत या ७१७) ।

विशुद्धर एक [वि + शुद्ध] शुद्ध करना या
न माना । विशुद्धर, विशुद्धरि (महा वि
१११), विशुद्धरि (उप २ ४) ।

विशुद्धरि वि [विशुद्धरि] विजय विजय
हुआ ही वह (उप २२४, मुच १, २२ सुर
१४ १७) ।

विशुद्धरि वि [विशुद्धरि] जिस किता हुआ
'भारत-विशुद्धरि' (मुच १११) ।

विशुच न [विशुच] एक और दिन की
कालरात्राला नाम वह समय जब दिन और
रात दोनों बराबर होते हैं (उप २ २) ।

विशुच्य औ [विशुच्य] एक-विशेष हुआ
(उप सुर १६ ७३; कात्या ३, २, १ ४) ।

विशुचि वि [विशुचि] १ कुला हृष्य,
मुखा हृष्य (पण्ड १ १—पत्र १८) । २
कन्या हृष्य (मुच १, २ ४) ।

विशुच्यो विशुचर । विशुच (प्राक् ११) ।

विशुच मरु [विशुच] पेट करना । विशुच
(उप १ ११ प्रप ३१) । वह विशुच

विशुचमाण (उप या ४१४ सुपा ३ २
मरु) । वह विशुचियम (मरु) ।

विशुच्य न [विशुच्य] १ कः । २ पोषा (पण्ड
१ २—पत्र १४) ।

विशुच्य औ [विशुच्य] कः, भक्षक दुष्ट
(उप १ १) ।

विशुचि वि [विशुचि] कः-पुत्र, विनाश
(उप १ ११) ।

विशुचि पुन [विशुचि] एक वै-विद्या
(उप ४१) ।

विशुचि औ [विशुचि] १ विशुच-उन्मूलनी
येति वह रेखा । २ वि विशुचि में स्थित
(उप १ ११ ३ ४) ।

विशुच एक [वि + रोच्य] विशेष-पुत्र
करना पुत्र प्राप्ति द्वारा पुत्र से मिल करना
विशुच से धनित करना, व्यवस्थित करना ।
विशुच विशुच (प्राप्ति लक्षा सुपा ११
टी उप वि ७१; महा) । कः विशुचि
(वि ११११) । उच-विशुचि (वि
१११४) । वह विशुचिपुत्र विशुच-
(वि ११११ १ २२) ।

विशुच पुन [विशुच] १ प्रवेष्ट, पार्षथ
क्रिया 'उच' संपत्तिवि विशुचमर्ति' (सुप
२ १ ४१ मा वि १ २, उप) । २ वेष्ट
प्रकट 'उचवि' विशुच पलाते (उप १
महा उप) । ३ भस्मापण अग्निक्रिया
काच (उप की १२ महा पति २१) ।
४ पर्वत वर्तन (वि २१७) । ५
अधिक अतिशय व्याप्त 'उचो विशुच' से
जुक्त (का. प्राप् १७१; महा, की १२) ।
६ शिखर । ७ शास्त्रिपुत्र-प्रतिष्ठ अर्थात्
विशुच । ८ विशुचि-प्रतिष्ठ धर्मय पर्वत
(वि १ २१) । न्तु [उच] विशुच जानने
नामा (उप १२ महा) । औ म [उच]
काच करने (महा) ।

विशुच पु [विशुच] पुनकरण (उप १) ।

विशुचय न [विशुचय] पुनरुपेक्षित
मार्गनामा पुन प्राप्ति (उप ४४४ प्राक्
८४ पत्र १ १२ वि १११) ।

विशुचपिण्ड देया विशुच = वि + रोच्य ।

विशुचय पुन [विशुचय] विशुच कर्म
प्राप्ति का मस्तक-स्थित चिह्न (प्राप्ति से १०
७४; वेदी ४२; या ११८; पुन २२४) ।

विशुचि वि [विशुचि] १ विशुच-पुत्र
क्रिया पुन भक्ति (सम् १७ वि २१८०) ।
२ विशुचिपति (प्राप्ति) ।

विशुचि रेखा विशुच = वि + रोच्य ।

विशुचि वि [विशुचि] शोक-पट्टि (प्राप्ति) ।

विशुचि औ [विशुचि] शिखर-पुत्र
विनाश-पुन प्रविष्ट पति । २ पुन का विनाश
में धर्म, धर्मपुन पुन विनाश (प्राप्ति
वि १ १२; उप वर्तन ८१२) । ३ शिखर
(प्राप्ति) ।

विशुच पुन [वि + रोच्य] शिखर का
विनाश । शिखर विनाश (वर्तन १७; पत्र
११ २२) ।

विशुच एक [वि + रोच्य] १ पुन
करना, मल उच्छेद करना निर्दोष बनाना ।
२ ध्याय करना । विशुच, विशुचि (उप
लक्षा कः) । विशुचि (प्राप्ति २ १ २
१) । हेतु-विशुचिप (उप २ १—
पत्र २१) ।

विशुच [विशुच] शिखर-पट्टि (वि १
११) ।

विशुचय न [विशुचय] शुद्ध-करण (उप) ।
विशुचय औ [विशुचय] उपर बेहो
(उप ८—पत्र ४४१) ।

विशुचय वि [विशुचय] शुद्ध-कर्तृ (सुप
१ १ १ १६) ।

विशुचि औ [विशुचि] १ विशुचि
विशुचय विशुचय (पत्र १ २ १२१
उप वि १०१; सुपा ११२) । २ धर्मपुन
के योग्य प्राप्तिपति (प्राप्ति) । ३ धर्मपुन
धर्मपुन प्राप्ति पट-वर्तन (प्राप्ति ११) । ४
मिथा वा एक शेष विध शेषपुन प्राप्ति
वा व्याप करने पर पुन विनाश या मिथा-पुन
विशुच हो वह शेष (वि १२४) । अति
औ [विशुचि] पुनरुपेक्षित विशुचि-पुन का
प्रकार (वि १२४) ।

विशुचि वि [विशुचि] १ पुन क्रिया
हुआ । २ पुन शेष-वर्तन (सुप १ १ १) ।

विहाराय (सप्त २१ ७ मुक्त २१ ७
मोक्ष १२४ महात्तम) । संक्ष विहारिणा
विहारिण (मन गत—मन १ २) ।
विहारिण्य विहारिण्य (मन ७१ १—
पन ११) । ३ विहारिण्य (मन
१११ १) ।
विहार सक् [प्रति + हार] प्रतीक्षा करना,
ब्रह्म देखना । विहार (पठ) ।

विहार केो विहार (मन १११ टी) ।
विहार न [विहार] विहार (मुक्त २२) ।
विहारिण न [वि] मुक्त संमेल (१७ ७) ।
विहारिण वि [प्राप्त] मिलने विहार विहा
हो वह (मोक्ष २१) । मन मुक्त १११) ।
विहार सक् [वि + हार] व्यापक होना ।
मन विहर्तृ (मन १११) ।
विहार केो विहार = वि + हार । मन्
विहर्तृ (सि १४ २६) ।

विहार वि [विहृत] व्यापक मन्य (हे १
१०) प्राक् २० पन्थ २ से ३,
१०१ गा २०२, प्राप्ति २, हस्त १४ मन्था
२०१ मन्थ १०२) ।

विहार केो विहार = विहार (संक्ष) ।
विहार वि [विहार] १ निष्पन्न निरर्थक
(गन्ध मुक्ता १११) । २ फलान् कृत्वा निष्पन्ना
मोक्ष विहारं समीपं यत्नं श्रममुपै (पाय) ।
विहार सक् [विहार] निष्पन्न वनाना
निरर्थक करना । विहर्तृ (पठ) ।
विहर्तृपत्तः वि [विहृत] व्यापक
विहर्तृपत्तः १ गौरवता (मन १११ स
१२२, मुक्त १ ११) मुक्त १ १०१ मुक्ता
२०१) । २ विहारविहर्तृपत्तः पवित्रा (मुक्त
१२, २ ०) ।

विहारिण वि [विहृत] व्यापक किया
हुया (मुक्ता १ ११ प्राक् महा) ।
विहारिण केो विहारिण (सि ७ ४१) ।
विहारिण वि [विहारिण] विष्णु विष्णु हुया
(पठ) ।
विहार सक् [वि + क, वि + हार] १
प्राप्त करना । २ हार विहार करना ।
विहार (मन्था १ ११) ।

विहार पुं [विहार] राजा वैश्विक का एक
पुत्र (पठि) ।

विहार पुं [विहार] समृद्धि, संपत्ति ऐश्वर्य
(पाय मन्थ कुमा १६ १ ; प्राप्ति ७२
७६) ।

विहार न [विहार] विमल (पठ) ।

विहार केो [विहार] विष्णु प्रति मर गया
हो वह श्री उर्फ (वीर) मन ना २११
स्वप्न २१ मुक्त १ ४१) ।

विहारि वि [विहारिण] संपत्ति-प्राप्ति वनाना
(मुक्ता मुक्ता १२२ पन्थ) ।

विहार केो विहार = विहार (गन्ध—मुक्त
१६) ।

विहार सक् [वि + हार] १ विहर्तृ
विहार, प्रकृत होना । २ हस्त करना, मन्य
प्रकार का हस्त्य करना । विहार विहार
विहार, विहारिण (प्राक् २१ सक् कुमा
१६ १ १११) । विहारिण, विहारिण्य (मुक्ता
२, २६) । मवि विहारिण, विहारिण्य
(मुक्ता २, २६) । मन्थ विहारिण विहारिण्य
(सि २ १६, मुक्ता १ २, २६) । संक्ष
विहारिण्य विहारिण्य विहारिण्य (मन्थ
१२२ ११३ गन्ध—पठ २० कुमा १,
२) । ३ विहारिण्य विहारिण्य (मुक्ता
२ २) ।

विहार सक् [वि + हार] १ विहार
२ विहारिण्य करना । मन्थ विहारिण्य
विहारिण्य (प्राक् ११) ।

विहारिण वि [विहारिण] १ विहार
हुया । २ विहारिण्य किया हुया (प्राक् ११)

विहारिण वि [विहारिण] १ विहारिण्य
विहारिण्य प्रकृत विहारिण्यविहारिण्य विहारिण्य
(प्राक् ११) । २ म
मन्य प्रकार का हस्त्य (मन्थ १२१ ७३१) ।

विहारिण वि [विहारिण] विहारिण्य
विहारिण्य होना ।

विहारिण्य वि [वि] विहारिण्य, विहारिण्य
हुया (सि ७ ११) ।

विहारिण केो विहारिण्य (पाय वीर) ।
विहार सक् [वि + भा] योग्यता, मन्यता ।
विहारि (टी) (सि १००) ।

विहार सक् [वि + हा] वीर्यमान करना ।
संक्ष विहार (सुप १ १४ १) ।

विहार [विहार] विहारिण्य मन्य, मुक्ता (पन्था
१२ २) ।

विहार केो [विहार] प्रकार, मेव (मुक्ता महा
पठ) ।

विहार केो विहार = विहारिण्य (मन्थ
१११) ।

विहारि वि [विहारिण्य] वरिष्ठ करनेवाला
(विहार ४ ३ सक् ७६ म टी मन्थि १११) ।

विहारि वि [विहारिण्य] १ वरिष्ठ विहारिण्य
(सि १२१० पन्था १ ११) । २ पुं
प्राप्ति-प्राप्ति के उतर विहार का हार (म
२ १—पन्थ १) ।

विहार सक् [वि + पठ] १ विहार
करना मन्य करना । २ विहार करना ।
३ विहारिण्य करना । विहारिण्य, विहारिण्य
(पन्था १ ११ मन्थ ११) । मन्थमन्थ विहारिण्य
(वीर) मन्य । मन्थ विहारिण्य (मन्थ ११)
विहारिण्य (मन्थि ११) । ३ विहारिण्य
(मन्थ) ।

विहारि वि [विहारिण्य] विहारिण्य (पठ) ।

विहारि वि [विहारिण्य] मन्थमन्थ (मन्थ ११) ।

विहारिण्य ॥ [वि] मन्य (१७ ७१) ।

विहारिण्य वि [विहारिण्य] १ विहारिण्य,
मन्य किया हुया (मन्थ ७२२) । २ विहारिण्य
(सुप १२० टी) ।

विहारिण्य वि [विहारिण्य] उन्मादि होता
हुया (मन्थ १२० मन्थ) ।

विहारिण्य वि [विहारिण्य] मन्य करनेवाला
विहारिण्य (पठ) ।

विहारिण्य पुं [वि] १ विहारिण्य विहारिण्य
(१७ ११) । २ विहारिण्य विहारिण्य
करनेवाला (सि ११ पठि) । ३ विहारिण्य,
मन्थ मुक्त (सि ७ ८) । ४ ११ मन्थ
हे ४ ११ । ११२ सि १२२) । ५ मुक्त
मन्थ मन्थ विहारिण्य विहारिण्य विहारिण्य
प्राप्ति-प्राप्ति पठि पठि मन्थमन्थ विहारिण्य
(सि १२१) ।

विहारिण्य न [विहारिण्य] १ शास्त्रीय पठि (मन्थ
७१ १२ १२) । २ विहारिण्य, मन्थ (पन्था

७ ५१ रमाय (महा) । ३ प्रकृतः मय (ये ३
३१ प्रकृत १ १ मय) । ४ मयप्रकृतोक्त
विमिश्रितोक्त (पद्य २ २—पद्य ११४) ।
५ प्रकृतविमिश्रित (मृग २ १ ३२) । ६
विमिश्रित विमिश्रितमयस्य पद्यस्य (मय १ १
टी) । ७ टीति (महा) । ८ नम परिपाटी
(इह १) ।

विद्याय न [विद्वान्] परिषदाय (राज) ।
विद्यायिभ्य (ष्य) वि [विभायिभ्य] कर्ता
करणस्य (स्य) ।

विशाय एक [चि + भा] १ शोभना । २
प्रकाशना चमकना शोभना । विश्रान्ति (म
१२) । बहु-विश्रायंत (जिपि २६८) ।

विश्वाय पुं [विजात] १ श्रवसात् घृत (सि
१ १६) । २ विराडी हुस्मन् परिपन्थी
(सि व ५४) ख ४१२) ।

विधाय केबो विभाग (गजब से १ ३२)।

विहाय वि [विभात] १ प्रकृतित, विहाय
विहाय वि जट्टिप्रो कन्हा (कुप्र २५५)।
२ न प्रमाय प्राय कन्हा (वि १३ ११)।

विष्णुय वैश्वो विष्णुय = विष्णुयस (धा. २३)।

जिह्वाय देवो मित्रा = जि + भा ।

विष्णु (२३) देवो विभिन्न (२३) ।

विहार एक [यि + धारय्] १ प्रवेश
करना । २ विद्येय रूप से वापस करना
इह विहारः (अण्) = ११११) :

विहार १ [विहार] १ विवरण समान, गी
(पृ १ ४) उदा)। २ श्रीका-स्थान (स)

१)। ३ देव-गृह वन-मन्दिर (अथ ३
७ कुमा)। ४ भवस्थान भवस्थिति 'भव
सर्वं इदं नृप सर्वं विहार' (अथ १५ ७)।

सीडा (अ ८ कण) । १ मुनि-वर्तन मुनि
वर्तन, साध्यावार (व १ छदि अ)

भूमि [भूमि] १ स्वाभ्यास-स्वा
(मात्रा २ १ १ ५ कृत् कण्ठ) ।
विषय-भूमि (वच ४) । २ श्रीका-स्थान

विहाप वेतो विभाव = वि + भावम् । विहा-
वद्, विहावेमि (प्रति) स्मि २७) । क्वबद् ।

विहामण न [विधापन] निर्माण करवाना

(विद्य १६) ।
 विहायण न [विभायण] यस्तोचना 'एन'
 विहायण न [विभायण] यस्तोचना 'एन'

विभाषणी की [विभाषणी] एभि निष्ठा

(पाप ज्ञ ७१६ टी सुपा १२१)।
विद्यासु पुं [विद्यासु] पणि घाय
(पाप ७१६ टी सुपा १२१)।

विहायिष्य सि [विभाषित] ह्य, निरुद्धस्य
'निरुद्धं विहायिष्य' (पाष् ५५ ७)।

विद्याविम्व वि [विद्यापित] पञ्चसित प्रस्तुति
(स ३७) ।

विद्वांसि पु [विद्वांस] इति उपहासः (यति) ।
 विद्वांसः } वेदा विद्वासाय । सङ्घः विद्वा-
 विद्वासाय } सिद्धयः विद्वासेक्यः विद्वा

सावित्र्य विहासावेक्य (प्रा. ११) ।
विहासावेक्य ११० विहासावेक्य (प्रा. ११)

विहि पुं [विभि] १ प्रज्ञा चतुष्पदन विभाता
(पाठ्य ग्रन्थ ३०; प्रवर्ग ३२६, कथा) : २

विहितं च [विहित] १ कृत प्रनुष्ठित
निमित्त (पाप) महा । २ पेटित (घोष)

विहिंस सक्र [वि + हिंस्] विविध उपाम्

से मारना, बंध करना । विहिंस (पण्डा ?
१ १ ४) । क विहिंस (पण्डा ? २—

विहिंस वि [विहिंस] हिंसा करनेवाला
'य-विहिंसे कुम्भए दरे' (पद्या १ ९ ४ १)

विदिसग वि [विहिंसक] वष करनेवाता
(माषा यच्छ १ १) ।

पिहिसण न [पिहिसन] निविण प्रकार से
मारना (पद्य १ १—पत्र १५)।

(पण्ड १ १—पत्र ५) । २ विविध हिंसा
(मुख १ २ १ १४) ।

विहृण्ण, वि [विभिन्न] १ पुष्प घनम
विहृण्ण (से ७ ५३ १३ ५६, मवि) ।

विहिम म [दे] भाग्य परम्य (चर ८४२)

टी)।
 विष्टिमिष्टिय वि [वि] विष्टिसिष्ठ प्रकुल
 (प्रा)।

सिद्धिबिह्वल सक् [यि + रण्य] ब्रह्मणा

निर्माण करना । विहिविल्लद (प्राठ ७४) ।
विहिविल्ल वि [विहिविल्ल] १ बजित रहित (ग्राम्)

विद्योत्तर सप्त [प्रति + इक्ष] प्रशिक्षण काल
वाद्य प्रशिक्षण । विद्योत्तर (वि + इक्ष)

पिहीर बि [प्रदीक्ष] प्रवोधा करनेमाला (कुमा

निहारथ वि [मतास्मिन्] भित्तो प्रतीया
 को गई हो षष्ठ (पाथ) ।

बिहीसण देवो बिभीसण (म ८ २५) ।
बिहीसिया केरो बिभीसिया (गुग २४१) ।
बिह ४ [यिज] १ पण्ड बाण (पण्ड) १ २

वीश्रविय वि [वीजित] निष्को रंदा से
हवा क्यई गई हो वह (स ५४६) ।

वीश्र वृक्ष [वीशि] १ तरंग, चक्रकोष (पायः
पौन) । २ शम्भु गहन (मय २—
७७४) । ३ संयोग, संकलन (मय २—
२—पय ४२२) । ४ दुष्प्र-नयन गुणार्थ
(मय २४ ६ टी—पय ४४४) । इच्छा न
[वृक्ष] प्रदेष्टुं स नून इत्य धनवन्-होय
बन्तु (मय २४ ६ टी—पय ४४४) ।

वीश्र की [विह्वलित] १ विरुद्ध कृत गुण
हिया । २ वि गुण हियावाला (मय १
२—पय ४२२) । ३ देवो विगाह (कम
४ ५ टी) ।

वीश्रगाह वि [वीताहार] उप-धीत (मय
७ १—पय २२२ वि १ २) ।

वीश्रकव वि [न्यविश्रान्त] १ व्यतीत,
पुनराहुता 'वाचस्पत्ये वीश्रकवे' (सम ६१) । २ विरुद्ध अवस्थन हिमा हो
वह (मय १ ६ टी—पय ४२६) ।

वाश्रकम सक [व्यति + क्रम] उल्लंघन
करना । वक्र, वीश्रकममाय (सम) ।

वीश्रकनयन वैको दाह = वीजय ।

वीश्रमिस्स वि [न्यविमिश्र] मिश्रित मिता
हुवा (पाया) ।

वीश्रय वि [वीजित] निष्को हवा की गई
हो वह (वीर महा) ।

वाश्रय सक [व्यति + प्रम] १ परि
ग्रहण करना । २ भजन करना, पाया । ३
उल्लंघन करना । वीश्रयवा वीश्रयवा,
वीश्रयवा (मुन २ टी मय १—
पय ४६७) । वक्र, वीश्रययमाय (पाया
१ १—पय ११) । वक्र, वीश्रययवा
पाइसपरा (मय २ ८ १ १—पय
४२६) ।

वीश्र की वैको वीश्र = वीधि (पाय मय १
२-२ २) ।

वीश्र म [विचित्र] दुष्प्र होकर, गुण होकर
(मय १ २—पय ४२३) ।

वीश्र य [विचित्र] विरुद्ध करने (मय
१ २—पय ४२३) ।

वीश्रय वैको वीश्रय । वीश्रयह (मय मुन
२ टी मय ७ १—पय ४२४) । वक्र,
वीश्रययमाय (मय १६, वि ७ १५१) ।
वीधि वैको वीश्र = वीधि (कम्य मय १४
६—पय ४४४) ।

वीधि की [रे] ननु रम्या नोत्त प्रमुखा
(रे ७ ७३) ।

वीज वैको दाह = वीजय । वीजय, वीजयि
(रे ४ २, पय १ ६१) ।

वीजय वैको वाजय (कुमा) ।

वीजय वैको वजय (स ३ ८) ।

वीश्रग [वैको वीश्रग (स ४७) ।

वीश्रय वृ [वीश्रक] सका रायन (मय
७११) ।

वीश्रमि वि [वीश्रित] वमिष्ट रायमिन्ता
(पाया १ ८—पय ४४१) ।

वीश्रिया की [वीश्रिका] सवाया हुवा पाय,
वीश्रा (पय) । वैको वीश्री ।

वीश्र वैको वीश्र (पय) मय २ २२६, मय) ।

वीश्र सक [वि + चारय] विचार करना ।
वीश्र, वीश्रे (मय १५१ मा ७१) ।

वीश्र वैको पाय (पय ११ १५१) ।

वीजय म [वि] १ प्रकट करना (स ४
११५) । २ विरित करना, छापन (स
७६२) ।

वीश्रा की [वीश्रा] वाच-विशेष (मय कुमा
या २११ स्वय १७) । वारिणा की
[वीश्री] वीश्रा-भिमुक्त यश्री 'वा वक्र
वीश्राभिमुक्त वश्री वश्री वीश्राभिमुक्त'
(स ३ ६) । वायस वि [वाश्रक] वीश्रा
वनायेवाला (महा) ।

वीश्र वैको वीश्र = वीश्र (स २ १—पय
४२ पय १७—पय ४६४ मुन २—
पय २२३) ।

वीश्रिक्ट [वैको वीश्रिक्ट (मय १ ३—
वाचस्पत्ये) पय ४६७, लामा १ १—पय
४४ २६) ।

वाश्रियय [वैको वीश्रियय । वीश्रिययि (मय) ।
वीश्रियय [वीश्रियय (पाया १ १२—पय
१७४) । वक्र वीश्रिययमाय (कम्य) ।
वक्र, वीश्रिययवा (वीर) ।

वीश्रम सक [वि + मुद्रा, मीमांस] विचार
करना पर्यालोचन करना । वक्र
वीश्रमिय (सम २१) ।

वीश्रमय वि [विमिश्र मीमांसक] विचार
कर्ता (उम) ।

वीश्रमा की [विमिश्र मीमांसा] विचार,
पर्यालोचन निष्कर्ष की वाह्य (मुन १ १
२ १७ वि २८६; ३६६; २६३, स
४२) ।

वीश्रमिय वि [विमिश्रित मीमांसित]
विचारिता पर्यालोचनित (सम ४४) ।

वीर वृ [वीर] १ अथवा महावीर (पय १
१—पय २१ १ २ मुन २; की १) ।
२ वक्र-विशेष (विम) । ३ वाश्रिय-विशेष
एक वक्र (सयु ११६) । ४ वि पराक्रमी
गुरु (पाया सुय १ ८ २३; कुमा) । ५
पुन एक वक्र-विमान (सम १२ ४६) । ६
न वक्रावर्तन वक्र वक्र वक्रों में स्थित
एक विचार-मय (इ) । वक्र पुन
[वक्र] एक वक्र-विमान (सम १२) । वक्र
वृ [कुमा] राजा वैश्रिक का एक पुन
(मि १ १ वि ३२) । वक्र की
[कुमा] राजा वैश्रिक की एक पत्नी
(स २३) । वक्र पुन [वक्र] एक वक्र-
विमान (सम १२) । वक्र पुन [वक्र] एक
वक्र-विमान (सम १२) । वक्र पुन
[वक्र] अथवा महावीर क वाच
वीरा वक्रावर्तना एक राजा (स ८—पय
४६) । वक्र पुन [वक्र] एक वक्र
विमान (सम १२) । वक्र पुन [वक्र]
गुनराज का एक वक्र राजा (की २;
हम्यीर ११) । 'निहाय म [निधान]
स्थान-विशेष (महा) । पय म [मय]
एक वक्र-विमान (सम १२) । वक्र पुन
[मय] अथवा वक्रावर्तन का एक वक्र-
वक्र (सम ११ कम्य) । वक्र की [मय]
एक वक्र वक्रिणी (महा) वक्र पुन [मय]
एक वक्र-विमान (सम १२) । वक्र पुन
[मय] एक वक्र-विमान (सम १२) वक्र
म [वक्र] वक्रिणी वक्र वक्र वक्रावर्तन,
'वक्र वक्रावर्तन वक्र वक्र' ऐसी वक्र की वाच
(कुमा ६ १६ २२) । वक्रावर्तन

बीसाम पु [विधाम] १ विधान धरम् । २ मन्त्र व्यापार का व्यवहार, वाच्य क्रिया का षष्ठ (हे १ ४१ छे २, ३१ महा) ।

बीसामण रेको विस्सामण (कुप ११) ।

बीसामणा रेको विस्सामणा (कुप ११) ।

बीसाम्य रेको विसाम्य = वि + स्वाभ्य । कृ-
विस्सायणिष्ठ (पण्ड १७—मय ५१२) ।

बीसारे रेको विस्सार = वि + स्तृ । बीसारे
(वर्ग १११) ।

विस्सारिण वि [विस्सारिण] पुन्रवाम्य हुमा
(कुमा) ।

बीसाळ सक [मिभय] १ मित्राला मिलन-
वट करना । बीसाळ (हे ४ २८) ।

पीसाळिण वि [मिभिव] मित्राला हुमा
(कुमा) ।

बीसाई (मर) रेको बीसाम (कुमा) ।

बीसाम रेको विस्सास (प्राप्र) कुमा ।

बीसिया धी [विस्त्रिण] बीस संख्यावाला
(वच १) ।

बीसु न [वि] पुनक पुपु पुवा (वि ७
७१) ।

बीसु न [विष्णु] १ समता, सब धोर
छे । २ समत्पन सास्त्र्य (हे १ २७ ४३
१२ पद कुमा रे ७ ७१ छे) ।

बीसुम रेको बासंम = वि + कम् । बीसु-
मन्त्रा (छा २ २—मय ३ ८० कय) ।

बीसुम सक [वि] पुपु होण पुवा होण ।
बीसुमेखा (छा २ २—मय ३ ८० कय) ।

बीसुमन न [वि] पुपुधय प्रलय होण (छा
२ २ छे—मय ३१) ।

बीसुण न [पिप्रमन्त्र] विषाळ (छा २ २
छे—मय ३१) ।

बीसुय रेको पिरसुम (पण्ड १ ४—मय
१८५) ।

बीसेडि रेको बिसेडि (काय १ छेवि
बीसेडि) १ ४) ।

बीहि पुंन [मं हि] बान, बान्ध-विरोध भातीणि
वा बीहीणि वा बीहानि वा बीहणि वा
(पुप २ २ ११ कय) ।

बीहि } धी [बीधि, का यी] १ मार्ग
बीहिया } रास्ता (भाषा मूय १ २ १
बीही } २१ प्रवी १ मय ११०५) ।
२ बीही पकि (स १४) । ३ धीन पाण
(छा १—मय ४१०) । ४ बाजार (उप २८
महा) ।

मुय वि [वि] १ कुता हुमा । २ कुनमया
हुमा 'जस ठप्टा बीय मय मुय मं न
मयमनसि' (पम २२१) रेको मुय ।

मुय } वि [पुय] १ प्रापित । २ प्रार्थना
पुय्य } जावि से निपछ, 'पुयो' (हंति ४) ।
१ बंदि 'कुम्भमुय्या' (पुपा १३१) ।

मुय वि [वळ] कथित (उप १८ २४) ।

मुय (१) सक [वळ + नमय] १ डंका करना ।

मुय (२) सक [वळ + नमय] १ डंका करना ।

मुयाधी धी [पुयाधी] १ वन का पाय (वे
७ १३) ।

मुय रेको वं = वृन् (पा २४४ छे १ १११) ।

मुयारय रेको बीरारय (वे १ ११२ कुमा
पद) ।

मुयारण रेको बीवारण (हे १ १११ प्राप्र
संति ४ कुमा) ।

मुय रेको वंर (हे १ २३ कुमा १ १८) ।

मुय रेको मुय = वे (वच) ।

मुय वि [वृत्तान्त] १ प्रतिबन्त व्यतीत
कुनर हुमा 'बेतीमं कुनरी महाविमरं
कोलिमं धरवरी' (पाय) 'मुयरी बहुनामो
मुय पक्केनं कुण्ठस' (पुपा २११) । २
विबन्त विगट (पम) । ३ निष्कण्ट वाहर
निकमा हुमा (मिपु १६) रेको बीकंय ।

मुय वि [वृत्तान्त] १ कथित (पम) ।

मुय पु [वृत्तान्त] १ इति, बहान (पुप
२ ३ १) । २ कथित (पुप २ ३ १
२ ३ १७) ।

मुय सक [वृत्तान्त + कृ] १ कथि बीकण
नापय बीयना । कुयारि (भाषा २ ३
१ २) ।

मुयार रेको मुयार (वच) ।

मुयार सक [वि वृत्तारय] १ मर्ज करना ।

मुयारि वि [वि वृत्तारि] १ मर्जना (म
२ ४०) ।

मुगाह पु [वृत्तान्त] १ बहाह भाड़ा
विमह सकारि (छा २ १—मय ३ १४
१ पम २६८) । २ बाह बहाह (उप २
२४४) । ३ बहाह (धरोप ५२) । ४
मिथ्यागिनिष्ठ, कथाह (पम) ।

मुगाह वि [वृत्तान्त] १ बहाह-कारक
मय मुगाहिमं कथं कथिमां (वच १ १) ।

मुगाहि वि [वृत्तान्त] १ कथ-संभवो
(वच १ १) ।

मुगाह सक [वृत्तान्त + माहय] १ बहाह
भात-विच करना । कुगाहो (महा) ।

वृह, मुगाहमाणा (छाय १ १२—मय
१७४ बीय) ।

मुगाहणा धी [वृत्तान्त] १ बहाह
(धोपना २३) ।

मुगाहि वि [वृत्तान्त] १ बहाह
हुमा प्रमोचित किया हुमा (कय वेदम
११७ विरि १ ८१) ।

मुय रेको मय = मय ।

मुयमाणा वि [वृत्तान्त] १ मो कथा बला हो
वृह (पुप १ १ ११ मय उप ११ छे) ।

मुय व [वृत्तान्त] १ बहाह (पुप २ २
८१ वि २८७) ।

मुय रेको पण्ड = वृह (मट—मुय २४४) ।

मुय रेको वृत्त (कय १ १) ।

मुय रेको वृत्त ।

मुयिण रेको मुयिण (पम) ।

मुयि वि [वृत्तान्त] १ कथित (वि २४ २) ।

मुयि वि [वृत्तान्त] १ कथित (वि २४ २) ।

मुयि वि [वृत्तान्त] १ कथित (वि २४ २) ।

मुयि वि [वृत्तान्त] १ कथित (वि २४ २) ।

मुयि वि [वृत्तान्त] १ कथित (वि २४ २) ।

मुयि वि [वृत्तान्त] १ कथित (वि २४ २) ।

मुयि वि [वृत्तान्त] १ कथित (वि २४ २) ।

मुयि वि [वृत्तान्त] १ कथित (वि २४ २) ।

मुयि वि [वृत्तान्त] १ कथित (वि २४ २) ।

मुयि वि [वृत्तान्त] १ कथित (वि २४ २) ।

मुयि वि [वृत्तान्त] १ कथित (वि २४ २) ।

मुयि वि [वृत्तान्त] १ कथित (वि २४ २) ।

मुयि वि [वृत्तान्त] १ कथित (वि २४ २) ।

मुयि वि [वृत्तान्त] १ कथित (वि २४ २) ।

मुयि वि [वृत्तान्त] १ कथित (वि २४ २) ।

मुयि वि [वृत्तान्त] १ कथित (वि २४ २) ।

मुयि वि [वृत्तान्त] १ कथित (वि २४ २) ।

सुरमंड वि [उद्यमान] पानी के देव से बीया
पटा रह जाता (पत्र १ २ २४) बिदि
निगलहोलेदि सुरमंडी (दे ४२)। देवो
बह = बहू।

सुरमंड देवो पुत्राय (वर्म १ २२)।
सुरमयाय देवो सुरमंड (पत्र ८३ ४)।
सुर (पत्र) देवो वय = बहू। सुरह (दे ४
१२२ गुण)। सट सुप्रतिप, सुप्रतिपण
(दे ४ १२२)।

सुद पक [स्युत् + स्या] उठना बड़ा
होना। सुदर (वि ११७)।

सुद वि [सुद] १ बड़ा हुआ (दे १ १३७)
मिदा २, १—वय १ हुआ १ वर)।
२ न सुद (वय १)।

सुदु देवो विद्वि = वृद्धि (दे १ १३७ गुण)।
शय पु [शय] बगला जल-कट्टर (अ
१४ २—वय १३४ वय)।

सुद्वि वि [सुस्वि] जो छल कर बड़ा
हुआ हो बह (वय)।

सुह देवो सुह = पुत्र संघर्ष कर्मवर्तिपुत्रो
(वय २३ २२)।

सुह पक [सुप] बहय (वय १४)।
सुहवि (अ २)।

सुह पक [परप] बहना। बह सुहव
(१ २१)।

सुह वि [पक] १ बर घनस्वायता,
हुआ (वयो मुर १ १ ४ गुण १२७)
वय १२। प्रयु ११६। अर)। २ बहा
मारा (गुण)। ३ इति प्रातः ४ अनुकरी,
सुहल (वय)। ५ वरिष्ठ बलहार
(दे १११ २ ४)। ६ निपुत्र
खन्व, निपहार (अ)। ७ पुं वय
हन्वानी (वयो १ १२—वय १२१। अरु
११)। एक वय सुदि का नाम (अय)।
८ वय न [स] सुहाय, बहायना
(गुण १६ २४२)। बाह पु [वादि]।
एक कर्म वेमापय को मुद्रिष्ठ वरि
विमयन रिपकर के पुत्र वे (वय १४)।
वाय पु [वाह] विरक्तो बहाव
नमर्ति (अ २ ७)। साभा पु [भयक]
बह्मल (वयो १ १२—वय १२१ वयो)।

सुहा वि [सुहा] पु का अनुकरी (अ
११)।

सुह वि [दे] विनाट (अ)।

सुहि की [सुहि] १ बहान बहना (वापा
अय, अया सुहाय)। २ समुपय, अरि।
३ सुहि संपति। ४ व्याकरान-प्रतिष्ठ
देवार धारि बहो की एक संहा (गुण
१ ३। दे १ १११)। ५ सुहु। ६
कमपार, सुह। ७ वीर्य-विरोध। ८ पुं
कमपार-विरोध (दे १ १२१)। अर वि
[कर] सुहि-कता (गुण १ १२१। दे २४)
अमय वि [अमेक] बहनेवाला बर्ग-
शेख (वापा)। म वि [मत्] सुहिवाता
(विचार ४२७)।

सुपाय न [दे] सुगता (वय १७१)।

सुपिय वि [दे] सुहा गुण। 'म-सुपिया
कहा' (गुण २२३)।

सुप्य वि [दे] १ वय वर (दे ७ २४
मिदा १२—वय २४)। २ वरिष्ठ (दे ७
२४)।

सुप वि [वक्त] वरिष्ठ (वयो अरु ३। वयो)।

सुप वि [वक्त] बोधा हुआ (अ)।

सुप न [पुच] अरु, कविता, वय (विप)।
देवो बहू = पुत्र।

सुप देवो सुप (अयो २१)।

सुपत पु [पुचाम्] वय, वयापा, ह्मोक्त
वाय (वय १२३। प्राय है १ १२३। अ
१२)।

सुपि देवो वरिष्ठ = वृद्ध 'वामायावृद्धिपुत्र'
(गुण १ १ ३। प्राय)।

सुप वि [उपि] बहा हुआ या हुआ
(वापा वापा १ ७—वय १४४ वय वय
४१ वय १२७। गुण २, १७ वे ११
। गुण १००)।

सुप देवो सुप = पुत्र (वाय)।

सुपास पु [सुपास] निपक्ष (विरो १४०३)।
सुहि देवो बह = वृद्धि (वाय ७)।

सुह देवो सुह = पुत्र (वय)।

सुदि देवो सुदि (अ १०—वय १२३। अय
१०। वय ४)।

सुस देवो सुप (गुण १ १२७। गुण २२।
वय १। वय गुण है ४ ४२१)।

सुपत वि [स्यमान] वयो वाय। 'वय
म संकलहण विपति अरिपति' सुपत
(वाय २२। वि १२७)।

सुपाय वि [स्युत् + पाय] बहय
करना होस्तिार करना। बह सुपायमाय
(वापा १ १२—वय १७४ वयो)।

सुपक व [दे] ठेकर, सिप-सिप (दे ७
७४)।

सुपम देवो बह = बहू।

सुपमयाय देवो सुपमयाय (गुण २२१)।

'सुर देवो पुर (अरु १६)।

'सुरिष्ठ देवो सुरिष्ठ = पुत्र (वय १६,
४२)।

सुहा पु [दे] वय की एक वय वरिष्ठ
(वय २१६)।

सुह देवो वयस (वाय का वा ४१ ४२।
वय—वय ११)।

सुसि की [सुवि] सुनि का बाहन। वर,
वायस वि [पवि] संस्यी शोभित,
वायो वाड (विह १६)। देवो सुदि,
सुसी।

सुसि वि [सुवि] संस्यी वाय, संस्यी
सुसि संस्यी वय वरिष्ठ (विह १६)।

सुसिम वि [सुसिम] वय म वयसवा वयस
होनेवाला 'वयसवि' सुसिम वयसवा
(विह १६)।

सुसी की [सुसी] सुनि का बाहन। म वि
[मन] संस्यी वाय, सुनि, 'एव वयस
सुसीवयो' (गुण १ ७ १२। १ ११ १३।
१ १२, ४ वय १ ४। गुण २, ११)।
देवो सुसि।

सुस्यगा देवो (वामासगा- वयसवा)
सुस्यगवय वयसवा सुस्यग सुस्यग' (अ
१४३। वयोप १२। २२)।

सुह देवो सुह = पुत्र (गुण २१। २२)।

सुह वि [सुह] १ पाय विना वय,
'वीर्यारिपुत्र व वृद्धि वरिष्ठ रिपकर
वयस' (व १ ४२ वय २। विचार २२६
वय २२)। २ वयो हुआ वृद्धिपुत्रो वय
वयो विवयवय वरिष्ठ वी वय (वय
१०। व १२२)। ३ वय वय, वय म विना

क्या (मत् १२२) । ४ अन्धित, दृष्ट (वि १ २) । ५ निष्ठा निम्ना हुया।
‘कम्पुमहर्हृहोय दुबालसंयो महामही कुहा।
ते यस्सुहृदुमनिरिणो सन्ने भंशमि मायेय’
(बेभम ४) ।

यूनाक युन [ने] बावक बन्ना (राज) ।

यूय नि [दे] कुहा हुया वी न तपदा यूय
नय किणुय वेय यदियमनहि (सुपा १४३) ।

येको युय = (हे) ।

यूह युन [यूह] १ युह के लिए की बाड़ी
हीय की रक्का-विरोध (पण्ड १ ३—पण
४४ भोय स १ ३ हुमा) । २ ययुह
(धन १ ॥ कुम २६) ।

ये बेको यय = ये (पण्ड ॥ पण्ड) ।

ये यक [यि + इ] गट्ट होना । यह (विदे
१ ७६४) ।

ये १ सन [ये] संवरण करना । वेह,
बन } वेह, वेय (पण्ड) ।

बेअ सक [वेदय] १ यनुन करना
भोक्ता । २ जाना । वेय, वेय, वेयति
(सम्पत्तो ११ भम) । बह, वेयंत, वेयमाय
वेयमाय (सम्पत्तो १ पण्ड ७२ ४३
मुपा २४१ छाया १ १—पण ११ नीय
पण्ड २ १२२ मुपा १६६) । कन्ह
वेयमाय (माग पण्ड १ १—पण २३) ।

संह, वेयइटा (सुपा १ १ २७) । ३ यय
वेयम्य वेयम्य (अ २ १—पण ७७
पण्ड २४ सुप ६, १ मुपा ११४ म्हा) ।

बेको वेअ = (वेय) वेयमिअ वेयामय ।

वेय यक [यि + य] विरोध करना ।
वेयह (सुपि ४२ टी) । बह वेयंत (अ ७—
पण १११) ।

यय यक [यय] काना । क्क ययमाय
(पा १२२ प) ।

वेय यु [वेय] १ शाक-विरोध श्रवण यावि
संघ (विपा १ ३ टी—पण १ १ पाया
अ) । २ कर्म-विरोध भोदुन की क
एक नेह, जिसके जय स मेनुन की हथ्था
होटी है (कम्म १ २२० जय ५ १६६) ।

१ पायापण यावि वेह क्क (पाया १ ३
१ २) । ४ विह, याककार (अ) । यवि

[यव] वेको का बावकर (पाया १
१ २) । वि, विउ वि [वि] बहो
यवे (वि ४११ या २३) । यय न
[ययक] यय-विरोध (पाया २ १३
१३) । यय न [यय] वेको यय
(पाया २ १३, २) ।

वेय न [वेय] कर्म-विरोध युज एका युज
का कायस युन कर्म (कम्म १ १) ।

वेय यु [वेय] सीय गति बीड़ सेवी (पाय
से ४ ४३ हुमा महा पण्ड ६३ १६) ।
२ प्रवाह । ३ वेय । ४ युन यावि विसाय-
कम । ५ संस्कार-विरोध (पाय ४१) । वेको
वेग ।

वेयंत यु [वेयान्त] परान-विरोध अनिक्
का विचार करनेवाला वरुन (धम्पु १) ।

वेयग वि [वेयक] १ भोजेवाला यनुन
करनेवाला (सम्पत्तो १२ संघोष ११
भाक १ ६) । २ न सम्पत्त का एक वेह
(कम्म १ १६) । ३ वि सम्पत्त-विरोध
वाला योष (कम्म ४ ११ २२) । ४ यिय
वि [विमनयक] विरुद्ध पुस्त-विह यावि
काय म्हा हो नह (सुप २ २ ११) ।

वेयअक न [वेयक] १ उत्तरासंघ, काटी
में यजोपवीत की तरह पहना भाटा बह,
मत्ता यावि । २ यय-विरोध यकट-सन्ध ।
३ कन्ने के नीचे लटकना (छाया १ ८—
पण १३१) ।

वेयअक [यय] नवना । वैयह (हि
४ ४६ पण्ड) ।

वेयअमि वि [ययित] बड़ा हुया बड़ा
(कुमा पाय अवि) ।

वेयअमि वि [वे] प्रयुक्त, फिर से बोया हुमा
(हे ७ ७७) ।

ययअमि यु [ने] यैकटिक योटी वेयनेवाला
रिणी योहरी (अण्ड) ।

ययअमि वेको ययअमि (वीय) ।

ययअक न [वे] ययवाक, निम्ना (वे
७ ११) ।

वेयअक यु [वेयाक] परान-विरोध (सुर ६
१७ मुपा १२६ म्हा यवि) ।

वेयअक न [वेयम्य] विहवा विह-
अलुवा (मुपा १२६) ।

वेयअमि [वेयन] ययुवे क्क न्म तनवाह
(पाय विपा १ ३—पण ४२ स ५
१६५) ।

वेयअमि न [ययन] १ कम्म काना (बेयम
४१३, गट्ट—उत्तर ११) । २ वि कानन
वाला (बेयम ४१३) ।

वेयअमि न [वेयन] यनुन भोय (पाया
कम्म २ ११) ।

ययअमि वेको ययमिअ (अमा ह १ १६
प्रायु १ ४१ १११ १७४) ।

वेयअमि [वे] वि [वेनीय] १ नोने याय ।
ययअमि २ न कर्म-विरोध युज-कु क
ययि का कायस-युन कर्म (माक अ २
४ कम्म कम्म १ १२) ।

वेयम वेको वेयग (विदे ३२५) ।

ययअपी बी [वेयअपी] १ तरक-गरी
(कुम ४१२ अ) । २ पलायामिक वेको की
एक बाति जो वेयअपी की विरुद्धता करके
सर्वत्र तरक-योनों को रस्तदा है (धम २६) ।

१ विद्या-विरोध (ययम) ।

वेयअ वेको ययअ = विचरिअ ‘वेयकयुन
नियरुअसेण हवइअ विमरिअ’ (मर्मवि
२) ।

वेयअ वि [वे] १ मुहु, कोमल (दे ७
७३) । २ न ययमय (दे ७ ७३ पण्ड) ।

वेयअ न [वेयक] विहवा व्याटुसटा
(बयड) ।

ययअय वेको यय = वेय ।

ययम यु [वेयय] युज-विरोध रेंत का पक
(हि १ २ ७ पण्ड, या ४४२) ।

ययअमि वि [ययअमि] व्याकण्ट-संबंधी
संवेद विपकरण से सम्बन्ध रखनेवाला
(ययम) ।

वेयअर यक [वे] यमा प्रतरणा करना ।
वेयअर (यवि) । कर्म वेयअरमि (पा १ ६) ।

हेह ययारिउ (पा २५१ ययमा ११४) ।

ययारणिय वि [वेयारणिक] विद्याप-
यामनी विद्याप से ज्ञान (अ २, १—
पण्ड ४) ।

मय सक [मन्त्रम्] यमिनः सोपना ।
मेमय (हे १०५) पद) ।

मात्रय [वि विमात्रक] विमात्रा की
मात्रा [संतान (सम्पत् १०१ मोह
२८) ।

मामिनि पुं [विमानिनः] विमान-वासी
मेवा एक उत्तम मेव-वाति (हे २) । बी
गिणी (पय १०—यम ३ ३ पंथा २
१८) ।

मामिनि पुं [वैमानिक] एक उत्तम मेव
वाति विमानवासी मेवा (का प्रौष पय १
१—यम २३) की २४) ।

ममाया की [विमाया] मनिपय विमाया
(मम १ १ टी) ।

मेमिनि वि [यमिनि] म कदल हू (महं) ।

मेवदं पुं [विपण्ड] इली इली (स ११
७११) । मेवा वं ।

मेवायय [न विवायय मेवायय]
मेवायय [मेवायय] मेवायय (यम कद एया
१ १) प्रीता मेवाय १२१ पापक साया
१ १—यम ७३ नर्तक २२३, मु ११) ।

मेर न [विर] मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेर न [मार] मरुता (मरु) ।

मेरग न [मेराय] विपमला जलसीला
(जम रय १ १) मुपा १०३) मरु १११) ।

मेरगिगय वि [मेरायिक] मेराय-मुक्त
विपकी (जम स १११) ।

मेरगय न [मेराय] १ मेराय-यम, विरु
रय (मुह २ १११ कठ) । २ महां पर
रामा विपमान न ही नह रयम । ३ महां
पर प्रमान वाति पय से विरुत रहते ही
नह रयम (महा १११) ।

मेरायि वि [मेरायिक] यमि के लुपेय मरु
का समय (जम २३, २ यम १११) ।

मेरमय न [मेरमय] विपम निपुति (यम
१ १) मय जग) ।

मेराय पुं [मेराय] मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेराय (पय) पुं [विपम] मेराय, मरुतः, रुतुता
(यमि) ।

मेरि [मेराय] मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

मेरिज वि [मे] १ मरुतः, रुतुता (हे १ १२३)
पंथ १२, मरु १२३) ।

बोहरणा मनसवि-विरोध (वृत्त २, २ २१)।

बेहुरिअ } बेहो बहुरिअ (मात्र नि २४१
[सुखिअ] १७ ७७)।

बेहुरा की [बे] मरवा, लाव (१७ ६२)।

बेह पक [बेह] १ कपय। २ लेहय।
१ एक कपय। ४ बेला। बेहस (पि १ ७)। केवसि (वृत्त)। बह बेहस
बेहमाय (बह १ १६१ पि १ ७)।

बेह पक [रु] बीस करता। बेहस (१
४ १६७)। ब बेहपिय (पुत्र ७ १४)।

बेह दु [बे] १ बेरा बास। २ पक्कन। ३
विनास (१७ ६४)। ४ मल-वेहमा, बास
पीस। ५ नि बरिवाह दुर्ध (बहि ४७)।
६ न बेहो बहमा (पुत्र २७६)।

बेहइय बेहो बेहइय (वृत्त)।

बेहमा न [बे] १ एक लड़की माड़ी को
ऊपर के डबरी हुई होती है, उपलब्धि में
'बेह'। २ पत्नी के ऊपर का उभा (या
१२)।

बेहय न [बेहय] बेहया (पुत्र)।

बेहय बेहो बेहमा (पुत्र २७१ १ २)।

बेहुरिअ दु [बे] बेह, बल (वृत्त)।

बेहुरिअ की [बे] बल्लो, बला (वृत्त)।

बेहुरी की [बे] बेहमा, बाटोला (१७
७६६ वृत्त)।

बहुरिअ बेहो बेहुरिअ (पि १ २७)।

बहुरिअ नि [बे] विविध बहमा हुआ (पि
१ २९)।

बहुरिअ } नि [बे] १ बोय मनु (१७
बहुरिअ } ३३ बह बहमा पुत्रा २९२।
ब ७ ४)। २ विनासी (१७ ७६६ वृत्त)।
पुत्रा २९१)। ३ मुहर (या २८)।

बहा धे [बे] मड़ी, लडा, बाली (१७
६४)।

बहासत्र नि [बे] बहुविध बहुमा हुआ (१
७ ७६)।

बहि बेहो बहि (बह बहा)।

बहिर नि [बेहिर] १ कंगया हुआ (१७
२१)। २ मीछ (१७ ६२)।

बेहिर नि [बेहिर] काफलामा (पुत्र)

बेहो बेहो बहि (या २ गडक)।

बह पक [बेह] कपय। बेह (१४
१४७ कपया वृत्त)। बह बेहो बेहमाय
रमा कपया हुआ।

बहपक न [बेहपक] विनाह, छापी (पुत्र)।

बहपय न [बेहपय] कोकपय (पुत्रा)।

बेहय पुन [बेहय] रोम-मिरोय कप
(माया)।

बेहमाय नि [बे] जलसिध जलसत्र माय
(१७ ७६)।

बेहमाय नि [बेहमाय] संकली विनाह
संकलीमाया (पुत्रा ४६६ पुत्र १७७)।

बेहिर नि [बेहिर] १ कपय (या १६२
पय)। २ दु, एकलपक-बला (बेह २७)।

बेहिर नि [बेहिर] बलिनामा (बहा १२,
१ २७३ १ १९२)।

बेहय [बे] बायलपक-पुचक कपय (१
२ १६४ पुत्रा)।

बहय व [बे] वन पत्नी का लुचक कपय—
१ पय, उर। २ बारण कपय। ३ विनाह,
कोक। ४ बायलपक (१२ १६३ १६४
पुत्रा)।

बहय दु [बेह] छीर वर वय नि की लवा-
बह (कपय कपय २९ पुत्रा १७१ १ ७।
पुत्रा पुत्रा)।

बेह नि [बेहय] विरोध कप से बाह्यविषय
(बह ३)।

बेह पु [बेह] १ विरोध विर। २ लडा,
छपीसि (पुत्रा बहि)।

बेह नि [बेहय] बेहोपि, कोक के योग
(यव २, २—यव ११७ पुत्र २—
यव २६२)।

बेह नि [बेहय] १ डेव करने योग्य, छोटे
लिकर (पय ८८ १६४ या १६४ पुत्र २
२ १६४ २१)। २ विरोध, लडा, पुत्रा
(पुत्रा १२३ वर ७६ टी)।

बेह बेहो बहस—बेह (बहि)।

बेहइय नि [बेहय] विषय के संकली
छलेनामा (पि ११)।

बेहपायय बेहो बहसपायय (१ १२३
पय)।

बेहय पु [बेहय] विनाह (पुत्र २७
२४)।

बेहभरा की [बे] मूयोबा बिरानी (१
७ ७७)।

बेहबिहय न [बे] बेहय मिरोय,
पुत्रमाई (१७ ७६)।

बेहय न [बे] बहिर, कोकमाय (१
७ ७६)।

बेहय न [बेहय] बीर माय मला
(पि २४)।

बेहय न [बेहय] बना बायि विनाह—कप
का माय बेहय (पि २२६)।

बहसय पु [बेहसय] १ पकय कुवेर
(पय, बाया २, १—यव २६, पुत्रा
१२८)। २ लडा का उतर विना का कोकमा
(यव ७६ वर १ ७—यव १६६)। ३

एक विनाह-पय (पय ७ ६६)। ४
एक लडा-पय (पि २ १)। ५ एक
लडा का नाम (पुत्रा १२८ १२७)। ६

कोकमाय का बीहय-पय (पुत्रा १ ११
वर २६)। ७ एक बेह-विनाह (बिनाह
१४४)। ८ पुत्र विनाह माय बहो के
विनाह का नाम (य २ १—यव ७)।

९ —यव ४१६ ६—यव ४२४)।

बहय पु [बेहय] बेहय की कपय
ये छलेनामी एक बेह-मायि (यव ७—
यव २६)। ८ पुत्रा [बेह] एक लडा
का नाम (पि १ ६—यव ७७)।

बेहयय पु [बेहयय] बेहय के
बहिर-पय एक बेह-मायि (यव २, ७—यव
१६६)। ८ पुत्रा [बेहय] बेहय के
जल-पय का नाम (य १ —यव ४७२)।

बहय पु [बेहय] एक लडा का नाम (पि १ ६—यव ७७)।

बेहयय पु [बेहयय] बेहय के
बहिर-पय एक बेह-मायि (यव २, ७—यव
१६६)। ८ पुत्रा [बेहय] बेहय के
जल-पय का नाम (य १ —यव ४७२)।

बहय पु [बेहय] एक लडा का नाम (पि १ ६—यव ७७)।

बेहयय पु [बेहयय] बेहय के
बहिर-पय एक बेह-मायि (यव २, ७—यव
१६६)। ८ पुत्रा [बेहय] बेहय के
जल-पय का नाम (य १ —यव ४७२)।

बेहयय पु [बेहयय] बेहय के
बहिर-पय एक बेह-मायि (यव २, ७—यव
१६६)। ८ पुत्रा [बेहय] बेहय के
जल-पय का नाम (य १ —यव ४७२)।

बेहयय पु [बेहयय] बेहय के
बहिर-पय एक बेह-मायि (यव २, ७—यव
१६६)। ८ पुत्रा [बेहय] बेहय के
जल-पय का नाम (य १ —यव ४७२)।

बेहयय पु [बेहयय] बेहय के
बहिर-पय एक बेह-मायि (यव २, ७—यव
१६६)। ८ पुत्रा [बेहय] बेहय के
जल-पय का नाम (य १ —यव ४७२)।

वेसका पु [वृषक] शुद्ध धन्य-वाणीय
मनुष्य (सूय २ २ २४)।

वेसयय पु [वेसयय] वेको वेसमण (हे १
१२२ ४४ वेसय २७)।

वेसबाबिय पु [वेसाबाबिय] एक वेस मुनि-
कण (कण्य)।

वेसवार पु [वेसवार] धनिया बाबि मणाला
(सूय १८)।

वेसा वेको वेस्ता (कुमा गुर १ ११९
कुमा २१२)।

वेसाजिय पु [वेसाजिय] १ एक धन्तरीय ।
२ धन्तरीय विरोध में खड़ेवासी मनुष्य-वाणि
(अ ४ २—अ २२२)।

वेसानर वेको वससानर (वड्डि ६ टी)।

वेसायय वेको वेसियायय (राज)।

वेसासिध वि [वेसासिध] १ समुद्र में
फल्ल । २ विद्यावाचक्य वाणि में कल्प ।
३ विद्यावाचक्य वाणि में कल्प । ४ पुत्र मकण
श्रवणदेव (सूय १ २ ३ २२)। ५
मकण महानीर (सूय १ २ ३ २२,
मक)।

वेसासी की [वेसासी] एक नगरी का नाम
(कण्य ११)।

वेसास वेको वेसासा 'वे को फिर वसामु
वेसासी' (वर्मणि १२)।

वेसासिध वि [वेसासिध, विसास]
विद्यावाचक्य विद्यावाचक्य, विद्यावाचक्य
(अ ५, १—अ ५४२ विद्या ६, १—अ ५४२
अ ५४२ मकण वड्डि १२)।

वेसाह वेको वसाह (गम ४४ १)।

वेसाही की [वेसाही] १ विद्यावाचक्य की
वृत्ति । २ विद्यावाचक्य की वृत्ति (६६)।

वेसि वि [वेसि] वेस करनेवाला (वराय
५ १८० गुर १ ११२)।

वेसिध वेको वेसिध (हे १ १२९)।

वेसिध पु [वेसिध] १ वेस कणिक
(सूय १ ६ २)। २ म. वेसिध शास्त्र-
विरोध, काक-वाचक्य (धनु ११) राज)।

वेसिध वि [वेसिध] वेस-शब्द वेस-शब्दको
(सूय २, १ २५; व्यास २, १ ४ १)।

वेसिध वि [वेसिध] १ विरोध रूप से
धनितकित । २ विविध प्रकार से धनितकित
(अ ७ १—अ २२२)।

वेसिट्ट वेको वेसिट्ट (वर्मणि २०१)।

वेसिणी की [वे] बरया गणिका (मा
२७४)।

वेसिया वेको वेस्ता 'कमावणी म मुण्ड
कमावणीय वेसियायय' (अ १११ अ
४ ४—अ २०१)।

वेसियायय पु [वेसियायय] एक बाल शाप
(अ १२—अ ११२ ११२)।

वेसी की [वेसी] वेस वाणि की की (सूय
३ ४)।

वेसुम पु [वेसुम] गुरु वर (आ २८)।

वेस्त वेको वसस्त = वेस (सूय १ ६, २)।

वेस्त वेको वेस = वेस (अ ११ १८)।

वेस्त वेको वेस = वेस (राज)।

वेस्ता की [वेस्ता] १ पर्यायवाचक्य गणिका
(विदे १०३; मा १२९ ८६)। २
श्रीवि विरोध वाचक्य का वाचक्य (आ २९)।

वेस्तासिध वेको वेसासिध (अव)।

वेह सक [वे + शक] वेहना धन्यकर्म
करना 'वेहा धन्यकर्मसि विष्णु की
वेहा' (सूय १ १ १ १)।

वेह सक [वे + शक] वेहना धन्यकर्म
(वि ४४६)।

वेह पु [वेह] १ वेहन वेस (अ १२५;
कण्य १४२)। २ धनुषीय धनुष विषय ।
३ धनुष-विरोध एक लक्ष्य का गुण (सूय १
६, १०)। ४ धनुष्य कल्प्य वेस (परा
१ ३—अ ४२)।

वेह पु [वेह] विधि विषया (गुर
११ ३)।

वेहण न [वेहण] वेहण, वेह करना (अ
१४१) वर्मणि ७१)।

वेहण वेको वेहण्य (अ १ ११ टी)
वर्मणि १०१ टी)।

वेहण्य पु [वेहण्य] राजा वेहण्य का एक
गुण (अ २ ३ निर १ १)।

वेहण सक [वेहण] व्यना । वेहण्य (हे
४ ६१ पृ)।

वेहण न [वेहण] विष्णु वेहण्य (अधि)।

वेहणिय पु [वे] १ धनार, विस्तार ।
२ वि वेधी (हे ७ ६९)।

वेहणिय वि [वेहण्य] प्रणयि (हे ७
६९ टी)।

वेहण्य न [वेहण्य] १ विहण्यन रक्षा
उपण्य (मा ११ ह १ १४८ नल्ल)
गुण ११६)।

वेहाण्य वेको वेहायस (मा २ १ २
अ २ ४—अ ६१; अ ६१; अ ६१
१६—अ २ २ २४)।

वेहाण्यिय वि [वेहायसिक] वेहायसि
वे लक्ष्य कर मनेवाला (मने)।

वेहायस वि [वेहायस] १ वेहायस-धन्यको
वेहायस में वेहायस । २ म. वेहायस-विरोध
वेहायस कर मना (अ १५७)। ३ पु
वेहायसिक का एक गुण (अ २)।

वेहायसि वि [वेहायसिक] वेहायस-धन्यको
वेहायसिक (अ २ ४२)।

वेहास न [वेहायस] १ वेहायस कल्प
(आ १ ८—अ १५४)। २ वेहायस
वेहायस (सूय १ २ १ ८)।

वेहास वेको वेहायस (अ १२७ अ १)।

वेहिय वि [वेहिय, वेह्य] वेहिय वेहिय को
वेहिय करने वेहिय (अ ७ १२)।

वेहिय वेको वेहिय (अ १५)।

वेहिय वेको वेहिय (वि १ १)।

वेहिय वेको वेहिय । वेहिय वेहिय वेहिय
(अव)।

वेहिय वि [वेहिय] वेहिय वेहिय (अधि)।

वेहिय वेको वेहिय = वेहिय (हे १ १२६)।

वेहिय वि [वे] वेहिय-वेहिय पर वेहिय वेहिय-
वेहिय, वेहिय गुर (७ ४)।

वेहिय वेको वेहिय (वि १)।

वेहिय वेको वेहिय (वि १)। वेहिय वेहिय
(अधि)।

बोक्ष सक् [बुध + क्] उक् + नक्] मुक्ता
रत्न, धातुमान करता। बोक्षइ (यङ् + प्राङ्
७४)।

बोक्ष सक् [धृ + नट्] धक्षिय करता।
बोक्षइ (प्राङ् ७४)।

बोक्षति नि [बुध् + क्] विपरीत कर्म से
निकट (हे १ १११)। २ प्रतिबन्धता 'पक्ष
कर्मबोधकर्म' से वस्तु सम्बन्धित 'व्यतिरिक्त'
(वन्म न)। केवो बुद्धि।

बोक्षस सक् [बुध + क्] हृष्ट प्राप्त
करता, कमी करता। क्वक्-बोक्षसिद्ध्याय
(अव १ १-पञ्च २२)।

बोक्षस केवो बोक्षस (हृष्ट १ १, २)।

बोक्षस केवो बुद्धस = बुध् + क्। बोक्ष-
धाहि (धाया २ १ १४)।

बोक्ष की [बे] नाव-विरोध 'जन्मबोधकाय'
रवो विविधो रपरकषण' (धृता २४२)।
केवो बुद्ध।

बोक्ष की [ब्याहृति] मुक्ता (ज ७९
टी)।

बोक्षर केवो बोक्षर (गुर १ २४१)।

बोक्षस केवो बोक्ष = ज् + न्। बोक्षइ
(बन्मा १२४)।

बोक्षसिद्धय नु [धव + नट्] धातुमय (यहा)।

बोक्षसारिप नि [बे] निमुक्ति 'पक्षविरोध-
बन्मबोधात्मिकव्यतिरिक्त' (व २१२)।

बोक्ष नि [ब्याहृति] १ बहा हृष्टा प्रति-
पादित (हृष्ट २ ७ १ = क्य क्व)। २
परिहृष्ट (धातानि २२२)।

बोक्ष की [ब्याहृति] प्रकट धर्मे बन्ती
धन्वा (नट् ११-पञ्च १७४)।

बोक्षसिद्ध नि [बुध् + क्] निष्कर्षण,
बाहर निकाला हुआ (हृष्ट २)

बोक्ष [यक्] बोक्षता बन्मा। बोक्ष,
बोक्ष [बोक्षइ] (धाया १२४)।

बोक्षस नि [बुध् + नट्] विपरीत, कट्ट
'विपक्षिणे' (कट्ट) बुद्धिबोध' (पञ्च ५
१। मुक् २, विरे २१)।

बोक्षस [बे] विपरीत वर (हे ७ २)।
व्यतिरिक्त केवो वय = वक्।

बोक्षिद्धय सक् [बुध् + क्] १
शोभा शोभा, वरिष्ठ करता। २ विनाश
करता। १ परिधाय करता। बोक्षिद्ध
(पञ्च २२ २)। यदि बोक्षिद्धिर्वाय (वि
२१२)। कर्म बुद्धिर्वाय बोक्षिद्ध, बोक्षि-
द्धय (कर्म २ ७। वि २४४) काय)। यदि
बोक्षिद्धिर्वाय (वि २४४)। वक्, वा व्यतिरिक्त,
बोक्षिद्धिर्वाय (वि १२ १२, ठा १-पञ्च
१२२)। क्वक्-बोक्षिद्धिर्वाय बोक्षिद्धिर्वाय
(वे ५, १) ठा १ १-पञ्च १११)।

बोक्षिद्धय केवो बोक्षिद्ध (विपा १ २-
पञ्च २७)।

बोक्षिद्धि की [व्यतिरिक्त] विनाश
'व्यतिरिक्त' (विरे १११)। जय नु
[न] पर्याप्त (उचि)।

बोक्षिद्ध केवो बुद्धिर्वाय (पञ्च क्व गुर
१ १२)।

बोक्षिद्ध [बुध् + क्] १ बुद्धि, विनाश
'व्यतिरिक्त' (धाया १ १-पञ्च ६; वरिष्ठ
२२)। २ धातुमय व्याप्ति (कर्म १
२१)। ३ प्रतिबन्ध रकाट विरोध (ब्या-
पञ्चा १ १)। ४ विनाश (वज्र ७४)।

बोक्षिद्धय न [बुध् + क्] १ विनाश
(विजय २२४ विज १११)। २ परिधाय
(अ १ टी-पञ्च १११)।

बोक्ष केवो बुद्ध। बोक्षइ (हे ४ ११५ टी)।

बोक्ष सक् [बोक्ष] १ ब्या करता। बोक्षइ
(हे ४ २, वक्)। वक् धातुवत् (मुक्ता)।

बोक्षर नि [व्यतिरिक्त] वरिष्ठता (मुक्ता)।

बोक्षस केवो वक् = वक्। यदि 'वैले कवेले
वेले समवेले वंवाधिवो वंवाधिवो वंवाधिवो
व्यतिरिक्त' धातुमय व्याप्ति (वि २१२)। क.
'व्यतिरिक्त' धातुमय व्याप्ति (वि २१२)। क.
'व्यतिरिक्त' धातुमय व्याप्ति (वि २१२)। क.

बोक्षस [बुध् + क्] १ बोक्ष, धार, धर्मि-
बोक्षस [बोक्ष] १ बोक्ष, धार, धर्मि-
(हे ७)।

बोक्षर नि [बे] १ धर्माय। २ धर्म वर
(हे ७ २१)।

बोक्षि [बे] धक्, वीज (वक्)।
बोक्ष नि [बे] १ वृत्त। विज-कर्म, विजका
कर्म वक् वया हो वक् (वा १४२)। केवो
बोक्ष।

बोक्ष की [बे] १ वक्की मुक्ति। २
मुक्ता विपरीत बोक्षी (वा १२२)।
केवो बोक्ष।

बोक्ष नि [बे] वक् वीज (वक्)।

बोक्ष नि [ऊट] वक् किया हुआ (बन्मा
१२४)।

बोक्ष नि [बे] केवो बोक्ष (वा २२, व)।

बोक्षस केवो वक् = वक्।

बोक्ष नि [बोक्ष] वक्-कर्म (वक्)।

बोक्ष केवो वक् = वक्।

बोक्षस [बुध् + क्] वक् कर (वि २११)।

बोक्षस केवो वय = वक्।

बोक्षस नि [व्यतिरिक्त] वक् कर (वक्-
१२४)।

बोक्ष
बोक्षस केवो वय = वक्।

बोक्षस न [व्यतिरिक्त] १ कर्म-विपरीत कर्मों
वा विनाश (अ १ १-पञ्च १२१ वज्र
२२)। २ बुद्धि, विरोध कर के कर्म
विरोध (पञ्चा १४ ४ वज्र २२, १ अ)।

३ वज्र वक् (हृष्ट १ १४ १७)। ४
व्यतिरिक्त-विरोध (वज्र १-पञ्च १४)।

बोक्ष नि [बे] वक्का मुक्ता (हे ७ २)।

'बोक्षसिद्धि' धातुमय (हे २ २)। वक्.

की 'व्यतिरिक्त' धातुमय (हे २, व)।

धार्मिक नि [बे] वक्का वीज वरिष्ठ (हे
७ २)।

बोक्ष न [बोक्षस] धातुमय वक् (वज्र
विरे १२२)। 'विजय नु [बुध् + क्] वक्
वक्का वय (वज्र ७ २२)।

बोक्षस नु [बे] वक्का वय (हे ७ २)।

बोक्षसिद्ध न [बे] धातुमय वय का वक्का
(हे ७ टी)।

बोक्षस नु [बोक्षस] वक् वीज मुक्ति (कर्म)।

बोक्षस की [बोक्षस] वक् वीज मुक्ति-
वक्का (कर्म)।

श

शिखाळ (मा) पु [सिखाळ] बहू का भाई, (मिट (मा) कैतो सिद्धु - रवा। मिटरि
सत्ता (माळ १ २ मध्य २ ४)। (बाबा १२४ माळ १ ३)।

॥ इयं विरिपाद्भस्मसहस्रहृज्जगन्मि शम्भोऽसहस्रंभरु
 धृतीशम्भो धरणी समस्तो ॥

स

स पुं [स] व्यञ्जन कर्ष-विशेष इत्यत्र
 कर्णाकार-स्वात वधि होने से यह कर्ण कहा
 जाता है (शाय)। अत्र त्र्यम्बुं [त्र्यम्बु]
 निम्न-प्रतिष्ठा एक कण विचर्य प्रथम के दो
 कृत्स्न और तीसरा पुनः प्रसार होता है (विम्ब)।
 गार पुं [गार] 'घ' प्रसार (व्यभि)
 १ ३)।

स वैद्यो सं = सम (पद् पितृ) ।

स पुं [अन] पात कुवा (हे १ २४ १
२६। २४)। पात पुं [पात] कववा
(अ)। मुदि पुं [मुदि] कुते की वल
वावपु कुते की वल वल-कुवा (अमा
१ २-२४ १६)। वल पुं [वल]
वाववा (हे १ २४)। वल वल वल
पता (हे २६ २४)।

स प [स्तर] पुण्डव, स्वर्ग (विसे
१ ५)।

स वि [सन्] १ शेषः पतन (जा) कुप
 कुप १४१) । २ विपत्तयः दीप ज्ञान
 ज्ञान (तुप १ १ १ ११) । हरिः तु
 [पुरुष] र्षः पुरुष, वज्र (वज्र)
 क्षय वि [क्षय] धर्माक्षय (पुत्र १ ५
 पत्र ६) यो क्षयः । क्षय वि [क्षय]
 क्षय क्षय (१ २) । 'क्षय न [क्षय]
 क्षय, क्षय (पुत्र १ २) यो क्षयः
 मातृ क्षे [क्षे] पतन क्षे १ क्षे १

[illegible]

[भूत] १ कर्म, वास्तविक रूपका 'जन्म'
 पूर्वहि ज्योतिर् (जा) । २ विद्यमान (पंच
 ४ २४) । आचार पुं [आचार] अस्मत्
 वाच्य (पञ्च १३) । कर्म वि [हर्ष]
 अस्मत् कल्याणा (पंच ६) । कर्मा पुं
 [काम] अस्मत् संबन्ध इतिह-धर्म (सुष
 २ १, १०) । 'काम' पुं [काम] अस्मत्
 वाच्य (सुष २, ४ १) । वाया वि
 [वाय] अस्मत् वायु (सुष २ ४ १) ।

ख दु [स्व] १ धातु कूर (वरा कुनर कूर
 २ ३ ४) । २ क्राति नात्र (हे २, ११४
 पर) । ३ वि धातुयि, स्वीट, विनी (अप
 घोषय ६ कुया कूर ४ ५) । ४ म म
 इत्त (संघ ४ धातु १ १) ।
 ५ कर्त्त (भावा २ १६, १) । कर्त्तमि
 'पाठकमि वि [कर्त्तमि] मित्र के कि
 कूर कर्त्त के निपातक (वि ११६ भावा १
 १ ४ १४) । अय दु [अय] १ क्राति
 घना । २ धातुयि घोष (संघ १६ पर) ।
 ३ वि [अय] १ स्वातोय, लभ-
 (मित्र १११२, २६ ४१) कण्डु १) । ४
 म लघीय मित्रय (मि ११) । ल्य वि
 [ल्य] १ लुभय, लभय-निपात । २ गुह
 के धातुयि (वरा कय २६ ११ ल्य
 ६ गुर १) । ३ कुया २७४ मय
 कय) । ४ कय १) । ५ धातुयि

समान धर्मवाला (इ १७) । २ तरकार (कुम ११२) । ३ सप्ता पक्ष (सम २१) । पाप न [पात्र] निज का नाम मुर की संज्ञा (रात्र) । 'प्यम वि [प्रम] निज से ही शोभनेवाला (सम १३७) । इमास माय पु [भाव] प्रकृति, निजरी 'स्त्रियापठक मरकटिखपासुदेखरिखमायो' (कुमा ३, ४४ सम २१ मुर १ २७ ४ १२३) ।

'कुनिपस्य धारतस्य य

बध्यासपस्य धारतस्य ।

मत्तस्य मरतस्य य

सम्यासा पायसा [वि]

(प्राप् १४) ।

मायसु वि [भावस्य] स्वभाव का जान कार (पत्रम ३६, ४१) । यम बेको जय (उवा हे २ ११४ मुर ४ ७३ प्रमू ५३ २३) । रूप खल न [रूप] स्व स्मन (मरका धर्मस ११३ कुमा मयि मुर २ ४२) । संवेयन न [संवेयन] स्व-प्रत्यक्षान (धर्मस ४४) । हाज हाय बेको माय (हे १ १३ १ १७ मरका मुर १ २२ प्राप् २ १ ३) । हाकबाद पु [मायबाद] स्वभाव से ही सब कुछ होता है ऐसा माननेवाला मत (अ १ ३) । हिज न [हित] १ निज का भवा स्वोय—प्रपरी भलाई । २ वि निज का भला करने-वाला, स्वहितकर (मुपा ४१) ।

स' वि [स] १ खरिख मुक (सम ११७ मका जमा मुपा १२१ सण) । २ समान मुल्म 'सुटुते' 'सपके' (कम निर १ १) । खण्ड वि [खण्ड] खण्डित खण्ड (हे १२, १८) या १४५ मरका मुपा १८४) । अर वि [कर] कर-सहित (उ २ २६) । खर वि [गर] बिक-मुक, गहरोका (हे २ २६) । डण्ड देको अण्ड (मुपा ४१२) । उम वि [गुण] गुण-मुक (मुपा १८२) । उण्ड, उम वि [पुण्य] पुण्य-मुक पुण्य-शाली (या मुर २, ३ गुपा ११४) । ओस वि [तोय] जलुट (अ ७२५ टी) । ओस वि [दीन] दीन-मुक (अ १२८८) । अम वि [अम] १ बमुक मनोरथवाला (सम १) । २ मनोरथ-मुक

हम्यावाला (रात्र) । अममजिजरा की [अममजिजरा] कर्म-निर्णय का एक नेत्र (रात्र) । अममरण न [अममरण] मरण-विशेष पविष्ट-मरण (उत ३, २) । 'केय वि [केत] १ प्रहस्य । २ प्रत्याख्यान विशेष (पत्र ४) । कहर वि [अहर] बिहान, आनकार (मरका १२८ सम १४३) । गार वि [गार] गृहस्थ (वीरम २) । गार वि [गार] आकार-मुक (धर्मस ७२) । गुण वि [गुण] गुणवान्, गुणी (अम मुपा १४२ मुर ४ १६६) । 'गा वि [ग] बर उतम (हे १ ४७) । गाह वि [गह] उतरक बहस्य-मुक गुट गह से आनल (पाय क १) । 'पिण वि [पुण] बसासु (मरका २) । चकुलु चकुलुय वि [चकुलु, चकुलु] नेत्र वाला, बेहता (पत्रम ६७ २३ बमु स ७८ विपा १ १—पत्र ३) । चित्त वि [चित्त] चेतनवाला समीन (उवा पठि) । चयय वि [चेतन] बहो धर्म (विदे १७२१) । चिच देको चिच (वीर २२ गुपा ६२३, १२३ वि १२६ ३३) । चिय बेको ज्ञान (मुर १२ २८) । जाह वि [यातिपु] प्रकाश-मुक (वि ४११ गुप १ ३ १ ७) । जाणिय वि [यागिक] ज्ञानि-स्वभाववाला संघाटी (अ २ १—पत्र १८) । जीअ, जीअ वि [जीव] १ जन्म-मुक जन्म की ओरि-वाला । २ संवेयन वीरवाला (वि १२३) हे १ ४२) । ३ न कला-विषेय वृत्त जानु नयैह की समीकन करने का ज्ञान (धोपा एम अ २ टी—पत्र १३७) । इह वि [ीधे] हेह । इहकाळ पु [ीधेस] उप-विशेष गुणिय उप (संवीन ३५) । जणय जण्डह जण्डय वि [जलपय] जल-मुक पैरवाला छिह भावि स्वाप कय (गुप २ १ २३) डा ४ ४—पत्र २७१ गुप १ ५, २ ७ पण्ड १—पत्र ४२३ वि १४५) । जाह वि [नाम] स्वामो-वाला निचय कीर्ति यागिक ही वह (विपा १ २—पत्र २७) रयाड कुमा) । जण्ड वि [जण्ड] तुल्या-मुक खण्डित

उखुक (हे १ ४६) । तर वि [त्वर] १ लघ-मुक वेगवाला । २ म. शीघ्र, बखी (मुपा १२६) । उ वि [उ] धर्म-सहित हेह (पत्रम ६८ २४) । पया की [घवा] दीर्घायवती की बिसक पति वीरिज हो वह की (मुपा ३१२) । नय वि [नय] व्यास-मुक, व्यासवी (मुपा ३ ४) । पकस वि [पक्ष] १ पक्षवाला पांका से मुक (हे २ १४) । २ सहायता करनेवाला सहायक निज (पत्र २३६ उ १६७) । ३ समान पारम्यवाला बलिख धारि लख स जो समान हो वह (निर १ १) । पुन वि [पुण्य] पुण्यशाली पुण्यवान् (मुपा ३५४) । प्यम वि [प्रम] प्रमा मुक (सम १३ मय) । पयिआव, पयिआय वि [परिआप] परिआप—संताप से मुक (या ३७ पत्र) । 'प्यम द्या वि [पिरावक] पिराव-भूहीत पाख (पण्ड २ ३—पत्र १३) । 'प्यवास वि [पियास] तुपमुट, चकुलु (हे २ २७) । 'प्यह वि [प्यह] सहायता (हे ७ २६) । प्यह वि [स्पष्ट] बसायमान (हे ८ ५) । पकस फड वि [फड] चार्यक (न १३ १४ हे २ २ ४ प्रा पत्र ७२८ टी) । वनड वि [बड] बत बाण, बसिड (निज) । भड बेको फड (हे १ २३६ कुमा) । मय वि [मनस] १ मनवाला विवेक-बुद्धिवाला (मुर २२) । २ समान मनवाला एक-हेय भावि से प्यह गुन, छात्र (मरु) । मनकस वि [मनरक] पुर्वाक धर्म (मुर २ ४ २) । मय वि [मय] मय-मुक (हे १ १६ गुपा १८५) । महिबिखअ वि [महादिक] महाद वैखर वाला (प्रमू १ ७) । मिरिअ मिरिय वि [मराधिक] क्रिय-मुक (मक वीर अ ४ १—पत्र ३२८) । 'मर वि [मर्याद] मर्यादा-मुक (डा १ २—पत्र १२३) । मण्ड वि [मण्ड] मण्डा-मुक (पडर, गुपा ३५४) । याण वि [शान] सम्यक्ता ज्ञानकार (मुपा ३५३) । योगि वि [योगिन्] १ व्यापार-मुक, मोक्षवाला । २ न पैदाई गुण-स्वमक (कम २ ११) ।

रज नि [रज] कपो (हे १ १७) ।
 रजस नि [रजस] वेम-मुक्त उद्यमता
 (भा ११४ गुण ११२ कृष्ण) । राग नि
 [राग] उप-सहित (अ २, १—पञ्च २) ।
 रागसंज्ञक, रागसंज्ञक नि [रागसंज्ञक]
 बहु बाहु निवृत्ता एव धीर्य न हृष्या हो
 (परशु १७—पञ्च ४२४ एव) । रूप नि
 [रूप] समान रूपवत्ता (पञ्च = ६) । सूर नि [सूर] सायण-मुक्त
 (गुण २४१) । सोग नि [सोग] समान
 घटत (हृदि २२ टी) । सोप वेदो सत्र
 (भा ३१६ हे ४ ४८४ गुण) । सो
 ओपी (हे ४ ४२) । सन्ध वेदो पञ्च
 (उपस, धर्म) । सज नि [सज] नाचवत्ता
 हृष-मुक्त (गुण २५) । सध नि
 [सधस] समान सधवत्ता (हे २ २२) ।
 सध नि [सध] क्री (गुण ४२१) । बाय
 नि [बाय] घरा (स ४२१) । बाय
 नि [बाय] नाच-सहित (गुण २ ७ ३) ।
 बास नि [बास] समान नाचवत्ता, एक
 वेद का ध्वनिवत्ता (शाम् ७१) । बाह नि
 [बाह] विद्यावत्, विद्वान् (अ ३ २११) ।
 बज वेदो बज (गदका भा १२) ।
 बजवेत्त नि [बजवेत्त] हुनरे की वरणा
 ध्वनिवत्ता सतेज (मन ११३) । ब्याय
 नि [ब्याय] व्यभिच-यक व्यायक (अ
 १—पञ्च ७७) । बिय नि [बिय] विरल-यक, सविस्तर (गुण १६४) ।
 संक नि [संक] सङ्ग-मुक्त (अ २, ६,
 गुर १६ २२, गुर १२२, पञ्च) । संकि नि
 [संकि] बदी (गुर ४) । सत्ता
 ओ [सत्ता] धर्म नमिणी छे (अ १ १) ।
 सतिरिप सधेय नि [सोड] भो-मुक्त, सोध-मुक्त (वि ६ छाया १ १
 पण) । सिह नि [सिह] सहायता
 (गुण) । सिह नि [सिह] विद्या-मुक्त
 (पञ्च) । सूर नि [सूर] कृष्ण (अ) ।
 सस नि [सस] १ सारथेय भारी एव
 हृषा (हे ६, ११, पञ्च) । २ शेकाव-सहित
 (गद ११) । सांग, सांगि नि [सांग]
 निगोद, शेक-मुक्त (पञ्च ६१ भा गुर ६
 १२२) । सातिरिप ससिध वेदो

सिरिप (वि २७, धर्म ११६, अम्र जय
 ११७ छाया १ ६—पञ्च ११७) ।
 सभ धक [सभ] १ श्रुति करता । २ नवरा
 स्नान वेना । सभ (गद ७३) भावा
 ११४) ।
 मध न [सधस] धम (अ २) ।
 सभय न [स] १ रिता मन्तर का उच्छा ।
 २ वि भूषित (हे ५ ४६) ।
 सभयक गण पु [स] विद्वान् कुचारी (हे ५
 २१) ।
 सभयिज पु [स] श्रुतिवेत्तक
 सभयिज पु [स] पदोली (भा ३१३) की, ला
 (भा ३१, १६ ध) 'सपथिजो संभयिजो'
 (भा ३६, पञ्च १४२) । वेदो सभयिज ।
 सभयिज वेदो सगहिजा (वि २ ७) ।
 सभय पु [स] हत्या वेद (हे ५ ११) ।
 सभय पु [स] १ सभयिज (गद-
 धर्म ७ हे १ १६६) । २ गुण धान-विरोध-
 धर्म (हे १ १७७ १५) । रि पु
 [रि] वर्तक व्योम्य (गुण) । वेदो
 सभय ।
 सभर वेदो स-भर = स-भर, स-भर ।
 सभर वेदो सग (हे २ २४) ।
 सभा य [सभा] १ हरेक निवृत्त (गद-
 हे १ ७२) गुण गद ४६) । बार पु
 [बार] निवृत्त धर्म (पञ्च १३) ।
 सभा ओ [सभा] भावा (अ ४) ।
 सभ वेदो सभा = सभा (गद हे १ ७२)
 गुण) ।
 सभ य [सभ] एक बार, एक वक्ता (हे
 १ १२ अम १३, गुर २४४) ।
 सभ ओ [सभ] सपण, निवृत्त धर्म (अ
 ११) । बाह पु [बाह] विद्या धर्म का
 धर्म (अ २, २, ६) ।
 सभ वेदो स = सभा सभयिजिधयिज
 (गुण २१ धर्म) ।
 सभ वेदो सय = सय 'मलोपयं बोधयि
 गुरु न न बाधयं' (गुर १४ २) । ओडि
 ओ [ओडि] एक की ओडि एक धर्म—
 धर्म (अ ४) ।
 सभ वेदो सभ = सभय (गद हे ४ ३६३
 ४१) ।

सभ वेदो सभ = सभ (गुण १०१) ।
 सभय नि [सभय] सौ का निवृत्तवत्ता
 (छाया १ १—पञ्च ३७) । वेदो सभय ।
 सभय नि [सभय] कुच वेदो हृषा (हे
 ७ २७ भा २१४ पञ्च १ १ १) ।
 सभयवेदो स = सभा काय य धर्मो
 परिवायो बान्धवेज्जायो सभयवेदो
 पुषि वेत्त (महा) ।
 सभ वेदो सभ = सभय (गद) ।
 सभ वेदो सभ = सभय (अ २ १—पञ्च
 १३ हे ४ ३१६, ४ २ मधि) ।
 सभ नि [सभ] सौ (मना धर्म) ओ
 धर्म का (दधिम १ ११) ।
 सभय पु [स] श्रुतिवेत्तक, पदोली
 सभयिज (हे १ १) । ओ आ (गुण
 २७५ नि ४४२ टी वक्ता १४) ।
 सभयिज न [स] श्रुतिवेत्तक पदोलीपण
 (हे १ १) ।
 सभय न [सभय] वेदो वक्ता (अ ४) ।
 सभय वेदो सय = सौ ।
 सभयवेत्त नि [सभयवेत्त] मलोच्छ,
 निवृत्त धर्म धर्मोच्छ विचार न प्रतिवेत्त
 (हे १ १६, पञ्च) ।
 सभयिज नि [सभयिज] अम वेदो (हे
 १ १६) ।
 सभ वेदो सभय (हे १ ११ गुण) ।
 सभ नि [सभय] सौता १ भा (अम
 १ १५—पञ्च ३१४) ।
 सभय न [सभय] १ लेखक सभयवेत्त (हे
 १ ११) भावा छाया १ १५—पञ्च
 २११) । २ वि धर्म, सभय (गद) । ३
 सौरी सभयवेत्त (पञ्च भावा) ।
 सभयवेत्त पु [सभयवेत्त] सभयवेत्त
 सभय वेत्त विद्वान् कोडा पाडा वेत्त (हे २,
 २४ भा २१) ।
 सभय नि [सभय] सभयवेत्त सभयवेत्त
 (पञ्च १ १५) ।
 सभयिजी ओ [सभयिजी] व्यभिचारी ओ
 धर्म (पञ्च २ १ १६) ।
 सभय वेदो सभ (हे ४ ३१६) ।
 सभयवेत्त नि [सभयवेत्त] वेदो सभ-
 यवेत्त (हे १ १६ भावा) ।

संकिटु रेवो संकिटिडु (पञ्च) ।

संकिटय वि [संकिटय] १ संकिट संय, धन-
व्यवसायात् (पाय यहा) । २ व्यास (पञ्च) ।
१ विहित विद्या ह्या (अ ४ २० अथ २३,
७ टी—पञ्च ११६) । ४ पुं, हाथी की एक
जाति (अ ४ २—पञ्च २ ३) ।

संकिट रेवो संकिट (पाय १ १—पञ्च
१४) ।

संकिटय न [संकीर्तन] वक्तापठ (स्वय
१०) ।

संकिट रेवो संकिटय (अ ४ २ अथ
२३, ७) ।

संकिट वि [संकिट] शब्द करने की प्रथा
बना संकीर्तन (आ १ ६ १११ २७२
मुर १२ १२४ गुणा ४५५) ।

संकिटिडु वि [संकिट] संकेत-युक्त,
संकेतवाता (उप यौग वि ११६) ।

संकिटिस्म यत् [सं + किट] १ संकेत-
पात्र कुकी इत्यादि । २ यतिन होना । संकि-
टिस्त्वद्, संकिटिस्त्विति (उप २६, १४ अथ
यौग) । बङ्ग, संकिटिस्त्वमात्र (अ १
१—पञ्च २६६) ।

संकिटय न [संकिट] १ अथवायि कु
कट, हृपनी (अ १—पञ्च ४५१ उप) ।
२ यतिपदा यतिगुण (अ १ ४—पञ्च
१२६ यथा १२ ४) ।

संकिटिभ्र वि [संकीर्तित] गीत समार
बोध ह्या (वि १४ २७) ।

संकिटु [संकिट] १ शब्द यत् । २ कौसक,
कुल स्त्री 'संकीर्तितकुलम्' (द्वय ४ २)
उप ३ भाषन । कण्ठ न [कण्ठ] एक
विचार-मार्ग (इह) ।

संकिटय वि [संकिटय] १ शब्दा ह्या
संकेत-प्राप्त (योग २५) । २ न, संकीर्ण
(पञ्च) ।

संकिटु नु [संकिट] बलात्कृत वी उत्तर
थोडी का एक विचार-संकेत (पञ्च) ।

संकिट की [संकिट] विचार-विशेष (पञ्च) ।

संकिटय यत् [सं + किट] संकुचय संकीर्ण
करना । संकुच (पाय संकीर्ण ४०) बङ्ग,
संकुचमात्र, संकुचमात्र (भाषा) ।

संकुचिय रेवो संकुचय (पञ्च ४ १) ।

संकुच वि [संकुच] संकुच संकीर्ण संकुचित-
पदीय संकुच बाहि विचारा संकुचपणं
(सुत्र १६) ।

संकुचिय वि [संकुचित] संकुच ह्या, संकु-
चित (अ ४ १—पञ्च ३ ७) बर्मेस १८०
स १३५, विरि ७८६) ।

संकुच वि [संकुच] कीम-युक्त (वक्ता १) ।

संकुच रेवो संकुच । संकुच (वक्ता ३) ।
बङ्ग, संकुचय (वक्ता ३) ।

संकुच वि [संकुच] व्यास पूर्व अथ ह्या
(वि १ २७ उप यहा, स्वय ११) बर्मेस
२२, मातृ १) ।

संकुच [रेवो] संकुचिडु (वि ७४ अ ४
संकुच) ४—पञ्च २२६; पञ्च २६२; भाषा
२, १ ४ ३) ।

संकुचिडु वि [संकुचिडु] यन्त्री शब्द
पुष्टि (पञ्च ३५) ।

संकिट यत् [सं + कटय] १ शब्द
करना । २ यत्कृत करना । संकिट संकिटय
कौमिष्टिपणं (अपठ २१०) ।

संकिट नु [संकिट] १ शब्द, शब्द (गु
४१२, मातृ) । २ श्रिय-व्यवसाय कर
पुष्टि स्वात (आ १२१ पञ्च) । ३ वि
किट-युक्त । ४ न, प्रत्याख्या विषय (भाषा) ।
संकिट वि [संकिट] १ संवि-संवाची । २
न, प्रत्याख्या-विषय (पञ्च ४) ।

संकिटय वि [संकिटय] संकिट-युक्त (या
१४ बर्मेस ११४ अम्य २१०) ।

संकिटिडु वि [सं] संकिट ह्या संकुचित
किमा ह्या (या १६४) ।

संकिट रेवो संकिटय (उप ११२ अम्य
२ ११६) ।

संकिट यत् [सं + कटय] संकिट
करना । बङ्ग संकिटय (अम्य २१०) ।

संकिट नु [संकिट] संकीर्ण विद्यत (पञ्च
४ टी बर्मेस ११४ संकीर्ण ४०) ।

संकिटय न [संकिटय] संकीर्ण संकुचय
(१३, ११; मय; मुर १ ७१; बर्मेस
१ १) ।

संकिटय वि [संकिटय] संकुचित किमा
ह्या, संकिट ह्या (उप ४२० टी) ।

संकिट नु [संकिट] संकीर्ण संकीर्ण (पञ्च
१ १—पञ्च २११) ।

संकिटय की [संकिटय] ऊपर रेवो
(पञ्च) ।

संकिटय वि [संकिटय] संकीर्ण ह्या,
संकीर्ण (पञ्च १ १—पञ्च २११; विप
१ १—पञ्च १० स ४४१) ।

संकिट गुण [संकिट] १ वाच-विशेष, संकिट (संकिट;
उप ११; गुणा ३ १ १) । २ पुं
शब्दविषय (अ १ १—पञ्च ४८) ।

१ महाविशेष वर्ण कर प्राप्त-विशेष विचय
शब्द विशेष (अ २ १—पञ्च ४८) । ४ नव
मिथि में एक मिथि विद्यते विविध शब्द
काओं की उत्पत्ति होती है (अ ६—पञ्च
४४६ उप ६५६ टी) । २ शब्द शब्द में

विद्यत बलात्कृत-भाषय का एक व्यास-वर्ण
(अ ४ २—पञ्च २२६; अम्य १५) । १ उक्त
व्यास-वर्ण का बहिष्कार एक शब्द (अ ४
२—पञ्च २२६) । ७ यत्कृत यत्किमा के
अम्य का कयो का एक उपा (साम्या १
८—पञ्च १४१) । ८ यत्कृत महावीर के
पक्ष छोड़ा सेनावा एक काष्ठी-मरुत (अ
७—पञ्च ४१) । ९ शब्द-व्यवसाय का
जित करनेवाला बलात्कृत महावीर का एक
वाचक (अ ६—पञ्च ४४२ अम्य १५४ पञ्च
४१ विचार ४७७) । १ बर्मेस बर्मेस का
पूर्व-कयो नाम (पञ्च २ १६६) । ११

एक उपा (अम्य ४३६) । १२ एक उपा-युक्त
(गुणा २६६) । १३ एक अम्य का एक युक्त
(गुणा २६६) । १४ एक-विशेष (विप) ।

१५ एक शब्द । १६ एक शब्द । १७ शब्द
शब्द का एक बहिष्कारक शब्द (शब्द) । १८
पुं, शब्द की हृदी (बर्मेस १०) है १

१) । १९ शब्द नाम का एक शब्द-व्यय ।
२ अम्य के यौग की एक हृदी । २१ एक
माय-वाचि । २२ हृदी का शब्द का मय
माय । २३ शब्द-विशेष शब्द विचय की
संख्या-व्यय (है १ १) । २४ यत्कृत
शब्द का यत्कृत (साम्या १ ८—पञ्च
१४१) । २५ शब्द शब्द (शब्द १ १ यहा) ।

यत्कृत नु [नाम] शब्दविषय महाविशेष
(गुण २) । यत्कृत की [नाम] शब्द-

मिष्टेय (विष)। धममा पुं [‘धमायक’]
 वागप्रत्य वी एक वक्ति (राज)। धर पुं
 [‘धर’] धीकृष्ण विष्णु (कृष्ण)। पाक्ष
 वेद्यो बाक्ष (अ ४ १—पत्र ११७)। पुर
 न [‘पुर’] एक विद्यावर-नगर (इक)।
 २ नगर-मिष्टेय को धारणन कुचएत में संवे-
 ष्टर के नाम न प्रसिद्ध है (राज)। पुरी की
 [‘पुरी’] कुचयल देव की प्राचीन उद्योगी
 को पीछे से पश्चिमवर्षा के लय से प्रसिद्ध
 हुई है (मिरि ७)। माक्ष पुं [‘माक्ष’] वृक्ष
 की एक जाति (गीत १—पत्र १४६)। बाण
 न [‘बान’] एक उद्यान का नाम (ज्वा)।
 बण्णाय पुं [‘बण्णाय’] बयोविक्रम म्हाप-
 मिष्टेय (पुत्र २)। बण्ण पुं [‘बण्ण’]
 कोष्ठिक म्हापह मिष्टेय (अ २ १—पत्र
 ७८)। बण्णाय वेद्यो बण्णाय (अ २
 १—पत्र ७)। वर पुं [‘वर’] एक
 टीप। २ एक समुद्र (दीप इक)। वरोमास
 पुं [‘वरमास’] एक टीप। २ एक समुद्र
 (दीप)। बाक्ष पुं [‘पाक्ष’] नाम-कुमार-वेद्यो
 के वरध और भुवन्त्य नामक इन्हीं के एक
 एक कोषका का नाम (इक)। बाक्षय पुं
 [‘पाक्षय’] एकैतर वर्तन का धनुषासी
 एक व्यक्त (पत्र ७ १—पत्र १२१)।
 एक धात्रीविक मठ का एक उपासक (पत्र
 १—पत्र १७)। दाम वि [‘दाम’]
 संभवता (उपमा १—पत्र ११३)।
 ‘दर’ वे [‘दर’] नगर-मिष्टेय (टी १)।
 संद वि [‘संद’] संभव, जिना हृष्य, विष्णो-
 वाद्य (अ ४ १२) ४६)।
 संक्ष न [‘संक्ष’] संक्ष-मिष्टेय कर्षण-पुनि-
 प्रक्षीप वर्तन (आप १ १—पत्र १३,
 पुत्र ११६)। २ वि संक्ष मठ का धनुषासी
 (पीप; पुत्र २६)।
 संक्ष पुं [‘संक्ष’] नामक शक्ति-पाक्ष (दि
 १)।
 संक्षय वि [‘संक्षय’] विष्णो संक्षय हो
 बके वर (मिरि १७)। धनु २१ टी)।
 संक्षय न [‘संक्षय’] कक्ष, कक्ष (मिरि १२४
 मोन १२७)।
 संक्षय की [‘संक्षय’] विष्णय धार्मिक के कक्षय
 न मठ-गणेश्वर धार्मिक को विष्णय बादा योग

वेधनार (आप २ १२, ४ २११ १ १
 १ मिरि २२८ वीध १२ पत्र १२१)।
 संक्षय की [‘संक्षय’] धीरव-पाक्ष (अ ४ १)
 संक्षय पुं [‘संक्षय’] धीरव राज (अ ४
 ११ १२८, पत्र १—पत्र ४४ वीध १
 टी—पत्र १११)।
 संक्षय पुं [‘संक्षय’] मोक्षपी हुर (दि १
 १४)।
 संक्षय पुं [‘संक्षय’] कृष्ण की कक्षयगुण कठ
 कर बादा होनेवाला वेध (दि १ १६)।
 संक्षय वि [‘संक्षय’] उपर्य (अ २ ११ टी)।
 संक्षय पुं [‘संक्षय’] वय विनाश (दि २
 ४२)।
 संक्षय वि [‘संक्षय’] संक्षय-पुष्प ‘पुष्प
 संक्षय-पुष्प वीध’ (पुत्र १ १ २१ १
 २ १ १ वि ४६) ‘धार्मिक वीध ना
 पयाम’ (अ ४ १)।
 संक्षय पुं [‘संक्षय’] कृष्ण शक्ति के धारक
 बादा वय-वय विष्णय (दि १ १८)।
 संक्षय वेद्यो संक्षय (पत्र १११)
 संक्षय पुं [‘संक्षय’] कर्ष-पुष्प विष्णय संक्ष-
 य वय बादा पुष्प धार्मिक (दि ७)।
 संक्षय एक [‘संक्षय’] विनाश करण।
 संक्ष संक्षययय (अ २ २२)।
 संक्षय वि [‘संक्षय’] विनाश (अ ४
 ४)।
 संक्षय एक [‘संक्षय’] एकटी करण।
 १ बागवा। संक्षय (पुत्र १ २ २
 २१)। २ संक्षय संक्षय (अ ४ वी
 ४१) उपा कय)।
 संक्षय एक [‘संक्षय’] ध्याय करण।
 २ संक्षय होता धार्मिक होय विधि कय।
 संक्षय, संक्षय (दि ४ ११; व ४)।
 संक्षय की [‘संक्षय’] १ प्रधा शक्ति (आप
 १ १ ४ टी)। २ बाग (पुत्र १ ११, न)।
 ३ मिरि (अ ४)। ४ मिरि पक्षय (मिरि
 धनुष कय-कुमा)। ५ कक्षय (पुत्र २
 ८ टी)। इय वि [‘संक्षय’] धार्मिक (अ
 १ १ टी वीध १ टी—पत्र ११४ ४६)।
 धार्मिक वि [‘संक्षय’] धार्मिक हो विनाश

लेने वर उद्योगी संक्षय विष्णय कि धनुष
 विने हुए प्रवेष्ट में प्राप्त हो बाग (अ २
 ४—पत्र १ २, १—पत्र २११ वीध)।
 संक्षय न [‘संक्षय’] १ विष्णो मरणा,
 संक्षय। २ विष्णय-राक्ष (अ ४ ४—पत्र
 २११) मरणा कय वीध पत्र २१, ५)
 वीध ११६)।
 संक्षय वि [‘संक्षय’] १ धार्मिक वय-विधि
 (कुमा १ ११)। २ धार्मिक कय-वादा।
 ३ संक्षय कय-वादा। ४ न मरणा। ५ विधि
 पत्र। ६ संक्षय संक्षय। ७ धार्मिक। ८
 प्रविष्णय, प्रविष्णय (दि १ ७ ४ ४ ११)।
 संक्षय वेद्यो संक्षय = संक्षय।
 संक्षय वि [‘संक्षय’] संक्षय-पुष्प (पुत्र १
 ११ १)।
 संक्षयय न [‘संक्षयय’] वीध विष्णय (पुत्र
 १ ११ इक)।
 संक्षय पुं [‘संक्षय’] धार्मिक की एक धार्मिक धार्मिक
 पुष्प (दि १ १)।
 संक्षय वेद्यो संक्षय = धार्मिक-वय।
 संक्षय वेद्यो संक्षय = धार्मिक-वय।
 संक्षय वि [‘संक्षय’] विष्णय विष्णय
 कय वेद्यो हो मरणा (पुत्र १११; व ४१६)।
 संक्षय वेद्यो संक्षय = धार्मिक (व १७१)
 पुत्र १४६)।
 संक्षय वेद्यो संक्षय = संक्षय।
 संक्षय वि [‘संक्षय’] संक्षय-पुष्प (अ ४
 ११)।
 संक्षय वि [‘संक्षय’] संक्षय-पुष्प, धीरव
 विष्णय (अ ४, व १; वी ११)।
 संक्षय वि [‘संक्षय’] संक्षय-पुष्प, धीरव
 विष्णय (अ ४, व १; वी ११)।
 संक्षय वि [‘संक्षय’] संक्षय-पुष्प, धीरव
 विष्णय (अ ४, व १; वी ११)।
 संक्षय वेद्यो संक्षय = संक्षय (व ४१६) वय
 २, ११) वय १४६)।
 संक्षय की [‘संक्षय’] धीरव संक्षय (वीध
 १—पत्र १२१, व १ टी—पत्र १ ११ पत्र
 ४६)।
 संक्षय एक [‘संक्षय’] धीरव कय, धीरव
 कय। संक्षय (दि ४ ११)।

संस्तुभ्य न [रमण] श्रीका सुरत-शेखर
(द्रुमा) ।

संस्तुष (घप) गोपे देवो (रवि) ।

संस्तुष वि [संस्तुष्य] क्षीम-प्राप्त्य (च ११८-
१७७) सम्यक्त १२६ भुवा २१० द्रुम
१७४) ।

संस्तुभिष्य } वि [संस्तुभ्य, संस्तुभित]
संस्तुभिष्य } ऊपर देवो (सम १२३, पत्र
२७२) पत्र ३३ १ १ नि ११६) ।

संस्तुष्य देवो सन्तु = सं + क्त ।

संस्तुष्य } देवो संस्तुष्य (धनु ११
संस्तुष्य } वि १६) ।

संस्तुष्य देवो संस्तुष्य (अ ४ २-पत्र
२२४) देव १२३) ।

संस्तुष्य द्रु [संस्तुष्य] १ धन्य कर्म भोका (नी
२३ २१) । २ निर संस्तुष्य, संस्तुष्य (धोषमा
१) । ३ स्थान 'संस्तुष्य' शब्द-संस्तुष्य (कर्म
१, १२) । ४ सामाजिक सम्मान से धन-
स्थान (वि २७२६) ।

संस्तुष्य न [संस्तुष्य] धन्य करण्य भुन
कण्य (पत्र २३) ।

संस्तुष्य वि [संस्तुष्य] संस्तुष्य-पुनः । वसा
की व [वस्य] नैम धन्य-विशेष (अ १०-
पत्र २ ३) ।

संस्तुष्य } सक [सं + क्षीमय] धन्य
संस्तुष्य } कणा । संस्तुष्य (रवि) । कर्म
संस्तुष्य-संग्रहप्रति (एण्ड १ ६-पत्र
१२६) ।

संस्तुष्य द्रु [संस्तुष्य] १ धन्य धर्म से धन्य
विश की धन्यता, धीम (अ १२ २ २२) ।
उप १११; पु १ नि २४ कर्म) । २
धन्यता (पत्र २) ।

संस्तुष्य वि [संस्तुभित] धन्य विना
द्रुमा क्षीम-पुनः किमा द्रुमा (वि १ ४४
मनि १) ।

संग [गृह] १ वीप, विपण (बर्ध ११,
१४) । २ ऊपर (द्रुमा) । ३ बर्ध के ऊपर
का माप, विपण । ४ प्रजापति पुण्या । ५
माप-विशेष । ६ माप का उपक (है १
११) । देवो सिंग = गृह ।

संग न [गार्ह] गृह-सकृता (वि २८६) ।

संग पुन [संग] १ संगर्भ संकल्प (धापा
महा द्रुमा) । २ घोषवत् 'गृह' होसुमारत
इत्यर्थं संग्रहण परिधिम्' (संशोध १६;
धापा प्रमु ३) । ३ धार्मिक विपण-विपण
(पत्र ४ धापा ज) । ४ कर्म कर्म-कर्म
(धापा) । ५ कर्मन् 'भोगा इमे संग्रहण इति'
(उत् १३ २०) ।

संग्रह की [संग्रहि] १ वीपिय उचितता
(द्रुमा ११) । २ कर्म (रवि) । ३ निर्वात
(द्रुम १ १ २ १) ।

संग्रह वि [संग्रहित] १ निर्वात-कर्म
निर्वात-सकृता (द्रुम १ १ २ ३) । २
परिधि; 'गृहीति वा संग्रहण वि वा संग्रह'
कर्म' (वि ११) (अ ४ ३-पत्र २४३
पत्र) ।

संग्रह द्रु [संग्रह्य] १ स्वयं का स्वयं,
स्वयं का स्वयं (धापा) । २ संकल्पी धनु
द्रुम से निष्पन्न संकल्प हो वह (पत्र २
४-पत्र ११२) ।

संग्रह्य सक [सं + गम] १ स्वीकार
कणा । २ सक संकल्प होता हैल रचना ।
संग्रह्य (वि १०६ पत्र) संग्रह्य (अ
११) । ३ संगमजीव (गृह-विपण) ।

संग्रह्य न [संगमन] स्वीकार, संशोध
(अ २३) ।

संगम द्रु [संगम] १ मेल मिश्रण (पाषा
महा) । २ प्राप्ति संगमपत्र-संगमपत्र-विपण-
विपण की बर्धो (महा) । ३ नदी-गिरिक
धर्मों का धर्म से मिलाव (आमा १
१-पत्र ११) । ४ एक देव का नाम (महा) ।
५ की-पुन्य का संशोध (है १ १००) ।
६ एक नैम पुन का नाम (अ) ।

संगमय द्रु [संगमय] धन्यता महावीर को
जानसे करेताका एक देव (वि २) ।

संगमी की [संगमी] एक द्रुम का नाम
(महा) ।

संगम वि [संग] मक्षण विपण (है ८७) ।

संगम न [संगम] १ विपण वीरी (पु २,
२ ६) । २ सं, घोषवत् (उप १२१) ।
३ पुन एक नैम पुन का नाम (पुन १२२) ।
४ वि. पुन उचित (वि १ २-पत्र

२२) । ५ मिलित, मिला द्रुमा (मानू ११;
पत्रा १ १; महा) ।

संगमय न [संगमय] धन्य विशेष (मनि
७) ।

संगर देवो संकर = संकर (वि २८८४) ।

संगर न [संगर] पुन एण संकर (गम-
काप १२१) पुन ७१ बर्ध २३ है ४
१४४) ।

संगरिगा की [संग] कमी-विशेष निशकी
तरकारी होती है संशोध (पत्र ४-पाषा
२२६) ।

संगर सक [सं + घटय] मिश्रण
संशोध करण । संगर (है ४ १११) ।

संग. संग्रह (द्रुमा) ।

संगर सक [सं + गम] मेल कणा होन
होता । संग संगर (वि १ १४) ।

संग्रहिया की [संग] कमी-विशेष निशकी
(मनि १२-पत्र १६ मनु ४) ।

संग्रह सक [सं + म] १ संशोध कणा ।
२ स्वीकार कणा । ३ धन्य देव । संग्रह
(रवि) । धन्य संग्रह (संग्रह ११) ।

संग्रह द्रु [संग्रह] सक क ऊपर का विपण कर्म
(है ८ ४) ।

संग्रह द्रु [संग्रह] १ संशोध इच्छा करण
संशोध (अ ७-पत्र १०५; पत्र ३) । २

संग्रह धन्य (पाषा अ १ १ टी-पत्र
११४) । ३ धर्म बर्ध धर्म का परिपत्र
(धोष ११९) । ४ कर्म-विशेष बन्तु-पत्राका
का एक इच्छा धन्यता कर्म से बन्तु को
देखना (अ ७-पत्र १६ वि २२ ३) ।
५ स्वीकार, धन्य (अ ८-पत्र ४२२) ।
६ कर्म धर्म से धन्यता कणा (अ १०-
पत्र ४२९) । ७ वि संग्रह करनेवाला (पत्र
१) । ८ म. नक्षत्र विशेष द्रुम से धन्यता
मक्ष (पत्र १) ।

संग्रह्य न [संग्रह्य] संग्रह (वि २२ १
संशोध १० महा) । गाया की [गाया]
संग्रह्य-२ (कर्म ११) । देवो संग्रह्य ।

संग्रह्य की [संग्रह्य] संग्रह-कर्म, संशोध
कर्म से धन्य-प्रतिपत्ति का धर्म संग्रह-कर्म
कर्म (संग्रह १; बर्ध १) ।

संगीत [संगीत] संगीतना संगीत
यम को मानेनामा (विदे २३२)।

संगीत [संगीत] १ विद्यमान संगीत
जिना कण हो वह (हे २ १२८)। २
स्त्रीकृत स्त्रीमय जिना हुआ (कण)। ३
पक्का हुआ 'संयोजन' (गुण ३१)।
४ संगीतज्ञ।

संगीत [संगीत] गान करना। कण
संगीतमात्र (अ २१४ टी)।

संगीत [संगीत] गाना, गाने की गवाय (हे
२, २)।

संगीत [संगीतमात्र] लगाई करना।
संगीत (सं ११)। वक्. संगीतमात्र
(संगीत १ ११—यम २२३ निर १ १)।
संगीत [संगीतमात्र] बजाई, गूँज (याता-
पथा गवा)। सूर्य [सूर्य] एक यम
का नाम (सू २)।

संगीत [संगीतमात्र] संगीत-संबंधों
लगाई दे संभव करनेनामा (अ २, १—यम
१ २ टी)।

संगीत [संगीतमात्र] श्रीकृष्ण
बाल्य की एक नेरी जो बजाई की बजा
के के लिए बजाई गयी थी (विदे १४७)।

संगीत [संगीतमात्र] संगीत-संबंधों
विदे, विदेय प्रभाव से बजाई की गवाय
दे विदेय निरुद्ध (हे २ १४७)।

संगीत [संगीत] संवि (अ ४ १—यम
१४८ संगीत १ १)। योयम २२ गुण २,
१ सूर्य २८ कर्ष ११०० कण १ १)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संगीत [संगीत] संगीत-संबंधों (विदे
१२१)।

संघट्टिय वि [संघट्टि] १ सट्ट, छुपा
हुया (णाम्) १ १—पत्र ११२ पत्रि) ।
२ संघटित संघटित (सम ११ १—पत्र
७११ ७१०) ।

संघट्ट पक् [सं + पट्] १ प्रयत्न करना ।
२ संघट्ट होना मुक्त होना । ३ संघट्ट इत्यत्र
(अ ८—पत्र ४४१) । प्रयो संघट्टये
(सू) ।

संघट्ट वि [संघट्ट] मिल्लठ संघट्टविछिलो
(प्राक्) १ ४ ४ ४) ।

संघट्टण देको संघट्टण (संघट्ट—पृ ४८ पत्रि) ।

संघट्टया ओ [संघट्टना] रचना निर्माण
(सुनु १५८) ।

संघट्टिय वि [संघट्टि] १ संघट्ट मुक्त
(वि ४ २४) । २ संघट्ट बट्टि (प्राप् २) ।

संघट्टि (टी) ओ [संघट्टि] समुह (वि
२९०) ।

संघट्टय न [वि संघट्टन] १ शरीर, कव
(वि ८ १४ पत्रि) । २ संघट्टय-कवा शरीर,
के हाथों की रचना शरीर का बाँध (अ
सम १४१ १४२, अत्र शीघ्र उपाय कम्प
१ ३८० पट्) । ३ कर्म-विशेष संघट्ट
रचना का कारण-मुक्त कर्म (सम १०० कम्प
१ २४) ।

संघट्टयि वि [वि संघट्टनिय] संघट्टन-
बन्ता (सम १४२, पत्रि ८ टी) ।
संघट्टिय देको संघट्ट (उप २९४ टी) ।
संघट्टियिद (टी) वि [संघट्टिय] संघट्ट-मुक्त
विता हुया (मा १०) ।

संघट्टय लक [सं + घट्] संघट्ट करना ।
संघट्टय (प्राक्) १ ७ १) ।

संघट्टियिद देको संघट्टियिद (भाट—वासवि
२१) ।

संघट्टिय वि [संघट्टिय] १ संघट्ट कर ले
विषय (वि ११ ११) । २ जोड़ा हुया
(प्राक्) । ३ इच्छा किया हुया (पत्रि) ।

संघट्टिय वि [संघट्टिय] अर देको (शीघ्र
व्या २ ११ १ वि १ २ पत्रि १२,
रवि १ २०) ।

संघट्ट देको संघट्टय = संघट्ट (प्राक्) १ २
पत्रि) ।

संघट्ट देको संघट्टय = संघट्ट (प्राक्) १ २
पत्रि) ।

संघट्ट देको संघट्टय = संघट्ट (प्राक्) १ २
पत्रि) ।

संघट्ट देको संघट्टय = संघट्ट (प्राक्) १ २
पत्रि) ।

संघट्ट १ १ [वि संघट्ट] १ मुक्त
संघट्टण १ मुक्त (सम ११ बर्ग १ १२,
उप १ १२० सुग १ २ १२३ योप
४११ ४२ २०३) । २ प्रकट, मेघ 'संघट्टो
ति वा नय ति वा पयो ति वा पण्डू'
(निष्) । ३ ज्ञातापरी-कथा नामक वैद्य धर्म-
ग्रन्थ का दूसरा अक्षय्य (सम १९) ।

संघट्टण देको संघट्टण (कम्प) ।

संघट्टण ओ [संघट्टना] १ संघट्ट १ २
रचना 'संघट्टणसुखविशेषाय (१ ४) खाए'
(सूचि २) ।

संघट्टी ओ [वि संघट्टा] १ मुक्त मुक्त
(वि ८ ७ प्राक् ३० वा ४१२) । २
उत्तरीय कर्म-विशेष (टा ४ १—पत्र १८९,
खाम् १ १६—पत्र २ ४ योप १७०
वि २१२९ पत्र १२३ कट) ।

संघट्टय पु [सिद्धान्त] स्वेप्ता नाक में
ले बहला इय पचाई (सुनु १३) ।

संघट्टिय देको संघट्टिय (खाम् १ १—पत्र
१०१ पत्र २ ३—पत्र १५) ।

संघट्टय लक [सं + घट्टय] १ संघट्ट करना,
इच्छा करना विनाला । २ विना करना,
मात्रा । संघट्टय, संघट्टय (कम्प १ १६,
अ १, १—पत्र २२६) । ३ संघट्टयिज
(उप २१ २१) ।

संघट्टय पु [संघट्ट] १ संघट्ट संघट्ट कय ले
अवस्थान निश्चिता (अका ४४ ४ १) । २
समुह कवा (प्राक्, अका शीघ्र महा) ।
३ संघट्टन-विशेष ब्रह्मचर्य-मात्रा नामक
शरीर-कवा 'संघट्टणं संघट्टणं' (प्राक्) ।
४ मुक्तनाम का एक मेघ (कम्प १ ७) ।
५ संघट्ट, समुदाय (प्राक्) । ६ न
नामकर्म-विशेष जिस कर्म के जन्म से शरीर
योग्य पुत्र पुत्री-पुत्री पुत्रों पर व्यवस्थित
कय सं स्थापित होते हैं (कम्प १ ११
११) । समास पु [समास] मुक्तनाम
कय एक मेघ (कम्प १ ७) ।

संघट्टय य [संघट्टन] १ निम्न, विना
(वि १०) । २ देको संघट्टय' का छाना
य (कम्प १ २४) ।

संघट्टया ओ [संघट्टना] संघट्टि । कण

न [करण] प्रयो की परस्पर संघट्ट कय
से रचना (वि ११ ८) ।

संघट्ट पु [संघट्ट] १ बह-बहु-अय प्रत्यय
(सुनु ४४) । २ मात्र (पत्रि ११ ८
अप ११६ टी) । ३ संघट्ट । ४ विचरन ।
५ मरक-विशेष । ६ घेरन-विशेष (वि १
१२५ पत्र) ।

संघट्ट (प्राक्) देको संघट्ट = सं + घट्ट । संघट्ट
संघट्टि (वि) ।

संघट्टिय वि [संघट्टिय] नाथि अयपवि
(पत्रि) ।

संघट्टिय पु [वि] ल्या बरावरी (वि ८
१९) ।

संघट्टिय देको संघट्टिय = संघट्टि (प्राक्) ।

संघट्टि वि [संघट्टि] संघट्ट-मुक्त, मगुरित
(पत्रि) ।

संघट्टी ओ [वि] व्यापक, संकल्प (वि ८
८) ।

संघट्ट (प्राक्) देको संघट्टिय । संघट्ट (पत्रि) ।

संघट्ट (प्राक्) पु [संघट्ट] परिचय (पत्रि) ।

संघट्ट १ वि [संघट्टिय] संघट्टनामा
संघट्टण १ संघट्ट संघट्ट करनेवाला (रवि
१ १ १ पत्र ७१ टी) ।

संघट्टिय वि [संघट्टिय] संघट्ट-मुक्त (पत्रि) ।
संघट्टिय पु [वि] प्रकट्ट जगह

विशेषण मुक्तकर्मक इय
मुक्तिपरकर्मपरणे कीय ।

विशेष संघट्टार सं
नारयस्त्रियमुक्तपण ॥

(अ ७२८ टी) ।

संघट्ट वि [संघट्ट] परिचय (पत्रि)
(७०८) ।

संघट्ट पु [संघट्ट] १ संघट्ट (पत्रि) १ २—
पत्र १२३ पत्रि, महा) । २ समुह (कम्प
पत्रि) । ३ संघट्ट जोड़ (अ १) ।

'मास पु [मास] प्रायश्चित्त-संघट्टा मास-
विशेष (पत्रि) ।

संघट्ट लक [सं + पर] १ बतना यति
करना । २ बतय पट्टि करना प्रकटी ठाढ़
कचना । ३ बोरे कीरे कचना । संघट्ट
(अका ४२३ पत्रि) । बह संघट्ट (वि २,

१५ गुर १ ७१; गठ—वैत ११) । इ.
संपरिण्य संपरिअण्य (गठ—वैत १४ से १४ २०) ।

संचारण न [संचारण] १ नवमा यति । २
सम्पन्न यति (वटव पि १ २; कपु) ।

संचारिण [संचारिण] नवा ह्या विभक्ते
संचय्य विना हो नह (उप ५ ११५ सविम
११५; यति) ।

संचायन न [संचयन] संचार, यति (वटव) ।

संचाजि वि [संचाजि] नवा ह्या (गुर
१, १४ यदा) ।

संचय्य च [सं + चय] नवमा यति
करय । संचय्य (यति) ।

संचय्य (य) वैवा संचय्य (यति) ।

संचयिष्य वैवा संचयिष्य (यति) ।

संचाय्य वि [संचायि] यो वयसं ह्या
हो बह (मय ३ २ टी—यन १७६) ।

संचाय्य च [सं + चय] सचयं होय ।
संचाय्य (यन जग कय) संचाय्यो (ह्युप
२, ७ १) यामा १ १८—यन २४) ।

संचाय्य नु [संचाय] पठिष्य (वचा ११
१४) ।

संचार्य च [सं + चारय] संचार करण ।
संचार्य (यति) । संचार्य संचारि (यति)
(यति) ।

संचार नु [संचार] संचार्य यति (वटव
यदा यति) ।

संचारि वि [संचारि] यति करणेवा
(कय) ।

संचा र्च वि [संचारि] विभक्ता संचार
कराना यमा हो बह (यति) ।

संचारिण वि [संचारि] संचार-योग यो
एक एव से उभर बहुरे स्वयं न यथा
ना बहे बह (गिर ३ । गुण ३११) ।

संचाय्य धी [च] इत्यर्थे करणेवा धी
(वाच ४१) ।

संचाय्य च [सं + चारय] नवमा ।
संचार्य (यति) । संचाय्य संचाजि
संचायिष्यमाय (ये १ ११ यामा १
२—यन ११६) ।

संचाजि वि [संचाजि] नवा ह्या
(ये ४ २७) ।

संचाय्य वि [संचाय] संयुहीत (योच १२१
यमा गठ—वैत १७ गुण ३१२) ।

संचयित्व न [संचयित्व] विभक्त्य विचार
(हि २२) ।

संचयित्वया धी [संचयित्व] ऊरर वैवो
(उप १२ १) ।

संचयित्व च [सं + चय] चवा ठ्वाणा
यन्ते सच्य चवा यमापि से चय ।

संचयित्व (वाचा १ १ २ २) । संचयित्वे
(उप २, ११ योच १२) ।

संचयित्वमाय वैवा संचयि ।

संचयित्व वैवो संचयित्व । संचयित्व (यदा वरा
यदा) ।

संचयित्व न [संचयान] यस्तान (पि ४८१) ।

संचयि च [सं + चि] १ संचय करण
इच्छा करण । २ उपचय करण । संचयित्व,
संचयित्व, संचयित्व (गु १ ७; पि १ १) ।

संचयि संचयिष्या (गुप २, २, १५; यम)
कय, संचयिष्याय (यमा २ १ २) ।

संचयिष्य वि [संचयि] वयसीय (य ४०१) ।

संचयि वि [संचयि] योचिष्य (य) ।

संचय्य च [सं + चय] चर-चर
करण संच-संच करण दुकर-दुकर करण ।
कय संचयिष्यित्व (यम ३१२, ४४) ।

संचयिष्य वि [संचयिष्य] चर-चर
संचयिष्य वि [संचयिष्य] विना ह्या यथा यति
यमा १ १—यन ४७ गुर १२, २४१) ।

संचयिष्या धी [संचयित्व] यन्ते सच्य चवा
यमा 'सचयित्व' (गिर १२) ।

संचाय्य वि [संचायि] यति (वा ४ १
टी—यन २१८) ।

संचाय्य वि [संचायि] यमा ह्या (उप
३ २११ गुर २ २४० गुण
३११; यमा यदा) ।

संचाय्य वि [संचायि] यमा ह्या (गुण
३१२) ।

संचाय्य च [सं + चारय] चवा । यच,
संचायि (यम ३१ ४०) ।

संचय्य च [सं + चय] चर-चर कर

चोच, इच्छा करण; 'संचय्य' एकेचि
(गिर १११) ।

संचाय्य नु [संचाय] यन्ते सच्य चवा
यमा (यच २, ११२ १५) ।

संचाय्य वि [संचायि] यमच (यच) ।
संचाय्य न [संचायि] यमच (यच) ।

संचाय्य नु [संचायि] यमच यदा, मुनि
'संचाय्य' इत्यर्थे यमच (यच) ।

संचाय्य धी [संचायि] यमा धी (योच ११
यदा ३ १७) ।

संचाय्य वि [संचायि] यमच (गुर ११ ११२) ।

संचाय्य च [संचायि] १ यमच; २ वि
यमच करणेवा (गुर २ १४४ गुण
३५१) । धी धी (यच १५) ।

संचाय्य वैवा संचय्य (यम ११५, गुण
१; सचय्य २२) ।

संचाय्य वि [संचायि] यमच (यम
१४४ यदा) ।

संचाय्य च [च] यमच करण । संचय्य
(य २२) ।

संचाय्य धी [संचायि] यमच धी मुचयिष्य
(यमा १ —यन ११२) ।

संचाय्य धी [च] यमच यमच वि-
मुचि यमच मुचय्य यमच (गुर ७
११ य ११२, ७१२; यदा) । वैवो
संचयि ।

संचाय्य वि [च] यमच विना ह्या (य
४४१) ।

संचाय्य वि [संचायि] यमच से
संचयिष्य वि [संचायि] यमच यमच यमच
मुचयिष्य (गुण ११४ टी ३३ गिर ४११;
यन २७१ ह १ ७) यदा यमा १, २;
यन ११२) ।

संचाय्य वि [च] १ मुचय, मुचय; २ नु
योच (१ १) ।

संचाय्य वैवो संचय्य = संचय (यम; गठ १४
यति १) ।

संचाय्य च [सं + चय] १ विचय होय ।
२ यमच करण । ३ यच विचय करण । ४
यच यमच । ५ यमच करण । ६

संज्ञमिच्छति (पठ २८६) । संज्ञ. संज्ञमैव
संज्ञमयं, संज्ञममाय (पठ ८४) वृत्ति
१ १४ उठ १८ २१) । कथं संज्ञ
मीअमाय (गठ—नि ११२) । संज्ञ-
संज्ञमिच्छा (सूय १ १ २) । हे
संज्ञमिच्छ (पठ ४५७) । संज्ञमिच्छाम्,
संज्ञमित्यम् (यथा एवम् १ १—पठ
१) ।

संज्ञम एक [हे] क्षित्ता । संज्ञमैव (हे ८,
११ टी) ।

संज्ञम तु [संज्ञम] १ वारिष वृत्ति विरुद्धि
क्षित्ति वारिष-कर्मों से निवृत्ति (वृत्ति डा ७
वीर कुमा मद्र) । २ मुन कमुद्रल (कुमा
७ २२) । ३ एवा प्रक्षिप्ता (सुमा १
१—पठ १) । ४ प्रक्षिप्त-निवृत्ति ३ वृत्ति ।
५ निवृत्त्य कम् (हे १ २४२) । [संज्ञम
तु [संज्ञम] व्याकृत (वीर) ।

संज्ञमन न [संज्ञमन] ऊनर वेको (वर्ग
१७ वा २६१ सुपा २६१) ।

संज्ञमिच्छ वि [हे] संज्ञमित्ति क्षित्ता हुवा
(हे ८ १२) ।

संज्ञमिच्छ वि [संज्ञमित्ति] बापा हुवा वृत्ति
(वा १४५ गुर ७ १ कुम १८७) ।

संज्ञय एक [सं + यन्] १ सम्प्रत्य प्रयाज
करता । २ एक प्रकृति वर प्रयुक्त करता ।
संज्ञय संज्ञय (पठ ७२ उठ २ ४) ।

संज्ञय वि [संज्ञय] बापु, मुनि, बही (यक
प्रोचना १७ नव) । 'यथा वि मायाविद्याय
संज्ञायस्ति' (मद्र) । 'यथा वी [प्राप्ता]
बापु को कथन करनेवाली वही यावि
(प्रोचना १७ टी) । मद्रिणा वी
[मद्रिणा] बापु को प्रकृत प्रकृतवाली
वही यावि (प्रोचना १७ टी) । संज्ञय वि
[संज्ञय] विरुद्धि वृत्ति में वही वीर विरुद्धि
वृत्ति में वही वीर वीर (यक) ।

संज्ञय तु [संज्ञय] वनवा, महावीर के पास
वीर वनेवाला एक राजा (डा ५—पठ
४१) ।

संज्ञयत तु [संज्ञयत] एक वीर मुनि (पठ
२, २१) । गुर न [गुर] नव-विरोध
(यक) ।

संज्ञर तु [संज्ञर] वर, बुद्ध (पठ २७) ।
संज्ञर एक [सं + वर] १ वनवा । २
यावत् करता । ३ बुद्ध होता । संज्ञर (मुद्र
१ २, ११; उठ २ २४) ।

संज्ञय वि [संज्ञय] १ प्रविष्टय को
करनेवाला (यक १७) । २ तु कथा-विरोध
(कम् १ १७) ।

संज्ञयिष तु [संज्ञयिष] वीरवी नरक मुनि
का एक नरक-स्वात (वेक २) ।

संज्ञयिष (यक) वि [संज्ञयिष] यावत्-
युक्त (यक) ।

संज्ञय वेको संज्ञम = सं + यन् । संज्ञय
(यक) (यक) ।

संज्ञय वेको संज्ञम = (हे) । संज्ञय (श्राद्ध
११) ।

संज्ञयिष वेको संज्ञमिच्छ = (हे) (या
यक) ।

संज्ञयिष वेको संज्ञमिच्छ = संज्ञयिष (यक) ।
संज्ञा वेको संज्ञा (हे २ ४१) ।

संज्ञाय वि [संज्ञाय] विव, विवृत्त,
वाक्यार (यक) ।

संज्ञाय तु वेको संज्ञाय = संज्ञय (गुर २,
संज्ञय ११४ ४ १६) । प्राप्ति वि
२ ४) ।

संज्ञाय एक [सं + यन्] ज्ञान होना ।
संज्ञाय (यक) ।

संज्ञाय वि [संज्ञाय] ज्ञान (यक ज्ञा
मद्र सख वि १११) ।

संज्ञाय वी [संज्ञायनी] १ वृत्ति गुर को
वीरित करनेवाली वीरि (प्रयु ८१) । २
वीरित-वाको नरक-मुनि (सूय १ २, २६) ।

संज्ञायि वि [संज्ञायि] विवनेवाला
वीरित करनेवाला (कम्) ।

संज्ञय वि [संज्ञय] वृत्ति, संज्ञय (ह २२
विवा ४८ गुर १ ११७ मद्र) । वेको
संज्ञय ।

संज्ञय न-[संज्ञय] १ वृत्ति, वृत्ति, संज्ञय
(यावत्) । २ नव-विरोध (यक) ।

संज्ञय एक [सं + यन्] जोड़ा । कर्त्त
'यकिन्ति' सम्प्रत्य वनेव कथन (१ यक) वि

वृत्ति वार्त्त (वर्ग १८) । कथं, संज्ञयव
(सम् २१) ।

संज्ञय न [संज्ञय] वृत्ति-विरोध (यक) । वेको
संज्ञय = संज्ञय ।

संज्ञय वी [संज्ञय] वृत्ति-विरोध (यक) ।
संज्ञय वि [संज्ञय] संज्ञयवाला वृत्ति वृत्ति
(यका सख वि ४ ४ विव) ।

संज्ञयि को [हे] वीरवी (गुर ४ १ २
१२ १ १ व १ १ कुम २०) । वेको
संज्ञयि ।

संज्ञय वि [हे] सम्प्रत्य, वीर वृत्ति
वनेवाला, वरकनवाला (हे ८ २) ।

संज्ञय तु [संज्ञय] १ वृत्ति वृत्ति (डा
१—पठ ४६१) । २ वानव्य, वानव्यवाला ।
३ वृत्ति वानव्य (सूय २ २ १) । ४ वृत्ति-
वृत्ति वृत्ति-वृत्ति (कम् १४६) । ५
वृत्ति वृत्ति के वृत्ति वृत्ति में एक वृत्ति का
यक (यक १२८) ।

संज्ञय एक [सं + योजय] संज्ञय करता
वृत्ति करता, वृत्ति करता । संज्ञय,
वृत्ति (वि ११८ गठ उठ वृत्ति) ।
वृत्ति संज्ञयव (वि ११६) । संज्ञय संज्ञा-
यक (वि ११६) । क. संज्ञयव
(यक) ।

संज्ञय एक [सं + वृत्ति] वृत्ति करता
वृत्ति । संज्ञय संज्ञयव (गुर १२) ।

संज्ञय तु [संज्ञय] संज्ञय वृत्ति-वृत्ति
वृत्ति (यक) ।

संज्ञय एक [सं + योजय] संज्ञय करता
वृत्ति करता, वृत्ति करता । संज्ञय,
वृत्ति (वि ११८ गठ उठ वृत्ति) ।
वृत्ति संज्ञयव (वि ११६) । क. संज्ञयव
(यक) ।

संज्ञय एक [सं + वृत्ति] वृत्ति करता
वृत्ति । संज्ञय संज्ञयव (गुर १२) ।

संज्ञय तु [संज्ञय] संज्ञय वृत्ति-वृत्ति
वृत्ति (यक) ।

संज्ञय एक [सं + वृत्ति] वृत्ति करता
वृत्ति । संज्ञय संज्ञयव (गुर १२) ।

संज्ञय तु [संज्ञय] संज्ञय वृत्ति-वृत्ति
वृत्ति (यक) ।

संज्ञय न [संज्ञय] १ जोड़ा, वृत्ति
(डा २ १—पठ २६) । २ वृत्ति वृत्तिवाला ।
३ कथा-विरोध, वृत्ति-वृत्ति वृत्ति वृत्ति
वृत्ति-वृत्ति (वि १२१; कम् २,
११ टी) । वृत्ति-वृत्ति वृत्ति [वृत्ति-वृत्ति]
वृत्ति वृत्ति को वृत्ति वृत्ति वृत्ति वृत्ति वृत्ति
को वृत्ति (डा २, १—पठ १६) ।

संज्ञय वी [संज्ञय] १ वृत्ति
वृत्ति (वि ११६) । २ वृत्ति का एक
वृत्ति, वृत्ति के वृत्ति वृत्ति-वृत्ति वृत्ति वृत्ति
को वृत्ति (वि १) ।

संज्ञय वि [संज्ञय] वृत्ति वृत्ति
वृत्ति (यक) ।

संज्ञय एक [सं + योजय] वृत्ति
वृत्ति (यक) ।

संज्ञय तु [संज्ञय] वृत्ति वृत्ति
वृत्ति (यक) ।

संघट्टिअ वि [संघट्टित] ध्यायुअ किया हुवा विहमित्त (बन्धा ७) ।

संघट्ट वि [संघट्ट] संघट्ट-युक्त, कर्मविश्रुत (विधा १ २—पत्र २१; यवह) ।

संघट्ट देखो संनय (पत्र) ।

संघट्टवा की [संघट्टपत्त] संघट्टित विहायन (उवा) ।

संघा की [संघा] १ जाहार धावि का धम्मिय (अम १; अत्र पण्य १ ३—पत्र ११, प्राम १०६) । २ मति, बुद्धि (अम) । ३ संकेत, प्रत्यय (वि १ १ १३४ टी) । ४ धम्मका नाम । ५ सुद की पत्ती । ६ गदकी (हे २, ४२) । ७ विहा पुपिअ (अ १४२ टी) । ८ सम्मत् करीन (अम) । ९ धम्मत् ज्ञान । (पत्र १११) । इअ वि [“कुल”] ठीरु किया हुवा कण्ठय म्मा हुवा (ब १ १ टी) । मूमि की [“मूमि”] पुपिअसर्वान नी जय्य (अ १४२ टी ब १ १ टी) ।

संघानिय वि [संघानिय] भवमत्त किया हुवा (पत्रा १२ १९) ।

संघाय वि [संघाय] १ ज्ञात गत कर प्राप्तो (पत्र १ १९) । २ लज्जन लवा (अ १११) । देखो संनाय ।

संघास पुं [संघास] संसार-स्वाय, कजुर्न धायय (नट—वैत २) ।

संघानि वि [संघानिय] संसार-स्वाये कजुर्न-धाययी गति, ठीरु (नट—वैत ८) ।

संघाह एक [स + ताह] वहाँ क विप टीयर करण, पुट-बज्ज करण । संघाहो (दीप ४) ।

संघाह पुं [संघाह] १ पुट की टीवारी (वि १ १ १९) । २ कज्ज, कज्जर (नट—देखो १२) । पट्ट पुं [“पट्ट”] ठीरु पर नाले का बज्ज-विट्ठ (इह १) ।

संघाहिय वि [संघाहिय] पुट की टीवारी से सम्मत् रक्केनत्ता “संघाहिय” सेटीए धई सेधा (छाया १ १६—पत्र ११७) ।

संघा वि [संघा] १ संघाजला, संघा-युक्त । २ मनकला, प्रत्यो (अम २) अत्र कीन) । ३ धम्मक केन पुहत्त (धोप ७) ।

४ सम्मत् करीनत्ता धम्मकली बैन (अम) । ५ न सोम-विरोध जो बरिष्ठ गोत्र की शाखा है । ६ पुंकी उस योत्र में उज्जम्भ (अ ७—पत्र १६) ।

संघिक्खिअ देखो संनिक्खिअ (पत्र) ।

संघिगास देखो संघियास (छाया १ १—पत्र १२) ।

संघियास देखो संनिगास = संनिघय (पत्र) ।

संघिचय देखो संनिचय (पत्र) ।

संघिचिय देखो संनिचिय (धाया २ १ २ ४) ।

संघिउअ देखो संनिउअ (यवह) ।

संघिणाअ देखो संनिनाय (पत्र) ।

संघिवाह देखो संघिवाह (नट—यात्रो २६) ।

संघिवाण देखो संनिवाण (नट—उत्तर ४४) ।

संघिपट्टिअ वि [संघिपट्टित] निप हुवा (विधा १ २—पत्र ६८) ।

संघिम देखो संनिम (पत्र) ।

संघिय वि [संघिय] जिअने इहाय किया म्मा हो वह (पत्रा ७८) ।

संघिवास पुं [संघिवास] जमान वहर (पत्रा २ १००) । देखो संनिवास ।

संघिरुअ वि [संघिरुअ] कज्ज हुवा, विमिश्रित (धाया २ १ ४ ४) ।

संघिरोह पुं [संघिरोह] बटफन कज्जवट (वि १ १४) ।

संघिजय अक [संघि + जय] पड़ना विण्ण । नक्क, संघिपयमाय (धाया २ १ १ १) ।

संघिजाय पुं [संघिजाय] सम्मत्त (पत्रा ७ १८) ।

संघिक्खि देखो संनिक्खि (छाया १ १ टी—पत्र २) ।

संघिपेअ देखो संनिपेअ (धाया १ ८ १ म्मत् कज्ज नट—यात्रो १६) ।

संघिसिअ देखो संघिसिअ (पत्र) ।

संघिसेअ देखो संनिसेअ (धाया १ ८ १ म्मत् कज्ज नट—यात्रो १६) ।

संघिअ देखो संनिअ (वा १२८ नट—युज्ज ११) ।

संघिहाइ वि [संघिधायिन्] सधोप-स्वायो (यात्र १२) ।

संघिहाण देखो संनिहाण (पत्र) ।

संघिहि देखो संनिहि (धाया २ १ २ ४) ।

संघिहिय वि [संघिहिय] छाया के बिप समीप-स्थित निक्क-वर्ती (महा) । देखो संनिहिय ।

संघिउअ देखो संनिउअ (यवह) ।

संघिउ देखो संनिउ (उवा कम्प महा) ।

संघि वि [संघि] १ धम-युक्त लोच-रहित (कम्प धाया १ ८ ४) । २ पुं उह विरोध विहायता केन गुणा बंजरता किया व मावता (वि १ ८ ८२) ।

संघि वि [संघि] यका हुवा (साम्प १ ४ अत्र १ १ ११२ विधा १ १ कम्प वे ८ १६) ।

संघि की [संघि] १ संघान धम्मत्, बज्जकाला “सुदोसा कु इरिया विहायेह वरि” (अ १ ४ मुवा १ ४) । २ धमिक्खिअ नारा प्रवाह (अ ११, १; अ १ ८ ८१) ।

संघिअ न [संघिअ] किन्नर (सुय १ ५ १ ४) ।

संघिअ वि [संघिअ] किता हुवा (पत्रा १ १—पत्र १८) ।

संघि वि [संघि] उअ हुवा मय यीव (पुर १ २ २) ।

संघि देखो संघि (अ १०४) ।

संघि वि [संघि] १ निक्कट, धमिक्खिअ । २ निरुत्तरी ।

“धम्मिनीधियान्तं मयि मुहं
कुलमेव संघट्टी ।
नय नेरहत्तं म्मिनिधि
पम्भत्तुमि”
(पुर १४ ४६) ।

संघि वि [संघि] संघा-युक्त (पुर १४ ४६; वा ११५ मुवा १९ महा) ।

संघि देखो संघि (अ १८) ।

संघिअ धम [संघि + धम] १ कज्ज मय होमा । २ धमिक्खि होमा । सम्पत्त (हे ४ १४ अ २) । धमि संघिअ (अ

संतोसिज-संविट्

१३. गुण ४११) । २ धामन्विता कुर्ये (कर्म) ।
 संतोसिज ण [संतोपिठ] संतोस्य वृत्ति (उवा १६) ।
 संतोसिज नि [संतोपित] संतुप क्रिया हुआ (महा ४७) ।
 संप नि [संय] संसिद्धि (विश्व ११ १) ।
 संपद नि [संस्तुत] १ धामन्विता, संपदिय २ परस्पर के संस्कार के धामन्विता (महा ४ ४) । २ वन निविद्ध (भाषा २ १ १ १) । ३ धामन्विता (उत्तर २१ २२ श्लोक ७७७) । ४ समर्थ । ५ तुल्य विद्यते पर्याप्त मोक्षन क्रिया हो वह (नव भाषा २ ४ १ १ वृत्त ७ ११) । ६ एकत्रित (भाषा २ १ १ १) ।
 संपदा धक [सं + स्तु] धामन्विता करना । संकल्लो (महा १ २ १ ७) ।
 संभर धक [सं + स्तु] १ विधीना करना निष्क्रान्ता । २ निस्तार घाना पार पाना । ३ निर्वहण करना । ४ धम्य समर्थ होना । ५ तुल्य होना । ६ होना विद्यमान होना ।
 संभर्य (महा १ २ १ १) । १—पत्र १२७७ उवा क्रम) 'ए सुमुखो यो संभरे वरुण' (महा १ २ १ १ भाषा) संभरित, संभरे, संभर्य (कर्म) वर १, २, ३ भाषा) । वृद्ध संभर्य, संभर्य संभरमाण (उत्तर १४२ श्लोक १८३ १ ८१ भाषा २, १ १ ८) ।
 वृद्ध संभरिषा (महा भाषा) ।
 संभर णु [संस्तर] निर्वहण (विश्व १७७, ४) ।
 संभर वेतो संभार (महा २ २४७) ।
 संभरण न [संस्तरण] १ निर्वहण (विश्व ११) । २ विधीना करना (उवा) ।
 संभर्य धक [सं + स्तु] १ लुपि करना, स्ताप्य करना । २ परिषय करना । संभर्य (महा १ १ ११) । ३ संवयिष्य (महा २) ।
 संभय णु [संस्तप] १ लुपि, स्ताप्य, संभयो नुर्दि (महा १ १ ११) । २ निर्वहण (विश्व ११) । ३ वरुण । ४ वरुण धक (महा १ १ ११) । ५ वि लुपि-कर्म (उवा १ १ १ १—पत्र २२ पत्र) ।

संभयण न [संस्तपय] उत्तर वेतो (संभय २१ वृत्त ७११ टी) ।
 संभयय नि [संस्तपय] लुपि-कर्म (उवा १, ११—पत्र २११) ।
 संभयिष्य वेतो संस्तपिष्य (पत्र २१ १) ।
 संभार णु [संस्तार] १ वरुण—महा भाषा संभार्य णु [संस्तार] १ वरुण—महा भाषा संभार्य पत्र १ उवा उवा भव) । २ धामन्विता कर्म (भाषा २ २ १ १) । ३ उवाप्य, धाम्य का धामन्विता (वृत्त ४) । ४ संस्तार-कर्म (पत्र ७१) ।
 संभार्य वेतो संताप । वृद्ध संभार्य (पत्र १ १ २२) ।
 संभारण न [संस्तारण] धामन्विता धामन्विता (पत्र ११ २० ४४ म. १५, ४७) । वेतो संतापय ।
 संभार्य वेतो [संस्तारण] संस्तार्य रक्षणा (भा २४) । वेतो संतापय ।
 संभिय (यो) वेतो संस्तप (महा—पुष्प १ १) ।
 संभुध नि [संस्तुत] १ संभय संभय (महा १ १२ २) । २ परिषय (भाषा १ २ १ १) । ३ वरुण लुपि नी गई हो वह स्तापित (उत्तर १ ४६ भवि) ।
 संभुध वेतो [संस्तुति] लुपि स्ताप्य प्रवर्तना (पत्र ४११ गुण १२) ।
 संभुध धक [सं + स्तु] लुपि करना स्ताप्य करना । संभुध (महा भाषा १) ।
 संभुधमाय (पत्र २१ १) । वृद्ध संभुधमाय, संभुधमाय (महा ११ भाषा ७) । वृद्ध संभुधमाय (पत्र ४२४) ।
 संभुध नि [संस्तुत] रमणीय, रम्य, सुन्दर (भाषा ११) ।
 संभुधय वेतो संभुध ।
 संभु धक [संस्तु] १ कर्म स्तप्य । संभुध (महा १ १२, ७) ।
 संभु णु [संस्तु] १ मध्य प्रवर्त (वि ७, १२) । २ रम्य—रम्य-संभुध णु [संस्तु] (वर्षा १ ४४) ।
 संभु नि [संस्तु] मध्य प्रवर्त (महा १३ वृत्त २१) ।

संस्तप णु [संस्तप] वरुण लुपि, विनाशियो निर्वहण कोषकता वरुण उत्तर संस्तो (महा २१२) ।
 संस्तप्य न [संस्तप] वरुण, वेता साधकार (उवा १२७ टी) ।
 संस्तप्य नि [संस्तप] को कर्म ममा हो वह, निर्वहण वरुण ममा हो वह (वि १ ३५ गुण ३ न पत्र) ।
 संस्तप्य नि [संस्तप] १ संस्तप संस्तप संस्तप्य १ संस्तप (वि ८ १८ म. २११) । २ न संस्तप संस्तप (वि ८ १८) ।
 संस्तप्य नि [संस्तप] मध्य ममा हुआ (महा १ २ १, गुण २११) ।
 संस्तप णु [संस्तप] १ रम्य (पत्र २१) । २ धामन्विता में धामन्विता उत्तर-मध्य-ममा में उत्तर वेता जिनवेता (वृत्त ७) । ३ न लुपि प्रवर्त । ४ वरुण ममा । ५ ममा पानी 'ममा यो नई निर्वहण निर्वहण' (महा) ।
 संस्तप्य णु [संस्तप] रक्षणा संस्तप (उत्तर २ १ वृत्त) ।
 संस्तपयिष्य णु [संस्तपयिष्य] नो संस्तपयिष्य १ एक प्रवर्त का माह्य एक वृत्त की वाक्की (वीन) उवा १ १—पत्र १ १ १ १ टी—पत्र ४१; धोय) ।
 संस्तप्य धक [सं] धमन्विता करना वरुण वेता । वरुण (वि ४ १७) । वृद्ध संस्तपयिष्य (महा) । वरुण (वि ११) ।
 संस्तपयिष्य नि [संस्तपयिष्य] मध्य निर्वहण (पत्र १ १ १ १ ७ गुण १) ।
 संस्तपयिष्य नि [संस्तपयिष्य] मध्य निर्वहण (वि ११) ।
 संस्तपयिष्य नि [संस्तपयिष्य] मध्य निर्वहण (वि ११) ।
 संस्तपयिष्य नि [संस्तपयिष्य] मध्य निर्वहण (वि ११) ।

संघीर हक् [सं + धीरय] घाघासन देना
धीरय देना । बङ्ग संघीरय (मुद्रा १०१) ।

संघारणिय वि [संघीरित] जिसको घाघासन
दिना गया हो वह घाघासित (गुर ४
१११) ।

संघुब्ध धम् [सं + धीय् सं + धुब्ध] ?
पल्लव, मुलपल्लव । २ बह्म-पल्लव । ३
उपनिवृत्त करना । संघुब्ध (इ ४ १२२
मुद्रा) । कर्म संघुब्धकर (ब्रह्मा ११) ।

संघुब्धय न [संघुब्धय] ? मुलपल्लव पल्लव ।
२ ब्रह्मपल्लव, मुलपल्लव (धर्म) । ३ वि
मुलपल्लवता (स २४१) ।

संघुब्धिय वि [संघुब्धित] ? जलपला हृषा
मुलपल्लव हृषा (मुद्रा ११) । २ जला हृषा
प्रवेष्ट मुलपला हृषा (पल्ल-महा स २०) ।
३ उत्तेजितः 'धनियेषयसुसंघुब्धियो वक्त्र-
विधा म मखमि कोवणल' (स २४१) ।

संघुब्ध्यद् (घो) ऊपर देना (ग्राह-मुद्रा
२३३) ।

संघुम् ध्या संघुम् । संघुम् (बह्म) ।

संघे देना संघे = सं + धा । संघे, संघोत
संघेय (भाषा १ १ १५; वि ५
मुद्रा १ ४ १५) । बङ्ग संघेत संघेमान
(पञ्च ६८ ११; वंश १४ २०; ध्यायः
वि ५) ।

संघे देना संघे (भाषा १ १ १५) ।

संघेरय न [संघाधर] घटार धारि घटारों
की धारि (धरि १८०) ।

संघेय्य दधा संघेय्य । संघेय्य (धर्म) ।
बङ्ग संघेय्यय्य (पद्म) । इह संघेय्यय्य
(ब १०६) ।

संघेय्य न [संघान] दण्डय करना बंधा करण
(ग २६) ।

संघेय्य देना संघेय्य (पद्म १ ४—पञ्च ५) ।

संघेय्य देना संघेय्य (घो) विधा १ २ धी—
पञ्च ११) ।

संघेय्य वि [संघेय्य] क्या हृषा घटारय (घो-
पञ्च १२) ।

संघेय्य बङ्ग [सं + धाधय] बंधयय के
संघेय्य न । बंधय्य (पञ्च १४) ।

संघेय्य देना संघेय्य । संघेय्य (धर्म) बंधय्य
(ब १२२) ।

संघेय्य न [संघेय्य] संघेय्य (पञ्च १
१४) ।

संघेय्य देना संघेय्य (मुद्रा २२) ।

संघेय्य देना संघेय्य (छ १—पञ्च ११ पद्म
१ ३—पञ्च २२ पाथ गुर ३ ६० वि
२४२ उप ७२१ वं ३) ।

संघेय्य वि [संघेय्य] विधाना हृषा पक्षिणा
हृषा 'संघेय्य पक्षिणेल' (महा) । देना
संघेय्य (पञ्च १२१) ।

संघेय्य देना संघेय्य = सं + नाधय । संघेय्य
(घो-संघेय्य ११) । संघेय्य संघेय्य (संघेय्य
११) ।

संघेय्य देना संघेय्य = संघेय्य (महा) ।

संघेय्य वि [संघेय्य] तय्यार ध्या हृषा
ध्याय हृषा (घो) ।

संघेय्य देना संघेय्य (पञ्च १ ११—
पञ्च २१०) ।

संघेय्य देना संघेय्य (पञ्च २; छ २ २—पञ्च
२६ धी ४१ कर्म १ १) ।

संघेय्य देना संघेय्य (छ ६—पञ्च
४२६ कर्म) ।

संघेय्य वि [संघेय्य] ध्यायय ध्येय्य न
स्थित (गुण ४ ८) ।

संघेय्य वि [संघेय्य] ध्यायय ध्यायय
हृषा हृषा (कर्म) ।

संघेय्य वि [संघेय्य] ? ध्यायय ध्यायय
(पञ्च २ १ ध्यायय १—पञ्च २३ धी
३ १०१) । २ ध्यायय (पञ्च) । ३ ध्यायय
ध्यायय (पञ्च ११ २८) ।

संघेय्य ध्यायय [संघेय्य] ध्यायय ध्यायय
संघेय्य ध्यायय ध्यायय (ध्यायय १२०
१) ।

संघेय्य ध्यायय [संघेय्य] ? ध्यायय ध्यायय
(ध्यायय) । २ संघेय्य (ध्यायय १ २ १, २) ।

संघेय्य वि [संघेय्य] ? ध्यायय ध्यायय
(पञ्च १२८ ध्यायय १११) ।

संघेय्य ध्यायय [संघेय्य + ध्यायय] ध्यायय
ध्यायय ध्यायय । बङ्ग संघेय्यय्य (वि
४२२) ।

संघेय्य ध्यायय [संघेय्य] ध्यायय ध्यायय
ध्यायय ध्यायय (ब १०२) ।

संघेय्य ध्यायय [संघेय्य] ध्यायय ध्यायय
(ध्यायय) ।

संघेय्य देना संघेय्य (ध्यायय १ १—पञ्च
६८ ध्यायय १) ।

संघेय्य ध्यायय वि [संघेय्यध्यायय] ? ध्यायय
ध्यायय ध्यायय । २ ध्यायय 'ध्यायय ध्यायय
ध्याययध्याययध्याययध्यायय' (ध्यायय ध्यायय
१ ध्यायय १) 'ध्यायय ध्यायय ध्याययध्यायय
ध्याययध्याययध्यायय' (ध्यायय) ।

संघेय्य ध्यायय संघेय्य (ध्यायय ८१; ध्यायय) ।

संघेय्य ध्यायय [संघेय्यध्यायय] ध्यायय ध्यायय
ध्यायय ध्यायय [ध्यायय] ध्याययध्यायय ध्यायय
ध्याययध्यायय (ध्यायय) ।

संघेय्य ध्यायय देना संघेय्यध्यायय (पञ्च ११
११६) ।

संघेय्य ध्यायय न [संघेय्यध्यायय] ध्यायय ध्यायय
'ध्याययध्यायय ध्यायय ध्याययध्यायय ध्याययध्याययध्यायय-
ध्यायय' (पद्म १ २—पञ्च १४) ।

संघेय्य ध्यायय देना संघेय्यध्यायय (ध्यायय १
१—पञ्च १५) ।

संघेय्य ध्यायय वि [संघेय्यध्यायय] ध्यायय
ध्यायय ध्याययध्याययध्याययध्यायय (ध्यायय ध्यायय
ध्यायय १४६) ।

संघेय्य ध्यायय वि [संघेय्यध्यायय] ध्यायय ध्यायय
ध्यायय ध्याययध्याययध्याययध्यायय (ध्यायय १—पञ्च
११) ।

संघेय्य ध्यायय वि [संघेय्यध्यायय] ध्याययध्यायय
ध्यायय ध्याययध्याययध्याययध्यायय (ध्यायय १—पञ्च
२ ध्यायय १६ ध्यायय ८०) । २ ध्याययध्यायय
ध्यायय ध्यायय ध्याययध्याययध्याययध्यायय
(ध्यायय १११ कर्म ४ १८ १००) । ३ ध्यायय
ध्यायय ध्यायय ध्याययध्याययध्याययध्यायय
(ध्यायय ११३) ।

संघेय्य ध्यायय वि [संघेय्यध्यायय] ध्यायय ध्यायय
ध्यायय ध्याययध्याययध्याययध्यायय (ध्यायय २१) ।

संघेय्य ध्यायय वि [संघेय्यध्यायय] ध्याययध्यायय
ध्यायय ध्यायय (ध्यायय १ ११—पञ्च २२१) ।

संघेय्य ध्यायय [संघेय्यध्यायय] ध्यायय ध्यायय
(ध्यायय ध्यायय) ।

संघेय्य ध्यायय न [संघेय्यध्यायय] ध्याययध्यायय
(ध्यायय) । २ ध्यायय ध्याययध्याययध्याययध्यायय
ध्यायय ध्याययध्याययध्याययध्याययध्याययध्यायय
(ध्यायय) । ३ ध्यायय ध्याययध्याययध्याययध्यायय
ध्याययध्याययध्याययध्याययध्याययध्याययध्यायय
११ ध्यायय २०) ।

संपुष्प वि [संपुष्प] प्रेष्ठि कसे। कदा
‘मनसं बभूविसंपुष्पविशेषावासासयसं
मुक्तामि’ (उप ४४) ।

संपुष्प } एक [संप्र + पुष्] प्रेष्ठा
संपुष्प } कला । संक्षेप संपुष्पविद्या,
संपुष्पविद्या (वच ३, १, १) ।

संपुष्प वेको संप्रस (छाया १ १—पत्र १)
इति १११ गट—पुष्प १) ।

संपुष्पा की [दि] बेर या बीर (मिश्रण
विशेष) बनाने का घटा येँ का वह घटा
निकल कटुर बनवा है (वे ८ व) ।

संप्रस वि [संप्रस] १ सम्यक् प्राप्त (छाया
१ १ उवा विना १ १ मू, की ३) ।
२ समस्त प्राप्त हुआ (मुद्रा ४११) ।

संप्रस पुं [संप्राप्त] कुम्हार वा, मुपात्र
(मुद्रा ४११) ।

संप्रस की [संप्रस] १ सम्यक् वैभवं
संप्रस (पत्र प्राप् ११ १२०) । २ संक्षिप्तः ।
३ पुं वि तव शेषवत् संप्रस की विस्तृत
(विना १ २—पत्र २०) ।

संप्रस की [संप्राप्ति] नाम, प्राप्ति (विद्य
८६४ मुद्रा ४११) ।

संप्रसिद्धा की [दि] १ बाधा हुयारी लक्ष्मी
(वे ८ १०; वचना १११) । विपक्षी-पत्र,
पौन की पत्ती (वे ८ १०) ।

संप्रसिद्ध ॥ [दि] श्रेष्ठ, जलसे (वे ८, ११) ।
संप्रसिद्ध } वि [संप्रसिद्ध] १ विज्ञान
संप्रसिद्ध } प्रसारण किया है वह, प्रसार
प्रसिद्ध (पत्र २१ वच १११ मुद्रा १ ७)
१११ छाया १ २—पत्र ३२) । कर्मिक
व्यवहारविधि बहविह विनियम वनरोवरव्यवस्था
(१ पत्ती) । तद्विह ह मरद निवर्त पुरीति
संप्रसिद्ध कसे ॥”

(पत्र ११ ११) ।

संप्रस वि [संप्रस] १ पुष्प, उचित (प्राक्ष
१२) । २ प्रकृत, वच (पत्र ३१) ।

संप्रस वि [संप्रस] विना हुआ, प्रसिद्ध
(मद्र, मद्र) ।

संप्रस वेको संप्राप्त (छाया १ ८—पत्र
११ मद्रा २ १२, ३) ।

संप्राप्त पुं [संप्राप्त] पुष्प-मरिचक उपरि,
प्राप्ताय (संबोध ३१ बर्ग १२१०) ।
संप्राप्त न [संप्राप्त संप्राप्त] कर्म-
विशेष ‘उत्तिष्ठा करणमि कदा नवनी
उपदास्य’ (का ८—पत्र ४२०) ।

संप्रसिद्ध वेको संप्रस = संप्रसिद्ध (प्राक्ष १२) ।
संप्रसिद्ध वेको संप्रसिद्ध = संप्रसिद्ध (संक्षि २, वि
२ ४) ।

संप्रसार वेको संप्रसार = संप्र + सार्य ।
संप्रसारि (शी) (गट—पुष्प २११) ।
कर्म, संप्रसारण (शी) (वि ३४३) ।

संप्रसारणा की [संप्रसारणा] व्यक्त-विशेष
प्राप्त-व्यक्त (वच १) ।

संप्रसारि वि [संप्रसारि] निश्चित, निर्णीत
(सुख) ।

संप्रसारि वि [संप्रसारि] हृन्-वासिह
हृन् विना हुआ (कर्म कर्म पात्रा १ २
१) ।

संप्रस वि [संप्रस] १ संप्रसिद्ध (वच;
महा कर्म) । २ संक्षिप्त (विना १ २—पत्र
२१) ।

संप्रस वेको संप्राप्त ।

संप्रसुम्भ क [संप्र + सुप्] उभय बाज
को प्राप्त करना । संप्रसुम्भ (पत्रा ७ २१) ।

संप्रसुम्भ उ [संप्र + सुप्] मर्त्य करना
कर्मका प्राप्त-सुख करना । संप्रसुम्भ (वीर
४४) । संक्षेप संप्रसुम्भ संप्रसुम्भ
(वीर पात्रा २, १ ४ ३) ।

संप्रसार क [संप्र + सार्य] पुष्प
करना । संप्रसार (पत्रा १ १ २, ३) ।

संप्रस वि [संप्रस] विप्रसार कर्तव्य
‘प्राप्त संप्रस विप्रसार कर्तव्य न प्राप्तो ह्यत्र
न प्राप्त’ (वि ३४३) ।

संप्रस वेको संप्रस (पत्रा मद्रा मुद्रा ३४०) ।

संप्रसुम्भ क [संप्र + सुप्] सम्यक् प्रकृति
करना । संप्रसुम्भ (वर्ग ३ ३३२) । वच,
संप्रसुम्भ (पत्रा ८ १४) ।

संप्रसुम्भ वि [संप्रसुम्भ] सम्यक् प्रकृत (मुर
४ ७६) ।

संप्रस की [संप्रस] १ सम्यक् संप्रसिद्ध,
वर्ग की विना (उवा मुद्रा ३ १ ८०;
मद्रा प्राप् ११) । २ बाधों का विनाश

होना (वच १) । ३ प्राप्ति, ‘वीरबायो
विप्रसारसंप्राप्त’ (विप्र १११ वच १२) ।
४ एक विप्र-की का नाम (उप
३४० टी) ।

संप्राप्त न [संप्राप्त] १ सम्यक् प्रदान
लक्ष्मी तद्वत् प्राप्त संप्रसिद्ध (पत्रा २ १३
३, वा १८ मुद्रा २१८) । २ कर्म-विशेष
कर्म-विशेष विप्रसे बाज विप्र प्राप्त वह
(वि २ २२) ।

संप्राप्त वेको संप्राप्त बन्धो संप्राप्त
(मुद्रा १११) ।

संप्राप्त वि [संप्राप्ति] संप्रसार-
संप्राप्त } संप्राप्त संप्राप्त में संप्रसार (अ
२ १—पत्र ३२ मुद्रा १ ८, ८) मद्र
पात्रा २२१) ।

संप्राप्त पुं [संप्राप्त] १ संप्राप्त, वच (मुद्रा
१ ३, २ २३ वच २ ३) । २ श्रेष्ठ प्राप्ति
कर्म (अ २ १—पत्र ३२) । ३ बाज
कर्म लुप्त कर्म (मुद्रा १ ८, ८) । ४
कर्म का वच (वीर) । ५ मुद्रा संप्राप्त
मद्रा (पत्रा १ ८—पत्र ३४० मुद्रा
४ विप्र ८८ वच २ ३) ।

संप्रसिद्धि पुं [संप्रसिद्धि] प्राप्त वच
का एक पत्रा एक संप्राप्ति (पत्र ३,
२१) ।

संप्रसिद्ध क [संप्रसिद्ध + इ] सम्यक्
पठित करना । संक्षेप संप्रसिद्ध (संबोध
२१) ।

संप्रसिद्ध वि [संप्रसिद्ध] वैदिक
संप्रसिद्ध } (वच पत्र १ २२; छाया
१ १ टी—पत्र ४) ।

संप्रसिद्ध वि [संप्रसिद्ध] वृत्त, दावि
व्यक्त (पत्र ७८, १२) ।

संप्रसिद्ध वि [संप्रसिद्ध] १ सम्यक् परि
कृत परिचारक (विना १ १—पत्र १
उवा वीर) । २ वैदिक (मुद्रा २, २ ३३) ।

संप्रसिद्ध वि [संप्रसिद्ध] १ वचन करना
प्रमाण करना । संप्रसिद्ध (वि १२००) ।

संप्रस (पत्र) क [संप्र + प] पा विना ।
संप्रस (विना) ।

संप्रस वि [संप्रस] १ संप्रसिद्ध विना
हुवा । २ को बाधों के विना मित्र मद्रा हो
वह (छाया १ १८—पत्र २११) ।

संपत्त नि [संपत्ति] एक कवि-
प्रतिष्ठित (प्रायः १ २-५५ ५६) ।

संपत्तिय नि [संपत्ति] विमल धर्मो
उद्गमन इत्य हो वह 'मुहूर्तविमल'
(पौ) ।

संपत्ति यु [संपत्ति] एक दिन मही
(पुन) ।

संपत्ति यु [संपत्ति] वपुषः (यह
पौर कथ्य उप १२२) ।

संपत्ति नि [संपत्ति] प्रवर्तन मुनय
हुवा (प्रायः १ १-५५ ५६ पञ्च २२
११ बर्तन २७ : मुन २६८ बह) ।

संपत्ति म [संपत्ति] प्रमा
उन करता : वह संपत्तिप्रमा (प्रायः
१ २, ४ १) ।

संपत्ति व [संपत्ति] वात, यह
करता : संपत्ति (मुन १ १ २ ७) ।

संपत्ति } व [संपत्ति] कथि :
संपत्ति } वपुषः, वपुषः (प्रायः २
१५ १) ।

संपत्ति ५ [संपत्ति] प्रेर, पै (वपुषः) ।

संपत्ति व [संपत्ति] वपुषः करता,
कता : वह संपत्तिप्रमा (प्रायः १ २,
२, १ ७ १-५५ १२२) । वह संपत्ति-
प्रमा (पुन) ।

संपत्ति यु [संपत्ति] एकवि द्वाय क-
वय (पुन) ।

संपत्ति नि [संपत्ति] १ विमल
संपत्ति १ व [संपत्ति] १ विमल
१ २ २ १) । १ वपुषःप्रमा (प्रायः
१ २, ४ १) ।

संपत्ति नि [संपत्ति] प्रमा देवा (मुन
१ २, १५) ।

संपत्ति नि [संपत्ति] वपुषः कवि
(पुन ५१५) ।

संपत्ति व [संपत्ति] १ वपुषः प्रमा
देवा १ वपुषः वपुषः संपत्तिप्रमा
(पुन ५१५) ।

संपत्ति व [संपत्ति] १ वपुषः प्रमा
देवा १ वपुषः वपुषः संपत्तिप्रमा
(पुन ५१५) ।

(मुन १ १ १५-२६) । संपत्तिप्रमा
(व १ १) ।

संपत्ति यु [संपत्ति] विमल प्रमा (पुन
११ २६ २७ १ ११ ११ ११) ।

संपत्ति यु [संपत्ति] मुन, मही (पुन
११) ।

संपत्ति व [संपत्ति] विमल (पुन
४ १५) ।

संपत्ति व [संपत्ति] वपुषः । संपत्ति
हमेर (प्रायः २ १ १ १) ।

संपत्ति व [संपत्ति] वपुषः प्रमा (पुन
११, १) ।

संपत्ति व [संपत्ति] वपुषः प्रमा (पुन
१ २) ।

संपत्ति व [संपत्ति] विमल प्रमा
हमेर प्रमा हो वह (पुन ४ २६ २६ विमल
२६ २६) ।

संपत्ति व [संपत्ति] १ प्रमा, वपुषः,
वपुषः वपुषः प्रमा प्रमा (प्रायः विमल
२६ २६ २६ २६ २६) । २ वपुषः-
प्रमा, वपुषः प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा
प्रमा (प्रायः १ १ १ २, २ १ १
१५) ।

संपत्ति व [संपत्ति] १ वपुषः प्रमा
हुवा । २ विमल प्रमा हुवा (पुन) ।

संपत्ति व [संपत्ति] वपुषः प्रमा
हुवा । २ वपुषः प्रमा प्रमा (पुन) ।

संपत्ति व [संपत्ति] वपुषः प्रमा
प्रमा प्रमा । वपुषः प्रमा प्रमा (पुन
२६, २६ विमल २६) । वपुषः प्रमा प्रमा प्रमा
(प्रायः १ १५-५५ २६ १) । प्रमा,
प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा
(पुन २६ २६) ।

संपत्ति व [संपत्ति] १ वपुषः प्रमा
हमेर प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा
प्रमा प्रमा (पुन १ १ १ १ १ १) ।

संपत्ति व [संपत्ति] वपुषः प्रमा
हमेर प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा
(पुन १ १ १ १ १ १) ।

संपत्ति व [संपत्ति] १ वपुषः प्रमा
हमेर प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा
(पुन १ १ १ १ १ १) ।

प्रमा प्रमा : १ प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा
प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा
(पुन १ १ १ १ १ १) ।

संपत्ति व [संपत्ति] वपुषः प्रमा
हमेर प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा
(पुन १ १ १ १ १ १) ।

संपत्ति व [संपत्ति] १ विमल (पुन
४ २६) । २ वपुषः प्रमा (पुन ४ २६),
'वपुषः प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा' (पुन ११) ।

संपत्ति व [संपत्ति] १ विमल प्रमा
हुवा प्रमा प्रमा (पुन २६ २६ २६ २६) ।
१ प्रमा प्रमा प्रमा (पुन ४ २६ २६) । १
वपुषः प्रमा (पुन २६ २६) ।

संपत्ति व [संपत्ति] प्रमा प्रमा (पुन १
१ १ १) ।

संपत्ति (पुन) प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा
प्रमा प्रमा (पुन २६ २६) । प्रमा प्रमा
प्रमा प्रमा (पुन १ १) ।

संपत्ति व [संपत्ति] १ विमल प्रमा
हमेर प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा
(पुन १ १) ।

संपत्ति व [संपत्ति] प्रमा प्रमा (पुन
२६ २६) ।

संपत्ति यु [संपत्ति] वपुषः प्रमा
प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा
(पुन १ १ १ १ १ १) । १
वपुषः प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा
प्रमा प्रमा (पुन ४ २६ २६) । प्रमा प्रमा
प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा
(पुन १ १ १ १ १ १) । १ प्रमा प्रमा
प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा
(पुन १ १ १ १ १ १) । १ प्रमा प्रमा
प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा
(पुन १ १ १ १ १ १) ।

संपत्ति व [संपत्ति] प्रमा प्रमा (पुन) ।

संपत्ति व [संपत्ति] प्रमा प्रमा (पुन
४ २६ २६) ।

संपत्ति व [संपत्ति] १ प्रमा प्रमा प्रमा
प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा
(पुन १ १ १ १ १ १) । १
प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा
(पुन १ १ १ १ १ १) ।

संपत्ति व [संपत्ति] प्रमा प्रमा (पुन १
१ १ १ १ १ १) ।

संवायना की [संवायना] ऊपर देखो (पंथा ११ १७)।

संवायन एक [सं + पायन्] पावन करना। संवायन (यथि)।

संवायन एक [सं + आप्] प्राप्त करना।

संवायन (यथि)। संवायन (संवाय १२)।

हेठ संवायित (यम १ यन् वी)।

संवायन एक [सं + आपय] प्राप्त करवाना। संवायन (यथा)।

संवायन व [संवायन] प्राप्त नाम (छाया १ १६—यम २११ सुर १४ ५७)।

संवायन वि [संवाय] प्राप्त नाम (सुर २ २२६ सुभा ११३५ छल)।

संवायन वि [संवायित] नीत जो से जामा पना हो वह (यम)।

संवायन वि [दे] होई, लम्बा (वि ११)।

संवायन ॥ [संवायन] १ इन्को का परस्पर संवायन (वि २)। २ समुद्र (सौ ४ ७)।

संवायन वि [संवायित] निरुपकार किया हुआ एक विषय हुआ (मीन की ४७) छल)।

संवायन केवो संवाय = सं + वी। संवायन (यथ २ १२)।

संवायन वि [संवाय] निषा हुआ (सु ४ ५)।

संवायन वि [संवायन] निषा किया 'रज्जु विधि' को बंधे विद्युत्संवायन (यथ २ ४—यम ११)।

संवायन एक [संवाय + वा] पावना करना, करना। संवायन (संवायितार्थ (वि २६१)।

संवायन वु [संवाय] संवायन करना (यथ)।

देवो संवायन।

संवायन वि [संवायन] बनाया हुआ (यथ १४५)।

संवायन वि [संवायित] कुछ किया हुआ (यथ)।

संवायन वु [संवाय] संवायन समुद्र (यथ १२, २७)।

संवायन की [संवाय] पीका बुझावना (यथ १२, १४ २२ १३ ७८)।

संवायन एक [सं + प्रच्छ] पूजना प्रशंसा करना। संवायन (सी) (याट—वि २१)।

संवायन कीन [संवायन, संवायन] प्रशंसा प्रशंसा (सु १ १ २१ सुभा २१)।

की, या (यथ १ १)।

संवायन की [संवायन] भद्र संवायन (यथ २१)।

संवायन वि [संवाय] संवायन वाच्यणीय (यथ ११ ४७)।

संवायन वु [संवाय] १ पुके हुए दो समान वंश वाली वस्तु, दो समान धरो का एक धरो से जुड़ा 'कनासंवायन' (यथ १)।

'वसंतु' (यन् महा यथि से ७ ५१)।

२ संवाय समुद्र (सु १ २, १ २१)।

फला वु [संवाय] दोनों तरफ निरूप दो तरफ दिशा की वही के समान दिशा (यथ ५)।

संवायन एक [संवाय] बोधन दोनों दिशों को निषा। संवायन (यथि)।

संवायन वि [संवायित] बुझा हुआ (छाया १ १—यम ११)।

संवायन वि [संवाय] १ वृक्ष, वृष (यथा महा)। २ न वृक्षों का समुदाय करना (संवाय ३५)।

संवायन एक [सं + वृज] समान करना समान करना। संवायन (यथा ५, ७)।

संवायन वि [संवायित] समान (यथ)।

संवायन व [संवायन] पूजना समान (सु १ १ ७ वसंत ११५)।

संवायन वि [संवायित] समान (यथ)। 'सुविधि' (महा यथ)।

संवायन वु [संवाय] बनाय (यथ २ २७२)।

संवायन एक [सं + वृ] मेजना। संवायन (महा यथि)।

संवायन वु [संवाय] ग्रेषय मेजना (यथा १ ५—यम १४७)।

संवायन व [संवायन] ऊपर देखो (यथा १ ५—यम १४७ य १७९ यथ यथि)।

संवायन वि [संवायित] मेजना हुआ (सुर ११ ११३)।

संवायन एक [सं + वृ] मेजना निरीक्षण करना। संवायन, संवायन (यथ २ १२० वि १२१ यथा यथा यम)। संवायन, संवायन (यथा १ २ ४ ४ १ ५ १ २३ सुभा २ २ १ यम)।

संवायन की [संवाय] निरीक्षण (यथा १ २ २ ५)।

संवायन व [वृ] वृक्ष, वृक्ष-कर्म (वि १)।

संवायन एक [सं + पादय] कायना, बीजना। संवायन (यथ)।

संवायन की [वृ] वृक्ष, वृक्ष (वि १ २)।

संवायन एक [सं + वृ] वृक्ष कायना 'माहाय' संवायन (यथा २, १ १ १ २ १ २ २ २, १ २ २ ४ ५)।

संवायन वु [संवाय] वृक्ष (यथा यम १४५ य २ य १ २ ४ ५ यथि)।

संवायन व [संवायन] ऊपर देखो 'माहाय' संवायन (यथा १ २ ५)।

संवायन व [संवायन] वृक्ष (यथा १ २ ५)।

संवायन व [संवायन] वृक्ष (यथा १ २ ५)।

संवायन व [संवायन] वृक्ष (यथा १ २ ५)।

संवायन व [संवायन] वृक्ष (यथा १ २ ५)।

संवायन व [संवायन] वृक्ष (यथा १ २ ५)।

संवायन व [संवायन] वृक्ष (यथा १ २ ५)।

संवायन व [संवायन] वृक्ष (यथा १ २ ५)।

संवायन व [संवायन] वृक्ष (यथा १ २ ५)।

संवायन व [संवायन] वृक्ष (यथा १ २ ५)।

संवायन व [संवायन] वृक्ष (यथा १ २ ५)।

संवायन व [संवायन] वृक्ष (यथा १ २ ५)।

संयम पुं [संयम] १ पत्न्ये, रास्ते में जाने का योग्यता 'बनानी निय पञ्चमसंयमो नियम लभ्यते' (सम्पत् १३०) पाप, गुरु ११ २ २६ १ ८: महा' सवि गुण २४)। २ एक नामधेय (पाप)।

संयमि केो सिद्धि = स्थिति (भाषा २, १ १ ४)।

संयमि पुं [संयमि] कृत्-विशेष ऐक्य का प्र (गुरु २ २१४ ८ ३०)। केो सिद्धि।

संयमा केो संयमा (सम्प २ ४६)।

संयम स [सं + बाध्] १ पीडा करना। २ कल्याण कर्त्तृ करना। संयमक (सिद्ध १)।

संयम पुं [संयम] १ नगर-विशेष कर्त्ता ब्रह्मण्य भाषि पापे बली ही प्रवृत्त कर्त्ता हो वह स्थर (उत्त ३ १९)। २ पीडा 'संयमा बह्वे कुली दुरात्मका धासखयो वसस्यो' (भाषा)। ३ वि संकीर्ण करता 'संयमं संयमि' (पाप)।

संयम्य न [संयमन] केो संयमन (भाषा १ १ ४ २)।

संयम्य के [संयमना] केो संयमया (पौष)।

संयम्यी के [संयमनी] विद्या-विशेष (सम्प ४ १३०)।

संयमा के [संयमा] १ पीडा (व्यास १ ४ ४ २)। २ संयम-कर्म, कर्त्ता (सिद्ध १)।

संयमिषि वि [संयमित] १ पीडित (ह्रस्व १ ३, १ १)। २ केो संयमिषि (धीन)।

संयम्य पुं [संयम्य] १ संय (अ ४ २—पम २१६) गुण ३ ११३)। २ यमक का एक चालिष—नरहृत्क का पुन (यम्य ४१ १८)। ३ एक शब्द का नाम (उत्त)। तद्वत् के [तद्वत्] संय के धातु के कर्त्ता भिन्न-धर्मी (उत्त ३ ११३)। केो संयम्य।

संयम्य स [सं + यम] १ यम्यता, जान पना। संयम्य, संयम्यि संयम्य (वह्या

४ ४८८) गुण १ २, १ १३ ६ ७१)। क्व संयम्यमाण (भाषा १ १ २ ४)।

संयम्य वि [संयम्य] ज्ञान-प्राप्त (ज्या म्हा)।

संयम्यी के [संयम्यी] ज्ञान, योग (अम्य १६)।

संयम्य पुं [संयम्य] कर्त्ता-पुण्ड्र, मुक्ति के प्राप्ति का नक्ष-संयम-विशेष (वि ४ १६ कव्य)।

संयमि के [संयमि] धर्म नय की प्राप्ति (नयते १ ११९)।

संयम्य स [सं + बाधय] १ सम्यग्वा बुद्ध्या। २ धारणा करना। ३ विवर्धित करना। संयम्य, संयम्यि (धीन म्हा)।

क्व. संयम्यमाण (भाषा १ १४)। क. संयम्येयम् (अ ४ १—पम २४३)।

संयम्य पुं [संयम्य] ज्ञान योग ह्रस्व (भाषा २)।

संयम्य न [संयमन] १ ऊपर देखी (विशे २३१२) मुक्त १ १३ ६ ७३)। २ धारणा (कव्य)। ३ विवर्धित (भाषा १ ८—पम १३१)।

संयम्यि केो संयमि (अ ४ १०३ ६ ७१)।

संयम्यि वि [संयमित] १ धर्ममया ह्रस्व (धर्म ४८)। २ विवर्धित (उत्तमा १ ८—पम १३१)।

संयम्य वि [संयम्य] १ धर्म नक्षमया ह्रस्व नक्ष (उत्त १८, ७ म्हा, कव्य)। १ पुन प्रथम बार का योर्त्ता नक्षम्य-नक्षम्य-विशेष (लेख ४)। ३ न, कव्य, कव्यपट्ट (म्हा)।

संयम्य के [संयम्य] १ धर्म नक्षमया ह्रस्व नक्ष (उत्त १८, ७ म्हा, कव्य)। १ पुन प्रथम बार का योर्त्ता नक्षम्य-नक्षम्य-विशेष (लेख ४)। ३ न, कव्य, कव्यपट्ट (म्हा)।

संयम्य के [संयम्य] १ धर्म नक्षमया ह्रस्व नक्ष (उत्त १८, ७ म्हा, कव्य)। १ पुन प्रथम बार का योर्त्ता नक्षम्य-नक्षम्य-विशेष (लेख ४)। ३ न, कव्य, कव्यपट्ट (म्हा)।

संयम्य के [संयम्य] १ धर्म नक्षमया ह्रस्व नक्ष (उत्त १८, ७ म्हा, कव्य)। १ पुन प्रथम बार का योर्त्ता नक्षम्य-नक्षम्य-विशेष (लेख ४)। ३ न, कव्य, कव्यपट्ट (म्हा)।

संयम्य के [संयम्य] १ धर्म नक्षमया ह्रस्व नक्ष (उत्त १८, ७ म्हा, कव्य)। १ पुन प्रथम बार का योर्त्ता नक्षम्य-नक्षम्य-विशेष (लेख ४)। ३ न, कव्य, कव्यपट्ट (म्हा)।

संयम्य के [संयम्य] १ धर्म नक्षमया ह्रस्व नक्ष (उत्त १८, ७ म्हा, कव्य)। १ पुन प्रथम बार का योर्त्ता नक्षम्य-नक्षम्य-विशेष (लेख ४)। ३ न, कव्य, कव्यपट्ट (म्हा)।

संयम्य के [संयम्य] १ धर्म नक्षमया ह्रस्व नक्ष (उत्त १८, ७ म्हा, कव्य)। १ पुन प्रथम बार का योर्त्ता नक्षम्य-नक्षम्य-विशेष (लेख ४)। ३ न, कव्य, कव्यपट्ट (म्हा)।

संयम्यि वि [संयमित] कर्त्तव्य, कव्य (विप)।

संयम्य स [सं + यम] १ यमिष्य भ्रमण करना। २ यम्य-संयम्य होना कव्यमया। क्व संयम्य (वि २७१)।

संयम्य पुं [संयम्य] १ धारण 'संयमो धारणो पयतो व (पाप)। २ म कव्यपट्ट बोध 'संयमो संयमो धारणो' (पाप) प्राप्ति १ ३ म्हा)। ३ जन्मकटा (पौष)।

संयम्य स [सं + यम] १ धारण करना। २ धारण करना। ३ धारण करना संयम्य करना। क्व. संयम्यमाण (वि ४ ४१)।

संयम्यि (यम) (विप)।

संयम्य स [सं + यम] १ धारण करना, धारण करना। संयम्य, संयम्यि (यम वि ४४३)।

क्व. संयम्य, संयम्यमाण (वि १६ कुप ११७) वि ४ ४१)। क्व. संयम्यि

संयम्यि (यमो १ ३४ ३३ ६)।

संयम्य न [संयमन] १ धारण धार (क २२२ उत्तमा १ १—पम ४१ ६ २४ क्वपु १४)।

संयम्यी के [संयमना] ऊपर देखी (उत्त २३ ६)।

संयम्यि वि [संयमित] यम्य करना ह्रस्व (वि ११ कुप ४२१)।

संयम्यि वि [संयमित] यम्य करना ह्रस्व (कव्य ४२)।

संयम्य स [सं + यम] यम्य करना।

संयम्य (अ ४ ११३)। क्व. संयम्यि (यम्य ४)। क्व. संयम्यि (यम) (विप २६)।

संयम्य स [सं + यम] १ धारण धारणो में 'यम्य'। २ यम्य-नक्षम्य धारण होना। संयम्य (यमि)। 'संयम्य' यम्य' (उत्तमा २१०)। संयम्य, संयम्यि (यम) (विप २६)।

संयम्य के [संयम्य] १ धारण धारणो में 'यम्य'। २ यम्य-नक्षम्य धारण होना। संयम्य (यमि)। 'संयम्य' यम्य' (उत्तमा २१०)। संयम्य, संयम्यि (यम) (विप २६)।

संयम्य के [संयम्य] १ धारण धारणो में 'यम्य'। २ यम्य-नक्षम्य धारण होना। संयम्य (यमि)। 'संयम्य' यम्य' (उत्तमा २१०)। संयम्य, संयम्यि (यम) (विप २६)।

संयम्य के [संयम्य] १ धारण धारणो में 'यम्य'। २ यम्य-नक्षम्य धारण होना। संयम्य (यमि)। 'संयम्य' यम्य' (उत्तमा २१०)। संयम्य, संयम्यि (यम) (विप २६)।

संयम्य के [संयम्य] १ धारण धारणो में 'यम्य'। २ यम्य-नक्षम्य धारण होना। संयम्य (यमि)। 'संयम्य' यम्य' (उत्तमा २१०)। संयम्य, संयम्यि (यम) (विप २६)।

(वि ४०३) काल मयि)। बहू संभयित
(मुत्ता ११)। इ संभय्य (भा १२ मुष्णि
१३)।

संभय तु [संभय] १ उत्पत्ति (यद्वा उच्यते
४ ११३)। २ संवाचना (यति)। ३ बर्तमान
पर्यवर्तितो काल में उत्पन्न होकर जिनके बा
नाम (यय ४१ पठि)। ४ एक दिन मुनि जो
द्वार बन्दुर के पूर्व-जन्म के पुत्र से (पद्म
२० १०६)। ५ कला-विशेष (वीर)।

संभय तु [र] प्रवचन-प्रवृत्ति से होने-
वाला बुद्धि (वे ५, ४)।

संभय (य) देवो संभय = संभय (यति)।
संभयि वि [संभयिन्] जिसका सम्बर हो
रह (पंच ५, २२ मत्त ३५)।

संभयि देवो संभूज (वेद ३२९)।

संभय्य देवो संभय = सं + भू।

संभाजय न [संभाज] दुग्धत का एक
प्राधान्य नवर (पत्र)।

संभार वक् [सं + भाय] १ बलात् से
संयुक्त करना बाधित करना। संभार, संभार-
रहित तत्त्व (आय १ १२—पत्र १०३,
१०६)। संभ संभारि (सिंह ११३)।
२ संभाषिण्य (आय १ १२)।

संभार तु [संभार] १ बहुल नाम 'संभार-
कर्मसामर्थ्यमयं कथय' (उ १४५
दो बार १३)। २ बलात् या कथि
में कर ताता बड़ा मद्यता (आय १
१५—पत्र ११६)। ३ पठित, इन्द्र-संभव
(पद्म १ ५—पत्र १२)। ४ धर्मप्रत्यय
कर्म का अर्थ (पुत्र २ ७ ११)।

संभारवि वि [संभार] वाह किञ्च हृष्य (वि
१४ १३)।

संभाषि वि [संभाषि] वक् कथय हृष्य
(आय १ १—पत्र ७१; पुत्र १४ २१३)।

संभाज वक् [सं + भाज] १ संयत्तय।
संभार (यति)।

संभाज तु [संभाज] १ वक् कथय 'संभाज-
मुनि' नाम नरक-पुत्र, धर्मप्राप्तिकर्तृ
कालका इव तादृशो बालो लब्ध, न बलवि
नाम १२०। २ वक् कथय (पत्र १३
७)।

संभाजि वि [संभाजि] संवाता हृष्य
(यति)।

संभाज वक् [सं + भाज] १ संयत्तय
कथय। २ प्रथम नवर म रेखात् 'न
संभाजि वक्' (मोह ९)। संभाजि
(संभय ४) सम्भाजि मोह २१)। कर्म
संभाजि (यति) (गाढ—मुष्ण २१)।
३ संभाजि (गाढ—पद्म ११६)। संभ
संभाजि (गाढ—पद्म १३)। ४
संभाषिण्य, संभाषणीय (उ ७९८ टी
४ ११ पत्र २३)।

संभाज वक् [संभ] १ वक् कथय वासकि
कथय। संभाज (वे ४ १३१ पत्र)।

संभाषण्य वी [संभाषण्य] वक् वि ११
पत्र)।

संभाषि वि [संभाषिन्] जिसका सम्बर हो
रह (भा १४)।

संभाषि वि [संभाषिन्] जिसका सम्बर हो
रह (भा १४)।

संभास वक् [सं + भास] १ वक् कथय
कथय कथय। २ संभासय (पुत्र
११३)।

संभास तु [संभास] संयत्तय वार्त्तात्
(उ ११२ तर्क २१ वक् कथय
पुत्र ११३, २०२)।

संभास न [संभास] वक् देवो (यति)।

संभासा वी [संभासा] संभाषण्य वार्त्तात्
(वीर)।

संभासि वि [संभास] वक् कथय 'संभासि-
स्तापि' (वाल्)।

संभासि वि [संभासि] जिसके वक्
तत्त्वत्तय—वार्त्तात् किञ्च कथय हो रह
(यति)।

संभास न [संभास] वार्त्तात् (यति)।

संभाज, वि [संभाज] १ वक् कथय (पत्र
संभाज ११८)। २ वक् कथय, पुत्र
कथय (पद्म ११२)। ३ वक् कथय, ४ वक्
कथय—'संभाज' (पद्म २ १—पत्र
११)। ५ वक् कथय (पद्म ११)। वक्
वि [संभाज] १ वक् कथय (पद्म ११)
२ वक् कथय (पद्म ११)। ३ वक् कथय (पद्म ११)
४ वक् कथय (पद्म ११)। ५ वक् कथय (पद्म ११)

५ वक् कथय (पद्म २ १—पत्र
११, वीर)।

संभाज न [र] वार्त्तात् (पत्र ११८ टी)।

संभाज वि [संभाज] १ वक् कथय (पद्म ११, ११)। २ वक् कथय, वक् कथय,
'वक् कथय' (पद्म १ ११—पत्र
११९ वक् कथय २१३)।

संभु १ [संभु] १ वक् कथय (पुत्र २४;
वाय ११३ वक् कथय १२)। २ वक् कथय वक् कथय
मुष्ण (पत्र २१ ३)। ३ वक् कथय
(वि)। वक् कथय [संभु] वक् कथय (पुत्र ४६२)।

संभु वक् [सं + भु] १ वक् कथय
कथय, वक् कथय में वक् कथय कथय।
संभु (यति)। २ संभु (यति) (पुत्र
२ ७ ११ वक् कथय २१)।

संभुज वी [संभुज] १ वक् कथय
कथय (पुत्र)।

संभुज वि [र] वक् कथय (वे ७)।

संभुज वि [संभुज] १ वक् कथय (पुत्र
१ १३ वक् कथय)। २ वक् कथय वक् कथय
वा वक् कथय वक् कथय में वक् कथय
वक् कथय वक् कथय वक् कथय (पद्म ११, ११)
वक् कथय वक् कथय वक् कथय (पद्म ११, ११)
वक् कथय वक् कथय वक् कथय (पद्म ११, ११)
वक् कथय वक् कथय वक् कथय (पद्म ११, ११)

संभुज वी [संभुज] १ वक् कथय (पत्र १३
१८ वक् कथय ११ ११२ वक् कथय १८८)।
२ वक् कथय (पद्म ११)।

संभुज वक् [सं + भु] १ वक् कथय
कथय (पुत्र)।

संभुज तु [संभुज] १ वक् कथय (पुत्र १८८
कथय)। २ वक् कथय।

संभुज वि [संभुज] १ वक् कथय (पद्म ११, ११)
वक् कथय वक् कथय वक् कथय (पद्म ११, ११)
वक् कथय वक् कथय वक् कथय (पद्म ११, ११)
वक् कथय वक् कथय वक् कथय (पद्म ११, ११)

संभुज तु [संभुज] १ वक् कथय (पद्म ११, ११)
वक् कथय वक् कथय वक् कथय (पद्म ११, ११)
वक् कथय वक् कथय वक् कथय (पद्म ११, ११)
वक् कथय वक् कथय वक् कथय (पद्म ११, ११)

संस्कृत्य वि [संस्कृत्य] दण्डी तद्ध खा
करोताना (आपा १ १८—पत्र २४) ।
संस्कृत्य न [संस्कृत्य] समीचीन छाण
(आपा १ १४ वि १११) ।
संस्कृत्य देवो संस्कृत्य (उत्त २९ ११) ।
संस्कृत्य म [सं + रात्र] पकना । क
संस्कृत्य (कुत्र १७) ।
संस्कृत्य सक [सं + कृत्] दीप्ता घटकना ।
कर्म संस्कृत्य, संस्कृत्य (हे ४ २४७) ।
अथ संस्कृत्य, संस्कृत्य (हे ४ २४७) ।
संस्कृत्य दु [सं + रात्र] मल्ल (कुत्र २१ पत्र
२१७) ।
संस्कृत्य की [संस्कृत्य] बाव को कलने
बावी दीपक-विशेष (मुद्रा २१७) ।
संस्कृत्य म [सं + कृत्] पक्षिणा ।
कर्म संस्कृत्य (दी-गट-देखी ७७) ।
संस्कृत्य वि [संस्कृत्य] सवा हुआ संस्कृत्य
(मुद्रा २२२) ।
संस्कृत्य वि [संस्कृत्य] संस्कृत्य होयेना
कुत्रेना (दीप २७) ।
संस्कृत्य वि [संस्कृत्य] संस्कृत्य सक कथित
(मुद्रा १ ११ मुद्रा १२२ १७२ मद्रा) ।
संस्कृत्य नीचे देवो ।
संस्कृत्य सक [सं + कृत्] संस्कृत्य करना ।
संस्कृत्य, संस्कृत्य (मुद्रा ७७ १८७) । क
संस्कृत्य (आपा १ १—पत्र १३)
कर्म । क संस्कृत्य (पत्र) ।
संस्कृत्य पु [संस्कृत्य] संस्कृत्य नाट्यनाय
(मुद्रा १८) ।
संस्कृत्य सक [सं + कृत्] नाट्यनाय
करना । संस्कृत्य (कर्म) ।
संस्कृत्य देवो संस्कृत्य = संसाय (वीर्य से २
१२; पत्र ४४ १) ।
संस्कृत्य वि [संस्कृत्य] संस्कृत्य कथित ।
२ कृत्यनाय (पा १११) ।
संस्कृत्य वि [संस्कृत्य] संस्कृत्य (संस्कृत्य १९) ।
संस्कृत्य सक [सं + कृत्] संस्कृत्य ।
करना । २ शरीर धारि का शोषण करण
करना । ३ विद्या । ४ देवा करना ।
संस्कृत्य (आपा २, १ २ ३) । संस्कृत्य
(उत्त १९ २४७ पत्र ४ ७) । संस्कृत्य
संस्कृत्य (पत्र) ।

संस्कृत्य वि [संस्कृत्य] विस्ते लक्षणा
से शरीर धारि का शोषण किया हो वह
(उत्त १३) ।
संस्कृत्य वि [संस्कृत्य] संस्कृत्य-गुण (उत्त
२ ९) ।
संस्कृत्य वि [संस्कृत्य] विस्ते इन्द्रिय तथा
कथाय धारि को बन्धु में किया हो वह,
संस्कृत्य (पत्र ९) ।
संस्कृत्य की [संस्कृत्य] लक्षणा शरीर
धारि का संयोजन (उत्त ११ पत्र २८ पत्र
९) ।
संस्कृत्य सक [सं + कृत्] काटना । कर्म
संस्कृत्यनाय गुणविधि (आपा १ १ ३
१) । संस्कृत्य (उत्त ४, २, १४) ।
संस्कृत्य की [संस्कृत्य] शरीर कथाय
धारि का शोषण मल्ल-उत्त से शरीर-ध्याय
का मल्ल (उत्त ११२ मुद्रा १४७) ।
"सुम न [संस्कृत्य] कर्म-विशेष (उत्त २ २) ।
संस्कृत्य की [संस्कृत्य] ऊपर देवो (उत्त १९
२२; मुद्रा १४७) ।
संस्कृत्य पु [संस्कृत्य] संस्कृत्य घनलोचन
(आपा २, १ ९ २; उत्त २४ १९ पत्र
११) । २ शक्ति-पाठ शक्ति-पाठ । ३ नाट्य,
संस्कृत्य लोच । ४ प्रकृत्य (पत्र) । ५ वि
शक्ति-प्रकारनाय विस्ते पर शक्ति पद संस्कृत्य
हो वह (उत्त २४ १९) ।
संस्कृत्य सक [सं + कृत्] देवना । क-
संस्कृत्य (मुद्रा १ ४ १ १) ।
संस्कृत्य पु [संस्कृत्य] विस्ते संस्कृत्य
विपरीत प्रकृत्य (पत्र) ।
संस्कृत्य पु [संस्कृत्य] संस्कृत्य, गुणाकार
(पत्र १; पत्र १२४) । २ शक्ति विस्ते
गुणाकार किया गया हो वह (पत्र) ।
संस्कृत्य पु [संस्कृत्य] कर्म बाव (उत्त १
२ २१) । पक्षि-संस्कृत्य न [संस्कृत्य]
कर्म-पाठ कर्म की पूर्णता का दिन किया
जाता प्रकृत्य (आपा १ ८—पत्र १११
पत्र ४७) ।
संस्कृत्य पु [संस्कृत्य] संस्कृत्य विस्ते
विपरीत प्रकृत्य का विस्ते (पत्र १२४ १२)
२ वि संस्कृत्य संस्कृत्य विपरीत (पत्र १२४
पत्र) ।

संस्कृत्य देवो संस्कृत्य (उत्त २ २१) ।
संस्कृत्य सक [सं + कृत्] संस्कृत्य लक्षणा में
रहना । २ संस्कृत्य करना । संस्कृत्य (वीर्य) ।
संस्कृत्य (आपा १ ८ १) । संस्कृत्य
संस्कृत्य (उत्त ४ ४—पत्र ८२) संस्कृत्य
(आपा १ ८ १) ।
संस्कृत्य पु [संस्कृत्य] संस्कृत्य (उत्त २९२) । २
मय शीत लोचो का संस्कृत्य—संस्कृत्य (उत्त
१ १७) । ३ नाट्य विशेष गुण की व्याप्ति
नामा बाव (पत्र १—पत्र २२) । ४
संस्कृत्य (उत्त १—पत्र १७) । ५ पत्र ।
६ पत्र पर बहुत पत्रों के बीच प्रकृत्य हो
कर पत्र वह स्थान, पुर्ण धारि (पत्र) । देवो
संस्कृत्य ।
संस्कृत्य वि [संस्कृत्य] संस्कृत्य में पत्र
हुवा (उत्त १४३) ।
संस्कृत्य पु [संस्कृत्य] नाट्य-विशेष (मुद्रा ४१) ।
देवो संस्कृत्य ।
संस्कृत्य न [संस्कृत्य] संस्कृत्य पर प्रकृत्य
पत्र विस्ते हो वह स्थान (आपा १ २—
पत्र ७२) । २ संस्कृत्य (विस्ते २ ४२) ।
संस्कृत्य पु [संस्कृत्य] संस्कृत्य (उत्त १—
पत्र १७) । देवो संस्कृत्य ।
संस्कृत्य वि [संस्कृत्य] संस्कृत्य संस्कृत्य
(विस्ते १२) ।
संस्कृत्य वि [संस्कृत्य] संस्कृत्य विस्ते
(पत्र १) । २ संस्कृत्य (विस्ते २ १) ।
संस्कृत्य सक [सं + कृत्] संस्कृत्य । संस्कृत्य
(मद्रा) ।
संस्कृत्य देवो संस्कृत्य (पत्र ४१) ।
संस्कृत्य वि [संस्कृत्य] संस्कृत्य देवो (मद्रा) ।
संस्कृत्य वि [संस्कृत्य] संस्कृत्य देवो
(मद्रा—पत्रा २२) ।
संस्कृत्य पु [संस्कृत्य] संस्कृत्य पत्र (पत्र २,
७१ १ २२) । २ नाट्य-विशेष "संस्कृत्य-
संस्कृत्य संस्कृत्य विस्ते" (कुत्र १९) ।
३ पत्र । ४ पत्र का धारि-विशेष । ५
संस्कृत्य, संस्कृत्य । ६ एक संस्कृत्य
विस्ते (विस्ते १) । देवो संस्कृत्य = संस्कृत्य ।
संस्कृत्य देवो संस्कृत्य (विस्ते १ १) ।

सुर ४ २४१) । २ बह्वन् क्रिया हुआ (धी) ।

संविक्लिप्त्य नि [संविक्लिप्त्य] धक्की तरह ब्याप्त (ग्रन्थ २—पृष्ठ १०) ।

संविक्लिप्त्य एक [संवि + ईप्स] यम यात्र से रेखा, रचना-रहित हो कर रेखा ।

बह्. संविक्लिप्त्य (उत्तर १४ ३३) ।

संविग नि [संविग] विग-गुल, गल-गोच. गुलित का दमितायी उत्तम छात्र (अन पंथा ३, ४१ सुर = १११ चौबन्दा ४६) ।

संविगण [संविगण] संविगणित, संविगणन । घातेनित (छात्र १ ३ टी—पृष्ठ १ छात्रा ४ ४—पृष्ठ १६) ।

संविग्न धक् [सं + विद्] विग्नमान हुआ । संविग्न (सुर १ ३ २, १८) ।

संविदुष्क [सं + वेदुष्क] १ वेदुष्क करना, बधेना । २ वेदुष्क करना । संविदुष्कमाण (छात्रा १ ३—पृष्ठ ६१) ।

संविद्विच वि [संविद्विच] पैदा किया हुआ ज्ञानित (वि २) ।

संविनीय नि [संविनीय] विग्न-गुल (चौबन्दा ११४) ।

संविच रेखो संवीच (सुर १ ३, १ १०) ।

संविच वि [संविच] १ संवाच बना हुआ (सुर १ ८६) । २ विच संवाच-वाच । ३ विच संवाच (सुरि १ २३) ।

संविचि ओ [संविचि] संवेचन ज्ञान (विदे ११२५) बर्तित २६६) ।

संविद्वि धक् [सं + विद्] जानना 'विच्यमाणो न विद्वि' (उत्तर ३ २२) ।

संविद्वि नि [संविद्वि] १ संवृत्त (उत्तर ११३) । २ धक्कल । ३ छत्र 'संविद्वि' (भाषा १ ३, १ ६) ।

संविधा ओ [संविधा] संविधान रचना बनाना (पृष्ठ १) ।

संविधुषा धक् [संवि + धू] १ दूर करना । २ परीक्षण करना । ३ धक्कलाना धक्कल करना । संविधुषा धक्कल संविधुषा धक्कल (भाषा १ ८, ६ ४) सुर १ १९, ४१ पौर) ।

संविमच वि [संविमच] बध हुआ 'संविमचनित पत्त' (सुर ११३) ।

संविभास्य धु [संविभास्य] १ विभास संविभास्य । कला बोट (छात्रा १ २—पृष्ठ ८१ जवा पीप) । २ भास, लक्ष्य (वि ३१४) ।

संविभास्य नि [संविभास्य] दूरे को देख कर योग्य करनेवाला (उत्तर ११ ६) वत् २, २ २३) ।

संविभास्य धक् [संवि + भास्य] पर्वी योग्य करना चिन्तन करना । संविभास्य (पृष्ठ १) ।

संविधाय धक् [संवि + धा] योग्य । बह्. संविधाय (पृष्ठ ३ १४६) ।

संविद्वि रेखो संविद्वि । बह्. संविद्वि (वि ४२) । संविद्वि (सुर ११३) ।

संविद्वि नि [संविद्वि] चालित (उत्तर) ।

संविद्वि रेखो संवेक्षित = संवेक्षित (सुरा) । संविद्वि रेखो संवेक्षित = (वि) (उत्तर ४ १) ।

संविद्वि धु [संविद्वि] योग्यता का एक लक्षण (पृष्ठ ८ १—पृष्ठ ११६) ।

संविद्वि न [संविद्वि] १ रचना, बनाना (सुरा २८६, बर्तित १२३) माल ११३, ११३) । २ वेद, प्रकार (वि १) ।

संवीच नि [संवीच] १ व्याप्त (सुर १ ३ १ १६) । २ पवित्र पक्षा हुआ संवीच-संवीच (बर्तित ६) ।

संवृत्त रेखो संवृत्त (वि १ ११३) धक्कल ४ पीप) ।

संवृत्त रेखो संवृत्त (वि ४४) ।

संवृत्त नि [संवृत्त] १ संवृत्त लक्षण धक्कल (वि १ १—पृष्ठ १२२) । २ संवृत्त-लक्षण धक्कल प्रवृत्ति से रचित (सुर १ १ २ २४) पंथा १४ ६ मय) । ३ संवृत्त, निरूप-मात्र (सुर १ २, ३ १) । ४ धक्कल । ५ संवेधित (वि १ १४७) । ६ न. न्याय वीर धक्कल का निरूपण (पृष्ठ २, ३—पृष्ठ २३३) ।

संवृत्त नि [संवृत्त] बधा हुआ (सुर १ १ २९, धक्कल) ।

संवृत्त नि [संवृत्त] संवाच, बना हुआ 'पञ्चमच वे संवाचक संवृत्त' (बहु

सुर ४१३ किरात १७—स्वप्न १७) धक्कल ४१३) मया छत्र) ।

संवृत्त रेखो संवृत्त (पृष्ठ ४ १२ प्राय) ।

संवृत्त ओ [संवृत्त] संवृत्त (पृष्ठ ४ १२) ।

संवृत्त नि [संवृत्त] १ धक्कल बना हुआ, धक्कल 'बह्. इह न्यायविषयो संवृत्तरेखी पृष्ठ संवृत्त' (सुरा २८६; सुर १, १२२) ।

२ बह्. कर फिरे तथा हुआ बह्. कर स्विच 'छत्र छत्र वे न्यायविषयो छत्र छत्ररेखी छत्र (सुरा) न्यायविषयो २ पृष्ठ संवृत्तरेखी संवृत्त (सुरा) पवि होना' (छात्रा १ ६—पृष्ठ १४७) ।

संवेध नि [संवेध] अनुभव-योग्य (विदे १ ७) ।

संवेध धु [संवेध] १ मय धक्कल कर छत्र संवेध । वे होसी कर—छात्रा (मया) । २ न. न्याय संवृत्त वे छत्ररेखी । ३ धक्कल का धक्कल धक्कल (वि ११ सन १२९) मय बना सुर = ११३ सम्पत् ११६, ११६, सुरा २४१) ।

संवेध न [संवेध] १ ज्ञान (बर्तित ४४ सुर १२६) । २ वि न्याय-न्याय । धक्कल (वि ४ २—पृष्ठ २१) ।

संवेध नि [संवेध] संवेध-न्याय । धक्कल (वि ४ २—पृष्ठ २१) ।

संवेध नि [संवेध] संवेध-न्याय । धक्कल (वि ४ २—पृष्ठ २१) ।

संवेध नि [संवेध] संवेध-न्याय । धक्कल (वि ४ २—पृष्ठ २१) ।

संवेध धक् [सं + वेध] चालित करना, बनाना (वि ३ २६) ।

संवेध धक् [सं + वेध] बनाना । संवेध (वि ४ २२२, धक्कल १९) ।

संवेध धक् [वि] संवेधन संवेधन संवृत्त करना । संवेधन (मय १६, १—पृष्ठ ४१२) । बह्. संवेधन संवेधन (उत्तर मय १९ ६) । संवेधन संवेधन (मया) ।

संवेध नि [वि] संवेध, संवृत्त 'न्याय विषय मया' (पृष्ठ ४ १२ मय १९ १—पृष्ठ ४१२, पृष्ठ ४२) ।

संवेध नि [संवेध] चालित (वि ४ २६) ।

संमुद्र [संयुज] ? विमुक्त निर्मल (गुण २७१) । २ न. ब्यापार उद्योग विल क उपवास (संयोग २८) ।
 संयुग वि [संयुक्त] युक्त-क्या (रत्न) ।
 संसेम वि [संसेम] संसेम वे बना हुआ (गिर १२) । २ जलोत्ती हई मारी विष छे बल वे सिरी बाय बह पयो (छ १ १—यव १४७) कर्म) । ३ लिख की बोधन (भाषा २ १ ७ = ४ लिखक बाध की बोधन (रत्न २, १ ७५) ।
 संसेम वि [संसेमि] ? पत्नी वे जलन होनावा (पण्ड १ ४—यव ३२) ।
 संसेय धक [सं + स्थि] 'रसय' 'वा' व सं बहूने जलना कलया संसेयि (म) ।
 संसेय धु [संसेय] पत्नी । य वि [ज] पत्नी वे जलन (मृग १ ७ १: कथा) ।
 संसेय धु [संसेय] सिधन (छ १ १) ।
 संसेयि वि [संसेयि] मन्त्रित (गुण २२७) ।
 संसेय धु [संसेय] सम्बन्ध संयोग (भाषा २ ११, १) ।
 संसेयि वि [संसेयि] संसेयनावा (भाषा २, ११ १) ।
 संसोघन न [संयोगन] युक्त-करण (विठ ४२६) । वैको संसोहन ।
 संसाधित वि [संसाधित] पण्डी तण्ड गुह क्रिय हुआ (गुण १ १४ १८) ।
 संसोय धक [सं + सोय] 'य' लोक कला । क संसोयधि (गुर १४ १८) ।
 संसोहन न [संयोगन] विरेक बुलाव (भाषा १ ६, ४ २) । वैको संसोघन ।
 संसोहा की [संयोगा] सोय की (गुण १७) ।
 संसाहि वि [संसाधिम] योग्येनावा (गुण ४७) ।
 संसाहि य वैको संसाधित (रत्न) ।
 संसे वैको संघ (मठ—विठ २२) ।
 संसहन वैको संघन (रत्न) ।
 संसि की [संसि] संहार (संक्षि २) ।
 संसि वि [संसि] निता हुआ (पण्ड १ ४—यव ७) ।

संहार धक [सं + ह] ? धारण कला । २ निराश कला । ३ संहरण कला, संक्षिप्ता, समेता । ४ वे बाग । संहार (पण्ड २११ हे १ १ ४ २२६) । कवक-संहारिमाणा (छाया १ १—यव १७) ।
 संहार धु [संहार] संघराय, संघात 'संघातो' 'संहारो' निघो' (गाय) ।
 संहारन न [संहारण] संहार (धु ३७) ।
 संहार वैको संसार = सं + सार । क संहारणध (छाया १ १२—यव १७१) ।
 संहार वैको संघार (हे १ २१४ बह) ।
 संहारन न [संहारण] बाध कला वे रत्ना, टिकना 'कायसंहारणद्वय' (भाषा) ।
 संहार वैको संसार = सं + सार । बह संसारध (ही) (वि २७२) ।
 संसि वि वैको संसि (ग्राह १२) ।
 संसि ध [संसि] वल में निवृत्त, एकत्रित होकर (छाया १ ३ ४—यव ११) ।
 संसि य वैको संसिध = संसिध (कर्म) नाट—महारी २६) ।
 संसि य की [संसि] ? विविध यवि शास्त्र; 'विनिष्ठासंसिध' (स १७) । २ बाधविध कय के गुण का उपहार 'यवसंसिध' (विठ २७२) ।
 संसि य की [संसि] पण्डी तण्ड वीवध (संक्षि ४) ।
 संक वैको सग = शक (पण्ड १ १—यव १४) ।
 संकयन वैको संकन (रत्न) ।
 संकन न [संकन] तापकी का एक उपकरण (मिर ३, २) ।
 संकन वैको संकन 'वेदकमेतु निणसकन' संक्षिप्ता विदुषि' (गुण १७) ।
 संकन ध [संकन] एक बाट कि सध (१ क) 'मोरी' (गुर ११ ४३) ।
 संकन वि [संकन] निद्रा, नानकार (गुर १ १४६, १२ ३४) ।
 संकन वैको संकन = संकन (पण्ड १ ४—यव ७७) ।

सकहा की [सकि-य] धसि हाव (सम ११ गुण १२७ यव ८२) ।
 सकन वैको संकन = संकन ।
 संकुव धु [सकुव] पत्नी (गुण १७ पण्ड १४१) ।
 संकुय वैको संक = शक । संकुयो (स ७६२) ।
 संकेय वैको संकेय = संकेय ।
 संक धक [सक] सकना मनर्ष हाव । सक सक (हे ४ २१ प्राय महा) । मवि सक, सकनो सकिस्वामी (भाषा १ १११) । क सक संक्षिप्त संक्षिप्त (संक्षि १: गुर १ ११ ४ २२७ स ११४ संयोग ४ गुर १० वर) ।
 संक धक [सक] बाता यवि कला । सक (ग्राह ११, भाषा १२२) ।
 संक धक [सक] यवि कला, कला । सक (वि १ २) ।
 संक न [सक] छाव (हे १ १४) ।
 संक वि [सक] समर्प, शक्ति-गुण 'को सको वेयसकि' (विने १०३ हे २, २) ।
 संक वैको संक = शक ।
 संक धु [सक] ? सौम्य नामक प्रयम वेयसक का छत्र (छ २ १—यव ३४) का गुण २१६) । २ कोर की छत्र वेयसि (गुण) । ३ एक विचाररचना (रत्न १२ ३२) । ४ कर्म-विशेष (विन) । गुरु धु [गुरु] हस्तवि (विठ ४४) । व्यम धु [प्रम] शक का एक ज्ञान-पर्वत (छ १०—यव ४८२) । सार न [सार] एक विचार-रचना (रत्न) । बहार (ही) न [विचार] कोर-विशेष (विन १४१) । 'विचार न [विचार] वेय-विशेष (स ४७७ ४ ११) ।
 संक धु [सक] ? कुर वेव (गाम) । २ वि. मोय कुर का मक (विने २११४) बाधक कय पण्ड १४४ विठ ४४४) ।
 संक (य) वैको सग = संक (मि) ।
 संकन धु [संकन] एक (गुर १ १ वि ४ १९) ।

सगडभिः देवो सगडभिः = सगडभिः ।
सगडाह पुं [राफटाह] राजा नभ का
पुण्डित मंत्री धीर धर्म स्वामन्त्र का पिता
(अ. १४१) ।

सगडिया की [राफटिका] छोटी पत्नी
(अ. १११) । १—पत्र ८—छाया १
१—पत्र ७४) ।

सगडी की [राफटी] पत्नी (छाया १ ७—
पत्र ११८) ।

सगय देवो सगय = सगय ।

सगय देवो सगय (अ. ४ १) ।

सगय न [रे] बड़ा विचार (रे ८ १) ।

सगार पुं [सगर] एक बलवर्ती राजा (अ.
८२; अ. १७ ३३) ।

सगड देवो सगड = सगड (छाया १
१—पत्र २११; अ. ११ ११) मुर
१ १११; पत्र २११; अ. ११) ।

सगसग यक [सगसगाय] 'सग-सग'
आवाज करना । बड़ सगसगत (पत्र
४२, ११) ।

सगार देवो सगार = सगार, सगार ।

सगार देवो सगार = सगार ।

सगस न [सकास] वास निम्न, समीप
(धीर गुण ४३२; अ. ४४) ।

सगुप देवो सगुप = सगुप ।

सगुपि देवो सगपि (अ. ४ ४—पत्र
७४) ।

सगुप वि [सगोत्र] समान वंशजता
एकान्वीर्य (अ. १) ।

सगाह न [रे] निम्न, समीप (रे ८ १) ।

सगोत्र देवो सगुप (अ. २१७) ।

सगा गुन [सगा] देवों का आवाज-स्थान
(छाया १ २—पत्र १ ११; अ. ११
२११) । देवान् कमलि सगा (अ. १११) ।
वह पुं [सगा] कन्या (अ. ११ ११) ।
सामि पुं [सगामि] सग (अ. २१४
१) । बड़ की [सग] देवता देवी
(अ. ७२ = १) ।

सगा पुं [सगा] १ मुक्ति मोक्ष द्य (धीर) ।
२ छटि रथ (रथ) ।

सगा देवो सगा = सगा ।

सगा देवो सगा = सग (अ. २ २१;
अ. १) ।

सगाह देवो सगाह = सगाह ।

सगाह वि [रे] मुक्ति-प्राप्त (रे ८
४ १) ।

सगाह देवो सगाह = सगाह ।

सगाय वि [सगाय] स्वर्ग-समाप्ती (विदे
१८) ।

सगुप देवो सगुप (अ. १ ११ १) ।

सगोपुत पुं [सगोपुत] देव देवता
(अ. १) ।

सगय एक [सग] कला । सगह (अ. १)
सगय वि [सगय] प्रत्यक्षीय (अ. १ १
२, ११) विदे १२०८) ।

सगिण देवो सगिण = सगिण ।

सगयसु देवो सगयसु = सगयसु ।

सगिण देवो सगिण = सगिण ।

सगिण देवो सगिण = सगिण ।

सगिण देवो सगिण = सगिण ।

सगिण देवो सगिण = सगिण ।

सगिण देवो सगिण = सगिण ।

सगिण देवो सगिण = सगिण ।

सगिण देवो सगिण = सगिण ।

सगिण देवो सगिण = सगिण ।

सगिण देवो सगिण = सगिण ।

सगिण देवो सगिण = सगिण ।

सगिण देवो सगिण = सगिण ।

सगिण देवो सगिण = सगिण ।

सगिण देवो सगिण = सगिण ।

सगिण देवो सगिण = सगिण ।

सगिण देवो सगिण = सगिण ।

सगिण देवो सगिण = सगिण ।

सगिण देवो सगिण = सगिण ।

सगिण देवो सगिण = सगिण ।

सगिण देवो सगिण = सगिण ।

सगिण देवो सगिण = सगिण ।

सगिण देवो सगिण = सगिण ।

सगिण देवो सगिण = सगिण ।

सगिण देवो सगिण = सगिण ।

सगिण देवो सगिण = सगिण ।

सगिण देवो सगिण = सगिण ।

सगिण देवो सगिण = सगिण ।

सगिण देवो सगिण = सगिण ।

सगिण देवो सगिण = सगिण ।

२१) । 'मासा की [मासा] कीकृष्ण की
एक पत्नी (अ. ११) । 'घाड़ि [घाड़ि]
सत्य-व्रता (पत्र ११ ११) । संच वि
[सग्य] सत्य प्रतिज्ञावाता प्रतिज्ञा-निर्वाहक
(अ. १ १११; अ. २८१) । सिरी की
[श्री] पौषर्षे घारे की प्रतिष्ठित भाविक
(विचार २१४) । सेण पुं [सेन] ऐक्य
वर्ध में होकरना एक निश्चय (अ. १४४) ।
हामा देवो मामा (वि १४) । वाह
देवो वाड़ि (आवा १ ८ १४ १
८ ७ ३) ।

सगह पुं [सत्यकि] १ प्राणी जल में
बाढ़ना दीर्घकर होनेवाला एक साधु-गुन
(अ. १—पत्र ४३७; अ. १४४; पत्र २१) ।
२ विषय-बन्धन एक विचार (अ. ७
७ १ १) । ३ कीकृष्ण का संबन्धी एक
व्यक्ति (अ. ४१) । सुय पुं [सुय]
ग्याह जो में द्रवित स्र द्रुण (विचार
४७१) ।

सर्वाकार वि [सर्वाकार] सत्य सत्य करने-
वाला, केन-केन की सत्ता के सिद्धि
वाता बहाम 'सर्वो' संबन्धित सर्वाकार
न सिद्धि (अ. १४) अ. ११;
अ. १४) ।

सगह एक [सग] देवता । सगह (अ. ४
१०१; अ. १४) । अ. १४) । अ. १४) ।

सगय एक [सगाय] सत्य सत्य
करना । सगह (अ. २२२) । अ. १४) ।
अ. १४) । अ. १४) ।

सगय न [सग] अ. १४) । अ. १४) ।

सगय वि [सग] अ. १४) । अ. १४) ।

सगय वि [सग] अ. १४) । अ. १४) ।

सगय वि [सग] अ. १४) । अ. १४) ।

सगय वि [सग] अ. १४) । अ. १४) ।

सगय वि [सग] अ. १४) । अ. १४) ।

सगय वि [सग] अ. १४) । अ. १४) ।

सगय वि [सग] अ. १४) । अ. १४) ।

सहृदयी [रु] १ सहा मिलित्व बद्धा (गुण २३१)। श्री ह्रीं (गुण २७५ बन्धा १४२) २ वि. सहा दृष्टा 'ओषुषण्य' सहृदं मणुदृष्टं (विधि)।

सहृदं पुन [सहृदं] १ एक सहृदं वा मातृक सहृदं (कम्पु, रंभा १)। 'रंभे रं परिहरेति' मनुमतिर्य एयमि सहृदं बरं (रंभा १)। २ साध-विशेष (रंभा ११)।

सहृदं न [सहृदं] छटा पूरता (न ७२० टो गुण २४)।

सहृदं (श्री) रेखो छट्ट (बाध ७ प्रबो ७१ वि ४४६)।

सहृदं श्री [पटि] १ संस्मर-विशेष साध. १। २ साध संस्मराला (सम ७८ कम्प महा वि ४४६)। तं न न [सहृदं] साध-विशेष साध-साध (नमः) लाभा १ २-पत्र १ २, श्रीक मणु ३६)। म वि [सहृदं] साधरी (पत्र १)।

सहृदं वि [पटि] १ साध वर्ष की सहृदं { बधराता (सं १७-पत्र)। २ सहृदं { पुन, एक प्रकार का बालन (पत्र, वा १०)।

सहृदं [सहृदं] १ सहृदं। २ विवाह कला विधि होता। ३ सहृदं विधि कला आनं। सहृदं (हे ४ २११ प्रादं वरुः) बाधया १२२)।

सहृदं [गद] १ सहृदं। २ छेदकला। ३ छेद होता। ४ सहृदं विधि आनं। सहृदं (हे १ ११ ११)।

सहृदं न [पहृदं] विद्या बध साधरण निरक्ष. छेद कीर ज्योतिष। 'वि वि [विहृदं] छेद बंधी का नागकार (कम्प) वि वि १४१)।

सहृदं न [गद] निरक्ष कला (पहृदं १ १-पत्र २१) लाभा १ १-पत्र ४८)। महा रेखो मद्रा (हे १ २ वि ७)।

सहृदं वि [सहृदं] छटा पूरता (न ७२० टो गुण २४)।

सहृदं-विशेष वि [रं] १ विधि, बहावा ला १ २ रे १४ (४६)।

सहृदं [गद] १ निगम कला। २ सहृदं कला। सहृदं (बाधया १२२)।

सहृदं [गद] [गद] १ साधक, बध मूल्य (धोप १ १)। श्री, बद्धी (गुण १२४)। २ वि भद्रय बधनशाखा मिसवा बधन यद्येय हो बह (अ १ ३-पत्र ११२)। यद्यो सहृदं = पाद।

सहृदं [गद] स सहृदं = साधं।

सहृदं पुन [गद] [गद] १ साधक, बध मूल्य (धोप १ १)।

सहृदं श्री [गद] १ साधक, बध मूल्य (धोप १ १)। २ वर्ष प्रादं में विधि प्रतीति। ३ साधक, बध मूल्य (धोप १ १)। ४ विधि में प्रतीति (हे १ ४१ ४१)। रेखो सहृदं।

सहृदं वि [गद] १ सहृदं, बध मूल्य (अ १-पत्र १२२, उत २, ११ विधि ११)। २ पुन साधक बध मूल्य (कम्प)।

सहृदं वि [गद] १ देवा सहृदं = पाद (वि १११ पत्र)।

सहृदं रेखो सहृदं = पाद।

सहृदं [गद] १ पुन साधक बध मूल्य (गुण २३१ टो बाधया १-पत्र ४८)। २ सहृदं विधि (वि १११)। ३ पुन बधु। ४ मध्यम पुन (हे १ १२२, ४४ वि ८)।

सहृदं [गद] १ साधक, बध मूल्य (गुण २३१ टो बाधया १-पत्र ४८)। २ सहृदं विधि (वि १११)। ३ पुन बधु। ४ मध्यम पुन (हे १ १२२, ४४ वि ८)।

सहृदं न [गद] १ पुन साधक बध मूल्य (गुण २३१ टो बाधया १-पत्र ४८)।

सहृदं श्री [गद] १ सहृदं विधि (वि १११)। २ सहृदं विधि (वि १११)। ३ सहृदं विधि (वि १११)।

सहृदं पुन [गद] १ सहृदं विधि (वि १११)।

सहृदं पुन [गद] १ सहृदं विधि (वि १११)।

सहृदं वि [गद] १ सहृदं विधि (वि १११)।

सहृदं पुन [गद] १ सहृदं विधि (वि १११)।

बन्धो क कम्प में साध बाध है (लाभा १ १-पत्र २४ पण १-पत्र १ १)। ४ बधन न [गद] सन का पुन-दृष्ट (श्री) लाभा १ १ टो-पत्र १)। वाधिशा श्री [गद] सन का बधोपा (गद १)।

सहृदं [गद] १ सहृदं विधि (वि १११)।

सहृदं पुन [गद] १ सहृदं विधि (वि १११)। २ सहृदं विधि (वि १११)। ३ सहृदं विधि (वि १११)। ४ सहृदं विधि (वि १११)।

सहृदं वि [गद] १ सहृदं विधि (वि १११)। २ सहृदं विधि (वि १११)। ३ सहृदं विधि (वि १११)। ४ सहृदं विधि (वि १११)।

सहृदं वि [गद] १ सहृदं विधि (वि १११)। २ सहृदं विधि (वि १११)। ३ सहृदं विधि (वि १११)। ४ सहृदं विधि (वि १११)।

सहृदं वि [गद] १ सहृदं विधि (वि १११)। २ सहृदं विधि (वि १११)। ३ सहृदं विधि (वि १११)। ४ सहृदं विधि (वि १११)।

सहृदं वि [गद] १ सहृदं विधि (वि १११)। २ सहृदं विधि (वि १११)। ३ सहृदं विधि (वि १११)। ४ सहृदं विधि (वि १११)।

सहृदं वि [गद] १ सहृदं विधि (वि १११)। २ सहृदं विधि (वि १११)। ३ सहृदं विधि (वि १११)। ४ सहृदं विधि (वि १११)।

सहृदं वि [गद] १ सहृदं विधि (वि १११)। २ सहृदं विधि (वि १११)। ३ सहृदं विधि (वि १११)। ४ सहृदं विधि (वि १११)।

सहृदं वि [गद] १ सहृदं विधि (वि १११)। २ सहृदं विधि (वि १११)। ३ सहृदं विधि (वि १११)। ४ सहृदं विधि (वि १११)।

सहृदं वि [गद] १ सहृदं विधि (वि १११)। २ सहृदं विधि (वि १११)। ३ सहृदं विधि (वि १११)। ४ सहृदं विधि (वि १११)।

सहृदं वि [गद] १ सहृदं विधि (वि १११)। २ सहृदं विधि (वि १११)। ३ सहृदं विधि (वि १११)। ४ सहृदं विधि (वि १११)।

सहृदं वि [गद] १ सहृदं विधि (वि १११)। २ सहृदं विधि (वि १११)। ३ सहृदं विधि (वि १११)। ४ सहृदं विधि (वि १११)।

सहृदं वि [गद] १ सहृदं विधि (वि १११)। २ सहृदं विधि (वि १११)। ३ सहृदं विधि (वि १११)। ४ सहृदं विधि (वि १११)।

सहृदं वि [गद] १ सहृदं विधि (वि १११)। २ सहृदं विधि (वि १११)। ३ सहृदं विधि (वि १११)। ४ सहृदं विधि (वि १११)।

सहृदं वि [गद] १ सहृदं विधि (वि १११)। २ सहृदं विधि (वि १११)। ३ सहृदं विधि (वि १११)। ४ सहृदं विधि (वि १११)।

सहृदं वि [गद] १ सहृदं विधि (वि १११)। २ सहृदं विधि (वि १११)। ३ सहृदं विधि (वि १११)। ४ सहृदं विधि (वि १११)।

(कम्प १ १९ पत्रम १७ १२१) पत्र ४९)।
 "इ देवो रस = सत्य (पत्र ५९) ति की
 [ति] सत्तर ७ (सम ५१ कम्प ५९)।
 त्रिस्ति तु [त्रिस्ति] सत्तर लक्षों का मंडल
 विशेष (गुण १२४)। यण्य सत्तम तु
 [पण्य] १ इत्त-विशेष सहीना (धोप
 नाप) १ २ देव-विशेष (पत्र ५)। अक्षय-
 हिसय तु [पण्यार्थसक] सौम्य देवसौक
 का एक विमान (पत्र २१)। "निह नि
 [विह] सत्तर प्रकार का (की ११) प्राप्ति
 १ ५ ति ४२१)। बीसह, बीसता की
 [विशति] सत्तर २७ (ति ४२३) मय)।
 "सत्तय वि [शति] सत्तर सौ की संख्या-
 नाका (छाया १ १-पत्र १४)। सत्तु
 वि [पत्र] वक्रवर्ण, १७०० (पत्रम १०
 २१)। सत्ति देवो द्वि (सम ७९) सत्त
 मिया की [सप्तमि] प्रविष्टा-विशेष
 नियम-विशेष (संय)। सिकन्तायस्य वि
 [विश्राप्ति] सत्तर विनाशनाका (छाया
 १ १२ की)। हत्तर वि [सत्तर]
 वक्रवर्ण, ७७०० (पत्रम ७७ ११)।
 "हत्तर की [सत्तर] १ सप्तम-विशेष
 वक्रवर्ण की संख्या ७७। २ वक्रवर्ण संख्या-
 नाका (सम ५१) मय का २८)। हा म
 [बा] सत्तर प्रकार का सप्तमि (ति
 ४२१)। हत्तर देवो हत्तर (मय ७)।
 "इस (मय) देवो बीसता (ति ४२२)।
 "पत्र ३७ की [नवति] सत्तरने १७ (सम
 १८)। [पत्र] वि [नवति] १ सत्तरवर्ण
 १७ का (पत्रम १७ १०)। २ त्रिस्ति सत्त-
 मने पत्रिक हा नह "सत्ताष्टयबीस-उपपत्र"
 (मय)। [पत्र] (मय) देवो रह (विप)।
 [पत्रम] [पत्र] सत्तम [पत्राष्टय] १
 संख्या-विशेष छयाह १७। २ सत्ताष्टय
 सत्ताष्टय (पत्रिक विप सम ७३) मय २)।
 की पत्रा का (विप ति २६६, ४७७)।
 [पत्र] वि [पत्राष्टय] सत्ताष्टय १७००
 (पत्रम २७ १०)। [बीस] म [विशति] १
 संख्या-विशेष सत्ताष्टय १७। २ सत्ताष्टय की
 संख्यानाका "एवं सत्ताष्टय बीस ऐष्टय"
 (मय)। [बीस] की [विशति] नहो पूर्वीक
 मय (कम्प)। [पत्र] सत्तम वि [विशति] मय

सत्ताष्टय २७ का (पत्रम २७ ४२)।
 [बीस] सत्तमिह वि [विशति] सत्ताष्टय
 प्रकार का (पत्रम १७-पत्र १३४)। [बीस]
 की देवो [बीस] (ति ४ ४ पत्र)। [सीह]
 की [शति] सत्ताष्टय ५७ (सम ६१)।
 "सीह वि [शति] सत्तमिह सत्ताष्टय
 ५७ का (पत्रम ५७ २१)।

सत्तय वि [सत्ताष्टय] १ पत्रा नहो निह.
 सत्तय-मय, सत्तय, सत्ताष्टय सत्तय ये सत्त
 सत्ताष्टयनाका (कम्प)। २ न. हत्त-सत्तय
 के से सत्त सत्तय-चार सत्त, सत्त, सत्त
 बीस सत्त "सत्तयसत्तय" (मय १ १)।

सत्तय देवो सत्तय-सत्तय-सत्तय।

सत्तय वि [वि] सत्तय सत्तय १८ ५
 १०)।

सत्तम देवो सत्तम = सत्तय।

सत्तर देवो सत्तर = सत्तर।

सत्तर देवो सत्तर = सत्तय-सत्तय, सत्त।

सत्तल न [सत्तल] सत्तल विशेष (पत्रम)।

सत्तल की [सत्तल] सत्तल-विशेष न-
 सत्तल की मयिका का नाका (पत्रा ५
 ११६, पत्रम २१ ७९)।

सत्तल की [नि सत्तल] सत्तल-विशेष
 सत्तलिका का नाका (वि ५ ४)।

सत्ताष्टय-सत्ताष्टय देवो सत्ताष्टय-सत्ताष्टय
 (मय)।

सत्ता की [सत्ता] १ सत्ताष्टय सत्तल (सत्त
 ११६ टी)। २ सत्ताष्टय के सत्त सत्त सत्त
 का सत्तल सत्तों का सत्त सत्त सत्त सत्त-
 मय (कम्प १ १ २२)।

सत्ताष्टय की [सत्ताष्टय] सत्त-विशेष "सत्त-
 नहो विपति" गुमाति सत्त बीसहो नहोई रं
 (पत्र ४-सत्तय ४४) मय २)।

सत्ताष्टय-सत्ताष्टय तु [वि] सत्त सत्तय (वि
 ५ २२) "सत्ताष्टय-सत्तल-सत्तल-सत्तल-
 सत्तल-सत्तल" (मय १२)।

सत्त की [वि] १ विपति, सत्त मय नाका
 सत्त सत्त विशेष। २ सत्त सत्त का सत्त
 की सत्त सत्त सत्त-विशेष (वि ५ १)।

सत्त की [सत्त] १ सत्त-विशेष (कम्प)।
 २ सत्तल (पत्र १ १-पत्र १८)। १

सत्तय (वि १ १-पत्र १ १ कम्प प्राप्ति
 २६)। ४ विपति-विशेष (पत्रम ७ १४२)।
 म "सत्त वि [मत्त] सत्तलनाका (वि
 १-पत्र १२२, सत्तय का सत्त ११६ टी)।
 सत्त तु [सत्त] सत्त सत्त (मय)।
 सत्तम वि [सत्तम] सत्त-सत्त सत्त
 मय (मयम ६२ हम्प १६ स ४)।
 सत्तलनाका की [वि] मयमय कम्पमय
 (वि ५ १६)।

सत्तलनाका देवो सत्तलनाका (सम १२२
 सत्तलनाका) वि १ १ विपति १४५)।

सत्तु तु [सत्त] ति, सत्त, सत्त, सत्त (छाया
 १ १-पत्र कम्प मय ७)। "इ वि
 [वि] १ सत्त की सत्तलनाका। २ तु
 एक सत्त का नाम (मय २६)। मय वि
 [वि] १ ति की सत्तलनाका (मय ६२)।
 २ तु, सत्तलनाका का एक छोटा सत्त (पत्रम
 २६, ४४)। निह [निह] सत्त सत्तल
 मय (पत्रम १ ११)। मय वि [मय]
 सत्त का सत्त सत्तलनाका (सम १२२)। सत्त
 तु [सत्त] एक सत्तलनाका (सम १)।
 सत्त देवो मय (पत्रम ५, १८)।

सत्तु तु [सत्त] सत्त सत्तलनाका
 सत्तलनाका [वि] मय सत्त का सत्त (वि
 ११६ ति १ स २२१ सत्त २, २ १
 मय ५, १४)।

सत्तलनाका [सत्तलनाका] १ एक विपति-मय
 (सत्त)। २ तु, सत्तलनाका का एक छोटा
 सत्त, सत्तलनाका (पत्रम १२ ४०)।

सत्तलनाका तु [सत्तलनाका] १ सत्तलनाका
 मय सत्तलनाका का सत्त का एक सत्तलनाका
 की सत्तों का सत्तलनाका सत्तलनाका (मय २
 २)। २ एक सत्तलनाका का नाम (पत्र)।

सत्तलनाका तु [सत्तलनाका] एक सत्तलनाका का नाम
 (पत्रम १८ ४४)।

सत्तलनाका देवो सत्तलनाका (कम्प १२)।

सत्तलनाका की [सत्तलनाका] सत्तलनाका, ७७
 (कम्प १८, ४८)।

सत्तलनाका [सत्तलनाका] सत्तलनाका का नाम (मय
 २७२)।

सत्तलनाका [सत्तलनाका] सत्तलनाका का नाम (मय
 २७२)।

समनुबन्ध वि [समनुबन्ध] संशुच, संजात
(वज्र १ १) ।

समनुभास सक [समनु+भासय] १
भासय-भू-न करना । २ सिद्ध करना । ३
परिपक्व करना 'ध्यायते धर्मं मनुष्याये-
नामि' (भाषा २ १ १, १ २ ४ ४-
१ २, ४ २ १ १ १) ।

समनुमद वि [समनु+मिद] अनुमत्त अनुमत्त
(भाषा २ १ १ ४) ।

समनुमास सक [समनु+आसय] १
सम्भूत हीन, कष्टी तण्डुलिका ।
समनुमासमिति (मुच १ १४ १) ।

समनुसिद्ध वि [समनु+शिष्ट] कष्टी तण्डुलिका
मिश्रित (वज्र) । देखो समनुमद (भाषा २
१ १ ४) ।

समनुभू सक [समनु+भू] अनुभव
करना । समनुहोह (वज्र १) ।

समनुजागय नि [समनु+जागय] १ समन्वित
छदित 'सद्योसुखमवसमसुख' (पञ्च १
१२) । २ उत्थात (वज्र) ।

समनुभासय पु [समनु+भासय] समानवर्ण
(वज्र) ।

समन्विय देखो समन्विय (वज्र) ।

समन्वित देखो समन्वित (भाषा १ १—
वज्र ११) ।

समनुरंग सक [समनुरंगय] नयन भव
नी तण्डुलिका म धापायु करना धारण
करना । वज्र समनुरंगमाय (भाषा १
—वज्र ११४ वज्र १७४ दो) ।

समनस वि [समनस] १ क्षुब्ध (वज्र १
४—वज्र १) । २ सन्तुष्ट (वज्र १
४२) । ३ नयन-गुण । ४ मित्रित मित्रा
हवा (ह २ ४२, वज्र) ।

समस वि [समास] पूर्ण, पूर्ण किञ्च जा हो
बुरा हो वह (वज्र वीर) ।

समान ल [समान] पूर्णता (वज्र १४२
७२ १ मित्र ११२ वज्र—भाषा १४२ व
२१ गुण २२१ ११२) ।

समाह सक [सम्+अर्धय] १ कथित
करना, सिद्ध करना । २ पूर करना । ३ पूर्ण
करना । ४, कल्पित (व ११२) ।

'अहो वि समन्वित
सद्योसुखमवसमसुख हेमन्तो ।

वधिरहि शब्द कष्टो
संवीर्योति विषयार्थ' (वा ७१) ।

समस्य देखो समस्य = समस्य (वि ४ २८
मुर १ १८१ ११, २२) ।

समस्य वि [समस्य] सक, कथित (वाच
ज ४ ४—वज्र २८१ २२ १४२,
वीर) ।

समस्य वि [समस्य] मार्गक बाह्येनावा
(कुत्र १११) ।

समस्य वि [समस्य] १ पूर्ण पूर
रिया हुआ (मुच ११२, गुण २११) । २
पूर किया हुआ (मुर ११ २२) । ३
प्रसारित कथित किया हुआ (वज्र ११२) ।

समसासिय वि [समासासिय] परित्यक्त
(व ११२, ७४) ।

समसिद्ध देखो समसिद्ध (व ४२१) ।

समसागय देखो समसागय (वज्र ७४४
खाया १ १—वज्र १४४ वीर मरुत ज १
१—वज्र ११७) ।

समसि सक [समनु+इ] १ अनुवर्ण
करना । २ सक परित्यक्त होना विन्या ।
समस्ये, समस्ये (वि ११२७) वीर) ।

समसि वि [समस्ये] पुष्प कथित (ह
१ ४४ मुर १ ११ ४ २२ वज्र) ।

समस देखो समसि ।

समस्य सक [सम्+अर्धय] परित्यक्त
करना, सक करना होना । समस्ये (वज्र) ।
वज्र-समस्ये समस्ये समस्ये
(वज्र—मुच १ २ २ २४, वज्र ७४
१४) । वज्र, समस्ये समस्ये (वज्र—मुच ११२ वज्र) । वज्र, समस्ये
(वज्र) । वज्र समस्ये (गुण २११) ।

समस्ये देखो समस्ये = सक+साय ।

समस्ये ल [समस्ये] परित्यक्त (मुर
७, १२, वज्र ११) वज्र ११) ।

समस्ये ल [समस्ये] वज्र देखो (वज्र
१७४) ।

समस्ये ल [समस्ये] वज्र हुआ (वज्र
कथ) ।

समस्ये सक [समस्ये + सक] वज्र
करना । समस्ये (वज्र ७४) ।

समस्ये वि [समस्ये] वज्र
कथित (वि ११, वज्र) ।

समस्ये ल [समस्ये] वज्र, वज्र
(वज्र ११ १७) ।

समस्ये ल [वि] मित्रा हुआ, वज्र हुआ
(वज्र ८६ ४४) ।

समस्ये ल [समस्ये] वज्र
वज्र हुआ (मुच १ ४ २ १४) ।

समस्ये ल [समस्ये + वज्र] १ वज्र
करना । २ वज्र-समस्ये करण । वज्र-सम-
स्ये ल [समस्ये] (भाषा) । वज्र-
समस्ये ल [समस्ये] (भाषा) ।

समस्ये ल [समस्ये = वज्र] वज्र
करना । वज्र-समस्ये ल [वज्र १२ १) ।

समस्ये ल [समस्ये + वज्र] वज्र
करना । वज्र-समस्ये ल [वज्र] (वज्र) ।

समस्ये ल [समस्ये + वज्र] वज्र-समस्ये
करना । वज्र, समस्ये ल [वज्र २१) ।

समस्ये ल [समस्ये] वज्र-समस्ये ल [वज्र
वज्र] (वज्र वज्र १४) ।

समस्ये ल [समस्ये] वज्र-समस्ये ल [वज्र
वज्र] (वज्र १४) ।

समस्ये ल [समस्ये + वज्र] वज्र-समस्ये ल [वज्र
वज्र] (वज्र १४) । वज्र समस्ये ल [वज्र
वज्र] (वज्र १४) ।

समस्ये ल [समस्ये] वज्र-समस्ये ल [वज्र
वज्र] (वज्र १४) । वज्र समस्ये ल [वज्र
वज्र] (वज्र १४) ।

समस्ये ल [समस्ये + वज्र] वज्र-समस्ये ल [वज्र
वज्र] (वज्र १४) । वज्र समस्ये ल [वज्र
वज्र] (वज्र १४) ।

समस्ये ल [समस्ये] वज्र-समस्ये ल [वज्र
वज्र] (वज्र १४) । वज्र समस्ये ल [वज्र
वज्र] (वज्र १४) । वज्र समस्ये ल [वज्र
वज्र] (वज्र १४) । वज्र समस्ये ल [वज्र
वज्र] (वज्र १४) ।

सुपति २२। सुपति २२। २ पदाब्ज, बीज
बलु (सम १ टी २२४)। १ संकेत,
प्रारण (सुपति २२, सिद्ध १ प्राप से १
१२)। ३ समीचीन परिणति सुवर परि
काम। ४ प्राचार, रिवाज। १ दृक्भावयया
(सुपति २२)। १ सामायिक संयम-विशेष
(विशे १४२१)। *बलेय, लेय न [लेय]
बलबोधित नृपि मयुज-सोक, मयुज-लेय
(मय सम ६८)। बल, गम न वि [ले]
समय का नामकार (बल ३२ ना ४ २
वि २०६)।

समय केको समय = सम-य।

समय } म [समकम्] १ सुवचन, एक
समय } अम (य २१६ टी विशे १२६५)
१२६५। सुर १ ४ मन्त्र मन्त्र ११ १।
२ सङ्ग, साथ (या ६१)।

समया केको सम-या।

समया य [समया] पत्य, मन्त्रोक्त (मुपा
१५५)।

समर एक [सु] भार करना। ३ समरणीय
(य २० नाट एक ३) समरियध्य
(सम्य २८)।

समर केको सवर (वि १ २२८ बर)। की,
ही (कुमा)।

समर पुन [समर] १ कुट काई (वि ११,
४० ज ७२८ टी, कुमा)। २ सङ्ग-विशेष
(वि)। ३ लोकादराणा (ज २० मय
१ या २६)। ४ सङ्ग पु [विदित] बकली-
देव का एक राजा (स २)।

समर वि [समार] कामरैव-संकी कामरैव
का (मन्त्रिण भावि) (ज ४४४)।

समरपुत्र वि [समर्पु] सङ्ग-पुत्री (सम
१२)।

समरपुत्र न [समरपु] स्मृति याद (बर्ध २
पार १८)।

समरसहस्र पु [वि] समल उन्नता (वि
५, २२)।

समपदम वि [वि] पिष्ट, पिष्टा हुष्य (बर्ध)।

समरी केको समर = उन्नत।

समरपु केको समरपु (या २—य ४४४)।

समलकर एक [समलकम् + कृ] विभूषित
करना। समलकरे (या २, १२ २)।
सङ्ग समलकरेया (या २, १२, २)।

समलकर एक [समलकम् + कृत्य] विभूषित करना विभूषा-युक्त करना। सम-
लकरे (वीप)। सङ्ग, समलकरेया
(वीप)।

समलक (या) वि [समलकम्] विनियत
(यवि)।

समाहित एक [समा + हि] १ संकट
होना। २ बीन होना। ३ एक, प्राप्य
करना। समस्विय (या ४७)। वक्त
समाहित (से १२ १)।

समलीन वि [समलीन] धात्री तरह बीन
(वीप)।

समवर्णन वि [समवर्णी] धात्री (मुपा
२२)।

समवर्णन न [समवर्णन] सम्य प्रविष्टि
(यज २४०)।

समवर्णन की [समवर्णन] ऊपर केको
'की' विष्टि सुलीं सङ्गवर्णन' है
'वरण' (यज २४६)।

समवर्णन केको सम-वर्णन = सम-वर्णन।

समवर्णन केको सम-वर्णन।

समवर्णन केको समोसर = सम-वर्णन + व
(प्राप्य)।

समवर्णन केको समोसरण (सुपति १११)।

समवर्णन केको समोसरिभ = समवर्णन
(वर्ध १)।

समवर्णन वि [समवर्णन] जानने योग्य
वाक्य (या ४)।

समवर्णन वि [समवर्णन] समवाय संकल्प
का, समवाय-संकी (विशे १२२२, वर्ध २
४४०)।

समवाय पु [समवाय] १ संकल्प-विशेष
पुष्ट-पुष्टी भावि ना संकल्प (विशे २१०५)।
२ संकल्प (यज १६, २४ वर्ध ४०१
विशे ११९)। ३ बभूव, समुप्य (सुप २
१ १२ वीप ४ ४) सङ्ग २० टी विशे
२। धात २। विशे १२२१ टी)। ४ एक
करना। 'का' दो संकल्पवर्णन' (विशे

२१४१)। ५ वैन संय-संय विशेष बीया
संय-संय (सम १)।

समवेत एक [समव + व] १ शामिल होना।
२ संकट होना। समवेत (ही) (मोह २३)

समवर्णन (विशे २१ ९)।

समवर्णन (ही) वि [समवेत] समुचित एक-
विशे (मोह ०५)।

समसम एक [समसमाय] 'सम' 'सम'
वाक्य करना। वक्त, समसमंत (विशे)।

समसरिभ केको सम-सरिभ।

समसाय केको मसाय 'समसाय' सुवचने
देवते वशिष्ठ संकल्प (मुपा ४ ५)।

समसीस वि [वि] १ वरत गुण्य। २ निर्म
(दे २ २)। ३ न सप्रां (दे १ ८)।

समसीसिआ } की [वि] सप्रां, वरवरी
समसीसी } (मुपा ४ बज्जा २४ कम्पु
दे ५ ११ सुर १ ८ बज्जा ३२ १२४
विशे ४२) सम्य १४४ कुत्र १४४)।

समस्सम एक [समा + मि] धाम्य करना।

समस्सम (वि ४०१)। सङ्ग, समस्सम
(वि ४०१)।

समस्सम एक [समा + मस] भारवा-
स्य प्राप्य करना, सङ्गम्य मिमया। समस
वर्ण (ही) (वि ४०१)। हेङ्ग समस्समिदु
(ही) (नाट एक ११२)।

समस्समिदु (ही) केको समासम (यज—
मुष्क २२८)।

समस्सा की [समस्या] भारी का याप
कोके के लिए दिया जाया लोकी-नरण या
पुत्र भावि (विशे ४६५)। बुद्ध २०। मुपा
११२)।

समस्सास एक [समा + भास्य] सङ्गम्य
करना, विमया देय। समस्सासवि
(ही) (नाट)। वक्त, समस्सासमंत (विशे
२२२)। हेङ्ग, समस्सासिदु (ही) (नाट—
मुष्क ८१)।

समस्सास पु [समाभास] भारवास्य (विशे
३२)।

समस्सासय न [समाभासन] ऊपर केको
(वि ४०१)।

समस्सिभ वि [समाभिभ] धाम्य में विव
भावि (य १११; ज १ ४०)। सुर ११
१ ४० भावि)।

समाधि वि [समाधि] किये प्रसाह (गुण १७८) गुणः पुर ४ (११४) सख) ।

समाधाय वि [समाधाय] १ प्राण मित्रा गुण १ २ बाट (सख) ।

समाहित सख [समाधि + सख] कर्म में उद्यम प्रयोग करना । अथवा समाहित-जमाय (एन ११२) ।

समाहितस वि [समाधितस] पञ्चदश बुद्धि स्थिति (भाषा २, २, १ १) २, ७ १ २) ।

समाधितस वि [समाधितस] ध्यात (एन ७२८) गुण २ १) ।

समाधितस्य केओ समाधितस्य = समर्थक ।

समाधितस्य वि [समाधितस्य] धाक-निष्ठ कुट्टे किया हुआ (एन ११४ टी) ।

समाधित वि [समाधित] एकल उपसर्ग (वद) ।

समाधुच वि [हे] संमुख, धर्ममुख (धनु २२२) ।

समाधी [समा] १ वर्ष बाद मात का समय (बी ४१) । २ कर्म समय (एन १७) छ २ १—नम ४७ कर्म) ।

समाधम केओ समागम (धर्म २ १) गड माली १२) ।

समाधम एक [समा + गम्] १ सामने धामा । २ समाहर करना उत्तर करना । छंद समाधिस्थान (महा) ।

समाधिम वि [समागत] बाह्य उपसर्ग (व १७२) ।

समाधु वि [समाधि] कल्पना हुआ (महा) ।

समाधु वि [समाधि] शेष किया हुआ (वि १ १) ।

समाधु वि [समाधी] व्याप्त (वीर-पुर ४ २४१) ।

समाधु वि [समाधी] सखी एक समाधु = धापील (मन ११४) निवार ११) ।

समाधु धक [समा + धु] नम होना, बसा, प्रयोग होता । मुद्रा कथादि (मुद्र १ १ १) ।

समाधु वि [समाधु] विनम (वच १) । समाधु वि [समाधु] दुष्ट, सखित (वीर-पुरा १ १) ।

समाधु वि [समाधु] १ धर्म, भिक्षु (एम) । २ व्याप्त (गुण १ २) । ३ धातुन व्याप्त (हे ४ ४४४) पुर १ १७४) ।

समाधु वि [समाधु] व्याप्त बना हुआ (स ११) ।

समाधु वि [समाधु] १ छात्रा हुतुन (एन १ २१ टी) । २ विद्या धारि के उपसर्ग में विद्युत जोयन में बसा हुआ वह कार्य जिसको निर्देशों में बाँटे का संकल्प किया गया हो (वि २२१ २१) ।

समाधु न [समाधु] छात्रा हुतुन (मनि) ।

समाधु वि [समाधु] निवारता (छंद १४) ।

समाधु वि [समाधु] छंदु किया हुआ (मनि) ।

समाधु एक [समा + धु] धीमा । छंद, समाधु (वि १७२) ।

समाधु न [समाधु] धीमा (गुण ४) ।

समाधु एक [समा + धु] बाह्यन करता, गुणा । छंद समाधु (मन १२१) ।

समाधु केओ समागम = समा + गम् । समागत केओ समागम (पुर १, १) ।

समाधु एक [समा + गम्] १ सामने धामा । २ धातुन करना । ३ बाह्यन । समाधु (महा) । धर्म समाधु (वि २२१) । छंद समाधु (वि २२१) निवारता समागम (जट २१ ११) ।

समाधु वि [समा + गम्] १ धर्मोप-सर्ग (पदम मद्र) । २ प्राप्ति (गुण १ ७ १) ।

समाधु न [समाधु] ऊपर केओ (महा) ।

समाधु वि [समाधु] धामा हुआ (वि १७४ टी) ।

समाधु वि [समाधु] ध्यात ध्यात (पदम ११ १२२) ।

समाधु वि [समाधु] ध्यात ध्यात (वच १२१) । केओ समाधु = ध्यात ।

समाधु न [समाधु] ध्यात ध्यात (एन ४) ।

समाधु वि [समाधु] ध्यात ध्यात (पदम ११ १२२) । २ निवारता ध्यात ध्यात (वि २२१) ।

समाधु एक [समाधु] ध्यात ध्यात (गुण १ ११) ।

समाधु एक [समाधु] ध्यात ध्यात (गुण १ ११) ।

समाधु एक [समाधु] ध्यात ध्यात (गुण १ ११) ।

समाधु वि [समाधु] ध्यात ध्यात (गुण १ ११) ।

समाधु वि [समाधु] ध्यात ध्यात (गुण १ ११) ।

समाधु वि [समाधु] ध्यात ध्यात (गुण १ ११) ।

समाधु वि [समाधु] ध्यात ध्यात (गुण १ ११) ।

समाधु वि [समाधु] ध्यात ध्यात (गुण १ ११) ।

समाधु वि [समाधु] ध्यात ध्यात (गुण १ ११) ।

समाधु वि [समाधु] ध्यात ध्यात (गुण १ ११) ।

समाधु वि [समाधु] ध्यात ध्यात (गुण १ ११) ।

समाधु वि [समाधु] ध्यात ध्यात (गुण १ ११) ।

समाधु वि [समाधु] ध्यात ध्यात (गुण १ ११) ।

समाधु वि [समाधु] ध्यात ध्यात (गुण १ ११) ।

समाधु वि [समाधु] ध्यात ध्यात (गुण १ ११) ।

समाधु वि [समाधु] ध्यात ध्यात (गुण १ ११) ।

समाधु वि [समाधु] ध्यात ध्यात (गुण १ ११) ।

समाणी सक् [समा + नी] से पाया ।
समाब्धि (विंते १३२५) ।

समागा देखो समाग = छद् ।

समागु (पन) देखो समं (हि ४ ४१७-कुमा) ।

समाद्द सक् [समा + द्द] जतना
मुक्तपाद । बह. समाद्दमाय (पाषा १
६, २ १४) ।

समाद्द सक् [समा + द्द] दृष्ट्वा करण ।
सं. समाद्दय (प्या १ २, १ १) ।

समाद्दय न [समादान] दृष्ट्वा (पय) ।

समाद्दित्ति वि [समाद्दित्ति] करमाया हुमा
(नेत्र ८६) ।

समाद्दिस सक् [समा + द्दिस] पात्रा
करा । सक् समाद्दिसिअ (पट) ।

समाद्दस देखो समापस (वाट-मावटी
४६) ।

समाभापजया की [समाभापज] सपाज
नय से स्वापन (उत् २६ १) ।

समाधि देखो समाहि (अ १०-पत्र ७०१) ।

समापया की [समापय] सपायि (पिठे
१३१३) ।

समाभरित वि [समाभरित] पापण्य-मुक्त
(अप्पु २३१) ।

समाव द्दु [समाव] १ समा परिणय (उत्
१ १०; अप्पु ५) । २ अमुक्ति अर्थों
वा अमुह संघट । ३ हाथी (पय) ।

समाय द्दु [समाय] सामयिक संघम-विरोध
(विंते १४२१) ।

समाय देखो समवाय 'एते वयं य वीर्या
पूरितवमायुषि इत्थिमायुषि' (मुमति ९३;
पय) ।

समाय देखो समय (अ २६, १-पत्र
६४) ।

समायण्य सक् [समा + फण्य] मुक्त ।
सं. समायण्यज्ज (पया) ।

समायण्यज्ज [समायण्य] अण (पय) ।

समायण्य वि [समायण्य] गुहा हुमा
(अय) ।

समायय सक् [समा + यय] दृष्ट्वा करण
लीधर करण । समाययि (उत् ४ १) ।

समायय देखो समायय (अधि) ।

समायय सक् [समा + यय] माययण
करा । समायय (उवां उव) समाययि
(निहा ३) । सं. समाययिअ (उवा) ।

समाययि वि [समाययि] माययि
(पय) ।

समाया देखो ममाया । सं. समायाय
(पाषा १ १ १४) ।

समायाय वि [समायाय] समायत (उप
७२८ टी) ।

समायार द्दु [समायार] १ माययण (विपा
१ १-पत्र १२) । २ सपाय (अप्पु
१ २) । ३ वि माययण करेवला (अधि
३९) ।

समार सक् [समा + रण्य] १ शीक
करा मुक्त करण । २ करण बनाया ।
समार (हि ४ ६३; मया) । मुक्त. समारय
(कुमा) । बह. समारत (पय १० ४) ।

समार सक् [समा + रण्य] प्रारंभ करण ।
समार (पय) ।

समार वि [समारयि] बयाया हुमा,
'अद्वयमायिअ अमुदियमि' (पुर २ ६६) ।

समारंभ सक् [समा + रण्य] १ प्रारंभ
करा । २ विहा करण । समारंभेवमा
(पाषा) । बह. समारंभत समारंभमाण
(पाषा) । अयो समारंभावेवमा (पाषा) ।

समारंभ द्दु [समारंभ] १ पर-परिहार
विहा (पाषा १ १-पत्र ३; पय
७) 'पायायणयो अये समारंभो' (संघोष
४१) । २ प्रारंभ (अप्पु) ।

समारण्य न [समारण्य] १ शीक करण,
समारण्य २ मुक्त करण 'अपेद भिण-
हण्णं समाण्य भुण्णसकपायिअण्ण' (पय
११ १) । २ वि विपायण, अर्थों (कुमा) ।

समारद देखो समादण्य (पुर १ १ ४
७६४) ।

समारंभ देखो समारंभ = समा + रण्य ।
समारण्य ३ समाये समायेवमा समारंभेवमा
समारण्य (पय १ ८, ३, नि ४३ ; पय) ।

सं. समारंभ (पि ३६) ।

समारयि वि [समारयि] मुक्त विमा
हुमा (पुर ११४) ।

समारद सक् [समा + रण्य] पापण्य
करा बयाया । समारद (अधि नि ४८२) ।

बह. समारदत (पय ११) । सं. समारदिय
(पया) ।

समारदण्य न [समारोहण] पापण्य
बयाया (पुत्र २३१) ।

समारद वि [समारद] बयाया हुमा (मया) ।

समारोव सक् [समा + रोवय] बयाया ।
सं. समारोविय (पि ३६) ।

समारंभय देखो समरंभय = समरंभ +
समारंभेवमा । समरंभेवमा समरंभेवमा
(वीय पाषा २ १३, १८) । सं. समरं-
भेवमा, समारंभेवमा (वीय पाषा २,
१३, १८) ।

समारंभ द्दु [समारंभ] माययण, सपाय
(संघोष ४) ।

समारंभय न [समारंभय] पापण्य
विमुक्त करण 'पयतसमरंभेवमा विमुक्त
(अधि १२०) । देखो समारंभय ।

समारंभ वि [समारंभ] बह, कवि
'पयंययो समारंभ' (पय १३, ८८) ।

समारंभय न [समारंभय] विवेक
पयण्य (पुर ११ १४) । देखो समारंभय
समारंभ सक् [समा + रण्य] विस्तार
से बयाया । समारंभेवमा (पुत्र १ १४
२४) ।

समारंभय की [समारंभय] बय-विवेक
'पयुपीणयमलविरिअपुत्रं भयविरोधसंघो-
समारंभेवमा' (पुत्र ३) ।

समारंभय देखो समारंभय (अधि) ।

समारंभ सक् [समा + रण्य] १ विवेक
करा । २ विमुक्त करण परंभर वयाया ।
सं. समारंभेवमा (अधि) ।

समारंभय देखो समारंभय (पुत्र १ ८;
पय ३ १ टी पाषा-अप्पु ७३) ।

समारंभ द्दु [समारंभ] माययण बयायण
(पय १ ३) ।

समारंभिय वि [समारंभिय] माययि,
पाययि (अधि) ।

समारंभ वि [समारंभ] बय देखो
(अधि) ।

समाहित हि [समाहित] कृष्टि (भाषा १ ८, १ २)।

समाहित हि [समाहित] सम्पत् कथित (मृग १ १ २६ भाषा २, ११ ४)।

समाहित (मृग) नीचे देखो (मृग)।

समाहित हि [समाहित] कुत्ता हुआ पाप पित (मार्ग १ १)।

समाहित एक [समा + हि] स्वल्प करना 'सुदृढमण्डं समाहितं' (संयोग ११)।

समि की [समि] देखो समी (कण्ठ पाद्य)।

समि { हि [समि], क } १ शम-मुक्त।

समिभ { २ वृ वायु, मुनि (मुपा ४१६; १४२ उप ११२ टी)।

समिअ देखो सत = शान्त (तिरि ११ ४)।

समिअ हि [समित] सम्पत् प्रकृति करने-वाला धारक होकर यदि धारि करनेवाला (अन उप १ ४ सम्पत् धीप कन मृग १ ११ २ पर ७२)। २ उप-मात्र से स्थित (मृग १ १ ४)। ३ उपपन्न (मुग १)। ४ सम्पत् कृत (मृग १ १ ४)। ५ सम्पत् (अ २ २—पत्र २३)। ६ सम्पत् व्यवस्थित (मृग २ १ ११)।

समिअ हि [समिअ] १ सम्पत् प्रकृति वाचा (अन २ ४—पत्र १४)। २ सम्पत् मुक्त, शोभन समीचीन (मृग २ १, ११)।

समिअ हि [समित] शान्त किया हुआ (विशे २४५८ और पृष्ठ २ ४—पत्र १४८ अण)।

समिअ हि [समित] शम-मुक्त (भा २ ४—पत्र १४)।

समिअ हि [समिअ] शम उप-श्लेष-स्थित 'समिअये' (पृष्ठ २ ४—पत्र १४६)।

समिअ न [साम्य] समता उपधि का प्रयोग सम-अण (मृग १ ११, २, भाषा १ ८ = १४)।

समिअ हि [समित] प्रशस्तित (पासा १ १—पत्र ११, भा)।

समिअ हि [समित] देखे के घाटा का बगल हुआ शब्द-विषय मरहक (तिरि २४६)।

समिअ न [साम्य] सम्पत् कृत (भाषा पृष्ठ २ १—पत्र १११)।

समिअ की म ऊपर देखो (अन २ ४—पत्र १४ भाषा १ १, १ ४) 'समिअ' (भाषा १ १ ४, ४)।

समिअ की [समिता] देखे का पाया (पासा १ ४—पत्र ११२ मुग ४ ४)।

समिअ की [समिअ, समिअ, समिता] चरम धारि सब इन्तों की एक सम्पत् परित (मृग १ १ टी—पत्र २ २)।

समिअ की [समिति] १ सम्पत् प्रकृति अनयो-मुक्त सम-अण धारि किया (अन १ धोचमा १ उक्त अन १ २, पृष्ठ ४)। २ समा परित गति फिर देखनेविशे देखसिद्धि योयलो' (विशे १११ टी वृ २४ टी)। ३ मुक्त, लड़ाई (पृष्ठ ४)। ४ निरंतर मिलन (पृष्ठ ४२)।

समिअ की [समिति] १ स्वच्छ (१ शाब्द विषय मृगमुनि धारि (तिरि ४४)।

समिअ हि [समिति] देखे के घाटे की कपी हुई नरक धारि बलु (तिरि २ २)।

समिअ नु [समिअ] भीष्टिय वस्तु की एक जाति (अन ११ ११६)।

समिअ एक [सम + ईह] १ धारोचना करना, पुत्रोपनिषार करना। २ पर्यलोचन करना किन्तु करना। ३ धर्मी वृद्ध देखना, निधीयत करना। समिअ (उत्त २१ २४)। वृद्ध समिअ (मृग १ १ ४ उत्त १ २ वृद्ध अन २३)।

समिअ की [समाशा] पर्यलोचन (मृग १ १ १ १४)।

समिअिय हि [समाहित] शालोपित (वर्त १ १११)।

समिअ देखो समे।

समिअण न [समीक्षण] बयोवा (अरि)।

समिअिय देखो समिअिय (अरि)।

समिअ एक [सम + ईह] चार तरफ से चक्कर। समिअ (हे २, २३)। वृद्ध समिअ (मुपा १ ४)।

समिता देखा समिअ = बनिषा (अन १ २—पत्र १२; पत्र १ १—पत्र १ २)।

समिअ हि [समिअ] १ पवित्र संघितता (धीप खासा १ १ टी—पत्र १)। २ वृद्ध, बड़ा हुआ (प्रासु ११)।

समिअ की [समिअ] १ पवित्र संघित। २ वृद्ध (हे १ ४४ पत्र मुपा स्वप्न ११; प्रासु १२८)। ठ हि [छ] समुचितता (मृग १ ४६)।

समिर पुं [समिर] पवन शत्रु (वम्पत् १४६)।

समिरिअ { देखो समिरिअ = समर-समिअ } चक्र।

समिअ की [समिअ, सम्पा] उप-श्लेष गति की बंधने में दोनों धोर माला जाता लकरी का बीना (अन १११ मुपा २४५)।

समिअ देखो समिअ। समिअ (वृद्ध)।

समिअ की [समिअ] कष्ट, लकरी (अन ११ पत्र ११ ७१ पृष्ठ ४४)।

समी की [शमी] १ वृद्ध विषय धोकर का पत्र (मृग १ २ २ १६ टी अन १ ११ टी वृ १४)। २ शिवा विनी, फली (शमी)। समिअ न [हे] धोकर की पत्ती शमी वृद्ध का पत्र-पुत्र (मृग १ २, १ १६ टी वृ १४)।

समाअ देखो समाप (भा—भावि १)।

समीअ हि [समीअ] समान किया हुआ, 'अ विधि प्रणयं वात रति समीअ' (मृग १ १ २ = पत्र १)।

समाअण हि [समापान] शत्रु, मुक्त, शोभन (पाट—वृद्ध ४०)।

समीर एक [सम + इर] श्रेष्ठा करना। समीर (भाषा १ ८ = १७)।

समार पुं [समार] वन शत्रु (गप, वृद्ध)।

समार्य पुं [समार] ऊपर देखा (वृद्ध)।

समाअ वयो समाअ। समीअ (वृद्ध)।

समी हि [समा] निम्न, पाद (पत्र १६ का वृद्ध)।

समाअ एक [सम + ईह] चार तरफ चक्कर। वृद्ध समीअ (अन १२ टी)।

सम हा की [समा] १ पत्र चार (अन १ ११ टी)।

समाधि वि [समाहित] महीत (भाषा १
= २, २)।

समाधि वि [समाक्यात] सम्पत् कर्मित
(गुप्त १ १ २२ भाषा २, १९ ४)।

समाहित (धन) मीने देखो (अर्थ)।

समाहित वि [समाहित] कुत्ता कुत्ता धाक-
रित (धर्म १ २)।

समाहित एक [समा + धा] स्वत्व करना
‘मुद्राङ्गण समाहित’ (संश्लेष २१)।

समि श्री [शमि] देखो समी (धनुष भाषा)।

समि } वि [शमि, क] १ सम-मुक्त।
समिध } २ दुःख, दुःखि (गुप्त ४१२:
१४७ ज १४२)।

समिध यो संत = शान्त (सिंह ११ ४)।

समिध वि [समिध] सम्पत् प्रकृति कर-
नत्वा सार्वभौम होकर यदि धर्मि करलेनामा

(अम उव १ ४ कर्म धीमा जम गुप्त १
१९ २ पत्र ७२)। २ सम-भावि है महीत
(गुप्त १ १ ४)। ३ उपर्युक्त (गुप्त ६)।

४ सम्पत् पत्र (गुप्त १ १, ४)। ५ उपर्युक्त
(अ २ २—पत्र १५)। ६ सम्पत् व्यवस्थित
(गुप्त २ २ ११)।

समिध वि [सम्पत्] १ सम्पत् प्रकृति-
भाषा (मम २ २—पत्र १४)। २ सम्पत्
मुक्त, शास्त्र उपोषात (गुप्त २ २, ११)।

समिध वि [समिध] शास्त्र किया हुआ
(विदे २२८ म औप पत्र २ २—पत्र
१४८ छल)।

समिध वि [समिध] सम्पत्-मुक्त (मम २
२—पत्र १४)।

समिध वि [समिध] वन, राय-देव-रक्षित
‘समिधयव’ (पत्र २ २—पत्र १४८)।

समिध न [साम्प] समता राधादि का
समाप्त न सम्पत् (गुप्त १ १९ २ भाषा
१ = २ १४)।

समिध वि [संमत] प्रमाणलेख (छाया १
१—पत्र १९ भा)।

समिध वि [समिध] हनु के धारा का बन्ध
हुआ पत्राङ्ग-रिपेन मरुत (सिंह २४१)।

समिध न [सम्पत्] मरुत छल (भाषा
पत्र २ १—पत्र १९१)।

समिध श्री व. मर देखो (मम २ २—पत्र
१४ भाषा १ २ २, ४) ‘समिधाय’
(भाषा १ २, २ ४)।

समिध श्री [समिध] हेतु का धारा (छाया
१ ८—पत्र ११२: गुप्त ४ २)।

समिध श्री [समिध, शमिध, शमिता]
मम भावि वन इन्हीं की एक सम्पत्तर
परिष्क (मम १ १ टी—पत्र २ २)।

समिध श्री [समिध] १ सम्पत् प्रकृति
उपरोक्त-मुक्त पत्र-भाषा धावि किया (मम
१ शोभा १ जम ज १ २ पत्र ४४)।

२ वन परिष्क ‘ममिध’ किं करेकनामि
देवसिपिनु बोधार्थो’ (सिंह १११ टी) संत
२३ टी)। ३ गुप्त मरुत (पत्र ४)। ४
मिस्तर स्थित (धनुष ४२)।

समिध श्री [समिध] १ सम्पत्। २ शास्त्र-
विशेष मनुस्मृति धावि (सिंह २२)।

समिध वि [समिध] हेतु के धारे की
बनी हनु मरुत धावि वस्तु (सिंह २ २)।

समिध गु [समिध] मीनिय मनु की
एक भावि (वत १९ ११६)।

समिध एक [सम + इध] १ धावोचना
करना, गुप्तोप-विचार करना। २ पर्याप्तोचन
करना चिन्तन करना। ३ मरुत छल
देखना निरीक्षण करना। समिधयव (वत
२३ २३)। संत समिधयव (गुप्त १ १
४ ज १ २) मरुत धर्म २३)।

समिधयव वि [समाधा] पर्याप्तोचना (गुप्त
१ १ १ १४)।

समिधयव वि [समीक्षित] धावोचित
(मम १ १११)।

समिध देखो समे।

समिधयव न [ममीधुण] ममीध (अर्थ)।

समिधयव देखो समिधयव (अर्थ)।

समिधयव एक [सम + इध] धावो एक
के चयन। समिधयव (हि २ २८)। पत्र-
समिधयव (गुप्त ४ ४)।

समिधयव देहा समिधयव = समिधयव (मम
२—पत्र १२; मम १ १—पत्र १ २)।

समिध वि [समिध] १ ममिधयव धावोचना
(धीन छाया १ १ टी—पत्र १)। २ गुप्त,
मरुत हुआ (गुप्त ११)।

समिध श्री [समिध] १ ममिधयव धावो।
२ मरुत (हि १ ४४ पत्र गुप्त स्वत्व १२,
गुप्त १२८)। छ वि [छ] ममिधयव
(गुप्त १ ४६)।

समिध गु [समिध] वन वस्तु (सम्पत्
१४६)।

समिधयव } देखो स-मिधयव = सम-
समिधयव } धावो।

समिध श्री [समिध, सम्पत्] गुप्त-मीनिक
धारी की धावो में दोनों धीन जाता जाता
वक्ता का धीन (वत ६१२ = गुप्त २२८)।

समिध यो समिध। समिधयव (वत)।

समिध श्री [समिध] कल मरुत (संत
११ पत्र ११ ७९, सिंह ४४)।

समी श्री [शमी] १ गुप्त मरुत धावो का
वैद (गुप्त १ २ २ १६ टी ज १ ११
टी, वता ११)। २ धीन धिनी फली
(धाम)। सम्पत् न [हि] धावो की वती
धारी गुप्त का वन-मुत (गुप्त १ २ २ १६
टी: गुप्त १)।

समीय देखो समाध (भा—मावधि २)।

समीय वि [समीय] समान किया हुआ
‘मिधिय धावो शास्त्र धावि उपोषात’ (गुप्त
१ १ २ = पत्र ६)।

समीय वि [समाधान] शास्त्र, मुक्त,
शोभा (पत्र—पत्र ४७)।

समीय एक [सम + इध] प्रेरणा करना।
समीय (भाषा १ = २, १०)।

समार गु [समार] वन वस्तु (गुप्त, वत)।

समार गु [समार] मरुत देखो (वत)।

सम देखो समाध। ममीयव (वत)।

समय वि [समाध] निष्कट पाव (वत
२६ = मरुत)।

समाध एक [सम + इध] बाह्य शाय
करना। मरुत समाधमान (वत १२ टी)।

समाध श्री [समाध] मरुत शाय (वत
१ १६ टी)।

समीक्षित [समीक्षित] छद्, बाधित (महा)।

समीक्षित केवो समिक्षित (वच १)।

समुत्पाद १ [समुत्पाद] एकीभूत प्राचण्ड (दि २ १४)।

समुत्पत्ति [समुत्पत्ति] योग्य ज्ञित (दि १ १ १४)।

समुत्पत्ति [समुत्पत्ति] १ कश्चित् 'पुण-युत्पत्ति' (जन् २ २४१)। २ एकचित् (मिसे ११२४)।

समुत्पत्ति [समुत्पत्ति] जन्म-प्राप्त (पुण ११४)।

समुत्पत्ति केवो समुत्पत्ति। कर्त्तव्य इत्युत्पत्ति मेवो समुत्पत्ति किन्तु उत्पत्ति (वच १ १२)।

समुत्पत्ति केवो समुत्पत्ति (वच २ १ ४४)।

समुत्पत्ति [समुत्पत्ति] कश्चित् ज्ञाता हुआ (पु १ ४ ४२)।

समुत्पत्ति १ [समुत्पत्ति] पक्षिण्य जन्म (वच २ १ ४४)।

समुत्पत्ति एक [समुत्पत्ति + कृत्] १ उत्पत्ति बनना। २ एक वर्ष करण। समुत्पत्ति (अ १ १—पत्र १७७), समुत्पत्ति (प्राप्त ११४)।

समुत्पत्ति [समुत्पत्ति] उत्पत्ति (अ १ १—पत्र ११)।

समुत्पत्ति न [समुत्पत्ति] ज्ञाता (पुण १४२)।

समुत्पत्ति [समुत्पत्ति] ज्ञाता हुआ (वा २०१)।

समुत्पत्ति एक [समुत्पत्ति + कृत्] ज्ञाता। समुत्पत्ति (वा १४४)। १४ समुत्पत्ति (पुण १४१)।

समुत्पत्ति न [समुत्पत्ति] प्रत्यक्ष, प्रत्यक्ष (पुण १४४)।

समुत्पत्ति [समुत्पत्ति] कश्चित् ज्ञाता हुआ (दि १ १ ४२)।

समुत्पत्ति एक [समुत्पत्ति + कृत्] ज्ञाता हुआ (दि १ १४ ४२)।

समुत्पत्ति १ [समुत्पत्ति] १ किन्ता, पुत्र (पत्र ११)। समुत्पत्ति १ १७ टी। वर्षी ११४।

समुत्पत्ति ११—पत्र २१७ पहा। १२ पक्षि-मिसेव (वी २२ अ ४ ४—पत्र १७१)।

समुत्पत्ति (टी) [समुत्पत्ति] समुत्पत्ति समुत्पत्ति (महा—पत्रटी १११)।

समुत्पत्ति १ [समुत्पत्ति] समुत्पत्ति (महा—रत्ना ११)।

समुत्पत्ति [समुत्पत्ति] ज्ञाता (दि २ ११)।

समुत्पत्ति [समुत्पत्ति] ज्ञाता हुआ, ज्ञाता उत्तर ज्ञाता हुआ (पत्र १२, ४४)।

समुत्पत्ति एक [समुत्पत्ति + कृत्] उत्तर ज्ञाता ज्ञाता। १४ समुत्पत्ति (पत्र १२, ४४)।

समुत्पत्ति [समुत्पत्ति] ज्ञाता हुआ (वर्षी १२)।

समुत्पत्ति [समुत्पत्ति] विनाशित (प्राप्त ११२)।

समुत्पत्ति १ [समुत्पत्ति] कर्त्तव्य-मिसेव ज्ञित ज्ञाता ज्ञाता कर्त्तव्य ज्ञाता से परिणत होता है उस समय वह ज्ञाता प्रवेष्टों को बाहर कर उन प्रवेष्टों से वैयर्थ्य, कर्त्तव्य ज्ञाता कर्त्तव्य प्रवेष्टों की जो कर्त्तव्य—विनाश करता है वह प्रवेष्टों से वैयर्थ्य है—ज्ञाता, ज्ञाता, प्रवेष्ट वैयर्थ्य, वैयर्थ्य बाहर कर वैयर्थ्य (पत्र ११—पत्र ४४) ज्ञाता ज्ञाता मिसे १ २)।

समुत्पत्ति न [समुत्पत्ति] विनाशित (मिसे १ २)।

समुत्पत्ति [समुत्पत्ति] ज्ञाता (पु ११ २४)।

समुत्पत्ति केवो समुत्पत्ति (दि १)।

समुत्पत्ति १ [समुत्पत्ति] मिसेव पक्षि, ज्ञाता, समुत्पत्ति (जन् २, ४—पत्र ११२, पक्षि)।

समुत्पत्ति एक [समुत्पत्ति + कृत्] ज्ञाता ज्ञाता, ज्ञाता। समुत्पत्ति (पत्र १४१)।

समुत्पत्ति [समुत्पत्ति] ज्ञाता हुआ (वा २ ४४, पक्षि)।

समुत्पत्ति एक [समुत्पत्ति + कृत्] ज्ञाता ज्ञाता ज्ञाता। समुत्पत्ति (वा १ ४)।

समुत्पत्ति [समुत्पत्ति] एक किन्ता ज्ञाता से ज्ञाता (मिसे १७१)।

समुत्पत्ति एक [समुत्पत्ति + कृत्] १ समुत्पत्ति ज्ञाता ज्ञाता। १ ११ ज्ञाता। समुत्पत्ति (पुण १ २ ११)। २४ समुत्पत्ति (पुण २ २ ४)। ३४ समुत्पत्ति (पुण १ ४ १)।

समुत्पत्ति [समुत्पत्ति] ज्ञाता ज्ञाता (पत्र ११ ४)।

समुत्पत्ति केवो [समुत्पत्ति] ज्ञाता (दि १ १ ४)।

समुत्पत्ति एक [समुत्पत्ति + कृत्] १ ज्ञाता, ज्ञाता ज्ञाता। २ ज्ञाता ज्ञाता। समुत्पत्ति (पत्र ११)। १४ समुत्पत्ति (पु २ २ ११)।

समुत्पत्ति [समुत्पत्ति] १ ज्ञाता ज्ञाता। २ ज्ञाता (पत्र १ १ ४)।

समुत्पत्ति न [समुत्पत्ति] ज्ञाता ज्ञाता (वर्षी १)।

समुत्पत्ति [समुत्पत्ति] १ लोहित, समुत्पत्ति ज्ञाता। २ ज्ञाता ज्ञाता। १ ४ ज्ञाता-जज्ञा ज्ञाता (दि ४१)।

समुत्पत्ति (टी) [समुत्पत्ति] ज्ञाता ज्ञाता (दि २०४)।

समुत्पत्ति [समुत्पत्ति] ज्ञाता, मिसेव (अ ४ १ पत्र—४४)।

समुत्पत्ति [समुत्पत्ति] ज्ञाता ज्ञाता ज्ञाता ज्ञाता (पत्र १२)।

समुत्पत्ति [समुत्पत्ति] ज्ञाता-जज्ञा (पु २, ११४ ४ १७७)।

समुत्पत्ति १ [समुत्पत्ति] ज्ञाता ज्ञाता समुत्पत्ति (अ ४—पत्र १२४, पत्र)।

वा १ [समुत्पत्ति] ज्ञाता ज्ञाता ज्ञाता ज्ञाता ज्ञाता ज्ञाता ज्ञाता (अ ४—पत्र ४२४, पत्र)।

समुत्पत्ति एक [समुत्पत्ति + कृत्] ज्ञाता ज्ञाता। १४ समुत्पत्ति (पत्र १०२, १७४ पत्र १२)।

समुत्पत्ति १ [समुत्पत्ति] १ एकीभूत ज्ञाता। १ मि. एकीभूत ज्ञाता (मि २ ४४)।

समुत्पत्ति [समुत्पत्ति] ज्ञाता ज्ञाता (पत्र ४४)।

समुहपथीअ न [वि समुद्रनलीन] ?
समुद्र मुपा । २ बज्जमा (वि ८ ३) ।

समुद्रप वक [समुद्र + भाष] उवा ।
बह समुद्रार्थ (पण १ १—पण ५२) ।
समुद्रिअ देखो समुद्ररिअ (पण १ २६) ।

समुद्रर न [वि] वापीय-वृह वापी-वर (वि २ १) ।

समुद्राअ वि [समुद्राअ] अति ज्ञान प्रवर,
“इह समुद्राअवेण” (वेत्त १२) ।

समुद्रिअ वक [समुद्र + विद्] ? वक
को स्तिर-पठिअ करने के सिद्ध ज्ञाते
है । २ व्याख्या करना । ३ प्रशिक्षा करना ।
४ प्राप्त्य लेना । ५ परिहार करना । कवी,
समुद्रिअर (ज्जा), समुद्रिसिअरिअ (पणु
१ १ २ ३ ४ ५) । इह समुद्रिसिअर
(अ १, १—पण ११) ।

समुद्रेअ दु [समुद्रेअ] ? पाठ को स्तिर
पठिअ करने का ज्ञाते (पणु १) । २
व्याख्या, वृत्त के धर्म का अध्ययन (वव १) ।
३ वृत्त का एक विभाग, व्यञ्जन प्रकरण
परिच्छेद (पठम २ १२) । ४ लोक-
“ज्ज समुद्रेअर” (पण ५, २६) ।

समुद्रेअ वि [समुद्रेअ] देखो समुद्रेअवि
(वि २३) ।

समुद्रेअज न [समुद्रेअज] वृत्तों के धर्म का
अध्ययन (सवि २ ६) ।

समुद्रेअवि वि [समुद्रेअवि] ? समुद्रेअ-
जन्य । २ विद्या-पद्धि के प्रारम्भ में
निये को वाच्य में बने हुए वे शब्द पद्यों
निकले सब छात्र-संगीतियों में होते हैं का
संकेत किया गया हो (वि २२६) ।

समुद्रर वक [समुद्र + ह] ? हक करना ।
२ बीजों मेंमिले धातु को छेक करना ।
समुद्रर (पणु १) । बह समुद्रर (पणु
५०) । वक समुद्ररकम (पिक्का ६) ।
इह समुद्रर (पण २६, ५) ।

समुद्ररय न [समुद्ररय] ? स्मार । २ वि
स्मार करनेवाला (इह) ।

समुद्ररिअ वि [समुद्ररिअ] स्मार-कर्म
(अ १११, ५५) ।

समुद्राअ वि [समुद्रावि] समुद्रिअ
वक हुआ (अ १११, ५५) ।

समुद्राअ वक [समुद्र + भाष] उवा ।
बह समुद्रार्थ (पण १ १—पण ५२) ।

समुद्रिअ देखो समुद्ररिअ (पण १ २६) ।

समुद्ररिअ वि [समुद्ररिअ] इह वगवत् (अ
१२२, ५) ।

समुद्ररुअ वि [समुद्ररुअ] पुनक्ति,
रोमाञ्जि, व्याप्ये बयंक्रमयं न समुद्र-
(विष्णु) विर्य सरीर (पण २१ अ १०) ।
बयंवि (अ) ।

समुद्र दु [समुद्र] ? एक वेद विभाग (पेम्ह
१५) । २ ज्यो समुद्र (वि २ ८) ।

समुद्रा जी [समुद्रावि] धर्मरय (धार्
५२) ।

समुद्रर वि [समुद्रर] रज्ज स-
जं मीयता वसवविता

मिअल सवत्तसवमुद्रा ।

छेक निकाल रहा

नविअि नायं विविअविअं
(वेत्त १११) ।

समुद्रय वि [समुद्रय] अति ज्ञाता (वव)
समुपेह वक [समुद्रय + ईह] ? वक्की

उपेह देना विधिअ करना । २ पर्याचीयन
करना विचार करना । बह समुद्रयवाय
(पण १ १३, २१) । वक समुद्रयिआ
समुपेहियाय (वव ८ १३) गहा ।

समुद्रय वक [समुद्र + व] उत्तर
होना । समुद्रय (अ, गहा) । समुद्रयिअ
(अ) । मुअ समुद्रयिअ (अ) ।

समुद्रयय वि [समुद्रय] उत्तर (वि
समुद्रय ३ १ १ यम वमु) ।

समुद्रयय न [समुद्रयय] ज्ञाता वाला,
अर्थ-यम, ज्ञायन (वव) ।

समुद्रयय वि [समुद्रयय] उत्तर-करी
(अ १) ।

समुद्रय वक [समुद्र + पाव] उत्तर
करना । समुद्रय (अ २६, ५२) ।

समुद्रय दु [समुद्रय] उत्तर प्राप्ति
(पण १ १ १ १ १ १ १ १) ।

समुद्रयिअ न [वि] धर्म, धर्मरिअ । १
अ, वृत्ति (वि ५) ।

समुद्रय वि [वि] उत्तर म-अ (पु
११ ५५) ।

समुद्रय वक [समुद्र + व] उत्तर
समुद्रय [माय समुद्रयमाय (पण
पाथ १ ५ ५ ५) । वक समुद्रय (व
५) । देखो समुद्रय ।

समुद्रय वक [समुद्रय] उत्तर म-
अ [वव] उत्तर समुद्रय (अ २२) ।

समुद्रय वि [समुद्रय] धार्मिक
(अ) ।

समुद्रय वक [समा + क्रम] धार्मिक
करना । बह समुद्रय (व ५ ५१) ।

समुद्रय न [समुद्रय] धार्मिक
(पण १, १०) ।

समुद्रय वि [समुद्रय] प्रवृत्त (पणु
१ २) ।

समुद्रय वक [समुद्र + व] उत्तर होना ।
समुद्रय (अ २१) ।

समुद्रय दु [समुद्रय] उत्तर (अ
अ) ।

समुद्रय वि [समुद्रय] ज्ञाता विव
(पुपा ८८) अति ।

समुद्रय (अ) मोने देखो (वव) ।

समुद्रय वि [समुद्रय] उत्तर (व
५०६, पु २ ११२ पु २१२) ।

समुद्रय देखो समुद्रय = वक्ता (वि
१ २—पण १३ पाथ १५५) ।

समुद्रय देखो समुद्रय = वक्ता (वि
समुद्रय (पण १ १) ।

समुद्रय देखो समुद्रय (पण ११२) ।

समुद्रय वक समुद्रय (पण) ।

समुद्रय वक [समुद्र + व] मोने
अवका । समुद्रय (अ) । बह समुद्रय
(पु २ २१) । बह समुद्रय (पु २
२ २१) ।

समुद्रय न [समुद्रय] अर्थ, अति (वि
११ ५५) ।

समुद्रय वि [समुद्रय] वक, अति
(पु २ ११२ ५, ११५ पणु ५) ।

समुद्रमाज (प्राया १ १—पञ्च
प्राया १ २, १ ३) ।

समुद्र यन्त्रो संसार (वि १ २८ पा ५५
कुवा: हृष्य ५१) मरुत पाय) ।

समोच्चर मङ्क [समच + वृ] १ समाना
समावेश होना प्रचर्माव होना । २ श्री

२१६ टी) । १ ॥ एक कसर का नाम
एसा पण्ड के लिए कुंजर हाथ बनाया
हुआ एक कसर (पत्र ७ १४६) । १ वि
घात से प्रकट करनेवाला (पत्र १६ ४) ।
“यमा की [यमा]” । प्रथम वायुवेग की
पट्टाणी (पत्र २ १०६) । २ एक पट्टी
का नाम (अ १ ११ टी) । पट्टा के पत्र
(पत्र २ २२) । मुद्र वि [मुद्र] अन्य
के लिये के लिये ही विशेषेण लक्षण
हुआ हो स (अ ४१) । सुपुं [सु] ।
क्या (पत्र १ २—पत्र १०) । २ पण्ड
में उत्पन्न होकर वायुवेग (अ २४) । ३
उपलब्ध मिलने का लक्षण—मुद्र वि
(अ १२) । ४ जोर धाया वेग (अ
२ २—पत्र ७७६) । ५ एक पट्टा-नाम,
स्वर्णमुद्रमय कृष्ण “बहा जयन्तु ज्योतीषा
वर्द्धते” (पत्र १ १२) । ६ पुनः एक वेग
विशेष (अ १२) । रेकी मु । सुगेहिणा
की [सुगहिनी] पण्डरी रेकी (पत्र २) ।
सुरमय पुं [सुरमय] रेकी सुरमय
(पत्र २ ४—पत्र ११) । पत्र १ २
११, अ १ ७ मुद्र १६, बी ३, २—पत्र
११७ जेन २१६) । मुद्र मुपुं [मु] ।
१ अग्रवि-विश्व सर्वत्र “नयन नयन सर्वत्र”
(अ ४४७ अ १२२) । २ क्या (नाम
पत्र २ ४ टी ७ से १४ १०) । ३
दीप्त वायुवेग (पत्र २ १२६) । ४ पण्ड
का एक योद्धा (पत्र २६, २७) । ५ कलाप
विमलता का प्रथम भाग (विचार ३७) ।
६ मुद्र स्वन (पत्र ४) । रेकी मु ।
“सुरमय पुं [सुरमय]” । अग्रवि-विश्व ।
२ दीप्त-विश्व (बी १ २—पत्र ११७)
३७) । १ एक वेग-विश्व (अ १२) ।
मूरमयमहपुं [मूरमयमहपुं] स्वर्णमुद्रमय
बी का एक पण्डितपद वेग (बी १ २—
पत्र ११७) । मूरमयमहामह पुं [मु]
मयमहामहपुं बी धर्म (बी १ २) ।
मूरमयमहामह पुं [मूरमयमहामहपुं]
स्वर्णमुद्रमय मुद्र का एक पण्डितपद वेग
(बी १ २—पत्र ११७) । मूरमयमह
पुं [मूरमयमहपुं] नही धर्मपद एक धर्म
(बी १ २) । ४६ पुं [मूर] कल्या का

स्वर्णमुद्रमहामहपुं एक प्रकार का विश्व
विश्व कल्या विमलपि विश्वविश्वों में से
क्या स्वर्णमुद्रमहामहपुं पण्डित पण्डित कर के
(अ ४४७ अ ११) । वी की [वी] ।
पण्डित स्वर्णमुद्रमहामहपुं करनेवाला (पत्र
१६, १७) । संकुद्र वि [संकुद्र] स्वर्ण
हाथ-लक्षण (अ १) ।
सर्वत्रय पुं [सर्वत्रय] पण्ड का लक्षण
विश्व (पत्र १ १४) ।
सर्वत्रय पुं [सर्वत्रय] १ एक कुम्भ-पुनः
(अ १६) । २ पण्डित कल्या का विधान
(अ १ ७—पत्र १२०) । रेकी सर्वत्रय ।
३ पण्डित सर्व में उत्पन्न बीधर्व विश्व
(अ ७) ।
सर्वमयी की [सर्वमयी] वेग-विश्व (पुं
१ ७१) ।
सर्वमयी के सर्वत्रय (अ ११ कल्या १, १) ।
सर्वमयी की [सर्व] बाध, कल्या वेग का
कन (अ ४, १) ।
सर्वत्रय पुं [सर्वत्रय] १ पण्ड (पत्र २६
११) । सर्वमयी की [सर्व] (पत्र १) । २ न. वर
विश्व (पत्र २ २७) । ३ मुद्र न [मुद्र]
कल्या विश्व वही मयमहपुं पण्डित की
कल्या विश्व कल्या हुआ वा (पत्र ४ १६) ।
सर्वत्रय के रेकी सर्वत्रय (पत्र ४४) ।
सर्वत्रय के स-यय = स्व-यय ।
सर्वत्रय न [सर्वत्रय] १ पण्ड वर (पत्र ४४
११६) । २ पण्डित-विश्व-विश्व (पत्र ४४) ।
सर्वत्रय न [सर्वत्रय] १ पण्डित स्वयं (पत्र ४
१६, ११) । २ पण्डित, विश्वविश्व (पत्र ४
कुमा, वा ११) । ३ विश्व (कुमा १७) ।
४ स्वयं पण्डित (पत्र ४ ४४ पुत्र ११६) ।
सर्वत्रय न [सर्वत्रय] कल्या विश्वविश्व
(कुमा १ १६—पत्र ११६ मद्र) ।
सर्वत्रय के रेकी स-यय = स्व-यय । विश्व
सर्वत्रय के रेकी स-यय (विश्व १ टी) ।
सर्वत्रय के रेकी स-यय (अ ११ १२ १२)
पुत्र १ १२) ।
सर्वत्रय के रेकी स-यय (मद्र) ।
सर्वत्रय के रेकी स-यय = स्व-यय ।
सर्वत्रय वि [सर्व] विश्व, विश्व (अ ४) ।
सर्वत्रय के रेकी स-यय (पुत्र २ २) ।

सर्वत्रय वि [सर्वत्रय] विश्व (अ ४
११६ मद्र) ।
सर्वत्रय पुं [सर्वत्रय] १ वरमहपुं पण्डित
कन में उत्पन्न वेग का एक वि
(अ ११६) । २ पण्डित विश्वविश्व
पण्डितर्व में होनेवाले एक विश्व के
पण्डित विश्वविश्व मयमहपुं का भाग
(अ २—पत्र ४२६) । ३ न. वर
पण्डित (अ ४ ४४ पुत्र ११६) ।
सर्वत्रय के रेकी स-यय = वरमहपुं (विश्व ११६)
सर्वत्रय के रेकी स-यय (अ ४१६) ।
सर्वत्रय के रेकी स-यय “वर्द्धते” पुं
पण्डित विश्व (पत्र ११६, ४) ।
सर्वत्रय पुं [सर्वत्रय] १ पण्ड, पण्डित
(सर्वत्रय) । १ कुमा मद्र वेग ११
१ पुनः, एक वेग (विश्व ११६)
मयमहपुं (वी) ।
सर्वत्रय के रेकी स-यय = वरमहपुं (विश्व
४४६) ।
सर्वत्रय की [सर्वत्रय] कुमा-विश्व, १
का भाग (पत्र १—पत्र ११) ।
सर्वत्रय न [सर्वत्रय] वर कुमा (अ १
११६) ।
सर्वत्रय वि [सर्वत्रय] १ पण्डित पुत्र १
अ ११ (अ ११ कुमा पुत्र १६
११६) की ११ पुत्र १ ७ ११४) ।
पुं [सर्वत्रय] “वर्द्धते” का कन एक
पुत्र १ १११) । मयमहपुं पुं [सर्वत्रय]
१ पण्डित विश्वविश्व पुत्र १ ११
११६ पुं [सर्वत्रय] विश्वविश्व वरमहपुं, वर
मयमहपुं (पत्र ११२) ।
सर्वत्रय पुं [सर्वत्रय] मील मयमह
५, ११) ।
सर्वत्रय वि [सर्वत्रय] १ ॥
से उत्पन्न । २ न. वरमहपुं “वर्द्धते”
विश्व विश्व विश्वविश्व विश्वविश्व ।
४२१ ४२२) ।
सर्वत्रय के रेकी स-यय = वरमहपुं ।
सर्वत्रय के रेकी स-यय = वरमहपुं ।
सर्वत्रय के रेकी स-यय = वरमहपुं ।
सर्वत्रय पुं [सर्वत्रय] विश्वविश्व के

पठाणों किन्देन का पुर्नजातीय नाम (पृष्ठ ४६) सम १२४)। देखो मयालि।

सयालु नि [सयालु] सेने की प्रायतवावा
प्रायसी (कृम) ।

सयासरी श्री [सदासरी] श्रीमन्त्रिय बन्धु की
एक बापि (जन्म १९ १९११; मृत्यु १९
१९११)।

सुभाषरी षष्ठो सयरी = सुभाषरी (पञ्च) ।

सपास स्त्रो सपास = सपास (कास घमि
१२१ गण—जुष १२)।

सवासय वि [शवासय सवासय] सूक्त
विशवात्मा (भव) ।

सद्यं वेदो सन्न = उद्यत् । 'सद्यंभूति उद्यत्
भवोद्दीपायणं जगो देव' (धर्मवि १८) ।

सर्व्वभूत देवो सर्व्वभूत (वर्गीक १०) ।
सर्व्व देवो सर्व्वभूत = सर्व्व (हि १ १२४)

सरसक [धु] ? तरना जिसकना ।
मरसन्तन करना माधव सेना । ? धनुस्तर
कण्य । धरु (हि ४ २१४) सरसना (उप
२३) । क सरपाध (बन २७) सरसक
(मुद्रा ४१४) ।

सर वक् [र्ख] याव कण्ठ । सर (रि १)
०५ कुव (२) प्राप्र । वक् सरत (कुव
१५५) सरमाण (सामा १ ६—पत्र १५५)
पञ्च व (१५५ गुग १५६) । वक् सति
स्य (पि १०५) । व्. सरपीञ्च, सरपञ्च
सरिपञ्च (वक् २०) बम्पो २ । कु
१ ७) । प्रयो सरपिठि (कुम १ ५,
१६) ।

सर लक [स्वर] ध्वनि करता। धर
धरति (विद्ये ४५२)।

सर धन [रार] ? बरधु 'मन्त्रे सपदिश व
 कर्त' (साया १ १४-पत्र १११). कुम
 नुर १ १४ स्वय ११). २ तुलु शिरो
 'मो बरधुने शिरोमो यिमी शिवायन वरधुने
 (बर्धन १२ वरधु १-पत्र ११ (१
)। ३ वरधु-वरोध. ४ वरधु की वरधु
 (विश). वरधु की धी 'पणी' लुख-विरो
 = वरधु वर धन (११). वरधु न 'व
 वरधु-वरोध (विशे १११). वरधु न 'व

भनुष (शुष १ ४ २ १३) 'सिख गुं
[सिख] भनुष (गिषा १ २—यम २४
पाशः शीप)। सखणपट्टी 'सिखभट्टिया'
की [सिखपट्टी] [सिखपट्टिका]। भनुषी
भनुषए। २ भनुष शीबने के समय हाथ नी
रखा के बिपु बांधा जाता बर्गपुठ—बर्गके क
पुठ (गिषा १ २—यम २४ शीप)
'सिखि न [सिखि] बगण-गुठ (सिखि
१ ३२)।

सरं पुं [स्वर] नमःपैव (धुमा- से १ ४१)
 सरं वि [सर] यमन-कर्ता (वत् १ १ १)
 सरं पुं [स्वर] १ नमो-नित्येय 'य' से 'यी'
 एक के प्रथम (पञ्च २ २) विधि ४६१)
 २ वीथ धावि को धावि भावान ग्य (मुप
 ३१ धुमा) । ३ स्वर के यमुन्य फवाचन
 को कल्पेवावा साध (सम ४१) ।

सर पुन [सरस्] उद्गात ललाष (वि १)
 १ उद्गात कस्य कुमा नृप ११२) । परि
 श्री [पक्षि] उद्गात-पक्षि (अ १ ४-
 पक्ष ११) । उद्गात [उद्गा] कस्य पक्ष
 (प्राप्त है १ १११ कुमा) । सरपत्ति
 श्री [सरपक्षि] बेणि-पक्ष १११ कुमा
 ललाष (पक्ष १ १-पक्ष ११) ।

सर मेओ सरय = शरण (मा ७१२)। वि
 पु [श्रु] शरण म्नु का बन्ध (पुर २
 ७ : १५ २४१)।

सरल ही [सरयू] गरी-करीव (छ ३)
१—पृष्ठ ३ वां ली ११ (कस) ।

सरंग (मय) वृ [सारङ्ग] पञ्च-विष्ट
(पिप) ।

सरथ पुं [शरन्व] ह्यथ से वसन्तेनाये धर्प
एक जावि (पुस्तक १ १—पृष्ठ ३३) ।

सरकहा सक् [सं + रक्ष्] वण्णो वण्ण
एवमुक्त्वा । सरकण्ण (मूढ १ १ ४
११ दि) ।

सरस्वती वि [सरस्वती सरस्व] १ शैव-यन्त्र
शिव-भक्त, श्रीत शैव (घोष २१८) वि

१४ का १७७)। २ वि रजोमुप
(माष ४)।

‘सप्तर्षींश्च पापहि’ (यत् ५, १ ७) ।
याम (पिब १७- शीघ्र १२६) ।

सुरा बेजो सरय = सरय (ग्रामा १ १८—
पृ २४१) ।

संलग्न वि [सारक] शर-कृष्ण से बना हुआ
(शुद्ध धातु) (धातु २ १ ११ १) ।

सरणिगच्छ (ध्रुव) र्णी [सारङ्गिच्छ] पत्न
विशेष (पिप) ।

सरख पू [सरख] इन्मास, विपिष्ट (छाया
१ द—११ १३३ शेष ३२३; पुष्क २६७
२ द ११; उप पू २६ द सुपा १७७) ।

सरहू } न [शमदु, क] वह कल जिसमें
 सरहू } पवित्र—गुप्तो न भेदी ।। कोमल
 फल (निह ४५) आधा २ १ प, १ नि
 पद। २४८)।

सरण पुन [हारण] १ भास राधा (भासा
सम १ प्रामु १२६ कुमा) २ भास-स्वात
(भासा कुमा २ ४२)। ३ गृह वाच्य
स्वातः 'मित्राससरणपर्वदिन विर्त्' (संशोध
२१)। ४ वय वि [वय] प्राप्-कर्त्ता (घट
पठि)। प्रास वि [प्रास] सप्यारस
(प्रामु ६)।

सरण न [स्मरण] स्मृति याव (घोष ८)
 विषे २१८ महा छर २६२ घोष वि ९)।
 सरण न [स्मरण] प्रवाह करमा ध्वनि करमा
 (विषे ४६१)।

सरण न [सरण] व्यन-(एव) ।

सरणिं पुनः [सरणिं] १ मार्गं, पत्ता (पाश्चा-
त्य २ कुत्र २२) 'सरतो हरणो क्षमय
कहिणो' (शार्ङ्ग ७३) । २ धातुवाचक्यरी
(गण्ड) ।

सरण्य भि [द्वारण्य] शरण-योग्य, वास्तु क
लिय धारणयोगीय (अन १२१ पण्य १ ८—
पन ७२ गुण २६१) ध्वज १२, संशोध
४८)।

सरसि म [३] सीप्र, पन्थि सदा (दे ३
१) ।

सरयू केती सरय = सरयू (शाय) ।

सरम रेखी सरणम (गुप्ता १८३)।
 सरम रेखी सरण = यण (नन्द शास्त्र १
 १—पम १३ पण १ १—पम ७३ ग
 ७४२ पित)।

सरभञ्ज नि [रे] स्तुत याव किमा हुवा (हे ५ ११)।

सरभञ्ज पुं. [सुभञ्ज] कृत-विशेष (पद्य १ १३)।

सरभ पुं. [सरभ] कृत-विशेष, प्राचीन—
अतिरिक्त तथा काव्यिक वा महीन (पद्य १ २—पद्य ११४ बरह से १२० य ११४—
स्वप्न ५; कुमा ६ १ १०)। 'सुभ' वाली
मात्रा निर्वन् विस्मयर्त्त वाचक सत्य (बजा
७४)। सर्व पुं [वन्] सत्य कृत का
वाच (समा १ १—पद्य ११)। केवो
सर = सत्य।

सरप पुं [सरक] कृत-विशेष अतिरिक्त
कले क विद् अस्ति का कृत विज्ञाने विज्ञा
वाला है इह (समा १ १०—पद्य २१२)।

सरप पुं. [सरक] १ मन्त्र-विशेष इह तथा
वाचनी का क्ता हुवा सत्य (पद्य २ १—
पद्य १२ सुपा ४ ७ का २११ य कुप
१)। २ मन्त्र-वाच (बजा ७४)।

सरप केवो सर-प = सत्य।

सरप (मन्) पुं [सरस] कृत-विशेष (विश्व)।

सरस पुं [सरस] १ कृत-विशेष (पद्य १—
पद्य १४)। २ कृत, मातृ-विशेष (कुमा
कृत)। ३ धीमा, धनक (कुमा नव)।

सरसिम्भ नि [सरसिम्भ] धीमा किमा हुवा
(कुमा मन्)।

सरसी की [रे] नीतिक, पुत्र कीर-विशेष
कीर (हे ५ १)।

सरसीमा की [रे] १ कृत-विशेष माही
निर्वन् सतिर में बने होते हैं। २ एक काव्य
का बोधा (हे १२)।

सरस पुं [सरस] कुपरीक की एक मन्त्र
(कुप २ १, २२)।

सरस नि [सरस] यन्-पुत्र (धीमा धी-
मन्)। १ पुत्र पुं [रिम्भ] सङ्ग धानक
(हे १ ४३)।

सरसिम्भ न [सरसिम्भ] कृत, पद्य
सरसिम्भ (हमीर २१) रंभ)।

सरसिम्भ न [सरसिम्भ] कृत नय (का
७१ ८; कम्प ७१)।

सरसी की [सरसी] क्ता उवाच—उवाच
(धीमा क्ता पु १०५ सुपा ४५६)। रङ्ग न
[रङ्ग] कृत (कम्प १२ ११६)।

सरससी की [सरससी] १ वाली धात्री,
धिया (वाच-धीमा)। २ वाली की धर्मिणी
की (पुत्र १ १३)। ३ कीर-विशेष नामक
इह की एक पद्यनी (य १ १—पद्य
२ ४) काया २—पद्य २२१)। ४ एक
यन्-पुत्री (विपा २ २—पद्य ११२)। ५
एक नैम साधनी को पुत्राधिक काव्यकार्य
की धर्मिणी का (कम्प)।

सरस पुं [सरस] १ पिता की पत्नी की एक
वाचि (कुमा ११२)। २ हरिश्च का एक
पत्नी (पद्य २२ ६०)। ३ नवपुत्र के
एक पुत्र का नाम (बज २१ १)। ४
एक सामन्त नरेश (पद्य ११२)। ५
एक सामन्त (य ४ ६)। ६ कृत-विशेष
(विश्व)।

सरस पुं [रे] १ कृत-विशेष वेत्त वा वेत्त
का पुत्र (हे ५ ४०)। २ सिंह, पम्पान्त
(हे ४० पुत्र १ २२२)।

सरस (यन्) नि [सद्यस] प्रसक्तोप (विश्व)।

सरस केवो स-रस = सत्य।

सरस की [सरपा] ननु-अधिक (हे २
१)।

सरसि पुं की [सरसि] तीक्ष्ण, तीर रक्त का
धामा—उपकृत (य ५)।

सरस की [रे] माता (हे २)।

सरस केवो स-रस = सत्य।

सरसि की [सरसि, सरसि] पत्नी की
एक वाचि (नव)।

सरस पुं [सरस] निष्ठा का वाच-विशेष
करीय पुत्रा (हे २ ४० सुपा २६६)।

सरसय केवो सर-सय = सत्य।

सरस नि [रे] कर्मिन्, कर्म न पद्यत (हे
४)।

सरस पुं [रे] सर्व सत्य (हे १२)।

सरसि नि [सरस] बरह, सतीका पुत्र
(यन्-काया १ १—पद्य ११३) यन् स
हे १ ४४५ कुमा)।

सरसि की [सरसि] नदी (य २ २६ कुमा
१२४५ कुप ४३) कर्त १२३) मन्)।

नाह पुं [नाह] सङ्ग (बनी १ १)।
केवो सरसि।

सरसि नि [सुम्भ] यन् किमा हुवा (पद्य
१ २४ सुपा २२१) ४५२)।

सरसि केवो सरि = बरह। 'धोमेयाता
सर्वं संपत्तिमा विरजता येति' (धीमा)

सरसि न [सुम्भ] प्रसक्तोप कृत
-अनुपमपुत्र सर्व (पद्य २)।

सरसि की [सरसि] नदी (कुमा ६ १
१२ मन्)। ४५ पुं [पति] सङ्ग (हे
५ ४६ २ ३)।

सरसि की [रे] माता हार (पद्य १
४—पद्य १५५ कुप १ सुपा १४१)।

सरसि नि [सरस] बरह, बरह,
सरसि नि [सुम्भ] प्रसक्तोप कृत (हे १
१४२ २ १५ कुमा)।

सरसि नि [सरस] सरस-कर्ता (य १—
पद्य ४४४)।

सरसि की [रे] धनमाता बरीकरी,
पुत्राणी में 'सरस'। यमो नामा सोरही
हरिभरी (मन् १)।

सरसि केवो सरीर (पद्य २ ३)।

सरसाय पुं [रे] माता, वेत्ता की इति
(हे १२)।

सरस नि [सरस] कृत बरीका पुत्र
(हे १ ४४) कृत यन् हे ४ ४)।

सरस पुं [रे] १ सङ्ग कृत
'का धनवीर्यो विप्रसक्तोप
नवमात्रासु सरसिम्भे।

नवमात्रासु सरसिम्भे।
नवमात्रासु सरसिम्भे।

नवमात्रासु सरसिम्भे।
नवमात्रासु सरसिम्भे।

नवमात्रासु सरसिम्भे।
नवमात्रासु सरसिम्भे।

नवमात्रासु सरसिम्भे।
नवमात्रासु सरसिम्भे।

नवमात्रासु सरसिम्भे।
नवमात्रासु सरसिम्भे।

नवमात्रासु सरसिम्भे।
नवमात्रासु सरसिम्भे।

नवमात्रासु सरसिम्भे।
नवमात्रासु सरसिम्भे।

नवमात्रासु सरसिम्भे।
नवमात्रासु सरसिम्भे।

नवमात्रासु सरसिम्भे।
नवमात्रासु सरसिम्भे।

सरी की [रे] मास, हार (गुण १११)।
 सरीर पुन [शरीर] रेह, कम्य छु (सम
 १७) उवा कुमा नी (१२)। कइ छे मेवे
 सरोय पणुत्ता (पणु १२)। प्याम,
 'नाम पुन नामन्' कर्म-विशेष शरीर
 का कारण-मुल कर्म (राज सम १७)।
 बंधन न [बन्धन] कर्म-विशेष (सम
 १७)। 'संपादन न [संपादन] नाम
 कर्म का एक नेह (सम १७)।

सरीरि दु [शरीरि] नीब बरमा (पत्रम
 ११२)।

सरोस्य दु [सरोस्य] १ सयं सयं (का
 सरोस्य ११ मू १ २ २ १४)। २
 सयं की सयं दे वे बनेनामा प्राणी
 (सम १)।

सक्य } सेको सक्य = स-क्य।

सक्य सेको सक्य = स-क्य स-क्य।

सक्यि दु [सक्यि] नीब भाली (अ
 २ १—पत्र १०)।

सरोस्य सेको सर = स, स।

सरोस्य दु [रे] १ हं। २ बर का बल-
 प्रवाह, मोरी (रे व ४०)।

सरोस्य न [सरोस्य] कम्य पय (कुमा
 पणु ४२, गुण १६, १११, कुम १६७)।

सरोस्य न [सरोस्य] कम्य सेको (प्राग
 कुमा, कुम २ ४)।

सरोवर न [सरोवर] बड़ा सत्ताह (गुण
 ११ मू)।

सक्य सेको सक्य = सक्य (राज)।

सक्य सेकी [रे] सेवा (रे व १)।

सक्य सक्य [सक्य] प्रतीक्षा करना। सक्य
 (रे व ४०)। कर्म-सहितनर (सि ११२)।

४ सक्यि (गुण)। सेको सक्य।

सक्य दु [सक्य] १ पत्र (प्राग पत्रक
 गुण १४२)। २ एक सक्य-पुन (गुण
 ११७)।

सक्य न [सक्य] प्रतीक्षा स्थापना (भा
 ११० सि ११२)।

सक्यि दु [रे] मुकड़ी घाति का हाथ
 (रे व ११)।

सक्यि वि [सक्यि] प्रतीक्षा (गुण)।
 १११

सक्यि सेको सक्य = सक्य।

सक्य न [सक्य] चिकित्सा-शास्त्र—
 प्राणुर्ब का एक योग जिसमें बरल घाति
 शरीर के ऊर्ध्व भाग के सम्बन्ध में चिकित्सा
 का प्रतिपादन हो वह शास्त्र (विपा १ ७—
 पत्र ७३)।

सक्य की [सक्य] १ सकी सकी
 सल्या (गुण १ ४ २ १ क्य)।

२ पत्र-विशेष एक प्रकार की नाव (नीक
 ११६, कम्य ४ ७१ ७३)। पुरिस दु
 [पुरिस] २४ जिनसे १२ पत्रार्थ ६
 बासुदेव। ६ प्रतिपाद्यते वय ६ बहदेव ये
 ६१ महापुत्र (संकोच ११)।

सक्य सेको सक्य = सक्य। सत्ताह (प्राग
 २०)। सक्य सक्यमाण (पा १४१, सम्य
 ११६)। ४-सक्यणिज, सक्यमिय,
 सक्यणी-न (पत्र २०)। ११—
 पत्र २ १ गुर ७ १०१ रण १३,
 पत्रम ८२ ७१ सि ११२)।

सक्य न [सक्य] आवा प्रतीक्षा
 (भा ११०)। ४ १ १)।

सक्य की [सक्य] प्रतीक्षा (प्राग १२
 १ १ पत्र)।

सक्यि सेको सक्यि (गुण)।

सक्यि पुन [सक्यि] पानी बल 'सक्यि
 ए सविष्ट ए बलि नाया' (गुण १ १२,
 ७ कुमा प्राग १३)। 'जिह्वि दु [जिह्वि]
 साय, सगुह (सि १६)। नाह दु [नाह]
 बही (पत्रम ६, ११)। 'जिह्वि न [जिह्वि]
 भूमि-जिह्वि, जमीन से बहता करना (पत्र
 ७ १—पत्र १२)। रासि दु [रासि]
 सगुह (पाप)। नाह दु [नाह] मेह
 (पत्रम ४२ १४)। हर दु [हर] बही
 (सि ६ १४)। नाह जयती की [जयती]
 निज-योन-विशेष (पत्र पाप १ ४—
 पत्र ११२)। जयन न [जयन] बैठाव
 पर्वत पर उत्तर दिशा-दिष्ट एक विराट
 नगर (६६)।

सक्य की [सक्य] महापुत्र बड़ी नदी
 (सम १२२)।

सक्यि सेको सक्यि [सक्यि] व्यापि,
 कुप्यो ह्य (पाप)।

सक्य सक्य [सक्य] सेला सम्य करना।
 सक्यि (पत्र)।

सक्य सेको सक्य = स-क्य।

सक्य पु [सक्य] आवा प्रतीक्षा (गुण
 १ ११ १२)। सेको सिलेग।

सक्य सेको सक्य = स-क्य।

सक्य सेको सक्य = स-क्य।

सक्य सेको सक्य = को (गुण १ ६
 २२)।

सक्य पुन [सक्य] १ सक्य-विशेष तोमर,
 सांग 'यो सत्ता पणुत्ता' (अ १
 १—पत्र १४७)। २ शरीर में कुमा कुमा
 काय शरीर घाति (गुण २, २ २ २ वंवा
 १ १६, प्राग १२)। ३ प्राणुर्बल पान-

क्रिया 'पाप्यसक्यसक्य' (उवा मू १
 १३, २४)। ४ प्राणुर्बल से बनेनामा
 कर्म (गुण १ १३, २४ नम १)। ५ पुं
 नयन का साय सेना सेनासे एक राता का
 (पत्रम ४२ २)। ६ न सक्य-विशेष (विज)
 'गि वि [क] सक्यसक्य' मूल घाति सक्य
 से शीतल (पत्र २, १—पत्र १३)। ग
 न [ग] सत्ता नालकाय (गुण २ २
 १७)।

सक्य पु की [रे] हाथ से बनेनामे स-नातोय
 बल की एक नाति (गुण २, १ २३)।

सक्यि न [सक्यि] सक्य-मुक, जिसको
 सक्य पैदा हुआ हो वह (साम्य १ ७—पत्र
 ११६)।

सक्य की [सक्य] सक्य-विशेष (पाप १
 ७ ६—पत्र ११६)। जय १ ११ टो कुमा
 बर्मा ११ गुण २११)।

सक्य सेको सक्य = सक्य-क सक्य-न।

सक्य सेको सक्य = सक्य-न।

सक्य पुन [सक्य] प्राणुर्ब का एक
 योग जिसमें सक्य निकलने का प्रतिपादन
 किया गया हो वह शास्त्र (विपा १ ७—
 ७३)।

सक्य की [सक्य] एक यहीविष (दी १)।

सक्यि वि [सक्यि] सक्य-शीतल (गुण
 १२ १३२ गुण २२७; महा मर्ष)।

सक्य सेको सक्य = स + सक्य। सक्यि
 (पाप १३)।

(पृ ११४) । १ एक नगर का नाम (विष्णु १ २—पृ ११) । ४ धनुर्मेख का एक परिभाषित विमान (अ १—पृ २१४ पौष) । ५ उडितार का एक युध (सम १२५) । ६ पुं लय की एक बाध (राज) । १ ध्वनिमान-विशेष (वेद १३६ १४१) ।

ओमहा ध्वि [तोमहा] प्रथिमा-विशेष एक ल (पौष अ २ १—पृ १४ संत २६) । अमसमिद्ध पुं [अमससमुद्ध] एक का कला विशद छोटी सिमि (सुक्ल १ १४) । कामा की [कामा] विष्णु विशेष, विशद साक्षात् से सर्व हस्पायें पूर्ण होती हैं (पठन ७ १ ७) । गय वि [गत] व्यापक (अनु १) । गय की [गा] उत्तर बचक परत पर छनेवाली एक बिक्रमारी की (अ ५—पृ ४७७) ।

गुच पुं [गुच] एक बिल मुनि (पठन १ १६) । ख वि [ख] १ सर्व पक्षाओं का जनक । २ पुं जिन मयबा ३ कुटिल ४ महादेव । ५ परमेश्वर (हि २ ६३ बह्म) । ६ पुं [य] १ ध्वनि-पक्ष का जलोत्पन्न मुहूर्त (पुत्र १ १४) । २ पुं, छद्मकार वैष्णव का एक विमान (सम १ २) । ३ स्तुतार वैष्णव का ध्वनिविद्ध नामक एक विमान (पृ १६) । ४ पुं सब सर्व (अभा १ ८ ८ २३) । दुसिद्ध पुं [यसिद्ध] १ ध्वनिपक्ष का जलोत्पन्न मुहूर्त (सम ३१) २ एक सर्व-देव वैष्णव धनुतार वैष्णव का पाँचवाँ विमान (सम २-भाग संत पौष) । ३ पुं वैराट् सर्व में उत्पन्न होनेवाले छठे जिनदेव (पृ ७) । दुसिद्धा की [यसिद्धा] भगवान् वर्तमानकी की ओमा-सिद्धिका (सिंहार ११६) । दुसिद्धि की [यसिद्धि] एक वैष्णव-विमान (वेद १३७) । पुण्ण देवो ख (हि १ २१ पद १ पौष) । त देवो ख (पु १२) । त देवो ओ (पाम) । 'यध प [त्र] सब स्थान में उन में (बह्म प्राप् ११ २५) । वसि, वसि वि [वसि] १ एक बलुओं की वैष्णवता । २ पुं जिन मयबा सर्व (पृ ५ मय, सम १ पौष) । 'वस पुं [वस] १ एक प्रविष्ट बिल व्याप्य

(सर्व ५) । २ यमा कुमारपाल के समय का एक सेठ (कुप्र १४१) । 'वसि देवो वसि (वेद २३१) । ख ध्वि [खा] सब काम प्रसोत धावि सर्व समय (भय) । भक्षा की [वक्षा] व्यापक सर्व-वाहक (विसे ३६६६) । न्नु देवो ख (सम १) प्राप् १७ महा) । पय वि [यसक] १ व्यापक । २ पुं, ओम (पृ १ १ २ १२) । 'पयमा की [यमा] उत्तर बचक परत पर छनेवाली एक बिक्रमारी की (राज) । मयस वि [यस] सबको जाने वाला सर्व मोको 'मयविषय समरमय' (छाया १ २—पृ ७६) । महा की [महा] प्रविष्टा विशेष वड-विशेष (पृ २७१) । मायविद्ध पुं [मायविद्ध] व्यापकी काल में प्रसूत सर्व में होनेवाले बाहरों जिन-देव (सम १३१) । य वि [य] सब वैष्णवता (पृ २ १—पृ ६६) । या य [य] वैष्णव चक्र (रमा) । 'यय पुं [यय] १ एक महा-निधि (अ ६—पृ ४४६) । २ पुं, परत-विशेष का एक शिखर (रक) । ययमा की [ययमा] वैष्णव की बलुमिमा नामक कलापी की एक पनवाली (रक) । ययामय वि [ययामय] १ सब पक्षों का बल हुआ (वि ७ बीज १ ४) । २ बलवर्धन का एक निधि (अ ६ २१ ६) । 'यिगादिह वि [यिगादिह] सर्व-वसिष्ठ सबसे छोड़ (पृ ११ ४—पृ ११६) । विरह की [यिरह] पाप-मय से सर्वका निवृत्ति पूर्ण संयम (विसे २१५४) । साय वि [साय] १ मृग्य (पठन—पृ १२१ पर्व ११ या ४४) । सयम पुं [ययम] पूर्ण संयम (पम) । 'सद वि [सद] सब धनुष करनेवाला पूर्ण रहित्यु (पठन १६ ७६) । 'सिद्धा की [सिद्धा] पक्ष का बीवी नववीं पौर वैष्णवी पक्षि-सिद्धि (पुत्र १ १४) । सो य [सो] सब धार के, सब प्रकार व (अ १ ४ याभा) । स्स न [स्स] स्रक्त हय, सब बल (न ६३६ अमि ४ अण्) । हा य [या] सब प्रकार के, सब तरह से (य ५६७) यहा प्राप् ३

१५१) । ण्व पुं [नय] वैराट् ध्वन के एक भावी जिन-देव (सम १३४) । एण्ण पुं [एण्ण] १ भारत वर्ष में होनेवाले पक्षियों जिन भगवान् (सम १३१) । २ भव-वान् महावीर का एक विष्णु (भय १५—पृ १७८) । एहा ध्वि [एहा] विष्णु-विशेष (पठन ७ १४४) । 'य वि [य] संपूर्ण (यय) । साय पुं [सान] धनिज माग (हि ४ १६२) ।

सम्यक्स नि [सर्वक] १ सर्वाक्रिया की सर्व से चिह्न (अण्) । २ न पाप (मात्र) । सम्यक्स वि [सर्वाङ्ग] १ संपूर्ण (अ ४ २—पृ २ ५) । सर्व-शरीर-व्यापी (राज) । सुतर वि [सुतर] १ सर्व कर्मों में बँट । २ पुं, वर-विशेष (राज पृ २७१) ।

सम्यगिज वि [सवाङ्गीज] सर्व भवनों सम्बन्धीय } में व्याप्त (हि २ १२१ कुप्र से १६, २४) । 'सम्बन्धीयामय' पतेयं देख लण् कर्त्त (कुप्र २३३, पर्व १६६) ।

सम्यग देवो स-म्यग = स-मय ।

सम्यगइह वि [सार्वाङ्गिक] संपूर्ण पक्षि से सम्बन्ध रखनेवाला छोटी पक्ष का (सम २ २ ३३, कय) ।

सम्यरी की [सर्वरी] पक्षि, पक्ष (पाप; या ६३१ गुण ४६१) ।

सम्यक पुं [य रायै] कुत्र बर्द्ध (पम पक्ष) । देवो सद्यः ।

सम्यक की [य राय] कुटी लोह का एक इमारत (य १४) ।

सम्यक्पन्त देवो स-म्यक्पन्त = स-म्यक्पन्त ।

सम्यक्पन्त देवो स-म्यक्पन्त = स-म्यक्पन्त ।

सम्यक्पन्त देवो स-म्यक्पन्त = स-म्यक्पन्त ।

सम्यक्पन्त देवो स-म्यक्पन्त = स-म्यक्पन्त ।

सम्यक्पन्त देवो स-म्यक्पन्त = स-म्यक्पन्त ।

सम्यक्पन्त देवो स-म्यक्पन्त = स-म्यक्पन्त ।

सम्यक्पन्त देवो स-म्यक्पन्त = स-म्यक्पन्त ।

सम्यक्पन्त देवो स-म्यक्पन्त = स-म्यक्पन्त ।

सम्यक्पन्त देवो स-म्यक्पन्त = स-म्यक्पन्त ।

साङ्गियम् वि [शाङ्गियम्] १ पक्षि-वातक पक्षियों के बंध का काम करनेवाला (पृष्ठ १ १ २—पृष्ठ २१ पृष्ठ १२१ टि. विना १ ८—पृष्ठ २१) । २ शङ्ख-शास्त्र का बानकर (मुद्रा २१० कुम्भ १) । ३ यौन यन्त्रों द्वारा ठिकर करनेवाला (पृष्ठ १२१ टि.) ।

साङ्ग्य केवो साङ्ग (यव) ।

साङ्ग्य वि [साङ्ग्य] धनुस्त्रा प्रणी (अ २ १—पृष्ठ १०) ।

साङ्ग्य वि [सङ्ग्य] व्यास भरपूर (पुर १ १८) ।

साङ्ग्य वि [साङ्ग्य] धनुस्त्रा पुत्र व्यास व्यासः इक्ष्वाकुसाङ्ग्यो परिहितः सोमि संवत् (पृष्ठ १ २ १२०) ।

साङ्ग्य की [वि] १ बलाकल (मा २११) । २ बल कला (मा २ १) । केवो साङ्ग्यी ।

साङ्ग्य पुं [वि] धनुस्त्र, प्रेम (वि ८ २४ पृष्ठ) ।

साङ्ग्य केवो साङ्ग्यः । सम्यक् (वि १ २) ।

साङ्ग्य न [साङ्ग्य] धनोप्य नवरी (हल, मुद्रा २१ वि ११) । पुर न [पुर] बही बने (उ ७२० टी) । पुरी की [पुरी] बही (पृष्ठ ४ ४) । केवो साङ्ग्य ।

साङ्ग्य की [साङ्ग्य] धनोप्य नवरी (पृष्ठ २ १ लुम्बा १ ८—पृष्ठ १११) ।

साङ्ग्य न [साङ्ग्य] धनोप्य नवरी (पृष्ठ ४१) ।

साङ्ग्य केवो साङ्ग (वि १, ११) ।

साङ्ग्य न [साङ्ग्य] १ नगर-विशेष धर्मोपा (टी १) । २ वि नृहल-संकीर्ण । ३ न. प्रत्याकान-विशेष (पृष्ठ ४) ।

साङ्ग्य वि [साङ्ग्य] १ बलि-का. संकेत-संकीर्ण । २ न. प्रत्याकान का एक श्रेय (पृष्ठ ४) ।

साङ्ग्य पुं [साङ्ग्य] १ इक्ष्वाक्य (पृष्ठ ४२ ७ १ २०) । २ लक्ष्मि-वत् प्राय प्राय साम की लक्ष्मि-वत् (पृष्ठ १११) । ३ लक्ष्मि-वत् (पृष्ठ १ ११ ११२) ।

साङ्ग्य वि [साङ्ग्य] १ पार्श्वान नाडी यत्ना कर निर्वाह करनेवाला (पुर ११ २२१ उ २२२ उ २, १४ म्या १२) ।

साङ्ग्य न [साङ्ग्य] १ यौग्य प्रामन प्रकृत धामन (यग) । २ प्रतिनि-गुणार-पारर बह-माल (मुद्रा २२१) । ३ कुश (कुमा) ।

साङ्ग्य पुं [साङ्ग्य] १ वसुध (पृष्ठ १ १—पृष्ठ ४४ प्राय ११४) । २ एक राज-पुत्र (उ २१०) । ३ राजा प्रत्यक्ष-विशेष का एक पुत्र (पृष्ठ १) । ४ एक बलि-व्यापारी (उ २४० टी) । ५ साङ्ग्य बने-वत् उपा बापुध के पुत्र अथ कर्म-पुत्र (सम २४१) ।

६ पुन कृत्-विशेष (हल) । ७ सम-विशेष विशेष बह-कोट्योप-न्यस्योप-परिहित काल (नव) ८ वी ११; पृष्ठ २ ४) । ८ एक वन विमान (सम २) । कर्त पुन [साङ्ग्य] एक वेन-विमान (सम २) । वंश पुं [साङ्ग्य] १ एक वेन प्राचार्य (काल) । २ एक व्यक्तित्व नाम (उप-पक्षि राज) ।

विश्व पुन [विश्व] कृत्-विशेष (हल) । वंश पुं [वंश] १ एक वेन पुत्र (सम १२१) । २ यौग्य बने-वत् वंश-विशेष नाम (सम १२१) । ३ एक वेन-पुत्र (महा) । ४ एक साङ्ग्य का नाम (विना १ ७) । ५ इक्ष्वाक्य बने-वत् का एक पुत्र (महा ४४) । 'वंश की [वंश] १ प्रपन्न बर्तनापकी की बोधा-विशेष (सम १२१) । २ प्रपन्न विमलनाथकी की बोधा-विशेष (विचार १२१) । 'वंश पुं [वंश] इक्ष्वाक्य बने-वत् का एक पुत्र (महा) । वंश पुं [वंश] केव की रचना विशेष (महा) । वंश साङ्ग्य = माय ।

साङ्ग्य केवो साङ्ग्य (वि १११; पृष्ठ ११२) ।

साङ्ग्योप्य पुं [साङ्ग्योप्य] सम-परिमाण विशेष बह-कोट्योप-न्यस्योप-परिहित काल (मा २, ४—पृष्ठ ४ सम २ ४ १ १ ११ उ १ ४४) ।

साङ्ग्य वि [साङ्ग्य] १ पार्श्व-वत् प्राय-विशेष । २ विशेष की वंश के वंश की वंश-विशेष-वत् प्राय (पृष्ठ ४४) ।

सम ११) । १ पार्श्व-पुत्र (सम ७ २—पृष्ठ २११, उ ७२० टी) । पक्षि वि [पक्षि] बानवासा (पृष्ठ १ १—पृष्ठ ७२१) ।

साङ्ग्य वि [साङ्ग्य] गृह-पुत्र, गृह्य (धामन) ।

साङ्ग्य वि [साङ्ग्य] १ साङ्ग्य वि [साङ्ग्य] गृह का साङ्ग्य उपाय का साङ्ग्य, साङ्ग्य का साङ्ग्य उपाय का साङ्ग्य उपाय (वि ११ प्राचा २ २ १ ४, मुद्रा १ ११ वी १११) । २ मुद्रा प्रपन्न पुर वरु की धनुस्त्र, प्रपन्न (मुद्रा १ १ ११) । ३ गृह्य से पुत्र साङ्ग्य उपाय (प्राचा २ २ १ ४ १) । ४ न. वेनु (प्राचा १ ८, १ १) । ५ वि. कल्याण गृह्य का उपाय के साङ्ग्य से संवत् उपाय-वत् 'साङ्ग्य वि ११ मुद्रा-वत्' (सम ११) ।

साङ्ग्य केवो साङ्ग्य = साङ्ग्य (प्राचा १ ८—पृष्ठ १११ उ ७२० टी) ।

साङ्ग्य [साङ्ग्य, साङ्ग्य] वंश का विचार करना । इह साङ्ग्य विना १ १—पृष्ठ ११) ।

साङ्ग्य पुं [साङ्ग्य साङ्ग्य] १ साङ्ग्य विचार (वि १११) । २ साङ्ग्य उपाय वत् वरु (पृष्ठ १८) । ३ वंश कला-वत् प्राय साङ्ग्य (प्राचा मुद्रा ११) ।

साङ्ग्य पुं [साङ्ग्य] वंश कला (मुद्रा साङ्ग्य) । १२१ उ १) ।

साङ्ग्य न [साङ्ग्य, साङ्ग्य] १ साङ्ग्य, विचार (वि १११ उ १११) । २ वेन (मुद्रा ७२) ।

साङ्ग्य की [साङ्ग्य, साङ्ग्य] पक्ष-वत् होकर विचार का कारण विचार-कारण (विना १ १—पृष्ठ ११) ।

साङ्ग्य वि [साङ्ग्य साङ्ग्य] वंश का विचार हुय, विचारित (पुर ११, १ १ ७ ८) ।

साङ्ग्य की [साङ्ग्य] वंश का विचार (पृष्ठ ११) ।

साङ्ग्य केवो साङ्ग्य = साङ्ग्य (विचार-कारण-वत्) (मुद्रा ११) ।

१ —नम ४१२)। सार्यु [“सर”] १
सय। २ सय-कण (अ १ —पम
४१२)। सण नि [“तन”] सय्य-समय
का (निक १२)।

सार्यदूरव [“वि”] सार्य-विशेष (वि ८ ११ टी)।
सार्यदूरव [“वि”] सेतवी केने का पाथ
(वि ८ २५)।

सार्यकुं न [“सार्यकुं”] १ सुखी सोमा।
२ नि सुखी का कता हुआ (सुपा २ १)।

सायग पुं [सायक] बाण सीर (सुपा
१११)।

सायग नि [स्वायक] स्वाय सेनेवाला (वस
४ २६)।

सायना भी [सायना] सय्यन सेल
(सम २७)।

सायनी भी [सायनी, स्वायनी] मनुष्य
के हस कराने में सक्ती—१ स १
वर्ष की सक्ती—सदा (संयु १६)।

सायच नि [स्वायच] स्वायील स्वयन
(स २७६)।

सायय देखो सायग (पाथ स ५५८)।

सायर पुं [सागर] १ समुद्र (सुपा २६)
वस; की ४४ वसत्र प्राय ८७ १४४
प्राय है २ १८२)। २ देववर्ष वर्ष में
होनेवाले चौर जित-देव (पम ७)। ३ मय-
विषय। ४ संका-विशेष (प्राय)। ५ एक
छेद का नाम (सुपा २८)। पोस पुं
[पाय] एक बौध मुनि को भाठने बसने
के पूर्वकाल में पुन दे (पम २ १६४)।

सह पुं [सह] सहायक का एक राजा
(पम ५ ४)। देखो सागर = सायर

सायर नि [सायर] सायर-पुछ (वसत्र सु
२, २४५)।

सायार देखो सागर = सागर (सम ६४
पम १ १८८)।

सार व [स + ह] प्रहार करना। सार
(ह ४ ८)। सार सारन (सुमा)।

सार व [सारय] साय लिना। सार
(वर १)।

सार व [सारय] १ छेक करना कुशल
करना। २ प्रसाद करना, प्रशिक्ष करना।

३ प्रेरणा करना। ४ समत करना छकट
बनाना। ५ सिद्ध करना। ६ धनपण
करना सोचना। ७ सरसता बिसरना
एक स्थान स धन्य स्थान में से जाना।
सार (सुपा १२४) सारय सारय (सुप
१ २ २ २६ २ ६ ४) “सारयि बोध”
(स ३ २) सारय (सुप १ ३ ३ २)।
कर्म. “हृषाण्य सरेहि सिरि सारय्यवह यह
सरण हृषि” (पा २२३ काय ८६२)।
कर्म- सारय्यवह (सुपा २७)।

सार स [स्यरय] १ सुसज्जा। २
उत्पारण-योग्य करना। सारि (वि
४६२)।

सार नि [सार] १ खल चितकच (पाथ
वसत्र १७८ २३)। २ पुं सार पाठा
छाने के लिए फाट पाथि का चौपहल
रेशमिरा का सोचा (सुपा १२४)।

सार पुं [सार] १ वन दोषव (पाथ से
२ १ २६ सुपा २६७)। २ न्याय, न्याय
कुछ। “पुनं पु माणिणो सार वन द्विष
किचल” (सुप १ १ ४ १)। ३ वन
पराक्रम (पाथ स १ २७)। ४ परावर्ष
(भाषानि २१६)। ५ प्रमर्ष (भाषानि
२४)। ६ कल (भाषानि २४१)। ७
परिणाम (अ ४ ४ टी—पम २८३)।

८ छ निचोड़ (कपु)। ९ एक बौध विमल
(वेनेत्र १४४)। १ सिर घंटा (से १
२७ वसत्र)। ११ व बुध-विशेष (वसत्र
१—पम २४)। १२ छ निचोड़ (विम)।
१३ वि घेठ सतम यह बंधा सारण
गुणाया साय वसत्र दया” (वसत्र १ स २
२६)। यंता भी [साय] वसत्र धाय
की एक मुर्खता (अ ७—पम १६३)। य
नि [य] सार सेनाला (से २, ४)।

यह भी [यता] छ निचोड़ (निम)।
यत नि [य] सार-पुछ (अ ७—पम
१६४ वसत्र)। यंती यतो यह (विम)।

सारय नि [सारय] सारय्य का
(वसत्र १ २ वसत्र १७—पम २२६)।
तो ३, उग)।

सारय नि [सारय] १ सीव का कय हुआ।
२ न वसुव। ३ प्राय का भाव (ह १

१ प्राय)। ४ विष्णु का कपुव (ह २
१ सुपा १४८)। पाणि पुं [पाणि]
विष्णु (पाथ २७)।

सारग पुं [सारग] १ सिद्ध, मुफ़्त (सुर १
११ सुपा १४८)। २ बाढक पत्ती (पाथ
से १ ४२)। ३ हरिण मूत्र (मि १ ४२;
कपु)। ४ हथो। ५ प्रमर्ष। ६ धन। ७
राजहंस। ८ विष-मुय, चितकच हरिण।
९ साय-विशेष। १ टीय। ११ मयूर।
१२ कपुव। १३ केय। १४ सामरण
मर्षकार। १५ वस। १६ वय कपन।
१७ वसत्र। १८ कपुव। १९ वस। २
कोयल। २१ वेप (सुपा १४८)। लुआक,
रूपक (वप) पुं [साक] छ निचोड़
(विम)।

सारग नि [सायग] प्रधान वस येठ वसयन
(वसत्र २ ५—पम १५)। सुपा १४८)।

सारग पुं [सायग] विष्णु कीम्पु
(सुपा)।

सारगिध भी [सारगिध] छ निचोड़
सारगिध (विम)।

सारगिध भी [सारग] १ हरिणी (पाथ)।
२ पाय विशेष (सुपा ११२)।

सारम देखो सारम (अ ७—पम ४ १)।

सारक्य पुं [सारक्य] वसयाकार
वसस्ति विशेष (वसत्र १—पम १८)।
देखो सालक्य।

सारक्य व [स + रय] वलावन
करना कपुवी ठरु धार करना। सारक्य
(संयु १३)। यह सारक्यन सारक्यमाय
(वि ७३; उग)।

सारक्य नि [सारक्य] सय्य धार
बाण (पम १ २—पम ६ सुप १
११ १८ चौप)।

सारक्यय भी [सारक्य] सार देवा
(वि ७६)।

सारक्य नि [सारक्य] सारक्य-वतां
(वि ७६)।

सारक्य नि [सारक्य] सारक्य-वतां
(वि ७६)।

सारक्य नि [सारक्य] सारक्य-वतां
(वि ७६)।

सारक्य नि [सारक्य] सारक्य-वतां
(वि ७६)।

सारकसेनु वि [संभिर] संभिर-कर्ण
(अ ७—पत्र १५१) ।

सारक सेको सारक = सारक (धातु
धीन) ।

सारक न [स्वाधम्य] स्वयं का राख (विशे
१८ १) ।

सारक पु [सारक] १ एक यन्त्र-कुमार
(सं १ पुत्र १ १) । २ राखलौय एक
सामन्त राजा (पत्र १ १११) । ३ राखरा
का मन्त्री (वि ११ १४) । ४ राखरा का
एक पुत्र (वि १४ ११) । ५ न के बाला
प्राण (घोष ४४) ।

सारक न [सारक] १ एक कला (घोष
४४८) । २ वि खर विवरेनला । की.
। पत्रा जी (अ १—पत्र ४७१) ।

सारका न [सारका] १ राख विवाह (पुर
११, ४४८ विचार २१५ कल) ।

सारकी की [सारकी जी] १ धाकका
सारकी । की कियाप (बल २११ पुत्र
१) । २ परंपरा (बमल ७७) ।

सारक न [सारक] सारकन (शास
१ ११ पत्र २४ १८) ।

सारका सेको सारका (रक) ।

सारकिय सेको सारक (धमि ११) ।

सारकिय वि [रे] सारकिय, राख कया
हुवा (वि १४) ।

सारकिय पु [सारकिय] काय, कुवा (अ
४६५ की पुत्र १११ बमल १ १ प्राण
११) ।

सारकिय की [सारकिय] कुपो कुणी (पुर
१४ १११) ।

सारक वि [सारक] एक कय का (अ
१११ पत्र १ ४—पत्र १५५ विसे १४११
धमि ११ कया धीन) ।

सारक वि [सारक] १ सेठ कयेनला (वि
१ ४) । २ राख, विठ कयेनला (अ
११ ४) ।

सारक वि [सारक] १ नल कयेनला । २
राख विवरेनला (अ १४ ४ ११
कय) ।

सारक वि [सारक] राखत नुन नीन
(आषा १ ४ ४ १) ।

सारक सेको सारक ।

सारका की [सारका] धरलती की (बमल
१४) ।

सारक सेको सार = सारक । नल सारकिय
(अ ११) ।

सारक एक [समा + रक] राख कला
लीक-रक कला, दुस्त कला । सारक
(वि ४ ११) 'सारक सल्लारलौयी' (पुर
११, ५२) । सारकिय (अ ११) । कय
सारकियत (अ ११) ।

सारक एक [समा + रक] दुस्त कला
प्राण कला । सारक (अ ११) ।

सारक न [समा + रक] राखत, राख
कला (घोष ७१) ।

सारकिय वि [समा + रक] दुस्त कला
हुवा सार कला हुवा (वि ४ ४१; कुवा
धीनला ५) ।

सारक पु [सारक] १ पकि-विशेष (अ
धीन सल ७ कुवा कल) । २ कय-
विशेष (वि ११) ।

सारकी की [सारकी] १ कय बल की एक
कुली (अ ७—पत्र १११) । नला सारक-
पकी । २ कय-विशेष (वि ११) ।

सारकिय पु [सारकिय] १ लीक-विशेष के
की एक कला (आषा १ ५—पत्र १११;
वि १११) ।

सारक न [सारक] नल कय (अ ११
११) ।

सारक पु [सारक] एक हाकिलाला (अ
१ ४५ मल) ।

सारकिय की [रे] पकि-विशेष सारकिय
(वि ४, १४) ।

सारकिय एक [सारक] सारकिय होना ।
नल सारकिय (अ ७१ १) ।

सारकिय एक [सारक] विपकया, नला
धीन कला । सल सारकियत कय
लीक-विशेष कय का (अ ११ १) ।

सारि की [सारि] १ पकि-विशेष धीन (अ
१४१) । २ राख सेको का रक-विशेष

साँचा (अ ११५) । ३ पुत्र के विरुद्ध
पकी (वि ४ ११ धमि) ।

सारि सेको सारी (वि ११) ।

सारि वि [सारि] सारिना; 'सांके-
सांके मालुकात सारिनाये नमो' (अ
१५) ।

सारि वि [सारि] विपकया हुवा, लीक
किया हुवा । सलो कुली विपकियत लीक
कय हुवा पुत्रियत जार कया सारियत
(अ ११ ११) ।

सारिना } की [सारिना] नला, पकि-
सारिना } विसे (आ १४१ नला १५,
१४) ।

सारिना न [सारिना] सलाल सारिना
(वि १ १५) कुवा नमो ४११, सल १५
विसे ४११) ।

सारिना } वि [सारिना] सलाल सारिना
सारिना } 'सारिनाविपकियत सल से
विपकिय सारिना' (नमो ४११; सल १५५,
पत्र १ ४४) कुवा न १ १४४) ।

सारिना सेको सारिना = सारिना (वि १,
१० पुत्र १२ १२२) ।

सारिनाया की [रे] कुली हुन (वि ७
२७) ।

सारिनाया सेको सार = सारक ।

सारिना सेको सारि = सारक (अ ११
नला ११४) ।

सारिना } न [सारिना] सलाल सारिना
सारिना } (अ ७४ नला ७१) ।

सारी की [रे] कुली, सारि का कयन (वि
१११ ११) । २ सारिना, मिठो (वि ५,
११ १) ।

सारी की [सारी] सेको सारि = सारि
'सलाल सेको सारिना' (अ ११ ११)
(अ ११ ११) ।

सारी वि [सारी] सारिना, सारि-सलाल
(अ ११ ४ ७१) ।

सारि वि [सारि] सारिना जार सेको (अ
११ ११) ।

सारिना } पु [सारिना] नला सारिना
सारिना } नला सारिना नला सारिना
नला सारिना नला सारिना

छात्र घोर गृहस्थ के बीच की धरतवाबाबा
केन पुत्र (पद्यो ११) १४५ वृह १ वन
४)।

साक्षिपत्र न [साक्षपत्र] समल-कृपा (मुप
२ १ २ २१)।

सारक्ष्य देखो सारिष्य = सारक्ष्य (बदह)।
सरोहि नि [सरोहिण] सरोहिण-कटी (वि
७१)।

साक्ष पुं [साक्ष, शाक्ष] १ श्वीक्षिक महान्द
विरोध (अ २ १—पत्र ७८)। २ वृक्ष
विरोध साक्ष का पेड़ (सम १ १३२ शीघ्र
मुप)। ३ वृक्ष पेड़। ४ शिक्षा प्राकार
(मुप ४१७)। १ एक राजा साक्ष महाबल
साक्षिपत्रो य (पत्रि)। १ पक्षि-विरोध (पद्य
१ १ टी—पत्र १)। ७ पुंल एक श्व
विपल (सम ११)। श्वेद्व्या न [कोष्ठक]
केल-विरोध (पत्र)। याहण, हाण
[याहण] एक सुप्रसिद्ध राजा (विचार
१११) हे १ २११ प्रसा वि २०७ बह
मुप)।

साक्ष देखो सार = सार (मुप १८४) छाया
१ १६—पत्र १६६)। इय नि [यित]
बार-मुल (छाया १ १६)।

साक्ष न [शाक्ष] बर, मुद्र 'माम्यमहासावि
ह नामेण वल्लभमुत्तम' (मुप १८४)।

साक्ष पुं [शाक्ष] छाया, बहु कम गौरी (मोह
८८ सिरि ६८८) छवि काट मुप १६)।

साक्ष पुं देखो साक्ष = (हे) 'अस्य साक्षस्य
अपत्य'। 'अपत्यदेवे व से साक्ष' (पद्य
१—पत्र १७) छ ८—पत्र ४२६)। 'मैत्र
नि [अ] साक्षपत्रा (छाया १ १
टी—पत्र ४) वीर)।

साक्ष देखो साक्ष = शाखा। गिह, घर न
[गृह] १ मित-रहित घर (निष्ठ ८)। २
बचन-पत्रा बर (पत्र)।

साक्ष्य देखो सारिष्य = सारिष्य (छाया १
१६—पत्र १६६)।

साक्ष्ययन न [शाक्षययन] १ शीक्षक
अन न एक छात्र-वीर। २ पुंश्री. जय
शेखराणा (अ ७—पत्र १६)।

साक्षी की [वि] सारिष्य मेगा (वि ८ २४)।
साक्षीगरी की [वि] शीघ्री निष्पत्ती (वि ८
२६ मुप १२)।

साक्ष्य नि [साक्ष्य] धरतमल-मुद्र पापय
मुद्र (गठक राज)।

साक्षकन्त्या पुं [शाक्षकन्त्या] वृक्ष-विपय
(अ ८ १ टी—पत्र १६४)। देखो
सारकन्त्या।

साक्षिजा की [वि] सारिष्य मेगा (पत्र)।

साक्ष्य न [वि] १ वृक्ष की बाहरी छाया
(निष्ठ १६)। २ नमी यक्षा (पत्र १)।
३ रत्न 'संक्षालन' वा धरतमल' वा मोलप
वा पापय' वा (पाप २ ७ २ ७)।

सक्षयय न [सारयय] बड़ी के समान एक
छात्र का कार्य (पत्रि)।

साक्षभवी देखो साक्ष्यको (बर्गि १७७
मुप)।

साक्ष्य नि [साक्ष्य] साक्ष्य-मुद्र, पक्षी
(गठक मुप २११)।

साक्ष्यिजा की [साक्ष्यिजा] कक्ष साक्ष की
बनारी हुई पुत्री (मुप ४१ २४)।

साक्षिजा की [वि] सारिष्य मेगा (पाप
साक्ष्य) वा २८ वि २४)।

साक्ष की [साक्ष] १ गृह, बर। २ विधि-
रहित घर (मुप ७८ ७८ ८८)। ३ अन्ध
विरोध (विप)।

साक्ष्ये [वि] शाखा (वि ८ २२ पद्य १
१—पत्र १४ वल ७ ११ राम ८८)।

साक्ष्यय देखो सक्षय (पत्र)।

साक्ष्यय नि [वि] १ लुप्त निवृत्ति लुप्त
की गई हो बह। २ लुप्त लुप्ति-योग्य (वि
८ २७)।

साक्षयण देखो साक्ष-हाण = शाख-हाण।

साक्ष पुं [शाक्ष] १ शेष, धान, पान
(मुप २ २ ११) अ २६ ६६१) मुप;
बदह)। २ यथाकार बनसावि-विरोध वृक्ष-
विरोध (पद्य १—पत्र १४)। अह पुं
[अह] एक प्रसिद्ध शक्ति-पुत्र विरोध
असाक्ष्य महावीर का पाठोपा नी की (ज
पत्रि)। असेत अगच्छ पुं [वि] बल

के कथित—बाल का शीघ्र पत्रपाप (पत्र
जवा)। रक्षिष्या की [रक्षिष्य] पत्र
का रक्षक करनेवाली की अमन-गोपी
(पत्र)। याहण पुं [याहण] एक
मुपसिद्ध राजा (सम्पत् १७)। देखो साक्ष-
याहण। सक्ष्यय पुं [साक्ष्यय] मातृ
की एक नाति (पद्य १—पत्र ४७)।
सिस्थ पुं [सिस्थ] मत्स्य-विरोध (पाप
१३)।

साक्षि नि [शाक्षि] शोभनेवाला (गठक
मुप)।

साक्षिजा की [शाक्षिजा] बर बर अमन-
पक्षि मुपसिद्ध बरगि-अमन-प्राप्त (मुप)।

साक्षिजा देखो साक्षिजा (पत्र)।

साक्षिपत्रा की [शाक्षिपत्र, ता] १
साक्षिनी शोभनेवाली 'पीपली-
एवर्षादि-प्राप्ति' (पत्रि २६)। २ अन्ध
विरोध (विप)।

साक्षिभञ्जिया की [शाक्षिभञ्जि] पुत्रकी
(पत्र १६ १७)।

साक्षि पुं [शाक्षि] अनुवाय, पुत्रप्रा
(पत्रि २६ १)।

साक्षि नि [शाक्षि] अमन-विरोध वृक्ष का
अमन का पक्ष का एवं साक्षिपत्रा की बड़ी
अमन-गोपी (वर्गि १)।

साक्षि देखो सारिष्य = सारिष्य (छाया १
१—पत्र १३) अ ४ ४—पत्र २६३,
अम)।

साक्षिदिपिष्ठ पुं [साक्षिदिपिष्ठ] एक केन
गृहस्थ (पत्र)।

साक्षी की [साक्षी] पत्नी योनि योनी की
बहन (वि १ १४८)।

साक्ष्य पुं [साक्ष्य] अन्ध-विरोध
अमन-अन्ध (पाप २ १ ८ १ वल २,
२ १८)।

साक्ष्य न [वि] १ अन्ध-विरोध। मुपे घर
यादि अमन का पत्र अन्ध (वि ८ २२)।

साक्ष्य पुं [साक्ष्य] १ अन्ध-विरोध (पाप
मुप २ ७८ मुप १२)। २ अन्ध-विरोध (विप)।

वि [मम्] सप्तमी-होत्र वनाम् (अग्नि) ।
सिद्धयर्थे सप्तम्य (मा ४३३) अहम्
अम्) ।

साहज्यं रेखो साहज्य - र्खी + हन् ।

साङ्ख्यम् न [साधर्म्यं] १ समान धर्मं तुल्य
धर्मं (सम्प १३३) विद् १३३) । २ साधारण्य,
समानता (विद्यै २३५६ शीघ्र ४ ४
पृष्ठा १४ १३) ।

साहसिनि वि [सचमिन्, साधमिन्] समान
बनैवासा एक-वर्षी (विष्ट ११०. १४५)
१४७) छी. पी (साधा २ १ १ १२)
महा)।

साहस्यिज् } नि [साहस्यिज्] ऊपर शब्दो
साहस्यिजा } (श्लोक १३, १४) यथा उच्यते
२१ १ कश्च मुना ११२) यथा ११ २२)।

साह्य मेळो साह्य = साह्य (जय ३६
स ४४ कळो) :

साहय रबी साहय = साहय कर्म (सम्य
(४१)।

साध्य वि [सङ्गत] संविद्य, समेता ह्या
(पद्य १ : ४—५४ ७८ शीघ्र, तं २) ।

साह्रर स्र [सं + ह्र] संवरण कृता ।
साह्रर (ह्र ५ अ२) ।

साह्रर सङ्ग [सं + ह] १ संकीर्ण करण, संवेग करण, संरक्षण संरक्षा । २ स्वाभ्यन्तर में वे जाता । ३ प्रवेश करण । ४ क्षिप्ता । ५ व्यास्यार-पठित करण ।
साह्रर सङ्गरे, साह्ररि (अन् ३, ४-वन् २१) ; कन् अन् युग्म १ न १ (का ११ ७६) । साह्ररिज (अन् ३, ४) । सवि साह्ररिजस्वाभि (अन् १) । कन्ङ्, साह्र रिङ्गमाज (अन् १) । सङ्ग साह्ररिषा (अन् १) । हङ्ग साह्ररिषय (अन् ३, ४-वन् ११) ।

सादृश्य न [सदृश्य] एक स्थान के दूसरे
स्थान में से जाना, स्थानान्तर-गमन (सिद्धि
१ १ १ ०)।

समस्य वि [३] क्त-माह, मीमांसित (३
२५)।

साहसिञ्ज नि [संहृत] १ स्वाम्यन्तर मे नीत
(नम १ कम्प) । २ स्वाम्य निष्ठ (नि
२२) । ३ स्वाम्य निष्ठा, स्वाम्य
(पीत) ।

सादृश्यं [मंदत] संवरण-मुक्त (पुष्पा
वाच) ।

साहस्य न [साफस्य] सफस्यता (श्रीम ७३) ।
साहस्य रेखो साहसु = साहसु, 'ग्रह पेन्सइ साहस्य'
सहि बान्धि' (पद्म २, ६३: ७७ २४) ।

साहचर्य न [साधन] साधुता, साधुपन (पञ्चम
१. १. ११)

सादृश्यं च [स्वाभाव्य] स्वभाषता स्वभाष
पण (वर्गीकृत ६६) ।

साहस न [साहस] ? विद्या विचार क्रिया
याथा काम (उप यथा) । २ पुं एक विद्या-
वर लगेष्ट साहस-वर्ति (पद्य ४७ ४८) ।
गङ्ग पुं [गङ्गा] बही धार (पद्य ४७
४८) यथा) ।

साइस केो साइस्स = साइस (पत्र) ।

સાહસિ મિ [સાહસિન] સાહસ કર્મ કરને-
વાલા, સાહસિકા 'હે શીષ સાહસિણો જન્મ-
સર્વા' (જમ ૪૨૫ ટી વિરત ૧૪) ।

साहसिभ नि [साहसिक] नार प्थो
(धौक मूय २ २ १२ पाव १७ मूय
४१६)।

साहस्य पि [साहस्य] १ विवहा मुस्य
ह्वार (मुवा, कपय पावि) हो वह वस्तु
(वर्ष १ १३) जग यहा) । २ ह्वार क
परिमाणावावा 'भोवायुस्यसाहस्यो विविधयो
विष्णापीयो' (बीवय १२२) । ३. ह्वार
(बीवय १२२) । मय धुं [मय] व्याधि-
वायक नाम (जय) ।

साहसिष्ठय वि [साहसिक] । इत्यारम्भ
परिमलपत्रा (श्रुत्या । १—पत्र १०
कर्म) । २ इत्यारम्भपत्रा के पत्रा अकर्मपत्रा
यत् (पत्र) ।

साहस्री [साहस्री] द्वारा, पक्ष वीर
 विष्णुसुख शरीरमाये साहस्रीपो समायमा
 (जय २१ ११ यम २१, जया वीर, जय
 २२ २१, हू १२१)।

साक्षात् श्री [श्रृंगार] प्रसंगा (सप्त ३१) ।

साहाय्य [स्वाहा] रचना के अन्त में अन्त्य-
त्याग वा मृतक अन्त्य, प्राकृति-मृतक राज्य
(अ. ५—पत्र ४२७ आध्याय १७)।

साक्षात् [शाला] १ एव ही बाबाजी की
 संतति में अत्यन्त दुरुद्ध बुद्धि की साक्ष्य-
 बल्लभ प्रगट्ठ संतति (अर्थ) । २ बुद्ध

श्री गणेशाय नमः (पाद्या १, ७, ९); ज
 धीप प्रभु १, २); १ देव ॥ एक दे
 (सुख ४, ६); श्री गुरु [भद्र] सख
 का दुष्का पत्तन (पाद्या २, १, ७, ९)
 मय, मिथ मिगु १ [मिग] वलर
 वलर (पाद्या १, २ गुण २९२, ११८)
 र, छ नि [मि] १ साक्षात्, सखा
 गुरु (बन्ध १२ टी गुण १७७); १ गु
 भुक् वेद (पद्या ११) ।

साङ्गुसाङ्गि पुं [वे] रक्त रैत का चन्द्रा
 वास्यया 'परी सम्पू' नाम पूज्य ज्ञान
 वे सम्पत्ता वे साङ्गिता म्पूति नो सम्पत्ता
 द्विषी सम्पत्तात्पत्तव्यमाली सो सम्पत्तुम्पत्त
 सम्पत्ता' (काव)।

साहसक [सं + धारय्] वण्डी वण्
धारय् कर्त्ता । साहसक (अधि) ।

साधारणं [साधार] घाल क मास, 'हेमा
शिल साधारणे साधारे धरयुग्मि वृत्ते' (पञ्च
११ : सुपा ६१५) ।

साधारण [दे साधुहार] साधुहार, मय-
वन (वर्म १३ धी)।

साधारण [सहायता सहकार] व
वापरा, धारा, प्रचलन, सहायता, मर,
कलातः पदार्थारम्भे न वेवनेते
वापरा' (मर पुष्प १२३) 'मुनिवे कला'
कुलेनवापराधारा' (मो १२३; व
४२३, वप्प १९; सहा).

साह्यर पि [साह्यार] धान के पत्र हैं
जिनमें साह्य-राज-सम्बन्धी (कवि) ।

साधार } पुं० [साधारण] । वनस्पति-
साधारण } विशेष, यहाँ एक शरीर में वनस्पति
जीव । वह वनस्पति कण धारि । २ कर्त्त-
विशेष, जिसके कर्म से साधारण-वनस्पति में
कर्म होय वह कर्त्त (कर्म २, २७) वरु
१-१-यव न कर्म १ २७ जीव न
वपण १-यव ४२) । ३ वरुण (वपु १) ।
४ पुं० साधारण वनस्पति-वृक्ष न जीव
(वपु १-यव ४२) । ५ वामन ।
६ सवर्ण तुल्य (वपु १-यव ४२) । ७
पुं०, साधार, साधारण वरुण साधारण
य केह किलायि कमठि । वरुण पुं०
विश्व (वपु १) ।

पञ्चक पुं [पञ्चक] १ विष्णु की तरह पीछे की तरफ देखा। २ छत्र-विशेष (विष्णु)। सप्त न [सप्तन] द्वात्रिंश-विशेष राजपुत्र पञ्च-पत्नी (मातृ)। देवो सीह।

सिद्ध पुं [सिद्ध] १ षष्ठ-विशेष सिद्धक हीन लक्ष्मीय (कन्य-पुर १३ २३ २७)। २ पुण्ये, सिद्धलक्ष्मीय का निवासी (वीथ)। श्री 'सि' (वीथ) छाया १ १—पञ्च १७)।

सिद्धिमा श्री [सि] सिद्धा, बोधो (पाथ)। सिद्धिनी श्री [सिद्धिनी] छत्र-विशेष (विष्णु)। सिद्धीमूय न [सिद्धीमूय] छत्र विशेष अनुविन प्राप्ति की संकेतना—परिभाष्य (अंगीय २७)।

सिद्धा श्री [सिद्धा] बाहु रेश (अनु सिद्धा) २७ टी पञ्च ११२ १७ विर १७१६)।

सिद्ध पुं [सिद्ध] होठ का मूल भाग (वि १ २७)।

सिद्धा पुं [सिद्धा] सिद्ध, सीका सीका, रस्ती की लकी कोष्ठद्वारा एक चीज को छत्र में लटाने वाली होती है। और छत्रमें चीजें रख दी जाती हैं। किसी छत्रमें चीजियाँ न करने और छत्र दिखनी न जान (पाथ ११ उपा निष् १)। भावक ११ टी)।

सिद्ध पुं [सिद्ध] बटिय भविष्य 'कोय अन्तर्यामि वरिष्ठसिद्धके पद परीक्षण (दुपा ६)।

सिद्ध देवो सिद्धा (पाथ ११ भावक ११ टी ४ २७१)।

सिद्धा श्री [सिद्धा] बट दृक्काय सक्-सिद्धते' (ब १११)।

सिद्धिभ न [सिद्धिभ] अनुपम दे अत्यन्त प्राप्ति (पा ११२)।

सिद्धिमा श्री [सिद्धिमा] बट्टा का धारण-विशेष (सिद्धि १७७)।

सिद्धा पुं [सिद्धा] १ अनुपम की प्राप्ति (पा ७२१ धीन' बट्टा भाव—मुष्क ११२)। २ हाथी की पिच्छाद्वारा 'मुष्क'वर्णितलक्षित-कल्पद्रुम-विष्णुसाराधर्म अन्तर्यामि' (उपि ११)।

सिद्धिमा श्री [सिद्धिमा, सिद्धिपद] रस्ती की लकी हुई एक चीज को बट्टों के काम में जाती है (सिद्धि ४१४)।

सिद्धा छत्र [सिद्धा] सीका प्राप्ति धर्मात्त करना। सिद्धाद (पा ४७७—४१४)। सिद्धा पुं सिद्धा (पा ११२)। सुत ४)। श्री. सिद्धिमाभि (स्वप्न १७)। बट्ट सिद्धात सिद्धमाय (भाट—मुष्क १४१)। सि ११७ सुत १ १४ १)। बट्ट सिद्धिमा (भाट—यथा २१)। बट्ट सिद्धिमा (पा ७१२)।

सिद्धा श्री सिद्धात्त। बट्ट सिद्धात्त (पञ्च २ १२)। बट्ट सिद्धात्त (पञ्च २ १२)।

सिद्धा वि [सिद्धा] सिद्धा-कर्ता, अनुपम सिद्धात्त परीक्षाद्विष्णु से अनुपम (रसा)।

सिद्धा पुं [सिद्धा] दृक्काय विष्णु (दुपमि ११)।

सिद्धा न [सिद्धा] १ धर्मात्त पद (दुप २१)। २ सीका, उपरेश (दुप ७, ११)। ३ धर्मात्त पद (सिद्धि ७७१)।

सिद्धा देवो सिद्धात्त। सिद्धात्त (पा ७१ १४)। बट्ट सिद्धात्तमाय (दुपा १११)। बट्ट सिद्धात्तमाय (दुपा २ ७)।

सिद्धात्त वि [सिद्धात्त] सिद्धा देवमाता पद्मदेवता सिद्धा (भाट ११)।

सिद्धात्त वि [सिद्धात्त] १ सिद्धात्त हृमा, वट्टात्त हृमा (पा ११२)। २ न सिद्धा को, धर्मात्त करना धर्मात्त (दुपा २१)।

सिद्धा श्री [सिद्धा] १ उपा पर (दुप ११)। २ देव का एक बट्ट बट्टों के कर्मात्त धर्मात्त हीन-विशेष, धर्मात्त के स्वप्न की वरमादेवता छत्र, 'सिद्धात्त नरलक्ष्मणवट्टों' (वर्षमि १७ धीमा कपा यो)। ३ छत्र वीर धर्मात्त धर्मात्त सिद्धा धर्मात्त सीका सिद्धा, कपेट (धीमा पु १)। नट्टा दुप ११७)। बट्ट न [सिद्धा] बट्ट-विशेष किं गृह्य के धार्मात्त धर्मात्त पर (धीमा यथा दुपा १४)। 'बट्ट न [पञ्च] सिद्धात्तमाय (धीमा)।

सिद्धा (धर्मा) श्री [सिद्धा] धर्मात्त (विष्णु)।

सिद्धात्त न [सिद्धात्त] धर्मात्त-धर्मात्त धर्मात्त देवमाता छत्र (कपा)।

सिद्धात्त छत्र [सिद्धात्त] सिद्धात्त पद, धर्मात्त करना। सिद्धात्त (सि १११)। धर्मात्त सिद्धात्त (धीमा)। बट्ट सिद्धात्त-देवता (धीमा)। बट्ट सिद्धात्त-विष्णु, सिद्धात्त-विष्णु, सिद्धात्त-देवता (पा १ १—पञ्च ११; कन्य; वंभा १ ४८ टी)। सिद्धात्त-देवता सिद्धात्त-देवता (पा ११ पञ्च ११)।

सिद्धात्त न [सिद्धात्त] सिद्धात्त, सीका, कपेट-विष्णु (दुप २ ११)। बट्ट ११; कन्य)। सिद्धात्तमा श्री [सिद्धात्तमा] धर्मात्त देवता (दुपमि १२७; उप ११ टी)।

सिद्धात्तमा वि [सिद्धात्तमा] सिद्धात्त हृमा (मन' पञ्च १७ २२; उपा १ १—पञ्च १ ११—पञ्च २११)।

सिद्धात्त वि [सिद्धात्त] सिद्धात्त हृमा, बालक, सिद्धात्त (धर्मा १ १४—पञ्च १८७)।

सिद्धात्त वि [सिद्धात्त] सीका की धर्मात्तमा, धर्मात्त (ब १११)।

सिद्धा श्री [सिद्धा] धर्मात्त-विष्णु (विष्णु)। सिद्धा देवो सिद्धात्त-विष्णु (भाट—विष्णु १४)।

सिद्धा श्री सिद्धा (पञ्च)।

सिद्धा देवो सिद्धात्त (कन्य)।

सिद्धात्त देवो सिद्धात्त = नट्टात्त (धर्मा ११)।

सिद्धा वि [सिद्धा] १ बाट कन्य दुपा (वि २, २७; धीमा २१)। २ पुं धर्मात्त धर्मात्त (ब ४)।

सिद्धा पुं [सिद्धा] दृक्काय विष्णु का देव (वि १ २; पाथ)।

सिद्धा न [सिद्धा] १ बट्टी दुराट। २ वि. सीका-मुष्क लक्ष्मी-मुष्क (पाथ; स्वप्न ११; नट्टा कन्य दुराट १ २१ ४ ४१)। दुपा २)।

सिद्धा पुं [सिद्धा] बट्ट, कन्य (धर्मा ७ २११ दुप ४११)।

सिध्व-सिध्व

सिध्व } देवो सिध्व = सिध्व ।

सिध्वया श्री [सिध्वया] स्वयम्भुव (गुप्ता १११) ।

सिध्व मरु [सिध्व] पशोय होता । सिध्वमरु (पृष्ठ २०१) । बह्व-सिध्व (गाठ-उत्तर ११) ।

सिध्व देवो सिध्व (सम्पत् १७) ।

सिध्वमरु पुं [सिध्वमरु] एक सुप्रसिद्ध प्राचीन वैद्य मरुति (कप्य-उ ७० छंदः) । सिध्व देवो सेव्य देवो देवो (कप्य पश्चि ११३, ११४) ।

सिध्वया श्री [सिध्वया] १ सिध्विना (सम १३, उवा १३३) । २ उवाचय बसति (मोक्ष ११७) । उरी, पुरा श्री [उरी] उवाचय श्री मास्तिन (मोक्ष ११७ नि १०१) । वास्ति श्री [पास्ति] सिध्विना का कप्य कप्येवास्ति वास्ति (गुप्ता १४१) । देवो सेव्य ।

सिध्वि (पन) नि [सिध्व] उत्पन्न किया हुआ क्रियावा हुवा (निर्ण) ।

सिध्वि नि [सिध्व] विवस्व पशोय हुवा कप्य हुवा बह्व, पशोयवासा (पा ४ ७ ४ न ७७४) कुना । श्री उ (ह ४२२७) ।

सिध्वरु न [सिध्व] पश्य (ह ३ १) ।

सिध्व मरु [सिध्व] १ सिध्व होता बनय । २ पन । ३ मुक्त होता । ४ मरुत होता । ५ एक मरुत करता भाव । ६ मरुत करता । सिध्वमरु (ह ४ २१७ भाग वहा) सिध्वमरु (कप्य) । मुक्ता सिध्वमरु (कप्य नि १११) । पश्चि सिध्वमरु, सिध्वमरुति सिध्वमरुति सिध्वमरुति (उवा मरु नि १२७) वहा । बह्व-सिध्वमरु (निर्ण २११) ।

सिध्व देवो सिध्व (पन) ।

सिध्वमरुया श्री [सिध्वमरु] १ सिध्व मुक्ति, सिध्वमरुया श्री [सिध्वमरु] (कप्य १४७-न १३१) ७६१ पन मरुत पशोय १२११ पशो १ १०) । २ निमित्त कायवा

बन्धो पशोयवा करे

निध्वमरुतिमरुतिमरुति ।

निध्वमरुति विध्वमरुति

पशोयवा हुवा पशोय

(रक्त ४६) ।

सिध्व नि [सिध्व] बसि उत्पन्न (उ २०१) ।

सिध्व नि [सिध्व] १ बसि उत्पन्न (उ २०१ टी १५) । २ मुक्त । ३ सिध्व । ४ मुक्ति । ५ बह्व प्रभु । ६ उत्पन्न (ह १, १२८) ।

सिध्व नि [सिध्व] १ बसि उत्पन्न उपरि (गुर १ १११) २ १०४ श्री ३ वहा (११६) । ३ लब्ध स्वामय, प्रसिद्ध (उ ७१० टी १५ १४० सिध्व ४२) गुप्ता ४७) । ४ गार पुं [गार] स्वामय हो वहा (न १) ।

सिध्व नि [सिध्व] श्री कर उवा हुवा (पन) ।

सिध्वि श्री [सिध्वि] १ सिध्व-निर्णय वन वहा (गुप्ता १११) वहा । २ निर्णय वहा । ३ स्वयम्भुव । ४ सिध्व निर्णय होता हो बह्व (ह १ १२०) । ५ वीषा मरु पश्चिमपेश वहा 'बह्व' पशोयमरुति सिध्वि सिध्विदिकपेश पशोयमरुति 'बह्व' (सिध्वि २००) ।

सिध्वि पुं [सिध्वि] बह्व-नेत्र नवर का हुवा स्वयम्भुव, महाजन (कप्य गुप्ता १०) । पश्य न [सिध्वि] नवर-नेत्र श्री वहा (गुप्ता १४२) । देवो सिध्वि ।

सिध्वि श्री [सिध्वि] सिध्वि-पशोय सिध्वि (गुप्ता १२) ।

सिध्वि श्री [सिध्वि] श्री सिध्वि (मरु ७) ।

सिध्वि नि [सिध्वि, सिध्वि] १ बह्व, वहा । २ बह्व जो मरुत वहा बह्व । ३ मरु (ह १ २१५ २२५ गार गुप्ता १ २) वहा ।

सिध्वि मरु [सिध्वि] सिध्वि करता ।

सिध्वि सिध्वि, सिध्वि (उवा वहा १ १६ ११) सिध्वि (पशो १४१ नि ४६) । बह्व सिध्वि (उ ३ ६२) ।

सिध्वि सिध्वि नि [सिध्वि] सिध्वि करता हुवा (गार ११) ।

सिध्वि सिध्वि नि [सिध्वि] सिध्वि करता हुवा (गुप्ता १४७) ।

सिध्वि सिध्वि नि [सिध्वि] सिध्वि करता हुवा (गुर १ ११ १०१) ।

सिध्वि सिध्वि नि [सिध्वि] सिध्वि वहा हुवा (पन ११ २४) ।

सिध्व देवो सप्य = सप्य (वो १ गुप्ता १०६ या ५६०) ।

सिध्वमरु देवो सिध्वमरु = मरुत 'सिध्वमरु' 'सिध्वमरु' (सिध्व १२०) ।

सिध्व मरु [सिध्व] स्वामय, वहा ।

सिध्व (गुप्ता १ ७ २१ गार २०) ।

सिध्व सिध्वमरु (गुप्ता २ ७ १७) । हह्व सिध्वमरु (मोक्ष) ।

सिध्व पुं श्री [सिध्व] मरुत-निर्णय वहा वहा करेवास्ति मरुति (गार २०) ।

सिध्वमरु [सिध्वमरु] वहा वहा (मरु १३, मोक्ष ४११) वहा (१४) ।

सिध्व देवो सिध्वमरु = स्वामय (म ४ १-५ १११ २, १-५ १११) ।

सिध्व देवो सिध्वमरु । सिध्वमरु (वह १, ११) । बह्व सिध्वमरु (वह १ १२ नि १११) ।

सिध्वमरु } नि [सिध्वमरु] १ गार सिध्वमरु } मरु (गुप्ता २ २ ११) । २ सिध्वमरु } मरु-निर्णय वहा वहा वहा वहा वहा (म २३, १ सिध्व ११० टी १ २-५ १११ १११ १११) । ३ वहा वहा वहा वहा (गुप्ता २, १ १११) ।

सिध्वमरु मरु [सिध्वमरु] स्वामय करता ।

सिध्वमरु (मोक्ष) (गाठ-पेश ४६) ।

सिध्वमरु सिध्वमरु (मरु २ २ १ १ १११) ।

सिध्वि श्री [सिध्वि] मरुत (गुप्ता ११३-निर्ण १ २) ।

सिध्वमरु मरु [सिध्वमरु] मरुत करता ।

सिध्वमरु (गार २४) । मरु, सिध्व (ह ४ २२२) । बह्व सिध्वमरु (गुप्ता ७ १) ।

सिध्वमरु नि [सिध्वमरु] । मरुत-मरुत वहा

मरुत (सप्य २१) । मरुत (२) । २ पशो

मरुत (गुप्ता) । ३ मरुत मरुत । ४ वहा । ५ मरुत वहा (ह १ १ १ १११) ।

मरुत ।

सिणेह देवो सिणेह (नका साया १ ११—
पन १०१ अण्य ११, बुना; गनु ६)।

सिणेहाडु नि [सोहण] स्नेहवाता (घ
७११)।

सिण्य नि [सिण्य] स्नेह-मुखा (घ २४४)।

सिण्य देवो सिण्य = टीरो (गह—मुण्य
११)।

सिण्य पुन [शिरान] पुण्य, पुन्य-निन
(आय ६४ ६)।

सिण्य को [रे] १ दिन याकास से विद्या
नक-क्या (वि न, ११)। २ यनवाक, कुण्य,
कुहावा (वि न ११; पाय)।

सिण्यान्न पुन [रे] कन-मिलेन (मनु १)।

सिचि देवो सिद्ध = (रे) (नन १)।

सिच नि [सिच] टीका ह्या (पुर ४ १४४)
कुना)।

सिचुज देवो सेचुज (मुस १२)।

सिच न [रे] डल, कनु की ओरी सिच
३ यलोचन में यह मही देव हने (कुस १४)
पाय)।

सिच न [रे] न [सिच] १ बाल-कण्ड (पुण्य
सिचय) १ १—यन ११ कन्या दीप
मनु १४२)। २ नोन (वि १ ११; पाय
पन ७२ टी)। ३ दीप-निरोध, दीप
दीप (वि २ ७७)। ४ पुन, कनक डल
‘माते माते ड का कन्या एचिनेका पाण’
(नम १ २ ग्रम)।

सिचया की [रे] १ बाला। २ बीवा, कनु
की ओरी (रे ८ ११)।

सिचिय पु [रे] मय्य, मज्जी (वि २)।

सिच नि [रे] परिपार्य विचार्य चीप
ह्या (वि न १)।

सिच नि [सिच] १ पुच, मोह-प्राज्ञ, निर्वाक-
प्राज्ञ (अ १—यन २१, कन, कन्य विधि
१ २७ २६ अण्य ६ बी १४ कुस
२४४ १४२)। २ सिचय कन्य ह्या
(गनु १)। ३ कन्य ह्या (गुना १११)।

४ कण्य, निच (विप १७६)। ५ अतिष्ठ
कन्य-प्रतिष्ठ (विप १७६ अण्य १)। ६
प्रतिष्ठ, निर्वाक (बन १)। ७ निचय
प्रतिष्ठ (विप १८)। ८ कन्य-निरोध

वाच्य-निचयक कन्य (अय ८६)। ९ सिचि
विप्य ह्या। १ प्रविष्ट कन्य (पंच ११

२६)। ११ पु विद्या नच कन्य सिचय
पाणि में विचने पुर्वीय प्रात की ही यह

पुच (अ १—यन २१; विधि १ २६ नका
६८)। १२ सम्य-परिप्राज्ञ विरोध स्वीक-

विरोध (कन्य)। १३ न, कन्यावार पनय
विरोध के कन्यावा (संयोग १०)। १४ पुन,

यहादिमवस पाणि अनेक पर्वी के सिचों
का नाम (अ ८—यन ४११ १—यन

४१४ ४४)। कन्य पुन [सिच] ननो
परिचयको यह कन्य (अय)। गहिया

की [गण्डिका] सिच-संनयी एक कन्य-
प्रकण्ड (कन)। नक न [चक्र] यहाँ

यदि नन पच (सिचि १४)। अ न [चि]
कना ह्या यन (गुना १११)। पुच पु

[पुच] नन साधु वीर नृप्य के वीच वी
यनस्वायाना पुच (संयोग ११; निह १)।

मनोरम पु [मनोरम] यन का पुच
नि (कुस १ १४)। पाच पु [पाच]

विचन की बापूरी छाया के कुचयन कर
एक पुचिष्ठ राजा जो सिचयन कर्माह के

नाम से प्रसिद्ध था (कुस २२; नाय ११)।
नाच पु [पाच] बापूरी छाया के

पुचयन का एक प्रसिद्ध नैन बधि (कुस
१७६)। सेज पु [सेन] एक वृचिष्ठ

प्राचीन नैन महाविष् कीर छात्रिक पाचार्य
(अमर १४१) ‘सेपिया की [अपिया]

पाचार्य नैन यन कन्य का एक लल (छवि)।
संल पु [शैल] कनुन पर्वत वीपय

के में पावीठाना के पाच का नैन मज्ज-
दीर्घ (मुच १ ३ सिचि १४२)। ‘हैम

न [हैम] पाचार्य हैमकण्ड विचिचय प्रसिद्ध
मार्कण्ड-अण्य (मोह १)।

सिचौव पु [सिचय] १ याक याक (कन
ह्य १ छवि)। २ निचय (घ १ ३)।

सिचय पु [रे] यन देन-विरोध (वि
११)।

सिचय नि [सिचय] १ कन्या कनय्य
(पन ७२ ११)। २ पु मन्वाय महावीर

प्राची वृचि विन-वेन (यन १२४)। ३ एक
नैन पुचि जो नन के कनके के टीका-पुर से

(पन १ २ १)। ४ वृच-विरोध (गुना
७७; निह ४६१)। ५ वृच वृचों (पनु

२१ कुस ४१ पन ११४ ६ ४२१)
यन ६६)। ७ मन्वाय महावीर के कन

से कीर निचयनेवाया एक बधि (विप
६६)। ८ एक हैम-विमान (अन १८ पाचा

१ १४, १; हैम १४२)। ९ कन-विरोध
(पाच)। १० पचिचयन नन का एक राजा

(विप १ ७—यन ७२)। ११ एक कन्य
का नाम (अन ११—यन ११४)। पुर न

[पुर] यन देन का एक प्राचीन नन (गु
२ १८)। यन न [यन] यन-विरोध

(कन)।

सिचया की [सिचया] १ कन्याय यमि-
कन्य-स्वायी की याचा का नाम (अन

१११)। २ एक विद्या (पन ७ १४२)।
३ यनवाय संनवायन की टीका-निचयन

(विचार १२६)।

सिचयिया की [सिचयिका] १ सिच-ननु-
विरोध (पुण्ड १७—यन १११)। २ यन-
पच-विरोध सेने की कन्य (वीन)।

सिचय पु [सिचय] १ वृच-विरोध सिचुवार
कन्य कनय्य का नाम। २ यन कन्य (वि

१ ७)।

सिचया की [सिचया] १ कन्याय महावीर की
वाचन-वीर सिचयिका (संति १)। २

वृच-विरोध वृचि-स्वान सिच-विद्या (यन
२२)।

सिचयिका की [सिचयिका] कन्याय म्हा
वीर की वाचन-वीर (कन १२)।

सिचययण पुन [सिचययन] १ यनयन
यनियर—देन-यन। २ यन-यनियर (ठा ४

२—यन २२६, हका मुर १ १२)। ३ यनयन
वर्षों के सिचों का नाम (कन ४४)।

सिचययन की [सिचययन] पुच-यनय-
विच-विद्या (वीन पन ११ १११ ४४)।
जी. या (अ —यन ४४ ग्रम २१)।

सिचि की [सिचि] १ सिच-विद्या। वृच-वी-
विरोध, वृच पुच वीन यनो हैं (अन ४४ ४४)

न—पञ्च ४४ प्रीत ४४)। २ पुष्पि, निर्वाण
मोक्ष (अ १—पञ्च २३ यथा प्रीत ४४)।
१ कर्म-शय (सुप २ ५, २३, २५)। ४
परिणामा धारि मोग की टाकि (अ १)। ३
कृतायता, कृतायता (अ १—पञ्च २३
कर्म प्रीत)। ६ निष्पत्ति 'न कर्माह पुष्पि
योषो वक्रमसिद्धि समायोष' (वच)। ७
सम्पन्न (वचि १ १२२)। ८ पञ्च विरोध
(निम)। गङ्गा की 'गति' पुष्टि-स्थान में
पान (कर्म प्रीत पति)। गङ्गाया की
[गतिहृत्] धर्म-प्रकृष्ट-विरोध (वच ११
१—पञ्च २२१)। पुर न 'पुर' नगर
चिह्न (सुप २२)।

सिद्ध नि [सिद्धि] मोक्ष गता हृद्य (गुण
११ निर ७० टी)।

सिद्ध देवो सिद्धि = सिद्ध (गुण ११)।

सिद्ध प्रीत [सिद्ध] १ सिद्धा हृद्य हाथी-मोक्ष
धारि। २ देव का धनुष (ह १ १३
कुमा)। की 'ता धनुषि नगरे परोक्षि
समुत्तिष्ठति' (पुर १२ १ ४)।

सिद्ध देवो सिद्धि। सिद्ध (पद)।

सिद्ध न [सिद्ध] पञ्चाश पुष्पक वृक्ष-विरोध
(ह २ न)।

सिद्ध न [सिद्ध] काच-कार्य, कपोतपै,
निमादि-विमान कला, हुनर, किना-मुद्रकला
(पद १ १—पञ्च २३ उगा प्रामु न)।
२ देवसम्पन्न, धीन-वैवाह। ३ धीन का
बीज। ४ पुं देवसम्पन्न का वसिष्ठका के
(अ १—पञ्च २२२)। सिद्ध पुं
[सिद्ध] कला में धनुषकला (धनुष)।
[बीज नि [बीज] काटीयर, कला—हुनर
के बोधित-निर्वाह कपोतला (अ ५, १—
पञ्च १ ४)।

सिद्धा की [सिद्धा] नरो-विरोध को जौन
के पाद व पुनर्यौ है (अ २५३ वच ३
२१० वच ३)।

सिद्धि नि [सिद्धि] कपोत, हुनरी
निम धारि कला में मुद्रक (प्रीत मा ४)।

सिद्धि की [सिद्धि] धीन, मोक्ष (ह २,
११ वच; पद कुमा प्रामु १४३ नि
१४३)।

सिद्धि नि [सिद्धि] सिद्धी काटीयर
(पद)।

सिद्धि न [सिद्धि] वृक्ष-विरोध पञ्चाश पुष्पक
(पद १—पञ्च २३ या २३)।

सिद्धी की [सिद्धि] वृक्ष, वृक्ष (पद)।

सिद्धी देवो सिद्धि (या ११ या नि
२११)।

सिद्धि देवो सिद्धि (वच १ २७)।

सिद्ध देवो सिद्धि (वच)।

सिद्धा की [सिद्धा] वृक्ष या जटाकार वृक्ष
(ह १ २३६)।

सिद्ध व [सिद्ध] वच वच (प्राया)।

सिद्ध देवो सीमा 'चाव धिम्बनिहृत् पत्तो
नगरत्स बाधिभ्यो' (गुण १२२)।

सिद्धसिद्ध } वच [सिद्धसिद्ध] 'सिद्ध
सिद्धसिद्धा' सिद्ध धानाव कला। सिद्ध
सिद्धासिद्ध (वच ८२)। वच सिद्धसिद्ध
(या २११ व)।

सिद्धि देवो सुमिद्धि (ह १ ४५ २३६)।

सिद्धि (वच) देवो सिद्धि (वच)।

सिद्धिसिद्ध } देवो सिद्धिसिद्ध। वच
सिद्धिसिद्धा } सिद्धिसिद्धा, सिद्धि-
मार्ग (या २५ १ नि २५८)।

सिद्धिसिद्धि नि [सिद्धिसिद्धि] 'सिद्ध
सिद्ध' धानाव कपोतला (वच १ २, २३)।

सिद्ध वच [सिद्ध] १ कला निर्वाह
कला। २ कपोता व्याव कला। सिद्ध
(पि २१३) सिद्धि (पि १३७६)।

सिद्ध न [सिद्ध] १ मल्ल, माया विर
(याव मुया नव)। २ प्रथम वंश। ३
वच धन (ह १ ३१)। का न [क]
सिद्धाव मल्ल का वच (५५, ११;
कुमा प्रामु २२२)। वाप काप न
[काप] वचो वृक्ष वच (कुमा १ ८८)।
'वचि की [वचि] निष्पत्ति विरोध विर
में वच-वीर वच उच में वच वच धारि
वृक्ष वच वच (सिद्ध १ १—पञ्च १४)
'सिद्धाव' (विश्वलीय) (याव १
१—पञ्च १४)। वचि देवो सिद्धि वचि
(गुण २३२)। वच [वच] वच वच
(कर्म कर्म प्रीत, व २७८)। वच न

[गृह] मकान के ऊपर की वच, वचवा
(ह ५ ४५)। देवो सिद्धि।

सिद्ध देवो सिद्धि (जी १)।

सिद्ध देवो सिद्धि = सिद्ध (कर्म वच
'सिद्ध' १ ४—पञ्च १० प्रीत)।

सिद्धावच नि [सिद्धावच, सिद्धावच]
मल्ल पर प्रथिष्ठा कपोतला, विर पर
परिभ्रमण कला (याव १ १—पञ्च १३
कर्म प्रीत)।

सिद्धा की [सिद्ध, सिद्ध] १ न वच नाकी
(याव १ ११—पञ्च १८१ की १ की
१)। २ वाप प्रथि (कुमा उच १११)।

सिद्ध देवो सिद्धि (कुमा की २० प्रामु
२२ ८० कर्म १ १ नि २०)। वच
वच [सिद्ध] माधव में होनेवाला वच
वचवा राजा (वच १२४)। वच न [सिद्ध]
नगर-विरोध (वच २३)। वच पु
[कर्म] १ वच माधव (कुमा)। २
वापवाच का एक राजा (वच १ १)।
वच पुन [वच] एक वच-विमान (वच
२७)। वच की [वच] १ एक राज-
वली (वच १ ८०)। २ एक वचकर
वली (वच १३)। ३ एक वच-कला
(वच)। ४ एक वचकरली (वच)। वच
वच वच [कर्म] वच-विरोध वच-
वच वचवा की एक वच (पद १—
पञ्च ४६)। वच न [वच] १ माया-
वाच वच वच-विमान। २ वचवा (गुण
१११)। वच वच नि [वचवा] की
कला-वचवा (गुण १११)। वच वच
[वच] वच वच वच का एक वच
(वच)। वच वच [वच] वच (गुण
२, २६, कर्म)। वच देवो वच (गुण
४२३)। वच वच [वच] वच वच का
एक राजा वच वच-विमान (वच १, १११)।
वच वच [वच] एक वच वच (कर्म)।
वच न [वच] वच, वचवा (याव १
१—पञ्च १३ वच २३)। वचि नि
[वचि] वचवा वचवा (वि १४२)। वच वच [वच] १ एक वच
वचवा वच वच-विमान (वच ४६, गुण
१२८)। २ वच वच में होनेवाला एक

मिनरेव (घम १२५- पत्र ७) । ३ घाड़ों
बधरेव का पूर्वमनीय नाम (पत्रम २
१२१) । बंधा की [बन्धन] एक
पुष्करिणी (इक) । २ एक राज-मन्त्री (ज
१५६ टी) । बहू [बन्धन] एक लै
पुमि (कम्य) । घावर न [नगर] बैठाव
की बहिर-मोरी का एक निवासरनवर (इक) ।
बेथी नयर । जिधन्य न [निधन्य]
बैठाव की बहर-मोरी में स्थित एक
निवासर-नवर (इक) । निधन्य न [निधन्य]
बैठाव पर्वत की बहिर-मोरी में स्थित
एक नवर (इक) केनो निधन्य । निधन्य की
[निधन्य] एक पुष्करिणी (इक) । निधन्य
दु [कामक] निधन्य कीक (कुमा) ।
ठाकी की [ठाकी] कृत्र-विरोध (कम्य) ।
बस दु [बस] ऐरावत बर्ष में उत्पन्न
पर्वत विन-रेव (पत्र ७) । वाम न
[वामन] १ शोभावाली नगा (नं २) ।
२ कायल-विरोध (घामन) । ३ दु एक
छाया (विना १ ६—पत्र १४) । वामकंड
वामगंड पुन [वामगण्ड] १ शोभावाली
नगाओं का बन्धु (नं २) । २ एक वेव
विमान (घम १२) । वामगंड पुन
[वामगण्ड] १ शोभावाली नगाओं का
बधनकार छन्द (नं २) । वैदी की
[वैदी] १ वैदी-विरोध (घाम) । २ लक्ष्मी
(धर्मि १२७) । वैदीन्य पु [वैदी-
मन्त्र] कर्मवेव (धर्मि १७) । वैदीन्य
दु [वैदीन्य] १ वामन । २ वि. की वे
बन्धु (कुमा १११) वाम १३ टी) । नयर
न [नगर] बंधाव देव का एक छंद
(कुमा) । लो घावर । निधन्य पु [निधन्य]
बानुदेव (पत्र १७, ६) । केना जिधन्य ।
पट्ट दु [पट्ट] मगर-मोरी का मुचक एक
छाया-विह (कुमा २४) । पत्रम्य पु
[पत्रम्य] पर्वत विरोध (वज्रम २) । पट्ट
दु [पत्रम्य] एक प्रविष्ट देव धारावी धीर
बनदार (धर्मि १२२) । पाल देवी
वाम (धर्मि १४) । पाल दु [पाल]
विन-मुच (कुमा) । पाल दस । नूद दु
[नूद] मारुत में होनाये छंद
बनारों पत्रा (घम १२४) । प देवा

मंत (उप दु १७४) । मई की [मई]
१ हज-नामक विवासर-पत्र की एक पत्नी
(पत्रम १ ३) । २ एक राज-पत्नी (महा)
३ एक सार्वभौम-पत्नी (महा) । मंगल
दु [मंगल] बहिर घावर का एक मंत
(ज ७६८ टी) । मंत वि [मन्] १
शोभावाली शोभा-मुच (कुमा) । २ न,
मिचक वृक्ष । घावरन वृक्ष । ४ विष्णु । ५
विन महादेव । ६ घाम कुमा (है १
१२१) वर । मन्त्र न [मन्त्र]
बैठाव की बहिर-मोरी में स्थित एक
विवासर-नवर (इक) । मन्त्र पुन
[मन्त्रिक] एक वेव-विमान (घम २७) ।
मन्त्रिका की [मन्त्रिका] एक पुष्करिणी
(इक) । माळ पु [माळ] एक प्रविष्ट
नगर (कुमा १४१) । माळपुरन [माळपुर]
एक नगर (वी १२) । पर्वत केनो कंड
(बज्र) । पर्वत केनो कंडका (पत्र १
१—पत्र ७) । पट्ट दु [पट्ट] वीकण्ड
बानुदेव (घमपत्र ७२) । पट्ट दु [पट्ट]
१ विन्येव घावि महापुत्रों के हृदय का
एक ऊँचा धारकाकर विह (वीना घम
१२३ महा) । २ मन्त्र वेवको के हृदय
का एक पारिवायिक विमान (ज ८—पत्र
४३७) । ३ एक वेव-विमान (पत्र १२
वेद १४ धीर) । पण्डा की [पण्डा]
मन्त्राण्य वेवासरवाली की घावरन-मोरी (बहि
६) । बहिरम्य न [बहिरम्य] वीकण्ड
देवको का एक विमान (घम) । वज्र
न [वज्र] एक छाया (घम ४) । वज्रा
की [वज्रा] वृद्ध-विरोध (पत्र १—पत्र
११) । वज्र (पत्र) देवो मंत (महि) ।
वज्र पु [वज्र] एक छाया (पत्रम २,
२२) । वज्र पु [वज्र] पर्वत-विरोध (है १
१७० १२ टी) । वारिचय पु [वारिचय]
ऐरावत बर्ष में होनाये वीकण्ड
विमन (पत्र ७) । वाळ पु [वाळ] १
एक प्रविष्ट देव छाया (सिरी ११) । २
छाया विन-पत्र के लवण का पट्ट देव बानुदेव
(कुमा ११२) । संभूया की [संभूया]
पत्र की छाया छंद (कुमा १ १४) ।
वासव पु [वासव] ऐरावत बर्ष में

उत्पन्न वृद्ध विन्येव (पत्र ७) । "सेज दु
[सेज] एक छाया (ज १५६ टी) । "सेज
दु [सेज] वृद्धमन (पत्रम १७ १२) ।
सोम पु [सोम] मारुतबर्ष में होनाये
छाया बानुदेव छाया (घम १२४) ।
"सोमनस पुन [सोमनस] एक वेव
विमान (घम २७) । हर न [हर]
मंदार (घा २४) । हर पु [हर] १
मन्त्राण्य पारिवायिक का एक पुमि-पट्ट । २
कमलाण्य पारिवायिक का एक वृद्ध-पुत्र—पुत्र
विन (कम्य) । ३ मारुतबर्ष में पट्टीव
उत्पत्ति का कर्म उत्पन्न छाया में विन्येव ।
४ ऐरावत बर्ष में वर्तमान वनसिद्धि का
में उत्पन्न वीकण्ड में विन्येव (पत्र ७ ज
१५६ टी) । ५ बानुदेव (पत्रम १७ १२
वज्र) । हर वि । [हर] की का हृदय
करतेवाला (कुमा) । हल न [हल]
विन पत्र (घाम) केनो फल ।

सिरिख पु [सिरिख, धीयक] वृद्धावस्था का
छोटा भाई धीर नम छाया का एक नग्नी
(पत्रि) ।

सिरिख न [सिरिख] स्वच्छन्दता (दे ७१) ।

सिरिख पु [सिरिख] विट, नम्य, कम्य (दे
८ १२) ।

सिरिख पु [सिरिख] पत्नी का पल-नाम
(पत्रम १ १२) ।

सिरिख वि [सिरिख] मन्त्र-मुच विन्येव पुन में
नम हो बह (दे ८ १२) ।

सिरिया केनो सिरी (घम १२१) ।

सिरिख की [सिरिख] कर्म-विरोध (ज
१६, ८) ।

सिरिख पु [सिरिख] वीकण्ड नगा (दे
११) ।

सिरिख पु [सिरिख] हल पत्नी (दे ८, १२) ।

सिरिख देवी सिरि-वज्र ।

सिरिख पु [सिरिख] १ वृद्ध-विरोध विपदा
का वेव (घम १२२ है १ १ १) । २ न.
विपदा का वृद्ध (कुमा) ।

सिरी की [सिरी] १ लक्ष्मी कर्मता (घाम
कुमा) । २ पर्वत बन्धु विमन (घाम
कुमा) । ३ शोभा (वीना पत्र, नगा) । ४

पपह्व की प्रसिद्धि देवी (अ २ १—
प ७२)। २ उत्तर चक्र पर खनेवाली
एक विष्णुमारी देवी (अ ८—प ४१७)।
३ देव-प्रतिमा-विधाय (आया १ १ टी—प ४३)। ४ भगवान् कुमुनाय की माता
का नाम (प ११)। ८ एक योगि-न्या
(अ २२२)। ९ देव पुत्र याचि के नाम के
पुत्र में सभाया नावा धारत-मुक्त शम्भ
(प ७—कुमा नि २०)। ११ बाणी।
१२ देव-रक्षा। १३ धर्म प्राप्ति पुण्याय।
१४ प्रकर नेत्र। १५ कर्मफल जानन।
१६ दुष्टि मन्त्र। १७ प्रसिद्धि। १८ प्रस
देव। १९ मीति कर्मा। २ सिद्धि। २१
दुष्टि। २२ विनूति। २३ लम्ब लीय।
२४ सप्त कुल। २५ विन-कुल। २६
मोक्ष विधेय। २७ कर्मय पथ (ह २
१ ४)। देवो सिच विरि सी=मी।

सिरीस देवो सिरिस (आया १ ६—प १६)। यौन कर्मा।

सिरीसिच पुं [सिरीसिच] सच, साप (पुत्र
१ ७ १४ नि १: १७७)।

सिरो देवो सिर=सिर। चरा (सी)
देवो हरा (वि ३४७)। मयि पुं [मयि]
प्रधान प्रसूतो मुक्त 'ममलपरोमधी'
(अ २७ गुप १ १ प्रानु २०)। 'हह
पुं [हह] देव वाय (पाम)। विअजा
धी [वन्त] सिर की वीडा (ह १
१२६)। वयि देवो सिर-मयि (पाम)।
हरा धी [चरा] वीडा, क्मा डीक (पाम
आया १ १ ४=पमि २२४)।

सिच देवो सिज (कुमा)। व्यापाक न
[प्रपाक] विमुन (मीय)।

सिचं देवो सिचिच (पाम)।

सिचप पुं [च] चम्भ, विरे हुए मल-कणों
का झण्ड (ह १ १)।

सिजा बी [शिज] १ सिच-बटन पल्लर
(पम प्रप कम्प-कुमा)। २ योधा (व
१)। सठ पुन [सठ] सिद्धाधिक
पर्वों के अन्तर्गत होनेवाला प्रत्य-विधेय, जो
रक्षा के काम में प्रयुज है, सिद्धा-रथ (प
७२=मी कर्मवि ४४)।

सिज्जइह पुं [शिज्जविल] नमस्तेपुर का
एक प्रसिद्ध राजा (सी १२)।

सिज्जगा देवो सज्जगा (ह ८४)।

सिज्जप (सी) श्री देवो। ह सिज्जपणीज
(प्रवी २७)।

सिज्जह स [सज्ज] प्रसंसा करता।
ह सिज्जहण्ड (रथ १२)।

सिज्जहा धी [सज्जा] प्रसंसा (मै ८८)।

सिज्जि पुं [सिज्जि] मय-विधेय (प ७
१२६ सचोच ४३ या १८=वयि १ ०)।

सिचिच पुन [शिज्जि] १ कृष्-विधेय
जनक कृष् नुमिस्तक बुल (आया १ १—
प २२, २—प १६)। यौन कर्मा।

२ पुं पर्वत-विधेय (स २२२)। नखय
पुं [नखय] पर्वत विधेय (स २२४)।

सिज्ज पुं [वि] विष्णु, कर्मा (ह ८, १
मुर ११ २ ४) गुप १४)।

सिज्जि वि [सिज्ज] १ मोक्ष सुवरा
'ममलपरोमधी'मय-मुक्तमय-सिद्धि
विचिह्नकण्डा (प ४२ ४—प ७६)।
२ संघट मुक्त (मीय)। ३ धारिजित्त।
४ संघट। ५ स्वेवासंकर-मुक्त (ह २, १ ६)
प्राम)।

सिचिच देवो सिचिच (पाम)।

सिचिच पुं धी [सज्ज] स्वेधा कर्मा
(ह २ १२, १ ६) वि ११६)। देवो
संभ।

सिचिच धी [सिचिच] १ विधेय प्राप्ति
कृष् धारि-विधेय। २ पापम-विधेय,
रक्ष को वीकल करने का पापाय (आया १
११—प ८८)।

सिचिचिचि वि [सज्जपविच] लीपद मायक
रोपावा विधेय वैर कुमा हृदा भीर कर्मा

हो जाता है उस रोय के मुक्त (पाम-ह १)
सिचिचिचि पुं [सिचिचिच] १ मय टीर
(पाम-मुर १ ४४)। २ पाम का एक
मोटा (पम २६ १६)।

सिचिचि देवो सिचिचि=सिच। सिचिचि
(धर्म)। सिचिचिचि (पुम २ २ २२)।

सिचिचिच पुं [सिचिचिच] १ पर्वत पर्वत
(पुम २)। २ पर्वत पाहाड़ (रथ)।

सिचिचिच पुं [सिचिचिच] मय-विधेय
(मीय १ टी—प १६)।

सिचिचिच देवो सिचिचिच (पम)।

सिचिचिच स [सिचिच] धारिजित्त करता
मेटा। सिचिचिच (ह ४ १२)।

सिचिच पुं [सिचिच] १ नखय प्राप्ति संभान
(पुमि १०२)। २ धारिजित्त मेट (मुर
१६ २४)। ३ सचर्मा। ४ पाह (ह २
१ ६ पम)। ५ एक श्वासंकर (मुर
१ १२ १६ २४)।

सिचिच देवो सिचिचिच (मुर २)।

सिचिच पुं [सिचिच] १ कर्मा पम
सिचिचिच १ कर्मा (गुप १२८ गुप २६ ४)
धर्म १ पाह। २ मट, मीति (पुम १
११ २२) ह २ १ ६)। ३ कर्मा-विधेय
कर्मि कर्मा बनाने की कर्मा (मीय)।

सिचिचिच देवो सिचिचिच (पाम मुर १ ७
पम)।

सिचिच पुं [वि] १ कृत वरदा, सज्ज-विधेय
(गुप १११ गुप २० का विरि ४ १)।
२ पर्वत-विधेय, एक प्रकार का वरदान (सिचि
१८१)।

सिचिच देवो सिचिच। र पुं [चर] सिचि-
च, पल्लर मकनेवाला शिरी (सी १२)।

सिचिच न [सिचिच] कर्म-विधेय
(पाम)।

सिचिच धी [वि] यौन जाना (स १२, ७)।

सिच न [शिच] १ यज्ञ कर्मा। २
मुक्त (पाम कुमा मर)। ३ प्रसिद्धि (पम
१—प २६)। ४ पुं म. मुक्त मर
(पाम-कर्म ७६)। स १: कर्म यौन
पति)। ५ वि यज्ञ-मुक्त, उपर-पति
(कर्म यौन स १ पति)। ६ पुं महादेव
(आया १ १—प ३६, पाम कुमा
सम ७६)। ७ विधेय लीचिच, यौन
(पम १ ६, १२)। ८ एक पर्वत सिचि
मय-पाम-पर्वत के पाठ सीता-सी धी (ह
८—प ४६ पम ११ ६)। ९ पर्वत
मय-पाम-पर्वत का पति (स १२२)।
१ देव-विधेय (पम-पम)। ११ यौन
यास का लीचिच नाम (पुम १ १२)।

१२ एक हेर-विषय (हेरिङ्ग १४५) । १३
कान-विषय (विषय) । कर व [कर] ।
काली वस्त्रा की वस्ति । २ मुक्ति-मार्ग
(मुक्ति ११५) । गुरु की [गति] ।
मुक्ति मोक्ष । २ नि मुक्त, मुक्ति-प्राप्त
(प्राप्त) । ३ पु, मातृपद में प्रणीत जल
सिद्धि-मार्ग में जलन कोट्टे में विन-वेग (वग
७) । विप्र न [वि] काये कथारु
(हे ४ ४२२) । मंश को [मन्श] ।
मन्त्र-क-वाचक की वली (वली) । 'मूह पु'
[मुक्ति] । एक वीन मन्त्र (कम्प) । २
मोटिक मन्त्र—विश्वरूप वीन ब्रह्मवाय वा
स्वायक एक मुनि (विन २२३१) ।
यति को [यति] कस्तुन (डुबली
वा) वाय को कस्तुन कुरंगो विम (वर्द्धि
७ टी) । सेप पु [संन] ऐश्वर्य वर्ष में
जलान एक वस्त्र (वम १२३) ।

मिचंकर पु [मिचंकर] पाँचवें वस्त्र वा
विश (वम २ १२) ।

सिचक पु [सिचक] । एक वस्त्र होने
सिचय } क पुर्ण की एक वस्त्रा (सिच
२३१६) । २ वस्त्रपर मन्त्रवाच वा एक
मन्त्रात्म-वस्त्र (वक) ।

सिच की [सिचा] । भवमान केमिपान की
की माया का नाम (मम १३१) । २ लीचवें
केमिक के पुत्र की एक चर-यक्षिणी (अ
—वम ४१६ छाया २—वम २३१) ।
३ पतञ्जल विनये को प्रवर्त्तिनी—गुप्त
वाणी (वम ६) । ४ गृध्राणी मास विचार
(वसु ४२५ ११) । ५ पाँचवीं (वाय) ।

सिचार्थ का को सिच मंश (उवा) ।

सिचसि पु [सिचासि] भवतो न में प्रवीण
अर्थविशो-जस में जगद बाधक विनये
(वम ७) ।

सिचिच को सुमित्र (हे १ ६६ ग्राम
रंश गुप्त कण्ट) ।

सिचिपा को [सिचिप] गुप्तान्न, पातनी,
मयी (कम्प वीच: वहा) ।

सिचिर न [सिचिर] । स्मृतात्मा, कैल-
पितृत्व-व्यय, छात्री (गुप्त) । २ कैल
के, नरहर (गुप्त ९) ।

सिच्य एक [सीय] लोपा, सीपमा ।
सिच्य (वग् विसे ११५७) । यथ सिचि
स्वयि (वाचा १ ३ ३ २) ।

सिच्य को सिच्य = सिच (वाक २९ धर्मि
१७) ।

सिचिच वि [स्युन] विमा गुप्ता (वम १२) ।
सिचिचि १ को [वि] वृत्ति-पुर्ण (वि व
सिचिनी १ २६) ।

सिच्य को सिचिच = सिच्य । सिच्य (वग १) ।
सिचिर न [वि] वधि वधि (वि व, ११
वाय) ।

सिचिर पु [सिचिर] । स्मृति-विशेष वाच
वया पानुन का म्भित्ता (उम ७२२ टी हे
४ १२७) । २ वाच वाच का कोमिपर
(वम १ १६) । ३ पानुन वाच [सिचिरो
कमुल-माहो] (वाय) । ४ वि वक्, उक्, उक्
वोक्त (वाच उम ७६० टी) । ५ हुक्ता
(उम ७६० टी) । ६ न, विम (उम ६०६
टी) । ७ विम पु [विम] कलना (वर्णवि
३) । मदीपर पु [मदीपर] विनायक
वर्द्ध (उम ७०६ टी) ।

सिचिरि को सिचिरि (वम) ।

सिचु पु [सिचु] बालक, वस्त्रा (गुप्त
१ कम्प १२२) ; 'स वाच वाम्येव
विमुनि वीय वाम्येव' (गुप्त १०९) ।
आक पु [आक] वस्त्र वाच-वस्त्र (उम—
वम १७) । नाग पु [नाग] कुश गीत
विशेष वस्त्र (वम ३ १) । पाक पु
[पाक] एक अधिक धना (छाया १ १९—
वम १ गुप्त १ १ १ १; उम १०६
टी गुप्त २३६) । वम पु [वम] गुल
विशेष (वग १—वम ११) । वीच को
पाक (गुप्त १ १ १ १ टी) ।

सिच्य पु [सिच्य] । वस्त्र, छात्र
विशेष (छाया १ १—वम ९, मुपवि
१२७) । वी, स्या तसपी (वा १ छाया
१ १४—वम १) ।

सिच्य को स्यास = वीच (वम १) ।

सिचिरि को [वि] कम्प-विशेष (उम
१६, ६) ।

सिद्ध एक [सुद्ध] वस्त्रा वस्त्रा वाहय ।
सिद्ध (हे ४ ४४ प्राक २३) । क सिद्ध
विम (वि व, ११ टी) ।

सिद्ध पु [वि] वस्त्राविषय की एक वस्त्र
(गुप्त २ ३ २३) ।

सिद्धि पु [सिद्धि] विद्या गुप्त, वस्त्रो
(वाचा वधि १११) ।

सिद्धि वस्त्र पु [वि] वाचक विम । २ वीच-
सर, वीच की मलाई । म्भुट मोर (वि व,
४४) ।

सिद्धि वस्त्र पु [वि] वस्त्र वस्त्रा (वम १) ।

सिद्धि वि [सिद्धि] विम । १ विद्यावापी
(वम १ वीच) । २ पु म्भुट-वस्त्र,
मोर (वाच उम ७२२ टी) । ३ विम्यु
(गुप्ता १४२२) ।

सिद्धि वस्त्र सिद्धि (रंश) ।

सिद्धि न [सिद्धि] । वस्त्र के कम्प का
वाच म्भुट (वाच, वस्त्रा: मुर ४ २६; मे
१ २) । २ वस्त्र (वाचा १ ६) । ३
वस्त्रा वस्त्रा विमों के वस्त्रा (वस्त्रा
४०) । वस्त्र वि [वस्त्र] विमों के वस्त्रा
(वि ६, १०) ।

सिद्धि पु [सिद्धि] । एक वस्त्र
(वाच गुप्ता ४६) । २ वस्त्रा वस्त्र-विम
(उम २, ३—वम १६, उम १९, ४१) ६ ३
गुप्त, वस्त्र-विम (उम २, ३—वम ७) ।
४३ पु [वस्त्र] विमाल वस्त्र वि व
६२) ।

सिद्धि वि [वि] सिद्धि विमों वस्त्रा
सिद्धि } वाच-विम, वस्त्र-विमों वस्त्रा
वि वस्त्रा एक वस्त्र का विम काय (वि १
१२४० व ३६ वस्त्र १ ३—वम १४४
वम ४ वम ११३ कथा वम) ।

सिद्धि को [सिद्धि] । वस्त्रा वस्त्रा
सिद्धा } वस्त्रा वस्त्रा का वस्त्रा (रंश) ।
३२ वम २३१; वम छाया १ २—वम
१ ४० वस्त्रा ११) । २ वस्त्रा को वस्त्रा
(वाच गुप्ता वम) ।

सिद्धा वि [सिद्धा] विम । विमाला विम-
वस्त्र (वम) ।

सिद्धि पु [सिद्धि] । वस्त्रा, वम (वा
१३३ वम गुप्ता २१६) । २ म्भुट, मोर
(वाच: वस्त्रा ४२, वा २३१ १७१) । ३
वस्त्रा वस्त्रा वस्त्रा (वम २६ १) ।
४ वस्त्रा । ५ वस्त्रा । ६ वस्त्रा । ७ वस्त्रा

सीस स [सिप्] १ नम करना हिसा करता । २ रोय करना बाकी रहना । ३ निरोध करना । सीसह (ह ४ २३९ पृ०) ।
 सीस स [कमय] कड़ना । सीसह (ह ४ २ पृ०) ।
 सीस स [सास] बालु-विरोध सीसा (दे २ २०) ।
 सीस देवो सिसस = शिष्य (ह १ ४३ कुमा ३ ४०; पाया १ ३—पत्र १ ३) ।
 सीस पुन [शीर्ष] १ मस्तक माथा (स्वण १ प्रायु ३) । २ स्तनक पुच्छ (वा ३ २ १ = १) । ३ कृष्ण-विरोध (विप) । अ न [क] शिरकाय (वे १० ११) । "पडा की" "पटी" छिर की छह (वे १० १०) । पक्षपिल न [अकल्पित] संख्या-विरोध म्यालगा को बीछो बाब से पुने पर जो संख्या सम्य हो वह (इक) । पक्षिज सीन [मक्षिक] संख्या-विरोध, शीर्षह निम्न को बीछो बाब से पुने पर जो वस्था सम्य हो वह (इक) । सी. आ (अ २, ४—पत्र ८६ सम २; मयु २२) । "पक्षिर्गण न [म्रेडिक्क] संख्या-विरोध बुद्धिम को बीछो लाब से पुने पर जो संख्या सम्य हो वह (अ २ ४—पत्र ८६ मयु २२) । पूरा पूर्य पु [पूरक] मस्तक वा घामप्य (पना हंडु ४१) । कय, [स्य (पत्र) । पुन [कयक] कय-विरोध (विप) । तव पु [तवठ] कने बमके धारि से मस्तक को मयेटना (अ २ १) ।
 सीस देवो सास = साय ।
 सीसक न [दे शीर्षक] शिरकाय मस्तक का कय (दे १ १० दे १३ १) ।
 सीसम पुन [ह] सीसम का पाछ, मिश्रण (अ १ ३१ दे) ।
 सीसम रि [ह] प्ररु-व्यं (दे १ ३४) ।
 सीसम न [मासक] देवो सीस = सीध (महा) ।
 सीसपा धी [शिगपा] सीसम वा माथ (परा १—पत्र ११) ।
 सीह देवो सिसप = स्या (पत्र) ।

सीह पु [सिह] १ धावत बलु-विरोध कसरी मुग-पय (परा १ १—पत्र ७ प्रायु २१ १०१) । २ हृत्त-विरोध संहितने का पक्ष (ह १ १४४ प्रम) । ३ राक्षि-विरोध मेघ से पांचवीं राति (विचार १ १) । ४ एक म्मुत्तर देवलोका-गावी धेन मुनि (मनु २) । ५ एक धेन मुनि, जो धार्य-धर्म के शिष्य से (कम्य) । ६ मयवाग मह्यौर का शिष्य एक मुनि (मय १३—पत्र १८३) । ७ एक विद्यावर सामल राजा (पत्रम १ ११२) । ८ एक यक्षि-मुन (पुना २ २) । ९ एक देव-विद्यावर (सन १३ देवैर १४) । १० एक धेन धार्य वा रक्षीनस्य नामक धार्य के शिष्य से (एरि २१) । ११ हृत्त विरोध (विप) उर न [पूर] नगर-विरोध (परा) । कंड पुन [कान्त] एक देव विभाग (सन ११) । कडि पु [कडि] रावण का एक योद्धा (पत्रम २१ २०) । कण्य पु [कणी] एक कन्यारि (इक) । कण्णा धी [कणी] कय-विरोध (अ ११ १) । "कसर पु [कसर] १ पास्तल-विरोध जटिल कमल (परा १ १—पत्र १३) । २ मोरक-विरोध (अ १ १३ विह ४८२) । गह पु [गति] धर्मवर्ति तथा धर्मिवाहन नामक इत्र का एक-एक लोभ्यल (अ ४ १—पत्र १२०) । गिरि पु [गिरि] एक प्रसिद्ध धेन महि (अ ४ १२ दे १३) । गुहा धी [गुहा] एक मोर-यक्षी (परा १ १८—पत्र २३१) । गूड पु [गूड] विद्यावर-संघ का एक पना (पत्रम २, ४१) । जस पु [जरास] मयल बमरों का एक लोग (पत्रम २ १) । जाय पु [जाय] विद्वज्जन, विदु की कर्त्ता के मुख्य मान्य (पत्र) । जिहोडिय न [जिहोडिय] १ जिह की मति । २ ल-विरोध (अ २ २८) । ज्यसाह देवो ज्यसाह (पत्र) । जुषार न [जुषार] ज्यसाह, राज प्रसाह वा कुक्ष बलगा (अ १ ११२) । ज्य पु [ज्य] १ विद्यावर-संघ का एक पना (पत्रम २, ४१) । २ हृत्तिले बमरों का गिडा का नाम (पत्रम २, १८३) नार देवा जाय (परा १

१—पत्र ४३) । जिहोडिय, जिहोडिय देवा जिहोडिय (पत्र २३१; अ २ २८ पना १ ८—पत्र १२२) । जिमाह रि [जिमाहिन] जिह को लय देवेंवाता (पुन १ ८ ८ ८) । जिमिडा धी [जिमिडा] मयल बमरों का पत्रम परंत पर बमराया हुवा धेन मयिर (दी ११) । पुच्छ न [पुच्छ] पुन-नर्म पोड को बमरी (पुन १ ७३) । पुच्छम न [पुच्छम] पुन पिड का टोफना निम-काय (परा २ ३—पत्र १३१) । पुच्छिय रि [पुच्छिय] १ जिह का पुन-विह लोड दिया गया हो वह । २ जिह को कफटिका से बेकर पुन-देव—निहय तक को बमरी उकाड़ कर जिह के पुच्छ के तुल्य की जाय वह (धीन) । पुय पु [पुय] नयटी-विरोध विनय-लोग को एक राजबानो (अ २ १—पत्र ८; इक) । सुह पु [सुह] १ पनडीर-विरोध । २ जय देवेंवातो मनुज-जाति (अ ४ २—पत्र २२६ इक) । स पु [स] जिह-पर्वत जिह-नार जिह की लय धारा (पत्रम ४४ १२) । स पु [स] कमार देव के पु बर्तन नगर का एक पना (महा) । पाह पु [पाह] विद्यावर-संघ का एक पना (पत्रम २, ४१) । पाहण पु [पाहण] राजस-संघ का एक पना (पत्रम २, २११) । वाहणा धी [वाहणा] धर्मिक देवो (पत्र) । विहमगाह पु [विहमगाह] धर्मिबर्ति तथा धर्मिवाहन नामक इत्र का एक-एक लोभ्यल (अ ४ १—पत्र १२०) इक) । वाय पुन [वाय] एक देव-मान्य (पत्र १३) । सेन पु [सेन] भीमर्त विनोद का गिडा एक पना (अ १२) । २ अथवा धर्मिबर्त का एक कउवर (पत्र १२२) । ३ पना धर्मिक का एक पुन (अ २ २) । ४ पना महोदय का एक पुन (विना १ २—पत्र ८२) । ५ देवराज पत्र से ज्यसाह एक विनोद (पत्र) । वाया धी [वाया] एक नये (अ २ १—पत्र ८) । १—पत्र १३३ न [वायडि] मिहाना न जिह को लय बम। हुर पावे को तरक

सुप्रतिष्ठ न [सुप्रतिष्ठ] सदाचार, सदाचार
(प्रति २५३)।

सुप्रतिष्ठ वि [सुप्रतिष्ठ] पञ्चमी पण्ड
विप्रतिष्ठ (साम्य १—१७१ १६)।

सुप्रतिष्ठ [सुप्रतिष्ठ] पुनी लक्ष्मी (पा १ २)
५९३ (कुमा)।

सुप्रतिष्ठ [सुप्रतिष्ठ] शयन करना सोना।
सुप्रतिष्ठ (प्राक् ६४)।

सुप्रतिष्ठ [सुप्रतिष्ठ] यत्न का उत्कृष्ट-विशेष
की धारि करने की कृष्णी या लक्ष्मी
(वत् १२ ४३ ४४)।

सुप्रतिष्ठ वि [सुप्रतिष्ठ] मुक्त से—
प्रत्यक्ष से कहने योग्य (अ ५ १—
पत्र २६६)।

सुप्रतिष्ठ वि [सुप्रतिष्ठ] पञ्चमी पण्ड
प्रतिष्ठाना (अ)।

सुप्रतिष्ठ [सुप्रतिष्ठ] १ पवित्रता निर्मलता
विशेषमयिमा सुप्रतिष्ठो य वन्द्य दीर्घ
सुप्रतिष्ठाना (मुवा १६६)। २ वि श्वेत्
कर्म (कुमा)। ३ पवित्र निर्मल (योग
कर्म पा १२ भाषा कुमा)। ४ शी शब्द
की एक धर्म-महिती (ह)।

सुप्रतिष्ठ [सुप्रतिष्ठ] १ प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष
(वत् १ १ कर्म वि १२३)। २ प्रत्यक्ष
कर्म (पा १४१ सुप्रतिष्ठ १७४ इत्यमर
५४ सुवा ४६ २४७)। ३ श्वेत्-शब्द (प्राक्
मन्त्र ४ कुमा)। ४ शब्द सिद्धांत (धर्म
७ प्राप्ति ४६)।

सुप्रतिष्ठ [सुप्रतिष्ठ] लच्छ (विवा १ २—पत्र
१४)।

सुप्रतिष्ठ [सुप्रतिष्ठ] सुप्रतिष्ठ (वि १ १६)।

सुप्रतिष्ठ [सुप्रतिष्ठ] सुप्रतिष्ठ (सुप्रतिष्ठ ६ २३) उप ७२५
४६ ४६४)।

सुप्रतिष्ठ [सुप्रतिष्ठ] १ सुप्रतिष्ठ। २ सुप्रतिष्ठ
नमस्स। ३ सुप्रतिष्ठ (प्राक् वि २ ४)।

सुप्रतिष्ठाना की [वि सुप्रतिष्ठाना] सुप्रि-
कर्म करणवती की (मुवा ३७८)।

सुप्रतिष्ठ [सुप्रतिष्ठ] प्रत्यक्ष दीर्घ कर्म नष्ट
कर्म (पा ११७ ४६)। मुवा १ १२७
पा)।

सुप्रतिष्ठ [सुप्रतिष्ठ] सुप्रतिष्ठ (वि १ १ ६)।

सुप्रतिष्ठ वि [सुप्रतिष्ठ] प्राणायामी कर्म से संबंध
रहनेवाला कर्म होनेवाला (वि २४६)।

सुप्रतिष्ठ [वि सुप्रतिष्ठ] यत्नि (वि ८ १६)।

सुप्रतिष्ठ [सुप्रतिष्ठ] सुप्रतिष्ठ की माया मेना
(मुवा १६)।

सुप्रतिष्ठाना वि [सुप्रतिष्ठाना] प्रविष्टय संयम
में रहनेवाला सुप्रतिष्ठाना (सुप्रतिष्ठ १ ११ ७)।

सुप्रतिष्ठाना वि [सुप्रतिष्ठाना] प्रविष्टय संयम
प्राप्तिवाला (सुप्रतिष्ठ १ ११ ७)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] (लज्ज १
सुप्रतिष्ठाना)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] उज्ज्वल कला प्राणवी
(प्राक् वि १ ८ कुमा)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] प्राणायामी कर्म (स १६
वि ४६)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] १ सुप्रतिष्ठाना १ ८—पत्र
१३१ विवा १ ६—पत्र ६३)। २ सुप्रतिष्ठाना
विशेष कर्तु पर कर्त्ता राज-भर (बन्ध १२
टी सुवा ४७७)। ३ भर-पत्ता के पास से
कर्म पत्रवालों को लेने योग्य बन (विवा
१ ९—पत्र ६४)। ठाण न [स्थान]
सुप्रतिष्ठाना (बन्ध १२ टी)। प्राणायाम वि
[प्राणायाम] सुप्रतिष्ठाना पर निष्कृत राज-पुष्प
(मुवा ४७७)। वेदो सुप्रतिष्ठाना—युष्क।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना, प्राणायाम का
सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

सुप्रतिष्ठाना [सुप्रतिष्ठाना] सुप्रतिष्ठाना (वि ८ १८)।

बर, कोई हुई बीच की प्राणिक 'मदाविबद्ध' मिया मुदीर' (पुपा ११७) कुय २ २ कम्प १७२ कुम्पा १)।

सुदेसयिज वि [सुदेसयिज] विहाय पाहार की बीच करमेनासा (पण्ड २ १—पण १)।

सुदोषय पुं [सुदोषय] सुदोष के पिता का नाम। लणय पुं [लणय] सुदोष के (कम्प १४३)। सेको सुदोषय।

सुदोजय पुं [सुदोजय] सुदोष के (पाप)। सुदोषय सेको सुदोजय। पुच पुं [पुच] सुदोष के (पुत्र ४४)।

सुपम पुं [सुपम] १ भगवान् महावीर का पट्टवर पित्र्य (कुमा)। २ एक कैल मुनि (विपा २ ४)। १ तीवरे कसेव के पुत्र—एक कैल मुनि (पञ्च २ १०३)। ४ एक कैल मुनि का सातवें कसेव के पुत्र—जन्म में डर वे (पञ्च २ १६३)। ३ एक कैलाश' वह पञ्चमपुत्रि पञ्चमुपम' न कम्प' (सार् २२)। सेको सुपम।

सुपा सेको सुपा = पुपा (कुमा)।

सुपय पुं [सुपय] १ मण्डप के कबी दरें किसेव के पुत्रक का नाम (कम्प ११४)। २ एक कैल मुनि (पञ्च २ २)। सेको सुपय।

सुपकलच सेको सुपकलच (मम १३—पण १७० १७७)।

सुपिरी की [सुपिरी] पण्डी तरह मूल कलवाही की (पुपा २७६)।

सुपय पुं [सुपय] १ राजा राज के पण्डित एक विहावर भाग्य राजा (पञ्च ११३)। २ वि सुवर जोनवावा (पापन)।

सुनाम पुं [सुनाम] पनकम नपरी के राजा पण्डित का पुत्र (साम्पा १ १९—पण २१४)।

सुनिपुण वि [सुनिपुण] १ पण्डित सुम (कम्प ११४)। २ पण्डित बहुर (पुत्र ४ १११)।

सुनिपुण वि [सुनिपुण] पण्डित पित्र्य कलवा (कम्प ११४)।

सुनिगल वि [सुनिगल] विर-स्वादी (पित्रे ७६६)।

सुनिपुण्य वि [सुनिपुण्य] वृद्ध मिश्रवासा (पुपा ४९८)।

सुनिपुण्य वि [सुनिपुण्य] पण्डित लियल (पुपा ११३)।

सुनिमल वि [सुनिमल] पण्डित विर्मन (पञ्च २१ १२)।

सुनिरुपि वि [सुनिरुपि] पण्डी तरह कसावा हुमा (पुपा १२१)।

सुनिविम वि [सुनिविम] पण्डित विम (पुत्र १४ १७० कम्प)।

सुनिपुण्य सेको सुनिपुण्य (इ ४७)।

सुनिसाय वि [सुनिसाय] पण्डित लीकल (पुपा ३७)।

सुनिस्मि वि [सुनिस्मि] कम्प सेको (रस १ २)।

सुनिस्मि वि [सुनिस्मि] विरकुल शक्य पण्डित (पुपा १ ४)।

सुनीविषा की [सुनीविषा] सुवर तीरी—बल-प्रतिपत्ती की (कुमा)।

सुनेचा की [सुनेचा] पण्डित बसुदेव की पटरानी (पञ्च २ १७९)।

सुन न [सुन] १ पण्डित (पुत्र १६ १४६)। २—सेको सुण (पण्ड १)। बहा भय बाबा ल १६ १५)। पण्डित की [प्रत्ययिका पण्डित] एक कैल मुनि-कला (कम्प)।

सुभयार सेको सुणयदार (पुपा ११४ बर्गवि १२)।

सुभार सेको सुणयार (पुपा ११२)।

सुम्हा सेको सुम्हा (वा १७० बर्ग)।

सुप लक [सुप] मार्गन करना, जोन करना। सुप (पण्ड)।

सुपल वि [सुपल] १ व्यास-मार्ग में विरल। २ पण्डित-पुत्र (कुमा १ २०)। ३ पण्डित प्रीति। ४ पण्डित स्वयं विवि

पुत्र की गई हो वह (कुमा २ ४)। १ पुत्र पण्डित महावीर के पाठ लीक लेकर सुपि पण्डित का एक कलवा (पण्ड १०)। २ पण्डित विहा का बालकर पाचवां ख पुत्र (विहार ४७३)। ३ भगवान् सुपयनाम के पिता का

नाम (पुपा १२)। ४ भाइय मात का कोकोतर नाम (पुत्र १ १६)। २ पाण्डित (पाप)। १ म. एक मकर का नाम विपा १ ६—पण ८८)। ३ पुत्र [म] एक देव विमान (पण्ड १४ पण २१७)।

सुपल वि [सुपल] पण्डी तरह पण्डित प्रीति-पण्डित (मम पाप)।

सुपल वि [सुपल] पण्डी तरह पण्डित हुमा (पण्ड १ २)। गण्ड—पण्ड (३७)।

सुपल वि [सुपल] सुवर लज्जावा (कुमा)।

सुपल वि [सुपल] १ सुवर पीठ व पण्डित की भात (पापा १ ३, २ ३)। २ पुं एक कैल पण्डित (कम्प)।

सुपल वि [सुपल] पण्डित पीठ हुमा हो वह (पण्ड १४ ४३)।

सुपल वि [सुपल] सुवर प्रीति पण्डित (पण्ड २ ६—पण १२३)।

सुपल सेको सुपल (पाप)।

सुपल पुं [सुपल] पण्डित पीठ (पाप पुत्र सुपल १ १)।

सुपल वि [सुपल] १ सुवर कप से कपिल (पापा १ ४ १)। २ कम्प पाण्डित (रस ४ १)।

सुपल सेको सुपल (पाप)।

सुपल पुं [सुपल] १ एक विरल-पण्डित (अ २ ६—पण्ड ८)। २ पुं एक देव विमान (पण्ड १४)।

सुपल वि [सुपल] १ सुपरिपण्डित सुवर लज्जावा (पापा १ ७—पण्ड १११)।

सुपरिपण्डित वि [सुपरिपण्डित] पण्डित सुपरिपण्डित १ तरह विरल पीठ की गई हो वह (पण्ड १४)।

सुपरिपण्डित वि [सुपरिपण्डित] पण्डित सुपरिपण्डित १ तरह मिश्र (पाप मम)।

सुपरिपण्डित वि [सुपरिपण्डित] सुवर (पण्ड ४२ २६)।

सुपरिपण्डित वि [सुपरिपण्डित] पण्डित पण्डित हुमा (पण्ड १ २ ४२)।

सुपरिपण्डित वि [सुपरिपण्डित] विरल पीठ से लेने का नाम विहा हो वह (पापा १ १०—पण्ड २४)।

सुर्नाम पुं [सुनाम] प्रसन्न विप्र (वि २२) ।

सुनद वि [सुनद] शब्दी तच्छ बैवा हृषा (अ) ।

सुनद पुं [सुनद] १ सोम-नक्षत्र का एक रात्रा (पञ्च २, ११) । २ पृथ्वी बलदेव का पुत्र-कम्पनी नाम (पञ्च २, १६) ।

सुनद्वि पुं [सुनद्वि] प्रतिग्रह बसवान् (पु १८) ।

सुनद्वि वि [सुनद्वि] मति प्रमूढ (उच) ।

सुनद्वि वि [सुनद्वि] ज्वर रोगो (कण्) ।

सुनाह पुं [सुनाह] १ एक राज-कुमार (विषा १, १—पञ्च १, ३) । २ श्री कर्मिदास की एक कन्या (छाया १, ८—पञ्च १, ४) ।

सुनुदि की [सुनुदि] १ सुन्दर प्रजा (भा १४) । २ पुं चम-प्रज्ञा मय के साथ बीजा केनाभा एक राजा (पञ्च ८, ३) । ३ एक कन्या (मृग) ।

सुम्नि वि [सुम्नि] १ लज्ज, श्रेष्ठ (मुद्रा २, ६) । २ क. एक प्रकार की पत्थी (उप ७२) ।

सुम्न न [सुम्न] लक्ष्मी श्रेष्ठ (संकोच २२) ।

सुम्नि पुं [सुम्नि] १ सुकन्य कुल (सम ४१ अ. छाया १, १२) । २ वि. सुकन्या सुकन्य-पुत्र (उच १६, २८ छाया १, ३, ३) । ३ मनोहर, मनोज्ञ सुन्दर (छाया १, १२—पञ्च १, ७४) ।

सुम्नि क ॥ [सुम्नि] सुकन्य (मुद्रा १६) ।

सुम्नि की [सुम्नि] भारी महिला (रंभा) ।

सुम्नि पुं [सुम्नि] १ अन्धकार पाक्षिका का प्रथम पक्षर (अ ८—पञ्च ४, २६ सम ११) । २ अन्धकार नमिनास का प्रथम पक्षर (सम १२) । ३ एक सुष्ठव (पञ्च १७, ८२) । ४ अ. कम-कर्म का एक मंत्र (सम १७, कर्म १, २१) । ५ मन्त्र, कन्यास । ६ वि. पञ्च-नक्षत्र योगिक प्रसन्न (कर्म भाग्य १, ४४, ४५) । ७ सोम पुं [सोम] भवान् परमेश्वर का द्वितीय पक्षर (सम ११) । ८ सुभम् पुं [सुभम्] राजस-पट का एक राजा (पञ्च ३, २६२) । रोगो सुम्न = मृम ।

सुम्नकर व [सुम्नकर] वक्ष्य नामक बौद्धिक शैली का निवास (राज) । रोगो सुम्नकर ।

सुम्न वि [सुम्न] १ धातु-नक्षत्र (कर्म) । २ सोमाय-पुत्र कर्म प्रथम पञ्च-प्रिय (मुद्रा २) । ३ अ. पञ्च-प्रिय (मुद्रा २, ३, १०—उप ८२) । ४ कर्म विशेष (सम १७, कर्म १, २१, २, २२, २३) ।

सुम्ना की [सुम्ना] १ लता-विशेष (पण्य १—पञ्च १३) । २ सुकन्य नामक पुत्र के एक पटनी (अ ४, १—पञ्च २, ४ छाया २—पञ्च २, २१, २२) ।

सुम्न वि [सुम्ना] धातु-पञ्च विषय धातु धातु हो वह (उच १, ११, १२) ।

सुम्न रोगो सुम्न (भाट—मालवी ११८) ।

सुम्न वि [सुम्न] कर्म-पुत्र (उच) ।

सुम्न पुं [सुम्न] १ इन्द्रा-पुत्र का एक राजा (पञ्च २, १११) । २ सुन्दर वामदेव तथा बलदेव के कर्म-पुत्र (सम १११) । ३ पुं. एक देव-विमान (वेद १, ४२) । ४ अ. मन्त्र-विशेष (उच १, ११, १२) ।

सुम्ना की [सुम्ना] १ सुन्दर बलदेव की माला (सम १२) । २ प्रथम की-रत्न मय बालिका की धातु-माला (सम १२) । ३ बलि नामक पुत्र के सोम धातु भारी लोक-पात्रों की एक-एक धातु-माला का गम (अ ४, १—पञ्च २, ४) । ४ सुतन्त्र धातु माला के नामक नामक लोकपाल की एक-एक धातु-माला का नाम (अ ४, १—पञ्च २, ४) । ५ प्रतिमा-विशेष एक वत (अ ४, १—पञ्च २, ४) । ६ राज के धातु धातु की पत्नी (पञ्च २, १११) । ७ राजा कोष्ठिक की श्री (वीर) । ८ राजा कोष्ठिक की श्री (वीर) । ९ एक रात्री की (वीर) । १० एक रात्री-पत्नी (विषा १, २—पञ्च २, २२) । ११ अन्धकार-विशेष विशेष यह ही पञ्च होय कइसाता है (इक) ।

सुम्न रोगो सुम्न (अ २, १—पञ्च २, २७) ।

सुम्न वि [सुम्न] धातु तच्छ मय हृषा धातु, पण्य (उच) ।

सुम्ना की [सुम्ना] १ श्रेष्ठ-नक्षत्र की एक धातु (अ ४, १—पञ्च १, २) । २

एक विषय-श्रेष्ठ (अ २, १—पञ्च ८) । ३ रात्रि की एक पत्नी (पञ्च ७४, ११) ।

सुम्नासिय रोगो सुम्नासिय (उच २, २१, २२, २३, २४) ।

सुम्नासि वि [सुम्नासि] सुन्दर नक्षत्र-माला । श्री. रा (मुद्रा २६८) ।

सुम्निक रोगो सुम्निक (उच १, ११) ।

सुम्नि पुं [सुम्नि] धातु नौकर (मुद्रा ४६४, ६४, ६५, ६६) ।

सुम्नासि वि [सुम्नासि] मति मन्त्र (मुद्रा ७, २११) ।

सुम्नीसण पुं [सुम्नीसण] राजा का एक सुष्ठव (पञ्च २१, ११) ।

सुम्न पुं [सुम्न] १ धातु-पञ्च में उत्पन्न धातु-पञ्च धातु राजा (अ २, ४—पञ्च २६) । २ धातु-पञ्च के भावी सुष्ठव सुष्ठव पुत्र (सम १११) । अन्धकार, अन्धकार का प्रथम धातु (विचार १७८) ।

सुम्न पुं [सुम्न] विषय-पञ्च का एक पुत्र (पञ्च ६७, ११) ।

सुम्ना की [सुम्ना] धातु-पञ्च में धातु धातु का विषय-पञ्च रोगो (अ ८—पञ्च २१७, २१८) ।

सुम्न वि [सुम्न] धातु-पञ्च में धातु धातु का विषय-पञ्च रोगो (अ ८—पञ्च २१७, २१८) ।

सुम्न न [सुम्न] धातु-पञ्च में धातु धातु का विषय-पञ्च रोगो (अ ८—पञ्च २१७, २१८) ।

सुम्न पुं [सुम्न] धातु-पञ्च में धातु धातु का विषय-पञ्च रोगो (अ ८—पञ्च २१७, २१८) ।

सुम्न पुं [सुम्न] धातु-पञ्च में धातु धातु का विषय-पञ्च रोगो (अ ८—पञ्च २१७, २१८) ।

सुम्न पुं [सुम्न] धातु-पञ्च में धातु धातु का विषय-पञ्च रोगो (अ ८—पञ्च २१७, २१८) ।

सुम्न पुं [सुम्न] धातु-पञ्च में धातु धातु का विषय-पञ्च रोगो (अ ८—पञ्च २१७, २१८) ।

सुम्न पुं [सुम्न] धातु-पञ्च में धातु धातु का विषय-पञ्च रोगो (अ ८—पञ्च २१७, २१८) ।

सुम्न पुं [सुम्न] धातु-पञ्च में धातु धातु का विषय-पञ्च रोगो (अ ८—पञ्च २१७, २१८) ।

सुम्न पुं [सुम्न] धातु-पञ्च में धातु धातु का विषय-पञ्च रोगो (अ ८—पञ्च २१७, २१८) ।

श्री [सुरिणी] संगी नदी (सण) । तप
 देवो अर (सण) । ताप पु [त्राग]
 कनक न सुखान (दी ११) । दारु न
 [हार] देवदार की लकड़ी (स १३) ।
 भंसी श्री [भ्यंसिनी] विद्या विरोध (पञ्च
 ७ ११७) । घणु, घणुह न [भनुप]
 इन्द्र-कनुष (कुमा सण) । नह देवो पाह
 (घ ७७) । नाह देवो पाह (सण) ।
 पण्ड पु [पसु] इन्द्र, देव-पण्ड (गुण २ २
 न १२२ दी सण) । पुर न [पुर] देव
 पुरी समरपणो स्वयं (पञ्च २ १ सण) ।
 पुते [पुरी] बही धर्म (पाप कुमा) ।
 [पिचन पु] [प्रिय] एक पत्र (संठ) । धंदी
 श्री [बन्दी] देवी देव-श्री (से ६, १) ।
 भजन न [भयन] देव-भारार (मक
 सण) । मंति पु [मान्त्र] इन्द्रासि
 (गुण १२६) । मन्दिर न [मन्दिर] ?
 देव मन्दिर (कुम ४) । २ देव-निमान
 (स्य) । मुनि पु [मुनि] नारा मुनि
 (पञ्च ६ न) । राम न [राम]
 पवस का एक बनेवा (पञ्च ४१, १७) ।
 रय पु [रय] इन्द्र (गुण ४२, सिरि
 २४) । रिउ पु [रिउ] देव राजन
 (गाम) । ज्येष्ठ पु [ज्येष्ठ] स्वयं (महा)
 ज्येष्ठ नि [ज्येष्ठ] स्वयं (पुण्ड
 १२८) । ज्येष्ठ देवो ज्येष्ठ (पञ्च ३२
 १८) । यइ पु [पति] ? इन्द्र देव-पति
 (साम गुण ४४-४७ न ४ २) । २
 इन्द्र समक एक विद्यावर-नरेण (पञ्च ७
 २७) । बण्य पु [बज] एक बज विमान
 (पञ्च १) । पणू देवो वज्र (सि १८०) ।
 बसा श्री [वर्णी] गुणग (गुण) ।
 पर पु [वर] पञ्च देव (मय) । सरि
 पु [वर] इन्द्र देव-पति (भा ७) ।
 वहु श्री [वध] देवा-वध, देवी (कुमा) ।
 बारण पु [वारण] ऐरावत हस्ती (ज
 २११ दी) । संगीत न [संगीत] नवर
 विरोध (पञ्च = १८) । सरि श्री
 [सरि] नदीपरी नदी नदी (पञ्च
 का ११६, गुण १३, २८६) । सिद्धि पु
 [सिद्धि] देव परीत (सण) । सुन्दर
 पु [सुन्दर] एकाग्र-नगर का एक

विद्यावर-नरेण (पञ्च न ४१) । सुन्दरी
 श्री [सुन्दरी] ? देव-वधु देवा-वधु (गुण
 ११ ११५, गुण २) । २ एक राज-
 गुणी (गुण ११ १४१) । ३ एक राज-कुमारी
 (सिद्धि ११) । सुहृद् श्री [सुहृद्] काम-
 केतु (सण १३) । सेज पु [रीज] मेरु-
 परीत (गुण १७) । हथि पु [हथि] एरावत
 हाथी (स ६ ६) । तज न
 [तज] वज्र (गाम) । तप पु [तप]
 एक धामक का नाम (ज्या) । तपे श्री
 [तपे] पवित्र वज्र पर चलेवा श्री एक
 विद्या-कुमारी देवी (डा-पञ्च ४११ इन्द्र) ।
 रि पु [रि] एरावत का एक राजा
 एक संका-नति (पञ्च ३, २१२) । तप्य
 पुन [तप्य] स्वयं (पाप गुण १ ६, ८,
 गुण २६१) । त्रिपु पु [त्रिपु] इन्द्र
 (ज १४२ दी) । त्रिपु पु [त्रिपु] इन्द्र
 (सि १२, २१) । त्रिपु पु [त्रिपु] इन्द्र
 बही (गुण ४६) ।
 सुरक्ष श्री [सुरक्ष] मुक्त (पण्ड ४-पञ्च
 ६८) ।
 सुरय नि [सुरय] वण्डी तप्य निम्न
 गुण (पण्ड ४-पञ्च ६८) ।
 सुरगया श्री [सुरगया] देव-वधु (गुण
 २४६) ।
 सुरगा श्री [सुरगा] सुरय वनीन के शीतर
 का मार्ग (ज २४, मण्ड गुण ४२४) ।
 सुरगि पुं श्री [सुरगि] इन्द्र-विरोध रिपु वध
 छविना का नाम (से ८, १७) ।
 सुरज्य पु [सुरज्य] वण्डी देवगा (से ८, ११) ।
 सुरठ पु [सुरठ] एक भारतीय देव की
 धामक कठिनायक के नाम से प्रसिद्ध है
 (सामा १ १६-पञ्च २ ८६ हे २, १४३
 त्रि २ २) ।
 सुरगुणर नि [सुरगुणर] मुक्त से कले माय
 (डा १, १-पञ्च २१६) ।
 सुरह पु [सुरह] देवो सुरय (पञ्च १६ ८) । सति
 सुरह पु [सुरह] देव प्राण १२१) ।
 सुरभि पुं श्री [सुरभि] ? वसन्त ऋतु । २
 श्री की, श्या (कुमा १४) । ३ नि मुक्त-
 पुक्त गुणकी (सम १, या ४६१ कण्य)

कुमा १४) । ४ पुन एक देव-विमान
 (देव १४) । गंध नि [गंध] मुक्तकी
 (धापा) । पुर न [पुर] मय-विरोध
 (पञ्च) । देवो सुरहि ।
 सुरमजीव नि [सुरमजीव] माय्य मनोहर
 (गुण ३ १२३) ।
 सुरम्मा नि [सुरम्मा] ऊपर देवो (धौन) ।
 सुरय न [सुरय] मेरुन श्री-संज्ञोप (गुण ११
 २ या १२३, काय १११) ।
 सुरयण न [सुरयण] सुन्दर एन (गुण १२७) ।
 सुरयणा श्री [सुरयणा] सुन्दर रचना (गुण
 ३२) ।
 सुरस नि [सुरस] ? सुन्दर रचना (गुण
 १ १२-पञ्च १७४) । २ न, दुस विरोध
 (से १४) । जया श्री [जया] तुमको-
 नता (से ३, १४) ।
 सुरसुर पु [सुरसुर] पवित्र-विरोध 'सुर सुर'
 धामक (धौन २८२) ।
 सुरसुर मक [सुरसुर] 'सुर सुर'
 धामक कला । वज्र-सुरसुर (मा ७४) ।
 सुरह वक [सुरह] सुयन्त्र कला ।
 सुरह (गुण १२३) ।
 सुरह पुन [सुरह] सुन्दर पञ्च नृप,
 'मयोन्मिष' पुण्डो नारायण नमस् पुण्ड
 विद्यासा (पञ्च १२१) ।
 सुरह पु [सुरह] सफेदुर का एक राजा
 (महा) ।
 सुरहि पुं श्री [सुरहि] ? वसन्त ऋतु (रन्दा
 पाप, कण्य) । २ वज्र माध (मा १) ।
 ३ वज्र-विरोध स्यादु वज्र (धापा २ १ न
 ३) । ४ श्री की श्या (पण्ड १३) । बर्गि
 १२, पाप प्राप्ति ११८) । ५ न माय-वर्ग
 का एक मेरु, निष्क जय प प्राप्ति के शरीर
 में मुक्त उल्लस हाथी है (कम १ ४१) ।
 ६ नि मुक्त-पुक्त (ज्या कुमा ११०
 ११६ गुण १, १८ हे २, १२३) । देवो
 सुरभि ।
 सुर श्री [सुर] माय्य घक (ज्या) । रस
 पु [रस] वज्र-विरोध (दीन) ।
 सुरिह पु [सुरिह] ? राज देव-स्वामी (गुण
 १ १२३) । मज्ज गुण ४४) । २ एक

सुमन् } न [सुमन्स] १ सुमन् सुमन्
सुमन्स } (हि १२ गुण २५) । २ पुं
केन सुमन् (गुण २५ १२५) । ३ वि सुमन्
मनसा सम्मन् (गुण ११५ पञ्च १३
१३ ; ७७ १७) रवन् १) । ४ हर्षणम्,
मान्दव्यं सुमी (अ २-पञ्च १३) ।
५ पुं, एक वेद-विद्या (वेद ११६) ।
भद्र पुं [भद्र] १ कल्याण महाभारत के
पाद देखा बेकर युधि वनी वाला एक
पुरुष (अंत १८) । २ धार्मिक धर्मिक्य के
एक प्रिय एक केन पुनि (कर्म) ।

सुमन्स की [सुमन्स] वस्त्र-विशेष
(कल १-पञ्च ११) ।

सुमन् की [सुमन्स] १ कल्याण कल्याण
की प्रथम रिखा (अ १३२ पञ्च १) । २
मुत्तम धार्मिकों के एक-एक लोकपाल
की एक-एक प्रथम-विद्या का नाम (अ ४
१-पञ्च १५) । ३ राजा वैदिक की एक
पत्नी (अंत २३) । ४ एक पञ्च सुमन् का
नाम (इक) । ५ राज की पत्नी नामक
महापत्नी की एक पञ्चमयी (इक) । ६
महापत्नी का पुत्र (अन्त ११) ।

सुमनो देवी सुमन् (अ ५ १) ।

सुमनोहर वि [सुमनोहर] अक्षय नक्षत्र
(अ ५ १) ।

सुमर वक् [सु] कर्त्तव्य । सुमर (हि
४ ७५) । अर्थ सुमरिष्ठा वि (अ २१) ।

कर्म सुमरिष्ठा (हि ४ ७२६, वि २१७) ।

वक् सुमरित (गु २ १८ गुण ४
पञ्च ७ १३) । कर्म सुमरिष्ठा (पञ्च
२, १३, अन्त-पञ्च ११) । वक्

सुमरिष्ठा सुमरिष्ठा (गुण ७७) । वक्
सुमरिष्ठा सुमरिष्ठा (वि ४९३, १७) ।

क सुमरिष्ठा सुमरिष्ठा सुमरिष्ठा
(गुण १३१ १२२, २१७ अर्थ १२) ।

सुमर पुं [सुमर] कर्म (अन्त-पञ्च १) ।

सुमर अर्थ [सुमर] पाद सुमरिष्ठा (गुण
१४ ४२२ अर्थ अर्थ गुण ७७ १३३
१३७ न ११४) । की वा (अ ७ ७
गुण २२) ।

सुमर वक् [सुमर] पाद विद्या ।
वक् सुमरिष्ठा (गुण १३) ।

सुमरिष्ठा वि [सुमरिष्ठा] पाद कर्त्तव्य
(गुण १४ ४७ २४३) ।

सुमरिष्ठा देवी सुमरिष्ठा = सु ।

सुमरिष्ठा वि [सुमरिष्ठा] पाद विद्या (पाद) ।

सुमरिष्ठा की [सुमरिष्ठा] कल्याण महाभारत
के पाद देखा बेकर युधि वनी वाला
एक पुरुष की एक पत्नी (अंत २३) ।

सुमरिष्ठा वि [सुमरिष्ठा] अर्थ सुमरिष्ठा (गुण १
७-पञ्च ७७) ।

सुमरिष्ठा वि [सुमरिष्ठा] अक्षय नक्षत्र
सम्मान (पञ्च १-२ २७) ।

सुमरिष्ठा पुं [सुमरिष्ठा] कल्याण, अक्षय नक्षत्र
(गुण २३३) ।

सुमरिष्ठा पुं [सुमरिष्ठा] एक पञ्च-पुत्र
(अन्त १ २२) ।

सुमरिष्ठा पुं [सुमरिष्ठा] १ स्वयं स्वयं (हि १
४९) गुण ७७ पञ्च १ २३ १७) ।

२ स्वयं के अर्थ की कल्याणवाला अक्षय
(अन्त ४३) । पञ्च वि [पाठक] स्वयं
के अर्थ कल्याणवाला अक्षय का नाम
(गुण १ १-पञ्च २) । देवी सुमरिष्ठा ।

सुमरिष्ठा पुं [सुमरिष्ठा] १ कल्याण पुनिपुत्र-
स्वामी का पिता-एक राजा (अ १३१) ।

२ विद्या कल्याण की विद्या (अ १३२) ।

३ कल्याण के पुत्र कल्याण का नाम (पञ्च
२ १३) । ४ अक्षय के अर्थ अक्षय-
एक केन पुनि (पञ्च २ २ ३) । ५ एक
पञ्च का नाम (अ ७ २२) । ६ अक्षय
मित्र सुमरिष्ठा विद्यामयी (गुण ११५) ।

७ कल्याण अक्षयवाला की प्रथम विद्या कल्याण
एक पञ्च का नाम (अ १३३) ।

सुमरिष्ठा की [सुमरिष्ठा] कल्याण की पत्नी
की राजा कल्याण की एक पत्नी (पञ्च २३
४) । अर्थ पुं [अक्षय] कल्याण (वि ४
१३ १४ १२) ।

सुमरिष्ठा पुं [सुमरिष्ठा] सुमरिष्ठा का पुत्र-
कल्याण (पञ्च ४२ १३) ।

सुमरिष्ठा वि [सुमरिष्ठा] अर्थ अक्षय (अर्थ) ।

सुमरिष्ठा देवी सुमरिष्ठा (वि) ।

सुमरिष्ठा वि [सुमरिष्ठा] अर्थ अक्षय (अर्थ) ।

सुमरिष्ठा वि [सुमरिष्ठा] अर्थ अक्षय (अर्थ) ।

सुमरिष्ठा वि [सुमरिष्ठा] अर्थ अक्षय (अर्थ) ।

सुमरिष्ठा पुं [सुमरिष्ठा] १ कल्याण अक्षयवाला के पाद
देखा बेकर युधि वनी वाला एक पञ्च-पुत्र
(अंत २) । २ अक्षय-मित्र का एक पञ्च, एक
संका-पति (पञ्च ३, २३३) । ३ अक्षय-
विशेष (अर्थ २) ।

सुमरिष्ठा की [सुमरिष्ठा] अक्षय-विशेष (वि) ।

सुमेधा की [सुमेधा] अर्थ अक्षय के अक्षयवाली
एक विद्यामयी देवी (अ ७-पञ्च ४३७) ।

सुमेधा पुं [सुमेधा] अक्षय-पति (पञ्च ४
७३ १८) ।

सुमेधा देवी सुमेधा (इक) ।

सुमेधा की [सुमेधा] सुमरिष्ठा पुत्रि (अ ५
१३३) ।

सुमरिष्ठा देवी सुमन् = सु ।

सुमरिष्ठा पुं [सुमरिष्ठा] अक्षय-विशेष (हि २ ७४) ।

सुमरिष्ठा पुं [सुमरिष्ठा] १ अक्षय (अ ४-
पञ्च १७ कल्याण की १३) गुण १) । २ एक
राजा का नाम (अ ७ ३३) । अक्षय
[पञ्च] अक्षय-मित्र (अ १) । अक्षय
[वक्] कल्याण अक्षय (अ ७) । अक्षय
[अक्षय] अक्षय अक्षय (गुण १७९) ।

अक्षय पुं [अक्षय] अक्षय अक्षय (गुण १७९) ।

अक्षय पुं [अक्षय] अक्षय अक्षय (गुण १७९) ।

अक्षय पुं [अक्षय] अक्षय अक्षय (गुण १७९) ।

अक्षय पुं [अक्षय] अक्षय अक्षय (गुण १७९) ।

अक्षय पुं [अक्षय] अक्षय अक्षय (गुण १७९) ।

अक्षय पुं [अक्षय] अक्षय अक्षय (गुण १७९) ।

अक्षय पुं [अक्षय] अक्षय अक्षय (गुण १७९) ।

अक्षय पुं [अक्षय] अक्षय अक्षय (गुण १७९) ।

अक्षय पुं [अक्षय] अक्षय अक्षय (गुण १७९) ।

अक्षय पुं [अक्षय] अक्षय अक्षय (गुण १७९) ।

अक्षय पुं [अक्षय] अक्षय अक्षय (गुण १७९) ।

सुषम न [सुषर्ण] १ कोमा (अ ५ प्राप् २: कुम १: कुमा) । २ नि सुषर प्रसरताता (प्र १) । कुमार दु [कुमार] भवतपति यो की एक जति (मय: सम ५३) । कुलप्राय दु [कुलप्राय] एक हृद यो वे सुषर्णता नदी महती है (अ २ १—पम ५२) । गार दु [गार] सारी (शाय १ व—पम १४ उप ५ १३१) । सुदिवा की [सुदिवा] लता-विशेष (पस १७—पम ५२६) । गार देवा गार (गुना ५६३) । देवो सुयणा = सुषर्ण ।

सुषर्ण नि [सीयर्ण] कोने का कना हुआ (उप ४) ।

सुषर्णाकृष्य की [दे] खदान करने का यन्त्र—चौड़ा धाति (उप १४) ।

सुषर्ण दु [सुषर्ण] एक विनय-शेष (अ २, १—पम ८) ।

सुषर्ण न [सुषर्ण] सुन्दर वचन (मय) ।

सुषर्ण (अप) देवो सुमर । सुषर्ण, सुषर्ण सुषर्ण (अपि नि २३१) ।

सुषर्ण देवो सुषर्ण (आन) ।

सुषर्ण दु [सुषर्ण] एक देव-विमान (मय १) ।

सुषर्ण दु [सुषर्ण] १ सुन्दर कृति (अ ५४) । २ अन्त-विशेष (निम) ।

सुषर्ण देवो सुषर्ण (अपि नि १२१) ।

सुषर्ण दु [सुषर्ण] एक यज्ञ-गुमार (विना २, ४) ।

सुषर्ण की [द सुषर्ण] विष्णु की जोतिव हो वह की (सिदि १३६) ।

सुषर्ण प्र [सुषर्ण] देवता की हविष धाति पाण्ड का मुक्त धर्म (सिदि १६०) ।

सुषर्ण न [सुषर्ण] विशेष रूप से वर्णित (उप ५६) ।

सुषर्ण नि [सुषर्ण] वायव्य बजुर (पम—पम ४) ।

सुषर्ण नि [सुषर्ण] अन्धी तरह बात (अ गुना ४) ।

सुषर्ण नि [सुषर्ण] अन्धी धानहार (पा १०) ।

सुषिउल नि [सुषिपुल] प्रति विरात (अन) । सुषिधम दु [सुषिधम] मृगान्त नामक द्रव्य क हस्ति वेष का धातुपति (अ ५, १—पम ३ २ ३६) ।

सुषिध्माय नि [सुषिध्माय] सुषिध (गु १ ६०) ।

सुषिधा की [सुषिधा, सुषि] सेवा (अ ६०३ ६०४) ।

सुषिधा की [सुषिधा] उत्तम विद्या (प्राप् ३३) ।

सुषिध रौको सुमिध (गु १ १ १) महान रसा) । नु नि [अ] स्वप्न-शब्द का वाक्य (अ ५ ११६ गु १० १८) ।

सुषिधु नि [सुषिधु] विषयुल नट (पा ७४) ।

सुषिधिसुष नि [सुषिधिसुष] अन्धी तरह निर्णीत (अन) ।

सुषिधिसुष नि [सुषिधिसुष] अन्धी तरह कथा हुआ (छाया १ १—पम १२) ।

सुषिधीय नि [सुषिधीय] १ पक्षिण गु १ किया हुआ (अ १ ५०) । २ अन्धी विषय-गु (अ ६, २ ६) ।

सुषिध न [सुषिध] १ अन्त विलासक । २ उत्तम वस्त्र धारण (गु १ २१) ।

सुषिध नि [सुषिध] धाति विस्मय (अपि ४ प्राप् १२८ १३०) ।

सुषिधिसुष नि [सुषिधिसुष] अन्धी (गु १ ५२ १२ १) ।

सुषिध देवो सुषिध (अ ५३) ।

सुषिध नि [सुषिध] विष्णु विमान धारण हो लक वह (अ ५, १—पम २६६) ।

सुषिध नि [सुषिध] अन्धी तरह पिबक (छाया १ १ ६—पम २: औप ५०) ।

सुषिध नि [सुषिध] अन्धी तरह धारण (अ २ १३) ।

सुषिध नि [सुषिध] अन्धी तरह धारण (गु १ १३) ।

सुषिध नि [सुषिध] अन्धी तरह धारण (अ १ १३) ।

सुषिध नि [सुषिध] अन्धी तरह धारण (अ १ १३) ।

सुषिध नि [सुषिध] अन्धी तरह धारण (अ १ १३) ।

सुषिध नि [सुषिध] अन्धी तरह धारण (अ १ १३) ।

सुषिध नि [सुषिध] अन्धी तरह धारण (अ १ १३) ।

सुषिध नि [सुषिध] अन्धी तरह धारण (अ १ १३) ।

सुषिध नि [सुषिध] अन्धी तरह धारण (अ १ १३) ।

सुषिध नि [सुषिध] अन्धी तरह धारण (अ १ १३) ।

सुषिध नि [सुषिध] अन्धी तरह धारण (अ १ १३) ।

सुषिध नि [सुषिध] अन्धी तरह धारण (अ १ १३) ।

सुषिध नि [सुषिध] अन्धी तरह धारण (अ १ १३) ।

सुषिध नि [सुषिध] अन्धी तरह धारण (अ १ १३) ।

सुषिध नि [सुषिध] अन्धी तरह धारण (अ १ १३) ।

सुषिध नि [सुषिध] अन्धी तरह धारण (अ १ १३) ।

सुषिध नि [सुषिध] अन्धी तरह धारण (अ १ १३) ।

सुषिध नि [सुषिध] अन्धी तरह धारण (अ १ १३) ।

सुषिध नि [सुषिध] अन्धी तरह धारण (अ १ १३) ।

सुषिध नि [सुषिध] अन्धी तरह धारण (अ १ १३) ।

सुषिध नि [सुषिध] अन्धी तरह धारण (अ १ १३) ।

सुषिध नि [सुषिध] अन्धी तरह धारण (अ १ १३) ।

सुषिध नि [सुषिध] अन्धी तरह धारण (अ १ १३) ।

विद्यावर गेय (पद्य ७ २६) । दृष्टं तु
[दृष्ट] एक चन्द्र-पुत्र (अ १११) ।

सुरियं तु [सुरिय] विमान-प्रेत
विमान-प्रेत (प्रेत ११३) ।

सुपं श्री [सुपं] देवी (पुपा)

सुभा देवी सुरा (पद्य ८ १२८) ।

सुरपुं तु [सुरपु] दृष्ट-प्रेत (१ २ ११३;
१२) । अति [अ] दृष्ट-प्रेत में ज्ञान
(पुपा) ।

सुरदु वि [सुरदु] अज्ञान दृष्ट-प्रेत (पद्य
१८ १२) ।

सुरया श्री [सुरया] एक दृष्टाणी (छाया
२—पद्य २३२) । देवी सुरया ।

सुरयं तु [सुरय] । सुर-निर्वाण के दृष्टि
वि का एक (अ १ १—पद्य २३) । १
न सुरय का । २ वि सुरय कावाता
(अप; अ) ।

सुरया श्री [सुरया] । सुरय तथा दृष्टि
नामक भूतों की एक एक दृष्ट-प्रेत
(अ ४ १—पद्य २४) । २ सुरय
नामक दृष्ट की एक दृष्ट-प्रेत (१६) ।

१ एक विद्या-कुमारी देवी (अ ४ १—पद्य
१२ १—पद्य १११) । ४ एक दृष्टकर
प्रेत (अ १२) । २ सुरय कावाती
(पद्य) ।

सुरेसं तु [सुरेस] । देव-पति दृष्ट । १
उत्तम देव (पुपा ११२) ।

सुरसरं तु [सुरसर] दृष्ट दृष्ट-प्रेत (पुपा
२७ दृष्ट २) ।

सुरस्यं वि [सुरस्य] उत्तम दृष्ट
नाम (अति १२२) ।

सुरमा वि [सुरमा] अज्ञानी दृष्ट तथा दृष्टा
(पद्य) ।

सुरमं वि [सुरम] अज्ञान दृष्ट (छाया
१ १—पद्य २८ अ) ।

सुरमं वि [सुरम] दृष्ट के अज्ञान हो गये
सुरम । १ (पा १२ दृष्ट २, १२, पद्य) ।

सुरमं तु [सुरम] ११३-प्रेत (१६) ।

सुरमं वि [सुरम] ११३-प्रेत (१६) ।

सुरमं वि [सुरम] ११३-प्रेत (१६) ।

सुरमं वि [सुरम] ११३-प्रेत (१६) ।

सुरसा श्री [सुरसा] । नवरी विनये की
प्रथम शिष्या (अ १२२) । २ अज्ञान
प्राणी की एक प्राणिक विनय भाग्य
भावादि काल में दीर्घकर होया (अ १—पद्य
४२२, अ १४४) । ३ नाम नायक गृहपति
की श्री (दृष्ट ४) । ४ दृष्ट की एक दृष्ट
प्राणी, एक दृष्टाणी (पद्य १ २, १२२) ।

१ दृष्टकर के दृष्टा सुरसर की श्री (पद्य) ।

सुरदु देवी सुरम (अ ४ १—पद्य २३)

सुरदु देवी सुरम (अ ४ १—पद्य २३)

सुरदु देवी सुरम (अ ४ १—पद्य २३)

सुरदु देवी सुरम (अ ४ १—पद्य २३)

सुरदु देवी सुरम (अ ४ १—पद्य २३)

सुरदु देवी सुरम (अ ४ १—पद्य २३)

सुरदु देवी सुरम (अ ४ १—पद्य २३)

सुरदु देवी सुरम (अ ४ १—पद्य २३)

सुरदु देवी सुरम (अ ४ १—पद्य २३)

सुरदु देवी सुरम (अ ४ १—पद्य २३)

सुरदु देवी सुरम (अ ४ १—पद्य २३)

सुरदु देवी सुरम (अ ४ १—पद्य २३)

सुरदु देवी सुरम (अ ४ १—पद्य २३)

सुरदु देवी सुरम (अ ४ १—पद्य २३)

सुरदु देवी सुरम (अ ४ १—पद्य २३)

सुरदु देवी सुरम (अ ४ १—पद्य २३)

सुरदु देवी सुरम (अ ४ १—पद्य २३)

विनय-प्रेत, प्राण-प्रेत, विनयी उत्तम
कुम्भा नवरी है (अ ४ १—पद्य ८ १६) ।

सुरसा श्री [सुरसा] । अज्ञान के
दृष्टाणी की एक विद्या-कुमारी देवी (अ ४—
पद्य ४२०) । २ दृष्टाणी पर दृष्टाणी
एक देवी (१६) ।

सुरदु देवी [सुरदु] । एक विद्या-प्रेत
प्राणी (पद्य २, १६) । २ दृष्ट, एक अज्ञान-
प्राणी (अ २३) ।

सुरदु देवी [सुरदु] । अज्ञान के अज्ञान
प्राणी (अ २३) ।

सुरदु देवी [सुरदु] । अज्ञान के अज्ञान
प्राणी (अ २३) ।

सुरदु देवी [सुरदु] । अज्ञान के अज्ञान
प्राणी (अ २३) ।

सुरदु देवी [सुरदु] । अज्ञान के अज्ञान
प्राणी (अ २३) ।

सुरदु देवी [सुरदु] । अज्ञान के अज्ञान
प्राणी (अ २३) ।

सुरदु देवी [सुरदु] । अज्ञान के अज्ञान
प्राणी (अ २३) ।

सुरदु देवी [सुरदु] । अज्ञान के अज्ञान
प्राणी (अ २३) ।

सुरदु देवी [सुरदु] । अज्ञान के अज्ञान
प्राणी (अ २३) ।

सुरदु देवी [सुरदु] । अज्ञान के अज्ञान
प्राणी (अ २३) ।

सुरदु देवी [सुरदु] । अज्ञान के अज्ञान
प्राणी (अ २३) ।

सुरदु देवी [सुरदु] । अज्ञान के अज्ञान
प्राणी (अ २३) ।

सुरदु देवी [सुरदु] । अज्ञान के अज्ञान
प्राणी (अ २३) ।

सुरदु देवी [सुरदु] । अज्ञान के अज्ञान
प्राणी (अ २३) ।

सुरदु देवी [सुरदु] । अज्ञान के अज्ञान
प्राणी (अ २३) ।

सुरदु देवी [सुरदु] । अज्ञान के अज्ञान
प्राणी (अ २३) ।

सुरदु देवी [सुरदु] । अज्ञान के अज्ञान
प्राणी (अ २३) ।

सुसिद्धि वि [सुसिद्ध] सुसंयत धर्मि
बद्ध (पुर १ ४२१ पंथा १८ २३)।

सुसिद्धि दु [सुसिद्ध] उत्तम सेवा (उप
१४ १)।

सुसीध वि [सुसीध] धर्मि सीतल (कुमा)।

सुसीध न [सुसीध] बनर-विशेष (उप
७२८ टी)।

सुसीमा की [सुसीमा] १ भवभाव पद्यप्रय
की माता (उप १११)। २ कृष्ण बालुच
की एक पत्नी (पंथ ११)। ३ बल्ल नामक
विजय-शेख की एक राजपत्नी (अ २
१—पत्र ८)।

सुसाध न [सुसीध] १ उत्तम स्वभाव (पत्र
१४ ४४)। २ वि उत्तम स्वभाववाला
छात्राचारि (प्राप् ८)। वंश वि [सुसाध]
छात्राचारि (पत्र १४ ४४ प्राप् ११)।

सुसु दु [सिद्ध] बन्धा बाधक। मार दु
[मार] बन्धन प्राप्ती की एक बाध
नैय्याभर मलय-विशेष (वि ११७)।
मारिया की [मारिका] बल्ल-विशेष
(पत्र ४१)। रेणो सुसुमार।

सुसुख दुन [सुसुख] एक वैद-विभाग (उप
११)।

सुसुमार दु [सुसुमार] बन्धन कन्ध की एक
बाध (की २)। रेणो सुसुमार।

सुसुयन वि [सुसुयन] १ प्रत्यक्ष सुखी
(उप १ ४१ पत्र ४)। २ दुःख-व्यस
दुःख (पत्र ४)।

सुसुर रेणो सुसुर (बर्मा ११७ विरि
११४ १४२ १४ १८८)।

सुसुरर दु [सुसुरर] कर्ष का एक श्रेय
(वि १)।

सुसुर दुन [सुसुर] एक वैद-विभाग (उप
१)।

सुसुयन दु [सुसुयन] १ सुखी का सुसुर (वि
४ ११ ११ ८४)। २ एक श्रेय (वि १
४—पत्र ४४)। ३ बल्ल बन्धन का
कर्म (पत्र ४)।

सुसुयन की [सुसुयन] एक बड़ी नदी (अ
१ १—पत्र १११)।

सुसोह वि [सुसोय] बन्धी सोपावाला
(पुपा २७३)।

सुसोहिय वि [सुसोमित] सोय-संयत
धर्मसंयत (उप ७२८ टी)।

सुसुत मर [सुसु] सुखमा। सुसु (सुय
१ २ १ १६)। बद्ध सुसुसुत (स १११)।

सुसुसमण दु [सुसुमण] उत्तम छात्र (उप)।

सुसुसर वि [सुसुसर] सुसर छात्रावाला
(पुपा २८१)। रेणो सुसर।

सुसुसर की [सुसुसर] सीतल तथा सीतल
नाम के चण्डालों की एक एक धर्मप्रतिष्ठा का
नाम (अ ४ १—पत्र २ ४४)।

सुसुसार वि [सुसार] छात्र-युक्त (वि १)।

सुसुसाध } रेणो सुसाध (अ ४ १२)।
सुसाधय }

सुसुसीध रेणो सुसीध (पुपा ११ ४ ४)।

सुसुसु रेणो सुसुसु (पत्र ४)।

सुसुसुयन धर [सुसुसुयन सुसुसुयन]
दु दुःख प्राप्त करना सुकार करना। सुसु
सुसुसाध (उप २७ ४)।

सुसुसी की [सुसु] छात्र (अ १)।

सुसुसुत सक [सुसुसु] सेवा करना।
सुसुसुत (अ ४ ४४)। बद्ध सुसुसुसुत

सुसुसुसमण (कुमा १४ पत्र ४)।
१६ सुसुसुसुत (सी) मा ११)।

सुसुसुसु वि [सुसुसुसु] सेवा करनेवाला
(कन्ध)।

सुसुसुसु न [सुसुसुसु] सेवा सुसुसु (उप
२४४ पत्र २१)।

सुसुसुसुयन } की [सुसुसुसुयन] ऊपर रेणो
सुसुसुसुयन } (उप २१, १: सीतल छात्र
१ ११—पत्र १ ८)।

सुसुसुसा की [सुसुसुसा] ऊपर रेणो (पुपा
१२७)।

सुसु रेणो सोह = सुसु। सुसु (बन्धा १४
वि १)।

सुसु उप [सुसुयन] सुसुी करना। सुसु
(वि १) सुसुी (सी) (वि ८१)।

सुसु रेणो सुसु (वि १ २६)। ३ सुसु;
पुपा ११ कन्ध १ ४)। अ वि [सुसु]

सुसुसुसापी (कुमा)। कन्धय वि [कन्धय]
पुसुसुसापी (वि १)। कन्धय वि [कन्धय]
सुसुसु की साहसमा (पुपा ३२४)। गर
वि [कर] सुसुसु-यनक (कुमा)। नामा
की [नामा] पत्र की पक्षी बन्धी तथा
पमसुसुी रात्रि-विधि (सुसु १ १३)।
स्थि वि [स्थि] १ सुसुसुसु (मम)।
२ सुसु धर्मसाध (साया १ १—पत्र ७४)।
३ रेणो अ (कुमा)।

सुसु न [सुसु] १ धामन वैद मना। २
धामन धामन (अ २ १—पत्र ४४ १
१—पत्र ११४ यद्यत्कन २३ प्राप्
११३ हे १ १७७ कुमा)। ३ निर्वि
सुसु। ४ वि निर्वि (वि १४४४
१४४४)। ५ सुसु मर, सुसु-यनक (साया
१ १२—पत्र १४४ धामन कन्ध १
४१)। ६ धामन (साया १ १२)। ७
सुसुी (वि १ १६)। अ वि [सुसु] सुसु-
साध (पुर २ २३ पुपा ११२; कुमा)।
सुसुसु वि [सुसु] सुसुी (वि १)।
कर वि [कर] सुसु-यनक (हे १ १७७)।
कन्धय वि [कन्धय] सुसुसुसुसु (पत्र
११६)। स्थि वि [स्थि] बड़ी धर्म
(साया)। व वि [व] सुसु-साध (वि
१ १ कुमा)। वय वि [वय] बड़ी
(पत्र १ ११२)। कन्धय वि [कन्धय]
कोमल (पत्र)। यर रेणो कर (वि १
१७७ कुमा पुपा ३)। संमन की
[संमन] सुसु-यनक धामनक (कन्ध)।
१६ वि [सुसु] १ सुसु-यनक (मा २४
अ ४ १७)। २ पुसु, एक पर्वत-शिखर (अ
२ १—पत्र ४)। ३ सुसु न [सुसु]
धामन-विशेष वासकी (पुर २, १; पुपा
२७४ कन्ध)। ४ सुसुसा की [सुसुसा]
सुसु व रेणो सुसुी स्थि (प्राप् ८४)।

सुसुसुसुसा की [सुसु] सुसुी (वि ८)।

सुसुसुसु वि [सुसुसुसु] सुसु-यनक (वि १
१६ कुमा)।

सुसुसुसु वि [सुसुसुसु] १ सुसु-यनक (कुमा)।
२ पुसु, एक पर्वत-शिखर का नाम (उप ४ ७४)।

सुसुसुसु वि [सुसुसुसु] सुसुी (पत्र ४)।

सूत्र-सू

सूत्र वृ [शुक्र] बन्धन धारि का तीक्ष्ण ध्वज
अथ (पञ्चम ३१८) ।

सूत्र वि [शून] कुसा हृदा नुननवासा 'सूत्र
मूर्धं नुननवासा' (विषा १ ७—पञ्च
३१) ।

सूत्र वृ [सू] राज (पञ्च ११ टी उवा
पञ्च २ १—१२१ सुपा २७) । गार,
वार, १२ वृ [कार] रसोष्ण (स १७ कुप
१७ १०—पञ्च २१ टी) । 'परिणा की
[धारिणी] खोई क्वालेनाली की (पञ्चम
३७ १ २) ।

सूत्र केनो सूत्र = सूत्र । गङ्ग पुन [कुत्र]
हृत्प वैन नूननवासा 'वापाटी नूननवासा' (सूत्र
२ १ २७ सप १) ।

सूत्रय वि [सूत्रक] १ सूत्रना करनेवाला
सूत्रक } (बेसी ४३ या ११) सुर २
सूत्रमा } २२२) । २ वृ नियुक्त बन्ध, नूनन
(पञ्च १ २—पञ्च २८) । ३ श्रुत हृत्
बाधुष (पञ्च) ।

सूत्रमा न [सूत्रक] सूत्रक, बन्धन दौर मण्ड
सूत्रमा } की मण्डि (पञ्चा ११ १८) वन
१) ।

सूत्रमा न [सूत्रक] सूत्रमा (अन सुर २,
२२१) ।

सूत्र वृ [शुक्र] सूत्रक बण्ड (उवा विषा
१ १—पञ्च ५३ मयी ७) । सङ्ग वृ
[वङ्ग] धननवासा बन्धनविशेष (पञ्च ४
पञ्च २) ।

सूत्रवि वि [वि] कन-वीकित (वि ८ ४१
टी) ।

सूत्रविषा की [वि] कन-वीकित (सुर ११
सूत्रवि } १२७—वि ८, ४१) ।

सूत्रक न [वि] विष्ठाक, धाम्य का तीक्ष्ण
ध्वज मान (वि ८ १८) ।

सूत्र की [सू] सूत्रक नूनन (वि
१७) कर्ण २ ; नूनन १) । कर वि
[कर] सूत्रक (अन ७६८ टी) ।

सूत्र की [सू] प्रथम प्रवृत्ति कन
सूत्र } (पञ्च २६, २७ १ ११ सुपा
२१) । अन्त न [कर्मा] प्रवृत्ति-धिया (सुर
१ १ गुण ४) । हर न [गृह] प्रवृत्ति-
न (पञ्च २१ २२) ।

सूत्र की [सू] रेको सूत्र (धापा) वन
१४६ सप २७) ।

सूत्र वि [सू] विस्ती सूत्रना की बई
हो वह (महा) । २ उक्त, कथित (पाप) ।
३ व्यक्तावि-मुक्त (बाध) (पञ्च २, १ २८) ।

सूत्र वि [सू] प्रवृत्ति जिसमें कन्य धिया
हो वह व्यापी। सारण गृहध धारि (वस
२, १ २२) ।

सूत्र वृ [सू] बन्धो (हृत्प ४ १) ।

सूत्र वृ [वि] कर्मा (वि ८ १६) ।

सूत्र न [सू] विष्ठा केनो कन्यविशेष
विशेषकृत्य केनो कन्यविशेष (महा) ।

सूत्र वि [वि] सूत्र, सूत्रिक] शीला हृदा
(बाध), 'अथ सूत्र' का मुक्त का' (धापा) ।

सूत्र की [सू] प्रवृत्ति-कन्य करनेवाली
की (सम्पत् १४२) ।

सूत्र की [सू] कन्या चीने की उवाई, सूत्र
(पञ्च १ १—पञ्च ४७ या १६४ २ २) ।

२ परिमाण-विशेष एक नूनन बन्धी एक
प्रदेशवासी बन्धी (सप १२८) । ३ दो ठणों
के बीच के कन्य में धारी एक ठण की

पत्नी कन्य (पञ्च २७ २२) । फल्य न
[फलक] ठणों का वह हिस्सा, जहाँ सूत्री-
कीलक लगाना पना हो (पञ्च २२) । 'सूत्र वृ

[सू] १ परि-विशेष (पञ्च १ १—पञ्च
५) । २ शीघ्र वस्तु की एक बावि (पञ्च
१—पञ्च ४४) । ३ न जहाँ सूत्री-कीलक

ठणों का लेन कर शीघ्र वस्तु है उसके
धनी की बन्ध (पञ्च २२) ।

सूत्र की [वि] बन्धी (वि ८ ४१) ।

सूत्र केनो सूत्र = सूत्र (सुपा २२२) ।

सूत्र क [अ] सूत्र सूत्र धापा शीला
विशेष कन्य । सूत्र (वि ४ १ १६) । कन्य
सूत्रिक (पञ्च १ २—पञ्च २६) ।

सूत्र न [सू] १ धम्य विष्ठा (पञ्च) ।
२ वि विष्ठाक (पञ्च २७) ।

सूत्र वि [शून] सूत्र हृदा नूनन से कुता हृदा
(पञ्च १ १ १४७ या १६४ स १७१
४५) ।

सूत्र की [सू] बन्धन (निर १ ११
सूत्र } या १७१ कुप २७६) । वृ वृ
सूत्रा } या १७१ कुप २७६) । वृ वृ
[धति] बन्ध (वि २ ७) ।

सूत्रिय वि [शूनिक] १ नूनन का योगवासा
विशेष शीघ्र नूनन क्या हो वह । २ न.
नूनन (धापा) ।

सूत्र वृ [सू] नूनन बण्ड (कुप ११६) ।

सूत्र केनो सूत्र = सूत्र (वन १) ।

सूत्र केनो सूत्र = सूत्र (पञ्च २ १—पञ्च
१४८) ।

सूत्र केनो सभगा 'सूत्र नूननवासा' सूत्र
श्री सूत्र केन (नूनन १२ ; पञ्च २३) ।

सूत्र केनो सोममा (वि २ २) ।

सूत्र केनो सुगमा (पञ्च १ ४—पञ्च
७८ सप ११—पञ्च ४७ ; १ ११—पञ्च
२ कन्य सुर ११ ११८ कुप २२) ।

सूत्र क [अ] शीला बन्धना । सूत्र
(वि ४ १ १) ।

सूत्र वि [शूर] १ पञ्चमी शीर (अ ४
१—पञ्च २१७ कन्य सुपा २२२) ४१२,
प्रवृ ७१) । २ वृ एक राजा (सुपा १२२) ।

३ वृ एक देव-निमान (वि १४) ।
४ वृ [सेन] एक शीघ्र वस्तु, जिसकी
श्रीघ्र वस्तुवासी मण्डप की (विषा ४६

पञ्च २८, १६४ टी १४ निज १६) सप
१७ टी) । २ देव-वर्ष के एक शीघ्र वि-
शेष (सप १२४) । ३ एक कन्यावासी (वन

७२८ टी) । ४ बन्धना धारिनाथ का एक
वृ (टी १४) ।

सूत्र वृ [सू, सू] १ सूत्र वृ (वि २
१४६ अ २ १—पञ्च २१७ कुप २२२,
१२२ कन्य कुप) । २ वृ सूत्र वि-
शेष का शीघ्र (वन १२१) । ३ वृ सूत्र-
वृ का शीघ्र (पञ्च २, १६४) । ४ वृ सूत्र का

मान (पञ्च २२) । ५ वृ सूत्र (सुपा
२२२) । ६ वृ सूत्र का एक शीघ्र (वि ८
वृ सूत्र देव-निमान (वन १) । अंश

वृ वृ [अन्त] १ मण्ड-विशेष (वि ६,
२, पञ्च १ ७४ पञ्च १—पञ्च २६
४४७ सप १) । २ वृ सूत्र देव-निमान (वि १४
४४७ सप १) । ३ वृ सूत्र [सू] एक

देव-निमान—देव-वर्ष (वन १) । ४ वृ सूत्र
वृ [अन्त] एक देव-निमान (वन १) ।

सुसुभ नि [सुसुभ] १ दण्डी वरह मुना
 रूप १ २ दण्डी वरह आठ (वज्रा १ १) ।
 १ पु वरह दण्डी-विरोध (वज्रा १ १) ।
 सुसुभ } रेवो सुभग (संक्षि २ १ १)
 सुसुभ } १११ १२२) ।

से रेवो सेज्य = सेवत । बह पु [पट]
 सेवाम्बर केन (सम्पत् ११७) ।

से म [रे] इन प्रयो का मूक धम्मय—
 १ नाय का उम्पास । २ प्रस (आ १
 १ ३३) । ३ प्रस्तुत बलु का पदमरी
 (उत् २ ४ ३) । ४ मन्तरा (अ
 १—पत्र ४२३) ।

से } मक [री] सोना । सेह, सम
 सेम } (वह) ।

सेल लक [सिच्] सीकन । सेमर (१
 ४ २१) ।

सेज पु [वि] गजनि कलेठ (वि ८, ४२) ।
 सेज पु [सेज] १ कर्म करो वंश (गुप्त
 २ १ २) छाया १ १—पत्र ११) । २
 एक धर्म मनुष्य-गति 'ब्रह्मा मुनि
 देवा वे धने पाकमिसे' (अ ७—पत्र
 १२१) ।

सेज पु [स्वेज] पड़ोना (या २७८) वे ४
 ४१ कुमा) ।

सेम पु [सेक] सेल सीकन (वि १३, ना
 ७२२ देव २२: प्रसि ११) ।

सेम न [सेयस] १ गुप्त कथा (ग) ।
 २ बर्ष । ३ मुक्ति मोक्ष (ह १ १२) । ४
 नि धति प्रस्तुत म्तिरय गुप्त 'मय सेज
 बोधि सेधा' (वेवा = १४ कुमा १८६) ।
 ५ पु, गद्योपका का इतर श्रुत (मुज १
 ११) ।

सेम नि [सिज] समम कम्प-मुक्त (गम ३,
 ७—पत्र २१४) ।

सम नि [रहन] १ गुप्त लज्ज (छाया १
 १—पत्र ३१; धमि ११; उभ) । २ पु
 एक हज्ज, कुर्मन-निकाय के धर्मिय दिवा
 का हज्ज (अ २, १—पत्र ७३) । ३ राज की
 म्ता-जय का प्रकृति (३६) । ४ धाम
 क्ता कर्तव्य का एक पत्र, सिद्धे धर्मना
 ग्वालीर के पास बीजा ली की (अ ७—पत्र
 ११७)

४३ राय २) । ४८ पु [कण्ट]
 भूतात्म नायक हज्ज के मधिम-नीय का
 प्रकृति (अ २ १—पत्र १ २३ ३६) ।
 पत्र बह पु [पट] सेवाम्बर केन केन
 का एक सेवामय (गुप्ता ४४१ विम २३४३
 धर्म ११ २) ।

सेम नि [उप्यम्] धामाणी अधिव्य 'पम्
 ल' नति केवतो सेवकासि नि सेमु केव
 धामासपदेसेपु हर्ष ना आब धामासिमासे
 'किमुत्तर' (अ ३ ४—पत्र २२१; अ
 १—पत्र ४२३ धम्पु २१) । 'ऊह पु
 [साल] अधिव्य कस (अ ३ २२ ७१) ।

सेज्यकर पु [अयस्कर] ज्योतिष्क गह-विरोध
 (अ २ १—पत्र ४८) ।

सेमंकार पु [अयस्कार] 'बेय-कर' 'बेयस'
 का उच्चारण (अ १—पत्र ४२३) ।

सेज्यर पु [सेवाम्बर] १ एक केन सेवामय
 (सं २, सम्पत् १२३ गुप्ता २११) । २ न
 कलेठ बल (पत्र ११ १) ।

सेज्यस पु [सेवास] १ एक राज-मुना (अ
 १३) । २ बलुर्न बानुवेव तथा बलवे के पूर्व
 कर्म के बर्ष पु—एक केन मुनि (अ
 १२१ पत्र २ १०१) । रेवो सेज्यस ।

सेज्यस रेवो सेज्य = मयस (अ ४ ४—पत्र
 २१३) ।

सेमन न [सेचन] एक कोषना (गुमा; धमि
 ४७ छाया १ ११—पत्र १८१ गुप्ता
 १ १) । गह पु [पय] मीक (धारा २,
 १ २) ।

सेज्यना पु [सेचनक] १ राजा लौकिक
 सेज्यणय } का एक हावा (अ २१४ टी
 छाया १ १—पत्र २३) । २ नि, लोचने
 नामा (गुमा) । रेवो सेज्यणय ।

सेज्यनिय नि [सेचनय] रेवा योग्य, 'ए
 सिक्कतो सेचनियस' 'विनि' (गुप्ता १ ३, १
 ४) ।

सेज्यनिय ना [सेचनिक] १ कथान रेवा की
 प्राचीन राजवासी (विचार ३ पत्र २७३,
 ३६) ।

सेज्या की [सेवता] लक्ष्मण (गुज १ १) ।
 सेज्या रेवो सेया (गम—वि २३) ।

सेज्या रेवो सेया = सेवास (वि २ ११) ।
 सेज्या रेवो सेज्य = एय्य-भक्त ।

सेज्या पु [रे] १ पात्र का मुचिपा । २
 लामिय करनेवाला यश धारि (वे ४ २८) ।
 ३ इयक, बेटी करणनामा गृह्य (पाप) ।

सेज्या की [रे] इय, इय इय (वे ८ २७) ।

सेज्यालुम पु [रे] मनीषी की सिद्धि के लिए
 ऊपर नेत (वे ८ ४४) ।

सज्ज पु [स्वदित] पड़ोना (धमि) ।

सेज्या } की [सेसिका] पट्टमा-विरोध,
 सेज्या } से प्रसि की एक नाव (सं २ २६
 अ ३ १३७ धम्पु १२१) ।

सेज पुम [सेतु] १ नाव पुम (वि १ १७,
 कु २२ कुमा) । २ धातवात किमारे
 धमिना । ३ किमारे के पापी से सीकने योग्य
 बेल (पीप, छाया १ १ टी—पत्र १) ।
 ४ मार्ग (पीप छाया १ १ टी—पत्र १
 कम्प ८६) । 'बेच पु [बय] पुन नावना
 (वि १, १७) । गह पु [पय] पुननामा
 मार्ग (वि १ १८) ।

सेज नि [सेक] लक विचन करनेवाला
 (कम्प ८६) ।

सेज्य नि [सेवक] सवा-बर्दा (कम्प ८६) ।

सेज्य रेवो सिन्दूर (प्रस संक्षि १) ।

सेज्य रेवो सिमय (वि ८६) ।

सेज रेवो सिम (अ ३ २१७) ।

सेमिय रेवो सिमिय (अ ३ २१७) ।

सेबाय पु [रे] इय की नावना (वे ८
 ४१) ।

सेबाय न [सेचनय] विचन पिड़का
 (गु २७) । रेवो सेज्यय ।

सेबाय (अ ३) पु [सेन] धम्म-विरोध
 (विम) । रेवो सेज्य = सेन ।

सेबा न [सेय] सीकन उड़ान (प्रस) ।

सेज रेवो सेज्या । गह पु [पाव] बसति-
 खागो गृह्य (अ ४४) ।

सेज्यम रेवो सिज्यम (कम्प) गवनि १
 १२) ।

सेज्यस पु [सेवास] १ ग्याहर्न निमये का
 नाम (अ ४ ४८ कम्प) । २ एक राज-मुन

विषये पणपत्तु धर्मालय को धनु-रथ से
क्रम पाछा करता था (अन्य भाग ११२) ।
१ मार्मरीय मन्त्र का बोकोर नाम (मुन
१ १२) । ॥ मन्मथ महामौर का पिता
रामा पिता (भाषा २ १३५) । सेवो
सिखास संभ्रंत = थेवाड ।

सेव्यस सेवो सेव्यसं = सेवत (धातु) ।

सेव्या की [राय्या] १ सेव विद्योमा (हि १
३५) कुमा । २ मन्त्र बर, मन्त्रि ज्ञापय
(अन्य १३२ मुन १ १३) । सर वं [सर]
मुन-स्वामी ज्ञापय का मन्त्रिक साधु को
पूजे के लिए स्वागत सेवनामा गुरुव (योग
२४२ अ ११२ वंका १० १०) । वाक
५ [पाक] अन्त का मन्त्र करनेवाला
वाकर (मुना १३५) । सेवो सिखा ।

सेव्यारिभ न [वि] अन्वेषण विरोधे न
पूजना (वि ५५) ।

सेवि वं [व मन्त्रि] की का मुक्किया
देव, महाजन (दे ४२, अम २१ छाया
१ १—अन्य १६५ अम) ।

सेविभ न [वि] पुन-विरोध (अन्य १—अन्य
१५) ।

सेविभा की [दे सेविता] अन्व विद्वो नही
(अन्य २ १५ १) ।

सेवि की [मेवि] सेवो सेवी = सेवी (गुर
१ १०६ २ ११५) ।

सेविभा, सेवो सेविभा (अन्य ३, १ १४
सेवी) की १) ।

सेवी की [मेवी] १ पांड (अन्य १४२
अन्य) । २ पांडि (अन्य) । ३ अन्वेषण योग्य
सेवागरी की एक नाम (अन्य १०५) ।
सेवी सजि ।

सेव्य वं [रयन] १ पन्थि-विरोध (अन्य ५,
७६ दे ३० अम १ ७५) । २ विचार
का एक पन्थ (अन्य ३, १३) ।

सेव्य सेव्यसं मण्डल-प्रदेशों मन्त्रि मन्त्रि
मन्त्रि इन्धन-मन्त्रि (भाषा ५) ।

सेव्या की [सना] १ कलावत् संयन्त्राकी
की मन्त्रा (अन्य १३१) । २ वाकर, सेव
(अन्य) । ३ एक सेव वाणी, की मन्त्रि
मन्त्रा की मन्त्रि की (अन्य पन्थि) । ४ वह

वाकर विषय १ हावी १ रा २ नोहे वीर
१३ व्यादे हो (अन्य २५ ३) । [पिय,
पी, पय वं [नी] सेवा-पन्थि वाकर
का मुक्किया 'सेवा-पन्थि' काहे नेतुल
विरोध गुर-मन्त्र (अन्य ३ ७७) मुना

१ मन्त्रि अम पन्थ २४ २) । मुन
१ [मुन] वह सेव विषय १ हावी १
अ, २७ नोहे वीर ४२ व्यादे हो (अन्य
२५ ३) । वं वं [पन्थि] सेवा का
मुक्किया सेवा-पन्थि (अन्य पन्थ १० २
अन्य २०० मुना २३३) । [विपन्थि] वं
[विपन्थि] वं वं वं वं (अन्य ७५) ।
सेव्यावयव व [सेव्यावयव] सेव्यावयव सेव
का नेतुल (अन्य वीर) ।

सेवि की [मेवि] १ पांडि । २ वं वं (अन्य) ।
१ मुन-वाकर वाकि मन्त्र-वाकि (अन्य १
१—अन्य ३०) ।

सेविभ वं [मेविभ] १ मन्त्र देव का एक
प्रकार उवा (अन्य १ १—अन्य ११ १०५
अ १—अन्य ४६५ अम १२५ अम वं
अन्य २, १३५ अम) । २ एक वं वं
(अन्य) ।

सेविभा की [सेविभा] एक वं वं मुन-वाकर
(अन्य) ।

सेविभा १ की [सेविभा] अन्व का एक
सेविभा १ मेव (अन्य) ।

सेविभा सेवो सेविभा (अन्य १२) ।

सेविभा वं [सेविभा] वाकर-विचार (अ
१०१) ।

सेवी की [मेवी] सेवो सेवि (अन्य अम
१ १) ।

सेव्य सेवो सेव्य = सेव्य (अन्य १ ५—अन्य
१४५ अम) ।

सेव्य सेवो सेव्य = सेव्य (अन्य १५) ।

सेव्य (अन्य) सेवो सेव्य = सेव्य (अन्य) ।

सेव्य वं [राय-अन्य] एक प्रविष्ट मन्त्रि
(अन्य १ १५—अन्य २२५ अम) ।

सेव्य सेवो सेव्य = सेव्य (अन्य १ ५—अन्य
३६) ।

सेव्य सेवो सेव्य = सेव्य (अन्य २—अन्य ३२) ।

सेव्य सेवो सेव्य = सेव्य (अन्य १ १२ १ कुमा
अन्य १२, १ ५५) ।

सेव्य १ सेवो सेव्य (अन्य २, ५५ अम; कुमा
अन्य २२) ।

सेव्य वं [सेव्य] वं वं वं, वं वं (अन्य १५) ।
सेव्यावयव की [सेव्यावयव] अन्व-विरोध
(अन्य २३५ अम १५) ।

सेव्या की [सेव्या] वं वं, वं वं (अन्य,
सेव्या) १ अन्य १३३ हावी १५ २२) ।

सेव्य वं [सेव्या] अन्व, सेव्या वं
(अन्य २२ अ २५०) ।

सेव्य वं [सेव्य] वं वं वं वं वं वं वं
(अन्य ७७ अम ३०) ।

सेव्य वं [सेव्य] वं वं वं वं वं वं वं
(अन्य ७७ अम ३०) ।

सेव्य वं [सेव्य] वं वं वं वं वं वं वं
(अन्य ७७ अम ३०) ।

सेव्य वं [सेव्य] वं वं वं वं वं वं वं
(अन्य ७७ अम ३०) ।

सेव्य वं [सेव्य] वं वं वं वं वं वं वं
(अन्य ७७ अम ३०) ।

सेव्य वं [सेव्य] वं वं वं वं वं वं वं
(अन्य ७७ अम ३०) ।

सेव्य वं [सेव्य] वं वं वं वं वं वं वं
(अन्य ७७ अम ३०) ।

सेव्य वं [सेव्य] वं वं वं वं वं वं वं
(अन्य ७७ अम ३०) ।

सेव्य वं [सेव्य] वं वं वं वं वं वं वं
(अन्य ७७ अम ३०) ।

सेव्य वं [सेव्य] वं वं वं वं वं वं वं
(अन्य ७७ अम ३०) ।

सेव्य वं [सेव्य] वं वं वं वं वं वं वं
(अन्य ७७ अम ३०) ।

सेव्य वं [सेव्य] वं वं वं वं वं वं वं
(अन्य ७७ अम ३०) ।

सेव्य वं [सेव्य] वं वं वं वं वं वं वं
(अन्य ७७ अम ३०) ।

सेव्य वं [सेव्य] वं वं वं वं वं वं वं
(अन्य ७७ अम ३०) ।

सेव्य वं [सेव्य] वं वं वं वं वं वं वं
(अन्य ७७ अम ३०) ।

सेव्य वं [सेव्य] वं वं वं वं वं वं वं
(अन्य ७७ अम ३०) ।

सेव्य वं [सेव्य] वं वं वं वं वं वं वं
(अन्य ७७ अम ३०) ।

सेव्य वं [सेव्य] वं वं वं वं वं वं वं
(अन्य ७७ अम ३०) ।

(रंय) । रंयम पु [रंयम] पयाण का बंधा (कम्म १ १०) । पाळ थाळ पु [पाळ] १ पण्य तथा भूतलभ नामक द्रवों का एक एक नोकपाल (आ ४ १—पत्र ११७—इक) । २ एक बैलदर बर्माबन्धी पुष्प (मम ७ १०—पत्र १२१) । स न [स] नत्र (दे १ २७) । सिद्धर न [सिद्धर] पर्वत का शिखर (कम्म) । सुया की [सुया] पार्वती (पाथ) ।

सेव्या पु [रीख] १ एक राजवि (छाया सेव्य १ १—पत्र १ ४ १११) । २ एक पक्ष (पि १११; छाया १ १—पत्र ११४) । पुर न [पुर] एक नगर (छाया १ ४) ।

सेव्यय न [रीखक] एक मोक्ष (आ ७—पत्र १११ राज) । सेव्य की [रीख] तीवरी नरक-दुषिणी (आ ७—पत्र ११०—इक) ।

सेव्यइच्छ पु [रीखनित्य] बलकीपुर का एक प्रसिद्ध राजा (दी १४) ।

सेव्य पु [रीख] सेव्य-नामक बुद्ध-विशेष (पण्य १—पत्र ११) ।

सेव्यस पु [रे] विद्य ब्रह्मादी (दे ७ २१) । सेव्य वि [रीखय] पर्वत में जलन पर्वतीय (वर्गवि १४) ।

सेव्यस पु [रीखरा] देव पर्वत (विदे १ १४) । सेव्य की [रीखरी] देव की तरह निष्कल धाम्यवस्था, योगी की सर्वोच्च अवस्था (विदे १ १४ ३ १७ सुपा ११४) ।

सेव्यवाइ पु [रीखेवायि] एक बैलदर बर्माबन्धी गृहस्थ (मम ७ १०—पत्र १२१) ।

सेव्य केवो सेव्य = रंय 'न हु किञ्चइ राय मनी रंयं मिम धवित्तपुदेस' (बजा ११२) ।

सेव्य पु [रे] १ मुच-सिन्धु । २ हर, बाण (दे ४, ४७) । ३ कुल बद्ध (दुगा ६ ४ १०७) ।

सेव्य पु [रीख्य] एक राजा (छाया १ ११—पत्र २ ५) ।

सेव्यया पु [रीख्यक] कुचपरिधर्मी की एक क्रांति, अनु-विशेष (पण्य १ १—पत्र ५) ।

सेविज की [रे] रज्जु, रस्सी (उत्त २७ ७) । सेव्य छक [सेव] १ धारयन करना । २ धाम्य करना । ३ जगोष करना । नेब, सेव्य (भाषा उच म्हा) । युद्ध सेविता सेविमु (भाषा) । बद्ध सेवमाण (सम ३३: भग) । कवड सेविज्व, सेविज्वमाण (सुर १२ १११ कम्म) । सेव्य सेविम, सेविता (गात्र—गुच्छ २४४ छाया) । क-सेव्ययव (सुपा १२७ कुमा) सेवयिय (सुपा १२७) ।

सेवग देवो सेवय (पत्र ११ ४१) । सेवड देवो से = स्वेत ।

सेवण न [सेवन] १ सीता खिचौ करना (ज ५ १२१) । २ सेवा (उत्त ११, १) । सेवणया [की] सेवण सेवा (उत्त २१, सेवण १ १ उच ८ १) । सेवय वि [सेवक] १ सेवा-कर्ता (दुप्र ४ २) । २ पुं नीकर, दूत (पामा दुप्र ४ २ सुपा ११२) ।

सेवड न [रीख] सेवार, सेवाल, एक प्रकार की घास जो सर्पियों में लक्ष्मी है (पाथ) ।

सेवा की [सेवा] १ भक्त पुरुषासका भक्ति । २ जगोष । ३ धाम्य । ४ धारयन (दे २ ११ कुमा) ।

सेवाड न [रीषाळ] १ सेवार, सेवाल सेवाड नास विशेष (उप ५ १११ पाथ, बी ६) । २ पुं एक ताप्य जिसकी नीचय स्वादी ने प्रविशोष किया था (दुप्र २११) । [राइर पु] [रीषाडि] भक्तान महावीर क समुप का एक प्रवीण युद्ध (मम ७ १०—पत्र १२१) ।

सेवाळ पु [रे] बद्ध, कसरा काँटी (दे ८ ४१) यव ।

सेवाळि पु [रीषाळि] एक ताप्य जिसकी नीचय स्वादी ने प्रविशोष किया था (उप ४२२ टी) ।

सेवाळिय वि [रीषाळिड, रं] सेवालभन्ना रोषाळ-युक्त सेवाजिवमुमित्तो किञ्चमुपाणा न कायपायमिं (सुर २ १ ४) ।

सेवि वि [सेवि] सेवा-कर्ता (ज्जा) ।

सेविज वि [सेविज] ऊपरदेवी (सम ११) ।

सेविज वि [सेविज] जिसकी सेवा की गई हो वह (काथ) ।

सेव्या देवो सेवा (दे २ ११: प्राप) ।

सेस पु [रोय] १ सेप-नाय मर्ग राज (दे २ २८) । २ छत्र का एक भेद (विग) । ३ वि धमटि नामी का (आ १ १ टी—पत्र ११४ वसि १ ११४ दे १ १२२ नउड) । मड, पई की [पना] १ सारन बनवेन की माता (सम ११२) । २ वक्षिण बचक पर खनेवाली एक किञ्चुमाटी देवी (आ ८—पत्र ४११ इक) । ३ नत्तो-विशेष (पण्य १—पत्र ११) । ४ भक्तान महावीर की शीक्षी—दुष्टी की पुत्री (भाषा २ १४, ११) । ५ न [पत्] अनुमान का एक भेद (सुपु २१२) । [राअ पु] [राज] छत्र-विशेष (विग) ।

सेसज न [रीख] भक्त्याभन्ना (दे ७ ७१) ।

सेसा की [सेपा] मिमाल (उप ७२५ टी सिरि ११४) ।

सेसिज वि [रीषिय] १ बाकी बचया हुआ (पा १११) । २ क्लम किया हुआ खतम किया हुआ (विदे १ २१६) ।

सेसिज वि [रीषिय] संबद्ध किया हुआ, निष्पकया हुआ (विदे १ १११) ।

सेह छक [नय्] पसायन करना, भासना । उह (दे ४ १७५ कुमा) ।

सेह छक [रीषिय] १ विवाहा टीळ केत । २ खना करना । वेवि (सुप १ २ ११६) । कवड सेहिज्वन (सुपा ११४) ।

सेह पु [रे] सेह मुचपरिधर्मी की एक जाति छाडी जिसके शरीर में कटे होते हैं (पण्य १ १—पत्र ५ पण्य १—पत्र ११) ।

सेह पु [रीख] १ न-दीप्रिय ताप्य (सुप १ १ १ ३ सम ४५० सुपा ११४, १७५, उच कस) । २ जिसकी सीटा दी धाम्यवासी हो वह (पत्र १ ७) । ३ दिव्य नेता (मुब १ ११) ।

सेह पु [सप] विधि (ज्जा) ।

सेहय वि [सेयाम्भ] पाथ-विशेष वह बाध जिसमें पकने पर जटाय का संस्कार किया जाय (ज्जा पण्य २ ३—पत्र १४) ।

विसे मयमम् ध्वनिय को दनु-य्य है
अथ पाछा कठमा बा (पम् पुत्र २१९) ।
३ मयदीय मय का बोरोतर नाम (गुज
१ १६) । ४ मयनाम् म्हावीर का पिता
यना किनार (पात्र २ १६ ३) । देहो
सिखईस मईस = मेदाव ।

सेजस देहो सेमईस = मेदाव (आयम) ।

सेजा की [शय्या] १ प्रज विद्वान् (वि १
३७) कुमा । २ मकल वर, वरधि ज्ञानमय
(पर १२२ गुज १ १२) । वर वु [वर]
गुह-नामो ज्ञानमय का मयिक वरु को
पुनरे के लिए स्वान देवताला गृह्य (योग
२४२ पर ११२ वंश १७ १७) । वाळ
पु [पाळ] अथवा ना वाम करनेवाला
वाजर (मुवा २५७) । देहो सिजा ।

सेजासिज न [रे] ज्ञानोत्तम द्वितीये में
सूक्त (रेन ४१) ।

संदि वु [द सदिम्] कीय का कुबिया
देह-मात्रण (रे ४२ तम २१) छावा
१ १—यव १६ छावा) ।

संदिम न [रे] एण-विरोध (प्राण १—यव
११) ।

संदिवा की [रे संदिवा] संदि विद्वी जरी
(छावा २ १ ११) ।

संदि की [मजि] देहो संदी = मेदी (गु
१ १७ २ ११९) ।

संदिवा, देहो संदिवा (क २ १ ३०
सेदी) की ३) ।

संघो की [अर्ध] १ वीज (हम १४२;
गु) । २ रसि (अणु) । ३ अर्धव्य योग्य
अधकरी को एक गण (अणु १७१) ।
देहो सयि ।

संघ वु [संघन] १ वजि-विरोध (पत्रम ८,
७६ रे ८ मग २ ७४) । २ विपार
वत का एक घना (पत्रम ८, १२) ।

संघ देहो सय्य मण्डलवहो मण्डो मरति
मण्डा इविमयई (घाघ १) ।

संघा की [सना] १ कान्ता संभलाजरी
री माता (वम १२१) । २ वरकर, वीज
(मुवा) । ३ एक वन बानी, को मयि
सुनय को वयि की (कपा वरि) । ४ वृ

वरकर जिसमें ३ हाथी ३ रक्त २ बोई वीर
१२ प्यारे हों (पत्रम २६ ६) । विय,
जी प्यम वु [नी] सेम-मयि, वरकर
का मुखिया 'सेलासिओपि' याहे वेतुल
जिलेवर 'गुवदस्त' (पत्रम ३ ७७ गुवा
३ यमि वर-पत्रम २४ २) । सुह
न [सुह] वृ देहा जिसमें २ हाथी २
रक्त २७ बोई वीर ४२ प्यारे हों (पत्रम
२६ ६) । वृ वु [पयि] देहा का
मुखिया केला-नामक (कपा पत्रम २७ २
यम २७ गुवा २२) । हिय व
[पियि] वृ वी पूर्वाक्ष वर (गुवा ७१) ।

सेपासव न [सेपासव] केमसिपय सेम
का वेतुल (कपा वीप) ।

सेपा की [सेपि] १ पीक । २ वृह (वृह) ।
३ कुम्हार धादि पुरुष-धादि (छावा १
१—यव ३७) ।

सेपिज वु [अविज] १ मय वत का एक
अधकरी छावा (छावा १ १—यव ११ १७।
अ १—यव ४२२, यव १२४) अथ वत
पत्रम १, १२) कुमा) । २ एक वीज मुनि
(कपा) ।

सेपिज की [सेपिज] एक वीज मुनि-छावा
(कपा) ।

सेपिज २ की [सनिज] अथ का एक
सेपिज ३ मेव (पिच) ।

सेपिज देहो सेपिज (संघोच ३२) ।

सेपिज वु [सिनिज] मरकटी विपारो (व
१७१) ।

सेपी की [सेपी] देहो सेपि (महा साम्य
१ ११) ।

सेप्य देहो सिम = सिम (छावा १ —यव
१४१) वरज) ।

सेप देहो सिम = सिम (पुत्र १९) ।

सेप (यव) देहो सेज = सिम (पिच) ।

सेपुज वु [सपुज] एक अधिक वरति
(छावा १ १९—यव २२१) वरि) ।

सेप देहो सेज = सिम (रे ४ ३४—यव
१६) ।

सेप देहो सेह = सेह (गीत २—यव २९) ।

सेप देहो सिम = सिम (रे १ १२) कुमा
अथ गुर १२, १ ४६) ।

सेप्य १ देहो सेम (रे २ २४) वृ कुमा
सेप १ माह २२) ।

सेप पुन [शप] पुन-पिच, सिम (माह १४) ।

सेमासिमा की [शपसिमा] तम-मिरोध
(रे १ २२९ माह १४) ।

सेमुसी १ की [शमुसी] देहा वृदि (यव
सेमुसी) व १ १११) इमीर १४ २२) ।

सेम वृकी [सेप्य] कप, केमा वरि
(माह २२ वि २६) ।

सेर सि [सेर] स्वप्न-स्वप्न स्वप्न
(स्वप्न ७७) सिम १७) ।

सेर सि [सेर] विमल (रे २ ७) कुमा) ।

सेर पु [रे] रे, मयि-मयि-विरोध (विम) ।

सेरपी की [सेरपी] की-मिरोध, कप के
वर में वरकर सिम-मयि करनेवाली स्वप्न
की (कपा) ।

सेरव वु [रे] वर की एक वरत मयि
(स्वप्न २१९) ।

सेरिम वु [रे] पुन वृज, मयि का वीज
(रे ४ ४४) ।

सेरिम देहो सेरि (गुज ४ ११ रे ८
४४) ।

सेरिप वु की [रे] मयि-विरोध, 'कपि-मयि-
विपि-मयि' (कपा) ।

सेरिप वु [रे] पुन-विरोध (प्राण १—
यव १२) ।

सेरि वु की [सेरिम] पेंटा, वयि (व
१७२-७४२; मयि—पुन्य १२२) । की,
ही (वाप) ।

सेरी की [रे] १ कपी मयि । २ का
माहति (रे ४ २७) । ३ पय, पुन्य
(मि १ १८) । ४ कप-मयि मयि
(यव) ।

सेरीस पुन [सेरीस] एक मयि ना वम
(ही ११) ।

सख वु [सीख] १ वरि याह (वि २, ११)
माया गुर ३ २२२) । २ पयल कप
(व १ ११) । ३ न कप-मयि का वृह (वि
१, ११) । वर वु [वर] वर वर-
माया मयि विपार (यु १४२) ।

साह न [साह] वरि में का हुना वर
(कपा) । जाया की [जाया] वरि

सोमधिया को [सोमधिय] मयधे-विशेष
(छाया १ १—पत्र १ १)।

सोमप्रद देवो सोमप्रद (बच २ १)।

सोमाइ देवो सुमाइ (उप २० १ पत्र
२१ १ २ २५)।

सोमाइ (?) प्र [प्र+उ] पहरना
कैना। सोमाइ (बाता ११६)।

सोभ देवो साभ=सुभ। नह सोचंत,
सोभमाय (नाट—पुण्ड २०१ छाया १
१—पत्र १७)। चह. सोचिऊय इयनाए
पारोयनसिरबरोए प्रोयमियो पया (घ
१६७)। क साभ (बच)।

सोचि वि [साचित] मुह किमा हुपा
प्रसमित (घ १६८)।

सांभ देवो सांभ।

सोभं
सोभा देवो सुभ = सु।

सोभिय देवो सोभिय (बच)।

सोभन्य, न [सीजन्य] सुनन्य सनन्या
सोभन } सनन्य (उप ७२८ टी सुर १,
११)।

सोभ देवो सोभिय = सोभ (प्राज्ञ १६)।

सोभन वि [सोभन] मुनि-योग्य, सोभनीय
(पुन १ १ टी)।

सोभन्य वु [वे] रनक सोभो (गाम)।
देवो सुभन्य।

सोभिय देवो सोभिय (कुर १७)।

सोभिय वि [सोभिय] देवो सोभिय = सोभिय
(कम्य दीप मोह १ ४ कम्य बाव ११)।

सोभिय न [सोभिय] देवो सोभिय = सोभिय
(कुमा ११ ४ १, १ ११ ७१ ८७)
प्राज्ञ १६)।

सोभ वि [सांभ] छन किमा हुप (उप २९४
दे: बाता ११७)।

सोभन्य
सोभु देवो सभ = सभ।

सोभ वि [सोभ] बाव रच नयांवाता
(गाम)।

सोभन वि [सोभन] विनायिका, विप्राई
(पत्र १ ४—पत्र ७०; दीप संदु २)।

सोभिय वि [सोभिय] १ धान-नायक।
२ कुतो से शिखर करनेवाला (घ २११)।

सोभिय देवो सुभिय (गाम १११ वि ११
११२)।

सोभिय दे [सोभिय] कदी कमर (कम्य उप
१११)। सुभिय न [सुभिय] कदी-सुभ
करनी (दीप)।

सोभिय वु [सोभिय] कदाई (दे १ १२)।

सोभिय न [साभित] रविद, कुन (उप
७११)।

सोभिय वु [सोभियन] रलता बानी
(विह २०)।

सोभिय दे [सोभिय] देवो सोभिय (पत्र १
४—पत्र १०० ६)।

सोभिय देवो सोभिय = सोभिय, 'सुभिय'
मंदसोभियो स छने छ पनक्य' (धापा १
८ ८ ८ वि ७१)।

सोभिय न [सोभिय] सोभा सुभु (प्राज्ञ १
१११ २१)।

सोभिय देवो सुभिय = सुभिय (पत्र १११ प्राज्ञ
१०० वा १ ७ काय १११)।

सोभिय न [सोभिय] कम, बरछेनिय (धापा,
१११: विह १८)।

सोभिय देवो सुभिय = सुभिय (पत्र १११ प्राज्ञ
१०० वा १ ७ काय १११)।

सोभिय देवो सुभिय = सुभिय (पत्र १११ प्राज्ञ
१०० वा १ ७ काय १११)।

सोभिय न [सोभिय] कम, बरछेनिय (धापा,
१११: विह १८)।

सोभिय देवो सांभ = सोभिय (दे २ ६० वा
१११ दे १ १८ कुमा)।

सोभिय देवो सुभिय = सुभिय (बच: उप १४८
टी)।

सोभिय वु [सोभिय] वेतामसी बाह्य
(विह ११६, नाट—पुण्ड ११४ प्राज्ञ)।

सोभिय वु [सोभिय] १ सुभ-सोभिय सुते
का बना हुवा (सोभिय ७६, सोभ ७ १)।
२ सुते म व्यापारी (कुर १४६)।

सोभिय वु [सोभिय] दीनिय बन्नु-विशेष
(पत्र १—पत्र ४६)।

सोभिय वु [सोभिय] दीनिय बन्नु-विशेष
(पत्र १—पत्र ४६)।

सोभिय वु [सोभिय] दीनिय बन्नु-विशेष
(पत्र १—पत्र ४६)।

सोभिय वु [सोभिय] दीनिय बन्नु-विशेष
(पत्र १—पत्र ४६)।

सोभिय वु [सोभिय] दीनिय बन्नु-विशेष
(पत्र १—पत्र ४६)।

२१ वा २४४ प्रमि १२८: नाट—प्राज्ञ
१)।

सोभिय वु [सोभिय] दीनिय बन्नु-विशेष
(पत्र १—पत्र ४६)।

सोभिय वु [सोभिय] दीनिय बन्नु-विशेष
(पत्र १—पत्र ४६)।

सोभिय वु [सोभिय] दीनिय बन्नु-विशेष
(पत्र १—पत्र ४६)।

सोभिय वु [सोभिय] दीनिय बन्नु-विशेष
(पत्र १—पत्र ४६)।

सोभिय वु [सोभिय] दीनिय बन्नु-विशेष
(पत्र १—पत्र ४६)।

सोभिय वु [सोभिय] दीनिय बन्नु-विशेष
(पत्र १—पत्र ४६)।

सोभिय वु [सोभिय] दीनिय बन्नु-विशेष
(पत्र १—पत्र ४६)।

सोभिय वु [सोभिय] दीनिय बन्नु-विशेष
(पत्र १—पत्र ४६)।

सोभिय वु [सोभिय] दीनिय बन्नु-विशेष
(पत्र १—पत्र ४६)।

सोभिय वु [सोभिय] दीनिय बन्नु-विशेष
(पत्र १—पत्र ४६)।

सोभिय वु [सोभिय] दीनिय बन्नु-विशेष
(पत्र १—पत्र ४६)।

सोभिय वु [सोभिय] दीनिय बन्नु-विशेष
(पत्र १—पत्र ४६)।

सोभिय वु [सोभिय] दीनिय बन्नु-विशेष
(पत्र १—पत्र ४६)।

सोभिय वु [सोभिय] दीनिय बन्नु-विशेष
(पत्र १—पत्र ४६)।

सोभिय वु [सोभिय] दीनिय बन्नु-विशेष
(पत्र १—पत्र ४६)।

सोभिय वु [सोभिय] दीनिय बन्नु-विशेष
(पत्र १—पत्र ४६)।

सोभिय वु [सोभिय] दीनिय बन्नु-विशेष
(पत्र १—पत्र ४६)।

सोभिय वु [सोभिय] दीनिय बन्नु-विशेष
(पत्र १—पत्र ४६)।

सोभिय वु [सोभिय] दीनिय बन्नु-विशेष
(पत्र १—पत्र ४६)।

सोभिय वु [सोभिय] दीनिय बन्नु-विशेष
(पत्र १—पत्र ४६)।

सोमिष्ठ पुं [सोमिष्ठ] एक ब्राह्मण (अंत १)।

सोमिष्ठ देवी सोमिष्ठ = सोमिष्ठ (अ १२, ८८)।

सोमसर पुं [सोमसर] सोपुत्र का सोममास महीने (सम्यक् ४२)।

सोम्य वि [सोम्य] १ एलीय सुवर (वि १ २०)। २ ठंडा खीर (वि ४ ८)।

३ खीर का प्रसिद्धिदाता, राष्ट्र स्वभावदाता (वि २, १६ विवे १०३१)। ४ प्रिय-वर्ण विष्णु वर्ण मय बने हुए। ५ विष्णु का प्रसिद्धिदाता सोम-वर्ण ही वह। ६ यास्वर, कपिलवर्ण। ७ पुं कुल प्रहः। ८ शुभ प्रहः। ९ कृष्ण विष्णु सम पति। १० अनुस्वर वृक्ष। ११ दौप-विशेष। १२ सोम-रस पीनेवाला ब्राह्मण (प्राय)। १३ सोम = सोम्य।

सोमि (प्रा) व [स एव] बहो (प्राय १२१)।

सोमट्ट पुं [सोमट्ट] १ एक भारतीय देश, सोमट्ट, काश्मिराज (इका वी ११)। २ वि सोमट्ट देश का निवासी (भावक २१)। ३ न. जन-विशेष (विष्)।

सोमट्टिया की [सोमट्टिका] १ एक प्रकार की मिट्टी मिट्टिका (प्राय २ १ १ १ वर २, १ १८)। २ एक जैन मुनि-यात्रा (अम)।

सोमरम न [सोमरम] सुपन्न कुपुत्र (विष् सोमरम १११ कुपु २२३) यदि वप सोमरम २८६ टी)।

सोमरसी की [सोमरसी] सुखेव देश की शरीर काया प्रकृत पाया का एक देश (विष् १०)।

सोमर के सोमरम (पठ)।

सोमरि न [सोमरि] सुखा, पण्यम (प्राय प्राय ११)।

सोमरि न [सोमरि] १ कुशावर्त देश की प्राचीन राजधानी (इका)। २ एक यक्ष (विष् १ ८—पत्र ८२)। वृक्ष पुं [वृक्ष] १ एक मण्डपार का वृक्ष (विष् १ १—पत्र ४ विष् १ ८)। २ एक राजा (विष् १ ८—पत्र ८२)। पुर न [पुर] एक नगर

(विष् १ ८)। वडिखान न [वडिखान] एक खान (विष् १ ८—पत्र ८२)।

सोमस वि न [सोमस] १ संध्या-विशेष, सोमस, ११। २ सोमस संख्यावाता (अम ४४, १—पत्र २१४ २१४—अम ११२, १२, प्राय ७७ वि ४४१)। ३ वि सोमसर्वा ११ वां (राय)। म वि [रा] १ सोमसर्वा ११ वां (राया १ ११—पत्र १११ १११ २२१ पत्र ४६)। २ वरा राय राय किं के उपवास (साम्या १ १—पत्र ४२)। य न [क] सोमस का समुद्र (उत्त २१ ११)। विह वि [विह] सोमस प्रकर का (वि ४२१)।

सोमसिद्धा की [सोमसिद्धा] रत्न-यान-विशेष सोमस पर्व की एक वाप (समु १२२)। सोमस के सोमस (प्राय ४६)।

सोमसोपपत्त पुं [वि] रंज (वि ८, ४६)। सोमसक [पत्र] पकता। सोमस (वि ४ १ ८ वरणा १२१)। वर सोमस (विष् १ १—पत्र ४३)।

सोमसक [विष्] कंका। सोमस (वि ४ १४१ वर)। कर्त्त. सोमसक (कुप)। सोमसक [१२, सम + १२] वेष्टा करता। सोमस (वरणा १२१ प्राय ११)।

सोमस न [वि] मति (वि ८ ४२)। देवी सुख = सुख। सोमस वि [पत्र] पकता हुआ (जना विष् १ २—पत्र २० १ ८—पत्र ४२, ४६)।

सोमसि वि [पत्र] १ पकता हुआ 'ईवाव सोमसि' (वी)। २ न. पुष्प-विशेष (वी)। सोम के सोम = वपुः। सोमस, सोमसि (वि १ १४—पत्र ४६ वि १२२)।

सोमसम } वि [सोमसम] मिमित-काय सोमसम } व की गट का कम हो चके वह कर्त्त वापु, धाया धावि (पुत्र ४२२, ४२३)।

सोमसि वि [सोमसि] उपपन्न-मुक्त लक्षित पुष्ट (अम)।

सोमसक पुं [सोमसक] एक वरु का नीम कला मयक (वर १, ८ वी)।

सोमस न [सोमस] यमन सोमा (अम २ २१७)।

सोमस न [वि] १ वास-गृह, यम्या-गृह रवि मन्दिर (वि ८ १८ व १ १ पाय)। २ स्वप्न। १ पुं मल्ल (वि ८ २८)।

सोमस (प्रा) देवी सभय (अम)।

सोमसि वि [सोमसि] १ स्वप्न-पलक कुत्तों को पावनवाता। २ कुत्तों के शिकार करनेवाला (पुत्र २ २ ४२)।

सोमसा की [सोमसा] विद्या-विशेष (वि ८ ८)।

सोमस्य वि [सोमस्य] स्वर्ण-निमित्त सोने का (महा सम्यत् १०३)।

सोमस्यमसिद्धा की [वि] मनुष्यिका की एक वासि एक वरु की राह की मस्यो (वि ८, ४६)।

सोमसिद्धा } वि [सोमसिद्धा] सोने का सोमसिद्धा } सुख-सोमसिद्धा (वि ४ ४ ४८)। पत्रम पुं [पत्रम] मेह पर्वत (पत्रम २, १८)।

सोमस्योष पुं [सोमस्योष] नवपत्नी की, आ इ (वर)।

सोमस्य न [वि] १ उपकार। २ वि, जनमोय, उपसोमस्य (वि ८, ४२)।

सोमसिद्धि } वि [सोमसिद्धि] १ मनुष्यिक सोमसिद्धि } वपन सोमसिद्धि, माया मयि स्वप्न-वाचक (अ ४ २—पत्र २११ वी)। २ पुं कलेष्टि मनुष्य-विशेष (अ २, १—पत्र ४८)। ३ सोमसिद्धि कपु की एक वासि (पत्र १—पत्र ४२)।

सोमसिद्धि पुं [सोमसिद्धि] १ बाध्या, एक मनुष्यिक (वी)। २ पुं, विष्णुयम मयक मल्लकार पर्व का एक शिकार (इका)। ३ पुं वरु-पर्व का एक शिकार (पत्र)। ४ एक देव-विमान (विष् ४२१)। देवी ससिद्धि, सोमसिद्धि = स्वप्निक।

सोमस के सोमस्य (अंत १० वा २८ वि ८११ मयि)।

सोमसिद्ध के सोमसिद्धि (राया १ १—पत्र २२)।

सोमसिद्ध के सोमसिद्धि = सोमसिद्ध (पुत्र २, २ २८)।

सोमिय सेवो सोमिअ = सोमिय (शब्दा १
१ टी—पत्र १)।

साम पुं [सोम] १ पत्र चौर, एक ज्यो-
तिष्क महापुत्र (अ २ १—पत्र ७७) विधि
१ २३ पत्र)। २ भयान् प्रमर्षण का
पञ्चमी ब्रह्मण (अ १३ अ ७—पत्र
४२६)। ३ एक प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश (पत्र
६ २)। ४ क्षत्रिय ब्रह्मण चौर बाल्यक का
पिता (अ १—पत्र ४४७ पत्र २
१२२)। ५ एक विद्यावर ब्रह्मण, जो
ब्रह्मण-पुर का स्वामी था (पत्र ७ ४३)।
६ एक छत्र का नाम (मुद्रा ३२७)। ७ एक
ब्राह्मण का नाम (शब्दा १ ११—पत्र
१२६)। चमरेण, क्षत्रीय शीर्षक तथा
इन्द्रकेतव का एक-एक लोकपाल के नाम (अ
४ १—पत्र १ ४ म १ ७—पत्र
१२४)। ८ ब्रह्म-विरोध सोमवशा। ९

वहका रत्न। ११ मनुष्य (पत्र)। १२ चावी-
मुद्रास्थि धुरि का एक शिखर—जैन धर्म
(अ)। १३ पुं. के-निर्माण-विरोध (विश्व
१३१ १४१ १४२)। १४ वि. कीर्तिमान्,
महती (अ)। काश्यप पुं [काश्यप]
शिव लोकपाल का प्राकाराणी देव (अ ३
७—पत्र १२६)। गार्हपत्य न [गार्हपत्य]
कन-बाल्य (वि ४ १२६)। बंध पुं
[बन्ध] १ ऐतत्त बंध में उत्पन्न कारण
विशेष (अ १३)। २ चापार्थ द्वैक्य
वा एकात्म्य का नाम (कुत्र २१)। ब्रह्म
व [ब्रह्म] १ एक पत्रा (पुत्र २ १४३)।

प्राज्ञ देवा 'मह' (पत्र)। ब्रह्म पुं
[ब्रह्म] १ एक ब्रह्मण का नाम (शब्दा १
११—पत्र १२६)। २ एक जैन धर्म, जो महा-
ब्रह्म-वर्मा का शिष्य था (अ)। ३ भयान्
कन-बाल्य का प्रथम कन-वर्मा का शिष्य
(अ १२१)। ४ पत्रा छत्राधी का एक
नरहित (विश्व १३—पत्र ६)। 'ब्रह्म व'
[ब्रह्म] १ शिव कायक लोकपाल का चाप-
कन-बाल्य (अ ३ ७—पत्र १२६)। २
कन-बाल्य का प्रथम कन-वर्मा का शिष्य
(अ १२१)। नाह पुं [नाह] सोपु-
ष्ट की मृद्विद्धि मृद्विद्धि-वृद्धि (टी १२,
अमल ७२)। पत्रम 'पत्र' व [प्रभ]

१ ब्रह्मण के सोमवर्ध का चापि पुत्र का
ब्रह्म का एक पुत्र (पत्र २ १ कुत्र
२१२)। २ छत्राधी छत्राधी का एक जैन
चापार्थ चौर ब्रह्मण (पुत्र १२१)। ३
चमरेण के सोम-लोकपाल का उत्पन्न-वर्ध
(अ १०—पत्र ४२२)। मूह पुं [मूह]
एक ब्राह्मण का नाम (शब्दा १ १६—पत्र
१२६)। मूह्य न [मूह्य] एक कुल
का नाम (अ)। य न [य] एक योग,
जो ब्रह्मण चौर की छाया है (अ ७—पत्र
३२)। य वा वि [य वा] सोम
रत्न वीर्यवत्ता (पत्र)। 'सिरो की [सी]
एक ब्राह्मणी (अ)। सुंदर पुं [सुंदर]
एक प्रसिद्ध क्षत्रिय तथा कन-वर्मा (टी
१४ कुत्र ४४)। मुरि पुं [मुरि] एक
विद्यावर, ब्राह्मण-ब्रह्मण वा कर्ता एक
क्षत्रिय (अ ७)।

सोम नि [सोम] १ धरी, धनुष (अ १
म १२ १—पत्र ३७३)। २ वीर्य
पत्र-पत्र (अ १२, ७)। ३ प्रत्यक्ष
स्वाय (अ)। ४ प्रिय-वर्धन विद्यावर
वर्धन धिव माह्य हो वह। ५ मर्षण,
धनुष। ६ छत्राधी विद्यावर (चोपत्र २२)
का धुवा १२ १ २२२)। ७ छत्राधी-
सोमिन् (अ २)। देवो सोम्य।

सोमयज्ञ नि [वि] सोमि की धारणता (वि
न १६)।

सोममह पुं [सोममह] द्वितीय धनुष की
एक ब्रह्म (अ ११ १२६)।

सोमपणिय नि [स्वापनास्तिक, स्वापना-
स्तिक] १ सोम के ब्रह्म का नाम प्रसि-
द्ध—प्रत्यक्ष-विरोध। २ स्वपन-विरोध
में किया जात्र प्रसिद्ध (अ १—पत्र
१७२)।

सोमणस पुं [सोमणस] १ महाविद्यावर
का एक ब्रह्मण-वर्धन (अ २ १—पत्र
१६३)। २ य व [य व] २ य व [य व]
वर्धनका एक ब्रह्मण देव (अ २)। ३
पत्र का चापार्थ धिव (पुत्र १ १४) ४
पुं. कन-वर्मा का नाम (अ ३ ७—पत्र
१२६)। सोमिपि नि [सोमिपि] १ सोमिपि

१ एक देव-विद्यावर, छत्राधी देव-विद्यावर
(विश्व १३० १४१ पत्र १२४)। २ सोम-
वर्धन-वर्धन का एक धनुष (अ २, १—पत्र
७)। ३ य व [य व] २ य व [य व]
वर्धन का एक धनुष (अ २
१—पत्र ७)।

सोमणस न [सोमणस] १ धनुष म-
र्षण म (अ ७)।

सोममहा की [सोममहा] १ धनुष-
विद्यावर विद्यावर का द्वितीय कन-वर्मा
है (अ)। २ एक धनुषी (अ)। ३
सोममहा वन की एक ब्रह्म (अ ४)। ४
पत्र की पञ्चमी धिव (पुत्र १ १४)।

सोमपणिय नि [सोमपणिय] १ धनुष
मर्षण। २ प्रत्यक्ष मर्षण (अ)।

सोमपणस देवो सोमणस = सोमणस (अ
वीर्य)।

सोमपणसिध देवो सोमपणिय (अ ७ वीर्य
शब्दा १ १—पत्र १३)।

सोमह देवो सोममह (शब्दा २ १ १)।

सोमहि न [वि] वर, वर (वि ४, ४२)।

सोमहि पुं [वि] एक कन (वि ४ ४२)।

सोमा की [सोमा] १ छत्र के सोम चापि
चापों लोकपालों की एक-एक पत्राणी का
अव (अ ४ १—पत्र २ ४)। २ ब्रह्मण
विद्यावर की प्रथम शिष्या (अ १३२ पत्र
६)। ३ सोम लोकपाल की पत्राणी (अ
३ ७—पत्र १२६)।

सोमा की [सोमा] उत्तर शिष्या (अ १ —
पत्र ४७३) म १ १—४२६)।

सोमाय न [सोमाय] मर्षण, मर्षण (वि ४
४२)।

सोमाणस पुं [सोमाणस] छत्राधी देव-
विद्यावर (पत्र १२४)।

सोमर } देवो सुकुमार (पा १ ७ ४
सोमाय } ३३६; दे ७ ब्रह्मण ३ १
३७३) कुमा प्राज्ञ २ १ ३७३)।

सोमाय न [वि] नाह (वि ४, ४२)।

सोमिपि व [सोमिपि] धनुष प्राज्ञ कन-
वर्मा (अ ३२)।

सोमिपि की [सोमिपि] कन-वर्मा की मर्षण।
पुत्र पुं [पुत्र] कन-वर्मा 'धनुष-विद्या-
वर' (पत्र १२ ३७) सुव पुं [सुव]
ब्रह्म मर्षण (पत्र ७ १)।

सोहा श्री [सोमा] १ सोमि कमक (घ १
४५) कुपा मुपा ११ रंभा) २ घन
विरोध (विभ)।

सोहाय एक [सोपय] सपय कयना।
सोहादेह (घ २११)।

सोहायिष वि [शोपिष] सपक कयस हृष
(घ १२)।

सोहि श्री [गुहि, शोधि] १ निर्मलता
(साध १ १-वच १ १) संशोध ११)।
२ धर्मोपमा प्रत्यक्ष (सोप ७२१।
५२५) धावा)।

साहि वि [सोपिन्] सुदि-करी (सोप)।

सोहि वि [सोमिन्] सोमनेमाना (संशोध
४५) कम्पु यवि)। श्री गी (गट—
रना ११)।

सोहि शुद्धि [रे] १ शुद्ध कज। २ यविष्य
कास (रे ५ २५)।

सोहिम न [द] गिट धाटा बायस यवि
का हृत् (प २)।

सोदिअ वि [सोमिव] सोमा-गुच्छ (गुर १
७२ यगा यीप यय)।

सोहिम वि [सोपिव] शुद्ध क्रिया हृष
(पण्ड २ १ यय)।

सोहिद देवा सोहद (ना—गुह १ १)।

सोहिद वि [सोमिन्] सोमनेमाना (पा
५११)।

सोहिह वि [सोमायत्] सोमा-गुच्छ (पा
२४५) गुर १ ११ न १ न हे २ १५१
नका यवि)।

सोमिअ देवा सोमिअ = सोम (प ४)।
सोमिअ न [सोमिअ] सुमरणा (ह १ १)।

सोह देवा सउह = सोम (यमि २१ गट—
पालवी १११)।

सउ देवा स = स (पा २१६)।

ससास देवा सास = पास (पा ५५६)।

सिरी देवा सिरी = भी (पा ६७७)।

ससअ देवा ससअ = सस (यमि २१)।

॥ इस विरिपाइअसहस्रहृण्ययि सबापहस्रहृण्ययि
सुवरीसहस्रो हरंको समयो ॥

ह

ह दु [ह] १ नह-स्वामीय सत्यजन यरी
विरोध (प्राप प्राप)। २ य धर यरी का
सुषक सम्पद—हंसोपमा 'हे-विष्णु विष्णाव,
वे हंस हंस वसुधैव कुटुम्बक' (धावा २ १ ११
१ २, वि २७३)। ३ विरोध। ४ लेप
निष्ठा। ५ विष्णु। ६ प्रसिद्धि। ७ वाक्पुत्रि
(हे २ २१७)।

ह देवी हा = घ. (हे १ १७)।

हृ श्री [हृति] हृम वध मारण (भा १७)।

हं य [हम्] इन यरी का सुषक सम्पद—
१ लेप (भा)। २ धर्मोपमा (यमि २१)।

हंसय दु [हे] यरी-स्वर्ग-मुर्ख क्रिया बावा
रामय—सोम (हे ५ ११)।

हि य. इन यरी का सुषक सम्पद—१ यरी
का पाहान (हे ४ २५१) कुमा विप)। २
यरी का धामगच्छ (घ १२१) सम्पद
(१७)।

हंस देवा संह (हमोर १७)।

हंस देवा संह (घ ११२) वि १५५)।
हंस देवा हंता (यमि २ २ यय २९ सप
कम्पु वि २७५)।

हंसय देवा हंसय।

हंसा य [हन्स] इन यरी का सुषक सम्पद—
१ धामगच्छ स्त्रीभर (यमि १०५ यरी यरी
हंस १५ यय १९ यमि १ १—यय
७५)। २ यरी का धामगच्छ (यमि १५५
१९ हंस १५ यरी)। ३ यरी का
धारण। ४ धर्मोपमा (यमि २१)। ५ यरी का
१ लेप। ६ विरोध (यमि)। ७ हंस। ८
धामगच्छ (यमि)। ९ यमि (भा)।

हंस वि [हन्स] धामगच्छ (धावा) यमि
यमि ५१ १५ ७९ १५ विपे २६१७)।

हंस देवा हंसय।

हंसि य 'हंसय करो' इस यरी का सुषक
सम्पद (हे २, १५१) कुमा धावा २ १
११ १ २, वि २७३)।

हंसि य. इन यरी का सुषक सम्पद—१
विपद लेप। २ विष्णु। ३ यरी का
४ विष्णु। ५ यमि। ६ 'हंस' 'हंस
करी' (धावा) हे २, १५१ यय कुमा)।
७ धामगच्छ स्त्रीभर (विपे २१ यमि २१
५५)। ८ यरी का धामगच्छ (यमि १ ११ यमि
१ १७)।

हंसो देवा हंसो (गुर ११ २१५ धावा
सुष २ २, यय)।

हंस देवा हंस = हंस (यमि)।

हंस दु [हंस] १ यमि-विरोध (धावा १
१—यय २१ यय १ १—यय ५ कुमा
प्राय ११ १५६)। २ यमि, यरी 'यमि-
यरी हंसि हंस ना' (सुष १ ४ २
१७)। ३ यमि-विरोध (यमि २ २१
यमि)। ४ यमि यमि (यमि २५७)। ५
यमि-विरोध हंसय धामगच्छ यरी एक-
वादि (यय १—यय २९)। ६ यमि का
एक लेप (यमि)। ७ यमि-यरी का यमि ५५५

मर्म हर्मिदिह, हर्मिदिह (हे ४ २४४)।
 यद्द हण्य (पाषा कुमा)। कण्ड हण्यु,
 ह्यिन्नमाय, हर्मय, हर्ममाय (धृष्ट १
 २, २ ३, या १४ मुर १ २३ विपा १
 २—य २४ वि २४)। सङ्ग हवा,
 हवण, हवण हवण हर्मिकण, ह्यिन्न
 (पाषा प्रसू १४७ प्रसू १४७ नाट)।
 हव हव, हवण (महा उप पृ ४८)।
 ह हवण (हे १ १; हे ४ २४४
 पाषा)।

हय वक् [हृ] सुमा। हयव (ह ४ ४८)।

हय नि [हे] हृ, प्रतिष्ठ (हे ४ ३३)।

हय वेको हण्य 'हयवण्यलमारण—
 (यन्त्र ४ २३२)।

हय वेको यण = यण (या ७१३) ॥ १)।

हयन न [हयन] १ माण्य नय नाट (धृष्टा
 २४३, सङ्ग)। २ निनाट (पण्ड २ ३—
 य ४८)। ३ वि नय-कण। की जी
 (धृष्ट २२)।

हयिज नि [हय] विस्तर नय किया यमा हो
 नह (या २४) कुमा प्रसू १९; विग)।

हयिज वेको हय = हय।

हयिज नि [हय] सुमा हुमा (कुमा)।

हयिज वेको हयिज (या ६३३)।

हयिज नि [हय] नय करनेवाला (सुमा
 १ ७)।

हयिजि [हय] अहम्यहति १ प्रतिवि
 हयिजि हयिज (पण्ड २ ३—य ३
 २२२)। २ सर्वथा वय वय से (पण्ड २
 ३—य ४८)।

हय नि [हे] वाचरोप वाली बवा हुमा (हे
 ४ ३३; वय)।

हय युधि [हय] चिकु होट के नीके का
 यय, उड़ी लोड़ी बाड़ी (पाषा पण्ड १
 ४—य ७८)। अ, म, मंत यंत पु
 [मह] सुमा, यमनयवी का एक
 प्रसूत सुमा, यमन यमा यमनयुववी
 म पुन (यन्त्र १ ३६ १० १२३ ४७
 २६ ६३, १४४ कुमा प्रसू १४
 १३, २६, २६)। २६, कण न [हय]

नय-विरोप (यमन १ ११; १७ ११८)।
 य, यंत वेको म (यमन ४७ २३
 ८, उप पृ ३७९)।

हयुमा की [हयुमा] १ उड़ी लोड़ी बाड़ी
 (यम ३)। २ वहा-विरोप बाह्य-विरोप
 (यम)।

हयु की [हय] वेको हय (वि ३३८; ३३३)।

हयु वेको हय = हय।

हय वेको हय = हय (वि ३३४ २९९)।

हयिज वेको सयिज (वि २९४)।

हय नि [हय] हय-कण (प्राठ २)।

हयु वेको हय = हय।

हय नि [हे] १ योय, बन्नी करनेवाला (हे
 ४ ३३)। २ विनि बन्नी (योय)।

हय पुन [हय] १ हाय वयिचणोय
 हय वयिचि बल वयिचि (कन्मा १ १
 पाषा कन्मा कुमा १ १)। २ पु नय-
 विरोप (यम १ १७)। ३ बीवीय वयिच
 का एक वयिचण। ४ हाय की वयि (हे
 २ ४३ प्रसू)। ५ एक वयि वयि (कन्मा)।

कण्य न [कण्य] नय-विरोप (यापा १
 १९—य २२९ विग ४९१)। कन्म न

[कन्म] हय-विरोप वयिच-विरोप (यम
 १ ३ ४७ या १ ४—य १९२ यम
 ३३ कन्मा)। वाह वाह पु [वाह]

हाय वे वाह (यम कन्मा ४ ३ डि)। पहा

किज कीन [प्रहकिज] वयिच-विरोप

वीर्यवकिज की बीवीय वयिच वे वयिच वे
 को वयिच वयिच हो नह (हय)। यपायुड न
 [प्रायुड] हाय वे वया हुमा वयिच (हे
 ४ ७३)। मायन न [मायन] वयिच

विरोप (वीर)। सयुचय न [सयुचय] १
 वयिच-वयिच। २ वीवी (पण्ड १ ३—य ४९)

वीर्य न [वीर्य] नय-विरोप

(यापा १ १९—य २ ४)। वयिच न
 [वयिच] हाय का वयिच (यम)। वयिच

पु [वाह] वेको वाह (कन्मा)। वयिच
 पु [वयिच] हाय का वयिच वयिच (हे
 १ १९ मुर ४ ७३ कन्मा)।

हयिज पु [हयिज] वयिच-विरोप

(यापा १ १ २)।

हयिज पु [हयिज] हाय वयिच
 हयिज पु का काठ वयिच का वयिच-विरोप
 (विग ३७९ विपा १ ९—य १९)।

हयिज पु [हे] नय-वयिच, वयिच (हे
 ४ ९२)।

हयिज (यम) वेको हय (हे ४ ४४२ वि
 ३२३)।

हयिज न [हयिज] वयिच-वयिच (यम
 वयिच वयिच ३१ यम ८१)।

हयिज पु [हे] १ वयिच के लिए हाय में वी
 वयिच वयिच। २ वयिच-वयिच वयिच हाय
 वयिच (हे ४ ७३)।

हयिज नि [हयिज] १ वयिच हायवयिच।
 २ पु वयिच, वयिच (यम १ ३—य ४९)

हयिज नि [हयिज] १ वयिच हायवयिच।
 २ पु वयिच, वयिच (यम १ ३—य ४९)

हयिज नि [हयिज] १ वयिच हायवयिच।
 २ पु वयिच, वयिच (यम १ ३—य ४९)

हयिज नि [हयिज] १ वयिच हायवयिच।
 २ पु वयिच, वयिच (यम १ ३—य ४९)

हयिज नि [हयिज] १ वयिच हायवयिच।
 २ पु वयिच, वयिच (यम १ ३—य ४९)

हयिज नि [हयिज] १ वयिच हायवयिच।
 २ पु वयिच, वयिच (यम १ ३—य ४९)

हयिज नि [हयिज] १ वयिच हायवयिच।
 २ पु वयिच, वयिच (यम १ ३—य ४९)

हयिज नि [हयिज] १ वयिच हायवयिच।
 २ पु वयिच, वयिच (यम १ ३—य ४९)

हयिज नि [हयिज] १ वयिच हायवयिच।
 २ पु वयिच, वयिच (यम १ ३—य ४९)

हयिज नि [हयिज] १ वयिच हायवयिच।
 २ पु वयिच, वयिच (यम १ ३—य ४९)

हयिज नि [हयिज] १ वयिच हायवयिच।
 २ पु वयिच, वयिच (यम १ ३—य ४९)

हयिज नि [हयिज] १ वयिच हायवयिच।
 २ पु वयिच, वयिच (यम १ ३—य ४९)

हयिज नि [हयिज] १ वयिच हायवयिच।
 २ पु वयिच, वयिच (यम १ ३—य ४९)

हयिज नि [हयिज] १ वयिच हायवयिच।
 २ पु वयिच, वयिच (यम १ ३—य ४९)

हयिज नि [हयिज] १ वयिच हायवयिच।
 २ पु वयिच, वयिच (यम १ ३—य ४९)

हयिज नि [हयिज] १ वयिच हायवयिच।
 २ पु वयिच, वयिच (यम १ ३—य ४९)

हयिज नि [हयिज] १ वयिच हायवयिच।
 २ पु वयिच, वयिच (यम १ ३—य ४९)

हयिज नि [हयिज] १ वयिच हायवयिच।
 २ पु वयिच, वयिच (यम १ ३—य ४९)

बीज समुत्पिण्डे, हापी को मारकर रखके मांस से जीवम-निर्माण करने के लिये अमरगन्ना संयोज्य (बीज मृदधि ११) । नयनपुर देखो मागपुर (ध्वि) । पात्र दुं [पात्र] भवनाम् महावीर के समय का पात्राभूषण का एक चरा (कल्प) । पिप्पल्य की [पिप्पल्य] वसन्ति-विशेष (वृत्त १४ ११) । सुह दुं [मुल] १ एक फलार्थ । २ वि. कनका निवासी मनुष्य (अ ४ २—पत्र २२१) इह । रप्य न [रप्य] वलय हापी (बीज) । राय दुं [राय] वलय हापी (गुण ४२३) । वाउय दुं [व्यावृ] महावत (बीज) । वाउ देखो वास (कल्प) । विजय न [विजय] धैराज्य की उत्तर वेष्टि का एक विद्यावर-नगर (इह) । सीस न [सीस] एक नगर जो राजा वनस्प की राजधानी से (उप १४८ टी) । सुंदिगा देखो सोदिगा (राज) । सोड दुं [सीण] सीसव जन्म-विशेष (पत्र १—पत्र ४३) । सोदिगा की [सुदिगा] वासन्ति-विशेष (अ २, १ टी—पत्र २३३) । हृत्पिञ्जलसु न [हृ] वर प्रलोचन (वि ११) ।

हृत्पिञ्जल वि [हृत्पीय हृत्पि] हाप का हाप-संस्थो (वि ४२४) ।

हृत्पिञ्जल न [हृत्पिञ्जल] नगर-विशेष हृत्पिञ्जलपुर । (अ १—पत्र ४७७) गुर हृत्पिञ्जलपुर । १ १२१ महा कनका गुर हृत्पिञ्जलपुर । १४ गुर—उक्त ७४३ संत) ।

हृत्पिञ्जल देखो हृत्पि ।

हृत्पिञ्जल दुं [हृ] इह-इत्यो वैद्यवत हापी (वि ११) ।

हृत्पिञ्जल न [हृ] १ रुक्मिण्य, राज (वर्ण १ २२ ११ ४ ध्वि) । २ गुण लक्षण, या उमेह धार्य करीह हृत्पिञ्जल वि 'देव शोच' देखे नह हृत्पिञ्जलपट्ट' (प ११०-११) ।

हृत्पिञ्जल न [हृत्पिञ्जल] एक कैम-मुनि गुन (कल्प) ।

हृत्पिञ्जल दुं [हृ] वर-येह (वि ५, ११) ।

हृत्पिञ्जल दुं [हृ] वर (वि ५, १४) ।

हृत्पिञ्जल की [हृत्पिञ्जल] उत्तरपञ्चमुको मध्य (कल्प) ।

हृत्पिञ्जल देखो हृत्पि (दे २ ११४ गह) ।

हृत्पिञ्जल की [हृ] १ हृत्पिञ्जल हाप का पात्राभूषण । २ कृत-श्राव्य हाप के धिया कनका उपहार (वि ८ ७१) ।

हृत्पिञ्जल दुं [हृ] हृत्पि-वृत्त, पाणि-वृत्त (वि १२८) ।

हृत्पि देखो हृत्पि = हृत्पि (आद्य आद्य १२) ।

हृत्पि दुं [हृ] वरक का वर-मुखादि (वि ४ ४७१) ।

हृत्पि दुं [हृ] हाप विद्यत (वि ५, १२) ।

हृत्पि [हृ] हापि [हृ] १ के २ २ कृत्याव हृत्पि (आद्य ७३, वर, लय २१ गह—उक्त १११ दे २, १२२) ।

हृत्पि (वर) वि [हृत्पि] हाप, हृत्पि संवत्स रजनेवाता (वि ४) ।

हृत्पि देखो ममिर (वि १५५) ।

हृत्पि एक [हृ] वर कला । हृत्पि (वि ४ २४४) कुमाव हृत्पि १४ आद्य १५) ।

हृत्पि एक [हृ] वाता । हृत्पि (वि ४ ११२) ।

हृत्पि न [हृ] सीस-गुर (वि ४, ४१) ।

हृत्पि देखो हृत्पि = हृत्पि ।

हृत्पि देखो हृत्पि (वि ४) ।

हृत्पिञ्जल वि [हृत्पिञ्जल] वर, क्या हृत्पि (वि ७४३) ।

हृत्पिञ्जल न [हृ] हृत्पि गुर, प्रत्यय, गुर (वि ११ पात्र, गुर १, ११, १ पात्र २, २, १ १) ।

हृत्पिञ्जल दुं [हृत्पिञ्जल] विजय की विद्यवत याम्यो का एक कुमवाला राजा (वी ४) हृत्पिञ्जल २० वि ४) ।

हृत्पि वि [हृ] वा याता क्या हो नह (वीर, वि २, ११, गुर) । मायोज दुं [मायोज] एक विद्यावर-नरेश (वर १ १) ।

हृत्पि [हृ] विद्यत (वर ११ ७४ गह २ १ दे २ १, २, १२३, उर) ।

हृत्पि दुं [हृ] वर वीर (वीर २, ११ गुण) । वर दुं [वर] वर-विशेष वर के वर विद्यवत का राज (राज ४७) ।

वर्ण वर दुं [वर] १ एक फलार्थ ।

२ वि. उद्यम निवासी मनुष्य (अ ४ २—पत्र २२१) । १ एक फलार्थ देत (वर २७४) । सुह दुं [मुल] १ एक फलार्थ (अ ४) । २ एक फलार्थ देत (वर २७४) ।

हृत्पि देखो हृत्पि = हृत्पि (महा ध्वि राज ४४४) ।

हृत्पि देखो हृत्पि = हृत्पि । पौडरीय दुं [पुण्डरीक] पञ्च-विशेष (पत्र १ १—पत्र ५) ।

हृत्पि देखो वर = वर । पौडरीय दुं [पुण्डरीक] पञ्च-विशेष (पत्र १ १—पत्र ५) ।

हृत्पि देखो वर = वर । पौडरीय दुं [पुण्डरीक] पञ्च-विशेष (पत्र १ १—पत्र ५) ।

हृत्पि देखो वर = वर । पौडरीय दुं [पुण्डरीक] पञ्च-विशेष (पत्र १ १—पत्र ५) ।

हृत्पि देखो वर = वर । पौडरीय दुं [पुण्डरीक] पञ्च-विशेष (पत्र १ १—पत्र ५) ।

हृत्पि देखो वर = वर । पौडरीय दुं [पुण्डरीक] पञ्च-विशेष (पत्र १ १—पत्र ५) ।

हृत्पि देखो वर = वर । पौडरीय दुं [पुण्डरीक] पञ्च-विशेष (पत्र १ १—पत्र ५) ।

हृत्पि देखो वर = वर । पौडरीय दुं [पुण्डरीक] पञ्च-विशेष (पत्र १ १—पत्र ५) ।

हृत्पि देखो वर = वर । पौडरीय दुं [पुण्डरीक] पञ्च-विशेष (पत्र १ १—पत्र ५) ।

हृत्पि देखो वर = वर । पौडरीय दुं [पुण्डरीक] पञ्च-विशेष (पत्र १ १—पत्र ५) ।

हृत्पि देखो वर = वर । पौडरीय दुं [पुण्डरीक] पञ्च-विशेष (पत्र १ १—पत्र ५) ।

हृत्पि देखो वर = वर । पौडरीय दुं [पुण्डरीक] पञ्च-विशेष (पत्र १ १—पत्र ५) ।

हृत्पि देखो वर = वर । पौडरीय दुं [पुण्डरीक] पञ्च-विशेष (पत्र १ १—पत्र ५) ।

हृत्पि देखो वर = वर । पौडरीय दुं [पुण्डरीक] पञ्च-विशेष (पत्र १ १—पत्र ५) ।

हृत्पि देखो वर = वर । पौडरीय दुं [पुण्डरीक] पञ्च-विशेष (पत्र १ १—पत्र ५) ।

हृत्पि देखो वर = वर । पौडरीय दुं [पुण्डरीक] पञ्च-विशेष (पत्र १ १—पत्र ५) ।

हृत्पि देखो वर = वर । पौडरीय दुं [पुण्डरीक] पञ्च-विशेष (पत्र १ १—पत्र ५) ।

हृत्पि देखो वर = वर । पौडरीय दुं [पुण्डरीक] पञ्च-विशेष (पत्र १ १—पत्र ५) ।

हृत्पि देखो वर = वर । पौडरीय दुं [पुण्डरीक] पञ्च-विशेष (पत्र १ १—पत्र ५) ।

हृत्पि देखो वर = वर । पौडरीय दुं [पुण्डरीक] पञ्च-विशेष (पत्र १ १—पत्र ५) ।

हरभर [हरौतकी] १ हरर का पाख ।
हरह १ २ फल-विशेष हरर (पक्ष) हे १
२२ कुमा) ।

हरण न [हरण] १ वीनप्र (मुद्रा १८ ४१६
कुमा) । २ वि वीन्नेवाला (कुप्र ११४३
वर्गवि १) ।

हरण न [प्रहण] स्वीकार (कुमा) ।

हरण न [स्मरण] स्मृति याच
‘मतिप्रभुविप्रति कर्ममुपयं
मं वेतु मुद्रह प्रमुल्लो ।
छाण विप्रहण हण्डे स्मयति
ए जलो ध्वं कुविमा’
(भा २४१) ।

‘हरण रेको मरण (पा २२० क) ।

हरण्यु पु [हरण्यु] सेव में भोगि हुए के
की मति के बाहों पर होता बल-विमु
(कम्प-वेद्य १०१; की २) ।

हरण्यु के हरण (मग) ।

हरण्युज नि [दि] १ स्मृत याच किया
हुमा । २ मय के जरेय से विमा हुमा (वे
न ७४) ।

हरण्यु [हर] वका कथारय हह (भाषा-
मग परण २ ३—पत्र १४६ छत्र १२
४४३ ४६ हे २ १२) ।

हरण्यु की [दि] मुक्त प्रवेग योग्य मरसर
उचित प्रत्याग ।

‘निद्रमय न गानं पहिना-
मुन न मुण्यमं बहू ।
मीनं न कया घोषिनि
वाया मिनबल हण्ड
(पिठे २ १४) ।

हरण्युइय न [हरण्युचित] ‘हर हर’ भाषाग
(पक्ष १ १—पत्र ४२) ।

हरण्युइय नि [हारित] हराण्यु वाच विप्रम
पचमर किया का हो बह (वे ४ ४ ६) ।

हरि पु [दि हरि] मुक्त, लोठा (वे ७ २६) ।

हरि पु [हरि] १ विप्रदुग्धार-देवी की चरण
रिया का हार (अ २ १—पत्र ८४) । २
एक महापु (अ २ १—पत्र ७७) । ३
एग, देव-पत्र (कुमा- कुप्र २१ सम्पत्

२२९ कु ८६) । विपु वीक्ष्य (पा
४ १४ ४११; मुद्रा १४१) । ४ रामचन्द्र
(वे ६ ११) । ५ सिंह मुक्त्र (वे ६ ११
कुमा- कुप्र १४६) । ७ बलर, बम्बर (वे ४
२३ ६ २२ वर्गवि २१ सम्पत् २२२) ।
८ पक्ष बोझ (अ १ ११ टी टी वा कुप्र
२१ मुक्त ४ ६) । ९ घात के साथ बैन
वीजा सेनावा एक राजा (पत्रम ४३ ४) ।
१ ज्योतिषशास्त्र सत्र एक योग; ‘गुह्यवि
प्रिठे संविहारा’ (संयोग ३४) । ११
छत्र का एक वेद (विम) । १२ खर ।
१३ एक वस्तु । १४ चन्द्र । १५ सुव ।
१६ बन्धु, पवन । १७ वन वनपत्र । १८
हर, महादेव । १९ द्रष्टा । २ कण्ठ ।
२१ बर्ग-विशेष । २२ मन्द, घोर । २३
कोकिल कोकिल । २४ मातृ हारनामक एक
विज्ञान । २५ वीता रथ । २६ पिच्छ बर्ण ।
२७ हृष रथ । २८ वि वीत बर्णवाला ।
२९ विपक्ष बल्लवाला (हे १ १८) । ३
हृष बर्णवाला ‘हरिमण्डितविप्रमय’
(सम्पत् १४) । ३१ पुन, महाविपक्ष वरत
का एक शिखर (अ ४—पत्र ४१६) । ३२
विश्वामय वरत का एक शिखर (अ ४ ६) ।
३३ निषध वरत का एक शिखर (अ ६—
पत्र ४२४ ६) । ३४ हरिवर्ष-वैद्य का
मनुष्य-विशेष (कम्प) । अर्द्ध पु [अग्र]
स्वनाम प्रविष्ट एक राजा (हे २ ८७; पत्र
पत्र ७ कुमा) । अर्द्धन पु [अग्रन] १
बन्धन की एक वस्त्र (वे ४ ५५; पत्र ४५
गुर १६, १४) । २ पुं एक वस्त्र का कहर
हुम (मुद्रा ८७; पत्र ४) । रेको अर्द्धन ।
अग्र्य रेको अर्द्ध (संवि १०) । आठ
पुन [ठाठ] १ वीत बर्णवाली जगन्म-
विशेष इत्याम (छाया १ १—पत्र २४
जी १ पत्र १२३ कुमा- जग १४ ८ ११
७०) । २ पुं वीत-विशेष (ह २ १२१) ।
रेको ठाठ । पस पु [किरा] १ बसल
(वीप ६१६; मुद्रा ६ १ गहा) । २ एक
ब्रह्मल मुनि (अ १२) । पसबल पु
[किरावम] ब्रह्मब्रह्मोत्तराण एक मुनि
(अ १२ १२ १) । वसिष्ठ नि
[किरीय] १ ब्रह्मवर्ष-वैद्य । २ हरि

ब्रह्मल नामक मुनि का (अ १२) । कसि
न [कसिमुन] नगर-विशेष (टी २०) ।
कंठ पु [कान्त] विप्रदुग्धार देवी की
बलिल रिया का हार (हक) । कंठपत्राय,
कंठपत्राय पु [अमापत्राय] एक हह
(अ २ १—पत्र ७२; टी—पत्र ७३) ।
कंठा की [कान्ठा] १ एक महा-नरी (अ
२ ३—पत्र ७२ सप २७ हक) । २
महाहिमवान् वरत का एक शिखर (हक अ
८—पत्र ४१६) । “कठि पु [कठि]
मारीय टा-विशेष (कम्प) । कसपल रेको
एसपल (कुमक ३१) । केसि पुं
[कसिमुन] एक वैत मुनि (पु १४) ।
गीठ न [गीठ] छत्र का एक वेद (विम) ।
मीथ पु [मीथ] रायल-वंश का एक
राजा (पत्रम ३, २६) । र्वद पु [वर्ग]
१ विद्यावर-वंश का एक राजा (पत्रम ३
४४) । २ एक विद्यावर-कुमार (गहा) ।
‘वर्ण पु [वर्ण] १ एक प्रसन्न वैत
मुनि (सं १८) । २ रेको अर्द्ध (भाद्र
१४३; स ४४६) । वयर न [नगर]
वेताञ्ज बो बलि-वर्षिष्ठ में स्थित एक
विद्यावर-नगर (हक) । ठाठ पु [ठाठ]
वीप-विशेष (हक) । रेको ठाठ । दास
पु [दास] एक बलि का नाम (पत्रम ३
७१) । धनु न [धनु] छत्र-कपु
(अ २ १६० टी) । ‘पुरे की [पुरे] हन
पुष्टि प्रमपत्राटी रत्न (मुद्रा ११३) । मह
पु [मन्त्र] एक मुनिनाम तथा भाष्यर तथा
प्रत्यकार (वेद्य १०१; अ १ १६, मुद्रा १) ।
‘मय पु [मय] बन्धन-विशेष बाबा चन्द्र
(पा १७; पत्र १२९; संयोग ११) । ‘मय
की [मय] वृष-विशेष (वीर) । पद पु
[पदि] बानर-वर्षि मुनीय (वे १ १६) ।
‘संस् पु [संस्] एक मुनिवर्षि वरिष-मुन
(कम्प पत्रम २ २) । पस्ता बास पु
[पस] १ धेन-विशेष (सम्पत् १११ अ २
१—पत्र १० सप १२ पत्रम १२ १ ६
हक) । २ पुन, महाविहारा वरत का एक
शिखर (अ ४—पत्र ४१६) । ३ निषध वरत
का एक शिखर (अ ६—पत्र ४२४ ६) ।
‘पाहन पु [पाहन] १ मनुष्य का एक

हसहर वेको हसहर = हस-हर ।

हस्यस्य वेको हसहस्य = (वे) । (गा २१) ।

हस्यस्य पुंन [वे] १ तुमुष कोलाहल
हस्यस्य सोपुस (वे = ७४) से १२
५१) । २ कौतुक कुतुहल (वे = ७४
५ ७ ४) । ३ त्वरा हसवती हसफल
श्रेष्ठा 'हसहस्यो ठव' (वाचा स ७ ४) ।
४ धौतुष्य ऊर्ध्व (वा २१ ७८) ।

हस्यस्य नि [वे] कर्मिष्ठ कांवा हुवा
(गिब) ।

हस्य स [हस्य] सवी क्य मानलस्य हे सवि
(हे २ १२२ स्वय ४ ; प्रति २७ कुमा
ना ४१ ; मुना १४६) ।

हस्यहस न [हस्यहस] एक प्रकार का स
बहुरूपि-विशेष (आनु १८) ।

हस्यहस की [ह] बंधिका बान्धनी बान्धु
विशेष (वे = १३) ।

हसि पुं [हसिन्] बसपाम बसभ्य (पउम
७ १२ कुम १ १) ।

हसिज नि [हसिज] हस कोलनेवाला हसक
(हे १ १७ पाय, प्रप्र वा १ ७ ११७
१६) ।

हसिम्ब वेको फसिम्ब (पा ७) ।

हसिम्बा की [हसिम्ब] १ भिषकनी । २
बान्धनी बान्धु-विशेष (कय) ।

हसिम्बार वेको हरि-आस = हरि-राज (हे
२ १२१ पद) ।

हसिद पुं [हसिद] हारिद १ हस-विशेष
(हे १ २४४ प ५९१) । २ बर्ण विशेष
वेसा रंभ । ३ न हस-कर्म का एक भेद,
विशेष स्वयं से कीच का शरीर हसनी के
समान दोहा हीरा है वह कर्म (कय १
४) । पत्र पुं [पत्र] पत्रुभिषय बन्धु
की एक भाति (पक्ष १—पत्र ४६) ।
मस्य पुं [मस्य] मस्यो की एक भाति
(पक्ष १—पत्र ४७) ।

हसिदा की [हसिदा] दीपवि-विशेष हसदी
हसिरी (हे १ पत्र २४४ वा ३३ =
२४६) ।

हसिसागर पुं [हसिसागर] मस्य की एक
भाति (पक्ष १—पत्र ४७) ।

हसुअ नि [हसुअ] हसका (हे २ १२२
स ७४४) ।

हसूर नि [ह] सतुष्य ससुह (वे ५ १२) ।
हसे य [हसे] हे सवि सवी का संबोधन
(हे २ १२३ कुमा) ।

हस भक [ह] हिसा बसमा । हसति
(सवि १८) । बह हसत (उपपु २१ मुना
४४ २२३ बज्जा ४ से ५४) ।

हस पुं [हस] एक अनुसर-वासी बैन मुनि
(कय २ पठि) ।

हसअ न [हसअ] पथ-विशेष रक 'बहार
(विज २३) ।

हसपाविस नि [वे] लारि शीम (पद) ।

हसपल्ल न [ह] १ हसक हसकी
बौतुष्य लार शीमा (हे २ १७४ स
१ २ कुमा) । २ बाकुला 'अह उबछे
करिणी हसपल्लव' (मुना १३६) । ३

वि कयनशील कपिता बसस 'पस
दिमोषि वीको सहसा हसपल्लो बायो'
(बज्जा १९) ।

हसपफसिअ नि [वे] १ शीम, बन्धी । २
न बाकुला व्याकुलपन (वे ५ ४६) ।

३ वि व्याकुल (पर्वि २६) ।

हसफस वेको हसफस (पा ७६) ।

हसपफसिअ वेको हसपफसिअ 'विमो
प्राह कोहए वो हसपफसिअ रम' (वा १२) ।

हसाधिय नि [वे] हिसाया हुमा (पुर ३
१६) ।

हसिअ नि [ह] हिसा हुमा बलित (वे ५
१२ पठि) ।

हसिअ नि [ह] बसम-शील शिबनेवाला (स
४०५ कुम १३१) ।

हसीस पुं [वे] रासक मराज्जाकार होकर
शियों का नाच (वे = १११ पठि) ।

हसुपास न [वे] शीमा बन्धी त्वरा
हसुपावस कुवली में 'पताब' (श्वि
मुर १३ ८०) ।

हसपफसिय वेको हसपफसिअ (यय १२) ।

हसेहस वेको हसपफस (उप ७ ७०) वा
१६, हे ४ १६६ उ ७२८ टी मुज १८,
१७ महा पठि) ।

हसेहसिय वेको हसपफसिय (सिरी ११४
१३४ पठि) ।

हसेहसिय पुंन [वे] सस्य गिर्यट । श्री
या (कय) ।

हस यक [ह] १ होमा । २ एक मात्र
करना । हसह हसेह हसति (हे ४ १
कय) उम महा उ १ १—पत्र १ १—
'कि हसुपासमपफसिअ मो हसह महरत'
(पर्वि १७) हसेह हसेह (वि ४४३) ।
बह-हस्य हसेमान (पद) ।

हय वेको मय = मय (उप ४६४) ।

हयन न [हयन] होम (वि १३२२) ।

हवि पुंन [हविस] १ हल की । २
हवनीय बलु (स ६ ७१४ स्वनि १
१ ४) ।

हविस नि [ह] मलित कुपका हुमा (वे ४,
२२ ५ १२२) ।

हव्य नि [हव्य] हवनीय पदार्थ होम-जोय
बलु (मुना १११) । 'यह पुं [वह] मीन
पाग (उप ४६७ टी मुना ४१६) बज्ज) ।

वाह पुं [वाह] वह (भाषा पाप'
समस २२८ बेणी १६२; स १ ३३) ।

हव्य नि [अर्वाह] १ मर, पर से मर्य
'मो हव्यो मो पाप' (भाषा सुम २ १
१; ८ १ १६ २४ २५ ११) । २ म,
शीम, बन्धी (समा १ १—पत्र ११ उम-
सम ३६; पिपा १ १—पत्र ८ टी १ ;
धीन कय कय) । ३ न गृहपाद (सुन-
क २ १ ४ पठि) ।

हव्य वेको मव्य = मय (वा ३६ ; ४२ ;
४७९) ।

हस यक [हस] १ हंसना हास करना ।
२ एक उपहास करना मजा करना ।
हसह, हसेह, हसर, हसति हसति हसते,
हसिया, हसह, हसाति हसति हसाती
हसामु हसाम, हसेम हसेमु (हे १ ११६;
१४ १४१ १४२) १४३ १४४ १४५-
१४६ कुमा) । हसेह हसंय हसह, हसक,
हसमिह, हससेह हसेह हसेह (हे १
१३५; १७१; १७४, १७९) । भवि हसिह
हसिहसायो, हसिहिनो हसिहिसा, हसिहिसा,

उजा (पञ्च १२, २) । २ कन्दोपर द्वीप के
परपार्श्व का दक्षिणार्ध भाग (जीव ३ ४) ।

सह देवो स्सह (पञ्च) । सेज पुं [पिण्य]
१ कर्त्ता जलमर्त्ता उजा (सम १६४ १२९) ।
२ मन्त्राद्य मन्त्रिणाञ्चो का प्रथम भागक
(विचार १०००) । स्सह पुं [सह] १
विद्युत्प्रसार-देवों की दक्षिण दिशा का हिस्सा
(आ २ ३—पञ्च ८७४ ६८) । मात्स्न्यगत
पर्यन्त का एक दिक्भाग (आ २—पञ्च ४२४) ।

हरि पुं [हरि] १ हृष्ट रस, कल-विशेष ।
२ वि हृष्ट रसवत्ता (शायी १ १९ पञ्च
२२४) । ३ श्री एक महा-मन्त्री (सम २७-
हृष्ट आ २ ३—पञ्च ४२) । ४ पशुक जल
की एक कुलदेवता (आ ७—पञ्च ३६३) ।
पञ्चाव, पञ्चाव पुं [पञ्चाव] एक ब्रह्म,
जहाँ से हरि पक्षी निकलती है (आ २ १—
पञ्च ७२ टी—पञ्च ७२) ।

हरि देवो हरि (सम वि ६४ उत्तर ३२,
१ ३) ।

हरिश्च पुं [हरिश्च] १ कल-विशेष हृष्ट रस ।
२ वि हृष्ट कलवत्ता (मौढ ख्याय १ १
टी—पञ्च ८ १ ७—पञ्च १११ ६८
४६ वा १६३) । ३ पुं एक ध्वनि-मनुष्य-
जाति (आ १—पञ्च ३६०) । ४ पुं
वसन्त-दि-विशेष हृष्ट सुख छन्दो (पञ्च
१—पञ्च ३ श्रीय वाच्य, पञ्च २ ३,
उत्तर १ ३) ।

हरिश्च देवो हिम्ब = हृष्ट (पञ्च यज्ञ) ।

हरिश्च देवा मरिश्च = मरिश्च (पञ्च ६३२) ।
हरिश्च १ न [हरिश्च] श्रीय ध्वनि के
हरिश्च २ पक्षी में बना हुआ मोग्य विशेष
(पञ्च २४६, मुञ्च २ टी) ।

हरिश्चा श्री [हरिश्चा] दुर्गा, दुर्गा सुख-विशेष
(मे ७ ३१ २ ३१) ।

हरिश्चा देवो हरि (मुञ्च) ।

हरिश्चा देवो हरि आञ्ज ।

हरिश्चा श्री [हरिश्चा] दुर्गा, दुर्गा सुख-विशेष
(मे ७ ३१ वाच्य पञ्च, पञ्च १११) ।

हरिश्च देवो हरि-रस ।

हरिश्च देवो हरि-रस ।
हरिश्च देव न [हरिश्च] दुर्गा देव
(१ १२) ।

हरिश्च पुं [हरिश्च] कौटिल्य देव-मरिश्च
कल-विशेष (पञ्च १—पञ्च ३१) ।

हरिश्च पुं [हरिश्च] १ हृष्ट मुञ्च (मुञ्च) ।
२ हृष्ट का एक देव (विच) । यज्ञी श्री
[हरिश्च] सुवर्ण-देवता श्री (कप्यु) । हरि
पुं [हरि] सिद्ध (उप ४ २३) । हरिश्च पुं
[हरिश्च] श्री (हे ८ १०) ।

हरिश्च पुं [हरिश्च] नञ् नञ् (हे ३
१ कप्यु उत्तर) ।

हरिश्च पुं [हरिश्चाञ्ज] श्रीय नञ्-विशेष के
द्वय एक सैन्य मुञ्च (पञ्च २ २ २) ।

हरिश्चामरिश्च देवो हरिश्चामरिश्च (पञ्च १
१ ४) ।

हरिश्चो श्री [हरिश्चो] १ मातृ हरिश्च हरिश्च
(पाथ) । २ हृष्ट-विशेष (विच) ।

हरिश्चामरिश्च पुं [हरिश्चामरिश्च] एक के
पञ्चाव-रस का दक्षिण दिक् भाग (आ २, १—
१ २ अर्ध ७४ हृष्ट) ।

हरिश्चा देवो हरिश्चा (वि ३४४) ।

हरिश्च पुं [हरि] काला काला पञ्च-विशेष
(आ १६४ पञ्च १३६ संयोग ४१६ ६८, ७
६) । देवो हरिश्च ।

हरिश्चामरिश्च पुं [हरि] लघु कल-विशेष लघु
(हे ८, १११) ।

हरिश्चामरिश्च पुं [हरिश्चामरिश्च] नञ्-विशेष
(पञ्च २४६ मरिश्चामरिश्च) ।

हरिश्चो देवो हरिश्चो (उत्तर ३६ ३) ।

हरिश्च वि [हरिश्च] भागवत्ता श्रीयवत्ता
(वा २४२) ।

हरिश्च नञ् [हरिश्च] सुखी होना । हरिश्च
(हे ४ १११, मरिश्च नञ्) । हरिश्च
काला श्रीयवत्ता श्रीयवत्ता (संयोग ४६६) ।

हरिश्च नञ् [हरिश्च] हृष्ट रस होना । हरिश्च
(मुञ्च १ २ २ १६) ।

हरिश्च पुं [हरिश्च] १ मुञ्च । २ पाञ्च, प्रतीय,
मुञ्चो (हे २, १ ११, मरिश्च मुञ्चा नञ्) । ३
मातृ-विशेष (विच) । ४ उर पुं [हरिश्च]
एक सैन्य (मुञ्चा १३०) । ५ ल वि
[नञ्] हृष्ट-मुञ्च (माञ्च ३३) ।

हरिश्चामरिश्च पुं [हरिश्चामरिश्च] नञ्-विशेष एक
श्रीय (मुञ्चा १ ८) ।

हरिश्चा पुं [हरिश्च] हृष्ट-मातृ (पञ्च
१ १ ७२) ।

हरिश्चा देवो हरिश्चा = हृष्ट-रस ।
हरिश्चा वि [हरिश्च] हृष्ट-मातृ, पञ्च-
(श्रीय मरिश्च महा उत्तर) ।

हरिश्चो देवो हरिश्चो (मुञ्च १ १३, ६८) ।

हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।

हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।
हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।

हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।
हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।

हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।
हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।

हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।
हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।

हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।
हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।

हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।
हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।

हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।
हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।

हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।
हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।

हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।
हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।

हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।
हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।

हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।
हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।

हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।
हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।

हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।
हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।

हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।
हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।

हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।
हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।

हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।
हरिश्चो देवो हरिश्चो (माञ्च १२) ।

प्रतिष्ठापक देव [हारस्मृत्] हारवत्-हारवर
(हार) न हारवत् एव वो देवा प्रतिष्ठाप्य
(बीज ३ ४—पत्र ११७)। वर पुं [वर]
१ हार-स्मृत् का एक प्रतिष्ठापक देव। २
दीप-विरोध। ३ स्मृत्-विरोध। ४ हारवत्
स्मृत् का एक प्रतिष्ठापक देव (बीज ३ ४)।
वरमह पुं [वरमह] हारवत्-दीप का
एक प्रतिष्ठापक देव (बीज ३ ४)।
वरमहावर पुं [वरमहावर] हारवत्
दीप का एक प्रतिष्ठापक देव (बीज ३ ४)।
वरमहावर पुं [वरमहावर] हारवत्
स्मृत् का एक प्रतिष्ठापक देव (बीज ३ ४)।
वरवमास पुं [वरवमास] १ एक दीप।
२ एक स्मृत् (बीज ३ ४)। वरवमास-
मह पुं [वरवमासमह] हारवत्-प्राक-
दीप का एक प्रतिष्ठापक देव (बीज ३ ४)।
[वरवमासमहामह] पुं [वरवमासमहामह]
हारवत्-प्राक-दीप का एक प्रतिष्ठापक
देव (बीज ३ ४)। वरवमासमहावर पुं
[वरवमासमहावर] हारवत्-प्राक-स्मृत्
का एक प्रतिष्ठापक देव (बीज ३ ४)।
[वरवमासमहावर] पुं [वरवमासमहावर] हार
वरवमास-स्मृत् का एक प्रतिष्ठापक देव (बीज
३ ४—पत्र ११७)।
हार देवो मार (गुण १११ मणि)।
हारव वि [हारव] मार-करी (मणि १११)।
हारव वि [हारव] मार देवो, 'कमल-
कामवोपाय हारव कपलं कुलकाम' (गुण
१११ बन्ध १ टी)।
हारव देवो हार = हारव। हारव (हे ४
११)। वरि, हारविल्लह (स ११६)।
हारवि वि [हारवि] मारि (कुमा गुण
११२)।
हार की [दे] विद्या जन्तु-विरोध (हे ४
११)।
हार देवो पाप (कर्म मा ७७२)।
हारि की [हारि] १ हार, पत्रय (क ३
२२)। २ वरि, मेधि (गुण ११७)। ३
पत्र-विरोध (वि)।
हारि वि [हारि] १ हार-करी (मि
११२, गुण)। २ मारि, विचारकर्म
(पत्र)।

हारि न [हारि] १ गोत्र-विरोध को
कौत्स गोत्र की एक शाखा है। २ पुंकी, उस
गोत्र में उत्पन्न (आ ७—पत्र १६ खं
४६ कर्म)। माङ्गारी की [माङ्गारी]
एक वैज मुनि-शाखा (कर्म)।
हारि वि [हारि] १ हार गुमा, वर
पाप में पराजित (गुण ११६ म्हा पापि)।
२ कोमा गुमा, गुमाया गुमा (वर १ गुण
११६)।
हारि वर वि [हारि वर] हारि वर का
हारि वर-कवि का वरया गुमा (पत्र)।
हारिया की [हारिया] एक वैज मुनि-शाखा
(पत्र)। देवो हारि-माङ्गारी।
हारियाय न [हारियाय] एक योत्र
(कर्म)।
हारी की [हारी] देवो हारि—हारि (वर
३ २२ गुण ११७ वि)।
हारय पुं [हारय] १ मुनि-विरोध। २ व
योत्र-विरोध (पत्र)। वर पुं [वर]
पत्र-विरोध (वि)।
हारोस पुं [हारोस] १ भगवत् वर-विरोध।
२ वि, उत्त देव का निवासी (पट्ट १—
पत्र ३०)।
हार पुं [ह हार] यना वातवचन पाप-
वत्तरी का कवी (हे ४ २ १६, का
१ वना ४४)।
हार्य की [हार्य] यविष वर (पत्र गुण
४ ७ रमा)।
हार्यह पुं [दे] यन्त्राकार, वादी (हे ४
७३)।
हार्यह पुंकी [हार्यह] १ जन्तु-विरोध
हार्य वर नाम्नी (हे ४ ६ पाप मा
१२)। की [य (हे ४ ७३)। २ श्रीय
जन्तु विरोध (पट्ट १—पत्र १२)। ३
गुं, स्थावर विप-विरोध (वर २, १ ७-
पत्र २ ४)। ४ पुं, पत्रय का एक गुण
(पत्र २१ १३)।
हार्यह की [हार्यह] एक व्यापक-
मात्राविधि कुम्हारि (कर्म १२—पत्र
१३६)।
हारि देवो हारि = हारि (हे १ १७-
पत्र)।

हारि न [हारि] एक वैज मुनि-गुण
(कर्म)।
हारि पुं [हारि] १ हारी के गुण रंग
पीता वर्य (पट्ट १ ६ आ १ १—पत्र
१६१)। २ वि पीता, विद्या रंग पीता
हो वह (पट्ट १—पत्र २१; गुण २, १
१२ म्हा वी)। ३ पुं, एक देव-विमान
(वेद ११२)।
हारिया की [हारिया] देवो हारिया
(पत्र)।
हारि वि [दे] की वर (हे ४ ११)।
हार वर [हारव] १ हारि कर्म। २
प्राप कर्म। ३ वरि कर्म। ४ वर
कर्म 'वर्णितामायारि हारि' (वर १)
हार (वर २, २१ वरि २१ टी)। हार-
कर्म (वर २, ४१)। वर, हारि (वि
२७४६)।
हार पुं [हार] गुण का विचार-विरोध (पट्ट
१ ४—पत्र ११२ म्हा)।
हार वि [दे] वर, कुमा की वर से वीर्य-
वत्ता (हे ४ ७३)।
हार देवो माप = मार 'वरावरे' (पट्ट
२२)।
हार वि [हार] हारि कर्मवत्ता (हे २
१७८)।
हारि वि [दे] १ वर, कुमा की। २
वीर्य, वत्ता। ३ म्हा, ४ वरि (हे ४
७३)।
हार देवो हार = हार। वर 'न हारमाय
वि विर वरय' (वर २४)।
हार वर [हारव] १ वर, वरि (हे
१ १४६)। कर्म हारि, हारि (हे
१ १४२)। वर हारि (वीर)। वर
हारि (गुण २७)।
हार पुं [हार] १ हारि हरी (वीर) वर
२ ४७ वर मा ११ ११२)। २ कर्म
विरोध विरुद्ध वर हरी वरि वर कर्म
(कर्म १ २१ २७)। ३ वर-वार-वत्त
वर-विरोध (गुण ११३)। वर वि [वर]
हारि-मरक (गुण २४१)। वरि वि
[वरि] वरि (पत्र)।

अधिष्ठापक देव [हारसमुद्र] हारवर-हारवर
(हार) महापरायण एव को देना अधिकार
(बीज १ ४—पत्र ११७)। परतुं [वर]
१ हार-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव। २
क्षीप-विशेष। ३ समुद्र-विशेष। ४ हारवर
समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (बीज १ ४)।
परमहर्षुं [वरमन्त्र] हारवर-क्षीप का
एक अधिष्ठापक देव (बीज १ ४)।
वदमहाभर्षुं [वरमहाभर्ष] हारवर
क्षीप का एक अधिष्ठाता देव (बीज १ ४)।
वरमहावरतुं [वरमहावर] हारवर
समुद्र का एक अधिष्ठापक देव (बीज १ ४)।
वरायभासतुं [वरायभास] १ एक क्षीप।
२ एक समुद्र (बीज १ ४)। वरायभास-
महर्षुं [वरायभासमन्त्र] हारवरभास-
क्षीप का एक अधिष्ठाता देव (बीज १ ४)।
वरायभासमहाभर्षुं [वरायभासमहाभर्ष]
हारवरभास-क्षीप का एक अधिष्ठापक
देव (बीज १ ४)। वरायभासमहावरतुं
[वरायभासमहावर] हारवरभास-समुद्र
का एक अधिष्ठाता देव (बीज १ ४)।
वरायभासवरतुं [वरायभासवर] हार
वरायभास-समुद्र का एक अधिष्ठापक देव (बीज
१ ४—पत्र ११७)।
हार केही मार (शुभा १११; पत्रि)।
हारव नि [हारक] मार-कर्ता (पत्रि १११)।
हारव नि [हारण] ऊपर केही, 'कर्मल-
कर्मयोगस्य हारणं कर्मलं दुष्टसमर्थ' (गुण
२६२; बन्ध १ टी)।
हारव केही हार=हार्य। हारव नि [४
११]। यदि हारपित्तव (उ ३६६)।
हारविश नि [हारि] नाशित (कुमा गुण
३१२)।
हारप नि [हे] बिद्या वन्तु-विशेष (दे ५
१६)।
हार केही वारा (कर्म या ७=३)।
हारि की [हारि] १ हार, पराजय (उ ३
२२)। २ वरिष्ठ, श्रेष्ठ (गुण ३४४)। ३
क्षय-विशेष (पित्र)।
हारि नि [हारिन्] १ हारण-कर्ता (पित्रे
१२४४, कुमा)। २ मनोवृत्त निराकरणक
(पत्र)।

हारिख न [हारीत] १ गोत्र विशेष को
कोटय गोत्र की एक शाखा है। २ पुत्री, उग्र
गोत्र में उत्पन्न (छा ७—पत्र १२३)। उग्रि
४६ कर्म)। मातागारी की [मातागारी]
एक वैन मुनि-शाखा (कर्म)।
हारिख नि [हारि] १ हार हुषा, बहुत
बाध में पराजित (गुण १६६ महापत्रि)।
२ बीया हुषा पुषाया हुषा (बन १ गुण
१६६)।
हारिख नि [हारिचन्द्र] हरिचन्द्र का
हरिचन्द्र-कर्म का बन्धना हुषा (पत्र)।
हारिखा की [हारीता] एक वैन मुनि-शाखा
(पत्र)। केही हारिख-मातागारी।
हारियाथन न [हारिताथन] एक वैन
(कर्म)।
हारी की [हारी] केही हारि=हारि (उप
पु ३२; गुण ३४४ पत्रि)।
हारोय तुं [हारीव] १ मुनि-विशेष। २ न
गोत्र-विशेष (पत्र)। वैन तुं [वैन्य]
क्षय-विशेष (पित्र)।
हारोस तुं [हारोप] १ धनार्थ देश-विशेष।
२ नि, उस देश का निवासी (पत्र १—
पत्र ३८)।
हारु तुं [हे] हारु] राजा शातवाहन पाण्ड-
सहस्री का कर्ता (दे ११३ २ १६, या
३ बन्ध ६४)।
हारु की [हारु] यविरा, हारु (पाण्ड कुय
४ ७ २४)।
हारुहर्षुं [हे] माताकार, मायो (दे ५
७३)।
हारुहर्षुं की [हारुहर्ष] १ वन्तु-विशेष,
ब्रह्मर्षि बान्धु (दे ३ ६; पाण्ड या
३२)। क्षी कर्म (दे ५ ४३)। २ नीलिय
बन्तु विशेष (पण्ड १—पत्र ४३)। ३
गुण, स्वार्थ विषय-विशेष (बन ६, १ ७-
पत्र २ ४)। ४ तुं वरुण का एक समुद्र
(पत्र ३१ १३)।
हारुहर्षु की [हारुहर्ष] एक धानीविक-
मालमुनिधारी कुम्हारिण (पत्र १२—पत्र
१२६)।
हारिख केही हारिख=हारिक (दे १ १७-
पत्र)।

हारिख न [हारिय] एक वैन मुनि-गुप्त
(कर्म)।
हारिहर्षुं [हारि] १ हर्ष के मुख्य रूप
पीता बल्ल (मनु १ ६ या ४ १—पत्र
२६१)। २ नि पीता निषता रंज पीता
हो बह (पण्ड १—पत्र २३)। सुष २, १
१२ पत्र, धीप)। ३ गुप्त, एक केन-विमान
(वेदक ११२)।
हारिखा की [हारिख] केही हारिखा
(पत्र)।
हारुम नि [हे] क्षीम मत्त (दे ५ १६)।
हारु सक्त [हारप] १ हानि करण। २
त्याग करना। ३ परित्यज करना। ४ क्षीप
करना 'वैश्विधामाया हारु' (बन १)
हारु (बन १ २३ छट्ठि २१ टी)। हार-
हर्षना (बन ८, ४१)। बह, हारित (पित्रे
२७४६)।
हारु तुं [हारु] मुक्त का विकार-विशेष (पत्र
२ ४—पत्र ११२; पत्रि)।
हारु नि [हे] बन्धन हुतनामी देव से लौटने
बन्धना (दे ५ ७३)।
हारु केही माय=मय ईश्वरदेव (पण्ड
२२)।
हारुप नि [हारप] हानि करनेबन्धना (दे २
१७५)।
हारि नि [हे] १ बन्धन हुतनामी। २
दीर्घ, लम्बा। ३ मन्वर। ४ विषय (दे ८,
७३)।
हार केही हस=हृत्। बह 'न हासमाया
नि विरं वदन्' (बन ७ २४)।
हारु बह [हारप] ईवना। रावेर (दे
१ १४६)। कर्म हरीमर, हादिग्न (दे
१ १२२)। बह, हासत (वीर)। बह
हासिज (गुण २७)।
हारु तुं [हारु] १ हास्य हँसी (वीर) पत्र
२ ४२; उच या ११ ११२)। २ कर्म
विशेष निरुक्त उच्यते हँसी धर्म बह कर्म
(कर्म १ २३ २७)। ३ धर्मभर-प्रत्येक
क्षय-विशेष (पण्ड ११३)। पर नि [पर]
हास्य-भरक (गुण २४१)। अरि नि
[अरि] बरी (बन)।

यम्ब (उप ५३ महा)। संज्ञ हिङ्गिय (महा)। हेङ्ग हिङ्गिडं (महा)।

हिङ्गा वि [हिङ्गक] १ प्रमथ करेलासा (पंथा १८ व)। २ पथवेलासा (मणु १२६)।

हिङ्गा म [हिङ्गन] १ परिप्रमथ पर्यटन (पञ्च २७ १८ व ४६)। २ पथन पति (ज १ १७)। ३ वि प्रमथ-प्रति (२ १ १)।

हिङ्गि की [हिङ्गि] परिप्रमथ पर्यटन
पथवेलासा द्विती राय-वर्णनप्रकार वि।
प्राक्पेयि कई हुंटा न हुंटा यह कर्मय
(कर्म १९)।

हिङ्गि दु [हिङ्गिन्] पथन का एक मुष्ट (जम्ब २६, ३१)।

हिङ्गि वि [हिङ्गित] १ बहा हुआ बसित-
पथ (महा १४)। जहाँ पर जाया गया हो
वह 'हिङ्गि वसेलं पथं' (महा ११)। २
न पथ मग्न, निहार (छाया १ ६—पञ्च
१९४ धीय २३४)।

हिङ्गु म [हिङ्गु] धात्वा नीय
कलापर मालेवाला धात्वा हिङ्गु (जम्ब
२ २—पञ्च ७७१)।

हिङ्गो न [हिङ्ग] १ खेल में पथुओं को रोक्ने
की धातव। २ खेल की रक्षा का कर्म (वि
४, १६)।

हिङ्गो केो हिङ्गो (उ १२१)।

हिङ्गो म [हिङ्ग] १ रजामयी रजमाला।
२ खेल की रक्षा की धातव खेल में पथु
धामि को रोक्ने का कर्म (वि ४ ३९)।

हिङ्गो म केो हिङ्गो (वि ८ १६)।

हिङ्गा म [हिङ्गा] मूल-विशेष (जम्ब
१ ११ टी। कुप)।

हिङ्ग म [हिङ्ग] स्वीकार करना, बहल
करना। हिङ्ग (प्राक् ७; बाला १३७)।
कर्म, हिङ्ग्य (बाला १३७)। संज्ञ
हिङ्गिक्य (प्राक् ७; बाला १३७)।

हिङ्गो म [हिङ्गो] १ मूलगा। बह-
हिङ्गोर्मय (कर्म)।

हिङ्गो म [हिङ्गो] हिङ्गो मूलगा
दीक्षा (कर्म)।

हिङ्गो म [हिङ्गो] मूलगा मूलगा
(कर्म)।

हिङ्गि म [हिङ्ग] एक पैर से चलो की गान
कीक्षा (वि ४ ८)।

हिङ्ग म [हिङ्ग] १ बग करना। २ पीक
करना। हिङ्ग, हिङ्ग (धात्वा पञ्च २२१)।

मुक्त, हिङ्गि (धात्वा पञ्च २२१)। यदि
हिङ्गिस्तहि हिङ्गिस्तहि हिङ्गि (वि १२९)
धात्वा पञ्च २२१)। बह हिङ्गिमा (धात्वा)।

३ हिङ्ग, हिङ्गियम्य (उप २२३, पञ्च १
१—पञ्च १, ११—पञ्च १ १ जम्ब)।

हिङ्गि वि [हिङ्ग] १ हिङ्गा करेलासा हिङ्गक
(उप ७ ४, पञ्च १ १—पञ्च १, वि
१७१)। पंथा १ २३ उर २३४; उ ४)।

पञ्चाश पञ्चाश न [प्रधान] हिङ्गा के
शामन-मुक्त बहल धामि का गान (धीय
पञ्च)।

हिङ्ग केो हिङ्गा (पञ्च १ १—पञ्च १)।

प्येहि वि [प्रधान] हिङ्गा को देखेलासा
(ठा ४, १—पञ्च १)।

हिङ्ग म [हिङ्ग] हिङ्गा करेलासा
हिङ्गा (कर्म, धीय ७४२; उ ११
२३९ उपा क्रम २९)।

हिङ्गि म [हिङ्गि] हिङ्गा 'प्रहिङ्ग' लम्ब
विवाह कर्मो (उप ४२)।

हिङ्गा की [हिङ्गा] १ बग बल (उपा
महा प्राक् १४१)। २ बग कर्म धामि वि
धीय को की वाली पीक, हिङ्गा (ठा ४
१—पञ्च १८७)।

हिङ्गा की [हिङ्गा] बग का लम्ब, 'बगमजि
हृदिहिं न कम्पुली केवि कुर्मता' (धुवा
१६४)।

हिङ्गि म [हिङ्गि] हिङ्गा-प्राप्त (पञ्च)।

हिङ्गि म [हिङ्गि] धम-लम्ब (पञ्च १
१८; बग १ १ टी)।

हिङ्गी की [हिङ्गी] बग-विशेष (बहल)।

हिङ्गि म [हिङ्गि] मिला, हिङ्गुस्तान का मिलायी
(पिप)।

हिङ्गा की [हिङ्गा] एककी दीक्षा (वि ८ ९९)।

हिङ्गा की [हिङ्गा] रोम-विशेष, हिङ्गि (धुवा
४८१)।

हिङ्गा म [हिङ्गा] पञ्च, काय (वि ८ १६)।

हिङ्गि म [हिङ्गि] रोम-लम्ब धम-लम्ब (वि
९८)।

हिङ्ग केो हिङ्ग = हि।

हिङ्ग केो हि।

हिङ्गा म [हिङ्गा] मूल कर्म (बहल;
हिङ्गो) वि ८ ९७ पाम, प्रयो ११ वि
१३४)।

हिङ्गो म [हिङ्ग] धामि कर्म (वि ८ ९७)।

हिङ्गि वि [हिङ्गि] धामि (वि ८ ९७)।

हिङ्ग केो हिङ्ग (धुवा ४ २२३, महा धुवा
१८)।

हिङ्ग केो हिङ्ग = हि (जम्ब ७४)।

हिङ्गा हिङ्गि वि [हिङ्गि] धामि (वि ८ ९७)।

हिङ्गि केो हिङ्गि (वि ८ ९७)।

हिङ्गि केो हिङ्गि (वि ८ ९७)।

हिङ्गि केो हिङ्गि (वि ८ ९७)।

हिङ्गि केो हिङ्गि (वि ८ ९७)।

हिङ्गि केो हिङ्गि (वि ८ ९७)।

हिङ्गि केो हिङ्गि (वि ८ ९७)।

हिङ्गि केो हिङ्गि (वि ८ ९७)।

हिङ्गि केो हिङ्गि (वि ८ ९७)।

हिङ्गि केो हिङ्गि (वि ८ ९७)।

हिङ्गि केो हिङ्गि (वि ८ ९७)।

हीर रेवो हर = हर (हि १ २१ कुमा पञ्च)।
 हीर पुं [हीर] १ विपन मय, घसमान हेर
 (पण्य १—पञ्च १७)। २ बाणिक मुक्तिय
 पूण कम्प धारि में हीरी बाणिक रेखा (जाव
 १ ५ जो १२)। ३ पुन हाण मयि
 भिरेय (स २ २ सिरि ११५ कन्)।
 ४ कम्प-भिरय (विप)। ५ हाडा का पञ
 भाय (सि ४ १४)।
 हीर पुं [हि] १ सुई की लय लोख पुं
 बाबा कल धारि पयारै (वि ८ ७ कन्)।
 २ लय (वि ८ ७)। ३ लय लय नाम
 (पञ्च)।
 हीरत रेवो हर = ह।
 हीरणा की [हि] काय, राय (वि ८ ७
 वद)।
 हीरमाण रेवो हर = ह।
 हीक सक [हृक] १ कपडा कण्य,
 ठिक्कर कण्य। २ लिप्ता कण्य। ३
 कपडन कण्य दीकण्य। हीकह (स २
 २ १६)। हीकवि (स २ १ २ प्रमु
 २१)। वक हीकठ (सि ८ १)। कम्प-
 हीकिल्लत हीकिल्लमान (ज ५ १११
 एण्य १ क—पञ्च १४५ प्रमु ११२)।
 क हीकिल्लज (एण्य १ १)। हीकिल्लव
 (पण्य २ १—पञ्च १ २ ३—पञ्च
 १२)।
 हीकम कीन [हृक] १ कपडा ठिक्कर।
 २ लिप्ता (मुना १ १)। की या (पण्य २
 १—पञ्च १)। कीय ज वस १ १ ७
 सदि १)।
 हीय की [हृय] जल रेवो (ज ८ ज ५
 २११ ज १२१ टी)।
 हीयिज वि [हीयिज] १ भिरिज। २
 कपडालि, ठिक्कट (मुच २ १७ कोण
 २२१ कण्य वस १ १ १)। ३ कीयिज
 कपडि (भावा २ ११ १)।
 हीसमय व [हि हापय] हेराण कप—
 कोय का राय (वि ८ १८० हि ४ २२५)।
 हीरी (ही) व भिरिज का हय-मुचक
 हीरीभो १ कपड (हि ४ २२५ कुमा, प्रा
 ८ १ मोह ४१)।

हु य [हृय] हल मयी का चोतक कपडय—
 १ लिखय (हि २ १८८ से १ १३३ कुमा,
 प्राक ७८० प्रामु ४४५)। २ जह, वितक
 (हि २ १८५ कुमा प्राक ७८०)। ३ राय,
 विय (हि २ १८५ कुमा)। ४ कपडाना
 (हि २ १८५ कुमा प्राक ७८०)। ५ लिखय
 भाषय (हि २ १८५ कुमा)। ६ लिखु,
 वल्लु (प्रामु १ १)। ७ यवि की 'हु'
 यविहरयमि व ति' (वर्ग १४ टी)।
 ८ भाषय की राया (पञ्च ७ ११)। ९
 पावयुति पाव-पुण (पञ्च ८ ११६
 कुमा)।
 हु १ को हय = हु। हुय, हुय, हुयि
 हुय १ हुय, हुयरे, हुय हय, हुयरे,
 हुयवरे (वि ४४४ हि ४ ११ सि ४४५
 ४४६)। यवि हुयवि होयवि हुय
 (वस २ १२ सुक २ १२)। वक हुय
 (हि ४ ११३ स १४)।
 हुय रेवो हुय—हु। हुय (प्राक ११)।
 वक हुय (वस ११)।
 हुय वि [हुय] १ हीया हुय हय विया
 हुय (मुना २११ स २४५ प्राक ११)। २
 व हीय हयन (मुच १ ७ १२ प्राक
 ११)। वद हुय [यह] यवि यव (वा
 २११)। वाय, छाया १ १—पञ्च ११
 वद)। स हुय [सा] यवि (वस
 ४४५ ११)। यवि हि ११)। 'हलन पुं
 [यान] वही वय (स २ २३० पाय)।
 हुय रेवो हुय—मुय (प्राक कुमा यवि
 स)।
 हुय रेवो मुय, 'हलनपुं हुययुमिया
 कि पु हुय' (वा १२१)।
 हुय रेवो मुय (य ८ १, सि १२५)।
 हुय [हुय] हल मयी का मुचक कपडय—
 १ वय। २ कपड प्रल (हि २ १८५
 प्राय कुमा)। ३ निपाय (हि २ १८५
 कुमा)। ४ निपाय (प्राय) वय। ५
 लोकार (वा १२, हुय १४४)। ६ हुय,
 'हु' यका 'हु' कति हुय' (मुना ४२२)।
 ७ वयार (भिरि १११)।
 हुय पुं [हि] वयति, प्रलय (वि ८ ७१)।

हुय पुं [हुय] १ यवनि-वययय राय,
 ही (वि २१२ स १ २४ या १२१
 पायामु १)। २ 'हु' ययान 'हु' रेवा
 राय (हि ४ ४२२ कन् मुना १ २४५)।
 हुयारेय व [हुयारेय] 'हु' रेवो की
 हुय ययान (स १३०)।
 हुय पुं [हि] वयति, प्रलय (वि ८ ७१)।
 हुय व [हुय] १ यवरी की यवति-विनेय
 यवरी का वयय वयय (स १—पञ्च १४७;
 स ४४४ १४६)। २ कन्-विनेय विनेय
 जय से यवरी का वयय वययुय वेक—
 प्रलय-युय यययविनेय हो वद कन् (कन्
 १ ४)। ३ वि वेक वययय (विना
 १ १—पञ्च २)। वसपिणा की
 [वसपिणा] वययययय सय (विना
 २ १)।
 हुय की [हि] यय (पाय)।
 हुय पुं [हि] वययय यय की यक
 ययि (वीन यय ११ १—पञ्च २१२,
 २१६)।
 हुय यक [हुय + क] 'हु' 'हु' ययान
 कण्य। वक हुयय (विना ४६)।
 'हुय रेवो वयय = प्र + पु।
 हुय रेवो वद (पाय सि ४४५ ११५)।
 हुय पुं [हि] १ यय वेक (वि ८ ७)। २
 यय, यय (मुच २२१)।
 हुय पुं [हि] यय (वि ८ ७)।
 हुय पुं की [हि] हुय यय वय-विनेय (वीन
 कन् सय वि ८ ७)। की, वय (यय
 मुना २ १०२, २४२)।
 हुय पुं [हि] ययय वय (वि ८ ७
 पाय)।
 हुय पुं की [हि] हाय वयय वय यय, वय।
 की हा (वि ८ ७)। मुना २४५ वय
 १५)। 'हुय' मुयय (वयय १४१)।
 रेवो हाय।
 हुय सक [हि] हय कण्य। हुय (हि ४
 २४२ यय ११ १—पञ्च २११ कुमा)।
 कन्-हुय हुयय, हुयय (हि ४
 २४२ कुमा)। वक हुयययय (मुना
 १७)। वक हुययय हुययय हुयय
 (यय यय ११ १—पञ्च २११)।

मुद्रित्यैन प्राचार्यं तथा चन्द्रकार (वे न ७७ मुद्रा ११४) । १ विष्णु की पञ्चरत्नीं शताम्बी का एक वैत मुद्रि (सिरि ११४१) । आळ न [जाळ] मुद्रण की भाषा (वीर) । 'विलय' मु [विलय] विष्णु की बीरहरीं शताम्बी का एक शैलाचार्य (सिरि ११४) । पुर न [पुर] एक विद्याभार-मय (रुक्) । मय वि [मय] घने का बना हुआ (मुद्रा ८८) । महिहर मु [महिहर] मह परवत (पञ्च) । माळिनी की [माळिना] एक चिन्मूर्ति के (रुक्) । व मु [व] फलमू माध (मुद्रा ११) । विलय मु [विमल] एक वैत प्राचार्य (कुम्भा १३) । 'म' मु [म] बीवी नरक-मुद्रि का एक नरक-स्वामि (निर ११) ।

हेमन्त मु [हेमन्त] १ श्रुत-विरोध मगधिर या अथर्वन तथा पौष या मृग महिमा (पाक प्राचाक कम्पा कुमा) । २ शीतकाल (वस ३ १२) ।

हेमन्त वि [हेमन्त] हेमन्त ऋतु में उत्पन्न (मुद्रा १२—पञ्च २१६) ।

हेमन्तिव वि [हेमन्तिव] ऊपर देखी (कम्पा जीव या १६; पञ्च १८) ।

हेमन्ति वि [हेमन्ति] हिम का, हिम-संज्ञको (अ ४ ४—पञ्च १८७) ।

हेमन्त १ मुद्रा [हेमन्त] १ वर्ष-विरोध, लोक-हेमन्त १ विरोध (रुक् वस १२; अ ४—पञ्च २१६ ३ अ ३, ३ टी—पञ्च १७) पञ्च १ २ १६) । २ हिमवत परवत का एक शिखर । ३ श्रुत-विरोध (रुक्) । ४ हिमवत परवत का (पञ्च ७४ बीर) । ५ मुद्रा [हेमन्त] हिम का अर्थ-विरोध (वे न ४—पञ्च १८) ।

हेमन्त देखी हेम (सिंह १७) ।

हर सक् [र] १ वेष्टन निरीक्षण करना । २ बाजना धनोपेय करना । ३ हरत (निय) । ४ हरिजय (वसिष्ठ ४४) ।

हरय मु [र] १ महिष, महा । २ विविध, बाध-विरोध (वे न ४६) ।

हरण्यय मुद्रा [हरण्यय] १ वर्ष-विरोध, एक मुद्रिचन्द्र (रुक् पञ्च १ २ १६) । २ धीम परवत का एक शिखर । ३ शिखरी परवत का एक शिखर (रुक् २१८) ।

हेरिण्यय मुद्रा [हेरिण्यय] मुद्रिचन्द्र (पञ्च २११) ।

हेरिण्यय देखी हेरिण्यय (अ २, ३—पञ्च १७; पञ्च १७) ।

हरिय मु [हरि] ग्राम नर, नायक (मुद्रा ४६ २८१) ।

हरिमु मु [रि हरम्] विनायक गलेस (वे न ७२ ५४) ।

हरुपाळ सक् [रि] कृष्ण कण्ठ गुप्ता करवाता ।

हेमार्पति (शाय १ ८—पञ्च १४४) ।

हवा की [हवा] १ की की श्रुतार-संज्ञको कृष्ण-विरोध (पाक) । २ जगत्तर (पाक वे १ २२) । ३ जगत्तर अथवा जगत्तर, जगत्तर (वे १ २२) कम्पा प्रवि ११ नि १७२) ।

हवा की [रि हेवा] वैत शीमता (वे न, ७१ कम्पा प्रवि ११ नि १७२) ।

हविय मु [हविय] एक वस्त्र की मल्ली (वीर २ टी—पञ्च १६) ।

हवुय न [रि] सुत की (वे न ७२) ।

हवुय की [रि] हिवा हिक्की (वे न ७२) ।

हविय (पञ्च) या [हव] वस्त्र का धामन्तल ह वस्त्र (वे ४ ४२१ १७२, वि १ ७) ।

हव्य (अर्थ) देखी हेम (वि ११६) ।

हवाग मु [हवाग] स्वभाव धातव (पञ्च) ।

हसमय वि [रि] जगत ऊँचा (पञ्च) ।

हसा की [हसा] वस्त्र-रुम्भ (मुद्रा २४४ या २७) ।

हसिभ न [हसिभ] ऊपर देखी (वे न १८ पञ्च २४ ३; टीप महाय यधि) ।

हसिभ न [रि हसिभ] रचित, नीलम्बर (पञ्च) ।

हर्भुभ वि [रि] मुख-दोष के छान वे रचित धोर निर्वन्ध, प्रत्यङ्गु निवाचन (वस १) ।

हव्य मु [हव्य] १ एक रत्ना (पञ्च) । २ विषय मु [विषय] एक विद्याभार रत्ना (पञ्च १ २) ।

हा देखी हय = पु। होह, होयह, होयण, होयह होयि होयह होयह (वे ४ १, पञ्च १ कम्पा अथ महा नि ४४५; ४४६) । होह होह होयण होयण, होह (वे ४

१२४ १७७ नय प्राप्ति नि ४१६) ।

मुद्रा होय्या, होय्या (कम्पा प्राप्ति) । यधि होयह, होयि होय्या होयि होयह होय्या होयह, होयह (वे १ ११६ १६७ १६८ प्राप्ति नि ४२१) होयह (पञ्च) (वे ४ १८८) । कम्पा होयह, होयह, होयह (पञ्च; वि ४७६) । ३. होय होय्या (वे १ १८ ४ १२२, १७२ कुमा वि ४७६) । ४. होय, होय, होय (वे १ २८५ २८६ कुमा) ।

होह होय, होयह (महा नि ४७२, कम्पा) ।

होय्य (कम्पा महाय जगत्तर प्राप्ति १६, १६) ।

होय [रि] इन वस्त्रों का सूचक अर्थ—१ विष्णु, माधव (पाक नाट—मुद्रा ११२) ।

२ वस्त्रोप, धामन्तल (सिंह ४७ अ २२७ टी) ।

होय वि [होय] होम-कर्ता (पा ७२७) ।

होह देखी हुह (विचार ४ ७) ।

हाह मु [आह] होह, होह (पाका) ।

हाह देखी हुह 'हो हं होयि होयि (मुद्रा २७७ २७८) ।

होह मु [होह] नीव नीव की वस्त्र (शाय १ २—पञ्च ८६ नि १८ ३८) ।

होय देखी हुय = हुह (पञ्च २७४ विचार ४१) ।

होयि मु [होयि] १ वाग्मन्तल धातवों का एक वर्ष, धामन्तल धामन्तल (वीर अथ ११ ४—पञ्च २११) । २ न, वस्त्र-विरोध (पञ्च १—पञ्च ११) ।

हाम मु [होम] हवन धीम में माध-पूर्वक वृत्त धारि का प्रथम (धनि ११२) ।

होम सक् [होम] होम करना । होह धामिर् (टी न) ।

होमिभ वि [होमिभ] हवन श्रिया श्रया 'धामन्तल-धामन्तल-धामन्तल' (पञ्च १६) ।

होम्या धी [होम्या] वाध-विरोध महा-वस्त्र, वस्त्रोप (पञ्च ४६) ।

हारण न [रि] वस्त्र कम्पा (वे न, ७२, या ७७१) ।

इस कोष के विषय में कतिपय सुप्रसिद्ध विद्वान् और पत्रकारों के

कुछ अभिप्राय

A few Opinions of some Savants & Journalists regarding the PRĀKRIT DICTIONARY.

Prof Earnest Leumann (in the journal of Royal Asiatic Society London,
July 1924)

"During recent years several scholars in India have tried to bring out a Prākṛit Dictionary. However no one seems to have succeeded in publishing more than a small specimen. Only recently, towards the end of 1923, there has appeared a new start, which is no longer a simple specimen, but an elaborate first part comprising no less than 360 large size pages. In this volume all words beginning with vowels are included. And, if the following parts, which are to embrace the words beginning with consonants, carries on the Dictionary in the same line, it will be finished in about seven such parts and will contain nearly 2000 pages. On its completion Indian philology will certainly be congratulated from all sides, and Prākṛit literature, which is so immensely rich may then be studied as it ought to be in intimate connexion with Sanskrit lore, which has long possessed Lexicographic aids of all kinds.

The title of the forthcoming dictionary is Pāṇa-sadda-mahānava, "the great ocean of Prākṛit words. Its compiler is Pandit Hargovind Das T Sheth Lecturer in Prākṛit in the Calcutta University

The meaning of the words are given both in Hindi and in Sanskrit, and each entry is furnished with references to test passages. Sometimes also the test passages are fully quoted (forming generally a verse called Gāthā or Āryā).

Comprehensiveness and accuracy are the qualities most desired in a dictionary. As to the first quality I may mention that the texts worked up in the dictionary seem to number about 200 or more. Even in the first ten pages a full hundred titles are quoted. (Acca, Aji, Aṇu=Anuyogadvāra-sūtra, Anta=Anatya-dāś, Abhi, Acā=Ācāraṅga, Acc=Ācāra-cūlikā, Ara=Āraṇyaka, and others). And, as to the second quality it may be stated that in the reference mistakes are scarcely detectable. Also errors in the quoted editions are corrected, so early as the second entry of the first page we are for Pkt. a=Skt. ca, rightly referred to Pāṇina-sūtra 113, 14 where the edition has by mistake Avirāho instead of a Virāho.

Consequently I may be allowed to recommend Pandit Sheth's Prākṛit Dictionary to all Sanskrit scholars as well as to Sanskrit libraries—and, what will probably do more to secure the final success of the undertaking, to the Government authorities."

इस कोष के विषय में कतिपय सुप्रसिद्ध विद्वान् और पत्रकारों के

कुछ अभिप्राय

A few Opinions of some Savants & Journalists regarding the PRĀKRIT DICTIONARY.

Prof Ernest Leumann (in the journal of Royal Asiatic Society London,
July 1924)

"During recent years several scholars in India have tried to bring out a Prākṛit Dictionary. However no one seems to have succeeded in publishing more than a small specimen. Only recently, towards the end of 1923, there has appeared a new start, which is no longer a simple specimen, but an elaborate first part comprising no less than 360 large size pages. In this volume all words beginning with vowels are included. And, if the following parts which are to embrace the words beginning with consonants, carries on the Dictionary in the same line, it will be finished in about seven such parts and will contain nearly 2000 pages. On its completion Indian philology will certainly be congratulated from all sides, and Prākṛit literature, which is so immensely rich may then be studied as it ought to be, in intimate connexion with Sanskrit lore, which has long possessed Lexicographic aids of all kinds.

The title of the forthcoming dictionary is Pāla-sadda-mahānava, "the great ocean of Prākṛit words. Its compiler is Pandit Hargovind Das T Sheth Lecturer in Prākṛit in the Calcutta University.

The meaning of the words are given both in Hindi and in Sanskrit, and each entry is furnished with references to text passages. Sometimes also the text passages are fully quoted (forming generally a verse called Gāthā or Āryā).

Comprehensiveness and accuracy are the qualities most desired in a dictionary. As to the first quality I may mention that the texts worked up in the dictionary seem to number about 200 or more. Given in the first ten pages a full hundred Titles are quoted. (Acoṁ, Aji, Aṇu = Anuyogadvāra-sūtra, Anta = Anatkṛt-dasā, Abhi, Aca = Acāraṅga, Aca = Acāra-cūlikā, Ava = Avasthā, and others). And, as to the second quality it may be stated that in the reference mistakes are scarcely detectable. Also errors in the quoted editions are corrected, so early as the second entry of the first page we are for Pkt. a = Skt. ca, rightly referred to Pāṭma-cariya 118, 14 where the edition has by mistake Avirābio instead of a Virābio.

Consequently I may be allowed to recommend Pandit Sheth's Prākṛit Dictionary to all Sanskrit scholars as well as to Sanskrit libraries—and, what will probably do more to secure the final success of the undertaking, to the Government authorities.

Sir George A. Grierson, K.C.L.E., PH.D, D LITT, LL.D.

"I must congratulate you on the success you have achieved in compiling this excellent book. I have already been able to make use of it and have found it a help in my work

Jainacharya Shri Vijayendra Sureshwarjee. Itihās-tattva mahodadhī

"A big dictionary named Pāṇi-sadda Mahapavā (पाणि-सद-महापव) is being composed and edited by Nyaya Vyakarana-tirtha Pandit Hargovind Das Trikamchand Sheth, Prākṛit Lecturer, Calcutta University. Three of its parts have already been brought into light. On seeing these parts and the work done therein one cannot but say that it is excellent.

We cannot help saying frankly and impartially that amidst all dictionaries of the type in existence this Koṣha takes its first place. In absence of such a good Prākṛit dictionary Prākṛit-scholars had great many difficulties. To remove them Pandit Hargovinddas has taken immense pains in producing this work and has put Prākṛit-scholars at large to great obligation. Pandit Hargovinddas deserves all honour for such a nice work.

We are conversant with Pandit Hargovinddas's vast knowledge and originality. It gives us a great pleasure to note that these two things in him have gone a great way to make the dictionary very valuable and useful. We can without the least hesitation, say that Pandit Hargovinddas can well stand in the category of high culture. * * * It is the duty of all scholars in the field of learning and specially that of Jain saṃj to encourage by extending their helping hand towards such learned man rendering services to Jain literature and Jain Religion."

Dr Giuseppe Tucci, Professor of Sanskrit, Rome University. "The Prākṛit Dictionary is very useful in my study.

Dr M. Winternitz, Professor of Prague University. "Many thanks for the first two parts of the Prākṛit Dictionary which is very useful to me.

Dr F W Thomas M.A. PH.D, Chief Librarian, India office London. "I have myself consulted the book and found it useful. It is based upon a very large number of texts.

Prof A. B. Dhruva, Pro Vice-chancellor, Hindu University Benares. "I have seen Mr Hargovinddas Sheth's Prākṛit Dictionary. It represents a genuine attempt to supply a need which has long been felt and I am sure it will receive the appreciation which it so well deserves.

Dr Sumti Kumar Chatterji M.A. D LITT Professor of Calcutta University (in the Calcutta Review February and December 1924). The work is not a mere compilation of glossaries. It contains ample evidence of Pandit Sheth's wide reading in Prākṛit literature and of his vast labours in the field. ... It will be a very useful publication and no student of Prākṛit and of modern Indo-Aryan languages can afford to be without it. The work so far accomplished by Pandit Sheth, is an extremely laborious one requiring not only great scholarship, but also great patience. ... Pandit Sheth ought to receive entire support from all interested in Prākṛit and Jain studies.

----- Those who have had occasion to use this work and can testify to its excellence and usefulness will be pleased to see that it has received proper appreciation from competent scholars in the domain of Prākṛit and Indian Philology both in India and Europe. The Calcutta University can well be congratulated in possessing such an erudite scholar of Prākṛit in Pandit Hargovinddas.

Dr B. M. Barua, M.A. D. Litt., Professor of Pali, Calcutta University "I can quite understand that the task undertaken by you is a self imposed one and you are sure to render a permanent service in the cause of Indology by completing the same. A handy and at the same time comprehensive Prākṛit dictionary has been a long felt desideratum. After going through the printed parts of your lexicon I find reasons to hope that your single-handed labour will go to remove it to a great extent. I have not seen elsewhere an attempt of this kind. What I sincerely wish is the consummation of the noble task you are engaged upon with the indefatigable zeal and unflinching devotion of a scholar like yourself who has been born and brought up in a religious tradition footing the culture of Prākṛit languages."

Dr L. J. S. Taraporewala B.A., PH.D. Bar-at-law Professor of Comparative Philology, Calcutta University. The author has already considerable reputation as a teacher of Prākṛit in the University of Calcutta and also as a deep scholar in Jaina Literature and Philosophy. For many years he has had the preparation of a Prākṛit Dictionary in contemplation that for that he set about a systematic course of reading in all the various branches of Prākṛit Literature. As a result of this enormous amount of labour the Panditji has now given us the first three volumes of his Prākṛit Dictionary. To students of Prākṛit this book will supply a greatly felt want and the work is very well done indeed for the general reader. In any case the work is an useful one and should help all earnest students.

Prof Vidhushekhar Bhattacharya, M.A. Principal Vishva Bhārati Shānti Niketan, Bolpur (in the *Modern Review* April 1925).

The author hardly needs introduction to those who have acquaintance with Yasovijaya Jaina Granthamala. His present work is Prākṛit-Hindi Dictionary. We extend our hearty welcome to it.

A Prākṛit Dictionary of this kind was a desideratum and every Prākṛit lover should feel thankful to Pandit Haragovindadas who has now supplied it. We have not the least doubt in saying that the students of Prākṛit will be much benefited by it. It supplies Sanskrit equivalents so far as possible quotes authorities and gives references. The words are explained in Hindi, yet the language is so simple that it can be used by any one knowing some vernacular of northern India.

Indian Antiquary February 1925. This is the first part of a dictionary of the Prākṛit language intended to be completed in four parts. It is a comprehensive dictionary of the Prākṛit language giving the meaning of Prākṛit words in Hindi. It provides at the same time the Sanskrit equivalents of the Prākṛit words. The dictionary as a whole contains about seventy thousand words. The author Pandit Hargovinddas T. Sheth, Lecturer Calcutta University has taken care to support the meanings that he gives by quotations from the original sources giving complete references. It removes one of the desiderata for a satisfactory study of the vast Prākṛit literature which still remains unexplored but inadequately by scholars Indian and European. It is likely to be of great assistance in promoting this desirable study. The author deserves to be congratulated upon the result of his labours in this good cause. The work is a monument of his learning and effort and it is to be hoped that this industry will be suitably rewarded to encourage him to go on with his work and complete it as originally projected in four parts.

Sir George A. Grierson, K.C.I.E., Ph.D., D. Litt., LL.D.

I must congratulate you on the success you have achieved in compiling this excellent book. I have already been able to make use of it and have found it a help in my work.

Jainacharya Shri Vijayendra Sureshwarjee. Itihās tattva-mahodadhi.

"A big dictionary named *Pāṇi siddha-mahapavā* (पाणि-सिद्ध-महापर्व) is being composed and edited by Nṛaya Vyākaraṇa kīrtha Pandit Hargovind Das Trikamchand Sheth, Prākṛit Lecturer, Calcutta University. Three of its parts have already been brought into light. On seeing these parts and the work done therein one cannot but say that it is excellent.

We cannot help saying frankly and impartially that amidst all dictionaries of the type in existence this *Kośa* takes its first place. In absence of such a good Prākṛit dictionary Prākṛit-scholars had great many difficulties. To remove them Pandit Hargovinddas has taken immense pains in producing this work and has put Prākṛit-scholars at large to great obligation. Pandit Hargovinddas deserves all honour for such a nice work.

We are conversant with Pandit Hargovinddas's vast knowledge and originality. It gives us a great pleasure to note that these two things in him have gone a great way to make the dictionary very valuable and useful. We can, without the least hesitation, say that Pandit Hargovinddas can well stand in the category of high culture. x x x It is the duty of all scholars in the field of learning and specially that of Jain samaj to encourage by extending their helping hand towards such learned man rendering services to Jain literature and Jain Religion.

Dr Giuseppe Tucci, Professor of Sanskrit, Rome University "The Prākṛit Dictionary is very useful in my study.

Dr M. Winternitz, Professor of Prague University "Many thanks for the first two parts of the Prākṛit Dictionary which is very useful to me.

Dr F W Thomas M.A., Ph.D. Chief Librarian, India office London. "I have myself consulted the book and found it useful. It is based upon a very large number of texts.

Prof A. B. Dhruva, Pro Vice-Chancellor Hindu University Benares. "I have seen Mr Hargovinddas Sheth's Prākṛit Dictionary. It represents a genuine attempt to supply a need which has long been felt and I am sure it will receive the appreciation which it so well deserves."

Dr Sumit Kumar Chatterji, M.A. LLitt Professor of Calcutta University (in the Calcutta Review February and December 1934). "The work is not a mere compilation of glossaries. It contains ample evidence of Pandit Sheth's wide reading in Prākṛit literature and of his vast labours in the field. ... It will be a very useful publication and no student of Prākṛit and of modern Indo-Aryan languages can afford to be without it. The work so far accomplished by Pandit Sheth, is an extremely laborious one requiring not only great scholarship, but also great patience. ... Pandit Sheth ought to receive entire support from all interested in Prākṛit and Jain studies.

—Those who have had occasion to use this work and can testify to its excellence and usefulness will be pleased to see that it has received proper appreciation from competent scholars in the domain of Prākṛit and Indian Philology both in India and Europe. The Calcutta University can well be congratulated in possessing such an erudite scholar of Prākṛit in Pandit Hargovinddas.

बोय पु [बोय] एक देव का नाम (पद्म १८ १५)।
 बोरपछ बि [बे] वरख पुग (१७ =)।
 बोरमग न [बुयुपमग] क्षिता प्राणिन्य (पद्म १ १—पद्म २)।
 बोरोही ओ [बे] १ बावख माव की हुक कुरुरी छिपि में होवेनाता एक जखर। २ बावख माव की हुक कुरुरी (१७ ५१)।
 बोरबिअ बि [ब्यपरोषि] जो मार जाला मय हो बहु; 'सकारिठा कुपमं हिमं विभ्रण बोरबिओ' (बन १)।
 बोस्की ओ [बे] बई दे मय हुमा बछ (पद्म ५४)।
 बोख सक [गम्] १ मति करना, बहना। २ पुनारना पवार करना। ३ ध्विभ्रमण करना, उल्लंघन करना। ४ सक पुनारना पवार हुमा। बोखइ (शाह ७१ हे ४ १६२; मद्म पर्यंत ७२४) 'काल बागई' (पुन २२४) बोसति (बम्मा १४८ बरवि २१)। बछ पोखं पोखं (हुमा का २१ २२ पदम १ १४ से १४ ७२ मुना २२४; से १ ६९)। बछ बाखिअ पोखं (महा पाव)। छ पोखेअव्य (वि २ १ स; २१)। प्रयो., छ पोखविअ, पोखपडं (मुना १४; का १४६ स १)। देओ बाख = ब्यति + ब्य।
 बास देओ बाख = बे (११ २)।
 बाळट्ट सक [ब्युप + लुट्ट] बनक्या। बछ बासट्टमाग (बय)।
 बासविअ बि [गमिअ] पठिअविअ (बम्मा १४ गुना ११४ ना ११)।
 बासिअ बि [गम] १ पया हुमा (शाह वासिन १ ७७)। २ पुनरवा हुमा जो पवार हुमा हो बहु ब्यलोठ (गुर १ ११ मद्मा ५२ ११; गुर १ ११)। ३ पठिअ

उल्लिखित (पाव; गुर २ १ कुप ४१ से १ १४ ४८) मा १७ २१२ १४ हे ४ २१४ बुया मद्मा)।
 बोख सक [ब्य + म्] ब्यामण करना। बोसइ (पाव ११४)।
 बोझाह पु [बोझाह] देव-विशेष (स ५१)।
 बोझाह बि [बोझाह] देव-विशेष में जगम (स ५१)।
 बोखल पु [बे] कुम, बेन (१७ ७६)।
 बोसग पु [ब्युसग] परित्याग (विज २६ २)।
 बोसग १ सक [वि + फस] १ बिक्रमता बोसहु १ क्षिपता। २ बहना। बोसमह बोसहु (पद्म हे ४ ११३; शाह ७६)। बछ बोसट्टमाग (मय पा ५२५)।
 बोसट्ट सक [बि + पसय] १ विनाग करना। २ बहना। बोसट्ट (पाव १४४)।
 बोसट्ट बि [बि] मार कर धावी किया हुमा (१७ ५१)।
 बोसट्टि बि [बि] मार कर धावी किया हुमा (हुमा)।
 बोसट्ट बि [ब्युसु] १ पयिअक, छोडा हुमा (क्या कय बोख १ २ जय ११, ११ धावा २ = १ पया १० १)। २ बरिष्का-रहित काट्टु-कविअ (मुम १ ११ १)। ३ नावोअर में स्थित (त्य ५, १ ११)।
 बोसमिय बि [ब्ययशमिय] उपरविअ कान किया हुमा 'बोसमिय बोसमिया' बरिष्का-रहित ४ बरीरित। वे पावा नावगा' (स ६ टी—पद्म १७१)।
 बोसम १ सक [ब्युप + लुट्ट] बरिष्का-रहित करना कानिया। बोसमो, बोसिअ, बोसमिय (पद्म २१४ मद्म मय

मो) बोसिअ बोसिरे (वि २११)।
 बछ बोसिरन (कुन ८१)। बछ बोसिअ, बोसिरिता (मुप १ १ ७ वि २११)।
 छ बासिरियअ (पद्म ४१)।
 बोसि बि [ब्युसम] छोडेनाता (जन् ५ २५८)।
 बोमिअ न [ब्युसजन्] पयिअम (हे २ १७४ का १२; मारक ३७६; बोप ८१)।
 बासिरिअ देओ बोसट्ट (पद्म ४ २२ पर्यंत १ १४ मद्मा)।
 बासम बि [बे] लुगु-मठ (१७ ५१)।
 बोहिअ न [बहिअ] ब्रह्मण जहान नीरा (पा ७४९)। देओ बाहित्य।
 बाहार न [बे] जल-बहन (१७ =)।
 ब्युख पु [बे] निद्र, मटुअ (पद्म)।
 बंद देओ बह = कुन (शाव)।
 बाच (बन) देओ पय = वज (४ ४ १६८)।
 बाभास (बन) पु [ब्याभास] १ टाव। २ किला। ३ विष्णु चिह्नन (शाह ११२)।
 बागल (बन) देओ पागल (शाह ११२)।
 बाबि (पा) पु [बगबि] बंधल ब्याकरण।
 बोय कोय वा कवा एक जूनि (शाह ११२)।
 बास देओ बास = ब्यास (हे ४ १६६; शाह ११२; बह; हुमा)।
 ब्य देओ ब्य (हे ४ १८२ कया रंन)।
 ब्य देओ पा = प (शाह २६)।
 ब्यम देओ पय = वज (हुमा)।
 ब्यपतिअ देओ पयतिअ = ब्यपतिअ (पति १२४)।
 ब्याज देओ पाव = ब्याज (पा २)।
 ब्याथार देओ पाथार = ब्याथार (पा १६)।
 ब्यापुह देओ पापुह (पति २६६)।
 ब्याहि देओ पाहि (पा ८८)।
 बिअ देओ ब्र (शाह २१)।
 ब्य प [बे] बरीषन-मुअक पय्यव (शाह ८)।